RPSC

2026

राजस्थान प्रशासनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा

भूगोल

GEOGRAPHY

खंड-3

अध्यायवार MCQs

NODIA

Nodia

Scan QR for Demo PDF

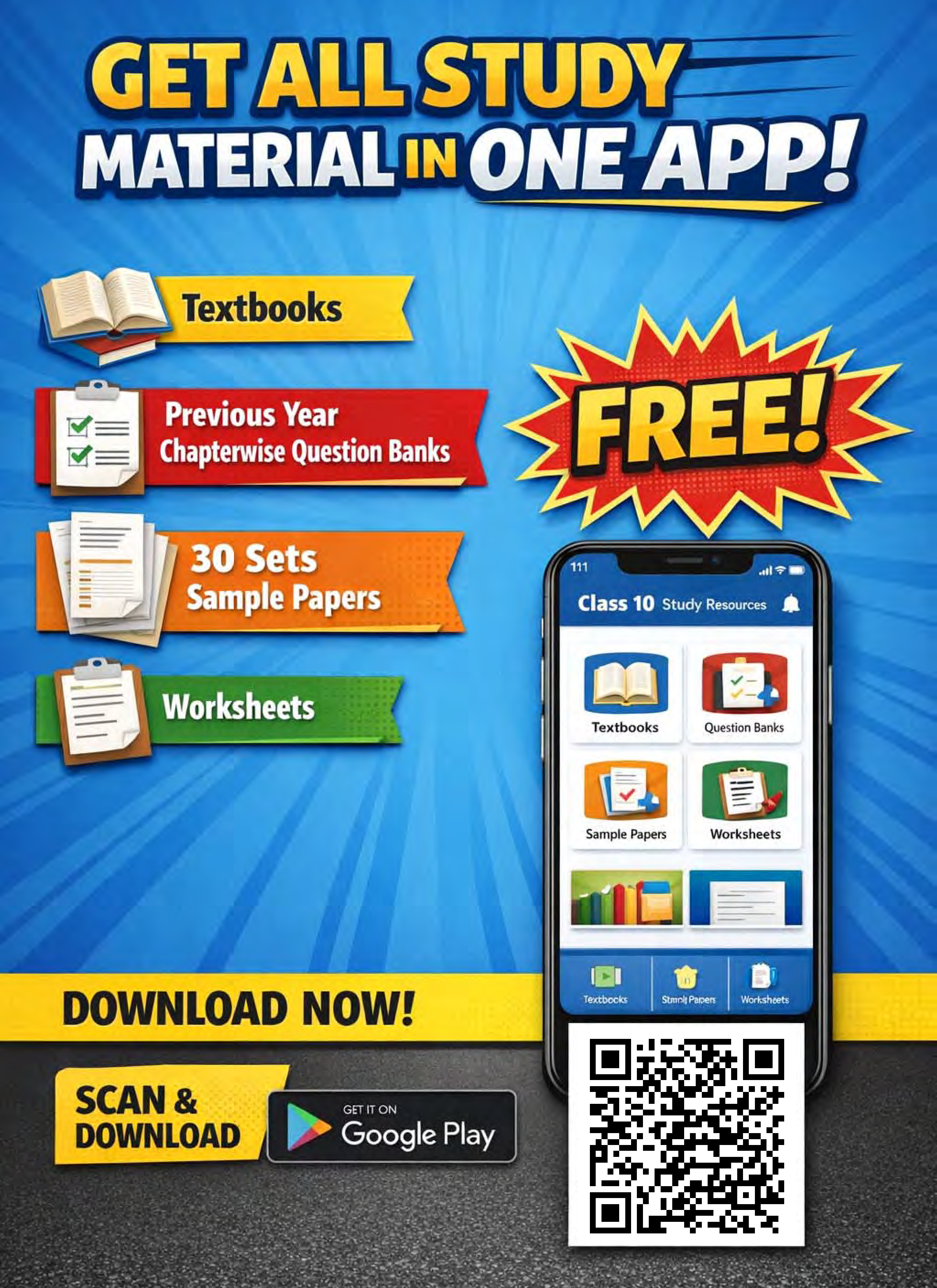
GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year Chapterwise Question Banks
30 Sets Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON Google Play

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारंभिक परीक्षा 2026

सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

खंड 3

भूगोल

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक

आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

Downloaded from www.pdf.tube

RPSC प्रारंभिक परीक्षा खंड 3
Edition April 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

Information contained in this book has been obtained by author, from sources believes to be reliable. However, neither NODIA nor its author guarantee the accuracy or completeness of any information herein and NODIA nor its author shall be responsible for any error, omissions, or damages arising out of use of this information. This book is published with the understanding that NODIA and its author are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services.

© NODIA EDITIONS LLP

NODIA

MRP ₹570.00

available at amazon

This book is available on amazon and flipkart only and not available in market.

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

भाग I : विश्व का भूगोल

अध्याय 1.	भौतिक स्थलाकृतियाँ : पर्वत, पठार, मैदान एवं मरुस्थल	11
अध्याय 2.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	30
अध्याय 3.	प्राकृतिक वनस्पति एवं बायोम	48
अध्याय 4.	विश्व कृषि : प्रकार, कृषि प्रणालियाँ एवं प्रमुख फसलें	67
अध्याय 5.	प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग	86
अध्याय 6.	विश्व परिवहन नेटवर्क	104
अध्याय 7.	पर्यावरणीय समस्याएँ	124

भाग II : भारत का भूगोल

अध्याय 8.	भारत के भू-आकृतिक प्रदेश	143
अध्याय 9.	भारत की प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	161
अध्याय 10.	भारत की जलवायु	179
अध्याय 11.	सिंचाई : प्रकार, स्रोत एवं प्रमुख परियोजनाएँ	198
अध्याय 12.	कृषि : खाद्य, वाणिज्यिक एवं बागानी फसलें	216
अध्याय 13.	खनिज : धात्विक एवं अधात्विक	235
अध्याय 14.	भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र	254
अध्याय 15.	लौह-इस्पात, वस्त्र एवं चीनी उद्योग	274
अध्याय 16.	पेट्रोकेमिकल, सूचना प्रौद्योगिकी एवं उभरते उद्योग	293

Click Here to Buy book on Amazon

भाग III : राजस्थान का भूगोल

अध्याय 17.	राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं भू-आकृतिक स्वरुप	314
अध्याय 18.	राजस्थान की नदियाँ एवं झीलें	332
अध्याय 19.	राजस्थान की जलवायु	350
अध्याय 20.	प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता एवं संरक्षण	370
अध्याय 21.	राजस्थान की मृदाएँ	388
अध्याय 22.	राजस्थान की कृषि	406
अध्याय 23.	पशुपालन एवं पशुधन	424
अध्याय 24.	राजस्थान में सिंचाई	444
अध्याय 25.	खनिज : धात्विक एवं अधात्विक	463
अध्याय 26.	जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात	482
अध्याय 27.	राजस्थान का नगरीकरण	501
अध्याय 28.	राजस्थान की जनजातियाँ	520
अध्याय 29.	राजस्थान में पर्यटन	539

NODIA

****

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा

–:परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम:–
दिनांक 09.01.2026

प्रारम्भिक परीक्षा में नीचे विनिर्दिष्ट विषय पर एक प्रश्न–पत्र होगा, जो वस्तुनिष्ठ प्रकार का होगा और अधिकतम 200 अंको का होगा।

परीक्षा का उद्देश्य केवल स्क्रीनिंग परीक्षण करना है। प्रश्नपत्र का स्तरमान स्नातक डिग्री स्तर का होगा। ऐसे अभ्यर्थियों द्वारा, जो मुख्य परीक्षा में प्रवेश के लिए अर्हित घोषित किये गये हो, प्रारम्भिक परीक्षा में प्राप्त अंको को उनका अंतिम योग्यता क्रम अवधारित करने के लिए संगणित नहीं किया जायेगा।

विषय	अधिकतम अंक	समय
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान	200	तीन घण्टे

नोट:–
1. प्रश्न पत्र में बहुविकल्पीय प्रकार के 150 प्रश्न होंगे व सभी प्रश्न समान अंक के होंगे।
2. मूल्यांकन में ऋणात्मक अंकन किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 अंक काटे जाएंगे।

Downloaded from www.pdf.tube

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल – पुरापाषाण काल से लेकर ताम्रपाषाण काल तक और कांस्य युग, प्राचीन राजस्थान का समाज और संस्कृति
- राजस्थान इतिहास के स्रोतः पुरातात्विक, अभिलेखीय, साहित्यिक और मुद्राशास्त्रीय
- राजस्थान के मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, केंद्रीय सत्ता के साथ सहयोग एवं प्रतिरोध, मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था
- 18वीं–19वीं शताब्दी में राजनीतिक और सामाजिक स्थिति, 20वीं शताब्दी में किसान और आदिवासी आंदोलन, प्रजा मंडल आंदोलन और जन जागृति, राजस्थान का एकीकरण
- राजस्थान की स्थापत्य परंपराएँ – मंदिर, किले, महल, स्मारक,मानव निर्मित जलाशय, चित्रकला और हस्तशिल्प की विभिन्न शैलियाँः प्रदर्शन कलाएँः लोक नृत्य और नाटक, संगीत (शास्त्रीय और लोक) और वाद्ययंत्र
- भाषा एवं साहित्यः राजस्थानी भाषा की बोलियाँ, राजस्थानी भाषा का साहित्य और लोक साहित्य, धार्मिक जीवनः राजस्थान में धार्मिक समुदाय, संत और संप्रदाय, राजस्थान के लोक देवता और धार्मिक प्रथाएँ
- राजस्थान में सामाजिक जीवनः मेले और त्यौहार; सामाजिक रीति–रिवाज और परंपराएँ, वेशभूषा और आभूषण
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

भारत का इतिहास

प्राचीनकाल एवं मध्यकाल :–

- भारत के सांस्कृतिक आधार – सिंधु और वैदिक युगः छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक विचार – आजीवक, बौद्ध और जैन धर्म।
- मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की उपलब्धियाँः मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव और चोल।
- प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य कला एवं वैज्ञानिक विकास
- भारतीय ज्ञान एवं मूल्य व्यवस्थाः वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा व्यवस्था।
- सल्तनत कालः प्रमुख राजवंशों की उपलब्धियाँ, विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- मुगल कालः प्रशासन एवं विभिन्न नीतियांः मराठा
- मध्यकाल में कला एवं वास्तुकला, साहित्य, चित्रकला और संगीत का विकास।
- धार्मिक आंदोलन और भक्ति एवं सूफी आंदोलन का योगदान।

आधुनिक काल (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 2000 तक) :–

- ब्रिटिश साम्राज्यवाद और प्रतिरोध – मराठा, मैसूर, सिख।
  1857 का विद्रोह।
  ब्रिटिश राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक नीतियाँ। राष्ट्रवाद का उदय, सामाजिक–धार्मिक आंदोलन।
- स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन– विकास, चरण और प्रमुख घटनाएँ। क्रांतिकारी और विभिन्न क्षेत्रीय आंदोलन। स्वतंत्रता और विभाजन की ओर।
- स्वातंत्रोत्तर राष्ट्र निर्माण (2000 तक), राज्य पुनर्गठन, नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, योजना एवं आर्थिक सुधार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास

NODIA

विश्व एवं भारत का भूगोल

विश्व का भूगोल :–

- भौतिक स्वरूपः– पर्वत, पठार, मैदान एवं मरूस्थल
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- प्राकृतिक वनस्पति
- कृषि : प्रकार, वितरण तथा प्रमुख फसलें
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग
- परिवहन तन्त्र
- पर्यावरणीय मुद्दे – मरूस्थलीकरण, वनोन्मूलन, जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापन), ओजन अवक्षय

भारत का भूगोलः–

- भौतिक विभाग
- जलवायु
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- सिंचाई
- कृषि : प्रमुख फसलें
- खनिजः धात्विक और अधात्विक
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग

राजस्थान का भूगोल

- राजस्थानः– अवस्थिति, विस्तार तथा भौतिक विभाग
- नदियाँ एवं झीलें
- जलवायु की विशेषताएं
- प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता तथा संरक्षण
- मृदा
- कृषि
- पशुधन
- सिंचाई
- जनसंख्या– वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात
- नगरीकरण
- जनजातियाँ
- खनिज– धात्विक एवं अधात्विक
- पर्यटन

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था और शासन

- संविधान का निर्माण, उद्देशिका, नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व और मौलिक कर्तव्य
- संघीय सरकार– कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका
- संघ राज्य संबंध, आपातकालीन प्रावधान
- शहरी और ग्रामीण स्थानीय सरकार
- निर्वाचन आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और नीति आयोग
- लोक नीति, नागरिक चार्टर, सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण प्रणाली
- लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग

Click Here to Buy book on Amazon

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था
• राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान उच्च न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय एवं अन्य न्यायिक निकाय, महाधिवक्ता • मुख्य सचिव, राज्य सचिवालय, विभिन्न विभागों के निदेशालय, संभागीय आयुक्त, जिला कलेक्टर/ जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक, उप–खण्ड अधिकारी, तहसीलदार • राजस्थान लोक सेवा आयोग, राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान सूचना आयोग, राजस्थान राज्य महिला आयोग, राजस्व मंडल, लोकायुक्त • राजस्थान में पंचायती राज एवं नगर पालिकाओं का प्रशासन
आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था
• आर्थिक संवृद्धि और विकास। पर्यावरण क्षरण और सतत् विकास। • विकास के मापक– पारंपरिक माप, मानव विकास सूचकांक और अन्य संबंधित सूचकांक। • आर्थिक विकास में मौद्रिक और राजकोषीय नीति की भूमिका। भारत सरकार का नवीनतम बजट और संसाधन संग्रहण। • राजकोषीय संघवाद– केन्द्र– राज्य वित्तीय संबंध और वित्त आयोग। • कृषिगत विकास– संस्थागत और तकनीकी पहलू। भारतीय कृषि में सुधार–चुनौतियां और सरकारी पहल। • औद्योगिक वृद्धि, स्वरूप, नीति और औद्योगिक सुधार– उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण। • आर्थिक वृद्धि में सेवा क्षेत्र की भूमिका– चुनौतियां और अवसर। ऊर्जा, परिवहन और संचार। • कौशल विकास और रोजगार संवर्द्धन– कार्यक्रम और नीतियां। सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण
राजस्थान की अर्थव्यवस्था
• अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य और राज्य बजट। • कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र की मौजूदा स्थिति, मुद्दे और सरकारी पहल। • आधारभूत संरचना का विकास: ऊर्जा, परिवहन और संचार। • ग्रामीण विकास, पंचायती राज और राज्य वित्त आयोग। • मूलभूत सामाजिक सेवाएं– शिक्षा और स्वास्थ्य। • राजस्थान सरकार की मुख्य कल्याणकारी योजनाएं।
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
• दैनिक जीवन में विज्ञान के मूलभूत तत्व। • कम्प्यूटर्स; सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी। • रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत के विशेष संदर्भ में। • वंशागति एवं विभिन्नता; अनुवांशिक–अभियांत्रिकी; जैव–प्रौद्योगिकी एवं नैनो–प्रौद्योगिकी। • मानव स्वास्थ्य देखभाल; आहार एवं पोषण; रोग एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम। • पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय परिवर्तन एवं उनका प्रभाव मूल्यांकन। • जैव–विविधता; प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संतत् विकास। • राजस्थान के विशेष संदर्भ में कृषि–विज्ञान, उद्यान–विज्ञान, वानिकी एवं पशुपालन। • राजस्थान तथा भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख सरकारी कार्यक्रम एवं नीतियां। • अभिनव वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रगति; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों का योगदान; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण।

Downloaded from www.pdf.tube

तार्किक विवेचन एवं मानसिक योग्यता

तार्किक दक्षता (निगमनात्मक, आगमनात्मक, अपवर्तनात्मक):—

- कथन एवं मान्यताएं
- कथन एवं तर्क
- कथन एवं निष्कर्ष
- कथन—कार्यवाही
- विश्लेषणात्मक तर्कक्षमता / विवेचनात्मक तर्कक्षमता

मानसिक योग्यता :—

- संख्या / अक्षर अनुक्रम
- कूटवाचन (कोडिंग—डीकोडिंग)
- संबंधों से संबंधित समस्याएं
- दिशा ज्ञान परीक्षण
- तार्किक वेन आरेख
- रैंकिंग एवं बैठक व्यवस्था
- आकार और उनके उपविभाजन

आधारभूत संख्यात्मक दक्षता :—

- अनुपात—समानुपात तथा साझा, लाभ एवं हानि
- प्रतिशत
- साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज
- समतलीय चित्रों के परिमाप एवं क्षेत्र
- आंकडों का विश्लेषण (सारणी, दण्ड—आरेख, रेखीय आलेख, पाई—चार्ट)
- माध्य (समांतर, गुणोत्तर एवं हरात्मक), माध्यिका एवं बहुलक
- क्रमचय एवं संचय
- प्रायिकता (सरल समस्याएं)

समसामयिक घटनाएँ एवं मुद्दे (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

- महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, स्थान और प्रासंगिक समकालीन मुद्दे
- कल्याण और विकास से संबंधित नई योजनाएँ, कार्यक्रम और पहल
- प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम
- खेल और क्रीड़ा से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं उपलब्धियाँ
- प्रमुख पुरस्कार, प्रकाशन और प्रतिष्ठित लेखक
- राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के अध्युपाय) अधिनियम, 2022

अजमेर
दिनांक 09.01.2026

मुख्य परीक्षा नियंत्रक

NODIA

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 01

भौतिक स्थलाकृतियाँ : पर्वत, पठार, मैदान एवं मरुस्थल

1. निम्नलिखित में से कौन-सी भूगर्भीय प्रक्रिया विश्व के प्रमुख वलित पर्वतों के निर्माण के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है?
(1) भू-पर्पटी के खंडों का बड़े पैमाने पर भ्रंशन और ऊर्ध्वाधर विस्थापन
(2) संपीड़न बलों के कारण भू-पर्पटी में मोड़ या वलन पड़ना
(3) भूगर्भीय समय के साथ ज्वालामुखीय सामग्री का संचय और निक्षेपण
(4) प्रमुख नदी प्रणालियों द्वारा ऊंचे पठारों का क्रमिक अपरदन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सूची-I (पर्वत का प्रकार) को सूची-II (उदाहरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (पर्वत का प्रकार)
A. वलित पर्वत
B. ब्लॉक (भ्रंशोत्थ) पर्वत
C. ज्वालामुखीय पर्वत
D. अवशिष्ट पर्वत
सूची-II: (उदाहरण)
i. वोसगेस
ii. हिमालय
iii. अरावली
iv. किलिमंजारो
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. ब्लॉक पर्वतों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) इनका निर्माण तब होता है जब बड़े क्षेत्र टूट जाते हैं और ऊर्ध्वाधर रूप से विस्थापित हो जाते हैं।
(2) नीचे धंसे हुए खंडों को 'ग्रैबेन' (द्रोणिका) कहा जाता है।
(3) ऊपर उठे हुए खंडों को 'ग्रैबेन' (द्रोणिका) कहा जाता है।
(4) यूरोप में वोसगेस पर्वत ब्लॉक पर्वत प्रणाली का एक उदाहरण है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. हिमालय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिमालय नवीन वलित पर्वत हैं जिनका निर्माण यूरेशियन और इंडो-ऑस्ट्रेलियाई विवर्तनिक प्लेटों के टकराने से हुआ है।
II. वे विश्व की सबसे ऊँची पर्वत प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं।
III. वे विवर्तनिक स्थिरता और भूकंपीय गतिविधियों की अनुपस्थिति द्वारा पहचाने जाते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निर्माण की विधि के आधार पर निम्नलिखित पर्वतों में से विषम को पहचानिए।
(1) माउंट फुजी
(2) माउंट किलिमंजारो
(3) सिएरा नेवादा
(4) माउंट वेसुवियस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एंडीज विश्व की सबसे लंबी महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखला है।
कारण (R): एंडीज का निर्माण मुख्य रूप से नाज़्का प्लेट और दक्षिण अमेरिकी प्लेट के अपसरण के कारण हुआ था।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. आल्प्स पर्वत श्रृंखला, जो यूरोप की एक प्रमुख भौतिक विशेषता है, मुख्य रूप से देशों के निम्नलिखित में से किस समूह में फैली हुई है?

(1) स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस का पाइरेनीज क्षेत्र
(2) जर्मनी, पोलैंड और यूक्रेन के पश्चिमी भाग
(3) नॉर्वे, स्वीडन और फिनलैंड के उत्तरी भाग
(4) फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, इटली और ऑस्ट्रिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. रॉकी पर्वत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये पश्चिमी उत्तरी अमेरिका में स्थित एक विशाल पर्वत श्रृंखला हैं।
II. इनका निर्माण लैरामाइड पर्वत निर्माणकारी घटना के दौरान हुआ था।
III. ये मुख्य रूप से तनावकारी बलों द्वारा निर्मित ब्लॉक पर्वत हैं।
IV. माउंट एल्बर्ट रॉकी पर्वत की सबसे ऊँची चोटी है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. अवशिष्ट पर्वत मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप बनते हैं?
(1) शुष्क क्षेत्रों में पवन द्वारा उड़ाई गई रेत का निरंतर निक्षेपण
(2) विशाल महाद्वीपीय प्लेटों का अभिसरण और सबडक्शन
(3) किसी मौजूदा ऊँचे क्षेत्र का दीर्घकालिक अनाच्छादन
(4) केंद्रीय ज्वालामुखीय निकास के माध्यम से मैग्मा का क्रमिक उद्भेदन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखलाओं की उनकी अनुमानित भौतिक लंबाई के घटते क्रम में सही अनुक्रम है?
(1) एंडीज, रॉकीज, हिमालय, आल्प्स
(2) एंडीज, हिमालय, रॉकीज, आल्प्स
(3) रॉकीज, एंडीज, हिमालय, आल्प्स
(4) हिमालय, एंडीज, रॉकीज, आल्प्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. ब्लैक फॉरेस्ट पर्वत, जो ब्लॉक पर्वत का एक प्रमुख उदाहरण है, किस देश में स्थित है?
(1) फ्रांस
(2) स्विट्ज़रलैंड
(3) इटली
(4) जर्मनी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. सूची-I (पर्वत श्रृंखला) को सूची-II (महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (पर्वत श्रृंखला)
A. एंडीज
B. आल्प्स
C. रॉकीज
D. हिमालय
सूची-II: (महाद्वीप)
i. उत्तरी अमेरिका
ii. एशिया
iii. दक्षिण अमेरिका
iv. यूरोप
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. ज्वालामुखीय पर्वतों और उनके संबंधित देशों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) माउंट फुजी - इंडोनेशिया के द्वीप
(2) माउंट वेसुवियस - स्पेन की मुख्य भूमि
(3) माउंट किलिमंजारो - तंजानिया
(4) माउंट क्राकाटोआ - जापान राष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. हिमालय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये भारतीय उपमहाद्वीप के लिए जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करते हैं।
II. ये गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी बारहमासी नदियों के स्रोत हैं।
III. विभिन्न ऊँचाई वाले क्षेत्रों के कारण इनमें वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध विविधता पाई जाती है।
IV. इनमें केवल आग्नेय चट्टानें पाई जाती हैं और कोई अवसादी संरचना नहीं होती है।
V. ये मध्य एशिया की ठंडी महाद्वीपीय वायु राशियों को भारत में प्रवेश करने से रोकते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. संयुक्त राज्य अमेरिका में सिएरा नेवादा पर्वतों का निर्माण मुख्य रूप से किस प्रकार के पर्वत निर्माण का उदाहरण है?
(1) ब्लॉक पर्वत निर्माण
(2) वलित पर्वत निर्माण
(3) ज्वालामुखीय चट्टान संचय
(4) अवशिष्ट अपक्षय प्रभाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. ब्लॉक पर्वतों के साथ रिफ्ट घाटी के निर्माण का प्राथमिक कारण क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) ऊपरी स्थलमंडल को मोड़ने वाला तीव्र क्षैतिज संपीड़न
(2) तनावकारी बलों के कारण भूपर्पटी का टूटना और धंसना
(3) गहरी U-आकार की घाटी बनाने वाला निरंतर हिमनद अपरदन
(4) कोमल अवसादी चट्टानों को हटाने वाला निरंतर पवन अपरदन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. वह पठार जो पूरी तरह या आंशिक रूप से पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा होता है, भौगोलिक रूप से क्या कहलाता है?
(1) महाद्वीपीय पठार
(2) अंतरापर्वतीय पठार
(3) गिरिपद पठार
(4) ज्वालामुखीय पठार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): तिब्बत का पठार भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
कारण (R): ग्रीष्मकाल में तिब्बत के पठार के अत्यधिक गर्म होने से एक शक्तिशाली ऊष्मीय निम्न-दाब क्षेत्र स्थापित होता है, जो हिंद महासागर से नमी युक्त हवाओं को खींचता है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. दक्कन के पठार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) भारत के पश्चिमी और दक्षिणी हिस्सों को कवर करने वाला एक बड़ा पठार
(2) मुख्य रूप से विशाल दरारी प्रकार के ज्वालामुखीय विस्फोटों द्वारा निर्मित क्षेत्र
(3) हल्के रंग की, अम्लीय रेत से बनी मृदा
(4) खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र जो कपास की खेती का समर्थन करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित प्रमुख पठारों को उनकी सामान्य भौगोलिक स्थिति के आधार पर उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. तिब्बत का पठार
II. दक्कन का पठार
III. कटंगा पठार
IV. पेटागोनिया का पठार
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. ब्राजील का पठार निम्नलिखित में से किस खनिज के व्यापक भंडार के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?
(1) कोयला और यूरेनियम
(2) तांबा और जस्ता
(3) लौह अयस्क और मैंगनीज
(4) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची-I (पठार का नाम) को सूची-II (पठार का प्रकार) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (पठार का नाम)
A. तिब्बत का पठार
B. दक्कन का पठार
C. पेटागोनिया का पठार
D. अंटार्कटिक पठार
सूची-II: (पठार का प्रकार)
i. महाद्वीपीय पठार
ii. गिरिपद पठार
iii. ज्वालामुखीय पठार
iv. अंतरापर्वतीय पठार
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. अफ्रीकी पठार वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि मुख्य रूप से:
(1) इसमें उपजाऊ जलोढ़ मैदानों का विश्व का सबसे बड़ा विस्तार है।
(2) यह वैश्विक चावल उत्पादन के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता है।
(3) यह पूरी तरह से मरुस्थलीय परिदृश्यों से रहित है, जिससे निरंतर कृषि संभव होती है।
(4) यहाँ सोने, हीरे और तांबे के विशाल भंडार हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

24. अफ्रीकी पठार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अफ्रीकी महाद्वीप का अधिकांश भाग ऊँचे पठारी क्षेत्रों से बना है।
II. पूर्वी अफ्रीकी पठार महान रिफ्ट घाटी प्रणाली द्वारा गहराई से खंडित है।
III. उच्च अक्षांशों के कारण पठारी क्षेत्र में पूरे वर्ष केवल हिमपात होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. पठार के रूप में उनके प्रमुख स्थलाकृति वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में से विषम को पहचानिए।
(1) अनातोलिया
(2) कटंगा
(3) अमेज़न
(4) कोलोराडो
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. दक्कन के पठार पर मृदा के निर्माण का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) बेसाल्टिक लावा प्रवाह के अपक्षय से निर्मित काली मृदा
(2) प्राचीन रूपांतरित चट्टानों के अपक्षय से निर्मित लाल मृदा
(3) प्रायद्वीपीय नदियों द्वारा निक्षेपित जलोढ़ मृदा
(4) कड़ाई से ठंडी जलवायु के तहत निर्मित लेटेराइट मृदा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. तिब्बत का पठार क्रमशः अपने दक्षिण और उत्तर में किन दो प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा है?
(1) काराकोरम और हिंदू कुश
(2) तियान शान और अल्ताई पर्वत
(3) हिमालय और ज़ाग्रोस पर्वत
(4) हिमालय और कुनलुन पर्वत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. विश्व के प्रमुख पठारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पेटागोनिया का पठार गिरिपद पठार का एक उदाहरण है।
II. दक्कन के पठार का ढाल सामान्यतः पूर्व से पश्चिम की ओर है।
III. तिब्बत के पठार को "विश्व की छत" के रूप में जाना जाता है।
IV. ब्राजील का पठार पूर्वी दक्षिण अमेरिका के एक बड़े हिस्से पर कब्जा करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. लोएस पठार, जो पवन और जल अपरदन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, मुख्य रूप से किस देश में स्थित है?
(1) भारत
(2) संयुक्त राज्य अमेरिका
(3) चीन
(4) अर्जेंटीना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन-सी महाद्वीपीय पठारों की सटीक विशेषता है?
(1) मुख्य रूप से पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में बने ऊँचे मैदान
(2) पूरी तरह से पर्वतों से घिरे उच्च-ऊँचाई वाले क्षेत्र
(3) पूरी तरह से सक्रिय और सुप्त ज्वालामुखीय निकासों वाले क्षेत्र
(4) सीमावर्ती निचले इलाकों से अचानक ऊपर उठे हुए विस्तृत क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. संयुक्त राज्य अमेरिका में कोलोराडो पठार को अक्सर किस परिघटना के क्लासिक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है?
(1) विशाल कैनियन बनाने वाली गहराई से कटी हुई अवसादी चट्टानें
(2) पिघलती हुई बर्फ की चादरों से बने विस्तृत हिमनद अपक्षेप मैदान
(3) एक विशाल अंतर्देशीय बेसिन बनाने वाला क्षेत्रीय विवर्तनिक धंसाव
(4) व्यापक रेत के टीलों के नेटवर्क बनाने वाला पवन-जनित निक्षेपण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. सूची-I (पठार) को सूची-II (क्षेत्र/देश) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (पठार)
A. अनातोलिया का पठार
B. कटंगा पठार
C. किम्बरले पठार
D. मैक्सिकन पठार
सूची-II: (क्षेत्र/देश)
i. ऑस्ट्रेलिया
ii. तुर्की
iii. उत्तरी अमेरिका
iv. कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

33. भू-आकृति विज्ञान में, नदीय अपरदन के अंतिम चरण के रूप में बनी एक विस्तृत, अपेक्षाकृत सपाट भूमि सतह को कहा जाता है:
(1) पेडीप्लेन
(2) संप्राय मैदान (पेनीप्लेन)
(3) बाढ़ का मैदान
(4) अपक्षेप मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. भारत-गंगा के मैदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका निर्माण सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियों के निक्षेपण कार्य द्वारा हुआ है।
II. यह विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है।
III. इसमें अत्यधिक उपजाऊ जलोढ़ मृदा पाई जाती है जो गहन कृषि के लिए आदर्श है।
IV. इस मैदान में पुराने जलोढ़ को खादर के रूप में जाना जाता है।
V. समुद्र की ओर इस मैदान का ढाल बहुत मंद है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. जलोढ़ मैदानों की सामान्य विशेषता क्या होती है?
(1) तीव्र ढाल और तेज नदी प्रवाह वाले क्षेत्र
(2) मोटे दाने वाले हिमनद टिल का प्रचुर संचय
(3) बाढ़ द्वारा छोड़े गए गाद और मृत्तिका के गहरे निक्षेप
(4) ज्वालामुखीय बेसाल्टिक परतों का व्यापक वितरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. अमेज़न बेसिन के विशाल मैदानों में अपेक्षाकृत कम जनसंख्या घनत्व का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) सुलभ मीठे पानी के संसाधनों की पूर्ण कमी
(2) अत्यधिक ठंडी सर्दियाँ जो साल भर कृषि को रोकती हैं
(3) गंभीर और विनाशकारी विवर्तनिक भूकंपों की उच्च आवृत्ति
(4) सघन वर्षावन और अस्वास्थ्यकर, आर्द्र जलवायु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. दिए गए मैदानों के प्रकारों के लिए निर्माण के प्रमुख कारक के आधार पर विषम को पहचानिए।
(1) जलोढ़ मैदान
(2) बाढ़ का मैदान
(3) लोएस मैदान
(4) डेल्टाई मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): लोएस के मैदान अक्सर अत्यधिक उत्पादक कृषि क्षेत्र होते हैं।
कारण (R): लोएस महीन कणों वाली, पवन-जनित गाद से बना होता है जो अच्छी तरह से वातित और खनिजों से भरपूर होती है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. उत्तरी अमेरिका के विशाल मैदान मुख्य रूप से दीर्घकालिक भूगर्भीय घटनाओं के किस क्रम से बने थे?
(1) क्रमिक ज्वालामुखीय विस्फोट और उसके बाद तीव्र पवन अपरदन
(2) तटीय किनारे को ऊपर उठाने वाला प्रशांत प्लेट का सबडक्शन
(3) विशाल भूमिगत चूना पत्थर की गुफाओं का बड़े पैमाने पर ढहना
(4) रॉकी पर्वत का अपक्षालन और उत्तरी हिमनद क्रिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

40. वह मैदान जो समुद्र या महासागर के किनारे स्थित होता है और समुद्री निक्षेपण या उभार द्वारा बनता है, विशेष रूप से कहलाता है:
(1) तटीय मैदान
(2) वितलीय मैदान
(3) जलोढ़ मैदान
(4) सरोवरीय मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अमेज़न बेसिन के मैदानों का सही वर्णन करता है?
(1) वे गेहूं की खेती के लिए उपयुक्त समशीतोष्ण घास के मैदान हैं।
(2) वे पूरी तरह से हिमनद अपक्षेप निक्षेपों द्वारा निर्मित हैं।
(3) वे विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वर्षावन निचले क्षेत्र का निर्माण करते हैं।
(4) वे एक प्रमुख शुष्क, ठंडे मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. सूची-I (मैदान का प्रकार) को सूची-II (निर्माणकारी कारक) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (मैदान का प्रकार)
A. जलोढ़ मैदान

B. हिमनद अपक्षेप मैदान
C. तटीय मैदान
D. लोएस मैदान

सूची-II: (निर्माणकारी कारक)
i. पिघलती बर्फ और हिम-जल
ii. पवन निक्षेपण
iii. नदी निक्षेपण
iv. समुद्री प्रक्रियाएं और समुद्र के स्तर में परिवर्तन

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. उत्तरी अमेरिका के विशाल मैदानों में देखी जाने वाली व्यापक गेहूं की खेती इस क्षेत्र की किस भौतिक विशेषता से सबसे उपयुक्त रूप से जुड़ी हुई है?
(1) 200 सेमी से अधिक निरंतर उच्च वार्षिक वर्षा
(2) बड़े और व्यस्त तटीय बंदरगाहों के सीधे निकट होना
(3) आश्रय प्रदान करने वाली उष्णकटिबंधीय लकड़ी की प्रचुर आपूर्ति
(4) विशाल, सपाट और उपजाऊ समशीतोष्ण घास के मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. भारत-गंगा के मैदान के भू-आकृति विज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भाबर पट्टी मोटे कंकड़ों के निक्षेपण के कारण अत्यधिक सरंध्र होती है।
II. धाराएं भाबर में गायब हो जाती हैं और तराई क्षेत्र में पुनः प्रकट होती हैं।
III. भांगर प्रतिवर्ष बाढ़ के पानी द्वारा निक्षेपित नवीन जलोढ़ का प्रतिनिधित्व करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. भारत-गंगा के मैदानों के संदर्भ में, भाबर पट्टी के ठीक दक्षिण में स्थित घने जंगलों से ढके दलदली और नम क्षेत्र को किस नाम से जाना जाता है?
(1) खादर
(2) भांगर
(3) तराई
(4) रेह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. मैदानों के प्रकार और उनकी विशेषताओं से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सरोवरीय मैदान - झीलों के भरने से निर्मित
(2) कार्स्ट मैदान - चूना पत्थर के घुलने से निर्मित
(3) संप्राय मैदान - लंबे समय तक नदीय अपरदन द्वारा निर्मित
(4) टिल मैदान - महीन कणों वाले पवन निक्षेपण द्वारा निर्मित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. लोएस मैदानों के निर्माण के लिए सामग्री के परिवहन और निक्षेपण के लिए मौलिक रूप से कौन-सा भूगर्भीय कारक उत्तरदायी है?
(1) पवन
(2) नदी का जल
(3) महासागरीय धाराएं
(4) गतिशील हिमनद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. हिमनद मैदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनका निर्माण हिमनदों के अपरदनात्मक और निक्षेपणात्मक कार्यों द्वारा होता है।
II. टिल मैदान अस्तरित हिमनद प्रवाह की एक असमान सतह होती है।
III. अपक्षेप मैदान हिम-जल द्वारा निक्षेपित स्तरित प्रवाह से बना होता है।
IV. ये विशेष रूप से विषुवतीय अक्षांशों में पाए जाते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

49. भौगोलिक वर्गीकरण में, किसी क्षेत्र को मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस मानदंड के आधार पर मरुस्थल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(1) पूरे वर्ष निरंतर अत्यधिक उच्च तापमान
(2) कम वार्षिक वर्षा के साथ गंभीर नमी की कमी
(3) रेत के टीलों की भारी प्रचुरता और मृदा की पूर्ण कमी
(4) स्थायी मानव निवास और जीवन की पूर्ण अनुपस्थिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित में से कौन-सा दिए गए मरुस्थलों का उनके अनुमानित कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के घटते क्रम में सही अनुक्रम है?
(1) सहारा, अरब, गोबी, अटाकामा
(2) अरब, सहारा, गोबी, अटाकामा
(3) सहारा, गोबी, अरब, अटाकामा
(4) सहारा, अरब, अटाकामा, गोबी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. उष्ण और शीत मरुस्थलों के बीच अंतर करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) उष्ण मरुस्थल आमतौर पर 15° और 30° अक्षांशों के बीच स्थित होते हैं, जबकि शीत मरुस्थल उच्च अक्षांशों या उच्च ऊँचाई पर पाए जाते हैं।
(2) सहारा उष्ण मरुस्थल का एक उदाहरण है, जबकि गोबी शीत मरुस्थल का एक उदाहरण है।
(3) शीत मरुस्थलों में किसी भी प्रकार का वर्षण नहीं होता है, जबकि उष्ण मरुस्थलों में शीतकालीन हिमपात होता है।
(4) उष्ण और शीत दोनों मरुस्थलों में विशिष्ट मरुद्भिद वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. सूची-I (मरुस्थल) को सूची-II (महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (मरुस्थल)
A. सहारा
B. अटाकामा
C. गोबी
D. ग्रेट विक्टोरिया
सूची-II: (महाद्वीप)
i. दक्षिण अमेरिका
ii. एशिया
iii. ऑस्ट्रेलिया
iv. अफ्रीका
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. अटाकामा मरुस्थल की अत्यधिक शुष्कता का मुख्य कारण निम्नलिखित में से किस भौगोलिक परिघटना को माना जाता है?
(1) एक विशाल भू-भाग के आंतरिक भाग में इसकी स्थिति
(2) इसकी विषुवतीय स्थिति के कारण उच्च वाष्पीकरण दर
(3) हम्बोल्ट धारा और एंडीज पर्वत की वृष्टि-छाया
(4) प्रारंभिक मानव बस्तियों के कारण हुआ तीव्र वनों की कटाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सहारा मरुस्थल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह विश्व का सबसे बड़ा उष्ण मरुस्थल है।
II. यह उत्तरी अफ्रीका के बड़े हिस्सों को कवर करता है।
III. इसका परिदृश्य एकसमान है, जिसमें पूरी तरह से रेत के टीले हैं और कोई पथरीले पठार नहीं हैं।
IV. नील नदी इस मरुस्थल के एक भाग से होकर बहती है।
V. यह पूरी तरह से दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. गोबी मरुस्थल, जो अपने विशाल बंजर विस्तार और पथरीले इलाके के लिए प्रसिद्ध है, को किस श्रेणी में रखा गया है?
(1) तटीय मरुस्थल
(2) उपोष्णकटिबंधीय उष्ण मरुस्थल
(3) व्यापारिक-पवन मरुस्थल
(4) मध्य-अक्षांश शीत मरुस्थल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित में से कौन 'मरुस्थलीकरण' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह प्रदर्शित करता है?
(1) जलवायु और मानवीय गतिविधियों के कारण शुष्क क्षेत्रों में भूमि का क्षरण
(2) समय के साथ विवर्तनिक बदलाव के कारण प्राकृतिक मरुस्थल का निर्माण
(3) तटों पर विशाल धूल भरी आँधियों द्वारा रेत का अचानक निक्षेपण
(4) सर्दियों के महीनों के दौरान पर्णपाती वनों का मौसमी सूखना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. 'उष्ण' या 'शीत' मरुस्थल के रूप में उनके वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित मरुस्थलों में से विषम को पहचानिए।
(1) मोजावे
(2) कालाहारी
(3) पेटागोनिया
(4) ग्रेट सैंडी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अरब का मरुस्थल एक अत्यधिक गर्म और शुष्क क्षेत्र है।
कारण (R): यह भौगोलिक रूप से उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब पट्टी के प्रभाव में स्थित है, जो अवरोही शुष्क वायु को बढ़ावा देती है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

59. अटाकामा मरुस्थल निम्नलिखित में से किसके प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले भंडार के लिए आर्थिक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है?
(1) कोयला और पीट
(2) बॉक्साइट और लौह अयस्क
(3) यूरेनियम और थोरियम
(4) सोडियम नाइट्रेट और तांबा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित उष्ण मरुस्थलों को वैश्विक स्तर पर उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. अटाकामा मरुस्थल
II. सहारा मरुस्थल
III. अरब का मरुस्थल
IV. थार का मरुस्थल
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. 'रब अल खाली', जिसे अक्सर एम्प्टी क्वार्टर के रूप में जाना जाता है, निम्नलिखित में से किस मरुस्थलीय क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता है?
(1) सहारा मरुस्थल
(2) गोबी मरुस्थल
(3) अरब का मरुस्थल
(4) थार का मरुस्थल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. सूची-I (स्थानीय मरुस्थलीय विशेषता) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (स्थानीय मरुस्थलीय विशेषता)
A. अर्ग
B. रेग
C. हमादा
D. वादी
सूची-II: (विवरण)
i. पथरीला मरुस्थलीय पठार
ii. रेत के टीलों वाला रेतीला मरुस्थल
iii. सूखी नदी घाटी
iv. कंकरीला मरुस्थलीय मैदान
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. नखलिस्तान मरुस्थलीय वातावरण में महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रिया मुख्य रूप से उनके निर्माण की ओर ले जाती है?
(1) पवन अपवाहन का भूमिगत जल स्तर तक पहुँचना
(2) ज्वालामुखीय गर्म झरने जो सतह को तोड़कर निकलते हैं
(3) प्रारंभिक सभ्यताओं द्वारा खोदे गए कृत्रिम बोरवेल
(4) मरुस्थलीय घाटियों में भारी तटीय कोहरे का संघनन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. शीत मरुस्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये आमतौर पर उच्च अक्षांशों पर समशीतोष्ण क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
II. वर्षण अक्सर बारिश के बजाय बर्फ के रूप में होता है।
III. गोबी और पेटागोनिया मरुस्थल इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. थार का मरुस्थल मुख्य रूप से किन दो देशों में स्थित है?
(1) भारत और अफगानिस्तान
(2) भारत और पाकिस्तान
(3) भारत और बांग्लादेश
(4) पाकिस्तान और ईरान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

66. राजस्थान के थार मरुस्थल क्षेत्र में वर्षा के प्रतिरूप का वर्णन करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे सटीक कथन है?
(1) अनिश्चित वर्षा जो पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है
(2) सालाना 100 सेमी की समान रूप से वितरित वर्षा
(3) ग्रीष्मकालीन मानसून से प्रचुर शीतकालीन वर्षा
(4) मानसून पूर्व के मौसम में होने वाली अधिकतम वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन-सी एकमात्र प्रमुख मौसमी नदी है जो राजस्थान में थार मरुस्थल के शुष्क मैदानों से होकर बहती है?
(1) बनास
(2) चंबल
(3) लूनी
(4) माही
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. थार मरुस्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पूर्व में अरावली श्रृंखला से घिरा हुआ है।

II. यह विश्व का सबसे घनी आबादी वाला मरुस्थल है।
III. इस क्षेत्र में प्रमुख मृदा का प्रकार काली कपास मृदा है।
IV. इंदिरा गांधी नहर ने इसके उत्तर-पश्चिमी हिस्से के कृषि परिदृश्य को काफी बदल दिया है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. एशिया महाद्वीप के भीतर उनकी भौगोलिक स्थिति को देखते हुए, निम्नलिखित मरुस्थलों में से विषम को पहचानिए।
(1) थार का मरुस्थल
(2) गोबी मरुस्थल
(3) मोजावे मरुस्थल
(4) अरब का मरुस्थल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. अरावली पर्वतमाला की स्थिति राजस्थान में थार मरुस्थल की शुष्कता में मुख्य रूप से कैसे योगदान देती है?
(1) बंगाल की खाड़ी से आने वाली नमी युक्त हवाओं को रोकना
(2) अरब सागर के मानसून के समानांतर स्थिति
(3) तीव्र ऊष्मा का विकिरण करना जो बादलों को वाष्पित कर देता है
(4) हिमालय की हवाओं को सीधे मैदानों में पहुँचाना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. राजस्थान के भौतिक विभाजन में, अत्यधिक शुष्क क्षेत्र जिसे व्यापक रेत के टीलों और लगभग नगण्य वनस्पति द्वारा पहचाना जाता है, स्थानीय रूप से क्या कहलाता है?
(1) बांगड़
(2) रोही
(3) खादर
(4) मरुस्थली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सूची-I (थार मरुस्थल की विशेषताएं) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I: (थार मरुस्थल की विशेषताएं)
A. बरखान
B. प्लाया
C. रन
D. धरियन

सूची-II: (विवरण)
i. उथली, अस्थायी खारे पानी की झीलें
ii. स्थानान्तरित रेत के टीले
iii. लवणीय दलदली क्षेत्र
iv. अर्धचंद्राकार रेत के टीले

(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. थार मरुस्थल की तुलना सहारा या अरब जैसे अन्य प्रमुख उष्ण मरुस्थलों से करने पर, कौन-सी जनसांख्यिकीय विशेषता थार को विशिष्ट रूप से परिभाषित करती है?
(1) एक ऐसा क्षेत्र जो स्थायी बस्तियों से पूरी तरह रहित है
(2) बिना कृषि वाले खानाबदोश समुदायों पर पूर्ण निर्भरता
(3) उच्च मानव और पशुधन जनसंख्या घनत्व
(4) बहुत कम भाषाई विविधता वाला क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. वैश्विक भौतिक स्थलाकृतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वलित पर्वत रचनात्मक प्लेट सीमाओं से जुड़े होते हैं।
II. दक्कन का पठार बाढ़ बेसाल्ट क्षेत्र का एक उदाहरण है।
III. अमेज़न का मैदान विशेष रूप से हिमनद निक्षेपण द्वारा बना है।
IV. सहारा मरुस्थल कर्क रेखा के आर-पार फैला हुआ है।
V. ब्लॉक पर्वतों में प्रमुख ग्रैबेन और हॉर्स्ट पाए जाते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल I, III और V
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. विभिन्न स्थलाकृतियों की तुलना करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) पर्वतों में आमतौर पर पठारों की तुलना में अधिक तीव्र ढाल और छोटा शिखर क्षेत्र होता है।
(2) पठार ऊँचे समतल भू-भाग होते हैं जो मैदानों की तुलना में संरचनात्मक रूप से जटिल हो सकते हैं।
(3) मरुस्थल मैदानों, पठारों और यहाँ तक कि पर्वत श्रृंखलाओं के बीच भी हो सकते हैं।
(4) दुनिया भर के सभी मैदान विशेष रूप से नदियों के निक्षेपण कार्य द्वारा निर्मित होते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. थार मरुस्थल की भौतिक विशेषताओं से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) लूनी नदी - हिमालय से निकलती है
(2) इंदिरा गांधी नहर - हरिके बैराज से जल प्राप्त करती है
(3) सांभर झील - एक प्रमुख मीठे पानी की झील
(4) बरखान - हवा की दिशा के समानांतर पाए जाने वाले अनुदैर्ध्य रेत के टीले
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

77. थार मरुस्थल में रेत के टीलों का निरंतर निर्माण और स्थानांतरण किस प्रमुख भू-आकृतिक प्रक्रिया का प्रभाव है?
(1) नदीय अपरदन
(2) हिमनद प्लकिंग
(3) पवन-जनित परिवहन और निक्षेपण
(4) विवर्तनिक सबडक्शन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राजस्थान के भूगोल के संदर्भ में बरखान टीले विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। उनकी प्राथमिक विशिष्ट भौतिक विशेषता क्या है?
(1) वे हवा की दिशा के समानांतर रेत की लंबी, सीधी लकीरें हैं।
(2) वे परिवर्तनशील हवाओं द्वारा निर्मित कई भुजाओं वाले तारे के आकार के टीले हैं।
(3) वे सघन मरुस्थलीय झाड़ियों द्वारा मजबूती से टिके हुए स्थिर टीले हैं।
(4) वे अर्धचंद्राकार टीले हैं जिनके सिरे हवा की दिशा में आगे की ओर होते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. प्रमुख वलित पर्वतों का अध्ययन करते समय, माउंट ब्लैंक को निम्नलिखित में से किस पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी के रूप में जाना जाता है?
(1) आल्प्स
(2) रॉकीज
(3) एंडीज
(4) हिमालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राजस्थान के लिए थार मरुस्थल के आर्थिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(1) यह राज्य के आवश्यक संसाधनों पर पूर्ण बोझ के रूप में कार्य करता है।
(2) नवीकरणीय ऊर्जा और खनिज संपदा की प्रचुर संभावना।
(3) भीषण मरुस्थलीय धूल भरी आँधियों के कारण ऊर्जा की कोई संभावना नहीं।
(4) प्राचीन, सूखे तटों के साथ मछली पकड़ने तक सीमित मूल्य।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) संपीड़न बलों के कारण भू-पर्पटी में मोड़ या वलन पड़ना
पृथ्वी के आंतरिक संपीड़न बल तब कार्य करते हैं जब विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे की ओर बढ़ती हैं। यह प्रक्रिया भू-पर्पटी की परतों में मोड़ या वलन उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है, जिससे हिमालय जैसे विशाल वलित पर्वतों का निर्माण होता है। इन पर्वतों की संरचना अत्यंत जटिल होती है, जिसमें ऊँचे शिखर और गहरी घाटियाँ पाई जाती हैं। यह भूगर्भीय घटना मुख्य रूप से पर्वत निर्माणकारी हलचलों का परिणाम है।

2. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
पर्वतों का वर्गीकरण उनकी निर्माण प्रक्रियाओं के आधार पर किया जाता है। हिमालय का निर्माण संपीड़न बलों द्वारा वलन की प्रक्रिया से हुआ है, अतः यह वलित पर्वत है। वोसगेस पर्वत विस्थापन और भ्रंशन के कारण निर्मित एक भ्रंशोत्थ पर्वत है। किलिमंजारो ज्वालामुखीय गतिविधियों का परिणाम है, जबकि अरावली का वर्तमान स्वरूप निरंतर अपरदन के कारण शेष बचा हुआ अवशिष्ट भाग है। यह विभिन्न भू-आकृतिक प्रक्रियाओं को स्पष्ट करता है।

3. (3) ऊपर उठे हुए खंडों को 'ग्रैबेन' (द्रोणिका) कहा जाता है।
भ्रंशोत्थ पर्वतों का निर्माण तब होता है जब भू-पर्पटी का एक बड़ा भाग विवर्तनिक बलों के कारण टूटकर लंबवत रूप से विस्थापित हो जाता है। इस प्रक्रिया में, ऊपर की ओर उठे हुए भू-भागों को 'उत्खंड' (हॉर्स्ट) कहा जाता है, जबकि नीचे धंसे हुए हिस्सों को 'द्रोणिका' (ग्रैबेन) कहा जाता है। अतः ऊपर उठे खंडों को द्रोणिका कहना तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से तनावकारी बलों से उत्पन्न होती है।

4. (1) केवल I और II
हिमालय विश्व की नवीनतम और सर्वोच्च पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। इसका निर्माण यूरेशियन और भारतीय प्लेटों के मध्य होने वाले विवर्तनिक टकराव के परिणामस्वरूप हुआ है। यह क्षेत्र वर्तमान में भी सक्रिय निर्माण की प्रक्रिया में है, जिससे यहाँ निरंतर भूकंपीय गतिविधियाँ होती रहती हैं। अतः हिमालय को विवर्तनिक रूप से स्थिर या भूकंप मुक्त क्षेत्र कहना भौगोलिक तथ्यों के पूर्णतः विपरीत और त्रुटिपूर्ण है। यहाँ भूगर्भीय हलचलें निरंतर जारी हैं।

5. (3) सिएरा नेवादा
माउंट फुजी, किलिमंजारो और वेसुवियस का निर्माण पृथ्वी के आंतरिक भाग से निकलने वाले मैग्मा और राख के संचय से हुआ है, जिससे ये ज्वालामुखीय पर्वत कहलाते हैं। इसके विपरीत, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित सिएरा नेवादा एक प्रमुख भ्रंशोत्थ पर्वत है, जिसका निर्माण भ्रंशन और विस्थापन की प्रक्रिया से हुआ है। अतः निर्माण विधि की भिन्नता के कारण सिएरा नेवादा अन्य पर्वतों से भिन्न और एक विवर्तनिक उत्खंड संरचना है।

6. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
एंडीज पर्वत श्रृंखला दक्षिण अमेरिका में स्थित विश्व की सबसे लंबी महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखला है। इसका निर्माण नाज़्का प्लेट और दक्षिण अमेरिकी प्लेट के अभिसरण या टकराव के कारण हुआ है, न कि उनके अपसरण से। अभिसरण के दौरान एक प्लेट के नीचे धंसने से वलन की प्रक्रिया हुई। नाज़्का और दक्षिण अमेरिकी प्लेटों के मध्य अपसरण का दावा भौगोलिक रूप से पूर्णतः त्रुटिपूर्ण और असत्य माना जाता है। यह पर्वत तंत्र वलन का परिणाम है।

7. (4) फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, इटली और ऑस्ट्रिया
आल्प्स मध्य यूरोप में स्थित एक महत्वपूर्ण वलित पर्वत श्रृंखला है। यह पर्वत तंत्र फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्लोवेनिया जैसे कई देशों में विस्तृत है। इसकी सर्वोच्च चोटी माउंट ब्लैंक फ्रांस और इटली की सीमा पर स्थित है। यह क्षेत्र अपनी हिमाच्छादित चोटियों और हिमनद झीलों के लिए प्रसिद्ध है, जो यूरोप की प्रमुख जल प्रणालियों के लिए जल के मुख्य स्रोत के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

8. (2) केवल I, II और IV
रॉकी पर्वत उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी भाग में विस्तृत एक विशाल वलित पर्वत श्रृंखला है। इनका निर्माण मुख्य रूप से लैरामाइड पर्वत निर्माणकारी घटना के दौरान हुआ था। माउंट एल्बर्ट इस श्रृंखला का सर्वोच्च शिखर है। भौगोलिक रूप से, ये पर्वत संपीड़न बलों द्वारा निर्मित वलित पर्वत हैं, न कि तनावकारी बलों से बने भ्रंशोत्थ पर्वत। यह तथ्य इन्हें वलित पर्वतों की श्रेणी में रखता है और इनकी विशिष्ट भूगर्भीय संरचना निर्धारित करता है।

9. (3) किसी मौजूदा ऊँचे क्षेत्र का दीर्घकालिक अनाच्छादन
अवशिष्ट पर्वत मूल रूप से प्राचीन उच्च पठार या पर्वत होते हैं जो समय के साथ बाह्य कारकों के प्रभाव में आते हैं। पवन, जल और हिमनद जैसे अपरदन के कारकों द्वारा इन संरचनाओं का निरंतर अनाच्छादन और क्षरण होता रहता है। इस प्रक्रिया के अंत में जो कठोर चट्टानी भाग शेष रह जाते हैं, उन्हें अवशिष्ट पर्वत कहा जाता है। भारत में अरावली पर्वत श्रृंखला इस प्रकार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अपनी मूल ऊँचाई खो चुका है।

10. (1) एंडीज, रॉकीज, हिमालय, आल्प्स
विश्व की प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं की लंबाई में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। दक्षिण अमेरिका की एंडीज श्रृंखला लगभग 7000 किलोमीटर के साथ सर्वाधिक लंबी है। इसके पश्चात उत्तरी अमेरिका की रॉकीज श्रृंखला आती है, जिसकी लंबाई लगभग 4800 किलोमीटर है। एशिया की हिमालय श्रृंखला

Downloaded from www.pdf.tube

लगभग 2400 किलोमीटर लंबी है, जबकि यूरोप की आल्प्स श्रृंखला की लंबाई लगभग 1200 किलोमीटर है। यह क्रम उनके भौगोलिक विस्तार और महाद्वीपीय लंबाई को सटीक रूप से दर्शाता है।

11. (4) जर्मनी
ब्लैक फॉरेस्ट जर्मनी के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित एक वनाच्छादित पर्वत श्रृंखला है। यह भू-आकृति विज्ञान की दृष्टि से एक भ्रंशोत्थ पर्वत का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण राइन भ्रंश घाटी के समानांतर भूमि के ऊपर उठने से हुआ है। यहाँ की मृदा और जलवायु शंकुधारी वनों के विकास के लिए अनुकूल है। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, खनिज संसाधनों और राइन नदी के साथ भौगोलिक निकटता के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध और अत्यंत महत्वपूर्ण है।

12. (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
एंडीज पर्वत श्रृंखला दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है। आल्प्स मध्य यूरोप की एक प्रमुख पर्वत प्रणाली है जो कई देशों को जोड़ती है। रॉकीज उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी भाग में स्थित एक विस्तृत पर्वत श्रृंखला है। हिमालय पर्वत तंत्र एशिया महाद्वीप में स्थित है, जो भारतीय उपमहाद्वीप को तिब्बत के पठार से पृथक करता है। ये सभी श्रृंखलाएं अपने महाद्वीपों की जलवायु और स्थलाकृति को स्थायी रूप से प्रभावित करती हैं।

13. (3) माउंट किलिमंजारो - तंजानिया
माउंट किलिमंजारो अफ्रीका महाद्वीप का सर्वोच्च पर्वत है और यह तंजानिया में स्थित है। यह एक सुप्त ज्वालामुखीय पर्वत है जिसकी चोटी पर सदैव हिम जमी रहती है। माउंट फुजी जापान का प्रतीक है, जबकि माउंट वेसुवियस इटली में स्थित एक सक्रिय ज्वालामुखी है। इसी प्रकार, क्राकाटोआ इंडोनेशिया का एक प्रसिद्ध ज्वालामुखीय द्वीप है। अतः विकल्पों में से केवल किलिमंजारो और तंजानिया का युग्म ही भौगोलिक रूप से सटीक और सही मिलान प्रदर्शित करता है।

14. (2) केवल I, II, III और V
हिमालय भारत की जलवायु को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। यह उत्तर से आने वाली शीतल पवनों को रोकता है और मानसूनी पवनों को अवरुद्ध कर वर्षा कराता है। यह गंगा जैसी बारहमासी नदियों का उद्गम स्थल और जैव विविधता से समृद्ध है। हिमालय में केवल आग्नेय चट्टानें ही नहीं, बल्कि अवसादी और रूपांतरित चट्टानें भी प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। इसकी समुद्री उत्पत्ति के कारण यहाँ जीवाश्म युक्त अवसादी परतें विद्यमान हैं, जो कथन IV को गलत बनाती हैं।

15. (1) ब्लॉक पर्वत निर्माण
संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया में स्थित सिएरा नेवादा पर्वत श्रृंखला भ्रंशोत्थ पर्वत का एक विशाल उदाहरण है। इसका निर्माण भू-पर्पटी में भ्रंशन की प्रक्रिया के कारण हुआ है, जहाँ विशाल शैल खंड ऊपर की ओर उत्थापित हो गए हैं। इन पर्वतों की विशेषता यह है कि इनका एक ढाल अत्यंत तीव्र और दूसरा ढाल मंद होता है। यह भूगर्भीय संरचना मुख्य रूप से तनावकारी बलों और विवर्तनिक विस्थापन का प्रत्यक्ष परिणाम मानी जाती है।

16. (2) तनावकारी बलों के कारण भूपर्पटी का टूटना और धंसना
भ्रंश घाटी का निर्माण विवर्तनिक प्लेटों के मध्य तनावकारी बलों के सक्रिय होने से होता है। जब पृथ्वी की ऊपरी परत खिंचाव के कारण टूटती है, तो दो समानांतर भ्रंशों के मध्य का भू-भाग नीचे की ओर धंस जाता है। यह धंसा हुआ भाग ही भ्रंश घाटी या द्रोणिका कहलाता है। इसके विपरीत, जो पार्श्व भाग ऊपर रह जाते हैं, वे भ्रंशोत्थ पर्वत का निर्माण करते हैं। यह संपूर्ण प्रक्रिया मुख्यतः भूगर्भीय खिंचाव और लंबवत विस्थापन पर आधारित है।

17. (2) अंतरापर्वतीय पठार
वे पठार जो चारों ओर से उच्च पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे होते हैं, उन्हें अंतरापर्वतीय पठार कहा जाता है। तिब्बत का पठार इस श्रेणी का सर्वप्रमुख उदाहरण है, जो हिमालय और कुनलुन पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। इन पठारों का निर्माण पर्वत निर्माणकारी प्रक्रियाओं के दौरान मध्यवर्ती भू-भाग के ऊपर उठने से होता है। अपनी अत्यधिक ऊँचाई और भौगोलिक स्थिति के कारण, ये क्षेत्र प्रायः शुष्क और शीतल जलवायु वाले होते हैं क्योंकि पर्वत वर्षा को रोक लेते हैं।

18. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तिब्बत का पठार अपनी विशाल ऊँचाई और विस्तार के कारण ग्रीष्म ऋतु में सौर विकिरण से अत्यधिक तप्त हो जाता है। यह ऊष्मा वायुमंडल में एक शक्तिशाली ऊष्मीय निम्न-दाब केंद्र निर्मित करती है। यह निम्न-दाब क्षेत्र हिंद महासागर की ओर से आने वाली आर्द्र मानसूनी पवनों को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर आकर्षित करने के लिए एक पंप की भाँति कार्य करता है। इस ऊष्मीय प्रभाव के बिना दक्षिण-पश्चिमी मानसून की तीव्रता और वितरण अत्यंत क्षीण हो सकता है।

NODIA

19. (3) हल्के रंग की, अम्लीय रेत से बनी मृदा
दक्कन का पठार मुख्य रूप से बेसाल्टिक लावा के प्रवाह से निर्मित है, जो प्राचीन काल में दरारी उद्गेदन के माध्यम से हुआ था। इस लावा के निरंतर अपक्षय के कारण यहाँ काली मृदा का निर्माण हुआ है, जिसे 'रेगुर' भी कहा जाता है। यह मृदा खनिज तत्वों से भरपूर और उच्च जल धारण क्षमता वाली होती है, जो कपास की कृषि के लिए सर्वोत्तम है। अतः इसे हल्की रंग की या रेतीली अम्लीय मृदा कहना वैज्ञानिक रूप से सर्वथा अनुचित और गलत है।

20. (1) I, II, III, IV
इन पठारों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम उनके अक्षांशीय विस्तार पर आधारित है। तिब्बत का पठार मध्य एशिया में उत्तरी गोलार्ध के उच्च अक्षांशों पर स्थित है। इसके दक्षिण में भारत का दक्कन पठार स्थित है। अफ्रीकी महाद्वीप के मध्य-दक्षिण भाग में कटंगा पठार पाया जाता है। अंत में, दक्षिण अमेरिका के सुदूर दक्षिणी भाग में पेटागोनिया का पठार स्थित है। यह अनुक्रम भूमध्य रेखा के सापेक्ष उत्तर से दक्षिण की भौगोलिक दिशा को स्पष्ट करता है।

21. (3) लौह अयस्क और मैंगनीज
ब्राजील का पठार विश्व के प्राचीनतम भू-भागों में से एक है और धात्विक खनिजों के भंडार के संदर्भ में अत्यंत समृद्ध है। यहाँ विशेष रूप से उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क और मैंगनीज के विशाल निक्षेप पाए जाते हैं, जो ब्राजील की अर्थव्यवस्था और वैश्विक औद्योगिक आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, यहाँ स्वर्ण और अन्य बहुमूल्य धातुएं भी प्रचुरता में मिलती हैं। यह खनिज संपन्नता इस क्षेत्र को वैश्विक खनन उद्योग का एक प्रमुख केंद्र बनाती है।

22. (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
तिब्बत का पठार पर्वतों से घिरा होने के कारण अंतरापर्वतीय पठार है। दक्कन का पठार लावा प्रवाह से निर्मित होने के कारण ज्वालामुखीय पठार की श्रेणी में आता है। पेटागोनिया का पठार एंडीज पर्वत के पाद प्रदेश में स्थित होने के कारण गिरिपद पठार का उदाहरण है। अंटार्कटिक पठार एक विशाल स्वतंत्र भू-भाग के रूप में विस्तृत होने के कारण महाद्वीपीय पठार कहलाता है। यह वर्गीकरण उनकी उत्पत्ति, स्थान और आस-पास की भौतिक विशेषताओं के आधार पर सटीक रूप से किया गया है।

23. (4) यहाँ सोने, हीरे और तांबे के विशाल भंडार हैं।
अफ्रीकी पठारी क्षेत्र प्राचीन कठोर चट्टानों से निर्मित है, जो इसे बहुमूल्य खनिजों का भंडार गृह बनाते हैं। दक्षिण अफ्रीका के पठारी भागों में स्वर्ण और हीरे की विश्व प्रसिद्ध खदानें स्थित हैं। इसी प्रकार, कांगो और जाम्बिया के पठारी क्षेत्रों में तांबे के व्यापक भंडार विद्यमान हैं। यह खनिज संपदा अंतरराष्ट्रीय व्यापार और औद्योगिक उत्पादन के लिए अपरिहार्य है। कृषि की तुलना में खनन गतिविधियाँ इस क्षेत्र के आर्थिक महत्व को वैश्विक स्तर पर अधिक पहचान प्रदान करती हैं।

24. (3) केवल III
अफ्रीकी पठार का अधिकांश भाग उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित है, जहाँ तापमान सामान्यतः उच्च रहता है। अतः यहाँ संपूर्ण वर्ष केवल हिमपात होने का दावा पूर्णतः अतार्किक और त्रुटिपूर्ण है। यद्यपि पूर्वी अफ्रीका की कुछ अत्यंत उच्च चोटियों पर हिम पाई जाती है, किंतु संपूर्ण पठारी क्षेत्र की जलवायु मुख्य रूप से उष्ण और शुष्क अथवा सवाना प्रकार की है। महान भ्रंश घाटी द्वारा विखंडित होना और ऊँचे पठार होना इस महाद्वीप की वास्तविक विशेषताएं हैं।

25. (3) अमेज़न
अनातोलिया, कटंगा और कोलोराडो तीनों ही पठारी क्षेत्र हैं जो अपनी विशिष्ट ऊँचाई और समतल शीर्ष के लिए जाने जाते हैं। इसके विपरीत, अमेज़न एक विशाल बेसिन या निम्न मैदानी क्षेत्र है, जिसका निर्माण अमेज़न नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है। यह विश्व का सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय वर्षावन क्षेत्र है और स्थलाकृतिक रूप से पठारों की तुलना में बहुत नीचा है। अतः अमेज़न इस समूह में एक भिन्न और विषम भौगोलिक इकाई है।

26. (1) बेसाल्टिक लावा प्रवाह के अपक्षय से निर्मित काली मृदा
दक्कन ट्रैप का निर्माण क्रिटेशियस युग के दौरान हुए वृहद स्तर पर दरारी ज्वालामुखीय उद्गेदन से हुआ था। इस उद्गेदन से निकला बेसाल्टिक लावा परतों के रूप में निक्षेपित हो गया। लाखों वर्षों तक इन आग्नेय चट्टानों के भौतिक और रासायनिक अपक्षय के कारण गहरी काली मृदा का विकास हुआ। यह मृदा लोहे और मैग्नीशियम से भरपूर होती है और नमी धारण करने की विलक्षण क्षमता रखती है। इसी कारण यह क्षेत्र कपास की कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

27. (4) हिमालय और कुनलुन पर्वत
तिब्बत का पठार भौगोलिक रूप से दो अत्यंत उच्च पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। इसके दक्षिण में विशाल हिमालय पर्वतमाला स्थित है, जो इसे भारतीय उपमहाद्वीप से पृथक करती है। इसके उत्तर में कुनलुन पर्वत श्रृंखला स्थित है, जो इसे मध्य एशिया के तारिम बेसिन से अलग करती है। इन दोनों पर्वत प्रणालियों के मध्य स्थित होने के कारण ही इसे "अंतरापर्वतीय पठार" कहा जाता है। यह स्थिति इसकी जलवायु और पारिस्थितिकी को विशिष्ट, कठोर और अद्वितीय बनाती है।

28. (2) केवल I, III और IV
पेटागोनिया एक गिरिपद पठार है और तिब्बत का पठार अपनी ऊँचाई के कारण 'विश्व की छत' कहलाता है। ब्राजील का पठार दक्षिण अमेरिका के पूर्वी भाग का एक प्रमुख हिस्सा है। दक्कन के पठार का सामान्य ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है, जिसके कारण अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियाँ बंगाल की खाड़ी में विसर्जित होती हैं। कथन II में ढाल को पूर्व से पश्चिम बताना त्रुटिपूर्ण है। अन्य तीनों कथन इन पठारों की वास्तविक भौगोलिक और क्षेत्रीय विशेषताओं का सही वर्णन करते हैं।

29. (3) चीन
लोएस पठार उत्तर-मध्य चीन में स्थित एक अद्वितीय भौगोलिक क्षेत्र है। इसका निर्माण गोबी मरुस्थल से पवन द्वारा उड़ाकर लाई गई महीन पीली गाद के संचय से हुआ है। यह मृदा अत्यंत उपजाऊ होती है किंतु भुरभुरी होने के कारण जल और पवन अपरदन के प्रति बहुत संवेदनशील है। ह्वांग-हो नदी इसी पठार से प्रवाहित होती है और यहाँ की मृदा के कारण ही इसका नाम 'पीली नदी' पड़ा है। यह क्षेत्र प्राचीन चीनी सभ्यता का एक प्रमुख केंद्र रहा है।

30. (4) सीमावर्ती निचले इलाकों से अचानक ऊपर उठे हुए विस्तृत क्षेत्र
महाद्वीपीय पठार उन विस्तृत उच्च भू-भागों को कहा जाता है जो अपने निकटवर्ती निम्न क्षेत्रों या समुद्र तटों से एकाएक ऊपर की ओर उठते हैं। इनकी विशेषता इनका विशाल विस्तार और अपेक्षाकृत समतल या लहरदार ऊपरी सतह होती है। ये सामान्यतः पर्वत श्रृंखलाओं से सीधे संबद्ध नहीं होते, बल्कि प्राचीन स्थिर भू-खंडों का भाग होते हैं। अफ्रीकी पठार और पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई पठार इस प्रकार की भौगोलिक संरचना के सर्वप्रमुख वैश्विक उदाहरण माने जाते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

31. (1) विशाल कैनियन बनाने वाली गहराई से कटी हुई अवसादी चट्टानें
कोलोराडो पठार संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह क्षेत्र विशेष रूप से अपनी गहराई से कटी हुई घाटियों और महाखड्डों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें 'ग्रैंड कैनियन' सर्वप्रमुख है। लाखों वर्षों से कोलोराडो नदी और उसकी सहायक नदियों ने पठार की अवसादी चट्टानों को काटकर इन भव्य संरचनाओं का निर्माण किया है। यह भूगर्भीय प्रक्रिया नदीय अपरदन और शुष्क जलवायु के संयुक्त प्रभाव का एक असाधारण उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो अद्वितीय स्थलाकृतियाँ निर्मित करती है।

32. (2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
अनातोलिया का पठार तुर्की के मध्य भाग में स्थित है, जो ऐतिहासिक और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कटंगा पठार कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है और खनिज संपदा के लिए विख्यात है। किम्बरले पठार पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का एक प्राचीन और ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र है। मैक्सिकन पठार उत्तरी अमेरिका के दक्षिणी भाग में, विशेष रूप से मैक्सिको में स्थित है। यह मिलान इन पठारों की सटीक महाद्वीपीय और क्षेत्रीय स्थिति को स्पष्ट रूप से और प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करता है।

33. (2) संप्राय मैदान (पेनीप्लेन)
अपरदन चक्र के अंतिम चरण में, जब नदियाँ किसी उच्च भू-भाग को लगभग आधार तल तक काट देती हैं, तो एक मंद ढाल वाला विस्तृत मैदान निर्मित होता है। इसे भू-आकृति विज्ञान में संप्राय मैदान या 'पेनीप्लेन' कहा जाता है। इस सतह पर यत्र-तत्र कठोर चट्टानों के अवशिष्ट टीले दृष्टिगोचर होते हैं जिन्हें 'मोनाडनॉक' कहते हैं। यह संरचना इस तथ्य का प्रमाण है कि संबंधित क्षेत्र ने अपरदन की एक लंबी अवधि पूर्ण कर ली है और वह अब समतल हो गया है।

34. (1) केवल I, II, III और V
भारत-गंगा का मैदान हिमालयी नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है, जो इसे अत्यधिक उर्वर और सघन जनसंख्या वाला बनाता है। इसका ढाल समुद्र की ओर अत्यंत मंद है। इस मैदान में प्राचीन जलोढ़ को 'बांगर' कहा जाता है, जबकि नवीन जलोढ़ को 'खादर' कहा जाता है। कथन IV में प्राचीन जलोढ़ को खादर कहना त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि खादर प्रतिवर्ष बाढ़ द्वारा लाई गई नवीन मृदा होती है। अन्य सभी तथ्य इस मैदान की भौगोलिक विशेषताओं को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

35. (3) बाढ़ द्वारा छोड़े गए गाद और मृत्तिका के गहरे निक्षेप
जलोढ़ मैदानों का निर्माण मुख्य रूप से नदियों की निक्षेपण प्रक्रिया द्वारा होता है। जब नदियाँ पर्वतीय क्षेत्रों से निकलकर मैदानी भागों में प्रवेश करती हैं, तो उनकी गति मंद हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, वे अपने साथ लाए गए महीन गाद, मृत्तिका और रेत के कणों को बाढ़ के दौरान निकटवर्ती क्षेत्रों में निक्षेपित कर देती हैं। समय के साथ ये निक्षेप गहरी परतों के रूप में संचित हो जाते हैं, जिससे उपजाऊ जलोढ़ मैदानों का विकास होता है। यह कृषि उत्पादन के लिए अनिवार्य है।

36. (4) सघन वर्षावन और अस्वास्थ्यकर, आर्द्र जलवायु
अमेज़न बेसिन विश्व का विशालतम मैदानी क्षेत्र होने के उपरांत भी विरल जनसंख्या वाला है। इसका मुख्य कारण यहाँ का सघन और अभेद्य वर्षावन है, जिसे 'सेल्वास' कहा जाता है। यहाँ की जलवायु अत्यधिक उष्ण और आर्द्र है, जो रोगों के प्रसार के लिए अनुकूल और मानव स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण है। साथ ही, सघन वनों के कारण परिवहन और संचार के साधनों का विकास अत्यंत दुष्कर हो जाता है, जिससे यह क्षेत्र स्थायी मानव अधिवास के लिए अनुपयुक्त बना रहता है।

37. (3) लोएस मैदान
जलोढ़ मैदान, बाढ़ के मैदान और डेल्टाई मैदान तीनों का निर्माण मुख्य रूप से नदियों के प्रवाहित जल द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से होता है, अर्थात ये जल-जनित संरचनाएं हैं। इसके विपरीत, लोएस मैदान का निर्माण पवन द्वारा उड़ाकर लाई गई महीन गाद के निक्षेपण से होता है। अतः लोएस मैदान अपने निर्माणकारी कारक (पवन) के आधार पर जल-निर्मित मैदानों के इस समूह से पूर्णतः भिन्न और विषम श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

38. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लोएस के मैदान पवन-जनित निक्षेपों से निर्मित होते हैं, जिनमें गाद के कण अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। यह मृदा स्वाभाविक रूप से सरंध्र और वातित होती है, जिससे पौधों की जड़ों को वायु आसानी से प्राप्त होती है। साथ ही, इसमें खनिजों की प्रचुरता होती है जो फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक हैं। अपनी इन भौतिक और रासायनिक विशेषताओं के कारण, लोएस वाले क्षेत्र विश्व के सर्वाधिक उपजाऊ कृषि क्षेत्रों में गिने जाते हैं, जैसा कि उत्तर-मध्य चीन के क्षेत्रों में प्रत्यक्ष है।

39. (4) रॉकी पर्वत का अपक्षालन और उत्तरी हिमनद क्रिया
उत्तरी अमेरिका के 'ग्रेट प्लेन्स' का निर्माण एक जटिल भूगर्भीय प्रक्रिया का परिणाम है। पश्चिम में स्थित रॉकी पर्वत के अपरदन और वहां से नदियों द्वारा लाए गए तलछट ने इन मैदानों की आधारशिला रखी। इसके पश्चात, हिमयुग के दौरान उत्तरी भागों से आए विशाल हिमनदों ने अपनी गति और गलन की प्रक्रिया से यहाँ की सतह को समतल किया और उर्वर मृदा निक्षेपित की। यह दोहरा प्रभाव इन मैदानों को विस्तृत, सपाट और कृषि की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान और महत्वपूर्ण बनाता है।

40. (1) तटीय मैदान
तटीय मैदान वे समतल भू-भाग हैं जो महाद्वीपों के किनारों पर स्थित होते हैं और समुद्र अथवा महासागर से संलग्न होते हैं। इनका निर्माण दो प्रक्रियाओं से संभव है: या तो समुद्र तल में गिरावट या भूमि के उत्थान से निमज्जित भाग बाहर आ जाते हैं, अथवा समुद्री तरंगों और नदियों द्वारा तट पर तलछट के जमाव से होता है। भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदान इसके उत्तम उदाहरण हैं, जो मत्स्य पालन और सघन कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

41. (3) वे विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वर्षावन निचले क्षेत्र का निर्माण करते हैं।
अमेज़न बेसिन दक्षिण अमेरिका में स्थित एक विशाल मैदानी क्षेत्र है जो अमेज़न नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित होता है। यह क्षेत्र अपनी अत्यधिक वर्षा और उष्णकटिबंधीय जलवायु के कारण विश्व के सर्वाधिक सघन और जैव विविधता वाले वर्षावनों से आच्छादित है। भौगोलिक रूप से यह एक निम्न मैदान है जहाँ जल जमाव और बाढ़ सामान्य घटना है। यह पारिस्थितिकी तंत्र वैश्विक कार्बन चक्र और जलवायु नियंत्रण में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभाता है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

42. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
जलोढ़ मैदानों का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से होता है। हिमनद अपक्षेप मैदान तब बनते हैं जब पिघलते हिमनदों का जल अपने साथ लाए मलबे को जमा करता है। तटीय मैदान समुद्री तरंगों के कार्य और समुद्र तल में परिवर्तन से निर्मित होते हैं। लोएस मैदानों का निर्माण पवन द्वारा मरुस्थलीय क्षेत्रों से उड़ाई गई मृदा के संचय से होता है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि प्रत्येक प्रकार का मैदान एक विशिष्ट प्राकृतिक शक्ति का प्रत्यक्ष परिणाम है।

43. (4) विशाल, सपाट और उपजाऊ समशीतोष्ण घास के मैदान
उत्तरी अमेरिका के विशाल मैदान, जिन्हें 'प्रेयरीज' भी कहा जाता है, अपनी विस्तृत और सपाट स्थलाकृति के कारण वृहद स्तर पर मशीनीकृत कृषि के लिए आदर्श हैं। यहाँ की उपजाऊ काली और भूरी मृदा गेहूँ के उत्पादन के लिए अत्यधिक अनुकूल है। समशीतोष्ण जलवायु और पर्याप्त मौसमी वर्षा इस फसल की वृद्धि में सहायक होती है। सपाट भूमि होने के कारण यहाँ विशाल प्रक्षेत्रों का प्रबंधन सुगम होता है, जिससे यह क्षेत्र विश्व का प्रमुख 'अन्न भंडार' बन गया है।

44. (1) केवल I और II
हिमालय के पाद प्रदेश में स्थित भाबर पट्टी मोटे पत्थरों और कंकड़ों से निर्मित है, जहाँ नदियाँ सतह के नीचे विलीन हो जाती हैं। इसके दक्षिण में स्थित तराई क्षेत्र में ये नदियाँ पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं, जिससे यह क्षेत्र दलदली हो जाता है। बांगर वास्तव में प्राचीन जलोढ़ को कहते हैं जो बाढ़ के स्तर से ऊपर स्थित होता है, जबकि नवीन जलोढ़ को खादर कहा जाता है। अतः कथन III त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह बांगर को नवीन जलोढ़ बताता है, जो तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है।

45. (3) तराई
उत्तर भारत के मैदानों में भाबर पट्टी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र को तराई कहा जाता है। यह एक निम्न भूमि वाला, नम और दलदली क्षेत्र है जहाँ भाबर में विलुप्त हुई नदियाँ पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं। यहाँ अत्यधिक आर्द्रता और वर्षा के कारण सघन वन और वन्यजीवों की प्रचुरता पाई जाती है। यद्यपि अब इसके बड़े भाग को स्वच्छ करके कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है, फिर भी इसकी प्राकृतिक नमी और पारिस्थितिकी इसे अन्य भागों से पूरी तरह अलग बनाती है।

46. (4) टिल मैदान - महीन कणों वाले पवन निक्षेपण द्वारा निर्मित
टिल मैदानों का निर्माण हिमनदों द्वारा सीधे निक्षेपित किए गए मलबे से होता है, जिसमें विभिन्न आकार के पत्थर और मृदा सम्मिलित होते हैं। यह पवन निक्षेपण का परिणाम नहीं है; पवन निक्षेपण से लोएस मैदान निर्मित होते हैं। सरोवरीय मैदान झीलों के भरने से, कार्स्ट मैदान चूना पत्थर के घुलने से और संप्राय मैदान दीर्घकालीन नदीय अपरदन से बनते हैं। अतः टिल मैदान और पवन निक्षेपण का युग्म असत्य है क्योंकि इनका संबंध पूर्णतः हिमनद प्रक्रियाओं से है।

NODIA

47. (1) पवन
लोएस के निर्माण के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक पवन है। शुष्क अथवा अर्ध-शुष्क क्षेत्रों, विशेष रूप से मरुस्थलों से, वायु सूक्ष्म धूल और गाद के कणों को उड़ाकर ले जाती है। जब पवन की गति मंद होती है या मार्ग में कोई अवरोध आता है, तो ये कण दूरस्थ क्षेत्रों में परतों के रूप में संचित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया सहस्रों वर्षों तक अनवरत चलती है, जिससे बिना किसी स्पष्ट परत वाली पीली और उपजाऊ मृदा के मैदान निर्मित होते हैं जिन्हें लोएस कहा जाता है।

48. (3) केवल IV
हिमनद मैदान मुख्य रूप से उच्च अक्षांशों या पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ हिमनद सक्रिय होते हैं। इन्हें विषुवतीय अक्षांशों में पाया जाना असंभव है, क्योंकि वहाँ तापमान अत्यधिक उच्च होता है और हिमनद निर्मित नहीं हो सकते। टिल मैदान और अपक्षेप मैदान हिमनद तथा उसके गलित जल की निक्षेपण प्रक्रियाओं के वास्तविक परिणाम हैं। अतः कथन IV पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है, जबकि अन्य तीनों कथन हिमनद स्थलाकृतियों और उनके निर्माण का सटीक वर्णन करते हैं।

49. (2) कम वार्षिक वर्षा के साथ गंभीर नमी की कमी
किसी क्षेत्र को मरुस्थल घोषित करने का मुख्य वैज्ञानिक आधार वहाँ होने वाली वर्षा की मात्रा और वाष्पीकरण की दर है। यदि किसी क्षेत्र में वार्षिक वर्षा 25 सेंटीमीटर से कम होती है और वहाँ नमी की अत्यधिक न्यूनता रहती है, तो उसे मरुस्थल माना जाता है। मरुस्थल केवल रेतीले नहीं होते; वे पथरीले अथवा हिम-आच्छादित (शीत मरुस्थल) भी हो सकते हैं। अतः उच्च तापमान या केवल रेत के टीलों के स्थान पर, शुष्कता और जल का गंभीर अभाव ही इसका प्राथमिक मानदंड है।

50. (1) सहारा, अरब, गोबी, अटाकामा
क्षेत्रफल की दृष्टि से, सहारा विश्व का विशालतम उष्ण मरुस्थल है जो उत्तरी अफ्रीका के एक बड़े भाग में विस्तृत है। इसके पश्चात अरब का मरुस्थल आता है जो पश्चिम एशिया में फैला है। गोबी मरुस्थल मध्य एशिया में स्थित एक विशाल शीत मरुस्थल है, जो तृतीय स्थान पर आता है। दक्षिण अमेरिका का अटाकामा मरुस्थल इन चारों में लघुतम है, यद्यपि यह विश्व का सर्वाधिक शुष्क स्थान है। यह क्रम उनकी वैश्विक विशालता और भौगोलिक विस्तार को सही ढंग से दर्शाता है।

51. (3) शीत मरुस्थलों में किसी भी प्रकार का वर्षण नहीं होता है, जबकि उष्ण मरुस्थलों में शीतकालीन हिमपात होता है।
शीत मरुस्थलों में वर्षण की मात्रा अत्यंत न्यून होती है, किंतु यह पूर्णतः अनुपस्थित नहीं होती; यहाँ वर्षण मुख्य रूप से हिम के रूप में होता है। इसके विपरीत, अधिकांश उष्ण मरुस्थलों में शीतकालीन हिमपात नहीं होता, बल्कि रात्रि के तापमान में तीव्र गिरावट आती है। दोनों प्रकार के मरुस्थल अपनी अत्यधिक शुष्कता के कारण पहचाने जाते हैं। सहारा जैसे उष्ण मरुस्थल अपनी उष्णता के लिए और गोबी जैसे शीत मरुस्थल अपने अत्यंत न्यून तापमान और बर्फीली पवनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

52. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
सहारा मरुस्थल अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित है। अटाकामा मरुस्थल दक्षिण अमेरिका के चिली और पेरु के तटीय क्षेत्रों में पाया जाता है। गोबी मरुस्थल एशिया में चीन और मंगोलिया की सीमाओं पर विस्तृत है। ग्रेट विक्टोरिया मरुस्थल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का सबसे बड़ा मरुस्थलीय क्षेत्र है। यह मिलान विश्व के प्रमुख मरुस्थलों की उनकी संबंधित महाद्वीपीय स्थितियों के साथ सटीक भौगोलिक जानकारी प्रदान करता है, जो वैश्विक स्थलाकृति और उनकी क्षेत्रीय पहचान को समझने के लिए अनिवार्य है।

53. (3) हम्बोल्ट धारा और एंडीज पर्वत की वृष्टि-छाया
अटाकामा मरुस्थल की अत्यधिक शुष्कता दो प्रमुख भौगोलिक कारकों का परिणाम है। प्रथम, तट के समीप प्रवाहित होने वाली शीतल हम्बोल्ट (पेरू) धारा, जो वायु को शीतल करके नमी धारण करने की क्षमता क्षीण कर देती है। द्वितीय, एंडीज पर्वत श्रृंखला पूर्व से आने वाली आर्द्र पवनों को अवरुद्ध कर देती है, जिससे यह क्षेत्र 'वृष्टि-छाया क्षेत्र' बन जाता है। इन दोनों कारकों के सम्मिलित प्रभाव के कारण यहाँ दशकों तक वर्षा नहीं होती, जिससे यह अति-शुष्क स्थान बन गया है।

54. (1) केवल I, II और IV
सहारा विश्व का विशालतम उष्ण मरुस्थल है और यह उत्तरी अफ्रीका के ग्यारह देशों में विस्तृत है। नील नदी इस मरुस्थल के पूर्वी भाग से होकर प्रवाहित होती है, जो वहाँ जीवन का मुख्य स्रोत है। हालांकि, सहारा केवल रेत के टीलों से निर्मित नहीं है; इसमें पथरीले पठार (हमादा) और कंकरीले मैदान (रेग) भी सम्मिलित हैं। साथ ही, यह उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, न कि दक्षिणी गोलार्ध में। अतः कथन III और V भौगोलिक रूप से असत्य और तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं।

55. (4) मध्य-अक्षांश शीत मरुस्थल
गोबी मरुस्थल मध्य एशिया में चीन और मंगोलिया के मध्य उच्च अक्षांशों पर स्थित है। समुद्र से अत्यधिक दूरी और हिमालय जैसे उच्च पर्वतों की वृष्टि-छाया में होने के कारण यहाँ वर्षा अत्यंत अल्प होती है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ शीत ऋतु बहुत लंबी और कठोर होती है, जिसमें तापमान शून्य से काफी नीचे चला जाता है। यह मुख्य रूप से पथरीला और बंजर है, जो इसे उपोष्णकटिबंधीय उष्ण मरुस्थलों से भिन्न एक 'मध्य-अक्षांश शीत मरुस्थल' की श्रेणी में रखता है।

56. (1) जलवायु और मानवीय गतिविधियों के कारण शुष्क क्षेत्रों में भूमि का क्षरण
मरुस्थलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों की भूमि का विभिन्न कारकों के कारण क्षरण होता है। इसमें जलवायु परिवर्तन, जैसे दीर्घकालिक अनावृष्टि, और मानवीय गतिविधियाँ जैसे वनोन्मूलन, अति-चराई और दोषपूर्ण कृषि पद्धतियाँ मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं। इसके परिणामस्वरूप भूमि अपनी उत्पादकता खो देती है और मरुस्थल जैसा स्वरूप धारण कर लेती है। यह एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है जो वैश्विक खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिकी को प्रभावित करती है।

57. (3) पेटागोनिया
मोजावे (उत्तरी अमेरिका), कालाहारी (अफ्रीका) और ग्रेट सैंडी (ऑस्ट्रेलिया) तीनों ही 'उष्ण मरुस्थल' की श्रेणी में आते हैं, जहाँ तापमान प्रायः बहुत उच्च रहता है। इसके विपरीत, अर्जेंटीना में स्थित पेटागोनिया एक 'शीत मरुस्थल' है। यह उच्च अक्षांशों पर स्थित होने और एंडीज पर्वत की वृष्टि-छाया में होने के कारण शीतल और शुष्क रहता है। तापमान और अक्षांशीय स्थिति की इस मूलभूत भिन्नता के कारण पेटागोनिया इस समूह के अन्य मरुस्थलों से पूर्णतः भिन्न और विषम श्रेणी में आता है।

58. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अरब का मरुस्थल भौगोलिक रूप से पृथ्वी की उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब पट्टी (30° उत्तर अक्षांश के समीप) में स्थित है। इस क्षेत्र में वायुमंडल के ऊपरी परतों से वायु नीचे की ओर बैठती है। नीचे उतरती हुई यह वायु गर्म हो जाती है और इसकी नमी धारण करने की क्षमता बढ़ जाती है, जिससे वर्षा की संभावना लगभग समाप्त हो जाती है। यह उच्च-दाब की स्थिति ही इस क्षेत्र में निरंतर शुष्कता और अत्यधिक उष्णता बनाए रखने के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी भौगोलिक कारक है।

59. (4) सोडियम नाइट्रेट और तांबा
दक्षिण अमेरिका का अटाकामा मरुस्थल अपनी शुष्कता के उपरांत भी खनिज संसाधनों में अत्यंत समृद्ध है। यहाँ सोडियम नाइट्रेट (चिली साल्टपीटर) के विश्व के विशालतम प्राकृतिक निक्षेप पाए जाते हैं, जिसका उपयोग उर्वरक और विस्फोटकों में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र तांबे के खनन का भी एक वैश्विक केंद्र है, जहाँ विश्व की कुछ सबसे बड़ी तांबे की खदानें स्थित हैं। ये खनिज निक्षेप इस बंजर क्षेत्र को चिली की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाते हैं।

60. (1) I, II, III, IV
इन मरुस्थलों का पश्चिम से पूर्व की ओर सटीक क्रम उनके देशांतरीय विस्तार पर आधारित है। सर्वाधिक पश्चिम में दक्षिण अमेरिका का अटाकामा मरुस्थल स्थित है। इसके पूर्व की ओर बढ़ने पर अफ्रीका महाद्वीप में सहारा मरुस्थल आता है। अधिक पूर्व में जाने पर पश्चिम एशिया का अरब मरुस्थल स्थित है। अंत में, दक्षिण एशिया में भारत और पाकिस्तान की सीमा पर थार का मरुस्थल आता है। यह अनुक्रम मानचित्र पर पश्चिम से पूर्व की वैश्विक भौगोलिक दिशा का सटीक अनुसरण करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

61. (3) अरब का मरुस्थल
'रब अल खाली' विश्व का विशालतम निरंतर रेतीला मरुस्थल क्षेत्र है, जो अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसका नाम अरबी भाषा से उद्धृत है जिसका अर्थ है 'रिक्त चतुर्थांश' (एम्प्टी क्वार्टर)। यह क्षेत्र विशाल रेत के टीलों के लिए प्रसिद्ध है जो 250 मीटर तक ऊँचे हो सकते हैं। यहाँ की कठोर जलवायु और जलाभाव के कारण यह ऐतिहासिक रूप से मानव बस्तियों से मुक्त रहा है। यह अरब मरुस्थल तंत्र का सर्वाधिक दुर्गम और बंजर भाग माना जाता है।

62. (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मरुस्थलीय स्थलाकृतियों के विशिष्ट नाम होते हैं। 'अर्ग' उन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ केवल रेत के टीले पाए जाते हैं। 'रेग' कंकड़ और पत्थरों से आच्छादित विशाल मैदान होते हैं। 'हमादा' उच्च पथरीले पठार होते हैं जहाँ की सूक्ष्म मृदा पवन द्वारा उड़ा दी गई होती है। 'वादी' वे शुष्क नदी घाटियाँ हैं जिनमें केवल कभी-कभी होने वाली आकस्मिक वर्षा के दौरान जल प्रवाहित होता है। यह वर्गीकरण मरुस्थल की सतह की भौतिक बनावट और जल अपवाह प्रणाली के आधार पर किया गया है।

63. (1) पवन अपवाहन का भूमिगत जल स्तर तक पहुँचना
मरुस्थलीय क्षेत्रों में 'नखलिस्तान' (ओएसिस) का निर्माण एक प्राकृतिक भू-आकृतिक प्रक्रिया है। तीव्र पवनें मरुस्थल की सतह से रेत को उड़ाकर गहरे गर्त बना देती हैं, जिसे अपवाहन (डिफ्लेशन) कहा जाता है। जब यह गर्त इतना गहरा हो जाता है कि वह भूमिगत जल स्तर तक पहुँच जाता है, तो वहाँ जल सतह पर प्रकट होने लगता है। इस जल की उपस्थिति के कारण वहाँ वनस्पतियाँ उग आती हैं, जिससे वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है और मानव अधिवास के लिए उपयुक्त बनता है।

64. (4) I, II और III
शीत मरुस्थल सामान्यतः समशीतोष्ण क्षेत्रों के अंतर्गत उच्च अक्षांशों पर अथवा पर्वतों की वृष्टि-छाया में स्थित होते हैं। इनमें अत्यधिक शीतलता होती है और वार्षिक वर्षा अत्यंत न्यून होती है, जो प्रायः हिम के रूप में गिरती है। मध्य एशिया का गोबी मरुस्थल और दक्षिण अमेरिका का पेटागोनिया मरुस्थल शीत मरुस्थलों के वैश्विक स्तर पर सर्वप्रमुख उदाहरण हैं। ये क्षेत्र अपनी विशिष्ट पारिस्थितिकी और कठोर शीतकालीन तापमान के लिए जाने जाते हैं, जो इन्हें उष्ण मरुस्थलों से पृथक करते हैं।

65. (2) भारत और पाकिस्तान
थार का मरुस्थल, जिसे महान भारतीय मरुस्थल भी कहा जाता है, मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। इसका लगभग 85% भाग भारत में (विशेषकर राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा राज्यों में) और शेष 15% भाग पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांतों में विस्तृत है। यह उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता है जो दोनों देशों की अंतरराष्ट्रीय सीमा के आर-पार फैली है और वहाँ की क्षेत्रीय जलवायु तथा जीवन शैली को गहराई से प्रभावित करती है।

66. (1) अनिश्चित वर्षा जो पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है
थार मरुस्थल में वर्षा का वितरण अत्यधिक असमान और न्यून है। राजस्थान के पूर्वी भागों से पश्चिमी भागों की ओर अग्रसर होने पर वार्षिक वर्षा की मात्रा निरंतर घटती जाती है। जहाँ जैसलमेर जैसे पश्चिमी जनपदों में वर्षा 15 सेंटीमीटर से भी कम होती है, वहीं अरावली के समीपवर्ती क्षेत्रों में यह थोड़ी अधिक होती है। यहाँ वर्षा मुख्य रूप से मानसून के मौसम में होती है, किंतु वह अत्यंत अनिश्चित और अल्पकालिक होती है, जिससे यह क्षेत्र अधिकांश समय शुष्क बना रहता है।

67. (3) लूनी
लूनी नदी थार मरुस्थल क्षेत्र की सर्वाधिक प्रमुख और महत्वपूर्ण मौसमी नदी है। यह अजमेर के निकट अरावली श्रेणी से उद्गमित होती है और दक्षिण-पश्चिम दिशा में प्रवाहित होते हुए कच्छ के रण में विलीन हो जाती है। यह एक अंतःस्थलीय अपवाह प्रणाली का भाग है, जिसका अर्थ है कि यह किसी समुद्र तक नहीं पहुँच पाती। मरुस्थलीय शुष्कता के कारण इसमें जल की मात्रा अत्यंत न्यून रहती है और यह केवल वर्षा ऋतु के दौरान ही प्रवाहित होती है, जो इसकी मौसमी प्रकृति को विशिष्ट बनाती है।

68. (2) केवल I, II और IV
थार मरुस्थल पूर्व में अरावली पर्वतमाला से परिबद्ध है और यह विश्व का सर्वाधिक सघन जनसंख्या वाला मरुस्थल है। इंदिरा गांधी नहर ने इसके शुष्क भागों में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराकर कृषि परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन किया है। हालांकि, इस क्षेत्र की मुख्य मृदा रेतीली है, न कि काली कपासी मृदा। काली मृदा मुख्यतः दक्कन के पठार पर पाई जाती है। अतः कथन III त्रुटिपूर्ण है, जबकि अन्य तीनों कथन थार की वास्तविक भौगोलिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं।

69. (3) मोजावे मरुस्थल
थार का मरुस्थल (भारत-पाकिस्तान), गोबी मरुस्थल (चीन-मंगोलिया) और अरब का मरुस्थल (पश्चिम एशिया) तीनों ही भौगोलिक रूप से एशिया महाद्वीप के अंतर्गत स्थित हैं। इसके विपरीत, मोजावे मरुस्थल उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के संयुक्त राज्य अमेरिका (कैलिफोर्निया और नेवादा) में स्थित है। अतः अपनी महाद्वीपीय अवस्थिति के आधार पर मोजावे मरुस्थल इस समूह में एक विषम इकाई है। यह भिन्नता वैश्विक स्तर पर मरुस्थलों के वितरण और उनकी क्षेत्रीय पहचान को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

NODIA

70. (2) अरब सागर के मानसून के समानांतर स्थिति
अरावली पर्वत श्रृंखला की दिशा राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। यह दिशा अरब सागर से आने वाली आर्द्र मानसूनी पवनों के मार्ग के बिल्कुल समानांतर पड़ती है। इसके कारण, ये पर्वत पवनों को अवरुद्ध करने और उन्हें उत्थापित कर वर्षा कराने में विफल रहते हैं, क्योंकि पवनें बिना किसी बाधा के इसके साथ निकल जाती हैं। यही भौगोलिक कारण थार मरुस्थल की शुष्कता के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है,

क्योंकि मानसूनी आर्द्रता का लाभ इस विशाल रेतीले क्षेत्र को नहीं मिलता।

71. (4) मरुस्थली
राजस्थान के पश्चिमी रेतीले मैदान को दो मुख्य भागों में विभक्त किया गया है। इसमें सुदूर पश्चिमी भाग, जहाँ वर्षा 25 सेंटीमीटर से भी कम होती है और जो पूर्णतः बालुका स्तूपों से ढका होता है, 'मरुस्थली' कहलाता है। यह क्षेत्र वनस्पति विहीन और अत्यधिक शुष्क है। इसके विपरीत, अरावली के पश्चिम में स्थित अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्र को 'राजस्थान बांगड़' कहा जाता है। 'मरुस्थली' शब्द इस क्षेत्र की अत्यंत कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों और इसके रेतीले स्वभाव को सटीक रूप से परिभाषित करता है।

72. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
थार मरुस्थल की विशिष्ट विशेषताएं इसके भूगोल को परिभाषित करती हैं। 'बरखान' अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप हैं जो पवन के प्रभाव से निर्मित होते हैं। 'प्लाया' वे अस्थायी खारे पानी की झीलें हैं जो वर्षा के पश्चात बनती हैं और पुनः सूख जाती हैं। 'रन' लवणीय और दलदली क्षेत्रों को कहा जाता है, जैसे कच्छ का रण। 'धरियन' जैसलमेर क्षेत्र में पाए जाने वाले गतिशील अथवा स्थानांतरणशील बालुका स्तूपों का स्थानीय नाम है। यह मिलान मरुस्थलीय भू-आकृतियों और उनकी विशिष्टताओं की सही पहचान कराता है।

73. (3) उच्च मानव और पशुधन जनसंख्या घनत्व
थार का मरुस्थल विश्व के अन्य विशाल मरुस्थलों जैसे सहारा अथवा अरब से इस अर्थ में भिन्न है कि यहाँ जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत बहुत अधिक है। जहाँ अन्य मरुस्थल वृहद स्तर पर निर्जन हैं, वहीं थार में समृद्ध संस्कृति, स्थायी बस्तियाँ और पशुपालन पर आधारित एक जीवंत ग्रामीण अर्थव्यवस्था विद्यमान है। यहाँ के निवासी और पशुधन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलन की अद्भुत क्षमता रखते हैं। यह उच्च जनसांख्यिकी थार को विश्व के सर्वाधिक सक्रिय मरुस्थल के रूप में स्थापित करती है।

74. (1) केवल I और III
वलित पर्वत मुख्य रूप से अभिसारी (विनाशकारी) प्लेट सीमाओं पर निर्मित होते हैं, न कि रचनात्मक सीमाओं पर। अमेज़न का मैदान नदियों के निक्षेपण कार्य से बना है, न कि हिमनद क्रिया से। अतः कथन I और III त्रुटिपूर्ण हैं। दक्कन का पठार लावा प्रवाह (बाढ़ बेसाल्ट) से निर्मित है, सहारा कर्क रेखा के समीप स्थित है, और भ्रंशोत्थ पर्वतों में उत्खंड तथा द्रोणिका संरचनाएं स्पष्ट रूप से पाई जाती हैं। यह स्पष्टीकरण विवर्तनिक और भू-आकृतिक प्रक्रियाओं के मध्य अंतर को प्रभावी ढंग से स्पष्ट करता है।

75. (4) दुनिया भर के सभी मैदान विशेष रूप से नदियों के निक्षेपण कार्य द्वारा निर्मित होते हैं।
यद्यपि अधिकांश मैदान नदियों के निक्षेपण से निर्मित होते हैं, किंतु यह कहना तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण है कि 'सभी' मैदान इसी प्रकार बनते हैं। मैदानों का निर्माण पवन निक्षेपण (लोएस), हिमनद प्रक्रियाओं (टिल मैदान), समुद्री निक्षेपण (तटीय मैदान) और यहाँ तक कि विवर्तनिक उत्थान अथवा धंसाव से भी संभव है। पर्वतों का शिखर संकुचित और पठारों का शीर्ष समतल होना उनकी मानक विशेषताएं हैं। मरुस्थल भी किसी भी स्थलाकृति के मध्य शुष्क जलवायु के कारण विकसित हो सकते हैं।

76. (2) इंदिरा गांधी नहर - हरिके बैराज से जल प्राप्त करती है
इंदिरा गांधी नहर, जिसे राजस्थान की जीवन रेखा कहा जाता है, पंजाब में सतलुज और व्यास नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से अपना जल प्राप्त करती है। लूनी नदी अरावली से उद्गमित होती है, न कि हिमालय से। सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतःस्थलीय खारे पानी की झील है, न कि मीठे पानी की। बरखान अर्धचंद्राकार टीले होते हैं, जबकि अनुदैर्ध्य टीले पवन की दिशा के समानांतर पाए जाते हैं। अतः केवल नहर और उसके जल स्रोत का युग्म ही भौगोलिक रूप से सत्य है।

77. (3) पवन-जनित परिवहन और निक्षेपण
थार मरुस्थल में बालुका स्तूपों का निरंतर परिवर्तन और नवीन टीलों का निर्माण मुख्य रूप से वातोढ़ (एओलियन) प्रक्रियाओं का परिणाम है। यहाँ की तीव्र पवनें शिथिल रेत को एक स्थान से उत्थापित कर अन्यत्र ले जाती हैं। जब पवन की गति मंद होती है अथवा मार्ग में कोई अवरोध आता है, तो रेत का निक्षेपण होने लगता है, जिससे विभिन्न प्रकार के टीले निर्मित होते हैं। यह गतिशील प्रक्रिया मरुस्थलीय परिदृश्य को सदैव परिवर्तनशील बनाए रखती है और मरुस्थलीकरण के प्रसार में सहायक होती है।

78. (4) वे अर्धचंद्राकार टीले हैं जिनके सिरे हवा की दिशा में आगे की ओर होते हैं।
बरखान थार मरुस्थल की एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण भू-आकृति है। ये बालुका स्तूप अर्धचंद्राकार अथवा आधे चाँद के आकार के होते हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि इनके दो 'श्रृंग' या सिरे पवन प्रवाहित होने की दिशा में आगे की ओर निकले होते हैं। ये टीले सामान्यतः उन क्षेत्रों में निर्मित होते हैं जहाँ पवन सदैव एक ही दिशा से प्रवाहित होती है और रेत की आपूर्ति परिमित होती है। ये गतिशील होते हैं और पवन के साथ अपना स्थान बदलते रहते हैं।

79. (1) आल्प्स
माउंट ब्लैंक, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 4807 मीटर है, आल्प्स पर्वत श्रृंखला का सर्वोच्च शिखर है। यह भौगोलिक रूप से फ्रांस और इटली की सीमा पर स्थित है। आल्प्स यूरोप का एक प्रमुख नवीन वलित पर्वत तंत्र है, जिसका निर्माण अफ्रीकी और यूरेशियन प्लेटों के टकराव से हुआ था। माउंट ब्लैंक पर्वतारोहण और पर्यटन के लिए विश्व विख्यात है और यह संपूर्ण क्षेत्र की जलवायु तथा जल विज्ञान को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण भौतिक विशेषता है, जो यूरोप के लिए अनिवार्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

80. (2) नवीकरणीय ऊर्जा और खनिज संपदा की प्रचुर संभावना।
थार मरुस्थल राजस्थान के लिए आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। यहाँ अक्षय ऊर्जा (सौर और पवन) की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं क्योंकि यहाँ वर्ष भर तीव्र आतप और तेज हवाएँ चलती हैं। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र चूना पत्थर, जिप्सम, खनिज तेल और प्राकृतिक गैस जैसे महत्वपूर्ण खनिजों के भंडार से समृद्ध है। बाड़मेर जैसे क्षेत्रों में तेल की खोज ने राज्य की अर्थव्यवस्था को नवीन दिशा प्रदान की है। अतः यह मरुस्थल केवल बंजर भूमि नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संसाधन है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 02
प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

1. अपवाह प्रणालियों के वर्गीकरण में एक 'पूर्ववर्ती नदी' को क्या परिभाषित करता है?
(1) वह नदी जो संरचनात्मक दुर्बलता वाली रेखा के साथ अपना मार्ग विकसित करती है
(2) वह नदी जो स्थानीय विवर्तनिक उत्थान के बावजूद अपने मूल मार्ग और प्रतिरूप को बनाए रखती है
(3) वह नदी जिसके प्रवाह की दिशा पूरी तरह से भूमि के मूल ढाल द्वारा निर्धारित होती है
(4) वह नदी जो मुख्य भूवैज्ञानिक नति की विपरीत दिशा में बहती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन-सी अमेज़न नदी के बाएँ तट की एक प्रमुख सहायक नदी है?
(1) रियो नीग्रो
(2) मदीरा नदी
(3) पुरस नदी
(4) टापाजोस नदी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. नील नदी बेसिन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) नीली नील इथियोपिया की ताना झील से निकलती है।
(2) सफेद नील और नीली नील सूडान में खार्तूम के पास मिलती हैं।
(3) नील नदी सीधे लाल सागर में गिरती है।
(4) इसका बेसिन युगांडा, मिस्र और सूडान सहित कई देशों में फैला हुआ है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रमुख वैश्विक नदी अपने मार्ग के दौरान भूमध्य रेखा को दो बार पार करने के लिए प्रसिद्ध है?
(1) अमेज़न नदी
(2) नील नदी
(3) नाइजर नदी
(4) कांगो नदी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. सूची-I (नदी) को सूची-II (क्षेत्र/महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (नदी)
A. लीना
B. टेम्स
C. यांग्त्ज़ी
D. मिसिसिपी
सूची-II: (क्षेत्र/महाद्वीप)
i. यूरोप
ii. उत्तरी अमेरिका
iii. साइबेरिया
iv. चीन
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. पिछले कुछ दशकों में अरल सागर के तेजी से सिकुड़ने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) विवर्तनिक गतिविधि के कारण बड़े भूमिगत अपवाह दरारों का बनना
(2) बड़े पैमाने पर कृषि सिंचाई के लिए नदियों के मार्ग में परिवर्तन (विपथन)
(3) वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण वाष्पीकरण की दर में तेज़ी
(4) औद्योगिक प्रदूषण के कारण वर्षा में वायुमंडलीय बाधा उत्पन्न होना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. गोखुर झीलें नदी के मार्ग के किस विशिष्ट चरण या क्षेत्र की विशेषता हैं?
(1) खड़ी पर्वतीय घाटियों के भीतर तीव्र प्रवाह वाला ऊपरी मार्ग
(2) ज्वारनदमुख क्षेत्र जहाँ नदी खुले महासागर से मिलती है
(3) चूना पत्थर क्षेत्रों में भूमिगत कार्स्ट अपवाह तंत्र
(4) निचला मार्ग जहाँ क्षैतिज अपरदन और विसर्पण की प्रधानता होती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. यांग्त्ज़ी और हुआंग हे नदियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यांग्त्ज़ी एशिया की सबसे लंबी नदी है।
II. हुआंग हे को इसकी बार-बार आने वाली विनाशकारी बाढ़ के कारण "चीन का शोक" कहा जाता है।
III. ये दोनों नदियाँ अपना जल हिंद महासागर में विसर्जित करती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. वोल्गा नदी, जो यूरोप की सबसे लंबी नदी है, अंततः निम्नलिखित में से किस जलाशय में गिरती है?
(1) काला सागर
(2) बाल्टिक सागर
(3) कैस्पियन सागर
(4) उत्तरी सागर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें:
कथन (A): अफ्रीका की कई महान झीलें, जैसे तांगानिका झील और मलावी झील, असाधारण रूप से गहरी और लंबी हैं।
कारण (R): इन झीलों का निर्माण पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली द्वारा बनाई गई गहरी खाइयों में जल के संचय से हुआ था।
सही विकल्प चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. मिसिसिपी नदी प्रणाली के मुहाने पर कौन-सी विशिष्ट भौगोलिक विशेषता बनती है?
(1) एक गहरा, नौगम्य ज्वारनदमुख
(2) एक विशाल ज्वारीय भित्ति
(3) एक चापाकार डेल्टा जो उच्च-ऊर्जा वाले समुद्र तट पर हावी है
(4) एक विशिष्ट पक्षी-पाद डेल्टा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. साइबेरियाई नदी प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओब, येनिसेई और लीना सभी मुख्य रूप से उत्तर की ओर बहती हैं।
II. वे अपना जल आर्कटिक महासागर में विसर्जित करती हैं।
III. सर्दियों में उनका निचला मार्ग जम जाता है, जिससे वसंत ऋतु में ऊपरी मार्ग के पिघलने पर भीषण बाढ़ आती है।
IV. उनकी विशेषता गर्म जल है जो उष्णकटिबंधीय जैव विविधता का समर्थन करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. प्राथमिक भौगोलिक महाद्वीप के आधार पर निम्नलिखित नदियों में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) राइन
(2) डेन्यूब
(3) अमेज़न
(4) टेम्स
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

14. अफ्रीका की महान झीलों में से कौन-सी झील बैकाल झील के बाद दुनिया की दूसरी सबसे गहरी झील होने का गौरव रखती है?
(1) विक्टोरिया झील
(2) मलावी झील
(3) अल्बर्ट झील
(4) तांगानिका झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. सूची-I (झील का प्रकार) को सूची-II (उदाहरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
सूची-I: (झील का प्रकार)
A. विवर्तनिक झील
B. ज्वालामुखी झील
C. हिमनद झील
D. गोखुर झील
सूची-II: (उदाहरण)
i. क्रेटर झील
ii. सुपीरियर झील
iii. कैस्पियन सागर
iv. कंवर झील
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. निम्नलिखित में से कौन-सा देश कैस्पियन सागर के साथ तट साझा नहीं करता है?
(1) कज़ाकिस्तान
(2) उज्बेकिस्तान
(3) रूस
(4) ईरान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. नदी और उसके मुहाने (जहाँ वह गिरती है) का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) डेन्यूब नदी - लाल सागर
(2) टेम्स नदी - उत्तरी सागर
(3) राइन नदी - भूमध्य सागर

(4) लीना नदी - प्रशांत महासागर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. उत्तरी अमेरिका की महान झीलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सुपीरियर झील सतही क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है।
II. मिशिगन झील पूरी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर स्थित है।
III. इरी झील, नियाग्रा नदी द्वारा ओंटारियो झील से जुड़ी हुई है।
IV. सभी पाँच महान झीलें कनाडा के साथ प्रत्यक्ष सीमा साझा करती हैं।
V. इनका निर्माण मुख्य रूप से प्लीस्टोसिन युग के दौरान हिमनद क्रिया द्वारा हुआ था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, II, III और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. नदियों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: एक 'अनुवर्ती नदी' अपनी प्रवाह प्रक्रिया नए उत्थान वाली भूमि की सतह के सामान्य ढाल के अनुसार शुरु करती है।
कथन II: एक 'परवर्ती नदी' सामान्यतः अंतर्निहित चट्टानी परतों के क्षेत्रीय नतिलंब के समानांतर बहती है, जो अक्सर कोमल चट्टान के क्षेत्रों में विकसित होती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. टेम्स नदी, जो यूरोप में ऐतिहासिक महत्व की एक प्रमुख नदी है, किस वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण राजधानी शहर से होकर गुजरती है?
(1) पेरिस
(2) बर्लिन
(3) एम्स्टर्डम
(4) लंदन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. चीन की कौन-सी नदी लोएस पठार से निकलने वाली पीली गाद के भारी बोझ के लिए जानी जाती है?
(1) यांग्त्ज़ी नदी
(2) पर्ल नदी
(3) हुआंग हे नदी
(4) मेकांग नदी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. निम्नलिखित प्रमुख नदियों को उनकी कुल लंबाई के अनुसार सबसे लंबी से सबसे छोटी के सही क्रम में चुनें:
(1) नील, अमेज़न, यांग्त्ज़ी, मिसिसिपी-मिसौरी
(2) अमेज़न, नील, मिसिसिपी-मिसौरी, यांग्त्ज़ी
(3) नील, यांग्त्ज़ी, अमेज़न, मिसिसिपी-मिसौरी
(4) अमेज़न, यांग्त्ज़ी, नील, मिसिसिपी-मिसौरी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. कौन-सी भू-आकृतिक विशेषता इस बात का प्राथमिक प्रमाण है कि ब्रह्मपुत्र जैसी नदी एक पूर्ववर्ती अपवाह प्रणाली है?
(1) तटीय मैदानों में विशाल निक्षेपण वाले बाढ़ के मैदान
(2) नदी के मुहाने पर जटिल डेल्टा बनाने वाली वितरिकाएँ
(3) उच्च पठारी क्षेत्रों में विसर्पी मार्ग जो स्थानांतरित होते रहते हैं
(4) उठती हुई पर्वत श्रृंखलाओं को सीधे काटकर बनाई गई गहरी कंदराएँ
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. मृत सागर में पाई जाने वाली असाधारण रूप से उच्च लवणता का मुख्य कारण क्या है?
(1) समुद्र में निकास न होने के साथ गर्म और शुष्क जलवायु में उच्च वाष्पीकरण दर
(2) भूमिगत जलमार्गों के माध्यम से केंद्रित समुद्री जल का निरंतर अंतर्वाह
(3) आसपास के रासायनिक संयंत्रों से भारी औद्योगिक अपशिष्ट का बहाव
(4) हाल की ज्वालामुखी गतिविधि द्वारा निर्मित विशाल भूमिगत लवण गुंबदों का घुलना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. सूची-I (झील) को सूची-II (महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनें:
सूची-I: (झील)
A. विक्टोरिया झील
B. बैकाल झील
C. इरी झील
D. टिटिकाका झील
सूची-II: (महाद्वीप)
i. दक्षिण अमेरिका
ii. उत्तरी अमेरिका
iii. अफ्रीका
iv. एशिया
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

26. राइन नदी के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह काला सागर में गिरती है और एक बड़ा डेल्टा बनाती है।
(2) यह स्विस आल्प्स से निकलती है।
(3) यह अपने मार्ग के एक हिस्से के लिए फ्रांस और जर्मनी के बीच प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करती है।
(4) यह यूरोप के सबसे व्यस्त अंतर्देशीय जलमार्गों में से एक है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. अमेज़न नदी का व्यापक अपवाह बेसिन दक्षिण अमेरिका के एक बड़े हिस्से को कवर करता है। निम्नलिखित में से कौन-सी अमेज़न की प्रमुख सहायक नदी नहीं है?
(1) पुरस
(2) मदीरा
(3) ज़िंगू
(4) ओरिनोको
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. कांगो नदी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके पास दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा अपवाह बेसिन है।
II. यह बड़े पैमाने पर घने भूमध्यरेखीय वर्षावनों से होकर बहती है।
III. यह समुद्र तक पहुँचे बिना पूरी तरह से एक बड़ी अंतर्देशीय झील में गिर जाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल I और II
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. जल लवणता के आधार पर झीलों की निम्नलिखित सूची में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) कैस्पियन सागर
(2) मृत सागर
(3) सुपीरियर झील
(4) अरल सागर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें:
कथन (A): प्रमुख साइबेरियाई नदियाँ (ओब, येनिसेई, लीना) अक्सर वसंत ऋतु के दौरान गंभीर व्यापक बाढ़ का कारण बनती हैं।
कारण (R): आर्कटिक महासागर में उनके मुहाने दक्षिण में उनके ऊपरी मार्गों की तुलना में अधिक समय तक जमे रहते हैं, जिससे विशाल बर्फ का जमाव होता है जो नदी के प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है।
सही विकल्प चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन-सा यूरोप में डेन्यूब नदी के सबसे उपयुक्त आर्थिक महत्व को उजागर करता है?
(1) यह एक अंतरराष्ट्रीय परिवहन मार्ग के रूप में प्रमुख राजधानियों को जोड़ती है
(2) यह महाद्वीप को महासागरीय ज्वारीय ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत प्रदान करती है
(3) यह बड़े पैमाने पर मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए सिंचाई जल की आपूर्ति करती है
(4) यह अति-विशाल कच्चे तेल के वाहकों के लिए एकमात्र जलमार्ग है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. कैस्पियन सागर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे तकनीकी रूप से सतही क्षेत्रफल के आधार पर दुनिया की सबसे बड़ी झील के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
II. यह एक अंतःप्रवाही बेसिन है जिसका वैश्विक महासागर में कोई प्राकृतिक निकास नहीं है।
III. वोल्गा नदी इसके मीठे पानी के अंतर्वाह का प्राथमिक स्रोत है।
IV. इसमें पूरी तरह से मीठा पानी है और इसके पूरे आयतन में शून्य लवणता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. विसर्जित जल की कुल मात्रा के आधार पर, किस नदी को दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी नदी के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(1) यांग्त्ज़ी नदी
(2) कांगो नदी
(3) मिसिसिपी नदी
(4) येनिसेई नदी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. भौगोलिक वर्गीकरण में विवर्तनिक झील को क्या परिभाषित करता है?
(1) भूपर्पटी के भ्रंश के कारण बने गर्तों में निर्मित झील
(2) ज्वालामुखी क्रेटर में पानी जमा होने से बनी झील
(3) पिछले हिमयुग के दौरान हिमनद अपघर्षण द्वारा निर्मित झील

Downloaded from www.pdf.tube

(4) नदी के विसर्पी मोड़ के कट जाने से बनी झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. सूची-I (साइबेरियाई नदी) को सूची-II (संबद्ध विशेषता/क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनिए:
सूची-I: (साइबेरियाई नदी)
A. ओब
B. येनिसेई
C. लीना
D. वोल्गा
सूची-II: (संबद्ध विशेषता/क्षेत्र)
i. लापतेव सागर में गिरती है
ii. कारा सागर में प्रवेश करने से पहले ओब की खाड़ी बनाती है
iii. कैस्पियन सागर में गिरती है
iv. मंगोलिया से निकलती है और मध्य साइबेरिया से होकर बहती है
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. नदी और उसकी विशिष्ट भौगोलिक विशेषता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) अमेज़न नदी - दुनिया का सबसे बड़ा डेल्टा, सुंदरबन बनाती है
(2) कांगो नदी - कर्क रेखा को दो बार पार करती है
(3) हुआंग हे नदी - इसका प्राथमिक अपवाह घने भूमध्यरेखीय वर्षावन के माध्यम से होता है
(4) मिसिसिपी नदी - मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन-सा दक्षिण अमेरिकी देश विशाल अमेज़न नदी अपवाह बेसिन के किसी भी हिस्से को कवर नहीं करता है?
(1) पेरू
(2) कोलंबिया
(3) चिली
(4) बोलिविया
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. नदियों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पूर्ववर्ती नदियाँ विवर्तनिक उत्थान के बावजूद अपना मार्ग बनाए रखती हैं।
II. अध्यारोपित नदियाँ एक नए सतही आवरण पर विकसित होती हैं और अंतर्निहित पुरानी चट्टानी संरचनाओं में अपरदन करते हुए अपना मार्ग बनाए रखती हैं।
III. अनुवर्ती नदियाँ भूमि के प्रारंभिक ढाल के विपरीत दिशा में बहती हैं।
IV. परवर्ती नदियाँ अनुवर्ती नदी के बाद विकसित होती हैं और कोमल चट्टान की पट्टियों का अनुसरण करती हैं।
V. अक्रमवर्ती नदियों के मार्ग पर कोई स्पष्ट संरचनात्मक या क्षेत्रीय भूवैज्ञानिक नियंत्रण नहीं होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

39. विक्टोरिया झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: विक्टोरिया झील सतही क्षेत्रफल के आधार पर अफ्रीका की सबसे बड़ी झील है।
कथन II: भूमध्य रेखा विक्टोरिया झील से होकर गुजरती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. उत्तरी अमेरिका की महान झीलों में से कौन-सी एकमात्र झील पूरी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमाओं के भीतर स्थित है?
(1) मिशिगन झील
(2) सुपीरियर झील
(3) ह्यूरन झील
(4) इरी झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. गोखुर झीलें सामान्यतः किसके परिणामस्वरूप बनती हैं?
(1) हिमयुग के दौरान व्यापक हिमनद अपघर्षण
(2) एक गहरी ज्वालामुखी काल्डेरा संरचना का ढहना
(3) निचले मार्गों में विसर्पण और उसके बाद का कटाव
(4) सक्रिय विवर्तनिक सीमाओं पर प्लेट अधोगमन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. उत्तरी अमेरिका की निम्नलिखित महान झीलों को पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. इरी झील
II. सुपीरियर झील
III. ह्यूरन झील
IV. ओंटारियो झील
सही क्रम चुनें:
(1) II - III - I - IV
(2) I - II - III - IV
(3) II - I - III - IV
(4) IV - I - III - II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उन राष्ट्रों की सही पहचान करता है जिनकी सीमा अरल सागर से लगती है?
(1) तुर्कमेनिस्तान और ईरान
(2) रुस और कजाकिस्तान
(3) उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान
(4) कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. लीना नदी, जो तीन महान साइबेरियाई नदियों में से एक है, मुख्य रुप से किस देश से होकर बहती है?
(1) चीन
(2) रुस
(3) मंगोलिया
(4) कजाकिस्तान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. सूची-I (अफ्रीकी झील) को सूची-II (विशिष्ट विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनें:
सूची-I: (अफ्रीकी झील)
A. विक्टोरिया झील
B. तांगानिका झील
C. मलावी झील
D. चाड झील
सूची-II: (विशिष्ट विशेषता)
i. सहारा की सीमा पर स्थित एक विशाल, उथले अंतःप्रवाही बेसिन में स्थित
ii. सफेद नील का स्रोत, एक विशिष्ट भ्रंश घाटी झील नहीं है
iii. पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश झीलों में सबसे दक्षिणी
iv. दुनिया की सबसे लंबी ताजे पानी की झील, असाधारण रुप से गहरी
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. हुआंग हे (पीली नदी) के भारी तलछट बोझ का कौन-सा महत्वपूर्ण भौगोलिक परिणाम निकलता है?
(1) एशिया की सबसे गहरी नदी कंदरा का निर्माण
(2) पूरे मार्ग में गोखुर झीलों का निर्माण
(3) मुहाने पर डेल्टा की वृद्धि का पूरी तरह से रुक जाना
(4) नदी के तल के ऊपर उठने के कारण बार-बार आने वाली बाढ़
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. हिमनद झीलें, जैसे कि उत्तरी अमेरिका की महान झीलें, मुख्य रुप से किसके द्वारा बनती हैं?
(1) गतिशील बर्फ की चादरों द्वारा बेसिन को कुरेदना और फिर पिघलना
(2) रिक्त मैग्मा कक्षों का पृथ्वी में धंसना
(3) विवर्तनिक प्लेटों का भ्रंश घाटियों में पृथक होना
(4) रेत के टीलों का स्थानांतरित होना और मौसमी धाराओं को रोकना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. मिसिसिपी-मिसौरी नदी प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पूरी तरह से उत्तरी अमेरिका के भीतर स्थित सबसे बड़ा अपवाह बेसिन बनाती है।
II. मिसौरी नदी तकनीकी रुप से इस प्रणाली के भीतर सबसे लंबी एकल नदी है।
III. यह प्रणाली मुख्य रुप से पश्चिम की ओर बहती है और प्रशांत महासागर में गिरती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. प्रमुख यूरोपीय नदियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) डेन्यूब दुनिया की किसी भी अन्य नदी की तुलना में अधिक देशों से होकर बहती है।
(2) वोल्गा नदी काला सागर में गिरती है, जिससे यह भूमध्यसागरीय नौवहन के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है।
(3) टेम्स यूनाइटेड किंगडम की राजधानी से होकर बहती है।
(4) राइन नदी औद्योगिक केंद्रों को उत्तरी सागर से जोड़ने वाले एक आवश्यक व्यापार मार्ग के रुप में कार्य करती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें:
कथन (A): अमेज़न नदी दुनिया की किसी भी नदी की तुलना में सबसे अधिक जल विसर्जन करती है।
कारण (R): अमेज़न अपवाह बेसिन भूमध्यरेखीय क्षेत्र में स्थित है, जहाँ वर्ष भर भारी वर्षा होती है।
सही विकल्प चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. महान भ्रंश घाटी प्रणाली के साथ उनके जुड़ाव के आधार पर निम्नलिखित अफ्रीकी झीलों में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) तांगानिका झील
(2) मलावी झील
(3) विक्टोरिया झील

Click Here to Buy book on Amazon

(4) अल्बर्ट झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. मृत सागर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जॉर्डन भ्रंश घाटी में स्थित है।
II. इसकी सतह और तट पृथ्वी पर सबसे कम भूमि ऊंचाई पर हैं।
III. यह समुद्री मछलियों और प्रवाल भित्तियों की एक विविध श्रेणी का समर्थन करता है।
IV. इसकी अत्यधिक लवणता इसे तैराकों के लिए अत्यधिक उत्प्लावक बनाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. नदी और उसके स्रोत क्षेत्र का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) यांग्त्ज़ी नदी - तिब्बती पठार
(2) राइन नदी - स्विस आल्प्स
(3) अमेज़न नदी - ब्राजीलियाई हाइलैंड्स
(4) नील नदी - विक्टोरिया झील (सफेद नील के लिए)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. डेन्यूब नदी अद्वितीय है क्योंकि यह चार राजधानी शहरों से होकर गुजरती है या उनकी सीमाओं को छूती है। निम्नलिखित में से कौन-सा उन राजधानी शहरों में से एक नहीं है?
(1) वियना
(2) प्राग
(3) बुडापेस्ट
(4) बेलग्रेड
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. सूची-I (यूरोपीय नदी) को सूची-II (वह जलाशय जिसमें यह गिरती है) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनें:
सूची-I: (यूरोपीय नदी)
A. वोल्गा
B. राइन
C. डेन्यूब
D. टेम्स
सूची-II: (वह जलाशय जिसमें यह गिरती है)
i. उत्तरी सागर
ii. कैस्पियन सागर
iii. काला सागर
iv. इंग्लिश चैनल
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. निम्नलिखित में से किसे मीठे पानी की झील के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है?
(1) अरल सागर
(2) बैकाल झील
(3) सुपीरियर झील
(4) मलावी झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. प्रसिद्ध राइन गॉर्ज, जिससे होकर राइन नदी बहती है, मुख्य रूप से भूवैज्ञानिक रूप से किस रूप में वर्गीकृत है?
(1) ज्वालामुखी काल्डेरा
(2) हिमनद मोरेन खाई
(3) भ्रंश खंडों से घिरी भ्रंश घाटी
(4) कार्स्ट सिंकहोल नेटवर्क
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

58. वैश्विक झीलों और उनकी विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कैस्पियन सागर पाँच देशों से घिरा हुआ है।
II. बैकाल झील को वैश्विक स्तर पर सबसे गहरी ताजे पानी की झील माना जाता है।
III. सुपीरियर झील में दुनिया के तरल ताजे पानी की सबसे बड़ी मात्रा है।
IV. मृत सागर काफी हद तक जॉर्डन नदी से पानी के विपथन के कारण सिकुड़ रहा है।
V. अफ्रीका की महान झीलें स्थानीय तटवर्ती अर्थव्यवस्थाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. यांग्त्ज़ी नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: यह पूरी तरह से एक ही देश के भीतर बहने वाली दुनिया की सबसे लंबी नदी है।
कथन II: थ्री गॉर्ज डैम, जो दुनिया के सबसे बड़े जलविद्युत केंद्रों में से एक है, यांग्त्ज़ी पर बनाया गया है।
निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. ओरेगन, अमेरिका में क्रेटर झील और इंडोनेशिया में टोबा झील किस प्रकार के झील वर्गीकरण के प्रमुख उदाहरण हैं?

(1) गोखुर झीलें
(2) ज्वालामुखी झीलें
(3) विवर्तनिक झीलें
(4) हिमनद झीलें
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से 'परवर्ती नदी' का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) वह नदी जो उस भूवैज्ञानिक संरचना से पुरानी है जिसे वह काटती है
(2) एक मुख्य नदी जिसका मार्ग मूल ढाल का अनुसरण करता है
(3) वह सहायक नदी जो कोमल चट्टान की पट्टी के साथ अपरदन करती है
(4) वह धारा जो लुप्त हो जाती है और बाद में पुनः सतह पर आ जाती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. उत्तरी अमेरिका की महान झीलों को उनके सतही क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़े से सबसे छोटे के सही क्रम में चुनें:
(1) सुपीरियर, ह्यूरन, मिशिगन, इरी, ओंटारियो
(2) सुपीरियर, मिशिगन, ह्यूरन, ओंटारियो, इरी
(3) ह्यूरन, सुपीरियर, मिशिगन, इरी, ओंटारियो
(4) सुपीरियर, ह्यूरन, मिशिगन, ओंटारियो, इरी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. टेम्स नदी के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह दक्षिणी इंग्लैंड से होकर उत्तरी सागर में बहती है
(2) यह हाइलैंड्स से निकलती है और दक्षिण की ओर बहती है
(3) यह इंग्लैंड को वेल्स से अलग करने वाली प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करती है
(4) यह नाटकीय विवर्तनिक भ्रंश घाटी संरचनाओं के लिए जानी जाती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. एक अपवाह प्रतिरूप जहाँ नदियाँ सीधे नवनिर्मित भूदृश्य के प्रारंभिक भूवैज्ञानिक ढाल को दर्शाती हैं और उसका अनुसरण करती हैं, उसे इस रूप में वर्गीकृत किया जाता है:
(1) पूर्ववर्ती अपवाह
(2) अनुवर्ती अपवाह
(3) अध्यारोपित अपवाह
(4) जालीदार अपवाह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. सूची-I (नदी प्रणाली) को सूची-II (संबद्ध राष्ट्र/महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनें:
सूची-I: (नदी प्रणाली)
A. ओब-इरतिश
B. मिसिसिपी-मिसौरी
C. हुआंग हे
D. कांगो
सूची-II: (संबद्ध राष्ट्र/महाद्वीप)
i. उत्तरी अमेरिका
ii. मध्य अफ्रीका
iii. चीन
iv. रूस
(1) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. सुपीरियर झील को विश्व स्तर पर इस रूप में मान्यता प्राप्त है:
(1) सतही क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी ताजे पानी की झील
(2) दुनिया की सबसे गहरी झील
(3) सतही क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी खारे पानी की झील
(4) उत्तरी अमेरिका की सबसे पुरानी विवर्तनिक झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. कांगो नदी के मुहाने पर वास्तविक डेल्टा नहीं है। इस भौगोलिक घटना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) पूरे मार्ग में तलछट के बोझ का पूर्ण अभाव
(2) नदी का समुद्र के बजाय एक आंतरिक बेसिन में गिरना
(3) गहरी खाइयाँ और तीव्र धाराएँ जो तलछट को समुद्र में ले जाती हैं
(4) मुहाने के पास बने कृत्रिम बांध जो आने वाली सारी गाद को रोक लेते हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. अरल सागर की पर्यावरणीय आपदा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सिकुड़ने से पहले, इसे दुनिया की चार सबसे बड़ी झीलों में से एक माना जाता था।
II. पीछे हटते जल ने विषैले नमक और धूल के मैदान छोड़ दिए जो गंभीर स्थानीय स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते हैं।
III. इसका प्राथमिक कारण सोवियत युग के दौरान कपास उगाने के लिए गहन जल विपथन था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. झीलों के वर्गीकरण से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) विवर्तनिक झील - तांगानिका झील
(2) हिमनद झील - ह्यूरन झील

Downloaded from www.pdf.tube

(3) गोखुर झील - कैस्पियन सागर
(4) ज्वालामुखी झील - क्रेटर झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें:
कथन (A): सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियों ने हिमालय में उल्लेखनीय रूप से गहरी कंदराएँ बनाई हैं।
कारण (R): दोनों पूर्ववर्ती नदियाँ हैं जिन्होंने हिमालय पर्वत के विवर्तनिक उत्थान के अनुरुप दर से नीचे की ओर काटना जारी रखा।
सही विकल्प चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. उनकी प्राथमिक निर्माण प्रक्रियाओं के आधार पर निम्नलिखित प्राकृतिक भौगोलिक विशेषताओं में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) विवर्तनिक झीलें
(2) हिमनद झीलें
(3) ज्वालामुखी झीलें
(4) बरखान टीले
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. वोल्गा नदी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह रुस की वाल्दाई पहाड़ियों से निकलती है।
II. यह पूरी तरह से यूरोपीय महाद्वीप के भीतर सबसे लंबी नदी है।
III. यह अपनी अधिकांश लंबाई में सर्दियों के दौरान जम जाती है।
IV. यह बड़े पैमाने पर जर्मनी के औद्योगिक केंद्र से होकर बहती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल IV
(3) केवल II और III
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. कौन-सी विशेषता प्राचीन काल में नील नदी के ऐतिहासिक महत्व को विशिष्ट रूप से उजागर करती है?
(1) इसने एशियाई आक्रमणकारियों से बचाने के लिए एक अभेद्य बाधा का निर्माण किया
(2) इसने तट को आंतरिक भाग से जोड़ने वाला एक सीधा मार्ग प्रदान किया
(3) वार्षिक बाढ़ से प्राप्त उपजाऊ गाद ने प्राचीन कृषि को आधार प्रदान किया
(4) तीव्र प्रपातों ने समुद्री यात्रा को रोका, जिससे पृथक संस्कृतियाँ सुरक्षित रहीं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

74. प्रमुख साइबेरियाई नदियों को पश्चिम से पूर्व की ओर व्यवस्थित करें:
I. येनिसेई
II. ओब
III. लीना
सही क्रम चुनें:
(1) I - II - III
(2) II - I - III
(3) III - I - II
(4) II - III - I
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. सूची-I (विशिष्ट नदी) को सूची-II (मुख्य पहचान विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनें:
सूची-I: (विशिष्ट नदी)
A. मिसिसिपी
B. नील
C. अमेज़न
D. हुआंग हे
सूची-II: (मुख्य पहचान विशेषता)
i. सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय वर्षावन बेसिन
ii. पक्षी-पाद डेल्टा
iii. उच्च लोएस तलछट सामग्री
iv. दुनिया की सबसे लंबी नदी
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. निम्नलिखित प्रमुख अफ्रीकी झीलों में से किसे सामान्यतः इसके उथले, तस्तरीनुमा गर्त के कारण महान भ्रंश घाटी प्रणाली का भौतिक हिस्सा नहीं माना जाता है?
(1) तांगानिका झील
(2) विक्टोरिया झील
(3) मलावी झील
(4) अल्बर्ट झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. अमेज़न नदी बेसिन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: अमेज़न बेसिन में स्थित विशाल भूमध्यरेखीय वर्षावन को स्थानीय रूप से 'सेल्वास' कहा जाता है।
कथन II: अमेज़न बेसिन लगातार विशिष्ट, लंबी शुष्क ऋतुओं का अनुभव करता है जिससे वर्ष के आधे समय नदी काफी हद तक सिकुड़ जाती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. झीलों के वैश्विक वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. दुनिया की अधिकांश बड़ी ताजे पानी की झीलें उच्च उत्तरी अक्षांशों में स्थित हैं, जो पूर्व हिमनद द्वारा निर्मित हैं।
II. खारे पानी की झीलें लगभग विशेष रूप से गर्म, शुष्क, अंतःप्रवाही बेसिनों में पाई जाती हैं जहाँ वाष्पीकरण वर्षा से अधिक होता है।
III. कैस्पियन सागर में दुनिया के खारे झील जल के आयतन का विशाल बहुमत है।
IV. ताजे पानी की झीलों में पृथ्वी के कुल तरल ताजे पानी की मात्रा सभी बहती नदियों के संयुक्त जल से अधिक है।
V. ज्वालामुखी क्रेटर झीलें कुल वैश्विक झील सतही क्षेत्रफल के आधे से अधिक के लिए उत्तरदायी हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. ओब नदी के मुहाने पर विशाल, लंबा ज्वारनदमुख, जिसे दुनिया के सबसे लंबे ज्वारनदमुख के रूप में मान्यता प्राप्त है, कहलाता है:

(1) ओब की खाड़ी
(2) लापतेव जलडमरूमध्य
(3) कारा इनलेट
(4) साइबेरियन फ्योर्ड
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. डेन्यूब नदी के अंतिम निकास के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।

(1) यह विशाल समुद्री व्यापार की सुविधा प्रदान करते हुए उत्तरी सागर में गिरती है
(2) यह एक डेल्टा बनाती है और काला सागर में गिरती है
(3) यह इतालवी प्रायद्वीप के माध्यम से भूमध्य सागर में गिरती है
(4) यह वोल्गा नदी के साथ कैस्पियन सागर में गिरती है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वह नदी जो स्थानीय विवर्तनिक उत्थान के बावजूद अपने मूल मार्ग और प्रतिरूप को बनाए रखती है
पूर्ववर्ती नदी वह जलधारा है जो किसी क्षेत्र के विवर्तनिक उत्थान के बावजूद अपने मूल प्रवाह मार्ग और प्रतिरूप को बनाए रखती है। जैसे-जैसे भूमि ऊपर उठती है, नदी अपनी घाटी को उसी दर से लंबवत काटती है, जिससे गहरे गॉर्ज या कंदराओं का निर्माण होता है। हिमालय से निकलने वाली सिंधु, सतलुज और ब्रह्मपुत्र नदियाँ इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो पर्वत श्रेणी के निर्माण से पहले भी वहीं प्रवाहित होती थीं।

2. (1) रियो नीग्रो
अमेज़न नदी दक्षिण अमेरिका की विशाल जल प्रणाली है जिसमें अनेक सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं। रियो नीग्रो इसके बाएँ तट की सबसे महत्वपूर्ण सहायक नदी मानी जाती है, जो कोलंबिया से निकलकर ब्राजील में अमेज़न से मिलती है। यह अपने काले रंग के जल के लिए प्रसिद्ध है जो इसमें घुले कार्बनिक पदार्थों के कारण होता है। अन्य नदियाँ जैसे मदीरा और टापाजोस इसके दाएँ तट की प्रमुख सहायक नदियाँ कहलाती हैं।

3. (3) नील नदी सीधे लाल सागर में गिरती है।
नील नदी विश्व की सबसे लंबी नदी है जो अफ्रीका महाद्वीप के कई देशों से होकर बहती है। इसकी मुख्य शाखाएँ सफेद नील और नीली नील हैं जो सूडान की राजधानी खार्तूम में आपस में मिलती हैं। नीली नील इथियोपिया की ताना झील से निकलती है। नील नदी उत्तर की ओर बहते हुए अंततः भूमध्य सागर में गिरती है, न कि लाल सागर में। इसका विशाल डेल्टा मिस्र के उत्तरी तट पर स्थित है।

4. (4) कांगो नदी
कांगो नदी, जिसे जायरे नदी के नाम से भी जाना जाता है, अफ्रीका की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यह अपनी अनूठी भौगोलिक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है क्योंकि यह अपने प्रवाह मार्ग के दौरान भूमध्य रेखा को दो बार पार करती है। यह नदी जल विसर्जन की मात्रा के मामले में अमेज़न के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी नदी है। यह मुख्य रूप से मध्य अफ्रीका के घने और दुर्गम वर्षावनों से होकर बहती है।

5. (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
लीना नदी रूस के साइबेरियाई क्षेत्र की प्रमुख नदी है जो उत्तर की ओर बहते हुए आर्कटिक महासागर में गिरती है। टेम्स नदी यूरोप महाद्वीप में स्थित है जो लंदन जैसे ऐतिहासिक शहर से होकर गुजरती है। यांग्त्ज़ी एशिया की सबसे लंबी नदी है जो पूरी तरह से चीन के भीतर बहती है। मिसिसिपी उत्तरी अमेरिका की सबसे महत्वपूर्ण नदी प्रणाली है जो मेक्सिको की खाड़ी में अपना विशाल जल विसर्जित करती है।

6. (2) बड़े पैमाने पर कृषि सिंचाई के लिए नदियों के मार्ग में परिवर्तन (विपथन)
अरल सागर मध्य एशिया में स्थित एक अंतःप्रवाही झील है जो पिछले कुछ दशकों में नाटकीय रूप से सिकुड़ गई है। इसका मुख्य कारण सोवियत शासन के दौरान कृषि सिंचाई, विशेषकर कपास की खेती के लिए अमू दरिया और सिर दरिया नदियों के मार्ग को बदलना था। इन नदियों से आने वाले जल की भारी कटौती के कारण झील का स्तर गिर गया, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है।

7. (4) निचला मार्ग जहाँ क्षैतिज अपरदन और विसर्पण की प्रधानता होती है
गोखुर झीलें नदी के निचले मार्ग की एक विशिष्ट भू-आकृतिक विशेषता हैं जहाँ भूमि का ढाल अत्यंत कम होता है। इस चरण में नदियाँ अत्यधिक विसर्पण करती हैं और क्षैतिज अपरदन की प्रधानता होती है। जब नदी अपने विसर्पी मोड़ को छोड़कर सीधा रास्ता चुन लेती है, तो पुराना मुड़ा हुआ हिस्सा मुख्य धारा से अलग होकर एक झील का रूप ले लेता है। इन्हें चापाकार झील भी कहा जाता है जो जलोढ़ मैदानों में मिलती हैं।

8. (1) केवल I और II
यांग्त्ज़ी नदी एशिया की सबसे लंबी और दुनिया की तीसरी सबसे लंबी नदी है जो केवल चीन में बहती है। हुआंग हे को 'पीली नदी' और 'चीन का शोक' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें भारी मात्रा में तलछट होती है जिससे भीषण बाढ़ आती है। ये दोनों नदियाँ अपना जल प्रशांत महासागर के विभिन्न हिस्सों में विसर्जित करती हैं। इनका आर्थिक महत्व चीन की कृषि, औद्योगिक विकास और परिवहन व्यवस्था के लिए अनिवार्य माना जाता है।

9. (3) कैस्पियन सागर
वोल्गा नदी यूरोप महाद्वीप की सबसे लंबी और सबसे बड़ी नदी है जो पूरी तरह से रूस के क्षेत्र में बहती है। यह वाल्दाई पहाड़ियों से निकलती है और दक्षिण की ओर बहते हुए अंततः कैस्पियन सागर में गिरती है। कैस्पियन सागर दुनिया की सबसे बड़ी खारे जल की झील है। वोल्गा नदी रूस के व्यापार, सिंचाई और परिवहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसे रूसी संस्कृति में 'मातृ नदी' के रूप में उच्च सम्मान प्राप्त है।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अफ्रीका की तांगानिका और मलावी जैसी महान झीलें अपनी असाधारण गहराई और रैखिक आकार के लिए जानी जाती हैं। इन झीलों का निर्माण पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली की विवर्तनिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप हुआ है। भ्रंश के कारण बनी गहरी खाइयों में वर्षा और नदियों का जल जमा होने से इन झीलों का विकास हुआ। ये झीलें न केवल जैव

Downloaded from www.pdf.tube

विविधता का केंद्र हैं, बल्कि पृथ्वी की आंतरिक हलचलों का प्रत्यक्ष भौगोलिक प्रमाण भी प्रस्तुत करती हैं।

11. (4) एक विशिष्ट पक्षी-पाद डेल्टा
मिसिसिपी नदी उत्तरी अमेरिका की एक विशाल नदी प्रणाली है जो मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है। इसके मुहाने पर एक विशिष्ट प्रकार का डेल्टा बनता है जिसे 'पक्षी-पाद डेल्टा' कहा जाता है। इसकी आकृति पक्षी के पंजों के समान होती है क्योंकि नदी की वितरिकाएँ समुद्र में काफी दूर तक संकीर्ण पट्टियों के रूप में फैली होती हैं। यह संरचना नदी द्वारा लाए गए भारी तलछट और समुद्र की शांत लहरों के बीच होने वाली अंतःक्रिया से बनती है।

12. (3) केवल I, II और III
रूस की ओब, येनिसेई और लीना जैसी महान साइबेरियाई नदियाँ मुख्य रूप से उत्तर दिशा की ओर बहती हैं और आर्कटिक महासागर में गिरती हैं। सर्दियों में इन नदियों का निचला मार्ग, जो उत्तर में स्थित है, पूरी तरह जम जाता है। वसंत ऋतु में जब दक्षिण का ऊपरी मार्ग पिघलता है, तो पानी उत्तर के बर्फ अवरोधों के कारण पीछे हटने लगता है, जिससे इन क्षेत्रों में भीषण बाढ़ आती है। यहाँ की जलवायु अत्यंत कठोर है।

13. (3) अमेज़न
राइन, डेन्यूब और टेम्स नदियाँ भौगोलिक रूप से यूरोप महाद्वीप में स्थित हैं और वहाँ की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राइन पश्चिमी यूरोप, डेन्यूब मध्य और पूर्वी यूरोप तथा टेम्स यूनाइटेड किंगडम की प्रमुख नदियाँ हैं। इसके विपरीत, अमेज़न नदी दक्षिण अमेरिका महाद्वीप में स्थित है जो दुनिया की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। इस प्रकार, महाद्वीपीय स्थिति के आधार पर अमेज़न अन्य तीनों नदियों की तुलना में एक विषम विकल्प है।

14. (4) तांगानिका झील
तांगानिका झील अफ्रीका महाद्वीप की एक विशाल और महत्वपूर्ण झील है जो पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी में स्थित है। यह बैकाल झील के बाद दुनिया की दूसरी सबसे गहरी और दूसरी सबसे बड़ी ताजे जल की झील मानी जाती है। इसकी लंबाई लगभग 673 किलोमीटर है, जिससे यह दुनिया की सबसे लंबी ताजे जल की झील भी है। यह तंजानिया, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, बुरुंडी और जाम्बिया जैसे देशों के बीच सीमाओं का निर्धारण करती है।

15. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
झीलों का निर्माण विभिन्न भू-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है। विवर्तनिक झीलें पृथ्वी की पपड़ी में हलचल से बनती हैं, जैसे कैस्पियन सागर। ज्वालामुखी झीलें निष्क्रिय ज्वालामुखी के क्रेटर में पानी भरने से बनती हैं, जैसे ओरेगन की क्रेटर झील। हिमनद झीलें ग्लेशियरों द्वारा बनाई गई खाइयों में पानी जमा होने से बनती हैं, जैसे सुपीरियर झील। गोखुर झीलें नदी के विसर्पी मोड़ों के मुख्य धारा से अलग होने से बनती हैं, जैसे बिहार की कंवर झील।

16. (2) उज्बेकिस्तान
कैस्पियन सागर दुनिया की सबसे बड़ी अंतर्देशीय जल राशि है जिसकी सीमा पाँच अलग-अलग देशों से लगती है। इन देशों में रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान और अजरबैजान शामिल हैं। उज्बेकिस्तान एक पूर्णतः भू-आबद्ध देश है और इसकी कोई भी सीमा कैस्पियन सागर के तट को नहीं छूती है। यह झील अपने विशाल तेल और गैस भंडार के साथ-साथ प्रसिद्ध स्टर्जन मछली के उत्पादन के लिए वैश्विक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

17. (2) टेम्स नदी - उत्तरी सागर
टेम्स नदी इंग्लैंड की एक महत्वपूर्ण नदी है जो लंदन से होते हुए पूर्व की ओर बहती है और अंततः उत्तरी सागर में गिरती है। डेन्यूब नदी का निकास काला सागर में होता है, जबकि राइन नदी भी उत्तरी सागर में अपना जल विसर्जित करती है। लीना नदी रूस के साइबेरियाई क्षेत्र से होकर उत्तर में आर्कटिक महासागर के लापतेव सागर में गिरती है। भौगोलिक रूप से केवल टेम्स और उत्तरी सागर का युग्म यहाँ सही सुमेलित है।

18. (2) I, II, III और V
उत्तरी अमेरिका की पाँच महान झीलों का निर्माण मुख्य रूप से प्लीस्टोसिन हिमयुग के दौरान हिमनद क्रियाओं द्वारा हुआ था। सुपीरियर झील सतही क्षेत्रफल में दुनिया की सबसे बड़ी ताजे जल की झील है। मिशिगन झील एकमात्र ऐसी झील है जो पूरी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर स्थित है। इरी और ओंटारियो झीलें नियाग्रा नदी और प्रसिद्ध जलप्रपात के माध्यम से जुड़ी हुई हैं। सुपीरियर, ह्यूरन, इरी और ओंटारियो कनाडा के साथ सीमा साझा करती हैं।

19. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अनुवर्ती नदियाँ वे जलधाराएँ होती हैं जिनका प्रवाह मार्ग भूमि के प्रारंभिक ढाल और क्षेत्रीय विवर्तनिक संरचना के अनुसार निर्धारित होता है। यह नवनिर्मित सतह पर बहने वाली पहली नदियाँ होती हैं। परवर्ती नदियाँ अनुवर्ती नदियों के बाद विकसित होती हैं और सामान्यतः चट्टानों के नतिलंब के समानांतर बहती हैं। ये नदियाँ कोमल चट्टानी क्षेत्रों में अपना मार्ग बनाती हैं। ये दोनों प्रणालियाँ किसी क्षेत्र के अपवाह तंत्र के विकास के महत्वपूर्ण चरणों को दर्शाती हैं।

20. (4) लंदन
टेम्स नदी यूनाइटेड किंगडम की सबसे प्रसिद्ध और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी इंग्लैंड के दक्षिण-पूर्वी हिस्से से होकर बहती है और लंदन जैसे वैश्विक राजधानी शहर के मध्य से गुजरती है। ऐतिहासिक रूप से इस नदी ने लंदन के एक प्रमुख बंदरगाह और व्यापारिक केंद्र के रूप में विकास में आधारभूत भूमिका निभाई है। इसकी कुल लंबाई लगभग 346 किलोमीटर है और यह अंततः ज्वारनदमुख बनाते हुए उत्तरी सागर में विसर्जित हो जाती है।

21. (3) हुआंग हे नदी
हुआंग हे, जिसे पीली नदी के नाम से जाना जाता है, चीन की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यह नदी लोएस पठार से होकर

NODIA

गुज़रती है जहाँ से यह भारी मात्रा में पीली मिट्टी और गाद अपने साथ लाती है। इसी गाद के कारण इसका जल पीला दिखाई देता है, जिससे इसे यह नाम मिला है। अत्यधिक तलछट जमा होने के कारण इस नदी का तल अक्सर ऊपर उठ जाता है, जिससे विनाशकारी बाढ़ की संभावना निरंतर बनी रहती है।

22. (1) नील, अमेज़न, यांग्त्ज़ी, मिसिसिपी-मिसौरी
विश्व की प्रमुख नदियों को उनकी कुल लंबाई के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। नील नदी को सामान्यतः दुनिया की सबसे लंबी नदी माना जाता है, जिसकी लंबाई लगभग 6650 किलोमीटर है। इसके बाद दक्षिण अमेरिका की अमेज़न नदी आती है, जो जल की मात्रा में सबसे बड़ी है। तीसरे स्थान पर चीन की यांग्त्ज़ी नदी और चौथे स्थान पर उत्तरी अमेरिका की मिसिसिपी-मिसौरी नदी प्रणाली आती है। यह क्रम इन नदियों के विशाल भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।

23. (4) उठती हुई पर्वत श्रृंखलाओं को सीधे काटकर बनाई गई गहरी कंदराएँ
पूर्ववर्ती अपवाह प्रणाली का सबसे ठोस भौगोलिक प्रमाण वे गहरी और संकीर्ण कंदराएँ या गॉर्ज हैं जो पहाड़ों को सीधे काटकर बनाई गई हैं। ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी नदियाँ हिमालय के उत्थान से पहले से मौजूद थीं। जैसे-जैसे हिमालय ऊपर उठता गया, इन नदियों ने अपनी घाटियों को लंबवत रूप से काटना जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप पहाड़ के बीच में गहरे कटाव बने, जो यह सिद्ध करते हैं कि नदी का मार्ग पर्वत निर्माण से भी प्राचीन है।

24. (1) समुद्र में निकास न होने के साथ गर्म और शुष्क जलवायु में उच्च वाष्पीकरण दर
मृत सागर पृथ्वी पर सबसे खारे जल निकायों में से एक है, जो जॉर्डन और इजरायल के बीच स्थित है। इसकी अत्यधिक लवणता का मुख्य कारण इसका एक अंतःप्रवाही बेसिन होना है, जहाँ से जल बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं है। गर्म और शुष्क जलवायु के कारण यहाँ वाष्पीकरण की दर बहुत अधिक है, जिससे जल उड़ जाता है और नमक तथा खनिज पीछे रह जाते हैं। इसके जल का घनत्व अधिक होने के कारण मनुष्य इसमें आसानी से तैर सकते हैं।

25. (3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
विक्टोरिया झील अफ्रीका महाद्वीप की सबसे बड़ी झील है जो नील नदी का स्रोत भी है। बैकाल झील रूस के साइबेरियाई भाग में स्थित है और एशिया की सबसे गहरी झील मानी जाती है। इरी झील उत्तरी अमेरिका की पाँच महान झीलों में से एक है जो कनाडा और अमेरिका की सीमा पर स्थित है। टिटिकाका झील दक्षिण अमेरिका के एंडीज पहाड़ों में स्थित दुनिया की सबसे ऊंची नौगम्य झील है। यह मिलान पूर्णतः सही है।

26. (1) यह काला सागर में गिरती है और एक बड़ा डेल्टा बनाती है।
राइन नदी यूरोप की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यस्त व्यापारिक जलधारा है जो स्विस आल्प्स से निकलती है। यह उत्तर की ओर बहते हुए जर्मनी और फ्रांस के बीच प्राकृतिक सीमा बनाती है और अंततः नीदरलैंड के माध्यम से उत्तरी सागर में गिरती है, न कि काला सागर में। यह औद्योगिक परिवहन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। काला सागर में गिरने वाली प्रमुख यूरोपीय नदी डेन्यूब है। राइन बेसिन यूरोप के सबसे घने औद्योगिक क्षेत्रों में से एक है।

27. (4) ओरिनोको
अमेज़न नदी दक्षिण अमेरिका के विशाल क्षेत्र में बहती है और इसकी सैकड़ों सहायक नदियाँ हैं। पुरस, मदीरा और ज़िंगू अमेज़न की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं जो इसके जल प्रवाह में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। ओरिनोको नदी एक स्वतंत्र नदी प्रणाली है जो मुख्य रूप से वेनेज़ुएला और कोलंबिया में बहती है और सीधे अटलांटिक महासागर में गिरती है। हालाँकि यह अमेज़न बेसिन के उत्तर में स्थित है, लेकिन यह अमेज़न की सहायक नदी नहीं मानी जाती है।

28. (2) केवल III
कांगो नदी दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी नदी प्रणाली है जिसका अपवाह बेसिन क्षेत्र अमेज़न के बाद दूसरे स्थान पर आता है। यह मध्य अफ्रीका के घने भूमध्यरेखीय वर्षावनों से होकर गुज़रती है और इसमें साल भर जल की प्रचुर मात्रा रहती है। यह नदी अंततः अटलांटिक महासागर में अपना जल विसर्जित करती है, न कि किसी अंतर्देशीय झील में। यह अपनी गहराई के लिए भी प्रसिद्ध है, जो इसे दुनिया की सबसे गहरी नदियों में से एक बनाती है।

29. (3) सुपीरियर झील
कैस्पियन सागर, मृत सागर और अरल सागर अपनी उच्च लवणता के लिए जाने जाते हैं और इन्हें खारे जल के जलाशयों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इसके विपरीत, सुपीरियर झील उत्तरी अमेरिका की एक विशाल ताजे जल की झील है। यह सतही क्षेत्रफल के अनुसार दुनिया की सबसे बड़ी ताजे जल की झील मानी जाती है। अतः, जल की रासायनिक संरचना और लवणता के आधार पर सुपीरियर झील अन्य तीनों विकल्पों की तुलना में स्पष्ट रूप से भिन्न और विषम है।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
साइबेरिया की प्रमुख नदियाँ जैसे ओब और येनिसेई वसंत ऋतु में भयानक बाढ़ का सामना करती हैं। इसका प्रमुख भौगोलिक कारण यह है कि ये नदियाँ दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हैं। वसंत में दक्षिणी भाग पहले पिघल जाता है और जल उत्तर की ओर बहता है, लेकिन उत्तरी मुहाना आर्कटिक के पास होने के कारण अभी भी जमा रहता है। यह बर्फ जल के प्रवाह को रोक देती है, जिससे ऊपरी मार्ग में जल भर जाता है और व्यापक बाढ़ आती है।

31. (1) यह एक अंतरराष्ट्रीय परिवहन मार्ग के रूप में प्रमुख राजधानियों को जोड़ती है
डेन्यूब नदी यूरोप की एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय जलधारा है जो दस अलग-अलग देशों से होकर गुज़रती है। इसका सबसे बड़ा आर्थिक महत्व एक परिवहन मार्ग के रूप में है जो वियना, बुडापेस्ट और बेलग्रेड जैसी महत्वपूर्ण राजधानियों को जोड़ता है। यह मध्य और पूर्वी यूरोप के बीच व्यापार और माल ढुलाई

Click Here to Buy book on Amazon

के लिए एक जीवन रेखा की तरह कार्य करती है। यह नदी काला सागर को आंतरिक यूरोप से जोड़कर क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण और पर्यटन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

32. (1) केवल I, II और III
कैस्पियन सागर पृथ्वी पर सतही क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा अंतर्देशीय जल निकाय है, जिसे झील के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह एक पूर्णतः अंतःप्रवाही बेसिन है जिसका वैश्विक महासागरों से कोई सीधा संबंध नहीं है। वोल्गा नदी इसमें गिरने वाली सबसे बड़ी नदी है जो ताजे जल का मुख्य स्रोत है। हालाँकि इसमें लवणता समुद्र की तुलना में कम है, लेकिन यह पूरी तरह से मीठा जल नहीं है, बल्कि यह लवणीय जल निकाय है।

33. (2) कांगो नदी
जल विसर्जन या डिस्चार्ज की मात्रा के आधार पर कांगो नदी को दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी नदी के रूप में मान्यता प्राप्त है। पहले स्थान पर अमेज़न नदी आती है। कांगो नदी का विशाल जल प्रवाह इसके घने भूमध्यरेखीय वर्षावन क्षेत्र में स्थित होने के कारण है, जहाँ साल भर भारी वर्षा होती है। यह अफ्रीका की सबसे शक्तिशाली नदी है जिसका उपयोग जलविद्युत उत्पादन के लिए किया जा सकता है। यह अटलांटिक महासागर में प्रति सेकंड भारी मात्रा में जल छोड़ती है।

34. (1) भूपर्पटी के भ्रंश के कारण बने गर्तों में निर्मित झील
विवर्तनिक झीलें उन जलाशयों को कहा जाता है जिनका निर्माण पृथ्वी की पपड़ी में होने वाली हलचलों, जैसे भ्रंश, झुकाव या मुड़ाव के कारण होता है। जब पृथ्वी की सतह का कोई हिस्सा नीचे धंस जाता है या भ्रंश घाटी का निर्माण होता है, तो उस गर्त में जल जमा होने से इन झीलों का विकास होता है। बैकाल झील और अफ्रीका की तांगानिका झील विवर्तनिक झीलों के प्रमुख उदाहरण हैं। ये झीलें अक्सर बहुत गहरी और लंबी आकृति वाली होती हैं।

35. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
ओब नदी रूस में बहती है और कारा सागर में गिरने से पहले एक विशाल खाड़ी बनाती है। येनिसेई नदी मंगोलिया से निकलती है और मध्य साइबेरिया से होते हुए उत्तर की ओर बहती है। लीना नदी पूर्वी साइबेरिया की प्रमुख नदी है जो आर्कटिक महासागर के लापतेव सागर में अपना जल विसर्जित करती है। वोल्गा नदी यूरोप में स्थित है और कैस्पियन सागर में गिरती है। यह मिलान इन नदियों के उद्गम और निकास की भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

36. (4) मिसिसिपी नदी - मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है
मिसिसिपी नदी उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है जो अंततः मेक्सिको की खाड़ी में अपना जल विसर्जित करती है। यह नदी अपने मार्ग में भारी तलछट लाती है और मुहाने पर पक्षी-पाद डेल्टा बनाती है। अमेज़न अटलांटिक में गिरती है और सुंदरबन गंगा-ब्रह्मपुत्र का हिस्सा है। कांगो भूमध्य रेखा को दो बार पार करती है, जबकि हुआंग हे पीली मिट्टी के लिए जानी जाती है। भौगोलिक दृष्टि से मिसिसिपी और मेक्सिको की खाड़ी का संबंध बिल्कुल सटीक और सही है।

37. (3) चिली
अमेज़न नदी का अपवाह बेसिन दक्षिण अमेरिका के लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र को कवर करता है और कई देशों में फैला हुआ है। इसमें ब्राजील, पेरू, कोलंबिया, बोलिविया, इक्वाडोर और वेनेज़ुएला जैसे देश शामिल हैं। चिली देश महाद्वीप के सुदूर दक्षिण-पश्चिमी तट पर एंडीज पर्वतमाला के पीछे स्थित है, इसलिए यह अमेज़न बेसिन के भौगोलिक विस्तार के अंतर्गत नहीं आता है। चिली की नदियाँ सामान्यतः छोटी होती हैं और सीधे प्रशांत महासागर में गिरती हैं।

38. (1) I, II, IV और V
नदियों का वर्गीकरण उनके विकास और भूवैज्ञानिक संरचना के साथ उनके संबंधों पर आधारित होता है। पूर्ववर्ती नदियाँ उत्थान के बावजूद अपना मार्ग नहीं बदलतीं, जबकि अध्यारोपित नदियाँ पुरानी संरचनाओं पर अपना मार्ग थोपती हैं। परवर्ती नदियाँ मुख्य धारा के बाद कोमल चट्टानों के साथ विकसित होती हैं और अक्रमवर्ती नदियाँ किसी संरचनात्मक नियंत्रण का पालन नहीं करती हैं। अनुवर्ती नदियाँ ढाल के अनुसार बहती हैं, उसके विपरीत नहीं। ये श्रेणियाँ अपवाह तंत्र को समझने में मदद करती हैं।

39. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
विक्टोरिया झील अफ्रीका महाद्वीप की सबसे बड़ी झील है और सतही क्षेत्रफल के मामले में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी ताजे जल की झील है। यह नील नदी की मुख्य शाखा, सफेद नील का प्राथमिक स्रोत भी है। भौगोलिक रूप से, भूमध्य रेखा इस झील के मध्य भाग से होकर गुजरती है, जो इसके उष्णकटिबंधीय स्थान को दर्शाती है। यह झील केन्या, तंजानिया और युगांडा के बीच साझा की जाती है और स्थानीय समुदायों के लिए भोजन और परिवहन का मुख्य आधार है।

40. (1) मिशिगन झील
उत्तरी अमेरिका की पाँच महान झीलों में से मिशिगन झील एकमात्र ऐसी झील है जो पूरी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमाओं के भीतर स्थित है। अन्य चार झीलें - सुपीरियर, ह्यूरन, इरी और ओंटारियो - संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करती हैं। मिशिगन झील शिकागो जैसे प्रमुख शहरों के पास स्थित है और औद्योगिक तथा परिवहन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह झील पूरी तरह से अमेरिकी क्षेत्राधिकार और प्रबंधन के अंतर्गत आती है।

NODIA

41. (3) निचले मार्गों में विसर्पण और उसके बाद का कटाव
गोखुर झीलों का निर्माण नदी के मैदानी भागों में विसर्पी मार्ग अपनाने के कारण होता है। जब नदी की धारा अत्यधिक मुड़ जाती है, तो समय के साथ अपरदन और निक्षेपण के कारण विसर्प का घेरा बहुत संकीर्ण हो जाता है। बाढ़ के दौरान नदी इस मुड़े हुए मार्ग को छोड़कर सीधे रास्ते पर बहने लगती है। पुराना विसर्पी हिस्सा मुख्य धारा से कटकर अलग हो जाता है

और एक अर्धचंद्राकार झील बन जाती है, जिसे गोखुर झील कहा जाता है।

42. (1) II - III - I - IV
उत्तरी अमेरिका की महान झीलों को पश्चिम से पूर्व की ओर एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है। इस क्रम में सबसे पहले सुपीरियर झील आती है, उसके बाद पूर्व की ओर बढ़ने पर मिशिगन और ह्यूरन झीलें स्थित हैं। इसके और आगे जाने पर इरी झील और अंत में ओंटारियो झील आती है जो सेंट लॉरेंस नदी से जुड़ी है। यह क्रम न केवल उनकी भौगोलिक स्थिति को दर्शाता है बल्कि क्षेत्र के जल प्रवाह की दिशा को भी स्पष्ट करता है।

43. (4) कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान
अरल सागर मध्य एशिया में स्थित एक महत्वपूर्ण अंतर्देशीय जलाशय है, जिसकी सीमाएँ कजाकिस्तान (उत्तर में) और उज्बेकिस्तान (दक्षिण में) के साथ लगती हैं। ऐतिहासिक रूप से यह दुनिया की सबसे बड़ी झीलों में से एक थी, लेकिन मानवीय हस्तक्षेप और सिंचाई के लिए नदियों के जल विपथन के कारण अब यह काफी छोटी हो गई है। इसका वर्तमान अस्तित्व मुख्यतः इन दो देशों के बीच विभाजित है और पर्यावरणीय पुनरुद्धार के प्रयास यहाँ निरंतर जारी हैं।

44. (2) रूस
लीना नदी दुनिया की सबसे लंबी नदियों में से एक है और पूरी तरह से रूस के भीतर बहती है। यह पूर्वी साइबेरिया के बैकाल पर्वत से निकलती है और उत्तर की ओर बहते हुए आर्कटिक महासागर के लापतेव सागर में गिरती है। यह नदी सर्दियों में जम जाती है और परिवहन के लिए शीतकालीन मार्ग के रूप में उपयोग की जाती है। लीना नदी का विशाल बेसिन खनिजों और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जो रूसी अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

45. (3) A-iii, B-iv, C-iii, D-i
विक्टोरिया झील सफेद नील का मुख्य स्रोत है और यह भ्रंश घाटी का हिस्सा नहीं है। तांगानिका झील दुनिया की सबसे लंबी और असाधारण रूप से गहरी ताजे जल की झील है। मलावी झील पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली की झीलों में सबसे दक्षिण में स्थित है। चाड झील सहारा रेगिस्तान की सीमा पर एक विशाल और उथली अंतःप्रवाही झील है जिसका आकार जलवायु परिवर्तन के कारण बदलता रहता है। यह मिलान इन झीलों की विशिष्ट भौगोलिक पहचान को दर्शाता है।

46. (4) नदी के तल के ऊपर उठने के कारण बार-बार आने वाली बाढ़
हुआंग हे नदी लोएस पठार से भारी मात्रा में गाद और पीली मिट्टी बहाकर लाती है। इस अत्यधिक तलछट के कारण नदी के निचले मार्ग में जमाव होता रहता है, जिससे नदी का तल आसपास के मैदानी इलाकों से भी ऊंचा हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, नदी अक्सर अपना मार्ग बदल लेती है और तटबंधों को तोड़कर विनाशकारी बाढ़ का कारण बनती है। इसी कारण से इस नदी को ऐतिहासिक रूप से 'चीन का शोक' के रूप में जाना जाता है।

47. (1) गतिशील बर्फ की चादरों द्वारा बेसिन को कुरेदना और फिर पिघलना
हिमनद झीलों का निर्माण मुख्य रूप से हिमयुग के दौरान विशाल बर्फ की चादरों की गतिशीलता के कारण हुआ था। जब ये भारी ग्लेशियर आगे बढ़ते हैं, तो वे जमीन को गहराई तक कुरेदकर बड़े बेसिन या गर्त बना देते हैं। बाद में जब जलवायु गर्म हुई और बर्फ पिघली, तो ये गर्त जल से भर गए, जिससे झीलों का जन्म हुआ। उत्तरी अमेरिका की महान झीलें और फिनलैंड की हजारों झीलें इसी हिमनद अपरदन प्रक्रिया का उत्कृष्ट परिणाम हैं।

48. (1) केवल I और II
मिसिसिपी-मिसौरी नदी प्रणाली उत्तरी अमेरिका की सबसे विशाल जल प्रणाली है जो संयुक्त राज्य अमेरिका के एक बड़े हिस्से को कवर करती है। मिसौरी नदी इस तंत्र की सबसे लंबी सहायक नदी है, जो मिसिसिपी में मिलने से पहले हजारों किलोमीटर का सफर तय करती है। यह नदी प्रणाली मुख्य रूप से उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है और अंततः मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है। यह क्षेत्र कृषि और औद्योगिक परिवहन के लिए महाद्वीप का सबसे महत्वपूर्ण गलियारा है।

49. (2) वोल्गा नदी काला सागर में गिरती है, जिससे यह भूमध्यसागरीय नौवहन के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है।
यूरोप की नदियों का महाद्वीप के इतिहास और अर्थव्यवस्था में गहरा प्रभाव रहा है। डेन्यूब नदी वास्तव में कई देशों और राजधानियों से होकर गुजरती है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अद्वितीय बनाती है। राइन और टेम्स नदियाँ क्रमशः पश्चिमी यूरोप और ब्रिटेन के प्रमुख व्यापारिक मार्ग हैं। हालाँकि, वोल्गा नदी काला सागर में नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी झील कैस्पियन सागर में गिरती है। वोल्गा को रूस की राष्ट्रीय नदी का दर्जा प्राप्त है।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अमेज़न नदी विश्व की सबसे बड़ी नदी है जो महासागर में विसर्जित होने वाले जल की कुल मात्रा के मामले में शीर्ष पर है। इसका मुख्य कारण इसका भौगोलिक स्थान है, क्योंकि इसका अधिकांश अपवाह बेसिन भूमध्यरेखीय क्षेत्र में स्थित है। यहाँ पूरे वर्ष अत्यधिक वर्षा होती है, जिससे नदी को निरंतर जल मिलता रहता है। इसके साथ ही, इसकी सैकड़ों सहायक नदियाँ एंडीज पर्वत से भारी जलराशि लेकर आती हैं, जिससे इसका जल विसर्जन असाधारण रूप से बढ़ जाता है।

51. (3) विक्टोरिया झील
तांगानिका, मलावी और अल्बर्ट झीलें पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी प्रणाली का हिस्सा हैं और ये विवर्तनिक हलचलों से बनी गहरी और लंबी झीलें हैं। इसके विपरीत, विक्टोरिया झील एक भ्रंश घाटी झील नहीं है, बल्कि यह दो भ्रंश शाखाओं के बीच एक उथले तस्तरीनुमा गर्त में स्थित है। यह आकार में अधिक चौड़ी और कम गहरी है। इसलिए, अपनी निर्माण प्रक्रिया और भू-

Downloaded from www.pdf.tube

वैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर विक्टोरिया झील अन्य तीनों झीलों से पूरी तरह भिन्न है।

52. (2) केवल I, II और IV
मृत सागर जॉर्डन की भ्रंश घाटी में स्थित है और इसका तट पृथ्वी का सबसे निचला बिंदु माना जाता है। इसकी अत्यधिक लवणता, जो समुद्र के जल से लगभग दस गुना अधिक है, इसे तैराकों के लिए बहुत उत्प्लावक बनाती है, जिससे लोग सतह पर आसानी से तैर सकते हैं। उच्च लवणता के कारण यहाँ मछलियाँ या प्रवाल भित्तियाँ जीवित नहीं रह सकतीं, जिससे इसे 'मृत' सागर का नाम दिया गया है। यह स्थान अपने स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रसिद्ध है।

53. (3) अमेज़न नदी - ब्राजीलियाई हाइलैंड्स
यांग्त्ज़ी नदी तिब्बती पठार से निकलती है और राइन नदी स्विस आल्प्स के ग्लेशियरों से शुरु होती है। नील नदी का मुख्य स्रोत विक्टोरिया झील को माना जाता है। अमेज़न नदी का उद्गम ब्राजीलियाई हाइलैंड्स में नहीं, बल्कि पेरु में स्थित एंडीज पर्वतमाला की ऊंची चोटियों से होता है। वहां से यह पूर्व की ओर पूरे महाद्वीप को पार करते हुए अटलांटिक महासागर में गिरती है। अतः, अमेज़न और ब्राजीलियाई हाइलैंड्स का युग्म यहाँ भौगोलिक रुप से गलत सुमेलित है।

54. (2) प्राग
डेन्यूब नदी यूरोप की एक अद्वितीय विशेषता है क्योंकि यह कई राष्ट्रों की राजधानियों को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ती है। यह वियना (ऑस्ट्रिया), बुडापेस्ट (हंगरी) और बेलग्रेड (सर्बिया) जैसे प्रमुख शहरों से होकर गुज़रती है। प्राग शहर चेक गणराज्य की राजधानी है, जो वल्टावा नदी के तट पर स्थित है, न कि डेन्यूब पर। डेन्यूब का मार्ग दक्षिण-पूर्वी यूरोप की ओर है, जबकि प्राग मध्य यूरोप के उत्तरी हिस्से में स्थित है, जो इसे इस समूह से अलग करता है।

55. (4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
वोल्गा नदी रुस में स्थित है और कैस्पियन सागर में गिरती है। राइन नदी यूरोप के औद्योगिक हृदय स्थल से बहते हुए नीदरलैंड के तट पर उत्तरी सागर में विसर्जित होती है। डेन्यूब नदी मध्य यूरोप से शुरु होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और काला सागर में गिरती है। टेम्स नदी दक्षिणी इंग्लैंड से होकर गुज़रती है और इसका मुहाना उत्तरी सागर की ओर स्थित है। यह मिलान यूरोप के मुख्य जल निकासी मार्गों को स्पष्ट रुप से प्रदर्शित करता है।

56. (1) अरल सागर
बैकाल झील, सुपीरियर झील और मलावी झील दुनिया के सबसे बड़े ताजे जल के जलाशयों में सम्मिलित हैं। बैकाल में दुनिया का सबसे अधिक ताज़ा तरल जल है, जबकि सुपीरियर सतही क्षेत्रफल में सबसे बड़ी है। इसके विपरीत, अरल सागर एक खारे जल की झील है। यह मध्य एशिया के शुष्क क्षेत्र में स्थित है जहाँ वर्षा कम और वाष्पीकरण अधिक होता है, जिससे इसके जल में खनिजों की सांद्रता बढ़ गई है। अतः इसे ताजे जल की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

57. (3) भ्रंश खंडों से घिरी भ्रंश घाटी
प्रसिद्ध राइन गॉर्ज या राइन घाटी भूवैज्ञानिक रूप से एक भ्रंश घाटी या 'ग्रेबेन' का उदाहरण है। इसका निर्माण पृथ्वी की पपड़ी में होने वाले भ्रंश के कारण हुआ है, जहाँ दो समानांतर भ्रंशों के बीच का हिस्सा नीचे धंस गया है। यह घाटी पहाड़ों के बीच एक संकीर्ण और गहरी संरचना बनाती है, जिससे नदी प्रवाहित होती है। यह क्षेत्र न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह यूरोप के विवर्तनिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण प्रमाण भी है।

58. (1) I, II, IV और V
कैस्पियन सागर पाँच देशों की सीमाओं को छूता है और बैकाल झील विश्व की सबसे गहरी ताजे जल की झील है। मृत सागर जॉर्डन नदी के जल के अत्यधिक उपयोग के कारण सिकुड़ रहा है और अफ्रीका की झीलें वहाँ की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि सुपीरियर झील का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है, लेकिन बैकाल झील अपनी गहराई के कारण दुनिया के ताजे जल की सबसे अधिक मात्रा धारण करती है। यह भौगोलिक अंतर झीलों के आयतन और क्षेत्रफल के बीच विविधता को दर्शाता है।

59. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
यांग्त्ज़ी नदी एशिया की सबसे लंबी नदी है और यह पूरी तरह से चीन के क्षेत्र में बहने वाली दुनिया की सबसे लंबी नदी मानी जाती है। यह चीन की अर्थव्यवस्था, कृषि और परिवहन की मुख्य धुरी है। इस नदी पर निर्मित 'थ्री गॉर्ज डैम' दुनिया का सबसे बड़ा जलविद्युत बांध है, जो बिजली उत्पादन के साथ-साथ बाढ़ नियंत्रण में भी सहायता करता है। यह नदी चीनी संस्कृति और सभ्यता के विकास में एक आधारभूत स्तंभ के रुप में स्थापित रही है।

60. (2) ज्वालामुखी झीलें
ओरेगन की क्रेटर झील और इंडोनेशिया की टोबा झील ज्वालामुखी क्रियाओं द्वारा निर्मित झीलों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जब किसी विशाल ज्वालामुखी विस्फोट के बाद उसका ऊपरी हिस्सा धंस जाता है, तो एक बड़े गर्त या 'काल्डेरा' का निर्माण होता है। समय के साथ वर्षा का जल इन काल्डेरा या क्रेटर में जमा हो जाता है, जिससे सुंदर और गहरी झीलों का विकास होता है। टोबा झील दुनिया के सबसे बड़े सुपर-ज्वालामुखी काल्डेरा में स्थित है, जो एक प्राचीन विस्फोट का परिणाम है।

NODIA

61. (3) वह सहायक नदी जो कोमल चट्टान की पट्टी के साथ अपरदन करती है
परवर्ती नदी वह जलधारा होती है जो मुख्य अनुवर्ती नदी के विकसित होने के बाद अस्तित्व में आती है। यह सामान्यतः मुख्य नदी की सहायक नदी के रूप में कार्य करती है और कोमल चट्टानी परतों के साथ अपरदन करते हुए अपना मार्ग बनाती है। यह अक्सर चट्टानी संरचनाओं के नतिलंब का अनुसरण करती है, जिससे यह भू-वैज्ञानिक संरचना के साथ गहरा संबंध प्रदर्शित करती है। अपवाह तंत्र के विकास में ये नदियाँ द्वितीयक लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

62. (1) सुपीरियर, ह्यूरन, मिशिगन, इरी, ओंटारियो
उत्तरी अमेरिका की महान झीलों को उनके सतही क्षेत्रफल के आधार पर बड़े से छोटे क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है। सुपीरियर झील सबसे बड़ी है, जिसके बाद ह्यूरन और फिर मिशिगन झील का स्थान आता है। इरी झील आकार में चौथी और ओंटारियो झील सबसे छोटी है। ये पाँचों झीलें मिलकर दुनिया के ताजे जल का एक विशाल हिस्सा बनाती हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के बीच एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और परिवहन नेटवर्क का निर्माण करती हैं।

63. (1) यह दक्षिणी इंग्लैंड से होकर उत्तरी सागर में बहती है
टेम्स नदी दक्षिणी इंग्लैंड की सबसे महत्वपूर्ण जलधारा है जो ऑक्सफोर्ड और लंदन जैसे प्रसिद्ध शहरों से होकर गुजरती है। यह नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और अंततः एक विस्तृत ज्वारनदमुख बनाते हुए उत्तरी सागर में गिरती है। ऐतिहासिक और आर्थिक रूप से यह यूनाइटेड किंगडम की जीवन रेखा रही है। इसके किनारे स्थित लंदन के विकास में इस नदी का योगदान अतुलनीय है, जिसने इसे वैश्विक व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बनाने में सहायता की।

64. (2) अनुवर्ती अपवाह
अनुवर्ती अपवाह तंत्र उस स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ नदियों का प्रवाह मार्ग सीधे तौर पर नए उठे हुए भू-भाग के प्रारंभिक ढाल और भूवैज्ञानिक संरचना का अनुसरण करता है। जब जल ढाल की दिशा में बहना प्रारंभ करता है और अपना मार्ग बनाता है, तो उसे अनुवर्ती नदी कहा जाता है। यह किसी भी नए अपवाह तंत्र के विकास का प्रथम चरण होता है। दक्षिण भारत की अधिकांश नदियाँ जैसे गोदावरी और कृष्णा, ढाल के अनुसार बहने वाली अनुवर्ती नदियाँ हैं।

65. (2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
ओब-इरतिश नदी प्रणाली रूस के विशाल साइबेरियाई क्षेत्र में स्थित है और उत्तर की ओर बहती है। मिसिसिपी-मिसौरी प्रणाली उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी अपवाह प्रणाली है जो संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य भाग में बहती है। हुआंग हे या पीली नदी चीन की एक प्रमुख ऐतिहासिक नदी है। कांगो नदी मध्य अफ्रीका के वर्षावनों से होकर गुजरती है। यह मिलान विभिन्न महाद्वीपों की सबसे प्रभावशाली नदी प्रणालियों और उनकी राष्ट्रीय पहचान को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

66. (1) सतही क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी ताजे पानी की झील
सुपीरियर झील को वैश्विक स्तर पर सतही क्षेत्रफल के आधार पर दुनिया की सबसे बड़ी ताजे जल की झील के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह उत्तरी अमेरिका की पाँच महान झीलों में सबसे ऊपरी और सबसे बड़ी झील है। इसमें इतना जल है कि यह अन्य सभी चार महान झीलों के संयुक्त जल के बराबर है। यह झील संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा की सीमा पर स्थित है और अपने स्वच्छ जल तथा महत्वपूर्ण परिवहन मार्गों के लिए प्रसिद्ध है।

67. (3) गहरी खाइयाँ और तीव्र धाराएँ जो तलछट को समुद्र में ले जाती हैं
कांगो नदी के मुहाने पर एक वास्तविक डेल्टा का अभाव है, जबकि इसमें जल की मात्रा बहुत अधिक होती है। इसका प्राथमिक भौगोलिक कारण यह है कि जहाँ यह नदी अटलांटिक महासागर में गिरती है, वहाँ समुद्र की गहराई बहुत अधिक है और धाराएँ अत्यंत तीव्र हैं। यह तीव्र प्रवाह नदी द्वारा लाई गई गाद और तलछट को तट पर जमा होने के बजाय गहरे समुद्र में ले जाता है। इसके अतिरिक्त, नदी के मार्ग में कई प्रपात गाद को मुहाने तक पहुँचने से रोकते हैं।

68. (4) I, II, और III
अरल सागर की पर्यावरणीय त्रासदी आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी आपदाओं में से एक है। 1960 के दशक से पहले यह दुनिया की चौथी सबसे बड़ी झील थी, लेकिन कपास की खेती के लिए जल विपथन ने इसे लगभग सुखा दिया। इसके सूखने से पीछे रह गए विषैले नमक और कीटनाशक युक्त धूल ने स्थानीय आबादी में कैंसर और श्वसन जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न की हैं। यह घटना प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन के विनाशकारी परिणामों का प्रमाण है।

69. (3) गोखुर झील - कैस्पियन सागर
विवर्तनिक झीलें भ्रंश द्वारा बनती हैं जैसे तांगानिका, और हिमनद झीलें ग्लेशियरों द्वारा जैसे ह्यूरन। ज्वालामुखी झीलें क्रेटर में जल भरने से बनती हैं। कैस्पियन सागर एक विवर्तनिक प्रक्रिया से बनी विशाल झील है, न कि गोखुर झील। गोखुर झीलें केवल नदियों के पुराने विसर्पी मोड़ों के अलग होने से बनती हैं और आकार में अपेक्षाकृत बहुत छोटी होती हैं। अतः, कैस्पियन सागर को गोखुर झील के रूप में वर्गीकृत करना भौगोलिक रूप से पूर्णतः गलत है।

70. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियाँ हिमालय के उत्थान से भी प्राचीन हैं, इसलिए इन्हें पूर्ववर्ती नदियाँ कहा जाता है। जैसे-जैसे हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ ऊपर उठीं, इन नदियों ने अपनी घाटियों को लंबवत रूप से उसी गति से काटना जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप पहाड़ों के बीच अत्यंत गहरी और सीधी कंदराओं का निर्माण हुआ। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि नदियों की अपरदन शक्ति विवर्तनिक उत्थान के साथ तालमेल बिठा सकती है, जिससे पहाड़ों के बीच गहरे प्राकृतिक मार्ग या गॉर्ज बनते हैं।

71. (4) बरखान टीले
विवर्तनिक, हिमनद और ज्वालामुखी झीलें पृथ्वी की आंतरिक हलचलों, बर्फ की क्रियाओं या ज्वालामुखी गतिविधियों से बनने वाले स्थायी जल निकाय हैं। इसके विपरीत, बरखान टीले रेगिस्तानी क्षेत्रों में पवन के निक्षेपण द्वारा निर्मित अर्धचंद्राकार रेत के ढेर होते हैं। झीलों का निर्माण मुख्य रूप से भू-वैज्ञानिक संरचनाओं और जल संचय से संबंधित है, जबकि बरखान एक वायुजनित भू-आकृति है। अतः, अपनी निर्माण प्रक्रिया और भौतिक प्रकृति के आधार पर बरखान अन्य विकल्पों से पूर्णतः विषम है।

Click Here to Buy book on Amazon

72. (2) केवल IV
वोल्गा नदी रूस की वाल्दाई पहाड़ियों से निकलती है और इसे यूरोप की सबसे लंबी नदी माना जाता है। यह पूरी तरह से रूस के भीतर बहती है और रूसी व्यापार तथा संस्कृति का केंद्र है। सर्दियों में इसका अधिकांश भाग जम जाता है, जिससे नौवहन बाधित होता है। यह नदी जर्मनी से होकर नहीं गुजरती है; जर्मनी की प्रमुख नदियाँ राइन और एल्बे हैं। वोल्गा का मार्ग केवल रूसी क्षेत्रों तक सीमित है और यह अंततः दक्षिण में कैस्पियन सागर में गिरती है।

73. (3) वार्षिक बाढ़ से प्राप्त उपजाऊ गाद ने प्राचीन कृषि को आधार प्रदान किया
प्राचीन मिस्र की सभ्यता को 'नील नदी का उपहार' कहा जाता है क्योंकि इस नदी ने रेगिस्तानी क्षेत्र में जीवन को संभव बनाया। नील नदी में प्रतिवर्ष आने वाली नियमित बाढ़ अपने साथ इथियोपिया के उच्च क्षेत्रों से उपजाऊ काली मिट्टी और गाद लाती थी। जब बाढ़ का जल उतरता था, तो यह मिट्टी खेतों में जमा हो जाती थी, जिससे प्राचीन किसानों को बिना किसी उर्वरक के भरपूर फसल प्राप्त होती थी। इसी कृषि अधिशेष ने एक महान सभ्यता के विकास का आधार निर्मित किया।

74. (2) II - I - III
साइबेरिया की तीन विशाल नदियों को रूस के मानचित्र पर पश्चिम से पूर्व की ओर एक विशिष्ट क्रम में देखा जा सकता है। सबसे पश्चिम में ओब नदी स्थित है, जिसके बाद मध्य साइबेरिया की ओर बढ़ने पर येनिसेई नदी आती है। येनिसेई को अक्सर साइबेरिया की केंद्रीय धुरी माना जाता है। इसके और पूर्व में बढ़ने पर लीना नदी स्थित है, जो पूर्वी साइबेरिया के एक बड़े हिस्से को कवर करती है। यह पश्चिम से पूर्व का क्रम इन नदियों के विशाल भौगोलिक विस्तार को दर्शाता है।

75. (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मिसिसिपी नदी अपने मुहाने पर विशिष्ट पक्षी-पाद डेल्टा के निर्माण के लिए जानी जाती है। नील नदी विश्व की सबसे लंबी नदी है जिसने मिस्र की सभ्यता को जन्म दिया। अमेज़न नदी दुनिया के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वर्षावन बेसिन से होकर बहती है और जल की मात्रा में सबसे बड़ी है। हुआंग हे या पीली नदी लोएस पठार से आने वाली अत्यधिक गाद और तलछट के लिए प्रसिद्ध है। यह मिलान दुनिया की चार महानतम नदियों की सबसे विशिष्ट भौगोलिक विशेषताओं को सही ढंग से जोड़ता है।

76. (2) विक्टोरिया झील
पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश घाटी में स्थित अधिकांश झीलें, जैसे तांगानिका, मलावी और अल्बर्ट, अत्यंत गहरी और संकीर्ण हैं। इसके विपरीत, विक्टोरिया झील एक भ्रंश घाटी झील नहीं है। यह भ्रंश की दो शाखाओं के बीच पृथ्वी की पपड़ी के हल्के से धंसने से बनी एक उथली और चौड़ी तश्तरीनुमा संरचना है। इसकी औसत गहराई भ्रंश झीलों की तुलना में काफी कम है। इसलिए, भू-आकृतिक दृष्टि से विक्टोरिया झील को महान भ्रंश घाटी प्रणाली का प्रत्यक्ष भौतिक हिस्सा नहीं माना जाता है।

77. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
अमेज़न बेसिन में पाए जाने वाले घने भूमध्यरेखीय वर्षावनों को स्थानीय रूप से 'सेल्वास' कहा जाता है, जो दुनिया की सबसे समृद्ध जैव विविधता का घर हैं। यह क्षेत्र भूमध्य रेखा के समीप स्थित है, जिसके कारण यहाँ वर्ष भर उच्च तापमान और नियमित संवहनीय वर्षा होती है। यहाँ कोई लंबी या स्पष्ट शुष्क ऋतु नहीं होती है, जिससे नदी में हमेशा जल का स्तर ऊँचा बना रहता है। यह निरंतर वर्षा ही अमेज़न को दुनिया की सर्वाधिक जल विसर्जित करने वाली नदी बनाती है।

78. (1) I, II, III और IV
दुनिया की अधिकांश बड़ी झीलें उत्तरी गोलार्ध के उच्च अक्षांशों में हिमनद क्रियाओं द्वारा निर्मित हैं। खारे जल की झीलें मुख्य रूप से उन शुष्क क्षेत्रों में होती हैं जहाँ जल के बाहर निकलने का मार्ग नहीं होता। कैस्पियन सागर में दुनिया के खारे झील जल का अधिकांश भाग समाहित है और झीलों में नदियों की तुलना में कहीं अधिक ताज़ा जल संचित है। ज्वालामुखी झीलें संख्या में महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन वे कुल वैश्विक झील क्षेत्र का बहुत कम हिस्सा कवर करती हैं।

79. (1) ओब की खाड़ी
ओब नदी जब रूस के उत्तरी तट पर आर्कटिक महासागर के कारा सागर में गिरती है, तो यह एक अत्यंत विशाल और लंबे ज्वारनदमुख का निर्माण करती है। इसे 'ओब की खाड़ी' के नाम से जाना जाता है, जिसकी लंबाई लगभग 800 किलोमीटर से भी अधिक है। इसे दुनिया के सबसे लंबे ज्वारनदमुखों में से एक माना जाता है। यह भौगोलिक विशेषता नौवहन के लिए चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यहाँ वर्ष के अधिकांश समय बर्फ जमी रहती है और ज्वारीय प्रभाव अत्यंत तीव्र होता है।

80. (2) यह एक डेल्टा बनाती है और काला सागर में गिरती है
डेन्यूब नदी मध्य और पूर्वी यूरोप की एक प्रमुख जलमार्ग है जो जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट से निकलती है। यह पूर्व की ओर बहते हुए अंततः रोमानिया और यूक्रेन के बीच एक विशाल और पारिस्थितिक रूप से समृद्ध डेल्टा बनाती है। यह डेल्टा क्षेत्र काला सागर में अपना जल विसर्जित करता है। डेन्यूब डेल्टा यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है और यूरोप में पक्षियों तथा जलीय जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आर्द्रभूमियों में से एक माना जाता है। यह नदी का अंतिम गंतव्य है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 03
प्राकृतिक वनस्पति एवं बायोम

1. निम्नलिखित में से कौन बायोम की सबसे सटीक परिभाषा प्रदान करता है?
(1) एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र जिसे उसके अलग भौतिक वातावरण और सभी निवासी प्रजातियों की विशिष्ट आनुवंशिक विशेषताओं द्वारा पहचाना जाता है
(2) क्षेत्रीय वनस्पतियों और जीवों का एक प्रमुख जैविक समुदाय जिसे मुख्य रूप से उसकी प्रमुख जलवायु द्वारा वर्गीकृत किया जाता है
(3) दो अलग-अलग जैविक समुदायों के बीच का एक संक्रमणकालीन क्षेत्र जहाँ विभिन्न प्रजातियाँ आपस में मिलती हैं और सीमित संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं
(4) प्रबंधित मानवीय हस्तक्षेप के माध्यम से लुप्तप्राय पादप और जंतु प्रजातियों के संरक्षण के लिए बनाया गया एक कृत्रिम पारिस्थितिकी तंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सूची I (शीतोष्ण घास के मैदान) को सूची II (क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (शीतोष्ण घास के मैदान)
A. प्रेयरी
B. पंपास
C. वेल्ड
D. डाउन्स
सूची II: (क्षेत्र)
i. दक्षिण अफ्रीका
ii. ऑस्ट्रेलिया
iii. उत्तरी अमेरिका
iv. दक्षिण अमेरिका
विकल्प:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. अमेज़न बेसिन घने, चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वनों की विशेषता रखता है। इस विशिष्ट प्रकार के उष्णकटिबंधीय वर्षावन को दिया गया स्थानीय नाम क्या है?
(1) कैम्पोस
(2) लानोस
(3) सेल्वास
(4) ग्रैन चाको
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): अत्यधिक जैवभार का समर्थन करने के बावजूद, उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की मृदा अत्यधिक अम्लीय और पोषक तत्वों से भरपूर नहीं होती है।
कारण (R): निरंतर भारी वर्षा घुलनशील पोषक तत्वों को मृदा में गहराई तक ले जाती है (निक्षालन), जबकि तीव्र जीवाणु क्रिया सतह पर मौजूद किसी भी कार्बनिक पदार्थ को शीघ्रता से विघटित कर देती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की परतदार संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उद्गामी परत में सबसे ऊंचे पेड़ होते हैं जो सामान्य वितान से ऊपर उठते हैं और अधिकतम सूर्य का प्रकाश प्राप्त करते हैं।
II. अधोस्तर परत वनस्पतियों से घनी होती है क्योंकि इसे प्रचुर मात्रा में प्रत्यक्ष सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है।
III. वन की सतह आमतौर पर अंधकारमय होती है, जहाँ 2% से भी कम सूर्य का प्रकाश पहुँचता है, जिससे पौधों की वृद्धि मुख्य रूप से कवक और अपघटित होने वाले पदार्थों तक सीमित रहती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. मरुस्थलीय बायोम के पौधे शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए विभिन्न मरुद्भिद अनुकूलन प्रदर्शित करते हैं। निम्नलिखित में से कौन सा मरुस्थलीय वनस्पति का एक मान्य अनुकूलन नहीं है?
(1) भूजल स्तर तक पहुँचने के लिए गहरी मूसला जड़ों का

विकास
(2) वाष्पोत्सर्जन शीतलन को अधिकतम करने के लिए चौड़ी और पतली पत्तियों की उपस्थिति
(3) जल की हानि को रोकने के लिए पत्तियों और तनों पर मोमी आवरण
(4) तने जो गूदेदार होते हैं और बड़ी मात्रा में जल संचित करने में सक्षम होते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन उष्णकटिबंधीय पर्णपाती (मानसूनी) वनों का सही वर्णन करता है?
(1) वे वर्ष भर निरंतर पत्तियां गिराते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वन कभी पत्रविहीन नहीं दिखता
(2) ये वन विशेष रूप से उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 50 सेमी से कम होती है
(3) वे उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की तुलना में अधिक जटिल परतदार संरचना और उच्च जैव विविधता प्रदर्शित करते हैं
(4) इन वनों के पेड़ जल संरक्षण के लिए शुष्क मौसम के दौरान एक साथ अपनी पत्तियां गिरा देते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. भूमध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव की ओर बढ़ने पर निम्नलिखित प्राकृतिक बायोम को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
A. टुंड्रा
B. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
C. बोरियल वन (टैगा)
D. उष्णकटिबंधीय सवाना
निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) B, D, C, A
(2) B, C, D, A
(3) D, B, C, A
(4) B, D, A, C
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. भूमध्यसागरीय वनस्पति की विशेषता झाड़ियाँ और सूखा-प्रतिरोधी पौधे हैं। निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र भूमध्यसागरीय जलवायु और उससे जुड़ी वनस्पति का अनुभव नहीं करता है?
(1) मध्य चिली
(2) दक्षिण-पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
(3) दक्षिण-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका
(4) कैलिफोर्निया तट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. शीतोष्ण पर्णपाती वनों में, पेड़ शरद ऋतु में अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। इस घटना के लिए प्राथमिक पारिस्थितिक कारण और उद्देश्य क्या है?
(1) तापमान और दिन के प्रकाश की अवधि में मौसमी परिवर्तन जो शीत ऋतु में नमी की हानि को रोकने के लिए सुप्तावस्था को प्रेरित करते हैं
(2) मानसूनी वर्षा की शुरुआत जिससे पत्तियां सड़ जाती हैं, जिससे पेड़ कवक संक्रमण को रोकने के लिए पत्तियां गिरा देते हैं
(3) ग्रीष्म ऋतु का उच्च तापमान जो वितान को झुलसा देता है, जिससे पेड़ों को गर्मी से बचने के लिए पत्तियां गिराने पर विवश होना पड़ता है
(4) ग्रीष्म ऋतु के अंत में मृदा के पोषक तत्वों की कमी जिससे पत्तियों को बनाए रखना शारीरिक रूप से असंभव हो जाता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. मैंग्रोव वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय अंतरज्वारीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
II. ये पितृस्थ अंकुरण (विविपैरी) प्रदर्शित करते हैं, जहाँ बीज मातृ वृक्ष से जुड़े रहने के दौरान ही अंकुरित हो जाते हैं।
III. इनमें श्वसन जड़ें (न्यूमेटोफोर) होती हैं जो उन्हें वायु से सीधे ऑक्सीजन अवशोषित करने में मदद करती हैं।
IV. ये विशेष रूप से अत्यधिक अम्लीय मीठे जल की झीलों में पनपते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. शीतोष्ण वर्षावन उच्च वर्षा वाले सीमित तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। निम्नलिखित में से कौन सी वृक्ष प्रजाति न्यूज़ीलैंड के शीतोष्ण वर्षावनों की अत्यधिक विशिष्ट विशेषता है?
(1) डगलस फर
(2) सिल्वर फर्न और कौरी
(3) कोस्टल रेडवुड
(4) सिटका स्प्रूस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. सूची I (बायोम) को सूची II (प्रमुख वृक्ष प्रजातियाँ) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (बायोम)
A. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती
B. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
C. बोरियल वन (टैगा)
D. भूमध्यसागरीय
सूची II: (प्रमुख वृक्ष प्रजातियाँ)
i. पाइन और स्प्रूस
ii. सागौन और साल
iii. कॉर्क ओक और जैतून
iv. महोगनी और रोजवुड
विकल्प:

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन I और कथन II। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन I: मृदा की सतह के नीचे पर्माफ्रॉस्ट (स्थायी तुषार भूमि) की उपस्थिति के कारण टुंड्रा बायोम पूरी तरह से गहरी जड़ों वाले पेड़ों से रहित है।
कथन II: आल्पाइन टुंड्रा विभिन्न अक्षांशों पर पर्वतों की उच्च ऊंचाई पर पाया जाता है, जबकि आर्कटिक टुंड्रा उच्च उत्तरी अक्षांशों तक सीमित है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. प्रवाल भित्तियों की वृद्धि के लिए आदर्श स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जल का तापमान आदर्श रूप से 20 डिग्री सेल्सियस और 27 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए।
II. उन्हें प्रकाश संश्लेषण के लिए सूर्य के प्रकाश के प्रवेश हेतु स्वच्छ और उथले जल की आवश्यकता होती है।
III. वे शून्य लवणता वाले पूर्णतः मीठे जल में सबसे अच्छे तरीके से पनपते हैं।
IV. प्रवाल पॉलिप्स को जुड़ने और भित्तियाँ बनाने के लिए एक कठोर आधार की आवश्यकता होती है।
V. वे भारी अवसादन और गाद युक्त जल वाले क्षेत्रों में पनपते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और V
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित में से किस बायोम में 'पॉडजोलीकरण' के रूप में जानी जाने वाली मृदा निर्माण प्रक्रिया मुख्य रूप से देखी जाती है, जिसके परिणामस्वरूप अम्लीय और राख जैसी धूसर मृदा बनती है?
(1) उष्णकटिबंधीय वर्षावन
(2) बोरियल वन (टैगा)
(3) उष्णकटिबंधीय सवाना
(4) भूमध्यसागरीय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. बायोम और उसकी संबंधित जलवायु विशेषता का निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) उष्णकटिबंधीय सवाना : शीत ऋतु में वर्षा और पूर्णतः शुष्क ग्रीष्म ऋतु वाले क्षेत्र
(2) उष्णकटिबंधीय वर्षावन : पूरे वर्ष निरंतर उच्च तापमान और वर्षा
(3) भूमध्यसागरीय : भारी ग्रीष्मकालीन वर्षा और शुष्क शीत ऋतु वाले क्षेत्र
(4) शीतोष्ण घास के मैदान : अत्यधिक उच्च वर्षा जो अक्सर वार्षिक रूप से 250 सेमी से अधिक होती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

18. निम्नलिखित में से कौन सा उष्णकटिबंधीय वर्षावन में वितान के शीर्ष से भूमि की ओर बढ़ने वाली वनस्पति परतों के सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) वितान, उद्गामी परत, अधोस्तर, वन तल
(2) उद्गामी परत, वितान, अधोस्तर, वन तल
(3) अधोस्तर, वितान, उद्गामी परत, वन तल
(4) उद्गामी परत, अधोस्तर, वितान, वन तल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम के पेड़ आमतौर पर काफी दूरी पर होते हैं और उनमें अक्सर अग्नि-प्रतिरोधी छाल होती है।
कारण (R): सवाना पारिस्थितिकी तंत्र में शुष्क मौसम के दौरान बार-बार मौसमी आग लगती है, जो एक घने निरंतर वन वितान के विकास को रोकती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. उष्णकटिबंधीय वर्षावन बायोम उच्चतम स्थलीय जैव विविधता प्रदर्शित करता है। इस असाधारण प्रजाति प्रचुरता का प्राथमिक जलवायु कारण क्या है?
(1) बार-बार होने वाले ज्वालामुखी विस्फोट जो वन मृदा के लिए प्रचुर खनिज प्रदान करते हैं
(2) वन वनस्पति के घनत्व के कारण शिकारी प्रजातियों की पूर्ण अनुपस्थिति
(3) अत्यधिक मौसमी परिवर्तन जो सभी निवासी जीवों में तीव्र विकासवादी परिवर्तनों को प्रेरित करते हैं
(4) वर्ष भर स्थिर उच्च तापमान और आर्द्रता जो निरंतर पादप वृद्धि की अनुमति देती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती (मानसूनी) वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आर्द्र पर्णपाती वन 100 से 200 सेमी वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

II. शुष्क पर्णपाती वन 70 सेमी से कम वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में कटीले वनों में बदल जाते हैं।
III. बांस, साल, शीशम और चंदन शुष्क मरुस्थलों की प्रमुख वृक्ष प्रजातियां हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची I (भूमध्यसागरीय वनस्पति का स्थानीय नाम) को सूची II (क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (भूमध्यसागरीय वनस्पति का स्थानीय नाम)
A. माक्विस
B. चैपरल
C. फिनबोस
D. मैली

सूची II: (क्षेत्र)
i. कैलिफोर्निया
ii. दक्षिण अफ्रीका
iii. दक्षिणी यूरोप
iv. ऑस्ट्रेलिया

विकल्प:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. शीतोष्ण घास के मैदानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज में यूरेशिया के स्टेपीज की तुलना में अधिक वर्षा होती है और आमतौर पर यहाँ घास लंबी होती है
(2) स्टेपीज काफी हद तक अत्यधिक महाद्वीपीय जलवायु की विशेषता वाले होते हैं जहाँ ग्रीष्म और शीत ऋतु के तापमान में बहुत अंतर होता है
(3) इन बायोम की मृदा, जैसे चेरनोज़ेम या मौलीसोल, कार्बनिक पदार्थों से समृद्ध और अत्यधिक उपजाऊ होती है
(4) शीतोष्ण घास के मैदान आमतौर पर विषुवतीय क्षेत्र में महाद्वीपों के पूर्वी किनारों पर पाए जाते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सी वृक्ष प्रजाति असंगत है क्योंकि यह आमतौर पर शीतोष्ण पर्णपाती वन बायोम की विशेषता नहीं है?
(1) बाओबाब
(2) ओक
(3) मेपल
(4) बीच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. प्रशांत उत्तर-पश्चिम (उत्तरी अमेरिका) के शीतोष्ण वर्षावनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनमें चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती पेड़ों के बजाय बड़े शंकुधारी पेड़ों का प्रभुत्व है।
II. जलवायु समुद्री धाराओं द्वारा संतुलित रहती है, जो शीत ऋतु में गंभीर ठंड को रोकती है।
III. ठंडे तापमान के कारण काई और लाइकेन जैसे अधिपादप पूरी तरह से अनुपस्थित हैं।
IV. यह बायोम विश्व की कुछ सबसे ऊंची वृक्ष प्रजातियों, जैसे कोस्टल रेडवुड, का समर्थन करता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. बोरियल (टैगा) वनों में वाणिज्यिक काष्ठ उद्योग अत्यधिक विकसित है। निम्नलिखित में से कौन सी पारिस्थितिक विशेषता इस बायोम को वाणिज्यिक लकड़ी उद्योग के लिए विशेष रुप से उपयुक्त बनाती है?
(1) एकल प्रजातियों के व्यापक शुद्ध स्टैंड कटाई को सरल बनाते हैं
(2) पेड़ असाधारण रुप से कठोर और घने होते हैं, जो उन्हें भारी निर्माण परियोजनाओं के लिए आदर्श बनाते हैं
(3) वर्ष भर गर्म जलवायु लकड़ी काटने की गतिविधियों को बिना किसी मौसमी बाधा के संचालित करने की अनुमति देती है
(4) झाड़ियों का घना अधोस्तर व्यापार के लिए अतिरिक्त मूल्यवान वन उत्पाद प्रदान करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. सूची I (बायोम) को सूची II (प्रमुख मृदा प्रकार) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (बायोम)
A. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
B. शीतोष्ण घास के मैदान
C. बोरियल वन (टैगा)
D. टुंड्रा

सूची II: (प्रमुख मृदा प्रकार)
i. स्पोडोसोल/पॉडजोल
ii. जेलिसोल/पर्माफ्रॉस्ट मृदा
iii. ऑक्सीसोल/लैटेरिटिक मृदा
iv. मौलीसोल/चेरनोज़ेम

विकल्प:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

Click Here to Buy book on Amazon

(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. मरुस्थलीय वनस्पति (मरुद्भिद) में देखे गए निम्नलिखित अनुकूलनों पर विचार कीजिए:
I. कभी-कभार होने वाली वर्षा को तेजी से अवशोषित करने के लिए व्यापक और उथली जड़ प्रणाली।
II. वाष्पोत्सर्जन को कम करने और शाकाहारियों से रक्षा के लिए पत्तियों का कांटों में रूपांतरण।
III. धंसे हुए रंध्र (सनकेन स्टोमेटा) जो प्रकाश संश्लेषण को अधिकतम करने के लिए मुख्य रूप से दिन के दौरान खुलते हैं।
IV. जल संचय के लिए मोटे और गूदेदार तनों की उपस्थिति।
V. नमी के संरक्षण के लिए शुष्क अवधि के दौरान पत्तियां गिराना।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित बायोम को उनकी औसत वार्षिक वर्षा के सही क्रम में, उच्चतम से निम्नतम तक व्यवस्थित कीजिए।
A. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
B. मरुस्थल
C. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
D. उष्णकटिबंधीय सवाना
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(1) C, A, D, B
(2) C, D, A, B
(3) A, C, D, B
(4) C, A, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): यदि तनावपूर्ण स्थितियां लंबे समय तक बनी रहती हैं, तो प्रवाल विरंजन (कोरल ब्लीचिंग) से प्रवाल भित्तियों की मृत्यु हो जाती है।
कारण (R): विरंजन तब होता है जब प्रवाल सहजीवी ज़ूक्सैन्थेले शैवाल को बाहर निकाल देते हैं, जो उन्हें पोषण और रंग का प्राथमिक स्रोत प्रदान करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. सूची I (जलवायु स्थिति) को सूची II (संबद्ध बायोम) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (जलवायु स्थिति)
A. उच्च तापमान, पूरे वर्ष भारी वर्षा
B. स्पष्ट आर्द्र और शुष्क मौसम, लंबी घास
C. हल्की आर्द्र शीत ऋतु, गर्म शुष्क ग्रीष्म ऋतु
D. बहुत छोटी ठंडी ग्रीष्म ऋतु, लंबी गंभीर शीत ऋतु
सूची II: (संबद्ध बायोम)
i. भूमध्यसागरीय
ii. टुंड्रा
iii. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
iv. उष्णकटिबंधीय सवाना
विकल्प:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. बायोम की अवधारणा और वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एक बायोम को पूरी तरह से वहां मौजूद जंतु प्रजातियों द्वारा परिभाषित किया जाता है, चाहे वनस्पति कुछ भी हो।
II. तापमान और वर्षा दो प्राथमिक जलवायु कारक हैं जो विश्व स्तर पर बायोम के वितरण को निर्धारित करते हैं।
III. यदि जलवायु परिस्थितियाँ समान हों, तो अलग-अलग महाद्वीपों पर समान बायोम हो सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. उष्णकटिबंधीय वर्षावन बायोम में, वे पौधे जो सूर्य के प्रकाश तक पहुँचने के लिए केवल शारीरिक सहायता हेतु अन्य पौधों पर गैर-परजीवी रूप से उगते हैं, क्या कहलाते हैं?
(1) लवणमृदोद्भिद
(2) अधिपादप
(3) मृतोपजीवी
(4) फ्रेटोफाइट्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित में से कौन उष्णकटिबंधीय वर्षावन बायोम के भीतर पोषक चक्र प्रक्रिया का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) तीव्र पोषक तत्व चक्रण जहाँ अधिकांश खनिज मृदा के बजाय जैवभार में संग्रहीत होते हैं
(2) पोषक तत्व मुख्य रूप से खनिज मृदा परत के भीतर गहराई में जमा होते हैं, जिन्हें एक चक्र पूरा करने में कई

दशक लगते हैं
(3) भारी वर्षा द्वारा मृदा के निरंतर निक्षालन के कारण पोषक चक्र व्यावहारिक रूप से नगण्य है
(4) पोषक तत्व पादप अवशेषों की मोटी परत में जमा होते हैं जो कई वर्षों तक बिना अपघटित हुए रहते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी विशेषता बारी-बारी से आने वाले आर्द्र और शुष्क मौसम हैं।
II. एलीफेंट घास इस बायोम में पाई जाने वाली वनस्पति का एक विशिष्ट उदाहरण है।
III. यह बड़ी संख्या में चरने वाले शाकाहारियों और उनके शिकारियों का समर्थन करता है।
IV. यह किसी भी वृक्ष प्रजाति से पूरी तरह रहित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन I और कथन II। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन I: नमी की हानि को कम करने के लिए भूमध्यसागरीय बायोम के पौधों में मोटी, मोमी और चमड़े जैसी पत्तियां होती हैं।
कथन II: ये अनुकूलन आवश्यक हैं क्योंकि इस क्षेत्र में गर्म ग्रीष्म ऋतु के महीनों के दौरान सबसे अधिक वर्षा होती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम दिए गए बायोम के बीच शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (NPP) के घटते क्रम का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) उष्णकटिबंधीय वर्षावन, शीतोष्ण पर्णपाती वन, उष्णकटिबंधीय सवाना, मरुस्थल
(2) शीतोष्ण पर्णपाती वन, उष्णकटिबंधीय वर्षावन, मरुस्थल, उष्णकटिबंधीय सवाना
(3) उष्णकटिबंधीय वर्षावन, उष्णकटिबंधीय सवाना, मरुस्थल, शीतोष्ण पर्णपाती वन
(4) उष्णकटिबंधीय सवाना, उष्णकटिबंधीय वर्षावन, शीतोष्ण पर्णपाती वन, मरुस्थल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. शीतोष्ण पर्णपाती वन बायोम मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में वितरित है?
(1) कांगो बेसिन और अमेज़न बेसिन
(2) पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोप और पूर्वी चीन
(3) मध्य ऑस्ट्रेलिया और सहारा
(4) उत्तरी कनाडा और उत्तरी साइबेरिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. सूची I (भौगोलिक क्षेत्र) को सूची II (प्राकृतिक बायोम) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (भौगोलिक क्षेत्र)
A. ज़ायरे बेसिन
B. यूरेशियाई स्टेपी
C. उत्तरी साइबेरिया
D. पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
सूची II: (प्राकृतिक बायोम)
i. मरुस्थल
ii. टुंड्रा
iii. शीतोष्ण घास के मैदान
iv. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
विकल्प:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): टुंड्रा बायोम में पेड़ या तो पूरी तरह से अनुपस्थित होते हैं या बहुत कम, बौनी झाड़ियों के रूप में दिखाई देते हैं।
कारण (R): पर्माफ्रॉस्ट की उपस्थिति जड़ों के प्रवेश को सीमित करती है, और तेज़ हवाएं लंबी वनस्पतियों के लिए जीवित रहना कठिन बना देती हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. कैक्टस और अन्य मरुस्थलीय वनस्पति अनुकूलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रात में कार्बन डाइऑक्साइड को स्थिर करने के लिए उनमें अक्सर क्रैसुलैसियन एसिड मेटाबॉलिज्म (CAM) होता है।
II. सतह क्षेत्र को कम करने के लिए पत्तियां अक्सर कांटों में बदल जाती हैं।
III. तने आमतौर पर प्रकाश संश्लेषक और गूदेदार होते हैं।
IV. वे स्वयं को ठंडा रखने के लिए दिन के सबसे गर्म भाग के दौरान निरंतर जल का वाष्पोत्सर्जन करते हैं।
V. उनके पास हल्की वर्षा को पकड़ने के लिए उथली जड़ों

Downloaded from www.pdf.tube

का एक व्यापक जाल होता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. मैंग्रोव वनों में निम्नलिखित में से कौन सा लक्षण उसके पारिस्थितिक कार्य के साथ गलत रूप से सुमेलित है?

(1) पितृस्थ अंकुरण : जड़ें विकसित होने से पहले बीज अलग हो जाते हैं और सीधे कीचड़ में गिर जाते हैं
(2) श्वसन जड़ें : वायवीय जड़ें जो जलभराव वाली मृदा में गैसीय विनिमय की सुविधा प्रदान करती हैं
(3) स्टिल्ट जड़ें : तीव्र ज्वारीय धाराओं के विरुद्ध संरचनात्मक सहायता प्रदान करती हैं
(4) लवण उत्सर्जित करने वाली पत्तियां : उच्च लवणता वाले तटीय वातावरण में जीवित रहने की अनुमति देती हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सूची I (प्रवाल भित्ति के प्रकार) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (प्रवाल भित्ति के प्रकार)

A. तटीय प्रवाल भित्ति
B. अवरोधक प्रवाल भित्ति
C. एटोल
D. पैच रीफ

सूची II: (विवरण)

i. एक लैगून को घेरती हुई अंगूठी के आकार की प्रवाल भित्ति
ii. एक भित्ति जो सीधे तट से जुड़ी होती है या उथले चैनल द्वारा उससे अलग होती है
iii. लैगून के भीतर पाए जाने वाले छोटे और अलग-थलग रीफ प्लेटफॉर्म
iv. एक भित्ति जो मुख्य भूमि या द्वीप से गहरे और चौड़े लैगून द्वारा अलग होती है

विकल्प:

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. प्राकृतिक वनस्पति की जलवायु सीमाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वृक्ष रेखा (टिम्बरलाइन) उस अधिकतम ऊंचाई या अक्षांश को दर्शाती है जिसके आगे पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण पेड़ नहीं उग सकते।
II. हिम रेखा के परे, स्थायी बर्फ पादप जीवन के सभी रूपों को सीमित कर देती है।
III. वृक्ष रेखा और हिम रेखा किसी भी पर्वत श्रृंखला पर बिल्कुल एक ही ऊंचाई पर स्थित होती हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. बायोम को मुख्य रूप से स्थलीय और जलीय पारिस्थितिक तंत्रों में वर्गीकृत किया गया है। निम्नलिखित में से किसे स्थलीय बायोम नहीं माना जाता है?

(1) टैगा
(2) उष्णकटिबंधीय सवाना
(3) पेलाजिक ज़ोन
(4) शीतोष्ण घास के मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. उष्णकटिबंधीय वर्षावन बायोम कई महाद्वीपों में भूमध्य रेखा के पास वितरित है। निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय वर्षावन के महत्वपूर्ण क्षेत्र नहीं हैं?

(1) कांगो बेसिन
(2) दक्षिण पूर्व एशिया
(3) अमेज़न बेसिन
(4) पेटागोनियन क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती (मानसूनी) वनों के वितरण और विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. ये मुख्य रूप से भारत, म्यांमार, थाईलैंड और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं।
II. उनकी संरचना काफी हद तक पवनों के मौसमी प्रत्यावर्तन पर निर्भर करती है।
III. ये वन आमतौर पर वर्षावनों की तुलना में ऊंचे, सदाबहार पेड़ों के उच्च घनत्व का समर्थन करते हैं।
IV. वे साल और सागौन जैसी व्यावसायिक रूप से मूल्यवान कठोर लकड़ी प्रदान करते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम में, पेड़ एक बंद वितान बनाने के बजाय व्यापक रूप से बिखरे हुए होते हैं। इस विशिष्ट वनस्पति संरचना का प्राथमिक कारण क्या है?

(1) शीत ऋतु के दौरान निरंतर शून्य से नीचे का तापमान सभी उभरते हुए पेड़ों के पौधों को नष्ट कर देता है

NODIA

(2) लंबी शुष्क अवधि, मौसमी आग और बड़े शाकाहारियों का प्रभाव जो पेड़ों के घनत्व को सीमित करते हैं
(3) मृदा में गंभीर और स्थायी पोषक तत्वों की कमी जो घने पेड़ों की वृद्धि को पूरी तरह से रोकती है
(4) हज़ारों वर्षों में विभिन्न स्वदेशी समुदायों द्वारा कृत्रिम भूमि की सफाई ने जंगलों को हटा दिया है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सूची I (घास के मैदान) को सूची II (महाद्वीप) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (घास के मैदान)
A. स्टेपीज
B. पंपास
C. वेल्ड
D. प्रेयरीज

सूची II: (महाद्वीप)
i. उत्तरी अमेरिका
ii. यूरेशिया
iii. दक्षिण अमेरिका
iv. अफ्रीका

विकल्प:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. उत्तरी अमेरिका के प्रशांत तट के शीतोष्ण वर्षावनों में, पेड़ों की कौन सी प्रजाति अपनी विशाल ऊंचाई और दीर्घायु के लिए प्रसिद्ध है?
(1) कोस्टल रेडवुड (सीक्वोया सेम्परविरेन्स)
(2) यूकेलिप्टस रेगनेंस
(3) बरगद (फाइकस बेंगालेंसिस)
(4) बाओबाब (अडानसोनिया)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. बोरियल (टैगा) वन में शंकुधारी पेड़ों की सुई के आकार की पत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे सतह क्षेत्र को कम करते हैं, जिससे वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की हानि कम होती है।
II. उनका मोमी आवरण उन्हें हिमांक तापमान से बचाता है।
III. सुई जैसा आकार बर्फ को आसानी से फिसलने देता है, जिससे शाखाओं को टूटने से बचाया जा सकता है।
IV. वे ऊर्जा बचाने के लिए प्रत्येक शीत ऋतु में गिर जाते हैं।
V. वे शीत ऋतु की कम धूप के अवशोषण को अधिकतम करने के लिए गहरे रंग के होते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल IV
(3) केवल II और V
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित में से कौन सा कथन आल्पाइन टुंड्रा को आर्कटिक टुंड्रा से सटीक रूप से अलग करता है?
(1) आल्पाइन टुंड्रा केवल उत्तरी गोलार्ध में पाया जाता है, जबकि आर्कटिक टुंड्रा उत्तर और दक्षिण दोनों में पाया जाता है
(2) आल्पाइन टुंड्रा में कई ऊंचे पेड़ों की प्रजातियाँ होती हैं, जबकि आर्कटिक टुंड्रा में केवल घास और झाड़ियाँ होती हैं
(3) आल्पाइन टुंड्रा की विशेषता निरंतर पर्माफ्रॉस्ट है, जबकि आर्कटिक टुंड्रा में आमतौर पर कोई पर्माफ्रॉस्ट परत नहीं होती है
(4) आल्पाइन टुंड्रा उच्च ऊंचाई पर होता है, जबकि आर्कटिक टुंड्रा उच्च अक्षांशों पर होता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन I और कथन II। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।

कथन I: क्रेटोफाइट्स शुष्क वातावरण के अनुकूल एक विशिष्ट प्रकार के मरुस्थलीय पौधे हैं।

कथन II: वे अत्यधिक लंबी मूसला जड़ें विकसित करके शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहते हैं जो गहरे भूमिगत जल स्तर तक पहुँचती हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव वन एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाते हैं। निम्नलिखित में से कौन मैंग्रोव का मान्य पारिस्थितिक लाभ नहीं है?
(1) वे एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करते हैं, जो चक्रवातों और लहरों से होने वाले तटीय कटाव को कम करते हैं
(2) उनकी जटिल जड़ प्रणालियाँ विभिन्न समुद्री प्रजातियों के लिए नर्सरी के रूप में कार्य करती हैं
(3) वे तटीय जल की लवणता बढ़ाते हैं, जिससे यह मीठे जल की मछलियों के लिए उपयुक्त हो जाता है
(4) वे प्रदूषकों को फ़िल्टर करते हैं और प्रवाल भित्तियों तक पहुँचने से पहले नदी के बहाव से अवसादों को रोकते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. ग्रेट बैरियर रीफ, विश्व की सबसे बड़ी प्रवाल भित्ति प्रणाली जो अपनी अपार जैव विविधता के लिए जानी जाती है, किसके तट के समीप स्थित है?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका का दक्षिण-पूर्वी तट
(2) दक्षिण अमेरिका का पश्चिमी तट
(3) अफ्रीका का पूर्वी तट

Click Here to Buy book on Amazon

(4) ऑस्ट्रेलिया का उत्तर-पूर्वी तट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. बायोम और मृदा उर्वरता का निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) शीतोष्ण घास के मैदान : मोटी और गहरी ह्यूमस परत वाली अत्यधिक उपजाऊ मृदा
(2) उष्णकटिबंधीय वर्षावन : गहरी और अत्यधिक उपजाऊ मृदा जो कार्बनिक पोषक तत्वों से भरपूर होती है
(3) मरुस्थल : जलभराव वाली और अत्यधिक अम्लीय पीट मृदा जो निचले शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है
(4) टुंड्रा : अत्यधिक निक्षालित और लाल रंग की लैटेराइट मृदा जो उप-ध्रुवीय पर्वत श्रृंखलाओं की विशिष्ट विशेषता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. बायोम की सीमाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) दो सटे हुए बायोम के बीच के संक्रमणकालीन क्षेत्र को इकोटोन (संक्रमिका) कहा जाता है
(2) इकोटोन अक्सर आसन्न बायोम की तुलना में उच्च प्रजाति विविधता प्रदर्शित करते हैं, जिसे 'कोर प्रभाव' के रूप में जाना जाता है
(3) बायोम की सीमाएं स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं, जहाँ एक बायोम अचानक समाप्त हो जाता है और दूसरा शुरु होता है
(4) अक्षांश और ऊंचाई में परिवर्तन से वनस्पति प्रकारों में क्रमिक बदलाव आते हैं, जिससे निरंतर संक्रमण क्षेत्र बनते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. उष्णकटिबंधीय वर्षावन वनस्पति के संदर्भ में, "लियाना" की सही परिभाषा क्या है?
(1) मृदा में जड़ें जमाने वाली काष्ठीय लताएँ जो वितान तक पहुँचने के लिए पेड़ों पर चढ़ती हैं
(2) विशिष्ट मांसाहारी पौधे जो पोषक तत्वों की कमी वाली मृदा के कारण कीटों का भक्षण करते हैं
(3) कवक प्रजातियां जो वन तल पर कार्बनिक पदार्थों के तीव्र अपघटन के लिए उत्तरदायी हैं
(4) छोटे और झाड़ी जैसे पौधे जो प्राथमिक वर्षावन की घनी अधोस्तर परत बनाते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. उष्णकटिबंधीय वर्षावन में कई उद्रामी और वितान पेड़ों में प्रमुख "बट्रेस जड़ें" होती हैं। उनका प्राथमिक कार्य क्या है?
(1) शुष्क अवधि के दौरान गहरे भूमिगत जलभृतों तक पहुँचना
(2) पेड़ के शुष्क मौसम चयापचय के लिए स्टार्च और जल का संचय करना
(3) अत्यधिक अम्लीय मृदा से अवशोषित अतिरिक्त लवणों को उत्सर्जित करना
(4) उथली और पोषक तत्वों की कमी वाली मृदा में संरचनात्मक सहायता प्रदान करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. भारतीय उपमहाद्वीप काफी हद तक उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की विशेषता रखता है। निम्नलिखित में से कौन सी वृक्ष प्रजाति आमतौर पर इन वनों में नहीं पाई जाती है?
(1) साल
(2) महोगनी
(3) सागौन
(4) नीम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. उष्णकटिबंधीय सवाना को विभिन्न क्षेत्रीय नामों से जाना जाता है। "लानोस" और "कैंपोस" विशाल उष्णकटिबंधीय सवाना क्षेत्र हैं जो क्रमशः कहाँ स्थित हैं?
(1) दक्षिण अफ्रीका और केन्या
(2) अर्जेंटीना और उरुग्वे
(3) वेनेजुएला और ब्राजील
(4) ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. कौन सा वनस्पति प्रकार मुख्य रूप से 'स्क्लेरोफिलस' (कठोर पत्ती वाले) पौधों की विशेषता रखता है?
(1) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(2) टुंड्रा वनस्पति
(3) मैंग्रोव वन
(4) भूमध्यसागरीय वनस्पति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. शीतोष्ण घास के मैदान बायोम में विश्व की कुछ सबसे उपजाऊ मृदा होती है। इन मृदाओं में गहरे और काले ह्यूमस के संचय का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से क्या है?
(1) व्यापक घास जड़ प्रणालियों और धरातलीय जैवभार का वार्षिक क्षय
(2) भारी और वर्ष भर होने वाली वर्षा जो चट्टानों के तीव्र रासायनिक अपक्षय को बढ़ावा देती है
(3) अत्यधिक उपजाऊ ज्वालामुखी राख का बार-बार जमाव
(4) मृदा में रहने वाले बैक्टीरिया और केंचुओं की पूर्ण अनुपस्थिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. निम्नलिखित में से कौन शीतोष्ण पर्णपाती वन बायोम की गलत सुमेलित विशेषता है?
(1) पत्तियां : ग्रीष्म ऋतु के दौरान सूर्य के प्रकाश को ग्रहण करने के लिए चौड़ी पत्तियां
(2) मृदा : अत्यधिक अम्लीय और स्थायी रूप से जमी हुई (पर्माफ्रॉस्ट)
(3) मौसमी : चार स्पष्ट ऋतुएं (वसंत, ग्रीष्म, शरद, शीत)
(4) शीतकालीन अनुकूलन : पत्तियों का पूरी तरह गिरना (विलगन)

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. शीतोष्ण वर्षावन और उष्णकटिबंधीय वर्षावन के बीच सबसे विशिष्ट अंतर क्या है?
(1) शीतोष्ण वर्षावनों में उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की तुलना में जैव विविधता का स्तर काफी अधिक होता है
(2) शीतोष्ण वर्षावनों में मौसमी परिवर्तन होते हैं; उष्णकटिबंधीय वर्षावन सदैव गर्म रहते हैं
(3) शीतोष्ण वर्षावनों में 50 सेमी से कम वार्षिक वर्षा होती है, जबकि उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में 200 सेमी से काफी अधिक वर्षा होती है
(4) शीतोष्ण वर्षावनों में चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती पेड़ों का प्रभुत्व है, जबकि उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में शंकुधारी पेड़ों का प्रभुत्व है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन बोरियल वन (टैगा) की जैव विविधता का सही वर्णन करता है?
(1) निम्न पादप प्रजाति विविधता, जिसमें अक्सर शंकुधारी प्रजातियों के व्यापक क्षेत्र शामिल होते हैं
(2) इसमें पृथ्वी पर किसी भी ज्ञात स्थलीय बायोम की उच्चतम पादप प्रजाति विविधता है
(3) यह अपने दलदलों और झीलों के विशाल नेटवर्क के कारण सरीसृपों और उभयचरों की उच्च विविधता प्रदर्शित करता है
(4) यह पूरी तरह से चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती पेड़ों और पुष्पयुक्त झाड़ियों की विस्तृत विविधता के प्रभुत्व वाला है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. टुंड्रा बायोम में वनस्पति विशिष्ट रूप से अत्यधिक लघु वर्धन काल और हिमांक तापमान में जीवित रहने के लिए अनुकूलित होती है। टुंड्रा में आमतौर पर कौन सा पादप प्रकार नहीं पाया जाता है?
(1) लाइकेन
(2) काई
(3) अधिपादप ऑर्किड
(4) बौने विलो
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. कुछ मरुस्थलीय पौधों को "अल्पकालिक" (एफिमिरल्स) कहा जाता है। ये पौधे कठोर मरुस्थलीय जलवायु में कैसे जीवित रहते हैं?
(1) सूखे के कई वर्षों के दौरान उपयोग के लिए अपनी गहरी मूसला जड़ों में बड़ी मात्रा में जल संचित करके
(2) सुप्तावस्था में जाकर और अगली वर्षा होने तक पूरी तरह से शुष्क रहकर
(3) विशेष रूप से बड़ी बारहमासी मरुस्थलीय झाड़ियों और पेड़ों की जड़ों पर परजीवी के रूप में जीवित रहकर
(4) दुर्लभ वर्षा की घटनाओं के पश्चात तेजी से अपना जीवन चक्र पूर्ण करके

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. मैंग्रोव में कठोर तटीय वातावरण में जीवित रहने के लिए कई अनूठे अनुकूलन होते हैं। निम्नलिखित में से कौन मैंग्रोव पेड़ों का विशिष्ट अनुकूलन नहीं है?
(1) प्रॉप जड़ें
(2) श्वसन जड़ें (न्यूमेटोफोर)
(3) सुई जैसी पत्तियां
(4) पितृस्थ अंकुरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. प्रवाल जूक्सैन्थेले नामक सूक्ष्म शैवाल के साथ सहजीवी संबंध पर निर्भर करते हैं। इस संबंध के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) जूक्सैन्थेले प्रवाल पॉलिप्स के ऊतकों के भीतर रहते हैं
(2) प्रवाल भित्ति के कैल्शियम कार्बोनेट कंकाल को स्रावित करने के लिए पूरी तरह से जूक्सैन्थेले उत्तरदायी होते हैं
(3) प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से, जूक्सैन्थेले प्रवाल को आवश्यक पोषक तत्व और ऊर्जा प्रदान करते हैं
(4) प्रवाल जूक्सैन्थेले को एक सुरक्षित वातावरण और प्रकाश संश्लेषण के लिए आवश्यक यौगिक प्रदान करते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन I और कथन II। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन I: भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक यात्रा करते समय देखे गए बायोम का क्रम मोटे तौर पर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में ऊंचे पर्वतों पर चढ़ने के समान ही होता है।
कथन II: ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बढ़ती ऊंचाई के परिणामस्वरूप तापमान और वर्षा में परिवर्तन बढ़ते अक्षांश के कारण होने वाले परिवर्तनों के समान होते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

72. बायोम को परिभाषित करते समय, पारिस्थितिकी तंत्र और बायोम शब्द संबंधित लेकिन भिन्न हैं। निम्नलिखित में से कौन इस संबंध को सबसे अच्छी तरह उजागर करता है?
(1) एक बायोम एक विशाल क्षेत्र है जिसमें जलवायु द्वारा परिभाषित कई समान पारिस्थितिकी तंत्र होते हैं
(2) एक बायोम एक एकल पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर एक छोटा उपखंड है
(3) पारिस्थितिकी तंत्र मुख्य रूप से अजैविक कारकों को संदर्भित करता है, जबकि बायोम जैविक कारकों को संदर्भित करता है
(4) एक बायोम में केवल एक क्षेत्र का पादप जीवन सम्मिलित होता है, जबकि एक पारिस्थितिकी तंत्र में केवल जंतु जीवन सम्मिलित होता है

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से कौन सा कथन यह स्पष्ट करता है कि उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की विशिष्ट लैटेराइट मृदा सामान्यतः वनोन्मूलन के पश्चात निरंतर कृषि उपयोग के लिए अनुपयुक्त क्यों होती है?
(1) वे कार्बनिक पदार्थों से अत्यंत समृद्ध होती हैं, जिससे फसलें पकने से पहले ही सड़ जाती हैं
(2) उनमें एक स्थायी रूप से जमी हुई उपसतह परत होती है जो फसल की जड़ों के विकास को रोकती है
(3) भारी वर्षा पोषक तत्वों को बहा ले जाती है (निक्षालन), जिससे केवल एल्युमिनियम और आयरन ऑक्साइड ही शेष बचते हैं
(4) उच्च वाष्पीकरण दर के कारण लवण सतह पर आ जाते हैं जिससे वे अत्यधिक क्षारीय हो जाती हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सागौन और साल जैसी व्यावसायिक रूप से मूल्यवान प्रजातियों के प्रभुत्व वाले वन भारत के किस जैव-भौगोलिक क्षेत्र की पहचान हैं?
(1) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(2) हिमालयी आल्पाइन क्षेत्र
(3) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावन
(4) मैंग्रोव ज्वारीय वन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह विषुवतीय वर्षावनों और उष्णकटिबंधीय मरुस्थलों के बीच स्थित है
(2) इसमें शीत ऋतु के दौरान एक स्पष्ट शुष्क मौसम और ग्रीष्म ऋतु के दौरान एक आर्द्र मौसम होता है
(3) तापमान पूरे वर्ष अपेक्षाकृत उच्च बना रहता है, बिना किसी गंभीर शीत ऋतु के
(4) सवाना की वर्षा वर्षावन बायोम की तुलना में अधिक और अधिक वितरित होती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. भूमध्यसागरीय बायोम शराब उत्पादन के लिए अंगूर की खेती पर केंद्रित एक विशिष्ट प्रकार की कृषि के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। इस पद्धति को औपचारिक रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) सिल्विकल्चर
(2) विटीकल्चर
(3) सेरीकल्चर
(4) हॉर्टिकल्चर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. शीतोष्ण घास के मैदानों को अक्सर "विश्व के अन्न भंडार" के रूप में जाना जाता है। इस बायोम की कौन सी पारिस्थितिक विशेषता इसे व्यापक अनाज की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त बनाती है?
(1) वर्ष भर होने वाली भारी वर्षा जो सिंचित कृषि स्थितियों के समान होती है
(2) पाले या सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं की पूर्ण अनुपस्थिति
(3) पोषक तत्वों से भरपूर मृदा और यंत्रीकृत कृषि के लिए उपयुक्त समतल स्थलाकृति
(4) मैदानों में बिखरी हुई नाइट्रोजन-स्थिरीकरण करने वाली वृक्ष प्रजातियों का उच्च घनत्व
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. बोरियल वन (टैगा) बायोम में पाई जाने वाली मृदा की उच्च अम्लता का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) वाष्पीकरण की उच्च दर जिससे सतह पर अम्लीय लवण शेष रह जाते हैं
(2) अंतर्निहित आधारभूत चट्टान का पूर्णतः अम्लीय ग्रेनाइट से बना होना
(3) प्राकृतिक रूप से लगने वाली वनाग्नि के कारण होने वाली बार-बार अम्लीय वर्षा
(4) शंकुधारी पेड़ों की सुइयां जो मंद अपघटन के दौरान अम्लीय यौगिक मुक्त करती हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. निम्नलिखित में से कौन सा मरुस्थल उस महाद्वीप के साथ सही सुमेलित है जहाँ वह स्थित है?
(1) मोजावे मरुस्थल : उत्तरी अमेरिका
(2) अटाकामा मरुस्थल : अफ्रीका
(3) कालाहारी मरुस्थल : दक्षिण अमेरिका
(4) ग्रेट विक्टोरिया मरुस्थल : एशिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. जबकि प्रवाल भित्तियों को अत्यधिक मत्स्यन और प्रदूषण जैसे कई स्थानीय संकटों का सामना करना पड़ता है, वर्तमान में वैश्विक प्रवाल भित्ति के अस्तित्व के लिए सबसे गंभीर और व्यापक खतरे के रूप में किसे पहचाना जाता है?
(1) विनाशकारी बॉटम-ट्रॉलिंग मत्स्यन प्रथाएं
(2) जलवायु परिवर्तन, समुद्र का गर्म होना और अम्लीकरण
(3) आक्रामक स्टारफिश प्रजातियों का प्रवेश
(4) तटीय विकास परियोजनाओं से बढ़ी हुई गंदलापन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) क्षेत्रीय वनस्पतियों और जीवों का एक प्रमुख जैविक समुदाय जिसे मुख्य रूप से उसकी प्रमुख जलवायु द्वारा वर्गीकृत किया जाता है
बायोम एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र है जो मुख्य रूप से वहां की विशिष्ट जलवायु, तापमान और वर्षा की मात्रा के आधार पर परिभाषित होता है। इसमें पादपों और जंतुओं का एक प्रमुख समुदाय शामिल होता है जो उस क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियों में जीवित रहने हेतु अनुकूलित होते हैं। स्थलीय बायोम का वितरण अक्षांश और ऊंचाई के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

2. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विश्व के विभिन्न महाद्वीपों में शीतोष्ण घास के मैदानों को पृथक स्थानीय नामों से जाना जाता है। उत्तरी अमेरिका में विस्तृत इन घास के मैदानों को प्रेयरी कहा जाता है, जबकि दक्षिण अमेरिका के अर्जेंटीना में इन्हें पंपास कहते हैं। दक्षिण अफ्रीका में ये वेल्ड के रूप में प्रसिद्ध हैं। ऑस्ट्रेलिया के निचले क्षेत्रों में पाए जाने वाले इन उपजाऊ मैदानों को डाउन्स कहा जाता है।

3. (3) सेल्वास
दक्षिण अमेरिका के अमेज़न बेसिन में पाए जाने वाले अत्यंत सघन और चौड़ी पत्ती वाले उष्णकटिबंधीय वर्षावनों को स्थानीय रूप से सेल्वास कहा जाता है। ये वन पृथ्वी पर जैव विविधता के सबसे समृद्ध स्रोत हैं। यहाँ वर्ष भर होने वाली निरंतर वर्षा और उच्च तापमान वनस्पतियों के तीव्र विकास और घने वितान के निर्माण में सहायक होते हैं। यह पारिस्थितिकी तंत्र अद्वितीय है।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में अत्यधिक जैवभार के उपरांत भी मृदा पोषक तत्वों से भरपूर नहीं होती है। इसका मुख्य कारण यहाँ होने वाली भारी और निरंतर वर्षा है, जो मृदा के ऊपरी स्तर से पोषक तत्वों को गहराई में बहा ले जाती है, जिसे निक्षालन कहा जाता है। साथ ही, उच्च तापमान के कारण जीवाणु कार्बनिक पदार्थों का तीव्र अपघटन करते हैं, जिससे ह्यूमस संचित नहीं होता।

5. (3) केवल I और III
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की संरचना विभिन्न ऊर्ध्वाधर परतों में विभाजित होती है। उद्रामी परत में सबसे ऊंचे वृक्ष होते हैं जो वितान से ऊपर निकलकर प्रचुर सूर्य का प्रकाश प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत, वन की सतह पर प्रकाश की उपलब्धता 2% से भी कम होती है। अधोस्तर परत में प्रकाश अत्यंत सीमित होने के कारण वनस्पति घनी नहीं होती, क्योंकि मुख्य वितान अवरोधक होता है।

6. (2) वाष्पोत्सर्जन शीतलन को अधिकतम करने के लिए चौड़ी और पतली पत्तियों की उपस्थिति
मरुस्थलीय पौधे शुष्क परिस्थितियों में जल संरक्षण हेतु विशिष्ट अनुकूलन विकसित करते हैं। वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की हानि को कम करने हेतु पत्तियां या तो कांटों में परिवर्तित हो जाती हैं या बहुत छोटी और मोटी होती हैं। चौड़ी और पतली पत्तियां जल की हानि को बढ़ाती हैं, इसलिए ये मरुस्थलीय वनस्पति की विशेषता नहीं हैं। इनमें मांसल तने और गहरी जड़ें होती हैं।

7. (4) इन वनों के पेड़ जल संरक्षण के लिए शुष्क मौसम के दौरान एक साथ अपनी पत्तियां गिरा देते हैं
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन, जिन्हें मानसूनी वन भी कहा जाता है, मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा मौसमी होती है। ये वृक्ष शुष्क ऋतु के प्रारंभ में जल के अत्यधिक वाष्पोत्सर्जन को रोकने और नमी को संरक्षित करने हेतु अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। यह प्राकृतिक अनुकूलन उन्हें जल की कमी वाले महीनों में जीवित रहने में सहायता प्रदान करता है।

8. (1) B, D, C, A
भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ने पर जलवायु परिवर्तन बायोम के वितरण को निर्धारित करता है। सर्वप्रथम भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय वर्षावन पाए जाते हैं। तत्पश्चात कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सवाना का विस्तार होता है। उच्च अक्षांशों पर ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों में टैगा वन मिलते हैं। अंततः, ध्रुवीय क्षेत्रों के निकट जहाँ अत्यधिक हिमपात होता है, वहां टुंड्रा बायोम की स्थिति होती है।

NODIA

9. (3) दक्षिण-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका
भूमध्यसागरीय जलवायु महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों पर 30 से 45 डिग्री अक्षांशों के मध्य पाई जाती है। इसके प्रमुख क्षेत्रों में कैलिफोर्निया तट, मध्य चिली और दक्षिण-पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया सम्मिलित हैं। दक्षिण-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु होती है, जहाँ वर्षा मुख्य रूप से ग्रीष्म ऋतु में होती है। यह स्थिति भूमध्यसागरीय परिस्थितियों से सर्वथा भिन्न है, जहाँ वर्षा केवल शीत ऋतु में होती है।

10. (1) तापमान और दिन के प्रकाश की अवधि में मौसमी परिवर्तन जो शीत ऋतु में नमी की हानि को रोकने के लिए सुप्तावस्था को प्रेरित करते हैं
शीतोष्ण पर्णपाती वनों में शरद ऋतु के दौरान वृक्षों द्वारा पत्तियां गिराने का प्राथमिक उद्देश्य शीत ऋतु की प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवित रहना है। कम तापमान और प्रकाश में कमी के कारण प्रकाश संश्लेषण धीमा हो जाता है। पत्तियां गिराकर वृक्ष वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से होने वाली नमी की

हानि को रोकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण ऊर्जा-बचत तंत्र है जो वृक्षों को सुरक्षित रखता है।

11. (3) I, II और III
मैंग्रोव वन उष्णकटिबंधीय तटीय अंतरज्वारीय क्षेत्रों में उगने वाली विशिष्ट वनस्पतियाँ हैं। इनमें पितृस्थ अंकुरण पाया जाता है, जहाँ बीज मातृ वृक्ष पर लगे रहते हुए ही अंकुरित हो जाते हैं, जो दलदली मृदा हेतु आवश्यक है। इन पौधों में विशेष श्वसन जड़ें या न्यूमेटोफोर होते हैं जो ऑक्सीजन अवशोषण में सहायता करते हैं। ये वन खारे जल के प्रति अत्यधिक सहनशील होते हैं।

12. (2) सिल्वर फर्न और कौरी
न्यूजीलैंड के शीतोष्ण वर्षावन अपनी विशिष्ट वनस्पति और उच्च आर्द्रता हेतु प्रख्यात हैं। सिल्वर फर्न यहाँ का एक प्रतीकात्मक पौधा है जो नम और छायादार परिस्थितियों में पनपता है। इसके साथ ही कौरी के विशाल वृक्ष इन वनों की एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता हैं। ये प्रजातियाँ न्यूज़ीलैंड की उच्च वर्षा और संतुलित समुद्री जलवायु के अनुकूल हैं, जो इस क्षेत्र को अद्वितीय बनाती हैं।

13. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
विभिन्न बायोम की पहचान उनकी प्रमुख वृक्ष प्रजातियों से होती है। उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों में सागौन और साल जैसे कठोर लकड़ी वाले वृक्ष पाए जाते हैं। वर्षावनों में महोगनी और रोजवुड जैसे सघन सदाबहार वृक्ष मिलते हैं। टैगा वनों में पाइन और स्प्रूस जैसे शंकुधारी वृक्ष प्रमुख हैं। भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में शुष्क ग्रीष्म ऋतु के अनुकूल कॉर्क ओक और जैतून के वृक्ष प्रचुरता में उगते हैं।

14. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
टुंड्रा बायोम में मृदा की सतह के नीचे पर्माफ्रॉस्ट नामक स्थायी रूप से जमी हुई बर्फ की परत होती है, जो वृक्षों की गहरी जड़ों को विकसित होने से रोकती है। आर्कटिक टुंड्रा मुख्य रूप से उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों तक सीमित है, जबकि आल्पाइन टुंड्रा ऊंचे पर्वतों पर हिम रेखा के नीचे पाया जाता है। दोनों क्षेत्रों में अत्यधिक ठंड और छोटा वर्धन काल वनस्पति विकास को सीमित करता है।

15. (2) केवल III और V
प्रवाल भित्तियों के स्वस्थ विकास हेतु विशिष्ट समुद्री परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। ये भित्तियाँ केवल स्वच्छ, उथले और खारे जल में ही पनप सकती हैं जहाँ सूर्य का प्रकाश गहराई तक पहुँच सके। मीठा जल और अत्यधिक अवसादन इनके लिए हानिकारक होते हैं क्योंकि ये प्रवाल पॉलिप्स के श्वसन को बाधित करते हैं। इनके निर्माण हेतु ठोस आधार और 20-27 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है।

16. (2) बोरियल वन (टैगा)
पॉडजोलीकरण एक मृदा निर्माण प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से ठंडी और आर्द्र जलवायु वाले टैगा वनों में देखी जाती है। यहाँ शंकुधारी वृक्षों की गिरी हुई सुइयां धीमी गति से अपघटित होकर अम्लीय पदार्थ मुक्त करती हैं। भारी वर्षा और कम तापमान के कारण मृदा के ऊपरी स्तर से खनिज निक्षालित होकर नीचे चले जाते हैं, जिससे सतह पर राख जैसी धूसर मृदा का निर्माण होता है।

17. (2) उष्णकटिबंधीय वर्षावन : पूरे वर्ष निरंतर उच्च तापमान और वर्षा
उष्णकटिबंधीय वर्षावन बायोम की सबसे प्रमुख विशेषता वहां पूरे वर्ष रहने वाला निरंतर उच्च तापमान और प्रचुर मात्रा में होने वाली वर्षा है। यहाँ कोई स्पष्ट शुष्क ऋतु नहीं होती है, जिसके कारण वनस्पतियाँ सदैव हरी-भरी और सदाबहार बनी रहती हैं। अन्य बायोम जैसे सवाना में स्पष्ट शुष्क और आर्द्र ऋतुएँ होती हैं, जबकि भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में वर्षा मुख्य रूप से केवल शीत ऋतु में होती है।

18. (2) उद्रामी परत, वितान, अधोस्तर, वन तल
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की संरचना विभिन्न ऊर्ध्वाधर परतों में व्यवस्थित होती है। सबसे ऊपर उद्रामी परत होती है जहाँ विशाल वृक्ष वितान से बाहर निकलते हैं। इसके नीचे मुख्य वितान परत होती है जो एक घनी छतरी का निर्माण करती है। वितान के नीचे अधोस्तर परत स्थित होती है जहाँ प्रकाश की मात्रा कम होती है। अंत में वन तल होता है जहाँ अपघटित पदार्थ पाए जाते हैं।

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम में वृक्ष एक-दूसरे से काफी दूरी पर स्थित होते हैं और उनमें अग्नि से बचाव हेतु अक्सर मोटी छाल विकसित होती है। इस पारिस्थितिकी तंत्र में शुष्क ऋतु के दौरान घास में आग लगना एक सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह मौसमी अग्नि वृक्षों के घनत्व को बढ़ने से रोकती है और एक निरंतर वन आवरण विकसित होने नहीं देती है।

20. (4) वर्ष भर स्थिर उच्च तापमान और आर्द्रता जो निरंतर पादप वृद्धि की अनुमति देती है
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पाई जाने वाली असाधारण जैव विविधता का मुख्य कारण वहां की स्थिर और अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ हैं। पूरे वर्ष उच्च तापमान और प्रचुर आर्द्रता पादपों को बिना किसी बाधा के निरंतर बढ़ने और फलने-फूलने का अवसर प्रदान करती है। मौसमी परिवर्तनों की कमी के कारण यहाँ के जीवों को प्रतिकूल मौसम का सामना नहीं करना पड़ता, जिससे विभिन्न प्रजातियों का विकास संभव हुआ है।

21. (1) केवल I और II
भारत में उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। आर्द्र पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 100 से 200 सेमी होती है। शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ वर्षा 70 सेमी से कम हो जाती है, ये वन कटीले वनों में परिवर्तित हो जाते हैं। बांस, साल और शीशम जैसी प्रजातियाँ इन वनों का हिस्सा हैं, जो आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

22. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
भूमध्यसागरीय झाड़ियों को विश्व के विभिन्न हिस्सों में पृथक स्थानीय नामों से जाना जाता है। दक्षिणी यूरोप के क्षेत्रों में इन्हें

Downloaded from www.pdf.tube

माक्विस कहा जाता है, जबकि कैलिफोर्निया में ये चैपरल के रूप में प्रसिद्ध हैं। दक्षिण अफ्रीका के केप क्षेत्र में इन्हें फिनबोस के नाम से जाना जाता है। ऑस्ट्रेलिया के भूमध्यसागरीय जलवायु वाले भागों में पाई जाने वाली इस वनस्पति को मैली के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

23. (4) शीतोष्ण घास के मैदान आमतौर पर विषुवतीय क्षेत्र में महाद्वीपों के पूर्वी किनारों पर पाए जाते हैं
शीतोष्ण घास के मैदान मुख्य रूप से महाद्वीपों के आंतरिक भागों में पाए जाते हैं, न कि विषुवतीय क्षेत्रों में। उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज में वर्षा की मात्रा यूरेशिया के स्टेपीज से अधिक होती है, जिससे यहाँ घास लंबी होती है। इन क्षेत्रों की मृदा, जिसे चेरनोज़ेम कहा जाता है, कार्बनिक पदार्थों की प्रचुरता के कारण अत्यंत उपजाऊ होती है। यहाँ की जलवायु विशिष्ट महाद्वीपीय प्रकार की होती है।

24. (1) बाओबाब
ओक, मेपल और बीच जैसे वृक्ष शीतोष्ण पर्णपाती वनों की प्रमुख प्रजातियाँ हैं जो शरद ऋतु में अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। इसके विपरीत, बाओबाब का वृक्ष उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम की विशेषता है। बाओबाब विशेष रूप से अपनी मोटी, जल संचय करने वाली सूंड और शुष्क परिस्थितियों के अनुकूल होने हेतु जाना जाता है। अतः, यह शीतोष्ण पर्णपाती वन के पारिस्थितिकी तंत्र का भाग नहीं है।

25. (2) I, II और IV
उत्तरी अमेरिका के प्रशांत उत्तर-पश्चिम के शीतोष्ण वर्षावन विशाल शंकुधारी वृक्षों जैसे कोस्टल रेडवुड हेतु प्रसिद्ध हैं। यहाँ की जलवायु समुद्री धाराओं के प्रभाव से संतुलित रहती है, जिससे सर्दियाँ अत्यंत कठोर नहीं होती हैं। उच्च आर्द्रता के कारण यहाँ काई और लाइकेन जैसे अधिपादप प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह बायोम विश्व के सबसे ऊंचे वृक्षों का समर्थन करने हेतु सक्षम है।

26. (1) एकल प्रजातियों के व्यापक शुद्ध स्टैंड कटाई को सरल बनाते हैं
टैगा वनों में वाणिज्यिक लकड़ी उद्योग के अत्यधिक विकसित होने का मुख्य कारण यहाँ एक ही प्रजाति के वृक्षों के विशाल क्षेत्रों का पाया जाना है। इसे शुद्ध स्टैंड कहा जाता है, जो वृक्षों की कटाई और परिवहन को बहुत सरल और आर्थिक रूप से लाभदायक बनाता है। यद्यपि यहाँ की लकड़ी नरम होती है, लेकिन इसकी समरूपता इसे लुगदी और निर्माण हेतु आदर्श बनाती है।

27. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न बायोम में विशिष्ट प्रकार की मृदा विकसित होती है। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में अत्यधिक निक्षालित ऑक्सीसोल मृदा पाई जाती है। शीतोष्ण घास के मैदान अपनी उपजाऊ मौलीसोल मृदा हेतु प्रसिद्ध हैं। बोरियल वनों में अम्लीय स्पोडोसोल मृदा का निर्माण होता है। टुंड्रा क्षेत्रों में ठंडी जलवायु के कारण जेलिसोल मृदा होती है, जिसमें पर्माफ्रॉस्ट की परत स्थायी रूप से विद्यमान रहती है, जो वनस्पति को प्रभावित करती है।

28. (2) केवल III
मरुस्थलीय पौधे जल संरक्षण हेतु विशेष तकनीक अपनाते हैं। वाष्पोत्सर्जन को कम करने हेतु उनके रंध्र (स्टोमेटा) आमतौर पर रात्रि में खुलते हैं और दिन के दौरान बंद रहते हैं। यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि वे दिन में खुलते हैं। अन्य अनुकूलन जैसे उथली जड़ें, कांटों में परिवर्तित पत्तियां और जल संचय हेतु मांसल तने मरुद्भिद वनस्पतियों की वास्तविक विशेषताएं हैं, जो शुष्कता में सहायक हैं।

29. (1) C, A, D, B
वर्षा की औसत वार्षिक मात्रा के आधार पर बायोम का सही घटता क्रम उष्णकटिबंधीय वर्षावन से प्रारंभ होता है, जहाँ सर्वाधिक वर्षा होती है। इसके पश्चात उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन आते हैं जहाँ वर्षा मौसमी होती है। उष्णकटिबंधीय सवाना में वर्षा और कम होती है। अंत में, मरुस्थलीय बायोम आता है जहाँ वर्षा अत्यंत न्यून और अनियमित होती है, जिससे वहां की वनस्पति विरल रहती है।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रवाल विरंजन एक गंभीर प्रक्रिया है जो प्रवाल भित्तियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। यह तब होता है जब प्रवाल तनाव के कारण अपने ऊतकों में रहने वाले सहजीवी ज़ूक्सैन्थेले शैवाल को निष्कासित कर देते हैं। चूंकि ये शैवाल प्रवाल को भोजन और रंग प्रदान करते हैं, अतः उनके बिना प्रवाल श्वेत दिखने लगते हैं। यदि तनावपूर्ण स्थितियां लंबी बनी रहती हैं, तो प्रवाल मृत हो जाते हैं।

31. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
जलवायु परिस्थितियाँ बायोम के वितरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। पूरे वर्ष उच्च तापमान और भारी वर्षा उष्णकटिबंधीय वर्षावन की पहचान है। स्पष्ट शुष्क ऋतु के साथ लंबी घास सवाना बायोम की विशेषता है। गर्म शुष्क ग्रीष्म ऋतु और आर्द्र शीत ऋतु भूमध्यसागरीय बायोम में पाई जाती है। टुंड्रा बायोम की पहचान उसकी बहुत छोटी ठंडी ग्रीष्म ऋतु और लंबी शीत ऋतु से होती है।

32. (2) केवल II और III
बायोम मुख्य रूप से वनस्पति प्रकार और जलवायु द्वारा निर्धारित एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र है। तापमान और वर्षा दो सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो यह तय करते हैं कि पृथ्वी के किसी विशेष भाग में किस प्रकार का बायोम होगा। यदि दो पृथक महाद्वीपों पर जलवायु परिस्थितियाँ समान हों, तो वहां एक जैसे बायोम विकसित हो सकते हैं। बायोम केवल जंतुओं द्वारा परिभाषित नहीं होता है।

33. (2) अधिपादप
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में घने वितान के कारण सूर्य का प्रकाश वन तल तक नहीं पहुँच पाता है। इस समस्या के निराकरण हेतु कुछ पादप, जिन्हें अधिपादप कहा जाता है,

NODIA

अन्य ऊंचे वृक्षों पर उगते हैं। ये पादप अपने आश्रयदाता वृक्ष से पोषण नहीं लेते हैं, बल्कि केवल शारीरिक सहायता हेतु उनका उपयोग करते हैं। वे वायु और वर्षा से नमी तथा पोषक तत्व प्राप्त करते हैं।

34. (1) तीव्र पोषक तत्व चक्रण जहाँ अधिकांश खनिज मृदा के बजाय जैवभार में संग्रहीत होते हैं
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पोषक तत्व चक्रण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र होती है। मृत पत्तियों और लकड़ियों का अपघटन उच्च तापमान के कारण बहुत शीघ्र हो जाता है। मृदा में निक्षालन के कारण पोषक तत्व अधिक समय तक संचित नहीं रह पाते, इसलिए पादपों की जड़ें उन्हें तुरंत अवशोषित कर लेती हैं। इस कारण अधिकांश पोषक तत्व मृदा के स्थान पर जीवित वनस्पतियों और जैवभार में होते हैं।

35. (3) केवल IV
उष्णकटिबंधीय सवाना बायोम की पहचान घास के मैदानों और बिखरे हुए वृक्षों के संयोजन से होती है। यह कथन पूर्णतः असत्य है कि यह किसी भी वृक्ष प्रजाति से रहित है। वास्तव में, यहाँ छिटपुट रूप से उगने वाले वृक्ष अग्नि और सूखे के प्रति सहनशील होते हैं। यह बायोम भारी मात्रा में घास खाने वाले शाकाहारी जीवों और उनके शिकारियों को आश्रय प्रदान करता है।

36. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
भूमध्यसागरीय बायोम के पादपों में नमी के संरक्षण हेतु मोटी और मोमी पत्तियां होती हैं, जो शुष्क ग्रीष्म ऋतु के दौरान वाष्पोत्सर्जन को कम करती हैं। यह कथन सत्य है, परंतु द्वितीय कथन असत्य है क्योंकि इस क्षेत्र में वर्षा मुख्य रूप से शीत ऋतु में होती है, ग्रीष्म ऋतु में नहीं। ग्रीष्म काल यहाँ पूर्णतः शुष्क रहता है, जिसके कारण वनस्पतियों को विशिष्ट अनुकूलन की आवश्यकता होती है।

37. (1) उष्णकटिबंधीय वर्षावन, शीतोष्ण पर्णपाती वन, उष्णकटिबंधीय सवाना, मरुस्थल
शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता उस दर को दर्शाती है जिस पर पादप सौर ऊर्जा को जैवभार में परिवर्तित करते हैं। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में आदर्श तापमान और वर्षा के कारण यह दर सर्वाधिक होती है। इसके पश्चात शीतोष्ण पर्णपाती वन आते हैं जहाँ मध्यम उत्पादकता होती है। उष्णकटिबंधीय सवाना में उत्पादकता मौसमी वर्षा पर निर्भर करती है। अंत में मरुस्थलों में जल की कमी के कारण उत्पादकता न्यूनतम होती है।

38. (2) पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोप और पूर्वी चीन
शीतोष्ण पर्णपाती वन मुख्य रूप से मध्य अक्षांशों के उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ चार स्पष्ट ऋतुएँ होती हैं। इनके वितरण के प्रमुख क्षेत्रों में पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी और मध्य यूरोप, और पूर्वी चीन के साथ जापान सम्मिलित हैं। इन क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा और मध्यम तापमान होता है, जो इन वनों के विकास हेतु अनुकूल है। अमेज़न बेसिन में वर्षावन पाए जाते हैं।

39. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
भौगोलिक क्षेत्रों और उनके संबंधित बायोम का मिलान महत्वपूर्ण है। अफ्रीका का ज़ायरे बेसिन अपने सघन उष्णकटिबंधीय वर्षावनों हेतु प्रख्यात है। यूरेशिया के मध्य भाग में शीतोष्ण घास के मैदान पाए जाते हैं। उत्तरी साइबेरिया का ध्रुवीय क्षेत्र टुंड्रा बायोम के अंतर्गत आता है जहाँ अत्यधिक शीत रहती है। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का अधिकांश हिस्सा विशाल मरुस्थलों से आवृत है, जो शुष्क जलवायु को प्रदर्शित करता है।

40. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
टुंड्रा बायोम में वनस्पतियों का विकास अत्यंत सीमित होता है, जहाँ ऊंचे वृक्ष नहीं उग पाते हैं। इसका मुख्य कारण मृदा की निचली सतह का स्थायी रूप से जमना है जिसे पर्माफ्रॉस्ट कहते हैं। यह जमी हुई परत जड़ों को गहराई तक जाने नहीं देती। इसके अतिरिक्त, ध्रुवीय क्षेत्रों की तीव्र और ठंडी पवनें लंबी वनस्पतियों हेतु वातावरण को और भी अधिक चुनौतीपूर्ण बना देती हैं।

41. (1) I, II, III और V
कैक्टस जैसे मरुस्थलीय पौधों ने शुष्कता से बचाव हेतु अद्भुत अनुकूलन विकसित किए हैं। वे रात्रि में कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करने हेतु विशिष्ट उपापचय का उपयोग करते हैं ताकि दिन में वाष्पोत्सर्जन कम हो। उनकी पत्तियां कांटों में परिवर्तित हो जाती हैं और तने प्रकाश संश्लेषण करते हैं। वे दिन के दौरान वाष्पोत्सर्जन को रोकते हैं। उथली जड़ें और मांसल संरचना जल संचय में अत्यंत सहायक होती हैं।

42. (1) पितृस्थ अंकुरण : जड़ें विकसित होने से पहले बीज अलग हो जाते हैं और सीधे कीचड़ में गिर जाते हैं
मैंग्रोव में पितृस्थ अंकुरण का अर्थ है कि बीज मातृ वृक्ष से जुड़े रहते हुए ही अंकुरित होकर एक छोटे पादप में परिवर्तित हो जाते हैं। यह अनुकूलन उन्हें खारे और ऑक्सीजन रहित दलदल में स्थापित होने में सहायता करता है। विकल्प में दिया गया विवरण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि अंकुरण वृक्ष पर ही संपन्न होता है। अन्य विशेषताएं जैसे श्वसन जड़ें उन्हें स्थिरता और ऑक्सीजन प्रदान करती हैं।

43. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
प्रवाल भित्तियाँ अपनी संरचना के आधार पर विभिन्न प्रकार की होती हैं। तटीय प्रवाल भित्ति सीधे तट के निकट स्थित होती है। अवरोधक प्रवाल भित्ति तट से एक गहरे लैगून द्वारा पृथक रहती है। एटॉल अंगूठी के आकार की भित्तियाँ होती हैं जो एक केंद्रीय लैगून को घेरती हैं। पैच रीफ छोटे और बिखरे हुए मूंगा मंच होते हैं जो अक्सर लैगून के भीतर पाए जाते हैं।

44. (2) केवल III
पर्वतों पर वृक्ष रेखा वह सीमा है जिसके पश्चात तापमान की कमी के कारण वृक्ष नहीं उग सकते। हिम रेखा वह ऊंचाई है जहाँ स्थायी बर्फ जमा रहती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये दोनों रेखाएं एक ही ऊंचाई पर होती हैं। वृक्ष रेखा आमतौर पर

Click Here to Buy book on Amazon

हिम रेखा के काफी नीचे स्थित होती है। दोनों के मध्य का संक्रमण क्षेत्र वनस्पतियों हेतु एक महत्वपूर्ण सीमा है।

45. (3) पेलाजिक ज़ोन
बायोम को मुख्य रूप से उनके निवास स्थान के आधार पर स्थलीय और जलीय श्रेणियों में विभाजित किया गया है। टैगा, उष्णकटिबंधीय सवाना और शीतोष्ण घास के मैदान सभी भूमि पर स्थित होने के कारण स्थलीय बायोम के उदाहरण हैं। इसके विपरीत, पेलाजिक क्षेत्र खुले महासागर के जल को संदर्भित करता है। यह एक जलीय पारिस्थितिकी तंत्र है और इसे स्थलीय बायोम की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

46. (4) पेटागोनियन क्षेत्र
उष्णकटिबंधीय वर्षावन मुख्य रूप से भूमध्य रेखा के निकट स्थित क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ भारी वर्षा होती है। कांगो बेसिन, अमेज़न बेसिन और दक्षिण पूर्व एशिया इसके प्रमुख उदाहरण हैं। पेटागोनिया दक्षिण अमेरिका के सुदूर दक्षिण में स्थित एक शुष्क और ठंडा क्षेत्र है, जहाँ मुख्य रूप से मरुस्थल पाए जाते हैं। यहाँ की जलवायु वर्षावनों के विकास हेतु पूर्णतः प्रतिकूल और भिन्न है।

47. (1) I, II और IV
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन भारत, म्यांमार और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया जैसे मानसूनी क्षेत्रों की प्रमुख विशेषता हैं। इन वनों की वृद्धि मौसमी पवनों के परिवर्तन और वर्षा के वितरण पर निर्भर करती है। ये वन वर्षावनों की तुलना में कम घने होते हैं। ये साल और सागौन जैसी मूल्यवान लकड़ियों के प्रमुख स्रोत हैं। शुष्क ऋतु में पत्तियां गिराना इनका सबसे महत्वपूर्ण गुण है जो इन्हें विशिष्ट बनाता है।

48. (2) लंबी शुष्क अवधि, मौसमी आग और बड़े शाकाहारियों का प्रभाव जो पेड़ों के घनत्व को सीमित करते हैं
उष्णकटिबंधीय सवाना में वृक्षों का बिखरा हुआ होना और एक बंद वितान का न बन पाना कई प्राकृतिक कारकों का परिणाम है। लंबी शुष्क अवधि और बार-बार लगने वाली मौसमी अग्नि नए पादपों और वृक्षों की वृद्धि को सीमित करती है। इसके अतिरिक्त, हाथियों जैसे बड़े शाकाहारी जीव वृक्षों को क्षति पहुँचाकर वनों को घास के मैदानों में बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

49. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
विश्व के प्रमुख घास के मैदान विभिन्न महाद्वीपों में स्थित हैं। स्टेपीज मध्य यूरेशिया के विशाल क्षेत्रों में विस्तृत हैं। पंपास दक्षिण अमेरिका, मुख्य रूप से अर्जेंटीना की विशेषता है। दक्षिण अफ्रीका के उच्च क्षेत्रों में पाए जाने वाले मैदानों को वेल्ड कहा जाता है। उत्तरी अमेरिका के मध्य भाग में विस्तृत घास के मैदानों को प्रेयरीज कहा जाता है। ये क्षेत्र अनाज उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण हैं।

50. (1) कोस्टल रेडवुड (सीक्वोया सेम्परविरेन्स)
उत्तरी अमेरिका के प्रशांत तट पर स्थित शीतोष्ण वर्षावन विश्व के कुछ सबसे प्रभावशाली वृक्षों के आवास हैं। कोस्टल रेडवुड अपनी असाधारण ऊंचाई और दीर्घायु हेतु प्रख्यात है। ये वृक्ष यहाँ की कोहरे वाली और आर्द्र जलवायु का लाभ प्राप्त करते हैं। बाओबाब और यूकेलिप्टस अन्य बायोम की प्रजातियाँ हैं। यह रेडवुड वन अपनी अद्वितीय पारिस्थितिकी और विशालकाय वृक्षों हेतु वैश्विक स्तर पर जाना जाता है।

NODIA

51. (2) केवल IV
टैगा वनों के शंकुधारी वृक्षों की सुई जैसी पत्तियां कठोर शीत ऋतु के अनुकूल होती हैं। इनका सूक्ष्म सतह क्षेत्र और मोमी आवरण वाष्पोत्सर्जन तथा ठंड से सुरक्षा प्रदान करता है। इनका गहरा रंग सौर ऊर्जा अवशोषित करने में सहायक है। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वे प्रति शीत ऋतु में गिर जाती हैं; वास्तव में, ये वृक्ष सदाबहार होते हैं ताकि वसंत में तुरंत प्रकाश संश्लेषण प्रारंभ हो सके।

52. (4) आल्पाइन टुंड्रा उच्च ऊंचाई पर होता है, जबकि आर्कटिक टुंड्रा उच्च अक्षांशों पर होता है
आल्पाइन और आर्कटिक टुंड्रा के मध्य मुख्य अंतर उनकी भौगोलिक स्थिति है। आर्कटिक टुंड्रा उच्च उत्तरी अक्षांशों पर ध्रुवीय क्षेत्रों के निकट पाया जाता है जहाँ जलवायु अत्यंत शीतल होती है। इसके विपरीत, आल्पाइन टुंड्रा किसी भी अक्षांश पर ऊंचे पर्वतों की चोटियों पर, वृक्ष रेखा के ऊपर स्थित होता है। यद्यपि दोनों क्षेत्रों में वनस्पतियाँ समान होती हैं, लेकिन आल्पाइन क्षेत्रों में जल निकास बेहतर होता है।

53. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
फ्रेटोफाइट्स मरुस्थलीय पादपों का एक विशिष्ट समूह है जो शुष्कता से बचाव हेतु एक अनूठी रणनीति अपनाते हैं। ये पादप अत्यधिक लंबी मूसला जड़ें विकसित करते हैं जो मृदा की गहराई में जाकर सीधे भूमिगत जल स्तर तक पहुँचती हैं। इस प्रकार, वे सतह पर होने वाली वर्षा पर निर्भर रहने के स्थान पर निरंतर जल आपूर्ति प्राप्त करते हैं। यह अनुकूलन उन्हें शुष्क वातावरण में जीवित रखता है।

54. (3) वे तटीय जल की लवणता बढ़ाते हैं, जिससे यह मीठे जल की मछलियों के लिए उपयुक्त हो जाता है
मैंग्रोव वन तटीय पारिस्थितिकी तंत्र के रक्षक के रूप में कार्य करते हैं। वे सुनामी और चक्रवातों के प्रभाव को न्यूनतम करते हैं और मृदा अपरदन को रोकते हैं। उनकी जड़ें मछलियों के प्रजनन हेतु सुरक्षित स्थान प्रदान करती हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वे जल की लवणता बढ़ाते हैं; वास्तव में, वे खारे जल और मीठे जल के मध्य एक संतुलन स्थापित करते हैं, जिससे विविधता सुरक्षित रहती है।

55. (4) ऑस्ट्रेलिया का उत्तर-पूर्वी तट
ग्रेट बैरियर रीफ विश्व की सबसे विशाल प्रवाल भित्ति प्रणाली है। यह ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्वी तट पर क्वींसलैंड के निकट कोरल सागर में स्थित है। यह विशाल संरचना अंतरिक्ष से भी दृश्यमान है और हजारों विभिन्न समुद्री प्रजातियों का आवास है। यहाँ की उष्ण और स्वच्छ समुद्री परिस्थितियाँ प्रवाल भित्तियों के विकास हेतु आदर्श हैं, जो इसे एक वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट बनाती हैं।

56. (1) शीतोष्ण घास के मैदान : मोटी और गहरी ह्यूमस परत वाली अत्यधिक उपजाऊ मृदा
शीतोष्ण घास के मैदानों की मृदा, जिसे चेरनोज़ेम कहा जाता है, विश्व की सर्वाधिक उपजाऊ मृदा मानी जाती है। इसमें घास की जड़ों के अपघटन से निर्मित ह्यूमस की एक बहुत मोटी और गहरी परत होती है जो पोषक तत्वों से समृद्ध होती है। वर्षावनों की मृदा निक्षालन के कारण अनुपजाऊ होती है। मरुस्थलीय मृदा में कार्बनिक पदार्थों की भारी कमी होती है, जो कृषि हेतु अनुपयुक्त है।

57. (3) बायोम की सीमाएं स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं, जहाँ एक बायोम अचानक समाप्त हो जाता है और दूसरा शुरू होता है
बायोम की सीमाएं कभी भी स्पष्ट या अचानक समाप्त होने वाली रेखाएं नहीं होती हैं। वास्तव में, दो बायोम के मध्य एक व्यापक संक्रमणकालीन क्षेत्र होता है जिसे इकोटोन कहा जाता है। यहाँ दोनों बायोम की विशेषताएँ और प्रजातियाँ आपस में सम्मिश्रित होती हैं, जिससे जैव विविधता का स्तर उच्च होता है। जलवायु में क्रमिक परिवर्तन के कारण वनस्पतियों में बदलाव अत्यंत धीरे-धीरे आता है।

58. (1) मृदा में जड़ें जमाने वाली काष्ठीय लताएँ जो वितान तक पहुँचने के लिए पेड़ों पर चढ़ती हैं
लियाना उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पाई जाने वाली विशेष काष्ठीय लताएँ हैं। ये पादप अपनी जड़ें भूमि की मृदा में जमाते हैं, परंतु सूर्य के प्रकाश हेतु वे अन्य बड़े वृक्षों के तनों का सहारा लेकर वितान की ऊपरी परतों तक पहुँच जाते हैं। ये लताएँ वन की संरचना का एक महत्वपूर्ण भाग हैं और विभिन्न जंतुओं हेतु मार्ग का कार्य करती हैं। ये परजीवी नहीं होती हैं।

59. (4) उथली और पोषक तत्वों की कमी वाली मृदा में संरचनात्मक सहायता प्रदान करना
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के ऊंचे वृक्षों में बट्रेस जड़ें पाई जाती हैं, जो तने के आधार पर बाहर की ओर निकली हुई बड़ी संरचनाएं होती हैं। चूंकि वर्षावनों की मृदा पोषक तत्वों की कमी के कारण उथली होती है, अतः ये जड़ें विशाल वृक्षों को स्थिरता और संरचनात्मक सहायता प्रदान करती हैं ताकि वे सुरक्षित रह सकें। ये जड़ें पोषक तत्वों के अवशोषण क्षेत्र को भी विस्तृत करती हैं।

60. (2) महोगनी
भारतीय उपमहाद्वीप में साल, सागौन और शीशम जैसे वृक्ष उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की पहचान हैं। महोगनी एक विशिष्ट उष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावन प्रजाति है जो अत्यधिक भारी वर्षा और निरंतर आर्द्रता वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। भारत के मानसूनी वनों में, जहाँ एक स्पष्ट शुष्क ऋतु होती है, महोगनी स्वाभाविक रूप से नहीं उगती है। अतः, यह भारतीय पर्णपाती वन बायोम हेतु असंगत प्रजाति है।

61. (3) वेनेजुएला और ब्राजील
दक्षिण अमेरिका में उष्णकटिबंधीय सवाना घास के मैदानों को पृथक क्षेत्रीय नामों से जाना जाता है। वेनेजुएला और कोलंबिया के ओरिनोको नदी बेसिन में स्थित मैदानों को लानोस कहा जाता है। इसके विपरीत, ब्राजील के मध्य उच्च भूमि क्षेत्रों में विस्तृत सवाना को कैंपोस के नाम से जाना जाता है। ये दोनों क्षेत्र अपनी विशिष्ट घास और छिटपुट वृक्षों वाली वनस्पति हेतु विश्व प्रसिद्ध हैं।

62. (4) भूमध्यसागरीय वनस्पति
'स्क्लेरोफिलस' शब्द उन पादपों हेतु प्रयुक्त होता है जिनकी पत्तियां कठोर, मोटी और चमड़े जैसी होती हैं। यह वनस्पति मुख्य रूप से भूमध्यसागरीय बायोम की विशेषता है। ये पत्तियां ग्रीष्म ऋतु की अत्यधिक ऊष्मा और सूखे के दौरान वाष्पोत्सर्जन को रोकने हेतु अनुकूलित होती हैं। कॉर्क ओक और जैतून इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह विशेष संरचना पादपों को शुष्क ग्रीष्म ऋतु में जीवित रखने में सहायता करती है।

63. (1) व्यापक घास जड़ प्रणालियों और धरातलीय जैवभार का वार्षिक क्षय
शीतोष्ण घास के मैदानों में गहरे और काले ह्यूमस के संचय का मुख्य कारण घास की सघन जड़ प्रणालियाँ हैं। प्रत्येक वर्ष, घास का एक बड़ा भाग और उसकी जड़ें मृत होकर मृदा में मिल जाती हैं। चूंकि इन क्षेत्रों में अपघटन की दर मध्यम होती है और वर्षा इतनी अधिक नहीं होती कि पोषक तत्व बह जाएं, अतः मृदा में कार्बनिक पदार्थ जमा होकर उपजाऊ परत बनाते हैं।

64. (2) मृदा : अत्यधिक अम्लीय और स्थायी रूप से जमी हुई (पर्माफ्रॉस्ट)
शीतोष्ण पर्णपाती वन बायोम की मृदा उपजाऊ और भूरे रंग की होती है, जहाँ पत्तियां गिरने से ह्यूमस का निर्माण होता है। पर्माफ्रॉस्ट या स्थायी रूप से जमी हुई मृदा टुंड्रा बायोम की एक विशिष्ट विशेषता है, न कि शीतोष्ण वनों की। शीतोष्ण वनों में चार स्पष्ट ऋतुएँ होती हैं और वृक्ष शीत ऋतु के दौरान जल संरक्षण हेतु अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में पत्तियां चौड़ी होती हैं।

65. (2) शीतोष्ण वर्षावनों में मौसमी परिवर्तन होते हैं; उष्णकटिबंधीय वर्षावन सदैव गर्म रहते हैं
शीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के मध्य सबसे मौलिक अंतर वहां के तापमान और मौसमी परिवर्तनों में निहित है। उष्णकटिबंधीय वर्षावन भूमध्य रेखा के निकट होते हैं और पूरे वर्ष गर्म रहते हैं। इसके विपरीत, शीतोष्ण वर्षावन ठंडे तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ स्पष्ट मौसमी बदलाव होते हैं। शीतोष्ण वर्षावनों में अक्सर विशाल शंकुधारी वृक्षों का प्रभुत्व होता है, जो उन्हें पृथक पहचान प्रदान करते हैं।

66. (1) निम्न पादप प्रजाति विविधता, जिसमें अक्सर शंकुधारी प्रजातियों के व्यापक क्षेत्र शामिल होते हैं
टैगा वन बायोम में पादप प्रजातियों की विविधता काफी कम होती है। इसकी मुख्य विशेषता शंकुधारी वृक्षों जैसे पाइन, स्प्रूस और फर के विशाल और एकसमान स्टैंड हैं। कठोर शीत ऋतु और कम वर्धन काल के कारण केवल कुछ ही प्रजातियाँ यहाँ जीवित रह पाती हैं। यह बायोम जैव विविधता के संदर्भ में उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के विपरीत है, जहाँ प्रजातियों की विविधता अत्यंत न्यून स्तर पर होती है।

NODIA

67. (3) अधिपादप ऑर्किड
टुंड्रा बायोम में केवल वे ही पादप जीवित रह सकते हैं जो अत्यधिक शीत और अल्प प्रकाश के प्रति सहनशील हों। लाइकेन, काई और बौने विलो यहाँ की सामान्य वनस्पतियाँ हैं जो धरातल के निकट उगती हैं। अधिपादप ऑर्किड उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की विशेषता हैं, जिन्हें पनपने हेतु निरंतर उच्च तापमान और आर्द्रता की आवश्यकता होती है। टुंड्रा की परिस्थितियाँ इन नाजुक फूलों हेतु पूर्णतः अनुपयुक्त हैं।

68. (4) दुर्लभ वर्षा की घटनाओं के पश्चात तेजी से अपना जीवन चक्र पूर्ण करके
मरुस्थलीय 'अल्पकालिक' पादप वे होते हैं जो सूखे से बचाव हेतु एक विशेष रणनीति अपनाते हैं। उनके बीज मृदा में वर्षों तक सुप्त अवस्था में पड़े रहते हैं। जैसे ही दुर्लभ वर्षा होती है, ये बीज अत्यंत तीव्रता से अंकुरित होते हैं, पुष्पित होते हैं और नए बीज उत्पन्न करके अपना संपूर्ण जीवन चक्र कुछ ही सप्ताहों में समाप्त कर लेते हैं। यह मरुस्थल में जीवन का अद्भुत ढंग है।

69. (3) सुई जैसी पत्तियां
मैंग्रोव वृक्षों में तटीय वातावरण हेतु प्रॉप जड़ें, श्वसन जड़ें और पितृस्थ अंकुरण जैसे विशेष अनुकूलन होते हैं। सुई जैसी पत्तियां मुख्य रूप से ठंडे टैगा वनों के शंकुधारी वृक्षों की विशेषता हैं, जो हिमपात और अत्यधिक ठंड से बचाव हेतु विकसित होती हैं। मैंग्रोव की पत्तियां आमतौर पर मोटी और मोमी होती हैं ताकि वे लवणता के प्रभाव को सह सकें, लेकिन वे सुई जैसी नहीं होतीं।

70. (2) प्रवाल भित्ति के कैल्शियम कार्बोनेट कंकाल को स्रावित करने के लिए पूरी तरह से जूक्सैन्थेले उत्तरदायी होते हैं
प्रवाल और जूक्सैन्थेले शैवाल के मध्य सहजीवी संबंध अत्यंत गहरा होता है। शैवाल प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से प्रवाल को ऊर्जा प्रदान करते हैं, जबकि प्रवाल उन्हें आश्रय प्रदान करते हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि शैवाल कैल्शियम कार्बोनेट कंकाल का निर्माण करते हैं; वास्तव में, यह कार्य स्वयं प्रवाल पॉलिप्स द्वारा किया जाता है। शैवाल केवल इस प्रक्रिया हेतु आवश्यक ऊर्जा प्रदान करके सहायता करते हैं।

71. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर तापमान में जो गिरावट आती है, वैसी ही गिरावट पर्वत की ऊंचाई बढ़ने पर भी अनुभव की जाती है। इस कारण, एक ऊंचे उष्णकटिबंधीय पर्वत पर चढ़ते समय हमें वर्षावन से लेकर पर्णपाती वन, शंकुधारी वन और अंत में टुंड्रा जैसी वनस्पति देखने को मिलती है। यह पर्यावरणीय परिवर्तन अक्षांश के साथ होने वाले परिवर्तनों की प्रकृति का अनुसरण करता है।

72. (1) एक बायोम एक विशाल क्षेत्र है जिसमें जलवायु द्वारा परिभाषित कई समान पारिस्थितिकी तंत्र होते हैं
बायोम और पारिस्थितिकी तंत्र के मध्य का संबंध भौगोलिक पैमाने पर आधारित है। एक बायोम एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र होता है जिसमें समान जलवायु और वनस्पति प्रकार पाए जाते हैं। इसके भीतर कई पृथक लेकिन संबंधित पारिस्थितिकी तंत्र हो सकते हैं जो समान पर्यावरणीय परिस्थितियों को साझा करते हैं। बायोम एक व्यापक श्रेणी है जबकि पारिस्थितिकी तंत्र एक अधिक विशिष्ट कार्यात्मक इकाई मानी जाती है।

73. (3) भारी वर्षा पोषक तत्वों को बहा ले जाती है (निक्षालन), जिससे केवल एल्युमिनियम और आयरन ऑक्साइड ही शेष बचते हैं
उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की मृदा, जिसे लैटेराइट कहा जाता है, कृषि हेतु अनुपयुक्त मानी जाती है। भारी और निरंतर वर्षा के कारण मृदा के महत्वपूर्ण पोषक तत्व गहराई में बह जाते हैं, जिसे निक्षालन कहते हैं। अवशेष के रूप में केवल आयरन और एल्युमिनियम के ऑक्साइड रह जाते हैं, जिससे मृदा अम्लीय हो जाती है। वनस्पति हटने के पश्चात, यह मृदा सूर्य के ताप में अत्यंत कठोर हो जाती है।

74. (1) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
सागौन और साल भारत के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियाँ हैं। ये वन भारतीय उपमहाद्वीप के विशालतम भाग में विस्तृत हैं और इन्हें मानसूनी वन भी कहा जाता है। इन वृक्षों की लकड़ी अपनी सुदृढ़ता और स्थायित्व के कारण वाणिज्यिक रूप से अत्यधिक मूल्यवान है। शुष्क ऋतु में ये वृक्ष अपनी पत्तियां गिरा देते हैं, जो इन्हें अन्य वनों से पृथक पहचान प्रदान करता है।

75. (4) सवाना की वर्षा वर्षावन बायोम की तुलना में अधिक और अधिक वितरित होती है
उष्णकटिबंधीय सवाना की जलवायु अर्ध-शुष्क और आर्द्र परिस्थितियों के मध्य की होती है। यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि सवाना में वर्षा वर्षावन बायोम से अधिक होती है। वास्तव में, वर्षावन में वर्षा अत्यंत उच्च और वर्ष भर होती है, जबकि सवाना में वर्षा न्यून होती है और केवल मौसमी होती है। सवाना वर्षावन और मरुस्थल के मध्य एक संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है।

76. (2) विटीकल्चर
भूमध्यसागरीय जलवायु अंगूर की कृषि हेतु विश्व में सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है। अंगूर उत्पादन की इस विशिष्ट पद्धति को वैज्ञानिक और वाणिज्यिक रूप से 'द्राक्षाकृषि' (विटीकल्चर) कहा जाता है। इस क्षेत्र की उष्ण, शुष्क ग्रीष्म ऋतु और सौम्य शीत ऋतु अंगूरों में शर्करा की मात्रा बढ़ाने में सहायता करती है, जिससे यह क्षेत्र सुरा उत्पादन का प्रमुख वैश्विक केंद्र बन गया है।

77. (3) पोषक तत्वों से भरपूर मृदा और यंत्रीकृत कृषि के लिए उपयुक्त समतल स्थलाकृति
शीतोष्ण घास के मैदानों को उनके विशाल अनाज उत्पादन के कारण "विश्व का अन्न भंडार" कहा जाता है। इसका प्राथमिक कारण यहाँ की अत्यंत उपजाऊ और गहरी चेरनोज़ेम मृदा है। साथ ही, इन मैदानों की समतल स्थलाकृति बड़े पैमाने पर यंत्रीकृत कृषि के उपयोग को अत्यंत सरल बनाती है। अनुकूल

Downloaded from www.pdf.tube

तापमान और मध्यम वर्षा गेहूं जैसी फसलों के उत्पादन हेतु सर्वोत्तम प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

78. (4) शंकुधारी पेड़ों की सुइयां जो मंद अपघटन के दौरान अम्लीय यौगिक मुक्त करती हैं
टैगा वनों की मृदा अत्यधिक अम्लीय होती है, जिसका मुख्य कारण यहाँ उगने वाले शंकुधारी वृक्षों की सुइयां हैं। जब ये सुइयां धरातल पर गिरती हैं, तो ठंडी जलवायु के कारण इनका अपघटन अत्यंत मंद गति से होता है। इस प्रक्रिया के दौरान वे अम्लीय यौगिकों को मृदा में मुक्त करती हैं। यह अम्लता खनिजों को घोलकर नीचे ले जाती है, जिससे ऊपरी परत राख जैसी धूसर हो जाती है।

79. (1) मोजावे मरुस्थल : उत्तरी अमेरिका
मरुस्थलों का उनके महाद्वीपों के साथ सही मिलान भौगोलिक ज्ञान हेतु आवश्यक है। मोजावे मरुस्थल मुख्य रुप से दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका (उत्तरी अमेरिका) में स्थित है। अटाकामा दक्षिण अमेरिका में, कालाहारी अफ्रीका में, और ग्रेट विक्टोरिया ऑस्ट्रेलिया में स्थित है। मोजावे अपनी विशिष्ट वनस्पतियों जैसे जोशुआ वृक्ष हेतु जाना जाता है और उत्तरी अमेरिका की शुष्क पारिस्थितिकी का महत्वपूर्ण भाग है।

80. (2) जलवायु परिवर्तन, समुद्र का गर्म होना और अम्लीकरण
यद्यपि प्रवाल भित्तियों को स्थानीय प्रदूषण से संकट है, परंतु वर्तमान में सर्वाधिक गंभीर वैश्विक संकट जलवायु परिवर्तन है। समुद्र के बढ़ते तापमान के कारण व्यापक स्तर पर प्रवाल विरंजन हो रहा है। इसके साथ ही, महासागरों द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड के अधिक अवशोषण से होने वाला अम्लीकरण प्रवाल के कैल्शियम कार्बोनेट कंकालों को दुर्बल कर रहा है। ये कारक विश्व भर की भित्तियों हेतु भीषण खतरा हैं।

NODIA

अध्याय 04

विश्व कृषि : प्रकार, कृषि प्रणालियाँ एवं प्रमुख फसलें

1. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प निर्वाह कृषि और वाणिज्यिक कृषि के बीच प्राथमिक अंतर को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(1) निर्वाह कृषि में भारी मशीनरी का गहन उपयोग होता है, जबकि वाणिज्यिक कृषि में शारीरिक श्रम का उपयोग होता है।
(2) परिवार द्वारा उपभोग किए जाने वाले उत्पादन का अनुपात बनाम मुख्य रूप से बिक्री के लिए उत्पादित अनुपात।
(3) विशेष रूप से निर्वाह-आधारित कृषि प्रणालियों के भीतर निर्यात-उन्मुख नकदी फसलों की खेती करना।
(4) निर्वाह कृषि में रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता और वाणिज्यिक कृषि में जैविक खाद का उपयोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सूची I में स्थानांतरी कृषि के स्थानीय नामों को सूची II में उनके संबंधित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्थानीय नाम)
A. मिल्पा
B. लदांग
C. रोका
D. झूम
सूची II: (क्षेत्र)
i. ब्राजील
ii. उत्तर-पूर्वी भारत
iii. मैक्सिको और मध्य अमेरिका
iv. मलेशिया और इंडोनेशिया
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): गहन निर्वाह कृषि की विशेषता प्रति इकाई क्षेत्र में उच्च उपज लेकिन प्रति श्रम निम्न उपज है।
कारण (R): गहन निर्वाह कृषि वाले क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक होता है, जिससे जोत का आकार छोटा हो जाता है और शारीरिक श्रम का व्यापक उपयोग होता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. रोपण कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें बड़े पैमाने पर एक ही नकदी फसल की खेती शामिल है।
II. इसमें भारी पूंजी निवेश और उच्च प्रबंधकीय क्षमता की आवश्यकता होती है।
III. यह मुख्य रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समशीतोष्ण क्षेत्रों में प्रचलित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित में से कौन सी मिश्रित कृषि की एक विशिष्ट विशेषता है?
(1) पशुपालन के बिना एक ही खेत में एक साथ कई फसलों की खेती करना।
(2) विशेष रूप से दुधारू पशुओं को खिलाने के उद्देश्य से कृषि करना।
(3) फसल की खेती और पशुपालन दोनों पर समान जोर दिया जाता है।
(4) किसानों का अपने पशुओं के साथ अलग-अलग ऊंचाइयों पर मौसमी प्रवास।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र वाणिज्यिक दुग्ध कृषि (डेयरी फार्मिंग) से प्रमुखता से जुड़ा नहीं है?
(1) उत्तर-पश्चिमी यूरोप
(2) भूमध्यरेखीय अमेज़न बेसिन
(3) कनाडा
(4) दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

7. भूमध्यसागरीय कृषि अत्यधिक विशिष्ट है। निम्नलिखित में से फसलों का कौन सा समूह इस कृषि प्रणाली का सबसे सटीक प्रतिनिधित्व करता है?
(1) रबर, कोको और ताड़ का तेल (पाम ऑयल)
(2) जूट, कपास और गन्ना
(3) गेहूं, मक्का और चुकंदर
(4) जैतून, अंगूर और खट्टे फल (साइट्रस)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. शुष्क भूमि और सिंचित कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शुष्क भूमि कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेमी से कम होती है।
II. सूखा प्रतिरोधी फसलें जैसे बाजरा और चना शुष्क भूमि कृषि की विशिष्ट फसलें हैं।
III. सिंचित कृषि को अक्सर मृदा के लवणीकरण की पारिस्थितिक समस्या का सामना करना पड़ता है।
IV. सिंचित कृषि पूरी तरह से मृदा की प्रकृति से स्वतंत्र होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. प्रमुख चावल उत्पादक देशों की निम्नलिखित सूची को पढ़िए:
I. भारत
II. चीन
III. इंडोनेशिया
IV. बांग्लादेश
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इन देशों के कुल उत्पादन के अवरोही क्रम (descending order) में सही अनुक्रम को दर्शाता है?
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, III, IV
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. गेहूं की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: वसंतकालीन गेहूं वसंत ऋतु में बोया जाता है और ग्रीष्म ऋतु के अंत या शरद ऋतु की शुरुआत में काटा जाता है।
कथन II: शीतकालीन गेहूं शरद ऋतु में बोया जाता है, सर्दियों के दौरान सुप्त अवस्था में रहता है और ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत में काटा जाता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

11. उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण दोनों क्षेत्रों में मक्का की व्यापक रूप से खेती किए जाने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) इसे अपने पूरे जीवनचक्र में खड़े पानी की निरंतर आपूर्ति की आवश्यकता होती है।
(2) यह समान क्षेत्रों में उगाई जाने वाली अन्य सभी अनाज फसलों की तुलना में काफी अधिक बाजार मूल्य सुनिश्चित करता है।
(3) इसमें एक ऐसी जैविक संरचना है जो स्वाभाविक रूप से सभी ज्ञात कृषि कीटों और रोगों को दूर रखती है।
(4) यह विभिन्न जलवायु के प्रति अनुकूल है और मानव भोजन, पशु चारा और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में उपयोगी है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. कपास की खेती के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) उत्पत्ति - भारत
(2) प्रमुख उत्पादक - यूनाइटेड किंगडम
(3) मृदा संबंध - दक्कन के पठार की काली मिट्टी (रेगुर)
(4) जलवायु आवश्यकता - 210 पाला रहित दिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. गन्ना और चुकंदर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गन्ना एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय फसल है।
II. चुकंदर एक समशीतोष्ण फसल है।
III. ब्राजील गन्ने का एक प्रमुख उत्पादक देश है।
IV. वैश्विक चीनी उत्पादन में चुकंदर की हिस्सेदारी सबसे अधिक है।
V. इष्टतम विकास के लिए दोनों फसलों को अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ मृदा की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल IV
(3) केवल II और V
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I में रोपण फसलों को सूची II में उनकी प्राथमिक विशेषताओं या क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल)
A. कॉफी
B. चाय
C. कोको
D. रबर
सूची II: (विशेषता/क्षेत्र)
i. वर्ष भर समान रूप से वितरित प्रचुर वर्षा की आवश्यकता

होती है और यह अमेज़न बेसिन का मूल निवासी है।

ii. उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पहाड़ी ढलानों पर उगाया जाता है; भारत और चीन प्रमुख उत्पादक हैं।

iii. इथियोपियाई उच्च भूमि का मूल निवासी; ब्राजील सबसे बड़ा उत्पादक है।

iv. मुख्य रूप से पश्चिम अफ्रीका में उगाया जाता है; चॉकलेट उत्पादन में उपयोग किया जाता है।

(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. प्रमुख फसलों के वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा भिन्न (odd one out) है?
(1) गेहूं
(2) जूट
(3) कपास
(4) रबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. वैश्विक कृषि के संदर्भ में, आदिम निर्वाह कृषि को उस प्रणाली के रूप में सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है जहाँ:
(1) फसलें मुख्य रूप से पड़ोसी देशों को निर्यात करने के लिए उगाई जाती हैं।
(2) कृषि मुख्य रूप से पारंपरिक औजारों, पारिवारिक श्रम और मृदा की उर्वरता वापस पाने के लिए खेतों को बदलने पर निर्भर करती है।
(3) किसान उत्पादन बढ़ाने के लिए उच्च उपज वाली किस्मों (HYV) और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं।
(4) बड़े निगम फार्म एक ही नकदी फसल के पूर्ण उत्पादन का प्रबंधन करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित में से कौन सा व्यापक स्तर पर की जाने वाली स्थानांतरी कृषि के एक प्रमुख पर्यावरणीय परिणाम का सही वर्णन करता है?
(1) दीर्घकालिक मृदा कार्बन भंडारण में महत्वपूर्ण वृद्धि।
(2) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई और मृदा की उर्वरता का क्रमिक ह्रास।
(3) निरंतर फसल आवरण के कारण वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैसों में कमी।
(4) खड़ी पहाड़ी ढलानों पर मृदा अपरदन की रोकथाम।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): धान रहित गहन निर्वाह कृषि में चावल के बजाय गेहूं और सोयाबीन उगाए जाते हैं।
कारण (R): उत्तरी चीन और उत्तर-पश्चिमी भारत जैसे क्षेत्रों में उच्चावच, जलवायु और मृदा की स्थितियां जल-गहन चावल की खेती के अनुकूल नहीं हैं।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. रोपण कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसे मुख्य रूप से यूरोपीय लोगों द्वारा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों में शुरू किया गया था।

II. यह स्थानीय आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु बहु-फसली कृषि को बढ़ावा देता है।

III. यह कृषि के वैज्ञानिक तरीकों और सस्ते श्रम पर अत्यधिक निर्भर है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन सी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में मिश्रित कृषि की एक विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(1) मृदा की उर्वरता बनाए रखने में फसल चक्र और अंतःफसली कृषि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(2) कृषि मशीनरी और इमारतों पर भारी पूंजीगत व्यय।
(3) रासायनिक उर्वरकों और हरी खाद का व्यापक उपयोग।
(4) खेत आमतौर पर बहुत छोटे होते हैं, जिनका औसत एक हेक्टेयर से कम होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. वाणिज्यिक डेयरी फार्मों के स्थान निर्धारण में कौन सा भौगोलिक कारक सबसे महत्वपूर्ण है?
(1) चराई के उद्देश्य से बंजर भूमि के बड़े क्षेत्रों की उपलब्धता।
(2) विशिष्ट श्रम आपूर्ति के लिए औद्योगिक विनिर्माण क्षेत्रों से निकटता।
(3) ताजे दूध के लिए तैयार बाजार उपलब्ध कराने वाले शहरी केंद्रों से निकटता।
(4) वर्ष भर उच्च तापमान सुनिश्चित करने के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु में अवस्थिति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची I में दिए गए क्षेत्रों को सूची II में उनकी प्रमुख कृषि प्रणाली के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (क्षेत्र)

A. उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी

Downloaded from www.pdf.tube

B. यूरोप का भूमध्यसागरीय तट
C. अमेज़न बेसिन
D. मानसूनी एशिया
सूची II: (प्रणाली)
i. आदिम निर्वाह (स्थानांतरी)
ii. गहन निर्वाह
iii. वाणिज्यिक अनाज कृषि
iv. विटीकल्चर और उद्यान कृषि
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. शुष्क भूमि कृषि पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें गहरी जुताई और नमी संरक्षण तकनीकें शामिल हैं।
II. यह पूरी तरह से ट्यूबवेल के माध्यम से भूजल निष्कर्षण पर निर्भर करता है।
III. यह उन फसलों की खेती को प्रतिबंधित करता है जिन्हें अधिक जल की आवश्यकता होती है।
IV. यह आमतौर पर राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में प्रचलित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सी फसल जल-गहन मानी जाती है जो मुख्य रूप से भारत में खरीफ ऋतु में उगाई जाती है?
(1) चावल
(2) गेहूं
(3) चना
(4) सरसों
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख गेहूं उत्पादक देशों के उनके कुल उत्पादन मात्रा के अवरोही क्रम को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) चीन, भारत, रूस, यूएसए
(2) भारत, चीन, यूएसए, रूस
(3) यूएसए, चीन, भारत, रूस
(4) रूस, यूएसए, चीन, भारत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. मक्का के उपयोग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) जैव ईंधन उत्पादन - मक्का से प्राप्त इथेनॉल
(2) चारा - विशेष रूप से रेशम निकालने के लिए खेती
(3) मुख्य भोजन - विशेष रूप से स्कैंडिनेवियाई देशों में खाया जाता है
(4) औद्योगिक उपयोग - कृत्रिम रबर का निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. कपास की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके लिए उच्च तापमान और हल्की वर्षा या सिंचाई की आवश्यकता होती है।
II. इसकी वृद्धि के लिए 210 पाला रहित दिन और तेज धूप की आवश्यकता होती है।
III. यह भारत में एक खरीफ फसल है।
IV. इसकी खेती टैगा क्षेत्र की पॉडज़ोल मृदा में बड़े पैमाने पर की जाती है।
V. चीन और भारत विश्व स्तर पर शीर्ष उत्पादकों में से हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल I और III
(3) केवल II और V
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. चुकंदर के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: चुकंदर को इष्टतम सुक्रोज संचय के लिए मध्यम वर्षा और ठंडे तापमान वाली समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है।
कथन II: चुकंदर की खेती केवल भूमध्यरेखीय क्षेत्र की जलभराव वाली मृदा में की जा सकती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. कॉफी के बागानों में अक्सर कॉफी के पौधों के साथ ऊंचे छायादार पेड़ लगाने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) वृक्षारोपण क्षेत्र के कुल लकड़ी उत्पादन को बढ़ाना।
(2) संवेदनशील कॉफी के पौधों के बीच जड़ रोगों के प्रसार को रोकना।
(3) कॉफी के पौधों को सीधी धूप और अत्यधिक तापमान के उतार-चढ़ाव से बचाना।
(4) व्यस्त ऋतु के दौरान भारी कटाई मशीनरी के उपयोग को सुगम बनाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. सूची I में औद्योगिक फसलों को सूची II में उनकी सबसे उपयुक्त जलवायु आवश्यकताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल)
A. प्राकृतिक रबर
B. जूट

NODIA

C. कपास
D. गन्ना
सूची II: (आवश्यकता)
i. अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ मृदा के साथ उष्णकटिबंधीय जलवायु; लंबा वर्धन काल।
ii. उच्च तापमान, भारी वर्षा और आर्द्र जलवायु; बाढ़ के मैदानों पर सबसे अच्छा उत्पादन।
iii. पूरे वर्ष 200 सेमी से ऊपर भारी वर्षा वाली भूमध्यरेखीय जलवायु।
iv. उच्च तापमान, हल्की वर्षा, 210 पाला रहित दिन।
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रचलित 'लदांग' कृषि प्रणाली के मुख्य उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) यह अल्पकालिक कृषि उपयोग के लिए वनों के टुकड़ों को साफ करने पर आधारित एक स्थानांतरी कृषि प्रणाली है।
(2) यह एक वाणिज्यिक कृषि प्रणाली है जिसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों में चावल निर्यात करना है।
(3) यह प्रमुख आधुनिक शहरी केंद्रों में उपयोग की जाने वाली एक विशिष्ट उच्च तकनीक वाली हाइड्रोपोनिक कृषि प्रणाली है।
(4) यह क्षेत्रीय आबादी को ताजा दूध प्रदान करने वाली राज्य प्रायोजित सहकारी डेयरी फार्मिंग प्रणाली है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित सभी गहन निर्वाह कृषि के उदाहरण हैं सिवाय:
(1) दक्षिण-पूर्व एशिया की नदी घाटियों में आर्द्र धान की खेती।
(2) कनाडाई प्रेयरी में गेहूं की बड़े पैमाने पर मशीनीकृत कृषि।
(3) भारत-गंगा के मैदानों के शुष्क हिस्सों में गेहूं और बाजरे की खेती।
(4) घनी आबादी वाले एशियाई शहरी केंद्रों के पास सब्जियों की गहन खेती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): गहन निर्वाह कृषि में प्रति एकड़ उपज अपेक्षाकृत अधिक होती है।
कारण (R): किसान उपलब्ध भूमि के हर टुकड़े का उपयोग करते हैं और उच्च जनसंख्या दबाव के कारण अक्सर बहु-फसली कृषि करते हैं।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. मिश्रित कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आमतौर पर विश्व के विकसित हिस्सों जैसे उत्तर-पश्चिमी यूरोप और पूर्वी उत्तरी अमेरिका में पाई जाती है।
II. अल्फाल्फा और क्लोवर जैसी चारा फसलें इस प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक हैं।
III. इसमें मवेशी, भेड़ और सूअर जैसे जानवरों का पालन नहीं किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I में कृषि पद्धतियों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद्धति)
A. डेयरी फार्मिंग
B. भूमध्यसागरीय कृषि
C. स्थानांतरी कृषि
D. वाणिज्यिक अनाज कृषि
सूची II: (विशेषता)
i. अत्यधिक मशीनीकृत, बड़े खेत, प्रति एकड़ कम उपज लेकिन प्रति व्यक्ति उच्च उपज।
ii. पूंजी प्रधान, दुधारू पशुओं पर केंद्रित, पूरे वर्ष श्रम प्रधान।
iii. काटो और जलाओ (slah-and-burn) तकनीक, कम तकनीकी निवेश।
iv. उद्यान कृषि, विटीकल्चर में विशिष्ट, गर्मियों के सूखे के प्रति सहनशील।
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. डेयरी फार्मिंग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पशु शेड, भंडारण सुविधाओं और दूध दुहने वाली मशीनों की आवश्यकता के कारण यह अत्यधिक पूंजी प्रधान है।
II. इसमें पशुओं को खिलाने और दूध दुहने के लिए गहन श्रम की आवश्यकता होती है, जिसमें वर्ष भर कोई ऑफ-

Click Here to Buy book on Amazon

सीजन नहीं होता।
III. परिवहन और प्रशीतन के विकास ने इसकी बाजार पहुंच का विस्तार किया है।
IV. यह मध्य पूर्व के शुष्क रेगिस्तानों में कृषि का प्रमुख रुप है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) केवल II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा भूमध्यसागरीय कृषि का सबसे उपयुक्त विवरण है?
(1) यह एक निर्वाह कृषि प्रणाली है जो मुख्य रुप से महाद्वीपों के आंतरिक भागों में पाई जाती है।
(2) यह पूरी तरह से स्थानांतरी कृषि और रेंडियर के पालन पर निर्भर है।
(3) यह एक विशिष्ट वाणिज्यिक प्रणाली है जो खट्टे फलों, अंगूर और जैतून पर केंद्रित है।
(4) इसकी विशेषता वैश्विक व्यापार के लिए रबर और चाय के विशाल एकल-फसल बागान हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. नमी की उपलब्धता के आधार पर कृषि प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शुष्क भूमि कृषि मृदा की नमी के संरक्षण की तकनीकों जैसे मल्चिंग पर जोर देती है।
II. सिंचित कृषि उन क्षेत्रों में बहु-फसली खेती सुनिश्चित करती है जो अन्यथा वर्षा की कमी के कारण बंजर रह जाते।
III. शुष्क भूमि कृषि मुख्य रुप से गन्ने जैसी जल-गहन फसलों की खेती करती है।
IV. इंदिरा गांधी नहर ने उत्तर-पश्चिमी राजस्थान में सिंचित कृषि की सुविधा प्रदान की है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I और III
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. आर्द्र धान (wet paddy) की सफल खेती के लिए निम्नलिखित में से कौन सी भौतिक आवश्यकता अनिवार्य है?
(1) अच्छी जल निकासी वाली रेतीली मृदा जो लंबे समय तक नमी नहीं रखती है।
(2) ठंडी गर्मियां जहाँ तापमान 15°C से नीचे बना रहे।
(3) ठीक 100 दिनों की पाला रहित अवधि जिसमें खड़े पानी की कोई आवश्यकता न हो।
(4) 25°C से ऊपर उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. गेहूं के भौगोलिक वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गेहूं मुख्य रुप से मध्य-अक्षांश घास के मैदानों की फसल है।
II. यूरेशिया के स्टेपीज़ और उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी प्रमुख गेहूं बेल्ट हैं।
III. गेहूं की खेती के लिए सालाना 200 सेमी से अधिक भारी वर्षा की आवश्यकता होती है।
IV. पंजाब और हरियाणा भारत के प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्य हैं।
V. यह अच्छी जल निकासी वाली दोमट और चिकनी मृदा में सबसे अच्छा फलता-फूलता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. संयुक्त राज्य अमेरिका में, मक्का का मुख्य रुप से निम्नलिखित में से किस उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है?
(1) पूर्णतः एशिया को नकदी फसल के रुप में निर्यात किया जाता है।
(2) लगभग विशेष रुप से मुख्य भोजन के रुप में प्रत्यक्ष मानव उपभोग के लिए उपयोग किया जाता है।
(3) मांस और डेयरी उद्योगों को समर्थन देने के लिए पशुधन चारे के रुप में उपयोग किया जाता है।
(4) हरी खाद के रुप में वापस मिट्टी में जोत दिया जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. कपास उत्पादन और प्रसंस्करण के निम्नलिखित चरणों को पढ़िए:
I. सूत की कताई
II. कपास के डोडों (bolls) की कटाई
III. ओटाई (गिनिंग)
IV. कपड़े की बुनाई
निम्नलिखित में से कौन सा इन चरणों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(1) II, III, I, IV
(2) III, II, IV, I
(3) II, I, III, IV
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सूची I में फसलों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल)
A. गन्ना
B. चाय

Downloaded from www.pdf.tube

C. जूट
D. मक्का

सूची II: (विशेषता)

i. 'सुनहरा रेशा' (Golden Fibre) के रूप में प्रसिद्ध; बाढ़ के मैदानों में उपजाऊ मृदा की आवश्यकता।
ii. प्रायः भोजन और चारे दोनों के रूप में उपयोग; अमेरिका मूल की फसल।
iii. एक उष्णकटिबंधीय घास जिसे परिपक्व होने में लगभग एक वर्ष लगता है और यह मृदा की उर्वरता को तेजी से समाप्त करती है।
iv. वर्ष भर गर्म और नम पाला रहित जलवायु की आवश्यकता; बार-बार पड़ने वाली बौछारें पत्तियों की वृद्धि में सहायक।

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. फसलों की भौतिक आवश्यकताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) गेहूं - पकने के समय ठंडी जलवायु और तेज धूप।
(2) कपास - 250 सेमी की भारी वर्षा और निरंतर बादलों वाले दिन।
(3) चावल - वर्धन काल के दौरान उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता।
(4) जूट - वृद्धि के दौरान उच्च तापमान और भारी वर्षा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. जूट के उत्पादन में अपगलन या रेटिंग (retting) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) जूट के बीजों के पोषण मूल्य को बढ़ाना।
(2) जूट के कपड़े को विरंजित (bleach) करना।
(3) बंडलों को जल में भिगोकर तने से रेशों को अलग करना।
(4) जूट के पौधे को क्षेत्रीय कीटों के प्रकोप से बचाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. सूची I में कृषि प्रणालियों को सूची II में उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (कृषि प्रणाली)

A. वाणिज्यिक अनाज कृषि
B. रोपण कृषि
C. गहन निर्वाह (चावल आधारित)
D. मिश्रित कृषि

सूची II: (विशेषता)

i. उच्च जनसंख्या घनत्व, खेत का बहुत छोटा आकार, शारीरिक श्रम की प्रधानता।
ii. विशाल जोत, अत्यधिक मशीनीकृत, प्रति एकड़ कम उपज।
iii. फसल की खेती और पशुपालन का एकीकरण।
iv. बड़ी रियासतें (estates), एकल नकदी फसल, निर्यात बाजारों पर निर्भरता।

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. स्थानांतरी कृषि के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: आधुनिक युग में स्थानांतरी कृषि अत्यधिक टिकाऊ है क्योंकि इसमें कृत्रिम रसायनों का न्यूनतम उपयोग होता है।
कथन II: जब जनसंख्या दबाव के कारण परती अवधि (fallow periods) को कम कर दिया जाता है, तो स्थानांतरी कृषि वनों की कटाई और मृदा अपरदन का कारण बनती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): एकल-कृषि प्रणालियों की तुलना में मिश्रित कृषि प्रणालियां बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक लचीली होती हैं।
कारण (R): मिश्रित कृषि में, यदि कोई फसल विफल हो जाती है, तो किसान पशुधन और पशु उत्पादों से आय प्राप्त कर सकता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

49. वैश्विक कृषि क्षेत्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. न्यूज़ीलैंड में डेयरी फार्मिंग प्रमुख है।
II. अर्जेंटीना के पम्पास वाणिज्यिक अनाज की खेती और व्यापक पशुपालन के लिए प्रसिद्ध हैं।
III. भूमध्यसागरीय क्षेत्र खट्टे फलों और वाइन का एक प्रमुख वैश्विक आपूर्तिकर्ता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित में से कौन सी गहन निर्वाह कृषि की विशेषता नहीं है?
(1) भारी मशीनरी का उपयोग करके विशाल जोतों की खेती करना।
(2) मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए गोबर की खाद का उच्च उपयोग।
(3) प्रति हेक्टेयर भूमि पर उच्च उत्पादन।
(4) उपलब्ध भूमि का अधिकतम उपयोग ताकि कोई क्षेत्र बिना खेती के न रहे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. रोपण फसलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चाय के बागानों को जड़ों के पास जलभराव रोकने के लिए अच्छी जल निकासी वाली मृदा की आवश्यकता होती है।
II. रबर मुख्य रूप से भूमध्यरेखीय जलवायु में उगाए जाने वाले पेड़ों के लेटेक्स से प्राप्त किया जाता है।
III. कोटे डी आइवर और घाना जैसे पश्चिम अफ्रीकी देशों में कोको एक प्रमुख रोपण फसल है।
IV. गन्ने के बागान मुख्य रूप से जमा देने वाली सर्दियों वाले समशीतोष्ण क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल I और II
(3) केवल III और IV
(4) केवल II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भूमध्यसागरीय क्षेत्र का जलवायु पैटर्न विशेष रूप से अंगूर और जैतून की खेती को कैसे लाभ पहुँचाता है?
(1) ग्रीष्म ऋतु की निरंतर भारी वर्षा लताओं के विकास को बढ़ावा देती है।
(2) जमा देने वाला सर्दियों का तापमान प्राकृतिक कीट नियंत्रण का कार्य करता है।
(3) वर्ष भर उच्च आर्द्रता फलों को फटने से रोकती है।
(4) शुष्क गर्मियां और हल्की, वर्षा वाली सर्दियां सूखा-सहिष्णु फसलों को परिपक्व होने देती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. सिंचित कृषि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता में काफी वृद्धि की है।
II. उचित जल निकासी के बिना अत्यधिक सिंचाई से जलभराव (waterlogging) की समस्या उत्पन्न होती है।
III. नहर सिंचाई के कारण केशिकत्व (capillary action) के माध्यम से मृदा की लवणता बढ़ सकती है।
IV. सिंचित कृषि केवल नकदी फसलों की खेती तक ही सीमित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. चावल की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'औस', 'अमन' और 'बोरो' पश्चिम बंगाल और असम में एक ही वर्ष में उगाई जाने वाली चावल की तीन फसलें हैं।
II. एशियाई गहन निर्वाह प्रणालियों में प्रत्यारोपण (Transplantation) चावल की खेती की सबसे आम विधि है।
III. ऊंचे इलाकों वाले चावल (Upland rice) को अपने पूरे जीवन चक्र में खड़े पानी की आवश्यकता होती है।
IV. चीन विश्व में चावल का अग्रणी उत्पादक है।
V. चावल की खेती वायुमंडलीय मीथेन का एक प्रमुख मानवीय स्रोत है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I में गेहूं के प्रकार को सूची II में उसकी प्राथमिक विशेषता या क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (गेहूं का प्रकार)
A. वसंतकालीन गेहूं (Spring Wheat)
B. शीतकालीन गेहूं (Winter Wheat)
C. मैकरोनी (ड्यूरम) गेहूं
D. नरम गेहूं (Soft Wheat)
सूची II: (विशेषता/क्षेत्र)
i. शरद ऋतु में बोया जाता है, बर्फ की चादर के नीचे सुरक्षित रहता है, हल्के समशीतोष्ण क्षेत्रों में आम है।
ii. उच्च प्रोटीन युक्त कठोर गेहूं, मुख्य रूप से पास्ता बनाने के लिए उपयोग।
iii. कड़ाके की ठंड वाले क्षेत्रों (जैसे कनाडाई प्रेयरी) में वसंत ऋतु में बोया जाता है।
iv. कम प्रोटीन सामग्री, केक और पेस्ट्री बनाने के लिए आदर्श।
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित में से कौन सा अनुक्रम गेहूं के अंकुरण से परिपक्वता तक की जलवायु आवश्यकताओं की सही प्रगति को दर्शाता है?
(1) उच्च तापमान और भारी वर्षा → ठंडा और नम → गर्म

Click Here to Buy book on Amazon

और शुष्क
(2) ठंडा और नम → मध्यम तापमान और हल्की वर्षा → गर्म और धूप वाला
(3) गर्म और शुष्क → भारी वर्षा → जमा देने वाला तापमान
(4) गर्म और धूप वाला → ठंडा और नम → निरंतर भारी वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में दक्कन के पठार के उत्तर-पश्चिमी भागों में कपास की बड़े पैमाने पर खेती का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) इस क्षेत्र में सालाना 300 सेमी से अधिक भारी मानसूनी वर्षा होती है।
(2) यह क्षेत्र बोलवर्म जैसे कीटों से पूरी तरह मुक्त है।
(3) काली मृदा (रेगुर) नमी धारण करने की क्षमता रखती है, जो शुष्क परिस्थितियों में आदर्श है।
(4) कपास की खेती केवल 2000 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर की जा सकती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. चीनी के निष्कर्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सुक्रोज की मात्रा में गिरावट रोकने के लिए गन्ने की कटाई के तुरंत बाद उसकी पेराई की जानी चाहिए।
II. चुकंदर को गन्ने की तुलना में अधिक समय तक संग्रहीत किया जा सकता है।
III. क्यूबा को ऐतिहासिक रूप से इसके गन्ना उद्योग के कारण 'विश्व का चीनी का कटोरा' कहा जाता है।
IV. गन्ने के रस का निष्कर्षण विश्व भर में पूर्णतः स्वचालित है और इसमें शारीरिक श्रम शामिल नहीं है।
V. खोई (Bagasse) पेराई का एक उपोत्पाद है जिसका उपयोग ईंधन या कागज निर्माण के लिए किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल II और III
(3) केवल I और V
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अरेबिका कॉफी और रोबस्टा कॉफी के बीच सही अंतर स्पष्ट करता है?
(1) रोबस्टा मुख्य रूप से अरेबिका किस्म की तुलना में बहुत अधिक ऊंचाई पर उगाई जाती है।
(2) अरेबिका में रोबस्टा की तुलना में काफी अधिक कैफीन होता है।
(3) रोबस्टा केवल समशीतोष्ण जलवायु में उगाई जाती है जबकि अरेबिका भूमध्यरेखीय है।
(4) अरेबिका को बेहतर स्वाद और उच्च बाजार मूल्य वाला माना जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से कौन सा कृत्रिम रबर के आविष्कार और व्यापक उपयोग का परिणाम नहीं है?
(1) औद्योगिक विनिर्माण में प्राकृतिक रबर के पूर्ण एकाधिकार में गिरावट।
(2) दक्षिण-पूर्व एशिया में सभी प्राकृतिक रबर के बागानों का पूर्ण विनाश और परित्याग।
(3) थाईलैंड, इंडोनेशिया और मलेशिया जैसे प्राकृतिक रबर उत्पादकों के लिए प्रतिस्पर्धा में वृद्धि।
(4) प्राकृतिक रबर की आपूर्ति की कमी के समय वैश्विक रबर की कीमतों का स्थिरीकरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

61. वाणिज्यिक कृषि के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह मुख्य रूप से लाभ के लिए बड़े पैमाने पर संचालित होती है।
(2) यह आमतौर पर आधुनिक वैज्ञानिक विधियों और उन्नत तकनीक का उपयोग करती है।
(3) यह लगभग पूरी तरह से पारंपरिक कृषि ज्ञान और स्थानीय बीजों पर निर्भर करती है।
(4) इसमें वाणिज्यिक अनाज कृषि और रोपण कृषि जैसी पद्धतियां शामिल हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. स्थानांतरी कृषि को विश्व स्तर पर विभिन्न नामों से जाना जाता है। निम्नलिखित में से किस देश में इसे 'रोका' (Roca) के रूप में जाना जाता है?
(1) इंडोनेशिया
(2) वियतनाम
(3) मैक्सिको
(4) ब्राजील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. दक्षिण एशिया के एक सघन आबादी वाले क्षेत्र का एक किसान मानसून में चावल उगाता है और शुष्क मौसम में छोटे खेत पर सब्जियों की खेती करता है, जिसमें पारिवारिक श्रम का उपयोग होता है। यह किस कृषि प्रणाली का उदाहरण है?
(1) गहन निर्वाह कृषि
(2) विस्तृत वाणिज्यिक अनाज कृषि
(3) चलवासी पशुचारण (Nomadic herding)
(4) भूमध्यसागरीय कृषि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. रोपण फसलों और उनके प्रमुख उत्पादक देशों का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) प्राकृतिक रबर - कनाडा
(2) कोको - घाना
(3) चाय - ब्राजील
(4) कॉफी - यूनाइटेड किंगडम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. मिश्रित कृषि के संदर्भ में, अनाज के साथ शलजम और आलू जैसी जड़ वाली फसलों की खेती का क्या महत्व है?

(1) वे मिश्रित कृषि में प्राथमिक खाद्य स्रोत के रूप में अनाज को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर देते हैं।
(2) वे पशुधन के लिए चारे के रूप में कार्य करते हैं और मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र में सहायक होते हैं।
(3) वे एकमात्र ऐसी फसलें हैं जो रासायनिक उर्वरकों के भारी उपयोग को सहन कर सकती हैं।
(4) वे कृषि श्रम की आवश्यकता को समाप्त कर देते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. वाणिज्यिक डेयरी फार्मिंग के लिए उपयुक्तता के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में से विषम (odd one out) की पहचान करें:
(1) सहारा रेगिस्तान
(2) उत्तर-पश्चिमी यूरोप
(3) दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया
(4) न्यूज़ीलैंड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भूमध्यसागरीय कृषि क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: व्यापक फलों की खेती के कारण इसे 'विश्व का उद्यान क्षेत्र' के रूप में जाना जाता है।
कथन II: विटीकल्चर (अंगूर की खेती) इस क्षेत्र की एक विशिष्ट विशेषता है, जो उच्च गुणवत्ता वाली वाइन का उत्पादन करती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित में से कौन सा शुष्क भूमि कृषि की सामान्य विशेषताओं का अपवाद है?
(1) सूखा प्रतिरोधी बीज किस्मों का उपयोग।
(2) नमी बनाए रखने के लिए भूमि को परती छोड़ने की प्रथा।
(3) वाष्पीकरण कम करने के लिए मिट्टी की सतह पर मल्चिंग का अभ्यास।
(4) जूट और आर्द्र धान जैसी जल-गहन फसलों की खेती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. 'औस', 'अमन' और 'बोरो' शब्द निम्नलिखित में से किस प्रमुख फसल की खेती से संबंधित हैं?
(1) गेहूं
(2) मक्का
(3) चावल
(4) गन्ना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. कनाडाई प्रेयरी और अर्जेंटीना के पम्पास जैसे क्षेत्रों में गेहूं की मशीनीकृत कृषि का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) उच्च जनसंख्या घनत्व जो खेती के लिए सस्ता श्रम प्रदान करता है।
(2) विशाल, सपाट घास के मैदान और कम जनसंख्या घनत्व मशीनरी के उपयोग की अनुमति देते हैं।
(3) मृदा संरचना किसी अन्य प्रकार की कृषि गतिविधि के लिए अनुपयुक्त होना।
(4) भूमध्यरेखीय जलवायु जो पूरे वर्ष निरंतर बुवाई और कटाई की अनुमति देती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मक्का की भौगोलिक उत्पत्ति की सही पहचान करता है?
(1) यह भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की स्वदेशी फसल है।
(2) यह पहली बार यूरेशियाई आंतरिक भाग के समशीतोष्ण घास के मैदानों में उत्पन्न हुई।
(3) इसे नील नदी घाटी की प्रारंभिक सभ्यताओं द्वारा पालतू बनाया गया था।
(4) यह अमेरिका की मूल फसल है और बाद में यूरोपीय खोजकर्ताओं द्वारा वैश्विक स्तर पर पेश की गई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. यदि कोई किसान सफलतापूर्वक कपास की खेती करना चाहता है, तो उसे किन पर्यावरणीय परिस्थितियों की आवश्यकता होगी?
(1) अच्छी जल निकासी वाली काली मृदा, पर्याप्त धूप और लंबी पाला रहित अवधि।
(2) पीट मृदा, निरंतर वर्षा और जमा देने वाला तापमान।
(3) रेतीली रेगिस्तानी मृदा, खारा पानी और पूर्ण छाया।
(4) लेटेराइट मृदा, ढलानी इलाका और प्रतिदिन वर्षा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. चीनी उत्पादक फसलों और उनकी जलवायु पसंद का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) गन्ना - उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु
(2) चुकंदर - ठंडी समशीतोष्ण जलवायु
(3) गन्ना - पाला-संभावित महाद्वीपीय जलवायु
(4) चुकंदर - कटाई के समय मध्यम वर्षा और ठंडी शरद ऋतु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. चाय की खेती के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: चाय की झाड़ियों को अम्लीय, अच्छी जल निकासी वाली मृदा और वर्ष भर समान रूप से वितरित उच्च वर्षा की आवश्यकता होती है।
कथन II: चाय के पौधे की जड़ों के पास रुका हुआ पानी पत्तियों की वृद्धि के लिए अत्यंत लाभदायक होता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. जूट के वितरण और उत्पादन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) जूट बाढ़ के मैदानों की उपजाऊ जलोढ़ मृदा में फलता-फूलता है जहाँ मिट्टी का हर साल नवीनीकरण होता है।
(2) भारत और बांग्लादेश में गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा विश्व का अग्रणी जूट उत्पादक क्षेत्र है।
(3) यह एक श्रम-प्रधान फसल है, जिसकी कटाई और अपगलन के लिए महत्वपूर्ण जनशक्ति की आवश्यकता होती है।
(4) जूट को अपने प्राथमिक वर्धन काल के दौरान ठंडी और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. रासायनिक उर्वरकों और मशीनीकरण पर निर्भरता के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सी कृषि प्रणाली विषम (odd one out) है?
(1) प्रेयरी में वाणिज्यिक अनाज कृषि
(2) आदिम निर्वाह (स्थानांतरी कृषि)
(3) न्यूज़ीलैंड में विस्तृत वाणिज्यिक डेयरी फार्मिंग
(4) पश्चिमी यूरोप में बड़े पैमाने पर मिश्रित कृषि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. रोपण कृषि के संबंध में निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर रोपण फसल नहीं माना जाता है?
(1) रबर
(2) कॉफी
(3) गेहूं
(4) गन्ना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र के भारी सिंचित हिस्सों में अपर्याप्त जल निकासी का मुख्य प्रभाव क्या है?
(1) मृदा की उर्वरता और जैविक कार्बन में तीव्र वृद्धि।
(2) सभी कृषि कीटों का पूर्ण उन्मूलन।
(3) क्षेत्रीय जल स्तर में भारी गिरावट।
(4) मृदा का जलभराव और द्वितीयक लवणीकरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. कुल भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर विश्व में कौन सी अनाज फसल पहले स्थान पर है और विशेष रुप से समशीतोष्ण क्षेत्रों में मुख्य भोजन के रूप में कार्य करती है?
(1) गेहूं
(2) चावल
(3) जौ
(4) जई (Oats)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. मिश्रित कृषि प्रणालियों में मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी पद्धति सबसे उपयुक्त और टिकाऊ है?
(1) उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों की निरंतर एकल-कृषि।
(2) क्लोवर या अल्फाल्फा जैसी फलीदार चारा फसलों को शामिल करते हुए फसल चक्र।
(3) कृत्रिम नाइट्रोजन उर्वरकों पर पूर्ण निर्भरता।
(4) हर तीन साल में काटो और जलाओ (slah-and-burn) पद्धति का अभ्यास।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) परिवार द्वारा उपभोग किए जाने वाले उत्पादन का अनुपात बनाम मुख्य रूप से बिक्री के लिए उत्पादित अनुपात।
निर्वाह कृषि का प्राथमिक उद्देश्य परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, जबकि वाणिज्यिक कृषि मुख्य रूप से लाभ अर्जन हेतु की जाती है। निर्वाह कृषि में उत्पादन का अधिकांश भाग स्वयं के उपभोग के लिए रखा जाता है। इसके विपरीत, वाणिज्यिक कृषि में आधुनिक निवेशों और उर्वरकों के प्रयोग से बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है, ताकि उसे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बेचा जा सके।

2. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरी कृषि को भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। मैक्सिको और मध्य अमेरिका में इसे मिल्पा के नाम से पुकारा जाता है। इसी प्रकार, ब्राजील में इसे रोका और मलेशिया तथा इंडोनेशिया के क्षेत्रों में लदांग कहा जाता है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में इस पारंपरिक कृषि पद्धति को झूम खेती के रूप में जाना जाता है, जहाँ वनों को साफ कर फसलें उगाई जाती हैं।

3. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सघन जनसंख्या वाले मानसूनी एशिया के क्षेत्रों में गहन निर्वाह कृषि प्रमुखता से की जाती है। यहाँ भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव होता है, जिससे खेतों का आकार छोटा हो जाता है। किसान अपनी छोटी जोत से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने हेतु गहन श्रम और खाद का उपयोग करते हैं। इसके परिणामस्वरूप प्रति इकाई क्षेत्र में उपज अधिक होती है, किंतु व्यक्तिगत श्रमिक उत्पादकता तुलनात्मक रूप से कम रहती है।

4. (1) केवल I और II
रोपण कृषि एक विशिष्ट वाणिज्यिक प्रणाली है जिसे यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विकसित किया था। इसमें चाय, कॉफी, कोको और रबर जैसी एकल नकदी फसल उगाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस पद्धति में विशाल बागानों के प्रबंधन हेतु भारी पूंजी निवेश, वैज्ञानिक विधियों और कुशल प्रबंधकीय क्षमता की आवश्यकता होती है। यह प्रणाली मुख्य रूप से निर्यात बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु निर्मित है।

5. (3) फसल की खेती और पशुपालन दोनों पर समान जोर दिया जाता है।
मिश्रित कृषि में फसल उत्पादन और पशुपालन दोनों गतिविधियों को समान महत्व दिया जाता है। इस प्रणाली में किसान खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ चारे की फसलें भी उगाते हैं और मवेशी, भेड़ तथा सूअर जैसे पशुओं का पालन करते हैं। यह एक संतुलित कृषि पद्धति है जो किसान को आर्थिक स्थिरता प्रदान करती है। इसमें फसल चक्र के माध्यम से मृदा की उर्वरता को दीर्घकाल तक बनाए रखा जाता है।

6. (2) भूमध्यरेखीय अमेज़न बेसिन
वाणिज्यिक दुग्ध कृषि मुख्य रूप से विकसित और नगरीकृत क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ ताजे दूध और दुग्ध उत्पादों की मांग अधिक होती है। इसके तीन प्रमुख क्षेत्र उत्तर-पश्चिमी यूरोप, कनाडा और दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया हैं। भूमध्यरेखीय अमेज़न बेसिन अपनी अत्यधिक ऊष्मा और आर्द्रता के कारण दुग्ध कृषि हेतु भौगोलिक रूप से अनुपयुक्त है। इन क्षेत्रों में पशुओं के स्वास्थ्य और दूध के भंडारण हेतु अनुकूल जलवायु का सर्वथा अभाव है।

7. (4) जैतून, अंगूर और खट्टे फल (साइट्रस)
भूमध्यसागरीय कृषि विश्व की सर्वाधिक विशिष्ट और लाभकारी कृषि प्रणालियों में से एक है। यह मुख्य रूप से खट्टे फलों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में अंगूर की खेती, जिसे द्राक्षाकृषि कहते हैं, अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, जैतून और अंजीर भी यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। ग्रीष्म ऋतु की शुष्कता और शीतकालीन वर्षा इन फसलों की गुणवत्ता एवं मिठास बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

8. (1) केवल I, II और III
शुष्क भूमि कृषि उन क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेमी से कम होती है, और यहाँ बाजरा तथा चना जैसी सूखा प्रतिरोधी फसलें उगाई जाती हैं। इसके विपरीत, सिंचित कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जल के कृत्रिम स्रोतों का उपयोग होता है। सिंचित क्षेत्रों में जलभराव और मृदा के लवणीकरण जैसी पारिस्थितिक चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं। यह कृषि पूर्णतः मृदा एवं जल प्रबंधन पर निर्भर है।

9. (1) II, I, IV, III
वैश्विक स्तर पर चावल उत्पादन में चीन प्रथम स्थान पर है, जिसके पश्चात भारत का स्थान आता है। इन दोनों देशों के पास विशाल उपजाऊ मैदान और अनुकूल मानसूनी जलवायु है जो चावल की खेती हेतु सर्वोत्तम है। उत्पादन की मात्रा के अनुसार बांग्लादेश तीसरे और इंडोनेशिया चौथे स्थान पर आता है। यह फसल एशियाई देशों की खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है और यहाँ गहन श्रम आधारित कृषि पद्धति अपनाई जाती है।

10. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गेहूं की खेती जलवायु के अनुसार दो भिन्न ऋतुओं में की जाती है। वसंतकालीन गेहूं उन अत्यधिक ठंडे क्षेत्रों में उगाया जाता है जहाँ शीत ऋतु अत्यंत कठोर होती है, इसलिए इसे वसंत में बोया जाता है। शीतकालीन गेहूं अपेक्षाकृत सामान्य तापमान वाले क्षेत्रों में शरद ऋतु में बोया जाता है और यह शीतकाल के

Click Here to Buy book on Amazon

दौरान सुप्त रहता है। वसंत ऋतु में इसकी वृद्धि पुनः प्रारंभ होती है और ग्रीष्मकाल में कटाई की जाती है।

11. (4) यह विभिन्न जलवायु के प्रति अनुकूल है और मानव भोजन, पशु चारा और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में उपयोगी है।
मक्का एक अत्यंत लचीली फसल है जो विविध जलवायु परिस्थितियों में सुगमता से उगाई जा सकती है। इसकी जैविक संरचना इसे विभिन्न क्षेत्रों के अनुकूल बनाती है, जिससे यह उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण दोनों क्षेत्रों में लोकप्रिय है। इसका उपयोग न केवल मानव आहार के रूप में, बल्कि पशुओं के चारे और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में भी व्यापक रूप से किया जाता है। यही बहुमुखी गुण इसे प्रमुख अनाज बनाता है।

12. (2) प्रमुख उत्पादक - यूनाइटेड किंगडम
कपास एक महत्वपूर्ण रेशेदार फसल है जिसकी उत्पत्ति का केंद्र भारत माना जाता है। इसकी समुचित वृद्धि हेतु न्यूनतम 210 पाला रहित दिनों और तेज धूप की आवश्यकता होती है। यह दक्कन के पठार की काली मृदा में सर्वाधिक विकसित होती है क्योंकि यह मृदा नमी को दीर्घकाल तक संचित रखती है। यूनाइटेड किंगडम की जलवायु कपास उत्पादन हेतु उपयुक्त नहीं है, अतः वह इसका प्रमुख उत्पादक देश नहीं हो सकता।

13. (2) केवल IV
चीनी उत्पादन हेतु गन्ना और चुकंदर दो प्राथमिक स्रोत हैं। गन्ना एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे उच्च तापमान और प्रचुर जल की आवश्यकता होती है, जिसमें ब्राजील वैश्विक स्तर पर अग्रणी है। इसके विपरीत, चुकंदर ठंडी समशीतोष्ण जलवायु में उगाया जाता है। यद्यपि चुकंदर महत्वपूर्ण है, किंतु वैश्विक चीनी उत्पादन में गन्ने की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। चुकंदर मुख्य रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका के ठंडे क्षेत्रों में चीनी का मुख्य आधार है।

14. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
विभिन्न रोपण फसलों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक आवश्यकताएं होती हैं। कॉफी मूलतः इथियोपियाई उच्च भूमि की फसल है और ब्राजील इसका सबसे बड़ा उत्पादक है। चाय की खेती पहाड़ी ढलानों पर की जाती है ताकि जल का जमाव न हो सके। कोको मुख्य रूप से पश्चिम अफ्रीकी देशों में उगाया जाता है और रबर भूमध्यरेखीय वर्षावनों का मूल निवासी है। इन सभी फसलों हेतु प्रचुर वर्षा और उष्णकटिबंधीय तापमान अनिवार्य परिस्थितियां हैं।

15. (1) गेहूं
फसलों को उनके उपयोग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। कपास, जूट और रबर मुख्य रूप से औद्योगिक नकदी फसलें हैं जिनका उपयोग रेशे या कच्चे माल के रूप में किया जाता है। इसके विपरीत, गेहूं एक अनिवार्य अनाज फसल है जो मानव आहार का प्राथमिक भाग है। जूट और कपास को वस्त्र उद्योग हेतु उगाया जाता है, जबकि रबर का औद्योगिक महत्व है। गेहूं इन सबसे अपने उपभोग की प्रकृति के कारण भिन्न है।

16. (2) कृषि मुख्य रूप से पारंपरिक औजारों, पारिवारिक श्रम और मृदा की उर्वरता वापस पाने के लिए खेतों को बदलने पर निर्भर करती है।
आदिम निर्वाह कृषि मानव सभ्यता की प्राचीनतम कृषि पद्धतियों में से एक है। इसमें किसान लकड़ी के हलों और कुदाल जैसे सरल औजारों का उपयोग करते हैं। यह पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर होती है, जहाँ भूमि की उर्वरता समाप्त होने पर किसान नए भूखंड का चयन करते हैं। इसमें रसायनों का उपयोग नहीं होता और समस्त श्रम परिवार के सदस्यों द्वारा ही संपन्न किया जाता है ताकि केवल आजीविका निर्वाह हो सके।

17. (2) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई और मृदा की उर्वरता का क्रमिक ह्रास।
स्थानांतरी कृषि के व्यापक अभ्यास से पर्यावरण पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। बार-बार वनों को काटकर और जलाकर खेती करने से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में हरित आवरण तीव्रता से कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त, एक ही भूमि पर बार-बार फसल उगाने और फिर उसे छोड़ देने से मृदा की ऊपरी उपजाऊ परत का क्रमिक ह्रास होता है। यह प्रक्रिया अंततः जैव विविधता की हानि और गंभीर मृदा अपरदन का कारण बनती है।

NODIA

18. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गहन निर्वाह कृषि के उन क्षेत्रों में जहाँ वर्षा कम होती है, चावल के स्थान पर अन्य फसलें उगाई जाती हैं। उत्तरी चीन, मंचूरिया और भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में जलवायु शुष्क होती है और मृदा की स्थिति जल-गहन चावल हेतु अनुकूल नहीं होती। अतः इन क्षेत्रों में गेहूं, सोयाबीन, जौ और बाजरा जैसी फसलें मुख्य रूप से उगाई जाती हैं। यह कृषि प्रणालियों का स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन है।

19. (2) केवल I और III
रोपण कृषि का प्रारंभ यूरोपीय शक्तियों द्वारा अपने उपनिवेशों में लाभ अर्जन के उद्देश्य से किया गया था। इस कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग होता है और यह सुलभ स्थानीय श्रम पर अत्यधिक निर्भर करती है। इसमें विविधता के स्थान पर केवल एक ही नकदी फसल पर ध्यान केंद्रित किया जाता है ताकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की मांग पूरी की जा सके। यह खाद्य सुरक्षा के स्थान पर मुख्य रूप से वाणिज्यिक निर्यात हेतु निर्मित है।

20. (4) खेत आमतौर पर बहुत छोटे होते हैं, जिनका औसत एक हेक्टेयर से कम होता है।
यूरोप और उत्तरी अमेरिका में प्रचलित मिश्रित कृषि की विशेषता मध्यम आकार के खेत और उच्च तकनीकी निवेश है। यहाँ के खेत बहुत छोटे नहीं होते, बल्कि वे मशीनीकरण हेतु उपयुक्त आकार के होते हैं। इस प्रणाली में फसल चक्र, पशुपालन और रसायनों का संतुलित उपयोग किया जाता है। एक हेक्टेयर से कम छोटे खेत मुख्य रूप से एशियाई गहन निर्वाह कृषि की विशेषता हैं, न कि पश्चिमी राष्ट्रों की मिश्रित कृषि की।

21. (3) ताजे दूध के लिए तैयार बाजार उपलब्ध कराने वाले शहरी केंद्रों से निकटता।
वाणिज्यिक दुग्ध कृषि का स्थान निर्धारण मुख्य रूप से बाजार की निकटता से प्रभावित होता है। चूंकि दूध और दुग्ध उत्पाद शीघ्र खराब होने वाली वस्तुएं हैं, अतः इन्हें ताजी अवस्था में उपभोक्ताओं तक पहुँचाना आवश्यक होता है। औद्योगिक और नगरीय केंद्र इन उत्पादों हेतु विशाल मांग प्रदान करते हैं। परिवहन और प्रशीतन सुविधाओं में सुधार के उपरांत भी, वितरण लागत कम करने हेतु दुग्ध फार्मों को शहरों के समीप स्थापित किया जाता है।

22. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट कृषि प्रणालियाँ हैं। उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी मैदान विशाल मशीनीकृत वाणिज्यिक अनाज कृषि हेतु प्रसिद्ध हैं। यूरोप का भूमध्यसागरीय तट अंगूर और खट्टे फलों की विशिष्ट खेती हेतु जाना जाता है। अमेज़न बेसिन के वर्षावनों में अभी भी आदिम स्थानांतरी कृषि प्रचलित है, जबकि मानसूनी एशिया के घने बसे क्षेत्रों में गहन निर्वाह कृषि के माध्यम से अधिकतम भोजन उत्पादन सुनिश्चित किया जाता है।

23. (3) केवल I, III और IV
शुष्क भूमि कृषि मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर होती है और इसमें मृदा की नमी के संरक्षण हेतु विशेष तकनीकें अपनाई जाती हैं। यह राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ जल की न्यूनता होती है। इस प्रणाली में केवल उन्हीं फसलों को उगाया जा सकता है जो सूखे को सहन कर सकें। यह पद्धति पूर्णतः भूजल पर निर्भर नहीं होती, बल्कि उपलब्ध वर्षा जल के कुशल उपयोग और उपयुक्त जुताई पर केंद्रित होती है।

24. (1) चावल
चावल भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण खरीफ फसल है जिसे अपने वर्धन काल के दौरान प्रचुर मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। इसकी खेती हेतु औसतन 100 सेमी से अधिक वर्षा और उच्च तापमान अनिवार्य है। पकने के समय भी इसे पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है, अतः इसे जल-गहन फसल माना जाता है। भारत के मानसूनी क्षेत्रों में इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाती है जहाँ वर्षा का वितरण प्रचुर होता है।

25. (1) चीन, भारत, रूस, यूएसए
वैश्विक गेहूं उत्पादन में चीन और भारत शीर्ष दो देशों के रूप में उभरे हैं। चीन अपनी विशाल भूमि और उन्नत कृषि तकनीक के कारण प्रथम स्थान पर है, जबकि भारत द्वितीय स्थान पर आता है। इसके पश्चात रूस का स्थान है, जो अपने विशाल स्टेपी घास के मैदानों हेतु जाना जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका सूची में चौथे स्थान पर आता है, जहाँ मशीनीकृत और वाणिज्यिक स्तर पर गेहूं की व्यापक खेती की जाती है।

26. (1) जैव ईंधन उत्पादन - मक्का से प्राप्त इथेनॉल
मक्का का आधुनिक औद्योगिक महत्व इसके जैव ईंधन में उपयोग के कारण अत्यधिक बढ़ गया है। मक्का से प्राप्त स्टार्च को किण्वन प्रक्रिया के माध्यम से इथेनॉल में परिवर्तित किया जाता है, जो ऊर्जा का एक अक्षय स्रोत है। यह विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राजील जैसे देशों में परिवहन ईंधन के रूप में लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त, मक्का का उपयोग वैश्विक स्तर पर पशु आहार और विभिन्न खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में भी किया जाता है।

27. (1) केवल IV
कपास एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसके लिए उच्च तापमान और सामान्य वर्षा की आवश्यकता होती है। इसकी श्रेष्ठ गुणवत्ता हेतु 210 पाला रहित दिन और खिली हुई धूप अनिवार्य है। यह मुख्य रूप से काली मृदा में उगाई जाती है, जिसे इसके गुणों के कारण 'कपास मृदा' भी कहा जाता है। टैगा क्षेत्र की ठंडी और अम्लीय पॉडज़ोल मृदा कपास की खेती हेतु पूर्णतः अनुपयुक्त मानी जाती है।

28. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
चुकंदर चीनी उत्पादन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो मुख्य रूप से ठंडी और समशीतोष्ण जलवायु में विकसित होता है। इसे अच्छी गुणवत्ता वाले सुक्रोज के संचय हेतु मध्यम वर्षा और ठंडी रातों की आवश्यकता होती है। भूमध्यरेखीय क्षेत्रों की अत्यधिक ऊष्मा और जलभराव वाली मृदा इसके लिए हानिकारक है। रूस, फ्रांस और जर्मनी जैसे यूरोपीय देश इसके प्रमुख उत्पादक हैं, जहाँ की जलवायु परिस्थितियाँ इसकी वृद्धि हेतु पूर्णतः अनुकूल हैं।

29. (3) कॉफी के पौधों को सीधी धूप और अत्यधिक तापमान के उतार-चढ़ाव से बचाना।
कॉफी के पौधे अत्यंत संवेदनशील होते हैं और उन्हें मध्यम तापमान की आवश्यकता होती है। तीव्र धूप और अत्यधिक ऊष्मा इनकी पत्तियों एवं फलों को क्षति पहुँचा सकती है। अतः, बागानों में ऊंचे और घने वृक्ष लगाए जाते हैं जो कॉफी के पौधों को छाया प्रदान करते हैं। यह अभ्यास न केवल पौधों को झुलसने से बचाता है, बल्कि मृदा की नमी को बनाए रखने और तापमान के अचानक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने में भी सहायक होता है।

NODIA

30. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
प्राकृतिक रबर को वर्ष भर भारी वर्षा वाली भूमध्यरेखीय जलवायु की आवश्यकता होती है। जूट हेतु उच्च तापमान और आर्द्र जलवायु अनिवार्य है, जो इसे बाढ़ के मैदानों हेतु उपयुक्त बनाती है। कपास को परिपक्व होने हेतु लंबी पाला रहित अवधि और तीव्र धूप चाहिए। गन्ना एक लंबी अवधि की फसल है जिसे उष्णकटिबंधीय तापमान और उपजाऊ मृदा की आवश्यकता होती है। इन सभी फसलों की भौगोलिक आवश्यकताएं उनके उत्पादन क्षेत्रों को निर्धारित करती हैं।

31. (1) यह अल्पकालिक कृषि उपयोग के लिए वनों के टुकड़ों को साफ करने पर आधारित एक स्थानांतरी कृषि प्रणाली है।
लदांग दक्षिण-पूर्वी एशिया, विशेष रूप से मलेशिया और इंडोनेशिया में प्रचलित स्थानांतरी कृषि का स्थानीय नाम है। इस प्रणाली में किसान वनों के एक छोटे भाग को काटकर और जलाकर साफ करते हैं ताकि वहां फसलें उगाई जा सकें। मृदा

की उर्वरता कम होने पर वे उस स्थान को त्यागकर नए वन क्षेत्र की ओर चले जाते हैं। यह एक पारंपरिक निर्वाह पद्धति है जिसका उद्देश्य परिवार की न्यूनतम भोजन आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

32. (2) कनाडाई प्रेयरी में गेहूं की बड़े पैमाने पर मशीनीकृत कृषि।
गहन निर्वाह कृषि घनी आबादी वाले क्षेत्रों में की जाती है जहाँ भूमि की कमी और श्रम की अधिकता होती है, जैसे एशिया की नदी घाटियाँ। इसके विपरीत, कनाडाई प्रेयरी में की जाने वाली गेहूं की खेती विस्तृत वाणिज्यिक कृषि का उदाहरण है। इसमें विशाल खेतों पर मशीनों की सहायता से उत्पादन किया जाता है और प्रति व्यक्ति उत्पादकता बहुत अधिक होती है। यह प्रणाली निर्वाह के स्थान पर पूर्णतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और लाभार्जन पर आधारित है।

33. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गहन निर्वाह कृषि में भूमि का प्रत्येक भाग उपयोग में लाया जाता है क्योंकि जनसंख्या का दबाव अत्यधिक होता है। किसान अपनी सीमित भूमि से अधिकतम उपज प्राप्त करने हेतु एक ही वर्ष में कई फसलें उगाते हैं, जिसे बहु-फसली कृषि कहते हैं। यद्यपि आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कम होता है, किंतु मानव श्रम की अधिकता के कारण प्रति एकड़ उत्पादन काफी अधिक प्राप्त होता है, जो स्थानीय आबादी के भरण-पोषण हेतु आवश्यक है।

34. (1) केवल I और II
मिश्रित कृषि उत्तर-पश्चिमी यूरोप और उत्तर-पूर्वी अमेरिका जैसे विकसित क्षेत्रों में अत्यंत लोकप्रिय है। इस प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता चारे की फसलों, जैसे अल्फाल्फा और क्लोवर का उत्पादन है, जो पशुधन हेतु आवश्यक हैं। इसमें मवेशी, भेड़ और सूअर जैसे पशुओं को पाला जाता है, जो किसानों को अतिरिक्त आय और जैविक खाद प्रदान करते हैं। यह कृषि और पशुपालन का एक एकीकृत मॉडल है जो मृदा एवं अर्थव्यवस्था दोनों हेतु हितकारी है।

35. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
दुग्ध कृषि पूंजी प्रधान होती है और वर्ष भर श्रम की मांग करती है। भूमध्यसागरीय कृषि अंगूर की खेती और खट्टे फलों हेतु प्रसिद्ध है, जो ग्रीष्मकालीन शुष्कता को सहन कर सकते हैं। स्थानांतरी कृषि में पारंपरिक 'काटो और जलाओ' तकनीक का उपयोग होता है, जिसमें आधुनिक तकनीक का अभाव होता है। वाणिज्यिक अनाज कृषि में विशाल मशीनीकृत खेतों पर कार्य होता है, जहाँ प्रति एकड़ उपज कम किंतु प्रति व्यक्ति उत्पादकता अत्यंत अधिक होती है।

36. (2) केवल IV
दुग्ध कृषि एक जटिल और पूंजी प्रधान कृषि गतिविधि है जिसे आधुनिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। पशुओं की देखभाल और दुग्ध निष्कर्षण हेतु इसमें वर्ष भर निरंतर श्रम की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसमें कोई सुप्त काल नहीं होता। परिवहन प्रौद्योगिकियों ने दुग्ध उत्पादों के वैश्विक व्यापार को सुगम बनाया है। मरुस्थलीय क्षेत्र अपनी चरम जलवायु और चारे की कमी के कारण दुग्ध कृषि हेतु भौगोलिक रूप से सर्वथा अनुपयुक्त होते हैं।

37. (3) यह एक विशिष्ट वाणिज्यिक प्रणाली है जो खट्टे फलों, अंगूर और जैतून पर केंद्रित है।
भूमध्यसागरीय कृषि अपनी अनूठी जलवायु परिस्थितियों के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह मुख्य रूप से वाणिज्यिक उद्देश्यों हेतु की जाती है, जिसमें खट्टे फलों का उत्पादन और द्राक्षाकृषि का बड़ा महत्व है। यहाँ उत्पादित अंगूरों का उपयोग उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा बनाने हेतु किया जाता है। इसके अतिरिक्त, जैतून की खेती भी इस क्षेत्र की एक प्रमुख पहचान है। यह प्रणाली पूर्णतः वैश्विक बाजारों की विशिष्ट मांगों को पूरा करती है।

38. (1) केवल I, II और IV
नमी की उपलब्धता कृषि के स्वरूप को निर्धारित करती है। शुष्क भूमि कृषि में मल्चिंग जैसी तकनीकों से मृदा की नमी सुरक्षित रखी जाती है, जबकि सिंचित कृषि बंजर क्षेत्रों को भी उपजाऊ बना देती है। इंदिरा गांधी नहर ने राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में कृषि की संभावनाओं को परिवर्तित किया है। गन्ने जैसी जल-गहन फसलें शुष्क भूमि में नहीं बल्कि सिंचित क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। अत्यधिक सिंचाई से लवणीकरण का संकट भी सदैव बना रहता है।

39. (4) 25°C से ऊपर उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा।
आर्द्र धान की सफल खेती हेतु विशिष्ट उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों का होना अनिवार्य है। इसे अपने वर्धन काल के दौरान 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है। साथ ही, खेतों में जल संचय हेतु न्यूनतम 100 सेमी की वार्षिक वर्षा या पर्याप्त सिंचाई का होना आवश्यक है। यह फसल चिकनी मृदा में सर्वोत्तम होती है जो जल को दीर्घकाल तक रोककर रखने में सक्षम होती है।

40. (1) केवल I, II, IV और V
गेहूं मुख्य रूप से समशीतोष्ण घास के मैदानों की फसल है और इसके लिए मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है। यूरेशिया के स्टेपी और उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी इसके विश्व प्रसिद्ध केंद्र हैं। भारत में पंजाब और हरियाणा अपनी उपजाऊ मृदा और सिंचाई सुविधाओं के कारण इसके प्रमुख उत्पादक हैं। गेहूं हेतु भारी वर्षा अत्यंत हानिकारक हो सकती है, अतः 200 सेमी से अधिक वर्षा का कथन पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

41. (3) मांस और डेयरी उद्योगों को समर्थन देने के लिए पशुधन चारे के रूप में उपयोग किया जाता है।
संयुक्त राज्य अमेरिका में मक्का का उत्पादन एक विशाल उद्योग है, किंतु इसका अधिकांश भाग सीधे मानव भोजन के रूप में प्रयुक्त नहीं होता। वहां इसका प्राथमिक उपयोग पशुधन, विशेष रूप से मवेशियों और सूअरों को पुष्ट करने हेतु चारे के रूप में किया जाता है। यह रणनीति मांस और दुग्ध उत्पादों के उत्पादन को बढ़ाने में सहायक होती है। मक्का आधारित यह

Downloaded from www.pdf.tube

कृषि प्रणाली वहां के वाणिज्यिक पशुपालन उद्योग की रीढ़ मानी जाती है।

42. (1) II, III, I, IV
कपास से वस्त्र निर्माण की प्रक्रिया एक निश्चित क्रम में संपन्न होती है। सर्वप्रथम खेतों से पके हुए कपास के डोडों की कटाई की जाती है। तत्पश्चात ओटाई की प्रक्रिया द्वारा कपास के रेशों को उनके बीजों से पृथक किया जाता है। तैयार रेशों की कताई कर उनसे सूत बनाया जाता है, और अंत में उस सूत का उपयोग कर वस्त्रों की बुनाई की जाती है। यह पूरी श्रृंखला कृषि को औद्योगिक निर्माण से जोड़ती है।

43. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न फसलों की अपनी ऐतिहासिक और भौगोलिक पहचान है। गन्ना एक लंबी अवधि वाली उष्णकटिबंधीय घास है, जबकि चाय हेतु निरंतर बौछारें और पहाड़ी ढलान आवश्यक हैं। जूट को 'स्वर्ण रेशा' कहा जाता है क्योंकि इसका रंग और चमक विशिष्ट होती है और यह बाढ़ के मैदानों में पनपता है। मक्का अमेरिका की मूल फसल है जो भोजन और पशु चारे दोनों हेतु प्रयुक्त होती है। ये फसलें अपनी जलवायु आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न हैं।

44. (2) कपास - 250 सेमी की भारी वर्षा और निरंतर बादलों वाले दिन।
कपास की खेती हेतु अत्यधिक वर्षा की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि मध्यम वर्षा या सिंचाई इसके लिए आदर्श है। निरंतर बादलों वाले दिन और अत्यधिक नमी कपास के रेशों की गुणवत्ता को दूषित कर सकते हैं और कीटों के प्रकोप को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत, कपास को परिपक्व होने हेतु खिली हुई धूप और शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। पकने के समय प्रचुर धूप रेशों की चमक और दृढ़ता को बढ़ाती है।

45. (3) बंडलों को जल में भिगोकर तने से रेशों को अलग करना।
जूट के रेशों को प्राप्त करने की प्रक्रिया को अपगलन कहा जाता है। इस प्रक्रिया में जूट के पौधों के बंडलों को कई दिनों तक मंद गति से बहते जल अथवा स्थिर जल में डुबोकर रखा जाता है। इससे तने की बाहरी छाल कोमल हो जाती है और रेशे सुगमता से पृथक हो जाते हैं। यह प्रक्रिया जूट के उत्पादन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रम-प्रधान चरण मानी जाती है।

46. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
वाणिज्यिक अनाज कृषि में विशाल खेतों पर मशीनों से कृषि होती है। रोपण कृषि बड़ी संपदाओं और निर्यात केंद्रित एकल फसलों हेतु जानी जाती है। गहन निर्वाह कृषि उन घने क्षेत्रों की पहचान है जहाँ छोटे खेतों पर अत्यधिक श्रम किया जाता है। मिश्रित कृषि में खेती और पशुपालन का समन्वय होता है। ये प्रणालियाँ भौगोलिक परिस्थितियों, जनसंख्या घनत्व और बाजार की मांग के आधार पर विश्व के विभिन्न भागों में विकसित हुई हैं।

47. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
स्थानांतरी कृषि आधुनिक समय में पारिस्थितिक रुप से टिकाऊ नहीं रह गई है क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि को परती छोड़ने की अवधि कम हो गई है। जब मृदा को अपनी उर्वरता पुनः प्राप्त करने का पर्याप्त समय नहीं मिलता, तो उत्पादन गिर जाता है और मृदा क्षरण होने लगता है। इसके परिणामस्वरुप व्यापक वनों की कटाई होती है। यद्यपि इसमें रसायनों का उपयोग नहीं होता, फिर भी यह वनों और मृदा के स्वास्थ्य हेतु हानिकारक है।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मिश्रित कृषि किसानों को आर्थिक सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करती है। एकल-कृषि में यदि किसी विशिष्ट फसल की पैदावार खराब हो जाए या बाजार में उसके दाम गिर जाएं, तो किसान को भारी हानि होती है। मिश्रित खेती में, फसल की विफलता की स्थिति में किसान अपने पशुधन और उनके उत्पादों को बेचकर अपनी आजीविका चला सकता है। यह आय का विविध स्रोत जोखिमों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति एक सुरक्षा कवच है।

49. (4) I, II और III
न्यूज़ीलैंड अपनी उन्नत दुग्ध कृषि हेतु विश्व विख्यात है, जो वहां की अर्थव्यवस्था का प्रमुख भाग है। अर्जेंटीना के पम्पास घास के मैदान गेहूं उत्पादन और बड़े पैमाने पर पशुपालन हेतु आदर्श परिस्थितियां प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, भूमध्यसागरीय क्षेत्र अपनी विशिष्ट जलवायु के कारण खट्टे फलों और द्राक्षाकृषि में अग्रणी है, जो वैश्विक स्तर पर मदिरा की आपूर्ति करता है। ये तीनों क्षेत्र अपनी विशिष्ट कृषि विशेषज्ञता हेतु पहचाने जाते हैं।

50. (1) भारी मशीनरी का उपयोग करके विशाल जोतों की खेती करना।
गहन निर्वाह कृषि की प्राथमिक विशेषता यह है कि इसमें भूमि की न्यूनता के कारण अत्यंत छोटे खेतों पर कार्य किया जाता है। यहाँ मशीनों के स्थान पर मानव श्रम और पशुओं का अधिक उपयोग होता है। मृदा की उर्वरता बनाए रखने हेतु जैविक खाद का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। इस प्रणाली का लक्ष्य प्रति हेक्टेयर अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना होता है, जो मशीनीकृत विस्तृत खेती के सर्वथा विपरीत है।

51. (1) केवल IV
चाय, रबर और कोको सभी महत्वपूर्ण रोपण फसलें हैं जो उष्णकटिबंधीय और आर्द्र जलवायु में विकसित होती हैं। चाय हेतु समुचित जल निकासी वाली मृदा और रबर हेतु भूमध्यरेखीय ऊष्मा आवश्यक है। कोको पश्चिम अफ्रीका का एक प्रमुख निर्यात उत्पाद है। गन्ना भी एक उष्णकटिबंधीय पौधा है जिसे परिपक्व होने हेतु ऊष्मा और नमी चाहिए। समशीतोष्ण क्षेत्रों की अत्यंत ठंडी सर्दियाँ गन्ने की खेती हेतु पूर्णतः अनुपयुक्त और हानिकारक होती हैं।

NODIA

52. (4) शुष्क गर्मियां और हल्की, वर्षा वाली सर्दियां सूखा-सहिष्णु फसलों को परिपक्व होने देती हैं।
भूमध्यसागरीय जलवायु की प्रमुख विशेषता ग्रीष्मकालीन शुष्कता और शीतकालीन वर्षा है। जैतून और अंगूर जैसे पौधों की जड़ें गहरी होती हैं, जो उन्हें ग्रीष्म ऋतु की शुष्कता सहन करने में सहायता करती हैं। शीतकाल में होने वाली सामान्य वर्षा इन पौधों के विकास हेतु पर्याप्त नमी प्रदान करती है। यह अनूठा मौसमी चक्र फलों में शर्करा की मात्रा बढ़ाने और उन्हें विशिष्ट स्वाद देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।

53. (1) केवल I, II और III
सिंचाई ने शुष्क क्षेत्रों में कृषि की उत्पादकता को कई गुना बढ़ा दिया है, जिससे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई है। किंतु, जल प्रबंधन में उपेक्षा के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। अत्यधिक सिंचाई से मृदा में जलभराव हो जाता है, जिससे पौधों की जड़ें श्वसन नहीं कर पातीं। इसके अतिरिक्त, केशिकत्व के माध्यम से मृदा की गहराई से लवण सतह पर आ जाते हैं, जिससे भूमि ऊसर हो जाती है। सिंचित कृषि में खाद्यान्न एवं नकदी दोनों फसलें उगाई जाती हैं।

54. (1) केवल I, II, IV और V
चावल की खेती में पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में तीन भिन्न फसलें उगाई जाती हैं, जो वहां की जलवायु अनुकूलता को दर्शाती हैं। रोपाई विधि गहन निर्वाह कृषि में सर्वाधिक प्रचलित है क्योंकि यह उच्च उपज सुनिश्चित करती है। चीन वैश्विक उत्पादन में अग्रणी है। चावल के खेत मीथेन गैस के उत्सर्जन हेतु भी उत्तरदायी हैं, जो जलवायु परिवर्तन का एक कारक है। सामान्य चावल को खेतों में खड़े पानी की प्रचुर मात्रा चाहिए।

55. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
गेहूं की विभिन्न किस्में भिन्न जलवायु और उपयोग हेतु विकसित की गई हैं। वसंतकालीन गेहूं कठोर शीतकाल वाले क्षेत्रों में वसंत में बोया जाता है। शीतकालीन गेहूं शरद ऋतु में बोकर बर्फ के नीचे सुरक्षित रखा जाता है। ड्यूरम या मैकरोनी गेहूं अपनी कठोरता और उच्च प्रोटीन के कारण पास्ता निर्माण हेतु सर्वोत्तम माना जाता है। वहीं नरम गेहूं में प्रोटीन कम होता है, जो इसे बेकरी उत्पादों जैसे केक और पेस्ट्री हेतु आदर्श बनाता है।

56. (2) ठंडा और नम → मध्यम तापमान और हल्की वर्षा → गर्म और धूप वाला
गेहूं की सफल पैदावार हेतु क्रमिक जलवायु परिवर्तनों की आवश्यकता होती है। अंकुरण और आरंभिक विकास के समय मौसम ठंडा और नम होना चाहिए ताकि जड़ें सुदृढ़ हो सकें। इसके पश्चात, पौधे की वृद्धि हेतु मध्यम तापमान और समय-समय पर सामान्य वर्षा अत्यंत लाभदायक होती है। अंत में, फसल के पकने और कटाई के समय मौसम गर्म, शुष्क और खिली हुई धूप वाला होना चाहिए ताकि अनाज पूर्णतः सूख सके और उसमें चमक आए।

57. (3) काली मृदा (रेगुर) नमी धारण करने की क्षमता रखती है, जो शुष्क परिस्थितियों में आदर्श है।
दक्कन के पठार की काली मृदा कपास की खेती हेतु प्राकृतिक वरदान है। इस मृदा की अनूठी विशेषता इसकी अत्यधिक जल धारण क्षमता है, जो फसल को शुष्क मौसम में भी नमी प्रदान करती रहती है। कपास की जड़ों को दीर्घकाल तक नमी की आवश्यकता होती है, जो रेगुर मृदा कुशलतापूर्वक पूर्ण करती है। इसके अतिरिक्त, इस मृदा में विद्यमान खनिज पोषक तत्व कपास के पौधों की स्वस्थ वृद्धि और उच्च गुणवत्ता वाले रेशे हेतु अनिवार्य हैं।

58. (1) केवल IV
गन्ना एक शीघ्र खराब होने वाली फसल है क्योंकि कटाई के पश्चात इसमें सुक्रोज की मात्रा तीव्रता से कम होने लगती है, अतः इसकी तत्काल पेराई आवश्यक है। चुकंदर अधिक टिकाऊ होता है। क्यूबा का इतिहास चीनी उत्पादन से गहराई से जुड़ा है। पेराई के पश्चात बचा हुआ अवशेष, जिसे खोई कहते हैं, ऊर्जा का एक श्रेष्ठ स्रोत है। गन्ने की कटाई और रस निष्कर्षण में अभी भी विश्व के कई भागों में बड़े पैमाने पर शारीरिक श्रम का उपयोग होता है।

59. (4) अरेबिका को बेहतर स्वाद और उच्च बाजार मूल्य वाला माना जाता है।
कॉफी की दो प्रमुख वाणिज्यिक प्रजातियाँ अरेबिका और रोबस्टा हैं। अरेबिका को अपनी उत्कृष्ट सुगंध, मृदु स्वाद और न्यून कड़वाहट के कारण वैश्विक स्तर पर अधिक पसंद किया जाता है। इसके उच्च गुणवत्ता वाले गुणों के कारण बाजार में इसका मूल्य रोबस्टा से कहीं अधिक होता है। अरेबिका के पौधे अधिक ऊंचाई और विशिष्ट तापमान स्थितियों में विकसित होते हैं। इसके विपरीत, रोबस्टा अधिक कठोर होती है और इसमें कैफीन की मात्रा भी अधिक पाई जाती है।

60. (2) दक्षिण-पूर्व एशिया में सभी प्राकृतिक रबर के बागानों का पूर्ण विनाश और परित्याग।
कृत्रिम रबर के आविष्कार ने प्राकृतिक रबर के एकाधिकार को चुनौती दी और बाजार में तीव्र प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की। इसके कारण मूल्यों में स्थिरता आई और निर्माताओं के पास अधिक विकल्प उपलब्ध हो गए। यद्यपि इससे थाईलैंड और मलेशिया जैसे पारंपरिक उत्पादकों पर दबाव बढ़ा, किंतु प्राकृतिक रबर के बागान पूर्णतः समाप्त नहीं हुए। आज भी टायर निर्माण जैसे विशिष्ट कार्यों हेतु प्राकृतिक रबर अपनी लोच और दृढ़ता के कारण अनिवार्य बना हुआ है।

61. (3) यह लगभग पूरी तरह से पारंपरिक कृषि ज्ञान और स्थानीय बीजों पर निर्भर करती है।
वाणिज्यिक कृषि पूर्णतः आधुनिकता पर आधारित होती है, जिसका मुख्य लक्ष्य अधिकतम लाभ अर्जन है। यह पारंपरिक ज्ञान के स्थान पर वैज्ञानिक अनुसंधान, उन्नत संकर बीजों और आधुनिक प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग करती है। इसमें उर्वरकों, कीटनाशकों और मशीनीकरण का स्तर अत्यंत ऊंचा होता है। इसके विपरीत, स्थानीय बीजों और पारंपरिक विधियों

Click Here to Buy book on Amazon

का उपयोग निर्वाह कृषि में देखा जाता है, जहाँ किसान केवल अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

62. (4) ब्राजील
स्थानांतरी कृषि को विभिन्न संस्कृतियों में स्थानीय भाषा के अनुसार भिन्न-भिन्न नाम दिए गए हैं। दक्षिण अमेरिका के विशाल देश ब्राजील में इस पद्धति को 'रोका' के नाम से जाना जाता है। इस प्रक्रिया में वनों को जलाकर भूमि साफ की जाती है और कुछ वर्षों तक खेती करने के पश्चात उसे परती छोड़ दिया जाता है। यह नामकरण दर्शाता है कि कैसे एक ही कृषि पद्धति विश्व के भिन्न भागों में अपनी विशिष्ट स्थानीय पहचान और नाम रखती है।

63. (1) गहन निर्वाह कृषि
सघन आबादी वाले क्षेत्रों में की जाने वाली यह कृषि पद्धति गहन निर्वाह कृषि का उत्तम उदाहरण है। यहाँ किसान अपनी छोटी भूमि का अधिकतम उपयोग करने हेतु वर्ष भर कठोर परिश्रम करते हैं। मानसून के दौरान वे चावल जैसी मुख्य फसल उगाते हैं और शेष समय में सब्जियों या अन्य फसलों की खेती करते हैं। इस प्रणाली में आधुनिक यंत्रों की न्यूनता के कारण परिवार के समस्त सदस्य श्रम में योगदान देते हैं ताकि अपनी खाद्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

64. (2) कोको - घाना
घाना और कोटे डी आइवर जैसे पश्चिम अफ्रीकी देश कोको के उत्पादन में वैश्विक अग्रणी हैं। कोको वहां की अर्थव्यवस्था की आधारशिला है और इसे बड़े पैमाने पर रोपण कृषि के रूप में उगाया जाता है। रबर हेतु उष्ण और आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु चाहिए जो कनाडा जैसे ठंडे देश में संभव नहीं है। चाय हेतु ब्राजील नहीं बल्कि भारत और चीन प्रसिद्ध हैं। कॉफी का मुख्य उत्पादक ब्राजील है, जबकि यूनाइटेड किंगडम की जलवायु इसके लिए सर्वथा अनुपयुक्त है।

65. (2) वे पशुधन के लिए चारे के रूप में कार्य करते हैं और मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र में सहायक होते हैं।
मिश्रित कृषि में अनाज के साथ शलजम और आलू जैसी फसलों को उगाना वैज्ञानिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये फसलें न केवल मानवों हेतु उपयोगी हैं, बल्कि पशुओं को पोषक चारा प्रदान करने का भी मुख्य स्रोत हैं। फसल चक्र में इन्हें सम्मिलित करने से मृदा की संरचना में सुधार होता है और पोषक तत्वों का प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। यह पद्धति मृदा को निरंतर अनाज उगाने से होने वाली क्षीणता से बचाती है और कृषि की निरंतरता सुनिश्चित करती है।

66. (1) सहारा रेगिस्तान
वाणिज्यिक दुग्ध कृषि हेतु प्रचुर मात्रा में हरे चारे, अनुकूल जलवायु और बाजार की निकटता की आवश्यकता होती है। उत्तर-पश्चिमी यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड की जलवायु चरागाहों के विकास हेतु अत्यंत उपयुक्त है। इसके विपरीत, सहारा रेगिस्तान अपनी अत्यधिक ऊष्मा, जल की न्यूनता और वनस्पति के अभाव के कारण दुग्ध कृषि हेतु पूर्णतः अनुपयुक्त है। वहां पशुओं का पालन और दूध का सुरक्षित भंडारण करना भौगोलिक रूप से एक बहुत बड़ी चुनौती और अव्यावहारिक कार्य है।

67. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भूमध्यसागरीय क्षेत्र अपनी अनूठी जलवायु के कारण विविध प्रकार के फलों के उत्पादन में अग्रणी है, इसीलिए इसे 'विश्व का उद्यान क्षेत्र' कहा जाता है। द्राक्षाकृषि या अंगूर की खेती यहाँ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। यहाँ की गर्म और शुष्क गर्मियां अंगूरों को पकने और उनमें उच्च मिठास भरने हेतु सर्वोत्तम होती हैं। इसी गुणवत्ता के कारण यहाँ से विश्व की श्रेष्ठ और प्रसिद्ध मदिरा का निर्यात विभिन्न देशों को किया जाता है।

68. (4) जूट और आर्द्र धान जैसी जल-गहन फसलों की खेती।
शुष्क भूमि कृषि उन क्षेत्रों की विशेषता है जहाँ जल की भारी कमी होती है। अतः यहाँ केवल उन्हीं फसलों को उगाया जाता है जो न्यून जल में जीवित रह सकें। जूट और आर्द्र धान ऐसी फसलें हैं जिन्हें प्रचुर जल और निरंतर सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो शुष्क क्षेत्रों की परिस्थितियों के सर्वथा विपरीत है। शुष्क खेती में नमी संरक्षण हेतु मल्चिंग करना और भूमि को कुछ समय हेतु परती छोड़ना सामान्य एवं आवश्यक प्रथाएं मानी जाती हैं।

NODIA

69. (3) चावल
'औस', 'अमन' और 'बोरो' चावल की तीन भिन्न किस्मों के नाम हैं जो मुख्य रूप से भारत के पश्चिम बंगाल और असम राज्यों में उगाई जाती हैं। यह वर्गीकरण फसलों की बुवाई और कटाई के समय के आधार पर किया जाता है। एक ही कृषि वर्ष में इन तीन भिन्न मौसमों में चावल उगाना इस क्षेत्र की प्रचुर वर्षा और अनुकूल जलवायु को दर्शाता है। यह पद्धति स्थानीय स्तर पर वर्ष भर चावल की निरंतर उपलब्धता और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

70. (2) विशाल, सपाट घास के मैदान और कम जनसंख्या घनत्व मशीनरी के उपयोग की अनुमति देते हैं।
कनाडाई प्रेयरी और अर्जेंटीना के पम्पास में खेतों का आकार अत्यंत विशाल होता है और वहां कार्य करने वाले लोगों की संख्या बहुत कम होती है। यह भौगोलिक स्थिति मानवीय श्रम के स्थान पर भारी मशीनरी, जैसे कंबाइन हार्वेस्टर और ट्रैक्टरों के उपयोग को अनिवार्य एवं आर्थिक रूप से लाभदायक बनाती है। सपाट भूमि होने के कारण मशीनों का संचालन सुगम होता है। इस विस्तृत कृषि प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय बाजारों हेतु बड़े पैमाने पर अनाज उत्पादन करना है।

71. (4) यह अमेरिका की मूल फसल है और बाद में यूरोपीय खोजकर्ताओं द्वारा वैश्विक स्तर पर पेश की गई।
मक्का की उत्पत्ति ऐतिहासिक रूप से मध्य अमेरिका, विशेष रूप से मैक्सिको के क्षेत्रों में मानी जाती है। कोलंबस और अन्य यूरोपीय खोजकर्ताओं के आगमन के पश्चात ही यह फसल संपूर्ण विश्व में फैली। अमेरिका के मूल निवासियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व जंगली घासों से इसे विकसित किया था। आज यह गेहूं और चावल के पश्चात विश्व की तृतीय सबसे महत्वपूर्ण अनाज

फसल बन चुकी है, जो अपनी अनुकूलन क्षमता के कारण प्रत्येक महाद्वीप पर सफलतापूर्वक उगाई जाती है।

72. (1) अच्छी जल निकासी वाली काली मृदा, पर्याप्त धूप और लंबी पाला रहित अवधि।
कपास की खेती हेतु विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों का संयोजन आवश्यक है। इसे सुव्यवस्थित जल निकासी वाली मृदा चाहिए जो नमी संचित कर सके, जिसके लिए काली मृदा सर्वोत्तम है। इसके अतिरिक्त, वर्धन काल के दौरान तीव्र और खिली हुई धूप रेशों के विकास हेतु अनिवार्य है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कपास के पौधे पाले के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं, अतः इसे न्यूनतम 210 दिनों की लंबी पाला रहित अवधि की आवश्यकता होती है।

73. (3) गन्ना - पाला-संभावित महाद्वीपीय जलवायु
गन्ना एक संवेदनशील उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे पाला सर्वथा सहन नहीं होता। पाला पड़ने से गन्ने की पत्तियों को क्षति पहुँचती है और इसके तने में विद्यमान सुक्रोज की मात्रा कम हो जाती है। अतः, गन्ने की खेती हेतु संपूर्ण वर्ष उष्ण और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। महाद्वीपीय जलवायु, जहाँ तापमान में भारी उतार-चढ़ाव होता है और शीतकाल में पाला पड़ता है, गन्ने के उत्पादन हेतु भौगोलिक रूप से पूर्णतः अनुपयुक्त मानी जाती है।

74. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
चाय की झाड़ियों को विकसित होने हेतु प्रचुर वर्षा की आवश्यकता होती है, किंतु उनकी जड़ों में जल का जमाव उनके लिए घातक सिद्ध हो सकता है। इसीलिए चाय के बागान सदैव पहाड़ी ढलानों पर निर्मित किए जाते हैं ताकि अतिरिक्त जल सुगमता से प्रवाहित हो जाए। इसके लिए अम्लीय और ह्यूमस युक्त मृदा सर्वोत्तम होती है। ठहरे हुए जल से जड़ों में सड़न उत्पन्न हो जाती है, जिससे पौधों की वृद्धि बाधित होती है और वे अंततः सूख सकते हैं।

75. (4) जूट को अपने प्राथमिक वर्धन काल के दौरान ठंडी और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है।
जूट एक विशुद्ध उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे अपनी वृद्धि हेतु अत्यधिक ऊष्मा और प्रचुर नमी की आवश्यकता होती है। ठंडी और शुष्क जलवायु इसके रेशों के विकास हेतु पूर्णतः प्रतिकूल है। इसके लिए तापमान 25 से 35 डिग्री सेल्सियस के मध्य और आर्द्रता अत्यंत उच्च होनी चाहिए। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की उष्ण एवं आर्द्र जलवायु, जहाँ प्रचुर वर्षा और बाढ़ की उपजाऊ मृदा उपलब्ध है, जूट उत्पादन हेतु विश्व का सर्वाधिक अनुकूल क्षेत्र है।

76. (2) आदिम निर्वाह (स्थानांतरी कृषि)
आदिम स्थानांतरी कृषि विश्व की सरलतम कृषि पद्धति है जो रसायनों और आधुनिक मशीनों से पूर्णतः मुक्त है। इसमें किसान केवल कुदाल और लकड़ी के डंडों जैसे पारंपरिक औजारों का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत, वाणिज्यिक अनाज कृषि, दुग्ध कृषि और आधुनिक मिश्रित कृषि पूर्णतः उच्च तकनीक, भारी मशीनीकरण और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर हैं। स्थानांतरी कृषि केवल प्राकृतिक मृदा उर्वरता और मानव श्रम पर आधारित एक निर्वाह प्रणाली है।

77. (3) गेहूं
रोपण कृषि में उन फसलों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें एक बार आरोपित कर कई वर्षों तक उत्पादन प्राप्त किया जाता है और जो विशाल बागानों में उगाई जाती हैं, जैसे रबर, कॉफी और गन्ना। ये मुख्य रूप से निर्यात हेतु उगाई जाने वाली नकदी फसलें हैं। इसके विपरीत, गेहूं एक मौसमी अनाज फसल है जिसे प्रतिवर्ष बोया और काटा जाता है। गेहूं रोपण कृषि का भाग नहीं है, बल्कि यह अनाज कृषि की श्रेणी में आता है जो मुख्य आहार का आधार है।

78. (4) मृदा का जलभराव और द्वितीयक लवणीकरण।
राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में नहर द्वारा प्रचुर जल की उपलब्धता ने कृषि को प्रोत्साहन तो दिया, किंतु त्रुटिपूर्ण जल निकासी व्यवस्था ने गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं। निरंतर सिंचाई और जल के अत्यधिक रिसाव से मृदा की निचली परतों का जल सतह पर आ गया है, जिससे जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसके साथ ही, वाष्पीकरण के कारण मृदा के आंतरिक लवण सतह पर संचित हो रहे हैं, जिससे उपजाऊ भूमि धीरे-धीरे बंजर और लवणीय होती जा रही है।

79. (1) गेहूं
गेहूं विश्व की सर्वाधिक व्यापक रूप से उगाई जाने वाली अनाज फसल है, जो भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से शीर्ष पर है। यह मुख्य रूप से समशीतोष्ण जलवायु का पौधा है और विश्व की एक विशाल जनसंख्या हेतु ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत है। इसकी खेती उत्तरी और दक्षिणी दोनों गोलार्द्धों के घास के मैदानों में बड़े पैमाने पर की जाती है। अपनी पोषण क्षमता और विविध खाद्य उत्पादों में उपयोग के कारण इसे वैश्विक स्तर पर मुख्य आहार का गौरव प्राप्त है।

80. (2) क्लोवर या अल्फाल्फा जैसी फलीदार चारा फसलों को शामिल करते हुए फसल चक्र।
मिश्रित कृषि प्रणालियों में मृदा की उर्वरता को स्वाभाविक रूप से बनाए रखने हेतु फसल चक्र एक महत्वपूर्ण विधि है। इसमें मुख्य अनाज की फसलों के साथ क्लोवर और अल्फाल्फा जैसी फलीदार चारा फसलों को क्रमानुसार उगाया जाता है। ये फलीदार फसलें वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मृदा में स्थिर करने की क्षमता रखती हैं। यह अभ्यास न केवल पशुओं को उच्च गुणवत्ता वाला चारा प्रदान करता है, बल्कि रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता को भी न्यून करता है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 05
प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग

1. निम्नलिखित में से किस कारक को ऐसे उद्योग की अवस्थिति निर्धारित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है जो अत्यधिक भार-ह्रास वाले कच्चे माल का उपयोग करता है?
(1) अंतिम उपभोक्ता बाजार तक पहुंच
(2) कच्चे माल के स्रोतों से निकटता
(3) कुशल शहरी श्रम शक्ति की उपस्थिति
(4) एक प्रमुख समुद्री बंदरगाह तक पहुंच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग

2. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (उद्योग)
A. चीनी उद्योग
B. सूती वस्त्र उद्योग
C. एल्युमीनियम प्रगलन
D. पेट्रोलियम शोधन
सूची II: (प्रमुख अवस्थिति कारक)
i. प्रचुर और सस्ती बिजली
ii. उपभोक्ता बाजार या बंदरगाह से निकटता
iii. भार-ह्रास वाले कच्चे माल से निकटता
iv. आर्द्र जलवायु और प्रचुर श्रम
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. औद्योगिक अवस्थिति के निम्नलिखित पारंपरिक कारकों में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) कच्चे माल तक पहुंच
(2) ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता
(3) स्थलाकृतिक ऊंचाई
(4) उपभोक्ता बाजारों तक पहुंच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): प्रारंभिक लौह और इस्पात उद्योग मुख्य रूप से कोयला क्षेत्रों के पास स्थित थे।
कारण (R): कोयला एक भारी, भार-ह्रास वाला कच्चा माल था जिसका पारंपरिक प्रगलन प्रक्रियाओं में भारी मात्रा में उपयोग किया जाता था।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्र की सही विशेषता बताता है?
(1) यह भारी निर्माण प्रक्रियाओं के लिए विशेष रूप से सौर और पवन ऊर्जा पर निर्भर करता है।
(2) यह मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय नकदी फसलों की बड़े पैमाने पर खेती के लिए जाना जाता है।
(3) यह एपलाचियन कोयले और महान झील जलमार्ग प्रणाली द्वारा संचालित था।
(4) यह 21वीं सदी की शुरुआत में स्थापित एक नया उभरता हुआ औद्योगिक क्षेत्र है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे महान झीलों की नौवहन सुविधाओं का लाभ मिलता है।
II. इस क्षेत्र में घरेलू कोयले की कमी है और यह पूरी तरह से आयात पर निर्भर है।
III. पिट्सबर्ग इस क्षेत्र के भीतर लौह और इस्पात का एक प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. रूर औद्योगिक क्षेत्र, जो ऐतिहासिक रूप से अपने विशाल कोयला भंडार और भारी इंजीनियरिंग के लिए प्रसिद्ध है, किस देश में स्थित है?
(1) फ्रांस
(2) रूस
(3) यूनाइटेड किंगडम
(4) जर्मनी

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. संयुक्त राज्य अमेरिका के निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक केंद्रों को पूर्व से पश्चिम की ओर सही भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. न्यूयॉर्क
II. पिट्सबर्ग
III. डेट्रायट
IV. शिकागो

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) I, II, III, IV
(2) I, III, II, IV
(3) II, I, IV, III
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक पट्टी का प्रमुख घटक नहीं माना जाता है?

(1) राइन नदी गलियारा
(2) रूर घाटी
(3) कुजबॉस बेसिन
(4) इंग्लैंड का मिडलैंड्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. राइन गलियारे के साथ सघन औद्योगिक समूहन प्रत्यक्ष रूप से किस औद्योगिक अवस्थिति लाभ का अनुप्रयोग है?

(1) उत्तरी सागर से जुड़ने वाला कुशल अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन
(2) औद्योगिक अपशिष्ट परीक्षणों के लिए विशाल निर्जन भूमि
(3) कपास उगाने और प्रसंस्करण के लिए प्राकृतिक स्थितियां
(4) अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क से पूर्ण अलगाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (रूसी औद्योगिक क्षेत्र)

A. यूराल क्षेत्र
B. वोल्गा क्षेत्र
C. कुजबॉस क्षेत्र
D. मास्को-तुला क्षेत्र

सूची II: (प्राथमिक विशेषता/संसाधन)

i. विशाल कोयला भंडार
ii. समृद्ध धात्विक खनिज लेकिन पारंपरिक रूप से कोयले की कमी
iii. जलविद्युत और अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन
iv. सबसे बड़ा बाजार और ऐतिहासिक कुशल श्रम केंद्र

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. रूस में एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में यूराल क्षेत्र के ऐतिहासिक उदय का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?

(1) प्रशांत महासागर के गर्म जल वाले बंदरगाहों से इसकी निकटता
(2) लौह अयस्क और विभिन्न अन्य धात्विक खनिजों के इसके विशाल भंडार
(3) इसकी अत्यधिक उच्च कृषि उत्पादकता
(4) रूसी साम्राज्य की प्राथमिक वित्तीय राजधानी के रूप में इसकी स्थिति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. पूर्वी एशियाई औद्योगिक क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. जापान अपने विनिर्माण क्षेत्र के लिए आयातित कच्चे माल पर बहुत अधिक निर्भर है।
II. केहिन क्षेत्र जापान का सबसे बड़ा औद्योगिक समूहन है।
III. दक्षिण कोरिया जहाज निर्माण और इलेक्ट्रॉनिक्स में एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभरा है।
IV. चीन के औद्योगिक केंद्र मुख्य रूप से इसके पश्चिमी रेगिस्तानी प्रांतों में स्थित हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. जापान के औद्योगिक भूगोल के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I: तटीय चक्रवातों से बचने के लिए जापान के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र अंतर्देशीय स्थित हैं।

कथन II: टोयोटा सिटी, जो एक प्रमुख ऑटोमोबाइल विनिर्माण केंद्र है, जापान में स्थित है।

उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. जापान में उच्च श्रेणी के घरेलू लौह अयस्क और कोयले की समाप्ति का उसकी औद्योगिक अवस्थिति रणनीति पर निम्नलिखित में से कौन सा सीधा प्रभाव पड़ा?

(1) कच्चे माल के आयात को सुविधाजनक बनाने के लिए तटीय औद्योगिक परिसरों का निर्माण
(2) देश के भीतर लौह और इस्पात उद्योग का पूर्ण परित्याग

Click Here to Buy book on Amazon

(3) भारी उद्योगों का अनिवार्य रूप से पहाड़ी आंतरिक क्षेत्रों में स्थानांतरण
(4) उत्पादन को पूरी तरह से कृषि और प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों में स्थानांतरित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में सूती वस्त्र उद्योग ने पारंपरिक कच्चा माल उत्पादक क्षेत्रों से दूर फैलने की प्रवृत्ति दिखाई है।
कारण (R): कपास एक शुद्ध, भार-ह्रास रहित कच्चा माल है, जो उद्योग को बाजारों या सस्ते श्रम स्रोतों के पास स्थित होने की अनुमति देता है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. संयुक्त राज्य अमेरिका का पिट्सबर्ग शहर निम्नलिखित में से किस उद्योग के ऐतिहासिक केंद्र के रूप में विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?
(1) सूचना प्रौद्योगिकी
(2) लौह और इस्पात
(3) सूती वस्त्र
(4) ऑटोमोबाइल असेंबली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. औद्योगिक केंद्र और उसके संबंधित उद्योग का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सिलिकॉन वैली - पेट्रोकेमिकल्स
(2) मैनचेस्टर - सूती वस्त्र उद्योग
(3) डेट्रायट - ऑटोमोबाइल असेंबली प्लांट
(4) जमशेदपुर - लौह और इस्पात उद्योग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (औद्योगिक केंद्र)
A. जमशेदपुर
B. ओसाका
C. स्टटगार्ट
D. शेन्ज़ेन
सूची II: (देश)
i. जापान
ii. भारत
iii. चीन
iv. जर्मनी

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. किस प्रमुख भारतीय शहर को उसके ऐतिहासिक रूप से मजबूत सूती वस्त्र उद्योग के कारण अक्सर "भारत का मैनचेस्टर" कहा जाता है?
(1) बेंगलुरु
(2) जमशेदपुर
(3) हैदराबाद
(4) अहमदाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. पेट्रोकेमिकल उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अपने प्राथमिक कच्चे माल के रूप में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस पर निर्भर करता है।
II. यह कृत्रिम फाइबर, प्लास्टिक और उर्वरकों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है।
III. ह्यूस्टन, यूएसए इस उद्योग का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र है।
IV. रॉटरडैम अपनी बंदरगाह सुविधाओं के कारण यूरोप के पेट्रोकेमिकल क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
V. यह उद्योग पूंजी-प्रधान होने के बजाय अत्यधिक श्रम-प्रधान है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. राजस्थान राज्य में निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र अपने औद्योगिक महत्व के साथ सही ढंग से सुमेलित है?
(1) भीलवाड़ा - सूचना प्रौद्योगिकी और सेवाएं
(2) बाड़मेर - पेट्रोकेमिकल्स और तेल शोधन
(3) जैसलमेर - भारी ऑटोमोबाइल विनिर्माण
(4) उदयपुर - वाणिज्यिक जहाज निर्माण परियोजनाएं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग की "स्वच्छंद" प्रकृति को मुख्य रूप से क्या परिभाषित करता है?
(1) इसके लिए भारी, भार-ह्रास वाले कच्चे माल के भंडार के पास होना अनिवार्य है।
(2) इसे विशिष्ट शीतलन प्रक्रियाओं के लिए भारी मात्रा में ताजे जल की आवश्यकता होती है।
(3) अपशिष्ट निपटान की सुगमता के लिए इसे विशेष रूप से तटीय क्षेत्रों में स्थित होना चाहिए।
(4) यह काफी हद तक किसी विशिष्ट कच्चे माल के स्रोत की अवस्थिति से स्वतंत्र है।

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. टोयोटा सिटी, जो ऑटोमोबाइल उद्योग का एक विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण केंद्र है, जापान के किस प्रमुख द्वीप पर स्थित है?
(1) होक्काइडो
(2) होन्शू
(3) क्यूशू
(4) शिकोकू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. रास तनुरा, जो दुनिया के सबसे पुराने और सबसे बड़े तेल शोधन और पेट्रोकेमिकल केंद्रों में से एक है, किस देश में स्थित है?
(1) संयुक्त अरब अमीरात
(2) इराक
(3) सऊदी अरब
(4) ईरान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (ऑटोमोबाइल हब)
A. डेट्रायट
B. स्टटगार्ट
C. टोयोटा सिटी
D. ट्यूरिन
सूची II: (देश)
i. इटली
ii. जापान
iii. जर्मनी
iv. संयुक्त राज्य अमेरिका
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. अपनी प्राथमिक वैश्विक औद्योगिक पहचान के आधार पर, निम्नलिखित शहरों में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) बेंगलुरु
(2) सिलिकॉन वैली
(3) शेन्ज़ेन
(4) झरिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित में से कौन सा दुनिया की ऑटोमोबाइल राजधानी के रूप में डेट्रायट के ऐतिहासिक उदय में योगदान देने वाला प्राथमिक कारक नहीं था?
(1) महान झीलों के माध्यम से परिवहन किए गए लौह अयस्क और कोयले से निकटता
(2) प्रमुख गहरे समुद्री उष्णकटिबंधीय मत्स्य क्षेत्रों से निकटता
(3) मौजूदा घोड़ा-गाड़ी और वैगन निर्माण उद्योग की उपलब्धता
(4) बढ़ते उपभोक्ता बाजार और कुशल कार्यबल तक पहुंच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. वैश्विक कपड़ा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सूती वस्त्र उद्योग आज विशेष रूप से विकसित देशों में स्थित है।
II. कृत्रिम वस्त्र पेट्रोकेमिकल उद्योग से मिलने वाले इनपुट पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं।
III. ओसाका पारंपरिक रूप से जापान के मैनचेस्टर के रूप में जाना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन सा कथन एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स हब के रूप में सिलिकॉन वैली के विकास में एक प्रमुख कारक की सही पहचान करता है?
(1) चिप उत्पादन के लिए सिलिकॉन डाइऑक्साइड के विशाल भूमिगत भंडार की उपस्थिति।
(2) बुनियादी ढांचे के लिए भारी लौह और इस्पात उत्पादन में ऐतिहासिक प्रभुत्व।
(3) संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट के प्राथमिक गहरे जल वाले समुद्री बंदरगाह के रूप में स्थिति।
(4) स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से इसकी निकटता और एक मजबूत जोखिम पूंजी पारिस्थितिकी तंत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): बेंगलुरु भारत में सबसे प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स हब के रूप में उभरा है।
कारण (R): बेंगलुरु में सार्वजनिक क्षेत्र के अनुसंधान संस्थानों, इंजीनियरिंग कॉलेजों का एक मजबूत आधार और प्रतिभा को आकर्षित करने के लिए अनुकूल सौम्य जलवायु है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. चीन के किस शहर को देश के पहले विशेष आर्थिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया था और जो सूचना प्रौद्योगिकी हार्डवेयर और इलेक्ट्रॉनिक्स के वैश्विक मेगा-सेंटर के रूप में विकसित हुआ है?
(1) बीजिंग
(2) शेन्ज़ेन
(3) हार्बिन
(4) चेंगदू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य के नेतृत्व वाले बुनियादी ढांचे के विकास और विशेष आर्थिक क्षेत्रों के कारण चीन ने तेजी से विकास किया है।
II. भारत के उदय की विशिष्ट विशेषता एक मजबूत सूचना प्रौद्योगिकी सेवा क्षेत्र है।
III. ब्राजील का औद्योगिक केंद्र मुख्य रूप से सघन अमेज़न वर्षावन क्षेत्र में केंद्रित है।
IV. दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों ने निर्यात-उन्मुख विनिर्माण का भारी लाभ उठाया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. "समूहन अर्थव्यवस्थाओं" की अवधारणा का उपयोग निम्नलिखित में से किस औद्योगिक क्षेत्र की तीव्र वृद्धि की व्याख्या करने के लिए सबसे अच्छी तरह से किया जाता है?
(1) सिलिकॉन वैली में सूचना प्रौद्योगिकी फर्मों का संकेंद्रण
(2) साइबेरियाई टुंड्रा में अलग-थलग खनन शहर
(3) उप-सहारा अफ्रीका में बिखरी हुई निर्वाह खेती
(4) मध्य एशिया में खानाबदोश चरवाहा क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रमुख तेल शोधन/पेट्रोकेमिकल केंद्र)
A. ह्यूस्टन
B. रॉटरडैम
C. रास तनुरा
D. जामनगर
सूची II: (भौगोलिक स्थिति)
i. मेक्सिको की खाड़ी का तट
ii. राइन नदी का मुहाना
iii. फारस की खाड़ी का तट
iv. कच्छ की खाड़ी का तट
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. आधुनिक लौह और इस्पात उद्योग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) एकीकृत संयंत्र एक ही परिसर के भीतर उत्पादन के सभी चरणों को पूरा करते हैं।
(2) मिनी स्टील प्लांट मुख्य रूप से इलेक्ट्रिक आर्क भट्टियों और रद्दी धातु पर निर्भर करते हैं।
(3) आयात लागत को कम करने के लिए नए संयंत्रों के लिए तटीय स्थानों का उपयोग किया जाता है।
(4) 21वीं सदी के दौरान इस्पात उत्पादन एशिया से पश्चिमी यूरोप में स्थानांतरित हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. जमशेदपुर में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की प्रारंभिक स्थापना के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कारक सबसे महत्वपूर्ण था?
(1) भारी माल परिवहन के लिए एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सामरिक निकटता।
(2) दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप के उभरते सॉफ्टवेयर पार्कों से निकटता।
(3) झरिया से कोयला और नोआमंडी से लौह अयस्क की उपलब्धता।
(4) कृत्रिम कपड़ा फाइबर के उत्पादन के लिए आवश्यक अनुकूल आर्द्र जलवायु।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं को हाल के समय में उनके कुल वैश्विक विनिर्माण उत्पादन के परिमाण के आधार पर सही अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. चीन
II. भारत
III. ब्राजील
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III
(2) III, II, I
(3) I, III, II
(4) II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. औद्योगिक क्षेत्रों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: कृत्रिम वस्त्र उद्योग कच्चे माल को उगाने के लिए विशाल कृषि भूमि की उपलब्धता पर पूरी तरह निर्भर है।
कथन II: सूती वस्त्र उद्योग सस्ते श्रम की उपलब्धता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. डेट्रायट जैसे पारंपरिक विनिर्माण केंद्रों की औद्योगिक गिरावट और उसके बाद की आर्थिक गतिहीनता मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस कारण का प्रभाव है?
(1) कम श्रम लागत और स्वचालन वाले क्षेत्रों में विनिर्माण का स्थानांतरण।
(2) उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले वैश्विक पेट्रोलियम भंडार का पूर्ण रूप से समाप्त होना।
(3) सभी वाणिज्यिक ऑटोमोबाइल के उत्पादन पर सरकार द्वारा जानबूझकर लगाया गया प्रतिबंध।
(4) आसपास के क्षेत्र में विशेष सूचना प्रौद्योगिकी उद्योगों का तेजी से स्थानांतरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. वैश्विक औद्योगिक प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider कीजिए:
I. चीन वर्तमान में उत्पादन के मामले में दुनिया की सबसे बड़ी विनिर्माण अर्थव्यवस्था है।
II. भारत के ऑटोमोबाइल उद्योग ने पुणे और चेन्नई जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समूह स्थापित किए हैं।
III. वियतनाम जैसे दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश इलेक्ट्रॉनिक्स असेंबली के प्रमुख विकल्पों के रूप में उभरे हैं।
IV. ब्राजील में एम्ब्रेयर जैसी कंपनियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाने वाला एक मजबूत एयरोस्पेस विनिर्माण क्षेत्र है।
V. रूर क्षेत्र वर्तमान में अपने गहरे भूमिगत कोयला खनन कार्यों का भारी विस्तार कर रहा है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक पट्टी के भीतर रॉटरडैम की प्रमुख स्थिति का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) राइन नदी के मुहाने पर इसकी सामरिक बंदरगाह स्थिति।
(2) शहर की सीमा के भीतर स्थित व्यापक प्राकृतिक हीरे की खदानें।
(3) उन्नत खगोलीय अनुसंधान के लिए अनुकूल उच्च ऊंचाई वाला वातावरण।
(4) प्रमुख यूरोपीय परिवहन और ऊर्जा नेटवर्क से इसका अलगाव।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (औद्योगिक क्षेत्र)
A. कुज़बॉस
B. न्यू इंग्लैंड
C. कांतो मैदान
D. रूर
सूची II: (देश)
i. जापान
ii. रूस
iii. जर्मनी
iv. संयुक्त राज्य अमेरिका
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. विषम की पहचान कीजिए। निम्नलिखित में से किसे आधुनिक आर्थिक भूगोल में सामान्यतः "उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्था" के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है?
(1) भारत
(2) यूनाइटेड किंगडम
(3) ब्राजील
(4) दक्षिण-पूर्वी एशिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): आधुनिक तेल शोधन उद्योग सीधे तेल क्षेत्रों के बजाय उपभोक्ता बाजारों या प्रमुख बंदरगाह शहरों के पास स्थित हो रहे हैं।
कारण (R): कच्चे तेल को पाइपलाइन या टैंकर द्वारा परिवहन करना आम तौर पर कई विशिष्ट परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों के परिवहन की तुलना में सस्ता और तकनीकी रूप से सरल होता है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. औद्योगिक केंद्र और उसके संबंधित प्रमुख जल निकाय/नदी का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) रूर घाटी - टेम्स नदी क्षेत्र
(2) ओसाका - महान झील जलमार्ग
(3) पिट्सबर्ग - वोल्गा नदी प्रणाली
(4) जमशेदपुर - सुवर्णरेखा नदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

47. पश्चिमी यूरोपीय पट्टी का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र स्टटगार्ट मुख्य रूप से किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध है?
(1) ऑटोमोबाइल विनिर्माण
(2) सूती वस्त्र उद्योग
(3) सूचना प्रौद्योगिकी
(4) पेट्रोलियम शोधन क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. जमशेदपुर में इस्पात संयंत्र की स्थापना से संबंधित निम्नलिखित अवस्थिति कारकों पर विचार कीजिए:
I. यह सुवर्णरिखा और खरकई नदियों के संगम पर स्थित है।
II. इसे लौह अयस्क मुख्य रूप से नोआमंडी और बादामपहाड़ से प्राप्त होता है।
III. इसे झरिया कोयला क्षेत्रों से कोयला प्राप्त होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. निम्नलिखित में से कौन सी पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक पट्टी की एक प्रमुख विशेषता है?
(1) यह किसी भी स्थानीय अंतर्देशीय जलमार्ग से पूरी तरह स्वतंत्र रूप से संचालित होती है।
(2) एकीकृत सीमा-पार परिवहन और ऊर्जा बुनियादी ढांचा नेटवर्क।
(3) यह पूरी तरह से यूरोपीय महाद्वीप के भीतर निकाले गए कच्चे माल पर निर्भर करता है।
(4) यह पूरी तरह से प्राथमिक कृषि और वानिकी प्रसंस्करण पर केंद्रित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. रूर और उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पारंपरिक औद्योगिक क्षेत्रों की प्रारंभिक स्थापना के दौरान कौन सा ऊर्जा स्रोत सबसे कम महत्वपूर्ण था?
(1) सौर फोटोवोल्टिक
(2) ठोस कोयला ईंधन
(3) औद्योगिक भाप शक्ति
(4) प्राकृतिक जल शक्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शहर)
A. ह्यूस्टन
B. मैनचेस्टर
C. डेट्रायट
D. बेंगलुरु
सूची II: (प्रमुख उद्योग)
i. ऑटोमोबाइल
ii. सूचना प्रौद्योगिकी
iii. पेट्रोकेमिकल
iv. सूती वस्त्र
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. औद्योगिक वर्गीकरण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: कृत्रिम वस्त्र उद्योग कृषि जलवायु की तुलना में पेट्रोलियम रिफाइनरियों की निकटता पर अधिक निर्भर है।
कथन II: सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग भार-ह्रास वाले खनिज संसाधनों की निकटता पर बहुत अधिक निर्भर करता है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. जापानी औद्योगिक क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे कोयले और लौह अयस्क के विशाल घरेलू भंडार पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
II. समुद्री व्यापार को सुगम बनाने के लिए वे मुख्य रूप से प्रशांत तट के साथ केंद्रित हैं।
III. केहिन क्षेत्र इसका सबसे प्रमुख औद्योगिक केंद्र है।
IV. जापान ने उच्च-तकनीकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल उद्योगों में सफलतापूर्वक परिवर्तन किया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित में से कौन सा कथन रूस के वोल्गा औद्योगिक क्षेत्र का सही वर्णन करता है?
(1) यह स्थल-रुद्ध है और विशेष रूप से उच्च लागत वाले हवाई परिवहन पर निर्भर करता है।
(2) इसे नहरों, जलमार्गों और जलविद्युत उत्पादन से लाभ मिलता है।
(3) यह धात्विक खनिजों में समृद्ध है लेकिन आवश्यक जल संसाधनों से वंचित है।
(4) यह वैश्विक स्तर पर मुख्य रूप से अपने सॉफ्टवेयर विकास और सेवाओं के लिए जाना जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

55. राइन नदी गलियारे से जुड़े प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों का दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
(1) रॉटरडैम → कोलोन → फ्रैंकफर्ट → स्टटगार्ट
(2) स्टटगार्ट → फ्रैंकफर्ट → कोलोन → रॉटरडैम
(3) कोलोन → स्टटगार्ट → रॉटरडैम → फ्रैंकफर्ट
(4) फ्रैंकफर्ट → रॉटरडैम → स्टटगार्ट → कोलोन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. औद्योगिक भूगोल में "रस्ट बेल्ट" शब्द का उपयोग सबसे अधिक किस क्षेत्र के गिरते हुए पारंपरिक भारी उद्योग क्षेत्रों का वर्णन करने के लिए किया जाता है?
(1) उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका औद्योगिक क्षेत्र
(2) जापान में कांतो मैदान औद्योगिक क्षेत्र
(3) चीन में स्थित पर्ल नदी डेल्टा हब
(4) कैलिफोर्निया, यूएसए में सिलिकॉन वैली समूह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. कृत्रिम वस्त्र उद्योग के लिए आवश्यक मूलभूत कच्चा माल क्या है?
(1) कच्चा कपास
(2) रेशमकीट के कोकून
(3) पेट्रोकेमिकल्स
(4) जूट के रेशे
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. कोकिंग कोल की उपलब्धता
II. लौह अयस्क की उपलब्धता
III. चूना पत्थर के भंडार से निकटता
IV. ताजे जल की सुनिश्चित आपूर्ति
V. उच्च ऊंचाई वाला पहाड़ी इलाका
एक पारंपरिक एकीकृत लौह और इस्पात संयंत्र की अवस्थिति के लिए उपरोक्त में से कौन से कारक आवश्यक हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. विकसित राष्ट्रों से विकासशील राष्ट्रों की ओर वैश्विक कपड़ा उद्योग का बड़े पैमाने पर स्थानांतरण मुख्य रूप से किस कारण से हुआ है?
(1) विकसित राष्ट्रों में कोयले की कमी
(2) विकसित राष्ट्रों में उपभोक्ता बाजारों की कमी
(3) आधुनिक कृत्रिम वस्त्रों के लिए आवश्यक उष्णकटिबंधीय जलवायु
(4) काफी कम श्रम लागत की उपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. लेक सुपीरियर क्षेत्र में उच्च श्रेणी के लौह अयस्क की ऐतिहासिक समाप्ति का अमेरिकी लौह और इस्पात उद्योग पर क्या महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा?
(1) अमेरिका में सभी वाणिज्यिक ऑटोमोबाइल निर्माण का पूर्ण रूप से बंद होना।
(2) आयातित अयस्क का उपयोग करने के लिए तटीय क्षेत्रों में इस्पात क्षमता का स्थानांतरण।
(3) सभी संरचनात्मक अनुप्रयोगों में लोहे के स्थान पर एल्युमीनियम का प्रतिस्थापन।
(4) पिट्सबर्ग हब का प्रशांत तटीय क्षेत्रों में स्थानांतरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (अवधारणा/विशेषता)
A. जोखिम पूंजी और तकनीकी स्टार्टअप का समूहन
B. कोयला आधारित भारी इंजीनियरिंग और इस्पात केंद्र
C. प्रमुख तेल निष्कर्षण और शोधन परिसर
D. पहला विशेष आर्थिक क्षेत्र और हार्डवेयर निर्यात हब
सूची II: (विशिष्ट क्षेत्र/शहर)
i. रूर, जर्मनी
ii. रास तनुरा, सऊदी अरब
iii. शेन्ज़ेन, चीन
iv. सिलिकॉन वैली, यूएसए
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. निम्नलिखित में से कौन सी आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण उद्योग की विशेषता नहीं है?
(1) अत्यधिक विशिष्ट, कुशल और शिक्षित कार्यबल पर भारी निर्भरता।
(2) तीव्र समूहन अर्थव्यवस्थाओं या विशिष्ट तकनीकी समूहों का विकास।
(3) पारंपरिक भारी उद्योगों की तुलना में अपेक्षाकृत 'स्वच्छंद' होना।
(4) भारी, भार-ह्रास वाले कच्चे माल का बड़ी मात्रा में उपयोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. ब्राजील की उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका औद्योगिक केंद्र भारी रूप से दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में, विशेष रूप से साओ पाउलो और रियो डी जनेरियो के आसपास केंद्रित है।
II. इसने विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी एयरोस्पेस उद्योग विकसित किया है।
III. देश में घरेलू लौह अयस्क संसाधनों की कमी है और यह अपनी पूरी आवश्यकता का आयात करता है।

NODIA

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. टोयोटा सिटी, जो ऑटोमोबाइल उद्योग का एक विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण केंद्र है, जापान के किस प्रमुख द्वीप पर स्थित है?
(1) होक्काइडो
(2) होन्शू
(3) क्यूशू
(4) शिकोकू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. रूस में कुज़बास औद्योगिक क्षेत्र ने मुख्य रूप से किसके विशाल भंडार के कारण वैश्विक औद्योगिक महत्व प्राप्त किया?
(1) पेट्रोलियम
(2) कोयला
(3) प्राकृतिक गैस
(4) बॉक्साइट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. अहमदाबाद कपड़ा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे अक्सर 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है।
II. इसे गुजरात क्षेत्र के कपास उत्पादक क्षेत्रों से अपनी निकटता का लाभ मिला।
III. इसमें ऐतिहासिक रूप से पूंजी और कुशल बुनकरों की कमी थी।
IV. यह साबरमती नदी के तट पर स्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. औद्योगिक शहर और उसके प्रमुख उद्योग का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) रॉटरडैम - सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर
(2) शेन्ज़ेन - पारंपरिक लोहा प्रगलन
(3) ह्यूस्टन - अंतरिक्ष अन्वेषण और पेट्रोकेमिकल्स
(4) मैनचेस्टर - एयरोस्पेस विनिर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. एक एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवस्थिति कारक कौन सा है?
(1) सघन शहरी बाजारों से निकटता
(2) कृषि के लिए व्यापक समतल भूमि से निकटता
(3) सस्ते, अकुशल श्रम की उपलब्धता
(4) सस्ती और प्रचुर बिजली की उपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. शेन्ज़ेन सूचना प्रौद्योगिकी हब के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में स्थित है।
II. इसकी सीमा हांगकांग से लगती है, जिसने प्रारंभिक महत्वपूर्ण पूंजी और रसद सहायता प्रदान की।
III. इसे अक्सर "हार्डवेयर की सिलिकॉन वैली" कहा जाता है।
IV. इसे चीन के पहले विशेष आर्थिक क्षेत्र के रूप में नामित किया गया था।
V. यह ऐतिहासिक रूप से लौह अयस्क के समृद्ध भंडार के आसपास बनाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. उस केंद्र की पहचान कीजिए जिसे मुख्य रूप से इसके ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त नहीं है।
(1) डेट्रायट
(2) मैनचेस्टर
(3) स्टटगार्ट
(4) टोयोटा सिटी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. ऑटोमोबाइल उद्योग के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: डेट्रायट से ऑटोमोटिव विनिर्माण प्रभुत्व का कम होना आंशिक रूप से जापान से विदेशी प्रतिस्पर्धा के उदय के कारण था।
कथन II: आधुनिक चुनौतियों के बावजूद, डेट्रायट आज भी विश्व स्तर पर ऑटोमोबाइल का निर्विवाद रूप से सबसे बड़ा उत्पादक बना हुआ है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका का औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से किस महासागर के तटीय बंदरगाहों का उपयोग करता है?
(1) अटलांटिक महासागर
(2) प्रशांत महासागर
(3) हिंद महासागर

Click Here to Buy book on Amazon

(4) आर्कटिक महासागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. कौन सा कथन वैश्विक लौह और इस्पात उद्योग में एक प्रमुख वर्तमान प्रवृत्ति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) छोटे पैमाने पर, पारंपरिक लकड़ी के कोयला आधारित लोहा प्रगलन की ओर पूर्ण वापसी।
(2) सभी इस्पात विनिर्माण का पश्चिमी यूरोप में स्थानांतरण।
(3) कोयले की निर्भरता को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक आर्क भट्टियों और रद्दी धातु का उपयोग।
(4) लौह अयस्क के अंतरराष्ट्रीय व्यापार और परिवहन पर पूर्ण वैश्विक प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित में से कौन सा शहर मर्सिडीज-बेंज और पोर्श जैसे प्रीमियम जर्मन ऑटो निर्माताओं के मुख्यालय और प्रमुख उत्पादन केंद्र के रूप में कार्य करता है?
(1) स्टटगार्ट
(2) बर्लिन
(3) म्यूनिख
(4) हैम्बर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. बेंगलुरु में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की तीव्र प्रारंभिक वृद्धि को मुख्य रूप से किस कारण से गति मिली?
(1) आसपास के दक्कन के पठार क्षेत्र में दुर्लभ मृदा धातुओं की खोज।
(2) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक राजधानी के रूप में इसकी ऐतिहासिक भूमिका।
(3) इसकी अत्यधिक विकसित और कुशल अंतर्देशीय नौगम्य नदी और जलमार्ग प्रणाली।
(4) स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों और अनुसंधान संस्थानों की स्थापना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. यदि एक उद्यमी आज कुल परिवहन लागत को कम करते हुए एक नई बड़े पैमाने की तेल रिफाइनरी स्थापित करना चाहता है, तो सबसे इष्टतम स्थान कहाँ है?
(1) निष्कर्षण कुएं के पास एक निर्जन रेगिस्तानी क्षेत्र के भीतर।
(2) कच्चा तेल प्राप्त करने और उत्पादों को वितरित करने के लिए तटीय बाजार या बंदरगाह के पास।
(3) प्रसंस्करण के लिए उपलब्ध उच्चतम स्थलाकृतिक ऊंचाई पर।
(4) विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी सॉफ्टवेयर पार्क के लिए जाने जाने वाले क्षेत्र में।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. विश्व के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) पूर्वी एशिया इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर विनिर्माण का प्रमुख वैश्विक केंद्र बन गया है।
(2) चीन के तटीय प्रांतों में इसके पश्चिमी आंतरिक भागों की तुलना में उद्योगों का उच्च संकेंद्रण है।
(3) यूरोपीय औद्योगिक पट्टी ने आयात के पक्ष में सभी विनिर्माण छोड़ दिए हैं।
(4) दक्षिण-पूर्वी एशिया कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स असेंबली दोनों के लिए एक हब के रूप में तेजी से उभर रहा है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. किस पूर्वी एशियाई शहर को उसके मजबूत सूती वस्त्र उद्योग के कारण ऐतिहासिक रूप से "पूरब का मैनचेस्टर" उपनाम दिया गया है?
(1) टोक्यो
(2) सियोल
(3) शंघाई
(4) ओसाका
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग हब के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सिलिकॉन वैली - न्यूयॉर्क, यूएसए
(2) सिलिकॉन वैली - कैलिफोर्निया, यूएसए
(3) बेंगलुरु - कर्नाटक, भारत
(4) शेन्ज़ेन - ग्वांगडोंग, चीन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. जब भूगोलवेत्ता एक औद्योगिक अवस्थिति कारक के रूप में "बाजार" का विश्लेषण करते हैं, तो निम्नलिखित में से किस कारक पर सामान्यतः विचार नहीं किया जाता है?
(1) जनसंख्या की क्रय शक्ति और आय का स्तर
(2) बाजार शहर के नीचे पाए जाने वाले भूगर्भीय आधारशिला का प्रकार
(3) स्थानीय जनसंख्या का भौतिक घनत्व और कुल आकार
(4) उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच परिवहन संपर्क
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कच्चे माल के स्रोतों से निकटता
अत्यधिक भार-ह्रास वाले कच्चे माल पर आधारित उद्योगों के लिए परिवहन लागत एक अत्यंत निर्णायक कारक होती है। इन उद्योगों में प्रयुक्त कच्चे माल का कुल भार तैयार उत्पाद की तुलना में बहुत अधिक होता है, जिससे लंबी दूरी का परिवहन आर्थिक रूप से अलाभकारी सिद्ध होता है। इसी कारण चीनी और लौह-इस्पात जैसे भारी उद्योगों को कच्चे माल के स्रोतों के अत्यंत समीप ही स्थापित किया जाता है।

2. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विभिन्न उद्योगों की अवस्थिति उनके विशिष्ट कारकों पर निर्भर करती है। चीनी उद्योग में गन्ना एक भार-ह्रास वाला पदार्थ है, इसलिए यह कृषि स्रोतों के निकट होता है। सूती वस्त्रों के लिए आर्द्र जलवायु और कुशल श्रमिक आवश्यक हैं। एल्युमीनियम प्रगलन हेतु प्रचुर एवं सस्ती विद्युत की भारी आवश्यकता होती है, जबकि पेट्रोलियम शोधन को बाजार या बंदरगाह के निकट स्थापित किया जाता है ताकि वितरण लागत कम रहे।

3. (3) स्थलाकृतिक ऊंचाई
औद्योगिक अवस्थिति के पारंपरिक कारकों में मुख्य रूप से कच्चे माल की उपलब्धता, ऊर्जा संसाधनों तक सुगम पहुंच और उपभोक्ता बाजारों से निकटता को प्राथमिकता दी जाती है। ये कारक उत्पादन लागत और वितरण दक्षता को सीधे प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, स्थलाकृतिक ऊंचाई को विनिर्माण इकाई की स्थापना के लिए प्राथमिक आर्थिक कारक नहीं माना जाता है। अधिकांश औद्योगिक क्षेत्र समतल मैदानी भागों में विकसित होते हैं ताकि परिवहन सुगम रहे।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रारंभिक काल में लौह और इस्पात उद्योगों की स्थापना मुख्य रूप से कोयला क्षेत्रों के निकट की जाती थी। इसका मुख्य कारण यह था कि कोयला एक भारी और भार-ह्रास वाला ईंधन था, जिसकी प्रगलन प्रक्रिया में प्रचुर मात्रा में आवश्यकता होती थी। कोयले को दूर ले जाने की तुलना में लौह अयस्क को कोयला क्षेत्रों तक लाना अधिक किफायती था। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य एवं सटीक हैं।

5. (3) यह एपलाचियन कोयले और महान झील जलमार्ग प्रणाली द्वारा संचालित था।
उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका का औद्योगिक क्षेत्र अपनी ऐतिहासिक वृद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों और परिवहन सुविधाओं पर निर्भर रहा है। एपलाचियन क्षेत्र से प्राप्त उच्च गुणवत्ता वाले कोयले ने ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ण की, जबकि महान झील जलमार्ग प्रणाली ने कच्चे माल और तैयार माल के परिवहन को सस्ता और सुलभ बनाया। इन कारकों के संयोजन ने इस क्षेत्र को विश्व के शक्तिशाली औद्योगिक केंद्रों में स्थापित किया है।

6. (3) केवल I और III
उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्र को महान झीलों की अद्वितीय नौवहन सुविधाओं का लाभ मिलता है, जिससे भारी माल का परिवहन सुगम होता है। पिट्सबर्ग इस क्षेत्र का एक प्रमुख ऐतिहासिक लौह और इस्पात केंद्र रहा है। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इस क्षेत्र में कोयले की कमी है, क्योंकि एपलाचियन कोयला क्षेत्र इस औद्योगिक पट्टी की ऊर्जा आवश्यकताओं का मुख्य आधार रहा है और विकास में सहायक रहा है।

7. (4) जर्मनी
रुर औद्योगिक क्षेत्र जर्मनी में स्थित है और यह यूरोप के सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्रों में से एक माना जाता है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से अपने विशाल कोयला भंडार, लौह-इस्पात उत्पादन तथा भारी इंजीनियरिंग उद्योगों के लिए प्रसिद्ध रहा है। राइन और रुर जैसी नदियों ने यहाँ परिवहन और औद्योगिक जल की आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान में यह क्षेत्र पारंपरिक उद्योगों से आधुनिक तकनीकी उद्योगों की ओर परिवर्तित हो रहा है।

8. (1) I, II, III, IV
संयुक्त राज्य अमेरिका के इन प्रमुख औद्योगिक केंद्रों का पूर्व से पश्चिम की ओर सही भौगोलिक क्रम न्यूयॉर्क, पिट्सबर्ग, डेट्रायट और अंत में शिकागो है। न्यूयॉर्क अटलांटिक तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह और वित्तीय केंद्र है। पिट्सबर्ग इसके पश्चिम में इस्पात केंद्र के रूप में स्थित है। इसके बाद मोटर वाहन केंद्र डेट्रायट आता है और अंत में शिकागो, जो मिशिगन झील के तट पर स्थित एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है।

9. (3) कुजबॉस बेसिन
पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक पट्टी में राइन नदी गलियारा, जर्मनी की रुर घाटी और इंग्लैंड का मिडलैंड्स क्षेत्र जैसे प्रमुख केंद्र सम्मिलित हैं। ये क्षेत्र सघन परिवहन तंत्र और व्यापारिक संबंधों से परस्पर जुड़े हुए हैं। इसके विपरीत, कुजबॉस बेसिन रूस के साइबेरियाई क्षेत्र में स्थित एक विशाल कोयला और औद्योगिक क्षेत्र है। भौगोलिक रूप से यह पश्चिमी यूरोपीय पट्टी का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह रूसी औद्योगिक ढांचे का मुख्य आधार है।

10. (1) उत्तरी सागर से जुड़ने वाला कुशल अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन
राइन नदी गलियारे में सघन औद्योगिक समूहन का मुख्य कारण इसका अत्यंत कुशल अंतर्देशीय जलमार्ग तंत्र है। यह नदी यूरोप के आंतरिक औद्योगिक क्षेत्रों को सीधे उत्तरी सागर और अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों से जोड़ती है। जलमार्ग द्वारा भारी

NODIA

कच्चे माल और तैयार उत्पादों का परिवहन सड़क या रेल की तुलना में बहुत सस्ता होता है। इस परिवहन लाभ ने राइन क्षेत्र को वैश्विक व्यापार और विनिर्माण का अत्यंत सक्रिय केंद्र बना दिया है।

11. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
रूसी औद्योगिक क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं। यूराल क्षेत्र धात्विक खनिजों में समृद्ध है लेकिन वहाँ पारंपरिक रूप से कोयले की कमी रही है। वोल्गा क्षेत्र अपने जलमार्गों और जलविद्युत के लिए जाना जाता है। कुजबॉस क्षेत्र अपने विशाल कोयला भंडारों के लिए प्रसिद्ध है, जिसने भारी उद्योगों को आधार प्रदान किया। मास्को-तुला क्षेत्र रूस का सबसे पुराना और बड़ा बाजार है, जहाँ ऐतिहासिक रूप से कुशल श्रम और इंजीनियरिंग का संकेंद्रण रहा है।

12. (2) लौह अयस्क और विभिन्न अन्य धात्विक खनिजों के इसके विशाल भंडार
रूस में यूराल क्षेत्र का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में उदय मुख्य रूप से इसकी समृद्ध खनिज संपदा के कारण हुआ है। इस क्षेत्र में लौह अयस्क, तांबा, निकल और अन्य महत्वपूर्ण धात्विक खनिजों के विशाल भंडार उपलब्ध हैं। इन संसाधनों ने यहाँ भारी मशीनरी और धातु प्रगलन उद्योगों के विकास के लिए एक सशक्त आधार प्रदान किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इसकी सुरक्षित आंतरिक स्थिति ने इसके औद्योगिक महत्व को और बढ़ाया।

13. (1) केवल I, II और III
जापान अपने औद्योगिक विकास के लिए आयातित कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर है क्योंकि वहाँ प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है। केहिन क्षेत्र जापान का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण औद्योगिक समूहन है। दक्षिण कोरिया ने जहाज निर्माण और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। चीन के औद्योगिक केंद्र मुख्य रूप से उसके पूर्वी तटीय क्षेत्रों में स्थित हैं, न कि पश्चिमी रेगिस्तानी प्रांतों में, क्योंकि तटीय क्षेत्रों में बेहतर परिवहन सुविधाएं हैं।

14. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
जापान के अधिकांश प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र तटों पर स्थित हैं ताकि कच्चे माल का आयात और तैयार माल का निर्यात सुगमता से किया जा सके। जापान में संसाधनों की कमी होने के कारण तटीय अवस्थिति आर्थिक रूप से अनिवार्य है। टोयोटा सिटी जापान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोटर वाहन विनिर्माण केंद्र है, जिसे कंपनी के नाम पर ही पहचान मिली है। अतः पहला कथन भौगोलिक वास्तविकता के विपरीत है, जबकि दूसरा कथन पूर्णतः सत्य है।

15. (1) कच्चे माल के आयात को सुविधाजनक बनाने के लिए तटीय औद्योगिक परिसरों का निर्माण
जापान में उच्च श्रेणी के घरेलू कोयले और लौह अयस्क की कमी ने उसकी औद्योगिक रणनीति को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। संसाधनों की इस कमी को दूर करने के लिए जापान ने अपने भारी उद्योगों को बंदरगाहों के निकट तटीय क्षेत्रों में स्थापित किया। इससे विदेशों से कच्चे माल का आयात करना और तैयार उत्पादों को वैश्विक बाजारों में भेजना किफायती हो गया। इस रणनीति ने जापान को संसाधनों की न्यूनता के बावजूद औद्योगिक महाशक्ति बनाया।

16. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में सूती वस्त्र उद्योग अब केवल कपास उत्पादक क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के विभिन्न भागों में विस्तृत हो गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि कपास एक शुद्ध कच्चा माल है, जिसका भार धागा बनाने की प्रक्रिया में कम नहीं होता। इस विशेषता के कारण उद्योग को बाजार के निकट या सस्ते श्रम वाले क्षेत्रों में स्थापित करना संभव हो गया है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं।

17. (2) लौह और इस्पात
पिट्सबर्ग विश्व भर में "लौह और इस्पात की राजधानी" के रूप में प्रसिद्ध रहा है। इसकी भौगोलिक स्थिति, कोयले की निकटता और जलमार्गों तक पहुंच ने इसे 19वीं और 20वीं शताब्दी में इस्पात उत्पादन का वैश्विक केंद्र बना दिया था। यद्यपि हाल के दशकों में यहाँ उद्योगों का विविधीकरण हुआ है और सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ा है, फिर भी इसकी ऐतिहासिक पहचान आज भी लौह और इस्पात उद्योग से ही जुड़ी हुई है।

18. (1) सिलिकॉन वैली - पेट्रोकेमिकल्स
सिलिकॉन वैली और पेट्रोकेमिकल्स का युग्म त्रुटिपूर्ण है क्योंकि सिलिकॉन वैली विश्व स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर और अर्धचालक नवाचार के लिए जानी जाती है। मैनचेस्टर ऐतिहासिक रूप से सूती वस्त्र उद्योग का केंद्र रहा है। डेट्रायट अपनी मोटर वाहन असेंबली लाइनों के लिए प्रसिद्ध है और जमशेदपुर भारत का एक प्रमुख लौह-इस्पात केंद्र है। सिलिकॉन वैली कैलिफोर्निया में स्थित है और यह उच्च तकनीकी उद्यमों का मुख्य केंद्र है।

19. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
जमशेदपुर भारत का एक प्रमुख औद्योगिक नगर है जो टाटा इस्पात संयंत्र के लिए प्रसिद्ध है। ओसाका जापान का एक महत्वपूर्ण वस्त्र और विनिर्माण केंद्र है, जिसे पूरब का मैनचेस्टर भी कहा जाता है। स्टटगार्ट जर्मनी में स्थित है और विलासी मोटर वाहन निर्माण का एक वैश्विक केंद्र है। शेन्ज़ेन चीन का एक प्रमुख विशेष आर्थिक क्षेत्र है जो इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी हार्डवेयर के उत्पादन में विश्व भर में अग्रणी भूमिका निभाता है।

20. (4) अहमदाबाद
गुजरात के अहमदाबाद शहर को इसकी विशाल सूती वस्त्र मिलों और समृद्ध व्यापारिक इतिहास के कारण "भारत का मैनचेस्टर" कहा जाता है। यह शहर कपास उत्पादक क्षेत्रों के केंद्र में स्थित है, जिससे इसे कच्चे माल की सुलभ आपूर्ति प्राप्त होती है। साबरमती नदी के जल और अनुकूल जलवायु ने यहाँ वस्त्र उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी औद्योगिक उत्कृष्टता और निर्यात क्षमता के कारण इसने देश की अर्थव्यवस्था में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

Downloaded from www.pdf.tube

21. (1) केवल I, II, III और IV
पेट्रोकेमिकल उद्योग कच्चे माल के रूप में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का उपयोग करता है और प्लास्टिक तथा उर्वरक जैसे विविध उत्पाद निर्मित करता है। ह्यूस्टन और रॉटरडैम इस उद्योग के प्रमुख वैश्विक केंद्र हैं। यह उद्योग अत्यधिक पूंजी-प्रधान और उन्नत तकनीक पर आधारित होता है, न कि श्रम-प्रधान। इसमें विशाल शोधनशालाओं और जटिल रासायनिक संयंत्रों के लिए भारी निवेश की आवश्यकता होती है। अतः श्रम-प्रधानता वाला पांचवां कथन गलत है।

22. (2) बाड़मेर - पेट्रोकेमिकल्स और तेल शोधन
राजस्थान के बाड़मेर क्षेत्र में कच्चे तेल के विशाल भंडारों की खोज के बाद यह एक प्रमुख पेट्रोकेमिकल और तेल शोधन केंद्र के रूप में उभरा है। यहाँ पचपदरा में एक आधुनिक शोधनशाला और पेट्रोकेमिकल परिसर स्थापित किया जा रहा है, जो राज्य की औद्योगिक दिशा बदल रहा है। भीलवाड़ा मुख्य रूप से वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, जबकि जैसलमेर और उदयपुर अन्य खनिजों हेतु जाने जाते हैं। अतः बाड़मेर का मिलान सही है।

23. (4) यह काफी हद तक किसी विशिष्ट कच्चे माल के स्रोत की अवस्थिति से स्वतंत्र है।
सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उद्योगों को स्वच्छंद उद्योग कहा जाता है क्योंकि इनकी अवस्थिति कच्चे माल के स्रोतों से बाध्य नहीं होती। ये उद्योग ऐसे घटकों का उपयोग करते हैं जो भार में हल्के होते हैं और कहीं भी सुगमता से ले जाए जा सकते हैं। इनके लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक कुशल मानव संसाधन, तीव्र इंटरनेट और तकनीकी बुनियादी ढांचा है। इसलिए ये उद्योग बाजार या तकनीकी समूहों के पास कहीं भी विकसित हो सकते हैं।

24. (2) होन्शू
टोयोटा सिटी जापान के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण द्वीप होन्शू पर स्थित है। यह शहर आइची प्रान्त का हिस्सा है और इसे वैश्विक मोटर वाहन उद्योग का हृदय स्थल माना जाता है। होन्शू द्वीप पर ही टोक्यो, ओसाका और नागोया जैसे प्रमुख औद्योगिक और आर्थिक केंद्र भी स्थित हैं। टोयोटा कंपनी के मुख्यालय और अनेक कारखानों की उपस्थिति के कारण इस शहर को वाहन निर्माण की दुनिया में एक विशिष्ट पहचान और महत्व प्राप्त है।

25. (3) सऊदी अरब
रास तनुरा सऊदी अरब में स्थित विश्व के सबसे पुराने और विशालतम तेल शोधन और पेट्रोकेमिकल केंद्रों में से एक है। यह फारस की खाड़ी के तट पर स्थित है, जो इसे कच्चे तेल के निर्यात और वैश्विक समुद्री व्यापार के लिए एक रणनीतिक स्थान प्रदान करता है। यह परिसर सऊदी अरामको द्वारा संचालित है और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी विशाल क्षमता इसे दुनिया के प्रमुख औद्योगिक स्थलों में शामिल करती है।

26. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
डेट्रायट संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रसिद्ध मोटर वाहन केंद्र है। स्टटगार्ट जर्मनी में स्थित है और प्रतिष्ठित वाहन ब्रांडों का मुख्य स्थल है। टोयोटा सिटी जापान का प्रमुख वाहन निर्माण केंद्र है, जिसका नाम टोयोटा कंपनी के आधार पर रखा गया है। ट्यूरिन इटली का एक ऐतिहासिक औद्योगिक शहर है जो फिएट जैसी प्रमुख वाहन निर्माता कंपनियों के लिए जाना जाता है। ये सभी शहर अपने-अपने देशों में मोटर वाहन उद्योग की रीढ़ माने जाते हैं।

27. (4) झरिया
बेंगलुरु, सिलिकॉन वैली और शेन्ज़ेन अपनी पहचान मुख्य रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर विकास और उच्च तकनीकी इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के कारण रखते हैं। ये आधुनिक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के प्रमुख केंद्र हैं। इसके विपरीत, झरिया भारत का एक प्रसिद्ध कोयला खनन क्षेत्र है, जिसकी पहचान प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों और भारी ऊर्जा संसाधनों से जुड़ी है। अतः औद्योगिक प्रकृति के आधार पर झरिया अन्य तीनों की तुलना में एक भिन्न श्रेणी का केंद्र है।

NODIA

28. (2) प्रमुख गहरे समुद्री उष्णकटिबंधीय मत्स्य क्षेत्रों से निकटता
डेट्रायट के मोटर वाहन राजधानी बनने में परिवहन की सुगमता, लोहे और कोयले की उपलब्धता, तथा पूर्ववर्ती वैगन निर्माण उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान था। इसके पास कुशल कार्यबल और विस्तृत उपभोक्ता बाजार भी उपलब्ध था। हालांकि, गहरे समुद्री उष्णकटिबंधीय मत्स्य क्षेत्रों से निकटता का इसके औद्योगिक विकास से कोई संबंध नहीं है। डेट्रायट महाद्वीप के आंतरिक भाग में महान झीलों के निकट स्थित है, न कि किसी उष्णकटिबंधीय समुद्री तट के पास।

29. (1) केवल I
वैश्विक वस्त्र उद्योग के संबंध में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह आज केवल विकसित देशों में स्थित है। वास्तव में, निम्न श्रम लागत के कारण यह उद्योग अब विकासशील देशों में बड़े पैमाने पर स्थानांतरित हो चुका है। कृत्रिम वस्त्रों का उत्पादन पेट्रोकेमिकल इनपुट पर निर्भर करता है, जो कि सत्य है। ओसाका को इसकी ऐतिहासिक मिलों के कारण 'जापान का मैनचेस्टर' कहा जाता है, यह तथ्य भी पूर्णतः सही है। अतः केवल प्रथम कथन गलत है।

30. (4) स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से इसकी निकटता और एक मजबूत जोखिम पूंजी पारिस्थितिकी तंत्र।
सिलिकॉन वैली का विकास मुख्य रूप से शिक्षा और निवेश के अनूठे संगम का परिणाम है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय ने शोध और नवाचार के लिए आवश्यक मेधावी कार्यबल प्रदान किया, जबकि जोखिम पूंजी तंत्र ने नए उद्यमों को वित्तीय सहायता दी। यहाँ सिलिकॉन नामक खनिज के खनन का कोई संबंध नहीं है, बल्कि यह नाम अर्धचालक चिप्स में इसके उपयोग के कारण पड़ा। इस क्षेत्र ने तकनीकी नवाचार के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की है।

31. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बेंगलुरु को भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ भारतीय विज्ञान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित शोध संस्थान और अनेक

इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, जो उच्च कुशल प्रतिभा सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा, यहाँ की सुखद और सौम्य जलवायु विश्व भर के पेशेवरों को आकर्षित करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और स्पष्ट करते हैं कि क्यों बेंगलुरु इस उद्योग में अग्रणी बना।

32. (2) शेन्ज़ेन
शेन्ज़ेन को चीन के प्रथम विशेष आर्थिक क्षेत्र के रूप में स्थापित किया गया था, जिसने देश के आर्थिक सुधारों में मील का पत्थर सिद्ध किया। हांगकांग से निकटता के कारण इसे भारी निवेश और रसद सहायता मिली। आज यह शहर सूचना प्रौद्योगिकी हार्डवेयर और इलेक्ट्रॉनिक्स के वैश्विक केंद्र के रूप में विकसित हो चुका है। इसे "हार्डवेयर की सिलिकॉन वैली" कहा जाता है, जहाँ विश्व के अधिकांश स्मार्टफोन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण और संयोजन किया जाता है।

33. (1) केवल I, II और IV
चीन का तीव्र औद्योगिक विकास राज्य समर्थित बुनियादी ढांचे और विशेष आर्थिक क्षेत्रों की सफलता का परिणाम है। भारत सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं में अपनी वैश्विक शक्ति के लिए पहचाना जाता है। दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों ने भी निर्यात-उन्मुख विनिर्माण के माध्यम से काफी प्रगति की है। हालांकि, ब्राजील के औद्योगिक केंद्र अमेज़न के सघन वनों में नहीं, बल्कि मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी तटीय क्षेत्रों में स्थित हैं। अतः तीसरा कथन भौगोलिक रूप से पूर्णतः गलत है।

34. (1) सिलिकॉन वैली में सूचना प्रौद्योगिकी फर्मों का संकेंद्रण
समूहन अर्थव्यवस्थाओं का अर्थ है जब कई संबंधित उद्योग एक ही स्थान पर स्थित होकर साझा बुनियादी ढांचे, कुशल श्रम और ज्ञान का लाभ उठाते हैं। सिलिकॉन वैली इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ हजारों तकनीकी कंपनियाँ और शोध संस्थान एक साथ रहकर नवाचार की गति बढ़ाते हैं। इससे कंपनियों की लागत कम होती है और दक्षता बढ़ती है। खनन शहरों या खानाबदोश क्षेत्रों में इस प्रकार का औद्योगिक संकेंद्रण और परस्पर निर्भरता नहीं पाई जाती।

35. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
ह्यूस्टन मेक्सिको की खाड़ी के निकट स्थित अमेरिका का प्रमुख तेल केंद्र है। रॉटरडैम नीदरलैंड में राइन नदी के मुहाने पर स्थित है, जो यूरोप का सबसे व्यस्त बंदरगाह है। रास तनुरा फारस की खाड़ी के तट पर सऊदी अरब का विशाल शोधन केंद्र है। जामनगर भारत में गुजरात के कच्छ की खाड़ी के तट पर स्थित है, जहाँ विश्व की सबसे बड़ी तेल शोधनशालाओं में से एक संचालित होती है। ये सभी स्थान रणनीतिक तटीय लाभ प्राप्त करते हैं।

36. (4) 21वीं सदी के दौरान इस्पात उत्पादन एशिया से पश्चिमी यूरोप में स्थानांतरित हो गया।
21वीं सदी में वैश्विक इस्पात उत्पादन की प्रवृत्ति इसके विपरीत रही है। उत्पादन पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका जैसे पारंपरिक क्षेत्रों से हटकर चीन और भारत जैसे एशियाई देशों की ओर तीव्रता से स्थानांतरित हुआ है। आधुनिक इस्पात उद्योग अब एकीकृत संयंत्रों के साथ-साथ इलेक्ट्रिक आर्क भट्टियों का भी उपयोग कर रहा है। तटीय स्थानों का चयन कच्चे माल के आयात की लागत कम करने के लिए किया जाता है, जो वर्तमान भौगोलिक विशेषता है।

37. (3) झरिया से कोयला और नोआमंडी से लौह अयस्क की उपलब्धता।
जमशेदपुर में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक कच्चे माल की निकटता थी। इस स्थान को झरिया के विशाल कोयला क्षेत्रों से कोकिंग कोयला और नोआमंडी तथा बादामपहाड़ की खानों से उच्च गुणवत्ता वाला लौह अयस्क सुगमता से प्राप्त होता था। इसके अलावा, सुवर्णरेखा और खरकई नदियों ने औद्योगिक कार्यों के लिए जल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की। इन भौगोलिक लाभों ने जमशेदपुर को भारत का पहला आधुनिक इस्पात शहर बनाया।

38. (1) I, II, III
वैश्विक विनिर्माण उत्पादन के मामले में चीन विश्व में निर्विवाद रूप से प्रथम स्थान पर है, जिसे "विश्व का कारखाना" भी कहा जाता है। हाल के वर्षों में भारत ने अपने विनिर्माण क्षेत्र में व्यापक सुधार और निवेश के माध्यम से वैश्विक उत्पादन में अपनी स्थिति सुदृढ़ की है और वह ब्राजील से काफी आगे निकल चुका है। ब्राजील भी एक महत्वपूर्ण औद्योगिक अर्थव्यवस्था है, लेकिन उत्पादन के कुल परिमाण में वह चीन और भारत के पश्चात आता है।

39. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
कृत्रिम वस्त्र उद्योग कृषि भूमि पर नहीं, बल्कि पेट्रोकेमिकल उत्पादों पर निर्भर करता है, जो पेट्रोलियम शोधन से प्राप्त होते हैं। इसलिए प्रथम कथन गलत है। दूसरी ओर, सूती वस्त्र उद्योग में सिलाई और प्रसंस्करण के लिए भारी श्रम की आवश्यकता होती है, जिससे यह सस्ते श्रम की उपलब्धता वाले क्षेत्रों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है। यही कारण है कि यह उद्योग अब विकसित देशों से हटकर एशियाई और अफ्रीकी देशों की ओर उन्मुख हो गया है।

40. (1) कम श्रम लागत और स्वचालन वाले क्षेत्रों में विनिर्माण का स्थानांतरण।
डेट्रायट जैसे पारंपरिक केंद्रों की गिरावट का मुख्य कारण वैश्विक प्रतिस्पर्धा और विनिर्माण का कम लागत वाले क्षेत्रों में स्थानांतरण है। अन्य देशों में सस्ती श्रम शक्ति और उन्नत स्वचालन तकनीकों ने उत्पादन को अधिक किफायती बना दिया, जिससे डेट्रायट के पुराने कारखानों की लाभप्रदता कम हो गई। इसके अलावा, उपभोक्ता प्राथमिकताओं में बदलाव और नवाचार की धीमी गति ने भी इस आर्थिक गतिहीनता में योगदान दिया। यह प्रक्रिया औद्योगिक भूगोल में क्षेत्रीय बदलाव को दर्शाती है।

41. (1) केवल I, II, III और IV
चीन विश्व की सबसे बड़ी विनिर्माण अर्थव्यवस्था है और भारत ने चेन्नई तथा पुणे जैसे शहरों में मजबूत मोटर वाहन क्लस्टर विकसित किए हैं। वियतनाम इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए एक नया

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

वैश्विक केंद्र बन गया है और ब्राजील एयरोस्पेस विनिर्माण में अग्रणी है। हालांकि, जर्मनी का रूर क्षेत्र अब कोयला खनन का विस्तार नहीं कर रहा है, बल्कि वह पर्यावरण संरक्षण के कारण कोयले से दूर हरित ऊर्जा और सेवा क्षेत्र की ओर तीव्रता से अग्रसर है।

42. (1) राइन नदी के मुहाने पर इसकी सामरिक बंदरगाह स्थिति।
रॉटरडैम की औद्योगिक और व्यापारिक सफलता का मुख्य आधार इसकी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति है। राइन नदी के मुहाने पर स्थित होने के कारण यह यूरोप के सघन औद्योगिक आंतरिक भागों को सीधे समुद्र से जोड़ता है। यह बंदरगाह विशाल मालवाहक जहाजों के लिए प्रवेश द्वार का कार्य करता है, जिससे कच्चे तेल और अन्य खनिजों का आयात अत्यंत सुगम हो जाता है। इसी रणनीतिक लाभ ने इसे यूरोप के सबसे बड़े पेट्रोकेमिकल और रसद केंद्र के रूप में स्थापित किया है।

43. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
कुजबॉस रूस का एक प्रमुख कोयला और भारी उद्योग क्षेत्र है। न्यू इंग्लैंड संयुक्त राज्य अमेरिका का एक ऐतिहासिक औद्योगिक क्षेत्र है जो वस्त्र और मशीनरी के लिए प्रसिद्ध है। कांतो मैदान जापान का सबसे बड़ा औद्योगिक केंद्र है, जिसमें टोक्यो और योकोहामा जैसे शहर सम्मिलित हैं। रूर जर्मनी का प्रसिद्ध औद्योगिक हृदय स्थल है। इन क्षेत्रों का मिलान उनकी राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक औद्योगिक मानचित्र पर उनके महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

44. (2) यूनाइटेड किंगडम
आधुनिक आर्थिक भूगोल में भारत, ब्राजील और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों को "उभरती औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं" के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि यहाँ विनिर्माण क्षेत्र में तीव्र विकास हो रहा है। इसके विपरीत, यूनाइटेड किंगडम एक "विकसित" औद्योगिक राष्ट्र है, जहाँ औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ हुआ था। वर्तमान में यूके की अर्थव्यवस्था विनिर्माण के स्थान पर मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र और उच्च तकनीकी नवाचार पर केंद्रित हो चुकी है, जो इसे विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में रखता है।

45. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक तेल शोधनशालाओं को अब उपभोक्ता बाजारों या बंदरगाहों के निकट स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि कच्चे तेल को बड़े टैंकरों या पाइपलाइनों के माध्यम से परिवहन करना काफी सस्ता और तकनीकी रूप से सुगम होता है। इसके विपरीत, परिष्कृत उत्पादों को अलग-अलग ले जाना महंगा और जटिल होता है। अतः बाजार के निकट शोधनशाला होने से वितरण लागत में भारी बचत होती है, जो अभिकथन की सटीक व्याख्या करती है।

46. (4) जमशेदपुर - सुवर्णरेखा नदी
जमशेदपुर शहर सुवर्णरेखा और खरकई नदियों के संगम पर स्थित है, जो टाटा इस्पात संयंत्र के लिए जल का मुख्य स्रोत हैं। अन्य विकल्पों में रूर घाटी राइन नदी से संबंधित है, न कि टेम्स से। ओसाका जापान के तट पर स्थित है, महान झीलों के निकट नहीं। पिट्सबर्ग अमेरिका की ओहायो नदी प्रणाली के निकट है, वोल्गा के पास नहीं। अतः जमशेदपुर और सुवर्णरेखा का युग्म भौगोलिक रूप से पूर्णतः सही और सटीक है।

47. (1) ऑटोमोबाइल विनिर्माण
जर्मनी का स्टटगार्ट शहर विश्व भर में उच्च श्रेणी के मोटर वाहन विनिर्माण के लिए प्रसिद्ध है। यह मर्सिडीज-बेंज और पोर्श जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों का मुख्यालय और मुख्य उत्पादन केंद्र है। इस शहर में ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग और अनुसंधान का एक सघन नेटवर्क उपस्थित है, जो इसे वैश्विक वाहन उद्योग का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनाता है। यहाँ के उद्योग अपनी गुणवत्ता, नवाचार और उन्नत विनिर्माण तकनीकों के लिए जाने जाते हैं, जो जर्मनी की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक हैं।

48. (4) I, II और III
जमशेदपुर में इस्पात संयंत्र की सफलता कई भौगोलिक कारकों के संगम का परिणाम है। यह सुवर्णरेखा और खरकई नदियों के तट पर स्थित है, जिससे जल की आपूर्ति सुनिश्चित होती है। लौह अयस्क की निकटता नोआमंडी और बादामपहाड़ की खदानों से पूर्ण होती है, जबकि झरिया के कोयला क्षेत्र ऊर्जा की आवश्यकता को पूर्ण करते हैं। ये तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं और स्पष्ट करते हैं कि क्यों जमशेदपुर भारत का सबसे सफल निजी एकीकृत इस्पात केंद्र बना।

49. (2) एकीकृत सीमा-पार परिवहन और ऊर्जा बुनियादी ढांचा नेटवर्क।
पश्चिमी यूरोपीय औद्योगिक पट्टी की सबसे बड़ी विशेषता इसका एकीकृत परिवहन और ऊर्जा नेटवर्क है। यहाँ की रेल, सड़क और पाइपलाइन प्रणालियाँ विभिन्न देशों की सीमाओं के पार निर्बाध रूप से जुड़ी हुई हैं। यह एकीकरण कच्चे माल की आवाजाही और तैयार माल के वितरण को अत्यंत कुशल और लागत प्रभावी बनाता है। यह क्षेत्र केवल स्थानीय संसाधनों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह वैश्विक आयात-निर्यात और उच्च तकनीकी विनिर्माण पर आधारित एक आधुनिक औद्योगिक तंत्र है।

50. (1) सौर फोटोवोल्टिक
रूर और उत्तर-पूर्वी अमेरिका जैसे क्षेत्रों के प्रारंभिक औद्योगीकरण के दौरान कोयला ऊर्जा का सबसे प्राथमिक और महत्वपूर्ण स्रोत था। इसके पश्चात जल शक्ति और भाप इंजन की शक्ति ने कारखानों को संचालित करने में बड़ी भूमिका निभाई। उस समय सौर फोटोवोल्टिक तकनीक का कोई अस्तित्व नहीं था और न ही इसे औद्योगिक ऊर्जा का विकल्प माना जाता था। अतः पारंपरिक भारी उद्योगों के विकास में नवीकरणीय ऊर्जा के इस आधुनिक स्रोत की कोई ऐतिहासिक भूमिका नहीं रही है।

51. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
ह्यूस्टन मेक्सिको की खाड़ी के निकट स्थित अमेरिका का प्रमुख पेट्रोकेमिकल केंद्र है। मैनचेस्टर ऐतिहासिक रूप से अपनी सूती वस्त्र मिलों के लिए विश्व भर में जाना जाता है। डेट्रायट को वैश्विक मोटर वाहन विनिर्माण का केंद्र माना जाता है। बेंगलुरु भारत का प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर केंद्र है।

NODIA

इन शहरों का उनके संबंधित उद्योगों के साथ मिलान वैश्विक औद्योगिक भूगोल की महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों और विशिष्टताओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

52. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
कृत्रिम वस्त्र उद्योग वास्तव में शोधनशालाओं से प्राप्त होने वाले रासायनिक इनपुट पर निर्भर करता है, न कि कृषि जलवायु पर। अतः प्रथम कथन सही है। इसके विपरीत, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग को खनिजों या भारी कच्चे माल की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह मुख्य रूप से मानव मेधा और विद्युत पर आधारित है। इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी का खनिज संसाधनों पर निर्भर होना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। यह उद्योग एक स्वच्छंद उद्योग है जो कहीं भी स्थापित हो सकता है।

53. (1) केवल I
जापानी औद्योगिक क्षेत्रों के बारे में प्रथम कथन गलत है क्योंकि जापान में कोयले और लौह अयस्क के घरेलू भंडार अत्यंत सीमित हैं। जापान अपनी औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए लगभग संपूर्ण कच्चा माल विदेशों से आयात करता है। हालांकि, अन्य तीनों कथन सत्य हैं: इसके उद्योग मुख्य रूप से प्रशांत तट पर स्थित हैं, केहिन इसका प्रमुख केंद्र है, और इसने उच्च-तकनीकी एवं मोटर वाहन क्षेत्रों में अद्भुत प्रगति की है। संसाधन संपन्नता के स्थान पर जापान का विकास आयात-निर्यात आधारित है।

54. (2) इसे नहरों, जलमार्गों और जलविद्युत उत्पादन से लाभ मिलता है।
रूस का वोल्गा औद्योगिक क्षेत्र अपनी विशाल नदी प्रणाली और रणनीतिक अवस्थिति के लिए जाना जाता है। वोल्गा नदी और उससे जुड़ी नहरें इसे कैस्पियन सागर और अन्य जलमार्गों से जोड़ती हैं, जिससे भारी माल का परिवहन सुलभ होता है। इस क्षेत्र में स्थापित विशाल जलविद्युत परियोजनाओं ने उद्योगों को सस्ती और प्रचुर बिजली प्रदान की है। यह क्षेत्र केवल हवाई परिवहन पर निर्भर नहीं है, बल्कि जलमार्ग इसके औद्योगिक विकास की मुख्य जीवनरेखा माने जाते हैं।

55. (2) स्टटगार्ट → फ्रैंकफर्ट → कोलोन → रॉटरडैम
राइन नदी गलियारे के साथ दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ने पर सर्वप्रथम जर्मनी का औद्योगिक शहर स्टटगार्ट आता है। उसके उत्तर में वित्तीय और परिवहन केंद्र फ्रैंकफर्ट स्थित है। आगे बढ़ने पर ऐतिहासिक औद्योगिक शहर कोलोन आता है और अंत में राइन नदी के मुहाने पर नीदरलैंड का रॉटरडैम बंदरगाह स्थित है। यह क्रम यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक धुरी के भौगोलिक विस्तार और प्रमुख केंद्रों के वितरण को सही ढंग से दर्शाता है।

56. (1) उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका औद्योगिक क्षेत्र
"रस्ट बेल्ट" शब्द का प्रयोग उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के उन क्षेत्रों के लिए किया जाता है जहाँ कभी भारी उद्योग और इस्पात उत्पादन का प्रभुत्व था। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में विनिर्माण के स्थानांतरण और आर्थिक गिरावट के कारण यहाँ के कई कारखाने बंद हो गए और उनमें जंग लग गई, जिससे यह नाम पड़ा। इसमें पिट्सबर्ग और डेट्रायट जैसे शहर शामिल हैं। यह क्षेत्र अब अपनी पुरानी पहचान परिवर्तित कर नई प्रौद्योगिकियों की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहा है।

57. (3) पेट्रोकेमिकल्स
कृत्रिम वस्त्रों जैसे नायलॉन, पॉलिएस्टर और एक्रिलिक के उत्पादन के लिए मुख्य आधार पेट्रोकेमिकल्स होते हैं। ये रसायन पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के शोधन की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त होते हैं। प्राकृतिक वस्त्रों के विपरीत, जिनमें कपास या रेशम का उपयोग होता है, कृत्रिम वस्त्र पूर्णतः प्रयोगशालाओं और रासायनिक संयंत्रों में निर्मित होते हैं। यही कारण है कि यह उद्योग प्रायः विशाल तेल शोधनशालाओं और रासायनिक परिसरों के निकट ही विकसित और केंद्रित होता है।

58. (4) I, II, III और IV
एक पारंपरिक एकीकृत लौह और इस्पात संयंत्र के लिए कोकिंग कोल, लौह अयस्क और चूना पत्थर की उपलब्धता अनिवार्य है, क्योंकि ये प्रगलन प्रक्रिया के मुख्य घटक हैं। इसके अतिरिक्त, भट्टियों को शीतल करने और अन्य प्रक्रियाओं के लिए ताजे जल की निरंतर आपूर्ति भी आवश्यक होती है। हालांकि, उच्च ऊंचाई वाला पहाड़ी क्षेत्र परिवहन और निर्माण में बाधा उत्पन्न करता है, इसलिए इसे औद्योगिक अवस्थिति के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है।

59. (4) काफी कम श्रम लागत की उपलब्धता
विकसित देशों से विकासशील देशों की ओर वस्त्र उद्योग के स्थानांतरण का सबसे प्रमुख कारण श्रम लागत में भारी अंतर है। वस्त्र उद्योग एक श्रम-प्रधान क्षेत्र है जहाँ सिलाई और फिनिशिंग जैसे कार्यों के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है। विकासशील देशों में मजदूरी दर काफी कम होने के कारण उत्पादन लागत कम हो जाती है, जिससे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करना सुगम हो जाता है। इसी आर्थिक लाभ के कारण यह उद्योग एशिया और अफ्रीका में केंद्रित हुआ है।

60. (2) आयातित अयस्क का उपयोग करने के लिए तटीय क्षेत्रों में इस्पात क्षमता का स्थानांतरण।
लेक सुपीरियर क्षेत्र में उच्च श्रेणी के लौह अयस्क के भंडार समाप्त होने के पश्चात अमेरिकी इस्पात उद्योग को अपनी रणनीति बदलनी पड़ी। अब उद्योग घरेलू संसाधनों के स्थान पर ब्राजील और अन्य देशों से आयातित अयस्क पर निर्भर होने लगा। इस बदलाव के कारण नए इस्पात संयंत्रों को अंतर्देशीय क्षेत्रों के स्थान पर तटीय क्षेत्रों में स्थापित किया गया ताकि जहाजों से आने वाले कच्चे माल को सीधे संयंत्रों तक पहुँचाया जा सके। इसने अमेरिकी औद्योगिक भूगोल की दिशा परिवर्तित कर दी।

61. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
सिलिकॉन वैली तकनीकी नवाचारों और जोखिम पूंजी का वैश्विक केंद्र है। रूर क्षेत्र जर्मनी में भारी इंजीनियरिंग और कोयला आधारित इस्पात उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। रास तनुरा सऊदी अरब का एक विशाल तेल शोधन और पेट्रोकेमिकल परिसर है। शेन्ज़ेन चीन का प्रथम विशेष आर्थिक क्षेत्र है जो आज विश्व का प्रमुख हार्डवेयर और इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात केंद्र बन चुका है।

Downloaded from www.pdf.tube

इन क्षेत्रों का उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ मिलान वैश्विक विनिर्माण के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है।

62. (4) भारी, भार-ह्रास वाले कच्चे माल का बड़ी मात्रा में उपयोग।
आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण उद्योग की मुख्य विशेषता यह है कि यह भारी कच्चे माल पर निर्भर नहीं होता। इसके घटक छोटे और हल्के होते हैं, इसलिए इसमें "भार-ह्रास" का कोई महत्व नहीं है। यह उद्योग मुख्य रूप से उच्च शिक्षित कार्यबल, तकनीकी अनुसंधान और समूहन अर्थव्यवस्थाओं पर आधारित है। अपनी इसी विशेषता के कारण इसे "स्वच्छंद उद्योग" भी कहा जाता है, जिसे कच्चे माल के स्रोतों के स्थान पर बाजार या प्रतिभा वाले क्षेत्रों में स्थापित किया जा सकता है।

63. (1) केवल I और II
ब्राजील का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उसके दक्षिण-पूर्वी राज्यों साओ पाउलो और रियो डी जनेरियो में केंद्रित है, जहाँ बुनियादी ढांचा और बाजार उपलब्ध हैं। ब्राजील ने एम्ब्रेयर जैसी कंपनियों के माध्यम से एयरोस्पेस क्षेत्र में भी विश्व स्तरीय स्थान बनाया है। हालांकि, यह कहना गलत है कि ब्राजील में लौह अयस्क की कमी है। वास्तव में, ब्राजील विश्व के सबसे बड़े लौह अयस्क उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है, जिसके पास काराजास जैसे विशाल भंडार उपस्थित हैं।

64. (2) होन्शू
टोयोटा सिटी जापान के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण द्वीप होन्शू पर स्थित है। यह शहर आइची प्रान्त का हिस्सा है और इसे वैश्विक मोटर वाहन उद्योग का हृदय स्थल माना जाता है। होन्शू द्वीप पर ही टोक्यो, ओसाका और नागोया जैसे प्रमुख औद्योगिक और आर्थिक केंद्र भी स्थित हैं। टोयोटा कंपनी के मुख्यालय और अनेक कारखानों की उपस्थिति के कारण इस शहर को वाहन निर्माण की दुनिया में एक विशिष्ट पहचान और महत्व प्राप्त है।

65. (2) कोयला
रूस का कुजबॉस क्षेत्र, जिसे कुज़नेत्स्क बेसिन भी कहा जाता है, अपने विशाल और उच्च गुणवत्ता वाले कोयला भंडारों के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इन कोयला भंडारों ने सोवियत काल से ही इस क्षेत्र को रूस के एक शक्तिशाली औद्योगिक आधार के रूप में विकसित करने में सहायता की। यहाँ के कोयले का उपयोग न केवल धातु प्रगलन और भारी इंजीनियरिंग उद्योगों में किया जाता है, बल्कि यह देश की ऊर्जा सुरक्षा और निर्यात के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

66. (2) केवल III
अहमदाबाद के संबंध में तीसरा कथन गलत है क्योंकि यहाँ ऐतिहासिक रूप से पर्याप्त पूंजी और कुशल बुनकर उपलब्ध थे, जिन्होंने वस्त्र उद्योग की नींव सुदृढ़ की। अन्य तथ्य सत्य हैं: इसे 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है, यह कपास उत्पादक क्षेत्रों के निकट है और साबरमती नदी के तट पर स्थित है। स्थानीय व्यापारियों के निवेश और कपास की सुलभता ने इसे देश का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई, जो आज भी अक्षुण्ण है।

67. (3) ह्यूस्टन - अंतरिक्ष अन्वेषण और पेट्रोकेमिकल्स
ह्यूस्टन वैश्विक स्तर पर अपने नासा अंतरिक्ष केंद्र और विशाल पेट्रोकेमिकल शोधनशालाओं के लिए पहचाना जाता है। अन्य विकल्पों में रॉटरडैम पेट्रोकेमिकल्स और रसद के लिए प्रसिद्ध है, सॉफ्टवेयर के लिए नहीं। शेन्ज़ेन आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए जाना जाता है, पारंपरिक लोहा प्रगलन के लिए नहीं। मैनचेस्टर का ऐतिहासिक महत्व सूती वस्त्रों से है, एयरोस्पेस से नहीं। अतः ह्यूस्टन और उसके संबंधित उद्योगों का युग्म सबसे सटीक और वैश्विक पहचान के अनुरूप है।

68. (4) सस्ती और प्रचुर बिजली की उपलब्धता
एल्युमीनियम उत्पादन एक अत्यंत विद्युत-गहन प्रक्रिया है, जिसमें बॉक्साइट से एल्युमिना और फिर एल्युमीनियम निकालने के लिए भारी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। विद्युत की लागत कुल उत्पादन व्यय का एक बहुत बड़ा भाग होती है। यही कारण है कि एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र सदैव उन स्थानों पर स्थापित किए जाते हैं जहाँ सस्ती और निरंतर विद्युत उपलब्ध हो, जैसे कि विशाल जलविद्युत परियोजनाओं या कोयला आधारित ताप विद्युत केंद्रों के निकटवर्ती क्षेत्र।

69. (1) केवल I, II, III और IV
शेन्ज़ेन चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में स्थित है और हांगकांग से निकटता ने इसके विकास में बड़ी भूमिका निभाई है। इसे "हार्डवेयर की सिलिकॉन वैली" के रूप में जाना जाता है और यह चीन का प्रथम विशेष आर्थिक क्षेत्र था। हालांकि, इसकी स्थापना लौह अयस्क के भंडारों के पास नहीं की गई थी, बल्कि यह पूर्णतः नीतिगत सुधारों, निर्यात और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ा एक आधुनिक तकनीकी शहर है। अतः पांचवां कथन त्रुटिपूर्ण है।

70. (2) मैनचेस्टर
डेट्रायट, स्टटगार्ट और टोयोटा सिटी वैश्विक स्तर पर मोटर वाहन विनिर्माण के सबसे प्रमुख केंद्रों के रूप में जाने जाते हैं। इसके विपरीत, मैनचेस्टर की वैश्विक पहचान ऐतिहासिक रूप से सूती वस्त्र उद्योग और औद्योगिक क्रांति के जन्मस्थान के रूप में रही है। यद्यपि मैनचेस्टर में अन्य आधुनिक उद्योग भी विकसित हुए हैं, लेकिन इसे "मोटर वाहन राजधानी" या वाहन निर्माण का मुख्य केंद्र नहीं माना जाता है। अतः यह अन्य विकल्पों की तुलना में विनिर्माण की श्रेणी में भिन्न है।

71. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
डेट्रायट के प्रभुत्व में न्यूनता आने का एक प्रमुख कारण जापानी और यूरोपीय वाहन निर्माताओं से प्राप्त कड़ी प्रतिस्पर्धा थी, जिन्होंने अधिक कुशल और किफायती कारें प्रस्तुत कीं। अतः प्रथम कथन सही है। हालांकि, यह कहना गलत है कि डेट्रायट आज भी निर्विवाद रूप से सबसे बड़ा उत्पादक है, क्योंकि वर्तमान में चीन, जापान और जर्मनी के अनेक शहरों ने उत्पादन के परिमाण और तकनीकी नवाचार के मामले में इसे पीछे छोड़ दिया है।

NODIA

72. (1) अटलांटिक महासागर
उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका का औद्योगिक क्षेत्र अटलांटिक महासागर के तट के साथ स्थित है। यहाँ न्यूयॉर्क, बोस्टन और फिलाडेल्फिया जैसे प्रमुख बंदरगाह हैं जो ऐतिहासिक रूप से यूरोप और अफ्रीका के साथ व्यापार का मुख्य द्वार रहे हैं। अटलांटिक तट की इन बंदरगाह सुविधाओं ने कच्चे माल के आयात और तैयार औद्योगिक उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाया, जिससे यह क्षेत्र 19वीं और 20वीं शताब्दी में विश्व का सबसे बड़ा विनिर्माण केंद्र बनकर उभरा।

73. (3) कोयले की निर्भरता को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक आर्क भट्ठियों और रद्दी धातु का उपयोग।
आधुनिक इस्पात उद्योग में पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा दक्षता पर बल दिया जा रहा है। इसी दिशा में अब पारंपरिक ब्लास्ट फर्नेस के स्थान पर इलेक्ट्रिक आर्क भट्ट्रियों का उपयोग बढ़ रहा है। ये भट्ट्रियाँ ऊर्जा संरक्षण के लिए रद्दी धातु या स्क्रैप को पुनर्चक्रित करती हैं, जिससे कच्चे लौह अयस्क और कोकिंग कोयले पर निर्भरता कम होती है। यह प्रवृत्ति न केवल उत्पादन लागत घटाती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन कम करने में भी सहायक है, जो वर्तमान वैश्विक मांग है।

74. (1) स्टटगार्ट
जर्मनी का स्टटगार्ट शहर विश्व के दो सबसे प्रतिष्ठित विलासी कार ब्रांडों, मर्सिडीज-बेंज और पोर्श का वैश्विक मुख्यालय और मुख्य विनिर्माण केंद्र है। यह शहर मोटर वाहन इंजीनियरिंग और नवाचार का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ का कुशल श्रम बल और उन्नत तकनीकी अवसंरचना इसे मोटर वाहन जगत में एक अग्रणी स्थान प्रदान करती है। जर्मनी की आर्थिक शक्ति और विनिर्माण उत्कृष्टता में स्टटगार्ट का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रूप से अद्वितीय रहा है।

75. (4) स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों और अनुसंधान संस्थानों की स्थापना।
बेंगलुरु के सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र बनने की नींव स्वतंत्रता के पश्चात रखी गई थी जब यहाँ हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स और इसरो जैसे बड़े सार्वजनिक संस्थान स्थापित हुए। इन संस्थानों ने तकनीकी प्रतिभा का एक सशक्त आधार निर्मित किया। इसके पश्चात शैक्षिक संस्थानों और अनुकूल सरकारी नीतियों ने एक ऐसा वातावरण तैयार किया जिसने निजी सॉफ्टवेयर कंपनियों को आकर्षित किया। इस प्रकार, पूर्व से उपस्थित सुदृढ़ इंजीनियरिंग पारिस्थितिकी तंत्र ने बेंगलुरु को तकनीकी क्रांति का केंद्र बनाया।

76. (2) कच्चा तेल प्राप्त करने और उत्पादों को वितरित करने के लिए तटीय बाजार या बंदरगाह के पास।
आधुनिक तेल शोधनशालाओं के लिए सबसे उपयुक्त स्थान तटीय बाजार या बंदरगाह के निकट होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बड़े टैंकरों के माध्यम से कच्चा तेल समुद्र के मार्ग से मंगाना सस्ता पड़ता है। इसके अतिरिक्त, शोधनशाला का बाजार के निकट होना तैयार उत्पादों जैसे पेट्रोल और डीजल के वितरण व्यय को कम करता है। रेगिस्तानी या पहाड़ी क्षेत्रों की तुलना में बंदरगाहों की पहुंच वैश्विक व्यापार और स्थानीय मांग को संतुलित करने में सर्वाधिक सहायक होती है।

77. (3) यूरोपीय औद्योगिक पट्टी ने आयात के पक्ष में सभी विनिर्माण छोड़ दिए हैं।
यह कथन पूर्णतः गलत है कि यूरोपीय औद्योगिक पट्टी ने संपूर्ण विनिर्माण त्याग दिया है। यद्यपि कुछ पारंपरिक भारी उद्योगों में न्यूनता आई है, लेकिन यूरोप आज भी उच्च तकनीकी विनिर्माण, मोटर वाहन, विमानन और रसायनों का एक वैश्विक केंद्र बना हुआ है। जर्मनी, फ्रांस और नीदरलैंड जैसे देश आधुनिक इंजीनियरिंग में अग्रणी हैं। अन्य विकल्प सत्य हैं क्योंकि एशिया अब इलेक्ट्रॉनिक्स का केंद्र है और तटीय क्षेत्रों में उद्योगों का संकेंद्रण वैश्विक प्रवृत्ति है।

78. (4) ओसाका
जापान के ओसाका शहर को इसकी ऐतिहासिक सूती वस्त्र मिलों के विशाल नेटवर्क के कारण "पूरब का मैनचेस्टर" कहा जाता है। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान यह शहर वस्त्र उत्पादन और व्यापार का एशिया में एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र था। इसकी तटीय अवस्थिति ने कच्चे कपास के आयात और तैयार धागे तथा वस्त्रों के निर्यात को सुगम बनाया। यद्यपि आज यहाँ उद्योगों का विविधीकरण हुआ है, लेकिन वस्त्र उद्योग में इसकी ऐतिहासिक प्रतिष्ठा आज भी अद्वितीय है।

79. (1) सिलिकॉन वैली - न्यूयॉर्क, यूएसए
सिलिकॉन वैली और न्यूयॉर्क का युग्म त्रुटिपूर्ण है क्योंकि प्रसिद्ध सिलिकॉन वैली वास्तव में संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में स्थित है, न कि न्यूयॉर्क में। सिलिकॉन वैली सैन फ्रांसिस्को खाड़ी क्षेत्र का हिस्सा है और तकनीकी नवाचार के लिए वैश्विक स्तर पर विख्यात है। अन्य सभी युग्म सही हैं: बेंगलुरु कर्नाटक में सूचना प्रौद्योगिकी का केंद्र है और शेन्ज़ेन चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में स्थित है। न्यूयॉर्क एक वित्तीय केंद्र है, जबकि सिलिकॉन वैली तकनीकी क्षेत्र का नेतृत्व करती है।

80. (2) बाजार शहर के नीचे पाए जाने वाले भूगर्भीय आधारशिला का प्रकार
औद्योगिक अवस्थिति के लिए बाजार का विश्लेषण करते समय जनसंख्या का आकार, उनका घनत्व और उनकी क्रय शक्ति सबसे महत्वपूर्ण कारक होते हैं। ये कारक निर्धारित करते हैं कि उत्पाद की मांग कितनी होगी और परिवहन संपर्क उस मांग को कैसे पूर्ण करेगा। इसके विपरीत, बाजार क्षेत्र की भूगर्भीय आधारशिला या चट्टानों के प्रकार का उत्पादों की बिक्री या उपभोक्ता व्यवहार पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए इसे बाजार विश्लेषण का घटक नहीं माना जाता।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 06
विश्व परिवहन नेटवर्क

1. निम्नलिखित में से कौन सा किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में एक सुविकसित परिवहन जाल की मौलिक भूमिका का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
   (1) यह मुख्य रूप से आयात को सुगम बनाकर स्थानीय औद्योगिक उत्पादन की आवश्यकता को कम करता है।
   (2) यह उत्पादन के क्षेत्रों को उपभोग के क्षेत्रों से जोड़कर स्थान उपयोगिता का सृजन करता है।
   (3) यह सभी भौगोलिक क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करता है।
   (4) यह सस्ते भूमि माल ढुलाई विकल्प प्रदान करके पाइपलाइन जाल की आवश्यकता को प्रतिस्थापित करता है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

2. आर्थिक विकास और परिवहन अवसंरचना के बीच संबंध के विषय में सही कथन की पहचान करें।
   (1) परिवहन अवसंरचना कच्चे माल और वस्तुओं के कुशल आवागमन के माध्यम से लागत को कम करती है।
   (2) आर्थिक विकास विशेष रूप से अंतर्देशीय जलमार्गों के विस्तार पर निर्भर है।
   (3) आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप माल ढुलाई के लिए सड़क परिवहन की हिस्सेदारी में कमी आती है।
   (4) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पूर्णतः रेलवे जाल पर निर्भर करता है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

3. निम्नलिखित में से कौन सा परिवहन साधन उच्चतम लचीलापन प्रदान करता है और कम दूरी पर द्वार-से-द्वार सेवा प्रदान करता है?
   (1) रेल परिवहन
   (2) समुद्री परिवहन
   (3) सड़क परिवहन
   (4) पाइपलाइन परिवहन
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

4. प्रमुख बाजार केंद्रों से दूर स्थित कृषि क्षेत्रों पर उच्च परिवहन लागत का प्राथमिक आर्थिक प्रभाव क्या होता है?
   (1) इससे कृषि पद्धतियों का तत्काल त्याग कर दिया जाता है।
   (2) यह केवल स्थानीय उपभोग के लिए भारी और कम मूल्य वाली फसलों की खेती को बढ़ावा देता है।
   (3) यह सरकार को कृषि वस्तुओं के लिए हवाई परिवहन को आर्थिक सहायता देने के लिए बाध्य करता है।
   (4) यह किसानों को उच्च मूल्य वाली और शीघ्र नष्ट न होने वाली फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

5. सूची I में दिए गए परिवहन साधनों को सूची II में उनकी प्रमुख आर्थिक विशेषताओं के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
   सूची I: (परिवहन साधन)
   A. सड़क परिवहन
   B. रेल परिवहन
   C. जल परिवहन
   D. वायु परिवहन
   सूची II: (प्रमुख आर्थिक विशेषता)
   i. लंबी दूरी पर भारी और स्थूल सामान के लिए आदर्श
   ii. कम दूरी पर द्वार-से-द्वार सेवा प्रदान करता है
   iii. उच्च मूल्य वाली और शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं के लिए सबसे उपयुक्त
   iv. अंतरराष्ट्रीय थोक माल ढुलाई के लिए सबसे सस्ता साधन
   (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
   (2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
   (3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

6. किस क्षेत्र में विश्व का सबसे सघन और व्यापक सड़क जाल है, जो वैश्विक कुल सड़क लंबाई का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है?
   (1) पश्चिमी यूरोप
   (2) उत्तरी अमेरिका
   (3) दक्षिण एशिया
   (4) पूर्वी एशिया
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

7. वैश्विक सड़क जाल के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
   (1) विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में पक्की सड़कों का घनत्व अधिक है।
   (2) लंबी दूरी की थोक माल ढुलाई के लिए सड़क परिवहन सामान्यतः जल परिवहन की तुलना में अधिक महंगा होता है।
   (3) स्थलाकृति वैश्विक सड़क जाल के घनत्व और संरेखण को भारी रूप से प्रभावित करती है।
   (4) कच्ची सड़कें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक प्रभावी बारहमासी परिवहन समाधान प्रदान करती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. वैश्विक सड़क जाल के महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. वे रेलवे और प्रमुख बंदरगाहों के लिए आवश्यक पूरक जाल के रूप में कार्य करते हैं।
II. वे अंतरराष्ट्रीय महासागरीय व्यापार के लिए परिवहन का सबसे प्रमुख साधन हैं।
III. वे मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था में दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों के एकीकरण की सुविधा प्रदान करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: कम दूरी की माल ढुलाई के लिए सड़क परिवहन रेल परिवहन की तुलना में आर्थिक रूप से बेहतर है।
कथन II: रेलवे की तुलना में सड़क परिवहन में प्रारंभिक टर्मिनल लागत और प्रबंधन शुल्क कम होता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): विकासशील देशों में सड़क परिवहन जाल को प्रायः मानसून के मौसम के दौरान व्यवधानों का सामना करना पड़ता है।
कारण (R): विकासशील देशों में सड़क जाल का एक बड़ा प्रतिशत कच्ची या बिना सतह वाली सड़कों का है जो मौसमी क्षति के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. पैन-अमेरिकन राजमार्ग को अमेरिका की मुख्य भूमि में विस्तारित सड़कों के जाल के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका प्राथमिक भौगोलिक उद्देश्य क्या है?
(1) अमेरिका के अटलांटिक तट को प्रशांत तट से जोड़ना।
(2) विशेष रूप से कैरेबियन सागर के प्रमुख बंदरगाहों को जोड़ना।
(3) पनामा नहर के समानांतर परिवहन मार्ग प्रदान करना।
(4) पूरे अमेरिका को जोड़ने वाला एक निर्बाध भूमि मार्ग बनाना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग मुख्य रूप से रूस के पश्चिमी भागों को रूसी सुदूर पूर्व के किस प्रमुख गंतव्य से जोड़ता है?
(1) मरमंस्क
(2) व्लादिवोस्तोक
(3) मगदान
(4) नोवोसिबिर्स्क
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

13. निम्नलिखित में से कौन सा एक महत्वपूर्ण भौगोलिक और ढांचागत अपवाद है जहाँ पैन-अमेरिकन राजमार्ग अधूरा है?
(1) अटाकामा मरुस्थल क्षेत्र
(2) रॉकी पर्वत श्रृंखला
(3) डेरियन अंतराल खंड
(4) अमेज़न वर्षावन क्षेत्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. पैन-अमेरिकन और ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. पैन-अमेरिकन राजमार्ग अलास्का के प्रूडो बे से अर्जेंटीना के उशुआइया तक फैला हुआ है।
II. ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग विश्व के सबसे लंबे राष्ट्रीय राजमार्गों में से एक है, जो यूरेशिया महाद्वीप में फैला हुआ है।
III. पैन-अमेरिकन राजमार्ग अपनी पूरी निर्धारित लंबाई में पूरी तरह से पक्का और निर्बाध है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. पैन-अमेरिकन राजमार्ग प्रणाली के सीमावर्ती बिंदुओं का प्रतिनिधित्व करने वाले सही जोड़े की पहचान करें।
(1) प्रूडो बे और उशुआइया
(2) एंकोरेज और केप हॉर्न
(3) वैंकूवर और ब्यूनस आयर्स
(4) फेयरबैंक्स और सैंटियागो
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. सूची I में प्रमुख राजमार्ग जालों को सूची II में उनके संबद्ध क्षेत्रों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (प्रमुख राजमार्ग/सड़क जाल)

A. पैन-अमेरिकन राजमार्ग
B. ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग
C. स्टुअर्ट राजमार्ग
D. ट्रांस-कनाडा राजमार्ग

सूची II: (संबद्ध क्षेत्र/देश)

i. एक उत्तरी अमेरिकी देश के अटलांटिक और प्रशांत तटों को जोड़ता है
ii. उत्तरी क्षेत्र को दक्षिण ऑस्ट्रेलिया से जोड़ता है
iii. उत्तर, मध्य और दक्षिण अमेरिका को जोड़ता है
iv. बाल्टिक क्षेत्र से प्रशांत महासागर तक फैला है

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. वैश्विक रेलवे गेज के मानक वर्गीकरण के आधार पर, विषम की पहचान करें।

(1) ब्रॉड गेज (बड़ी लाइन)
(2) पाइपलाइन गेज
(3) स्टैंडर्ड गेज
(4) मीटर गेज
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. रेलवे के वैश्विक वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. यूरोप में विश्व में प्रति इकाई क्षेत्र में रेलवे जाल का घनत्व सबसे अधिक है।
II. उत्तरी अमेरिका में, रेलवे जाल का उपयोग मुख्य रूप से यात्री यातायात के बजाय थोक माल परिवहन के लिए किया जाता है।
III. उन्नत अभियांत्रिकी क्षमताओं के कारण अमेज़न बेसिन में रेलवे घनत्व बहुत अधिक है।
IV. अफ्रीका का रेलवे जाल ज्यादातर दक्षिण अफ्रीका, अल्जीरिया और मिस्र में केंद्रित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल III
(2) I और II
(3) II और IV
(4) III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. अपने क्षेत्रीय आकार के संबंध में विश्व में सबसे अधिक रेलवे घनत्व किस देश में है?

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका
(2) भारत
(3) बेल्जियम
(4) रूस
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के आंतरिक क्षेत्रों में अत्यधिक एकीकृत और सघन महाद्वीपीय रेलवे जाल हैं।

कथन II: अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में औपनिवेशिक काल की रेलवे सामान्यतः आंतरिक संसाधन निष्कर्षण क्षेत्रों को सीधे तटीय बंदरगाहों से जोड़ने के लिए बनाई गई थी।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. ऑस्ट्रेलिया के रेलवे जाल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) यह मध्य और पश्चिमी रेगिस्तानों में समान रूप से वितरित है।
(2) इसमें डार्विन को पर्थ से जोड़ने वाली एक उत्तर-दक्षिण रेखा शामिल है।
(3) यह मुख्य रूप से पूर्वी तटीय क्षेत्रों में केंद्रित है।
(4) यह महाद्वीप के लिए एक एकल एकीकृत गेज प्रणाली पर निर्भर करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. ट्रांस-साइबेरियन रेलवे को वैश्विक स्तर पर विश्व की सबसे लंबी निरंतर रेलवे लाइन के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसके अंत्य स्टेशन कौन से हैं?

(1) सेंट पीटर्सबर्ग और बीजिंग
(2) मास्को और व्लादिवोस्तोक
(3) मास्को और इरकुत्स्क
(4) कीव और मगदान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के निम्नलिखित प्रमुख स्टेशनों को पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. चिता
II. ओम्स्क
III. मास्को
IV. व्लादिवोस्तोक
V. इरकुत्स्क

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:

(1) III, II, V, I, IV
(2) III, V, II, I, IV
(3) II, III, I, V, IV
(4) III, II, I, V, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. ट्रांस-साइबेरियन रेलवे ने रूस के एशियाई क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निम्नलिखित में से

Click Here to Buy book on Amazon

किसका इस मार्ग के माध्यम से यूरोपीय बाजारों में मुख्य रुप से परिवहन नहीं किया जाता है?
(1) उष्णकटिबंधीय नकदी फसलें
(2) इमारती लकड़ी
(3) मशीनरी और औद्योगिक सामान
(4) कोयला और खनिज
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. ट्रांस-साइबेरियन रेलवे की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह एक दोहरी पटरी वाली और पूर्णतः विद्युतीकृत पार-महाद्वीपीय रेलवे लाइन है।
II. यह यूराल पर्वत और ओब, येनिसेई और अमूर नदी प्रणालियों से होकर गुजरती है।
III. यह मुख्य रुप से साइबेरियाई क्षेत्र के दक्षिणी आबादी वाले किनारे से होकर गुजरती है।
IV. यह चिता शहर को छोड़ती है और ट्रांस-मंचूरियन लाइन से नहीं जुड़ती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, III और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. निम्नलिखित में से कौन सा 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के निर्माण के भू-राजनीतिक और आर्थिक कारण की सर्वोत्तम व्याख्या करता है?
(1) साइबेरियाई संसाधनों को यूरोपीय बाजारों और सीमाओं से जोड़ना।
(2) यूरोपीय शक्तियों के विरुद्ध तीव्र सैन्य तैनाती की सुविधा प्रदान करना।
(3) प्रशांत महासागर के पर्यटकों के लिए एक समर्पित यात्री मार्ग बनाना।
(4) रूसी कृषि उत्पादों को उत्तरी अमेरिका में निर्यात करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. ट्रांस-साइबेरियन रेलवे उलान उडे में एक अन्य प्रमुख पार-महाद्वीपीय रेल प्रणाली से जुड़ती है, जो बीजिंग के लिए सीधा मार्ग प्रदान करती है। इस जोड़ने वाली रेलवे का नाम क्या है?
(1) ट्रांस-कैस्पियन रेलवे
(2) बैकाल-अमूर मेनलाइन
(3) मध्य एशियाई रेलवे
(4) ट्रांस-मंगोलियाई रेलवे
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. उत्तरी अमेरिकी परिवहन भूगोल के संदर्भ में, 19वीं शताब्दी में निर्मित पार-महाद्वीपीय रेलवे जाल का प्राथमिक आर्थिक महत्व क्या है?
(1) प्रमुख शहरों के बीच दैनिक यात्री आवाजाही को सुगम बनाना।
(2) आंतरिक भागों को बसाना और कृषि को उद्योग से जोड़ना।
(3) अमेरिका और कनाडा के बीच सैन्य उपकरणों का परिवहन करना।
(4) ग्रेट लेक्स जलमार्ग प्रणाली की आवश्यकता को समाप्त करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

29. सूची I में उत्तरी अमेरिकी रेलवे जाल को सूची II में उनके अंत्य बिंदुओं के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (उत्तरी अमेरिकी रेलवे जाल)
A. यूनियन पैसिफिक रेलवे
B. कैनेडियन पैसिफिक रेलवे
C. कैनेडियन नेशनल रेलवे
सूची II: (अंत्य बिंदु)
i. मॉन्ट्रियल से वैंकूवर
ii. ओमाहा से सैन फ्रांसिस्को
iii. हैलिफ़ैक्स से प्रिंस रुपर्ट
iv. न्यूयॉर्क से मियामी
(1) A-i, B-ii, C-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i
(3) A-ii, B-i, C-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. यूनियन पैसिफिक रेलवे पूर्व में ओमाहा को प्रशांत तट के किस प्रमुख शहर से जोड़ती है?
(1) सिएटल
(2) लॉस एंजिल्स
(3) वैंकूवर
(4) सैन फ्रांसिस्को
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. उत्तरी अमेरिका में पार-महाद्वीपीय रेलवे जाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. कैनेडियन पैसिफिक रेलवे मॉन्ट्रियल को वैंकूवर से जोड़ती है।
II. यूनियन पैसिफिक रेलवे ओमाहा को सैन फ्रांसिस्को से जोड़ती है।
III. उत्तरी अमेरिकी रेलवे का उपयोग लंबी दूरी के थोक माल परिवहन के लिए किया जाता है।
IV. आंतरिक महाद्वीपीय क्षेत्रों के आर्थिक एकीकरण में रेलवे जाल सहायक थे।
V. उत्तरी अमेरिका का सघन रेलवे जाल विश्व की कुल रेलवे लंबाई के एक महत्वपूर्ण हिस्से के लिए उत्तरदायी है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V

(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. उत्तरी अमेरिकी रेलवे प्रणाली के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) यह मुख्य रूप से मानक गेज पटरी प्रणाली पर संचालित होती है।
(2) अधिकांश रेलवे राजस्व यात्री परिवहन से उत्पन्न होता है।
(3) पूर्वी-मध्य अमेरिका में रेलवे घनत्व सबसे अधिक है।
(4) सड़क परिवहन और अंतर्देशीय जलमार्ग प्रतिस्पर्धा प्रदान करते हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: कैनेडियन पैसिफिक रेलवे का निर्माण ब्रिटिश कोलंबिया को कनाडाई परिसंघ में एकीकृत करने के राजनीतिक वादे को पूरा करने के लिए किया गया था।
कथन II: कैनेडियन पैसिफिक रेलवे मॉन्ट्रियल के औद्योगिक क्षेत्र और कृषि प्रेयरी से होकर गुजरती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. यूरोपीय रेल जाल में चैनल सुरंग शामिल है, जो एक पानी के नीचे की रेलवे सुरंग है, यह किन दो देशों को जोड़ती है?
(1) यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस
(2) फ्रांस और स्पेन
(3) जर्मनी और डेनमार्क
(4) इटली और स्विट्ज़रलैंड
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. यूरोपीय रेल जाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यूरोप में विश्व के सबसे सघन रेलवे जालों में से एक है।
II. यह जाल उच्च गति रेल प्रणालियों के व्यापक रूप से अपनाए जाने की विशेषता रखता है।
III. अधिकांश यूरोपीय रेलवे निजी स्वामित्व में हैं जिनमें राज्य की कोई भागीदारी नहीं है।
IV. उत्तरी अमेरिका की तुलना में यूरोप में रेलवे यातायात में यात्री परिवहन का अनुपात अधिक है।
V. फ्रांस में टीजीवी यूरोपीय उच्च गति रेल प्रणाली का एक प्रमुख उदाहरण है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) II, III, IV और V
(3) I, II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. यूरोप में उच्च गति रेल प्रणाली और उसके मूल देश के सही जोड़े की पहचान करें।
(1) आईसीई - फ्रांस
(2) टीजीवी - जर्मनी
(3) यूरोस्टार - इटली
(4) एवीई - स्पेन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): यूरोप में अत्यधिक सघन और व्यापक रूप से विद्युतीकृत रेलवे जाल है।
कारण (R): यह क्षेत्र उच्च जनसंख्या घनत्व, तीव्र औद्योगीकरण और प्रमुख शहरी केंद्रों के बीच कम भौगोलिक दूरी की विशेषता रखता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. पिछले कुछ दशकों में पश्चिमी यूरोप में उच्च गति यात्री रेल प्रणालियों (जैसे टीजीवी और यूरोस्टार) की सफलता और विस्तार का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) पूरे महाद्वीप में घरेलू हवाई यात्रा पर प्रतिबंध।
(2) शहर के केंद्रों के बीच कम दूरी की उड़ानों के साथ प्रतिस्पर्धा।
(3) लंबी दूरी की बसों की तुलना में काफी कम लागत।
(4) राजमार्ग निर्माण के लिए यूरोपीय भूभाग की अनुपयुक्तता।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. सूची I में अंतर्देशीय जलमार्गों को सूची II में उनके भौगोलिक स्थानों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (अंतर्देशीय जलमार्ग)
A. सेंट लॉरेंस सीवे
B. राइन जलमार्ग
C. वोल्गा जलमार्ग
D. यांग्त्ज़ी जलमार्ग
सूची II: (भौगोलिक स्थान)
i. यूरोप
ii. रूस
iii. उत्तरी अमेरिका
iv. चीन
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv

Downloaded from www.pdf.tube

(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. ग्रेट लेक्स - सेंट लॉरेंस सीवे प्रणाली एक महत्वपूर्ण अंतर्देशीय परिवहन मार्ग है। यह उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक केंद्र को किस प्रमुख जल निकाय से जोड़ता है?
(1) अटलांटिक महासागर
(2) प्रशांत महासागर
(3) मैक्सिको की खाड़ी
(4) आर्कटिक महासागर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. परिवहन मार्ग के रूप में अंतर्देशीय जलमार्गों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) वे नदी के जल की गहराई और नियमित प्रवाह पर भारी रूप से निर्भर हैं।
(2) सर्दियों के दौरान जमने वाली नदी प्रणालियां निरंतर नौवहन को प्रतिबंधित करती हैं।
(3) वे भारी और कम मूल्य वाले माल के लिए परिवहन का सबसे महंगा साधन हैं।
(4) तलकर्षण और नहरीकरण जैसे संशोधन प्राकृतिक जलमार्गों की नौगम्यता को बढ़ाते हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. निम्नलिखित अंतर्देशीय जलमार्गों को उनके सामान्य वाणिज्यिक महत्व और वैश्विक स्तर पर माल यातायात की मात्रा के अनुसार सही अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. राइन जलमार्ग
II. अमेज़न नदी
III. वोल्गा नदी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनें:
(1) I, III, II
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) I, II, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: नहरें नौवहन और सिंचाई के लिए उपयोग किए जाने वाले निर्मित कृत्रिम जलमार्ग हैं, जो प्रायः नौगम्य नदियों या झीलों को जोड़ते हैं।
कथन II: यदि नहर असमान भूभाग से होकर गुजरती है, तो नहर प्रणालियों में लॉक का निर्माण पूर्णतः अनावश्यक है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राइन जलमार्ग विश्व में सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला अंतर्देशीय जलमार्ग है।
कारण (R): यह पश्चिमी यूरोप के अत्यधिक औद्योगिक और घनी आबादी वाले क्षेत्रों से होकर बहता है, जो रुहर क्षेत्र को रॉटरडैम बंदरगाह से जोड़ता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. मिसिसिपी नदी प्रणाली, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में एक व्यापक अंतर्देशीय जलमार्ग है, मुख्य रूप से किसके तट पर स्थित औद्योगिक बंदरगाहों की ओर दक्षिण की ओर परिवहन की सुविधा प्रदान करती है:
(1) अटलांटिक महासागर
(2) प्रशांत महासागर
(3) मैक्सिको की खाड़ी
(4) हडसन की खाड़ी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. राइन जलमार्ग कई यूरोपीय देशों के लिए एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक धमनी बनाता है। निम्नलिखित में से किस देश से राइन नदी नहीं बहती है या उसके लिए सीमा नहीं बनाती है?
(1) स्विट्ज़रलैंड
(2) जर्मनी
(3) नीदरलैंड
(4) इटली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. विसर्जन आयतन के मामले में विश्व की सबसे बड़ी नदी प्रणाली होने के बावजूद, अंतर्देशीय जलमार्ग के रूप में अमेज़न नदी का वाणिज्यिक महत्व वैश्विक स्तर पर सीमित है। इसका प्राथमिक वैचारिक कारण क्या है?
(1) यह सीमित औद्योगिक गतिविधियों वाले कम आबादी वाले, घने उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से होकर बहती है।
(2) नदी अपने पूरे मार्ग में नौवहन के लिए बहुत उथली है।
(3) मुहाने के पास कई जलप्रपातों की उपस्थिति समुद्र में जाने वाले जहाजों को प्रवेश करने से रोकती है।
(4) नदी वर्ष में छह महीने से अधिक समय तक जमी रहती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

48. सूची I में प्रमुख नदियों को सूची II में उनकी प्रमुख भौगोलिक या परिवहन विशेषताओं के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

सूची I: (प्रमुख नदी)
A. राइन
B. मिसिसिपी
C. अमेज़न
D. वोल्गा

सूची II: (प्रमुख भौगोलिक/परिवहन विशेषता)
i. कैस्पियन सागर में गिरती है
ii. अमेरिकी मिडवेस्ट को मैक्सिको की खाड़ी से जोड़ती है
iii. मनौस तक समुद्र में जाने वाले जहाजों द्वारा नौगम्य है, किंतु औद्योगिक पश्चभूमि का अभाव है
iv. रॉटरडैम के बंदरगाह पर समाप्त होती है, जो यूरोप की प्राथमिक औद्योगिक धमनी के रूप में कार्य करती है

(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. रुहर औद्योगिक क्षेत्र, जो विश्व के सबसे ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण कोयला और इस्पात केंद्रों में से एक है, अपने थोक परिवहन के लिए किस जलमार्ग पर भारी निर्भर है?
(1) डेन्यूब
(2) राइन
(3) टेम्स
(4) सीन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. स्वेज नहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ती है।
II. इसके अंत्य बिंदुओं के बीच समुद्र के स्तर में अंतर के कारण यह एक लॉक-आधारित नहर प्रणाली है।
III. इसके निर्माण ने यूरोप और एशिया के बीच समुद्री मार्ग की दूरी को काफी कम कर दिया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल II
(2) केवल I
(3) I और III
(4) II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. पनामा नहर में एक जटिल लॉक प्रणाली है। कौन सी झील नहर प्रणाली का मध्य भाग बनाती है, जिसके कारण महाद्वीपीय विभाजन को पार करने के लिए जहाजों को ऊपर उठाने की आवश्यकता होती है?
(1) निकारागुआ झील
(2) विक्टोरिया झील
(3) गतुन झील
(4) माराकाइबो झील
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. कील नहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह जर्मनी में स्थित है।
II. यह उत्तरी सागर को बाल्टिक सागर से जोड़ती है।
III. यह जटलैंड प्रायद्वीप के चारों ओर की खतरनाक यात्रा से बचकर एक छोटा मार्ग सुलभ कराती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. स्वेज नहर को लॉक प्रणाली के उपयोग के बिना समुद्र-स्तरीय नहर के रूप में क्यों बनाया गया था, इसका प्राथमिक कारण क्या है?
(1) ऐतिहासिक अभियंताओं के पास लॉक बनाने की तकनीक का अभाव था।
(2) सरकार को विद्युत उत्पन्न करने के लिए तीव्र जल की आवश्यकता थी।
(3) भूभाग समतल है और समुद्र का स्तर लगभग समान है।
(4) नहर एक प्राकृतिक जलडमरूमध्य का अनुसरण करती है जिसे केवल चौड़ा किया गया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. सूची I में प्रमुख नहरों को सूची II में उनके द्वारा जोड़े जाने वाले जल निकायों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

सूची I: (प्रमुख नहर)
A. स्वेज नहर
B. पनामा नहर
C. कील नहर
D. कोरिंथ नहर

सूची II: (जुड़े हुए जल निकाय)
i. अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर
ii. भूमध्य सागर और लाल सागर
iii. कोरिंथ की खाड़ी और सरोनिक खाड़ी
iv. उत्तरी सागर और बाल्टिक सागर

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. स्वेज और पनामा नहरों की तुलना करने वाले गलत कथन की पहचान करें।
(1) स्वेज नहर पनामा नहर की तुलना में अधिक व्यापार संभालती है।
(2) पनामा नहर लॉक प्रणाली का उपयोग करती है जबकि स्वेज समुद्र-स्तरीय है।

Click Here to Buy book on Amazon

(3) दोनों नहरें वैश्विक जाल में महत्वपूर्ण चोकपॉइंट के रुप में कार्य करती हैं।
(4) स्वेज महासागरों को जोड़ती है जबकि पनामा सागरों को जोड़ती है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. स्वेज नहर के ऐतिहासिक प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) 1956 में मिस्र द्वारा इसका राष्ट्रीयकरण किया गया था, जिससे स्वेज संकट पैदा हो गया था।
(2) इसका निर्माण मूल रुप से किया गया था और विशेष रुप से संयुक्त राज्य सरकार के स्वामित्व में था।
(3) 1869 में इसके खुलने के बाद से इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रशासित किया गया है।
(4) यह आज भी एक संयुक्त ब्रिटिश-फ्रांसीसी निगम के प्रशासनिक नियंत्रण में है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. भूमि आधारित रेल या सड़क जाल की तुलना में महासागरीय परिवहन मार्गों का एक प्रमुख भौगोलिक लाभ क्या है?
(1) अत्यधिक शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं के लिए तीव्र बिंदु-दर-बिंदु आपूर्ति।
(2) चरम मौसम और जलवायु परिवर्तनों से पूर्ण सुरक्षा।
(3) मार्गों के निर्माण या रखरखाव के लिए कोई पूंजीगत लागत नहीं।
(4) सभी भू-आबद्ध देशों तक सीधी द्वार-से-द्वार पहुंच।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प पारंपरिक वाणिज्यिक समुद्री माल यातायात मात्रा के मामले में विश्व के प्रमुख महासागरों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(1) प्रशांत महासागर, हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर
(2) अटलांटिक महासागर, प्रशांत महासागर, हिंद महासागर
(3) हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, प्रशांत महासागर
(4) अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: केप ऑफ गुड होप समुद्री मार्ग ने स्वेज नहर के खुलने के बाद कुल समुद्री यातायात में एक महत्वपूर्ण स्थाई गिरावट का अनुभव किया।
कथन II: कच्चे तेल का परिवहन करने वाले आधुनिक सुपरटैंकर प्राय: स्वेज नहर के आयामी और ड्राफ्ट प्रतिबंधों से बचने के लिए केप ऑफ गुड होप मार्ग का उपयोग करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

60. प्रमुख महासागरीय मार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उत्तरी अटलांटिक मार्ग पश्चिमी यूरोप और पूर्वी उत्तरी अमेरिका के अत्यधिक औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ता है।
II. भूमध्य सागर-हिंद महासागर मार्ग यूरोप को दक्षिण और पूर्वी एशिया से जोड़ने वाले प्राथमिक समुद्री मार्ग के रुप में कार्य करता है।
III. दक्षिण अटलांटिक मार्ग मुख्य रुप से पश्चिमी यूरोप को ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे दक्षिण अमेरिकी देशों से जोड़ता है।
IV. उत्तरी प्रशांत मार्ग उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट को पूर्वी एशिया से जोड़ता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. भूमध्य सागर-हिंद महासागर समुद्री मार्ग कई रणनीतिक समुद्री चोकपॉइंट्स से होकर गुजरता है। निम्नलिखित में से कौन सा इन चोकपॉइंट्स में से एक नहीं है?
(1) जिब्राल्टर जलडमरुमध्य
(2) बाब अल-मंडेब
(3) होर्मुज जलडमरुमध्य
(4) स्वेज नहर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. उत्तरी अटलांटिक महासागर मार्ग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह ऐतिहासिक रुप से विश्व के सबसे व्यस्त महासागरीय व्यापार मार्ग के रुप में जाना जाता है।
II. विश्व के विदेशी व्यापार का एक-चौथाई हिस्सा इसी मार्ग से होता है।
III. इस मार्ग से जुड़े दोनों तटों पर अत्यधिक उन्नत बंदरगाह सुविधाएं और प्राकृतिक बंदरगाह हैं।
IV. इस मार्ग का उपयोग मध्य पूर्व से जापान तक कच्चे तेल के परिवहन के लिए भारी रुप से किया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) III और IV
(4) केवल IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. वैश्विक स्तर पर उत्तरी अटलांटिक मार्ग के सबसे व्यस्त महासागरीय व्यापार मार्ग होने का प्राथमिक आर्थिक कारण क्या है?
(1) यह दो सबसे अधिक औद्योगिक रुप से विकसित वैश्विक

क्षेत्रों को जोड़ता है।
(2) यह गोलार्द्धों के बीच सबसे कम दूरी प्रदान करता है।
(3) यह साल भर हिमशैल से पूर्णतः मुक्त रहने वाला एकमात्र मार्ग है।
(4) यह सभी अफ्रीकी निर्यातों के लिए विशेष पारगमन के रूप में कार्य करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख वैश्विक बंदरगाह मुख्य रूप से उत्तरी अटलांटिक व्यापार मार्ग पर संचालित नहीं होता है या उसे सीधे सेवा नहीं देता है?
(1) न्यूयॉर्क
(2) सिंगापुर
(3) रॉटरडैम
(4) लंदन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प स्वेज नहर के माध्यम से लंदन से मुंबई तक की मानक समुद्री यात्रा में आने वाले प्रमुख बंदरगाहों के सही भौगोलिक क्रम को दर्शाता है?
(1) पोर्ट सईद, जिब्राल्टर, अदन, मुंबई
(2) जिब्राल्टर, पोर्ट सईद, अदन, मुंबई
(3) जिब्राल्टर, अदन, पोर्ट सईद, मुंबई
(4) अदन, जिब्राल्टर, पोर्ट सईद, मुंबई
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. ग्रैंड बैंक, जो अपने व्यापक मत्स्य पालन क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध है, किस प्रमुख महासागरीय मार्ग के किनारे स्थित एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता है?
(1) उत्तरी अटलांटिक मार्ग
(2) दक्षिण अटलांटिक मार्ग
(3) उत्तरी प्रशांत मार्ग
(4) भूमध्य सागर-हिंद महासागर मार्ग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. वैश्विक परिवहन जाल के संदर्भ में, एन्ट्रिपो बंदरगाह को क्या परिभाषित करता है?
(1) विशेष रूप से नौसेना और सैन्य जहाजों के लिए उपयोग किया जाने वाला बंदरगाह।
(2) कच्चे खनिजों के थोक निर्यात में विशेषज्ञता रखने वाला बंदरगाह।
(3) एक केंद्र जहाँ माल का आयात किया जाता है, संग्रहित किया जाता है और पुनः निर्यात किया जाता है।
(4) एक टर्मिनल जो केवल बड़े यात्री क्रूज जहाजों को स्वीकार करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. सूची I में प्रमुख बंदरगाहों को सूची II में उनके भौगोलिक स्थानों या देशों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (प्रमुख बंदरगाह)
A. रॉटरडैम
B. सिंगापुर
C. शंघाई
D. मुंबई
सूची II: (भौगोलिक स्थान/देश)
i. चीन
ii. भारत
iii. नीदरलैंड
iv. दक्षिण पूर्व एशिया
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

69. विश्व के प्रमुख बंदरगाह की विशिष्ट विशेषता के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) रॉटरडैम - राइन नदी के मुहाने पर स्थित है।
(2) सिंगापुर - एक प्रमुख वैश्विक एन्ट्रिपो और समुद्री चोकपॉइंट के रूप में कार्य करता है।
(3) मुंबई - मुख्य रूप से अंतर्देशीय क्षेत्र में गहराई में स्थित एक नदीय बंदरगाह है।
(4) शंघाई - यांग्त्ज़ी नदी के मुहाने पर स्थित है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. सिंगापुर के बंदरगाह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है।
II. यह रणनीतिक मलक्का जलडमरूमध्य की निगरानी करता है।
III. यह विश्व के अग्रणी एन्ट्रिपो बंदरगाहों में से एक के रूप में कार्य करता है।
IV. यह हिंद महासागर को दक्षिण चीन सागर से जोड़ता है।
V. यह नगण्य अंतरराष्ट्रीय ट्रांसशिपमेंट के साथ विशेष रूप से घरेलू माल संभालता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. मुंबई या रॉटरडैम जैसे प्रमुख बंदरगाह की आर्थिक व्यवहार्यता इसकी पश्चभूमि पर भारी निर्भर करती है। परिवहन भूगोल में, पश्चभूमि किसे संदर्भित करती है?
(1) बंदरगाह में प्रवेश के लिए उपयोग किया जाने वाला गहरे पानी का चैनल।
(2) क्रेन और बंदरगाह गोदामों जैसी भौतिक अवसंरचना।
(3) बंदरगाह से जुड़ने वाले समुद्री मार्गों का जाल।
(4) वह आंतरिक क्षेत्र जो माल उत्पन्न करता है और बंदरगाह के आयात खरीदता है।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. किस देश के पास विश्व का सबसे व्यापक और भारी रूप से उपयोग किया जाने वाला घरेलू हवाई परिवहन जाल है, जो वैश्विक घरेलू उड़ानों के एक बड़े हिस्से के लिए उत्तरदायी है?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका
(2) चीन
(3) रूस
(4) भारत
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. वैश्विक हवाई परिवहन जाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. हवाई परिवहन लंबी दूरी पर उच्च मूल्य वाली, हल्की और शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं के परिवहन के लिए पसंदीदा साधन है।
II. हवाई मार्गों का विकास अनुकूल जलवायु परिस्थितियों और परिष्कृत नौवहन अवसंरचना की उपलब्धता पर अत्यधिक निर्भर है।
III. दक्षिणी गोलार्द्ध की तुलना में उत्तरी गोलार्द्ध में हवाई मार्गों का जाल बहुत अधिक सघन है।
IV. हवाई परिवहन ने दूरी के घर्षण को काफी कम कर दिया है, जिससे यात्रा के समय के मामले में दूर के महाद्वीप समीप आ गए हैं।
V. हवाई परिवहन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोयला और लौह अयस्क जैसी भारी थोक वस्तुओं को ले जाने के लिए सबसे लागत प्रभावी समाधान प्रदान करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल V
(4) IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. प्रमुख वैश्विक हवाई अड्डों और हवाई मार्गों के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(1) दुबई और अटलांटा जैसे प्रमुख हब स्थानांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं।
(2) अंतरमहाद्वीपीय हवाई मार्ग पूरी तरह सीधी रेखाओं का अनुसरण करते हैं।
(3) हवाई परिवहन भू-राजनीतिक सीमाओं की पूर्णतः उपेक्षा करता है।
(4) हवाई मार्गों का घनत्व प्रशांत महासागर के ऊपर सबसे अधिक है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. मानक भूगोल में उनके प्राथमिक वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित वैश्विक परिवहन हबों में से विषम की पहचान करें।
(1) लंदन हीथ्रो
(2) हार्ट्सफील्ड-जैक्सन अटलांटा
(3) दुबई इंटरनेशनल
(4) पोर्ट ऑफ रॉटरडैम
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. पाइपलाइन परिवहन जालों ने मुख्य रूप से किन विशिष्ट वस्तुओं के भूमि और पानी के नीचे परिवहन के लिए अत्यधिक वैश्विक महत्व प्राप्त किया है?
(1) निर्मित उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स
(2) कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद और प्राकृतिक गैस
(3) थोक कृषि अनाज
(4) विशेष रूप से लौह अयस्क और कोयला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पाइपलाइन परिवहन के निर्माण में भारी पूंजी की आवश्यकता होती है किंतु संचालन करना अत्यधिक लागत प्रभावी है।
कारण (R): एक बार बिछाए जाने के बाद, पाइपलाइनों को न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता होती है, खाली वापसी यात्राओं के बिना लगातार संचालित होती हैं, और सतह की मौसम की स्थिति से अप्रभावित रहती हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: 'बिग इंच' संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित विश्व की सबसे प्रसिद्ध पाइपलाइनों में से एक है।
कथन II: यह खाड़ी तट के तेल क्षेत्रों से पूर्वोत्तर के औद्योगिक क्षेत्रों तक तेल ले जाती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. वैश्विक पाइपलाइन परिवहन जाल के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) पाइपलाइन की परिवहन क्षमता को मांग के समय इसकी भौतिक व्यास सीमा से परे सुगमता और तत्काल बढ़ाया जा सकता है।
(2) पाइपलाइनें घने जंगलों, पानी के नीचे और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों सहित कठिन क्षेत्रों में बिछाई जा सकती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(3) यदि ठोस पदार्थों को तरल घोल में परिवर्तित कर दिया जाए तो उन्हें पाइपलाइनों के माध्यम से ले जाया जा सकता है।

(4) पाइपलाइनें रिफाइनरियों और औद्योगिक केंद्रों को ऊर्जा संसाधनों की निरंतर और निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. सूची I में प्रमुख पाइपलाइनों को सूची II में उनके संबद्ध क्षेत्रों या देशों के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

सूची I: (प्रमुख पाइपलाइन/जाल)

A. बिग इंच
B. ट्रांस-अरब पाइपलाइन
C. कोमेकॉन पाइपलाइन
D. एचवीजे पाइपलाइन

सूची II: (संबद्ध क्षेत्र/देश)

i. मध्य पूर्व
ii. भारत
iii. संयुक्त राज्य अमेरिका
iv. रूस और पूर्वी यूरोप

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) यह उत्पादन के क्षेत्रों को उपभोग के क्षेत्रों से जोड़कर स्थान उपयोगिता का सृजन करता है।
परिवहन जाल किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए आधारभूत संरचना के समान होता है। यह संसाधनों और उत्पादों को उनके उत्पादन केंद्रों से हटाकर बाजार या उपभोग के क्षेत्रों तक सफलतापूर्वक पहुँचाता है। इस प्रक्रिया में स्थान उपयोगिता का सृजन होता है, जो वस्तुओं के आर्थिक मूल्य को बढ़ा देती है। सुगम परिवहन व्यवस्था न केवल व्यापार को गति देती है, बल्कि औद्योगिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. (1) परिवहन अवसंरचना कच्चे माल और वस्तुओं के कुशल आवागमन के माध्यम से लागत को कम करती है।
आर्थिक विकास और परिवहन अवसंरचना के बीच गहरा अंतर्संबंध पाया जाता है। कुशल परिवहन तंत्र कच्चे माल की औद्योगिक केंद्रों तक और तैयार माल की बाजार तक पहुँच को सुलभ बनाता है। इससे समय की बचत होती है और परिवहन व्यय में भारी गिरावट आती है। परिवहन लागत में कमी के परिणामस्वरूप उत्पादों की प्रतिस्पर्धी क्षमता बढ़ती है, जिससे अंततः समग्र आर्थिक विकास की प्रक्रिया को निरंतर प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

3. (3) सड़क परिवहन
आधुनिक परिवहन के विभिन्न साधनों में सड़क परिवहन अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह एकमात्र ऐसा साधन है जो उपभोक्ताओं को उनके घर तक सीधा माल पहुँचाने की द्वार-से-द्वार सुविधा प्रदान करता है। इसकी संरचना और संचालन में लचीलापन अधिक होता है क्योंकि यह कम दूरी की यात्राओं के लिए सबसे सुलभ है। उबड़-खाबड़ इलाकों और पहाड़ियों पर भी सड़कों का निर्माण करना अधिक व्यवहार्य होता है।

4. (4) यह किसानों को उच्च मूल्य वाली और शीघ्र नष्ट न होने वाली फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
दूरदराज के क्षेत्रों में उच्च परिवहन लागत कृषि संबंधी निर्णयों को व्यापक रूप से प्रभावित करती है। जब बाजार तक माल पहुँचाने का व्यय अधिक होता है, तो किसान ऐसी फसलें चुनते हैं जिनका प्रति इकाई मूल्य अधिक हो। इससे उन्हें परिवहन लागत वहन करने के बाद भी पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। साथ ही, शीघ्र नष्ट न होने वाली फसलों के चयन से परिवहन के दौरान होने वाले संभावित आर्थिक नुकसान को कम किया जाता है।

5. (3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
परिवहन के प्रत्येक साधन की अपनी विशिष्ट आर्थिक उपयोगिता होती है। सड़क परिवहन छोटे मार्गों पर प्रत्यक्ष सेवा के लिए प्रसिद्ध है, जबकि रेलवे लंबी दूरी तक भारी सामान ले जाने में सर्वाधिक कुशल है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में जल परिवहन सबसे किफायती विकल्प माना जाता है क्योंकि इसमें घर्षण कम होता है। दूसरी ओर, वायु परिवहन अत्यंत कीमती और शीघ्र खराब होने वाले सामानों के लिए अपनी तीव्र गति के कारण सर्वोत्तम विकल्प माना जाता है।

6. (2) उत्तरी अमेरिका
उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में विश्व का सबसे विकसित और विस्तृत सड़क तंत्र मौजूद है। यहाँ पक्की सड़कों का घनत्व अत्यंत अधिक है, जो औद्योगिक और व्यावसायिक केंद्रों को आपस में जोड़ती हैं। इस क्षेत्र में दुनिया की कुल सड़क लंबाई का लगभग एक-तिहाई हिस्सा पाया जाता है। यह विशाल जाल आर्थिक गतिविधियों को गति देने और लोगों के सुगम आवागमन में सहायक है। यहाँ की सड़कों की गुणवत्ता और विस्तार वैश्विक मानकों में अग्रणी है।

7. (4) कच्ची सड़कें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक प्रभावी बारहमासी परिवहन समाधान प्रदान करती हैं।
वैश्विक परिवहन प्रणाली में सड़कों की बनावट और गुणवत्ता जलवायु परिस्थितियों से प्रभावित होती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण कच्ची सड़कें मानसून के दौरान अक्सर अनुपयोगी हो जाती हैं, इसलिए इन्हें बारहमासी समाधान नहीं माना जा सकता। विकसित देशों में सड़कों का बेहतर रखरखाव और उच्च घनत्व आर्थिक मजबूती का प्रतीक है। स्थलाकृति भी सड़कों के संरेखण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण जटिल हो जाता है।

8. (3) केवल I और III
सड़क जाल रेलवे और बंदरगाहों के बीच एक आवश्यक कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह माल को मुख्य केंद्रों से अंतिम उपभोक्ता तक पहुँचाकर अन्य परिवहन साधनों का पूरक बनता है। इसके अलावा, सड़कें दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्य आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान देती हैं। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय महासागरीय व्यापार के लिए जल परिवहन प्राथमिक साधन है, लेकिन आंतरिक वितरण के लिए सड़क जाल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

9. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
कम दूरी के लिए सड़क परिवहन को रेल परिवहन की तुलना में अधिक किफायती माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि सड़क परिवहन में प्रारंभिक लागत और लदान प्रक्रिया में कम व्यय आता है। रेलवे के लिए भारी बुनियादी ढांचे और प्रबंधन की आवश्यकता होती है, जो छोटी दूरी के लिए व्यवहार्य नहीं है। सड़क मार्ग अधिक लचीलापन प्रदान करते हैं

Click Here to Buy book on Amazon

और सामान को सीधे गंतव्य तक पहुँचाते हैं, जिससे मध्यवर्ती संचालन लागत काफी कम हो जाती है।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकासशील देशों में बुनियादी ढांचे की कमी के कारण सड़क परिवहन मौसमी बदलावों के प्रति संवेदनशील होता है। इन देशों में सड़कों का एक बड़ा हिस्सा कच्चा या बिना पक्की सतह वाला होता है। मानसून के दौरान भारी वर्षा से ये सड़कें कीचड़ में बदल जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों का संपर्क मुख्य शहरों से टूट जाता है। पक्की सड़कों की कमी के कारण ये देश प्रभावी बारहमासी परिवहन नेटवर्क सुनिश्चित करने में विफल रहते हैं।

11. (4) पूरे अमेरिका को जोड़ने वाला एक निर्बाध भूमि मार्ग बनाना।
पैन-अमेरिकन राजमार्ग परियोजना का मुख्य उद्देश्य उत्तरी, मध्य और दक्षिण अमेरिका के विभिन्न देशों को एक एकीकृत सड़क तंत्र के माध्यम से जोड़ना है। यह विशाल नेटवर्क अलास्का से अर्जेंटीना तक फैला हुआ है और विभिन्न जलवायु क्षेत्रों को पार करता है। इसका निर्माण क्षेत्रीय सहयोग और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। यद्यपि इसमें कुछ भौगोलिक अंतराल मौजूद हैं, फिर भी यह पूरे अमेरिकी महाद्वीप में भूमि संपर्क के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

12. (2) व्लादिवोस्तोक
ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग रूस की एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवहन जीवनरेखा है, जो देश के पश्चिमी भागों को सुदूर पूर्वी गंतव्यों से जोड़ती है। यह मार्ग मुख्य रूप से सेंट पीटर्सबर्ग और मास्को जैसे शहरों को प्रशांत महासागर के तट पर स्थित व्लादिवोस्तोक से जोड़ता है। यह विशाल सड़क मार्ग यूरेशियाई महाद्वीप के बड़े हिस्से को कवर करता है। इसका निर्माण रूस के आंतरिक क्षेत्रों के विकास और सुरक्षा के दृष्टिकोण से सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

13. (3) डेरियन अंतराल खंड
पैन-अमेरिकन राजमार्ग प्रणाली में डेरियन अंतराल एक प्रमुख भौगोलिक बाधा के रूप में स्थित है। यह क्षेत्र पनामा और कोलंबिया की सीमा पर घने वर्षावनों और दलदली भूमि से ढका हुआ है। वर्तमान में यहाँ कोई पक्की सड़क नहीं है, जिसके कारण उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के बीच सीधा सड़क संपर्क टूट जाता है। पर्यावरण संरक्षण और चुनौतीपूर्ण भू-आकृति के कारण इस खंड का निर्माण अभी तक पूरा नहीं हो सका है, जो एक अपवाद है।

14. (1) केवल I और II
पैन-अमेरिकन राजमार्ग अलास्का के प्रूडो बे से शुरु होकर अर्जेंटीना के उशुआइया तक पहुँचता है। यह विश्व के सबसे लंबे सड़क तंत्रों में से एक है। इसी प्रकार ट्रांस-साइबेरियन राजमार्ग रूस के विशाल भूभाग को कवर करता हुआ पश्चिम से पूर्व तक फैला है। हालाँकि, पैन-अमेरिकन राजमार्ग पूरी तरह से निर्बाध नहीं है क्योंकि डेरियन अंतराल जैसे क्षेत्रों में इसका निर्माण अधूरा है। ये दोनों राजमार्ग वैश्विक परिवहन भूगोल में अंतर-महाद्वीपीय संपर्क के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

15. (1) प्रूडो बे और उशुआइया
पैन-अमेरिकन राजमार्ग तंत्र उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र के समीप अलास्का में स्थित प्रूडो बे से अपनी यात्रा प्रारंभ करता है। यह मार्ग कई देशों और विविध भौगोलिक क्षेत्रों से गुजरते हुए दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी सिरे पर अर्जेंटीना के उशुआइया में समाप्त होता है। इन दो बिंदुओं के बीच की विशाल दूरी इस राजमार्ग को दुनिया के सबसे विस्तृत सड़क जालों में से एक बनाती है। यह उत्तर से दक्षिण तक पूरे अमेरिकी महाद्वीप के परिवहन का मुख्य आधार है।

16. (2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
विभिन्न क्षेत्रों में राजमार्गों का विकास उनकी विशिष्ट भौगोलिक और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुसार हुआ है। पैन-अमेरिकन राजमार्ग पूरे अमेरिका को जोड़ता है, जबकि रूस का ट्रांस-साइबेरियन मार्ग बाल्टिक से प्रशांत तक फैला है। ऑस्ट्रेलिया में स्टुअर्ट राजमार्ग उत्तर और दक्षिण के हिस्सों को जोड़ता है। कनाडा का ट्रांस-कनाडा राजमार्ग देश के अटलांटिक और प्रशांत तटों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। ये सभी मार्ग संबंधित राष्ट्रों की आर्थिक प्रगति और आंतरिक संपर्क के लिए आवश्यक हैं।

NODIA

17. (2) पाइपलाइन गेज
रेलवे प्रणालियों में दो पटरियों के बीच की दूरी को गेज कहा जाता है, जिसमें ब्रॉड गेज, मानक गेज और मीटर गेज शामिल हैं। पाइपलाइन गेज जैसा कोई तकनीकी शब्द रेलवे के संदर्भ में उपयोग नहीं होता है क्योंकि पाइपलाइनें तरल और गैस के परिवहन के लिए निर्मित की जाती हैं। विभिन्न देशों में पटरियों की चौड़ाई अलग-अलग हो सकती है, जो वहां की तकनीकी आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। ब्रॉड गेज का उपयोग भारी माल को संभालने के लिए किया जाता है।

18. (1) केवल III
विश्व के रेलवे जाल का वितरण अत्यंत असमान है। यूरोप में रेलवे का घनत्व सबसे अधिक है क्योंकि यहाँ औद्योगीकरण और जनसंख्या का जमाव अधिक है। इसके विपरीत, अमेज़न बेसिन जैसे क्षेत्रों में रेलवे का विस्तार बहुत कम है। यहाँ के घने वर्षावन और दलदली भूभाग रेलवे पटरियों के बिछाने में बड़ी बाधा उत्पन्न करते हैं। अफ्रीका में रेलवे मुख्य रूप से खनिज क्षेत्रों तक सीमित है। उत्तरी अमेरिका में रेलवे का उपयोग माल ढुलाई के लिए अधिक होता है।

19. (3) बेल्जियम
बेल्जियम दुनिया के उन देशों में शामिल है जहाँ रेलवे जाल का घनत्व उसके कुल क्षेत्रफल के अनुपात में सर्वाधिक है। यहाँ का रेलवे नेटवर्क अत्यंत सघन और विकसित है, जो हर प्रमुख औद्योगिक केंद्र को जोड़ता है। इसके छोटे आकार और तीव्र औद्योगिक विकास ने एक विस्तृत परिवहन तंत्र की स्थापना को सुगम बनाया है। यह उच्च घनत्व यूरोपीय परिवहन व्यवस्था की कुशलता को प्रदर्शित करता है। बेल्जियम की भौगोलिक स्थिति इसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है।

20. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के आंतरिक भागों में रेलवे का जाल बहुत सघन नहीं है। औपनिवेशिक काल के दौरान इन क्षेत्रों में रेलवे का विकास मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए किया गया था। रेलवे लाइनें सीधे खदानों या कृषि क्षेत्रों से तटीय बंदरगाहों तक बनाई गई थीं ताकि कच्चे माल का आसानी से निर्यात किया जा सके। इस कारण वहाँ एक एकीकृत महाद्वीपीय जाल का अभाव रहा। आज भी ये रेल मार्ग मुख्य रूप से निर्यात का साधन हैं।

21. (3) यह मुख्य रूप से पूर्वी तटीय क्षेत्रों में केंद्रित है।
ऑस्ट्रेलिया का रेलवे नेटवर्क मुख्य रूप से देश के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी तटीय क्षेत्रों में स्थित है, जहाँ जनसंख्या घनत्व और औद्योगिक गतिविधियाँ अधिक हैं। विशाल रेगिस्तानी मध्य और पश्चिमी हिस्सों में रेलवे का विस्तार काफी कम है। यद्यपि पर्थ और एडिलेड जैसे शहरों को जोड़ने वाली कुछ महत्वपूर्ण पार-महाद्वीपीय लाइनें मौजूद हैं, लेकिन सघन जाल तटीय पट्टियों तक ही सीमित है। यह वितरण देश की जलवायु और आर्थिक विकास के स्वरूप को स्पष्ट करता है।

22. (2) मास्को और व्लादिवोस्तोक
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे रूस की सबसे प्रसिद्ध और विश्व की सबसे लंबी रेल प्रणाली है। यह पश्चिम में राजधानी मास्को से शुरू होकर पूर्व में प्रशांत तट पर स्थित व्लादिवोस्तोक तक जाती है। यह विशाल मार्ग 9,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करता है। यह रेल मार्ग रूस के यूरोपीय और एशियाई हिस्सों को जोड़कर देश की एकता और आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान करता है। यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार और यात्रा के लिए एक ऐतिहासिक मार्ग के रूप में प्रसिद्ध है।

23. (1) III, II, V, I, IV
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के स्टेशनों का पश्चिम से पूर्व की ओर क्रम रूस के भूगोल को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह यात्रा राजधानी मास्को से शुरू होती है, जिसके बाद ओम्स्क आता है। आगे पूर्व की ओर बढ़ने पर बैकाल झील के समीप इरकुत्स्क और फिर चिता शहर पड़ता है। अंत में यह मार्ग व्लादिवोस्तोक के प्रमुख बंदरगाह पर समाप्त होता है। यह अनुक्रम साइबेरिया के विशाल मैदानी इलाकों को पार करते हुए प्रशांत महासागर के तट तक पहुँचता है।

24. (1) उष्णकटिबंधीय नकदी फसलें
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे का उपयोग मुख्य रूप से उन वस्तुओं के परिवहन के लिए किया जाता है जो साइबेरियाई और रूसी क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इनमें इमारती लकड़ी, कोयला, खनिज और विभिन्न प्रकार की मशीनरी शामिल हैं। चूँकि रूस का अधिकांश भाग ठंडी जलवायु में स्थित है, इसलिए यहाँ उष्णकटिबंधीय नकदी फसलों का उत्पादन संभव नहीं है। अतः ये फसलें इस मार्ग के माध्यम से निर्यात किए जाने वाले उत्पादों का हिस्सा नहीं हैं। यह मार्ग भारी माल के लिए उपयुक्त है।

25. (3) I, II और III
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे एक आधुनिक अभियांत्रिकी चमत्कार है, जो पूरी तरह से विद्युतीकृत और दोहरी पटरी वाली लाइन है। यह मार्ग यूराल पर्वतमाला और कई विशाल रूसी नदियों को पार करता है, जो इसके निर्माण की जटिलता को दर्शाता है। सुरक्षा और उपयोगिता के लिए इसे साइबेरिया के दक्षिण के घनी आबादी वाले क्षेत्रों से निकाला गया है। चिता के पास यह मार्ग ट्रांस-मंचूरियन लाइन से भी जुड़ता है, जो चीन तक पहुँच प्रदान करती है। यह रूस के व्यापारिक ढांचे की धुरी है।

26. (1) साइबेरियाई संसाधनों को यूरोपीय बाजारों और सीमाओं से जोड़ना।
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के निर्माण के पीछे प्राथमिक उद्देश्य साइबेरिया के विशाल प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना था। 19वीं सदी के अंत में रूस को अपने सुदूर पूर्वी क्षेत्रों को यूरोपीय मुख्य भूमि से जोड़ने की आवश्यकता थी ताकि आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सके। इस मार्ग ने खनिजों और कृषि उत्पादों को पश्चिमी बाजारों तक पहुँचाने में मदद की। साथ ही, इसने देश के विस्तारवादी क्षेत्रों पर प्रशासनिक और सैन्य नियंत्रण बनाए रखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया।

27. (4) ट्रांस-मंगोलियाई रेलवे
ट्रांस-साइबेरियन रेलवे उलान उडे नामक स्थान पर ट्रांस-मंगोलियाई रेलवे से जुड़ती है। यह संपर्क मार्ग मंगोलिया की राजधानी उलानबटार से होते हुए चीन की राजधानी बीजिंग तक जाता है। यह रेल संपर्क अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण गलियारा प्रदान करता है, जो रूस और चीन के बीच सीधा भूमि संपर्क स्थापित करता है। यह मार्ग एशिया और यूरोप के बीच माल ढुलाई के समय को समुद्री मार्ग की तुलना में काफी कम कर देता है, जिससे यह आर्थिक रूप से लाभप्रद है।

28. (2) आंतरिक भागों को बसाना और कृषि को उद्योग से जोड़ना।
उत्तरी अमेरिका में पार-महाद्वीपीय रेलवे के निर्माण ने महाद्वीप के आंतरिक विकास की दिशा बदल दी। इन रेल मार्गों ने दुर्गम क्षेत्रों में बस्तियों के निर्माण और वहां कृषि गतिविधियों के विस्तार को संभव बनाया। रेलवे ने पश्चिम के कृषि उत्पादों को पूर्व के औद्योगिक शहरों और निर्यात बंदरगाहों तक पहुँचाने के लिए एक प्रभावी माध्यम प्रदान किया। इसने पूरे महाद्वीप के आर्थिक एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और संयुक्त राज्य अमेरिका को एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरने में सहायता की।

29. (3) A-ii, B-i, C-iii
उत्तरी अमेरिका में रेलवे नेटवर्क को विभिन्न सामरिक केंद्रों को जोड़ने के लिए बनाया गया है। यूनियन पैसिफिक रेलवे ओमाहा को सैन फ्रांसिस्को से जोड़कर अमेरिका के पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार को सुगम बनाती है। कनाडा में, कैनेडियन पैसिफिक रेलवे मॉन्ट्रियल को वैंकूवर से जोड़ती है, जबकि कैनेडियन नेशनल रेलवे का विस्तार हैलिफ़ैक्स से प्रिंस रूपर्ट तक है। ये रेल मार्ग संबंधित देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए

Downloaded from www.pdf.tube

महत्वपूर्ण धमनियों के रूप में कार्य करते हैं और लंबी दूरी के परिवहन को संभव बनाते हैं।

30. (4) सैन फ्रांसिस्को
यूनियन पैसिफिक रेलवे संयुक्त राज्य अमेरिका की एक ऐतिहासिक रेल लाइन है, जो देश के मध्य भाग को प्रशांत तट से जोड़ती है। यह पूर्व में नेब्रास्का के ओमाहा शहर से शुरु होती है और पश्चिम की ओर बढ़ते हुए कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को तक पहुँचती है। इस मार्ग ने 19वीं शताब्दी में अमेरिकी पश्चिम के विस्तार और विकास में निर्णायक भूमिका निभाई। यह आज भी माल ढुलाई के लिए एक प्रमुख मार्ग है, जो मध्य-पश्चिमी कृषि उत्पादों को प्रशांत महासागरीय व्यापार के लिए सुलभ बनाता है।

31. (4) I, II, III, IV और V
उत्तरी अमेरिका का रेलवे जाल दुनिया के सबसे उन्नत और सघन प्रणालियों में से एक है। कैनेडियन पैसिफिक और यूनियन पैसिफिक जैसे मार्ग महाद्वीप के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच एक मजबूत कड़ी प्रदान करते हैं। यहाँ रेलवे का मुख्य उपयोग लंबी दूरी के भारी माल परिवहन के लिए किया जाता है, जिससे औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला है। इस क्षेत्र की कुल रेलवे लंबाई वैश्विक स्तर पर एक बड़ा हिस्सा रखती है। इन मार्गों ने कनाडा और अमेरिका के आर्थिक एकीकरण को मजबूती दी है।

32. (2) अधिकांश रेलवे राजस्व यात्री परिवहन से उत्पन्न होता है।
उत्तरी अमेरिकी रेलवे प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसका राजस्व मुख्य रूप से माल ढुलाई से आता है, न कि यात्री परिवहन से। यहाँ लंबी दूरी तक कोयला, अनाज और विनिर्मित वस्तुओं का परिवहन रेलवे के माध्यम से किया जाता है। यात्री सेवाओं के लिए सड़क और हवाई मार्ग अधिक लोकप्रिय हैं। इसके अलावा, यहाँ पटरियों के लिए मानक गेज का उपयोग होता है और पूर्वी-मध्य क्षेत्रों में रेल घनत्व सर्वाधिक है। यह व्यवस्था औद्योगिक माल की आवाजाही के लिए अनुकूल है।

33. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
कैनेडियन पैसिफिक रेलवे का निर्माण एक राजनीतिक आवश्यकता के रूप में किया गया था ताकि ब्रिटिश कोलंबिया को कनाडा के संघीय ढांचे में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। यह रेल मार्ग देश के औद्योगिक केंद्र मॉन्ट्रियल को उपजाऊ प्रेयरी क्षेत्रों से जोड़ता है। प्रेयरी क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था और पूर्वी हिस्से के उद्योगों के बीच यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक सेतु है। यद्यपि दोनों तथ्य सही हैं, लेकिन राजनीतिक वादा और भौगोलिक मार्ग अलग-अलग संदर्भों में रेलवे के महत्व को दर्शाते हैं।

34. (1) यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस
चैनल सुरंग, जिसे 'चनल' भी कहा जाता है, एक आधुनिक अभियांत्रिकी अजूबा है जो इंग्लिश चैनल के नीचे से गुजरती है। यह रेल सुरंग यूनाइटेड किंगडम के फोकस्टोन को फ्रांस के कोक्वेल्स से जोड़ती है। इसके माध्यम से यात्री ट्रेनें और मालगाड़ियाँ नियमित रूप से चलती हैं, जिससे लंदन और पेरिस जैसे प्रमुख शहरों के बीच यात्रा का समय काफी कम हो गया है। यह सुरंग यूरोपीय मुख्य भूमि और ब्रिटेन के बीच एक स्थायी और निर्बाध भूमि संपर्क प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

35. (3) I, II, IV और V
यूरोप में दुनिया का सबसे सघन रेलवे जाल पाया जाता है, जो उच्च गति प्रणालियों और विद्युतीकरण के लिए जाना जाता है। यहाँ यात्री परिवहन का अनुपात अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत अधिक है, और टीजीवी जैसी ट्रेनें अपनी तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध हैं। हालाँकि, अधिकांश यूरोपीय रेलवे का संचालन सार्वजनिक भागीदारी वाली कंपनियों द्वारा किया जाता है। कम दूरी के शहरों के बीच रेल यात्रा यहाँ एक प्रमुख जीवन रेखा है। यह नेटवर्क पर्यावरण के अनुकूल और कुशल परिवहन का प्रतीक है।

NODIA

36. (4) एवीई - स्पेन
यूरोप के विभिन्न देशों ने अपनी स्वयं की उच्च गति रेल प्रणालियाँ विकसित की हैं। स्पेन में 'एवीई' एक प्रमुख नेटवर्क है जो बड़े शहरों को जोड़ता है। इसी प्रकार, फ्रांस में 'टीजीवी' और जर्मनी में 'आईसीई' अपनी तीव्र गति और दक्षता के लिए प्रसिद्ध हैं। यूरोस्टार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम के बीच सेवा प्रदान करता है। ये ट्रेनें आधुनिक यूरोपीय परिवहन का आधार हैं और हवाई यात्रा के एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरी हैं, जिससे महाद्वीप के भीतर संपर्क बेहतर हुआ है।

37. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
यूरोप में रेलवे का अत्यधिक सघन होना वहां की सामाजिक और आर्थिक संरचना का परिणाम है। इस महाद्वीप में जनसंख्या का घनत्व अधिक है और औद्योगिक केंद्र एक-दूसरे के काफी करीब स्थित हैं। शहरों के बीच कम दूरी और तीव्र विकास के कारण रेलवे का विस्तार करना अधिक व्यावहारिक और लाभदायक रहा है। विद्युतीकरण ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया है। ये सभी कारक मिलकर एक ऐसी कुशल परिवहन व्यवस्था बनाते हैं जो यात्रियों और माल दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

38. (2) शहर के केंद्रों के बीच कम दूरी की उड़ानों के साथ प्रतिस्पर्धा।
पश्चिमी यूरोप में उच्च गति रेल प्रणालियों की सफलता का मुख्य कारण इनकी कम दूरी की हवाई यात्राओं के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा है। ये ट्रेनें सीधे शहर के केंद्रों से संचालित होती हैं, जिससे हवाई अड्डों तक जाने और सुरक्षा जांच में लगने वाले समय की बचत होती है। टीजीवी और यूरोस्टार जैसी सेवाएं यात्रियों को उच्च स्तर की सुविधा और समय की पाबंदी प्रदान करती हैं। 500 से 800 किलोमीटर तक की यात्रा के लिए ये ट्रेनें अब हवाई जहाज से अधिक सुविधाजनक मानी जाती हैं।

39. (4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
दुनिया भर में अंतर्देशीय जलमार्ग आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। सेंट लॉरेंस सीवे उत्तरी अमेरिका में स्थित है और यह औद्योगिक केंद्र को अटलांटिक से जोड़ता है। राइन जलमार्ग यूरोप का सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्ग है, जो जर्मनी और

नीदरलैंड जैसे देशों से होकर बहता है। वोल्गा रूस की प्रमुख जल परिवहन धमनी है, जबकि यांग्त्ज़ी नदी चीन के आंतरिक व्यापार के लिए अनिवार्य है। ये सभी मार्ग भारी और कम मूल्य वाले सामानों के परिवहन के लिए अत्यंत किफायती साधन हैं।

40. (1) अटलांटिक महासागर
ग्रेट लेक्स - सेंट लॉरेंस सीवे उत्तरी अमेरिका की एक विशाल जल परिवहन प्रणाली है। यह मार्ग संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा की पांच बड़ी झीलों को सेंट लॉरेंस नदी के माध्यम से अटलांटिक महासागर से जोड़ता है। इस सीवे के कारण महाद्वीप के आंतरिक औद्योगिक और कृषि क्षेत्र सीधे अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों से जुड़ गए हैं। यह प्रणाली विशेष रूप से लौह अयस्क और अनाज के परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है। लॉक और नहरों के नेटवर्क ने इसे बड़े जहाजों के लिए नौगम्य बनाया है।

41. (3) वे भारी और कम मूल्य वाले माल के लिए परिवहन का सबसे महंगा साधन हैं।
अंतर्देशीय जलमार्गों के बारे में यह धारणा गलत है कि वे सबसे महंगे साधन हैं; वास्तव में, वे भारी माल के लिए सबसे सस्ते परिवहन विकल्प हैं। इनमें प्रति इकाई माल ढुलाई की लागत सड़क या रेल की तुलना में बहुत कम होती है। हालांकि, इनकी सफलता नदी में पानी की गहराई और निरंतर प्रवाह पर निर्भर करती है। सर्दियों में बर्फ जमने और अत्यधिक तलछट जमा होने जैसी समस्याएं इनकी नौगम्यता को प्रभावित कर सकती हैं, जिन्हें तलकर्षण के माध्यम से सुधारा जाता है।

42. (1) I, III, II
वैश्विक स्तर पर माल यातायात की मात्रा के आधार पर राइन जलमार्ग सबसे ऊपर आता है क्योंकि यह यूरोप के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्रों को सेवा प्रदान करता है। इसके बाद रूस की वोल्गा नदी का स्थान आता है, जो देश के आंतरिक व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संभालती है। अमेज़न नदी यद्यपि विशाल है, लेकिन इसकी पश्चभूमि में औद्योगिक गतिविधियों की कमी और कम जनसंख्या के कारण वहां वाणिज्यिक यातायात की मात्रा सीमित है। यह क्रम परिवहन के बुनियादी ढांचे और औद्योगिक मांग के संबंधों को स्पष्ट करता है।

43. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
नहरें मानवीय प्रयासों द्वारा निर्मित जलमार्ग हैं जो नौवहन और सिंचाई जैसे विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। ये अक्सर अलग-अलग जल निकायों को जोड़ने के लिए बनाई जाती हैं। यदि नहर का मार्ग असमान भूभाग या अलग-अलग ऊंचाई वाले क्षेत्रों से होकर गुजरता है, तो वहां लॉक प्रणाली का निर्माण अनिवार्य हो जाता है। लॉक जहाजों को पानी के स्तर में बदलाव के अनुसार ऊपर उठाने या नीचे उतारने में मदद करते हैं। बिना लॉक के ऊबड़-खाबड़ जमीन पर नहर का संचालन तकनीकी रूप से कठिन है।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राइन जलमार्ग को दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण और सघन रूप से उपयोग किए जाने वाले अंतर्देशीय जलमार्ग के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह स्विट्ज़रलैंड से शुरू होकर जर्मनी के औद्योगिक हृदय स्थल, विशेष रूप से रुहर क्षेत्र, से गुज़रते हुए नीदरलैंड के रॉटरडैम बंदरगाह तक पहुँचता है। यह मार्ग कोयला, लोहा और औद्योगिक माल के परिवहन के लिए एक प्राकृतिक गलियारा प्रदान करता है। अत्यधिक औद्योगीकरण और आसपास की घनी आबादी ने इस जलमार्ग को यूरोप की आर्थिक प्रगति की मुख्य जीवन रेखा बना दिया है।

45. (3) मैक्सिको की खाड़ी
मिसिसिपी नदी प्रणाली संयुक्त राज्य अमेरिका के आंतरिक भाग में एक विशाल जलमार्ग का निर्माण करती है। यह उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई देश के मध्यवर्ती कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ती है। इस नदी मार्ग का मुख्य गंतव्य मैक्सिको की खाड़ी है, जहाँ न्यू ऑरलियन्स जैसे प्रमुख बंदरगाह स्थित हैं। यह जलमार्ग अनाज, कोयला और पेट्रोलियम उत्पादों के सस्ते परिवहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचने के लिए एक प्रमुख जल गलियारे के रूप में कार्य करता है।

46. (4) इटली
राइन नदी पश्चिमी यूरोप की एक महत्वपूर्ण जलधारा है जो स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रांस और नीदरलैंड जैसे देशों से होकर बहती है या उनकी सीमाएँ बनाती है। यह आल्प्स पर्वत से निकलकर उत्तर की ओर बढ़ती है और उत्तरी सागर में गिरती है। इटली की भौगोलिक स्थिति आल्प्स के दक्षिण में है, इसलिए राइन नदी इसके क्षेत्र से नहीं गुजरती है। राइन जलमार्ग मुख्य रूप से उन देशों को जोड़ता है जो यूरोप के उत्तरी और मध्य औद्योगिक बेल्ट का हिस्सा हैं।

47. (1) यह सीमित औद्योगिक गतिविधियों वाले कम आबादी वाले, घने उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से होकर बहती है।
अमेज़न नदी विश्व की सबसे बड़ी नदियों में से एक है और मुहाने से मनौस तक गहरे जहाजों के लिए नौगम्य भी है। इसके बावजूद, इसका वाणिज्यिक महत्व वैश्विक स्तर पर कम है क्योंकि यह मुख्य रूप से विरल आबादी वाले और घने जंगलों से घिरे क्षेत्रों से गुजरती है। यहाँ औद्योगिक उत्पादन और बड़े बाजारों का अभाव है, जिसके कारण परिवहन की मांग सीमित रहती है। किसी भी जलमार्ग की सफलता के लिए उसके आसपास विकसित आर्थिक पश्चभूमि का होना आवश्यक है।

48. (2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
नदियों के परिवहन महत्व उनकी भौगोलिक विशेषताओं से तय होते हैं। राइन नदी यूरोप की औद्योगिक धुरी है जो रॉटरडैम पर समाप्त होती है। मिसिसिपी नदी अमेरिकी मिडवेस्ट को मैक्सिको की खाड़ी से जोड़ती है। अमेज़न यद्यपि नौगम्य है, पर औद्योगिक पश्चभूमि की कमी के कारण इसका सीमित उपयोग होता है। वोल्गा नदी रूस के आंतरिक भागों से होकर कैस्पियन सागर में गिरती है और एक महत्वपूर्ण जलमार्ग बनाती है। ये नदियाँ अपने क्षेत्रों में माल ढुलाई के लिए प्राकृतिक गलियारों का निर्माण करती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

49. (2) राइन
जर्मनी का रुहर औद्योगिक क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से कोयला खनन और इस्पात उत्पादन का वैश्विक केंद्र रहा है। इस क्षेत्र की भारी औद्योगिक सफलता राइन जलमार्ग के साथ इसके गहरे संबंध पर आधारित है। राइन नदी और उसकी सहायक नदियाँ रुहर के कारखानों को कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल के निर्यात के लिए सबसे सस्ता साधन प्रदान करती हैं। यह जलमार्ग सीधे रॉटरडैम जैसे बड़े बंदरगाहों से जुड़ा है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार सुगम हो जाता है। रुहर की अर्थव्यवस्था में राइन एक अनिवार्य कड़ी है।

50. (1) केवल II
स्वेज नहर भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ने वाला एक मानव निर्मित जलमार्ग है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह एक समुद्र-स्तरीय नहर है, जिसका अर्थ है कि इसमें जहाजों के आवागमन के लिए किसी लॉक प्रणाली की आवश्यकता नहीं होती है। इस नहर के निर्माण से यूरोप और दक्षिण एशिया के बीच की समुद्री दूरी हजारों किलोमीटर कम हो गई है। यह दुनिया के सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्गों में से एक है। लॉक के बारे में दिया गया कथन गलत है क्योंकि यहाँ जल स्तर समान रहता है।

51. (3) गतुन झील
पनामा नहर एक जटिल अभियांत्रिकी संरचना है जो अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ती है। इसका निर्माण मध्य अमेरिका के पहाड़ी भूभाग को पार करने के लिए किया गया है। इस नहर प्रणाली का हृदय गतुन झील है, जो एक कृत्रिम झील है। चूँकि यह झील समुद्र तल से काफी ऊंचाई पर स्थित है, इसलिए जहाजों को लॉक प्रणाली के माध्यम से ऊपर उठाना पड़ता है ताकि वे झील को पार कर सकें। इसके बाद उन्हें फिर से समुद्र तल तक उतारा जाता है। यह प्रक्रिया पनामा नहर की विशिष्ट पहचान है।

52. (4) I, II और III
कील नहर जर्मनी में स्थित एक अत्यंत सामरिक जलमार्ग है। यह उत्तरी सागर को बाल्टिक सागर से जोड़ती है, जिससे जहाजों को डेनमार्क के चारों ओर चक्कर नहीं काटना पड़ता। इस मार्ग के उपयोग से न केवल समय की बचत होती है बल्कि जटलैंड प्रायद्वीप के पास के खतरनाक समुद्री क्षेत्रों से भी बचा जा सकता है। यह नहर अंतरराष्ट्रीय नौवहन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और बाल्टिक देशों के व्यापार को सुगम बनाती है। यह दुनिया की सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली कृत्रिम नहरों में से एक है।

53. (3) भूभाग समतल है और समुद्र का स्तर लगभग समान है।
स्वेज नहर के निर्माण के दौरान अभियंताओं ने पाया कि भूमध्य सागर और लाल सागर के बीच का भूभाग मुख्य रूप से समतल है। दोनों समुद्रों के जल स्तर में भी कोई बड़ा अंतर नहीं है। इन अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इस नहर को बिना किसी लॉक प्रणाली के सीधे समुद्र-स्तरीय मार्ग के रूप में बनाना संभव हुआ। इसके विपरीत, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्रों में बनने वाली नहरों, जैसे पनामा में लॉक का उपयोग अनिवार्य हो जाता है। स्वेज की सादगी इसे बड़े जहाजों के लिए सुगम बनाती है।

54. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
वैश्विक व्यापार में प्रमुख नहरों की भूमिका उनके द्वारा जोड़े जाने वाले जल निकायों से निर्धारित होती है। स्वेज नहर भूमध्य और लाल सागर को जोड़ती है, जबकि पनामा नहर अटलांटिक और प्रशांत महासागर के बीच मार्ग प्रदान करती है। कील नहर उत्तरी और बाल्टिक सागर के बीच संपर्क स्थापित करती है। ग्रीस की कोरिंथ नहर कोरिंथ की खाड़ी को सरोनिक खाड़ी से जोड़ती है। ये सभी कृत्रिम जलमार्ग समुद्री यात्राओं को छोटा और सुरक्षित बनाते हैं, जिससे वैश्विक परिवहन की लागत और समय में भारी कमी आती है।

55. (4) स्वेज महासागरों को जोड़ती है जबकि पनामा सागरों को जोड़ती है।
स्वेज और पनामा नहरों के बीच मूलभूत अंतर उनकी भौगोलिक स्थिति और तकनीकी बनावट में है। यह कहना गलत है कि स्वेज महासागरों को और पनामा सागरों को जोड़ती है; वास्तविकता इसके विपरीत है। स्वेज नहर दो बड़े सागरों (भूमध्य और लाल) को जोड़ती है, जबकि पनामा नहर दो विशाल महासागरों (अटलांटिक और प्रशांत) के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। स्वेज नहर पनामा की तुलना में अधिक व्यापारिक भार संभालती है और यह समुद्र-स्तरीय है, जबकि पनामा नहर लॉक प्रणाली पर आधारित है।

56. (1) 1956 में मिस्र द्वारा इसका राष्ट्रीयकरण किया गया था, जिससे स्वेज संकट पैदा हो गया था।
स्वेज नहर का राजनीतिक इतिहास काफी महत्वपूर्ण रहा है। 1869 में इसके खुलने के बाद यह लंबे समय तक ब्रिटिश और फ्रांसीसी हितों के अधीन रही। 1956 में मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर ने नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय तनाव बढ़ गया और स्वेज संकट उत्पन्न हुआ। वर्तमान में, यह पूरी तरह से मिस्र के संप्रभु नियंत्रण में है और स्वेज नहर प्राधिकरण द्वारा इसका प्रबंधन किया जाता है। यह नहर मिस्र की अर्थव्यवस्था के लिए विदेशी मुद्रा का एक प्रमुख स्रोत है।

57. (3) मार्गों के निर्माण या रखरखाव के लिए कोई पूंजीगत लागत नहीं।
समुद्री मार्गों का सबसे बड़ा भौगोलिक और आर्थिक लाभ यह है कि वे प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए मुफ्त मार्ग हैं। सड़क या रेल की तरह इनके निर्माण के लिए किसी विशाल बुनियादी ढांचे या पटरियों को बिछाने की आवश्यकता नहीं होती है। केवल बंदरगाहों और नौवहन सहायता के लिए निवेश की आवश्यकता होती है। महासागर हर दिशा में खुले हैं, जिससे जहाजों को अधिक लचीलापन मिलता है। यह विशेषता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारी माल को बहुत कम लागत पर लंबी दूरी तक ले जाने में सहायक होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

58. (2) अटलांटिक महासागर, प्रशांत महासागर, हिंद महासागर
व्यापारिक यातायात की मात्रा के अनुसार अटलांटिक महासागर विश्व में प्रथम स्थान पर है, विशेष रूप से इसका उत्तरी भाग जो यूरोप और उत्तरी अमेरिका को जोड़ता है। इसके बाद प्रशांत महासागर का स्थान आता है, जहाँ पूर्वी एशिया और अमेरिका के बीच व्यापार तेजी से बढ़ रहा है। हिंद महासागर तीसरे स्थान पर है, जो मुख्य रूप से ऊर्जा संसाधनों और एशिया-यूरोप व्यापार के लिए उपयोग किया जाता है। यह वितरण दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के औद्योगिक विकास और उनके बीच आर्थिक संबंधों को दर्शाता है।

59. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
स्वेज नहर के खुलने से केप ऑफ गुड होप मार्ग के उपयोग में कमी आई क्योंकि नया मार्ग छोटा और सस्ता था। हालांकि, यह पुराना मार्ग पूरी तरह से महत्वहीन नहीं हुआ। आधुनिक समय में विशाल सुपरटैंकर, जो स्वेज नहर की गहराई और चौड़ाई की सीमाओं के कारण वहां से नहीं गुजर सकते, अक्सर केप मार्ग का उपयोग करते हैं। यद्यपि दोनों तथ्य अपनी जगह सही हैं, लेकिन सुपरटैंकरों द्वारा इसका उपयोग करना स्वेज नहर के खुलने के समय आई प्रारंभिक गिरावट का मुख्य कारण नहीं था।

60. (4) I, II, III और IV
वैश्विक समुद्री व्यापार कई प्रमुख मार्गों पर आधारित है। उत्तरी अटलांटिक मार्ग विकसित देशों के बीच सबसे व्यस्त गलियारा है। भूमध्य सागर-हिंद महासागर मार्ग यूरोप को एशियाई बाजारों से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। दक्षिण अटलांटिक मार्ग यूरोप और दक्षिण अमेरिका के बीच व्यापार की सुविधा प्रदान करता है, जबकि उत्तरी प्रशांत मार्ग पूर्वी एशिया को अमेरिका के पश्चिमी तट से जोड़ता है। ये सभी मार्ग मिलकर एक ऐसा वैश्विक जाल बनाते हैं जो अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करता है।

61. (3) होर्मुज जलडमरूमध्य
भूमध्य सागर-हिंद महासागर मार्ग में कई सामरिक बिंदु हैं, जिन्हें 'चोकपॉइंट्स' कहा जाता है। इनमें जिब्राल्टर जलडमरूमध्य, स्वेज नहर और बाब अल-मंडेब शामिल हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य फारस की खाड़ी के मुहाने पर स्थित है और यह मुख्य रूप से तेल निर्यात के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सीधे मुख्य भूमध्य-हिंद महासागर के पारगमन मार्ग का हिस्सा नहीं है। यह मार्ग यूरोप से एशिया की यात्रा के लिए एक विशिष्ट दिशा का अनुसरण करता है। ये बिंदु वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

62. (4) केवल IV
उत्तरी अटलांटिक मार्ग दुनिया का सबसे व्यस्त और विकसित समुद्री मार्ग है, जो वैश्विक विदेशी व्यापार के एक-चौथाई हिस्से का संचालन करता है। यहाँ दोनों तटों पर उच्च कोटि के बंदरगाह मौजूद हैं जो भारी यातायात को संभालने में सक्षम हैं। यह कहना गलत है कि इस मार्ग का मुख्य उपयोग मध्य पूर्व से जापान तक तेल परिवहन के लिए होता है; वास्तव में, वह मार्ग हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुज़रता है। उत्तरी अटलांटिक मार्ग मुख्य रूप से औद्योगिक वस्तुओं के लिए जाना जाता है।

63. (1) यह दो सबसे अधिक औद्योगिक रूप से विकसित वैश्विक क्षेत्रों को जोड़ता है।
उत्तरी अटलांटिक मार्ग की अत्यधिक व्यस्तता का मूल कारण इसके दोनों सिरों पर स्थित क्षेत्रों की आर्थिक मजबूती है। यह मार्ग पश्चिमी यूरोप और पूर्वी उत्तरी अमेरिका को जोड़ता है, जो दुनिया के सबसे उन्नत औद्योगिक और तकनीकी केंद्र हैं। इन दो क्षेत्रों के बीच माल और सेवाओं की भारी मांग और आपूर्ति रहती है। उच्च क्रय शक्ति और तीव्र औद्योगीकरण के कारण यहाँ व्यापार की मात्रा किसी भी अन्य समुद्री मार्ग से अधिक है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था की मुख्य व्यापारिक धमनी है।

64. (2) सिंगापुर
न्यूयॉर्क, रॉटरडैम और लंदन जैसे बंदरगाह सीधे उत्तरी अटलांटिक व्यापार मार्ग से जुड़े हुए हैं और इसके विशाल माल यातायात को संभालते हैं। इसके विपरीत, सिंगापुर का बंदरगाह दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित है और यह मुख्य रूप से हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच एक व्यापारिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह मलक्का जलडमरूमध्य का प्रमुख हिस्सा है और एशियाई व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र है। भौगोलिक दृष्टि से यह उत्तरी अटलांटिक मार्ग का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह पूर्वी व्यापारिक जाल की धुरी है।

NODIA

65. (2) जिब्राल्टर, पोर्ट सईद, अदन, मुंबई
लंदन से मुंबई की समुद्री यात्रा के दौरान जहाज एक विशिष्ट भौगोलिक अनुक्रम का पालन करते हैं। अटलांटिक महासागर से भूमध्य सागर में प्रवेश करने के लिए सबसे पहले जिब्राल्टर जलडमरूमध्य आता है। इसके बाद मिस्र में स्वेज नहर के उत्तरी प्रवेश द्वार पर पोर्ट सईद पड़ता है। नहर पार करने और लाल सागर से गुजरने के बाद, जहाज अदन की खाड़ी में पहुँचते हैं जहाँ अदन का बंदरगाह स्थित है। अंत में, अरब सागर को पार करते हुए जहाज भारत के पश्चिमी तट पर मुंबई पहुँचते हैं।

66. (1) उत्तरी अटलांटिक मार्ग
ग्रैंड बैंक उत्तरी अटलांटिक महासागर में कनाडा के न्यूफाउंडलैंड तट के पास स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्र है। यह अपनी उथली गहराई और गर्म तथा ठंडी जलधाराओं के मिलन के कारण मत्स्य पालन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र उत्तरी अटलांटिक व्यापार मार्ग के समीप स्थित है। इसके पास से गुजरने वाले जहाजों को यहाँ के कोहरे और हिमशैल (आइसबर्ग) से सावधान रहना पड़ता है। यह भौगोलिक विशेषता इस व्यस्त समुद्री मार्ग की सुरक्षा और आर्थिक महत्व दोनों को प्रभावित करती है।

67. (3) एक केंद्र जहाँ माल का आयात किया जाता है, संग्रहित किया जाता है और पुनः निर्यात किया जाता है।
एन्ट्रिपो बंदरगाह वैश्विक व्यापार के ऐसे केंद्र होते हैं जो मुख्य रूप से माल के संग्रह और पुनर्वितरण का कार्य करते हैं। यहाँ विभिन्न देशों से माल आयात किया जाता है, उसे गोदामों में

सुरक्षित रखा जाता है और फिर मांग के अनुसार अन्य गंतव्यों को निर्यात कर दिया जाता है। सिंगापुर और रॉटरडैम इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। ये बंदरगाह सीधे उपभोग के लिए माल नहीं मंगाते, बल्कि एक व्यापारिक सेतु के रूप में कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता को बढ़ाती है।

68. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
विश्व के प्रमुख बंदरगाह अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण प्रसिद्ध हैं। रॉटरडैम नीदरलैंड में स्थित है और इसे यूरोप का प्रवेश द्वार माना जाता है। सिंगापुर दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रमुख केंद्र है, जो मलक्का जलडमरूमध्य पर स्थित है। शंघाई चीन का सबसे व्यस्त बंदरगाह है जो यांग्त्ज़ी नदी के मुहाने पर स्थित है। मुंबई भारत का एक महत्वपूर्ण समुद्री केंद्र है जो अरब सागर के तट पर स्थित है। ये सभी बंदरगाह अपने संबंधित क्षेत्रों की आर्थिक गतिविधियों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के मुख्य स्तंभ हैं।

69. (3) मुंबई - मुख्य रूप से अंतर्देशीय क्षेत्र में गहराई में स्थित एक नदीय बंदरगाह है।
मुंबई बंदरगाह के बारे में यह कहना गलत है कि यह एक नदीय बंदरगाह है; वास्तविकता यह है कि मुंबई एक प्राकृतिक गहरे पानी का समुद्री बंदरगाह है जो अरब सागर के तट पर स्थित है। इसके विपरीत, कोलकाता एक नदीय बंदरगाह का उदाहरण है। रॉटरडैम वास्तव में राइन नदी के मुहाने पर है और शंघाई यांग्त्ज़ी नदी पर स्थित है। सिंगापुर एक प्रसिद्ध एन्ट्रिपो केंद्र है। मुंबई का बंदरगाह भारत के विदेशी व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संभालता है और इसकी पश्चभूमि औद्योगिक रूप से बहुत विकसित है।

70. (2) I, II, III और IV
सिंगापुर का बंदरगाह दुनिया के सबसे रणनीतिक समुद्री केंद्रों में से एक है। यह मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर मलक्का जलडमरूमध्य की निगरानी करता है, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला सबसे व्यस्त मार्ग है। यह एक प्रमुख एन्ट्रिपो के रूप में कार्य करता है जहाँ भारी मात्रा में अंतरराष्ट्रीय पुनर्वितरण होता है। यह कहना गलत है कि यह केवल घरेलू माल संभालता है, क्योंकि इसकी अधिकांश आय अंतरराष्ट्रीय व्यापार से आती है। इसकी कार्यक्षमता इसे वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाती है।

71. (4) वह आंतरिक क्षेत्र जो माल उत्पन्न करता है और बंदरगाह के आयात खरीदता है।
किसी भी बंदरगाह की आर्थिक सफलता और विकास उसकी पश्चभूमि या 'हिन्टरलैंड' पर निर्भर करता है। पश्चभूमि उस आंतरिक भूमि क्षेत्र को कहते हैं जो बंदरगाह से सड़क या रेल द्वारा जुड़ा होता है। यही क्षेत्र निर्यात के लिए माल की आपूर्ति करता है और बंदरगाह के माध्यम से आने वाले विदेशी सामानों का उपभोग करता है। एक समृद्ध और औद्योगिक रूप से विकसित पश्चभूमि बंदरगाह के व्यापार की मात्रा को बढ़ाती है। बंदरगाह और उसकी पश्चभूमि एक-दूसरे के आर्थिक पूरक के रूप में कार्य करते हैं।

72. (1) संयुक्त राज्य अमेरिका
संयुक्त राज्य अमेरिका के पास दुनिया का सबसे विस्तृत और सघन घरेलू हवाई परिवहन जाल है। यहाँ की विशाल भौगोलिक दूरी और उच्च आय स्तर ने हवाई यात्रा को एक प्राथमिक आवश्यकता बना दिया है। अमेरिका में हवाई अड्डों की संख्या और उड़ानों की आवृत्ति वैश्विक स्तर पर सर्वाधिक है। यहाँ का घरेलू हवाई बाजार इतना बड़ा है कि यह दुनिया की कुल हवाई यात्राओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा कवर करता है। कुशल बुनियादी ढांचे और निजी क्षेत्र की भागीदारी ने इस नेटवर्क को अत्यधिक प्रभावी बनाया है।

73. (3) केवल V
हवाई परिवहन अपनी गति और कुशलता के लिए जाना जाता है, विशेष रूप से कीमती और जल्दी खराब होने वाले सामानों के लिए। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह कोयला और लौह अयस्क जैसी भारी वस्तुओं के लिए लागत प्रभावी है। भारी और कम मूल्य वाले माल के परिवहन के लिए हवाई मार्ग अत्यंत महंगे होते हैं। इसके लिए जल या रेल परिवहन ही उपयुक्त माना जाता है। हवाई परिवहन ने वैश्विक स्तर पर दूरी को समय के संदर्भ में कम कर दिया है, लेकिन इसकी परिचालन लागत हमेशा अधिक रहती है।

74. (1) दुबई और अटलांटा जैसे प्रमुख हब स्थानांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं।
वैश्विक हवाई परिवहन 'हब और स्पोक' मॉडल पर आधारित है। दुबई और अटलांटा जैसे बड़े हवाई अड्डे ट्रांजिट हब के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ से यात्री अपने अंतिम गंतव्य के लिए उड़ानें बदलते हैं। यह व्यवस्था नेटवर्क की दक्षता को बढ़ाती है। हवाई मार्ग पूरी तरह सीधी रेखाओं का पालन नहीं करते बल्कि वे मौसम, सुरक्षा और भू-राजनीतिक सीमाओं के अनुसार तय किए जाते हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में हवाई मार्गों का घनत्व सर्वाधिक है। ये हब अंतरराष्ट्रीय संपर्क और वैश्विक व्यापार को मजबूती प्रदान करते हैं।

75. (4) पोर्ट ऑफ रॉटरडैम
लंदन हीथ्रो, अटलांटा और दुबई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख हवाई अड्डों के रूप में प्रसिद्ध हैं, जहाँ हवाई जहाजों का आवागमन होता है। इसके विपरीत, रॉटरडैम एक समुद्री बंदरगाह है, जो राइन नदी के मुहाने पर स्थित है। यद्यपि सभी परिवहन के महत्वपूर्ण केंद्र हैं, लेकिन उनकी श्रेणी अलग है। रॉटरडैम जल परिवहन का केंद्र है, जबकि बाकी तीनों हवाई परिवहन के वैश्विक केंद्र हैं। इस प्रकार, परिवहन के साधनों के आधार पर रॉटरडैम इस समूह में एक विषम विकल्प है।

76. (2) कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद और प्राकृतिक गैस
पाइपलाइन परिवहन आधुनिक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला का एक अनिवार्य हिस्सा है। इनका उपयोग मुख्य रूप से तरल और गैसीय पदार्थों जैसे कच्चा तेल, रिफाइंड पेट्रोलियम उत्पाद और प्राकृतिक गैस को लंबी दूरी तक ले जाने के लिए किया जाता है। पाइपलाइनें ऊर्जा संसाधनों की निरंतर और सुरक्षित आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। वे टैंकरों या ट्रेनों की तुलना में रिसाव और दुर्घटनाओं के कम जोखिम के साथ भारी मात्रा में ईंधन का

Click Here to Buy book on Amazon

परिवहन कर सकती हैं। औद्योगिक देशों के लिए पाइपलाइनें ऊर्जा सुरक्षा की गारंटी प्रदान करती हैं।

77. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पाइपलाइन परिवहन की स्थापना के लिए शुरुआत में भारी निवेश और जटिल अभियांत्रिकी की आवश्यकता होती है, लेकिन एक बार स्थापित होने के बाद इनका संचालन बहुत सस्ता होता है। इनमें माल के परिवहन के लिए किसी वाहन की खाली वापसी यात्रा की जरूरत नहीं होती और ईंधन का प्रवाह निरंतर बना रहता है। मौसम की स्थिति का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जिससे आपूर्ति में कोई बाधा नहीं आती। कम रखरखाव लागत और उच्च दक्षता के कारण पाइपलाइनें ऊर्जा संसाधनों के परिवहन के लिए सर्वोत्तम साधन हैं।

78. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
'बिग इंच' संयुक्त राज्य अमेरिका की एक सुप्रसिद्ध पाइपलाइन है जो ऊर्जा परिवहन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बनाई गई थी। यह पाइपलाइन मुख्य रुप से टेक्सास के तेल क्षेत्रों से पूर्वोत्तर के औद्योगिक क्षेत्रों तक कच्चे तेल की आपूर्ति करती है। हालांकि, इसे अक्सर गैस पाइपलाइन समझने की भूल की जाती है, जबकि इसका प्रारंभिक उद्देश्य तेल परिवहन ही था। यह पाइपलाइन अमेरिका की आंतरिक ऊर्जा वितरण व्यवस्था को मजबूत बनाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है।

79. (1) पाइपलाइन की परिवहन क्षमता को मांग के समय इसकी भौतिक व्यास सीमा से परे सुगमता और तत्काल बढ़ाया जा सकता है।
पाइपलाइन परिवहन की एक मुख्य सीमा यह है कि इसकी क्षमता इसके भौतिक व्यास द्वारा निर्धारित होती है। एक बार पाइप बिछाने के बाद, उसकी क्षमता को अचानक बढ़ाना संभव नहीं होता। अधिक मांग होने पर नई पाइपलाइन बिछानी पड़ती है। हालांकि, पाइपलाइनें दुर्गम क्षेत्रों और पानी के नीचे भी बिछाई जा सकती हैं। यदि ठोस पदार्थों को घोल में बदल दिया जाए, तो उन्हें भी पाइप के माध्यम से भेजा जा सकता है। यह साधन औद्योगिक केंद्रों को संसाधनों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

NODIA

80. (2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
दुनिया भर में विभिन्न क्षेत्रों में पाइपलाइन जाल वहां की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। बिग इंच पाइपलाइन संयुक्त राज्य अमेरिका की परियोजना है। ट्रांस-अरब पाइपलाइन मध्य पूर्व के तेल समृद्ध क्षेत्रों को जोड़ती है। कोमेकॉन पाइपलाइन रूस और पूर्वी यूरोपीय देशों के बीच ऊर्जा सहयोग का प्रतीक है। भारत में एचवीजे पाइपलाइन प्राकृतिक गैस के वितरण के लिए एक मुख्य बुनियादी ढांचा है। ये पाइपलाइनें संबंधित देशों के औद्योगिक विकास और ऊर्जा निर्भरता के लिए रणनीतिक रुप से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

अध्याय 07

पर्यावरणीय समस्याएँ

1. "मरुस्थलीकरण को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र अभिसमय" (UNCCD) के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा "मरुस्थलीकरण" को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
   (1) दीर्घकालिक विवर्तनिक प्लेट विस्थापन के कारण मौजूदा मरुस्थलों का पड़ोसी क्षेत्रों में विस्तार।
   (2) जलवायु परिवर्तनों और विभिन्न मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप शुष्क भूमि में होने वाला भूमि क्षरण।
   (3) उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में वनों की कटाई जिसके कारण अनुत्पादक बंजर परिदृश्य का निर्माण होता है।
   (4) स्थानीय तीव्र वायु अपरदन के कारण कृषि भूमि पर रेत के टीलों का अतिक्रमण।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. कौन सी ग्रीनहाउस गैस पृथ्वी के वायुमंडल में सबसे प्रचुर मात्रा में है और प्रत्यक्ष प्रारंभिक जलवायु दबाव कारक के बजाय मुख्य रूप से जलवायु प्रतिपुष्टि तंत्र के रूप में कार्य करती है?
   (1) जल वाष्प
   (2) कार्बन डाइऑक्साइड
   (3) मीथेन
   (4) नाइट्रस ऑक्साइड
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. साहेल क्षेत्र के भूगोल और मरुस्थलीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: साहेल उत्तर में सहारा मरुस्थल और दक्षिण में सूडानी सवाना के बीच स्थित एक अर्ध-शुष्क संक्रमण क्षेत्र है।
   कथन II: जनसंख्या के दबाव और परिवर्तनशील वर्षा के साथ अत्यधिक चराई, साहेल में मरुस्थलीकरण का एक प्राथमिक मानवजनित कारण है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
   (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. विश्व स्तर पर वनों की कटाई के निम्नलिखित सामान्य कारणों में से विषम विकल्प की पहचान कीजिए।
   (1) वाणिज्यिक कृषि का विस्तार
   (2) व्यापक चयनात्मक काष्ठ निष्कर्षण संचालन
   (3) तीव्र शहरीकरण और बुनियादी ढांचे का विस्तार
   (4) कृषि-वानिकी प्रणालियों का कार्यान्वयन
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

5. संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. यह एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जो पर्यावरण और विकास को स्थायी भूमि प्रबंधन से जोड़ता है।
   II. इसे 1994 में अपनाया गया था और यह मुख्य रूप से उन शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ कुछ सबसे संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र मौजूद हैं।
   III. 'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल UNCCD के ढांचे और उद्देश्यों से पूरी तरह स्वतंत्र है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. सुरक्षात्मक ओजोन परत, जो सूर्य की अधिकांश हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है, मुख्य रूप से वायुमंडल के किस क्षेत्र में स्थित है?
   (1) क्षोभमंडल
   (2) समताप मंडल
   (3) मध्यमंडल
   (4) तापमंडल
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन का प्राकृतिक चालक माना जाता है?
   (1) पृथ्वी के कक्षीय मापदंडों में परिवर्तन (मिलनकोविच चक्र)
   (2) बड़े पैमाने पर ज्वालामुखी विस्फोट
   (3) सौर ऊर्जा उत्पादन में उतार-चढ़ाव
   (4) व्यापक भूमि-उपयोग परिवर्तन और वनों की कटाई
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

8. अमेज़न में वनों की कटाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. अमेज़न बेसिन में दुनिया के उष्णकटिबंधीय वर्षावनों का सबसे बड़ा शेष क्षेत्र शामिल है।

Downloaded from www.pdf.tube

II. पशुपालन और सोया की खेती इस क्षेत्र में वनों की कटाई के प्रमुख प्राथमिक चालकों में से हैं।
III. अमेज़न में वनों की कटाई वैश्विक कार्बन सिंक के रूप में कार्य करने की इसकी क्षमता को कम करती है।
IV. अमेज़न के वृक्ष आवरण के नुकसान का क्षेत्रीय वाष्पोत्सर्जन और वर्षा के प्रतिरूप पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।
V. वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि निरंतर वनों की कटाई अमेज़न को 'चरम बिंदु' के पार धकेल सकती है, जिससे यह सवाना में बदल सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की प्राथमिक भूमिका का सटीक वर्णन करता है?
(1) यह विश्वविद्यालयों को वैश्विक जलवायु प्रवृत्तियों पर विशिष्ट वायुमंडलीय प्रयोग करने के लिए अधिकृत करता है।
(2) यह एक वैश्विक नियामक प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है जो देशों पर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन सीमा लागू करता है।
(3) यह मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन को समझने से संबंधित वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी का आकलन करता है।
(4) यह जलवायु परिवर्तन शमन परियोजनाओं के संबंध में विकासशील देशों के लिए वित्तीय सहायता का प्रबंधन करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ग्रीनहाउस गैस)
A. कार्बन डाइऑक्साइड
B. मीथेन
C. नाइट्रस ऑक्साइड
D. क्लोरोफ्लोरोकार्बन
सूची II: (प्रमुख मानवजनित स्रोत)
i. पशुधन में आंतों का किण्वन
ii. सिंथेटिक प्रशीतक और प्रणोदक
iii. जीवाश्म ईंधन का दहन
iv. नाइट्रोजन आधारित कृषि उर्वरकों का प्रयोग
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. वर्तमान वैश्विक समुद्र स्तर में वृद्धि, जो सीधे तौर पर ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ी है, का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) प्रमुख महासागर बेसिनों में वैश्विक वर्षा की घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि।
(2) आर्कटिक और दक्षिणी अंटार्कटिक महासागरों में तैरती समुद्री बर्फ का व्यापक रूप से पिघलना।
(3) विवर्तनिक प्लेटों का अधोगमन जिससे समुद्री जल भंडारण के लिए उपलब्ध कुल आयतन कम हो जाता है।
(4) समुद्री जल का तापीय विस्तार और साथ ही स्थलीय हिमनदों और बर्फ का पिघलना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): ओजोन छिद्र सबसे प्रमुख रूप से अंटार्कटिका के ऊपर वसंत ऋतु के दौरान देखा जाता है।
कारण (R): ध्रुवीय समतापमंडलीय बादल अत्यधिक ठंडी सर्दियों के दौरान बनते हैं, जो रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए सतह प्रदान करते हैं जिससे ओजोन-क्षयकारी प्रतिक्रियाशील क्लोरीन मुक्त होती है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से कौन सा 'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल के मुख्य उद्देश्य का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) रेत के बड़े तूफानों को रोकने के लिए उत्तरी अफ्रीका में एक भौतिक कंक्रीट की दीवार का निर्माण करना।
(2) लकड़ी के निर्यात के लिए उप-सहारा अफ्रीका में एक विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करना।
(3) स्थायी प्रबंधन के माध्यम से साहेल में क्षयित भूमि को बहाल करना और मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना।
(4) नील नदी को मध्य अटलांटिक से जोड़ने वाली सिंचाई नहरों का एक विशाल नेटवर्क बनाना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

14. वनों की कटाई के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) मृदा अपरदन में वृद्धि - पेड़ मिट्टी पर वर्षा की बूंदों के प्रभाव को बढ़ाते हैं, जिससे मिट्टी ढीली हो जाती है।
(2) जैव विविधता की हानि - वनों की कटाई स्थानिक प्रजातियों के लिए आवास की उपलब्धता का विस्तार करती है।
(3) जल चक्र का व्यवधान - वनों की कटाई से स्थानीय वाष्पोत्सर्जन की उच्च दर और वर्षा में वृद्धि होती है।
(4) कार्बन उत्सर्जन - हटाई गई वनस्पति के अपघटन या जलने से संचित CO_2 वायुमंडल में मुक्त होती है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. पेरिस समझौते के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका लक्ष्य वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2.0 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे रखना है।

II. इसके लिए सभी हस्ताक्षरकर्ता देशों को तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयास करने की आवश्यकता है।

III. यह सभी सदस्य देशों पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए ऊपर-से-नीचे, कानूनी रूप से बाध्यकारी उत्सर्जन कटौती लक्ष्यों को लागू करता है।

IV. यह अलग-अलग देशों द्वारा प्रस्तुत 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' (NDCs) पर निर्भर करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. वैश्विक स्तर पर, कौन सा क्षेत्र वर्तमान में उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई की उच्चतम पूर्ण दर का अनुभव कर रहा है?

(1) साइबेरिया के बोरियल वन
(2) दक्षिण अमेरिका में अमेज़न बेसिन
(3) उत्तरी अमेरिका के समशीतोष्ण वन
(4) यूरोप में ब्लैक फॉरेस्ट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. मरुस्थलीकरण के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई के अनुचित तौर-तरीके जलभराव और मिट्टी के गंभीर लवणीकरण का कारण बन सकते हैं।

कथन II: ऊपरी मिट्टी में लवणों का संचय इसे कृषि के लिए अनुपयुक्त बना देता है, जिससे मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. आर्कटिक बर्फ का पिघलना वैश्विक जलवायु परिवर्तन में 'धनात्मक प्रतिपुष्टि चक्र' में कैसे योगदान देता है?

(1) खुले गहरे समुद्री जल का अल्बेडो कम होता है, जो अधिक विकिरण को अवशोषित करता है और ऊष्मन को तेज करता है।
(2) पिघलती बर्फ वायुमंडल से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करती है, जिससे ग्रह प्रभावी रूप से ठंडा हो जाता है।
(3) पिघलती बर्फ क्षोभमंडल में फंसी हुई ओजोन को मुक्त करती है, जो आने वाले सौर विकिरण को परावर्तित करती है।
(4) पिघलती बर्फ वैश्विक समुद्री लवणता को बढ़ाती है, जो तापीय विस्तार की प्रक्रिया को धीमा कर देती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. निम्नलिखित में से किसे ग्रीनहाउस गैस नहीं माना जाता है?

(1) मीथेन (CH_4)
(2) नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)
(3) नाइट्रोजन (N_2)
(4) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (अंतर्राष्ट्रीय प्रोटोकॉल/समझौता)

A. मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल
B. क्योटो प्रोटोकॉल
C. पेरिस समझौता
D. UNCCD

सूची II: (प्राथमिक फोकस क्षेत्र)

i. एनडीसी के माध्यम से जलवायु कार्रवाई के लिए नीचे-से-ऊपर दृष्टिकोण
ii. ओजोन क्षयकारी पदार्थों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना
iii. भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना
iv. विकसित देशों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी उत्सर्जन लक्ष्य

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. जब कृषि के लिए वन क्षेत्र साफ किया जाता है, तो वायुमंडल में बड़ी मात्रा में कार्बन मुक्त होता है। यह कार्बन मुख्य रूप से वन पारिस्थितिकी तंत्र के किन दो घटकों से उत्पन्न होता है?

(1) वन के भीतर की वायुमंडलीय वायु और नीचे स्थित आधार शैल
(2) भूजल भंडार और शाकीय उपवन
(3) पेड़ों का जैवभार और मिट्टी में मौजूद कार्बनिक पदार्थ
(4) वितान की पत्तियां और वायुमंडलीय एरोसोल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित में से कौन इन प्रमुख पर्यावरणीय मील के पत्थरों को अपनाने का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?

(1) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, IPCC की स्थापना, UNFCCC, पेरिस समझौता

Click Here to Buy book on Amazon

(2) IPCC की स्थापना, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, UNFCCC, पेरिस समझौता
(3) UNFCCC, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, IPCC की स्थापना, पेरिस समझौता
(4) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, UNFCCC, IPCC की स्थापना, पेरिस समझौता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. अनियंत्रित ग्लोबल वार्मिंग के निम्नलिखित विशिष्ट परिणामों में से विषम विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि
(2) कृषि वर्धन काल में बदलाव
(3) समुद्र के गर्म होने के कारण प्रवाल विरंजन
(4) मध्य अक्षांशों में हिमनद द्रव्यमान का विस्तार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. वनों की कटाई से मृदा अपरदन में तत्काल वृद्धि होती है, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि:
(1) जड़ प्रणालियों के नष्ट होने से मिट्टी की संरचनात्मक पकड़ समाप्त हो जाती है, जिससे वायु और जल के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है।
(2) वनों की कटाई वर्षा की रासायनिक संरचना को बदल देती है, जिससे वह अम्लीय होकर ऊपरी मृदा परतों को घोल देती है।
(3) पेड़ों की अनुपस्थिति सतह के अल्बेडो को कम कर देती है, जिससे मिट्टी अत्यधिक गर्म होकर फट जाती है।
(4) कटाई कार्यों के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनें तुरंत नीचे की आधार शैल को महीन रेत में बदल देती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. साहेल क्षेत्र के मरुस्थलीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. साहेल में वर्षा का प्रतिरूप अत्यधिक परिवर्तनशील है जो इसे स्वाभाविक रूप से लंबे सूखे के प्रति संवेदनशील बनाता है।
II. तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण अत्यधिक कृषि हुई है, जिससे मिट्टी के पोषक तत्व कम हो गए हैं।
III. यह क्षेत्र पूरी तरह से उत्तरी गोलार्ध में स्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा किस वर्ष में जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की स्थापना की गई थी?
(1) 1972
(2) 1988
(3) 1992
(4) 1997
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. ओजोन परत के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ओजोन परत की मोटाई आमतौर पर डॉबसन इकाई (DU) में मापी जाती है।
(2) समतापमंडलीय ओजोन जैविक रूप से हानिकारक पराबैंगनी-B और पराबैंगनी-C विकिरण को अवशोषित करके जीवों की रक्षा करती है।
(3) समताप मंडल में ओजोन का प्राकृतिक निर्माण और विनाश एक गतिशील संतुलन है जिसे 'चैपमैन चक्र' के रूप में जाना जाता है।
(4) भू-स्तर पर क्षोभमंडल में पाई जाने वाली ओजोन अत्यधिक लाभदायक है और सीधे मानव श्वसन स्वास्थ्य की रक्षा करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

28. विश्व स्तर पर मरुस्थलीकरण के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अत्यधिक चराई वनस्पति आवरण को हटा देती है, जिससे मिट्टी वायु और जल अपरदन के संपर्क में आ जाती है।
II. ईंधन की लकड़ी के लिए वनों की कटाई विकासशील देशों में मरुस्थलीकरण का एक महत्वपूर्ण चालक है।
III. टिकाऊ फसल चक्र प्रथाएं मरुस्थलीकरण की दर को तेज करती हैं।
IV. अनुचित सिंचाई से लवणीकरण हो सकता है, जिससे मिट्टी फसलों के लिए विषाक्त हो जाती है।
V. लंबे समय तक प्राकृतिक सूखा मानव-प्रेरित भूमि क्षरण को और बढ़ा देता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. राजस्थान के थार मरुस्थल के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सी भूमि क्षरण की सबसे व्यापक भौतिक प्रक्रिया है जो मरुस्थलीकरण की ओर ले जाती है?
(1) भारी मानसूनी अपवाह के कारण जल अपरदन
(2) समुद्री जल के प्रवेश से मिट्टी का लवणीकरण
(3) वायु अपरदन और रेत के टीलों का स्थानांतरण
(4) हिमनद प्लकिंग और घर्षण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की संरचना के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (IPCC निकाय)
A. कार्य समूह I
B. कार्य समूह II
C. कार्य समूह III
D. राष्ट्रीय ग्रीनहाउस गैस इन्वेंट्री पर टास्क फोर्स
सूची II: (प्राथमिक फोकस)
i. प्रभाव, अनुकूलन और संवेदनशीलता
ii. जलवायु परिवर्तन का शमन
iii. भौतिक विज्ञान का आधार
iv. GHG उत्सर्जन और निष्कासन की गणना के लिए कार्यप्रणाली
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. जल वाष्प एक अत्यधिक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, फिर भी इसे पेरिस समझौते जैसी अंतर्राष्ट्रीय जलवायु शमन संधियों द्वारा लक्षित नहीं किया जाता है। इसका सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) वायुमंडलीय सांद्रता तापमान-नियंत्रित होती है, जो 'दबाव कारक' के बजाय एक 'प्रतिपुष्टि' के रूप में कार्य करती है।
(2) जल वाष्प का वायुमंडलीय जीवनकाल कई शताब्दियों का होता है, जिससे इसका शमन तकनीकी रूप से असंभव हो जाता है।
(3) जल वाष्प केवल आने वाले लघु-तरंग विकिरण को रोकता है और बाहर जाने वाले दीर्घ-तरंग विकिरण को प्रभावित नहीं करता है।
(4) अंतर्राष्ट्रीय जलवायु संधियां केवल उन गैसों को नियंत्रित करती हैं जो विशिष्ट औद्योगिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्सर्जित होती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल की कल्पना शुरू में पूरे अफ्रीका में फैले पेड़ों की एक शाब्दिक निरंतर दीवार के रूप में की गई थी।
कारण (R): तब से यह लक्षित टिकाऊ भूमि प्रबंधन, कृषि-वानिकी और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप बहाली प्रथाओं के एक व्यापक मिश्रित स्वरूप के रूप में विकसित हुई है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. 2016 में अपनाए गए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के किगाली संशोधन में विशेष रूप से किस समूह के पदार्थों की उच्च वैश्विक तापन क्षमता (GWP) के कारण उन्हें चरणबद्ध तरीके से कम करने का लक्ष्य रखा गया है?
(1) क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs)
(2) हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFCs)
(3) हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन (HCFCs)
(4) हैलोन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

34. वनों की कटाई के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: झूम कृषि ऐतिहासिक रुप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई का एक प्रमुख चालक रही है।
कथन II: झूम कृषि वर्तमान में विश्व स्तर पर वनों के नुकसान के लिए जिम्मेदार कृषि का एकमात्र रुप है, जबकि वाणिज्यिक कृषि का कोई प्रभाव नहीं है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बढ़ता तापमान विश्व भर के पर्वतीय हिमनदों के पीछे हटने का कारण बन रहा है।
II. ग्लोबल वार्मिंग महासागरों के अम्लीकरण को बढ़ा रही है।
III. उच्च तापमान वायुमंडल की नमी धारण करने की क्षमता को कम कर देता है, जिससे कुल वैश्विक वर्षा कम हो जाती है।
IV. जलवायु में परिवर्तन रोगवाहकों द्वारा जनित रोगों के वितरण को बदल सकते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. निम्नलिखित में से कौन सी जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते की विशेषता नहीं है?
(1) यह उत्तरोत्तर महत्वाकांक्षी जलवायु कार्रवाई के पांच वर्ष के चक्र पर कार्य करता है।
(2) यह अनुकूलन क्षमता बढ़ाने के लिए अनुकूलन पर एक वैश्विक लक्ष्य स्थापित करता है।
(3) इसमें विकासशील देशों के लिए वित्तीय, तकनीकी और क्षमता निर्माण सहायता का ढांचा शामिल है।

(4) यह उन देशों के लिए तत्काल आर्थिक प्रतिबंध अनिवार्य करता है जो अपने एनडीसी को पूरा करने में विफल रहते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. ग्रीनहाउस गैसों के प्राथमिक प्राकृतिक स्रोतों से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) कार्बन डाइऑक्साइड - मिट्टी में विनाइट्रीकरण
(2) समताप मंडल में प्रकाश-रासायनिक अभिक्रियाएं - नाइट्रस ऑक्साइड
(3) मीथेन - प्राकृतिक आर्द्रभूमि में अवायवीय अपघटन
(4) जल वाष्प - केवल ज्वालामुखीय उत्सर्जन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. पर्यावरणीय मुद्दों में उनकी भूमिका के आधार पर निम्नलिखित पदार्थों में से विषम विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs)
(2) सल्फर डाइऑक्साइड
(3) हैलोन
(4) कार्बन टेट्राक्लोराइड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. खराब जल निकासी व्यवस्था वाले शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई के अत्यधिक उपयोग से मुख्य रुप से कौन सा दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है?
(1) स्थानीय जैव विविधता में वृद्धि
(2) प्राकृतिक मीठे पानी की आर्द्रभूमि का निर्माण
(3) आसपास के परिदृश्य का तीव्र वनीकरण
(4) मृदा लवणीकरण और उसके बाद मरुस्थलीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. वनों की कटाई से प्रभावित प्रमुख क्षेत्रों और उनके प्राथमिक चालकों के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्षेत्र)
A. अमेज़न बेसिन
B. दक्षिण पूर्व एशिया
C. उप-सहारा अफ्रीका
D. बोरियल वन (रूस/कनाडा)
सूची II: (प्राथमिक चालक)
i. वाणिज्यिक काष्ठ निष्कर्षण और लकड़ी आधारित उद्योग
ii. पशुपालन और बड़े पैमाने पर कृषि (सोया)
iii. ताड़ के तेल के बागान
iv. निर्वाह कृषि और ईंधन की लकड़ी का संग्रह
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD) औपचारिक रुप से किस वर्ष लागू हुआ?
(1) 1992
(2) 1994
(3) 1996
(4) 1998
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. CO_2 के सापेक्ष 100 वर्षों की अवधि में उनकी वैश्विक तापन क्षमता (GWP) के आधार पर निम्नलिखित ग्रीनहाउस गैसों को आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मीथेन (CH_4)
II. कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
III. नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)
IV. क्लोरोफ्लोरोकार्बन-12 (CFC-12)
सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) II, III, I, IV
(4) III, II, I, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. अमेज़न में वनों की कटाई के वैश्विक महत्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) वनों की कटाई से द्वितीयक वनस्पति की वृद्धि के माध्यम से कार्बन सिंक क्षमता में निश्चित रुप से वृद्धि होती है।
(2) अमेज़न में वनों की कटाई केवल स्थानीय तापमान को प्रभावित करती है, जिसका वैश्विक मौसम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(3) अमेज़न वर्षावन 2 से 3 वर्षों की अवधि के भीतर बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई से स्वाभाविक रूप से उबर जाते हैं।
(4) अमेज़न में वैश्विक जैव विविधता का लगभग 10% हिस्सा है, जिसे आवास की क्षति से गंभीर खतरा है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. पेरिस समझौते के ढांचे के तहत, "राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान" (NDCs) शब्दावली क्या दर्शाती है?
(1) अनिवार्य वित्तीय कोटा जो प्रत्येक देश को वार्षिक रूप से हरित जलवायु कोष को देना होगा।
(2) प्रत्येक भागीदार देश द्वारा स्वयं परिभाषित जलवायु कार्य योजनाएं और उत्सर्जन कटौती लक्ष्य।
(3) प्रत्येक चक्र की शुरुआत में विकासशील देशों को आवंटित कार्बन क्रेडिट की निश्चित मात्रा।
(4) संचयी पिछले उत्सर्जन के आधार पर विकसित देशों के लिए परिकलित ऐतिहासिक जिम्मेदारियां।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. वनों की कटाई के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह स्थानीय जल चक्र को बाधित करता है, जिससे

Downloaded from www.pdf.tube

अक्सर क्षेत्र में वर्षा कम हो जाती है।
II. यह हटाई गई भूमि के अल्बेडो को बढ़ाता है, जिससे स्थानीय ऊर्जा संतुलन प्रभावित होता है।
III. इसके परिणामस्वरूप मिट्टी में सुरक्षित रूप से संचित कार्बनिक कार्बन की मात्रा में तत्काल वृद्धि होती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. समतापमंडलीय ओजोन का रासायनिक सूत्र क्या है और यह स्वाभाविक रूप से कैसे बनता है?
(1) O_2; तब बनता है जब पराबैंगनी प्रकाश कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन परमाणुओं और कार्बन में विभाजित कर देता है।
(2) O_3; तब बनता है जब भू-स्तर के निकट तड़ित उत्पन्न होती है और समताप मंडल तक ऊपर उठती है।
(3) O_4; अत्यधिक वायुमंडलीय दबाव में दो द्विपरमाणुक ऑक्सीजन अणुओं के संलयन से बनता है।
(4) O_3; तब बनता है जब पराबैंगनी प्रकाश O_2 अणुओं को विभाजित करता है, जो फिर अखंडित O_2 के साथ जुड़ जाते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. जलवायु परिवर्तन प्रतिपुष्टि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जैसे-जैसे वैश्विक तापमान बढ़ता है, आर्कटिक क्षेत्रों में पर्माफ्रॉस्ट पिघलने लगता है।
कथन II: पर्माफ्रॉस्ट का पिघलना मुख्य रूप से वायुमंडल से मीथेन को अवशोषित करता है, जिससे एक 'ऋणात्मक प्रतिपुष्टि चक्र' बनता है जो ग्रह को ठंडा करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. हालिया IPCC रिपोर्टों के मुख्य निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मानवीय गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से वायुमंडल, महासागर और भूमि के ऊष्मन के लिए जिम्मेदार हैं।
II. सभी मूल्यांकित उत्सर्जन परिदृश्यों के तहत वैश्विक सतह के तापमान में कम से कम मध्य शताब्दी तक वृद्धि जारी रहेगी।
III. मानव-प्रेरित ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करने के लिए कम से कम शुद्ध शून्य CO_2 उत्सर्जन प्राप्त करने की आवश्यकता है।
IV. जलवायु परिवर्तन पहले से ही विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में कई मौसम और जलवायु चरम सीमाओं को प्रभावित कर रहा है।
V. समुद्र के स्तर में वृद्धि 2100 तक पूरी तरह से उलट जाने और पूर्व-औद्योगिक स्तर तक गिरने की भविष्यवाणी की गई है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल III और IV
(4) केवल IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित में से कौन सी मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिए एक प्रभावी रणनीति नहीं है?
(1) कृषि-वानिकी को लागू करना और रक्षक मेखला लगाना
(2) बिना परती छोड़े गहन एकफसली कृषि को बढ़ावा देना
(3) सतही जल अपवाह को धीमा करने के लिए सीढ़ीदार खेतों का निर्माण करना
(4) पशुधन की क्रमिक चराई को प्रोत्साहित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. वैश्विक पर्यावरण संधियों और उन्हें अपनाने के वर्षों के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संधि/समझौता)
A. UNFCCC
B. UNCCD
C. मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल
D. पेरिस समझौता
सूची II: (अपनाने का वर्ष)
i. 1987
ii. 1992
iii. 1994
iv. 2015
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

51. निम्नलिखित में से कौन सा इस बात का सबसे सटीक वर्णन करता है कि जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) अपनी मूल्यांकन रिपोर्ट कैसे विकसित करता है?
(1) यह वैश्विक विश्वविद्यालयों को घटनाओं पर विशिष्ट वायुमंडलीय प्रयोग करने के लिए अधिकृत करता है।
(2) यह पूरी तरह से उपग्रह निगरानी के अपने स्वतंत्र नेटवर्क से एकत्र किए गए डेटा पर निर्भर करता है।
(3) यह जलवायु चालकों और संभावित प्रभावों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए प्रकाशित वैज्ञानिक शोधपत्रों का संश्लेषण करता है।
(4) यह जलवायु परिवर्तन नीति पर आम सहमति निर्धारित

करने के लिए सार्वजनिक मतदान विधियों का उपयोग करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): अमेज़न बेसिन में व्यापक स्तर पर वनों की कटाई से क्षेत्रीय वर्षा में महत्वपूर्ण गिरावट आ सकती है।
कारण (R): वनों की कटाई से वाष्पोत्सर्जन करने के लिए उपलब्ध पेड़ों की संख्या कम हो जाती है, जिससे वायुमंडल के लिए नमी का एक महत्वपूर्ण स्रोत समाप्त हो जाता है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. ग्रीनहाउस गैसों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) कार्बन डाइऑक्साइड मानवीय गतिविधियों के माध्यम से उत्सर्जित प्राथमिक ग्रीनहाउस गैस है।
(2) मीथेन का वायुमंडलीय जीवनकाल कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में छोटा होता है लेकिन यह प्रति अणु विकिरण को रोकने में अधिक कुशल होती है।
(3) नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन मुख्य रूप से पुराने रेफ्रिजरेटर की शीतलन प्रणाली से जुड़ा होता है।
(4) वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता सीधे पृथ्वी पर औसत वैश्विक तापमान से जुड़ी होती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. साहेल क्षेत्र के मरुस्थलीकरण के संदर्भ में, किस प्रथा को भूमि क्षरण के प्रमुख ऐतिहासिक मानवजनित चालक के रूप में मान्यता दी गई है?
(1) बड़े पैमाने पर खुली खदान उत्खनन
(2) खानाबदोश पशुधन समूहों द्वारा अत्यधिक चराई
(3) प्रमुख नदियों पर व्यापक बांध निर्माण
(4) तेजी से बढ़ते बड़े शहरों से होने वाला औद्योगिक प्रदूषण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. ओजोन क्षरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओजोन क्षरण अंटार्कटिक की तुलना में आर्कटिक क्षेत्र में सबसे गंभीर है।
II. ध्रुवीय समतापमंडलीय बादल रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए सतह प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे ओजोन का विनाश होता है।
III. ओजोन क्षयकारी पदार्थों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को सार्वभौमिक रूप से अनुमोदित किया गया है।
IV. ओजोन छिद्र दक्षिणी गोलार्ध की वसंत ऋतु के दौरान अपने चरम पर होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. पृथ्वी पर प्रमुख प्राकृतिक कार्बन सिंक के संबंध में विषम विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) विस्तार करते शहरी ताप द्वीप
(2) वैश्विक महासागर
(3) अक्षुण्ण उष्णकटिबंधीय और बोरियल वन
(4) पीटलैंड और आर्द्रभूमि
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. पृथ्वी के महासागरों में घुली हुई कार्बन डाइऑक्साइड के बढ़ते स्तर से मुख्य रूप से कौन सा रासायनिक प्रभाव पड़ता है?
(1) समुद्री क्षारीयता में वृद्धि
(2) समुद्री जल से कैल्शियम कार्बोनेट का तेजी से अवक्षेपण
(3) समुद्री पीएच (pH) में कमी, जिससे महासागर का अम्लीकरण होता है
(4) सतही जल के ऑक्सीजन संतृप्ति में वृद्धि
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. मरुस्थलीकरण के संकेतकों से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) भौतिक संकेतक - भूजल स्तर में गिरावट
(2) जैविक संकेतक - मिट्टी की लवणता में वृद्धि
(3) सामाजिक संकेतक - चारागाहों की वनस्पतियों की संरचना में बदलाव
(4) रासायनिक संकेतक - ग्रामीण आबादी का बाह्य प्रवासन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. 'सुएस प्रभाव' को अक्सर मानवजनित जलवायु परिवर्तन के प्रमाण के रूप में उद्धृत किया जाता है। यह प्रभाव विशेष रूप से क्या प्रदर्शित करता है?
(1) सतह के बढ़ते तापमान के कारण ग्रीनलैंड की बर्फ की चादरों का तेजी से पिघलना।
(2) ग्रीनहाउस गैस दबाव के कारण हेडली सेल का ध्रुवों की ओर विस्तार।
(3) वायुमंडल और सतह की तुलना में गहरे महासागरों का देर से गर्म होना।
(4) वायुमंडलीय कार्बन समस्थानिक अनुपात में परिवर्तन, जो प्रमाणित करता है कि CO_2 जीवाश्म ईंधन से आ रही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Click Here to Buy book on Amazon

60. पर्यावरणीय शब्दावली के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (कार्रवाई)

A. वनीकरण
B. पुनर्वनीकरण
C. निर्वनीकरण
D. मरुस्थलीकरण

सूची II: (परिभाषा)

i. गैर-वन भूमि उपयोग के लिए वन क्षेत्रों को साफ करना
ii. शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में भूमि क्षरण
iii. ऐसे क्षेत्र में पेड़ लगाना जो पहले वनाच्छादित नहीं था
iv. ऐसे क्षेत्र में पुनः पेड़ लगाना जहाँ हाल ही में जंगल साफ किया गया था

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. 'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल मौलिक रूप से किस महाद्वीप से जुड़ी है?

(1) एशिया
(2) दक्षिण अमेरिका
(3) अफ्रीका
(4) ऑस्ट्रेलिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. निम्नलिखित में से कौन सा ओजोन क्षरण के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया के सही कालानुक्रमिक चरणों का प्रतिनिधित्व करता है?

(1) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को अपनाना, अंटार्कटिक ओजोन छिद्र की खोज, किगाली संशोधन
(2) अंटार्कटिक ओजोन छिद्र की खोज, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को अपनाना, किगाली संशोधन
(3) अंटार्कटिक ओजोन छिद्र की खोज, किगाली संशोधन, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को अपनाना
(4) किगाली संशोधन, अंटार्कटिक ओजोन छिद्र की खोज, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को अपनाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. ओजोन परत की बहाली की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, समतापमंडलीय ओजोन परत बहाली के संकेत दिखा रही है।

कथन II: अंटार्कटिक ओजोन छिद्र के अगले 5 वर्षों के भीतर पूरी तरह से 1980 के स्तर पर बहाल होने का अनुमान है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी गतिविधियों को वनों की कटाई का प्राथमिक प्रत्यक्ष चालक माना जाता है?

(1) पशुधन चराई के लिए चरागाह का विस्तार
(2) गैर-काष्ठ वन उत्पादों (NTFPs) की टिकाऊ कटाई
(3) बड़े पैमाने पर एकफसली कृषि बागान
(4) अनियमित वाणिज्यिक काष्ठ निष्कर्षण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

65. पेरिस समझौते के तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसमें अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों की दिशा में सामूहिक प्रगति का आकलन करने के लिए प्रत्येक पांच वर्ष में एक "ग्लोबल स्टॉकटेक" शामिल है।
II. विकासशील देशों को स्पष्ट रूप से अपने स्वयं के उत्सर्जन कटौती लक्ष्य निर्धारित करने से प्रतिबंधित किया गया है।
III. यह स्वैच्छिक सहयोग और बाजार तंत्र (अनुच्छेद 6) के लिए एक रूपरेखा स्थापित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. ग्लोबल वार्मिंग के संदर्भ में, 'यूस्टैटिक' और 'आइसोस्टैटिक' समुद्र-स्तर परिवर्तनों के बीच क्या अंतर है?

(1) यूस्टैटिक महासागर के आयतन परिवर्तनों को संदर्भित करता है, जबकि आइसोस्टैटिक भूमि की ऊंचाई के परिवर्तनों को संदर्भित करता है।
(2) यूस्टैटिक तापीय विस्तार के कारण समुद्र के स्तर में वृद्धि को संदर्भित करता है, जबकि आइसोस्टैटिक हिमनद के पिघलने को संदर्भित करता है।
(3) यूस्टैटिक चंद्र गुरुत्वाकर्षण के कारण होता है, जबकि आइसोस्टैटिक विभिन्न मानवजनित कारकों के कारण होता है।
(4) दोनों शब्द बदलते समुद्री वायु प्रतिरूप के कारण होने वाली समान वैश्विक घटनाओं का वर्णन करते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. हालिया 'स्पेस एप्लीकेशन्स सेंटर' (SAC) की रिपोर्टों के अनुसार, भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत मरुस्थलीकरण/भूमि क्षरण से प्रभावित है?

(1) लगभग 10%
(2) लगभग 20%
(3) लगभग 30%
(4) लगभग 50%
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. जलवायु परिवर्तन से निपटने की रणनीतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. शमन में उन उत्सर्जनों को कम करने के लिए कार्रवाई करना शामिल है जो जलवायु परिवर्तन का कारण बनते हैं।
II. अनुकूलन में वास्तविक या अपेक्षित भविष्य के जलवायु प्रभावों के साथ तालमेल बिठाना शामिल है।
III. कार्बन कैप्चर और संग्रहण (CCS) विकासशील देशों में व्यापक रूप से तैनात एक अनुकूलन रणनीति है।
IV. वनीकरण के माध्यम से प्राकृतिक कार्बन सिंक को बढ़ाना एक शमन रणनीति मानी जाती है।
V. पेरिस समझौते के लिए सभी देशों को उनकी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना समान शमन तकनीकें लागू करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. आंतों का किण्वन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का एक प्रमुख स्रोत है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

(1) बड़े पैमाने पर फसल के खेतों में कृषि अवशेषों को जलाने से।
(2) नगरपालिका के लैंडफिल में जैविक कचरे के अवायवीय अपघटन से।
(3) जुगाली करने वाले पशुओं की पाचन प्रक्रिया से, जिससे मीथेन उत्पन्न होती है।
(4) सीमेंट के औद्योगिक निर्माण के दौरान होने वाली रासायनिक अभिक्रियाओं से।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्रों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (पारिस्थितिकी तंत्र)

A. प्रवाल भित्तियाँ
B. आर्कटिक टुंड्रा
C. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
D. तटीय मैंग्रोव

सूची II: (विशिष्ट प्रभाव)

i. तापीय तनाव के कारण व्यापक विरंजन की घटनाएं
ii. पर्माफ्रॉस्ट का तेजी से पिघलना जिससे फंसी हुई ग्रीनहाउस गैसें मुक्त होती हैं
iii. समुद्र के स्तर में वृद्धि और तटीय संकुचन के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता
iv. शुष्कन का बढ़ता जोखिम और वनाग्नि की बढ़ती आवृत्ति

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. मानवजनित गतिविधियों का कौन सा घटक पूर्व-औद्योगिक काल से वैश्विक विकिरण दबाव (ऊष्मन प्रभाव) में सबसे बड़ा धनात्मक योगदान देता है?

(1) भूमि-उपयोग परिवर्तन जिससे सतह का अल्बेडो बढ़ जाता है
(2) एरोसोल और उनके पूर्ववर्तियों का उत्सर्जन
(3) नाइट्रस ऑक्साइड छोड़ने वाले सिंथेटिक उर्वरकों का उत्पादन
(4) जीवाश्म ईंधन के दहन से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड का संचय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): पेरिस समझौता क्योटो प्रोटोकॉल के कठोर, ऊपर-से-नीचे दृष्टिकोण से अधिक लचीले, नीचे-से-ऊपर दृष्टिकोण की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।

कारण (R): पेरिस समझौते के तहत, उत्सर्जन कटौती लक्ष्य (NDCs) प्रत्येक व्यक्तिगत देश द्वारा उनकी राष्ट्रीय परिस्थितियों के आधार पर स्वयं निर्धारित किए जाते हैं।

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. वनों की कटाई की वैश्विक सीमा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) पिछले कुछ दशकों में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई की दर ऐतिहासिक रूप से सर्वाधिक रही है।
(2) वनों का विखंडन आंतरिक वन प्रजातियों के लिए आवास की गुणवत्ता को काफी कम कर देता है।
(3) बोरियल वन मानव-प्रेरित वनों की कटाई और काष्ठ निष्कर्षण से पूरी तरह सुरक्षित हैं।
(4) दक्षिण पूर्व एशिया ने मुख्य रूप से ताड़ के तेल के बागानों के विस्तार के कारण महत्वपूर्ण वन आवरण खो दिया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. UNCCD के कार्यान्वयन फोकस के संबंध में निम्नलिखित क्षेत्रों/अनुबंधों में से विषम विकल्प की पहचान कीजिए।

(1) अंटार्कटिका
(2) एशिया
(3) लैटिन अमेरिका और कैरेबियन
(4) अफ्रीका
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

75. ओजोन परत की संरचना और कार्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह सूर्य की मध्यम-आवृत्ति पराबैंगनी किरण (पराबैंगनी-B) के 97-99% भाग को अवशोषित करती है।

II. ओजोन परत के बिना, पराबैंगनी विकिरण जीवों को व्यापक आनुवंशिक क्षति पहुँचाएगा।

III. समताप मंडल में ओजोन की सांद्रता सभी अक्षांशों पर पूरे वर्ष एकसमान और स्थिर रहती है।

IV. समताप मंडल में ओजोन अणु निर्माण और विनाश के निरंतर चक्र से गुजरते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. विश्व के शेष उष्णकटिबंधीय वर्षावनों का लगभग कितना प्रतिशत अमेज़न बेसिन के भीतर समाहित है?

(1) 10%
(2) 20%
(3) 50%
(4) 90%
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. सौर परिवर्तनशीलता और जलवायु परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: सौर विकिरण में प्राकृतिक परिवर्तन 20वीं शताब्दी के मध्य से देखे गए तीव्र ग्लोबल वार्मिंग का प्राथमिक कारण हैं।

कथन II: हाल के दशकों में उपग्रह माप पृथ्वी तक पहुँचने वाली सौर ऊर्जा में कोई महत्वपूर्ण शुद्ध वृद्धि नहीं दर्शाते हैं, जबकि सतह का तापमान लगातार बढ़ा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. ध्रुवीय शीतकाल और वसंत के दौरान अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन क्षरण की प्रक्रिया को चिह्नित करने वाली घटनाओं के निम्नलिखित अनुक्रम को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. ध्रुवीय भंवर का निर्माण, अंटार्कटिक वायु को अलग करना

II. समताप मंडल का अत्यधिक शीतल होना जिससे ध्रुवीय समतापमंडलीय बादलों का निर्माण होता है

III. वसंत ऋतु में सूर्य के प्रकाश की वापसी, ओजोन के तीव्र रासायनिक विनाश को सक्रिय करना

IV. ध्रुवीय समतापमंडलीय बादलों की सतह पर निष्क्रिय क्लोरीन यौगिकों का संचय

सही क्रम चुनिए:

(1) I, II, IV, III
(2) II, I, IV, III
(3) I, IV, II, III
(4) IV, I, II, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. पश्चिमी राजस्थान जैसे क्षेत्रों में, खिसकते रेत के टीलों के कारण होने वाले मरुस्थलीकरण से निपटने के प्रयासों में अक्सर शामिल होता है:

(1) स्वदेशी सूखा-प्रतिरोधी झाड़ियों को लगाकर स्थिरीकरण करना।
(2) टीलों को ताजे पानी से भरने के लिए व्यापक नहर सिंचाई।
(3) भारी औद्योगिक मशीनरी का उपयोग करके रेत को पूरी तरह से हटाना।
(4) ढीली रेत को संकुचित करने के लिए गहन पशु चराई को प्रोत्साहित करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. वैश्विक पर्यावरणीय पहलों के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (पहल/तंत्र)

A. REDD+
B. बॉन चैलेंज
C. ग्रेट ग्रीन वॉल
D. स्वच्छ विकास तंत्र (CDM)

सूची II: (मुख्य उद्देश्य)

i. क्षयित और वनाच्छादन विहीन भूमि को बहाल करने का एक वैश्विक प्रयास
ii. संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वनों में संचित कार्बन के लिए वित्तीय मूल्य सृजित करना
iii. क्योटो प्रोटोकॉल का एक तंत्र जो विकासशील देशों में उत्सर्जन-कटौती परियोजनाओं की अनुमति देता है
iv. साहेल में मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिए अफ्रीकी नेतृत्व वाला आंदोलन

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) जलवायु परिवर्तनों और विभिन्न मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप शुष्क भूमि में होने वाला भूमि क्षरण।
संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय के अनुसार, मरुस्थलीकरण का तात्पर्य केवल मरुस्थलों का विस्तार नहीं है। यह शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में भूमि की उत्पादकता में होने वाली गिरावट को संदर्भित करता है। जलवायु परिवर्तन और मानवीय गतिविधियाँ जैसे अत्यधिक चराई, वनों की कटाई और त्रुटिपूर्ण कृषि पद्धतियाँ इसके मुख्य कारण हैं। यह प्रक्रिया वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

2. (1) जल वाष्प
जल वाष्प पृथ्वी के वायुमंडल में सर्वाधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध ग्रीनहाउस गैस है। यह अन्य गैसों की भाँति सीधे प्राथमिक जलवायु दबाव कारक के रूप में कार्य नहीं करती है। इसके स्थान पर, यह एक शक्तिशाली प्रतिपुष्टि तंत्र के रूप में कार्य करती है। जब अन्य ग्रीनहाउस गैसों के कारण वैश्विक तापमान बढ़ता है, तो वाष्पीकरण में वृद्धि होती है, जिससे वायुमंडल में जल वाष्प की मात्रा और ऊष्मन प्रभाव बढ़ जाता है।

3. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
साहेल क्षेत्र अफ्रीका में एक महत्वपूर्ण भौगोलिक संक्रमण पट्टी है, जो उत्तर में सहारा मरुस्थल और दक्षिण में आर्द्र सवाना के मध्य स्थित है। यहाँ की जलवायु अर्ध-शुष्क है जहाँ वर्षा अत्यधिक अनिश्चित होती है। इस क्षेत्र में मरुस्थलीकरण हेतु प्राकृतिक शुष्कता और मानवीय कारक समान रूप से उत्तरदायी हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण होने वाली अत्यधिक चराई और कृषि विस्तार ने इस संवेदनशील भूमि का गंभीर क्षरण किया है।

4. (4) कृषि-वानिकी प्रणालियों का कार्यान्वयन
कृषि-वानिकी एक सतत अभ्यास प्रणाली है जिसमें फसलों के साथ वृक्ष लगाए जाते हैं, जो वनों के संरक्षण और मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतु सहायक हैं। इसके विपरीत, वाणिज्यिक कृषि हेतु भूमि की सफाई, लकड़ी के लिए वनों की कटाई और नगरीय बुनियादी ढांचे का विस्तार वनों के विनाश के प्राथमिक कारण हैं। अतः, वनों की कटाई को रोकने के संदर्भ में कृषि-वानिकी एक समाधान है, न कि कोई नकारात्मक कारक।

5. (1) केवल I और II
मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय 1994 में अंगीकृत एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता है जो भूमि प्रबंधन को पर्यावरण और विकास से जोड़ता है। यह विशेष रूप से शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा पर केंद्रित है। 'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल पूर्णतः इस अभिसमय के उद्देश्यों और ढांचे के अंतर्गत कार्य करती है, जिसका लक्ष्य साहेल क्षेत्र में भूमि क्षरण को रोकना है। अतः विकल्प में दिया गया तीसरा कथन असत्य है।

6. (2) समताप मंडल
ओजोन परत वायुमंडल के समताप मंडल क्षेत्र में स्थित है, जो धरातल से लगभग 10 से 50 किलोमीटर की ऊँचाई के मध्य विस्तृत है। यहाँ ओजोन गैस की सांद्रता सर्वाधिक होती है। यह परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी विकिरण के अधिकांश भाग को अवशोषित कर लेती है। यदि यह विकिरण पृथ्वी की सतह तक पहुँच जाए, तो यह मनुष्यों में त्वचा कैंसर और अन्य सूक्ष्म जीवों को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है।

7. (4) व्यापक भूमि-उपयोग परिवर्तन और वनों की कटाई
पृथ्वी के कक्षीय मापदंडों में परिवर्तन, ज्वालामुखी विस्फोट और सौर ऊर्जा में उतार-चढ़ाव जलवायु परिवर्तन के प्राकृतिक कारक हैं जो दीर्घकालिक अवधि में कार्य करते हैं। इसके विपरीत, भूमि-उपयोग में परिवर्तन और वनों की कटाई मानवजनित या कृत्रिम कारक हैं। औद्योगिक क्रांति के पश्चात वनों का विनाश और कृषि विस्तार वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ाकर वैश्विक तापन में सर्वाधिक योगदान दे रहे हैं, जो पूर्णतः मानव-प्रेरित है।

8. (1) केवल I, II, III और V
अमेज़न बेसिन विश्व का सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय वर्षावन है जो एक महत्वपूर्ण कार्बन सिंक के रूप में कार्य करता है। यहाँ पशुपालन और सोया की कृषि वनों की कटाई के मुख्य कारण हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, अत्यधिक वनों की कटाई इसे एक 'चरम बिंदु' की ओर ले जा रही है जहाँ यह सवाना में परिवर्तित हो सकता है। वनों के ह्रास का क्षेत्रीय वर्षा और वाष्पोत्सर्जन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

9. (3) यह मानव-प्रेरित जलवायु परिवर्तन को समझने से संबंधित वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी का आकलन करता है।
जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल एक वैज्ञानिक निकाय है जो स्वयं शोध नहीं करता है। इसकी मुख्य भूमिका विश्व भर में प्रकाशित वैज्ञानिक, तकनीकी और सामाजिक-आर्थिक जानकारी का व्यापक मूल्यांकन करना है। यह नीति निर्माताओं को जलवायु परिवर्तन के जोखिमों, प्रभावों और अनुकूलन के विकल्पों पर निष्पक्ष रिपोर्ट प्रदान करता है। यह किसी भी राष्ट्र पर कानूनी सीमाएँ आरोपित नहीं करता है, बल्कि नीति निर्माण हेतु वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है।

10. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
कार्बन डाइऑक्साइड मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के दहन से उत्पन्न होती है। मीथेन का एक प्रमुख स्रोत जुगाली करने वाले पशुओं में होने वाला आंतों का किण्वन है। नाइट्रस ऑक्साइड कृषि में उपयोग किए जाने वाले नाइट्रोजन आधारित उर्वरकों

Click Here to Buy book on Amazon

के कारण वायुमंडल में मुक्त होती है। क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs) पूर्णतः मानव निर्मित गैसें हैं जिनका उपयोग प्रशीतन प्रणालियों में किया जाता है। ये सभी गैसें भिन्न स्रोतों से वैश्विक तापन में योगदान देती हैं।

11. (4) समुद्री जल का तापीय विस्तार और साथ ही स्थलीय हिमनदों और बर्फ का पिघलना।
वैश्विक तापन के कारण समुद्र के जल स्तर में वृद्धि के दो प्राथमिक कारण हैं। प्रथम तापीय विस्तार है, जिसमें जल गर्म होने पर उसके आयतन में वृद्धि होती है। द्वितीय कारण पर्वतीय हिमनदों और ग्रीनलैंड तथा अंटार्कटिका की बर्फ की चादरों का पिघलना है, जो महासागरों में अतिरिक्त जल की मात्रा बढ़ाते हैं। समुद्री बर्फ के पिघलने से समुद्र के स्तर पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वह पहले से जलमग्न है।

12. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंटार्कटिका में अत्यधिक निम्न तापमान के कारण शीत ऋतु में ध्रुवीय समतापमंडलीय बादल निर्मित होते हैं। ये बादल क्लोरीन यौगिकों को सक्रिय करने हेतु आवश्यक रासायनिक सतह प्रदान करते हैं। वसंत ऋतु में जब सूर्य का प्रकाश पुनः लौटता है, तो यह सक्रिय क्लोरीन ओजोन के अणुओं को तीव्र गति से नष्ट कर देती है, जिससे ओजोन छिद्र का निर्माण होता है। ध्रुवीय बादल और सौर प्रकाश इस प्रक्रिया के अनिवार्य घटक हैं।

13. (3) स्थायी प्रबंधन के माध्यम से साहेल में क्षयित भूमि को बहाल करना और मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना।
'ग्रेट ग्रीन वॉल' कोई भौतिक कंक्रीट की दीवार नहीं है, अपितु यह अफ्रीका के साहेल क्षेत्र में प्रारंभ की गई एक भूमि बहाली पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य संधारणीय भूमि प्रबंधन और वृक्षारोपण के माध्यम से क्षयित भूमि को पुनः उपजाऊ बनाना है। यह परियोजना मरुस्थलीकरण रोकने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार सृजन पर केंद्रित है। यह जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध अफ्रीका का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

14. (4) कार्बन उत्सर्जन - हटाई गई वनस्पति के अपघटन या जलने से संचित CO_2 वायुमंडल में मुक्त होती है।
वन कार्बन के विशाल भंडार होते हैं। जब वृक्षों का कटाव और दहन किया जाता है, तो उनमें संचित कार्बन, कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में वायुमंडल में मुक्त हो जाता है, जो वैश्विक तापन को बढ़ाता है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि वनों की कटाई से मृदा अपरदन बढ़ता है और जैव विविधता का ह्रास होता है। वनों के विनाश से वाष्पोत्सर्जन प्रक्रिया बाधित होती है जिससे स्थानीय वर्षा की मात्रा में भी भारी कमी आती है।

15. (1) I, II और IV
पेरिस समझौता एक ऐतिहासिक जलवायु संधि है जिसका लक्ष्य वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना है। यह प्रत्येक राष्ट्र द्वारा प्रस्तुत 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' पर आधारित है। यह क्योटो प्रोटोकॉल के विपरीत एक 'नीचे-से-ऊपर' दृष्टिकोण का अनुसरण करता है, जहाँ देश स्वयं अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं। संयुक्त राष्ट्र किसी भी राष्ट्र पर ऊपर से कोई अनिवार्य लक्ष्य थोपता नहीं है, जिससे यह अधिक स्वीकार्य है।

16. (2) दक्षिण अमेरिका में अमेज़न बेसिन
वर्तमान में दक्षिण अमेरिका का अमेज़न बेसिन विश्व में उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई की सर्वाधिक उच्च दर का सामना कर रहा है। यद्यपि दक्षिण पूर्व एशिया में भी वनों का तीव्र विनाश हुआ है, किंतु अमेज़न में वन आवरण की क्षति का कुल क्षेत्रफल बहुत अधिक है। कृषि विस्तार, सड़कों का निर्माण और बड़े पैमाने पर पशुपालन इस क्षेत्र में वनों के द्रुत गति से नष्ट होने के प्राथमिक उत्तरदायी कारक हैं।

17. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
शुष्क क्षेत्रों में जब सिंचाई हेतु अत्यधिक जल का उपयोग किया जाता है और जल निकासी की व्यवस्था दोषपूर्ण होती है, तो जलभराव की स्थिति उत्पन्न होती है। इससे भूमि के नीचे के लवण सतह पर संचित हो जाते हैं, जिसे लवणीकरण कहते हैं। यह प्रक्रिया मृदा की उर्वरता को पूर्णतः नष्ट कर देती है और इसे कृषि हेतु अनुपयुक्त बना देती है। लवणीकरण मरुस्थलीकरण के सबसे प्रमुख रासायनिक कारकों में से एक है।

18. (1) खुले गहरे समुद्री जल का अल्बेडो कम होता है, जो अधिक विकिरण को अवशोषित करता है और ऊष्मन को तेज करता है।
आर्कटिक में बर्फ का पिघलना एक धनात्मक प्रतिपुष्टि चक्र का निर्माण करता है। श्वेत बर्फ सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करती है, किंतु जब यह पिघलती है, तो नीचे का गहरा समुद्री जल अनावृत हो जाता है। गहरे जल का अल्बेडो कम होने के कारण यह अधिक सौर ऊर्जा अवशोषित करता है, जिससे समुद्र और अधिक गर्म हो जाता है। यह अतिरिक्त ऊष्मा और अधिक बर्फ को पिघलाती है, जिससे वैश्विक तापन तीव्र होता है।

19. (3) नाइट्रोजन (N_2)
नाइट्रोजन पृथ्वी के वायुमंडल की सर्वाधिक प्रचुर गैस है, किंतु यह ग्रीनहाउस गैस नहीं है क्योंकि यह अवरक्त विकिरण को अवशोषित नहीं करती है। मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड प्रमुख ग्रीनहाउस गैसें हैं जो पृथ्वी से उत्सर्जित होने वाली ऊष्मा को रोककर वायुमंडल को गर्म रखती हैं। ग्रीनहाउस गैसों के अणुओं की परमाणु संरचना जटिल होती है जो उन्हें तापीय ऊर्जा को अवशोषित और पुनः उत्सर्जित करने में सक्षम बनाती है।

20. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ओजोन क्षयकारी पदार्थों के नियंत्रण हेतु समर्पित है। क्योटो प्रोटोकॉल ने विकसित राष्ट्रों हेतु उत्सर्जन कटौती के कानूनी लक्ष्य निर्धारित किए थे। पेरिस समझौता राष्ट्रीय योगदान के माध्यम से एक लचीला दृष्टिकोण अपनाता है। संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय विशेष रूप से भूमि क्षरण की समस्याओं के समाधान पर केंद्रित है। ये सभी

Downloaded from www.pdf.tube

अंतर्राष्ट्रीय समझौते वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

21. (3) पेड़ों का जैवभार और मिट्टी में मौजूद कार्बनिक पदार्थ
वन पारिस्थितिकी तंत्र में कार्बन मुख्य रूप से दो स्वरूपों में संचित रहता है। प्रथम वृक्षों के तनों, शाखाओं और जड़ों के जीवित जैवभार में संचित होता है। द्वितीय स्वरूप मृदा में उपस्थित मृत कार्बनिक पदार्थों और ह्यूमस में होता है। जब वनों की कटाई की जाती है, तो लकड़ी के दहन या अपघटन से यह संचित कार्बन तीव्र गति से कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में वायुमंडल में मुक्त हो जाता है।

22. (1) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, IPCC की स्थापना, UNFCCC, पेरिस समझौता
पर्यावरणीय मील के पत्थरों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल 1987 में अंगीकृत किया गया था। इसके पश्चात 1988 में जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल की स्थापना हुई। 1992 में रियो शिखर सम्मेलन के दौरान जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन को अपनाया गया। अंततः 2015 में पेरिस समझौता हुआ। यह क्रम जलवायु के प्रति वैश्विक जागरूकता और नीतिगत विकास के क्रमिक विकास को प्रदर्शित करता है।

23. (4) मध्य अक्षांशों में हिमनद द्रव्यमान का विस्तार
वैश्विक तापन के कारण विश्व भर के अधिकांश हिमनद पिघल रहे हैं और उनके आकार में संकुचन हो रहा है, न कि विस्तार। तापमान में वृद्धि से चरम मौसम की घटनाएँ जैसे बाढ़ और सूखा अधिक बारंबार हो रहे हैं। इसके कारण महासागरों के गर्म होने से प्रवाल विरंजन की समस्या उत्पन्न होती है और कृषि हेतु अनुकूल ऋतुओं के समय में परिवर्तन आता है। अतः हिमनदों का विस्तार वार्मिंग के प्रभावों में एक अपवाद है।

24. (1) जड़ प्रणालियों के नष्ट होने से मिट्टी की संरचनात्मक पकड़ समाप्त हो जाती है, जिससे वायु और जल के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है।
वृक्षों की जड़ें मृदा के कणों को मजबूती से आबद्ध रखती हैं, जिससे उसे बहने से रोका जा सकता है। वनों की कटाई के पश्चात यह प्राकृतिक बंधन समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त, वनों का ऊपरी वितान वर्षा की बूंदों की सीधी मार से भूमि की रक्षा करता है। वृक्षों की अनुपस्थिति में, वर्षा का जल और तीव्र वायु ऊपरी उपजाऊ मृदा को सरलता से बहा ले जाते हैं, जिससे मिट्टी का गंभीर अपरदन होता है।

25. (4) I, II और III
साहेल क्षेत्र में मरुस्थलीकरण एक बहुआयामी समस्या है। यहाँ वर्षा की अनिश्चितता एक प्राकृतिक कारक है जो सूखे के जोखिम को बढ़ाती है। साथ ही, तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण ईंधन और कृषि हेतु भूमि का अत्यधिक दोहन हुआ है, जिससे मिट्टी की उर्वरता क्षीण हो गई है। भौगोलिक रूप से यह क्षेत्र सहारा के दक्षिण में स्थित है। ये सभी कारक सम्मिलित रूप से यहाँ की उपजाऊ भूमि को मरुस्थल में परिवर्तित कर रहे हैं।

26. (2) 1988
जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की स्थापना वर्ष 1988 में की गई थी। इसे विश्व मौसम विज्ञान संगठन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक आधारों और इसके संभावित सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का निष्पक्ष आकलन करना है। तब से यह संस्था नियमित अंतराल पर अपनी मूल्यांकन रिपोर्ट जारी करती है, जो वैश्विक जलवायु नीतियों हेतु विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण माने जाते हैं।

27. (4) भू-स्तर पर क्षोभमंडल में पाई जाने वाली ओजोन अत्यधिक लाभदायक है और सीधे मानव श्वसन स्वास्थ्य की रक्षा करती है।
ओजोन का प्रभाव वायुमंडल में उसकी अवस्थिति पर निर्भर करता है। समताप मंडल में यह हानिकारक पराबैंगनी किरणों को रोककर जीवन की रक्षा करती है। किंतु निचले वायुमंडल या क्षोभमंडल में ओजोन एक प्रदूषक के रूप में कार्य करती है। यह शहरी धुंध का प्रमुख घटक है और मनुष्यों के फेफड़ों हेतु हानिकारक होने के साथ-साथ वनस्पतियों की वृद्धि को भी क्षति पहुँचाती है। अतः चौथा कथन वैज्ञानिक रूप से असत्य है।

28. (2) केवल III
टिकाऊ फसल चक्र मरुस्थलीकरण को कम करने में सहायक होता है, न कि उसे तीव्र करता है। यह मृदा के पोषक तत्वों को पुनर्जीवित करने और अपरदन को रोकने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। इसके विपरीत, अत्यधिक चराई, ईंधन हेतु वृक्षों की कटाई, दोषपूर्ण सिंचाई से उत्पन्न लवणीकरण और दीर्घकालिक सूखा मरुस्थलीकरण के वास्तविक और गंभीर कारण हैं। इसलिए, दिए गए विकल्पों में से केवल तीसरा कथन ही तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

29. (3) वायु अपरदन और रेत के टीलों का स्थानांतरण
राजस्थान के थार मरुस्थल में शुष्क जलवायु और तीव्र वायु के कारण वायु अपरदन सबसे प्रमुख समस्या है। यहाँ वनस्पतियों के अभाव के कारण पवन सरलता से मृदा के कणों को उड़ा ले जाती है। इससे रेत के विशाल टीले एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते हैं, जो प्रायः उपजाऊ कृषि भूमि और मानवीय बस्तियों को ढंक लेते हैं। यह प्रक्रिया इस क्षेत्र में मरुस्थलीकरण विस्तार का मुख्य भौतिक कारक है।

NODIA

30. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल के विभिन्न समूह विशिष्ट क्षेत्रों पर कार्य करते हैं। कार्य समूह 1 जलवायु प्रणाली के भौतिक विज्ञान का आधार तैयार करता है। कार्य समूह 2 जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, अनुकूलन और संवेदनशीलता का विश्लेषण करता है। कार्य समूह 3 ग्रीनहाउस गैसों के शमन के उपायों पर ध्यान केंद्रित करता है। टास्क फोर्स राष्ट्रीय स्तर पर गैस उत्सर्जन की गणना हेतु कार्यप्रणाली विकसित करने के लिए उत्तरदायी है।

31. (1) वायुमंडलीय सांद्रता तापमान-नियंत्रित होती है, जो 'दबाव कारक' के बजाय एक 'प्रतिपुष्टि' के रूप में कार्य करती है।
जल वाष्प का वायुमंडल में जीवनकाल बहुत संक्षिप्त होता है और इसकी मात्रा मुख्य रूप से तापमान द्वारा निर्धारित होती है। मानव जल वाष्प के उत्सर्जन को सीधे नियंत्रित नहीं कर सकते जैसा कि वे कार्बन डाइऑक्साइड के साथ करते हैं। चूंकि यह तापमान बढ़ने पर स्वतः बढ़ जाता है और घटने पर वर्षा के रूप में गिर जाता है, इसलिए इसे जलवायु संधियों में स्वतंत्र लक्ष्य के रूप में सम्मिलित नहीं किया जाता।

32. (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या है।
'ग्रेट ग्रीन वॉल' परियोजना 2007 में प्रारंभ हुई थी और प्रारंभ में इसे वृक्षों की एक लंबी पट्टी के रूप में परिकल्पित किया गया था। समय के साथ यह समझ विकसित हुई कि केवल वृक्षारोपण पर्याप्त नहीं है, जिसके कारण अब यह संधारणीय भूमि प्रबंधन का एक व्यापक कार्यक्रम बन गया है। यद्यपि कारण (R) एक सही तथ्य है, किंतु यह इस बात की पूर्ण व्याख्या नहीं करता कि मूल अवधारणा भौतिक दीवार के रूप में क्यों थी।

33. (2) हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFCs)
किगाली संशोधन 2016 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के अंतर्गत अंगीकृत किया गया था। इसका उद्देश्य हाइड्रोफ्लोरोकार्बन के उत्पादन और उपभोग को क्रमशः कम करना है। यद्यपि HFCs ओजोन परत को प्रत्यक्ष क्षति नहीं पहुँचाते हैं, किंतु वे अत्यंत शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसें हैं जो वैश्विक तापन में भारी योगदान देती हैं। उन्हें CFCs के विकल्प के रूप में लाया गया था, किंतु उच्च तापन क्षमता के कारण अब उन्हें चरणबद्ध तरीके से हटाया जा रहा है।

34. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
झूम या स्थानांतरण कृषि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई का एक पुरातन और महत्वपूर्ण कारण रही है। हालांकि, कथन II असत्य है क्योंकि वर्तमान समय में वाणिज्यिक कृषि, जैसे ताड़ के तेल, सोयाबीन और पशु चरागाहों का विस्तार, वनों की क्षति का सबसे बड़ा कारण बन गया है। केवल झूम कृषि को ही वनों की कटाई हेतु उत्तरदायी मानना त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक औद्योगिक कृषि का प्रभाव अधिक व्यापक है।

35. (1) I, II और IV
वैश्विक तापन के कई दूरगामी प्रभाव हैं, जिनमें पर्वतीय हिमनदों का तीव्र पिघलना सम्मिलित है। महासागर वायुमंडल से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर रहे हैं, जिससे उनका अम्लीकरण हो रहा है और प्रवाल भित्तियों को संकट है। साथ ही, बदलती जलवायु रोगों के प्रसार हेतु नए क्षेत्र निर्मित कर रही है। कथन III असत्य है क्योंकि उच्च तापमान वास्तव में वायु की नमी धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है, जिससे वर्षा की तीव्रता बढ़ती है।

36. (4) यह उन देशों के लिए तत्काल आर्थिक प्रतिबंध अनिवार्य करता है जो अपने एनडीसी को पूरा करने में विफल रहते हैं।
पेरिस समझौता दंड या आर्थिक प्रतिबंधों पर आधारित नहीं है, बल्कि यह पारदर्शिता और सामूहिक प्रगति की समीक्षा पर निर्भर करता है। यह एक लचीला ढांचा है जो राष्ट्रों को अपनी क्षमतानुसार जलवायु लक्ष्य निर्धारित करने की अनुमति देता है। यह प्रत्येक पांच वर्ष में लक्ष्यों को बढ़ाने का आग्रह करता है और विकासशील देशों हेतु वित्तीय सहायता सुनिश्चित करता है। विफलता की स्थिति में आर्थिक प्रतिबंध का इसमें कोई प्रावधान नहीं है।

37. (3) मीथेन - प्राकृतिक आर्द्रभूमि में अवायवीय अपघटन
प्राकृतिक आर्द्रभूमियाँ मीथेन का सबसे बड़ा प्राकृतिक स्रोत हैं, जहाँ ऑक्सीजन के अभाव में बैक्टीरिया जैविक पदार्थों का अपघटन करते हैं। कार्बन डाइऑक्साइड मुख्य रूप से श्वसन और ज्वालामुखीय गतिविधियों से उत्सर्जित होती है। नाइट्रस ऑक्साइड मृदा और महासागरों में होने वाली सूक्ष्मजैविक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होती है। जल वाष्प का मुख्य स्रोत महासागरों का वाष्पीकरण है। अतः केवल तीसरा विकल्प ही वैज्ञानिक रूप से सही ढंग से सुमेलित है।

38. (2) सल्फर डाइऑक्साइड
क्लोरोफ्लोरोकार्बन, हैलोन और कार्बन टेट्राक्लोराइड सभी प्रमुख ओजोन क्षयकारी पदार्थ हैं जिन्हें मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के अंतर्गत प्रतिबंधित किया गया है। दूसरी ओर, सल्फर डाइऑक्साइड मुख्य रूप से अम्लीय वर्षा और वायु प्रदूषण से संबंधित है, किंतु यह ओजोन परत के विनाश का प्रत्यक्ष कारण नहीं है। यह कोयले के दहन जैसे औद्योगिक उत्सर्जन से उत्पन्न होती है। अतः ओजोन परत क्षरण के संदर्भ में सल्फर डाइऑक्साइड एक विषम विकल्प है।

39. (4) मृदा लवणीकरण और उसके बाद मरुस्थलीकरण
शुष्क क्षेत्रों में जब अत्यधिक सिंचाई की जाती है और जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं होती, तो जल मृदा के नीचे एकत्रित हो जाता है। वाष्पीकरण की उच्च दर के कारण, जल तो वाष्पित हो जाता है किंतु घुले हुए लवण मिट्टी की ऊपरी सतह पर संचित हो जाते हैं। यह लवणीकरण मिट्टी को फसलों हेतु विषाक्त बना देता है और अंततः भूमि बंजर होकर मरुस्थल में परिवर्तित हो जाती है। यह एक गंभीर पर्यावरणीय संकट है।

40. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
अमेज़न में वनों की कटाई मुख्य रूप से विशाल पशुपालन और सोया कृषि के कारण होती है। दक्षिण पूर्व एशिया में ताड़ के तेल के बागानों हेतु वनों की सफाई की जाती है। उप-सहारा अफ्रीका में बढ़ती जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं हेतु निर्वाह कृषि और ईंधन की लकड़ी का संग्रह प्रमुख कारक हैं। रूस और कनाडा के बोरियल वनों में वाणिज्यिक लकड़ी उद्योग वनों की क्षति का कारण है। ये कारक भिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट भूमिका निभाते हैं।

41. (3) 1996
संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय को वर्ष 1994 में पेरिस में अंगीकृत किया गया था। इसे आधिकारिक रूप से 26 दिसंबर, 1996 को लागू किया गया, जब आवश्यक संख्या

Click Here to Buy book on Amazon

में राष्ट्रों ने इसका अनुमोदन कर दिया। यह अभिसमय विशेष रूप से शुष्क क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के कल्याण और भूमि की उर्वरता को बहाल करने पर केंद्रित है जो सूखे के प्रति संवेदनशील हैं। भारत भी इस महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय का एक सक्रिय सदस्य है।

42. (2) II, I, III, IV
ग्रीनहाउस गैसों की वैश्विक तापन क्षमता उनकी तुलना कार्बन डाइऑक्साइड से करके मापी जाती है। कार्बन डाइऑक्साइड का मूल्य 1 निर्धारित है। मीथेन की तापन क्षमता कार्बन डाइऑक्साइड से लगभग 28-30 गुना अधिक होती है। नाइट्रस ऑक्साइड की क्षमता लगभग 265 गुना अधिक होती है। क्लोरोफ्लोरोकार्बन-12 (CFC-12) की तापन क्षमता सर्वाधिक, लगभग 10,000 गुना से भी अधिक होती है। अतः आरोही क्रम में सबसे पहले कार्बन डाइऑक्साइड और अंत में CFC-12 आएगा।

43. (4) अमेज़न में वैश्विक जैव विविधता का लगभग 10% हिस्सा है, जिसे आवास की क्षति से गंभीर खतरा है।
अमेज़न वर्षावन पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह विश्व की ज्ञात प्रजातियों के दसवें भाग का घर है। वनों की कटाई से न केवल ये प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं, बल्कि यह वैश्विक कार्बन चक्र को भी बाधित कर रहा है। अमेज़न में होने वाली क्षति का प्रभाव वैश्विक जलवायु प्रणालियों पर पड़ता है, जिससे सूखे और मौसमी प्रतिरूप में परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। इसे 'पृथ्वी के फेफड़े' कहा जाता है।

44. (2) प्रत्येक भागीदार देश द्वारा स्वयं परिभाषित जलवायु कार्य योजनाएं और उत्सर्जन कटौती लक्ष्य।
'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' पेरिस समझौते का मुख्य आधार हैं। ये प्रत्येक राष्ट्र द्वारा अपनी घरेलू परिस्थितियों, क्षमताओं और प्राथमिकताओं के आधार पर निर्मित स्वैच्छिक जलवायु योजनाएं हैं। इनमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लक्ष्यों के साथ-साथ जलवायु अनुकूलन की रणनीतियाँ भी सम्मिलित होती हैं। राष्ट्रों को प्रति पांच वर्ष में अपने लक्ष्यों की समीक्षा करने और उन्हें अधिक महत्वाकांक्षी बनाने की आवश्यकता होती है।

45. (1) केवल I और II
वनों की कटाई स्थानीय जल चक्र को गंभीर रूप से बाधित करती है क्योंकि वृक्ष वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से वायुमंडल में नमी छोड़ते हैं। वनों के हटने से भूमि की सतह अधिक परावर्तक हो जाती है, जो स्थानीय ऊर्जा संतुलन को परिवर्तित कर देती है। कथन III असत्य है क्योंकि वनों की कटाई से मृदा में संचित कार्बन कम हो जाता है। जब वनस्पति हटाई जाती है, तो मिट्टी का कार्बनिक पदार्थ ऑक्सीकृत होकर वातावरण में मुक्त हो जाता है।

46. (4) O_3; तब बनता है जब पराबैंगनी प्रकाश O_2 अणुओं को विभाजित करता है, जो फिर अखंडित O_2 के साथ जुड़ जाते हैं।
ओजोन का रासायनिक सूत्र O_3 है, जिसमें ऑक्सीजन के तीन परमाणु होते हैं। समताप मंडल में इसका निर्माण एक प्राकृतिक प्रकाश-रासायनिक प्रक्रिया है। सूर्य की उच्च-ऊर्जा पराबैंगनी किरणें ऑक्सीजन के एक अणु (O_2) को दो स्वतंत्र परमाणुओं में विखंडित कर देती हैं। ये मुक्त परमाणु वायुमंडल में उपस्थित अन्य ऑक्सीजन अणुओं (O_2) के साथ संयुक्त होकर ओजोन (O_3) का निर्माण करते हैं। यह परत हानिकारक सौर विकिरण को अवशोषित करती है।

NODIA

47. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण ध्रुवीय क्षेत्रों में पर्माफ्रॉस्ट यानी स्थायी रूप से जमी हुई मिट्टी पिघल रही है। हालांकि, कथन II असत्य है क्योंकि पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से विशाल मात्रा में मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में मुक्त होती है, न कि अवशोषित। चूंकि मीथेन एक अत्यंत शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, इसलिए यह वैश्विक तापन को और अधिक बढ़ा देती है। इसे 'धनात्मक प्रतिपुष्टि' कहा जाता है जो जलवायु परिवर्तन को तीव्र करती है।

48. (2) केवल V
हालिया वैज्ञानिक रिपोर्टों के अनुसार, मानवीय गतिविधियों ने वैश्विक तापमान में वृद्धि की है और यह प्रभाव सार्वभौमिक है। हालांकि, कथन V पूर्णतः असत्य है। वैज्ञानिकों के अनुसार, समुद्र के जल स्तर में वृद्धि की प्रक्रिया अत्यंत धीमी है और इसे वर्ष 2100 तक पूर्णतः उलट देना संभव नहीं है। समुद्र का गर्म होना और हिमनदों का पिघलना ऐसी दीर्घकालिक प्रक्रियाएं हैं जो उत्सर्जन रुकने के पश्चात भी सदियों तक जारी रह सकती हैं।

49. (2) बिना परती छोड़े गहन एकफसली कृषि को बढ़ावा देना
गहन एकफसली कृषि मृदा के पोषक तत्वों को तीव्र गति से समाप्त कर देती है और इसे अपरदन के प्रति अति-संवेदनशील बना देती है। इसके विपरीत, कृषि-वानिकी, रक्षक मेखलाएं निर्मित करना, सीढ़ीदार कृषि और नियंत्रित पशु चराई मरुस्थलीकरण रोकने के प्रभावी उपाय हैं। मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने हेतु उसे अंतराल पर खाली छोड़ना या फसल चक्र अपनाना अनिवार्य है। अतः गहन एकफसली कृषि भूमि क्षरण को बढ़ाती है।

50. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन 1992 के रियो पृथ्वी सम्मेलन में अंगीकृत हुआ था। मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय 1994 में पूर्ण हुआ। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, जो ओजोन परत की रक्षा हेतु है, 1987 में हस्ताक्षरित हुआ था। पेरिस समझौता, जो वर्तमान वैश्विक जलवायु कार्रवाई का आधार है, 2015 में अपनाया गया। ये वर्ष वैश्विक पर्यावरणीय कूटनीति के इतिहास में महत्वपूर्ण मील के पत्थर हैं जो अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को दर्शाते हैं।

51. (3) यह जलवायु चालकों और संभावित प्रभावों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए प्रकाशित वैज्ञानिक शोधपत्रों का संश्लेषण करता है।
जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल एक समीक्षा निकाय है जो विश्व भर के हजारों वैज्ञानिकों के सहयोग से संचालित होता है। यह स्वयं मौलिक अनुसंधान या प्रयोग नहीं करता है।

इसके स्थान पर, इसके विशेषज्ञ विश्व भर में पहले से प्रकाशित और सहकर्मी-समीक्षित वैज्ञानिक साहित्य का गहन विश्लेषण करते हैं। इस संश्लेषण के माध्यम से, यह जलवायु परिवर्तन की वर्तमान स्थिति और भावी परिदृश्यों पर एक आधिकारिक और सर्वसम्मत वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

52. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अमेज़न के वृक्ष एक जैविक प्रक्रिया के माध्यम से नमी को वायुमंडल में वापस भेजते हैं जिसे वाष्पोत्सर्जन कहा जाता है। यह नमी बादल निर्माण और निरंतर वर्षा में निर्णायक भूमिका निभाती है। जब वनों की बड़े पैमाने पर कटाई होती है, तो वाष्पोत्सर्जन की यह प्राकृतिक प्रणाली अवरुद्ध हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्र में बादलों का निर्माण कम होता है और अंततः क्षेत्रीय वर्षा प्रतिरूप में भारी गिरावट आती है, जो कृषि को प्रभावित करती है।

53. (3) नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन मुख्य रूप से पुराने रेफ्रिजरेटर की शीतलन प्रणाली से जुड़ा होता है।
यह कथन असत्य है क्योंकि नाइट्रस ऑक्साइड का प्राथमिक स्रोत कृषि गतिविधियाँ हैं, विशेष रूप से नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग और मृदा प्रबंधन। पुराने रेफ्रिजरेटर में शीतलक के रूप में क्लोरोफ्लोरोकार्बन का उपयोग किया जाता था। कार्बन डाइऑक्साइड प्रमुख मानवजनित गैस है, और मीथेन अल्पकालिक होने के पश्चात भी ऊष्मा रोकने में अत्यंत शक्तिशाली है। ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता सीधे बढ़ते वैश्विक तापमान हेतु उत्तरदायी मानी जाती है।

54. (2) खानाबदोश पशुधन समूहों द्वारा अत्यधिक चराई
साहेल क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से पशुपालन जीविका का मुख्य आधार रहा है। किंतु पशुओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि और सीमित चरागाहों के कारण यहाँ 'अति-चराई' की समस्या उत्पन्न हुई है। जब पशु वनस्पति को मृदा से पूर्णतः हटा देते हैं, तो नग्न मिट्टी पवन और वर्षा के साथ बह जाती है। यह मानवीय हस्तक्षेप इस क्षेत्र में भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण के सबसे प्रमुख कारणों में से एक के रूप में चिन्हित किया गया है।

55. (2) केवल II, III और IV
ओजोन क्षरण अंटार्कटिका के ऊपर सर्वाधिक गंभीर है क्योंकि वहाँ का 'ध्रुवीय भंवर' अत्यंत शीतल और स्थिर होता है, जो ध्रुवीय बादलों के निर्माण में सहायक है। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल एक सफल संधि है जिसे सभी राष्ट्रों ने अंगीकृत किया है। ओजोन छिद्र अंटार्कटिक वसंत के दौरान सबसे विस्तृत होता है। कथन I असत्य है क्योंकि आर्कटिक में तापमान अंटार्कटिका जितना कम नहीं होता, इसलिए वहाँ क्षरण अपेक्षाकृत कम गंभीर होता है।

56. (1) विस्तार करते शहरी ताप द्वीप
'शहरी ताप द्वीप' कार्बन सिंक नहीं हैं, बल्कि वे कंक्रीट और मानवीय गतिविधियों के कारण अत्यधिक ऊष्मा उत्पन्न करने वाले क्षेत्र हैं। इसके विपरीत, महासागर विश्व के सबसे बड़े कार्बन सिंक हैं जो वायुमंडलीय CO_2 को अवशोषित करते हैं। वन और पीटलैंड (दलदली भूमि) भी भारी मात्रा में कार्बन को अपनी वनस्पतियों और मृदा में संचित रखते हैं। ये प्राकृतिक सिंक वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

57. (3) समुद्री पीएच (pH) में कमी, जिससे महासागर का अम्लीकरण होता है
जब वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड समुद्र के जल में घुलती है, तो वह जल के साथ अभिक्रिया करके कार्बोनिक अम्ल बनाती है। इससे समुद्री जल की अम्लता बढ़ जाती है और पीएच मान में गिरावट आती है। यह प्रक्रिया 'महासागर अम्लीकरण' कहलाती है। यह समुद्री जीवों, विशेष रूप से प्रवाल और शंख वाले जीवों हेतु अत्यंत हानिकारक है, क्योंकि अम्लीय वातावरण में उनके कैल्शियम कार्बोनेट के कवच और कंकाल दुर्बल होकर घुलने लगते हैं।

58. (1) भौतिक संकेतक - भूजल स्तर में गिरावट
मरुस्थलीकरण के सटीक आकलन हेतु विभिन्न संकेतकों का उपयोग किया जाता है। भूजल स्तर में निरंतर गिरावट एक महत्वपूर्ण भौतिक संकेतक है जो जल संसाधनों के अत्यधिक दोहन को प्रदर्शित करता है। मृदा की लवणता में वृद्धि एक रासायनिक संकेतक है, जबकि वनस्पतियों की संरचना में परिवर्तन एक जैविक संकेतक माना जाता है। ग्रामीण जनसंख्या का पलायन सामाजिक-आर्थिक परिणामों की श्रेणी में आता है। अतः केवल प्रथम युग्म ही सही ढंग से सुमेलित है।

59. (4) वायुमंडलीय कार्बन समस्थानिक अनुपात में परिवर्तन, जो प्रमाणित करता है कि CO_2 जीवाश्म ईंधन से आ रही है।
सुएस प्रभाव वायुमंडल में कार्बन के समस्थानिकों, विशेष रूप से कार्बन-14 और कार्बन-12 के अनुपात में होने वाली गिरावट को दर्शाता है। चूंकि जीवाश्म ईंधन लाखों वर्ष पुरातन हैं, उनमें कार्बन-14 पूर्णतः लुप्त हो चुका होता है। जब हम उन्हें जलाते हैं, तो वायुमंडल में केवल कार्बन-12 की मात्रा बढ़ती है। यह स्पष्ट वैज्ञानिक प्रमाण देता है कि वायुमंडल में बढ़ रही कार्बन डाइऑक्साइड प्राकृतिक स्रोतों के बजाय मानवीय जीवाश्म ईंधन दहन से उत्पन्न हो रही है।

60. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
वनीकरण का अर्थ है ऐसे क्षेत्र में वन लगाना जहाँ पूर्व में वन नहीं थे। पुनर्वनीकरण का अर्थ उन क्षेत्रों में पुनः वृक्ष लगाना है जहाँ से वन हाल ही में नष्ट हुए हों। निर्वनीकरण वनों को काटकर भूमि को गैर-वन कार्यों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है। मरुस्थलीकरण विशेष रूप से शुष्क क्षेत्रों में होने वाला भूमि क्षरण है। ये शब्द पर्यावरण प्रबंधन के विभिन्न और विशिष्ट पहलुओं को वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करते हैं।

61. (3) अफ्रीका
'ग्रेट ग्रीन वॉल' पहल विशेष रूप से अफ्रीकी महाद्वीप से संबंधित है। यह अफ्रीका के साहेल क्षेत्र में प्रारंभ किया गया एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, जिसका विस्तार सेनेगल से लेकर जिबूती तक है। इसका मुख्य लक्ष्य मरुस्थलीकरण, जलवायु परिवर्तन और खाद्य असुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामूहिक सामना करना है। यह परियोजना न केवल वृक्षारोपण

Downloaded from www.pdf.tube

पर केंद्रित है, अपितु यह स्थानीय समुदायों के लिए स्थायी आजीविका और लचीले पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण का प्रयास करती है।

62. (2) अंटार्कटिक ओजोन छिद्र की खोज, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल को अपनाना, किगाली संशोधन
ओजोन संरक्षण का इतिहास 1985 में अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन छिद्र की वैज्ञानिक खोज के साथ प्रारंभ हुआ। इस चिंताजनक खोज के पश्चात, 1987 में ओजोन क्षयकारी पदार्थों के नियंत्रण हेतु मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल अंगीकृत किया गया। कई वर्षों बाद, 2016 में इसमें किगाली संशोधन सम्मिलित किया गया ताकि हाइड्रोफ्लोरोकार्बन जैसी शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों को भी चरणबद्ध तरीके से समाप्त किया जा सके। यह क्रम वैश्विक पर्यावरणीय कूटनीति के विकास को दर्शाता है।

63. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के सफल कार्यान्वयन के कारण वायुमंडल में ओजोन क्षयकारी रसायनों की मात्रा में कमी आई है, जिससे ओजोन परत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। हालांकि, कथन II असत्य है क्योंकि ओजोन परत की पूर्ण बहाली एक अत्यंत धीमी प्रक्रिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन परत को 1980 के स्तर तक वापस आने में लगभग 2060 के दशक तक का समय लगेगा। 5 वर्ष की अवधि इस विशाल प्रक्रिया हेतु अपर्याप्त है।

64. (2) गैर-काष्ठ वन उत्पादों (NTFPs) की टिकाऊ कटाई
फलों, औषधीय वनस्पतियों और गोंद जैसे उत्पादों की संधारणीय कटाई से वनों को क्षति नहीं पहुँचती है, बल्कि यह वनों के संरक्षण में सहायक होती है। इसके विपरीत, पशुपालन हेतु वनों को चरागाहों में परिवर्तित करना, ताड़ के तेल और सोया के विशाल बागान बनाना और अनियंत्रित व्यावसायिक कटाई वनों के विनाश के प्रत्यक्ष कारण हैं। स्थायी कटाई स्थानीय समुदायों को वन पारिस्थितिकी तंत्र को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित करती है।

65. (3) केवल I और III
पेरिस समझौते में 'ग्लोबल स्टॉकटेक' का प्रावधान है, जो प्रति पांच वर्ष में राष्ट्रों की सामूहिक प्रगति का मूल्यांकन करता है। यह कार्बन बाजारों और राष्ट्रों के बीच स्वैच्छिक सहयोग के लिए अनुच्छेद 6 के अंतर्गत एक विधिक ढांचा भी प्रदान करता है। कथन II असत्य है क्योंकि इस समझौते के अंतर्गत विकासशील देशों को न केवल अनुमति है, अपितु उन्हें अपने स्वयं के उत्सर्जन कटौती लक्ष्य प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित भी किया जाता है।

66. (1) यूस्टैटिक महासागर के आयतन परिवर्तनों को संदर्भित करता है, जबकि आइसोस्टैटिक भूमि की ऊंचाई के परिवर्तनों को संदर्भित करता है।
यूस्टैटिक समुद्र-स्तर परिवर्तन वैश्विक स्तर पर होते हैं, जो मुख्य रूप से बर्फ के पिघलने या जल के तापीय विस्तार के कारण महासागर के कुल आयतन में परिवर्तन से आते हैं। इसके विपरीत, आइसोस्टैटिक परिवर्तन स्थानीय होते हैं, जहाँ विवर्तनिक गतिविधियों या भारी बर्फ के हटने के कारण स्वयं भूमि की सतह ऊपर उठती है या नीचे धंसती है। समुद्र के स्तर का वास्तविक मापन इन दोनों स्वतंत्र प्रक्रियाओं का सम्मिलित परिणाम होता है।

67. (3) लगभग 30%
भारतीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र की हालिया रिपोर्टों के अनुसार, भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 29.7% भाग मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण की चपेट में है। यह भारत की खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता हेतु एक बड़ी चुनौती है। जल अपरदन, वनस्पति क्षरण और वायु अपरदन इस प्रक्रिया के प्रमुख उत्तरदायी कारक हैं। राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्य इस समस्या से सर्वाधिक प्रभावित हैं, जहाँ भूमि की उत्पादकता निरंतर क्षीण हो रही है।

68. (1) केवल I, II और IV
शमन और अनुकूलन जलवायु कार्रवाई के दो मुख्य स्तंभ हैं। शमन में उत्सर्जन कम करना सम्मिलित है, जबकि अनुकूलन जलवायु प्रभावों के साथ सामंजस्य बिठाने पर केंद्रित है। वनीकरण कार्बन अवशोषण का एक प्रभावी शमन उपाय है। कथन III असत्य है क्योंकि कार्बन कैप्चर अभी भी एक व्ययसाध्य तकनीक है। कथन V भी असत्य है क्योंकि पेरिस समझौता 'समान किंतु अलग जिम्मेदारियों' के सिद्धांत पर आधारित है, जो राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखता है।

69. (3) जुगाली करने वाले पशुओं की पाचन प्रक्रिया से, जिससे मीथेन उत्पन्न होती है।
जुगाली करने वाले पशुओं जैसे गाय और भैंस के पाचन तंत्र के एक विशिष्ट भाग में सूक्ष्मजीव चारे का विखंडन करते हैं। इस किण्वन प्रक्रिया के दौरान मीथेन गैस निर्मित होती है, जिसे पशु डकार के माध्यम से उत्सर्जित करते हैं। यह प्रक्रिया मानवजनित मीथेन उत्सर्जन का एक विशाल स्रोत है। चूंकि मीथेन एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, इसलिए पशुधन प्रबंधन जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कृषि और पर्यावरणीय चुनौती बन गया है।

70. (1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
तापमान वृद्धि से प्रवाल भित्तियों में विरंजन होता है, जिससे उनकी मृत्यु हो सकती है। आर्कटिक टुंड्रा में पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से वहाँ संचित मीथेन मुक्त हो रही है। उष्णकटिबंधीय वर्षावन शुष्कता और वनाग्नि के खतरों का सामना कर रहे हैं। तटीय मैंग्रोव समुद्र के बढ़ते जल स्तर के कारण जलमग्न होने और लवणता प्रवेश के प्रति अति-संवेदनशील हैं। ये प्रभाव दर्शाते हैं कि जलवायु परिवर्तन कैसे विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्रों की संरचना को नष्ट कर रहा है।

71. (4) जीवाश्म ईंधन के दहन से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड का संचय
औद्योगिक क्रांति के पश्चात से, कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के प्रज्वलन से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता में तीव्र वृद्धि हुई है। CO_2 वायुमंडल में दीर्घकाल तक बनी रहती है और पृथ्वी से उत्सर्जित होने वाली ऊष्मा को

NODIA

अवरुद्ध करने में मुख्य भूमिका निभाती है। यद्यपि अन्य गैसें भी वार्मिंग में योगदान देती हैं, किंतु उत्सर्जन की कुल मात्रा और स्थायी प्रभाव के संदर्भ में CO_2 का योगदान सर्वाधिक और प्राथमिक है।

72. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
क्योटो प्रोटोकॉल में केवल विकसित राष्ट्रों हेतु उत्सर्जन कटौती के अनिवार्य लक्ष्य आरोपित किए गए थे, जो बहुत प्रभावी सिद्ध नहीं हुए। इसके विपरीत, पेरिस समझौता एक 'नीचे-से-ऊपर' दृष्टिकोण का अनुसरण करता है। इसमें प्रत्येक राष्ट्र अपनी क्षमताओं और राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं अपने जलवायु लक्ष्य निर्धारित करता है। यह लचीलापन ही पेरिस समझौते को अधिक समावेशी और सफल बनाता है, क्योंकि इसमें सार्वभौमिक भागीदारी सुनिश्चित होती है।

73. (3) बोरियल वन मानव-प्रेरित वनों की कटाई और काष्ठ निष्कर्षण से पूरी तरह सुरक्षित हैं।
यह कथन असत्य है क्योंकि रूस, कनाडा और स्कैंडिनेविया के बोरियल वन भी लकड़ी के व्यावसायिक निष्कर्षण और खनन गतिविधियों के कारण संकट में हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती वनाग्नि की घटनाएँ इन वनों को व्यापक क्षति पहुँचा रही हैं। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वनों की कटाई की दर उच्च है, किंतु बोरियल वनों को पूर्णतः सुरक्षित समझना एक त्रुटिपूर्ण धारणा है। जलवायु संकट इन उच्च अक्षांशीय वनों को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है।

74. (1) अंटार्कटिका
संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय उन क्षेत्रों पर केंद्रित है जहाँ भूमि क्षरण समुदायों की आजीविका और पारिस्थितिकी को प्रभावित करता है। इसके क्षेत्रीय अनुबंधों में अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और मध्य व पूर्वी यूरोप जैसे मानवीय बस्तियों वाले महाद्वीप सम्मिलित हैं। अंटार्कटिका एक निर्जन महाद्वीप है जहाँ कृषि या स्थायी मानवीय आवास नहीं हैं, इसलिए यह UNCCD के कार्यान्वयन ढांचे का भाग नहीं है। यह संधि मानवीय विकास और पर्यावरणीय स्थिरता को जोड़ती है।

75. (2) केवल I, II और IV
ओजोन परत सूर्य की घातक पराबैंगनी-B किरणों को अवशोषित करके पृथ्वी पर जैवमंडल की रक्षा करती है। इसके अभाव में, जीवों के अनुवांशिक ढांचे को गंभीर क्षति पहुँच सकती है। समताप मंडल में ओजोन का निर्माण और विखंडन एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है। कथन III असत्य है क्योंकि ओजोन की सांद्रता ध्रुवों और भूमध्य रेखा के मध्य भिन्न होती है और इसमें मौसमी उतार-चढ़ाव भी होते हैं। अंटार्कटिका में वसंत ऋतु के दौरान ओजोन का स्तर न्यूनतम हो जाता है।

76. (3) 50%
अमेज़न बेसिन वैश्विक पारिस्थितिकी हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें पृथ्वी के शेष उष्णकटिबंधीय वर्षावनों का लगभग आधा भाग समाहित है। यह विशाल वन क्षेत्र न केवल लाखों प्रजातियों का आवास है, बल्कि यह विशाल मात्रा में कार्बन को अवशोषित कर वैश्विक तापमान को नियंत्रित करने में सहायता करता है। अमेज़न में होने वाली किसी भी बड़ी क्षति का वैश्विक जलवायु और जल चक्र पर विनाशकारी प्रभाव पड़ सकता है, जिससे यह वैश्विक संरक्षण का मुख्य केंद्र है।

77. (4) I : गलत है, II : सही है।
यद्यपि सूर्य पृथ्वी की ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत है, किंतु विगत 50 वर्षों में सूर्य की ऊर्जा उत्पादन में कोई विशेष वृद्धि नहीं देखी गई है। इसके बावजूद, पृथ्वी की सतह का औसत तापमान तीव्र गति से बढ़ा है। यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि आधुनिक वैश्विक तापन के पीछे सौर परिवर्तनशीलता के बजाय मानवजनित ग्रीनहाउस गैसें ही मुख्य कारण हैं। उपग्रह डेटा इस वैज्ञानिक निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं कि सूर्य की वर्तमान गतिविधियों का वार्मिंग में कोई बड़ा योगदान नहीं है।

78. (1) I, II, IV, III
अंटार्कटिक ओजोन क्षरण एक विशिष्ट वैज्ञानिक क्रम में घटित होता है। सर्वप्रथम, शीत ऋतु में एक शक्तिशाली ध्रुवीय भंवर निर्मित होता है जो वहाँ की वायु को पृथक कर देता है। इसके पश्चात, अत्यधिक निम्न तापमान से ध्रुवीय समतापमंडलीय बादल बनते हैं। इन बादलों की सतह पर निष्क्रिय क्लोरीन यौगिक संचित हो जाते हैं। अंततः, वसंत ऋतु में सौर विकिरण की वापसी के साथ एक तीव्र रासायनिक प्रतिक्रिया प्रारंभ होती है जो ओजोन अणुओं को नष्ट कर देती है।

79. (1) स्वदेशी सूखा-प्रतिरोधी झाड़ियों को लगाकर स्थिरीकरण करना।
राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में गतिशील रेत के टीलों को रोकने हेतु जैविक स्थिरीकरण सर्वाधिक प्रभावी तकनीक है। इसमें स्थानीय जलवायु के अनुकूल खेजड़ी और केर जैसी सूखा-प्रतिरोधी वनस्पतियों का रोपण किया जाता है। इन पौधों की जड़ें रेत को मजबूती से बांधती हैं और पवन की गति को मंद करती हैं, जिससे रेत का प्रसार रुक जाता है। यह विधि पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित है और स्थानीय समुदायों को चारा एवं ईंधन भी उपलब्ध कराती है।

80. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
REDD+ वनों के संरक्षण हेतु उन्हें कार्बन मूल्य प्रदान करता है। बॉन चैलेंज क्षयित भूमि की बहाली का एक वैश्विक आंदोलन है। ग्रेट ग्रीन वॉल साहेल क्षेत्र में मरुस्थलीकरण रोकने की एक महत्वपूर्ण अफ्रीकी पहल है। स्वच्छ विकास तंत्र (CDM) क्योटो प्रोटोकॉल का अंग था, जो विकसित देशों को विकासशील देशों में हरित परियोजनाओं के माध्यम से कार्बन क्रेडिट अर्जित करने की अनुमति देता था। ये सभी तंत्र वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु निर्मित किए गए हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 08

भारत के भू-आकृतिक प्रदेश

1. वृहद स्तर की भू-आकृतिक विशेषताओं के आधार पर, भारत को पारंपरिक रूप से कितने प्रमुख भौतिक विभाजनों में वर्गीकृत किया गया है?
(1) चार
(2) छह
(3) पांच
(4) सात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: हिमालय का निर्माण भारतीय प्लेट और यूरेशियाई प्लेट के बीच अभिसरण और टकराव के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में हुआ था।
कथन II: हिमालय का उत्थान प्लीस्टोसीन युग के दौरान एक ही भूगर्भीय चरण में तेजी से हुआ था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) काराकोरम श्रेणी इस विभाजन का सबसे उत्तरी भाग बनाती है।
(2) इसमें मुख्य रूप से समुद्री अवसादी चट्टानें शामिल हैं जिनके नीचे प्राचीन ग्रेनाइट स्थित हैं।
(3) यह वृहद हिमालय श्रेणी के ठीक दक्षिण में स्थित है।
(4) जास्कर और लद्दाख श्रेणियाँ इस भू-आकृतिक विभाजन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: पर्वत चोटी
A. K2 (गॉडविन ऑस्टिन)
B. राकापोशी
C. कामेट
D. धौलागिरी
सूची II: पर्वत श्रेणी
i. काराकोरम श्रेणी
ii. लद्दाख श्रेणी
iii. जास्कर श्रेणी
iv. वृहद हिमालय
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. काराकोरम श्रेणी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अफगानिस्तान और चीन के साथ भारत की सीमा बनाती है।
II. विशाल सियाचिन और बियाफो हिमनद इसी श्रेणी में स्थित हैं।
III. इसे भूगर्भीय रूप से लघु हिमालय की एक उप-श्रेणी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सी प्रमुख नदी लद्दाख श्रेणी और जास्कर श्रेणी के बीच उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है?
(1) श्योक
(2) सिंधु
(3) सतलुज
(4) चेनाब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन वृहद हिमालय (हिमाद्रि) की मुख्य शैल-वैज्ञानिक संरचना का सटीक वर्णन करता है?
(1) यह मुख्य रूप से असंगठित नदी निक्षेपों और ढीली बजरी से बना है।
(2) यह पूरी तरह से मोटे बेसाल्टिक लावा प्रवाह से बना है।
(3) इसमें सेनोज़ोइक युग के दौरान जमा हुए समुद्री चूना पत्थर की प्रधानता है।
(4) यह मुख्य रूप से ग्रेनाइट और नीस जैसी आर्कियन चट्टानों से बना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): हिमाद्रि श्रेणी अपने उच्चावच में असममित

NODIA

है, जिसमें दक्षिण की ओर तीव्र ढाल और उत्तर की ओर तुलनात्मक रूप से मंद ढाल है।
कारण (R): उत्तर की ओर धकेलने वाली भारतीय प्लेट से उत्पन्न संपीडन बल, यूरेशियाई प्लेट की तुलना में बहुत अधिक शक्तिशाली थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन सा उच्च पर्वतीय दर्रा श्रीनगर को कारगिल और लेह से जोड़ता है?
(1) बारा लाचा ला
(2) शिपकी ला
(3) जोजी ला
(4) नाथू ला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. लघु हिमालय (हिमाचल) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह वृहद हिमालय के समानांतर उसके दक्षिण में स्थित है।
II. पीर पंजाल श्रेणी इसकी सबसे लंबी और सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला बनाती है।
III. यह शिमला, मसूरी और नैनीताल जैसे प्रसिद्ध पर्वतीय स्थलों के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।
IV. यह पूरी तरह से वनस्पतियों से रहित है और स्थायी रूप से मोटी बर्फ से ढका रहता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. उस पर्वतीय स्थल की पहचान कीजिए जो भौगोलिक रूप से लघु हिमालय का हिस्सा नहीं है:
(1) डलहौजी
(2) दार्जिलिंग
(3) रानीखेत
(4) माउंट आबू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन सी शिवालिक श्रेणी की विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(1) ये मुख्य रूप से हिमालय की नदियों द्वारा लाए गए असंगठित अवसादों से बने हैं।
(2) ये 6000 मीटर से अधिक औसत ऊंचाई के साथ एक निरंतर पर्वत अवरोध बनाते हैं।
(3) ये हिमालय पर्वत प्रणाली की सबसे बाहरी और सबसे नवीन श्रेणी हैं।
(4) ये दून के नाम से जानी जाने वाली प्रमुख समतल तल वाली अनुदैर्ध्य घाटियों को घेरे हुए हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

13. हिमालय की तलहटी के क्षेत्र में 'दून' के निर्माण के पीछे प्राथमिक भूगर्भीय प्रक्रिया क्या है?
(1) भीषण ज्वालामुखी विस्फोट जिसके कारण व्यापक काल्डेरा का निर्माण हुआ और उसके बाद ज्वालामुखी शंकुओं का धंसना।
(2) ट्रांस-हिमालयी वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित शुष्क क्षेत्रों में होने वाला तीव्र वातोढ़ अपरदन।
(3) विवर्तनिक उत्थान द्वारा बनी अस्थायी झीलों में मोटी बजरी का जमाव, जिन्हें बाद में नदी प्रणालियों द्वारा बहा दिया गया।
(4) प्लीस्टोसीन हिमयुग के दौरान बर्फ की गति से विशाल U-आकार की घाटियों का निर्माण करने वाला व्यापक हिमनद अपरदन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: घाटी/दून
A. देहरादून
B. कांगड़ा घाटी
C. कश्मीर घाटी
D. नेओरा घाटी
सूची II: राज्य/केंद्र शासित प्रदेश
i. हिमाचल प्रदेश
ii. उत्तराखंड
iii. पश्चिम बंगाल
iv. जम्मू और कश्मीर
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. पूर्वी हिमालय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पूर्वी हिमालय की ऊंचाई आस-पास के मैदानों से बहुत तेजी से बढ़ती है।
II. पश्चिमी हिमालय की तुलना में इस क्षेत्र में काफी अधिक वर्षा होती है।
III. प्राकृतिक वृक्ष रेखा पश्चिम की तुलना में पूर्वी हिमालय में अधिक ऊंचाई पर पाई जाती है।
IV. यह घने जंगलों और असाधारण रूप से उच्च जैविक विविधता की विशेषता रखता है।
V. पश्चिमी क्षेत्र की तुलना में शिवालिक श्रेणी यहाँ संरचनात्मक रूप से अधिक प्रमुख और सुस्पष्ट है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल V
(4) IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. पूर्वी हिमालय में पाई जाने वाली असाधारण रूप से उच्च जैव विविधता का प्राथमिक पर्यावरणीय कारण क्या है?
(1) कर्क रेखा से अत्यधिक निकटता जिसके कारण तलहटी में निरंतर और तीव्र ग्रीष्म लहर चलती है।
(2) उच्च वर्षा, आर्द्रता और ऊँचाई वाले क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला का अनूठा संयोजन।
(3) पूरे क्षेत्र में किसी भी महत्वपूर्ण मानवीय अधिवास या औद्योगिक गतिविधि की पूर्ण अनुपस्थिति।
(4) प्रागैतिहासिक विवर्तनिक गतिविधि से उत्पन्न प्राचीन, अत्यधिक उपजाऊ ज्वालामुखीय मिट्टी की व्यापक उपस्थिति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. उत्तर भारतीय मैदानों के विशाल विस्तार का निर्माण मुख्य रूप से किन तीन प्रमुख नदी प्रणालियों की परस्पर क्रिया से हुआ है?
(1) सिंधु, गंगा और गोदावरी
(2) सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र
(3) गंगा, ब्रह्मपुत्र और नर्मदा
(4) सिंधु, महानदी और ब्रह्मपुत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. उत्तर भारतीय मैदानों के अनुदैर्ध्य उप-विभाजनों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) भांगर - पुराना जलोढ़ वाला विस्तृत छतनुमा क्षेत्र जिसमें 'कंकड़' कहलाने वाली कैल्शियमयुक्त ग्रंथिकाएं होती हैं
(2) भाबर - घने जंगलों से ढका एक नम और दलदली क्षेत्र
(3) तराई - एक अत्यधिक रंध्रयुक्त, बजरी युक्त क्षेत्र जहाँ कई पर्वतीय धाराएँ लुप्त हो जाती हैं
(4) खादर - मैदानों का सबसे ऊँचा पठारी क्षेत्र जो बाढ़ के पानी से पूरी तरह सुरक्षित है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और वर्णित विशिष्ट भौतिक क्षेत्र की पहचान करें:
एक मृदा सर्वेक्षक हिमालय की तलहटी के एक विशिष्ट क्षेत्र का परीक्षण कर रही है। वह एक संकरी पट्टी देखती है जहाँ कई धाराएँ सतह पर पुनः प्रकट होती हैं, जिससे एक निरंतर नम, दलदली और घने जंगलों वाला वातावरण बनता है। वह किस विशिष्ट भौतिक क्षेत्र का सर्वेक्षण कर रही है?
(1) भाबर
(2) भांगर
(3) तराई
(4) खादर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन उत्तर भारतीय मैदानों की भू-आकृतिक विशेषताओं का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम दर्शाता है?
(1) तराई, भाबर, भांगर, खादर
(2) भाबर, तराई, भांगर, खादर
(3) खादर, भांगर, तराई, भाबर
(4) भाबर, भांगर, तराई, खादर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उत्तरी मैदानों में खादर मिट्टी को भांगर मिट्टी की तुलना में अधिक उपजाऊ क्यों माना जाता है?
(1) वे काफी अधिक ऊंचाई पर स्थित हैं, जो प्राकृतिक रूप से मिट्टी के कटाव को रोकता है।
(2) वे प्राचीन ज्वालामुखीय राख के निक्षेपों से समृद्ध हैं।
(3) उन्हें वार्षिक बाढ़ के दौरान ताजी, पोषक तत्वों से भरपूर गाद का नियमित निक्षेप प्राप्त होता है।
(4) उनमें कैल्शियमयुक्त 'कंकड़' ग्रंथिकाओं की सांद्रता काफी अधिक होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: पंजाब और हरियाणा के बड़े हिस्सों को कवर करने वाले भारत के पश्चिमी मैदानों में सिंधु नदी प्रणाली के दोआबों का प्रभुत्व है।
कथन II: यह क्षेत्र रणनीतिक रूप से सिंधु और गंगा नदी प्रणालियों के बीच एक प्रमुख जल विभाजक के रूप में कार्य करता है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) दोनों कथन I और II सही हैं।
(4) दोनों कथन I और II गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प गंगा के मैदानों के भौगोलिक विस्तार का सबसे उपयुक्त वर्णन प्रस्तुत करता है?
(1) यह पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में महानदी नदी तक फैला हुआ है।
(2) यह पूरी तरह से उत्तर प्रदेश और बिहार की राजनीतिक सीमाओं के भीतर स्थित है।
(3) यह विंध्य श्रेणी के ठीक दक्षिण में स्थित संकीर्ण क्षेत्र तक ही सीमित है।
(4) यह घग्गर और तीस्ता नदियों के बीच अनुदैर्ध्य रूप से फैला हुआ है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: पंजाब का दोआब
A. बिस्त दोआब
B. बारी दोआब
C. रचना दोआब
D. चज दोआब

Downloaded from www.pdf.tube

सूची II: इसे परिभाषित करने वाली नदियाँ
i. ब्यास और रावी
ii. ब्यास और सतलुज
iii. चेनाब और झेलम
iv. रावी और चेनाब
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. ब्रह्मपुत्र के मैदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के निरंतर निक्षेपण कार्य द्वारा निर्मित हैं।
II. गुंफित जलमार्ग, नदी द्वीप और बालूका भित्तियाँ इस मैदान की प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ हैं।
III. माजुली, जिसे दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप के रूप में मान्यता प्राप्त है, इसी क्षेत्र में स्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. ब्रह्मपुत्र के मैदानों में बार-बार आने वाली विनाशकारी वार्षिक बाढ़ का मुख्य कारण क्या है?
(1) जल ग्रहण क्षेत्र में अत्यधिक भारी वर्षा और नदी में उच्च तलछट भार का होना।
(2) तीव्र भूकंपीय गतिविधि के बाद असम घाटी के फर्श का अचानक विवर्तनिक धंसना।
(3) बंगाल की खाड़ी के उत्तरी क्षेत्रों में मौसमी समुद्री बर्फ का तीव्र पिघलना।
(4) मध्य प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र में गंभीर और अनियंत्रित वनों की कटाई।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. प्रायद्वीपीय पठार की विस्तृत संरचना के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह मौलिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे पुराने भू-भाग, गोंडवानालैंड का हिस्सा है।
(2) यह संरचनात्मक रूप से मुख्य रूप से पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बना है।
(3) इसमें सामान्यतः विस्तृत, उथली घाटियाँ और गोलाकार पहाड़ियाँ हैं।
(4) इसका निर्माण सीधे तौर पर यूरेशियाई प्लेट के साथ भारतीय प्लेट के विवर्तनिक टकराव से हुआ था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

28. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): प्रायद्वीपीय पठार की नदियाँ सामान्यतः गहरी V-आकार की घाटियों का निर्माण करती हैं जो तीव्र सक्रिय अपरदन की विशेषता रखती हैं।
कारण (R): प्रायद्वीपीय पठार को पृथ्वी की पपड़ी के सबसे स्थिर, प्राचीन और परिपक्व भू-भागों में से एक माना जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. प्रायद्वीपीय पठार का मध्य उच्चभूमि क्षेत्र दक्षिण में किस पर्वत श्रृंखला से घिरा है?
(1) अरावली श्रेणी
(2) पश्चिमी घाट
(3) विंध्य श्रेणी
(4) सतपुड़ा श्रेणी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. अरावली श्रेणी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह दुनिया की सबसे पुरानी वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है।
II. यह बिना किसी भौगोलिक अंतराल के गुजरात से दिल्ली तक निरंतर विस्तृत है।
III. गुरु शिखर को इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी के रूप में मान्यता प्राप्त है।
IV. यह एक प्रमुख जलवायु अवरोध के रूप में कार्य करता है, जो पश्चिमी राजस्थान की शुष्कता में योगदान देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. प्रायद्वीपीय पठार में उनके उद्गम स्थल के आधार पर निम्नलिखित भारतीय नदियों में से भिन्न की पहचान कीजिए:
(1) गंडक
(2) चंबल
(3) बेतवा
(4) सोन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. मालवा पठार की अत्यधिक अपरदित और विच्छेदित स्थलाकृति, जो विशेष रूप से चंबल घाटी में स्पष्ट है, किस भौगोलिक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
(1) U-आकार की हिमनद घाटियाँ

(2) उत्खात भूमि (बीहड़)
(3) विस्तृत कार्स्ट स्थलाकृति
(4) तटीय एटोल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प दक्कन के पठार की सामान्य ऊँचाई और प्राथमिक ढाल का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) यह पूर्व में ऊँचा है और पश्चिम की ओर मंद ढाल वाला है।
(2) यह पश्चिम में ऊँचा है और पूर्व की ओर मंद ढाल वाला है।
(3) यह उत्तर की ओर एक तीव्र ढाल के साथ समान ऊँचाई बनाए रखता है।
(4) यह केंद्र में एक विशाल भूगर्भीय गर्त बनाता है जिसके चारों ओर ऊँचे किनारे हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: पठारी उप-क्षेत्र
A. मेघालय पठार
B. छोटानागपुर पठार
C. मालवा पठार
D. तेलंगाना पठार
सूची II: वह राज्य जहाँ यह मुख्य रूप से स्थित है
i. झारखंड
ii. मध्य प्रदेश
iii. मेघालय
iv. तेलंगाना
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. दक्कन ट्रैप क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मौलिक रूप से ज्वालामुखीय उत्पत्ति का है।
II. यह मुख्य रूप से विस्तृत बेसाल्टिक चट्टानी संरचनाओं से बना है।
III. यह महाराष्ट्र और गुजरात के महत्वपूर्ण भौगोलिक हिस्सों को कवर करता है।
IV. इसकी चट्टानें समय के साथ अपरदित होकर अत्यधिक उपजाऊ रेगुड़ (काली) मिट्टी बनाती हैं।
V. प्राथमिक ज्वालामुखीय निर्माण प्रीकैम्ब्रियन युग के दौरान हुआ था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. दक्कन के पठार का काली मिट्टी का क्षेत्र मुख्य रूप से कपास की खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि:
(1) इसमें कैल्शियम कार्बोनेट और मैग्नीशियम की भारी कमी होती है।
(2) भारी मानसूनी वर्षा के कारण यह अत्यधिक निक्षालित और रंध्रयुक्त है।
(3) इसमें प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन और फास्फोरस की उच्च सांद्रता होती है।
(4) इसकी मृण्मय प्रकृति के कारण इसमें नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. पश्चिमी घाट के पवनाभिमुख पश्चिमी दिशा में स्थित शहर (जैसे मुंबई) पवनविमुख पूर्वी दिशा के शहरों (जैसे पुणे) की तुलना में अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं। यह किसका उदाहरण है?
(1) संवहनीय वर्षा
(2) चक्रवातीय वर्षा
(3) पर्वतीय प्रभाव
(4) वाताग्र वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. पश्चिमी घाट भौतिक रूप से एक निरंतर पर्वत कगार के रूप में कार्य करते हैं। पश्चिमी घाट की औसत ऊँचाई लगभग कितनी है?
(1) 300 से 600 मीटर
(2) 900 से 1600 मीटर
(3) 2000 से 3000 मीटर
(4) 4000 से 5000 मीटर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित में से कौन सा पश्चिमी घाट में स्थित एक महत्वपूर्ण पर्वतीय दर्रा नहीं है?
(1) थल घाट
(2) भोर घाट
(3) पाल घाट
(4) हल्दीघाटी दर्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. पश्चिमी घाट के निम्नलिखित प्रमुख दर्रों को उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम में व्यवस्थित करें:
A. पाल घाट
B. थल घाट
C. भोर घाट
D. सेनकोट्टा गैप
(1) B, C, A, D
(2) C, B, D, A
(3) B, A, C, D
(4) A, C, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

41. निम्नलिखित में से किस भौगोलिक विशेषता को आधिकारिक तौर पर प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र की सबसे ऊँची पर्वत चोटी के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(1) डोड्डाबेट्टा
(2) महेंद्रगिरि
(3) अनामुडी
(4) महाबलेश्वर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: पूर्वी घाट बंगाल की खाड़ी के तट के समानांतर चलने वाली पर्वतों की एक निरंतर श्रृंखला है।
कथन II: वे गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी प्रमुख प्रायद्वीपीय नदियों द्वारा भारी रूप से अपरदित और विच्छेदित किए गए हैं।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) दोनों कथन I और II सही हैं।
(4) दोनों कथन I और II गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. भारत के तटीय मैदानों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) पश्चिमी तटीय मैदान चौड़ाई में पूर्वी तटीय मैदान की तुलना में संकरा है।
(2) पूर्वी तटीय मैदान में विस्तृत नदी डेल्टा पाए जाते हैं।
(3) पश्चिमी तटीय मैदान में जलमग्न तटीय मैदान के उदाहरण मिलते हैं।
(4) पूर्वी तटीय मैदान अत्यधिक दंतुरित है और गहरे पानी के बंदरगाहों के लिए आदर्श है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: तटीय भाग
A. कोंकण तट
B. मालाबार तट
C. कोरोमंडल तट
D. उत्तरी सरकार
सूची II: संबंधित क्षेत्र
i. केरल
ii. महाराष्ट्र-गोवा
iii. तमिलनाडु-आंध्र प्रदेश
iv. ओडिशा-आंध्र प्रदेश
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. प्रायद्वीपीय पठार की प्रमुख पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे सामान्यतः अपने मुहाने पर विशाल डेल्टा नहीं बनाती हैं।
II. पश्चिमी घाट की तीव्र ढाल के कारण वे ज्वारनदमुख बनाती हैं।
III. पूर्व की ओर बहने वाली नदियों की तुलना में वे जलोढ़ का विशाल भार ले जाती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप द्वीप समूह मुख्य रूप से किससे निर्मित है?
(1) ज्वालामुखीय हॉटस्पॉट विस्फोटों से
(2) हिमालयी श्रृंखला के दक्षिणी विस्तार की जलमग्न चोटियों से
(3) विवर्तनिक महाद्वीपीय विस्थापन के पृथक टुकड़ों से
(4) प्रवाल प्रमस्तिष्क (मूंगा) के जैविक संचय से
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

47. निम्नलिखित में से कौन सा समुद्री चैनल उन क्षेत्रों के साथ सही सुमेलित है जिन्हें वह अलग करता है?
(1) नौ डिग्री चैनल - मिनिकॉय द्वीप को शेष लक्षद्वीप द्वीप समूह से अलग करता है
(2) आठ डिग्री चैनल - अंडमान समूह को निकोबार समूह से अलग करता है
(3) दस डिग्री चैनल - मालदीव को लक्षद्वीप द्वीप समूह से अलग करता है
(4) पाक जलडमरूमध्य - अंडमान द्वीप समूह को मुख्य भूमि भारत से अलग करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): भारत का पश्चिमी तट कई प्राकृतिक रूप से दंतुरित पत्तनों और बंदरगाहों की उपस्थिति की विशेषता रखता है।
कारण (R): पूर्वी तटीय मैदानों में पश्चिमी तटीय मैदानों की तुलना में काफी अधिक वार्षिक वर्षा होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी देश के किस भाग में स्थित है?
(1) नारकोंडम द्वीप
(2) बैरन द्वीप

को कहते हैं। मालाबार तट केरल के विस्तृत समुद्र तटीय क्षेत्र का नाम है। कोरोमंडल तट तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के दक्षिणी तटीय भाग को संदर्भित करता है। उत्तरी सरकार ओडिशा और आंध्र प्रदेश के उत्तरी तटीय मैदानों का नाम है। ये नाम स्थानीय संस्कृति और व्यापारिक मार्गों से जुड़े हैं।

45. (1) केवल I और II
नर्मदा और तापी जैसी पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ अपने मुहाने पर डेल्टा नहीं बनातीं। इसका मुख्य कारण पश्चिमी घाट की तीव्र ढाल है, जिससे जल बहुत तीव्र गति से समुद्र में गिरता है और अवसादों के जमाव का समय नहीं मिलता। ये नदियाँ मुहाने पर ज्वारनदमुख (एस्थुअरी) बनाती हैं। ये पूर्व की ओर बहने वाली नदियों की तुलना में कम जलोढ़ लाती हैं क्योंकि इनका मार्ग छोटा और चट्टानी है।

46. (4) प्रवाल प्रमस्तिष्क (मूंगा) के जैविक संचय से
लक्षद्वीप द्वीप समूह का निर्माण प्रवाल जीवों के सूक्ष्म कंकालों के संचय से हुआ है, जिन्हें 'एटोल' कहते हैं। ये प्रवाल निक्षेप हजारों वर्षों में समुद्र के भीतर उथले चबूतरे पर जमा हुए हैं। अरब सागर में स्थित यह समूह 36 छोटे द्वीपों से निर्मित है। इनकी संरचना मुख्य रूप से चूना पत्थर पर आधारित है। अंडमान के विपरीत, ये द्वीप ज्वालामुखीय नहीं हैं। यहाँ की पारिस्थितिकी समुद्री प्रवाल भित्तियों पर पूर्णतः निर्भर है।

47. (1) नौ डिग्री चैनल - मिनिकॉय द्वीप को शेष लक्षद्वीप द्वीप समूह से अलग करता है
नौ डिग्री चैनल भौगोलिक रूप से मिनिकॉय द्वीप को लक्षद्वीप के मुख्य द्वीप समूह से पृथक करने वाला महत्वपूर्ण जलमार्ग है। दस डिग्री चैनल अंडमान समूह को निकोबार समूह से अलग करता है। आठ डिग्री चैनल मालदीव और मिनिकॉय के मध्य स्थित है। पाक जलडमरूमध्य भारत की मुख्य भूमि और श्रीलंका के बीच स्थित है। ये चैनल समुद्री परिवहन और क्षेत्रीय विभाजन की दृष्टि से सामरिक महत्व के जलमार्ग माने जाते हैं।

48. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
भारत का पश्चिमी तट विवर्तनिक रूप से जलमग्न होने के कारण अत्यधिक दंतुरित है, जो इसे प्राकृतिक पत्तनों और गहरे बंदरगाहों के लिए बहुत उपयुक्त बनाता है। मुंबई और मर्मगाओ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। हालांकि, पूर्वी तटीय मैदानों में पश्चिमी तट की तुलना में अधिक वर्षा नहीं होती। वास्तव में, पश्चिमी घाट का पवनाभिमुख ढाल भारत के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में से एक है। अतः बंदरगाहों का वर्षा से संबंध नहीं है।

49. (2) बैरन द्वीप
बैरन द्वीप भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पूर्वी भाग में स्थित है। इसमें अंतिम बार प्रमुख विस्फोट 1991 में हुआ था और तब से यह समय-समय पर सक्रिय रहा है। नारकोंडम द्वीप भी इसी क्षेत्र में है, किंतु इसे सुप्त ज्वालामुखी माना जाता है। मिनिकॉय लक्षद्वीप का हिस्सा है और प्रवाल मूल का है। माजुली असम में एक नदी द्वीप है। बैरन द्वीप अत्यंत महत्वपूर्ण है।

50. (3) केवल IV
भारत के सभी भौतिक विभाजनों की अपनी विशिष्ट आर्थिक उपयोगिता है। उत्तरी मैदान कृषि का आधार हैं, प्रायद्वीपीय पठार खनिजों का भंडार है, और हिमालय जल संसाधनों का स्रोत है। तटीय मैदान भी बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ मत्स्य पालन, समुद्री व्यापार और पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। साथ ही, यहाँ नारियल और मसालों की खेती की जाती है। अतः यह कहना कि तटीय मैदान आर्थिक उपयोगिता से रहित हैं, पूर्णतः गलत है।

51. (3) K2 (गॉडविन ऑस्टिन)
माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा और मकालू ये तीनों विश्व की सर्वोच्च पर्वत चोटियाँ वृहद हिमालय या हिमाद्रि श्रेणी का भाग हैं। इसके विपरीत, K2 (गॉडविन ऑस्टिन) काराकोरम श्रेणी में स्थित है, जो ट्रांस-हिमालयी पर्वत तंत्र का हिस्सा है। यद्यपि K2 विश्व की दूसरी सर्वोच्च चोटी है, किंतु भूगर्भीय रूप से यह मुख्य हिमालय श्रृंखला के उत्तर में है। वृहद हिमालय की औसत ऊँचाई 6000 मीटर से अधिक है और इसका कोर ग्रेनाइट से बना है।

52. (4) शिवालिक की तलहटी के समानांतर स्थित कंकड़-पत्थरों की एक संकीर्ण, रंध्रयुक्त पट्टी।
भाबर क्षेत्र शिवालिक पहाड़ियों के दक्षिण में एक संकीर्ण पट्टी के रूप में विस्तृत है, जिसकी चौड़ाई 8 से 16 किलोमीटर है। यहाँ नदियाँ पर्वतों से उतरते समय अपने साथ लाए गए बड़े कंकड़ और पत्थर जमा कर देती हैं। इस क्षेत्र की पारगम्यता इतनी अधिक होती है कि छोटी नदियाँ सतह से लुप्त होकर धरातल के नीचे बहने लगती हैं। यह पट्टी कृषि हेतु उपयुक्त नहीं है किंतु भूजल पुनर्भरण के लिए महत्वपूर्ण है।

53. (3) वृहद हिमालय
गंगोत्री और यमुनोत्री जैसे विशाल हिमनद वृहद हिमालय या हिमाद्रि श्रेणी के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित हैं। यह श्रेणी सदैव हिमाच्छादित रहती है और इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर से अधिक है। यहीं से भारत की महान नदियाँ जैसे गंगा और यमुना अपने प्राथमिक जल स्रोत प्राप्त करती हैं। ट्रांस-हिमालय इसके उत्तर में है, जबकि लघु हिमालय और शिवालिक बहुत कम ऊँचाई वाले क्षेत्र हैं। ये हिमनद जल सुरक्षा के लिए अनिवार्य हैं।

54. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
विभिन्न पर्वत श्रेणियों की सर्वोच्च चोटियों का मिलान उनकी भौगोलिक पहचान है। अरावली श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर है जो राजस्थान के माउंट आबू में स्थित है। सतपुड़ा श्रेणी का उच्चतम बिंदु धूपगढ़ है। नीलगिरी पहाड़ियों की सर्वोच्च चोटी डोड्डाबेट्टा है, जो दक्षिण भारत का प्रमुख शिखर है। नागा हिल्स की सर्वोच्च चोटी सारामती है, जो म्यांमार सीमा के निकट है। ये चोटियाँ क्षेत्रीय जलवायु को प्रभावित करती हैं।

55. (4) I, II, III, IV और V
मध्य उच्चभूमि नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित पठारी क्षेत्र है, जो विंध्य और अरावली श्रेणियों के मध्य विस्तृत है। इस क्षेत्र की ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है, जिस कारण चंबल

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

विशिष्ट पर्वतीय वर्षा को खो देंगे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. पूर्वी घाट की पर्वत श्रृंखलाएँ पश्चिमी घाट के साथ किस स्थान पर विलीन हो जाती हैं?
(1) नीलगिरी पहाड़ियाँ
(2) अन्नामलाई पहाड़ियाँ
(3) इलायची पहाड़ियाँ
(4) पालनी पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन सी भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक तटीय झील या लैगून नहीं है?
(1) चिल्का झील
(2) पुलिकट झील
(3) कोल्लेरु झील
(4) वेम्बनाड झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से कौन पूर्वी तटीय मैदान के प्रमुख भागों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम दर्शाता है?
(1) कोरोमंडल तट, उत्तरी सरकार, उत्कल तट
(2) उत्कल तट, उत्तरी सरकार, कोरोमंडल तट
(3) उत्तरी सरकार, उत्कल तट, कोरोमंडल तट
(4) उत्कल तट, कोरोमंडल तट, उत्तरी सरकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. विशाल भारतीय मरुस्थल में बरखान क्या है?
(1) मरुस्थली नखलिस्तान में पाया जाने वाला एक मीठे पानी का स्रोत
(2) एक सूखी, पथरीली नदी का तल
(3) एक विशिष्ट, अर्धचंद्राकार रेत का टीला
(4) आंतरिक जल निकासी द्वारा निर्मित एक खारी झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: लूनी को भारतीय मरुस्थल क्षेत्र में बहने वाली एकमात्र बड़ी नदी माना जाता है।
कथन II: यह पूरे वर्ष प्रचुर मात्रा में जल ले जाती है और सीधे अरब सागर में गिरती है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
(3) दोनों कथन I और II सही हैं।
(4) दोनों कथन I और II गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. दक्कन ट्रैप की विशाल बेसाल्टिक संरचना मुख्य रूप से किन राज्यों में विस्तृत है?
(1) महाराष्ट्र और गुजरात
(2) राजस्थान और पंजाब
(3) ओडिशा और पश्चिम बंगाल
(4) तमिलनाडु और केरल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: महत्वपूर्ण पर्वतीय दर्रा
A. बोमडी ला
B. रोहतांग दर्रा
C. नाथू ला
D. बनिहाल दर्रा
सूची II: वह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश जहाँ यह स्थित है
i. सिक्किम
ii. अरुणाचल प्रदेश
iii. जम्मू और कश्मीर
iv. हिमाचल प्रदेश
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. पूर्वी हिमालय से जुड़ी निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. ब्रह्मपुत्र नदी इसकी सुदूर पूर्वी सीमा को चिह्नित करती है।
II. दिहांग महाखड्ड के पार, हिमालय अचानक दक्षिण की ओर मुड़कर पूर्वांचल की पहाड़ियाँ बनाता है।
III. पूर्वांचल की पहाड़ियाँ ज्यादातर नरम और असंगठित जलोढ़ मिट्टी से बनी हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

66. निम्नलिखित में से कौन सी पहाड़ियाँ उत्तर-पूर्व भारत की पूर्वांचल पर्वत श्रृंखला का हिस्सा नहीं हैं?
(1) राजमहल पहाड़ियाँ
(2) पटकाई बुम
(3) नागा पहाड़ियाँ
(4) मिज़ो पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. शिवालिक श्रेणी की भूगर्भीय विशेषताओं के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह हिमालय पर्वत प्रणाली की सबसे दक्षिणी अनुदैर्ध्य श्रेणी है।
(2) इसकी औसत ऊँचाई अपेक्षाकृत कम है, जो सामान्यतः 900 से 1100 मीटर के बीच होती है।
(3) यह सिंधु महाखड्ड से ब्रह्मपुत्र महाखड्ड तक एक अखंड अवरोध बनाती है।

22. (3) दोनों कथन I और II सही हैं।
पंजाब और हरियाणा के मैदानों का निर्माण सिंधु की सहायक नदियों द्वारा हुआ है, जहाँ अनेक दोआब पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पश्चिम की ओर बहने वाली सिंधु प्रणाली और पूर्व की ओर बहने वाली गंगा प्रणाली के मध्य जल विभाजक का कार्य करता है। यहाँ की उच्च भूमि इन दो महान नदी प्रणालियों के अपवाह क्षेत्रों को पृथक करती है। यह भौगोलिक स्थिति कृषि के लिए बहुत उपयुक्त है।

23. (4) यह घग्गर और तीस्ता नदियों के बीच अनुदैर्ध्य रुप से फैला हुआ है।
गंगा के मैदानों का भौगोलिक विस्तार उत्तर भारत के एक विशाल भू-भाग पर है। यह पश्चिम में हरियाणा की घग्गर नदी से आरंभ होकर पूर्व में पश्चिम बंगाल की तीस्ता नदी तक विस्तृत है। यह मैदान उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में फैला है। यह क्षेत्र गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए उपजाऊ जलोढ़ से निर्मित है। इसकी सीमाएं प्राकृतिक नदी मार्गों द्वारा निर्धारित होती हैं।

24. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
पंजाब क्षेत्र में 'दोआब' दो नदियों के मध्य की उपजाऊ भूमि को कहते हैं। बिस्त दोआब ब्यास और सतलुज नदियों के बीच स्थित है। बारी दोआब ब्यास और रावी नदियों के मध्य का क्षेत्र है। रचना दोआब का निर्माण रावी और चेनाब नदियों के मिलन क्षेत्र में होता है। चज दोआब चेनाब और झेलम नदियों के मध्य स्थित है। इन दोआबों के नाम संबंधित नदियों के अक्षरों को जोड़कर रखे गए हैं।

25. (4) I, II और III
ब्रह्मपुत्र के मैदानों का निर्माण ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के निरंतर निक्षेपण का परिणाम है। इस क्षेत्र की ढाल अत्यंत मंद होने के कारण नदी का प्रवाह धीमा हो जाता है, जिससे गुंफित जलमार्ग और बालूका भित्तियों का निर्माण होता है। इसी प्रक्रिया के कारण विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप 'माजुली' ब्रह्मपुत्र के मध्य विकसित हुआ है। यह पूरा मैदान असम घाटी में स्थित है और बहुत उपजाऊ है।

26. (1) जल ग्रहण क्षेत्र में अत्यधिक भारी वर्षा और नदी में उच्च तलछट भार का होना।
ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपरी जल ग्रहण क्षेत्रों, विशेषकर अरुणाचल प्रदेश में भारी वर्षा होती है। हिमालय की नवीन श्रेणियों से आने के कारण यह नदी अपने साथ मिट्टी और गाद की विशाल मात्रा लाती है। यह गाद नदी के तल को उथला कर देती है, जिससे मानसून में जल स्तर तेजी से बढ़ता है और बाढ़ आती है। असम के मैदानों में नदी के घुमावदार और गुंफित मार्ग भी जल निकास में बाधा डालते हैं।

27. (4) इसका निर्माण सीधे तौर पर यूरेशियाई प्लेट के साथ भारतीय प्लेट के विवर्तनिक टकराव से हुआ था।
प्रायद्वीपीय पठार की उत्पत्ति हिमालय की तुलना में अत्यंत प्राचीन है। यह गोंडवानालैंड के टूटने और उत्तर की ओर खिसकने से बना एक अवशेष भाग है, न कि यूरेशियाई प्लेट के टकराव का परिणाम। यह संरचना मुख्य रुप से पुरानी क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों से बनी है। इसकी घाटियाँ उथली और पहाड़ियाँ गोलाकार हैं, जो इसकी प्रौढ़ावस्था को दर्शाती हैं। हिमालय के टकराव ने केवल इसकी उत्तरी सीमा को प्रभावित किया था।

28. (4) A गलत है लेकिन R सही है।
प्रायद्वीपीय पठार की नदियाँ हिमालयी नदियों के विपरीत उथली और चौड़ी घाटियों में बहती हैं, क्योंकि यह क्षेत्र भूगर्भीय रुप से प्राचीन और स्थिर है। यहाँ की नदियाँ अपनी आधार रेखा प्राप्त कर चुकी हैं, जिससे पार्श्व अपरदन अधिक होता है। प्रायद्वीपीय पठार वास्तव में पृथ्वी के सबसे पुराने भू-भागों में से एक है जो गोंडवानालैंड का हिस्सा रहा है। गहरी V-आकार की घाटियाँ केवल नवीन हिमालयी पर्वतों की मुख्य विशेषता हैं।

29. (3) विंध्य श्रेणी
प्रायद्वीपीय पठार का उत्तरी भाग, जिसे मध्य उच्चभूमि कहते हैं, दक्षिण में विंध्य श्रेणी द्वारा घिरा है। यह पर्वत श्रृंखला नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित है और उत्तर तथा दक्षिण भारत के मध्य प्राकृतिक विभाजक का कार्य करती है। विंध्य श्रेणी का विस्तार पश्चिम में गुजरात से पूर्व में मध्य प्रदेश तक है। इसके उत्तर-पश्चिम में अरावली पर्वतमाला स्थित है। यह क्षेत्र विंध्य की ऊंची चट्टानों से स्पष्ट रुप से परिभाषित है।

30. (2) I, III और IV
अरावली श्रेणी विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है, जिसका सर्वोच्च शिखर गुरु शिखर है। यह गुजरात से दिल्ली तक विस्तृत है, किंतु यह निरंतर नहीं है और अपरदन के कारण खंडित हो गई है। यह श्रेणी दक्षिण-पश्चिम मानसून के मार्ग के समांतर होने के कारण राजस्थान में वर्षा रोकने में असमर्थ है। हालांकि, यह थार मरुस्थल के पूर्व की ओर विस्तार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

31. (1) गंडक
चंबल, बेतवा और सोन नदियाँ प्रायद्वीपीय पठार से निकलकर उत्तर की ओर बहती हैं और गंगा नदी तंत्र में मिल जाती हैं। ये नदियाँ कठोर चट्टानी क्षेत्रों से प्रवाहित होती हैं। इसके विपरीत, गंडक एक हिमालयी नदी है जिसका उद्गम नेपाल के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में होता है। हिमालयी नदियाँ बारहमासी होती हैं और ग्लेशियरों से जल प्राप्त करती हैं, जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्य रुप से वर्षा पर निर्भर होती हैं।

32. (2) उत्खात भूमि (बीहड़)
मालवा पठार के उत्तरी भाग में चंबल नदी ने तीव्र अपरदन द्वारा गहरी खाइयां और घाटियां बनाई हैं। इस विशिष्ट भू-आकृति को 'चंबल के बीहड़' या 'उत्खात भूमि' कहा जाता है। यह क्षेत्र कृषि के लिए अनुपयुक्त है और अत्यधिक खंडित स्थलाकृति का प्रतिनिधित्व करता है। मृदा अपरदन की यह स्थिति अवनालिका अपरदन के कारण उत्पन्न हुई है। यह भौगोलिक विशेषता भारत के मध्य उच्चभूमि क्षेत्र में अत्यंत अद्वितीय मानी जाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. अरावली पर्वतमाला वर्तमान में अत्यधिक निम्नीकृत और अवशिष्ट पहाड़ियों के रूप में है। यह किसका परिणाम है?
(1) सेनोज़ोइक युग के दौरान व्यापक ज्वालामुखीय गतिविधि।
(2) लाखों वर्षों का निरंतर अपरदन और अपक्षय।
(3) प्लीस्टोसीन हिमयुग के दौरान हिमनद अपरदन।
(4) प्रायद्वीपीय ढाल क्षेत्र में होने वाले तीव्र भूकंप।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. भारत के पश्चिमी तट के समानांतर कोंकण रेलवे का निर्माण चुनौतीपूर्ण रहा है क्योंकि यहाँ तीव्र ढाल वाले पहाड़ी कगारों को काटना पड़ा। यह किस भौतिक विशेषता का हिस्सा है?
(1) पूर्वी घाट
(2) सतपुड़ा श्रेणी
(3) पश्चिमी घाट
(4) अराकान योमा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. कोरोमंडल तट सर्दियों में वर्षा प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध है। इसका प्राथमिक कारण क्या है?
(1) अरब सागर में उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय अवदाब।
(2) हिमालयी हिमनदों का पिघलना जिससे क्षेत्रीय समुद्र स्तर प्रभावित होता है।
(3) भूमध्य सागर से आने वाले शक्तिशाली पश्चिमी विक्षोभ।
(4) लौटता हुआ उत्तर-पूर्वी मानसून जो बंगाल की खाड़ी से नमी ग्रहण करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. हिमालय के क्षेत्रीय विभाजनों में कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) पंजाब हिमालय: सिंधु और सतलुज नदियों के बीच
(2) कुमाऊं हिमालय: सतलुज और काली नदियों के बीच
(3) नेपाल हिमालय: काली और तीस्ता नदियों के बीच
(4) असम हिमालय: तीस्ता और गंगा नदियों के बीच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. हिमालय की निम्नलिखित चोटियों को उनकी ऊँचाई के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
A. माउंट एवरेस्ट
B. नंदा देवी
C. कंचनजंगा
D. मकालू
(1) A, C, D, B
(2) A, D, C, B
(3) A, B, C, D
(4) A, C, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) छह
भारत की विशाल भू-आकृतिक संरचना को छह विशिष्ट भौतिक विभागों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें उत्तर के पर्वत, उत्तर भारतीय मैदान, प्रायद्वीपीय पठार, भारतीय मरुस्थल, तटीय मैदान और द्वीप समूह सम्मिलित हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अद्वितीय भूगर्भीय और जलवायु विशेषताएँ हैं। ये विविध स्वरूप देश की जैव विविधता और आर्थिक संसाधनों का मुख्य आधार हैं, जो कृषि एवं औद्योगिक विकास को प्रभावित करते हैं।

2. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
हिमालय का निर्माण भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों के बीच भीषण टकराव और अभिसरण का परिणाम है। यह प्रक्रिया करोड़ों वर्षों तक चली, जिससे टेथिस सागर के अवसाद पर्वतों में बदल गए। हिमालय का उत्थान एक ही चरण में नहीं हुआ, बल्कि यह विभिन्न भूगर्भीय युगों के दौरान तीन मुख्य चरणों में संपन्न हुआ। अतः यह कहना गलत है कि इसका विकास केवल प्लीस्टोसीन युग के दौरान हुआ था।

3. (3) यह वृहद हिमालय श्रेणी के ठीक दक्षिण में स्थित है।
ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र वृहद हिमालय के उत्तर में स्थित है। यह भौगोलिक क्षेत्र तिब्बत के पठार और मुख्य हिमालयी श्रृंखला के बीच एक मध्यवर्ती क्षेत्र है। इसमें काराकोरम, लद्दाख, जास्कर और कैलाश जैसी महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियां शामिल हैं। यहाँ की चट्टानी संरचना में प्राचीन समुद्री अवसाद और ग्रेनाइट की प्रधानता है। यह क्षेत्र अपनी अत्यधिक ऊँचाई और शुष्क जलवायु के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ वर्षा अत्यंत न्यून होती है।

4. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
भारत की पर्वत चोटियाँ विशिष्ट श्रेणियों में स्थित हैं। K2 या गॉडविन ऑस्टिन काराकोरम श्रेणी की सर्वोच्च चोटी है। राकापोशी लद्दाख श्रेणी का हिस्सा है, जो अपने तीव्र ढाल के लिए प्रसिद्ध है। कामेट पर्वत चोटी जास्कर श्रेणी में स्थित है, जबकि धौलागिरी वृहद हिमालय की प्रमुख चोटी है। इन चोटियों का भौगोलिक वितरण हिमालयी क्षेत्र की जटिल संरचना और विभिन्न पर्वत प्रणालियों के स्थानिक विस्तार को स्पष्ट करता है।

5. (1) केवल I और II
काराकोरम श्रेणी भारत के सुदूर उत्तर में स्थित है और यह अफगानिस्तान तथा चीन के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है। इसी श्रेणी में सियाचिन और बियाफो जैसे विशाल हिमनद स्थित हैं। यह लघु हिमालय की उप-श्रेणी नहीं है, बल्कि ट्रांस-हिमालयी तंत्र का अभिन्न अंग है। भूगर्भीय रूप से यह मुख्य हिमालयी श्रेणियों से प्राचीन और भिन्न है। इसमें विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी K2 स्थित है।

NODIA

6. (2) सिंधु
सिंधु नदी लद्दाख और जास्कर पर्वत श्रेणियों के मध्य एक गहरी घाटी से उत्तर-पश्चिम दिशा में बहती है। यह नदी लद्दाख के लेह क्षेत्र से गुजरती है और इस क्षेत्र की मुख्य जल प्रणाली बनाती है। श्योक नदी इसके उत्तर में लद्दाख श्रेणी के दूसरी ओर बहकर बाद में सिंधु में मिल जाती है। सतलुज और चेनाब नदियाँ हिमालय के दक्षिण से बहती हैं। सिंधु का मार्ग विवर्तनिक संरचना द्वारा निर्धारित है।

7. (4) यह मुख्य रूप से ग्रेनाइट और नीस जैसी आर्कियन चट्टानों से बना है।
वृहद हिमालय की मुख्य संरचना अत्यंत प्राचीन और कठोर आर्कियन चट्टानों से निर्मित है। इसके केंद्रीय भाग में ग्रेनाइट, नीस और शिस्ट जैसी चट्टानें प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। ये चट्टानें हिमालय की सबसे पुरानी संरचनात्मक इकाइयों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस श्रेणी का आंतरिक भाग मुख्य रूप से इन्हीं क्रिस्टलीय चट्टानों से बना है, जो अत्यधिक दबाव के कारण कायांतरित हो चुकी हैं। यही इसकी स्थिरता का आधार है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हिमाद्रि श्रेणी का दक्षिण की ओर तीव्र ढाल और उत्तर की ओर मंद ढाल इसकी संरचनात्मक विषमता को दर्शाता है। इसका कारण भारतीय प्लेट द्वारा उत्तर की ओर लगाया गया शक्तिशाली संपीडन बल है। जब भारतीय प्लेट यूरेशियाई प्लेट से टकराई, तो दक्षिणी हिस्सा अधिक संकुचित होकर ऊपर उठ गया, जिससे ढाल तीव्र हो गई। यूरेशियाई प्लेट की ओर का बल कम था, जिससे उत्तरी ढाल मंद बनी रही।

9. (3) जोजी ला
जोजी ला एक उच्च पर्वतीय दर्रा है जो श्रीनगर को कारगिल और लेह से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण मार्ग प्रदान करता है। यह दर्रा वृहद हिमालय श्रेणी में स्थित है और शीतकाल में भारी हिमपात के कारण अक्सर बंद रहता है। बारा लाचा ला हिमाचल प्रदेश में है, जबकि शिपकी ला तिब्बत सीमा पर स्थित है। जोजी ला की सामरिक महत्ता लद्दाख क्षेत्र तक पहुँच सुनिश्चित करने में निहित है।

10. (1) I, II और III
लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी वृहद हिमालय के दक्षिण में समांतर विस्तृत है। पीर पंजाल इसकी सबसे लंबी और महत्वपूर्ण श्रृंखला है। यह क्षेत्र शिमला, मसूरी और नैनीताल जैसे प्रसिद्ध पर्वतीय स्थलों का घर है। यहाँ देवदार और ओक के सघन वन पाए जाते हैं। स्थायी बर्फ केवल बहुत ऊँची चोटियों तक सीमित है, जबकि ढलानों पर चारागाह स्थित हैं। यह श्रेणी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

11. (4) माउंट आबू
डलहौजी, दार्जिलिंग और रानीखेत सभी लघु हिमालय श्रेणी में स्थित प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल हैं। ये नगर अपनी ठंडी जलवायु और हिमालयी वनस्पतियों के लिए जाने जाते हैं। इसके विपरीत, माउंट आबू राजस्थान की अरावली पर्वत श्रेणी में स्थित है, जो हिमालय तंत्र का हिस्सा नहीं है। अरावली विश्व की प्राचीनतम पर्वत प्रणालियों में से एक है और इसकी उत्पत्ति हिमालय से भिन्न है। अतः इसका संबंध प्रायद्वीपीय भारत से है।

12. (2) ये 6000 मीटर से अधिक औसत ऊंचाई के साथ एक निरंतर पर्वत अवरोध बनाते हैं।
शिवालिक श्रेणी हिमालय की सबसे दक्षिणी और नवीन पर्वत श्रृंखला है। इसकी औसत ऊँचाई कम है, जो प्रायः 900 से 1100 मीटर के मध्य रहती है। 6000 मीटर से अधिक की ऊँचाई वृहद हिमालय की विशेषता है। शिवालिक का निर्माण हिमालयी नदियों द्वारा लाए गए असंगठित अवसादों के जमाव से हुआ है। यह श्रेणी निरंतर नहीं है और कई स्थानों पर नदी घाटियों द्वारा विच्छेदित की गई है।

13. (3) विवर्तनिक उत्थान द्वारा बनी अस्थायी झीलों में मोटी बजरी का जमाव, जिन्हें बाद में नदी प्रणालियों द्वारा बहा दिया गया।
हिमालय की तलहटी में 'दून' का निर्माण एक जटिल भूगर्भीय प्रक्रिया है। हिमालय के उत्थान के दौरान नदियों के मार्ग अवरुद्ध होने से अस्थायी झीलें बनीं। इन झीलों में नदियों द्वारा लाई गई बजरी और अवसादों का भारी जमाव हुआ। बाद में जब नदियों ने अपना मार्ग पुनः काट लिया, तो ये झीलें सूख गईं और समतल घाटियों के रूप में शेष रह गईं। देहरादून इसी प्रक्रिया से बनी प्रमुख घाटी है।

14. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत की विभिन्न घाटियाँ और दून विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित हैं। देहरादून उत्तराखंड की राजधानी और प्रसिद्ध दून घाटी है। कांगड़ा घाटी हिमाचल प्रदेश में स्थित है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जानी जाती है। कश्मीर घाटी जम्मू और कश्मीर का हृदय स्थल है, जो वृहद हिमालय और पीर पंजाल के मध्य स्थित है। नेओरा घाटी पश्चिम बंगाल के कलिम्पोंग जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण जैव विविधता क्षेत्र है।

15. (3) केवल V
पूर्वी हिमालय क्षेत्र में शिवालिक श्रेणी पश्चिमी क्षेत्र की तुलना में बहुत कम सुस्पष्ट और लगभग अनुपस्थित है। यहाँ पहाड़ मैदानों से बहुत तीव्रता से ऊपर उठते हैं, जिससे ढाल अत्यंत तीव्र हो जाता है। भारी वर्षा के कारण यहाँ सघन वन और असाधारण जैव विविधता पाई जाती है। पश्चिमी हिमालय की तुलना में यहाँ वृक्ष रेखा अधिक ऊँचाई पर स्थित है। अतः शिवालिक का यहाँ संरचनात्मक रूप से प्रमुख होना गलत है।

16. (2) उच्च वर्षा, आर्द्रता और ऊँचाई वाले क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला का अनूठा संयोजन।
पूर्वी हिमालय की प्रचुर जैव विविधता का कारण वहाँ की विशिष्ट जलवायु और स्थलाकृति है। बंगाल की खाड़ी से निकटता के कारण यहाँ अत्यधिक वर्षा और उच्च आर्द्रता रहती है। ऊँचाई में अचानक बदलाव से उष्णकटिबंधीय से लेकर अल्पाइन तक विभिन्न जलवायु क्षेत्र बहुत कम दूरी में मिल जाते हैं। यह विविधता विभिन्न वनस्पतियों और जीवों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है, जिससे यह वैश्विक जैव विविधता केंद्र है।

17. (2) सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र
उत्तर भारतीय मैदानों का निर्माण मुख्य रूप से सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों तथा उनकी सहायक नदियों के निक्षेपण कार्यों से हुआ है। ये नदियाँ हिमालय से भारी मात्रा में जलोढ़ मिट्टी और अवसाद बहाकर लाती हैं, जो लाखों वर्षों से यहाँ जमा हो रहे हैं। यह उपजाऊ मैदान विश्व के सबसे सघन बसे क्षेत्रों में से एक है। इसकी उर्वरता और जल उपलब्धता भारत की कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

18. (1) भांगर - पुराना जलोढ़ वाला विस्तृत छतनुमा क्षेत्र जिसमें 'कंकड़' कहलाने वाली कैल्शियमयुक्त ग्रंथिकाएं होती हैं
भांगर उत्तरी मैदानों का वह उच्च भाग है जो पुराने जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है। यह बाढ़ के मैदानों के ऊपर एक छत जैसी संरचना बनाता है। इस क्षेत्र की मिट्टी में कैल्शियम कार्बोनेट के निक्षेप प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'कंकड़' कहते हैं। इसके विपरीत, भाबर एक पथरीला क्षेत्र है जहाँ नदियाँ लुप्त हो जाती हैं और खादर नवीन जलोढ़ वाला उपजाऊ क्षेत्र है।

19. (3) तराई
तराई क्षेत्र भाबर पट्टी के दक्षिण में स्थित एक दलदली और नम क्षेत्र है। भाबर क्षेत्र में धरातल के नीचे लुप्त हुई नदियाँ इस क्षेत्र में पुनः प्रकट होती हैं, जिससे यहाँ की भूमि निरंतर गीली रहती है। प्रचुर जल की उपलब्धता के कारण यहाँ प्राकृतिक रूप से सघन वन और समृद्ध वन्यजीव पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अपनी उपजाऊ मिट्टी के लिए भी प्रसिद्ध है, जिसे अब कृषि हेतु उपयोग किया जाता है।

20. (2) भाबर, तराई, भांगर, खादर
हिमालय से दक्षिण की ओर बढ़ने पर उत्तरी मैदानों का सही क्रम सबसे पहले भाबर आता है, जो कंकड़-पत्थरों वाली पट्टी है। इसके पश्चात तराई का दलदली क्षेत्र आता है जहाँ नदियाँ पुनः प्रकट होती हैं। तराई के बाद पुराने जलोढ़ से निर्मित भांगर क्षेत्र आता है जो तुलनात्मक रूप से ऊँचा होता है। अंत में नदियों के निकटवर्ती निचले क्षेत्र में खादर का नवीन जलोढ़ मैदान पाया जाता है।

21. (3) उन्हें वार्षिक बाढ़ के दौरान ताजी, पोषक तत्वों से भरपूर गाद का नियमित निक्षेप प्राप्त होता है।
उत्तरी मैदानों में खादर मिट्टी को उसकी नवीनता और उर्वरता के कारण श्रेष्ठ माना जाता है। ये निक्षेप नदियों के बाढ़ क्षेत्र में स्थित होते हैं, जहाँ प्रतिवर्ष नई गाद और बारीक मिट्टी जमा होती है। यह प्राकृतिक नवीनीकरण मिट्टी को खनिजों और जैविक तत्वों से समृद्ध रखता है, जिससे उर्वरकों की कम आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत, भांगर पुराने जलोढ़ से बना है जहाँ पोषक तत्वों का नियमित पुनर्भरण नहीं होता।

Click Here to Buy book on Amazon

(4) अपनी असंगठित भूगर्भीय संरचना के कारण यह भूस्खलन के प्रति संवेदनशील है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): हिमालय पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एक विशाल जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करते हैं।
कारण (R): हिमालय को भूगर्भीय रूप से नवीन वलित पर्वतों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जो विवर्तनिक टकरावों द्वारा निर्मित हुए हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. संरचनात्मक रूप से मेघालय का पठार भूगर्भीय रूप से किस भौतिक विभाजन का विस्तार है?
(1) पूर्वी हिमालय
(2) पूर्वांचल की पहाड़ियाँ
(3) प्रायद्वीपीय पठार
(4) उत्तरी मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. पहचानें कि निम्नलिखित में से कौन सी पहाड़ियाँ मेघालय पठार का हिस्सा हैं:
I. गारो पहाड़ियाँ
II. खासी पहाड़ियाँ
III. जयंतिया पहाड़ियाँ
IV. डफला पहाड़ियाँ
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता उत्तरी मैदानों के परिपक्व बाढ़ के मैदानों से नहीं जुड़ी है?
(1) गोखुर झीलें
(2) नदी विसर्प
(3) गुंफित नदी जलमार्ग
(4) गहरी V-आकार की घाटियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. उत्तरी मैदानों में मिट्टी की संरचना के संदर्भ में, 'कंकड़' शब्द का अर्थ है:
(1) पुराने जलोढ़ (भांगर) में पाए जाने वाले कैल्शियम निक्षेप।
(2) वार्षिक बाढ़ के दौरान नदियों द्वारा जमा की गई महीन गाद।
(3) शिवालिक की तलहटी में पाए जाने वाले मोटे कंकड़ और पत्थर के निक्षेप।
(4) तराई क्षेत्र की विशिष्ट घनी दलदली वनस्पति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रायद्वीपीय नदियों को हिमालयी नदियों से अलग करता है?
(1) प्रायद्वीपीय नदियाँ बारहमासी हैं, जबकि हिमालयी नदियाँ पूर्ण रूप से मौसमी हैं।
(2) प्रायद्वीपीय नदियाँ हिमालयी नदियों की तुलना में अधिक जलोढ़ ले जाती हैं।
(3) प्रायद्वीपीय नदियाँ उथली घाटियों से होकर बहती हैं, जबकि हिमालयी नदियाँ गहरी घाटियों से बहती हैं।
(4) प्रायद्वीपीय नदियाँ केवल पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: विशिष्ट द्वीप/विशेषता
A. पिट्टी द्वीप
B. सैंडल पीक
C. मिनिकॉय
D. इंदिरा पॉइंट
सूची II: प्रमुख विशेषता/स्थान
i. अंडमान और निकोबार का उच्चतम बिंदु
ii. भारत का सबसे दक्षिणी सिरा
iii. लक्षद्वीप में निर्जन पक्षी अभयारण्य
iv. लक्षद्वीप का सबसे बड़ा द्वीप
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. भारत के भौतिक विभाजनों के भौगोलिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिमालय भारत की मानसूनी जलवायु को नियंत्रित करते हैं।
II. उपजाऊ उत्तरी मैदान देश के अन्न भंडार के रूप में कार्य करते हैं।
III. प्रायद्वीपीय पठार अपनी खनिज संपदा के कारण उद्योगों के लिए आधार प्रदान करता है।
IV. पश्चिमी घाट की तीव्र ढाल जलविद्युत शक्ति के उत्पादन में सहायक है।
V. तटीय क्षेत्र बंदरगाहों और समुद्री व्यापार के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V

NODIA

33. (2) यह पश्चिम में ऊँचा है और पूर्व की ओर मंद ढाल वाला है।
दक्कन का पठार एक त्रिकोणीय भू-भाग है जिसकी ऊँचाई पश्चिम में अधिक है। पश्चिमी घाट के कगार इसे ऊँचाई प्रदान करते हैं, जहाँ से भूमि मंद गति से पूर्व की ओर ढलती है। इसी प्राकृतिक ढाल के कारण गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी अधिकांश बड़ी प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। यह ढाल पूरे प्रायद्वीपीय भारत के अपवाह तंत्र को नियंत्रित करता है।

34. (2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
मेघालय पठार पूर्वोत्तर भारत में स्थित है, जो प्रायद्वीपीय पठार का ही एक विस्थापित भाग है। छोटानागपुर पठार मुख्य रूप से झारखंड में स्थित है और अपनी प्रचुर खनिज संपदा के लिए प्रसिद्ध है। मालवा पठार मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में विस्तृत है और प्राचीन लावा निक्षेपों से बना है। तेलंगाना पठार तेलंगाना राज्य में स्थित है, जो दक्कन के पठार का पूर्वी हिस्सा है। यह सुमेलन क्षेत्रीय पठारों की भौगोलिक स्थिति दर्शाता है।

35. (1) I, II, III और IV
दक्कन ट्रैप का निर्माण क्रिटेशियस युग में ज्वालामुखी दरारों से निकले लावा के शांत प्रवाह से हुआ था। यह क्षेत्र मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में विस्तृत है और कठोर बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित है। इन चट्टानों के निरंतर अपक्षय से उपजाऊ काली मिट्टी का निर्माण हुआ है, जिसे 'रेगुड़' भी कहते हैं। इसका निर्माण प्रीकैम्ब्रियन युग में नहीं हुआ था, बल्कि यह बाद की एक प्रमुख भूगर्भीय घटना है।

36. (4) इसकी मृण्मय प्रकृति के कारण इसमें नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है।
दक्कन के पठार की काली मिट्टी बारीक मृण्मय कणों से बनी है, जो इसे असाधारण नमी धारण क्षमता प्रदान करती है। शुष्क मौसम में भी यह मिट्टी काफी समय तक नमी संचित रख सकती है, जो कपास की खेती के लिए आवश्यक है। गीली होने पर यह चिपचिपी हो जाती है और सूखने पर इसमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं, जिससे वायु का संचार प्राकृतिक रूप से होता रहता है। इसे 'स्व-जुताई' वाली मिट्टी कहते हैं।

37. (3) पर्वतीय प्रभाव
पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल पर होने वाली भारी वर्षा पर्वतीय वर्षा का प्रमुख उदाहरण है। जब नमी युक्त मानसूनी पवनें अरब सागर से आती हैं, तो वे पश्चिमी घाट की ऊंची पहाड़ियों से टकराकर ऊपर उठती हैं। ऊपर उठने पर हवा ठंडी होकर संघनित होती है, जिससे पवनाभिमुख ढाल पर भारी वर्षा होती है। पवनविमुख ढाल तक पहुँचते-पहुँचते हवा की नमी कम हो जाती है, जिससे वहाँ वृष्टि छाया क्षेत्र बनता है।

38. (2) 900 से 1600 मीटर
पश्चिमी घाट प्रायद्वीपीय पठार के पश्चिमी किनारे पर एक निरंतर कगार की तरह स्थित हैं। इनकी औसत ऊँचाई 900 से 1600 मीटर के मध्य है। ये पूर्वी घाट की तुलना में अधिक ऊँचे और निरंतर हैं। उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर इनकी ऊँचाई क्रमिक रूप से बढ़ती जाती है। यहाँ की ऊँचाई मानसूनी हवाओं को रोकने और वर्षा कराने के लिए पर्याप्त है। डोड्डाबेट्टा और अनामुडी जैसी चोटियाँ यहाँ के शिखर बिंदु हैं।

39. (4) हल्दीघाटी दर्रा
थल घाट, भोर घाट और पाल घाट पश्चिमी घाट के तीन अत्यंत महत्वपूर्ण दर्रे हैं जो तटीय मैदानों को प्रायद्वीपीय पठार के आंतरिक भागों से जोड़ते हैं। थल घाट और भोर घाट महाराष्ट्र में हैं, जबकि पाल घाट केरल और तमिलनाडु के मध्य स्थित है। इसके विपरीत, हल्दीघाटी दर्रा राजस्थान की अरावली श्रेणियों में स्थित है। यह ऐतिहासिक दर्रा महाराणा प्रताप के युद्ध के लिए प्रसिद्ध है, अतः यह पश्चिमी घाट का भाग नहीं है।

40. (1) B, C, A, D
पश्चिमी घाट के प्रमुख दर्रों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम थल घाट से आरंभ होता है, जो नासिक को मुंबई से जोड़ता है। इसके दक्षिण में भोर घाट स्थित है, जो पुणे और मुंबई के मध्य मार्ग प्रदान करता है। और दक्षिण में पाल घाट दर्रा मिलता है, जो कोच्चि को कोयंबटूर से जोड़ता है। अंत में सुदूर दक्षिण में सेनकोट्टा गैप स्थित है। यह अनुक्रम पश्चिमी तट के परिवहन भूगोल को परिभाषित करता है।

41. (3) अनामुडी
अनामुडी चोटी, जिसकी ऊँचाई 2695 मीटर है, प्रायद्वीपीय पठार और पूरे दक्षिण भारत की सर्वोच्च पर्वत चोटी है। यह केरल की अन्नामलाई पहाड़ियों में स्थित है। डोड्डाबेट्टा नीलगिरी पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी है, किंतु यह अनामुडी से नीची है। महेंद्रगिरि को पूर्वी घाट की प्रमुख चोटी माना जाता है। अनामुडी पश्चिमी घाट का शिखर बिंदु है और यहाँ की अद्वितीय जलवायु के कारण यह दुर्लभ वनस्पतियों का केंद्र है।

42. (2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है।
पूर्वी घाट बंगाल की खाड़ी के तट के समांतर स्थित हैं, किंतु वे पश्चिमी घाट की भांति निरंतर श्रृंखला नहीं हैं। ये अत्यंत प्राचीन हैं और निरंतर अपरदन के कारण खंडित अवस्था में पाए जाते हैं। महानदी, गोदावरी और कृष्णा जैसी बड़ी नदियों ने इन्हें काटकर विस्तृत घाटियाँ बनाई हैं, जिससे इनकी निरंतरता समाप्त हो गई है। अतः कथन I गलत है क्योंकि ये विच्छिन्न पहाड़ियाँ हैं, जबकि कथन II बिल्कुल सही है।

43. (4) पूर्वी तटीय मैदान अत्यधिक दंतुरित है और गहरे पानी के बंदरगाहों के लिए आदर्श है।
पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तट की तुलना में अधिक चौड़ा और समतल है, जहाँ नदियों के विशाल डेल्टा स्थित हैं। यहाँ का तट सीधा और उथला है, जो गहरे प्राकृतिक बंदरगाहों के विकास के लिए अनुकूल नहीं है। इसके विपरीत, पश्चिमी तट अधिक दंतुरित और जलमग्न है, जिससे वहाँ मुंबई जैसे कई प्राकृतिक बंदरगाह विकसित हुए हैं। पूर्वी तट पर बंदरगाहों के लिए प्रायः कृत्रिम ड्रेजिंग की आवश्यकता पड़ती है।

44. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत के तटीय भागों के क्षेत्रीय नाम उनकी भौगोलिक स्थिति पर आधारित हैं। कोंकण तट महाराष्ट्र और गोवा के तटीय क्षेत्र

Downloaded from www.pdf.tube

(3) मिनिकॉय द्वीप
(4) माजुली द्वीप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. भारत के भौतिक विभाजनों के आर्थिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उत्तरी मैदान देश का प्राथमिक कृषि आधार प्रदान करते हैं।
II. प्रायद्वीपीय पठार खनिज संसाधनों के भंडार गृह के रूप में कार्य करता है।
III. हिमालय वन संपदा और बारहमासी नदी प्रणालियों के स्रोत के रूप में कार्य करता है।
IV. तटीय मैदान पूरी तरह से बंजर हैं और किसी भी आर्थिक उपयोगिता से रहित हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से कौन सी पर्वत चोटी वृहद हिमालय (हिमाद्रि) से संबंधित नहीं है?
(1) माउंट एवरेस्ट
(2) कंचनजंगा
(3) K2 (गॉडविन ऑस्टिन)
(4) मकालू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. 'भाबर' पट्टी की सबसे सटीक भू-आकृतिक परिभाषा क्या है?
(1) व्यापक रेत के टीलों और लैगून वाली एक चौड़ी तटीय पट्टी।
(2) बाढ़ के मैदानों के ऊपर स्थित ऊंचे छत जैसे पुराने जलोढ़ निक्षेप।
(3) सक्रिय ज्वारनदमुख डेल्टाओं की सीमा पर स्थित निचले स्तर का दलदली क्षेत्र।
(4) शिवालिक की तलहटी के समानांतर स्थित कंकड़-पत्थरों की एक संकीर्ण, रंध्रयुक्त पट्टी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. गंगोत्री और यमुनोत्री हिमनद हिमालय के किस प्रमुख भाग में स्थित हैं?
(1) ट्रांस-हिमालय
(2) लघु हिमालय
(3) वृहद हिमालय
(4) शिवालिक श्रेणी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: उल्लेखनीय भौगोलिक विशेषता
A. अरावली की सबसे ऊँची चोटी
B. सतपुड़ा की सबसे ऊँची चोटी
C. नीलगिरी की सबसे ऊँची चोटी
D. नागा हिल्स की सबसे ऊँची चोटी
सूची II: संबद्ध पर्वत श्रेणी
i. धूपगढ़
ii. डोड्डाबेट्टा
iii. गुरु शिखर
iv. सारामती
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

55. मध्य उच्चभूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये नर्मदा नदी घाटी के उत्तर में स्थित हैं।
II. विंध्य श्रेणी इसे दक्षिण में घेरे हुए है।
III. अरावली उत्तर-पश्चिम में इसकी सीमा बनाती है।
IV. इस क्षेत्र की नदियाँ सामान्यतः दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर बहती हैं।
V. इस पठार के पूर्वी विस्तार को बुंदेलखंड और बघेलखंड के रूप में जाना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. अरावली पर्वत राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में वर्षा कराने में विफल क्यों रहते हैं?
(1) इनका संरेखण दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर है।
(2) वे महाद्वीप के आंतरिक भाग में स्थित हैं, जो नमी के स्रोत से दूर है।
(3) वे पूरी तरह से बर्फ से ढके हुए हैं, जो नमी वाली हवाओं को परावर्तित करते हैं।
(4) उनकी अत्यधिक ऊँचाई बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा को पूरी तरह से रोकती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. यदि उत्तरी सीमाओं से हिमालय को हटा दिया जाए, तो इसका सबसे तात्कालिक जलवायु परिणाम क्या होगा?
(1) तटीय मैदान विवर्तनिक बदलावों के कारण नियमित सूनामी का अनुभव करेंगे।
(2) पवन के पैटर्न में बदलाव के कारण मध्य प्रायद्वीपीय पठार उष्णकटिबंधीय वर्षावन में बदल जाएगा।
(3) उत्तर भारतीय मैदानों को सर्दियों में मध्य एशिया से आने वाली बर्फीली हवाओं का सामना करना पड़ेगा।
(4) दबाव क्षेत्रों में बदलाव के कारण पश्चिमी घाट अपनी

और बेतवा इसी दिशा में बहती हैं। इस पठार के पूर्वी भाग को बुंदेलखंड और बघेलखंड कहते हैं, जबकि सुदूर पूर्व में छोटानागपुर पठार स्थित है। यह क्षेत्र कठोर चट्टानी संरचना और खनिज संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है।

56. (1) इनका संरेखण दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर है।
अरावली पर्वतमाला की उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थिति वर्षा कराने में बाधक है। जब अरब सागर से उठने वाली मानसूनी पवनें राजस्थान पहुँचती हैं, तो वे अरावली के अवरोध से टकराने के बजाय उसके समांतर बहते हुए आगे निकल जाती हैं। इसके कारण हवाओं को ऊपर उठने और संघनित होने का अवसर नहीं मिलता। इसी भौगोलिक कारण से अरावली के पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल जैसी शुष्क परिस्थितियाँ बनी रहती हैं।

57. (3) उत्तर भारतीय मैदानों को सर्दियों में मध्य एशिया से आने वाली बर्फीली हवाओं का सामना करना पड़ेगा।
हिमालय भारत के लिए एक विशाल जलवायु अवरोध के रूप में कार्य करता है। यदि यह श्रेणी न होती, तो सर्दियों में मध्य एशिया से आने वाली अत्यधिक ठंडी और शुष्क पवनें निर्बाध रूप से भारत में प्रवेश कर जातीं। इससे उत्तर भारतीय मैदानों का तापमान बहुत अधिक गिर जाता और यहाँ की कृषि तथा जनजीवन पूर्णतः बदल जाता। हिमालय इन हवाओं को रोककर उपमहाद्वीप को गर्म रखता है और मानसूनी वर्षा सुनिश्चित करता है।

58. (1) नीलगिरी पहाड़ियाँ
नीलगिरी पहाड़ियाँ वह भौगोलिक संधि स्थल हैं जहाँ पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट आपस में मिल जाते हैं। यह क्षेत्र कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के सीमावर्ती भागों में स्थित है। नीलगिरी को 'नीले पर्वत' भी कहा जाता है और यहाँ की सबसे ऊँची चोटी डोड्डाबेट्टा है। अन्नामलाई और इलायची पहाड़ियाँ इसके दक्षिण में हैं। इस मिलन बिंदु पर एक अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र पाया जाता है, जो अपनी जैव विविधता के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है।

59. (4) वेम्बनाड झील
चिल्का, पुलिकट और कोल्लेरु झील भारत के पूर्वी तट पर स्थित महत्वपूर्ण जल निकाय हैं। चिल्का ओडिशा में स्थित खारे पानी की सबसे बड़ी झील है। इसके विपरीत, वेम्बनाड झील केरल के पश्चिमी तट पर स्थित एक विशाल लैगून (कयाल) है। यह भारत की सबसे लंबी झील है और यहाँ की नौका दौड़ विश्व प्रसिद्ध है। अतः वेम्बनाड झील का संबंध अरब सागर के तटीय मैदानों से है, न कि बंगाल की खाड़ी से।

60. (2) उत्कल तट, उत्तरी सरकार, कोरोमंडल तट
पूर्वी तटीय मैदान का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम ओडिशा के उत्कल तट से आरंभ होता है। इसके पश्चात आंध्र प्रदेश के तटीय भाग को 'उत्तरी सरकार' कहा जाता है, जो महानदी और कृष्णा के बीच विस्तृत है। सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु के तट को 'कोरोमंडल तट' कहते हैं, जो शीतकालीन वर्षा के लिए प्रसिद्ध है। यह अनुक्रम तटीय मैदानों की क्षेत्रीय पहचान और भू-आकृतिक लक्षणों पर आधारित है।

61. (3) एक विशिष्ट, अर्धचंद्राकार रेत का टीला
भारतीय मरुस्थल में वायु की गति के कारण रेत के विभिन्न टीलों का निर्माण होता है। 'बरखान' एक विशेष प्रकार का अर्धचंद्राकार रेत का टीला है जो मरुस्थली क्षेत्रों में बहुत सामान्य है। इन टीलों के नुकीले छोर पवन की दिशा में आगे की ओर निकले होते हैं। ये टीले मरुस्थल के गतिशील स्वभाव और पवन अपरदन की शक्ति को दर्शाते हैं। जैसलमेर के निकट इन्हें बड़े समूहों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

62. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
लूनी नदी थार मरुस्थल क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण नदी है जो अरावली श्रेणियों से निकलती है। यह बारहमासी नदी नहीं है और केवल मानसून के दौरान ही इसमें जल होता है। यह नदी सीधे अरब सागर में नहीं गिरती, बल्कि गुजरात के कच्छ के रण के दलदली क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है। यह आंतरिक अपवाह तंत्र का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। कम वर्षा के कारण इसका निचला मार्ग प्रायः खारा हो जाता है।

63. (1) महाराष्ट्र और गुजरात
दक्कन ट्रैप की विशाल बेसाल्टिक संरचना का निर्माण प्राचीन ज्वालामुखी गतिविधि से निकले लावा के जमने से हुआ है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से महाराष्ट्र के अधिकांश भाग और गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र को कवर करता है। इसके अतिरिक्त इसका विस्तार मध्य प्रदेश के पश्चिमी भागों में भी है। इन लावा चट्टानों के निरंतर अपक्षय से काली मिट्टी का निर्माण हुआ है, जो कपास की खेती के लिए सर्वोत्तम है। यह भारत की महत्वपूर्ण भूगर्भीय इकाई है।

64. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
हिमालयी राज्यों में स्थित दर्रे सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बोमडी ला दर्रा अरुणाचल प्रदेश में स्थित है जो ल्हासा को जोड़ता है। रोहतांग दर्रा हिमाचल प्रदेश में है जो कुल्लू घाटी को लाहौल और स्पीति से जोड़ता है। प्रसिद्ध नाथू ला दर्रा सिक्किम में स्थित है। बनिहाल दर्रा जम्मू और कश्मीर में स्थित है, जहाँ से जम्मू को श्रीनगर से जोड़ने वाली प्रसिद्ध जवाहर सुरंग गुजरती है। यह मिलन पर्वतीय संचार को समझाता है।

65. (1) केवल I और II
पूर्वी हिमालय की सीमा ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा निर्धारित होती है, जहाँ से हिमालय पर्वत अचानक दक्षिण की ओर मुड़ जाते हैं। इस मोड़ के बाद बनने वाली पहाड़ियों को 'पूर्वांचल' के नाम से जाना जाता है। पूर्वांचल की पहाड़ियाँ मजबूत बलुआ पत्थरों और अवसादी चट्टानों से बनी हैं। ये पहाड़ियाँ भारत और म्यांमार की सीमा के समांतर विस्तृत हैं। इनमें पटकाई बुम और नागा पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र सघन वनों के लिए प्रसिद्ध है।

66. (1) राजमहल पहाड़ियाँ
पटकाई बुम, नागा और मिज़ो पहाड़ियाँ उत्तर-पूर्व भारत की पूर्वांचल पर्वत श्रृंखला का अभिन्न भाग हैं, जो हिमालय के

Click Here to Buy book on Amazon

विस्तार को दर्शाती हैं। इसके विपरीत, राजमहल पहाड़ियाँ झारखंड में स्थित हैं और भूगर्भीय रूप से प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा हैं। राजमहल पहाड़ियों का निर्माण प्राचीन लावा निक्षेपों से हुआ है। पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय की भाँति नवीन वलित पर्वत संरचना का हिस्सा हैं, जबकि राजमहल एक प्राचीन अवशिष्ट पहाड़ी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं।

67. (3) यह सिंधु महाखड्ड से ब्रह्मपुत्र महाखड्ड तक एक अखंड अवरोध बनाती है।
शिवालिक श्रेणी हिमालय की सबसे बाहरी श्रेणी है, जिसकी संरचना अन्य श्रेणियों की तुलना में कम निरंतर है। यह सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक अखंड अवरोध नहीं बनाती, बल्कि कई स्थानों पर नदियों द्वारा विच्छेदित की गई है, जिससे बीच में चौड़ी घाटियाँ बन गई हैं। विशेष रूप से तीस्ता और रायडक नदियों के मध्य इसका अस्तित्व क्षीण हो जाता है। इसकी असंगठित मिट्टी और बजरी की संरचना इसे भूस्खलन के प्रति संवेदनशील बनाती है।

68. (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
हिमालय पर्वत निश्चित रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के लिए प्रमुख जलवायु विभाजक हैं, क्योंकि ये ठंडी हवाओं को रोकते हैं और मानसूनी वर्षा कराते हैं। साथ ही, हिमालय को भूगर्भीय रूप से नवीन वलित पर्वत माना जाता है जो विवर्तनिक टक्कर से निर्मित हुए हैं। हालांकि, हिमालय का 'नवीन वलित पर्वत' होना उसके 'जलवायु विभाजक' होने का प्रत्यक्ष कारण नहीं है। जलवायु प्रभाव इसकी विशाल ऊँचाई और स्थिति के कारण उत्पन्न होता है।

69. (3) प्रायद्वीपीय पठार
मेघालय का पठार या शिलांग पठार वास्तव में मुख्य प्रायद्वीपीय पठार का ही एक पूर्वी विस्तार है। भूगर्भीय रूप से यह छोटानागपुर पठार से जुड़ा हुआ था, किंतु मालदा भ्रंश के कारण यह मुख्य पठार से पृथक हो गया। इसकी चट्टानी संरचना और खनिज भंडार प्रायद्वीपीय भारत के समान ही प्राचीन हैं। यह हिमालय का हिस्सा नहीं है। इसकी ऊँचाई और स्थिति इसे पूर्वोत्तर भारत में एक अलग भौगोलिक पहचान और समृद्ध जैव विविधता प्रदान करती है।

70. (1) I, II और III
गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियाँ मेघालय पठार के तीन प्रमुख भाग हैं, जो पश्चिम से पूर्व के क्रम में स्थित हैं। ये पहाड़ियाँ स्थानीय जनजातियों के नाम पर हैं और यहाँ विश्व की सर्वाधिक वर्षा होती है। इसके विपरीत, डफला पहाड़ियाँ अरुणाचल प्रदेश में स्थित हैं और वे हिमालय पर्वत तंत्र का भाग हैं। मेघालय की ये श्रेणियाँ प्राचीन प्रायद्वीपीय पठार से संबंधित हैं, जबकि डफला पहाड़ियाँ नवीन वलित हिमालयी संरचना का प्रतिनिधित्व करती हैं।

71. (4) गहरी V-आकार की घाटियाँ
उत्तर भारतीय मैदानों में नदियाँ अपनी प्रौढ़ावस्था में होती हैं, जहाँ ढाल अत्यंत मंद होता है। इस अवस्था में नदियाँ गोखुर झीलें, विसर्प और गुंफित जलमार्ग जैसी विशिष्ट आकृतियाँ बनाती हैं। गहरी V-आकार की घाटियाँ पर्वतों के युवा चरण की मुख्य विशेषता हैं, जहाँ जल का वेग तीव्र और ऊर्ध्वाधर अपरदन अधिक होता है। मैदानों में नदियाँ अपना तल चौड़ा करती हैं, जिससे घाटियाँ उथली हो जाती हैं। अतः ये मैदानी स्थलाकृति नहीं हैं।

72. (1) पुराने जलोढ़ (भांगर) में पाए जाने वाले कैल्शियम निक्षेप।
उत्तरी मैदानों के भांगर क्षेत्र में मिट्टी की संरचना में चूनेदार ग्रंथियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं, जिन्हें 'कंकड़' कहते हैं। ये ग्रंथियाँ कैल्शियम कार्बोनेट के संकेंद्रण से निर्मित होती हैं। पुराने जलोढ़ मैदानों में इनकी उपस्थिति मिट्टी की भौतिक बनावट को प्रभावित करती है। यह विशेषता मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में है जो अब बाढ़ के प्रत्यक्ष प्रभाव से दूर हैं। कंकड़ युक्त मिट्टी अपेक्षाकृत कठोर और कम उपजाऊ मानी जाती है।

73. (3) प्रायद्वीपीय नदियाँ उथली घाटियों से होकर बहती हैं, जबकि हिमालयी नदियाँ गहरी घाटियों से बहती हैं।
प्रायद्वीपीय नदियाँ भूगर्भीय रूप से प्राचीन हैं और अपनी आधार रेखा तक पहुँच चुकी हैं, जिससे उनकी घाटियाँ उथली और चौड़ी होती हैं। इसके विपरीत, हिमालयी नदियाँ अभी भी युवा अवस्था में हैं और वे हिमालय के निरंतर उत्थान के साथ गहरी घाटियों और महाखड्डों का निर्माण करती हैं। हिमालयी नदियाँ बारहमासी हैं जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ वर्षा पर निर्भर हैं। यह अंतर दोनों क्षेत्रों की भूगर्भीय आयु और ढाल की तीव्रता को स्पष्ट करता है।

74. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
लक्षद्वीप का पिट्टी द्वीप एक निर्जन स्थान है जो एक महत्वपूर्ण पक्षी अभयारण्य है। अंडमान और निकोबार की सर्वोच्च चोटी सैंडल पीक है जो उत्तरी अंडमान में स्थित है। मिनिकॉय लक्षद्वीप समूह का सबसे बड़ा और दक्षिणी द्वीप है। इंदिरा पॉइंट, जो निकोबार द्वीप समूह में स्थित है, भारत संघ का सबसे दक्षिणी बिंदु है। यह मिलन विभिन्न द्वीपों की विशिष्ट भौगोलिक पहचान और उनकी सामरिक स्थिति को सटीक रूप से स्पष्ट करता है।

75. (4) I, II, III, IV और V
भारत के सभी भौतिक विभाजन देश की अर्थव्यवस्था और जलवायु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिमालय मानसून को नियंत्रित कर वर्षा सुनिश्चित करता है, जबकि उत्तरी मैदान खाद्य सुरक्षा का आधार हैं। प्रायद्वीपीय पठार की खनिज संपदा उद्योगों को आधार प्रदान करती है। पश्चिमी घाट से जलविद्युत का उत्पादन होता है और तटीय मैदान समुद्री व्यापार के केंद्र हैं। यह भौगोलिक एकता भारत के सर्वांगीण विकास का वास्तविक आधार निर्मित करती है।

76. (2) लाखों वर्षों का निरंतर अपरदन और अपक्षय।
अरावली पर्वतमाला कभी एक विशाल पर्वत श्रृंखला थी, किंतु लाखों वर्षों के निरंतर प्राकृतिक अपरदन और अपक्षय ने इसे आज अवशिष्ट पहाड़ियों में परिवर्तित कर दिया है। यह विश्व की प्राचीनतम पर्वत प्रणालियों में से एक है। वायु और जल के प्रभाव ने इसकी कठोर चट्टानों को धीरे-धीरे घिस दिया है। आज

NODIA

इसकी चोटियाँ पहले की तुलना में बहुत नीची और खंडित हैं। यह भूगर्भीय इतिहास के उस लंबे कालक्रम को दर्शाता है।

77. (3) पश्चिमी घाट
कोंकण रेलवे का निर्माण भारत के सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है क्योंकि यह पश्चिमी घाट के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों से गुजरती है। इस मार्ग के लिए अनेक गहरी घाटियों पर पुल और ऊँची पहाड़ियों को काटकर लंबी सुरंगें बनानी पड़ीं। पश्चिमी घाट अरब सागर के समांतर एक दीवार की भांति स्थित हैं, जिनकी तीव्र ढाल और सघन वन इसे विवर्तनिक रुप से जटिल बनाते हैं। यह भौतिक अवरोध परिवहन को प्रभावित करता है।

NODIA

78. (4) लौटता हुआ उत्तर-पूर्वी मानसून जो बंगाल की खाड़ी से नमी ग्रहण करता है।
कोरोमंडल तट पर शीतकालीन वर्षा का मुख्य कारण लौटता हुआ मानसून है। अक्टूबर-नवंबर में जब मानसूनी पवनें पीछे हटती हैं, तो वे बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरते समय नमी सोख लेती हैं। ये नमी युक्त पवनें जब तमिलनाडु के तट से टकराती हैं, तो वहाँ भारी वर्षा करती हैं। इसी कारण भारत के अन्य भागों के शुष्क रहने पर भी कोरोमंडल क्षेत्र में प्रचुर वर्षा होती है, जो रबी फसलों के लिए लाभदायक है।

79. (4) असम हिमालय: तीस्ता और गंगा नदियों के बीच
हिमालय का क्षेत्रीय वर्गीकरण नदी घाटियों के आधार पर है। असम हिमालय का विस्तार सिक्किम की तीस्ता नदी से अरुणाचल प्रदेश की दिहांग नदी तक है, न कि गंगा तक। इसके विपरीत, पंजाब हिमालय सिंधु और सतलुज के मध्य, कुमाऊं हिमालय सतलुज और काली के मध्य, तथा नेपाल हिमालय काली और तीस्ता के मध्य स्थित है। गंगा का मैदान हिमालय के दक्षिण में है और यह पर्वतीय क्षेत्रों की सीमा नहीं बनाती है।

80. (1) A, C, D, B
हिमालय की चोटियों की ऊँचाई का क्रम उनकी वैश्विक स्थिति दर्शाता है। माउंट एवरेस्ट 8848 मीटर के साथ सर्वोच्च चोटी है। इसके पश्चात कंचनजंगा (8586 मीटर) भारत की सर्वोच्च चोटी है। मकालू (8485 मीटर) विश्व की पाँचवीं सबसे ऊँची चोटी है। नंदा देवी (7816 मीटर) उत्तराखंड में स्थित है और इस सूची में चतुर्थ स्थान पर है। ऊँचाई का यह अवरोही क्रम हिमालय की महानता और इसकी विशाल संरचना को स्पष्ट करता है।

नदी है।
II. तुंगभद्रा और भीमा इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
III. मूसी नदी कृष्णा की बाएं तट की सहायक नदी है।
IV. कोयना बांध कृष्णा की एक सहायक नदी पर स्थित है।
V. यह गोदावरी नदी के साथ संयुक्त डेल्टा बनाती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. कृष्णा नदी के जल को लेकर बार-बार होने वाले अंतर-राज्यीय विवाद मुख्य रूप से किसका परिणाम हैं?
(1) नदी का हाल के दशकों में अपना मार्ग महत्वपूर्ण रूप से बदलना
(2) ऊपरी क्षेत्रों में रन-ऑफ-द-रिवर जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण
(3) ऊपरी तटवर्ती राज्यों द्वारा अनियंत्रित औद्योगिक प्रदूषण
(4) वर्षा में उच्च मौसमी भिन्नता और व्यापक कृषि जल मांग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. अन्य प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में कावेरी नदी के जल स्तर में कम उतार-चढ़ाव होता है क्योंकि:
(1) इसे नीलगिरी में एक स्थानीय हिमनद प्रणाली से जल प्राप्त होता है
(2) यह पूरी तरह से कठोर भूभाग से होकर बहती है, जिससे रिसाव कम होता है
(3) इसके ऊपरी और निचले जलग्रहण क्षेत्रों में अलग-अलग मानसून से वर्षा होती है
(4) इसका पूरा द्रोणी क्षेत्र घने जंगलों से ढका है, जो तीव्र अपवाह को रोकता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. कावेरी नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह पश्चिमी घाट की ब्रह्मगिरी श्रेणी से निकलती है।
कथन II: यह प्रसिद्ध शिवसमुद्रम जलप्रपात बनाती है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. कावेरी नदी पर चल रहे जल विवाद में मुख्य रूप से कौन-से राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं?
(1) कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और महाराष्ट्र
(2) केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और लक्षद्वीप
(3) कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना और पुडुचेरी
(4) तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पुडुचेरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. कावेरी नदी प्रणाली पर निम्नलिखित बांधों/जलाशयों पर विचार कीजिए:
I. हरंगी बांध
II. कृष्ण राज सागर बांध
III. मेट्टूर बांध
IV. ग्रैंड अनिकट (कल्लनई)
उपरोक्त का धारा के प्रतिकूल से अनुकूल की ओर सही क्रम क्या है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) III, II, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. परिभाषा के अनुसार, एक भ्रंश घाटी नदी वह होती है जो उच्चभूमियों के बीच एक रैखिक निम्नभूमि से होकर बहती है। नर्मदा भ्रंश घाटी किन दो श्रेणियों के बीच स्थित है?
(1) अरावली और विंध्य
(2) सतपुड़ा और अजंता
(3) विंध्य और सतपुड़ा
(4) पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. नर्मदा नदी के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) यह अपने मुहाने पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती है
(2) यह अमरकंटक पठार क्षेत्र से निकलती है
(3) यह जबलपुर के निकट संगमरमर की चट्टानों से होकर बहती है
(4) यह मध्य प्रदेश में मनोरम धुआंधार जलप्रपात बनाती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. नर्मदा नदी से जुड़े स्थानों के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) उद्गम बिंदु - त्र्यंबकेश्वर पठार क्षेत्र
(2) जलप्रपात का प्रकार - अधिक ऊँचाई वाला जोग जलप्रपात
(3) प्रमुख बांध परियोजना - विशाल हीराकुंड बांध
(4) ज्वारनदमुख का स्थान - खंभात की खाड़ी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पश्चिम की ओर बहने वाली नदी)
A. नर्मदा
B. तापी
C. लूणी
D. साबरमती

Downloaded from www.pdf.tube

में थीं और गहरे गार्ज काटकर अपने मार्ग को बनाए रखा है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से किस स्थान पर अलकनंदा और भागीरथी नदियाँ मिलकर गंगा का निर्माण करती हैं?
(1) रुद्रप्रयाग
(2) कर्णप्रयाग
(3) देवप्रयाग
(4) विष्णुप्रयाग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. गंगा नदी के मार्ग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह हरिद्वार में मैदानों में प्रवेश करती है।
II. यह झारखंड राज्य से होकर बहती है।
III. इसकी वितरिका हुगली पूरी तरह से पश्चिम बंगाल से होकर बहती है।
IV. यह असम के धुबरी में ब्रह्मपुत्र से मिलती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन-सी गंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है?
(1) घाघरा
(2) कोसी
(3) गंडक
(4) यमुना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. नदी संगमों (प्रयागों) के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) रुद्रप्रयाग - अलकनंदा और मंदाकिनी
(2) नंदप्रयाग - भागीरथी और मंदाकिनी
(3) कर्णप्रयाग - अलकनंदा और पिंडर
(4) विष्णुप्रयाग - अलकनंदा और धौलीगंगा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. कोसी नदी को ऐतिहासिक रूप से मुख्य रूप से किस कारण से 'बिहार का शोक' कहा जाता है?
(1) यह ऊपरी धारा से बड़ी मात्रा में प्रदूषक लाती है
(2) यह ग्रीष्म ऋतु में पूरी तरह सूख जाती है
(3) यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है, जिससे भीषण बाढ़ आती है
(4) यह एक गहरे गार्ज से होकर बहती है जिससे नौवहन असंभव हो जाता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

14. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (गंगा की सहायक नदी)
A. यमुना
B. घाघरा
C. गंडक
D. कोसी
सूची II: (विशेषता)
i. इसमें सात धाराएँ शामिल हैं जिन्हें सप्त कोसी कहा जाता है
ii. मापचाचुंगो हिमनद से निकलती है
iii. उत्तर प्रदेश और बिहार के बीच सीमा बनाती है
iv. गंगा की सबसे लंबी दाएं तट की सहायक नदी
कूट:
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. यमुना नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बंदरपूँछ श्रेणी पर यमुनोत्री हिमनद से निकलती है।
II. यह प्रयागराज में गंगा से मिलती है।
III. चंबल इसकी दाएं तट की सहायक नदी है।
IV. हिंडन इसकी बाएं तट की सहायक नदी है।
V. यह हिमाचल प्रदेश राज्य से होकर बहती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल I, II, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. गंडक नदी के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) इसमें काली गंडक और त्रिशूल गंगा नामक दो धाराएँ शामिल हैं
(2) यह वाराणसी शहर के निकट गंगा में मिलती है
(3) यह धौलागिरी और माउंट एवरेस्ट के बीच नेपाल हिमालय से निकलती है
(4) यह बिहार के चंपारण जिले में गंगा के मैदान में प्रवेश करती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (झील)
A. डल झील
B. लोकतक झील
C. चिल्का झील
D. सांभर झील
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
i. फुमडी कहलाने वाले तैरते हुए द्वीप
ii. सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील
iii. सबसे बड़ी तटीय लैगून
iv. हाउस-बोट के लिए प्रसिद्ध शहरी झील
कूट:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. लोकतक झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मणिपुर राज्य में स्थित है।
II. यह फुमडी कहलाने वाले तैरते हुए गोलाकार दलदलों के लिए जानी जाती है।
III. विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान, केइबुल लामजाओ यहाँ स्थित है।
IV. यह संकटग्रस्त संगाई हिरण का प्राकृतिक आवास है।
V. इसे रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि के रूप में नामित किया गया है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील, वुलर झील, मुख्य रूप से किसके कारण बनी थी?
(1) विवर्तनिक गतिविधि
(2) ज्वालामुखी गतिविधि
(3) हिमनद अपरदन
(4) नदी विसर्प
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत की सबसे बड़ी तटीय लैगून है, जिसे वैश्विक स्तर पर इसके उच्च पारिस्थितिक महत्व के लिए मान्यता प्राप्त है?
(1) वेम्बनाड झील
(2) पुलिकट झील
(3) चिल्का झील
(4) अष्टमुडी झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चिल्का झील रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की पहली भारतीय आर्द्रभूमि थी।
कथन II: यह संकटग्रस्त इरावदी डॉल्फिन की एक महत्वपूर्ण आबादी का आवास है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-sa सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. चिल्का झील की लवणता में महत्वपूर्ण मौसमी परिवर्तन होते हैं। इस घटना का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) शीत ऋतु के दौरान होने वाली उच्च वाष्पीकरण दर
(2) गहरे समुद्री ज्वालामुखी छिद्र जो समय-समय पर लवण छोड़ते हैं
(3) इसकी सीमाओं के किनारे की जाने वाली गहन नमक खेती
(4) अंतर्देशीय नदी के मीठे पानी और समुद्री जल के प्रवाह का मिश्रण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से कौन भारत में उत्तर से दक्षिण की ओर प्राकृतिक झीलों के सही क्रम को दर्शाता है?
(1) वुलर, डल, सांभर, चिल्का
(2) डल, वुलर, चिल्का, सांभर
(3) वुलर, सांभर, डल, चिल्का
(4) डल, सांभर, वुलर, चिल्का
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. वुलर झील एक प्राकृतिक बाढ़ जलाशय के रूप में कार्य करती है। यह कार्य सीधे किस नदी से जुड़ा है?
(1) सिंधु
(2) चिनाब
(3) झेलम
(4) रावी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. तुलबुल नौवहन परियोजना, जो भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का विषय थी, किस झील के मुहाने पर स्थित है?
(1) डल झील
(2) पेंगोंग त्सो
(3) त्सो मोरीरी
(4) वुलर झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. महानदी का उद्गम कहाँ से होता है?
(1) छत्तीसगढ़ में सिहावा
(2) महाराष्ट्र में महाबलेश्वर
(3) महाराष्ट्र में त्र्यंबकेश्वर
(4) मध्य प्रदेश में अमरकंटक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित में से कौन-सा बांध महानदी नदी प्रणाली पर स्थित नहीं है?
(1) हीराकुंड बांध
(2) दुधवा बांध
(3) गंगरेल बांध
(4) उकाई बांध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हीराकुंड बांध का निर्माण मुख्य रूप से महानदी डेल्टा क्षेत्र में विनाशकारी बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए किया गया था।
कारण (R): महानदी नदी में गाद की मात्रा बहुत कम होती है, जो मानसून के दौरान बाढ़ के प्राकृतिक नियंत्रण को रोकती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. गोदावरी नदी को अक्सर 'दक्षिण गंगा' कहा जाता है, इसका मुख्य कारण है:
(1) पश्चिमी घाट की बर्फ से ढकी चोटियों में इसका उद्गम
(2) गंगा द्रोणी के समान उच्च कृषि उत्पादकता
(3) दक्षिण भारत में इसका विशाल आकार, विस्तृत द्रोणी क्षेत्र और लंबाई
(4) गंगा की तरह बार-बार अपना मार्ग बदलने की प्रवृत्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. गोदावरी नदी और उसकी सहायक नदियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्राणहिता गोदावरी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।
II. इंद्रावती नदी बस्तर क्षेत्र से होकर बहती है।
III. मंजिरा नदी दाएं तट से गोदावरी में मिलती है।
IV. गोदावरी नदी कर्नाटक राज्य से होकर बहती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल IV
(2) केवल I और III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. गोदावरी नदी निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?
(1) नासिक के निकट त्र्यंबकेश्वर
(2) कोडागु में ब्रह्मगिरी पहाड़ियाँ
(3) सतारा में महाबलेश्वर
(4) रायपुर में सिहावा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित राज्यों में से कौन-सा विषम है क्योंकि यह गोदावरी नदी द्रोणी के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) महाराष्ट्र
(2) तमिलनाडु
(3) तेलंगाना
(4) ओडिशा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. कृष्णा नदी निम्नलिखित में से किस स्थान के निकट एक झरने से निकलती है?
(1) त्र्यंबकेश्वर
(2) महाबलेश्वर
(3) अमरकंटक
(4) तालकावेरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बांध)
A. नागार्जुनसागर
B. अल्माटी
C. श्रीशैलम
D. तुंगभद्रा
सूची II: (स्थान/नदी)
i. कर्नाटक में कृष्णा नदी पर
ii. आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के बीच कृष्णा नदी पर
iii. कृष्णा की एक प्रमुख दाएं तट की सहायक नदी पर
iv. नल्लामाला पहाड़ियों में गहरी घाटी के साथ कृष्णा नदी पर
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

35. कृष्णा नदी द्रोणी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पूर्व की ओर बहने वाली दूसरी सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय

अध्याय 09

भारत की प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

1. भारतीय नदियों को हिमालयी और प्रायद्वीपीय प्रणालियों में वर्गीकृत करने का मुख्य आधार क्या है?
   (1) विभिन्न नदी प्रणालियों की कुल लंबाई
   (2) प्रणालियों की उत्पत्ति और विकासवादी इतिहास
   (3) वार्षिक रूप से विसर्जित जल की कुल मात्रा
   (4) महासागरों की ओर प्रवाह की सामान्य दिशा
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. हिमालयी नदियों की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: ये प्रकृति में मुख्य रूप से बारहमासी होती हैं।
   कथन II: इन्हें जल केवल उच्च ऊँचाई वाले हिमनदों के पिघलने से प्राप्त होता है।
   उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों की सामान्य विशेषता नहीं है?
   (1) इनकी घाटियाँ व्यापक रूप से प्रवणित और उथली होती हैं
   (2) ये हिमालयी नदियों की तुलना में पुरानी हैं
   (3) ये अपनी मध्य अवस्था में अत्यधिक विसर्पी मार्ग प्रदर्शित करती हैं
   (4) ये मुख्य रूप से वर्षा पर आधारित और प्रकृति में मौसमी होती हैं
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: (नदी प्रणाली)
   A. हिमालयी नदियाँ
   B. प्रायद्वीपीय पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ
   C. प्रायद्वीपीय पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ
   D. अंतर्देशीय जल निकासी
   सूची II: (विशेषताएं)
   i. डेल्टा के बजाय ज्वारनदमुख बनाती हैं
   ii. खारी झीलों में गिरती हैं या रेत में विलीन हो जाती हैं
   iii. तट पर विस्तृत डेल्टा बनाती हैं
   iv. प्रकृति में पूर्ववर्ती और बारहमासी होती हैं
   कूट:
   (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
   (2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
   (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
   (4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सिंधु नदी प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. चिनाब सिंधु की सबसे बड़ी सहायक नदी है।
   II. सतलुज तिब्बत में राकस ताल झील से निकलती है।
   III. झेलम वुलर झील से होकर बहती है।
   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. 1960 की सिंधु जल संधि के प्रावधानों के तहत, भारत को निम्नलिखित में से किन नदियों के जल पर अनन्य अधिकार प्राप्त है?
   (1) सिंधु, झेलम और चिनाब
   (2) रावी, व्यास और सतलुज
   (3) चिनाब, रावी और व्यास
   (4) झेलम, सतलुज और सिंधु
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. अपने उद्गम स्थल के आधार पर निम्नलिखित में से कौन-सी नदी अन्य से भिन्न है?
   (1) झेलम
   (2) चिनाब
   (3) रावी
   (4) सतलुज
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
   अभिकथन (A): सिंधु नदी और इसकी प्रमुख हिमालयी सहायक नदियों को पूर्ववर्ती जल निकासी प्रणाली माना जाता है।
   कारण (R): ये नदियाँ हिमालय के उत्थान से पहले अस्तित्व

Downloaded from www.pdf.tube

सूची II: (भौगोलिक विशेषता)
i. विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों के बीच बहती है
ii. सतपुड़ा श्रेणी के दक्षिण में बहती है
iii. कच्छ के रण में विलीन हो जाती है
iv. अरावली श्रेणी से निकलती है

कूट:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. तापी नदी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह नर्मदा नदी के समानांतर बहती है।
II. इसकी द्रोणी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ हिस्सों को कवर करती है।
III. इसकी लंबाई नर्मदा नदी से अधिक है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. तापी नदी कहाँ से निकलती है?
(1) रायपुर जिले में सिहावा
(2) अनूपपुर जिले में अमरकंटक
(3) सतारा जिले में महाबलेश्वर
(4) बैतूल जिले में मुल्ताई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी प्रायद्वीपीय पठार की पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों का अपवाद है?
(1) सुवर्णरिखा
(2) तापी
(3) माही
(4) पेरियार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): नर्मदा और तापी नदियाँ पश्चिम की ओर अरब सागर में बहती हैं और डेल्टा नहीं बनाती हैं।
कारण (R): ये तीव्र ढाल वाली भ्रंश घाटियों से होकर बहती हैं और इनमें अवसाद जमा करने के लिए विस्तृत तटीय मैदान का अभाव होता है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. लूणी नदी अपने ऊपरी मार्ग में मीठी होती है लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ती है, खारी हो जाती है। यह घटना मुख्य रूप से राजस्थान के किस शहर में पहुँचने के बाद इसके प्रवाह पर लागू होती है?
(1) अजमेर
(2) बालोतरा
(3) जोधपुर
(4) बाड़मेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

50. लूणी नदी की सहायक नदियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जोजरी लूणी की एकमात्र दाएं तट की सहायक नदी है।
II. सुकड़ी, बांडी और जवाई बाएं तट की सहायक नदियाँ हैं।
III. लूणी की सभी सहायक नदियाँ अरावली की पहाड़ियों से निकलती हैं।
IV. लूणी नदी प्रणाली एक अंतःप्रवाहित अपवाह द्रोणी बनाती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. लूणी नदी कहाँ से निकलती है?
(1) विंध्य कगार क्षेत्र
(2) पुणे के निकट भोर घाट दर्रा
(3) अरावली की पुष्कर घाटी
(4) गुजरात राज्य की गिर पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. लूणी नदी के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह सीधे मन्नार की खाड़ी में समुद्र से मिलती है
(2) यह गुजरात के तटीय मैदानों में एक विशाल डेल्टा बनाती है
(3) यह वर्ष भर बारहमासी बनी रहती है
(4) यह अंतःप्रवाहित या अंतर्देशीय जल निकासी प्रणाली का एक उदाहरण है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. प्राकृतिक झीलों और उनके संबंधित राज्यों के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) लोकतक झील - मेघालय
(2) डल झील - हिमाचल प्रदेश
(3) वुलर झील - जम्मू और कश्मीर
(4) चिल्का झील - आंध्र प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. ब्रह्मपुत्र नदी को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। बांग्लादेश में प्रवेश करने पर इसे क्या कहा जाता है?
(1) सांगपो
(2) जमुना
(3) दिहांग
(4) मेघना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. विश्व के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली का निर्माण, मुख्य रूप से ब्रह्मपुत्र नदी की किस विशेषता का परिणाम है?
(1) उच्च गाद भार ले जाने वाला गुंफित जलमार्ग
(2) एक खड़ी V-आकार की घाटी के माध्यम से इसका गहरा प्रवाह
(3) एक बड़े हिमनद से इसकी उच्च ऊँचाई वाली उत्पत्ति
(4) पहाड़ों में इसका पूर्ववर्ती अपवाह तंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. ब्रह्मपुत्र नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: ब्रह्मपुत्र अपने मार्ग में यू-टर्न लेकर अरुणाचल प्रदेश से भारत में प्रवेश करती है।
कथन II: यह यू-टर्न नामचा बरवा शिखर की उपस्थिति के कारण होता है जो एक संरचनात्मक अवरोध के रूप में कार्य करता है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन भारत में ब्रह्मपुत्र से मिलने वाली उसकी सहायक नदियों के सही पूर्व से पश्चिम क्रम को दर्शाता है?
(1) लोहित, दिबांग, सुबनसिरी, कामेंग
(2) लोहित, दिबांग, कामेंग, सुबनसिरी
(3) सुबनसिरी, कामेंग, लोहित, दिबांग
(4) कामेंग, सुबनसिरी, दिबांग, लोहित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों के पश्चिम से पूर्व की ओर बहने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) पूर्वी घाट संरचनात्मक रूप से पश्चिमी घाट से बहुत ऊँचे हैं
(2) कोरिओलिस बल नदी के प्रवाह को महत्वपूर्ण रूप से पूर्व की ओर मोड़ देता है
(3) पश्चिम से पूर्व की ओर सामान्य पठारी ढाल
(4) पूर्वी चट्टानें भूगर्भीय रूप से कोमल हैं और उनका अपरदन आसान है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. पूर्व की ओर बहने वाली प्रायद्वीपीय नदियाँ डेल्टा बनाती हैं जबकि पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख बनाती हैं, इसका सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ काफी कम जल धारण करती हैं
(2) कठोर चट्टानों और भ्रंश घाटियों से होकर बहना, जिससे अवसाद की मात्रा कम हो जाती है
(3) बंगाल की खाड़ी में बहुत शक्तिशाली समुद्री धाराओं का होना
(4) पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ भूगर्भीय रूप से पूर्वी नदियों से पुरानी हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(1) इनका अपवाह क्षेत्र आमतौर पर हिमालयी नदियों की तुलना में बड़ा होता है
(2) इन्हें शीत ऋतु में हिमनदों के पिघलने से पर्याप्त जल प्राप्त होता है
(3) ये तटीय मैदानों में मुख्य रूप से द्रुमाकृतिक अपवाह प्रतिरूप प्रदर्शित करती हैं
(4) इनकी विशेषता निश्चित मार्ग और विसर्पों का अभाव है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रायद्वीपीय नदी)
A. गोदावरी
B. कृष्णा
C. महानदी
D. नर्मदा
सूची II: (द्रोणी/विशेषता)
i. भ्रंश घाटी से होकर बहती है
ii. महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश द्वारा साझा की गई द्रोणी
iii. सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी द्रोणी
iv. द्रोणी मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और ओडिशा में है
कूट:
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित सहायक नदियों पर विचार कीजिए:
I. शिवनाथ
II. हसदेव
III. जोंक
उपरोक्त में से कौन-सी महानदी की सहायक नदियाँ हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III

Click Here to Buy book on Amazon

63. वुलर झील के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) यह विशेष रूप से सिंधु की गोखुर झील के रूप में बनी है
(2) यह भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है
(3) यह जम्मू और कश्मीर के बांदीपोरा जिले में स्थित है
(4) इसका आकार मौसम के आधार पर काफी भिन्न होता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (झील/जलाशय)
A. वुलर झील
B. गोबिंद सागर
C. नागार्जुनसागर
D. हीराकुंड जलाशय
सूची II: (संबंधित नदी)
i. सतलुज
ii. झेलम
iii. महानदी
iv. कृष्णा
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. निम्नलिखित नदियों पर विचार कीजिए:
I. मेंढा
II. रूपनगढ़
III. खारी
सांभर झील को जल आपूर्ति करने वाली नदियों के संबंध में उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. सांभर झील भौगोलिक रूप से किस राज्य में स्थित है और इसकी संरक्षण स्थिति क्या है?
(1) राजस्थान, रामसर आर्द्रभूमि स्थल
(2) गुजरात, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल
(3) हरियाणा, राष्ट्रीय उद्यान
(4) पंजाब, बायोस्फीयर रिजर्व
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन-सी झील भारत में सर्वाधिक अंतर्देशीय नमक उत्पादन के लिए उत्तरदायी है?
(1) पचपदरा झील
(2) डीडवाना झील
(3) सांभर झील
(4) लूणकरणसर झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील है और नमक उत्पादन का एक प्रमुख स्थल है।
कारण (R): यह उच्च ग्रीष्मकालीन वाष्पीकरण दर वाले एक अंतःप्रवाहित द्रोणी से जल प्राप्त करती है, जो घुले हुए लवणों को केंद्रित कर देती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. मानव निर्मित जलाशयों और उनसे संबंधित नदियों के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) गोबिंद सागर - सतलुज
(2) नागार्जुनसागर - कृष्णा
(3) राणा प्रताप सागर - नर्मदा
(4) गांधी सागर - चंबल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. गोबिंद सागर जलाशय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका निर्माण भाखड़ा बांध द्वारा किया गया है।
II. यह सतलुज नदी पर स्थित है।
III. यह भौगोलिक रूप से हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित है।
IV. इसका नाम सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के सम्मान में रखा गया था।
उपरोक्त में से कौन-sa/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) I, II, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन-सा मानव निर्मित जलाशय नहीं है?
(1) गोविंद बल्लभ पंत सागर
(2) कृष्णराजसागर
(3) नागार्जुनसागर
(4) लोकतक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. भारत की शुरुआती बहुउद्देशीय सिंचाई और जल-विद्युत परियोजनाओं में से एक, नागार्जुनसागर जलाशय किस नदी पर बनाया गया है?

Downloaded from www.pdf.tube

67. (3) सांभर झील
सांभर झील भारत में अंतर्देशीय नमक उत्पादन का सबसे प्रमुख केंद्र है जहाँ सदियों से बड़े पैमाने पर नमक का निष्कर्षण किया जा रहा है। राजस्थान की यह झील अपने उथले जल और उच्च वाष्पीकरण दर के कारण नमक के क्रिस्टलीकरण के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती है। यहाँ उत्पादित नमक न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को सहारा देता है बल्कि देश की कुल नमक आपूर्ति में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

68. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सांभर झील का खारापन इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और बंद अंतर्देशीय द्रोणी होने का परिणाम है। अरावली से आने वाली नदियाँ अपने साथ घुले हुए लवण लाती हैं। यहाँ से जल के बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है, इसलिए गर्मी में तीव्र वाष्पीकरण के कारण ये लवण झील में ही केंद्रित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया हज़ारों वर्षों से जारी है, जिससे झील का जल अत्यधिक लवणीय और उपयोगी हो गया है।

69. (3) राणा प्रताप सागर - नर्मदा
राणा प्रताप सागर बांध चंबल नदी पर स्थित है, न कि नर्मदा पर। यह राजस्थान के रावतभाटा में स्थित है और चंबल घाटी परियोजना के तहत बनाए गए चार बांधों में से एक है। इसके विपरीत, गोबिंद सागर सतलुज पर, नागार्जुनसागर कृष्णा पर और गांधी सागर भी चंबल पर ही स्थित हैं। नर्मदा पर सरदार सरोवर जैसे अन्य बड़े बांध हैं। यह त्रुटि जल संसाधनों के क्षेत्रीय वितरण की पहचान को स्पष्ट करती है।

70. (2) I, II, III, IV
गोबिंद सागर जलाशय हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में स्थित एक विशाल कृत्रिम झील है जिसका निर्माण सतलुज पर भाखड़ा बांध के कारण हुआ है। यह भारत के सबसे बड़े जलाशयों में से एक है और इसका नाम सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के सम्मान में रखा गया है। यह जलाशय न केवल सिंचाई और बिजली प्रदान करता है बल्कि यह मत्स्य पालन और पर्यटन का भी केंद्र है।

71. (4) लोकतक
गोविंद बल्लभ पंत सागर, कृष्णराजसागर और नागार्जुनसागर मानव निर्मित जलाशय हैं जो सिंचाई और बिजली के लिए विकसित किए गए हैं। इसके विपरीत, मणिपुर की लोकतक झील पूरी तरह से प्राकृतिक मीठे पानी की झील है। इसका निर्माण मानवीय हस्तक्षेप के बजाय भौगोलिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ है। यह झील अपने तैरते हुए द्वीपों के लिए जानी जाती है जो इसे मानव निर्मित जलाशयों की तुलना में विशिष्ट बनाते हैं।

72. (1) कृष्णा
नागार्जुनसागर बांध कृष्णा नदी पर निर्मित भारत की विशाल बहुउद्देशीय परियोजनाओं में से एक है। आंध्र और तेलंगाना की सीमा पर स्थित यह बांध हरित क्रांति के दौरान दक्षिण भारत की कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मील का पत्थर साबित हुआ था। इसकी नहर प्रणाली हज़ारों एकड़ भूमि को सींचती है और इसके जलाशय का उपयोग बिजली उत्पादन के लिए किया जाता है। यह परियोजना आधुनिक भारत के इंजीनियरिंग कौशल का प्रतीक है।

73. (3) एक विस्तृत विसर्प मुख्य धारा से कट जाता है, जिससे जल का एक पृथक निकाय बन जाता है
गोखुर झील का निर्माण तब होता है जब एक प्रौढ़ नदी मैदानी इलाकों में बड़े विसर्प या मोड़ बनाती है। समय के साथ, किनारों पर होने वाले अपरदन और निक्षेपण के कारण विसर्प का घेरा बहुत छोटा हो जाता है और बाढ़ के समय नदी सीधा रास्ता अपना लेती है। इस प्रक्रिया में पुराना घुमावदार मार्ग मुख्य धारा से पूरी तरह अलग होकर एक यू-आकार की झील के रूप में शेष रह जाता है।

74. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
विभिन्न भौगोलिक संरचनाएँ नदियों के प्रवाह का परिणाम हैं। नर्मदा जैसी नदियाँ अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख बनाती हैं जहाँ मीठा और खारा पानी मिलता है। गंगा और ब्रह्मपुत्र विशाल सुंदरबन डेल्टा का निर्माण करती हैं। उत्तर बिहार के मैदानों में बूढ़ी गंडक जैसी नदियाँ अपने पुराने विसर्पों से गोखुर झीलें बनाती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय को पार करते समय नामचा बरवा के पास एक विशाल और गहरा गार्ज बनाती है।

75. (1) केवल I, II, IV और V
गंगा के मैदानों में गोखुर झीलें प्रौढ़ नदियों के विसर्पी व्यवहार का परिणाम हैं जो उनके पुराने मार्गों को दर्शाती हैं। बिहार की कांवर झील ऐसी ही एक बड़ी झील है जो कभी गंडक नदी का हिस्सा थी। ये झीलें आमतौर पर निचले मैदानी भागों में पाई जाती हैं जहाँ ढाल बहुत कम होता है। समय के साथ इनमें गाद जमने जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाएँ होती हैं जो इन्हें दलदली भूमि में बदल देती हैं।

76. (2) मंद ढाल वाला समतल है, जिससे व्यापक विसर्पण होता है
गंगा के मैदानों में गोखुर झीलों की अधिकता यहाँ के अत्यंत मंद और समतल भूभाग का संकेत है। जब नदी की गति कम होती है और जमीन का ढाल नगण्य होता है, तो नदी सीधे बहने के बजाय बगल की ओर अपरदन करती है जिससे बड़े विसर्प बनते हैं। यह समतल सतह नदी को स्वतंत्र रूप से मुड़ने के अवसर प्रदान करती है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में पुरानी धाराओं के कटने से झीलें बनी हैं।

77. (3) केन-बेटवा लिंक
केन-बेटवा नदी जोड़ो परियोजना भारत की पहली कार्यान्वित की जाने वाली प्रमुख अंतर-नदी जल स्थानांतरण योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य केन नदी के अधिशेष जल को सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र की ओर मोड़ना है। यह महत्वाकांक्षी परियोजना जल सुरक्षा सुनिश्चित करने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने और इस क्षेत्र में गंभीर पेयजल संकट को हल करने की दिशा में कार्य करती है, जो राष्ट्रीय नदी जोड़ो कार्यक्रम के तहत एक बड़ी पहल है।

NODIA

II. कोसी-मेची लिंक
III. गोदावरी-कृष्णा लिंक
IV. पार-तापी-नर्मदा लिंक

उपरोक्त में से कौन उनके प्राथमिक भौगोलिक स्थानों के आधार पर उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम को दर्शाता है?

(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) I, IV, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

(1) कृष्णा
(2) गोदावरी
(3) कावेरी
(4) तुंगभद्रा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. परिभाषा के अनुसार, एक गोखुर झील जल का एक यू-आकार का निकाय है जो तब बनता है जब:
(1) हिमनद पीछे हटते हैं, जिससे गहरे गड्ढे बन जाते हैं जो जल से भर जाते हैं
(2) विवर्तनिक प्लेटें खिसकती हैं, जिससे गहरी भ्रंश घाटियाँ बनती हैं जो वर्षा जल एकत्र करती हैं
(3) एक विस्तृत विसर्प मुख्य धारा से कट जाता है, जिससे जल का एक पृथक निकाय बन जाता है
(4) ज्वालामुखी क्रेटर ढह जाते हैं और अंततः वर्षा जल से भर जाते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नदी विशेषता)
A. ज्वारनदमुख
B. डेल्टा
C. गोखुर झील
D. गार्ज
सूची II: (संबंधित नदी/क्षेत्र)
i. ब्रह्मपुत्र (नामचा बरवा)
ii. नर्मदा
iii. गंगा (सुंदरबन)
iv. बूढ़ी गंडक के मैदान
कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. गंगा के मैदानों में गोखुर झीलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनका निर्माण प्रौढ़ नदियों की अत्यधिक विसर्पी प्रकृति के कारण होता है।
II. ये नदी के परित्यक्त चैनलों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
III. ये सर्वाधिक रूप से नदियों के ऊपरी, युवा मार्गों में पाई जाती हैं।
IV. बिहार में कांवर झील एक बड़ी मीठे पानी की गोखुर झील का उदाहरण है।
V. ये समय के साथ प्राकृतिक रूप से सुपोषण और गाद जमा होने की ओर प्रवृत्त होती हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मध्य और निचले गंगा के मैदानों में गोखुर झीलों की प्रचुरता है। यह दर्शाता है कि यहाँ का भूभाग:
(1) एक तीव्र, संकीर्ण ढाल वाला अत्यधिक ऊँचा भूभाग है
(2) मंद ढाल वाला समतल है, जिससे व्यापक विसर्पण होता है
(3) कठोर चट्टानी संरचनाओं वाला है जो अपरदन को रोकता है
(4) बार-बार और तीव्र विवर्तनिक उत्थान के अधीन है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. भारत में संरचनात्मक स्वीकृति और कार्यान्वयन पर केंद्रित पहली प्रमुख नदी जोड़ो परियोजना कौन-सी थी?
(1) कोसी-मेची लिंक
(2) पार-तापी-नर्मदा लिंक
(3) केन-बेटवा लिंक
(4) गोदावरी-कृष्णा लिंक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. नदी जोड़ने के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नदी जोड़ो परियोजना के पीछे प्राथमिक तर्क जल-अधिशेष द्रोणियों से जल-अभाव वाली द्रोणियों में जल स्थानांतरित करना है।
कथन II: सभी प्रायद्वीपीय नदियों को जल-अधिशेष माना जाता है, जबकि हिमालयी नदियों को जल-अभाव वाली नदियाँ माना जाता है।
उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. नदी जोड़ो परियोजनाओं से जुड़ी सबसे गंभीर पर्यावरणीय चुनौती निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(1) पारिस्थितिक व्यवधान, वन हानि और सामुदायिक विस्थापन
(2) इसके कारण सभी नदियाँ समुद्र तक पहुँचने से पहले ही सूख जाएँगी
(3) राष्ट्रव्यापी नदी नौवहन क्षमता का पूर्ण विनाश
(4) जल साझाकरण को लेकर नए अंतरराष्ट्रीय सीमा विवादों का निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में निम्नलिखित प्रस्तावित नदी जोड़ो परियोजनाओं पर विचार कीजिए:
I. केन-बेटवा लिंक

NODIA

11. (4) यमुना
यमुना गंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है जो यमुनोत्री हिमनद से निकलती है। लगभग 1376 किलोमीटर की दूरी तय कर यह प्रयागराज में गंगा के दाहिने तट से मिलती है। इसका विशाल जलग्रहण क्षेत्र उत्तर भारत के बड़े कृषि क्षेत्र की सिंचाई आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। चंबल और बेतवा इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं जो दक्षिण से आकर इसमें मिलकर इसके प्रवाह को बढ़ाती हैं।

12. (2) नंदप्रयाग - भागीरथी और मंदाकिनी
उत्तराखंड के प्रयागों में अलकनंदा मुख्य धारा है। नंदप्रयाग में अलकनंदा का संगम नंदाकिनी से होता है, न कि भागीरथी और मंदाकिनी से। भागीरथी और अलकनंदा देवप्रयाग में मिलती हैं, जबकि मंदाकिनी अलकनंदा से रुद्रप्रयाग में मिलती है। यह क्षेत्रीय भूगोल की समझ के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक संगम का अपना विशिष्ट नाम और धार्मिक महत्व है जो हिमालयी जल प्रणाली को परिभाषित करता है।

13. (3) यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है, जिससे भीषण बाढ़ आती है
कोसी को उसकी विनाशकारी बाढ़ और मार्ग बदलने की प्रवृत्ति के कारण बिहार का शोक कहा जाता है। यह नदी हिमालय से भारी मात्रा में गाद लेकर आती है, जो मैदानों में इसके मार्ग को अवरुद्ध कर देते हैं। इसके कारण नदी अपनी पुरानी धारा छोड़कर नया रास्ता बना लेती है, जिससे हज़ारों एकड़ कृषि भूमि जलमग्न हो जाती है और क्षेत्र में व्यापक तबाही आती है।

14. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
गंगा की सहायक नदियों के अपने अद्वितीय भौगोलिक स्रोत हैं। यमुना दाहिने तट की सबसे लंबी सहायक नदी है, जबकि घाघरा का उद्गम मापचाचुंगो हिमनद से होता है। गंडक नदी उत्तर प्रदेश और बिहार के बीच प्राकृतिक सीमा बनाती है और कोसी को उसकी सात धाराओं के कारण सप्तकोसी कहा जाता है। यह विविधता गंगा द्रोणी की जटिलता और उत्तर भारत में इसके महत्व को दर्शाती है।

15. (4) I, II, III, IV और V
यमुना यमुनोत्री हिमनद से निकलकर प्रयागराज में गंगा से मिल जाती है। इसके प्रवाह मार्ग में उत्तराखंड, हिमाचल, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली शामिल हैं। चंबल, बेतवा और केन इसके दाहिने तट की मुख्य सहायक नदियाँ हैं जबकि हिंडन इसके बाएं तट से मिलती है। यह पूरी प्रणाली उत्तर भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है और इस क्षेत्र के कृषि आधार को मजबूती प्रदान करती है।

16. (2) यह वाराणसी शहर के निकट गंगा में मिलती है
गंडक नदी नेपाल हिमालय से निकलकर बिहार के माध्यम से भारतीय मैदानों में प्रवेश करती है। यह काली गंडक और त्रिशूल गंगा के मिलन से बनती है। इसका गंगा के साथ संगम वाराणसी के पास नहीं, बल्कि पटना के निकट सोनपुर में होता है। यह नदी अपने मार्ग में भारी गाद जमा करने और बाढ़ लाने की क्षमता के लिए जानी जाती है, जो स्थानीय कृषि को प्रभावित करती है।

17. (2) जमुना
तिब्बत में सांगपो और अरुणाचल में दिहांग के नाम से प्रसिद्ध ब्रह्मपुत्र को बांग्लादेश में जमुना कहा जाता है। दक्षिण में प्रवाहित होते हुए यह अंततः गंगा की मुख्य शाखा के साथ मिल जाती है। इन दो प्रणालियों का मिलन विश्व के सबसे बड़े डेल्टा का निर्माण करता है। जमुना का प्रवाह अत्यंत तीव्र है और यह भारी मात्रा में अवसाद लाती है, जिससे भौगोलिक स्वरूप और उत्पादकता प्रभावित होती है।

18. (1) उच्च गाद भार ले जाने वाला गुंफित जलमार्ग
माजुली विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है, जिसका निर्माण ब्रह्मपुत्र की गुंफित जलमार्ग प्रकृति के कारण हुआ है। असम के मैदानों में प्रवेश के बाद नदी का ढाल कम हो जाता है, जिससे गाद वहन क्षमता घट जाती है। इसके परिणामस्वरूप नदी मार्ग में ही रेत के बड़े टीले जमा होने लगते हैं। समय के साथ नदी कई शाखाओं में बँट जाती है और माजुली जैसे विशाल द्वीपों का निर्माण होता है।

19. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
ब्रह्मपुत्र तिब्बत में हिमालय के समानांतर पूर्व की ओर बहती है और नामचा बरवा के पास अचानक तीखा मोड़ लेती है। यह मोड़ हिमालय के सिंटैक्सियल बेंड के कारण होता है, जहाँ पर्वत श्रेणियाँ दक्षिण की ओर मुड़ जाती हैं। इस भूवैज्ञानिक अवरोध के कारण नदी अरुणाचल प्रदेश में दिहांग गार्ज के माध्यम से भारत में प्रवेश करती है। यह दर्शाता है कि हिमालय की संरचना ने नदियों के मार्ग को प्रभावित किया है।

20. (1) लोहित, दिबांग, सुबनसिरी, कामेंग
ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर एक विशिष्ट क्रम में इससे मिलती हैं। लोहित और दिबांग नदियाँ अरुणाचल के सुदूर पूर्व से आती हैं। जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, सुबनसिरी और उसके बाद कामेंग नदी ब्रह्मपुत्र में मिलती हैं। यह क्रम न केवल नदियों के संगम को दर्शाता है बल्कि हिमालयी जलग्रहण क्षेत्रों की संरचना और उनकी जल वहन क्षमता को समझने में भी सहायक होता है।

21. (3) पश्चिम से पूर्व की ओर सामान्य पठारी ढाल
अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों के पूर्व की ओर बहने का मुख्य कारण पठार का सामान्य भूगर्भीय ढाल है। भारत का प्रायद्वीपीय भूभाग पश्चिम में ऊँचा है, जहाँ पश्चिमी घाट एक कगार के रूप में स्थित हैं, और पूर्व की ओर धीरे-धीरे नीचा होता जाता है। जल स्वाभाविक रूप से उच्च भूमि से निचले क्षेत्रों की ओर बहता है, इसलिए गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।

22. (2) कठोर चट्टानों और भ्रंश घाटियों से होकर बहना, जिससे अवसाद की मात्रा कम हो जाती है
नर्मदा और तापी जैसी नदियाँ तीव्र ढाल वाली भ्रंश घाटियों और कठोर चट्टानी भूभाग से गुजरती हैं। उनके मार्ग में मैदानी क्षेत्रों

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) प्रणालियों की उत्पत्ति और विकासवादी इतिहास
भारतीय नदी प्रणालियों का हिमालयी और प्रायद्वीपीय समूहों में विभाजन मुख्य रूप से उनकी भूवैज्ञानिक उत्पत्ति और विकासवादी इतिहास पर आधारित है। हिमालयी नदियाँ युवा हैं और हिमालय के उत्थान के साथ विकसित हुई हैं, जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ प्राचीन भूखंडों से जुड़ी हैं। यह वर्गीकरण जलग्रहण क्षेत्र, अपवाह तंत्र और संरचनात्मक आयु के भौगोलिक अंतरों को स्पष्ट करता है जो भारत की जल निकासी संरचना का आधार हैं।

2. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
हिमालयी नदियाँ बारहमासी हैं क्योंकि उन्हें जल के दो मुख्य स्रोत प्राप्त होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में ऊँचाई पर स्थित हिमनदों के पिघलने से और वर्षा ऋतु में मानसूनी वर्षा से उन्हें निरंतर जल मिलता है। केवल हिमनदों पर निर्भरता का विचार त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वर्षा इनके जल स्तर को बनाए रखने और बाढ़ लाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो इन्हें अद्वितीय बनाती है।

3. (3) ये अपनी मध्य अवस्था में अत्यधिक विसर्पी मार्ग प्रदर्शित करती हैं
प्रायद्वीपीय नदियाँ अपनी परिपक्व अवस्था में हैं, जिनकी विशेषता उथली और चौड़ी घाटियाँ हैं। हिमालयी नदियों के विपरीत, ये नदियाँ कठोर चट्टानों पर बहने के कारण विसर्पण नहीं करतीं और इनका मार्ग निश्चित होता है। ये मुख्य रूप से वर्षा पर आधारित हैं और ग्रीष्म ऋतु में इनका जल स्तर काफी कम हो जाता है, जो इन्हें हिमालयी प्रणालियों से भिन्न बनाता है और इनकी प्राचीनता को दर्शाता है।

4. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
हिमालयी नदियाँ बारहमासी और पूर्ववर्ती होती हैं जो गहरे गार्ज बनाती हैं। प्रायद्वीपीय भारत में पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ डेल्टा बनाती हैं, जबकि पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ भ्रंश घाटियों के कारण ज्वारनदमुख बनाती हैं। अंतर्देशीय जल निकासी प्रणालियाँ किसी सागर तक पहुँचने के बजाय मरुस्थल या झीलों में ही विलीन हो जाती हैं, जैसा राजस्थान के क्षेत्रों में देखा जाता है जो जलविज्ञानी भिन्नता प्रदर्शित करता है।

5. (4) I, II और III
सिंधु की सहायक नदियाँ विशिष्ट भौगोलिक विशेषताएँ रखती हैं। चिनाब सिंधु की सबसे बड़ी सहायक नदी है जो हिमाचल में दो धाराओं के मिलन से बनती है। सतलुज का उद्गम तिब्बत में राकस ताल से होता है और यह भारत में लंबी दूरी तय करती है। झेलम कश्मीर घाटी की प्रमुख नदी है जो वुलर झील से होकर बहती है और अंततः पाकिस्तान में चिनाब से मिल जाती है।

6. (2) रावी, व्यास और सतलुज
सिंधु जल संधि 1960 के अनुसार भारत और पाकिस्तान के बीच जल का बँटवारा स्पष्ट किया गया है। इसके तहत तीन पूर्वी नदियों रावी, व्यास और सतलुज के जल के पूर्ण उपयोग का अनन्य अधिकार भारत को प्राप्त है। भारत इन नदियों के जल का उपयोग सिंचाई और विद्युत उत्पादन के लिए स्वतंत्र रूप से कर सकता है, जो इस क्षेत्र की जल सुरक्षा का प्रमुख आधार है।

7. (4) सतलुज
सतलुज अपने उद्गम स्थल के कारण अन्य सहायक नदियों से भिन्न है। झेलम, चिनाब और रावी का उद्गम भारतीय हिमालय में होता है, जबकि सतलुज तिब्बत में मानसरोवर के निकट राकस ताल से निकलती है। यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो हिमालय को काटकर गहरे गार्ज बनाती हुई शिपकी ला दर्रे से भारत में प्रवेश करती है और सिंधु प्रणाली की महत्वपूर्ण शाखा बनती है, जो ऐतिहासिक भौगोलिक घटना है।

8. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ पूर्ववर्ती अपवाह प्रणाली का उदाहरण हैं क्योंकि ये हिमालय के उत्थान से पहले से अस्तित्व में थीं। जैसे-जैसे हिमालय की ऊँचाई बढ़ी, इन नदियों ने ऊर्ध्वाधर अपरदन द्वारा गहरे गार्जों का निर्माण किया और अपना पुराना मार्ग बनाए रखा। यह स्पष्ट करता है कि इन नदियों की धारा पर्वत श्रेणियों के विकास से अधिक प्राचीन है और उनके उत्थान से बाधित नहीं हुई।

9. (3) देवप्रयाग
गंगा नदी का स्वरूप उत्तराखंड के देवप्रयाग में अलकनंदा और भागीरथी के संगम के बाद बनता है। भागीरथी उत्तरकाशी के गंगोत्री हिमनद से निकलती है, जबकि अलकनंदा सतोपंथ हिमनद से आती है। देवप्रयाग में इन दो धाराओं का मिलन हिमालयी क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण घटना है, जहाँ से यह संयुक्त धारा विशाल गंगा के रूप में जानी जाती है और भारतीय मैदानों की ओर प्रवाहित होती है।

10. (3) केवल IV
गंगा हरिद्वार के निकट मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है और उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल से बहती है। इसकी वितरिका हुगली पश्चिम बंगाल के औद्योगिक क्षेत्रों को जल प्रदान करती है। यह तथ्य गलत है कि गंगा ब्रह्मपुत्र से असम में मिलती है, क्योंकि इन नदियों का वास्तविक संगम बांग्लादेश के भीतर गोलुन्डो में होता है, जहाँ से वे पद्मा के नाम से आगे बहती हैं।

NODIA

क्षेत्र अत्यधिक वर्षा वाला है, जो मानसून के दौरान नदी को भरपूर जल प्रदान करता है।

34. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
कृष्णा नदी पर स्थित बांधों की स्थिति उनके भौगोलिक महत्व को दर्शाती है। नागार्जुनसागर बांध आंध्र और तेलंगाना की सीमा पर स्थित है, जबकि अल्माटी बांध कर्नाटक में सिंचाई का प्रमुख स्रोत है। श्रीशैलम बांध नल्लामाला पहाड़ियों की गहरी घाटियों में स्थित है जो विद्युत उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। तुंगभद्रा बांध कृष्णा की एक प्रमुख सहायक नदी पर बनाया गया है। ये सभी संरचनाएं कृष्णा द्रोणी के जल का कुशल प्रबंधन करती हैं।

35. (4) I, II, III, IV और V
कृष्णा नदी प्रायद्वीपीय भारत की दूसरी सबसे बड़ी पूर्वगामी नदी है, जिसकी सहायक नदियाँ जैसे तुंगभद्रा, भीमा, मूसी और कोयना इसे विशाल अपवाह तंत्र प्रदान करती हैं। कोयना बांध इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदी पर स्थित है जो बिजली का प्रमुख स्रोत है। दिलचस्प है कि कृष्णा और गोदावरी अपने मुहानों पर एक संयुक्त डेल्टा बनाती हैं जो अत्यधिक उपजाऊ है और भारत के 'चावल के कटोरे' के रूप में प्रसिद्ध है।

36. (4) वर्षा में उच्च मौसमी भिन्नता और व्यापक कृषि जल मांग
कृष्णा जल विवाद का मुख्य कारण वर्षा की अनिश्चितता और राज्यों के बीच बढ़ती मांग है। चूँकि यह वर्षा आधारित नदी है, इसलिए मानसून की विफलता के दौरान जल की उपलब्धता घट जाती है। इसके साथ ही महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में गन्ने जैसी जल-गहन फसलों की खेती से मांग बढ़ी है। प्रत्येक राज्य अपने हितों की रक्षा के लिए अधिक जल चाहता है, जिससे अंतर-राज्यीय तनाव बढ़ता है।

37. (3) इसके ऊपरी और निचले जलग्रहण क्षेत्रों में अलग-अलग मानसून से वर्षा होती है
कावेरी की सबसे बड़ी विशेषता इसका बारहमासी स्वरूप है जो अन्य प्रायद्वीपीय नदियों में दुर्लभ है। इसके ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र (कर्नाटक) को दक्षिण-पश्चिम मानसून से ग्रीष्म ऋतु में वर्षा प्राप्त होती है। वहीं इसके निचले जलग्रहण क्षेत्र (तमिलनाडु) को उत्तर-पूर्वी मानसून से शीत ऋतु में भारी वर्षा मिलती है। वर्षा के इन दो अलग स्रोतों के कारण नदी में वर्ष भर जल का प्रवाह बना रहता है और मौसमी उतार-वढ़ाव काफी कम होता है।

38. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
कावेरी नदी कर्नाटक के कोडागु जिले में पश्चिमी घाट की ब्रह्मगिरी श्रेणियों से निकलती है। इसे दक्षिण की अत्यंत पवित्र नदी माना जाता है। अपने मार्ग में यह शिवसमुद्रम जैसे भव्य जलप्रपातों का निर्माण करती है, जहाँ भारत के शुरुआती जलविद्युत केंद्रों में से एक स्थापित किया गया था। यह नदी कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कृषि और संस्कृति का सेतु है, जो प्राचीन काल से आर्थिक समृद्धि का आधार रही है।

39. (4) तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पुडुचेरी
कावेरी जल विवाद भारत के सबसे जटिल अंतर-राज्यीय विवादों में से एक है, जिसमें कर्नाटक और तमिलनाडु मुख्य पक्षकार हैं। केरल का कुछ हिस्सा नदी के जलग्रहण क्षेत्र में आता है, जबकि पुडुचेरी इसके डेल्टा के अंत में स्थित है। यह विवाद मुख्य रूप से सिंचाई के लिए जल के बँटवारे को लेकर है। कम वर्षा वाले वर्षों में संकट साझा करने के मानदंडों पर असहमति के कारण यह अक्सर तनाव का कारण बनता है।

40. (1) I, II, III, IV
कावेरी पर बने बांधों का क्रम इसके जल के क्रमिक उपयोग को दर्शाता है। हरंगी बांध कर्नाटक के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में है, जिसके बाद मैसूर के निकट विशाल कृष्ण राज सागर बांध आता है। तमिलनाडु में प्रवेश पर मेट्टूर बांध प्रमुख भंडारण केंद्र के रूप में कार्य करता है। सबसे अंत में प्रसिद्ध ग्रैंड अनिकट या कल्लनई आता है जो चोल काल से ही डेल्टा क्षेत्र में सिंचाई का प्रबंधन कर रहा है।

41. (3) विंध्य और सतपुड़ा
नर्मदा नदी भारत की विशिष्ट भौगोलिक संरचना 'भ्रंश घाटी' से होकर बहती है। यह घाटी उत्तर में विंध्य पर्वतमाला और दक्षिण में सतपुड़ा श्रेणियों के बीच स्थित है, जो नदी को एक निश्चित रैखिक दिशा में प्रवाहित होने के लिए बाध्य करती है। यह संरचनात्मक विन्यास प्रायद्वीपीय भारत की अन्य पूर्वगामी नदियों से नर्मदा के विपरीत प्रवाह दिशा का मुख्य कारण है, क्योंकि यह ढाल के बजाय भूगर्भीय भ्रंश का अनुसरण करती है।

42. (1) यह अपने मुहाने पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती है
नर्मदा अमरकंटक पठार से निकलकर पश्चिम की ओर बहती है और जबलपुर के निकट धुआंधार जलप्रपात बनाती है। अपनी तीव्र गति और भ्रंश घाटी से बहने के कारण यह नदी अपने मुहाने पर अवसाद जमा करने के बजाय सीधे समुद्र में गिरती है और एक ज्वारनदमुख बनाती है। यह डेल्टा नहीं बनाती क्योंकि इसके पास जमाव के लिए आवश्यक मैदानी ढाल और पर्याप्त गाद की कमी होती है, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

43. (4) ज्वारनदमुख का स्थान - खंभात की खाड़ी
नर्मदा की भौगोलिक यात्रा गुजरात के भरूच के पास खंभात की खाड़ी में ज्वारनदमुख के निर्माण के साथ समाप्त होती है। इसका उद्गम अमरकंटक से होता है, न कि त्र्यंबकेश्वर से। यह नदी अपने मार्ग में धुआंधार जैसे सुंदर प्रपात बनाती है और इस पर सरदार सरोवर जैसी विशाल परियोजनाएं स्थित हैं। अरब सागर में गिरने से पहले यह एक चौड़े मुहाने के माध्यम से समुद्री जल के साथ मिलती है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

44. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
पश्चिम की ओर बहने वाली प्रत्येक नदी की अपनी विशिष्ट पृष्ठभूमि है। नर्मदा विंध्य और सतपुड़ा के बीच भ्रंश घाटी में बहती है, जबकि तापी सतपुड़ा के दक्षिण में प्रवाहित होती है। लूणी राजस्थान की महत्वपूर्ण अल्पकालिक नदी है जो कच्छ के रण के दलदल में विलीन हो जाती है। साबरमती का उद्गम

Click Here to Buy book on Amazon

का अभाव होता है जिससे वे अपने साथ बहुत कम गाद और अवसाद ले जा पाती हैं। साथ ही, अरब सागर की ओर तटीय मैदान अत्यंत संकीर्ण हैं जो डेल्टा निर्माण के लिए आवश्यक परिस्थितियों को सीमित करते हैं। इसके विपरीत पूर्व की नदियाँ विस्तृत मैदानों से अधिक अवसाद लाती हैं।

23. (4) इनकी विशेषता निश्चित मार्ग और विसर्पों का अभाव है
प्रायद्वीपीय नदियाँ अपनी वृद्धावस्था में होने के कारण कठोर आधार शैल पर बहती हैं, जिससे उनका मार्ग निश्चित और स्थिर रहता है। हिमालयी नदियों के विपरीत, जो कोमल मैदानों में मार्ग बदलती हैं और बड़े विसर्प बनाती हैं, प्रायद्वीपीय नदियों में विसर्पण की प्रवृत्ति बहुत कम पाई जाती है। ये नदियाँ मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर हैं और इनकी घाटियाँ उथली हैं, जो प्राचीन भूगर्भीय संरचना की स्थिरता को दर्शाती हैं।

24. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
प्रायद्वीपीय नदियों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक पहचान है। गोदावरी सबसे बड़ी प्रणाली है जिसे दक्षिण गंगा कहा जाता है। कृष्णा की द्रोणी महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में विस्तृत है जो कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। महानदी का प्रवाह छत्तीसगढ़ और ओडिशा के क्षेत्रों को कवर करता है। नर्मदा नदी विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों के बीच स्थित संकीर्ण भ्रंश घाटी से होकर पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है।

25. (4) I, II और III
महानदी छत्तीसगढ़ और ओडिशा की जीवनरेखा है और इसकी कई सहायक नदियाँ इसके प्रवाह को समृद्ध करती हैं। शिवनाथ और हसदेव इसके बाएं तट की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं जो ऊँचे पठारी क्षेत्रों से जल लाती हैं। जोंक नदी इसके दाएं तट से महानदी में मिलती है। ये सभी नदियाँ मिलकर एक विस्तृत अपवाह तंत्र बनाती हैं जो मध्य भारत के कृषि और औद्योगिक विकास के लिए आधारभूत ढांचा प्रदान करती हैं।

26. (1) छत्तीसगढ़ में सिहावा
महानदी का उद्गम छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में सिहावा पर्वत श्रृंखला के समीप से होता है। यहाँ से निकलकर यह नदी छत्तीसगढ़ के मैदानी इलाकों से गुजरती हुई ओडिशा में प्रवेश करती है और अंततः बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसकी कुल लंबाई लगभग 851 किलोमीटर है और इसका अपवाह क्षेत्र मध्य भारत के बड़े भूभाग को कवर करता है। यह नदी सिंचाई और विद्युत उत्पादन का प्रमुख स्रोत है।

27. (4) उकाई बांध
हीराकुंड, दुधवा और गंगरेल जैसे प्रमुख बांध महानदी नदी प्रणाली का हिस्सा हैं जो छत्तीसगढ़ और ओडिशा में सिंचाई का कार्य करते हैं। हीराकुंड बांध विशेष रूप से अपनी लंबाई और महानदी की बाढ़ को रोकने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। इसके विपरीत उकाई बांध गुजरात में तापी नदी पर स्थित एक बहुउद्देशीय परियोजना है। यह महानदी के अपवाह तंत्र का हिस्सा नहीं है और इसका स्थान पश्चिमी भारत में है।

NODIA

28. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
हीराकुंड बांध का निर्माण महानदी के निचले डेल्टा क्षेत्रों में आने वाली विनाशकारी बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए किया गया था। यह बांध ओडिशा की अर्थव्यवस्था और कृषि सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि यह कहना गलत है कि महानदी में गाद कम होती है। वास्तव में महानदी बड़ी मात्रा में अवसाद और गाद लेकर आती है जो मानसून के दौरान इसकी जल-वहन क्षमता को प्रभावित करती है और बाढ़ का कारण बनती है।

29. (3) दक्षिण भारत में इसका विशाल आकार, विस्तृत द्रोणी क्षेत्र और लंबाई
गोदावरी को उसके विशाल भौगोलिक विस्तार और धार्मिक महत्व के कारण 'दक्षिण गंगा' या 'वृद्ध गंगा' कहा जाता है। लगभग 1465 किलोमीटर की लंबाई के साथ यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लंबी नदी है और इसका जलग्रहण क्षेत्र भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग दस प्रतिशत है। जिस प्रकार उत्तर भारत में गंगा का सांस्कृतिक प्रभाव है, उसी प्रकार दक्षिण में गोदावरी का महत्व सर्वोपरि है जो इसे यह उपाधि दिलाता है।

30. (1) केवल IV
गोदावरी का प्रवाह महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश से होता है और यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है। प्राणहिता इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी है, जबकि इंद्रावती छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र की महत्वपूर्ण जलधारा है। मंजिरा नदी दक्षिण से आकर इसके दाहिने तट से मिलती है। गोदावरी नदी स्वयं कर्नाटक राज्य के भीतर प्रवाहित नहीं होती है, हालांकि इसकी द्रोणी के कुछ सूक्ष्म हिस्से कर्नाटक के उत्तरी क्षेत्रों में स्थित हैं।

31. (1) नासिक के निकट त्र्यंबकेश्वर
गोदावरी नदी महाराष्ट्र के नासिक जिले में पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियों में स्थित त्र्यंबकेश्वर से निकलती है। समुद्र तल से लगभग 1067 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह स्रोत एक पवित्र तीर्थ स्थल है। यहाँ से निकलने के बाद नदी पूर्व की ओर मुड़ जाती है और दक्कन के पठार से होते हुए लंबी यात्रा तय करती है। इसके उद्गम की भौगोलिक स्थिति इसे पर्याप्त वर्षा जल प्राप्त करने में मदद करती है।

32. (2) तमिलनाडु
गोदावरी नदी द्रोणी भारत की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है जो महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में फैली हुई है। इन राज्यों का बड़ा हिस्सा इस नदी के जलग्रहण क्षेत्र के अंतर्गत आता है जो कृषि के लिए इसके जल का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत तमिलनाडु दक्षिण में स्थित है और मुख्य रूप से कावेरी तथा अन्य छोटी नदियों की द्रोणियों से प्रभावित है।

33. (2) महाबलेश्वर
कृष्णा नदी का उद्गम महाराष्ट्र के सतारा जिले में पश्चिमी घाट की श्रेणियों में स्थित महाबलेश्वर के पास से होता है। यह लगभग 1337 मीटर की ऊँचाई पर एक झरने के रूप में शुरू होती है और पूर्व में बंगाल की खाड़ी की ओर बहती है। गोदावरी के बाद यह पूर्वगामी दूसरी सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है। इसका स्रोत

56. (1) विवर्तनिक गतिविधि
वुलर झील का निर्माण पृथ्वी की आंतरिक विवर्तनिक गतिविधियों के परिणाम के रूप में हुआ था, जिससे कश्मीर घाटी के एक हिस्से में धंसाव हुआ। यह विवर्तनिक उत्पत्ति इसे अधिकांश अन्य झीलों से अलग बनाती है जो हिमनद या नदी विसर्पण से बनती हैं। झील का आकार झेलम द्वारा लाए गए जल और अवसाद के कारण बदलता रहा है। यह वर्तमान में भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक मीठे पानी की झील है।

57. (3) चिल्का झील
चिल्का झील ओडिशा के पूर्वी तट पर स्थित एशिया की सबसे बड़ी तटीय लैगून है। यह बंगाल की खाड़ी से एक संकीर्ण मुहाने द्वारा जुड़ी है जो इसे अद्वितीय खारी पारिस्थितिकी प्रदान करती है। इसकी जैव विविधता के कारण इसे अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह झील सर्दियों में हज़ारों प्रवासी पक्षियों का स्वागत करती है और संकटग्रस्त इरावदी डॉल्फिन के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण आवास है।

58. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
चिल्का झील को 1981 में रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की पहली भारतीय आर्द्रभूमि नामित किया गया था। यह झील न केवल प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग है, बल्कि इरावदी डॉल्फिन की भारत में पाई जाने वाली एकमात्र ज्ञात आबादी का मुख्य निवास स्थान भी है। इसकी अद्वितीय खारी जल पारिस्थितिकी और समृद्ध जैव विविधता इसे समुद्री और तटीय संरक्षण के प्रयासों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र बनाती है।

59. (4) अंतर्देशीय नदी के मीठे पानी और समुद्री जल के प्रवाह का मिश्रण
चिल्का की लवणता में मौसमी परिवर्तन इसकी भौगोलिक स्थिति और जल स्रोतों के संतुलन का परिणाम है। मानसून के दौरान नदियाँ इसमें भारी मात्रा में मीठा पानी लाती हैं, जिससे इसकी लवणता काफी कम हो जाती है। इसके विपरीत, शुष्क ग्रीष्म ऋतु में ताजे पानी की आवक कम हो जाती है और बंगाल की खाड़ी से आने वाले समुद्री जल का प्रभाव बढ़ जाता है। जल का यह चक्रीय मेल इसकी पारिस्थितिकी को बनाए रखता है।

60. (1) वुलर, डल, सांभर, चिल्का
भारत की झीलों का उत्तर से दक्षिण की ओर क्रम देश की विविध जलवायु को दर्शाता है। सबसे उत्तर में कश्मीर की वुलर और डल झीलें आती हैं जो हिमालयी क्षेत्र का हिस्सा हैं। जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, राजस्थान के मरुस्थलीय भाग में स्थित सांभर झील आती है जो एक अंतर्देशीय खारी झील है। इसके पश्चात पूर्वी तट पर ओडिशा में स्थित चिल्का झील आती है जो सबसे दक्षिण में स्थित है।

61. (3) झेलम
वुलर झील कश्मीर घाटी में झेलम नदी के मार्ग में एक विशाल प्राकृतिक बाढ़ जलाशय के रूप में कार्य करती है। जब मानसून या बर्फ पिघलने से झेलम में अतिरिक्त जल आता है, तो यह झील उसे अवशोषित कर लेती है, जिससे निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा कम हो जाता है। यह नदी और झील के बीच एक गतिशील संबंध है जहाँ झेलम झील में प्रवेश कर दूसरी ओर से अपनी यात्रा जारी रखती है।

62. (4) वुलर झील
तुलबुल नौवहन परियोजना वुलर झील के मुहाने पर झेलम नदी पर स्थित एक बुनियादी ढांचा योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य झेलम के जल स्तर को नियंत्रित करना है ताकि शीत ऋतु में भी नदी में नौवहन के योग्य गहराई बनी रहे। भारत और पाकिस्तान के बीच इस परियोजना को लेकर विवाद रहा है क्योंकि पाकिस्तान इसे संधि का उल्लंघन मानता है। यह जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में झील के दक्षिणी किनारे पर है।

63. (1) यह विशेष रूप से सिंधु की गोखुर झील के रूप में बनी है
वुलर झील के बारे में यह धारणा गलत है कि यह सिंधु की एक गोखुर झील है। वास्तव में इसकी उत्पत्ति विवर्तनिक हलचलों के कारण हुई है और यह झेलम की मुख्य धारा से गहराई से जुड़ी है। यह भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है जो कश्मीर के बांदीपोरा जिले में स्थित है। गोखुर झीलों का निर्माण आमतौर पर विसर्पी नदियों के कटने से होता है, जबकि वुलर एक विशाल प्राकृतिक गर्त है।

64. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत की जल संरचनाएं अपनी संबंधित नदियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हैं। वुलर झील कश्मीर में झेलम के प्रवाह का हिस्सा है। गोबिंद सागर एक विशाल मानव निर्मित जलाशय है जो सतलुज पर स्थित है। नागार्जुनसागर बांध दक्षिण भारत की कृष्णा नदी पर बनाया गया है जो व्यापक सिंचाई प्रदान करता है। इसी प्रकार हीराकुंड जलाशय ओडिशा में महानदी पर स्थित है जो दुनिया के सबसे लंबे बांधों में से एक है।

65. (4) I, II और III
सांभर झील राजस्थान की एक अंतर्देशीय जल निकासी द्रोणी का केंद्र है जहाँ कई छोटी नदियाँ अपना जल विसर्जित करती हैं। मेंढा और रुपनगढ़ नदियाँ इस झील के प्रमुख जलग्रहण क्षेत्रों से आती हैं और इसमें खारापन बनाए रखने में सहायक होती हैं। खारी नदी भी इसके जल भराव और नमक उत्पादन की प्रक्रिया में योगदान देती है। ये सभी नदियाँ मौसमी हैं और मानसून के दौरान झील के जल स्तर को बनाए रखती हैं।

66. (1) राजस्थान, रामसर आर्द्रभूमि स्थल
सांभर झील राजस्थान में जयपुर के निकट स्थित है और यह भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील है। अपनी अद्वितीय लवणीय पारिस्थितिकी और प्रवासी पक्षियों (विशेषकर फ्लेमिंगो) के लिए महत्व के कारण इसे रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय आर्द्रभूमि घोषित किया गया है। यह स्थान न केवल भारत के नमक उत्पादन का बड़ा हिस्सा प्रदान करता है बल्कि यह एक संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र भी है जिसे संरक्षण की आवश्यकता है।

NODIA

अरावली से होता है और यह गुजरात के प्रमुख शहरों से गुजरते हुए खंभात की खाड़ी में जाकर गिरती है।

45. (1) केवल I और II
तापी नदी मध्य प्रदेश के सतपुड़ा श्रेणियों से निकलती है और नर्मदा के समानांतर भ्रंश घाटी में बहती है। इसकी द्रोणी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के विशाल क्षेत्रों को कवर करती है, जो इसे पश्चिमी भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण पश्चिमगामी नदी बनाती है। हालांकि यह नर्मदा की दिशा में बहती है, लेकिन लंबाई और जल क्षमता में यह नर्मदा से छोटी है। इसकी कुल लंबाई लगभग 724 किलोमीटर है।

46. (4) बैतूल जिले में मुल्ताई
तापी नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में स्थित मुल्ताई नामक स्थान से होता है। यह स्थान सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी भाग में स्थित है जहाँ से नदी पश्चिम की ओर अपनी यात्रा शुरु करती है। नर्मदा की तरह यह भी एक भ्रंश घाटी का अनुसरण करती है और महाराष्ट्र तथा गुजरात से गुजरती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है। मुल्ताई क्षेत्र का महत्व इस नदी के उद्गम स्रोत के कारण है।

47. (1) सुवर्णरेखा
तापी, माही और पेरियार तीनों नदियाँ प्रायद्वीपीय भारत की महत्वपूर्ण पश्चिमगामी जलधाराएँ हैं जो अरब सागर में गिरती हैं। इसके विपरीत सुवर्णरेखा नदी झारखंड, बंगाल और ओडिशा के पठारी क्षेत्रों से होकर पूर्व की ओर बहती है और बंगाल की खाड़ी में अपना जल विसर्जित करती है। यह नदी मुख्य रुप से राँची के पठार से निकलती है। इसकी प्रवाह दिशा इसे पश्चिमी तटीय नदियों की श्रेणी से पूरी तरह अलग बनाती है।

48. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नर्मदा और तापी नदियाँ अन्य प्रायद्वीपीय नदियों के विपरीत डेल्टा नहीं बनातीं क्योंकि वे कठोर चट्टानी भ्रंश घाटियों से अत्यंत तीव्र ढाल पर बहती हैं। उनके प्रवाह की गति इतनी अधिक होती है कि वे अवसाद को मुहाने पर जमा करने के बजाय सीधे समुद्र में ले जाती हैं। साथ ही, पश्चिमी तट पर चौड़े और मंद ढाल वाले मैदानों का अभाव है जो डेल्टा के विकास के लिए आवश्यक भौगोलिक परिस्थिति है।

49. (2) बालोतरा
लूणी नदी का जल प्रवाह एक रोचक भौगोलिक घटना है। अरावली से निकलने के बाद बालोतरा तक इसका जल मीठा रहता है क्योंकि यहाँ तक इसे ताज़ा जल मिलता है। हालांकि, बालोतरा के बाद जब यह नदी मरुस्थलीय क्षेत्रों और लवणीय मिट्टी वाले भूभाग से गुजरती है, तो मिट्टी के लवण जल में मिल जाते हैं। वाष्पीकरण की उच्च दर और नमक की अधिकता के कारण बालोतरा से आगे इसका जल खारा हो जाता है।

50. (1) केवल I, II और IV
लूणी प्रणाली राजस्थान के मरुस्थलीय पारिस्थितिकी के लिए महत्वपूर्ण है। जोजरी इसकी एकमात्र ऐसी सहायक नदी है जो दाहिने तट से मिलती है और अरावली के बजाय नागौर के मैदानों से निकलती है। सुकड़ी, बांडी और जवाई इसकी प्रमुख बाएं तट की सहायक नदियाँ हैं जो अरावली से जल प्राप्त करती हैं। यह पूरी प्रणाली एक अंतःप्रवाहित द्रोणी बनाती है क्योंकि यह किसी समुद्र तक पहुँचने के बजाय कच्छ के रण में विलीन होती है।

51. (3) अरावली की पुष्कर घाटी
लूणी का उद्गम राजस्थान के अजमेर जिले में अरावली की पुष्कर घाटी से होता है, जहाँ इसे प्रारंभ में सागरमती कहा जाता है। गोविंदगढ़ के पास सरस्वती नामक जलधारा के मिलने के बाद इसे लूणी कहा जाता है। यह राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण नदी है जो थार मरुस्थल के दक्षिण-पूर्वी हिस्से से बहती है। इसकी उत्पत्ति की ऊँचाई और मार्ग की मरुस्थलीय प्रकृति इसे भारत की सबसे विशिष्ट नदियों में से एक बनाती है।

52. (4) यह अंतःप्रवाहित या अंतर्देशीय जल निकासी प्रणाली का एक उदाहरण है
लूणी भारत की उन महत्वपूर्ण नदियों में से एक है जो किसी महासागर तक पहुँचने में विफल रहती हैं। यह राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों से गुजरते हुए अंततः गुजरात में कच्छ के रण के दलदली क्षेत्र में विलीन हो जाती है। इस प्रकार की जल निकासी को अंतःप्रवाहित प्रणाली कहा जाता है जहाँ नदी का मार्ग भूमि के भीतर ही समाप्त हो जाता है। यह वर्ष भर नहीं बहती और केवल मानसूनी वर्षा पर निर्भर है।

53. (3) वुलर झील - जम्मू और कश्मीर
वुलर झील जम्मू और कश्मीर के बांदीपोरा जिले में स्थित है और इसे भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील माना जाता है। लोकतक मणिपुर में, डल जम्मू-कश्मीर में और चिल्का ओडिशा के तट पर स्थित है। वुलर झील का निर्माण विवर्तनिक गतिविधियों के कारण हुआ था और यह झेलम नदी के मार्ग में स्थित एक प्राकृतिक जलाशय के रुप में कार्य करती है, जो इसकी पारिस्थितिक विशिष्टता को दर्शाती है।

54. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
भारत की झीलें अपनी विशिष्ट भौगोलिक पहचान के लिए जानी जाती हैं। डल झील श्रीनगर की सुंदरता और हाउस-बोट पर्यटन का केंद्र है। लोकतक झील अपने अद्वितीय तैरते द्वीपों (फुमडी) के लिए प्रसिद्ध है। चिल्का झील एशिया की सबसे बड़ी तटीय लैगून है जो खारे और मीठे पानी का मिश्रण है। सांभर झील राजस्थान में स्थित भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील है जो नमक उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

55. (4) I, II, III, IV और V
मणिपुर की लोकतक झील पूर्वोत्तर भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है, जो तैरते द्वीपों (फुमडी) के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ केइबुल लामजाओ नामक विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान स्थित है। यह क्षेत्र संकटग्रस्त संगाई हिरणों का प्रमुख आवास है और रामसर कन्वेंशन के तहत विशेष संरक्षण प्राप्त आर्द्रभूमि है। यह झील स्थानीय लोगों की आजीविका और क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता का मुख्य आधार है।

Downloaded from www.pdf.tube

78. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
नदी जोड़ो परियोजना का मूल सिद्धांत क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना है ताकि बाढ़ और सूखे का समाधान हो सके। यह योजना उन द्रोणियों से जल स्थानांतरण पर आधारित है जहाँ आवश्यकता से अधिक पानी है। हालांकि, यह कहना गलत है कि सभी हिमालयी नदियाँ जल-अभाव वाली हैं। वास्तव में, हिमालयी नदियाँ बारहमासी और जल-अधिशेष मानी जाती हैं, जबकि कई प्रायद्वीपीय नदियाँ वर्षा की कमी के कारण मौसमी जल संकट झेलती हैं।

79. (1) पारिस्थितिक व्यवधान, वन हानि और सामुदायिक विस्थापन
नदी जोड़ो परियोजनाओं के साथ सबसे बड़ी चुनौती संभावित पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव हैं। ऐसी परियोजनाओं के लिए विशाल बांधों के निर्माण से हज़ारों हेक्टेयर वन भूमि जलमग्न हो जाती है और वन्यजीवों के आवास नष्ट होते हैं। इसके साथ ही, प्रभावित क्षेत्रों से स्थानीय समुदायों का विस्थापन और उनकी आजीविका का नुकसान एक गंभीर मुद्दा है। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह में बदलाव से उनकी जलीय जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

80. (1) II, I, IV, III
प्रस्तावित नदी जोड़ो परियोजनाओं का उत्तर से दक्षिण की ओर क्रम जल संसाधनों के वितरण को दर्शाता है। कोसी-मेची लिंक सबसे उत्तर में बिहार में है, जिसके बाद केन-बेटवा परियोजना का स्थान आता है। पश्चिमी भारत में पार-तापी-नर्मदा लिंक गुजरात और महाराष्ट्र के क्षेत्रों में है, जबकि गोदावरी-कृष्णा लिंक प्रायद्वीपीय भारत में सबसे दक्षिण में स्थित महत्वपूर्ण परियोजना है। यह क्रम देश के विभिन्न जलविज्ञानी क्षेत्रों को कवर करता है।

NODIA

(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. भारतीय जलवायु के संदर्भ में 'लौटते हुए मानसून' का क्या अर्थ है?
(1) उत्तरी मैदानों से दक्षिण-पश्चिमी मानसून का पीछे हटना
(2) अत्यधिक गर्मी के दौरान समुद्री हवाओं का आंतरिक भागों की ओर शक्तिशाली धकेल
(3) क्षेत्रीय अल नीनो प्रभाव के कारण वर्षा का अचानक रुक जाना
(4) महाद्वीपीय पश्चिमी विक्षोभों द्वारा लाई गई शीतकालीन वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य मानसून-पूर्व 'आम्र वर्षा' का प्रमुख लाभार्थी नहीं है?
(1) केरल
(2) कर्नाटक
(3) पंजाब
(4) गोवा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में मानसून वर्षा अत्यधिक असमान और अप्रत्याशित है।
कारण (R): मानसून गर्त की गति और उष्णकटिबंधीय विक्षोभों की उत्पत्ति वर्षा के स्थानिक वितरण को नियंत्रित करती है।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A तथा R दोनों सही हैं, किन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. भारत की जलवायु के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: भारत अपने पूरे भौगोलिक विस्तार में समान रूप से उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु रखता है।
कथन II: हिमालय की उपस्थिति उत्तरी एशिया की अत्यधिक ठंडी हवाओं को भारतीय उपमहाद्वीप को प्रभावित करने से रोकती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. 'अक्टूबर की गर्मी' की परिघटना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) यह अक्टूबर के महीने में उत्तर-पश्चिम भारत में प्रवेश करने वाली तीव्र शीत लहरों को संदर्भित करता है
(2) उच्च तापमान और आर्द्रता वाला संक्रमण काल
(3) यह अक्टूबर के विशिष्ट महीने के दौरान तमिलनाडु में चरम ग्रीष्म स्थिति को दर्शाता है
(4) इसकी विशेषता हिमालयी राज्यों में भारी मूसलाधार बारिश और बादल फटना है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. मौसम विज्ञान विभाजनों के अनुसार भारत में ऋतुओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन करें:
(1) ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु, दक्षिण-पश्चिमी मानसून, लौटता मानसून
(2) शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, दक्षिण-पश्चिमी मानसून, लौटता मानसून
(3) दक्षिण-पश्चिमी मानसून, ग्रीष्म ऋतु, लौटता मानसून, शीत ऋतु
(4) ग्रीष्म ऋतु, दक्षिण-पश्चिमी मानसून, शीत ऋतु, लौटता मानसून
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. भारत के पूर्वी तट पर उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की आवृत्ति और तीव्रता निम्नलिखित में से किस अवधि के दौरान सबसे अधिक होती है?
(1) अक्टूबर से नवंबर
(2) मार्च से मई
(3) जून से अगस्त
(4) दिसंबर से फरवरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. शीत ऋतु के दौरान कौन सी विशिष्ट वायुमंडलीय विशेषता पश्चिमी विक्षोभों को भारतीय उपमहाद्वीप में निर्देशित करती है?
(1) उप-उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम प्रणाली
(2) मौसमी सोमाली महासागरीय धारा
(3) पश्चिमी जेट स्ट्रीम
(4) विषुवतीय प्रति-धारा प्रणाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें पश्चिमी और पूर्वी हिंद महासागर में समुद्री सतह के तापमान का अनियमित दोलन शामिल है।
II. एक सकारात्मक IOD आमतौर पर भारतीय मानसून के लिए फायदेमंद होता है।
III. एक नकारात्मक IOD भारतीय उपमहाद्वीप में सामान्य से अधिक भारी वर्षा लाता है।
IV. IOD कभी-कभी भारतीय मानसून पर अल नीनो के नकारात्मक प्रभावों की भरपाई कर सकता है।

Click Here to Buy book on Amazon

(3) वर्षा की बौछारें
(4) तूफान प्रणाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. भारत में दक्षिण-पश्चिमी मानसून की उत्पत्ति का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) तिब्बत के पठार पर विकसित होने वाली तीव्र उच्च दाब प्रणाली
(2) पछुआ पवनों का विषुवत रेखा की ओर खिसकना
(3) जल और थल का विभेदी तापन और शीतलन
(4) हिंद महासागर में तीव्र ठंडी धाराओं की उत्पत्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): दक्षिण-पश्चिमी मानसून ऋतु के दौरान भारत के पश्चिमी तटीय मैदानों में दक्कन के पठार के आंतरिक भागों की तुलना में काफी अधिक वर्षा होती है।
कारण (R): पश्चिमी घाट एक पर्वतीय अवरोध के रूप में कार्य करते हैं, जिससे अरब सागर से आने वाली आर्द्र हवाएँ ऊपर उठती हैं और पवन-अभिमुख दिशा में वर्षा करती हैं।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. 'मानसून गर्त' के नाम से जानी जाने वाली भौगोलिक परिघटना क्या है?
(1) हिंद महासागर क्षेत्र के ऊपर उच्च दाब का एक विस्तृत क्षेत्र
(2) तटीय क्षेत्रों में तीव्र वर्षा का अचानक प्रारंभ होना
(3) पूर्वी और पश्चिमी घाटों के बीच का भौगोलिक अंतराल
(4) ग्रीष्म ऋतु में उत्तर भारतीय मैदानों के ऊपर स्थित निम्न दाब का क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. दक्षिण-पश्चिमी मानसून के आगमन के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) बंगाल की खाड़ी की शाखा अरब सागर की शाखा से पहले भारतीय मुख्य भूमि पर पहुँचने वाली पहली शाखा है।
(2) मानसून आमतौर पर जून के प्रथम सप्ताह तक केरल तट पर पहुँच जाता है।
(3) मानसून पवनें भारतीय उपमहाद्वीप में उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ती हैं।
(4) मानसून का आगमन अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) से पूरी तरह स्वतंत्र है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन सा दिए गए क्षेत्रों में दक्षिण-पश्चिमी मानसून के आगमन का सही सामान्य कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, केरल तट, मुंबई, दिल्ली
(2) केरल तट, मुंबई, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली
(3) मुंबई, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, केरल तट, दिल्ली
(4) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, मुंबई, केरल तट, दिल्ली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. दक्षिण-पश्चिमी मानसून की शाखाओं से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) अरब सागर शाखा - पश्चिमी घाट में महत्वपूर्ण वर्षा का कारण बनती है
(2) बंगाल की खाड़ी शाखा - हिमालय पर्वतों द्वारा पश्चिम की ओर विक्षेपित होती है
(3) बंगाल की खाड़ी शाखा - पूर्वांचल पहाड़ी क्षेत्र में भारी वर्षा का कारण बनती है
(4) अरब सागर शाखा - कोरोमंडल तट पर वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. यदि अरावली श्रेणी का विस्तार दक्षिण-पश्चिम - उत्तर-पूर्व के बजाय पूर्व-पश्चिम दिशा में होता, तो राजस्थान की जलवायु पर सबसे संभावित प्रभाव क्या पड़ता?
(1) अरब सागर मानसून शाखा से होने वाली वर्षा में वृद्धि
(2) राजस्थान पूरे वर्ष गंभीर शीत लहरों का अनुभव करता
(3) थार मरुस्थल दक्षिण में गुजरात क्षेत्र तक और अधिक विस्तृत हो जाता
(4) भारत के पूर्वी भागों में भीषण और लंबे समय तक सूखा पड़ता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारत में मानसून के निवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मानसून के निवर्तन की पहचान स्वच्छ आकाश और तापमान में वृद्धि से होती है।
II. यह आमतौर पर उत्तर-पश्चिमी भारत में सितंबर की शुरुआत में प्रारंभ होता है।
III. इससे जुड़ी मौसम की परिघटना को आमतौर पर 'अक्टूबर की गर्मी' के रूप में जाना जाता है।
IV. इस ऋतु के दौरान, निम्न दाब का गर्त बंगाल की खाड़ी से उत्तर भारतीय मैदानों की ओर तेजी से खिसकता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV

NODIA

अध्याय 10
भारत की जलवायु

1. निम्नलिखित में से कौन सा कारक भारत की जलवायु पर सीधा प्राथमिक प्रभाव नहीं डालता है?
   (1) भू-भाग का अक्षांशीय विस्तार
   (2) उत्तरी अटलांटिक महासागरीय धाराएँ
   (3) ऊँचाई और उच्चावच लक्षण
   (4) समुद्र से दूरी
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारत की जलवायु को निर्धारित करने में हिमालय की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए।
   कथन I: हिमालय मध्य एशिया की ठंडी हवाओं को भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश करने से रोकता है।
   कथन II: हिमालय आर्द्रता से भरी दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए विवश करता है।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. भारत के तटीय क्षेत्रों और आंतरिक भागों के बीच तापमान में भिन्नता मुख्य रुप से किस परिघटना के कारण होती है?
   (1) आंतरिक प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्रों की अधिक ऊँचाई
   (2) आंतरिक राज्यों में घने उष्णकटिबंधीय वनों की उपस्थिति
   (3) महाद्वीपीयता का प्रभाव
   (4) भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभों का प्रभाव
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भारतीय जलवायु को नियंत्रित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. कर्क रेखा भारत को लगभग दो समान जलवायु वाले हिस्सों में विभाजित करती है।
   II. कोरिओलिस बल उत्तरी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनों को दाईं ओर विक्षेपित करता है।
   III. मानसून की शुरुआत में तिब्बत के पठार की उपस्थिति की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है।
   उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. भारत में ग्रीष्म ऋतु के दौरान अनुभव की जाने वाली स्थानीय पवनों के संबंध में निम्नलिखित में से विषम का चयन कीजिए।
   (1) लू के रुप में जानी जाने वाली गर्म हवाएँ
   (2) मानसून-पूर्व आम्र वर्षा
   (3) पश्चिमी विक्षोभ
   (4) तूफानी काल बैसाखी
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारतीय जलवायु पर अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के प्रभाव का गलत वर्णन करता है?
   (1) आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों के लिए आर्द्रता प्रदान करना
   (2) ठंडी महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति जो गर्मियों के तापमान को कम करती हैं
   (3) वर्ष भर तटीय क्षेत्रों के तापमान पर पड़ने वाला समकारी प्रभाव
   (4) पूर्वी और पश्चिमी तटों को प्रभावित करने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का स्रोत
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: (स्थानीय तूफान)
   A. आम्र वर्षा
   B. बारदोली छीड़ा
   C. काल बैसाखी
   D. लू
   सूची II: (क्षेत्र/राज्य)
   i. तटीय कर्नाटक और केरल
   ii. असम
   iii. पश्चिम बंगाल
   iv. राजस्थान और पंजाब
   (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
   (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. 'मानसून' शब्द अरबी शब्द 'मौसिम' से लिया गया है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
   (1) ऋतु
   (2) पवन धाराएँ

Downloaded from www.pdf.tube

झोंकेदार, गर्म और शुष्क हवा है।
II. यह मुख्य रूप से भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भागों में चलती है।
III. इन हवाओं के सीधे संपर्क में आना आमतौर पर मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. ग्रीष्म ऋतु के दौरान अक्सर पश्चिम बंगाल और असम में चलने वाले तीव्र स्थानीय तूफानों को, जो तेज हवाओं और मूसलाधार वर्षा के साथ आते हैं, स्थानीय रूप से क्या कहा जाता है?
(1) काल बैसाखी
(2) आम्र वर्षा
(3) लू
(4) मानसून गर्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. पश्चिमी विक्षोभ से भारी शीतकालीन वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश
(2) केरल और कर्नाटक
(3) पश्चिम बंगाल और ओडिशा
(4) पंजाब और राजस्थान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (भारत में ऋतु)
A. शीत ऋतु
B. ग्रीष्म ऋतु
C. दक्षिण-पश्चिमी मानसून ऋतु
D. मानसून का निवर्तन
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
i. उत्तर-पश्चिम में धूल भरी आँधियों का आना
ii. उत्तर में स्वच्छ आकाश और गिरता रात्रि तापमान
iii. देश भर में अधिकतम वार्षिक वर्षा
iv. बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय चक्रवात जो पूर्वी तट से टकराते हैं
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. भारत का पूर्वी तट, विशेष रूप से तमिलनाडु, दक्षिण-पश्चिमी मानसून ऋतु के दौरान तुलनात्मक रूप से शुष्क क्यों रहता है?
(1) यह पूर्वी घाट के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है।
(2) ग्रीष्म ऋतु के दौरान कोरोमंडल तट पर उच्च दाब की स्थिति बनी रहती है।
(3) यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है।
(4) अपतटीय पवनें तटीय क्षेत्रों से नमी को दूर ले जाती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. भारत का कौन सा क्षेत्र उच्चतम औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करने के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?
(1) पश्चिमी घाट की पश्चिमी ढलान
(2) हिमालय की शिवालिक श्रेणी
(3) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(4) मेघालय की खासी पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): भारत के उत्तरी मैदानों में वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर घटती जाती है।
कारण (R): मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा जैसे-जैसे उत्तर-पश्चिम की ओर आंतरिक भागों की यात्रा करती है, धीरे-धीरे अपनी आर्द्रता खोती जाती है।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. भारत में वर्षा के वितरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) मेघालय के विशिष्ट हिस्सों में सालाना 400 सेमी से अधिक वर्षा होती है
(2) दक्कन के पठार की वर्षा 250 सेमी से अधिक है
(3) पश्चिमी राजस्थान में प्रतिवर्ष 20 सेमी से कम वर्षा होती है
(4) गुजरात जैसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा की परिवर्तनशीलता बहुत अधिक है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

33. चेरापूंजी और मौसिनराम में अत्यधिक वर्षा होने का सबसे अच्छा कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) वे समुद्र तल से 5000 मीटर से अधिक की बहुत ऊँचाई पर स्थित हैं
(2) कीपाकार स्थलाकृति जो आर्द्र हवाओं को ऊपर उठने के लिए विवश करती है
(3) वे दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के सीधे पथ पर स्थित हैं

(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. दक्षिण-पश्चिमी मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा कई क्षेत्रों में वर्षा प्रदान करती है। निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में इस शाखा से प्रमुख वर्षा प्राप्त नहीं होती है?
(1) निचली ब्रह्मपुत्र घाटी
(2) सौराष्ट्र क्षेत्र
(3) ऊपरी गंगा के मैदान
(4) पूर्वी मेघालय पठार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. दक्षिण भारत में जून के प्रथम सप्ताह के दौरान मेघ गर्जन और तड़ित के साथ होने वाली वर्षा की अचानक और तीव्र शुरुआत को क्या कहा जाता है?
(1) मानसून का प्रस्फोट
(2) स्थायी मानसून गर्त
(3) मानसून में विस्तारित विच्छेद
(4) मौसमी निवर्तनी मानसून
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जलवायु परिघटना)
A. मानसून में विच्छेद
B. अक्टूबर की गर्मी
C. पश्चिमी विक्षोभ
D. उत्तर-पूर्वी मानसून
सूची II: (जुड़ी विशेषता/क्षेत्र)
i. तमिलनाडु में शीतकालीन वर्षा
ii. वर्षा ऋतु के दौरान शुष्क दौर
iii. उच्च तापमान और आर्द्रता के कारण कष्टकारी मौसम
iv. उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकालीन वर्षा
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. कौन सी प्रमुख स्थलाकृतिक विशेषता दक्षिण-पश्चिमी मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा को गंगा के मैदानों के ऊपर पश्चिम की ओर मुड़ने के लिए विवश करती है?
(1) अरावली श्रेणी
(2) पश्चिमी घाट
(3) विंध्य श्रेणी
(4) हिमालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उत्तर-पूर्वी मानसून के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: उत्तर-पूर्वी मानसून पवनें महाद्वीपीय होती हैं और आमतौर पर शुष्क होती हैं क्योंकि वे स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं।
कथन II: ये पवनें बंगाल की खाड़ी को पार करते समय नमी ग्रहण करती हैं और तमिलनाडु में शीतकालीन वर्षा का कारण बनती हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. पश्चिमी विक्षोभ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये भूमध्य सागर के ऊपर उत्पन्न होने वाले उथले चक्रवाती विक्षोभ हैं।
II. ये मध्य पूर्व से होते हुए पूर्व की ओर यात्रा करते हैं और शीत ऋतु के दौरान भारत में प्रवेश करते हैं।
III. ये पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्यों में महत्वपूर्ण शीतकालीन वर्षा लाते हैं।
IV. इनके द्वारा होने वाली वर्षा को राजस्थान में स्थानीय रुप से 'मावठ' कहा जाता है।
V. ये उत्तर-पश्चिमी भारत में खरीफ की फसलों के लिए अत्यधिक लाभकारी होते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत में शीत ऋतु के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उत्तर भारत में दिन आमतौर पर गर्म और रातें ठंडी होती हैं
(2) इस ऋतु के दौरान देश में उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनें प्रभावी रहती हैं
(3) इस ऋतु के दौरान दक्षिण से उत्तर की ओर तापमान घटता है
(4) तटीय प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में सामान्य पाला पड़ना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. मानक मौसम विज्ञान विभाजनों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन भारत में 'ग्रीष्म ऋतु' के महीनों की पहचान करता है?
(1) मार्च से मई
(2) दिसंबर से फरवरी
(3) जून से सितंबर
(4) अक्टूबर से नवंबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. 'लू' की परिघटना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ग्रीष्म ऋतु में दिन के समय चलने वाली एक तीव्र,

Click Here to Buy book on Amazon

(3) 88 सेमी
(4) 128 सेमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. भारतीय मानसून पर महासागरीय घटनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करते समय, निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी भारतीय मानसून की अंतर-वार्षिक परिवर्तनशीलता को प्रभावित करने के लिए जाने जाते हैं?
(1) गल्फ स्ट्रीम धारा
(2) अल नीनो दक्षिणी दोलन (ENSO)
(3) हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD)
(4) मैडेन-जूलियन दोलन (MJO)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. भारत में बाढ़ और सूखे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सबसे कम वर्षा परिवर्तनशीलता वाले क्षेत्र बार-बार आने वाले सूखे के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं।
II. ब्रह्मपुत्र घाटी मानसून के दौरान वार्षिक बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
III. राजस्थान और गुजरात में अचानक आने वाली बाढ़ अक्सर तीव्र चक्रवाती वर्षा के कारण होती है।
IV. एक वर्ष को 'सूखा वर्ष' तब माना जाता है जब कुल वर्षा की कमी दीर्घकालिक औसत के 10% से अधिक हो और एक बड़ा क्षेत्र प्रभावित हो।
V. सूखे को मौसम संबंधी, जल विज्ञान संबंधी और कृषि संबंधी प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. शीत ऋतु के दौरान, हिमालय के उत्तर के क्षेत्र में एक शक्तिशाली उच्च दाब केंद्र विकसित होता है। भारत पर इस दाब प्रणाली का क्या प्रभाव पड़ता है?
(1) यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों को उपमहाद्वीप की ओर खींचता है
(2) यह ठंडी अपतटीय पवनों को उपमहाद्वीप की ओर संचालित करता है
(3) यह आसपास के अरब सागर में तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न करता है
(4) यह उत्तरी मैदानों के अचानक और तेजी से गर्म होने का कारण बनता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. लौटते मानसून की शाखाओं और उनके प्राथमिक प्रभाव क्षेत्रों को दर्शाने वाले सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) अरब सागर शाखा - तटीय गुजरात
(2) बंगाल की खाड़ी शाखा - उत्तरी पंजाब
(3) उत्तर-पूर्वी मानसून - तटीय तमिलनाडु
(4) पश्चिमी विक्षोभ - कोरोमंडल तट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. राजस्थान की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य का पश्चिमी भाग अत्यधिक उच्च दैनिक तापांतर के साथ शुष्क जलवायु का अनुभव करता है।
II. बंगाल की खाड़ी की मानसून शाखा के कारण राजस्थान के पूर्वी भाग में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है।
III. राजस्थान में शीतकालीन वर्षा पूरी तरह से अस्तित्वहीन है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. कौन सा अक्षांश भारत के लगभग मध्य से होकर गुजरता है, जो देश को उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करता है?
(1) कर्क रेखा
(2) भूमध्य रेखा
(3) मकर रेखा
(4) आर्कटिक वृत्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. भारतीय मानसून के संदर्भ में 'ITCZ' का अर्थ क्या है?
(1) इंटर-ट्रॉपिक क्लाइमेट ज़ोन
(2) अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र
(3) इंडियन ट्रॉपिकल साइक्लोनिक ज़ोन
(4) इंटरनेशनल ट्रेड एंड कन्वर्जेंस ज़ोन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (क्षेत्र)
A. सुदूर पश्चिमी राजस्थान
B. आंतरिक दक्कन का पठार
C. पूर्वी गंगा के मैदान
D. पश्चिमी तटीय मैदान
सूची II: (औसत वार्षिक वर्षा)
i. 20 सेमी से कम
ii. 50 सेमी से 100 सेमी
iii. 100 सेमी से 200 सेमी
iv. 250 सेमी से अधिक
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv

Downloaded from www.pdf.tube

67. भारतीय जलवायु पर हिंद महासागर के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों के लिए आर्द्रता के विशाल भंडार के रूप में कार्य करता है।
II. हिंद महासागर और एशियाई भू-भाग के बीच तापमान प्रवणता मानसून के लिए एक प्रमुख प्रेरक बल है।
III. हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) भारतीय उपमहाद्वीप में सूखे की घटनाओं का एकमात्र निर्धारक है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. भारत में अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: मौसिनराम को वर्तमान में पृथ्वी पर सबसे नम स्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है, जहाँ अत्यधिक उच्च वार्षिक वर्षा होती है।
कथन II: मौसिनराम गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों के पवन-विमुख दिशा में स्थित है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. लौटते मानसून के दौरान भारत के पूर्वी तट से टकराने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात मुख्य रूप से किस जल निकाय में उत्पन्न होते हैं?
(1) अरब सागर
(2) मन्नार की खाड़ी
(3) अंडमान सागर
(4) खंभात की खाड़ी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (शहर)
A. जोधपुर
B. तिरुवनंतपुरम
C. दिल्ली
D. लेह
सूची II: (प्रमुख जलवायु विशेषता)
i. शीत मरुस्थलीय जलवायु
ii. शुष्क / अर्ध-शुष्क जलवायु
iii. चरम महाद्वीपीय जलवायु
iv. समकारी समुद्री जलवायु
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. भारत में शीत ऋतु की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित में से विषम का चयन कीजिए।
(1) उत्तरी मैदानों के क्षेत्र में कमजोर उच्च दाब क्षेत्र विकसित होता है
(2) पवनें भू-भाग से आसपास के समुद्र की ओर चलती हैं
(3) उत्तरी मैदानी क्षेत्र में स्वच्छ आकाश के साथ सुखद मौसम
(4) मध्य भारतीय पठार में भारी वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. ग्रीष्म ऋतु के दौरान, भारत के प्रायद्वीपीय पठार का तापमान उत्तरी मैदानों की तुलना में अपेक्षाकृत कम रहता है। इस परिघटना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) आसपास के महासागरों का समकारी प्रभाव
(2) प्रायद्वीप को ढकने वाले घने विषुवतीय वन
(3) दक्षिण में मानसून-पूर्व वर्षा का प्रारंभ होना
(4) कर्क रेखा के दक्षिण में सौर विकिरण की कमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): मई के महीने में पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में धूल भरी आँधियाँ बहुत सामान्य हैं।
कारण (R): भू-भाग के अत्यधिक गर्म होने से तीव्र निम्न दाब केंद्र बनते हैं जिससे हवा तेजी से ऊपर उठती है और स्थानीय तूफान आते हैं।
उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

74. भारतीय जलवायु पर ला नीना के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) अधिक शक्तिशाली दक्षिण-पश्चिमी मानसून जिसके कारण अक्सर बाढ़ आती है
(2) यह भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सतह के तापमान के असामान्य रूप से गर्म होने का कारण बनता है
(3) यह आमतौर पर सामान्य से कमजोर दक्षिण-पश्चिमी मानसून का कारण बनता है
(4) यह बंगाल की खाड़ी के क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की उत्पत्ति को पूरी तरह से रोकता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. ग्रीष्म ऋतु में गंगा के मैदानों के ऊपर अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) के उत्तर की ओर खिसकने का मुख्य कारण क्या है?
(1) हिंद महासागर के जल का तेजी से ठंडा होना
(2) उच्च हिमालय में ग्लेशियरों का पिघलना
(3) तिब्बत के पठार पर उच्च दाब की स्थापना
(4) सूर्य का कर्क रेखा की ओर उत्तरायण होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. अल नीनो वर्षों के दौरान, पेरु के तट के साथ तटीय उत्प्रवाह कमजोर हो जाता है। यह विशिष्ट महासागरीय परिवर्तन भारत में मानसून की कमी से कैसे जुड़ा है?
(1) यह हिमालय की पर्वतीय अवरोध प्रणाली के टूटने का कारण बनता है
(2) वॉकर सर्कुलेशन में बदलाव जो वर्षा लाने वाली हवाओं को दबा देते हैं
(3) यह तिब्बत के पठार पर उच्च दाब प्रणाली को मजबूत करने की ओर ले जाता है
(4) यह शक्तिशाली पूर्वी जेट स्ट्रीम उत्पन्न करता है जो भारत से मानसूनी बादलों को दूर ले जाती है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जलवायु कारक)
A. अक्षांश
B. ऊँचाई
C. समुद्र से दूरी
D. महासागरीय धाराएँ
सूची II: (भारतीय जलवायु पर प्रभाव)
i. तटीय क्षेत्रों में मध्यम तापमान
ii. शिमला जैसे हिल स्टेशनों में तापमान का घटना
iii. भारत का दक्षिणी आधा भाग तीव्र शीत ऋतु के बिना उष्णकटिबंधीय जलवायु का अनुभव करता है
iv. समुद्री सतह के तापमान के माध्यम से मानसूनी हवाओं का प्रवर्धन या मंदन
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. निम्नलिखित में से कौन सा स्थान अपनी कम वर्षा के प्राथमिक कारण के साथ गलत तरीके से सुमेलित है?
(1) लेह - वृष्टि छाया प्रभाव और अत्यधिक ऊँचाई
(2) जैसलमेर - मानसून के साथ अरावली का समानांतर विस्तार
(3) कोरोमंडल तट (गर्मियों में) - बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर होना
(4) पुणे - पवन-अभिमुख दिशा में स्थित होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. 'मानसून' शब्द का ऐतिहासिक रूप से सबसे पहले किस महासागरीय निकाय में यात्रा करने वाले नाविकों द्वारा उपयोग किया गया था?
(1) अरब सागर
(2) अटलांटिक महासागर
(3) प्रशांत महासागर
(4) दक्षिण चीन सागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. राजस्थान की जलवायु और वर्षा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अरावली श्रेणी राज्य को दो अलग-अलग जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करती है।
II. माउंट आबू राज्य में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है।
III. राज्य पूरी तरह से वर्गीकरण की 'Amw' श्रेणी के अंतर्गत आता है।
IV. अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिमी मानसून की अरब सागर शाखा से प्राप्त होती है।
V. 'मावठ' की घटना शीत ऋतु में होती है और यह रबी की फसल के लिए महत्वपूर्ण है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल II, III और V
(3) केवल I, II और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य आमतौर पर अक्टूबर से दिसंबर के महीनों के दौरान लौटते मानसून से वर्षा प्राप्त नहीं करता है?
(1) तमिलनाडु
(2) पंजाब
(3) तटीय आंध्र प्रदेश
(4) कर्नाटक और केरल के कुछ हिस्से
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. दक्षिण-पश्चिमी मानसून ऋतु के दौरान, बिना वर्षा वाले लगातार दिनों की अवधि को क्या कहा जाता है?
(1) मानसून में विच्छेद
(2) मानसून का अचानक प्रस्फोट
(3) मौसमी मानसून निवर्तन
(4) निम्न दाब मानसून गर्त
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(4) क्षेत्र के घने विषुवतीय वन वाष्पोत्सर्जन चक्रों के माध्यम से अपार आर्द्रता में योगदान देते हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित राज्यों की सूची को पढ़ें और उन्हें दक्षिण-पश्चिमी मानसून से प्राप्त होने वाली औसत वार्षिक वर्षा के घटते क्रम में व्यवस्थित करें।
A. मेघालय
B. उत्तर प्रदेश
C. पंजाब
D. राजस्थान
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन करें:
(1) A, B, C, D
(2) A, C, B, D
(3) B, A, D, C
(4) A, B, D, C
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. लद्दाख को एक शीत मरुस्थल माना जाता है। लद्दाख क्षेत्र में अत्यधिक शुष्कता का प्राथमिक जलवायु कारण क्या है?
(1) यह समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र में विषुवत रेखा से बहुत दूर स्थित है
(2) उच्च सौर विकिरण ऊपरी मिट्टी में मौजूद सारी नमी को वाष्पित कर देता है
(3) महान हिमालय के पीछे वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होना
(4) लद्दाख की मिट्टी पूरी तरह से रेत से बनी है जो नमी को रोक नहीं सकती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. जलवायु वर्गीकरण में भारत के पश्चिमी तट पर मुख्य रूप से पाई जाने वाली 'लघु शुष्क ग्रीष्म ऋतु वाली मानसूनी जलवायु' को दर्शाने के लिए किस कोड का उपयोग किया जाता है?
(1) Aw
(2) BShw
(3) Cwg
(4) Amw
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राजस्थान के जलवायु वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. BWhw सुदूर पश्चिमी राजस्थान में पाई जाने वाली उष्ण मरुस्थलीय जलवायु को दर्शाता है।
II. BShw नागौर और जोधपुर जैसे क्षेत्रों में पाई जाने वाली अर्ध-शुष्क स्टेपी जलवायु को दर्शाता है।
III. Cwg जलवायु राजस्थान के पूर्वी भागों में देखी जाती है।
IV. Aw जलवायु बांसवाड़ा सहित राजस्थान के सबसे दक्षिणी भागों की विशेषता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. मध्य और पूर्वी-मध्य भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्री सतह के तापमान का समय-समय पर गर्म होना, जो भारतीय मानसून को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, किस रूप में जाना जाता है?
(1) ला नीना
(2) अल नीनो
(3) दक्षिणी दोलन
(4) हिंद महासागर द्विध्रुव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और भारत में जलवायु परिवर्तनशीलता के संबंध में सही विकल्प चुनें।
कथन I: अल नीनो वर्ष आम तौर पर भारत में वर्षा की कमी और सूखे जैसी स्थिति का कारण बनते हैं।
कथन II: ला नीना आमतौर पर दक्षिण-पश्चिमी मानसून की तीव्रता को बढ़ाता है, जिससे अक्सर भारी वर्षा और बाढ़ आती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जलवायु क्षेत्र कोड)
A. As (शुष्क ग्रीष्म ऋतु वाली मानसून जलवायु)
B. Aw (उष्णकटिबंधीय सवाना)
C. Cwg (शुष्क शीत ऋतु वाली मानसून जलवायु)
D. E (ध्रुवीय प्रकार)
सूची II: (संबद्ध भारतीय राज्य/क्षेत्र)
i. जम्मू और कश्मीर (उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्र)
ii. कोरोमंडल तट
iii. प्रायद्वीपीय पठार (अधिकांश भाग)
iv. गंगा के मैदान
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. वर्षों के दौरान मानसून वर्षा में होने वाली भिन्नता को अक्सर दीर्घकालिक औसत (LPA) से विचलन के रूप में मापा जाता है। भारत में दक्षिण-पश्चिमी मानसून के लिए वर्षा का LPA लगभग कितना है?
(1) 68 सेमी
(2) 108 सेमी

75. मौसम संबंधी अध्ययनों के अनुसार, भारत की कुल वार्षिक वर्षा का लगभग कितना प्रतिशत दक्षिण-पश्चिमी मानसून ऋतु द्वारा प्राप्त होता है?
(1) 40 - 50%
(2) 55 - 65%
(3) 90 - 95%
(4) 70 - 80%
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मानसून तंत्र के निम्नलिखित चरणों को पढ़ें और उन्हें भारतीय उपमहाद्वीप पर होने वाले सही क्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
A. मानसून का प्रस्फोट
B. उत्तर-पश्चिम भारत में अत्यधिक निम्न दाब का विकास
C. मानसून का निवर्तन
D. मानसून-पूर्व वर्षा का आगमन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन करें:
(1) B, D, A, C
(2) D, B, A, C
(3) B, A, D, C
(4) D, A, B, C
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. भारत के जलवायु क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत का जलवायु वर्गीकरण अक्सर तापमान और वर्षा के मासिक मूल्यों पर आधारित होता है।
II. Cwg प्रकार की जलवायु उत्तरी मैदानों के प्रमुख भागों को कवर करती है।
III. Amw प्रकार की जलवायु मालाबार तट के साथ पाई जाती है।
IV. E प्रकार की जलवायु केरल और तमिलनाडु जैसे सुदूर दक्षिणी राज्यों में स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. यदि एक शक्तिशाली अल नीनो घटना दर्ज की जाती है, तो भारतीय कृषि क्षेत्र के लिए निम्नलिखित में से किस परिदृश्य के होने की सबसे अधिक संभावना है?
(1) अत्यधिक वर्षा के कारण खरीफ की बंपर फसल
(2) प्रायद्वीपीय भारत में विभिन्न फसलों को पाले से गंभीर नुकसान
(3) गंगा के मैदानों से थार मरुस्थल की ओर प्रमुख फसल क्षेत्रों का स्थानांतरण
(4) बुवाई और फसल की पैदावार को प्रभावित करने वाला सूखा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वर्षा के प्रकार)
A. पर्वतीय वर्षा
B. चक्रवाती वर्षा
C. संवहनीय वर्षा
D. वाताग्र वर्षा
सूची II: (प्राथमिक उत्पत्ति/तंत्र)
i. ग्रीष्म ऋतु के दिनों में तीव्र स्थानीय तापन
ii. आर्द्र हवाओं का पर्वतीय अवरोध से टकराना
iii. भूमध्य सागर से आने वाले अतिरिक्त-उष्णकटिबंधीय विक्षोभ
iv. बंगाल की खाड़ी से आंतरिक भागों की ओर बढ़ने वाली निम्न दाब प्रणालियाँ
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में जलवायु की परिवर्तनशीलता और प्राकृतिक खतरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारी मानसूनी वर्षा के कारण ब्रह्मपुत्र और गंगा बेसिन में बाढ़ एक वार्षिक विशेषता है।
II. सूखे केवल भारत के पश्चिमी भाग में ही पड़ते हैं।
III. यह देखा गया है कि जलवायु परिवर्तन भारत में चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति बढ़ा रहा है।
IV. लौटता मानसून अक्सर पूर्वी तटरेखा के साथ चक्रवाती आपदाओं का कारण बनता है।
V. पश्चिमी घाट पूरे दक्कन के पठार में सूखे को रोकने वाले प्राथमिक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

60. (2) वॉकर सर्कुलेशन में बदलाव जो वर्षा लाने वाली हवाओं को दबा देते हैं
अल नीनो के दौरान प्रशांत महासागर में वायुमंडलीय दबाव और हवाओं के चक्र, जिसे वॉकर सर्कुलेशन कहते हैं, में भारी बदलाव आता है। सामान्य परिस्थितियों में मानसूनी हवाओं को सहारा देने वाला यह चक्र कमजोर पड़ जाता है या अपनी दिशा बदल लेता है। इससे हिंद महासागर के ऊपर हवाओं का ऊपर उठना बाधित होता है, जिसके परिणामस्वरूप भारत की ओर नमी लाने वाली मानसूनी पवनें कमजोर हो जाती हैं। हवाओं के इस वैश्विक हेरफेर के कारण ही अल नीनो वर्षों में भारत में अक्सर कम वर्षा होती है।

61. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
जलवायु को निर्धारित करने वाले विभिन्न कारकों का भारत पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। अक्षांश के कारण भारत का दक्षिणी हिस्सा हमेशा गर्म और उष्णकटिबंधीय रहता है। ऊँचाई बढ़ने पर तापमान घटता है, इसलिए शिमला जैसे हिल स्टेशन मैदानी इलाकों की तुलना में ठंडे रहते हैं। समुद्र के समकारी प्रभाव के कारण तटीय शहरों में तापमान बहुत अधिक नहीं बदलता। महासागरीय धाराएँ और उनके तापमान में होने वाले बदलाव सीधे तौर पर मानसूनी हवाओं की नमी ले जाने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

62. (4) पुणे - पवन-अभिमुख दिशा में स्थित होना
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा की कमी के पीछे ठोस भौगोलिक कारण हैं। लेह अपनी ऊँचाई और हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में होने के कारण शुष्क रहता है। जैसलमेर में अरावली का विस्तार मानसूनी हवाओं के समानांतर होने से वर्षा नहीं होती। कोरोमंडल तट मानसूनी हवाओं के समानांतर स्थित होने के कारण गर्मियों में सूखा रहता है। पुणे पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान पर यानी वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है, न कि पवन-अभिमुख दिशा में; इसलिए वहाँ मानसून के दौरान कम वर्षा होती है।

63. (1) अरब सागर
ऐतिहासिक रूप से 'मानसून' शब्द का प्रयोग सबसे पहले अरब सागर में व्यापार करने वाले अरब नाविकों द्वारा किया गया था। वे देखते थे कि इस समुद्री क्षेत्र में हवाओं की दिशा ऋतुओं के अनुसार पूरी तरह से उलट जाती है। सर्दियों में पवनें उत्तर-पूर्व से और गर्मियों में दक्षिण-पश्चिम से चलती थीं। नाविक इन हवाओं का उपयोग अपने जहाजों को चलाने के लिए करते थे। उन्होंने इन मौसमी हवाओं को 'मौसिम' नाम दिया, जो आगे चलकर अंग्रेजी में 'मानसून' के रूप में विश्व भर में प्रचलित हो गया।

64. (3) केवल I, II और V
राजस्थान की जलवायु में अरावली श्रेणी एक महत्वपूर्ण विभाजक है, जो राज्य के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में वर्षा के वितरण को तय करती है। माउंट आबू अपनी ऊँचाई के कारण राज्य का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है। सर्दियों में होने वाली 'मावठ' रबी की फसल के लिए अत्यधिक लाभदायक होती है। यह मानना गलत है कि राज्य को अधिकांश वर्षा अरब सागर शाखा से मिलती है; वास्तव में पूर्वी राजस्थान में बंगाल की खाड़ी शाखा का प्रभाव अधिक रहता है और पूरा राज्य एक ही जलवायु श्रेणी में नहीं आता।

65. (2) पंजाब
अक्टूबर से दिसंबर की अवधि मानसून के पीछे हटने और उत्तर-पूर्वी मानसून के सक्रिय होने का समय होता है। इस दौरान लौटता हुआ मानसून बंगाल की खाड़ी से नमी लेकर तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में वर्षा करता है। पंजाब भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, जहाँ इस समय तक मानसूनी हवाएँ पूरी तरह समाप्त हो जाती हैं और मौसम शुष्क और साफ हो जाता है। पंजाब में इस अवधि के दौरान केवल पश्चिमी विक्षोभों से ही वर्षा संभव है, लौटते हुए मानसून से नहीं।

66. (1) मानसून में विच्छेद
दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान, ऐसी अवधियाँ आती हैं जब एक या अधिक सप्ताह तक वर्षा बिल्कुल नहीं होती। इस घटना को 'मानसून में विच्छेद' या 'ब्रेक' कहा जाता है। ऐसा तब होता है जब मानसून गर्त की स्थिति बदल जाती है या आर्द्रता से भरी हवाओं का प्रवाह कमजोर पड़ जाता है। यह विच्छेद किसानों के लिए चिंता का विषय होता है क्योंकि लंबे समय तक सूखा रहने से फसलों को भारी नुकसान पहुँचता है। यह मानसून की एक सामान्य विशेषता है जो वर्षा के वितरण को प्रभावित करती है।

67. (2) केवल III
हिंद महासागर भारतीय मानसून का प्रमुख आधार है, क्योंकि यहीं से मानसूनी हवाएँ अपनी नमी प्राप्त करती हैं। स्थल और समुद्र के बीच का तापमान अंतर ही हवाओं को भारत की ओर खींचने का काम करता है। हालांकि, यह सोचना गलत है कि हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) ही सूखे का एकमात्र कारण है। सूखे की स्थिति अल नीनो, तिब्बत के पठार के तापमान और जेट स्ट्रीम की स्थिति जैसे कई अन्य जटिल वैश्विक और स्थानीय कारकों के आपसी मेल से निर्धारित होती है, न कि केवल एक कारक से।

NODIA

68. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
मौसिनराम मेघालय की खासी पहाड़ियों के दक्षिणी हिस्से में स्थित है और वर्तमान में इसे पृथ्वी का सबसे नम स्थान माना जाता है। यहाँ की वार्षिक वर्षा का रिकॉर्ड दुनिया में सबसे ऊँचा है। इसकी भारी वर्षा का मुख्य कारण इसका पहाड़ियों के पवन-अभिमुख दिशा में स्थित होना है, जहाँ बंगाल की खाड़ी से आने वाली आर्द्र हवाएँ सीधे टकराकर ऊपर उठती हैं। यह कहना गलत है कि यह पहाड़ियों के पवन-विमुख ढाल पर है, क्योंकि पवन-विमुख क्षेत्र आमतौर पर सूखे या वृष्टि छाया क्षेत्र होते हैं।

69. (3) अंडमान सागर
अक्टूबर और नवंबर के दौरान जब मानसून पीछे हट रहा होता है, तब बंगाल की खाड़ी के अंडमान सागर वाले हिस्से में वायुमंडलीय दबाव कम होने से तीव्र चक्रवात उत्पन्न होते हैं। ये चक्रवात पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी दिशा में आगे बढ़ते हुए

विपरीत, दक्कन का पठार इन पर्वतों के दूसरी ओर वृष्टि छाया क्षेत्र में होने के कारण बहुत कम वर्षा प्राप्त करता है।

11. (4) ग्रीष्म ऋतु में उत्तर भारतीय मैदानों के ऊपर स्थित निम्न दाब का क्षेत्र
मानसून गर्त एक निम्न वायुदाब का क्षेत्र है जो ग्रीष्म ऋतु के दौरान उत्तरी भारत के विशाल मैदानों के ऊपर विकसित होता है। यह गर्त हिमालय के समानांतर पूर्व से पश्चिम की ओर फैला होता है और मानसूनी हवाओं को आकर्षित करने में मुख्य भूमिका निभाता है। मानसून के दौरान इस गर्त की स्थिति में होने वाला बदलाव ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा, उसके वितरण और वर्षा के अंतराल को व्यापक रूप से निर्धारित करता है।

12. (2) मानसून आमतौर पर जून के प्रथम सप्ताह तक केरल तट पर पहुँच जाता है।
दक्षिण-पश्चिमी मानसून के आगमन का एक निश्चित समय होता है और यह आमतौर पर जून के प्रथम सप्ताह तक केरल के तट पर पहुँच जाता है। यह भारतीय मुख्य भूमि पर मानसून की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। केरल में पहुँचने के बाद, यह दो शाखाओं में विभाजित हो जाता है और धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ता है। मानसून का यह समय और इसकी प्रगति भारत की कृषि और अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

13. (1) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, केरल तट, मुंबई, दिल्ली
भारतीय क्षेत्र में दक्षिण-पश्चिमी मानसून का आगमन सबसे पहले अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में मई के अंत में होता है। इसके बाद, यह जून के पहले सप्ताह में केरल के तट पर पहुँचता है और मुख्य भूमि में प्रवेश करता है। मानसून की प्रगति जारी रहते हुए यह जून के मध्य तक मुंबई तक पहुँच जाता है और अंततः जुलाई के पहले सप्ताह के आसपास दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य आंतरिक हिस्सों में सक्रिय हो जाता है।

14. (4) अरब सागर शाखा - कोरोमंडल तट पर वर्षा
अरब सागर की शाखा पश्चिमी घाटों पर टकराकर भारत के पश्चिमी तट पर भारी वर्षा प्रदान करती है, जबकि बंगाल की खाड़ी की शाखा उत्तर-पूर्वी भारत और गंगा के मैदानों में वर्षा का मुख्य कारण बनती है। कोरोमंडल तट मुख्य रूप से तमिलनाडु में स्थित है और यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून की दोनों शाखाओं से ग्रीष्म ऋतु में वर्षा प्राप्त नहीं करता है। इसके बजाय, इस तटीय क्षेत्र में सर्दियों के दौरान उत्तर-पूर्वी मानसून पवनों से मुख्य वर्षा होती है।

15. (1) अरब सागर मानसून शाखा से होने वाली वर्षा में वृद्धि
वर्तमान में अरावली श्रेणी मानसूनी पवनों के समानांतर है, जिससे नमी युक्त हवाएँ बिना वर्षा किए निकल जाती हैं। यदि इसकी दिशा पूर्व-पश्चिम होती, तो यह अरब सागर की शाखा के लिए एक शक्तिशाली अवरोध उत्पन्न करती। इस स्थिति में हवाओं के ऊपर उठने से राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में प्रचुर वर्षा होती, जिससे वहाँ की जलवायु वर्तमान की तुलना में अधिक आर्द्र और हरियाली युक्त बन सकती थी, जो कृषि हेतु बहुत लाभदायक होती।

16. (1) केवल I, II और III
मानसून का निवर्तन या वापसी उत्तर-पश्चिमी भारत से सितंबर के दौरान शुरु होती है, जब सूर्य के दक्षिण की ओर खिसकने के कारण तापमान घटने लगता है। इस अवधि में आकाश साफ हो जाता है और दिन का तापमान फिर से बढ़ने लगता है। उच्च तापमान और आर्द्रता की इस कष्टकारी स्थिति को अक्टूबर की गर्मी कहा जाता है। इस दौरान निम्न दाब का क्षेत्र मैदानों से हटकर बंगाल की खाड़ी की ओर स्थानांतरित हो जाता है, जिससे हवाएँ पीछे हटती हैं।

17. (2) सौराष्ट्र क्षेत्र
बंगाल की खाड़ी की शाखा उत्तर-पूर्वी भारत की पहाड़ियों से टकराकर मेघालय, असम और ब्रह्मपुत्र घाटी में मूसलाधार वर्षा करती है। यह शाखा हिमालय के साथ पश्चिम की ओर मुड़कर गंगा के मैदानों को भी सिंचित करती है। सौराष्ट्र क्षेत्र गुजरात के पश्चिमी भाग में स्थित है और यह मुख्य रूप से अरब सागर की शाखा से प्रभावित होता है। बंगाल की खाड़ी की शाखा अपनी अधिकांश नमी उत्तर और पूर्व में ही छोड़ देती है, जिससे यह सौराष्ट्र तक नहीं पहुँच पाती।

18. (1) मानसून का प्रस्फोट
जून के प्रारंभ में जब आर्द्रता से भरी मानसूनी हवाएँ अचानक भारत के दक्षिणी तट पर पहुँचती हैं, तो वे बिजली कड़कने और बादलों के गर्जन के साथ अत्यधिक तीव्र वर्षा करती हैं। मौसम विज्ञान में इस घटना को मानसून का प्रस्फोट या फटना कहा जाता है। यह शुष्क ग्रीष्म ऋतु के अंत और वर्षा ऋतु के आधिकारिक आगमन का संकेत होता है। इस अचानक परिवर्तन से तापमान में भारी गिरावट आती है और वातावरण में आर्द्रता काफी बढ़ जाती है।

19. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मानसून के दौरान वर्षा रहित शुष्क काल को मानसून में विच्छेद कहा जाता है। अक्टूबर और नवंबर में उच्च तापमान और आर्द्रता के कारण होने वाले कष्टकारी मौसम को अक्टूबर की गर्मी के रुप में जाना जाता है। पश्चिमी विक्षोभ शीत ऋतु में उत्तर-पश्चिमी भारत में वर्षा लाते हैं, जो रबी की फसलों के लिए लाभकारी होती है। उत्तर-पूर्वी मानसून या लौटता मानसून सर्दियों के दौरान तमिलनाडु और कोरोमंडल तट पर भारी वर्षा प्रदान करने के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

20. (4) हिमालय
बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी हवाएँ जब उत्तर-पूर्वी भारत में पहुँचती हैं, तो उत्तर में स्थित ऊँची हिमालय पर्वतमाला उनके लिए एक अभेद्य अवरोध का कार्य करती है। इन विशाल पर्वतों के कारण ये हवाएँ उत्तर की ओर नहीं जा पातीं और मजबूरन पश्चिम की ओर मुड़कर गंगा के मैदानों में प्रवेश करती हैं। हिमालय की इसी विशेष स्थिति के कारण उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में पूर्व से पश्चिम की ओर मानसूनी वर्षा संभव हो पाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

41. (3) 88 सेमी

भारत में मानसून वर्षा की सटीकता को मापने के लिए दीर्घकालिक औसत या LPA का उपयोग किया जाता है। यह पिछले कई दशकों की औसत वर्षा का मानक मूल्य होता है। दक्षिण-पश्चिमी मानसून के लिए भारत का निर्धारित LPA लगभग 88 सेमी है। मौसम विभाग इसी आंकड़े के आधार पर प्रत्येक वर्ष मानसून के 'सामान्य', 'कम' या 'अधिक' होने की भविष्यवाणी करता है। यदि कुल वर्षा इस औसत के आसपास रहती है, तो उसे कृषि हेतु एक अच्छा मानसून वर्ष माना जाता है।

42. (1) गल्फ स्ट्रीम धारा

भारतीय मानसून एक अत्यंत जटिल प्रणाली है जो कई वैश्विक महासागरीय और वायुमंडलीय घटनाओं से प्रभावित होती है। अल नीनो, हिंद महासागर द्विध्रुव और मैडेन-जूलियन दोलन जैसी परिघटनाएँ मानसून की तीव्रता और उसके वितरण में महत्वपूर्ण बदलाव लाती हैं। हालांकि, गल्फ स्ट्रीम अटलांटिक महासागर की एक गर्म जलधारा है जो मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका और यूरोप के मौसम को प्रभावित करती है। इसका भारतीय मानसून की अंतर-वार्षिक परिवर्तनशीलता पर कोई ज्ञात या प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है।

43. (2) केवल II, III, IV और V

भारत में बाढ़ और सूखा मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता का परिणाम हैं। ब्रह्मपुत्र घाटी में हर साल भारी वर्षा के कारण बाढ़ आती है, जबकि राजस्थान और गुजरात में चक्रवातीय वर्षा से अचानक बाढ़ आ सकती है। सूखे को इसके प्रभाव के आधार पर मौसम संबंधी और कृषि संबंधी श्रेणियों में बाँटा जाता है। जब कुल वर्षा औसत से 10% से अधिक कम हो जाती है, तो उसे सूखा वर्ष घोषित किया जाता है। वर्षा की उच्च परिवर्तनशीलता वाले क्षेत्र ही सूखे के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

44. (2) यह ठंडी अपतटीय पवनों को उपमहाद्वीप की ओर संचालित करता है

शीत ऋतु में हिमालय के उत्तर में अत्यधिक ठंड के कारण वायुदाब बहुत बढ़ जाता है, जिससे वहां एक शक्तिशाली उच्च दाब केंद्र स्थापित हो जाता है। यह दाब प्रणाली ठंडी और शुष्क हवाओं को हिमालय के दर्रों से होकर भारतीय उपमहाद्वीप की ओर धकेलती है। ये पवनें उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में तापमान को तेजी से गिरा देती हैं और पूरे क्षेत्र में कड़ाके की ठंड और शुष्कता लाती हैं। इन पवनों का प्रवाह मुख्य रूप से स्थल से समुद्र की ओर होता है।

45. (3) उत्तर-पूर्वी मानसून - तटीय तमिलनाडु

मानसून के पीछे हटने की प्रक्रिया के दौरान हवाओं की दिशा बदल जाती है। उत्तर-पूर्वी मानसून या लौटता मानसून मुख्य रूप से बंगाल की खाड़ी से नमी प्राप्त करता है और सर्दियों के दौरान तमिलनाडु के कोरोमंडल तट पर भारी वर्षा करता है। यह दक्षिण भारत की कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जबकि पश्चिमी विक्षोभ उत्तर-पश्चिम में वर्षा लाते हैं, लौटते मानसून का मुख्य प्रभाव क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी तट ही रहता है। अन्य विकल्प भौगोलिक रूप से इन शाखाओं के प्रभाव क्षेत्रों से मेल नहीं खाते हैं।

46. (3) केवल III

राजस्थान की जलवायु विविधतापूर्ण है, जहाँ पश्चिमी भाग में अत्यधिक तापांतर और शुष्कता पाई जाती है। अरावली के पूर्व में स्थित जिलों में बंगाल की खाड़ी की शाखा से पर्याप्त वर्षा होती है। यह कहना गलत है कि राजस्थान में सर्दियों में वर्षा नहीं होती है। वास्तव में, सर्दियों में पश्चिमी विक्षोभों के कारण यहाँ 'मावठ' के रूप में वर्षा होती है, जो गेहूँ और सरसों जैसी रबी फसलों के उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक वरदान मानी जाती है और कृषि को संबल प्रदान करती है।

47. (1) कर्क रेखा

कर्क रेखा भारत के लगभग मध्य भाग से होकर गुजरती है और देश को दो प्रमुख जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करती है। इस रेखा के दक्षिण में स्थित आधा हिस्सा उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में आता है, जहाँ साल भर उच्च तापमान रहता है। इसके उत्तर में स्थित हिस्सा उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ गर्मियों और सर्दियों के तापमान में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। यह अक्षांशीय स्थिति ही भारत के विभिन्न हिस्सों में तापमान और वर्षा के स्वरूप को निर्धारित करने वाला मुख्य कारक है।

48. (2) अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र

आईटीसीजेड या अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र एक निम्न वायुदाब वाला क्षेत्र है जहाँ उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें आपस में मिलती हैं। गर्मियों के दौरान, सूर्य की स्थिति बदलने के साथ यह क्षेत्र उत्तर की ओर गंगा के मैदानों की ओर खिसक जाता है। इस खिसकाव के कारण ही दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें विषुवत रेखा को पार कर भारत की ओर खिंची चली आती हैं, जो अंततः दक्षिण-पश्चिमी मानसून के रूप में वर्षा प्रदान करने का मुख्य कारण बनती हैं।

NODIA

49. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv

भारत में वर्षा का वितरण क्षेत्रीय विविधताओं पर निर्भर करता है। जैसलमेर जैसे सुदूर पश्चिमी राजस्थान में 20 सेमी से भी कम वर्षा होती है। दक्कन के पठार के आंतरिक हिस्से वृष्टि छाया में होने के कारण 50 से 100 सेमी वर्षा प्राप्त करते हैं। पूर्वी गंगा के मैदानों में वर्षा की मात्रा 100 से 200 सेमी के बीच रहती है। इसके विपरीत, पश्चिमी तटीय मैदानों पर मानसूनी पवनें सीधे टकराती हैं, जिससे वहाँ 250 सेमी से अधिक की मूसलाधार और प्रचुर वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है।

50. (1) उत्तरी मैदानों से दक्षिण-पश्चिमी मानसून का पीछे हटना

लौटता हुआ मानसून वह प्रक्रिया है जिसमें दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाएँ भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी मैदानों से पीछे हटना शुरु कर देती हैं। यह आमतौर पर सितंबर और अक्टूबर के महीने में होता है जब सूर्य की किरणें दक्षिण की ओर खिसकने लगती हैं। इसके परिणामस्वरूप उत्तर भारत में निम्न दाब का क्षेत्र कमजोर हो जाता है और हवाएँ समुद्र की ओर लौटने लगती हैं। इस ऋतु के दौरान मौसम साफ हो जाता है

31. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत के उत्तरी मैदानों में मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा पूर्व दिशा से प्रवेश करती है और हिमालय के साथ-साथ पश्चिम की ओर बढ़ती है। जैसे-जैसे ये हवाएँ आंतरिक भागों में आगे बढ़ती हैं, वर्षा के माध्यम से इनकी नमी की मात्रा लगातार कम होती जाती है। यही कारण है कि कोलकाता से दिल्ली और आगे राजस्थान की ओर बढ़ने पर वर्षा की वार्षिक मात्रा में क्रमिक कमी देखी जाती है, जिससे पूर्व में अधिक और पश्चिम में कम वर्षा होती है।

32. (2) दक्कन के पठार की वर्षा 250 सेमी से अधिक है
भारत में वर्षा का वितरण भौगोलिक विविधताओं के कारण अत्यंत असमान है। पश्चिमी घाट और उत्तर-पूर्वी राज्यों में 400 सेमी से अधिक भारी वर्षा होती है, जबकि पश्चिमी राजस्थान में यह 20 सेमी से भी कम रह जाती है। दक्कन का पठार पश्चिमी घाट के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण काफी कम वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत आमतौर पर 60 सेमी से कम होता है, इसलिए इसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र कहना पूरी तरह त्रुटिपूर्ण है।

33. (2) कीपाकार स्थलाकृति जो आर्द्र हवाओं को ऊपर उठने के लिए विवश करती है
चेरापूंजी और मौसिनराम मेघालय की खासी पहाड़ियों के दक्षिणी किनारे पर स्थित हैं, जहाँ पहाड़ियों की बनावट एक कीप जैसी है। जब बंगाल की खाड़ी से नमी से लदी हवाएँ इस क्षेत्र में प्रवेश करती हैं, तो वे इस कीपाकार घाटी में फंस जाती हैं और उन्हें बहुत तेजी से ऊपर उठना पड़ता है। हवा के अचानक ऊपर उठने और ठंडा होने से वहाँ निरंतर और अत्यधिक मूसलाधार वर्षा होती है, जो इन स्थानों को विश्व में सर्वाधिक नम बनाती है।

34. (1) A, B, C, D
भारत में वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर घटती है। मेघालय में मानसूनी हवाएँ सीधे पहाड़ियों से टकराती हैं, जिससे वहाँ सर्वाधिक वर्षा होती है। उत्तर प्रदेश गंगा के मैदानों के मध्य में स्थित होने के कारण मध्यम वर्षा प्राप्त करता है। पंजाब और अधिक पश्चिम में होने से कम वर्षा प्राप्त करता है, जबकि राजस्थान का अधिकांश भाग अरावली के प्रभाव और पश्चिमी स्थिति के कारण सबसे कम औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाला राज्य बना रहता है।

35. (3) महान हिमालय के पीछे वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होना
लद्दाख का क्षेत्र महान हिमालय पर्वतमाला के उत्तर में स्थित है, जो दक्षिण-पश्चिमी मानसून की हवाओं के लिए एक विशाल अवरोध का काम करती है। मानसून की नमी युक्त हवाएँ हिमालय को पार नहीं कर पातीं, जिससे लद्दाख एक वृष्टि छाया क्षेत्र बन जाता है। यहाँ वर्षा और हिमपात की मात्रा बहुत कम होती है, जिसके कारण यह क्षेत्र अत्यधिक शुष्क रहता है। ऊँचाई पर स्थित होने और वर्षा की कमी के कारण ही इसे शीत मरुस्थल के नाम से जाना जाता है।

36. (4) Amw
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार, भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों के लिए Amw कोड का उपयोग किया जाता है। यहाँ 'A' उष्णकटिबंधीय जलवायु को दर्शाता है, 'm' मानसूनी प्रकार की वर्षा को इंगित करता है और 'w' का अर्थ है कि यहाँ शीत ऋतु में लघु शुष्क काल होता है। मालाबार तट और कोंकण क्षेत्र इसी श्रेणी में आते हैं, जहाँ दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान अत्यधिक भारी वर्षा होती है और सर्दियों का मौसम आमतौर पर सूखा और सुखद रहता है।

37. (4) I, II, III और IV
कोपेन के अनुसार राजस्थान की जलवायु को चार मुख्य क्षेत्रों में बाँटा गया है। पश्चिमी रेगिस्तान के लिए BWhw कोड का प्रयोग होता है, जबकि अरावली के पश्चिम के अर्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र को BShw कहा जाता है। पूर्वी राजस्थान के उप-आर्द्र मैदान Cwg श्रेणी के अंतर्गत आते हैं जहाँ सर्दियों में शुष्कता रहती है। राज्य के सुदूर दक्षिणी भाग, जैसे डूंगरपुर और बांसवाड़ा, उष्णकटिबंधीय सवाना या Aw जलवायु के अंतर्गत आते हैं जहाँ गर्मियों में वर्षा और सर्दियों में सूखा रहता है।

38. (2) अल नीनो
अल नीनो एक जटिल मौसम संबंधी परिघटना है जिसमें मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के पानी का तापमान सामान्य से अधिक बढ़ जाता है। यह परिवर्तन वायुमंडलीय दबाव और हवाओं के चक्र को प्रभावित करता है, जिसका सीधा असर वैश्विक मौसम प्रणालियों पर पड़ता है। भारतीय संदर्भ में, अल नीनो का होना आमतौर पर दक्षिण-पश्चिमी मानसून को कमजोर बनाता है, जिससे देश के कई हिस्सों में वर्षा की कमी और सूखे जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होने की संभावना प्रबल हो जाती है।

39. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
अल नीनो और ला नीना प्रशांत महासागर की समुद्री सतह के तापमान में होने वाले बदलाव हैं जो भारतीय मानसून को प्रभावित करते हैं। अल नीनो के दौरान वर्षा लाने वाली हवाएँ कमजोर हो जाती हैं, जिससे भारत में सूखा पड़ने की आशंका रहती है। इसके विपरीत, ला नीना के दौरान प्रशांत महासागर का पानी ठंडा होता है, जो मानसूनी हवाओं को और अधिक शक्तिशाली बना देता है। इसके परिणामस्वरूप भारत में सामान्य से अधिक वर्षा होती है और कभी-कभी बाढ़ की स्थिति भी बनती है।

40. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु को विशिष्ट कोडों से पहचाना जाता है। कोरोमंडल तट पर गर्मियों में शुष्कता के कारण इसे 'As' कोड दिया गया है। प्रायद्वीपीय पठार का अधिकांश भाग उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु या 'Aw' के अंतर्गत आता है। उत्तर भारत के विशाल गंगा के मैदानों में शुष्क सर्दियों वाली मानसूनी जलवायु पाई जाती है जिसे 'Cwg' कहते हैं। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख जैसे ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ध्रुवीय प्रकार की ठंडी जलवायु मिलती है जिसे 'E' कोड द्वारा दर्शाया जाता है।

NODIA

21. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
उत्तर-पूर्वी मानसून पवनें शीत ऋतु के दौरान स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं, इसलिए ये स्वभाव से शुष्क और ठंडी होती हैं। हालांकि, जब ये पवनें बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरती हैं, तो ये वहाँ से पर्याप्त नमी ग्रहण कर लेती हैं। नमी से भरी ये हवाएँ जब तमिलनाडु के कोरोमंडल तट से टकराती हैं, तो वहाँ सर्दियों में भारी वर्षा करती हैं। इस प्रकार, उत्तर-पूर्वी मानसून दक्षिण भारत के पूर्वी हिस्सों के लिए वर्षा का मुख्य स्रोत होता है।

22. (1) केवल I, II, III और IV
पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय तूफान हैं जो पछुआ जेट स्ट्रीम के माध्यम से भारत पहुँचते हैं। ये सर्दियों में पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में हल्की से मध्यम वर्षा लाते हैं, जिसे राजस्थान में मावठ कहा जाता है। यह वर्षा रबी की फसलों, विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत के समान मानी जाती है। खरीफ की फसलें मुख्य रूप से गर्मियों के मानसून पर निर्भर करती हैं, इसलिए इन विक्षोभों का उनके उत्पादन में कोई प्रत्यक्ष योगदान नहीं होता।

23. (4) तटीय प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में सामान्य पाला पड़ना
भारत में शीत ऋतु के दौरान उत्तरी भाग में कड़ाके की ठंड पड़ती है और रात का तापमान बहुत नीचे चला जाता है। इस समय उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनें सक्रिय रहती हैं जो स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं। प्रायद्वीपीय भारत में समुद्र के समकारी प्रभाव के कारण तापमान मध्यम बना रहता है और वहाँ पाला पड़ने जैसी स्थितियाँ उत्पन्न नहीं होतीं। पाला मुख्य रूप से हिमालय की तलहटी और उत्तर भारतीय मैदानी क्षेत्रों की एक प्रमुख शीतकालीन विशेषता है।

24. (1) मार्च से मई
भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, मार्च से मई तक की अवधि को ग्रीष्म ऋतु के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस दौरान सूर्य के उत्तरायण होने के कारण भारत में तापमान तेजी से बढ़ने लगता है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में अत्यधिक गर्मी और शुष्कता महसूस की जाती है, जबकि दक्षिण भारत में समुद्र के प्रभाव से तापमान कुछ नियंत्रित रहता है। यह ऋतु मानसून के आने से ठीक पहले की अवधि होती है जब स्थानीय तापन से निम्न दाब बनता है।

25. (1) केवल I और II
लू ग्रीष्म ऋतु के दौरान उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत की एक विशिष्ट विशेषता है। यह अत्यंत गर्म, शुष्क और तीव्र गति से चलने वाली हवा है जो दोपहर के समय सबसे अधिक प्रभावी होती है। लू का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक और कभी-कभी घातक भी हो सकता है, जिससे लू लगना या निर्जलीकरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए इन हवाओं के संपर्क में आने से बचने की सलाह दी जाती है ताकि स्वास्थ्य संबंधी खतरों को टाला जा सके।

26. (1) काल बैसाखी
बैसाख के महीने में पश्चिम बंगाल और असम में शाम के समय अक्सर तीव्र गरज के साथ मूसलाधार वर्षा और तेज हवाएँ चलती हैं। इन स्थानीय तूफानों को पश्चिम बंगाल में काल बैसाखी कहा जाता है, जिसका अर्थ है बैसाख के महीने में आने वाली आपदा। असम में इन्हें चाय की खेती के लिए लाभदायक माना जाता है। ये तूफान अत्यधिक स्थानीय तापन और आर्द्रता के मिलने से पैदा होते हैं और अक्सर जान-माल के भारी नुकसान का कारण भी बनते हैं।

27. (4) पंजाब और राजस्थान
शीत ऋतु के दौरान भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभ उत्तर-पश्चिमी भारत के मौसम को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। इनसे होने वाली वर्षा मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में प्राप्त होती है। राजस्थान में इसे स्थानीय भाषा में मावठ कहा जाता है। यह वर्षा इन क्षेत्रों में रबी फसलों की सिंचाई के लिए प्राकृतिक स्रोत के रूप में कार्य करती है, जबकि देश के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों में इसका प्रभाव नगण्य होता है।

28. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत की विभिन्न ऋतुओं की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं। शीत ऋतु में उत्तर भारत में आसमान साफ रहता है और रातें काफी ठंडी होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी मैदानी इलाकों में धूल भरी आँधियाँ और लू का चलना सामान्य है। दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान देश को अपनी वार्षिक वर्षा का अधिकतम हिस्सा प्राप्त होता है। मानसून के निवर्तन काल में बंगाल की खाड़ी में उठने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात अक्सर ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटों पर भारी तबाही मचाते हैं।

29. (3) यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है।
दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान तमिलनाडु का कोरोमंडल तट तुलनात्मक रूप से शुष्क रहता है क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा के समानांतर है। इसके कारण मानसूनी हवाएँ तट से टकराने के बजाय उसके साथ-साथ आगे बढ़ जाती हैं और वर्षा नहीं कर पातीं। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र पश्चिमी घाट के वृष्टि छाया क्षेत्र में भी आता है, जिसके कारण अरब सागर से आने वाली नमी युक्त हवाएँ यहाँ पहुँचने से पहले ही अपनी नमी खो देती हैं।

30. (4) मेघालय की खासी पहाड़ियाँ
मेघालय राज्य में स्थित खासी पहाड़ियाँ अपनी विशिष्ट कीपाकार आकृति के लिए प्रसिद्ध हैं, जो बंगाल की खाड़ी से आने वाली आर्द्र हवाओं को चारों ओर से घेर लेती हैं। इन पहाड़ियों के दक्षिणी ढलान पर स्थित मौसिनराम और चेरापूंजी में ये हवाएँ तेजी से ऊपर उठती हैं और संघनित होकर मूसलाधार वर्षा करती हैं। मौसिनराम को वर्तमान में दुनिया का सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान माना जाता है, जहाँ वार्षिक वर्षा का औसत बहुत अधिक ऊँचा बना रहता है।

Downloaded from www.pdf.tube

लेकिन नमी और तापमान के कारण उमस भरी गर्मी महसूस होती है।

51. (3) पंजाब
आम्र वर्षा मानसून के आगमन से ठीक पहले होने वाली एक स्थानीय वर्षा है जो मुख्य रूप से अप्रैल और मई के महीनों में होती है। यह वर्षा दक्षिण भारत के केरल, कर्नाटक और गोवा जैसे तटीय राज्यों में आम की फसल को जल्दी पकाने में बहुत सहायक होती है, इसलिए इसे यह विशेष नाम दिया गया है। पंजाब उत्तर-पश्चिमी भारत का एक राज्य है जहाँ इस प्रकार की मानसूनी वर्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि वहाँ मानसून-पूर्व की परिस्थितियाँ और फसल चक्र पूरी तरह अलग हैं।

52. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में मानसून की वर्षा अपनी अनिश्चितता और क्षेत्रीय असमानता के लिए जानी जाती है। इसका मुख्य कारण मानसून गर्त की स्थिति में होने वाले लगातार बदलाव और समय-समय पर उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय विक्षोभ हैं। ये प्रणालियाँ यह निर्धारित करती हैं कि किस क्षेत्र में भारी वर्षा होगी और कहाँ सूखा रहेगा। इसके अतिरिक्त, मानसून का समय पर आना या देरी से होना भी इन वायुमंडलीय दाब प्रणालियों की गतिशीलता पर निर्भर करता है, जिससे वर्षा का वितरण अत्यंत अप्रत्याशित हो जाता है।

53. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
भारत का जलवायु स्वरूप बहुत विविध है, इसलिए पूरे देश को एक समान उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु वाला कहना पूरी तरह सही नहीं है; यहाँ मरुस्थलीय से लेकर अल्पाइन तक विभिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है। हालांकि, हिमालय पर्वतमाला की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक दीवार की तरह खड़ी है। यह उत्तर से आने वाली बर्फीली मध्य एशियाई हवाओं को भारत में घुसने से रोकती है, जिससे भारतीय उपमहाद्वीप का तापमान शेष एशिया के अन्य समान अक्षांशों की तुलना में काफी अधिक बना रहता है।

54. (2) उच्च तापमान और आर्द्रता वाला संक्रमण काल
अक्टूबर की गर्मी मानसून की वापसी के दौरान महसूस की जाने वाली एक विशेष मौसमी परिघटना है। जब मानसूनी बादल हट जाते हैं, तो आकाश साफ होने से सूर्य का प्रकाश सीधा धरती पर पड़ता है, जिससे दिन का तापमान बढ़ जाता है। हवा में अभी भी पर्याप्त नमी मौजूद होती है, और उच्च तापमान व उच्च आर्द्रता के इस मेल से मौसम बहुत उमस भरा और कष्टकारी हो जाता है। उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में इस संक्रमणकालीन मौसम को ही अक्टूबर की गर्मी कहा जाता है।

55. (2) शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, दक्षिण-पश्चिमी मानसून, लौटता मानसून
भारत में ऋतुओं का क्रम पृथ्वी की वार्षिक गति और वायुमंडलीय बदलावों के अनुसार चलता है। वर्ष की शुरुआत शीत ऋतु (दिसंबर-फरवरी) से होती है, जिसके बाद तापमान बढ़ने पर ग्रीष्म ऋतु (मार्च-मई) आती है। इसके बाद दक्षिण-पश्चिमी मानसून (जून-सितंबर) का आगमन होता है जो देश में मुख्य वर्षा लाता है। अंत में, अक्टूबर और नवंबर के दौरान मानसून के निवर्तन या वापसी की ऋतु आती है। यह क्रमिक चक्र भारत की कृषि और संपूर्ण जनजीवन को व्यवस्थित करने का मुख्य आधार प्रदान करता है।

56. (1) अक्टूबर से नवंबर
मानसून की वापसी के समय, यानी अक्टूबर और नवंबर में, बंगाल की खाड़ी के ऊपर वायुमंडलीय दबाव की स्थिति चक्रवातों के निर्माण के लिए बहुत अनुकूल हो जाती है। इस अवधि में अंडमान सागर के पास कम दबाव के क्षेत्र बनते हैं जो तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का रूप ले लेते हैं। ये चक्रवात पश्चिम की ओर बढ़ते हुए ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के पूर्वी तटीय क्षेत्रों से टकराते हैं। इनके प्रभाव से भारी वर्षा और तेज हवाएँ चलती हैं, जिससे तटीय इलाकों में काफी तबाही होती है।

NODIA

57. (3) पश्चिमी जेट स्ट्रीम
शीत ऋतु के दौरान, ऊपरी वायुमंडल में चलने वाली पश्चिमी जेट स्ट्रीम की एक शाखा हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती है। यही शक्तिशाली वायु धारा भूमध्य सागर के ऊपर बने चक्रवातीय विक्षोभों को अपने साथ खींचकर भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी हिस्से तक लाती है। इन विक्षोभों के कारण ही सर्दियों में पंजाब, हरियाणा और हिमालयी राज्यों में हिमपात और वर्षा होती है। इस प्रकार, पश्चिमी जेट स्ट्रीम भारत के शीतकालीन वर्षा चक्र को नियंत्रित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण वायुमंडलीय विशेषता के रूप में कार्य करती है।

58. (1) केवल I, II और IV
हिंद महासागर द्विध्रुव एक समुद्री घटना है जिसमें हिंद महासागर के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों के तापमान में अंतर होता है। जब पश्चिमी हिस्सा पूर्वी हिस्से की तुलना में अधिक गर्म होता है, तो इसे सकारात्मक द्विध्रुव कहा जाता है। यह स्थिति भारत में मानसून को मजबूत करती है और अल नीनो के नकारात्मक प्रभावों को भी कम कर सकती है। इसके विपरीत, नकारात्मक द्विध्रुव मानसूनी वर्षा को कम करता है। अतः, यह परिघटना भारतीय कृषि और वर्षा के पूर्वानुमान के लिए एक महत्वपूर्ण कारक मानी जाती है।

59. (4) सूर्य का कर्क रेखा की ओर उत्तरायण होना
गर्मियों के दौरान सूर्य की किरणें सीधे कर्क रेखा पर पड़ती हैं, जिसे सूर्य का उत्तरायण होना कहते हैं। इस अत्यधिक गर्मी के कारण भारतीय भू-भाग, विशेषकर गंगा के मैदान, बहुत गर्म हो जाते हैं। तापन के कारण यहाँ की हवा ऊपर उठती है और निम्न दाब का क्षेत्र बनता है, जिससे आईटीसीजेड उत्तर की ओर खिसक जाता है। आईटीसीजेड का यह विस्थापन ही दक्षिण-पश्चिमी व्यापारिक पवनों को आकर्षित करता है, जो अंततः मानसूनी हवाओं के रूप में भारत में प्रवेश कर वर्षा का प्रमुख कारण बनती हैं।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) उत्तरी अटलांटिक महासागरीय धाराएँ
अक्षांशीय विस्तार, ऊँचाई और समुद्र से दूरी भारत की जलवायु को सीधे प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक माने जाते हैं। अक्षांश तापमान को नियंत्रित करता है, जबकि ऊँचाई और उच्चावच हवाओं के प्रवाह को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, उत्तरी अटलांटिक महासागरीय धाराएँ भारतीय उपमहाद्वीप से अत्यधिक दूर होने के कारण यहाँ की जलवायु प्रणालियों पर कोई प्रत्यक्ष या प्राथमिक प्रभाव नहीं डालती हैं, जिससे वे इस सूची में एक भिन्न कारक हैं।

2. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
हिमालय पर्वतमाला भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एक प्रमुख जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करती है। यह उत्तर से आने वाली अत्यधिक ठंडी और शुष्क मध्य एशियाई हवाओं को रोककर भारत को कड़ाके की ठंड से बचाती है। साथ ही, यह आर्द्रता से लदी दक्षिण-पश्चिमी मानसून पवनों के मार्ग में एक अवरोध उत्पन्न करती है, जिससे वे ऊपर उठने को मजबूर होती हैं और देश के मैदानी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा करती हैं।

3. (3) महाद्वीपीयता का प्रभाव
महाद्वीपीयता का प्रभाव समुद्र से दूरी के कारण उत्पन्न होता है, जो तटीय और आंतरिक भागों के तापमान में भारी अंतर पैदा करता है। तटीय क्षेत्रों में समुद्र के समकारी प्रभाव के कारण साल भर तापमान मध्यम बना रहता है। इसके विपरीत, आंतरिक भागों में समुद्र का प्रभाव कम होने से गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और सर्दियों में तीव्र ठंड पड़ती है, जिससे वहाँ तापमान की वार्षिक और दैनिक सीमा काफी बढ़ जाती है।

4. (1) केवल I और II
कर्क रेखा भारत के मध्य से गुजरती है, जो देश के उत्तरी भाग को उप-उष्णकटिबंधीय और दक्षिणी भाग को उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में विभाजित करती है। कोरिओलिस बल पृथ्वी के घूर्णन के कारण उत्पन्न होता है और यह उत्तरी गोलार्ध में चलने वाली व्यापारिक पवनों को दाईं ओर विक्षेपित करने के लिए उत्तरदायी है। तिब्बत के पठार का तीव्र तापन भारतीय मानसून के आगमन और उसकी तीव्रता को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. (3) पश्चिमी विक्षोभ
लू, आम्र वर्षा और काल बैसाखी जैसी स्थानीय पवनें और वर्षा प्रणालियाँ भारत में मुख्य रूप से ग्रीष्म ऋतु के दौरान देखी जाती हैं। ये तापन और स्थानीय वायुमंडलीय अस्थिरता का परिणाम होती हैं। दूसरी ओर, पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय तूफान हैं जो केवल शीत ऋतु के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत में वर्षा लाते हैं। इसलिए, मौसमी आधार पर पश्चिमी विक्षोभ ग्रीष्मकालीन स्थानीय पवनों से पूरी तरह भिन्न होते हैं।

6. (2) ठंडी महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति जो गर्मियों के तापमान को कम करती हैं
अरब सागर और बंगाल की खाड़ी भारतीय जलवायु के लिए नमी के प्रमुख स्रोत हैं और तटीय क्षेत्रों में तापमान को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जल निकाय गर्मियों में मानसूनी हवाओं को पर्याप्त आर्द्रता प्रदान करते हैं और चक्रवातों की उत्पत्ति के केंद्र भी हैं। यहाँ कोई ठंडी धाराएँ नहीं चलती हैं जो तापमान कम करें; इसके बजाय समुद्री प्रभाव के कारण तटीय क्षेत्रों में तापमान पूरे वर्ष मध्यम रहता है।

7. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
विभिन्न स्थानीय तूफान भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में विशिष्ट नामों से जाने जाते हैं। केरल और कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों में मानसून-पूर्व होने वाली वर्षा को आम्र वर्षा कहते हैं। असम में इसी तरह के तूफानी मौसम को बारदोली छीड़ा कहा जाता है, जबकि पश्चिम बंगाल में इसे काल बैसाखी के नाम से जाना जाता है। उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भारत के मैदानी इलाकों में गर्मियों में चलने वाली गर्म और शुष्क हवाओं को लू कहते हैं।

8. (1) ऋतु
मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द मौसिम से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ ऋतु या मौसम होता है। यह शब्द मूल रूप से उन पवनों के लिए उपयोग किया जाता था जो वर्ष के दौरान अपनी दिशा पूरी तरह से बदल लेती हैं। भारतीय संदर्भ में, यह एक विशाल मौसमी पवन प्रणाली को दर्शाता है जो गर्मियों और सर्दियों के बीच अपनी दिशा में उलटफेर करती है और पूरे उपमहाद्वीप के वर्षा चक्र को प्रभावित करती है।

9. (3) जल और थल का विभेदी तापन और शीतलन
भारत में दक्षिण-पश्चिमी मानसून की उत्पत्ति का सबसे महत्वपूर्ण कारण जल और स्थल के गर्म होने तथा ठंडा होने की अलग-अलग दर है। गर्मियों के दौरान, भारतीय भू-भाग महासागरों की तुलना में बहुत अधिक गर्म हो जाता है, जिससे उत्तर-पश्चिमी भारत में कम दबाव का क्षेत्र बन जाता है। इसके परिणामस्वरूप, हिंद महासागर के उच्च दाब क्षेत्र से नमी युक्त हवाएँ तेजी से स्थल की ओर चलने लगती हैं, जो भारतीय मानसून का मुख्य आधार बनती हैं।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी घाट भारत के पश्चिमी तट के समानांतर एक निरंतर पर्वतीय श्रृंखला के रूप में स्थित हैं। जब अरब सागर से उठने वाली नमी युक्त मानसूनी हवाएँ तट से टकराती हैं, तो ये पर्वत उन्हें ऊपर उठने के लिए विवश करते हैं। ऊँचाई पर पहुँचने पर हवा ठंडी होकर पश्चिमी ढलानों पर भारी वर्षा करती है। इसके

Click Here to Buy book on Amazon

भारत के पूर्वी तट से टकराते हैं। इनके कारण ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय जिलों में भारी तबाही, तेज वर्षा और समुद्री तूफान आते हैं। अंडमान सागर इन प्रणालियों की उत्पत्ति के लिए इस मौसम में एक प्रमुख तापीय ऊर्जा केंद्र के रूप में कार्य करता है।

70. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
विभिन्न भारतीय शहरों की जलवायु उनकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करती है। जोधपुर थार मरुस्थल के करीब होने के कारण शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु वाला शहर है। तिरुवनंतपुरम समुद्र के किनारे स्थित है, इसलिए यहाँ पूरे साल एक समान और मध्यम समुद्री जलवायु रहती है। दिल्ली समुद्र से बहुत दूर होने के कारण चरम महाद्वीपीय जलवायु का अनुभव करती है, जहाँ भीषण गर्मी और कड़ाके की ठंड पड़ती है। लेह हिमालय के ऊँचे और शुष्क हिस्से में स्थित होने के कारण शीत मरुस्थलीय जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है।

71. (4) मध्य भारतीय पठार में भारी वर्षा
भारत में शीत ऋतु की विशेषता स्वच्छ आकाश, सुहावना मौसम और कम तापमान है। इस दौरान उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में उच्च दाब विकसित होता है और पवनें स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं, जिससे हवा शुष्क रहती है। मध्य भारतीय पठार में इस मौसम में भारी वर्षा होना बिल्कुल भी सामान्य नहीं है। सर्दियों में वर्षा मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम में पश्चिमी विक्षोभों से या दक्षिण-पूर्व में लौटते मानसून से होती है। पठारी भागों में सर्दियों का मौसम आमतौर पर सूखा और साफ रहता है।

72. (1) आसपास के महासागरों का समकारी प्रभाव
गर्मियों के दौरान जब उत्तर भारत के विशाल मैदान लू और अत्यधिक गर्मी की चपेट में होते हैं, तब प्रायद्वीपीय भारत का तापमान तुलनात्मक रूप से कम और सहनीय रहता है। इसका मुख्य कारण प्रायद्वीप का तीन ओर से विशाल महासागरों से घिरा होना है। समुद्र के पानी के धीरे-धीरे गर्म होने के कारण वहाँ की समुद्री हवाएँ तटीय और आंतरिक पठारी भागों के तापमान को बहुत अधिक बढ़ने नहीं देतीं। समुद्र का यह मध्यम या समकारी प्रभाव ही दक्षिण भारत की जलवायु को उत्तर भारत की तुलना में अलग बनाता है।

73. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रीष्म ऋतु में, विशेषकर मई में, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान की धरती सूर्य की गर्मी से अत्यधिक तप जाती है। इस तीव्र गर्मी के कारण धरातल के पास की हवा गर्म होकर तेजी से ऊपर उठती है और एक स्थानीय निम्न दाब केंद्र बना देती है। इस खाली जगह को भरने के लिए आसपास की हवाएँ धूल और मिट्टी के साथ बहुत तेज गति से अंदर आती हैं, जिससे भयानक धूल भरी आँधियाँ चलती हैं। ये स्थानीय तूफान अत्यधिक तापन और वायुमंडलीय अस्थिरता का सीधा परिणाम होते हैं।

74. (1) अधिक शक्तिशाली दक्षिण-पश्चिमी मानसून जिसके कारण अक्सर बाढ़ आती है
ला नीना एक समुद्री और वायुमंडलीय घटना है जिसमें मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर का पानी सामान्य से अधिक ठंडा हो जाता है। यह स्थिति वैश्विक वायु प्रवाह को इस तरह बदलती है कि हिंद महासागर के ऊपर मानसूनी हवाएँ और अधिक शक्तिशाली हो जाती हैं। भारत के लिए ला नीना आमतौर पर बहुत लाभकारी माना जाता है क्योंकि इससे दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान सामान्य से अधिक वर्षा होती है। अच्छी वर्षा से कृषि उत्पादन बढ़ता है, हालांकि कभी-कभी इसके कारण देश के कुछ हिस्सों में बाढ़ भी आती है।

75. (4) 70 - 80%
भारत एक कृषि प्रधान देश है और इसकी अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिमी मानसून पर निर्भर करती है। मौसम विज्ञान के आँकड़ों के अनुसार, देश को अपनी कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 70 से 80 प्रतिशत हिस्सा केवल जून से सितंबर के इन चार महीनों के दौरान प्राप्त होता है। शेष वर्षा सर्दियों के विक्षोभों, लौटते मानसून और स्थानीय तूफानों से होती है। मानसून की यह भारी निर्भरता ही भारतीय अर्थव्यवस्था, जल संसाधनों और खाद्यान्न सुरक्षा को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक मानी जाती है।

NODIA

76. (1) B, D, A, C
भारतीय मानसून तंत्र एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है। सबसे पहले, ग्रीष्म ऋतु में उत्तर-पश्चिम भारत के तपते मैदानों पर अत्यधिक निम्न दाब विकसित होता है। इसके बाद, मानसून के आगमन से ठीक पहले हल्की बौछारें या मानसून-पूर्व वर्षा शुरू होती है। इसके बाद, जून में नमी से भरी हवाओं का अचानक आगमन होता है जिसे मानसून का प्रस्फोट कहते हैं। अंत में, सितंबर के बाद जब ये हवाएँ वापस लौटने लगती हैं, तो उस चरण को मानसून का निवर्तन या वापसी कहा जाता है।

77. (1) केवल I, II और III
कोपेन के अनुसार भारत के जलवायु क्षेत्र मुख्य रूप से तापमान और वर्षा के मासिक वितरण पर आधारित हैं। उत्तर भारत के विशाल मैदानों में 'Cwg' प्रकार की जलवायु पाई जाती है जहाँ सर्दियों में वर्षा नहीं होती। पश्चिमी तट, विशेषकर केरल के मालाबार क्षेत्र में, 'Amw' प्रकार की जलवायु मिलती है जहाँ भारी मानसूनी वर्षा और छोटा शुष्क काल होता है। यह कहना गलत है कि 'E' या ध्रुवीय जलवायु दक्षिण में है; यह वास्तव में केवल हिमालय के बर्फीले ऊँचे शिखरों और लद्दाख जैसे क्षेत्रों तक ही सीमित है।

78. (4) बुवाई और फसल की पैदावार को प्रभावित करने वाला सूखा
भारतीय कृषि काफी हद तक मानसूनी वर्षा के समय और उसकी मात्रा पर टिकी है। जब प्रशांत महासागर में एक शक्तिशाली अल नीनो घटना घटती है, तो यह भारतीय मानसून के प्रवाह को बाधित कर देती है। इसके कारण वर्षा में भारी कमी आती है, जिससे देश के बड़े हिस्सों में सूखे जैसे हालात पैदा हो जाते हैं। पर्याप्त पानी न मिलने से खरीफ की फसलों की बुवाई प्रभावित होती है और पैदावार में भारी गिरावट आती है, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान और देश में खाद्यान्न संकट का खतरा बढ़ जाता है।

79. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
भारत में विभिन्न प्रकार की वर्षा अलग-अलग भौतिक प्रक्रियाओं से होती है। पर्वतीय वर्षा तब होती है जब आर्द्र हवाएँ हिमालय या पश्चिमी घाट जैसे ऊँचे पहाड़ों से टकराकर ऊपर उठती हैं। चक्रवातीय वर्षा बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दाब क्षेत्रों के कारण होती है जो आंतरिक भागों की ओर बढ़ते हैं। गर्मियों के दिनों में जमीन के बहुत गर्म होने से हवा ऊपर उठती है और संवहनीय वर्षा करती है। वहीं, सर्दियों में भूमध्य सागर से आने वाले विक्षोभों के कारण उत्तर-पश्चिम भारत में वाताग्र वर्षा दर्ज की जाती है।

80. (2) केवल I, III और IV
भारत अपनी भौगोलिक विविधता के कारण विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का सामना करता है। मानसून के दौरान गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों में भारी जल प्रवाह से प्रतिवर्ष भीषण बाढ़ आती है। जलवायु परिवर्तन के कारण अब बादल फटने और सूखे जैसी चरम मौसमी घटनाएँ अधिक बार घटित हो रही हैं। लौटता मानसून अक्सर ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटों पर विनाशकारी चक्रवाती तूफान लाता है। यह सोचना गलत है कि पश्चिमी घाट सूखे को रोकते हैं; वास्तव में वे अपने पूर्वी भाग में वृष्टि छाया क्षेत्र बनाकर सूखे की संभावना बढ़ाते हैं।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 11

सिंचाई : प्रकार, स्रोत एवं प्रमुख परियोजनाएँ

1. भारतीय कृषि में सिंचाई पर अत्यधिक निर्भरता के प्राथमिक कारण का सबसे सटीक वर्णन निम्न में से कौन सा है?
(1) विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विशेष रूप से जल-गहन वाणिज्यिक फसलों की खेती
(2) मौसमी मानसूनी वर्षा का अनिश्चित और स्थानिक रूप से असमान वितरण
(3) देश के विशाल उत्तरी मैदानों में बारहमासी नदी प्रणालियों का पूर्ण अभाव
(4) नहरों के उपयोग को बढ़ाने के लिए वर्षा आधारित खेती को प्रतिबंधित करने वाले प्रशासनिक शासनादेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. भारत में सिंचाई के विभिन्न स्रोतों में से, किस स्रोत का शुद्ध सिंचित क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान है?
(1) नलकूप और कुआं सिंचाई प्रणाली
(2) सतही नहर सिंचाई नेटवर्क
(3) पारंपरिक तालाब सिंचाई जलाशय
(4) आधुनिक ड्रिप और स्प्रिंकलर प्रणालियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सूक्ष्म सिंचाई के संदर्भ में, 'फर्टिगेशन' की सटीक परिभाषा निम्न में से कौन सी है?
(1) स्प्रिंकलर प्रणाली का उपयोग करके मिट्टी की सतह से अतिरिक्त घुले हुए लवणों को हटाना
(2) तालाब सिंचाई में उपयोग करने से पहले भूजल का रासायनिक उपचार
(3) सिंचाई जल के माध्यम से फसलों को सीधे घुलनशील उर्वरक प्रदान करना
(4) भारी प्लावन सिंचाई के माध्यम से मिट्टी में उर्वरक डालने की प्रक्रिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन (A): भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्र में तालाब सिंचाई अत्यधिक प्रचलित और सफल है।
कारण (R): प्रायद्वीपीय भारत की उबड़-खाबड़ स्थलाकृति और कठोर चट्टानी धरातल प्राकृतिक गर्त बनाते हैं और नहरों व कुओं को खोदना कठिन बनाते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. भारत का निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र नहर सिंचाई के अंतर्गत सबसे बड़े निरंतर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) मालाबार तटीय मैदान
(2) दक्कन का पठार क्षेत्र
(3) भारत-गंगा के मैदान
(4) ब्रह्मपुत्र घाटी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

6. ड्रिप सिंचाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. यह वाष्पीकरण और गहरे अंतःस्रवण के माध्यम से होने वाले जल की हानि को काफी कम करता है।
II. यह गेहूं और चावल जैसी घनी बोई जाने वाली फसलों के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।
III. यह खरपतवार की वृद्धि को कम करता है क्योंकि जल सीधे जड़ क्षेत्र में दिया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्लावन नहरों और बारहमासी नहरों के बीच एक प्रमुख परिचालन अंतर की पहचान करता है?
(1) प्लावन नहरें मौसमी रूप से बहती हैं, जबकि बारहमासी नहरें वर्ष भर बहती हैं
(2) प्लावन नहरें दक्षिण में हैं, जबकि बारहमासी नहरें तटीय हैं
(3) प्लावन नहरें भूजल का उपयोग करती हैं, जबकि बारहमासी नहरें वर्षा जल का उपयोग करती हैं
(4) प्लावन नहरों में बैराज की कमी होती है, जबकि बारहमासी नहरें विनियमन के लिए बांधों का उपयोग करती हैं
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (सिंचाई पद्धति)
A. तालाब सिंचाई

(2) वे क्षेत्र जहाँ कोयले की परतों की गहराई के कारण भूजल प्राकृतिक रुप से काला होता है
(3) वे ब्लॉक जहाँ जल की निकासी वार्षिक पुनर्भरण योग्य आयतन से अधिक है
(4) औद्योगिक अपशिष्ट के निपटान के लिए विशेष रुप से आरक्षित उप-सतही क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (बांध/परियोजना)
A. भाखड़ा बांध
B. हीराकुंड बांध
C. सरदार सरोवर बांध
D. नागार्जुनसागर बांध
सूची II: (प्रमुख भौगोलिक विशेषता/तथ्य)
i. भारत का सबसे लंबा मिट्टी का बांध
ii. कृष्णा नदी पर निर्मित एक चिनाई वाली संरचना
iii. भारत का सबसे ऊंचा सीधा गुरुत्वाकर्षण बांध
iv. नर्मदा घाटी परियोजना का सबसे बड़ा बांध
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय जल नीति के तहत सूचीबद्ध उद्देश्य नहीं है?
(1) जल संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना
(2) जल संरक्षण और दक्षता को बढ़ावा देना
(3) जल की उपलब्धता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को संबोधित करना
(4) सभी सतही नदी नेटवर्कों के निजीकरण को प्रोत्साहित करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. राजस्थान फीडर नहर, जो मुख्य इंदिरा गांधी नहर तक जल ले जाती है, राजस्थान में प्रवेश करने से पहले किस राज्य से होकर सबसे लंबी दूरी तय करती है?
(1) हरियाणा
(2) पंजाब
(3) गुजरात
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित राज्यों को पढ़ें और तालाब सिंचाई के अंतर्गत उनके कुल क्षेत्रफल का प्रतिनिधित्व करने वाले सही अवरोही क्रम का चयन करें:
A. आंध्र प्रदेश
B. तमिलनाडु
C. राजस्थान
D. पंजाब
(1) B, A, C, D
(2) A, B, C, D
(3) B, C, A, D
(4) D, C, A, B
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. उत्तर-पश्चिमी भारत के नहर कमांड क्षेत्रों में प्रमुख रुप से प्रचलित 'वाराबंदी' प्रणाली को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(1) मिट्टी की नहरों को उच्च गुणवत्ता वाले कंक्रीट से पक्का करने की एक विधि
(2) डीजल से चलने वाले जल पंपों की खरीद के लिए एक वित्तीय सहायता योजना
(3) विशेष रुप से राजस्थान में उपयोग की जाने वाली एक पारंपरिक जल संचयन तकनीक
(4) किसानों को नहर के जल के समान वितरण के लिए एक घूर्णी प्रणाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. स्वतंत्र भारत में शुरु की जाने वाली पहली बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना कौन सी थी?
(1) दामोदर घाटी निगम
(2) भाखड़ा नांगल बांध परियोजना
(3) हीराकुंड नदी बांध परियोजना
(4) कोसी नदी घाटी परियोजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन (A): शुष्क क्षेत्रों में सरकार द्वारा सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को अपनाने के लिए भारी सहायता दी जाती है।
कारण (R): सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियां भूजल जलभृतों पर कृषि की निर्भरता को पूरी तरह से समाप्त कर देती हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. तुंगभद्रा बहुउद्देशीय परियोजना में कर्नाटक के किस ऐतिहासिक रुप से महत्वपूर्ण स्थल के पास एक बड़ा चिनाई वाला बांध बनाया गया है?
(1) मैसूर शहर
(2) हम्पी (होसपेटे)
(3) बीजापुर शहर
(4) श्रीरंगपट्टनम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(1) कर्नाटक और महाराष्ट्र
(2) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
(3) आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु
(4) तेलंगाना और महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (प्रमुख बांध/परियोजना)
A. टिहरी बांध
B. सरदार सरोवर
C. भाखड़ा नांगल
D. हीराकुंड
सूची II: (संबद्ध नदी)
i. सतलुज
ii. महानदी
iii. भागीरथी
iv. नर्मदा
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. टिहरी बांध को भारत के सबसे ऊंचे बांध के रूप में जाना जाता है। यह किस राज्य में स्थित है?
(1) हिमाचल प्रदेश
(2) जम्मू और कश्मीर
(3) उत्तराखंड
(4) सिक्किम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. कौन सा प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दा विशेष रूप से इंदिरा गांधी नहर जैसी बड़ी नहर प्रणालियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रत्यक्ष कृषि लाभों के अपवाद के रूप में पहचाना जाता है?
(1) वायुमंडलीय आर्द्रता में कमी
(2) जल के उपयोग के तुरंत बाद फसल की पैदावार में भारी कमी
(3) अत्यधिक शुष्कता के कारण देशी वनस्पतियों का पूर्ण उन्मूलन
(4) बड़े पैमाने पर जलभराव और द्वितीयक लवणीकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के निम्नलिखित ऐतिहासिक चरणों को पढ़ें:
A. राजस्थान फीडर का निर्माण
B. राजस्थान नहर बोर्ड का गठन
C. हरिके बैराज का समापन
D. राजस्थान नहर का नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर करना
निम्नलिखित में से कौन इन चरणों के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) C, B, A, D
(2) B, C, A, D
(3) C, A, B, D
(4) A, C, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. भारत सरकार द्वारा शुरु किए गए 'कमांड एरिया डेवलपमेंट' कार्यक्रम का मौलिक उद्देश्य क्या है?
(1) विशाल बहुउद्देशीय नदी घाटी जलविद्युत बांधों का निर्माण करना
(2) सृजित सिंचाई क्षमता और उपयोग की गई क्षमता के बीच के अंतर को कम करना
(3) किसानों को पारंपरिक कृषि से कृषि-उद्योगों की ओर स्थानांतरित करना
(4) पड़ोसी देशों के साथ जटिल जल-साझाकरण संधियों पर वार्ता करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. भारत में अंतरराज्यीय जल विवादों का निर्णय मुख्य रुप से अंतरराज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम के तहत किया जाता है। भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के तहत यह अधिनियम लागू किया गया था?
(1) अनुच्छेद 262
(2) अनुच्छेद 263
(3) अनुच्छेद 280
(4) अनुच्छेद 131
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन (A): कावेरी नदी जल विवाद भारत के सबसे पुराने अंतरराज्यीय संघर्षों में से एक है।
कारण (R): कावेरी बेसिन भारत और श्रीलंका के बीच साझा किया जाने वाला एक अंतरराष्ट्रीय नदी बेसिन है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण में शामिल प्राथमिक पक्ष निम्नलिखित में से कौन से राज्य हैं?
(1) कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल राज्य
(2) ओडिशा, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य
(3) महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्य
(4) महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात राज्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. भारत में भूजल की कमी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:

Downloaded from www.pdf.tube

(2) सरदार सरोवर बांध - पश्चिम की ओर बहने वाली तापी नदी पर निर्मित
(3) टिहरी बांध - भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम पर निर्मित
(4) हीराकुंड बांध - ओडिशा राज्य में गोदावरी नदी पर निर्मित
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. निम्नलिखित में से कौन सा घटक 'कमांड एरिया डेवलपमेंट' कार्यक्रम के पारंपरिक दायरे से मुख्य रूप से अनुपस्थित है?
(1) विशाल अंतरराज्यीय गुरुत्वाकर्षण बांधों का निर्माण
(2) खेत की नालियों और जल निकासी नालियों का निर्माण
(3) भूमि समतलीकरण और उसे आकार देना
(4) सतही और भूजल के संयुक्त उपयोग को बढ़ावा देना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के लाभार्थी राज्यों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) राजस्थान राज्य
(2) हरियाणा राज्य
(3) पंजाब राज्य
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन (A): प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के 'प्रति बूंद अधिक फसल' घटक के तहत ड्रिप सिंचाई को अत्यधिक बढ़ावा दिया जाता है।
कारण (R): ड्रिप सिंचाई गहरे अंतःस्रवण की उच्च दर को सुनिश्चित करती है, जिससे भूमिगत जलभृतों को कुशलतापूर्वक पुनर्भरण किया जा सकता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य बाढ़ नियंत्रण और सिंचाई के मामले में दामोदर घाटी निगम परियोजना का एक प्रमुख लाभार्थी माना जाता है?
(1) बिहार और उत्तर प्रदेश
(2) ओडिशा और छत्तीसगढ़
(3) पश्चिम बंगाल और झारखंड
(4) असम और मेघालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. खाड़िन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. इसे मुख्य रूप से शुष्क चट्टानी क्षेत्रों में कृषि के लिए सतही अपवाह को संचित करने के लिए अभिकल्पित किया गया है।
II. इसका उपयोग राजस्थान के जैसलमेर जिले में व्यापक रूप से किया जाता है।
III. इसमें निचली पहाड़ी ढलानों पर बना एक मिट्टी का तटबंध शामिल होता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन 'सिंचाई दक्षता' को सबसे अच्छे से परिभाषित करता है?
(1) फसलों द्वारा उपभोग किए गए जल और नहर के मुहाने पर पहुँचाए गए जल का अनुपात
(2) जलाशय में संग्रहीत जल की कुल मात्रा को जलभराव क्षेत्र से विभाजित करना
(3) वह दर जिस पर उच्च क्षमता वाली पंप इकाई द्वारा गहरा भूजल निकाला जाता है
(4) व्यस्त समय के दौरान मुख्य फीडर नहर के माध्यम से बहने वाले जल की गति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

48. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (IGNP की लिफ्ट नहर - पुराना नाम)
A. बीकानेर-लूणकरणसर लिफ्ट नहर
B. नोहर-साहवा लिफ्ट नहर
C. कोलायत लिफ्ट नहर
D. फलोदी लिफ्ट नहर
सूची II: (नया नाम)
i. डॉ. करणी सिंह लिफ्ट नहर
ii. गुरु जंभेश्वर लिफ्ट नहर
iii. कंवर सेन लिफ्ट नहर
iv. चौधरी कुंभाराम लिफ्ट नहर
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. भारत में विशिष्ट राष्ट्रीय जल नीतियों के दिशानिर्देशों के आधार पर, निम्नलिखित जल आवंटन प्राथमिकताओं का सही अवरोही क्रम चुनें:
A. पारिस्थितिकी
B. पेयजल
C. कृषि-उद्योग
D. सिंचाई
E. जलविद्युत
(1) B, D, E, A, C

(3) यह सुनिश्चित करना कि जल मिट्टी के कटाव के बिना ढलानों से तीव्रता से नीचे बहता है
(4) पौधों के पत्तों को सीधे हाइड्रेट करने के लिए जड़ क्षेत्र की उपेक्षा करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जिला मुख्य इंदिरा गांधी नहर या उसकी प्रमुख लिफ्ट शाखाओं के सीधे कमांड क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) डूंगरपुर
(2) जैसलमेर
(3) बीकानेर
(4) चुरु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. भाखड़ा नांगल जलाशय के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन तथ्यात्मक है?
(1) बांध के पीछे बने विशाल जलाशय का नाम गांधी सागर है
(2) यह मुख्य रूप से यमुना नदी के मौसमी जल प्रवाह पर निर्भर करता है
(3) भाखड़ा बांध के पीछे बने जलाशय को गोविंद सागर के नाम से जाना जाता है
(4) इसे विशेष रूप से नई दिल्ली को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए अभिकल्पित किया गया था
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. इसका गठन अंतरराज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम के तहत किया गया था।
II. इसने गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के बीच विवाद का निर्णय किया।
III. इसने सरदार सरोवर बांध की ऊंचाई को स्थायी रूप से 90 मीटर तक सीमित कर दिया।
IV. इसने परियोजना प्रभावित परिवारों के उचित पुनर्वास और पुनर्व्यवस्था का आदेश दिया।
V. इसने नर्मदा जल का अधिकतम भाग मध्य प्रदेश को आवंटित किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. तुंगभद्रा नदी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह पश्चिम की ओर बहती है और सीधे अरब सागर में गिरती है
(2) इसका उद्गम मध्य भारत के ऊंचे अमरकंटक पठार से होता है
(3) यह कृष्णा नदी की एक प्रमुख दाहिने तट की सहायक नदी है
(4) यह उत्तरी भारत में स्थित एक स्वतंत्र बारहमासी नदी है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (अंतरराज्यीय जल विवाद)
A. रावी और व्यास जल विवाद
B. महादयी जल विवाद
C. वंशधारा जल विवाद
D. गोदावरी जल विवाद
सूची II: (शामिल राज्य)
i. आंध्र प्रदेश और ओडिशा
ii. पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
iii. महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और ओडिशा
iv. गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन I: तटीय क्षेत्रों में भूजल के अत्यधिक दोहन से ताजे पानी के जलभृतों में खारे जल का प्रवेश हो सकता है।
कथन II: जब जलस्तर औसत समुद्र तल से नीचे गिर जाता है, तो हाइड्रोलिक ग्रेडिएंट उलट जाता है, जिससे समुद्र का जल अंतर्देशीय क्षेत्रों की ओर बढ़ जाता है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(4) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. खराब जल निकासी वाली, अत्यधिक सिंचित मिट्टी में केशिका क्रिया की घटना किस विशिष्ट कृषि समस्या को जन्म देती है?
(1) मृदा लवणीकरण
(2) नाइट्रोजन स्थिरीकरण
(3) त्वरित मृदा अपरदन
(4) ह्यूमस निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. भारत की प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं के संदर्भ में, सही युग्म की पहचान करें:
(1) दामोदर घाटी निगम - महानदी बेसिन प्रणाली को नियंत्रित करता है

Click Here to Buy book on Amazon

(4) यह अपनी संपूर्ण जल आपूर्ति यमुना नदी से प्राप्त करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन I: भारत की राष्ट्रीय जल नीति इस बात पर बल देती है कि जल एक दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधन है जिसे नदी बेसिन दृष्टिकोण पर नियोजित और प्रबंधित किया जाना चाहिए।
कथन II: एक नदी बेसिन एक विशिष्ट हाइड्रोलॉजिकल इकाई है, जो इसे बहु-क्षेत्रीय जल नियोजन के लिए सबसे वैज्ञानिक आधार बनाती है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(4) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित में से कौन सा एक व्यापक कमांड एरिया डेवलपमेंट कार्यक्रम के कार्यान्वयन से जुड़ा प्रत्यक्ष लाभ नहीं है?
(1) क्षेत्र की समग्र फसल सघनता में महत्वपूर्ण वृद्धि
(2) अंतिम छोर के किसानों को जल का न्यायसंगत वितरण
(3) बेहतर जल निकासी प्रणाली नेटवर्क के माध्यम से जलभराव में कमी
(4) कमांड क्षेत्र में कुल वार्षिक वर्षा का तत्काल दोगुना होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. वे एक साथ सिंचाई, बिजली उत्पादन, बाढ़ नियंत्रण और नौवहन की सेवा करते हैं।
II. जवाहरलाल नेहरु ने उन्हें "आधुनिक भारत के मंदिर" कहा था।
III. इन बड़े बांधों का पर्यावरणीय प्रभाव सार्वभौमिक रुप से नगण्य रहा है।
IV. उन्हें अक्सर वनों और कृषि योग्य भूमि के बड़े क्षेत्रों को जलमग्न करने की आवश्यकता होती है।
V. हीराकुंड बांध बहुउद्देशीय परियोजना का एक उदाहरण है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III और V
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. 'एक्विफर' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
(1) मौसमी वर्षा जल अपवाह को संग्रहीत करने के लिए उपयोग किया जाने वाला मानव निर्मित सतही जलाशय
(2) अतिरिक्त बाढ़ के जल को मोड़ने के लिए अभिकल्पित एक नहर तंत्र
(3) भूजल को संग्रहीत करने और प्रदान करने में सक्षम एक भूगर्भीय संरचना
(4) पूरे पश्चिमी भारत में पाई जाने वाली एक पारंपरिक बावड़ी संरचना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (नदी प्रणाली)
A. सतलुज प्रणाली
B. कृष्णा नदी
C. महानदी बेसिन
D. नर्मदा घाटी
सूची II: (संबद्ध नहर/परियोजना)
i. नागार्जुनसागर दाहिनी नहर
ii. सरहिंद नहर
iii. नर्मदा मुख्य नहर
iv. बरगढ़ नहर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. भारत में अंतरराज्यीय जल विवादों के उत्पन्न होने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) नदी और राज्य की सीमाओं के बीच असंगति और सीमित संसाधन
(2) ऐसे जटिल विवादों में मध्यस्थता करने के लिए किसी भी संघीय कानून का पूर्ण अभाव
(3) सर्दियों के दौरान सभी प्रमुख प्रायद्वीपीय नदियों का पूरी तरह से सूख जाना
(4) केंद्र सरकार द्वारा सभी नदियों के जल पर विशेष नियंत्रण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. निम्नलिखित में से सिंचाई की कौन सी विधि उस कृषि क्षेत्र के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है जिसकी विशेषता अत्यधिक पारगम्य रेतीली मिट्टी है जहाँ जल धारण क्षमता अत्यंत कम है?
(1) थाला प्लावन सिंचाई
(2) ड्रिप सिंचाई
(3) कूँड सिंचाई
(4) कच्ची नहर सिंचाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

(2) B, D, A, E, C
(3) B, A, D, E, C
(4) D, B, E, C, A
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
कथन I: इंदिरा गांधी नहर ने पश्चिमी राजस्थान में बंजर मरुस्थल को हरे-भरे कृषि क्षेत्रों में बदल दिया है।
कथन II: थार मरुस्थल में व्यापक नहर नेटवर्क ने बड़ोपल जैसे कई क्षेत्रों में गंभीर जलभराव और 'सेम' की समस्या उत्पन्न कर दी है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I में वर्णित गतिविधियों का प्रत्यक्ष परिणाम है।
(4) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन वे पूरी तरह से असंबंधित हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. वर्षा जल संचयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. आधुनिक समय में छत पर वर्षा जल संचयन मुख्य रूप से एक शहरी घटना है।
II. वर्षा जल संचयन तूफानी अपवाह को कम करने में सहायता करता है और इस प्रकार शहरी बाढ़ को कम करता है।
III. इसमें भूजल पुनर्भरण के बिना सतही टैंकों में जल का भंडारण कड़ाई से शामिल है।
IV. केंद्रीय भूजल बोर्ड 'डार्क ज़ोन' की समस्या से निपटने के लिए वर्षा जल संचयन की अत्यधिक अनुशंसा करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. सतही जल सिंचाई और भूजल सिंचाई के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(1) सतही सिंचाई के लिए किसी बुनियादी ढांचे की आवश्यकता नहीं होती है, जबकि भूजल बांधों का उपयोग करता है
(2) सतही सिंचाई दक्षिण में होती है, जबकि भूजल उत्तर में होता है
(3) भूजल सिंचाई सतही नहर प्रणालियों की तुलना में कहीं अधिक जलभराव का कारण बनती है
(4) सतही जल नदियों और नहरों का उपयोग करता है, जबकि भूजल उप-सतही कुओं का उपयोग करता है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. प्रायद्वीपीय पठार की उन प्रमुख नदियों के सही पूर्व से पश्चिम भौगोलिक क्रम की पहचान करें जिनमें प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं स्थित हैं:
(1) महानदी, गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा
(2) नर्मदा, कृष्णा, गोदावरी, महानदी
(3) महानदी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा
(4) गोदावरी, महानदी, कृष्णा, नर्मदा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. टिहरी बांध परियोजना किस प्राथमिक पर्यावरणीय और भौगोलिक कारण से ऐतिहासिक रूप से विवादास्पद रही है?
(1) पश्चिमी घाट के जैव विविधता हॉटस्पॉट का पूर्ण विनाश
(2) हिमालय में एक अत्यधिक सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र में इसकी स्थिति
(3) मानसून के दौरान गंगा नदी को पूरी तरह से सुखाने में इसकी भूमिका
(4) ब्रह्मपुत्र नदी में जल का बड़े पैमाने पर अंतर-बेसिन हस्तांतरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. नागार्जुनसागर परियोजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) लाल बहादुर नहर - तुंगभद्रा परियोजना की बाईं तट की नहर
(2) जवाहर नहर - भाखड़ा नांगल की दाहिनी तट की नहर
(3) जवाहर नहर - इंदिरा गांधी नहर की दाहिनी तट की नहर
(4) जवाहर नहर - नागार्जुनसागर की दाहिनी तट की नहर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. तालाब सिंचाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. यह काफी हद तक मानसून की अनिश्चितताओं पर निर्भर है।
II. इसके लिए प्रमुख बहुउद्देशीय बांधों के बराबर बड़े पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
III. उथली गहराई के कारण उच्च वाष्पीकरण हानि एक महत्वपूर्ण कमी है।
IV. गाद जमना लगातार तालाबों की भंडारण क्षमता को कम करता है।
V. यह पंजाब के समतल मैदानों में सिंचाई की प्रमुख विधि है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और V
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भूजल उपयोग के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन 'डार्क ज़ोन' का सटीक वर्णन करता है?
(1) वे क्षेत्र जहाँ स्थानीय भूजल में सूर्य का प्रकाश बिल्कुल नहीं पहुँचता

Downloaded from www.pdf.tube

B. नलकूप सिंचाई
C. खाड़िन
D. प्लावन नहरें

सूची II: (क्षेत्र)
i. पश्चिमी राजस्थान
ii. पंजाब और हरियाणा के मैदान
iii. पंजाब के ऐतिहासिक बाढ़ के मैदान
iv. तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश

(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में कच्ची सतही नहर सिंचाई से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण हानि क्या है?
(1) गहरे स्थित भूमिगत ताजे पानी के जलभृतों का तेजी से कम होना
(2) आधुनिक मशीनीकरण की अत्यधिक उच्च प्रारंभिक वित्तीय लागत
(3) गंभीर मृदा जलभराव और प्रेरित माध्यमिक लवणीकरण
(4) नदी के प्राकृतिक पारिस्थितिक प्रवाह में पूर्ण अवरोध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. भाखड़ा नांगल परियोजना निम्नलिखित में से किन राज्यों का संयुक्त उपक्रम है?
(1) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
(2) हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब
(3) पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश
(4) राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. हीराकुंड बांध परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. यह ओडिशा राज्य में महानदी पर बना है।
II. यह विश्व के सबसे लंबे मिट्टी के बांधों में से एक है।
III. इसे केवल जलविद्युत उत्पादन के लिए अभिकल्पित किया गया था और इसमें सिंचाई का कोई घटक नहीं था।
IV. यह परियोजना महानदी डेल्टा में बाढ़ की स्थिति को काफी कम करती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. दामोदर घाटी निगम की स्थापना मुख्य रूप से किस प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय नदी घाटी परियोजना के प्रतिरूप पर की गई थी?
(1) चीन में स्थित थ्री गोरजेस डैम बहुउद्देशीय परियोजना
(2) संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित टेनेसी वैली अथॉरिटी परियोजना
(3) मिस्र में स्थित असवान हाई डैम जलविद्युत परियोजना
(4) ऑस्ट्रेलिया में स्थापित स्नोई माउंटेन्स स्कीम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. उत्तर से दक्षिण की ओर उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख बांधों के सही क्रम की पहचान करें:
(1) भाखड़ा नांगल, टिहरी, सरदार सरोवर, नागार्जुनसागर
(2) टिहरी, भाखड़ा नांगल, नागार्जुनसागर, सरदार सरोवर
(3) भाखड़ा नांगल, टिहरी, नागार्जुनसागर, सरदार सरोवर
(4) टिहरी, सरदार सरोवर, भाखड़ा नांगल, नागार्जुनसागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

14. निम्नलिखित में से किस मुख्य नदी पर नागार्जुनसागर बांध बनाया गया है?
(1) गोदावरी
(2) कावेरी
(3) तुंगभद्रा
(4) कृष्णा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. इंदिरा गांधी नहर परियोजना को जल की आपूर्ति मुख्य रूप से हरिके बैराज से प्राप्त होती है। यह बैराज किन दो नदियों के संगम पर स्थित है?
(1) सतलुज और व्यास
(2) सतलुज और रावी
(3) व्यास और रावी
(4) चिनाब और झेलम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. सरदार सरोवर परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. यह गुजरात में नर्मदा नदी पर बना है।
II. यह गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान को सिंचाई और विद्युत का लाभ प्रदान करता है।
III. नर्मदा बचाओ आंदोलन ने बांध की ऊंचाई बढ़ाने का पुरजोर समर्थन किया।
IV. उपयोग किए गए कंक्रीट के आयतन के मामले में यह नर्मदा घाटी परियोजना का सबसे बड़ा बांध है।
V. इस परियोजना में नहरों का एक नेटवर्क शामिल है जो कच्छ और सौराष्ट्र के सूखा प्रवण क्षेत्रों तक पहुँचता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III और V
(4) केवल I, II और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. तुंगभद्रा बहुउद्देशीय परियोजना में प्रमुख भागीदार राज्य कौन से हैं?

66. राजस्थान की मूल निवासी निम्नलिखित पारंपरिक जल संरक्षण संरचनाओं को पढ़ें:
I. टांका
II. बावड़ी
III. नाडी
उपरोक्त में से कौन सा/से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सी नदी एक अपवाद है, क्योंकि यह सामान्य रूप से 'कावेरी जल विवाद' के रूप में जाने जाने वाले अंतरराज्यीय जल विवाद का भाग नहीं है?
(1) कावेरी नदी
(2) हेमावती नदी
(3) तुंगभद्रा नदी
(4) कबिनी नदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
नोट: A और B को एक ही नदी पर स्थित लेकिन अलग-अलग बांध मानिए।
सूची I: (DVC के बांध)
A. तिलैया बांध
B. मैथन बांध
C. पंचेत बांध
D. कोनार बांध
सूची II: (नदी/सहायक नदी)
i. बराकर नदी
ii. बराकर नदी
iii. दामोदर नदी
iv. कोनार नदी
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में 'सेम' की समस्या निम्नलिखित में से किस कारण से होती है?
(1) अत्यधिक शुष्क खेती पद्धतियों के कारण होने वाला तीव्र वायु अपरदन
(2) अत्यधिक नलकूपों के कारण गहरे जलभृतों का अचानक कम होना
(3) गहन नहर सिंचाई के कारण जलभराव और बढ़ता जलस्तर
(4) मौसमी घग्गर नदी के तल में औद्योगिक अपशिष्ट का बहाव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सरदार सरोवर बांध मुख्य रूप से नर्मदा बचाओ आंदोलन के नेतृत्व में भारी विवादों से घिरा रहा। इस आंदोलन का मुख्य केंद्र क्या था?
(1) गुजरात और महाराष्ट्र के बीच जल रॉयल्टी भुगतान को लेकर विवाद
(2) पर्यावरणीय चिंताएं और आदिवासी समुदायों का विस्थापन
(3) बांध के भौतिक स्थान को पूरी तरह से मध्य प्रदेश में स्थानांतरित करने की मांग
(4) परियोजना को विशेष रूप से जलविद्युत संयंत्र में बदलने के आंदोलन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. सिंचाई के भौगोलिक वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. उत्तर प्रदेश में भारत का सबसे बड़ा कुल सिंचित क्षेत्र है।
II. पंजाब में अपने शुद्ध बोए गए क्षेत्र का सिंचाई के अंतर्गत उच्चतम प्रतिशत है।
III. मिजोरम कृषि के लिए घने नहर नेटवर्क पर अत्यधिक निर्भर है।
IV. गुजरात राज्य में कुआं सिंचाई पूरी तरह से अनुपस्थित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. पिछले कुछ दशकों में प्रायद्वीपीय भारत में तालाब सिंचाई की घटती दक्षता का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से क्या माना जाता है?
(1) तालाबों के तल पर अतिक्रमण, गाद जमना और खराब रखरखाव
(2) कृषि का ध्यान वृक्षारोपण फसल प्रणालियों की ओर स्थानांतरित होना
(3) सतही जल स्रोतों के उपयोग पर सरकारी सख्त प्रतिबंध
(4) सिंचाई तालाबों की सुरक्षा दीवारों को नष्ट करने वाले भूकंप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के बारे में सबसे सटीक कथन की पहचान करें:
(1) यह विशेष रूप से गुरुत्वाकर्षण-प्रवाह वाली नहर है जिसमें इसके मार्ग में कहीं भी लिफ्ट की आवश्यकता नहीं होती है।
(2) यह शुष्क जिलों को छोड़कर केवल अरावली पर्वतमाला को जल प्रदान करती है।
(3) इसके कमांड क्षेत्र विकास में रेत के टीलों को स्थिर करने के लिए व्यापक वनीकरण शामिल है।

Click Here to Buy book on Amazon

I. पंजाब और हरियाणा के उत्तर-पश्चिमी राज्य गंभीर भूजल दोहन प्रदर्शित करते हैं।
II. कृषि पंपों के लिए निशुल्क या अत्यधिक रियायती बिजली ने कमी की दर को तीव्र कर दिया है।
III. भूजल की निरंतर कमी से आर्सेनिक और फ्लोराइड जैसे प्राकृतिक संदूषकों की सांद्रता में कोई परिवर्तन नहीं आता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. सिंचाई दक्षता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा 'जल का संयुक्त उपयोग' की सही अवधारणा की पहचान करता है?
(1) सभी गहरे भूजल भंडारों को संरक्षित करते हुए केवल ताजे सतही जल पर निर्भर रहना
(2) सभी प्रकार के कृषि कार्यों के लिए विशेष रूप से उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग करना
(3) वर्षा जल संचयन को विशुद्ध रूप से वर्षा आधारित खेती तकनीकों के साथ एकीकृत करना
(4) संसाधन दक्षता को अधिकतम करने के लिए सतही और भूजल का नियोजित उपयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (पारंपरिक वर्षा जल संचयन संरचना)
A. जोहड़
B. सुरंगम
C. ज़िंग
D. एरी
सूची II: (राज्य)
i. तमिलनाडु
ii. लद्दाख
iii. केरल
iv. राजस्थान
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. राष्ट्रीय जल नीति 2012 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म एक गलत कथन की पहचान करता है?
(1) यह जल को एक आर्थिक वस्तु के रूप में मानने की वकालत करता है।
(2) यह राष्ट्रीय जल ढांचा कानून की आवश्यकता पर बल देता है।
(3) यह जल सेवा वितरण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।
(4) यह जल आवंटन के लिए प्राथमिकता मानदंड स्थापित करता है, जिसमें पेयजल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. अत्यधिक नहर सिंचाई के कारण गंभीर रूप से लवणीय हो चुकी मिट्टी के सुधार के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त उपचारात्मक उपाय माना जाता है?
(1) मिट्टी की सतह पर बार-बार न्यूनतम मात्रा में जल डालना
(2) प्रभावित भूमि को कई दशकों के लिए पूरी तरह से छोड़ देना
(3) कृत्रिम नाइट्रोजन उर्वरकों के भारी प्रयोग को बढ़ाना
(4) जिप्सम द्वारा मिट्टी का उपचार करना और उसके बाद पर्याप्त निक्षालन करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें:
I. यह भारत की सबसे लंबी नहर प्रणाली है।
II. मुख्य नहर विशेष रूप से हनुमानगढ़ और बीकानेर जिलों से होकर गुजरती है।
III. इसमें अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जल की आपूर्ति के लिए इसके बाएं किनारे पर कई लिफ्ट नहरें हैं।
IV. यह स्थानांतरित होते रेत के टीलों की समस्याओं से पूरी तरह अप्रभावित है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

32. सिंचाई के प्रकारों के संदर्भ में, भारत-गंगा के मैदानों में नलकूप सिंचाई की सफलता के लिए कौन सी विशेषता महत्वपूर्ण है?
(1) पूरे क्षेत्र में उच्च हाइड्रोलिक हेड उत्पन्न करने वाली खड़ी ढाल वाली स्थलाकृति की उपस्थिति
(2) उच्च भूजल पुनर्भरण क्षमता वाले असंबद्ध अवसादी जलभृत
(3) धरातल के समीप अभेद्य आग्नेय चट्टानी संरचनाओं का प्रचलन
(4) पूरे मैदानों में प्राकृतिक आर्टिसियन स्रोतों की उच्च घटना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. उबड़-खाबड़ स्थलाकृति वाले क्षेत्रों के लिए स्प्रिंकलर सिंचाई को अत्यधिक उपयुक्त क्यों माना जाता है, इसका सबसे अच्छा वर्णन निम्न में से कौन सा है?
(1) भारी प्लावन का उपयोग करना जो स्वाभाविक रूप से निचले धरातलीय गर्तों में बैठ जाता है
(2) जल के उपयोग से पहले किसी भी भूमि समतलीकरण कार्यों की आवश्यकता को समाप्त करना

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) मौसमी मानसूनी वर्षा का अनिश्चित और स्थानिक रुप से असमान वितरण
भारतीय कृषि मुख्य रूप से मानसून पर निर्भर है, जो अत्यधिक अनिश्चित और स्थानिक रुप से असमान है। देश के विभिन्न हिस्सों में वर्षा का वितरण एकसमान नहीं होता, जिससे फसलों के लिए नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है। यही अनिश्चितता और मौसमी अनियमितता भारत में सिंचाई प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भरता का सबसे प्रमुख और सटीक कारण मानी जाती है।

2. (1) नलकूप और कुआं सिंचाई प्रणाली
भारत के शुद्ध सिंचित क्षेत्र में नलकूप और कुओं का योगदान सर्वाधिक है, जो कुल सिंचाई के आधे से अधिक भाग को कवर करते हैं। यह प्रणाली उत्तर भारतीय मैदानों में सफल है क्योंकि वहाँ पर्याप्त भूजल उपलब्ध है। इसके माध्यम से किसान आवश्यकतानुसार जल का उपयोग कर सकते हैं, जिससे फसल चक्र प्रबंधन और पैदावार बढ़ाने में सहायता मिलती है। यह भारत की सबसे प्रमुख सिंचाई विधि है।

3. (3) सिंचाई जल के माध्यम से फसलों को सीधे घुलनशील उर्वरक प्रदान करना
सिंचाई जल के साथ पौधों को सीधे घुलनशील उर्वरक प्रदान करने की आधुनिक तकनीकी प्रक्रिया 'फर्टिगेशन' कहलाती है। यह ड्रिप सिंचाई जैसी सूक्ष्म प्रणालियों के साथ कार्य करती है, जिससे पोषक तत्व सीधे पौधों के जड़ क्षेत्र तक पहुँचते हैं। यह विधि जल की बचत के साथ उर्वरक उपयोग की दक्षता बढ़ाती है और मिट्टी के रासायनिक प्रदूषण को भी प्रभावी ढंग से कम करती है।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
प्रायद्वीपीय भारत की कठोर चट्टानी संरचना नहरों और कुओं की खुदाई को अत्यंत कठिन बना देती है। ऐसी भौगोलिक स्थिति में वर्षा जल को प्राकृतिक गड्ढों में संचित करना अधिक प्रभावी होता है, जिसे तालाब सिंचाई कहा जाता है। इसीलिए दक्षिण भारतीय राज्यों में यह पारंपरिक पद्धति सफल है। यहाँ की स्थलाकृति प्राकृतिक रूप से तालाबों के निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है।

5. (3) भारत-गंगा के मैदानों
भारत के विशाल उत्तरी मैदानों को भारत-गंगा का मैदान भी कहा जाता है। यह क्षेत्र नहर सिंचाई के अंतर्गत सबसे बड़े निरंतर भाग का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ की बारहमासी नदियाँ और समतल धरातल नहरों का जाल बिछाने के लिए उपयुक्त हैं। हिमालयी नदियों में वर्ष भर जल की उपलब्धता से इन उपजाऊ मैदानों में सघन कृषि और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

6. (3) केवल I और III
ड्रिप सिंचाई प्रणाली जल की बूंदों को सीधे पौधों की जड़ों में पहुँचाती है, जिससे वाष्पीकरण और रिसाव के कारण होने वाली जल की हानि न्यूनतम हो जाती है। चूंकि जल केवल जड़ क्षेत्र तक सीमित रहता है, इसलिए खरपतवारों की वृद्धि भी नियंत्रित रहती है। यह विधि गेहूं और चावल जैसी घनी फसलों के बजाय बागवानी और कतारबद्ध फसलों के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

NODIA

7. (4) प्लावन नहरों में बैराज की कमी होती है, जबकि बारहमासी नहरें विनियमन के लिए बांधों का उपयोग करती हैं
बारहमासी नहरें उन नदियों से निकाली जाती हैं जिनमें वर्ष भर जल प्रवाहित होता है। इनमें जल प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए बांधों और बैराजों का उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, प्लावन नहरों में जल केवल बाढ़ के समय ही आता है। इनमें स्थायी नियंत्रण संरचनाओं की कमी होती है, जो इन्हें बारहमासी नहरों की तुलना में कम विश्वसनीय और केवल मौसमी रूप से उपयोगी बनाती है।

8. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
भारत की भौगोलिक विविधता के कारण सिंचाई की विभिन्न पद्धतियां प्रचलित हैं। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के पठारी क्षेत्रों में तालाब सिंचाई का महत्व है, जबकि पंजाब के मैदानों में नलकूप प्रभावी हैं। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में 'खाड़िन' जैसी पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणालियां अपनाई जाती हैं। पंजाब के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में ऐतिहासिक रूप से पुरानी प्लावन नहरों का उपयोग किया जाता रहा है।

9. (3) गंभीर मृदा जलभराव और प्रेरित माध्यमिक लवणीकरण
अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में कच्ची नहरों से सिंचाई करने पर रिसाव के कारण भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होती है। इससे मृदा जलभराव की गंभीर स्थिति उत्पन्न होती है, जो आगे चलकर मिट्टी की सतह पर हानिकारक लवणों के जमाव का कारण बनती है। इस प्रक्रिया को द्वितीयक लवणीकरण कहते हैं, जो उपजाऊ भूमि को कृषि हेतु अनुपयुक्त बना देती है। यह एक प्रमुख पर्यावरणीय चुनौती है।

10. (1) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
भाखड़ा नांगल परियोजना पंजाब, हरियाणा और राजस्थान का एक संयुक्त उपक्रम है। यह सतलुज नदी पर निर्मित एक विशाल बहुउद्देशीय योजना है जो इन राज्यों को सिंचाई, पेयजल और विद्युत की आपूर्ति करती है। इसके विशाल नहर नेटवर्क ने इस क्षेत्र के कृषि परिदृश्य को बदल दिया है। यह स्वतंत्र भारत की महत्वपूर्ण नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है, जो क्षेत्रीय आर्थिक समृद्धि का आधार है।

11. (2) केवल III
हीराकुंड परियोजना ओडिशा में महानदी पर निर्मित एक विशाल बहुउद्देशीय योजना है। यह विश्व के सबसे लंबे मिट्टी के बांधों में से एक होने के साथ बाढ़ नियंत्रण, जलविद्युत और सिंचाई के लिए प्रसिद्ध है। यह कहना गलत है कि इसमें सिंचाई का घटक नहीं था, क्योंकि यह महानदी डेल्टा में व्यापक सिंचाई सुविधाएं प्रदान करती है। इसने क्षेत्र की कृषि उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

12. (2) संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित टेनेसी वैली अथॉरिटी परियोजना
दामोदर घाटी निगम की स्थापना 1948 में स्वतंत्र भारत की पहली बहुउद्देशीय परियोजना के रूप में की गई थी। इसे संयुक्त राज्य अमेरिका की टेनेसी वैली अथॉरिटी के प्रतिरुप पर अभिकल्पित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य दामोदर नदी बेसिन में बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई विस्तार और जलविद्युत उत्पादन था। यह परियोजना झारखंड और पश्चिम बंगाल के औद्योगिक एवं कृषि विकास में एक मील का पत्थर साबित हुई है।

13. (1) भाखड़ा नांगल, टिहरी, सरदार सरोवर, नागार्जुनसागर
भारत के मानचित्र पर उत्तर से दक्षिण की ओर बांधों का सही क्रम भाखड़ा नांगल, टिहरी, सरदार सरोवर और नागार्जुनसागर है। भाखड़ा नांगल और टिहरी उत्तर भारत में स्थित हैं। दक्षिण की ओर बढ़ने पर गुजरात में नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध मिलता है। अंत में, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के बीच कृष्णा नदी पर नागार्जुनसागर बांध स्थित है, जो इस भौगोलिक क्रम की पुष्टि करता है।

14. (4) कृष्णा
नागार्जुनसागर बांध कृष्णा नदी पर बनाया गया है। यह तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की सीमा पर स्थित एक विशाल संरचना है, जिसे विश्व के सबसे बड़े चिनाई वाले बांधों में गिना जाता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में व्यापक सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन सुनिश्चित करना है। यह बांध न केवल कृषि के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका जलाशय पर्यटन और मत्स्य पालन का भी प्रमुख केंद्र है।

15. (1) सतलुज और व्यास
इंदिरा गांधी नहर को जल की मुख्य आपूर्ति 'हरिके बैराज' से प्राप्त होती है। यह बैराज पंजाब के फिरोजपुर में सतलुज और व्यास नदियों के संगम पर स्थित है। यहाँ से निकलने वाली राजस्थान फीडर नहर मुख्य नहर को जल प्रदान करती है। यह संरचना थार मरुस्थल की सूखी भूमि तक सिंचाई के लिए जल पहुँचाने में रणनीतिक भूमिका निभाती है, जो इस क्षेत्र की जीवनरेखा है।

16. (1) केवल I, II, IV और V
सरदार सरोवर परियोजना गुजरात में नर्मदा नदी पर स्थित एक विशाल बहुउद्देशीय योजना है। यह गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान को सिंचाई, पेयजल और विद्युत लाभ प्रदान करती है। इसके अंतर्गत निर्मित नहरों का जाल कच्छ और सौराष्ट्र जैसे सूखा प्रवण क्षेत्रों तक पहुँचता है। हालांकि, विस्थापन और पर्यावरणीय कारणों से यह परियोजना लंबे समय तक विभिन्न आंदोलनों और विवादों का केंद्र भी रही है।

17. (2) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
तुंगभद्रा बहुउद्देशीय परियोजना कृष्णा की प्रमुख सहायक तुंगभद्रा नदी पर निर्मित है। इसमें कर्नाटक और आंध्र प्रदेश मुख्य भागीदार हैं, जो इसके जल और विद्युत संसाधनों का साझा उपयोग करते हैं। इस परियोजना के माध्यम से दोनों राज्यों के बड़े कृषि क्षेत्रों को सिंचाई सुविधा प्राप्त होती है। यह क्षेत्रीय सहयोग और जल प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने क्षेत्र की कृषि उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

18. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारत की प्रमुख परियोजनाओं में टिहरी बांध भागीरथी पर और सरदार सरोवर नर्मदा नदी पर निर्मित है। भाखड़ा नांगल परियोजना सतलुज नदी के जल का उपयोग करती है, जबकि हीराकुंड का निर्माण महानदी पर किया गया है। ये सभी बांध अपने संबंधित क्षेत्रों में सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण और जलविद्युत के प्रमुख स्रोत हैं। इन परियोजनाओं ने भारत की कृषि अर्थव्यवस्था और औद्योगिक प्रगति को मजबूती प्रदान की है।

19. (3) उत्तराखंड
टिहरी बांध उत्तराखंड के गढ़वाल हिमालय में भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम के निकट स्थित है। यह भारत का सबसे ऊंचा बांध है, जो दिल्ली और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों को पेयजल, बिजली और सिंचाई के लिए जल प्रदान करता है। अपनी ऊँचाई और भौगोलिक स्थिति के कारण यह पर्यावरणीय रुप से संवेदनशील है, क्योंकि यह एक सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र के भीतर स्थित है।

20. (4) बड़े पैमाने पर जलभराव और द्वितीयक लवणीकरण
इंदिरा गांधी नहर जैसे क्षेत्रों में अनियंत्रित सिंचाई से जलभराव की समस्या उत्पन्न हुई है। जल निकासी के अभाव में भूमिगत जल स्तर ऊपर उठता है, जिससे सतह पर हानिकारक लवण जमा हो जाते हैं। इसे द्वितीयक लवणीकरण कहते हैं, जो उपजाऊ भूमि को बंजर बना देता है। यह नहर सिंचाई से जुड़ी एक गंभीर और दीर्घकालिक पारिस्थितिक चुनौती मानी जाती है, जिससे कृषि भूमि अनुपजाऊ हो जाती है।

21. (1) C, B, A, D
इंदिरा गांधी नहर का विकास चरणों में हुआ, जिसकी शुरुआत हरिके बैराज के निर्माण से हुई। इसके पश्चात प्रबंधन हेतु राजस्थान नहर बोर्ड का गठन किया गया। फिर राजस्थान फीडर का निर्माण पूरा हुआ, जो मुख्य नहर तक जल पहुँचाता है। अंततः 1984 में इसका नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर कर दिया गया। यह क्रम इस ऐतिहासिक सिंचाई परियोजना के नियोजित और व्यवस्थित विस्तार को दर्शाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

22. (2) सृजित सिंचाई क्षमता और उपयोग की गई क्षमता के बीच के अंतर को कम करना
कमांड एरिया डेवलपमेंट कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य सृजित सिंचाई क्षमता और वास्तव में उपयोग की जा रही क्षमता के बीच के अंतर को कम करना है। यह खेतों तक जल पहुँचाने हेतु नालियों के निर्माण, भूमि समतलीकरण और वैज्ञानिक जल प्रबंधन पर केंद्रित है। इसका लक्ष्य उपलब्ध जल संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना है ताकि कृषि उत्पादकता में सुधार हो और किसानों को पूर्ण लाभ मिले।

23. (1) अनुच्छेद 262
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 262 अंतरराज्यीय नदियों या नदी घाटियों के जल विवादों के न्यायनिर्णयन के लिए विशेष प्रावधान करता है। इसी के तहत संसद ने अंतरराज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम पारित किया था। यह अनुच्छेद केंद्र सरकार को ऐसी कानूनी व्यवस्था या न्यायाधिकरण बनाने का अधिकार देता है जो राज्यों के बीच जल के बंटवारे और नियंत्रण से संबंधित संघर्षों का समाधान कर सके।

24. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
कावेरी जल विवाद भारत के सबसे पुराने अंतरराज्यीय संघर्षों में से एक है, जिसमें कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी शामिल हैं। यह कथन गलत है कि कावेरी बेसिन भारत और श्रीलंका के बीच साझा किया जाता है, क्योंकि यह पूरी तरह एक घरेलू नदी प्रणाली है। इस विवाद का मुख्य केंद्र मानसून की कमी वाले वर्षों में राज्यों के बीच जल का न्यायसंगत बंटवारा करना है।

25. (3) महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्य
कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के बीच नदी जल के उपयोग और बंटवारे हेतु गठित किया गया था। यह विवाद इन राज्यों के बीच उपलब्ध संसाधनों के न्यायसंगत आवंटन पर केंद्रित है ताकि सिंचाई, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताएं पूरी हो सकें। यह न्यायाधिकरण तकनीकी आधार पर राज्यों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए निर्णय देता है।

26. (2) केवल III
भारत में भूजल की कमी एक गंभीर संकट है, विशेषकर पंजाब और हरियाणा में। यह कहना गलत है कि भूजल की कमी से संदूषकों की सांद्रता नहीं बदलती। वास्तव में, जल स्तर गिरने से आर्सेनिक और फ्लोराइड जैसे हानिकारक तत्वों की सांद्रता बढ़ जाती है, जिससे पेयजल असुरक्षित हो जाता है। बिजली सब्सिडी ने भी इस समस्या को और अधिक तीव्र कर दिया है।

27. (4) संसाधन दक्षता को अधिकतम करने के लिए सतही और भूजल का नियोजित उपयोग
जल का संयुक्त उपयोग एक प्रबंधन अवधारणा है जिसमें दक्षता बढ़ाने हेतु सतही और भूजल का नियोजित एवं समन्वित उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य एक स्रोत पर निर्भर रहने के बजाय दोनों स्रोतों को एकीकृत करना है ताकि जल की मांग पूरी हो और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। यह दृष्टिकोण उन क्षेत्रों में अधिक उपयोगी है जहाँ भूजल स्तर में भारी गिरावट देखी जा रही है।

28. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पारंपरिक जल संचयन तकनीकें प्रचलित हैं। राजस्थान में 'जोहड़', केरल में 'सुरंगम' और लद्दाख में 'ज़िंग' जैसी संरचनाएं बनाई जाती हैं। इसी प्रकार, तमिलनाडु में 'एरी' नामक तालाब प्रणालियां सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये विधियाँ स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार जल संरक्षण और प्रबंधन के उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरणों को प्रदर्शित करती हैं।

29. (3) यह जल सेवा वितरण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।
राष्ट्रीय जल नीति 2012 जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन हेतु एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करती है। यह नीति जल को एक आर्थिक वस्तु मानने और राष्ट्रीय जल ढांचा कानून बनाने की वकालत करती है। इसमें पेयजल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रतिबंधित करती है; इसके विपरीत, यह दक्षता हेतु सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।

30. (4) जिप्सम द्वारा मिट्टी का उपचार करना और उसके बाद पर्याप्त निक्षालन करना
अत्यधिक नहर सिंचाई से जब मिट्टी लवणीय हो जाती है, तो इसके सुधार हेतु जिप्सम का उपयोग सबसे प्रभावी उपाय है। जिप्सम मिट्टी में मौजूद अतिरिक्त सोडियम को विस्थापित कर उसकी संरचना में सुधार करता है। इसके बाद पर्याप्त जल के साथ निक्षालन प्रक्रिया अपनाई जाती है ताकि हानिकारक लवण जड़ क्षेत्र से नीचे चले जाएं। यह वैज्ञानिक विधि मिट्टी की उर्वरता पुनः प्राप्त करने में सहायक है।

31. (1) केवल I और III
इंदिरा गांधी नहर राजस्थान के हनुमानगढ़, बीकानेर और जैसलमेर जैसे जिलों से गुजरती है। इसके बाईं ओर ऊँची स्थलाकृति के कारण वहाँ जल पहुँचाने हेतु कई लिफ्ट नहरें बनाई गई हैं। यह कहना गलत है कि यह रेत के टीलों से अप्रभावित है, क्योंकि उड़ती रेत निरंतर मार्ग अवरुद्ध करने की चुनौती पैदा करती है। यह परियोजना मरुस्थलीय क्षेत्र के आर्थिक कायाकल्प के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

32. (2) उच्च भूजल पुनर्भरण क्षमता वाले असंबद्ध अवसादी जलभृत
भारत-गंगा के मैदानों में नलकूप सिंचाई की सफलता का कारण असंबद्ध अवसादी जलभृत हैं, जिनमें पुनर्भरण की उच्च क्षमता होती है। यहाँ की जलोढ़ मिट्टी नरम है, जिससे नलकूपों की खुदाई आसान हो जाती है। हिमालयी नदियों से निरंतर जल आपूर्ति भूजल स्तर बनाए रखती है। यह अनुकूल भूगर्भीय संरचना इस क्षेत्र को नलकूप सिंचाई हेतु देश का सबसे उपयुक्त हिस्सा बनाती है।

NODIA

की आशंका है। इसके अतिरिक्त, वनों का जलमग्न होना और स्थानीय समुदायों का विस्थापन भी विवाद के मुख्य कारण रहे हैं। यह परियोजना विकास और सुरक्षा के बीच संघर्ष का एक बड़ा उदाहरण है।

55. (4) जवाहर नहर - नागार्जुनसागर की दाहिनी तट की नहर
नागार्जुनसागर परियोजना में जल वितरण हेतु दो मुख्य नहरें हैं। इसकी दाहिनी तट की नहर को 'जवाहर नहर' कहते हैं, जो आंध्र प्रदेश के गुंटूर और प्रकाशम जिलों को सिंचाई प्रदान करती है। बाईं तट की नहर का नाम लाल बहादुर शास्त्री नहर है। यह प्रणाली दक्षिण भारत में कृष्णा नदी के जल के कुशल उपयोग और कृषि क्रांति का एक उत्कृष्ट उदाहरण पेश करती है।

56. (2) केवल II और V
तालाब सिंचाई दक्षिण भारत के पठारी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है, लेकिन यह मानसून पर निर्भर है। इसकी सीमाओं में उच्च वाष्पीकरण और गाद जमना शामिल है। यह कहना गलत है कि इसके लिए विशाल बांधों के बराबर बड़े निवेश की आवश्यकता होती है। साथ ही, यह पंजाब जैसे मैदानों की प्रमुख विधि नहीं है, जहाँ नलकूप और नहरें अधिक प्रभावी सिंचाई साधन माने जाते हैं।

57. (3) वे ब्लॉक जहाँ जल की निकासी वार्षिक पुनर्भरण योग्य आयतन से अधिक है
'डार्क ज़ोन' उन क्षेत्रों को संदर्भित करता है जहाँ भूजल की वार्षिक निकासी उसके प्राकृतिक पुनर्भरण से अधिक हो गई है। यह दर्शाता है कि वहां जल भंडार तेजी से खत्म हो रहा है। ऐसे क्षेत्रों में अक्सर नए नलकूप खोदने पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं। यह शब्द भूजल के असुरक्षित और अत्यधिक दोहन को परिभाषित करता है, जो भविष्य के लिए अत्यंत चिंताजनक है।

58. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भाखड़ा सतलुज नदी पर स्थित देश का सबसे ऊंचा गुरुत्वाकर्षण बांध है। हीराकुंड महानदी पर बना भारत का सबसे लंबा मिट्टी का बांध है। सरदार सरोवर नर्मदा घाटी का सबसे बड़ा बांध है, जबकि नागार्जुनसागर कृष्णा नदी पर निर्मित एक विशाल चिनाई वाली संरचना है। ये सभी परियोजनाएं अपने विशिष्ट भौगोलिक और तकनीकी तथ्यों के कारण भारतीय बुनियादी ढांचे में अद्वितीय स्थान रखती हैं।

59. (4) सभी सतही नदी नेटवर्कों के निजीकरण को प्रोत्साहित करना
राष्ट्रीय जल नीति का उद्देश्य जल का न्यायसंगत वितरण और संरक्षण है। यह जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने और जल नियोजन को नदी बेसिन दृष्टिकोण पर आधारित करने पर बल देती है। इसका लक्ष्य जल सुरक्षा और इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करना है। हालांकि, नदी नेटवर्कों के निजीकरण को प्रोत्साहित करना इसका उद्देश्य नहीं है, क्योंकि जल को एक साझा राष्ट्रीय और सार्वजनिक संसाधन माना गया है।

60. (2) पंजाब
राजस्थान फीडर नहर हरिके बैराज से जल लेकर राजस्थान की सीमा तक आती है। मुख्य नहर में प्रवेश से पूर्व, यह पंजाब से होकर अपनी लंबाई का सबसे बड़ा हिस्सा तय करती है। पंजाब के जिलों से गुजरते हुए यह हरियाणा के छोटे भाग को छूती है और फिर राजस्थान में प्रवेश करती है। यह मार्ग जल के अंतरराज्यीय हस्तांतरण का एक उत्कृष्ट तकनीकी उदाहरण पेश करता है।

61. (1) B, A, C, D
तालाब सिंचाई के तहत तमिलनाडु शीर्ष स्थान पर है, जहाँ यह सिंचाई का एक अनिवार्य स्रोत है। इसके बाद आंध्र प्रदेश का स्थान है, जहाँ की स्थलाकृति इसके अनुकूल है। राजस्थान में भी वर्षा जल संचय हेतु तालाबों का महत्व है, जबकि पंजाब के समतल मैदानों में इसका प्रचलन न्यूनतम है। यह अवरोही क्रम विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय सिंचाई प्राथमिकताओं और भौगोलिक अनुकूलता को दर्शाता है।

62. (4) किसानों को नहर के जल के समान वितरण के लिए एक घूर्णी प्रणाली
'वाराबंदी' उत्तर-पश्चिमी भारत की नहर प्रणालियों में प्रचलित एक प्रभावी जल प्रबंधन प्रणाली है। यह बारी-बारी से जल वितरण की विधि है जिसमें प्रत्येक किसान को जोत के आकार के अनुसार निश्चित समय हेतु जल आवंटित किया जाता है। यह सुनिश्चित करती है कि कमांड क्षेत्र के प्रत्येक किसान, विशेषकर अंतिम छोर पर स्थित किसानों को, जल का न्यायसंगत हिस्सा प्राप्त हो सके।

63. (1) दामोदर घाटी निगम
स्वतंत्र भारत में 1948 में शुरू की गई पहली बहुउद्देशीय परियोजना 'दामोदर घाटी निगम' थी। इसे अमेरिका की टेनेसी वैली अथॉरिटी के मॉडल पर विकसित किया गया था ताकि बाढ़ रोकी जा सके। इस परियोजना ने झारखंड और पश्चिम बंगाल के औद्योगिक एवं कृषि विकास की नींव रखी। इसके बाद ही भाखड़ा नांगल और हीराकुंड जैसी अन्य विशाल परियोजनाओं पर कार्य प्रारंभ किया गया था।

64. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
शुष्क क्षेत्रों में सरकार ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणालियों को अपनाने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका कारण जल की भारी कमी और कृषि उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। यह कहना गलत है कि सूक्ष्म सिंचाई भूजल पर निर्भरता पूर्णतः समाप्त कर देती है; वास्तव में, यह केवल जल उपयोग की दक्षता बढ़ाकर सीमित संसाधनों की खपत को काफी कम करती है।

65. (2) हम्पी (होसपेटे)
तुंगभद्रा परियोजना कर्नाटक के होसपेटे के पास स्थित है, जो ऐतिहासिक हम्पी के निकट है। हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी और अब विश्व धरोहर स्थल है। इसी क्षेत्र में तुंगभद्रा नदी पर विशाल बांध बनाया गया है जो कर्नाटक और आंध्र प्रदेश की सिंचाई आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह

Click Here to Buy book on Amazon

में मध्य प्रदेश एक विषम और पूरी तरह से असंबद्ध नाम है, जो भौगोलिक वास्तविकता के विपरीत है।

44. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
'प्रति बूंद अधिक फसल' घटक ड्रिप सिंचाई जैसे उपकरणों को बढ़ावा देता है ताकि जल की बर्बादी कम हो। यह कहना गलत है कि ड्रिप सिंचाई गहरे अंतःस्रवण को बढ़ाती है; बल्कि यह वाष्पीकरण और रिसाव कम करके जल को सीधे जड़ क्षेत्र तक सीमित रखती है। इसका मुख्य उद्देश्य जल संचयन और उपयोग दक्षता को अधिकतम करना है, न कि भूमिगत जलभृतों का पुनर्भरण करना।

45. (3) पश्चिम बंगाल और झारखंड
दामोदर घाटी निगम परियोजना पश्चिम बंगाल और झारखंड के आर्थिक कायाकल्प के लिए उत्तरदायी है। यह स्वतंत्र भारत की पहली बहुउद्देशीय योजना थी, जिसे दामोदर नदी की विनाशकारी बाढ़ रोकने और सिंचाई सुविधा प्रदान करने हेतु बनाया गया था। इसके बांधों और नहरों ने इन राज्यों के औद्योगिक क्षेत्रों को बिजली और किसानों को जल उपलब्ध कराया है। यह पश्चिम बंगाल के लिए एक वरदान साबित हुई है।

46. (4) I, II और III
'खाड़िन' जैसलमेर में प्रचलित एक प्राचीन पारंपरिक वर्षा जल संचयन तकनीक है। इसमें ढलानों के नीचे मिट्टी का तटबंध बनाया जाता है, जिससे वर्षा जल कृषि भूमि पर एकत्रित हो जाता है। यह नमी बनाए रखने और भूजल पुनर्भरण में मदद करता है। शुष्क क्षेत्रों में खेती और जल संरक्षण के लिए यह एक उत्कृष्ट और टिकाऊ स्वदेशी तरीका है, जो आज भी स्थानीय स्तर पर प्रचलित है।

47. (1) फसलों द्वारा उपभोग किए गए जल और नहर के मुहाने पर पहुँचाए गए जल का अनुपात
सिंचाई दक्षता यह दर्शाती है कि उपयोग किए गए जल का कितना भाग वास्तव में फसलों के काम आया। इसे फसलों द्वारा उपभोग किए गए जल और नहर के मुहाने पर पहुँचाए गए कुल जल के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। उच्च दक्षता का अर्थ है कि जल का रिसाव और वाष्पीकरण कम हुआ है। यह अवधारणा आधुनिक कृषि और जल प्रबंधन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

48. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
इंदिरा गांधी नहर की लिफ्ट नहरों के नाम राजस्थान के महान व्यक्तित्वों के सम्मान में बदले गए हैं। बीकानेर-लूणकरणसर अब कंवर सेन लिफ्ट नहर और नोहर-साहवा, चौधरी कुंभाराम लिफ्ट नहर कहलाती है। कोलायत का नाम डॉ. करणी सिंह और फलोदी का नाम गुरु जंभेश्वर लिफ्ट नहर है। ये परिवर्तन इस विशाल परियोजना के ऐतिहासिक विकास और इसके क्षेत्रीय महत्व को प्रभावी रूप से रेखांकित करते हैं।

49. (3) B, A, D, E, C
राष्ट्रीय जल नीतियों के अनुसार, जल आवंटन हेतु एक स्पष्ट प्राथमिकता क्रम निर्धारित है। इसमें पेयजल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। इसके पश्चात क्रमशः पारिस्थितिकी, सिंचाई, जलविद्युत और अंत में कृषि-उद्योगों का स्थान आता है। यह क्रम सामाजिक आवश्यकताओं और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाने के उद्देश्य से वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया है ताकि संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित हो सके।

50. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I में वर्णित गतिविधियों का प्रत्यक्ष परिणाम है।
इंदिरा गांधी नहर ने थार मरुस्थल को उपजाऊ बनाकर पश्चिमी राजस्थान का भूगोल बदल दिया है। हालांकि, गहन सिंचाई से गंभीर पर्यावरणीय समस्या भी उत्पन्न हुई है। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में अत्यधिक रिसाव से भूमिगत जल स्तर खतरनाक रूप से ऊपर आ गया है। इस जलभराव या 'सेम' की समस्या ने कई उपजाऊ क्षेत्रों को दलदल और लवणीय भूमि में बदल दिया है, जो चिंताजनक है।

51. (1) केवल I, II और IV
वर्षा जल संचयन शहरी जल संकट से निपटने का प्रभावी साधन है। छतों पर जल संचय करना ताजे जल का स्रोत प्रदान करता है और शहरी बाढ़ को रोकने में भी सहायक है। केंद्रीय भूजल बोर्ड उन क्षेत्रों में इसकी अनुशंसा करता है जहाँ भूजल का अत्यधिक दोहन हुआ है। यह तकनीक भूजल पुनर्भरण और दीर्घकालिक जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक अनिवार्य कदम है।

52. (4) सतही जल नदियों और नहरों का उपयोग करता है, जबकि भूजल उप-सतही कुओं का उपयोग करता है
सतही और भूजल सिंचाई में मौलिक अंतर स्रोतों की स्थिति का है। सतही सिंचाई नदियों और नहरों का उपयोग करती है जहाँ जल धरातल पर बहता है। इसके विपरीत, भूजल सिंचाई में उप-सतही जलभृतों से जल निकालने हेतु कुओं का उपयोग होता है। सतही सिंचाई सरकारी प्रणालियों द्वारा संचालित होती है, जबकि भूजल सिंचाई प्रायः किसानों द्वारा स्वयं व्यक्तिगत रूप से प्रबंधित की जाती है।

53. (1) महानदी, गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा
प्रायद्वीपीय नदियों का पूर्व से पश्चिम की ओर सही क्रम महानदी, गोदावरी, कृष्णा और नर्मदा है। महानदी, गोदावरी और कृष्णा पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। इसके विपरीत, नर्मदा मध्य भारत से निकलकर पश्चिम की ओर बहती है और अरब सागर में मिलती है। ये नदियाँ दक्षिण भारत के कृषि और सिंचाई ढांचे की रीढ़ मानी जाती हैं, जिन पर कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं स्थित हैं।

54. (2) हिमालय में एक अत्यधिक सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र में इसकी स्थिति
टिहरी बांध परियोजना हिमालय के उच्च सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण विवादास्पद रही है। भूकंप की स्थिति में बांध की विफलता से नीचे बसे शहरों में भारी तबाही

NODIA

33. (2) जल के उपयोग से पहले किसी भी भूमि समतलीकरण कार्यों की आवश्यकता को समाप्त करना
स्प्रिंकलर सिंचाई विधि ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति वाले क्षेत्रों हेतु उपयुक्त है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें सिंचाई से पूर्व महंगे भूमि समतलीकरण कार्यों की आवश्यकता नहीं होती। जल को पाइपों के माध्यम से दबाव के साथ छिड़का जाता है, जिससे मिट्टी का कटाव कम और पानी का समान वितरण सुनिश्चित होता है। यह विधि विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी और लाभप्रद है।

34. (1) डूंगरपुर
इंदिरा गांधी नहर का मुख्य कमांड क्षेत्र राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी जिलों जैसे श्रीगंगानगर, बीकानेर और जैसलमेर में फैला है। डूंगरपुर जिला राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है और इस नहर प्रणाली के प्रत्यक्ष दायरे में नहीं आता। यह अरावली पहाड़ियों और पठारी क्षेत्र का हिस्सा है, जहाँ सिंचाई के स्थानीय स्रोत जैसे कुएं और छोटे तालाब अधिक प्रचलित हैं, जो मुख्य नहर से दूर हैं।

35. (3) भाखड़ा बांध के पीछे बने जलाशय को गोविंद सागर के नाम से जाना जाता है
भाखड़ा नांगल परियोजना के तहत सतलुज नदी पर भाखड़ा बांध बनाया गया है। इसके पीछे स्थित विशाल जलाशय को 'गोविन्द सागर' के नाम से जाना जाता है। यह भारत के सबसे बड़े कृत्रिम जलाशयों में से एक है, जो सिंचाई, विद्युत उत्पादन और मत्स्य पालन के लिए जल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है। यह जलाशय हिमाचल प्रदेश और पंजाब के आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

36. (2) केवल III
नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण ने गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के बीच जल बंटवारे का निर्णय लिया। इसने विस्थापितों के पुनर्वास हेतु आदेश दिए और मध्य प्रदेश को सर्वाधिक हिस्सा आवंटित किया। यह कहना गलत है कि न्यायाधिकरण ने बांध की ऊंचाई स्थायी रूप से 90 मीटर सीमित की थी। वास्तव में, बाद में कानूनी प्रक्रियाओं के उपरांत इसे काफी अधिक ऊंचाई तक बढ़ाने की अनुमति प्रदान की गई थी।

37. (3) यह कृष्णा नदी की एक प्रमुख दाहिने तट की सहायक नदी है
तुंगभद्रा नदी कर्नाटक और आंध्र प्रदेश से होकर बहती है। यह कृष्णा नदी की सबसे प्रमुख दाहिने तट की सहायक नदी है। इसका उद्गम पश्चिमी घाट की तुंगा और भद्रा नदियों के संगम से होता है। इस नदी पर निर्मित परियोजना क्षेत्र की सिंचाई और बिजली की आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह प्रायद्वीपीय भारत के कृषि विकास के लिए एक रणनीतिक जल संसाधन मानी जाती है।

38. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारत में अंतरराज्यीय जल विवाद राज्यों के बीच नदी जल बंटवारे पर आधारित हैं। रावी-व्यास विवाद पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के बीच है, जबकि महादयी विवाद गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र के मध्य है। वंशधारा विवाद आंध्र प्रदेश और ओडिशा से संबंधित है। गोदावरी विवाद में महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश जैसे कई राज्य शामिल हैं। ये विवाद बढ़ती जल मांग के कारण उत्पन्न होते हैं।

39. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
तटीय क्षेत्रों में भूजल के अत्यधिक दोहन से मीठे पानी का स्तर गिर जाता है और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में समुद्र का खारा जल अंतर्देशीय जलभृतों में प्रवेश करने लगता है। यह प्रक्रिया तब तीव्र होती है जब भूजल स्तर समुद्र तल से नीचे चला जाता है, जिससे हाइड्रोलिक ग्रेडिएंट उलट जाता है। यह समस्या तटीय कृषि और पेयजल की गुणवत्ता के लिए गंभीर खतरा है।

40. (1) मृदा लवणीकरण
अत्यधिक सिंचित भूमि में केशिका क्रिया तब होती है जब मिट्टी का जल ऊपर की ओर खिंचता है। यह प्रक्रिया भूमिगत लवणों को सतह पर ले आती है, और जल वाष्पीकृत होने के बाद लवण ऊपरी परत पर जमा हो जाते हैं। इसे 'मृदा लवणीकरण' कहते हैं, जो मिट्टी की उर्वरता नष्ट कर देता है। यह समस्या विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अधिक है जहाँ गहन नहर सिंचाई से जलभराव की स्थिति उत्पन्न होती है।

41. (3) टिहरी बांध - भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम पर निर्मित
टिहरी बांध उत्तराखंड में भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम पर स्थित है। यह भारत का सबसे ऊंचा बांध है जो विद्युत उत्पादन और सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराता है। अन्य विकल्पों के विपरीत, यह युग्म भौगोलिक रूप से पूर्णतः सही है। हीराकुंड बांध महानदी पर और सरदार सरोवर नर्मदा पर स्थित है, जबकि दामोदर घाटी निगम मुख्य रूप से दामोदर बेसिन और उसकी सहायक नदियों से संबंधित है।

42. (1) विशाल अंतरराज्यीय गुरुत्वाकर्षण बांधों का निर्माण
कमांड एरिया डेवलपमेंट कार्यक्रम सिंचाई के कुशल प्रबंधन पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत खेतों की नालियों का निर्माण, भूमि समतलीकरण और जल निकासी जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। हालांकि, विशाल अंतरराज्यीय गुरुत्वाकर्षण बांधों का निर्माण इसके दायरे में नहीं आता; ऐसे बांधों का निर्माण 'बड़ी सिंचाई परियोजनाओं' के तहत किया जाता है। यह कार्यक्रम केवल निर्मित बांधों की सिंचाई क्षमता के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करता है।

43. (4) मध्य प्रदेश
इंदिरा गांधी नहर उत्तर-पश्चिमी भारत के राज्यों को लाभान्वित करने के लिए बनाई गई है। इसके लाभार्थी राज्यों में राजस्थान, पंजाब और हरियाणा शामिल हैं। मध्य प्रदेश इस भौगोलिक क्षेत्र से दूर स्थित है और इसका इस नहर प्रणाली के जल आवंटन से कोई संबंध नहीं है। अतः लाभार्थी राज्यों की सूची

Downloaded from www.pdf.tube

बांध आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यटन का भी एक प्रमुख केंद्र माना जाता है।

66. (4) I, II और III
राजस्थान में जल संरक्षण हेतु 'टांका', 'बावड़ी' और 'नाडी' जैसी पारंपरिक संरचनाएं विकसित की गई हैं। 'टांका' भूमिगत टैंक है, जबकि 'बावड़ी' सीढ़ीदार कुआं है। ये संरचनाएं स्थानीय ज्ञान और भौगोलिक अनुकूलन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिन्होंने मरुस्थलीय जीवन को सदियों से संभव बनाया है। आज भी ये तकनीकें जल प्रबंधन और संरक्षण में अपनी पूर्ण प्रासंगिकता और उपयोगिता बनाए हुए हैं।

67. (3) तुंगभद्रा नदी
कावेरी जल विवाद कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के बीच कावेरी और उसकी सहायक नदियों के बंटवारे को लेकर है। तुंगभद्रा नदी इस विवाद का हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह कृष्णा की सहायक नदी है और इसका अपना अलग जल प्रबंधन समझौता है। कावेरी बेसिन की नदियाँ दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। यह भौगोलिक भिन्नता ही इसे कावेरी विवाद से पूरी तरह अलग रखती है।

68. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
दामोदर घाटी निगम के अंतर्गत तिलैया और मैथन बांध बराकर नदी पर स्थित हैं। पंचेत बांध मुख्य दामोदर नदी पर और कोनार बांध कोनार नदी पर निर्मित है। ये सभी बांध संयुक्त रूप से बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन के उद्देश्यों को पूरा करते हैं। इस परियोजना ने झारखंड और पश्चिम बंगाल को कृषि एवं औद्योगिक रूप से समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

69. (3) गहन नहर सिंचाई के कारण जलभराव और बढ़ता जलस्तर
हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर में 'सेम' की समस्या गहन नहर सिंचाई और जल निकासी के अभाव से उत्पन्न हुई है। इंदिरा गांधी नहर से होने वाले रिसाव ने भूमिगत जल स्तर को ऊपर ला दिया है, जिससे भूमि जलमग्न हो गई है। यह जलभराव मिट्टी की उर्वरता नष्ट करता है और हानिकारक लवणों को सतह पर लाता है। यह इन जिलों हेतु एक गंभीर पारिस्थितिक संकट है।

70. (2) पर्यावरणीय चिंताएं और आदिवासी समुदायों का विस्थापन
'नर्मदा बचाओ आंदोलन' का मुख्य केंद्र पर्यावरणीय चिंताएं और विस्थापित होने वाले आदिवासी समुदायों का उचित पुनर्वास था। आंदोलनकारियों का तर्क था कि जलाशय में हजारों हेक्टेयर वन और कृषि भूमि जलमग्न हो जाएगी, जिससे स्थानीय जीवन और संस्कृति नष्ट होगी। यह संघर्ष भारत में विकास परियोजनाओं और मानवाधिकारों व पर्यावरण संरक्षण के बीच के संतुलन पर केंद्रित एक ऐतिहासिक आंदोलन रहा है।

71. (2) केवल III और IV
भारत में सिंचाई का भौगोलिक वितरण विविध है। उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र है, जबकि पंजाब में सिंचाई का प्रतिशत उच्चतम है। मिजोरम जैसे पहाड़ी राज्यों में वर्षा आधारित कृषि अधिक प्रचलित है। साथ ही, गुजरात में कुआं सिंचाई पूर्णतः अनुपस्थित नहीं है; वहां नलकूपों का कृषि में महत्वपूर्ण योगदान है। अतः मिजोरम और गुजरात से संबंधित ये दोनों कथन तथ्यात्मक रूप से गलत हैं।

72. (1) तालाबों के तल पर अतिक्रमण, गाद जमना और खराब रखरखाव
प्रायद्वीपीय भारत में तालाब सिंचाई की दक्षता काफी कम हुई है। इसके मुख्य कारणों में तालाबों पर अतिक्रमण, गाद जमने से भंडारण क्षमता में गिरावट और रखरखाव का अभाव शामिल है। कई पारंपरिक तालाब सूख जाने से किसानों की निर्भरता भूजल पर बढ़ी है। यह गिरावट न केवल जल संकट पैदा कर रही है, बल्कि हमारी प्राचीन जल प्रबंधन विरासत के लिए भी एक बड़ा खतरा है।

NODIA

73. (3) इसके कमांड क्षेत्र विकास में रेत के टीलों को स्थिर करने के लिए व्यापक वनीकरण शामिल है।
इंदिरा गांधी नहर के कमांड क्षेत्र विकास में रेत के टीलों को स्थिर करने हेतु वनीकरण और चारागाह विकास कार्यक्रम चलाए गए हैं। यह पारिस्थितिक हस्तक्षेप नहर को रेत से बचाने और स्थानीय पर्यावरण को सुधारने हेतु अनिवार्य है। यह परियोजना मरुस्थलीय क्षेत्रों में हरियाली लाने और धूल भरी आंधियों को कम करने में सहायक सिद्ध हुई है, जो इस क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

74. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
राष्ट्रीय जल नीति के अनुसार, जल का प्रबंधन प्रशासनिक सीमाओं के बजाय वैज्ञानिक 'नदी बेसिन' दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए। नदी बेसिन एक एकीकृत हाइड्रोलॉजिकल इकाई है जहाँ जल का प्रवाह और उपयोग आपस में जुड़े होते हैं। यह दृष्टिकोण जल के न्यायसंगत वितरण और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद करता है, जो भविष्य की जल सुरक्षा और संसाधनों के संरक्षण हेतु अत्यंत आवश्यक है।

75. (4) कमांड क्षेत्र में कुल वार्षिक वर्षा का तत्काल दोगुना होना
कमांड एरिया डेवलपमेंट कार्यक्रम से फसल सघनता में वृद्धि और जल का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित होता है। यह सिंचाई दक्षता बढ़ाने और किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु बनाया गया है। हालांकि, क्षेत्र की वार्षिक वर्षा का दोगुना होना इसका परिणाम नहीं हो सकता, क्योंकि वर्षा एक प्राकृतिक घटना है जिसे स्थानीय प्रबंधन गतिविधियों द्वारा सीधे नियंत्रित या बदला नहीं जा सकता है।

76. (1) केवल I, II, IV और V
बहुउद्देशीय परियोजनाएं सिंचाई, जलविद्युत, बाढ़ नियंत्रण और मत्स्य पालन जैसे उद्देश्यों को पूरा करती हैं। नेहरू ने इन्हें 'आधुनिक भारत के मंदिर' की संज्ञा दी थी। हालांकि, इन परियोजनाओं से वनों और कृषि भूमि का जलमग्न होना एक गंभीर वास्तविकता है। यद्यपि ये विकास हेतु अनिवार्य हैं, लेकिन इनके पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को भी

होती है जो मरुस्थलों में पाई जाती है।
(2) सभी अनाज फसलों में इनका निर्यात मूल्य सबसे अधिक है।
(3) इन्हें निरंतर जलभराव की आवश्यकता होती है, जो इन्हें अचानक बाढ़ वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त बनाती है।
(4) ये सूखे की स्थिति के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी हैं और इन्हें न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. भारत में गन्ने की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके लिए 21 से 27 डिग्री सेल्सियस तापमान वाली गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
II. इसे केवल तटीय क्षेत्रों की अत्यधिक लवणीय मिट्टी में ही उगाया जा सकता है।
III. उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र प्रमुख उत्पादक राज्यों में से हैं।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(1) I और III
(2) I और II
(3) II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. भारत में कपास की खेती के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: भारत में कपास की खेती मुख्य रूप से दक्कन के पठारी क्षेत्र में केंद्रित है।
कथन II: दक्कन के पठार की रेगुर या काली मिट्टी नमी बनाए रखती है, जो गहरी जड़ों वाली कपास की फसल के लिए अत्यधिक फायदेमंद होती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन-सी स्थिति भारत में जूट की खेती के लिए भौगोलिक आवश्यकताओं का अपवाद है?
(1) पूरी फसल ऋतु के दौरान पाला-मुक्त दिन और कम आर्द्रता।
(2) बाढ़ के मैदानों की अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ मिट्टी जो प्रतिवर्ष गाद जमा होने से नवीकृत होती है।
(3) रेशे की तेजी से परिपक्वता सुनिश्चित करने के लिए विकास के समय उच्च तापमान।
(4) कटाई के बाद रेशों को सड़ाने और धोने के लिए ताजे पानी की प्रचुर आपूर्ति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. तिलहन और उसके प्राथमिक उत्पादक राज्य के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) मूंगफली - गुजरात
(2) सरसों - राजस्थान
(3) सोयाबीन - मध्य प्रदेश
(4) सूरजमुखी - असम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. भारत में चाय के बागानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चाय के लिए पूरे वर्ष गर्म और नम पाला-मुक्त जलवायु की आवश्यकता होती है।
II. वर्ष भर समान रूप से वितरित होने वाली लगातार बौछारें कोमल पत्तियों की निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करती हैं।
III. असम और पश्चिम बंगाल उत्तरी भारत के प्रमुख चाय उत्पादक राज्य हैं।
IV. चाय की झाड़ियाँ अत्यधिक क्षारीय और जलभराव वाली मिट्टी में सबसे अच्छी बढ़ती हैं।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II, III और IV
(2) I, II और III
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. नीलगिरी का एक किसान कॉफी की ऐसी किस्म की खेती करना चाहता है जिसकी बेहतर गुणवत्ता के कारण विश्व स्तर पर अत्यधिक मांग है, भले ही वह कीटों के प्रति संवेदनशील हो। कॉफी की वह कौन-सी किस्म है जो शुरू में यमन से लाई गई थी और भारत में व्यापक रूप से उत्पादित की जाती है?
(1) रोबस्टा
(2) लिबेरिका
(3) अरेबिका
(4) एक्सेल्सा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. भारत में प्राकृतिक रबर उत्पादन के घटते क्रम में निम्नलिखित राज्यों को व्यवस्थित कीजिए:
A. केरल
B. तमिलनाडु
C. कर्नाटक
D. त्रिपुरा
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) A, B, D, C
(2) A, D, C, B
(3) A, D, B, C
(4) A, C, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. भारत में मसालों के उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 12

कृषि : खाद्य, वाणिज्यिक एवं बागानी फसलें

1. निम्नलिखित में से कौन-सा भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका का सबसे उपयुक्त वर्णन प्रस्तुत करता है?
   (1) यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद में आधे से अधिक का योगदान देती है और विकास की प्राथमिक चालक बनी हुई है।
   (2) सकल घरेलू उत्पाद में इसकी घटती हिस्सेदारी के बावजूद, यह कार्यबल के सबसे बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करती है।
   (3) यह अपने अंतर्राष्ट्रीय निर्यात के माध्यम से सभी विदेशी मुद्रा भंडार उत्पन्न करने के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी है।
   (4) पिछले एक दशक में सभी राज्यों में कुल कार्यबल की भागीदारी में अत्यधिक वृद्धि देखी गई है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारत में खरीफ और रबी फसल ऋतुओं के बीच सही ढंग से अंतर करता है?
   (1) खरीफ की फसलें दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर करती हैं, जबकि रबी की फसलें सर्दियों की शुरुआत में बोई जाती हैं।
   (2) खरीफ की फसलें सर्दियों में बोई जाती हैं और गर्मियों में काटी जाती हैं, जबकि रबी की फसलें मानसून में बोई जाती हैं।
   (3) जायद, रबी और खरीफ के बीच की एक छोटी ऋतु है जिसके दौरान मुख्य रूप से तिलहन और दलहन उगाए जाते हैं।
   (4) गेहूं और चना भारत के उत्तरी और पश्चिमी भागों में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण खरीफ फसलें हैं।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य पारंपरिक रूप से एक प्रमुख चावल उत्पादक राज्य नहीं माना जाता है, लेकिन सिंचाई तंत्र के विस्तार के कारण वहां उत्पादन में वृद्धि देखी गई है?
   (1) पश्चिम बंगाल
   (2) आंध्र प्रदेश
   (3) पंजाब
   (4) ओडिशा
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. निम्नलिखित प्रश्न में, कथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
   कथन (A): भारत में हरित क्रांति ने अन्य फसलों की तुलना में गेहूं के उत्पादन को असमान रूप से लाभान्वित किया।
   कारण (R): हरित क्रांति के दौरान शुरु किए गए उच्च उपज वाली किस्म (HYV) के बीज मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में गेहूं के लिए सफल रहे थे।
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. भारत में मक्के का उपयोग भोजन और चारे दोनों के रूप में किया जाता है। मक्के की खेती के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी तापमान और मिट्टी की स्थितियाँ सबसे आदर्श हैं?
   (1) काली मिट्टी में 10 डिग्री सेल्सियस और 15 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान
   (2) लैटेराइट मिट्टी में 30 डिग्री सेल्सियस और 35 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान
   (3) पुरानी जलोढ़ मिट्टी में 21 डिग्री सेल्सियस और 27 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान
   (4) लाल दोमट मिट्टी में 15 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. सूची-I में दिए गए दालों के प्रकारों को सूची-II में उनकी प्रमुख फसल ऋतु के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची I: (दालों के प्रकार)
   A. तूर (अरहर)
   B. चना
   C. उड़द
   D. मूंग
   सूची II: (फसल ऋतु)
   i. मुख्य रूप से रबी
   ii. मुख्य रूप से खरीफ
   iii. दोनों ऋतुओं में उगाई जाती है लेकिन ज्यादातर खरीफ में
   iv. मुख्य रूप से जायद और खरीफ के रूप में उगाई जाती है
   (1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
   (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
   (3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. भारतीय कृषि में ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज बहुत महत्वपूर्ण हैं। शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में इनकी व्यापक खेती का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से क्या है?
   (1) इन्हें अत्यधिक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी की आवश्यकता

Downloaded from www.pdf.tube

संतुलित करना आवश्यक है ताकि सतत विकास सुनिश्चित हो सके।

77. (3) भूजल को संग्रहीत करने और प्रदान करने में सक्षम एक भूगर्भीय संरचना
'एक्विफर' या जलभृत धरती की सतह के नीचे स्थित एक भूगर्भीय संरचना है। यह चट्टानों या रेत की ऐसी परत है जिसमें जल संचित करने और उसे कुओं के माध्यम से प्रदान करने की क्षमता होती है। यह भूजल के भंडार के रूप में कार्य करता है, जो वर्षा से पुनर्भरण प्राप्त करता है। भारत में नलकूप सिंचाई की सफलता इन्हीं जलभृतों की उपलब्धता और क्षमता पर निर्भर करती है।

78. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
सतलुज नदी से सरहिंद नहर निकलती है, जो पंजाब को सींचती है। कृष्णा नदी पर नागार्जुनसागर की दाहिनी नहर विशाल क्षेत्र को जल प्रदान करती है। महानदी बेसिन में बरगढ़ नहर मुख्य स्रोत है, जबकि नर्मदा मुख्य नहर गुजरात और राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों तक जल पहुँचाती है। ये सभी नहरें अपनी संबंधित नदी घाटियों के जल का कुशल और न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करती हैं।

NODIA

79. (1) नदी और राज्य की सीमाओं के बीच असंगति और सीमित संसाधन
अंतरराज्यीय जल विवादों का कारण नदियों की प्राकृतिक सीमाओं और राज्यों की राजनीतिक सीमाओं के बीच असंगति है। नदियाँ कई राज्यों से होकर बहती हैं, जबकि जल एक सीमित संसाधन है जिसकी मांग लगातार बढ़ रही है। जब ऊपरी तटवर्ती राज्य जल रोकते हैं या निचले राज्यों को पर्याप्त हिस्सा नहीं मिलता, तो संघर्ष उत्पन्न होता है। संसाधनों की कमी इन विवादों को और अधिक जटिल बनाती है।

80. (2) ड्रिप सिंचाई
रेतीली मिट्टी वाले क्षेत्रों के लिए ड्रिप सिंचाई सबसे उपयुक्त है। इस मिट्टी की जल धारण क्षमता कम होती है, जिससे साधारण सिंचाई का पानी तेजी से नीचे रिस जाता है। ड्रिप सिंचाई में जल की बूंदें सीधे पौधों की जड़ों के पास दी जाती हैं, जिससे रिसाव और वाष्पीकरण द्वारा होने वाली हानि न्यूनतम हो जाती है। यह विधि मरुस्थलीय क्षेत्रों में जल की अधिकतम बचत सुनिश्चित करती है।

(1) दक्षिण भारत में इलायची की पहाड़ियाँ हरी इलायची के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
(2) काली मिर्च मुख्य रूप से उत्तरी राजस्थान के शुष्क मरुस्थलों में उगाई जाती है।
(3) जड़ के विकास के लिए हल्दी को अत्यधिक कम तापमान और अल्पाइन मिट्टी की आवश्यकता होती है।
(4) केसर के कुल उत्पादन पर भारत का पूर्ण वैश्विक एकाधिकार है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. सूची-I में बागवानी फसल को सूची-II में उसके प्रमुख उत्पादक राज्य/क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (बागवानी फसल)
A. सेब
B. आम
C. लीची
D. अंगूर
सूची II: (क्षेत्र)
i. महाराष्ट्र
ii. हिमाचल प्रदेश
iii. उत्तर प्रदेश
iv. बिहार
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. भारत में पुष्प कृषि एक उच्च विकास वाले कृषि क्षेत्र के रूप में उभरी है। निम्नलिखित में से कौन-सा व्यावसायिक संदर्भ में पुष्प कृषि को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(1) खाद्य सुरक्षा के लिए नियंत्रित वातावरण में फल देने वाले पेड़ों की खेती।
(2) प्रत्यक्ष बिक्री या औद्योगिक उपयोग के लिए फूलों और सजावटी पौधों की खेती।
(3) ग्राफ्टिंग के माध्यम से अनाज फसलों के पोषक मूल्य को बढ़ाने की वैज्ञानिक प्रक्रिया।
(4) मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए दलहनी फूलों के साथ फसलों को बारी-बारी से उगाने की पारंपरिक प्रथा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत में जैविक खेती के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सिक्किम भारत का पहला पूर्णतः जैविक राज्य है।
II. जैविक खेती संश्लेषित उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को पूरी तरह से प्रतिबंधित करती है।
III. यह फसल चक्र, हरी खाद और जैविक कीट नियंत्रण पर बहुत अधिक निर्भर करती है।
IV. जैविक खेती में पैदावार परिवर्तन के पहले ही वर्ष में पारंपरिक खेती की पैदावार से हमेशा अधिक हो जाती है।
V. परंपरागत कृषि विकास योजना भारत में जैविक खेती को बढ़ावा देती है।
कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. इष्टतम फसल योजना के लिए मिट्टी के प्रकार, तापमान और वर्षा के आधार पर देश को 15 अलग-अलग कृषि क्षेत्रों में विभाजित करने के लिए भारत में मुख्य रूप से किस वर्गीकरण प्रणाली का उपयोग किया जाता है?
(1) कोपेन का जलवायु वर्गीकरण
(2) आईसीआर (ICAR) मृदा वर्गीकरण
(3) योजना आयोग के कृषि-जलवायु क्षेत्र
(4) राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण ब्यूरो क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. भारतीय कृषि के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों में से, निम्नलिखित में से किसे आधुनिकीकरण और यांत्रिकीकरण में बाधा डालने वाली सबसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक समस्या माना जाता है?
(1) निर्यात सब्सिडी की कमी
(2) जैविक खाद पर अत्यधिक निर्भरता
(3) कृषि विश्वविद्यालयों की कमी
(4) भूमि जोतों का विखंडन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) कृषि वस्त्र और चीनी जैसे प्रमुख उद्योगों को आवश्यक कच्चा माल प्रदान करती है।
(2) ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा जीवनयापन के लिए संबद्ध गतिविधियों पर निर्भर है।
(3) वर्तमान दशक में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
(4) कृषि उत्पाद बाजार में भारत के कुल निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. मानसून की शुरुआत से भारतीय फसल ऋतुओं के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए।
(1) रबी, जायद, खरीफ
(2) खरीफ, रबी, जायद
(3) जायद, खरीफ, रबी
(4) खरीफ, जायद, रबी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) सकल घरेलू उत्पाद में इसकी घटती हिस्सेदारी के बावजूद, यह कार्यबल के सबसे बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करती है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। यद्यपि सकल घरेलू उत्पाद में इसका सापेक्ष योगदान घटा है, फिर भी यह कार्यबल के सबसे बड़े हिस्से को आजीविका प्रदान करती है। देश की लगभग आधी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। यह क्षेत्र उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में आधारभूत योगदान देता है।

2. (1) खरीफ की फसलें दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर करती हैं, जबकि रबी की फसलें सर्दियों की शुरुआत में बोई जाती हैं।
भारत में फसलों का वर्गीकरण मुख्य रूप से मानसूनी चक्र के आधार पर होता है। खरीफ फसलें जून-जुलाई में दक्षिण-पश्चिम मानसून के साथ बोई और अक्टूबर में काटी जाती हैं। इसके विपरीत, रबी की बुआई शीत ऋतु के प्रारंभ में होती है। खरीफ में चावल और मक्का मुख्य हैं, जबकि गेहूं और सरसों रबी ऋतु की महत्वपूर्ण फसलें मानी जाती हैं।

3. (3) पंजाब
चावल पारंपरिक रूप से पूर्वी और दक्षिण-तटीय भारत की मुख्य फसल है। पंजाब और हरियाणा में आधुनिक सिंचाई और नहरों के विस्तार से इसके उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। हरित क्रांति के पश्चात उन्नत बीजों और उर्वरकों के प्रयोग ने यहाँ चावल को प्रमुख व्यावसायिक फसल बना दिया। वर्तमान में पंजाब देश के शीर्ष चावल उत्पादक राज्यों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1960 के दशक के उत्तरार्ध में शुरू हुई हरित क्रांति ने भारतीय कृषि का परिदृश्य बदल दिया। इसमें उच्च उपज वाली किस्म के बीजों का प्रयोग मुख्य रूप से गेहूं पर सफल रहा। पंजाब और हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में अनुकूल परिस्थितियों के कारण गेहूं के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। गेहूं को तकनीकी लाभ मिलने से ही देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सका।

5. (3) पुरानी जलोढ़ मिट्टी में 21 डिग्री सेल्सियस और 27 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान
मक्का का उपयोग भोजन और चारे दोनों के रूप में होता है। इसकी वृद्धि के लिए 21 से 27 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श है। यह मुख्य रूप से पुरानी जलोढ़ मिट्टी में बेहतर उपज देती है। भारत के अधिकांश राज्यों में यह खरीफ की फसल है, किंतु बिहार जैसे क्षेत्रों में इसे रबी ऋतु में भी सफलतापूर्वक उगाया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है।

6. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
भारत में विभिन्न दालें अलग-अलग ऋतुओं में उगाई जाती हैं। अरहर मुख्य रूप से खरीफ, जबकि चना रबी की प्रमुख फसल है। उड़द की खेती प्रायः खरीफ में होती है, किंतु इसे अन्य ऋतुओं में भी उगाया जाता है। मूंग जायद और खरीफ दोनों में उगाई जाती है। दालें मृदा उर्वरता बढ़ाने और प्रोटीन आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

7. (4) ये सूखे की स्थिति के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी हैं और इन्हें न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है।
ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। शुष्क क्षेत्रों में इनकी खेती का कारण सूखे के प्रति उच्च सहनशीलता है। इन फसलों को अत्यंत कम पानी और न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है। विषम जलवायु और कम उपजाऊ मिट्टी में भी ये अच्छी पैदावार देने में सक्षम हैं, अतः ये राजस्थान और महाराष्ट्र में काफी प्रचलित हैं।

8. (1) I और III
गन्ना एक उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय फसल है, जिसके लिए गर्म और आर्द्र जलवायु अनिवार्य है। इसके विकास हेतु 21-27 डिग्री सेल्सियस तापमान और पर्याप्त वर्षा आवश्यक है। भारत में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र इसके शीर्ष उत्पादक राज्य हैं। गन्ने की खेती विभिन्न मिट्टियों में संभव है, बशर्ते वहाँ जल निकासी की समुचित व्यवस्था और पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।

9. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
कपास की खेती हेतु दक्कन पठार सर्वाधिक उपयुक्त है। यहाँ की काली मिट्टी (रेगुर) में नमी धारण करने की अद्भुत क्षमता होती है, जो कपास की जड़ों के विकास में सहायक है। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र की शुष्क जलवायु और लंबी धूप वाली अवधि कपास के रेशों की गुणवत्ता को बेहतर बनाती है, जिससे यह क्षेत्र कपास उत्पादन का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

10. (1) पूरी फसल ऋतु के दौरान पाला-मुक्त दिन और कम आर्द्रता।
जूट एक महत्वपूर्ण रेशा फसल है, जिसे 'सुनहरा रेशा' भी कहते हैं। इसकी खेती हेतु उच्च तापमान, भारी वर्षा और उच्च आर्द्रता अनिवार्य है। यह मुख्यतः उन बाढ़ के मैदानों में उगाया जाता है जहाँ प्रतिवर्ष नई उपजाऊ गाद जमा होती है। रेशों को साफ करने हेतु प्रचुर ताजे पानी की आवश्यकता होती है। कम आर्द्रता और पाला इसके लिए प्रतिकूल हैं।

11. (4) सूरजमुखी - असम
भारत में विशिष्ट क्षेत्रों में विभिन्न तिलहनों का उत्पादन होता है। गुजरात मूंगफली में और राजस्थान सरसों के उत्पादन में अग्रणी है। मध्य प्रदेश सोयाबीन का प्रमुख केंद्र है। सूरजमुखी के उत्पादन में कर्नाटक और आंध्र प्रदेश का प्रभुत्व है, न कि असम

NODIA

(3) तिल
(4) जई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. भारत में बागवानी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत दुनिया में फलों और सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक है।
II. बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन शुरू किया गया था।
III. भारत में फलों के उत्पादन में आम, केला और खट्टे फलों की बड़ी हिस्सेदारी है।
IV. कटाई के बाद होने वाला नुकसान इस क्षेत्र में एक प्रमुख चुनौती बना हुआ है।
कौन-सा संयोजन गलत कथन/कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II और III
(2) केवल I
(3) केवल IV
(4) I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. भारत में कॉफी की खेती के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह विशेष रूप से भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में उगाई जाती है।
(2) इसे शुरू में कर्नाटक में बाबा बुदन गिरी की पहाड़ियों पर लगाया गया था।
(3) जलवायु प्रतिबंधों के कारण रोबस्टा भारत में उगाई जाने वाली कॉफी की एकमात्र किस्म है।
(4) इष्टतम उपज के लिए कॉफी के पौधों को छायादार पेड़ों के बिना सीधी और तीव्र सूर्य की रोशनी की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. प्राकृतिक रबर एक विषुवतीय फसल है, लेकिन विशेष परिस्थितियों में इसे उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भी उगाया जाता है। भारत में इसके व्यावसायिक उत्पादन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी वर्षा व्यवस्था आवश्यक है?
(1) नम और आर्द्र जलवायु के साथ 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा।
(2) अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में सालाना 50 सेंटीमीटर से कम वर्षा।
(3) वर्ष के दौरान 50 सेंटीमीटर और 100 सेंटीमीटर के बीच समान रूप से वितरित वर्षा।
(4) केवल मानसून वाली वर्षा के पैटर्न के साथ पूरी तरह से शुष्क सर्दियाँ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. काली मिर्च, इलायची और दालचीनी के व्यापक उत्पादन के कारण किस भारतीय राज्य को 'भारत का मसालों का बगीचा' कहा जाता है?
(1) आंध्र प्रदेश
(2) कर्नाटक
(3) केरल
(4) असम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. सूची-I में राज्य को सूची-II में कॉफी उत्पादन में उसकी स्थिति के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (राज्य)
A. कर्नाटक
B. केरल
C. तमिलनाडु
D. आंध्र प्रदेश
सूची II: (स्थिति)
i. विस्तार वाले बागानों के साथ गैर-पारंपरिक क्षेत्र
ii. भारत का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक
iii. भारत के कुल उत्पादन का 70% से अधिक हिस्सा
iv. तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक, मुख्य रूप से नीलगिरी में
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य आम तौर पर एक अपवाद है और भारत में व्यावसायिक पुष्प कृषि के शीर्ष पारंपरिक केंद्रों में नहीं माना जाता है?
(1) कर्नाटक
(2) तमिलनाडु
(3) झारखंड
(4) महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. भारतीय कृषि के सामने आने वाली चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परिचालन भूमि जोतों का औसत आकार लगातार बढ़ रहा है।
II. भूजल स्तर में गिरावट स्थायी सिंचाई को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।
III. कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं की कमी के कारण कटाई के बाद भारी नुकसान होता है।
IV. छोटे और सीमांत किसानों के लिए औपचारिक ऋण तक पहुंच अभी भी कठिन है।
V. एपीएमसी (APMC) अधिनियम सार्वभौमिक रूप से सभी किसानों को सीधे अधिकतम खुदरा मूल्य की गारंटी देता है।
कौन-सा संयोजन गलत कथन/कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) II, III और IV
(2) I और V
(3) I, IV और V
(4) III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. भारत के कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उनकी प्रमुख विशेषताओं के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र: उच्च वार्षिक वर्षा और लैटेराइट मिट्टी का प्रसार।
(2) ट्रांस-गांगेय मैदानी क्षेत्र: पूरे क्षेत्र में अत्यधिक शुष्क, गैर-सिंचित मरुस्थलीय भूमि।
(3) निचला गांगेय मैदानी क्षेत्र: अर्ध-शुष्क जलवायु जहाँ गेहूं एकमात्र फसल के रूप में उगाई जाती है।
(4) पूर्वी हिमालयी क्षेत्र: उच्च वर्षा, घने जंगल और झूम खेती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. भारत में गेहूं दूसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज फसल है। कुल उत्पादन की मात्रा के मामले में कौन-सा राज्य गेहूं का अग्रणी उत्पादक है?
(1) उत्तर प्रदेश
(2) पंजाब
(3) हरियाणा
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. प्रच्छन्न बेरोजगारी भारतीय कृषि क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता है। इस घटना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत रोबोटिक कृषि मशीनरी का तेजी से एकीकरण।
(2) बेहतर मजदूरी के लिए कृषि मजदूरों का विनिर्माण क्षेत्र की ओर पूर्ण विस्थापन।
(3) भूमि के एक टुकड़े पर वास्तव में आवश्यक संख्या से अधिक लोग काम में लगे हुए हैं।
(4) केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मौसमी श्रम को नियोजित करने पर सख्त प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. निम्नलिखित में से कौन-सी फसल आमतौर पर भारत में जायद ऋतु के दौरान नहीं उगाई जाती है?
(1) सरसों
(2) तरबूज
(3) खरबूजा
(4) खीरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. चावल को इष्टतम वृद्धि के लिए विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित में से कौन सा इसकी आवश्यकताओं का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) मध्यम तापमान (15-20°C) और वृद्धि के लिए 50-75 सेमी के बीच वार्षिक वर्षा।
(2) पूरे फसल चक्र के दौरान न्यूनतम वर्षा और शुष्क हवाओं के साथ उच्च तापमान।
(3) परिपक्वता चरण के दौरान लगातार हिमपात और कम आर्द्रता के साथ ठंडी जलवायु।
(4) उच्च तापमान (25°C से ऊपर), उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वर्षा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. निम्नलिखित प्रश्न में, कथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A): स्वतंत्रता के बाद के दशकों में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि की हिस्सेदारी घटी है।
कारण (R): कृषि क्षेत्र ने लगातार नकारात्मक विकास दर का अनुभव किया है, जबकि उद्योग और सेवाएं स्थिर रही हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अन्य अनाजों की तुलना में भारत में मक्के की खेती की एक अनूठी विशेषता को उजागर करता है?
(1) यह एक दलहनी फसल है जो प्राकृतिक स्थिरीकरण के माध्यम से मिट्टी में नाइट्रोजन को समृद्ध करती है।
(2) इसके पूरे वानस्पतिक विकास चक्र के दौरान 10 सेमी तक स्थिर जल की आवश्यकता होती है।
(3) यह एक खरीफ फसल है जो बिहार जैसे राज्यों में रबी के मौसम में उगाई जाती है।
(4) यह एकमात्र अनाज की फसल है जो सभी ज्ञात कीटों से पूरी तरह सुरक्षित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. सूची-I में फसल की विशेषता को सूची-II में उसके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (फसल)
A. मक्का
B. ज्वार
C. बाजरा
D. रागी
सूची II: (विवरण)
i. बलुआ मिट्टी और उथली काली मिट्टी की आवश्यकता होती है, मुख्य रूप से राजस्थान में उगाया जाता है
ii. लाल, काली, बलुआ, दोमट और उथली काली मिट्टी वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है
iii. वर्षा आधारित फसल जो ज्यादातर नम क्षेत्रों में उगाई जाती है, तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल
iv. भोजन और चारे दोनों के रूप में उपयोग किया जाता है, इसके लिए 21 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान

NODIA

की आवश्यकता होती है
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र के किसानों को अपने फसल चक्र में दालों को शामिल करने की सलाह दी जाती है। अरहर को छोड़कर, इस पद्धति का प्राथमिक कृषि लाभ क्या है?
(1) वे वायुमंडल से नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बहाल होती है।
(2) वे खेतों में मौसमी जलभराव को रोकने के लिए अतिरिक्त भूजल का उपभोग करते हैं।
(3) वे ऐसे विषाक्त पदार्थ छोड़ते हैं जो स्वाभाविक रूप से आसपास के क्षेत्र के सभी खरपतवारों को खत्म कर देते हैं।
(4) वे घनी छाया प्रदान करते हैं जिससे स्थानीय वायुमंडलीय तापमान काफी कम हो जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. भारत के कृषि क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र मुख्य रूप से राजस्थान राज्य को कवर करता है और इसकी विशेषता कम वर्षा है।
II. पश्चिमी तटीय मैदान और घाट क्षेत्र रबर, कॉफी और मसालों जैसी बागानी फसलों के लिए जाना जाता है।
III. द्वीप क्षेत्र केवल लक्षद्वीप द्वीपों को शामिल करता है, जो पूरी तरह से सेब के बागों पर केंद्रित है।
कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. उच्च सुक्रोज सामग्री के लिए जाने जाने वाले दक्षिण भारत के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य गन्ने का प्राथमिक उत्पादक नहीं माना जाता है?
(1) महाराष्ट्र
(2) पंजाब
(3) कर्नाटक
(4) तमिलनाडु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. कपास की खेती के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) ऋतु - रबी
(2) काली कपास मिट्टी - रेगुर
(3) आवश्यक पाला-मुक्त दिन - 210 दिन
(4) उत्तर में प्रमुख उत्पादक राज्य - पंजाब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. भारत में निम्नलिखित में से कौन सा नदी बेसिन जूट (जिसे सुनहरा रेशा भी कहा जाता है) की खेती के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त केंद्र है?
(1) गोदावरी बेसिन
(2) नर्मदा बेसिन
(3) हुगली बेसिन
(4) कावेरी बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. चावल की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत दुनिया में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक है।
II. यह एक खरीफ की फसल है जिसे उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है।
III. पंजाब और हरियाणा मुख्य रूप से नहर सिंचाई और नलकूपों का उपयोग करके चावल उगाते हैं।
IV. चावल की सीधी बुआई (DSR) धान की खेती में जल बचाने के लिए उपयोग की जाने वाली एक तकनीक है।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) I, II और IV
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. भारत में कृषि उत्पादन के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: मूंगफली खरीफ की फसल है और देश में उत्पादित प्रमुख तिलहनों में इसका हिस्सा लगभग आधा है।
कथन II: गुजरात भारत में मूंगफली के सबसे बड़े उत्पादक राज्यों में से एक है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित राज्यों को उनके कुल चावल उत्पादन के सही अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. पश्चिम बंगाल
B. उत्तर प्रदेश
C. पंजाब
D. राजस्थान
सही क्रम चुनिए:
(1) A, B, C, D
(2) B, A, C, D
(3) A, C, B, D

Click Here to Buy book on Amazon

23. अमन, आउस और बोरो शब्द किस फसल की खेती से जुड़े प्रसिद्ध नाम हैं, विशेष रुप से पश्चिम बंगाल और असम में?

(1) चाय
(2) जूट
(3) गन्ना
(4) चावल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित प्रश्न में, कथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): पश्चिम बंगाल भारत में जूट के उत्पादन में निर्विवाद अग्रणी है।

कारण (R): यह राज्य गर्म और आर्द्र जलवायु, प्रचुर वर्षा और रेशे गलाने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक स्थिर जल के साथ एक आदर्श वातावरण प्रदान करता है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. भारत में मक्के के निम्नलिखित उपयोगों में से कौन-सा इसके औद्योगिक अनुप्रयोग के साथ सही ढंग से सुमेलित है?

(1) मक्का सिरप - पोर्टलैंड सीमेंट का उत्पादन
(2) मक्के की भूसी - इस्पात गलाने के लिए प्राथमिक कच्चा माल
(3) मक्का स्टार्च - कपड़ा और कागज उद्योग में मांड देना (साइजिंग)
(4) मक्का तेल - भारी मशीनरी में स्नेहक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. सूची-I में फसल को सूची-II में उत्तर भारत में उसकी प्राथमिक फसल ऋतु के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (फसल)

A. सरसों
B. तरबूज
C. धान
D. जौ

सूची II: (फसल ऋतु)

i. खरीफ
ii. रबी
iii. जायद

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. रागी पोषक मूल्य वाला एक मोटा अनाज है। यह निम्नलिखित में से किस खनिज में विशेष रुप से समृद्ध है, जो इसे रक्ताल्पता (एनीमिया) से लड़ने के लिए अत्यधिक फायदेमंद बनाता है?

(1) जस्ता और मैग्नीशियम
(2) पोटेशियम और सोडियम
(3) तांबा और सेलेनियम
(4) कैल्शियम और लोहा (आयरन)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

28. भारत में एक महत्वपूर्ण तिलहन, सरसों की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider कीजिए:

I. यह मुख्य रुप से खरीफ की फसल है जो दक्षिण भारत में भारी मात्रा में उगाई जाती है।
II. राजस्थान भारत में सरसों के अग्रणी उत्पादकों में से एक है।
III. इसके लिए ठंडी और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है और यह पाले के प्रति संवेदनशील है।

उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?

(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. भारतीय कृषि सांख्यिकी में कच्चे कपास के उत्पादन को मापने के लिए उपयोग किया जाने वाला मानक माप निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(1) बुशेल
(2) प्रति हेक्टेयर क्विंटल
(3) प्रत्येक 170 किलोग्राम की गांठ
(4) प्रत्येक 100 किलोग्राम की गांठ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. भारतीय जूट उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। विश्व स्तर पर पारंपरिक जूट पैकेजिंग सामग्री की मांग में कमी का प्राथमिक कारण क्या है?

(1) गहन खेती के कारण हुगली बेसिन में जलोढ़ मिट्टी का पूर्ण क्षरण।
(2) वस्त्र विविधता को बढ़ावा देने के लिए विश्व व्यापार संगठन द्वारा जूट उत्पादों पर प्रतिबंध।
(3) मानक उष्णकटिबंधीय पर्यावरणीय परिस्थितियों में जूट का जैव-निम्नीकरणीय न होना।
(4) नायलॉन जैसे सस्ते संश्लेषित विकल्पों का आविष्कार और व्यापक उपयोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख तिलहन फसल नहीं है?

(1) मूंगफली
(2) सोयाबीन

(4) पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, पूर्वी हिमालयी क्षेत्र, ट्रांस-गांगेय मैदान, मध्य गांगेय मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. प्रमाणित जैविक खेती प्रणालियों में निम्नलिखित में से किस पद्धति से पूरी तरह बचा जाता है?
(1) आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (GMOs) का उपयोग
(2) फसल चक्र
(3) उपचारित पशु खाद का उपयोग
(4) अंतरा-शस्यन (Intercropping)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. निम्नलिखित प्रश्न में, कथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A): कृषि क्षेत्र में भारत के लिए पुष्प कृषि में महत्वपूर्ण निर्यात क्षमता है।
कारण (R): भारत भर में विविध कृषि-जलवायु स्थितियाँ पूरे वर्ष समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय फूलों की एक विस्तृत विविधता की खेती की अनुमति देती हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. कृषि-जलवायु क्षेत्र और उसके संबंधित राज्य/क्षेत्र के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र - राजस्थान
(2) केंद्रीय पठार और पहाड़ी क्षेत्र - केरल
(3) द्वीप क्षेत्र - अंडमान और निकोबार तथा लक्षद्वीप
(4) ऊपरी गांगेय मैदान - उत्तर प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. सूची-I में चाय उत्पादक क्षेत्र को सूची-II में उसकी प्रमुख भौगोलिक विशेषता के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (चाय उत्पादक क्षेत्र)
A. ब्रह्मपुत्र घाटी
B. दार्जिलिंग
C. नीलगिरी
D. कांगड़ा घाटी
सूची II: (भौगोलिक विशेषता)
i. पश्चिम बंगाल में उच्च ऊंचाई वाली ढलानें जो भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग वाली ऑर्थोडॉक्स चाय के लिए प्रसिद्ध हैं
ii. असम में सबसे बड़ा निरंतर चाय उत्पादक क्षेत्र
iii. दक्षिण भारतीय पहाड़ी श्रृंखलाएं जो विशिष्ट सुगंधित चाय का उत्पादन करती हैं
iv. हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी क्षेत्र जहाँ छोटे लेकिन प्रसिद्ध चाय बागान हैं
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. भारतीय कृषि विपणन विभिन्न अक्षमताओं से ग्रस्त है। निम्नलिखित में से कौन-सी सरकारी पहल कृषि वस्तुओं के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने की दिशा में सबसे व्यापक कदम मानी जाती है?
(1) किसान क्रेडिट कार्ड योजना
(2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
(3) ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार)
(4) मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. भारत के दलहन उत्पादन के वैश्विक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत दुनिया में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है।
II. भारत दुनिया में दालों का सबसे बड़ा उपभोक्ता है।
III. भारत अपनी सभी दालों का कड़ाई से निर्यात करता है और घरेलू उपभोग पर प्रतिबंध लगाता है।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) II और III
(2) I और III
(3) I, II और III
(4) I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

69. सर्दियों के महीनों के दौरान, पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभों द्वारा लाई गई हल्की वर्षा उत्तर-पश्चिम भारत में गेहूं की फसल में मदद करती है। इन विक्षोभों का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) सर्दियों के दौरान बंगाल की खाड़ी से पीछे हटती मानसून की हवाएँ।
(2) पूर्वी क्षेत्रों में 'काल बैसाखी' के नाम से जाने जाने वाले स्थानीय तूफान।
(3) भूमध्य सागर के ऊपर उत्पन्न होने वाले उथले चक्रवाती अवदाब।
(4) तिब्बती पठार का अत्यधिक गर्म होना जिससे उत्तर में वायुदाब में परिवर्तन होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. कौन सा देश दुनिया में गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसके ठीक बाद भारत दूसरे स्थान पर है?
(1) चीन
(2) ब्राजील
(3) क्यूबा
(4) ऑस्ट्रेलिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में सोयाबीन की खेती का सही वर्णन करता है?

(4) C, A, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. चाय का पौधा उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ता है। चाय के बागानों के लिए मिट्टी की कौन-सी विशेषता आवश्यक है?
(1) गहरी, उपजाऊ, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी जो ह्यूमस और जैविक पदार्थों से भरपूर हो।
(2) उच्च लवणता और कम नमी धारण क्षमता वाली उथली, पथरीली मिट्टी।
(3) जलभराव वाली जलोढ़ मिट्टी जो पूरे फसल वर्ष के दौरान स्थायी रूप से नमी बनाए रखती है।
(4) न्यूनतम जैविक अंश और उच्च सतही तापमान वाली रेतीली मरुस्थलीय मिट्टी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. सूची-I में मोटे अनाज को सूची-II में उसके प्राथमिक उत्पादक राज्य के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मोटा अनाज)
A. ज्वार
B. बाजरा
C. रागी
D. जौ
सूची II: (राज्य)
i. राजस्थान
ii. महाराष्ट्र
iii. कर्नाटक
iv. उत्तर प्रदेश
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारतीय कॉफी की अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मांग है। इसकी प्रारंभिक वैश्विक प्रतिष्ठा का प्राथमिक ऐतिहासिक कारण क्या है?
(1) बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए उच्च उपज वाली रोबस्टा किस्म की विशेष खेती।
(2) कॉफी की कटाई का पूर्ण यांत्रिकीकरण जिससे इसकी कीमत में काफी कमी आई।
(3) यमन से उच्च गुणवत्ता वाली अरेबिका किस्म की शुरुआत।
(4) थार मरुस्थलीय क्षेत्र में उगाई जाने वाली कॉफी के लिए भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. भारत में गेहूं की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके लिए ठंडी वर्धन ऋतु की आवश्यकता होती है।
II. पकते समय खिली हुई धूप की आवश्यकता होती है।
III. इसके लिए वर्धन ऋतु के दौरान समान रूप से वितरित 50 से 75 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
IV. गंगा-सतलुज के मैदान एक प्रमुख गेहूं उत्पादक क्षेत्र हैं।
V. दक्कन के काली मिट्टी वाले क्षेत्र गेहूं की खेती के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त हैं।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. वैश्विक मसाला व्यापार में भारत की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(1) भारत उच्च मांग के कारण अपने लगभग सभी मसाले दक्षिण-पूर्व एशिया से आयात करता है।
(2) भारत में मसालों की खेती कड़ाई से दक्षिणी पश्चिमी घाटों तक ही सीमित है।
(3) मध्य भारत के अर्ध-शुष्क दक्कन पठार में केसर की व्यापक रूप से खेती की जाती है।
(4) भारत दुनिया में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. ओलेरीकल्चर, भारत में प्रचलित बागवानी की एक प्रमुख शाखा है, जो विशेष रूप से निम्नलिखित में से किसकी खेती को संदर्भित करती है?
(1) मदिरा बनाने के लिए अंगूर
(2) मानव उपभोग के लिए सब्जियां
(3) लकड़ी के लिए पेड़ और झाड़ियाँ
(4) औषधीय जड़ी-बूटियाँ और जड़ें
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से किसे निर्यात के लिए भारत में संरक्षित ग्रीनहाउस वातावरण के तहत व्यावसायिक रूप से उगाया जाने वाला प्रमुख 'कर्तित पुष्प' माना जाता है?
(1) गेंदा
(2) चमेली
(3) गुलाब
(4) गुड़हल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. मानक कृषि-जलवायु क्षेत्रों के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन भारत के उत्तर-पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने वाले क्षेत्रों का सही क्रम दर्शाता है?
(1) पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, ट्रांस-गांगेय मैदान, मध्य गांगेय मैदान, पूर्वी हिमालयी क्षेत्र
(2) पूर्वी हिमालयी क्षेत्र, मध्य गांगेय मैदान, ट्रांस-गांगेय मैदान, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र
(3) ट्रांस-गांगेय मैदान, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, पूर्वी हिमालयी क्षेत्र, मध्य गांगेय मैदान

Downloaded from www.pdf.tube

(4) I और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. भारत में दलहन की खेती के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए।
कथन I: चने और तूर जैसी दालों की खेती मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय और मध्य भारत के वर्षा आधारित क्षेत्रों में केंद्रित है।
कथन II: दालों को कम नमी की आवश्यकता होती है और वे चावल और गन्ने जैसी अधिक जल वाली फसलों की तुलना में शुष्क परिस्थितियों में बेहतर जीवित रह सकती हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में अत्यधिक सिंचाई से पर्यावरण का गंभीर क्षरण हुआ है। मिट्टी पर इस पद्धति का प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) ऊपरी मिट्टी के जैविक ह्यूमस और पोषक तत्वों में अत्यधिक वृद्धि।
(2) अत्यधिक सिंचाई के कारण भूमि का लवणीकरण और क्षारीकरण।
(3) उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का अम्लीय लैटेराइट मिट्टी में पूर्ण परिवर्तन।
(4) ऊपरी मिट्टी के समग्र घनत्व और सरंध्रता में भारी कमी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in
NODIA

(1) यह विशेष रूप से ओडिशा और पश्चिम बंगाल के तटीय मैदानों में उगाई जाती है।
(2) इसके विकास के लिए अत्यधिक रेतीली मिट्टी और कठोर मरुस्थलीय जलवायु की आवश्यकता होती है।
(3) यह मुख्य रूप से मई के गर्मियों के महीनों के दौरान जायद फसल के रूप में उगाई जाती है।
(4) मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र सोयाबीन के अग्रणी उत्पादक हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. कपास उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. माना जाता है कि भारत कपास के पौधे का मूल निवास स्थान है।
II. इसकी वृद्धि के लिए 210 पाला-मुक्त दिन और खिली हुई धूप की आवश्यकता होती है।
III. यह खरीफ की फसल है और इसे पकने में 6 से 8 महीने लगते हैं।
IV. डोडे फटने के चरण के दौरान भारी वर्षा फसल के लिए अत्यधिक फायदेमंद होती है।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. एक किसान पारंपरिक खेती से जैविक खेती की ओर संक्रमण करता है। पहले तीन वर्षों में, किसान फसल की पैदावार में गिरावट देखता है लेकिन बाजार में उसे उच्च कीमत मिलती है। उस चरण के लिए सबसे अच्छा आर्थिक शब्द क्या है जहाँ जैविक प्रमाणित होने से पहले भूमि रासायनिक अवशेषों से मुक्त हो रही होती है?
(1) परिपक्वता अवधि
(2) परती अवधि
(3) परिवर्तन अवधि
(4) कटाई अंतराल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. 'मध्य गांगेय मैदानी क्षेत्र' में मुख्य रूप से किन दो प्रमुख भारतीय राज्यों के कृषि क्षेत्र शामिल हैं जो उच्च जनसंख्या घनत्व और गहन निर्वाह खेती के लिए जाने जाते हैं?
(1) उत्तर प्रदेश और बिहार
(2) पंजाब और हरियाणा
(3) गुजरात और राजस्थान
(4) तमिलनाडु और केरल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. भारतीय कृषि में कई चुनौतियाँ व्याप्त हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी तकनीकी या पर्यावरणीय चुनौती के बजाय एक संस्थागत चुनौती है?
(1) भूजल स्तर में गिरावट
(2) उच्च उपज वाली किस्म के बीजों तक पहुँच की कमी
(3) कीटों के हमलों की उच्च घटना
(4) भूमि जोतों का विखंडन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. सूची-I में सब्जी की फसल को सूची-II में उसके महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सब्जी की फसल)
A. प्याज
B. आलू
C. टमाटर
D. टैपिओका (कसावा)
सूची II: (राज्य)
i. उत्तर प्रदेश
ii. महाराष्ट्र
iii. केरल
iv. आंध्र प्रदेश
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति मक्के की खेती के लिए उपयुक्त नहीं है?
(1) गहरी, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ दोमट मिट्टी जो पर्याप्त पोषण प्रदान करती है।
(2) प्रकाश संश्लेषण प्रक्रियाओं में सहायता के लिए वर्धन ऋतु के दौरान प्रचुर मात्रा में धूप।
(3) निरंतर भारी वर्षा जिसके कारण जलभराव हो जाता है।
(4) इष्टतम विकास के लिए 21 से 27 डिग्री सेल्सियस की तापमान सीमा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. भारत में प्राकृतिक रबर की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके लिए 200 सेमी से अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
II. इसके लिए 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर के तापमान की आवश्यकता होती है।
III. केरल भारत में प्राकृतिक रबर का सबसे बड़ा उत्पादक है।
IV. रबर मूल रूप से एक विषुवतीय फसल है।
V. यह पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में व्यापक रूप से उगाया जाता है।
कौन सा संयोजन गलत कथन/कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल V
(2) IV और V
(3) I, II और III

Click Here to Buy book on Amazon

का। असम मुख्यतः चाय और चावल के उत्पादन हेतु विख्यात है, जहाँ तिलहनों का व्यावसायिक योगदान अत्यंत सीमित है।

12. (2) I, II और III
चाय एक महत्वपूर्ण पेय फसल है, जिसे उष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके लिए वर्षभर गर्म और नम पाला-मुक्त मौसम अनिवार्य है। समान रूप से वितरित वर्षा की बौछारें पत्तियों की निरंतर वृद्धि में सहायक होती हैं। असम, दार्जिलिंग और नीलगिरी प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं। यह फसल गहरी और अच्छी जल निकासी वाली ह्यूमस युक्त मिट्टी में सर्वोत्तम विकसित होती है।

13. (3) अरेबिका
भारत में कॉफी की खेती बाबा बुदन पहाड़ियों से प्रारंभ हुई। 'अरेबिका' प्रसिद्ध किस्म है जिसे यमन से लाया गया था। इसकी उत्कृष्ट गुणवत्ता और विशिष्ट स्वाद के कारण वैश्विक बाजारों में इसकी भारी मांग रहती है। यद्यपि यह कीटों के प्रति संवेदनशील है, फिर भी उच्च आर्थिक लाभ हेतु भारतीय किसान इसे प्राथमिकता देते हैं। नीलगिरी इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में से एक है।

14. (2) A, D, C, B
प्राकृतिक रबर मुख्यतः विषुवतीय फसल है, किंतु भारत में इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। उत्पादन में केरल देश का अग्रणी राज्य है। हाल के वर्षों में त्रिपुरा दूसरे स्थान पर उभरा है, जिसके बाद कर्नाटक और तमिलनाडु का स्थान आता है। रबर की खेती हेतु 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा और 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तापमान वाली नम जलवायु आवश्यक होती है।

15. (1) दक्षिण भारत में इलायची की पहाड़ियाँ हरी इलायची के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
दक्षिण भारत की भौगोलिक परिस्थितियां मसालों हेतु अत्यंत अनुकूल हैं। केरल और तमिलनाडु की सीमा पर स्थित 'इलायची की पहाड़ियाँ' अपनी उच्च गुणवत्ता वाली हरी इलायची हेतु विश्व विख्यात हैं। इसके विपरीत, काली मिर्च और हल्दी को पर्याप्त नमी चाहिए, जो उत्तर भारत के शुष्क क्षेत्रों में संभव नहीं है। भारत प्राचीन काल से ही वैश्विक मसाला व्यापार का केंद्र रहा है।

16. (2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
भारत की विविध जलवायु के कारण यहाँ विभिन्न बागवानी फसलें उगाई जाती हैं। सेब उत्पादन हेतु हिमाचल प्रदेश की जलवायु प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश आमों, बिहार लीची और महाराष्ट्र अंगूर की खेती हेतु विख्यात हैं। ये फसलें न केवल किसानों की आय बढ़ाती हैं, बल्कि पोषक तत्वों की आपूर्ति भी सुनिश्चित करती हैं। ये क्षेत्रीय विशिष्टताएँ भारतीय बागवानी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं।

NODIA

17. (2) प्रत्यक्ष बिक्री या औद्योगिक उपयोग के लिए फूलों और सजावटी पौधों की खेती।
पुष्प कृषि या फ्लोरीकल्चर के अंतर्गत व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु फूलों और सजावटी पौधों की खेती की जाती है। इसमें फूलों का उत्पादन, विपणन और सज्जा हेतु उपयोग सम्मिलित है। भारत में सौंदर्य प्रसाधन, इत्र और धार्मिक अनुष्ठानों हेतु फूलों की बढ़ती मांग ने इसे लाभदायक व्यवसाय बना दिया है। वर्तमान में यह उच्च मूल्य वाली आधुनिक कृषि का एक प्रमुख घटक है।

18. (1) I, II, III और V
जैविक खेती वह पद्धति है जो पर्यावरण संतुलन हेतु संश्लेषित रसायनों, उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग को प्रतिबंधित करती है। सिक्किम भारत का प्रथम पूर्णतः जैविक राज्य है। यह प्रणाली फसल चक्र, जैविक खाद और प्राकृतिक कीट नियंत्रण पर आधारित है। 'परंपरागत कृषि विकास योजना' इस टिकाऊ पद्धति को बढ़ावा देती है, जिससे मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहते हैं।

19. (3) योजना आयोग के कृषि-जलवायु क्षेत्र
भारत में संतुलित कृषि विकास हेतु योजना आयोग ने देश को 15 कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया है। यह वर्गीकरण वर्षा, तापमान, मृदा और जल की उपलब्धता पर आधारित है। इसका उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार फसलों का चयन और संसाधनों का कुशल प्रबंधन करना है। इससे उत्पादकता बढ़ाने और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने में सहायता मिलती है।

20. (4) भूमि जोतों का विखंडन
भारतीय कृषि के आधुनिकीकरण में भूमि जोतों का निरंतर विखंडन एक बड़ी संरचनात्मक बाधा है। उत्तराधिकार के नियमों के कारण कृषि भूमि छोटे टुकड़ों में बंटती जा रही है। छोटे खेतों पर आधुनिक मशीनरी का प्रयोग आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं होता। परिणामस्वरूप, लागत बढ़ती है और उत्पादकता घटती है। यह समस्या नई तकनीकों और वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने में मुख्य अवरोध बनी हुई है।

21. (3) वर्तमान दशक में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह करोड़ों लोगों को रोजगार और उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करती है। हालांकि, यह कथन गलत है कि जीडीपी में इसका योगदान सर्वाधिक है। आर्थिक विकास के साथ सेवा और उद्योग क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ी है, जबकि कृषि का प्रतिशत घटा है। फिर भी, खाद्य सुरक्षा हेतु कृषि का महत्व बना हुआ है।

22. (2) खरीफ, रबी, जायद
भारत में मानसून की शुरुआत के साथ फसलों का चक्र शुरु होता है। सबसे पहले खरीफ ऋतु आती है जिसकी बुआई जून-जुलाई में मानसूनी वर्षा के साथ होती है। इसके बाद सर्दियों के मौसम में रबी ऋतु शुरु होती है, जिसमें अक्टूबर-नवंबर में

अध्याय 13

खनिज : धात्विक एवं अधात्विक

1. भारत में प्रमुख धात्विक खनिज मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस भूगर्भीय संरचना से संबंधित हैं?
   (1) नवीन तृतीयक अवसादी शैल क्रम
   (2) प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित शैल
   (3) व्यापक चतुर्थक जलोढ़ निक्षेप
   (4) विशिष्ट मेसोजोइक ज्वालामुखी शैल संरचनाएं
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
   कथन (A): भारत का प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र देश के धात्विक खनिज भंडार का बड़ा हिस्सा धारित करता है।
   कारण (R): प्रायद्वीपीय पठार मुख्य रूप से प्राचीन क्रिस्टलीय, आग्नेय और कायांतरित शैलों से बना है जो अत्यधिक खनिज युक्त हैं।
   नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. निम्नलिखित में से कौन सा सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला लौह अयस्क है, जिसमें 70 प्रतिशत तक लोहे का अंश और उत्कृष्ट चुंबकीय गुण होते हैं?
   (1) हेमेटाइट
   (2) सिडेराइट
   (3) मैग्नेटाइट
   (4) लिमोनाइट
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भारत में लौह अयस्क निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. झारखंड और ओडिशा एक प्रमुख निरंतर लौह अयस्क पेटी बनाते हैं।
   II. छत्तीसगढ़ में बैलाडीला की खानें उच्च श्रेणी के हेमेटाइट अयस्क के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
   III. कर्नाटक में कुद्रेमुख निक्षेपों का खनन विशेष रूप से घरेलू खपत के लिए किया जाता है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प ओडिशा राज्य में प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक जिलों की सही पहचान करता है?
   (1) बेल्लारी, चित्रदुर्ग और तुमकुरु
   (2) दंतेवाड़ा, बस्तर और दुर्ग
   (3) केंदुझर, मयूरभंज और सुंदरगढ़
   (4) सिंहभूम, पलामू और रांची
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: (लौह अयस्क खान)
   A. बैलाडीला
   B. नोआमंडी
   C. कुद्रेमुख
   D. बादामपहाड़
   सूची II: (राज्य)
   i. कर्नाटक
   ii. ओडिशा
   iii. छत्तीसगढ़
   iv. झारखंड
   कूट:
   (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
   (4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित में से कौन सा खनिज प्रायद्वीपीय शील्ड के बजाय भारत की गैर-प्रायद्वीपीय (अवसादी) भूगर्भीय संरचनाओं में मुख्य रूप से पाया जाता है?
   (1) तांबा
   (2) क्रोमाइट
   (3) बॉक्साइट
   (4) पेट्रोलियम
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
   कथन I: सिंहभूम जिला विशेष रूप से लौह अयस्क खनन के लिए प्रसिद्ध है और इसमें अन्य धात्विक खनिजों का अभाव है।

Downloaded from www.pdf.tube

34. (1) नम और आर्द्र जलवायु के साथ 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा।
प्राकृतिक रबर के सफल उत्पादन हेतु विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। यह मुख्यतः विषुवतीय फसल है जिसे वर्षभर 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा और उच्च आर्द्रता की जरूरत होती है। इसके अतिरिक्त, 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक का स्थिर तापमान इसकी वृद्धि के लिए अनिवार्य है। भारत में केरल और पूर्वोत्तर में ऐसी नम जलवायु रबर हेतु सर्वोत्तम पाई जाती है।

35. (3) केरल
केरल को प्राचीन काल से ही 'भारत का मसालों का बगीचा' कहा जाता है। यहाँ की जलवायु काली मिर्च, इलायची, दालचीनी और लौंग जैसे मसालों की खेती के लिए विश्व में सबसे उपयुक्त मानी जाती है। विशेष रूप से पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में इन मसालों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है। वैश्विक मसाला व्यापार में केरल का ऐतिहासिक और आर्थिक योगदान आज भी महत्वपूर्ण है।

36. (4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
भारत में कॉफी का उत्पादन मुख्यतः दक्षिणी राज्यों में केंद्रित है। कर्नाटक देश का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो कुल उत्पादन के 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है। इसके बाद केरल का स्थान है, जहाँ रोबस्टा किस्म उगाई जाती है। तमिलनाडु का नीलगिरी क्षेत्र भी महत्वपूर्ण है। आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों को गैर-पारंपरिक क्षेत्रों के रूप में देखा जाता है जहाँ विस्तार हो रहा है।

37. (3) झारखंड
भारत में पुष्प कृषि का विकास उन राज्यों में हुआ है जहाँ अनुकूल जलवायु और शहरी बाजारों तक पहुँच उपलब्ध है। कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्र व्यावसायिक फूलों की खेती के अग्रणी केंद्र हैं। इन राज्यों में तकनीकी ढांचा भी काफी उन्नत है। इसके विपरीत, झारखंड में अभी तक पुष्प कृषि का उस स्तर पर व्यावसायिक विस्तार नहीं हुआ है, इसलिए इसे अपवाद माना जाता है।

38. (2) I और V
भारतीय कृषि कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है। भूमि जोतों का औसत आकार विखंडन के कारण लगातार घट रहा है। इसके साथ ही, लघु किसानों के लिए संस्थागत ऋण प्राप्त करना आज भी कठिन बना हुआ है। भूजल स्तर में गिरावट और कोल्ड स्टोरेज की कमी जैसी चुनौतियां भी विद्यमान हैं। ये मुद्दे कृषि के आधुनिक विकास और किसानों की आय बढ़ाने में बाधक हैं।

39. (4) पूर्वी हिमालयी क्षेत्र: उच्च वर्षा, घने जंगल और झूम खेती।
पूर्वी हिमालयी कृषि-जलवायु क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी राज्य शामिल हैं। यह क्षेत्र अत्यधिक वर्षा और सघन वनों के लिए जाना जाता है। भौगोलिक विषमता के कारण यहाँ आज भी झूम खेती या स्थानांतरित कृषि की पारंपरिक पद्धति प्रचलित है। यहाँ की मिट्टी चाय और बागवानी फसलों के लिए उपयुक्त है। वर्षा की प्रचुरता के कारण यहाँ जल संसाधन पर्याप्त हैं, किंतु ढांचागत विकास शेष है।

40. (1) उत्तर प्रदेश
गेहूं भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल और रबी ऋतु का मुख्य आधार है। कुल उत्पादन की मात्रा के मामले में उत्तर प्रदेश अग्रणी राज्य है। यहाँ के विशाल गंगा के मैदान और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के कारण गेहूं की पैदावार बहुत अधिक होती है। यद्यपि प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में पंजाब आगे है, किंतु बड़े भौगोलिक क्षेत्र के कारण कुल उत्पादन में उत्तर प्रदेश सर्वोच्च है।

41. (3) भूमि के एक टुकड़े पर वास्तव में आवश्यक संख्या से अधिक लोग काम में लगे हुए हैं।
प्रच्छन्न बेरोजगारी भारतीय कृषि क्षेत्र की एक छिपी हुई समस्या है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब भूमि के एक निश्चित टुकड़े पर वास्तव में आवश्यक लोगों की तुलना में अधिक श्रमिक लगे होते हैं। यदि इन अतिरिक्त लोगों को हटा दिया जाए, तो भी कुल उत्पादन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार के अवसरों का अभाव है।

42. (1) सरसों
जायद एक छोटी फसल ऋतु है जो रबी और खरीफ के बीच, मार्च से जून तक होती है। इस दौरान तरबूज, खीरा और सब्जियां उगाई जाती हैं जिन्हें पकने के लिए गर्मी की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, सरसों एक प्रमुख रबी फसल है जिसे ठंडी जलवायु और सर्दियों के मौसम की आवश्यकता होती है। इसलिए सरसों को जायद ऋतु में नहीं उगाया जा सकता है।

43. (4) उच्च तापमान (25°C से ऊपर), उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वर्षा।
चावल भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जिसके लिए विशेष उष्णकटिबंधीय जलवायु चाहिए। इसकी वृद्धि के लिए 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान और उच्च आर्द्रता अनिवार्य है। चावल हेतु 100 सेंटीमीटर से अधिक वार्षिक वर्षा आवश्यक होती है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई के माध्यम से इसे उगाया जाता है। पकते समय इसे प्रचुर धूप की आवश्यकता होती है ताकि दाने विकसित हो सकें।

44. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
स्वतंत्रता के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी लगातार घटी है। इसका मुख्य कारण उद्योग और सेवा क्षेत्रों का तुलनात्मक रूप से अधिक तेजी से बढ़ना है। वास्तव में, कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन अन्य क्षेत्रों के बड़े विस्तार के कारण इसका जीडीपी में प्रतिशत योगदान कम हो गया है। यह एक विकासशील अर्थव्यवस्था के संक्रमण काल का सामान्य और सकारात्मक लक्षण है।

NODIA

के प्रभाव को कम करता है और पारदर्शिता लाता है। कृषि विपणन में दक्षता लाने और 'एक राष्ट्र एक बाजार' के सपने को साकार करने में यह महत्वपूर्ण है।

68. (4) I और II
भारत दालों के मामले में विश्व में अद्वितीय है क्योंकि यह दालों का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता दोनों है। शाकाहारी जनसंख्या हेतु दालें प्रोटीन का मुख्य स्रोत हैं। हालांकि उत्पादन अधिक है, किंतु घरेलू मांग इतनी अधिक है कि भारत को अक्सर दालों का आयात करना पड़ता है। अतः यह कहना गलत है कि भारत दालों का केवल निर्यात करता है। यह खाद्य सुरक्षा का मुख्य अंग है।

69. (3) भूमध्य सागर के ऊपर उत्पन्न होने वाले उथले चक्रवाती अवदाब।
उत्तर-पश्चिम भारत में सर्दियों के दौरान वर्षा का मुख्य कारण पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ हैं। ये चक्रवाती अवदाब भूमध्य सागर के ऊपर उत्पन्न होते हैं और पश्चिमी हवाओं के साथ भारत पहुँचते हैं। रबी फसलों, विशेष रुप से गेहूं के विकास के लिए यह वर्षा अत्यंत लाभकारी होती है। यह प्राकृतिक घटना हिमालय में हिमपात और मैदानी इलाकों में फुहारें लाती है, जो शीतकालीन कृषि हेतु महत्वपूर्ण है।

70. (2) ब्राजील
गन्ना उत्पादन में वैश्विक स्तर पर ब्राजील प्रथम स्थान पर है, जिसके बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। ब्राजील में गन्ने का उपयोग चीनी और इथेनॉल उत्पादन हेतु बड़े पैमाने पर होता है। भारत में भी उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र प्रमुख उत्पादक हैं। चीनी उद्योग ग्रामीण रोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत वैश्विक चीनी बाजार का एक मुख्य और प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी है।

71. (4) मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र सोयाबीन के अग्रणी उत्पादक हैं।
सोयाबीन एक महत्वपूर्ण तिलहन और प्रोटीन समृद्ध फसल है। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र भारत के दो सबसे बड़े सोयाबीन उत्पादक राज्य हैं, जहाँ देश का अधिकांश उत्पादन होता है। मध्य प्रदेश को 'सोया राज्य' भी कहा जाता है। इस फसल के लिए मध्यम वर्षा और अच्छी जल निकासी वाली काली मिट्टी आवश्यक होती है। यह खरीफ ऋतु के दौरान उगाई जाने वाली एक प्रमुख व्यावसायिक फसल है।

72. (1) I, II और III
कपास एक प्राचीन भारतीय फसल है। इसकी वृद्धि के लिए कम से कम 210 पाला-मुक्त दिन और खिली हुई धूप आवश्यक है। यह एक खरीफ फसल है जिसे परिपक्व होने में 6 से 8 महीने लगते हैं। हालांकि, डोडे फटने के समय वर्षा फसल हेतु हानिकारक होती है क्योंकि इससे रेशे खराब हो जाते हैं। इसे दक्कन की काली मिट्टी में सर्वाधिक उगाया जाता है।

73. (3) परिवर्तन अवधि
जब कोई किसान रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर बढ़ता है, तो उस शुरुआती दौर को 'परिवर्तन अवधि' कहा जाता है। इस दौरान भूमि को रासायनिक अवशेषों से मुक्त होने में समय लगता है। आमतौर पर इसमें तीन वर्ष लगते हैं, जिसके बाद ही उपज को 'जैविक प्रमाणित' माना जाता है। इस चरण में मिट्टी अपनी प्राकृतिक उर्वरता पुनः प्राप्त करती है, जो दीर्घकालिक लाभ प्रदान करती है।

74. (1) उत्तर प्रदेश और बिहार
मध्य गांगेय मैदानी क्षेत्र में पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के उपजाऊ क्षेत्र शामिल हैं। यह क्षेत्र गहरी जलोढ़ मिट्टी और प्रचुर जल के कारण गहन निर्वाह खेती हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होने से भूमि पर भारी दबाव रहता है। मुख्य फसलों में चावल, गेहूं और मक्का शामिल हैं। यहाँ कृषि जोतों का छोटा आकार आधुनिक तकनीकों को अपनाने में एक प्रमुख चुनौती है।

75. (4) भूमि जोतों का विखंडन
भारतीय कृषि में संस्थागत चुनौतियां वे हैं जो भूमि स्वामित्व और बाजार संरचना से जुड़ी होती हैं। भूमि जोतों का विखंडन एक प्रमुख संस्थागत समस्या है, जो उत्तराधिकार के कारण खेतों के छोटे टुकड़ों में बंटने से उत्पन्न होती है। इसके विपरीत, भूजल स्तर में गिरावट एक पर्यावरणीय समस्या है। जोतों का छोटा आकार कृषि में बड़े निवेश और आधुनिक यांत्रिकीकरण को कठिन बनाता है।

76. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के विभिन्न राज्य विशिष्ट सब्जियों के उत्पादन में विशेषज्ञता रखते हैं। महाराष्ट्र प्याज उत्पादन में प्रथम है। उत्तर प्रदेश आलू का सबसे बड़ा उत्पादक है, जहाँ विशाल मैदान इसके लिए अनुकूल हैं। आंध्र प्रदेश टमाटर के उत्पादन में महत्वपूर्ण है, जबकि केरल टैपिओका की खेती हेतु प्रसिद्ध है। ये सब्जियां न केवल स्थानीय आहार का हिस्सा हैं, बल्कि अंतर-राज्यीय व्यापार का मुख्य आधार भी हैं।

77. (3) निरंतर भारी वर्षा जिसके कारण जलभराव हो जाता है।
मक्का के विकास हेतु अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी और 21 से 27 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। इसे पर्याप्त धूप और मध्यम वर्षा की जरूरत होती है। हालांकि, निरंतर भारी वर्षा और जलभराव की स्थिति मक्के के लिए अत्यंत हानिकारक है। जड़ों में पानी रुकने से पौधों का विकास रुक जाता है और फसल खराब हो सकती है। अतः जलभराव इसके लिए अनुपयुक्त है।

78. (1) केवल V
प्राकृतिक रबर एक विषुवतीय फसल है जिसे भारी वर्षा (200 सेमी से अधिक) और उच्च तापमान (25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर) की आवश्यकता होती है। केरल भारत का सबसे बड़ा रबर उत्पादक है क्योंकि यहाँ ये सभी परिस्थितियां मौजूद हैं। यह कहना गलत है कि रबर राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। वहाँ की जलवायु रबर की खेती हेतु पूरी तरह विपरीत और प्रतिकूल है।

Click Here to Buy book on Amazon

राजस्थान की रेतीली मिट्टी और शुष्क जलवायु में फलता-फूलता है। रागी के उत्पादन में कर्नाटक प्रथम स्थान पर है, जबकि जौ मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में रबी फसल के रूप में उगाया जाता है। ये अनाज पोषक तत्वों का समृद्ध और सस्ता स्रोत प्रदान करते हैं।

57. (3) यमन से उच्च गुणवत्ता वाली अरेबिका किस्म की शुरुआत।
भारतीय कॉफी ने वैश्विक प्रतिष्ठा मुख्यतः अरेबिका किस्म के कारण प्राप्त की, जिसे यमन से लाया गया था। इस किस्म की विशिष्ट सुगंध और स्वाद ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारत को विशेष पहचान दिलाई। यद्यपि अब रोबस्टा का भी उत्पादन होता है, किंतु अरेबिका की ऐतिहासिक शुरुआत ने ही भारतीय कॉफी उद्योग की मजबूत नींव रखी और इसे दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया।

58. (1) I, II, III और IV
गेहूं की फसल के लिए ठंडी वर्धन ऋतु और पकते समय खिली हुई धूप आवश्यक है। इसे 50 से 75 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। भारत में गंगा-सतलुज के मैदान और दक्कन की काली मिट्टी वाले क्षेत्र इसके दो मुख्य उत्पादक क्षेत्र हैं। रबी ऋतु के दौरान उत्तर भारत में इसकी खेती मुख्य आधार है। यह चावल के बाद भारत की दूसरी महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है।

59. (4) भारत दुनिया में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है।
भारत वैश्विक मसाला बाजार में अत्यंत प्रभावशाली स्थान रखता है। यह दुनिया में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक देश है। यहाँ की जलवायु विविधता मिर्च, हल्दी और काली मिर्च जैसी विभिन्न फसलों की अनुमति देती है। भारतीय मसालों की मांग उनकी शुद्धता और स्वाद के कारण वैश्विक है। यह क्षेत्र लाखों लोगों को रोजगार और विदेशी मुद्रा प्रदान करता है।

60. (2) मानव उपभोग के लिए सब्जियां
ओलेरीकल्चर बागवानी विज्ञान की वह विशिष्ट शाखा है जो सब्जियों की खेती से संबंधित है। इसमें गैर-काष्ठीय पौधों का उत्पादन शामिल है जिनसे भोजन प्राप्त होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में सब्जियों की बढ़ती मांग के कारण इस क्षेत्र का महत्व बढ़ गया है। इसके अंतर्गत बीज बोने से लेकर विपणन तक की वैज्ञानिक विधियों का अध्ययन किया जाता है, जो पोषण सुरक्षा हेतु अनिवार्य है।

61. (3) गुलाब
गुलाब को भारत में निर्यात के लिए व्यावसायिक रूप से उगाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण 'कर्तित पुष्प' माना जाता है। ग्रीनहाउस वातावरण में इसकी खेती करके उच्च गुणवत्ता वाले फूलों का उत्पादन किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय गुलाबों की भारी मांग रहती है। फूलों की अन्य किस्मों की तुलना में गुलाब का व्यावसायिक मूल्य और निर्यात क्षमता अधिक है, जो इसे अत्यंत लाभदायक बनाता है।

62. (1) पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, ट्रांस-गांगेय मैदान, मध्य गांगेय मैदान, पूर्वी हिमालयी क्षेत्र
भारत के कृषि-जलवायु क्षेत्रों का पश्चिम से पूर्व का क्रम भौगोलिक परिवर्तन को दर्शाता है। यह क्रम पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र (ठंडी जलवायु) से शुरु होता है। इसके बाद ट्रांस-गांगेय मैदानी क्षेत्र (पंजाब, हरियाणा) आता है। आगे बढ़ने पर मध्य गांगेय मैदानी क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, बिहार) मिलता है। अंत में पूर्वी हिमालयी क्षेत्र आता है, जो अत्यधिक वर्षा और आर्द्र जलवायु वाला उत्तर-पूर्वी हिस्सा है।

63. (1) आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (GMOs) का उपयोग
प्रमाणित जैविक खेती का मुख्य सिद्धांत प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना है। इस पद्धति में आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (GMO) के उपयोग को प्रतिबंधित किया जाता है, क्योंकि इसे अप्राकृतिक माना जाता है। इसके बजाय, जैविक खेती में फसल चक्र, हरी खाद और प्राकृतिक कीट नियंत्रण का उपयोग होता है। इसका लक्ष्य मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना और रसायनों के बिना स्वस्थ खाद्यान्न उत्पादन सुनिश्चित करना है।

64. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में पुष्प कृषि के क्षेत्र में निर्यात की अपार संभावनाएं हैं क्योंकि यहाँ विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियां पाई जाती हैं। देश की भौगोलिक स्थिति वर्षभर अलग-अलग क्षेत्रों में समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय दोनों प्रकार के फूलों की खेती को संभव बनाती है। यह विविधता भारत को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बढ़त प्रदान करती है, जिससे विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है और किसानों की आय बढ़ती है।

65. (2) केंद्रीय पठार और पहाड़ी क्षेत्र - केरल
भारत के कृषि-जलवायु क्षेत्रों का वर्गीकरण विशिष्ट भौगोलिक विशेषताओं पर आधारित है। पश्चिमी शुष्क क्षेत्र राजस्थान को और ऊपरी गांगेय मैदान उत्तर प्रदेश को कवर करता है। हालांकि, केंद्रीय पठार और पहाड़ी क्षेत्र का संबंध मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से है, न कि केरल से। केरल पश्चिमी तटीय मैदानों और घाट क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह स्पष्ट क्षेत्रीय भिन्नता को प्रदर्शित करता है।

66. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
चाय उत्पादक क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक विशेषताएं हैं। ब्रह्मपुत्र घाटी दुनिया का सबसे बड़ा निरंतर चाय उत्पादक क्षेत्र है। दार्जिलिंग अपनी विशिष्ट स्वाद वाली ऑर्थोडॉक्स चाय हेतु प्रसिद्ध है। नीलगिरी की पहाड़ियों में सुगंधित चाय का उत्पादन होता है। कांगड़ा घाटी उत्कृष्ट किस्म की चाय के लिए जानी जाती है। यह क्षेत्रीय विविधता भारतीय चाय को वैश्विक बाजार में अनूठा और प्रतिस्पर्धी बनाती है।

67. (3) ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार)
ई-नाम भारत सरकार की एक क्रांतिकारी पहल है जिसका उद्देश्य कृषि वस्तुओं हेतु एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाना है। यह ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म मौजूदा मंडियों को जोड़ता है ताकि किसानों को प्रतिस्पर्धी कीमतें मिल सकें। यह बिचौलियों

Downloaded from www.pdf.tube

45. (3) यह एक खरीफ फसल है जो बिहार जैसे राज्यों में रबी के मौसम में उगाई जाती है।
मक्का एक लचीली फसल है जो विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलित हो सकती है। यद्यपि यह मुख्यतः खरीफ की फसल है, लेकिन बिहार जैसे कुछ राज्यों में इसे रबी के मौसम में भी सफलतापूर्वक उगाया जाता है। यह गुण अन्य अनाजों में दुर्लभ है। रबी के दौरान मक्के की उत्पादकता अक्सर खरीफ की तुलना में अधिक होती है, जो इसे किसानों हेतु एक विश्वसनीय विकल्प बनाती है।

46. (4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
भारत में मोटे अनाज विविध जलवायु स्थितियों में उगाये जाते हैं। मक्का भोजन और चारे के रूप में उपयोगी है। ज्वार तीसरी महत्वपूर्ण खाद्य फसल है जो ज्यादातर वर्षा आधारित होती है। बाजरा मुख्य रूप से राजस्थान की रेतीली मिट्टी में उगता है। रागी एक कठोर फसल है जो लाल और काली मिट्टी में कैल्शियम और लोहे जैसे पोषक तत्वों के साथ उगाई जाती है।

47. (1) वे वायुमंडल से नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बहाल होती है।
दालें भारतीय फसल चक्र का अनिवार्य हिस्सा हैं। अरहर को छोड़कर, अधिकांश दालें फलीदार फसलें होती हैं जो अपनी जड़ों के माध्यम से वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करती हैं। इस प्रक्रिया से मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता बहाल होती है, जिससे रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम हो जाती है। इसीलिए मृदा स्वास्थ्य हेतु दालों को अन्य फसलों के साथ उगाना श्रेष्ठ माना जाता है।

48. (1) I और II
पश्चिमी शुष्क क्षेत्र राजस्थान को कवर करता है, जहाँ कम वर्षा के कारण बाजरा प्रमुख है। पश्चिमी तटीय मैदान और घाट क्षेत्र अपनी उच्च वर्षा हेतु प्रसिद्ध हैं, जो रबर और मसालों जैसी बागानी फसलों के लिए आदर्श हैं। हालांकि, द्वीप क्षेत्र केवल सेब हेतु प्रसिद्ध नहीं है, क्योंकि सेब ठंडी पहाड़ी जलवायु की फसल है, जबकि द्वीप क्षेत्र उष्णकटिबंधीय जलवायु के अंतर्गत आते हैं।

49. (2) पंजाब
गन्ने की खेती उत्तर और दक्षिण भारत दोनों में होती है, लेकिन दक्षिण भारत के राज्यों में अनुकूल उष्णकटिबंधीय जलवायु के कारण गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है। यहाँ पेराई का मौसम भी लंबा होता है। पंजाब उत्तर भारत का प्रमुख उत्पादक है, लेकिन इसे दक्षिण के उच्च सुक्रोज वाले क्षेत्रों में शामिल नहीं किया जा सकता क्योंकि यहाँ की जलवायु उप-उष्णकटिबंधीय है।

50. (1) ऋतु - रबी
कपास एक प्रमुख व्यावसायिक फसल है जिसकी खेती हेतु विशिष्ट परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। यह मुख्यतः खरीफ की फसल है, क्योंकि इसे लंबे गर्म मौसम और धूप की जरूरत होती है। इसे काली मिट्टी में सबसे अच्छा उगाया जाता है जो दक्कन के पठार में प्रचुर है। इसके परिपक्व होने हेतु कम से कम 210 पाला-मुक्त दिनों की आवश्यकता होती है, जो रबी में संभव नहीं है।

51. (3) हुगली बेसिन
हुगली नदी बेसिन भारत में जूट की खेती और प्रसंस्करण का मुख्य केंद्र है। यहाँ जूट के लिए आवश्यक प्रचुर वर्षा, उच्च आर्द्रता और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी उपलब्ध है। हुगली नदी का ताज़ा जल जूट के रेशों को साफ करने की प्रक्रिया में अत्यंत सहायक होता है। इसी कारण पश्चिम बंगाल का यह क्षेत्र विश्व भर में उच्च गुणवत्ता वाले जूट उत्पादन हेतु विख्यात है।

52. (4) II, III और IV
चावल एक खरीफ फसल है जिसे उच्च तापमान और आर्द्रता की आवश्यकता होती है। पंजाब और हरियाणा में सिंचाई की मदद से इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। जल संरक्षण हेतु 'चावल की सीधी बुआई' (DSR) तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर चीन प्रथम और भारत दूसरे स्थान पर है। यह फसल राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है।

53. (2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
मूंगफली भारत में उत्पादित होने वाली सबसे महत्वपूर्ण तिलहन फसल है, जो कुल तिलहन उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा है। यह मुख्यतः खरीफ की फसल है। गुजरात अपनी उपजाऊ मिट्टी और अनुकूल जलवायु के कारण मूंगफली उत्पादन में अग्रणी है। हालांकि दोनों कथन सही हैं, किंतु एक उत्पादक राज्य होना यह स्पष्ट नहीं करता कि यह कुल तिलहन का आधा हिस्सा क्यों है।

54. (1) A, B, C, D
भारत में चावल उत्पादन का वितरण क्षेत्रीय भौगोलिक विशेषताओं पर निर्भर है। पश्चिम बंगाल अपनी डेल्टाई परिस्थितियों के कारण देश का सबसे बड़ा उत्पादक है। इसके बाद उत्तर प्रदेश आता है जहाँ गंगा के मैदानों में इसकी व्यापक खेती होती है। पंजाब अपनी उन्नत सिंचाई प्रणाली के कारण तीसरे स्थान पर है। राजस्थान जैसे शुष्क राज्यों में चावल का उत्पादन तुलनात्मक रूप से अत्यंत कम होता है।

55. (1) गहरी, उपजाऊ, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी जो ह्यूमस और जैविक पदार्थों से भरपूर हो।
चाय के पौधों के विकास के लिए मिट्टी की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है। इसके लिए गहरी, उपजाऊ मिट्टी चाहिए जो ह्यूमस से भरपूर हो। चाय के बागानों हेतु सबसे अनिवार्य शर्त अच्छी जल निकासी है, क्योंकि जलभराव झाड़ियों को नुकसान पहुँचाता है। इसीलिए चाय की खेती ढलानों पर की जाती है। ऐसी मिट्टी पोषक तत्वों के निरंतर अवशोषण को सुनिश्चित करती है, जिससे उत्पादन बेहतर होता है।

56. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
मोटे अनाजों का उत्पादन क्षेत्रीय मिट्टी और जलवायु पर निर्भर है। ज्वार का सर्वाधिक उत्पादन महाराष्ट्र में होता है। बाजरा

NODIA

79. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
भारत में चने और तूर जैसी दालों की खेती मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय और मध्य भारत के वर्षा आधारित क्षेत्रों में की जाती है। दालों की विशेषता है कि उन्हें बहुत कम नमी की आवश्यकता होती है, जिससे वे शुष्क परिस्थितियों में भी जीवित रहती हैं। इसी सहनशीलता के कारण इन्हें उन क्षेत्रों में प्राथमिकता दी जाती है जहाँ पानी की उपलब्धता कम है और अन्य फसलें संभव नहीं हैं।

80. (2) अत्यधिक सिंचाई के कारण भूमि का लवणीकरण और क्षारीकरण।
पंजाब और हरियाणा में अत्यधिक सिंचाई के गंभीर पर्यावरणीय दुष्परिणाम सामने आए हैं। जलभराव के कारण मिट्टी के लवणीकरण और क्षारीकरण की समस्या उत्पन्न हो गई है। जब पानी वाष्पित होता है, तो वह नमक की परत छोड़ देता है, जिससे उपजाऊ भूमि बंजर होने लगती है। यह मिट्टी के रासायनिक संतुलन को बिगाड़ देता है, जो भविष्य की कृषि उत्पादकता हेतु एक बड़ी चुनौती है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

(2) अयस्क को घरेलू इस्पात संयंत्रों के लिए रेल द्वारा पूर्व की ओर ले जाया जाता है।
(3) ये लौह अयस्क निक्षेप विश्व स्तर पर कुछ सबसे बड़े निक्षेपों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।
(4) यह खनन सुविधा शत-प्रतिशत निर्यात उन्मुख इकाई के रूप में कार्य करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. मध्य प्रदेश के मलांजखंड निक्षेप भारत के औद्योगिक क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक ऐसी धातु का उत्पादन करते हैं जिसकी मुख्य विशेषता है:
(1) इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रयुक्त उच्च चुंबकीय पारगम्यता
(2) उच्च विद्युत चालकता और तन्यता
(3) यशदलेपन (गैल्वेनाइजेशन) में प्रयुक्त संक्षारण के प्रति उच्च प्रतिरोध
(4) काटने वाले उपकरणों में प्रयुक्त अत्यधिक कठोरता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत में मैंगनीज के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह लगभग सभी भूगर्भीय संरचनाओं में पाया जाता है लेकिन मुख्य रूप से धारवाड़ तंत्र से संबंधित है।
II. ओडिशा मैंगनीज के अग्रणी उत्पादकों में से एक है।
III. इसका व्यापक रूप से विरंजक चूर्ण और कीटनाशकों के निर्माण में उपयोग किया जाता है।
IV. पूर्वी भारत में मैंगनीज निष्कर्षण के लिए अकेले सिंहभूम जिला उत्तरदायी है।
V. महाराष्ट्र में प्रमुख मैंगनीज निक्षेप नागपुर और भंडारा जिलों में स्थित हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल II और III
(3) केवल III और IV
(4) केवल IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. खेतड़ी तांबा परिसर, जो भारत में सबसे पुराने तांबा निष्कर्षण स्थलों में से एक है, राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(1) उदयपुर
(2) भीलवाड़ा
(3) झुंझुनू
(4) अलवर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन सा तांबे की खान और उसके संबंधित राज्य का सही सुमेलित युग्म है?
(1) मलांजखंड - झारखंड
(2) घाटशिला - मध्य प्रदेश
(3) अग्निगुंडाला - ओडिशा
(4) खेतड़ी - राजस्थान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

21. राजस्थान की ऐतिहासिक जावर खानें विश्व स्तर पर निम्नलिखित में से किस खनिज के सबसे पुराने निष्कर्षण स्थलों में से एक होने के लिए पहचानी जाती हैं?
(1) तांबा और सोना
(2) बॉक्साइट और अभ्रक
(3) सीसा और जस्ता
(4) क्रोमाइट और मैंगनीज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (खनिज)
A. बॉक्साइट
B. जस्ता
C. सोना
D. क्रोमाइट
सूची II: (प्रमुख उत्पादक राज्य)
i. राजस्थान
ii. ओडिशा
iii. कर्नाटक
iv. झारखंड
कूट:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. कौन सा राज्य भारत में बॉक्साइट के भंडार और उत्पादन दोनों में प्रथम स्थान रखता है, जो देश के उत्पादन के आधे से अधिक हिस्से के लिए उत्तरदायी है?
(1) गुजरात
(2) झारखंड
(3) महाराष्ट्र
(4) ओडिशा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सीसा और जस्ता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे बहुधात्विक खनिज हैं जो आमतौर पर एक ही अयस्क खंड में साथ पाए जाते हैं।
II. भारत में सीसा और जस्ता के उत्पादन पर राजस्थान का लगभग एकाधिकार है।
III. गैलेना जस्ता का एक प्रमुख अयस्क है जबकि स्फेलेराइट सीसा का एक प्रमुख अयस्क है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

कथन II: सिंहभूम झारखंड और ओडिशा तक फैली समृद्ध खनिज पेटी का एक हिस्सा है।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. निम्नलिखित प्रकार के लौह अयस्कों को उनके औसत लौह अंश के आधार पर घटते क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सिडेराइट
II. मैग्नेटाइट
III. लिमोनाइट
IV. हेमेटाइट
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, III, I
(2) IV, II, I, III
(3) II, IV, I, III
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. भारत में प्रमुख लौह अयस्क खनन क्षेत्रों के रूप में उनकी स्थिति के आधार पर निम्नलिखित में से विषम को पहचानें।
(1) खेतड़ी
(2) बैलाडीला
(3) कुद्रेमुख
(4) सिंहभूम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है और बालाघाट की खानों के लिए प्रसिद्ध है?
(1) ओडिशा
(2) महाराष्ट्र
(3) कर्नाटक
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. भारत में तांबा निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मध्य प्रदेश की बालाघाट खानें भारत के आधे से अधिक तांबे का उत्पादन करती हैं।
II. खेतड़ी तांबा पेटी राजस्थान की अरावली श्रेणी में स्थित है।
III. झारखंड का सिंहभूम जिला तांबे का एक प्रमुख उत्पादक है।
IV. भारत तांबा उत्पादन में अत्यधिक आत्मनिर्भर है और इसका भारी निर्यात करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. मैंगनीज का उपयोग मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसके निर्माण में एक आवश्यक कच्चे माल के रूप में किया जाता है?
(1) सीमेंट और उर्वरक
(2) बिजली के तार और केबल
(3) इस्पात और लौह-मिश्र धातु
(4) प्लास्टर ऑफ पेरिस और मृत्तिका (सिरेमिक)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): लोहा और इस्पात उद्योग के लिए मैंगनीज एक अपरिहार्य खनिज है।
कारण (R): अशुद्धियों को दूर करने और मिश्र धातु को कठोर करने के लिए एक टन इस्पात बनाने हेतु लगभग 10 किलोग्राम मैंगनीज की आवश्यकता होती है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (खनिज)
A. तांबा
B. मैंगनीज
C. लौह अयस्क
D. बॉक्साइट
सूची II: (प्रमुख निक्षेप/खान)
i. बैलाडीला
ii. पंचपतमाली
iii. मलांजखंड
iv. नागपुर-भंडारा
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. कुद्रेमुख लौह अयस्क निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ये निक्षेप कर्नाटक राज्य के पश्चिमी घाट में स्थित हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

फसलें बोई जाती हैं। रबी और खरीफ के बीच की छोटी अवधि, विशेष रूप से गर्मियों के दौरान, जायद ऋतु कहलाती है।

23. (4) चावल
अमन, आउस और बोरो चावल की ऐसी किस्में हैं जो मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल और असम में उगाई जाती हैं। इन नामों का संबंध फसल बोने और काटने के विशिष्ट मौसमों से है। अनुकूल जलवायु और जल की प्रचुरता के कारण इन राज्यों के किसान एक ही वर्ष में चावल की तीन फसलें लेने में सक्षम होते हैं, जिससे खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

24. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिम बंगाल भारत में जूट का सबसे बड़ा उत्पादक है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और यहाँ की गर्म व आर्द्र जलवायु जूट के पौधों के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। इसके अतिरिक्त, जूट के रेशों को सड़ाने और साफ करने के लिए यहाँ प्रचुर मात्रा में स्वच्छ जल उपलब्ध है। इन प्राकृतिक लाभों के कारण यह राज्य जूट उद्योग का केंद्र है।

25. (3) मक्का स्टार्च - कपड़ा और कागज उद्योग में मांड देना (साइजिंग)
मक्का एक बहुउपयोगी फसल है जिसके औद्योगिक अनुप्रयोग विस्तृत हैं। मक्का से प्राप्त स्टार्च का उपयोग मुख्यतः कपड़ा और कागज उद्योगों में मांड देने या साइजिंग हेतु किया जाता है। यह प्रक्रिया रेशों और कागज की सतह को मजबूती प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त मक्के का उपयोग जैव-ईंधन, खाद्य प्रसंस्करण और पशु चारे में भी होता है। इसकी बहुमुखी प्रकृति इसे महत्वपूर्ण बनाती है।

26. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-ii
उत्तर भारत में फसलों का चयन ऋतुओं के अनुसार किया जाता है। सरसों और जौ रबी की प्रमुख फसलें हैं जो सर्दियों में उगाई जाती हैं। धान खरीफ की मुख्य फसल है जिसकी खेती मानसून के दौरान होती है। तरबूज जैसे फल जायद ऋतु में उगाए जाते हैं, जो रबी और खरीफ के बीच की अवधि है। यह विविधता मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती है।

27. (4) कैल्शियम और लोहा (आयरन)
रागी एक अत्यंत पौष्टिक मोटा अनाज है जो शुष्क क्षेत्रों में सुगमता से उगाया जा सकता है। इसमें कैल्शियम और लोहे जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। लोहे की उच्च मात्रा के कारण यह एनीमिया से पीड़ित व्यक्तियों हेतु उत्कृष्ट आहार है। इसके अतिरिक्त, इसमें फाइबर और अन्य पोषक तत्व भी होते हैं जो स्वास्थ्य हेतु अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं।

28. (2) II और III
सरसों भारत की प्रमुख तिलहन फसल है जो रबी ऋतु में उगाई जाती है। इसके विकास के लिए ठंडी और शुष्क जलवायु आवश्यक है, किंतु यह पाले के प्रति संवेदनशील होती है। राजस्थान अपने अनुकूल वातावरण के कारण सरसों के उत्पादन में शीर्ष पर है। यह फसल मुख्यतः उत्तर भारत के सिंचित क्षेत्रों में केंद्रित है। इसके बीजों से प्राप्त तेल का उपयोग व्यापक है।

29. (3) प्रत्येक 170 किलोग्राम की गांठ
भारतीय कृषि सांख्यिकी और व्यापार में कच्चे कपास के उत्पादन को मापने हेतु 'गाँठ' को मानक इकाई माना जाता है। भारत में कपास की एक मानक गाँठ का वजन 170 किलोग्राम निर्धारित किया गया है। इस मानकीकरण से उत्पादन आंकड़ों के संकलन, परिवहन और बाजार में कीमतों के निर्धारण में सुगमता होती है। कपास उत्पादन में भारत विश्व के अग्रणी देशों में शामिल है।

30. (4) नायलॉन जैसे सस्ते संश्लेषित विकल्पों का आविष्कार और व्यापक उपयोग।
भारतीय जूट उद्योग वर्तमान में वैश्विक बाजार में गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसका प्राथमिक कारण नायलॉन और प्लास्टिक जैसे सस्ते संश्लेषित विकल्पों की व्यापक उपलब्धता है। ये कृत्रिम सामग्रियां जूट की तुलना में अधिक टिकाऊ और कम कीमत वाली होती हैं, जिससे पैकेजिंग क्षेत्र में जूट की मांग घटी है। हालांकि, पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण जूट का महत्व पुनः बढ़ रहा है।

31. (4) जई
भारत में तिलहन फसलों का उत्पादन मुख्य रूप से खाद्य तेल की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। मूंगफली, सोयाबीन और तिल देश की प्रमुख तिलहन फसलें हैं जिनसे तेल निकाला जाता है। इसके विपरीत, जई एक अनाज की फसल है जिसे मुख्यतः चारे और पौष्टिक मानव आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। जई का उपयोग तेल उत्पादन के लिए नहीं होता है।

32. (2) केवल I
भारत बागवानी के क्षेत्र में विश्व स्तर पर प्रमुख है, किंतु यह कहना गलत है कि यह फलों और सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक है। उत्पादन की मात्रा में चीन प्रायः प्रथम स्थान पर रहता है, जबकि भारत दूसरे स्थान पर है। हालांकि, भारत आम, केला और नींबू वर्गीय फलों के उत्पादन में अग्रणी है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन ने इस क्षेत्र के विकास में मदद की है।

33. (2) इसे शुरू में कर्नाटक में बाबा बुदन गिरी की पहाड़ियों पर लगाया गया था।
भारत में कॉफी की खेती का इतिहास कर्नाटक की बाबा बुदन गिरी पहाड़ियों से प्रारंभ हुआ था। यहीं सबसे पहले कॉफी के पौधों को लगाया गया था। भारत मुख्यतः अरेबिका और रोबस्टा किस्मों का उत्पादन करता है। अरेबिका अपनी उच्च गुणवत्ता के कारण प्रसिद्ध है। कॉफी के पौधों को सीधे धूप से बचाने हेतु छायादार पेड़ों के नीचे उगाया जाता है। वर्तमान में कर्नाटक मुख्य उत्पादक है।

NODIA

25. एल्युमीनियम प्रगालक अक्सर बॉक्साइट खानों के सीधे निकट होने के बजाय सस्ती बिजली के स्रोतों के पास स्थित होते हैं। इस स्थिति निर्धारण रणनीति का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) बॉक्साइट परिवहन के दौरान महत्वपूर्ण भार खो देता है।
(2) खानों के पास पर्यावरणीय नियम प्रगालकों की स्थापना को प्रतिबंधित करते हैं।
(3) एल्युमीनियम प्रगलन की विद्युत अपघटनी प्रक्रिया अत्यधिक ऊर्जा-गहन है।
(4) बॉक्साइट को निष्कर्षण के बाद तत्काल तेजी से ठंडा करने की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: कोलार गोल्ड फील्ड्स (KGF) और हट्टी की खानें भारत में सोने के प्राथमिक स्रोत हैं, जो दोनों कर्नाटक में स्थित हैं।
कथन II: अयस्क शिराओं की कम गहराई के कारण कोलार गोल्ड फील्ड्स में सोना खनन अत्यधिक लागत प्रभावी है।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम उत्पादन के आधार पर भारत के शीर्ष तीन बॉक्साइट उत्पादक राज्यों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(1) ओडिशा, गुजरात, झारखंड
(2) झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र
(3) गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा
(4) ओडिशा, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. भारत में सोने के निक्षेपों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(1) कोलार - कर्नाटक
(2) जावर - राजस्थान
(3) हट्टी - कर्नाटक
(4) रामगिरी - आंध्र प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. बॉक्साइट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एल्युमीनियम सिलिकेट से भरपूर विभिन्न प्रकार की शैलों के अपघटन से बनता है।
II. कोरापुट जिले में पंचपतमाली निक्षेप अत्यधिक महत्वपूर्ण बॉक्साइट निक्षेप हैं।
III. लोहे की उच्च मात्रा के कारण बॉक्साइट का उपयोग सीधे इस्पात बनाने के लिए किया जाता है।
IV. अमरकंटक पठार और मैकाल पहाड़ियों में पर्याप्त बॉक्साइट निक्षेप हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. जावर की खानों से सीसा और जस्ता अयस्कों के प्रसंस्करण के दौरान कई मूल्यवान सह-उत्पाद प्राप्त होते हैं। निम्नलिखित में से कौन सा विषम है, क्योंकि यह इस विशिष्ट बहुधात्विक अयस्क शोधन का सह-उत्पाद नहीं है?
(1) चांदी
(2) कैडमियम
(3) कोबाल्ट
(4) प्लेटिनम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. सुकिंदा घाटी विश्व स्तर पर भारत के किस खनिज के 95% से अधिक भंडार के लिए प्रसिद्ध है?
(1) क्रोमाइट
(2) बॉक्साइट
(3) मैंगनीज
(4) तांबा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): चूना पत्थर निक्षेपों की सीमेंट निर्माण उद्योग द्वारा भारी मांग की जाती है।
कारण (R): सीमेंट क्लिंकर के उत्पादन के लिए चूना पत्थर आवश्यक बुनियादी कच्चा माल है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. अभ्रक का उपयोग बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में बड़े पैमाने पर मुख्य रूप से किन गुणों के अनूठे संयोजन के कारण किया जाता है?
(1) उच्च विद्युत चालकता और विशेष रूप से कम गलनांक
(2) उच्च परावैद्युत शक्ति और उच्च वोल्टेज के प्रति प्रतिरोध
(3) अत्यधिक भौतिक आघातवर्धनीयता और महत्वपूर्ण चुंबकीय पारगम्यता
(4) उच्च ऊष्मा चालकता और अपेक्षाकृत कम तन्य शक्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित शैल
भारत के प्रमुख धात्विक खनिज निक्षेप मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार की प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित शैल संरचनाओं में पाए जाते हैं। ये संरचनाएं धारवाड़ और कुडप्पा प्रणालियों से संबंधित हैं, जो प्री-कैम्ब्रियन काल की हैं। इन भूगर्भीय परतों में लोहा, मैंगनीज और तांबा जैसे महत्वपूर्ण खनिजों का संचय हुआ है। यह स्थिर क्षेत्र देश की खनिज संपदा का आधार है और औद्योगिक विकास हेतु कच्चे माल का सबसे प्रमुख स्रोत माना जाता है।

2. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
भारत का प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र खनिज संसाधनों के मामले में अत्यंत समृद्ध है क्योंकि इसका निर्माण प्राचीन आग्नेय और कायांतरित शैलों से हुआ है। ये शैल संरचनाएं धात्विक खनिजों के संचय के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्रदान करती हैं। चूंकि पठारी भाग देश के अधिकांश खनिज भंडार को धारित करता है और इसकी भूगर्भीय संरचना ही इन खनिजों की उपस्थिति का मुख्य कारण है, इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. (3) मैग्नेटाइट
मैग्नेटाइट सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला लौह अयस्क है जिसमें 70 प्रतिशत तक लोहे का अंश पाया जाता है। इसमें उत्कृष्ट चुंबकीय गुण होते हैं, जो इसे विद्युत उद्योग के अनुप्रयोगों के लिए अत्यंत उपयोगी बनाते हैं। यह अयस्क प्रायः गहरे भूरे या काले रंग का होता है। भारत में इसके विशाल भंडार विशेष रूप से कर्नाटक के कुद्रेमुख क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसकी उच्च शुद्धता और चुंबकीय विशिष्टता इसे वैश्विक बाजारों में अत्यधिक मांग वाला महत्वपूर्ण खनिज बनाती है।

4. (1) केवल I और II
झारखंड और ओडिशा की निरंतर पेटी उच्च श्रेणी के हेमेटाइट अयस्क के लिए प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ में स्थित बैलाडीला की खानें अपनी उच्च गुणवत्ता के लिए जानी जाती हैं और यहाँ से लोहे का निर्यात विशाखापत्तनम बंदरगाह के माध्यम से किया जाता है। हालांकि, कर्नाटक के कुद्रेमुख निक्षेपों को पूर्णतः निर्यात उन्मुख इकाई के रूप में विकसित किया गया है, जहाँ से अयस्क को पाइपलाइन द्वारा मंगलुरु बंदरगाह भेजा जाता है। अतः यह केवल घरेलू खपत के लिए सीमित नहीं है।

5. (3) केंदुझर, मयूरभंज और सुंदरगढ़
ओडिशा भारत में लौह अयस्क का अग्रणी उत्पादक राज्य है। यहाँ के प्रमुख खनन क्षेत्र मुख्य रूप से केंदुझर, मयूरभंज और सुंदरगढ़ जिलों में स्थित हैं। बादामपहाड़ और किरुबुरु जैसी प्रसिद्ध खानें इन्हीं क्षेत्रों का हिस्सा हैं। यहाँ पाए जाने वाले उच्च श्रेणी के हेमेटाइट अयस्क का उपयोग मुख्य रूप से राउरकेला जैसे निकटवर्ती इस्पात संयंत्रों में किया जाता है। अन्य विकल्प कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और झारखंड के जिलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ओडिशा की खनिज भौगोलिक स्थिति से पूर्णतः भिन्न हैं।

6. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
बैलाडीला खानें छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में स्थित हैं और उच्च श्रेणी के हेमेटाइट के लिए जानी जाती हैं। नोआमंडी झारखंड का एक प्रमुख लौह अयस्क केंद्र है। कुद्रेमुख कर्नाटक के पश्चिमी घाट में स्थित है, जहाँ से लौह अयस्क का निर्यात किया जाता है। बादामपहाड़ ओडिशा के मयूरभंज जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण खनन स्थल है। ये सभी स्थल भारत के प्रमुख खनिज क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश के औद्योगिक आधार को मजबूती प्रदान करने में सहायक होते हैं।

7. (4) पेट्रोलियम
तांबा, क्रोमाइट और बॉक्साइट जैसे धात्विक खनिज मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की प्राचीन और कठोर शैल संरचनाओं में पाए जाते हैं। इसके विपरीत, पेट्रोलियम एक जीवाश्म ईंधन है जो मुख्य रूप से तृतीयक काल की अवसादी शैल परतों में पाया जाता है। यह गैर-प्रायद्वीपीय संरचनाओं जैसे असम, गुजरात और मुंबई हाई के अपतटीय क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में मिलता है। अवसादी बेसिनों में कार्बनिक पदार्थों के दबाव और अपघटन से पेट्रोलियम का निर्माण होता है, जो इसे धात्विक खनिजों से अलग करता है।

8. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
झारखंड का सिंहभूम जिला न केवल लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह तांबा और यूरेनियम जैसे अन्य महत्वपूर्ण खनिजों का भी एक प्रमुख उत्पादक है। इसलिए यह कहना अनुचित है कि यहाँ अन्य धात्विक खनिजों का अभाव है। हालांकि, यह सत्य है कि सिंहभूम झारखंड और ओडिशा के बीच फैली एक समृद्ध खनिज पेटी का हिस्सा है, जिसे सिंहभूम-मयूरभंज-केंदुझर पेटी कहते हैं। यह क्षेत्र भारत की खनिज संपदा के मामले में सबसे सघन और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है।

9. (1) II, IV, III, I
लौह अयस्कों की गुणवत्ता उनमें मौजूद लोहे के अंश से निर्धारित होती है। मैग्नेटाइट में सर्वाधिक 70 प्रतिशत तक लोहा होता है, जिसके बाद हेमेटाइट का स्थान आता है जिसमें 50 से 60 प्रतिशत लोहा होता है। लिमोनाइट में लोहे की मात्रा लगभग 40 से 50 प्रतिशत होती है और सिडेराइट सबसे निम्न श्रेणी का अयस्क है जिसमें 40 प्रतिशत से कम लोहा पाया जाता है। यह क्रम खनिजों के आर्थिक मूल्य और औद्योगिक उपयोगिता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

NODIA

II. राजस्थान के उदयपुर जिले में झामरकोटड़ा भारत का सबसे बड़ा रॉक फॉस्फेट निक्षेप है।
III. रॉक फॉस्फेट मुख्य रूप से केरल के तटीय जलोढ़ क्षेत्रों में निकाला जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजस्थान और पंजाब के कृषि क्षेत्रों में जिप्सम का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। इसका प्राथमिक कारण क्या है?
(1) जिप्सम मृदा की अम्लता को बढ़ाता है, जिससे चाय के बागानों को लाभ होता है।
(2) जिप्सम रेतीली रेगिस्तानी मृदा की जल धारण क्षमता को तेजी से बढ़ाता है।
(3) जिप्सम अनाज की फसलों के लिए नाइट्रोजन के प्रत्यक्ष स्रोत के रूप में कार्य करता है।
(4) जिप्सम क्षारीय और लवणीय मृदा को सुधारने के लिए मृदा संशोधक के रूप में कार्य करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (खनिज)
A. रॉक फॉस्फेट
B. जिप्सम
C. तांबा
D. सीसा और जस्ता

सूची II: (राजस्थान में प्रमुख उत्पादक जिला)
i. उदयपुर (जावर)
ii. उदयपुर (झामरकोटड़ा)
iii. बीकानेर
iv. झुंझुनू (खेतड़ी)

कूट:
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में गोंडवाना कोयले और तृतीयक (टर्शियरी) कोयले के बीच सही अंतर बताता है?
(1) तृतीयक कोयला गोंडवाना की तुलना में काफी कठोर होता है और इसमें कार्बन की मात्रा अधिक होती है।
(2) गोंडवाना कोयला उत्तर-पूर्व में है; तृतीयक कोयला प्रायद्वीप में है।
(3) गोंडवाना कोयला पुराना धातुकर्म श्रेणी का है; तृतीयक कोयला नवीन और लिग्नाइट श्रेणी का है।
(4) विशाल तृतीयक भंडार की तुलना में गोंडवाना कोयला भंडार नगण्य हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

46. निम्नलिखित कोयला क्षेत्रों में से उनकी भूगर्भीय निर्माण अवधि के आधार पर विषम को पहचानें।
(1) झरिया
(2) रानीगंज
(3) सिंगरौली
(4) माकुम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. कोयला निर्माण के निम्नलिखित चरणों को सबसे प्रारंभिक से सबसे उन्नत तक सही भूगर्भीय क्रम में व्यवस्थित करें:
I. बिटुमिनस
II. पीट
III. एंथ्रेसाइट
IV. लिग्नाइट

नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही क्रम चुनें:
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) I, II, IV, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. जिप्सम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह कैल्शियम का एक जलयोजित सल्फेट है।
II. सीमेंट के जमने के समय को नियंत्रित करने के लिए सीमेंट उद्योग में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
III. जिप्सम को उच्च तापमान पर गर्म करने से यह सीधे चूना पत्थर में बदल जाता है।
IV. प्लास्टर ऑफ पेरिस का निर्माण जिप्सम से किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल III और IV
(4) केवल IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता एक अपवाद है और आमतौर पर गोंडवाना कोयला क्षेत्रों से संबंधित नहीं है?
(1) ये दामोदर, महानदी और गोदावरी जैसी नदी घाटियों में स्थित हैं।
(2) ये मुख्य रूप से हिमालय की तृतीयक शैल संरचनाओं से जुड़े हैं।
(3) ये भारत के कोयला उत्पादन के बड़े हिस्से के लिए उत्तरदायी हैं।
(4) इनमें अच्छी गुणवत्ता वाला बिटुमिनस कोयला होता है।

(3) इसके परिणामस्वरूप निम्न गुणवत्ता वाले उत्पाद बनते हैं जो निर्माण के लिए अनुपयुक्त होते हैं।
(4) जीवाश्म ईंधन के उपयोग की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर देता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन भारत में प्रमुख तेल और गैस क्षेत्रों की व्यावसायिक खोज/विकास के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) मुंबई हाई, डिगबोई, मंगला (बाड़मेर), केजी बेसिन
(2) डिगबोई, मुंबई हाई, केजी बेसिन, मंगला (बाड़मेर)
(3) केजी बेसिन, डिगबोई, मंगला (बाड़मेर), मुंबई हाई
(4) डिगबोई, मंगला (बाड़मेर), मुंबई हाई, केजी बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सा अभ्यास एक अपवाद है और खनिजों के टिकाऊ उपयोग तथा संरक्षण का उपाय नहीं माना जाता है?
(1) निम्न श्रेणी के अयस्कों का उपयोग करने के लिए उन्नत तकनीकों को अपनाना।
(2) धातुओं के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना।
(3) अनियमित रैट-होल माइनिंग।
(4) दुर्लभ खनिजों के स्थान पर प्रचुर विकल्पों का प्रतिस्थापन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. टिकाऊ खनिज उपयोग की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खनन कार्यों से अक्सर वनों की कटाई और जैव विविधता की हानि होती है।
II. खदान अपशिष्ट का उचित निपटान और परित्यक्त खानों का सुधार महंगा और जटिल है।
III. अवैज्ञानिक खनन पद्धतियां खनिज भंडार के जीवन काल को कम करती हैं।
IV. निष्कर्षण प्रक्रिया में जीवाश्म ईंधन का उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान देता है।
V. टिकाऊ खनन का आदेश है कि खनिज निष्कर्षण पर्यावरणीय प्रभाव की परवाह किए बिना तत्काल आर्थिक लाभ पर केंद्रित होना चाहिए।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सतत उपयोग की चुनौतियों की सही समझ का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) केवल II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: बाड़मेर बेसिन में हाइड्रोकार्बन की खोज ने पश्चिमी राजस्थान के आर्थिक परिदृश्य को व्यापक रूप से बदल दिया।
कथन II: बाड़मेर बेसिन के तेल क्षेत्रों का प्रबंधन बिना किसी केंद्रीय या निजी भागीदारी के विशेष रूप से राजस्थान राज्य सरकार द्वारा किया जाता है।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म खनिज संरक्षण की चुनौती को उसकी उपयुक्त शमन रणनीति के साथ सही ढंग से पहचानता है?
(1) पर्यावरणीय क्षरण – नदी तटों के पास विवृत खनन को तेज करना।
(2) उच्च श्रेणी के अयस्कों की कमी – निम्न श्रेणी के अयस्कों को आर्थिक रूप से संसाधित करने के लिए तकनीक का उन्नयन।
(3) धात्विक खनिजों पर अत्यधिक निर्भरता – सिंथेटिक विकल्पों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना।
(4) प्रगलन में उच्च ऊर्जा लागत – प्रगलन कार्यों के लिए विशेष रूप से लकड़ी के कोयले का उपयोग करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. खेतड़ी तांबा पेटी न केवल आधुनिक खनन के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि साक्ष्य यह भी बताते हैं कि यहाँ खनन गतिविधियाँ किस प्राचीन सभ्यता के समय की हैं?
(1) प्रारंभिक वैदिक काल
(2) प्राचीन मौर्य साम्राज्य
(3) शास्त्रीय गुप्त साम्राज्य
(4) सिंधु घाटी सभ्यता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (खनिज)
A. लौह अयस्क
B. कोयला
C. सोना
D. जस्ता
सूची II: (विशिष्ट खान/क्षेत्र)
i. हट्टी
ii. जावर
iii. नोआमंडी
iv. झरिया
कूट:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. डिगबोई के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह असम राज्य में स्थित है।

II. यह भारत का सबसे पुराना चालू तेल कुआँ होने का गौरव रखता है।

III. यह बंगाल की खाड़ी में एक प्रमुख अपतटीय तेल क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. बॉम्बे अपतटीय बेसिन, जिसमें मुंबई हाई स्थित है, भारत में किन दो संसाधनों के सर्वाधिक उत्पादन के लिए उत्तरदायी है?

(1) कोयला और लिग्नाइट
(2) लौह अयस्क और मैंगनीज
(3) बॉक्साइट और तांबा
(4) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. भूमिगत कोयला गैसीकरण तकनीक के अनुप्रयोग की खोज कई भारतीय कोयला ब्लॉकों में की जा रही है। इस अवधारणा का प्राथमिक उद्देश्य है:

(1) औद्योगिक हीरा संश्लेषण के लिए अति-शुद्ध कार्बन निकालना।
(2) गहरी कोयला परतों को स्वस्थाने (in-situ) दहनशील संश्लेषित गैस (syngas) में बदलना।
(3) पुरानी परित्यक्त कोयला खानों के सुरक्षित भराव की इंजीनियरिंग करना।
(4) हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग के माध्यम से शेल में फंसी प्राकृतिक गैस को निकालना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. निम्नलिखित में से कौन सा कथन केजी बेसिन (कृष्णा-गोदावरी बेसिन) के महत्व पर सही प्रकाश डालता है?

(1) भारत में उच्च श्रेणी के तांबा अयस्क का सबसे बड़ा अंतर्देशीय भंडार।
(2) स्थलीय बेसिन जो विशेष रूप से उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल के लिए जाना जाता है।
(3) भारत के पूर्वी तट पर बड़े प्राकृतिक गैस के भंडार की खोज।
(4) प्राथमिक अपतटीय बॉक्साइट खनन कार्यों के लिए प्रमुख स्थल।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (प्राकृतिक गैस/तेल क्षेत्र)

A. मंगला
B. राववा
C. नाहरकटिया
D. हजीरा

सूची II: (बेसिन/क्षेत्र)

i. असम
ii. बाड़मेर बेसिन
iii. खंभात बेसिन
iv. कृष्णा-गोदावरी बेसिन

कूट:

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

63. राजस्थान में प्राकृतिक गैस और तेल क्षेत्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. बाड़मेर-सांचौर बेसिन एक महत्वपूर्ण स्थलीय तेल और गैस उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा है।

II. मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या इस क्षेत्र के प्रमुख तेल क्षेत्र हैं।

III. जैसलमेर बेसिन में प्राकृतिक गैस के आशाजनक भंडार हैं।

IV. राजस्थान से निकाला गया तेल पूरी तरह से अपतटीय है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. संरक्षण के संबंध में भारत की राष्ट्रीय खनिज नीति का प्राथमिक उद्देश्य क्या सुनिश्चित करना है?

(1) वनों की रक्षा के लिए सभी खनन गतिविधियों को पूरी तरह बंद करना।
(2) शून्य-अपशिष्ट उद्देश्य और वैज्ञानिक दोहन के साथ टिकाऊ खनन अभ्यास।
(3) तत्काल निर्यात राजस्व बढ़ाने के लिए अधिकतम गति से खनिजों का निष्कर्षण।
(4) सभी खनन कार्यों को निजी विदेशी संस्थाओं को स्थानांतरित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. खनिज संरक्षण अक्सर स्क्रैप धातुओं के पुनर्चक्रण पर जोर देता है। इस्पात और एल्युमीनियम जैसे उद्योगों में स्क्रैप धातु का उपयोग करने का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या है?

(1) स्क्रैप के साथ मिलाने के लिए कच्चे अयस्कों की औद्योगिक मांग को बढ़ाता है।
(2) ऊर्जा की खपत और कच्चे अयस्क की कमी को कम करता है।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. झामरकोटड़ा की खानें, जो उर्वरक कच्चे माल के लिए भारत की आयात निर्भरता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, निम्नलिखित में से किसका उत्पादन करती हैं?
(1) रॉक फॉस्फेट
(2) कृषि जिप्सम
(3) खनिज पोटाश
(4) आयरन पाइराइट्स
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. निम्नलिखित में से किसे भारत के सबसे पुराने कोयला क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है, जहाँ 18वीं शताब्दी में व्यावसायिक निष्कर्षण शुरू हुआ था?
(1) झरिया
(2) बोकारो
(3) रानीगंज
(4) कोरबा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रमुख कोयला क्षेत्र)
A. झरिया
B. रानीगंज
C. सिंगरौली
D. कोरबा
सूची II: (राज्य)
i. पश्चिम बंगाल
ii. छत्तीसगढ़
iii. झारखंड
iv. मध्य प्रदेश
कूट:
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत में पेट्रोलियम भंडार मुख्य रूप से अवसादी बेसिनों में पाए जाते हैं।
कारण (R): पेट्रोलियम का निर्माण लाखों वर्षों में अवसादी शैल परतों के भीतर दबे कार्बनिक पदार्थों के अपघटन से होता है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. भारत के प्रमुख कोयला क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. झरिया भारत का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है और प्राइम कोकिंग कोल के लिए जाना जाता है।
II. रानीगंज कोयला क्षेत्र मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में स्थित है।
III. कोरबा कोयला क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है।
IV. सिंगरौली कोयला क्षेत्र मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर फैला हुआ है।
V. ये सभी प्रमुख कोयला क्षेत्र विशेष रूप से तृतीयक भूगर्भीय काल के हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सिंगरौली और कोरबा कोयला क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) NTPC द्वारा पिट-हेड थर्मल पावर उत्पादन के लिए सिंगरौली का भारी उपयोग किया जाता है।
(2) दोनों कोयला क्षेत्र गोंडवाना शैल तंत्र का हिस्सा हैं।
(3) दोनों कोयला क्षेत्र प्रायद्वीपीय भारत की मध्य-पूर्वी पेटी में स्थित हैं।
(4) कोरबा कोयला क्षेत्र मुख्य रूप से उच्च श्रेणी के एंथ्रेसाइट कोयले के उत्पादन के लिए जाना जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. तेल क्षेत्रों और उनके वर्गीकरण के निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) बसीन (वसई) – अपतटीय क्षेत्र
(2) मुंबई हाई – स्थलीय क्षेत्र
(3) डिगबोई – अपतटीय क्षेत्र
(4) अंकलेश्वर – अपतटीय क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: मुंबई हाई तेल क्षेत्र की खोज 1970 के दशक में तेल और प्राकृतिक गैस निगम (ONGC) द्वारा की गई थी।
कथन II: मुंबई हाई में निष्कर्षण 'सागर सम्राट' नामक विशेष रूप से डिजाइन किए गए अपतटीय ड्रिलिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग करके किया जाता है।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

Click Here to Buy book on Amazon

73. भारत में बॉक्साइट के वितरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत के पठारी क्षेत्रों और पहाड़ी श्रृंखलाओं में पाया जाता है।
(2) तटीय क्षेत्रों की लैटेराइट मृदा में भी बॉक्साइट के भंडार पाए जाते हैं।
(3) राजस्थान देश में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है।
(4) ओडिशा के कालाहांडी और कोरापुट जिले प्रमुख बॉक्साइट केंद्र हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. एक नई बड़ी खान खोलने से पहले पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) अनिवार्य है। खनन क्षेत्र में EIA का प्राथमिक अनुप्रयोग है:
(1) पारिस्थितिक और सामाजिक परियोजना प्रभावों का पूर्वानुमान करना और उनका प्रबंधन करना।
(2) खनिज भंडार के सटीक मौद्रिक मूल्य की गणना करना।
(3) उपग्रह चित्रों का उपयोग करके अयस्क शिराओं की गहराई निर्धारित करना।
(4) विभिन्न विदेशी निवेशक समूहों को खनन शेयर आवंटित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सिंहभूम जिला अद्वितीय है क्योंकि यह एक अत्यधिक खनिजयुक्त क्षेत्र है। लौह अयस्क के अलावा, सिंहभूम में प्रमुख रूप से किस अन्य धात्विक खनिज का खनन किया जाता है?
(1) जस्ता
(2) सीसा
(3) चांदी
(4) तांबा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. खनिज निष्कर्षण के संदर्भ में, "अयस्क" की सटीक परिभाषा क्या है?
(1) शैल संरचना जिससे खनिज की वैज्ञानिक रूप से पहचान की जाती है।
(2) प्राकृतिक पदार्थ जिससे खनिजों को लाभप्रद रूप से निकाला जा सकता है।
(3) अन्य विविध तत्वों के साथ मिश्रित खनिजों का संचय।
(4) प्रगलन प्रक्रिया के बाद निकाली गई विशुद्ध रूप से परिष्कृत धातु।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. निम्नलिखित में से सबसे उपयुक्त कारण कौन सा है कि उत्तरी मैदानों की तुलना में प्रायद्वीपीय भारत धात्विक खनिजों में अत्यधिक समृद्ध है?
(1) सदियों से मैदानों में भारी खनन किया गया, जिससे संसाधन समाप्त हो गए।
(2) क्षेत्रीय जलवायु तीव्र आधुनिक खनिज संश्लेषण अवधि के पक्ष में है।
(3) विवर्तनिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित प्राचीन शैलों से बना पठारी भाग।
(4) नदियाँ उत्तरी मैदानों से सभी धात्विक अयस्कों को बहा ले जाती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

78. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: जावर की खानें उदयपुर के पास अरावली श्रेणियों में स्थित हैं।
कथन II: हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड मुख्य रूप से इन खानों के संचालन और अयस्क प्रसंस्करण के लिए उत्तरदायी है।
सही विकल्प चुनें:
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. खनिज प्रसंस्करण शब्दावली का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) प्लेसर माइनिंग - कोयला निकालने के लिए गहरी क्षैतिज सुरंगों की भूमिगत खुदाई।
(2) अयस्क संवर्धन - गैंग (अपशिष्ट) को हटाकर अयस्क के आर्थिक मूल्य में सुधार करना।
(3) प्रगलन - गर्म करने और पिघलाने की प्रक्रिया द्वारा इसके अयस्क से धातु निकालना।
(4) विवृत खनन - व्यापक सुरंग बनाए बिना सतह के पास से खनिजों को निकालना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित में से किस मुख्य क्षेत्र पर विशेष जोर देती है?
(1) विदेशी बहुराष्ट्रीय समूहों को स्थायी पट्टे देना।
(2) 'अंतर-पीढ़ीगत समानता' की अवधारणा का कार्यान्वयन।
(3) सभी मूल्य वर्धित खनिज उत्पादों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाना।
(4) गौण खनिजों के कराधान को केंद्र सरकार को स्थानांतरित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

खनिज संपदा के कारण औद्योगिक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यहाँ प्राचीन काल से ही धातुकर्म की समृद्ध परंपरा रही है।

20. (4) खेतड़ी - राजस्थान
राजस्थान में अरावली श्रेणियों के किनारे स्थित खेतड़ी क्षेत्र भारत में तांबा खनन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ तांबे के निक्षेप काफी प्राचीन समय से निकाले जा रहे हैं। मलांजखंड मध्य प्रदेश में स्थित है, जबकि घाटशिला झारखंड में तांबा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। अग्निगुंडाला निक्षेप आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में पाए जाते हैं। खेतड़ी तांबा परिसर का प्रबंधन सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा किया जाता है। यह सही सुमेलित युग्म देश के तांबा वितरण को सटीक दर्शाता है।

21. (3) सीसा और जस्ता
राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित जावर की खानें दुनिया की सबसे पुरानी सीसा और जस्ता की खानों में से एक मानी जाती हैं। यहाँ खनन और प्रगलन की गतिविधियाँ कई शताब्दियों पुरानी हैं, जिनके साक्ष्य पुरातात्विक खुदाई में भी प्राप्त हुए हैं। सीसा और जस्ता का उपयोग मुख्य रूप से मिश्र धातुओं, गैल्वेनाइजेशन और बैटरी निर्माण में किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से, जावर क्षेत्र ने भारत की धातुकर्म विरासत को समृद्ध किया है और वर्तमान में भी यह इन धातुओं का प्रमुख उत्पादन केंद्र है।

22. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-ii
ओडिशा बॉक्साइट और क्रोमाइट दोनों का भारत में सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जो देश के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करता है। राजस्थान सीसा और जस्ता के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है, जहाँ जावर जैसी प्रमुख खानें स्थित हैं। कर्नाटक देश का प्रमुख सोना उत्पादक राज्य है, जहाँ कोलार और हट्टी की प्रसिद्ध सोने की खानें मौजूद हैं। झारखंड भी खनिज संपदा में समृद्ध है, लेकिन बॉक्साइट, जस्ता और सोने के प्राथमिक उत्पादन के संदर्भ में यह मिलान भौगोलिक सटीकता दर्शाता है।

23. (4) ओडिशा
ओडिशा भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा प्रदान करता है। यहाँ के कोरापुट जिले में स्थित पंचपतमाली निक्षेप राज्य के सबसे महत्वपूर्ण बॉक्साइट भंडार हैं। इसके अतिरिक्त कालाहांडी और संबलपुर जिलों में भी इसके समृद्ध भंडार पाए जाते हैं। एल्युमीनियम के निष्कर्षण के लिए बॉक्साइट मुख्य कच्चा माल है। ओडिशा की अनुकूल भूगर्भीय संरचना और लैटेराइट चट्टानें इस खनिज के बड़े पैमाने पर संचय के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी मानी जाती हैं।

24. (3) केवल III
सीसा और जस्ता अक्सर एक साथ पाए जाते हैं और गैलेना वास्तव में सीसा का प्रमुख अयस्क है, जबकि स्फेलेराइट जस्ता का मुख्य अयस्क है। प्रश्न में इन अयस्कों के संबंधों को गलत तरीके से पेश किया गया है। यह सत्य है कि राजस्थान भारत में इन खनिजों के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है और ये बहुधात्विक निक्षेपों के रूप में मिलते हैं। गैलेना से सीसा निकालने की प्रक्रिया अत्यंत जटिल होती है और इसके सह-उत्पाद के रूप में बहुमूल्य चांदी भी प्राप्त की जाती है।

25. (3) एल्युमीनियम प्रगलन की विद्युत अपघटनी प्रक्रिया अत्यधिक ऊर्जा-गहन है
एल्युमीनियम के निष्कर्षण और प्रगलन के लिए विद्युत अपघटनी प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है, जो बिजली की बहुत अधिक खपत करती है। उत्पादन लागत में बिजली का हिस्सा सर्वाधिक होता है, इसलिए एल्युमीनियम संयंत्रों को अक्सर बॉक्साइट खानों के बजाय उन क्षेत्रों में स्थापित किया जाता है जहाँ सस्ती और निरंतर बिजली उपलब्ध हो। यह एक प्रमुख स्थान निर्धारक कारक है क्योंकि ऊर्जा की बचत और कम लागत पर बिजली की उपलब्धता ही इस उद्योग की लाभप्रदता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करती है।

26. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
कर्नाटक में स्थित कोलार और हट्टी भारत में प्राथमिक सोने के प्रमुख स्रोत हैं। हालांकि, कोलार गोल्ड फील्ड्स की खानें दुनिया की सबसे गहरी खानों में से एक हैं, जिसके कारण यहाँ से सोना निकालना बहुत कठिन और खर्चीला हो गया है। गहराई बढ़ने के साथ तापमान और दबाव भी अत्यधिक बढ़ता है, जिससे खनन की लागत बहुत अधिक बढ़ जाती है। इसी उच्च लागत के कारण कोलार में व्यावसायिक खनन कार्य बंद कर दिया गया था। अतः, गहराई कम होने का तर्क पूर्णतः गलत है।

27. (1) ओडिशा, गुजरात, झारखंड
भारत में बॉक्साइट उत्पादन का सही अवरोही क्रम ओडिशा, गुजरात और झारखंड है। ओडिशा देश का अग्रणी उत्पादक है, जिसके बाद गुजरात का स्थान आता है जहाँ जामनगर और कच्छ जैसे क्षेत्रों में निक्षेप पाए जाते हैं। झारखंड में लोहरदगा जिले में महत्वपूर्ण बॉक्साइट खानें स्थित हैं। यह क्रम राज्यों की उत्पादन क्षमता और उनके भौगोलिक भंडारों की विशालता को दर्शाता है। बॉक्साइट मुख्य रूप से एल्युमीनियम उद्योग के लिए कच्चे माल का प्रमुख स्रोत है और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण है।

28. (2) जावर - राजस्थान
जावर की खानें राजस्थान में स्थित हैं, लेकिन वे सोने के लिए नहीं बल्कि मुख्य रूप से सीसा और जस्ता के उत्पादन के लिए जानी जाती हैं। कोलार और हट्टी की खानें कर्नाटक में स्थित प्राथमिक सोने के स्रोत हैं, जबकि आंध्र प्रदेश का रामगिरी क्षेत्र भी सोने के निक्षेपों के लिए पहचाना जाता है। इस प्रकार, जावर और सोने का युग्म सर्वथा गलत है। खनिजों के सही वितरण को समझना परीक्षाओं और औद्योगिक योजना के लिए आवश्यक है ताकि राष्ट्रीय संसाधनों का सही आकलन किया जा सके।

Downloaded from www.pdf.tube

10. (1) खेतड़ी
बैलाडीला, कुद्रेमुख और सिंहभूम भारत के प्रमुख लौह अयस्क खनन क्षेत्र हैं जो क्रमशः छत्तीसगढ़, कर्नाटक और झारखंड में स्थित हैं। इसके विपरीत, राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित खेतड़ी मुख्य रूप से तांबा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है और इसे भारत की तांबा राजधानी के रूप में जाना जाता है। अतः, खनिज के प्रकार के आधार पर खेतड़ी अन्य तीनों विकल्पों से सर्वथा भिन्न है। ऐतिहासिक और औद्योगिक रूप से खेतड़ी का महत्व तांबा निष्कर्षण और उसके प्रसंस्करण से जुड़ा हुआ है।

11. (4) मध्य प्रदेश
मध्य प्रदेश वर्तमान में भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। राज्य का बालाघाट जिला अपनी समृद्ध मैंगनीज खानों के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है और देश के कुल उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। मैंगनीज का उपयोग मुख्य रूप से लोहे को इस्पात में बदलने और विभिन्न मिश्र धातु बनाने के लिए किया जाता है। इसके अन्य भंडार महाराष्ट्र और ओडिशा में भी पाए जाते हैं, लेकिन बालाघाट की खानों की उच्च गुणवत्ता और मात्रा इसे उत्पादन में अग्रणी बनाती है।

12. (2) केवल I, II और III
भारत में तांबा उत्पादन के मुख्य क्षेत्र मध्य प्रदेश की बालाघाट खानें, राजस्थान की खेतड़ी पेटी और झारखंड का सिंहभूम जिला हैं। बालाघाट खानें देश के कुल उत्पादन का लगभग 52 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करती हैं। राजस्थान में खेतड़ी अरावली श्रेणियों में स्थित एक ऐतिहासिक तांबा खनन क्षेत्र है। भारत वर्तमान में तांबा उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं है और अपनी घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसका भारी आयात करता है। इसलिए चतुर्थ कथन को छोड़कर अन्य सभी तथ्य सही हैं।

13. (3) इस्पात और लौह-मिश्र धातु
मैंगनीज एक महत्वपूर्ण धात्विक खनिज है जिसका लगभग 90 प्रतिशत उपयोग लोहा और इस्पात उद्योग में किया जाता है। यह इस्पात को कठोर बनाने और उसकी अशुद्धियों को दूर करने में सहायता करता है। इसके अलावा, इसका उपयोग फेरो-मैंगनीज जैसी मिश्र धातुओं के निर्माण में भी होता है। मैंगनीज का सीमित उपयोग विरंजक चूर्ण, कीटनाशकों और पेंट बनाने में भी किया जाता है। औद्योगिक दृष्टिकोण से, मजबूत और टिकाऊ इस्पात के उत्पादन के लिए मैंगनीज एक अपरिहार्य और प्राथमिक कच्चा माल है।

14. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
इस्पात निर्माण की प्रक्रिया में मैंगनीज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लोहे की अशुद्धियों को हटाता है और उसे वांछित मजबूती प्रदान करता है। तकनीकी रूप से, एक टन इस्पात तैयार करने के लिए लगभग 10 किलोग्राम मैंगनीज की आवश्यकता होती है। यह मैंगनीज को इस्पात उद्योग के लिए एक आवश्यक और अनिवार्य घटक बनाता है। चूंकि कारण सीधे तौर पर खनिज की आवश्यकता और उसके विशिष्ट औद्योगिक महत्व को स्पष्ट करता है, इसलिए यह कथन की सटीक और वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

15. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मध्य प्रदेश के मलांजखंड निक्षेप तांबा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं, जबकि नागपुर-भंडारा क्षेत्र महाराष्ट्र में मैंगनीज के प्रमुख स्रोत हैं। छत्तीसगढ़ की बैलाडीला खानें उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क के लिए जानी जाती हैं और ओडिशा की पंचपतमाली पहाड़ियाँ बॉक्साइट के विशाल भंडारों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों में खनिजों के भौगोलिक वितरण को स्पष्ट करता है। ये सभी केंद्र संबंधित धातुओं के उत्पादन में देश की औद्योगिक आत्मनिर्भरता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

16. (2) अयस्क को घरेलू इस्पात संयंत्रों के लिए रेल द्वारा पूर्व की ओर ले जाया जाता है
कर्नाटक के चिकमगलूर जिले में स्थित कुद्रेमुख खानें पूरी तरह से निर्यात उन्मुख इकाई हैं। यहाँ से लौह अयस्क को तरल घोल के रूप में पाइपलाइन के माध्यम से मंगलुरु बंदरगाह तक पहुँचाया जाता है, जहाँ से इसे विदेशों में निर्यात किया जाता है। यह कहना गलत है कि इस अयस्क का उपयोग मुख्य रूप से घरेलू इस्पात संयंत्रों के लिए किया जाता है। यह दुनिया के सबसे बड़े लौह अयस्क भंडारों में से एक है और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में स्थित होने के कारण भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण है।

17. (2) उच्च विद्युत चालकता और तन्यता
मध्य प्रदेश के मलांजखंड में भारत के सबसे बड़े तांबा निक्षेप पाए जाते हैं। तांबा अपनी उच्च विद्युत चालकता और तन्यता के गुणों के कारण बिजली के तार, केबल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण में अनिवार्य रूप से उपयोग किया जाता है। यह ऊष्मा का भी एक उत्कृष्ट सुचालक है। तांबे की इन्हीं भौतिक और रासायनिक विशेषताओं के कारण इसकी औद्योगिक मांग बहुत अधिक रहती है। मलांजखंड की खानें भारत की घरेलू तांबा आवश्यकता को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण और सामरिक भूमिका निभाती हैं।

18. (4) केवल IV
पूर्वी भारत में मैंगनीज का निष्कर्षण केवल सिंहभूम जिले तक सीमित नहीं है, बल्कि ओडिशा के सुंदरगढ़ और केंदुझर जैसे जिलों में भी इसके विशाल भंडार मौजूद हैं। मैंगनीज मुख्य रूप से धारवाड़ तंत्र की शैलों में पाया जाता है और इसका उपयोग विरंजक चूर्ण तथा कीटनाशक बनाने में भी किया जाता है। महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा जिलों में भी महत्वपूर्ण निक्षेप पाए जाते हैं। चूंकि विकल्प चार मैंगनीज के वितरण को अत्यधिक सीमित बताता है, इसलिए यह तथ्य तकनीकी रूप से गलत और भ्रामक है।

19. (3) झुंझुनू
खेतड़ी तांबा परिसर राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित है। यह क्षेत्र भारत में तांबा खनन और शोधन के लिए सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक स्थलों में से एक माना जाता है। यहाँ अरावली पर्वत श्रृंखला में तांबे की समृद्ध शिराएं पाई जाती हैं। हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा संचालित यह परिसर देश के तांबा उत्पादन में बड़ी हिस्सेदारी रखता है। झुंझुनू जिला अपनी इस

NODIA

34. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (अधात्विक खनिज)

A. चूना पत्थर
B. अभ्रक
C. रॉक फॉस्फेट
D. जिप्सम

सूची II: (प्रमुख औद्योगिक उपयोग)

i. प्लास्टर ऑफ पेरिस और सीमेंट मंदक
ii. विद्युत इन्सुलेशन
iii. सुपरफॉस्फेट उर्वरक
iv. सीमेंट क्लिंकर

कूट:

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. निम्नलिखित में से कौन सा कथन ओडिशा में क्रोमाइट निक्षेपों के महत्व पर सही प्रकाश डालता है?

(1) उच्च चालकता के कारण बिजली के तार निर्माण के लिए उपयोग।
(2) अम्लीय तटीय मृदा के लिए प्राथमिक उर्वरक घटक के रूप में कार्य करना।
(3) स्टेनलेस स्टील और तापसह ईंटों (रिफ्रेक्ट्री ब्रिक्स) के लिए धातुकर्म उपयोग।
(4) उच्च श्रेणी की एल्युमीनियम धातु के निष्कर्षण के लिए निर्यात।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. भारत में अभ्रक वितरण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. झारखंड एक अग्रणी उत्पादक है जिसमें कोडरमा-गया-हजारीबाग पेटी प्रमुख है।
II. राजस्थान में मुख्य अभ्रक उत्पादक क्षेत्र अजमेर और भीलवाड़ा के आसपास स्थित है।
III. आंध्र प्रदेश नेल्लोर अभ्रक पेटी के लिए जाना जाता है।
IV. अभ्रक विशेष रूप से विशाल, अटूट अवसादी ब्लॉकों के रूप में पाया जाता है।
V. भारत शीट अभ्रक के विश्व के अग्रणी निर्यातकों में से एक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र एक अपवाद है और भारत में एक महत्वपूर्ण अभ्रक उत्पादक पेटी के रुप में मान्यता प्राप्त नहीं है?

(1) कोडरमा जिला
(2) नेल्लोर जिला
(3) डिगबोई क्षेत्र
(4) भीलवाड़ा जिला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. एक सीमेंट निर्माण संयंत्र आमतौर पर बाजार के बजाय चूना पत्थर की खानों के करीब स्थापित किया जाता है। यह दर्शाता है कि चूना पत्थर एक:

(1) भार बढ़ाने वाला कच्चा माल है
(2) भार घटाने वाला, भारी कच्चा माल है
(3) उच्च मूल्य, कम मात्रा वाली वस्तु है
(4) शीघ्र खराब होने वाला कच्चा माल है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I: चूना पत्थर कैल्शियम कार्बोनेट या कैल्शियम और मैग्नीशियम कार्बोनेट से बनी शैलों के साथ पाया जाता है।

कथन II: चूना पत्थर पूर्णतः प्रायद्वीपीय पठार की आग्नेय शैल संरचनाओं में पाया जाता है।

सही विकल्प चुनें:

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म एक प्रसिद्ध अभ्रक पेटी और उसके संबंधित राज्य का सही सुमेलित रूप है?

(1) कोडरमा - झारखंड
(2) नेल्लोर - कर्नाटक
(3) अजमेर - मध्य प्रदेश
(4) हजारीबाग - ओडिशा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. जिप्सम के भारतीय उत्पादन में राजस्थान का प्रभुत्व है। राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जिला सबसे बड़े जिप्सम भंडार के लिए प्रसिद्ध है?

(1) बांसवाड़ा
(2) डूंगरपुर
(3) बीकानेर
(4) झालावाड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. रॉक फॉस्फेट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह फॉस्फेटिक उर्वरकों के उत्पादन के लिए एक आवश्यक कच्चा माल है।

Click Here to Buy book on Amazon

29. (1) केवल I, II और IV
बॉक्साइट एल्युमीनियम सिलिकेट युक्त चट्टानों के अपघटन से बनता है और कोरापुट की पंचपतमाली पहाड़ियाँ इसके प्रमुख स्रोत हैं। मध्य प्रदेश का अमरकंटक पठार भी महत्वपूर्ण भंडार रखता है। हालांकि, बॉक्साइट का उपयोग सीधे इस्पात बनाने के लिए नहीं किया जाता है; इसका प्राथमिक उपयोग एल्युमिना और फिर एल्युमीनियम धातु बनाने के लिए किया जाता है। लोहे की अल्प उपस्थिति इसे इस्पात उद्योग का विकल्प नहीं बनाती है। एल्युमीनियम अपनी हल्की प्रकृति और मजबूती के कारण विमान और बिजली उद्योगों हेतु महत्वपूर्ण है।

30. (4) प्लेटिनम
जावर की खानों में सीसा और जस्ता के अयस्कों के साथ चांदी और कैडमियम जैसे बहुमूल्य तत्व सह-उत्पाद के रूप में पाए जाते हैं। शोधन प्रक्रिया के दौरान इन्हें अलग किया जाता है, जिससे खनन की आर्थिक व्यवहार्यता बढ़ जाती है। कोबाल्ट भी कुछ विशिष्ट बहुधात्विक अयस्कों में मिल सकता है। प्लेटिनम आमतौर पर इन निक्षेपों का हिस्सा नहीं होता है और भारत में इसके भंडार अत्यंत दुर्लभ हैं। इसलिए प्लेटिनम इस समूह में एक विषम तत्व है जो सामान्य शोधन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है।

31. (1) क्रोमाइट
ओडिशा की सुकिंदा घाटी क्रोमाइट के उत्पादन के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ भारत के कुल क्रोमाइट भंडार का लगभग 95 प्रतिशत से अधिक हिस्सा पाया जाता है। क्रोमाइट का उपयोग मुख्य रूप से स्टेनलेस स्टील बनाने और धातुकर्म उद्योगों में किया जाता है। यह खनिज उच्च तापमान को सहन करने वाली ईंटें बनाने में भी काम आता है। सुकिंदा घाटी की यह एकाग्रता इसे भारत के रणनीतिक खनिज मानचित्र पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अद्वितीय स्थान प्रदान करती है, जो निर्यात में भी सहायक है।

32. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
सीमेंट उद्योग में चूना पत्थर एक अपरिहार्य कच्चा माल है क्योंकि यह सीमेंट क्लिंकर के निर्माण के लिए आवश्यक कैल्शियम कार्बोनेट प्रदान करता है। चूना पत्थर की गुणवत्ता और उपलब्धता सीधे सीमेंट के उत्पादन और कुल लागत को प्रभावित करती है। चूंकि सीमेंट बनाने की प्रक्रिया में चूना पत्थर की सर्वाधिक मात्रा का उपयोग होता है, इसलिए सीमेंट संयंत्रों की स्थापना आमतौर पर चूना पत्थर की खानों के निकट ही की जाती है। इस प्रकार, कारण कथन की मांग और उसके औद्योगिक महत्व को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

33. (2) उच्च परावैद्युत शक्ति और उच्च वोल्टेज के प्रति प्रतिरोध
अभ्रक अपने विशिष्ट गुणों जैसे उच्च परावैद्युत शक्ति, कम ऊर्जा हानि और उच्च वोल्टेज को सहन करने की क्षमता के कारण विद्युत उद्योग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह खनिज बहुत पतली चादरों में विभाजित हो सकता है जो लचीली और टिकाऊ होती हैं। विद्युतरोधन के इन गुणों के कारण इसका उपयोग कैपेसिटर, ट्रांसफार्मर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में किया जाता है। इसकी ताप प्रतिरोधक क्षमता इसे सुरक्षित और विश्वसनीय बनाती है, जो आधुनिक तकनीक और बिजली वितरण प्रणालियों के लिए इसे अनिवार्य खनिज बनाती है।

34. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-ii
चूना पत्थर का प्राथमिक उपयोग सीमेंट क्लिंकर बनाने में किया जाता है, जबकि अभ्रक अपनी विद्युतरोधन क्षमताओं के कारण विद्युत उपकरणों के लिए महत्वपूर्ण है। रॉक फॉस्फेट उर्वरक उद्योग में सुपरफॉस्फेट बनाने हेतु एक आवश्यक कच्चा माल है। जिप्सम का उपयोग प्लास्टर ऑफ पेरिस बनाने और सीमेंट के जमने की गति को नियंत्रित करने के लिए मंदक के रूप में किया जाता है। यह मिलान विभिन्न अधात्विक खनिजों के औद्योगिक महत्व और उनके विविध अनुप्रयोगों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जो विकास में सहायक हैं।

35. (3) स्टेनलेस स्टील और तापसह ईंटों (रिफ्रेक्ट्री ब्रिक्स) के लिए धातुकर्म उपयोग
ओडिशा में पाए जाने वाले क्रोमाइट का अत्यधिक औद्योगिक महत्व है, विशेष रूप से धातुकर्म के क्षेत्र में। क्रोमियम का उपयोग लोहे के साथ मिलाकर स्टेनलेस स्टील बनाने में किया जाता है, जो संक्षारण प्रतिरोधी होता है। इसके अलावा, क्रोमाइट का उपयोग उच्च तापमान सहने वाली तापसह ईंटें बनाने में किया जाता है, जिनका उपयोग भट्टियों के आंतरिक अस्तर के रूप में होता है। यह खनिज रासायनिक उद्योगों और रंगों के निर्माण में भी काम आता है। ओडिशा के विशाल भंडार भारत को वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान करते हैं।

36. (1) केवल I, II, III और V
भारत में अभ्रक का वितरण झारखंड, राजस्थान और आंध्र प्रदेश में प्रमुखता से पाया जाता है। कोडरमा-गया पेटी और नेल्लोर पेटी इसके विश्व प्रसिद्ध क्षेत्र हैं। भारत विश्व में शीट अभ्रक का एक प्रमुख निर्यातक रहा है। हालांकि, अभ्रक अवसादी ब्लॉकों के बजाय मुख्य रूप से आग्नेय और कायांतरित शैलों, विशेष रूप से पेगमेटाइट शिराओं में परतों के रूप में पाया जाता है। यह खनिज पतली पारदर्शी चादरों में आसानी से टूट सकता है, जो इसे तकनीकी और औद्योगिक अनुप्रयोगों हेतु अद्वितीय गुण प्रदान करता है।

37. (3) डिगबोई क्षेत्र
कोडरमा, नेल्लोर और भीलवाड़ा भारत की प्रसिद्ध अभ्रक पेटियाँ हैं जो क्रमशः झारखंड, आंध्र प्रदेश और राजस्थान में स्थित हैं। इसके विपरीत, असम का डिगबोई क्षेत्र भारत के सबसे पुराने तेल क्षेत्र के रूप में जाना जाता है और यहाँ मुख्य रूप से पेट्रोलियम का निष्कर्षण किया जाता है। डिगबोई का अभ्रक उत्पादन से कोई प्रत्यक्ष भौगोलिक या औद्योगिक संबंध नहीं है। अभ्रक के प्रमुख निक्षेप विशिष्ट भूगर्भीय संरचनाओं में पाए जाते हैं जहाँ पेगमेटाइट चट्टानें मौजूद होती हैं, जो डिगबोई की भूगर्भीय संरचना से भिन्न हैं।

38. (2) भार घटाने वाला, भारी कच्चा माल है
सीमेंट उद्योग में चूना पत्थर एक 'भार घटाने वाला' कच्चा माल है, जिसका अर्थ है कि प्रसंस्करण के दौरान इसका शुद्ध वजन काफी कम हो जाता है। इसके अलावा, चूना पत्थर एक भारी

Downloaded from www.pdf.tube

8. मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुंबई से पुणे तक विस्तृत है, जिसमें ठाणे और नासिक जैसे जिले सम्मिलित हैं।
II. पश्चिमी घाट से प्राप्त जलविद्युत ने इसके प्रारंभिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
III. यह क्षेत्र इंजीनियरिंग और ऑटोमोबाइल उद्योगों से पूर्णतः रहित है।
दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्राथमिक भौगोलिक लाभ नहीं है जिसने पश्चिम बंगाल में हुगली औद्योगिक क्षेत्र के विकास को सुगम बनाया?
(1) प्रसंस्करण के लिए हुगली नदी से प्रचुर मात्रा में जल की उपलब्धता
(2) दामोदर घाटी के कोयला क्षेत्रों से निकटता
(3) तांबे और बॉक्साइट के विशाल स्थानीय भंडार
(4) नदी और उसकी वितरिकाओं द्वारा प्रदान किया गया सस्ता जल परिवहन नेटवर्क
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हुगली औद्योगिक क्षेत्र ने हाल के दशकों में अपने औद्योगिक प्रभुत्व में तुलनात्मक गिरावट का अनुभव किया है।
कारण (R): 1947 में भारत के विभाजन ने हुगली नदी के किनारे स्थित जूट मिलों को प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्रों से अलग कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. हुगली औद्योगिक क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कोलकाता-हावड़ा हुगली औद्योगिक क्षेत्र का केंद्र बनाते हैं।
कथन II: यह क्षेत्र मुख्य रूप से ऑटोमोबाइल और विमान निर्माण क्षेत्रों में विशिष्टता रखता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. हुगली औद्योगिक क्षेत्र की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भारत का सबसे पुराना औद्योगिक क्षेत्र है।
II. इसकी विशेषता जूट मिलों का उच्च संकेंद्रण है।
III. ऐतिहासिक रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे घनी आबादी वाले राज्यों से सस्ता श्रम प्राप्त किया गया था।
IV. यह क्षेत्र पारंपरिक उद्योगों से पूर्णतः हटकर विशेष आईटी हब में परिवर्तित हो गया है।
दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, और IV
(2) केवल I, II, और III
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. निम्नलिखित में से कौन सा कारण सबसे उपयुक्त है कि अहमदाबाद को ऐतिहासिक रूप से 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है?
(1) मैनचेस्टर के समान लोहा और इस्पात संयंत्रों के भारी संकेंद्रण के कारण
(2) इसकी समशीतोष्ण जलवायु के कारण जो मैनचेस्टर के समान है
(3) सूती वस्त्र उद्योग के एक प्रमुख केंद्र के रूप में इसके उत्कर्ष के कारण
(4) ब्रिटिश शहर के साथ इसकी वास्तुकला संबंधी समानताओं के कारण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. अहमदाबाद-बड़ौदा औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) अंकलेश्वर में तेल क्षेत्रों की खोज ने यहाँ पेट्रोकेमिकल उद्योगों को बहुत बढ़ावा दिया
(2) मुंबई में सूती वस्त्र उद्योग की गिरावट ने अहमदाबाद में वस्त्र उद्योग के विकास में सहायता की
(3) वडोदरा पेट्रोकेमिकल्स और उर्वरक उद्योग के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा है
(4) इस क्षेत्र में अंतर्देशीय पत्तन की कमी है, जिससे यह निर्यात के लिए पूर्णतः मुंबई पर निर्भर है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. गुजरात औद्योगिक बेल्ट के औद्योगिक केंद्रों को उनकी संबंधित विशिष्टताओं या उद्योगों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: औद्योगिक केंद्र
A. सूरत
B. कोयली
C. आनंद
D. अहमदाबाद
सूची II: विशिष्टता/उद्योग

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

सबसे उन्नत और शुद्ध रूप 'एंथ्रेसाइट' है, जिसमें कार्बन की मात्रा उच्चतम होती है और यह धुआं रहित जलता है। यह क्रम कोयले के क्रमिक भूगर्भीय विकास और ऊर्जा क्षमता को दर्शाता है।

48. (2) केवल III
जिप्सम कैल्शियम का एक जलयोजित सल्फेट है जिसका उपयोग सीमेंट के जमने के समय को बढ़ाने के लिए किया जाता है, ताकि उसे वांछित आकार देने हेतु पर्याप्त समय मिल सके। इसका उपयोग प्लास्टर ऑफ पेरिस बनाने में भी होता है। यह कहना गलत है कि इसे गर्म करने पर यह सीधे चूना पत्थर में बदल जाता है; वास्तव में, इसे गर्म करने पर यह अपना जल खो देता है और प्लास्टर ऑफ पेरिस बनता है। चूना पत्थर एक अलग कार्बोनेट खनिज है जिसकी रासायनिक संरचना जिप्सम से पूरी तरह भिन्न होती है।

49. (2) ये मुख्य रूप से हिमालय की तृतीयक शैल संरचनाओं से जुड़े हैं
गोंडवाना कोयला क्षेत्र मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की नदी घाटियों जैसे दामोदर, महानदी और गोदावरी में स्थित हैं। ये भारत के कुल कोयला भंडार का 98 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनाते हैं और इनमें उच्च श्रेणी का बिटुमिनस कोयला पाया जाता है। हिमालय क्षेत्र के कोयला भंडार तृतीयक काल के हैं और उनकी संरचना गोंडवाना क्षेत्रों से भिन्न है। इसलिए, हिमालय की तृतीयक शैलों से गोंडवाना कोयले का संबंध बताना भूगर्भीय रूप से गलत है। ये दोनों अलग-अलग समय और वातावरण में बने हैं।

50. (1) रॉक फॉस्फेट
राजस्थान में स्थित झामरकोटड़ा की खानें भारत में रॉक फॉस्फेट के उत्पादन का सबसे बड़ा केंद्र हैं। रॉक फॉस्फेट फॉस्फेटिक उर्वरकों के निर्माण के लिए एक अनिवार्य घटक माना जाता है। भारत अपनी उर्वरक आवश्यकताओं के लिए कच्चे माल के आयात पर काफी निर्भर है, और झामरकोटड़ा से होने वाला उत्पादन इस निर्भरता को कम करने में सामरिक भूमिका निभाता है। यह न केवल कृषि क्षेत्र को सहयोग प्रदान करता है, बल्कि विदेशी मुद्रा की बचत करने और देश में उर्वरक सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी सहायक है।

51. (3) रानीगंज
पश्चिम बंगाल में स्थित रानीगंज कोयला क्षेत्र भारत का सबसे पुराना कोयला खनन केंद्र है, जहाँ 1774 में पहली बार व्यावसायिक रूप से कोयला निकाला गया था। यह दामोदर घाटी का हिस्सा है और उच्च गुणवत्ता वाले गैर-कोकिंग कोयले के लिए जाना जाता है। हालांकि झरिया वर्तमान में भंडार के मामले में बड़ा है, लेकिन ऐतिहासिक शुरुआत रानीगंज से ही हुई थी। इस क्षेत्र ने भारत में औद्योगिक क्रांति और रेलवे के विकास हेतु प्रारंभिक ऊर्जा आधार प्रदान किया, जो देश के आर्थिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

52. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
झरिया कोयला क्षेत्र झारखंड में स्थित है और भारत का सबसे बड़ा कोकिंग कोल भंडार है। रानीगंज पश्चिम बंगाल का सबसे पुराना और प्रमुख कोयला क्षेत्र है। सिंगरौली मध्य प्रदेश में स्थित है और यहाँ की कोयला परतें अपनी मोटाई के लिए प्रसिद्ध हैं। कोरबा छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है जहाँ से कोयला तापीय बिजली संयंत्रों को भेजा जाता है। यह मिलान भारत के कोयला संसाधनों के भौगोलिक वितरण को स्पष्ट करता है, जो देश की ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक शक्ति के मुख्य आधार स्तंभ हैं।

53. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पेट्रोलियम का निर्माण समुद्री जीवों और पौधों के अवशेषों से होता है, जो अवसादी चट्टानों में दबकर लाखों वर्षों तक ताप और दाब के प्रभाव में परिवर्तित होते हैं। यह पूरी प्रक्रिया केवल अवसादी बेसिनों में ही संभव होती है, इसलिए पेट्रोलियम भंडार वहीं पाए जाते हैं। इस प्रकार कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

54. (2) केवल I, II, III और IV
झरिया, रानीगंज, कोरबा और सिंगरौली भारत के अत्यंत महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र हैं जो देश के औद्योगिक विकास को ऊर्जा प्रदान करते हैं। झरिया कोकिंग कोल का मुख्य स्रोत है, जबकि रानीगंज ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है। ये सभी प्रमुख क्षेत्र गोंडवाना काल के हैं, जो लगभग 200 मिलियन वर्ष पुराना है। यह कहना गलत है कि ये सभी तृतीयक काल के हैं, क्योंकि तृतीयक कोयला बहुत नवीन है और केवल सीमित क्षेत्रों में पाया जाता है। अतः पांचवें कथन को छोड़कर शेष सभी जानकारी सही है।

55. (4) कोरबा कोयला क्षेत्र मुख्य रूप से उच्च श्रेणी के एंथ्रेसाइट कोयले के उत्पादन के लिए जाना जाता है
कोरबा और सिंगरौली दोनों ही गोंडवाना तंत्र के महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र हैं जिनका उपयोग मुख्य रूप से तापीय ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जाता है। हालांकि, कोरबा में पाया जाने वाला कोयला मुख्य रूप से बिटुमिनस श्रेणी का है, न कि एंथ्रेसाइट। भारत में एंथ्रेसाइट कोयला बहुत कम मात्रा में केवल जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों में ही पाया जाता है। कोरबा का कोयला बिजली संयंत्रों और एल्युमीनियम उद्योगों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। शेष विकल्प इन क्षेत्रों की स्थिति और उनके आर्थिक महत्व को सटीक रूप से वर्णित करते हैं।

56. (1) बसीन (वसई) – अपतटीय क्षेत्र
बसीन या वसई तेल क्षेत्र अरब सागर में मुंबई के तट से दूर स्थित एक प्रमुख अपतटीय क्षेत्र है। यहाँ से भारी मात्रा में खनिज तेल और प्राकृतिक गैस का उत्पादन किया जाता है। इसके विपरीत, डिगबोई असम में स्थित एक स्थलीय तेल क्षेत्र है, और अंकलेश्वर गुजरात का एक प्रमुख स्थलीय क्षेत्र है। मुंबई हाई भारत का सबसे बड़ा अपतटीय तेल क्षेत्र है। इन अपतटीय क्षेत्रों का विकास समुद्र के भीतर विशेष ड्रिलिंग तकनीकों का उपयोग करके किया जाता है जो स्थलीय खनन से काफी भिन्न हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

विविध धातुओं की उपस्थिति इसे भारत के सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक और भूगर्भीय क्षेत्रों में से एक बनाती है।

76. (2) प्राकृतिक पदार्थ जिससे खनिजों को लाभप्रद रूप से निकाला जा सकता है
अयस्क उन चट्टानों या खनिजों का संचय है जिसमें एक या अधिक धातुओं की पर्याप्त मात्रा होती है ताकि उनका निष्कर्षण आर्थिक रूप से लाभदायक हो। सभी चट्टानों में खनिज हो सकते हैं, लेकिन उन्हें तभी अयस्क कहा जाता है जब उनमें धातु की सांद्रता इतनी अधिक हो कि उसे निकालना व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य हो। अयस्क की गुणवत्ता और गहराई खनन की कुल लागत निर्धारित करती है। यह धातुकर्म का आधार है और किसी देश की खनिज संपदा का वास्तविक मूल्यांकन इसी से संभव होता है।

77. (3) विवर्तनिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित प्राचीन शैलों से बना पठारी भाग
प्रायद्वीपीय भारत धात्विक खनिजों में समृद्ध है क्योंकि यह दुनिया के सबसे पुराने और स्थिर भूखंडों में से एक है। इसकी संरचना प्राचीन आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बनी है, जिनमें लाखों वर्षों की भूगर्भीय गतिविधियों के कारण खनिज जमा हुए हैं। इसके विपरीत, उत्तरी मैदान नवीन जलोढ़ निक्षेपों से बने हैं, जहाँ कठोर शैल संरचनाएं बहुत गहराई पर दबी हुई हैं। पठारी भाग की खुली और प्राचीन चट्टानें खनिज निष्कर्षण को आसान और आर्थिक रूप से लाभदायक बनाती हैं।

78. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
जावर की खानें राजस्थान के उदयपुर जिले में अरावली पर्वत श्रृंखला के मध्य स्थित हैं, जो सीसा और जस्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड एक प्रमुख औद्योगिक इकाई है जो इन खानों के व्यापक संचालन, अयस्क के खनन और उनके शोधन का कार्य देखती है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक काल से ही अपनी विशिष्ट धातुकर्म विशेषज्ञता के लिए जाना जाता रहा है। दोनों कथन इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और इसके कुशल औद्योगिक प्रबंधन के बारे में बिल्कुल सटीक और प्रामाणिक जानकारी प्रदान करते हैं।

79. (1) प्लेसर माइनिंग - कोयला निकालने के लिए गहरी क्षैतिज सुरंगों की भूमिगत खुदाई
प्लेसर माइनिंग का तात्पर्य नदियों के जलोढ़ निक्षेपों या रेतीली सतहों से खनिजों के निष्कर्षण से है, न कि कोयले की गहरी खुदाई से। इसमें आमतौर पर भारी खनिज जैसे सोना या टिन शामिल होते हैं जो पानी के प्राकृतिक प्रवाह से जमा हो जाते हैं। कोयले के निष्कर्षण के लिए आमतौर पर विवृत खनन या भूमिगत सुरंग खनन का उपयोग किया जाता है। अन्य विकल्प जैसे अयस्क संवर्धन, प्रगलन और विवृत खनन की परिभाषाएं तकनीकी रूप से सही हैं और खनन उद्योग के मानकों के अनुरूप हैं।

80. (2) 'अंतर-पीढ़ीगत समानता' की अवधारणा का कार्यान्वयन
राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 मुख्य रूप से सतत और जिम्मेदार खनन प्रथाओं पर केंद्रित है। इसमें 'अंतर-पीढ़ीगत समानता' के सिद्धांत को अपनाया गया है, जिसका अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी को खनिजों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त संसाधन बचे रहें। यह नीति वैज्ञानिक खनन, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदायों के कल्याण पर विशेष जोर देती है। इसका उद्देश्य खनिज संसाधनों के दोहन और दीर्घकालिक संरक्षण के बीच एक संतुलित समन्वय स्थापित करना है।

www.nodia.in

NODIA

मिला। इसके बाद 1970 के दशक में मुंबई हाई की खोज हुई जिसने उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। केजी बेसिन में महत्वपूर्ण गैस खोजें 2000 के दशक की शुरुआत में हुईं और बाड़मेर (मंगला) में व्यावसायिक तेल उत्पादन 2009 के आसपास प्रारंभ हुआ। यह क्रम भारत में ऊर्जा संसाधनों के अन्वेषण और विकास की क्रमिक प्रगति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

67. (3) अनियमित रैट-होल माइनिंग
रैट-होल माइनिंग एक अवैज्ञानिक और खतरनाक खनन पद्धति है जिसमें कोयला निकालने के लिए बहुत संकीर्ण सुरंगें बनाई जाती हैं। यह न केवल श्रमिकों के जीवन के लिए जोखिम भरा है, बल्कि इससे पर्यावरण को भी गंभीर क्षति पहुँचती है और संसाधनों की बर्बादी होती है। इसके विपरीत, उन्नत तकनीकों का उपयोग, धातुओं का पुनर्चक्रण और प्रचुर विकल्पों का उपयोग टिकाऊ विकास के सकारात्मक उपाय हैं। रैट-होल खनन को कानून द्वारा प्रतिबंधित किया गया है क्योंकि यह संसाधनों के व्यवस्थित संरक्षण के विरुद्ध है।

68. (3) केवल I, II, III और IV
टिकाऊ खनन के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं जिनमें वनों की कटाई, जैव विविधता का विनाश और खदान अपशिष्ट का प्रबंधन शामिल है। अवैज्ञानिक प्रथाओं से संसाधनों का समय से पहले अंत हो सकता है और निष्कर्षण प्रक्रिया में जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को प्रदूषित करता है। यह कहना गलत है कि टिकाऊ खनन केवल आर्थिक लाभ पर केंद्रित होना चाहिए। वास्तव में, सतत खनन का मूल मंत्र ही आर्थिक लाभ और पर्यावरणीय सुरक्षा के बीच एक बेहतर संतुलन स्थापित करना है, जो दूरदर्शी है।

69. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बाड़मेर बेसिन में तेल और गैस की खोज ने राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र के आर्थिक और बुनियादी ढांचे के परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे रोजगार और निवेश में वृद्धि हुई है। हालांकि, इन तेल क्षेत्रों का प्रबंधन केवल राज्य सरकार द्वारा नहीं किया जाता है; इसमें केंद्र सरकार की ओएनजीसी और निजी क्षेत्र की केयर्न जैसी कंपनियों की महत्वपूर्ण भागीदारी है। यह एक संयुक्त राष्ट्रीय प्रयास है जो तेल नीति के तहत संचालित होता है। अतः प्रबंधन के बारे में दिया गया दूसरा कथन गलत है।

70. (2) उच्च श्रेणी के अयष्कों की कमी – निम्न श्रेणी के अयस्कों को आर्थिक रूप से संसाधित करने के लिए तकनीक का उन्नयन
जैसे-जैसे उच्च श्रेणी के खनिज भंडार समाप्त हो रहे हैं, भविष्य की खनिज सुरक्षा के लिए तकनीक का विकास अनिवार्य है। निम्न श्रेणी के अयस्कों को आर्थिक रूप से उपयोगी बनाने के लिए नई शोधन विधियों की आवश्यकता है, जिससे उपलब्ध संसाधनों की आयु बढ़ाई जा सके। अन्य विकल्प जैसे अनियंत्रित खनन या सिंथेटिक चीजों पर प्रतिबंध संरक्षण के सही तरीके नहीं हैं। संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग और कचरे को कम करना ही आधुनिक खनिज संरक्षण और टिकाऊ विकास का सबसे सटीक समाधान माना जाता है।

71. (4) सिंधु घाटी सभ्यता
पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही तांबा खनन का प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ से प्राप्त तांबे के उपकरणों और अवशेषों का रासायनिक विश्लेषण इस ऐतिहासिक संबंध की पुष्टि करता है। यह दर्शाता है कि प्राचीन भारत के लोगों के पास उन्नत धातुकर्म ज्ञान था और वे इन संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करना जानते थे। खेतड़ी की तांबा पेटी न केवल आधुनिक भारत के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारी प्राचीन तकनीकी विरासत का भी प्रमाण है।

72. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
नोआमंडी झारखंड का एक प्रमुख लौह अयस्क केंद्र है, जबकि झरिया देश का सबसे महत्वपूर्ण कोकिंग कोल क्षेत्र है। कर्नाटक की हट्टी खानें वर्तमान में भारत के प्राथमिक सोने के उत्पादन का मुख्य स्रोत हैं। राजस्थान में स्थित जावर की खानें अपनी ऐतिहासिक और वर्तमान सीसा-जस्ता उत्पादन क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं। यह मिलान भारत के खनिज मानचित्र पर विभिन्न धातुओं के प्रमुख केंद्रों की सटीक पहचान करता है। ये खानें संबंधित उद्योगों को आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध कराकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देती हैं।

73. (3) राजस्थान देश में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है
भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ओडिशा है, न कि राजस्थान। ओडिशा अकेले देश के कुल उत्पादन का आधा हिस्सा प्रदान करता है, जिसमें कोरापुट और कालाहांडी जिले प्रमुख हैं। बॉक्साइट मुख्य रूप से पठारी क्षेत्रों और पहाड़ियों की लैटेराइट मृदा में पाया जाता है जहाँ एल्युमीनियम समृद्ध चट्टानों का अपक्षय होता है। राजस्थान में तांबा और जस्ता जैसे खनिजों की प्रधानता है, लेकिन बॉक्साइट के मामले में इसका स्थान प्रमुख उत्पादकों में नहीं आता है। अतः तीसरा विकल्प भौगोलिक रूप से पूर्णतः गलत है।

74. (1) पारिस्थितिक और सामाजिक परियोजना प्रभावों का पूर्वानुमान करना और उनका प्रबंधन करना
पर्यावरणीय प्रभाव आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी भी बड़ी खनन परियोजना के शुरू होने से पहले उसके संभावित पर्यावरणीय और सामाजिक परिणामों का विश्लेषण करती है। इसका मुख्य उद्देश्य खनन के कारण होने वाले प्रदूषण, विस्थापन और जैव विविधता के नुकसान को न्यूनतम करना है। यह सुनिश्चित करता है कि विकास की गतिविधियाँ पर्यावरण की कीमत पर न हों। इस आकलन के माध्यम से ही टिकाऊ खनन की रूपरेखा तैयार की जाती है, जिससे स्थानीय समुदायों और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के हितों की सुरक्षा होती है।

75. (4) तांबा
झारखंड का सिंहभूम जिला अपनी विविध खनिज संपदा के लिए अद्वितीय है। लौह अयस्क के विशाल भंडारों के अतिरिक्त, यह क्षेत्र भारत में तांबा उत्पादन के लिए भी अत्यंत प्रसिद्ध है। यहाँ की 'तांबा पेटी' कई किलोमीटर तक फैली हुई है जहाँ मूसबानी और राखा जैसी महत्वपूर्ण खानें स्थित हैं। सिंहभूम में यूरेनियम के निक्षेप भी पाए जाते हैं। एक ही जिले में इतनी महत्वपूर्ण और

Downloaded from www.pdf.tube

और कम मूल्य वाली वस्तु है, जिसे लंबी दूरी तक परिवहन करना आर्थिक रूप से बहुत महंगा पड़ता है। परिवहन लागत को कम करने और उत्पादन को किफायती बनाने के लिए सीमेंट संयंत्रों को खानों के पास ही स्थापित करना सबसे व्यावहारिक रणनीति है। यह औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धांत को दर्शाता है जहाँ कच्चे माल की प्रकृति स्थान का निर्धारण करती है।

39. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
चूना पत्थर मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट या कैल्शियम और मैग्नीशियम के दोहरे कार्बोनेट से बनी चट्टानों में पाया जाता है। यह अधिकांश भूगर्भीय संरचनाओं की अवसादी परतों में प्रचुरता से मौजूद होता है। यह कहना गलत है कि यह केवल प्रायद्वीपीय पठार की आग्नेय शैलों में पाया जाता है; वास्तव में, यह भारत के कई राज्यों में अवसादी बेसिनों में व्यापक रूप से वितरित है। चूना पत्थर सीमेंट उद्योग का मुख्य आधार है और इसकी उपस्थिति देश के विभिन्न हिस्सों में औद्योगिक केंद्रों के विकास में सहायक रही है।

40. (1) कोडरमा - झारखंड
झारखंड का कोडरमा जिला भारत और दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण अभ्रक पेटियों में से एक है, जिसे अक्सर 'दुनिया की अभ्रक राजधानी' कहा जाता है। यहाँ उच्च गुणवत्ता वाला रूबी अभ्रक प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अन्य विकल्पों में दी गई जानकारी गलत है, क्योंकि नेल्लोर आंध्र प्रदेश में है, अजमेर राजस्थान में है और हजारीबाग भी झारखंड का ही हिस्सा है। कोडरमा की भौगोलिक स्थिति और यहाँ की पेगमेटाइट चट्टानें इसे अभ्रक के बड़े पैमाने पर संचय और व्यावसायिक खनन के लिए उपयुक्त बनाती हैं।

41. (3) बीकानेर
राजस्थान भारत में जिप्सम का अग्रणी उत्पादक है और बीकानेर जिले में स्थित जामसर निक्षेप देश के सबसे बड़े जिप्सम भंडारों में से एक हैं। जिप्सम का उपयोग मुख्य रूप से उर्वरक उद्योग और सीमेंट निर्माण में किया जाता है। बीकानेर के अलावा जैसलमेर और हनुमानगढ़ जिलों में भी इसके महत्वपूर्ण भंडार पाए जाते हैं। शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु वाले इन क्षेत्रों की भूगर्भीय संरचना जिप्सम के प्राकृतिक जमाव के लिए अनुकूल रही है। यह खनिज राज्य की अर्थव्यवस्था और कृषि सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

42. (1) केवल I और II
रॉक फॉस्फेट सुपरफॉस्फेट उर्वरकों के निर्माण के लिए एक अनिवार्य खनिज है, जो कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहायता करता है। राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित झामरकोटड़ा खानें भारत का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण रॉक फॉस्फेट भंडार हैं। यह कहना गलत है कि इसका निष्कर्षण केरल के तटीय क्षेत्रों में किया जाता है; केरल मुख्य रूप से मोनाजाइट जैसे भारी खनिजों के लिए प्रसिद्ध है। रॉक फॉस्फेट के घरेलू उत्पादन से भारत की उर्वरक आयात पर निर्भरता कम होती है और देश की खाद्य सुरक्षा सुदृढ़ होती है।

43. (4) जिप्सम क्षारीय और लवणीय मृदा को सुधारने के लिए मृदा संशोधक के रूप में कार्य करता है
राजस्थान और पंजाब के कई हिस्सों में अत्यधिक सिंचाई और जलजमाव के कारण मिट्टी क्षारीय या लवणीय हो गई है। जिप्सम एक प्रभावी मृदा संशोधक है जो मिट्टी की रासायनिक संरचना में सुधार करता है और इसकी लवणता को कम करता है। यह मिट्टी को कृषि के लिए पुनः उपजाऊ बनाता है, जिससे फसलों की पैदावार में उल्लेखनीय सुधार होता है। यह कोई पोषक तत्व नहीं है, बल्कि मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों को संतुलित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है जो टिकाऊ कृषि हेतु आवश्यक है।

44. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के खनिजों का सही वितरण उदयपुर के झामरकोटड़ा में रॉक फॉस्फेट, बीकानेर में जिप्सम, झुंझुनू के खेतड़ी में तांबा और उदयपुर के जावर में सीसा-जस्ता निक्षेपों के रूप में पाया जाता है। यह विविधता राजस्थान को भारत का 'खनिजों का संग्रहालय' बनाती है। प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट भूगर्भीय संरचना के कारण एक विशेष खनिज हेतु प्रसिद्ध है। ये संसाधन न केवल राज्य के राजस्व में योगदान देते हैं, बल्कि देश के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को महत्वपूर्ण कच्चा माल भी प्रदान करते हैं।

45. (3) गोंडवाना कोयला पुराना धातुकर्म श्रेणी का है; तृतीयक कोयला नवीन और लिग्नाइट श्रेणी का है
भारत में कोयला दो प्रमुख भूगर्भीय युगों का है। गोंडवाना कोयला लगभग 200 मिलियन वर्ष पुराना है और यह मुख्य रूप से बिटुमिनस प्रकार का है जिसका उपयोग धातुकर्म में किया जाता है। इसके विपरीत, तृतीयक कोयला केवल 55 मिलियन वर्ष पुराना है और इसमें कार्बन की मात्रा कम होती है, जिससे यह लिग्नाइट श्रेणी का बन जाता है। गोंडवाना कोयला मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय नदी घाटियों में पाया जाता है, जबकि तृतीयक कोयला उत्तर-पूर्वी राज्यों और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में प्रचुरता से मिलता है।

46. (4) माकुम
झरिया, रानीगंज और सिंगरौली भारत के प्रसिद्ध गोंडवाना कोयला क्षेत्र हैं, जो लाखों वर्ष पुराने हैं और उच्च गुणवत्ता वाला बिटुमिनस कोयला प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, असम में स्थित माकुम एक तृतीयक कोयला क्षेत्र है। तृतीयक कोयला गोंडवाना की तुलना में काफी नवीन है और इसमें गंधक (सल्फर) की मात्रा अधिक होती है। भूगर्भीय निर्माण काल के आधार पर माकुम अन्य तीनों से सर्वथा भिन्न है। यह वर्गीकरण भारत में कोयला संसाधनों की आयु और उनकी ऊर्जा गुणवत्ता को समझने के लिए मौलिक आधार प्रदान करता है।

NODIA

47. (1) II, IV, I, III
कोयला बनने की प्रक्रिया वनस्पति के दबने और समय के साथ बढ़ने वाले दबाव से शुरु होती है। सबसे कच्चा रूप 'पीठ' है, जिसमें अत्यधिक नमी होती है। दबाव बढ़ने पर यह 'लिग्नाइट' में बदलता है, फिर और अधिक गहराई पर 'बिटुमिनस' बनता है जो औद्योगिक रूप से सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

अध्याय 14
भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र

1. औद्योगिक अवस्थिति के कारकों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा 'स्वच्छंद (footloose)' उद्योग को सबसे उपयुक्त रूप से परिभाषित करता है?
   (1) एक ऐसा उद्योग जो भारी और भार ह्रास वाले कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर है
   (2) एक ऐसा उद्योग जिसे परिवहन लागत की बाधा के बिना विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया जा सकता है
   (3) एक ऐसा उद्योग जिसे अनिवार्य रूप से अंतिम उपभोक्ता बाजार के निकट ही स्थापित किया जाना चाहिए
   (4) उच्च स्तर के श्रमिक संघीकरण की विशेषता वाला उद्योग
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. भारत में औद्योगिक अवस्थिति के कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: भारत में लोहा और इस्पात उद्योग मुख्य रूप से कच्चा माल-उन्मुख है।
   कथन II: सूती वस्त्र उद्योग अत्यधिक बाजार-उन्मुख है और कच्चे माल की भार न खोने वाली प्रकृति के कारण यह कच्चे कपास के स्रोत से स्वतंत्र है।
   निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
   (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
   (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. एक औद्योगिक क्षेत्र में समूहन अर्थव्यवस्थाओं (agglomeration economies) के उदय का प्राथमिक कारण क्या है?
   (1) पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करने के लिए सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता
   (2) कठोर पर्यावरणीय नियम जो उद्योगों को एक ही सीमांकित क्षेत्र में स्थित होने के लिए बाध्य करते हैं
   (3) आधारभूत संरचना और श्रम पूल को साझा करने वाली परस्पर संबद्ध इकाइयों का संकुलन
   (4) स्थानीय संसाधनों पर एकाधिकार करने वाली एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी की उपस्थिति
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. भारत में औद्योगिक अवस्थिति को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों में से असंगत की पहचान कीजिए।
   (1) स्थलाकृति
   (2) जलवायु
   (3) जल संसाधनों से निकटता
   (4) सरकारी नीतियां
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के औद्योगिक केंद्रों को उनके संबंधित प्रमुख उद्योगों के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: औद्योगिक केंद्र
   A. ट्रॉम्बे
   B. पिंपरी
   C. तारापुर
   D. मुंबई
   सूची II: प्रमुख उद्योग
   i. प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक्स)
   ii. परमाणु ऊर्जा
   iii. सूती वस्त्र
   iv. पेट्रोकेमिकल्स
   (1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
   (2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को सही ढंग से स्पष्ट करता है?
   (1) इस क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से पश्चिमी घाट में विशाल कोयला भंडार की खोज के कारण हुआ
   (2) 1869 में स्वेज नहर के खुलने से इस औद्योगिक क्षेत्र के विकास को तीव्र गति प्राप्त हुई
   (3) इस क्षेत्र को प्रारंभ में ब्रिटिश चाय व्यापार को समर्थन देने के लिए विकसित किया गया था
   (4) इस क्षेत्र का औद्योगिक विकास 18वीं शताब्दी में भारी इंजीनियरिंग संयंत्रों की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ था
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. स्वतंत्रता के बाद के काल में मुंबई-पुणे क्षेत्र का तीव्र औद्योगिक विस्तार बॉम्बे हाई में किस विशिष्ट उद्योग के विकास से महत्वपूर्ण रूप से प्रेरित था?
   (1) सूचना प्रौद्योगिकी
   (2) लोहा और इस्पात
   (3) जूट प्रसंस्करण
   (4) पेट्रोलियम और पेट्रोकेमिकल्स
   (5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

57. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मुंबई हाई की खोज 1974 में ओएनजीसी द्वारा की गई थी और यह भारत का सबसे बड़ा तेल उत्पादक क्षेत्र बन गया। यहाँ गहरे समुद्र से तेल निकालने के लिए 'सागर सम्राट' नामक एक विशेष ड्रिलिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग किया गया था, जो तकनीकी रूप से अत्यंत उन्नत था। यह क्षेत्र भारत की कच्चे तेल की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बहुत बड़ा मील का पत्थर साबित हुआ। दोनों कथन मुंबई हाई के ऐतिहासिक विकास और इसके सफल संचालन में प्रयुक्त तकनीकी विशिष्टता को सही ढंग से दर्शाते हैं।

58. (1) केवल I और II
डिगबोई असम के तिनसुकिया जिले में स्थित है और यह भारत का सबसे पुराना तेल क्षेत्र है जहाँ 19वीं शताब्दी के अंत में तेल की खोज की गई थी। यह एक स्थलीय तेल क्षेत्र है, न कि अपतटीय। यह आज भी क्रियाशील है और देश के गौरवशाली पेट्रोलियम इतिहास का प्रतीक माना जाता है। हालांकि इसका उत्पादन अब मुंबई हाई की तुलना में काफी कम है, लेकिन शोधन और अन्वेषण के क्षेत्र में इसका महत्व ऐतिहासिक और तकनीकी रूप से आज भी बना हुआ है।

59. (4) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
बॉम्बे अपतटीय बेसिन, जिसमें मुंबई हाई और बसीन जैसे क्षेत्र शामिल हैं, भारत के हाइड्रोकार्बन संसाधनों का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है। यह क्षेत्र देश के कुल कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादन में सबसे बड़ा हिस्सा साझा करता है। यहाँ से उत्पादित गैस का उपयोग उर्वरक और बिजली संयंत्रों में किया जाता है, जबकि पेट्रोलियम का शोधन विभिन्न रिफाइनरियों में होता है। यह बेसिन भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और तेल आयात पर निर्भरता कम करने के लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

60. (2) गहरी कोयला परतों को स्वस्थाने (in-situ) दहनशील संश्लेषित गैस (syngas) में बदलना
भूमिगत कोयला गैसीकरण एक ऐसी तकनीक है जिसमें गहराई पर स्थित कोयला परतों को बिना पारंपरिक खनन के सीधे जमीन के नीचे ही गैस में परिवर्तित किया जाता है। इस प्रक्रिया में कोयले का आंशिक दहन करके उसे हाइड्रोजन और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी दहनशील गैसों के मिश्रण में बदला जाता है, जिसे संश्लेषित गैस कहा जाता है। यह तकनीक उन कोयला भंडारों के दोहन के लिए उपयोगी है जहाँ पारंपरिक खनन संभव नहीं है, जिससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव को कम करते हुए ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

61. (3) भारत के पूर्वी तट पर बड़े प्राकृतिक गैस के भंडार की खोज
कृष्णा-गोदावरी बेसिन, जिसे केजी बेसिन भी कहा जाता है, भारत के पूर्वी अपतटीय क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र हाल के वर्षों में प्राकृतिक गैस के विशाल भंडारों की खोज के लिए वैश्विक चर्चा में रहा है। रिलायंस और ओएनजीसी जैसी कंपनियों ने यहाँ महत्वपूर्ण गैस खोजें की हैं, जिसने भारत की गैस आधारित अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को मजबूती प्रदान की है। यह बेसिन ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की आयात निर्भरता को कम करने और स्वच्छ ईंधन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

62. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मंगला राजस्थान के बाड़मेर बेसिन का एक प्रमुख तेल क्षेत्र है। रावा कृष्णा-गोदावरी बेसिन में स्थित एक महत्वपूर्ण अपतटीय गैस और तेल केंद्र है। नाहरकटिया असम का एक प्रसिद्ध और पुराना स्थलीय तेल क्षेत्र है, जबकि हजीरा गुजरात के खंभात बेसिन में स्थित एक प्रमुख गैस टर्मिनल और प्रसंस्करण केंद्र है। यह मिलान भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फैले महत्वपूर्ण हाइड्रोकार्बन संसाधनों को दर्शाता है, जो देश की औद्योगिक और ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर कार्यरत और महत्वपूर्ण हैं।

63. (3) केवल I, II और III
राजस्थान का बाड़मेर-सांचौर बेसिन हाल के वर्षों में भारत का एक महत्वपूर्ण स्थलीय तेल उत्पादक क्षेत्र बनकर उभरा है। मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या यहाँ के प्रमुख तेल कुएँ हैं जिनसे भारी मात्रा में उत्पादन हो रहा है। इसके अतिरिक्त, जैसलमेर बेसिन में प्राकृतिक गैस के महत्वपूर्ण भंडार मिले हैं। यह कहना गलत है कि राजस्थान का तेल पूरी तरह से अपतटीय है, क्योंकि ये सभी प्रमुख खोजें रेगिस्तानी भूमि के नीचे स्थलीय क्षेत्रों में स्थित हैं, जिसने राज्य की पूरी अर्थव्यवस्था को बदल दिया है।

NODIA

64. (2) शून्य-अपशिष्ट उद्देश्य और वैज्ञानिक दोहन के साथ टिकाऊ खनन अभ्यास
राष्ट्रीय खनिज नीति का मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि खनिज संसाधनों का दोहन इस प्रकार किया जाए कि पर्यावरण को कम से कम नुकसान हो और भविष्य के लिए भी संसाधन सुरक्षित रहें। इसमें वैज्ञानिक खनन तकनीकों के उपयोग और खदानों से निकलने वाले कचरे को कम करने पर विशेष बल दिया गया है। नीति का उद्देश्य केवल वर्तमान आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि दीर्घकालिक स्थिरता और संसाधनों का कुशल प्रबंधन है, ताकि आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ कोई समझौता न हो।

65. (2) ऊर्जा की खपत और कच्चे अयस्क की कमी को कम करता है
धातुओं का पुनर्चक्रण खनिज संरक्षण की एक अत्यंत प्रभावी रणनीति है। जब हम रद्दी धातु का उपयोग करते हैं, तो कच्चे अयस्क को खदानों से निकालने और उसे परिष्कृत करने की आवश्यकता काफी कम हो जाती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है। इसके अतिरिक्त, रद्दी से धातु बनाना कच्चे अयस्क से धातु बनाने की तुलना में काफी कम ऊर्जा खर्च करता है। यह न केवल उत्पादन लागत को कम करता है, बल्कि पर्यावरण प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी बड़ी भूमिका निभाता है।

66. (2) डिगबोई, मुंबई हाई, केजी बेसिन, मंगला (बाड़मेर)
भारत में तेल और गैस की खोज का इतिहास असम के डिगबोई से शुरू हुआ, जहाँ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पहला तेल कुआँ

i. डेयरी उद्योग
ii. हीरा कर्तन और पॉलिशिंग
iii. तेल रिफाइनरी
iv. सूती वस्त्र
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. अहमदाबाद-बड़ौदा क्षेत्र में औद्योगिक समूहों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन 'औद्योगिक क्लस्टर' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(1) रक्षा उपकरण बनाने वाला पूर्णतः सरकारी स्वामित्व वाला परिसर
(2) संबंधित फर्मों, आपूर्तिकर्ताओं और सहायक संस्थानों का एक भौगोलिक समूह
(3) पूर्णतः सॉफ्टवेयर निर्यात के लिए समर्पित एक मुक्त व्यापार क्षेत्र
(4) भारी इंजीनियरिंग स्थल में परिवर्तित एक कृषि क्षेत्र
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस प्रकार के उद्योगों के संकेंद्रण के लिए प्रसिद्ध है?
(1) कपास और जूट वस्त्र
(2) भारी धातुकर्म और खनिज-आधारित उद्योग
(3) सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स
(4) समुद्री और कृषि-आधारित उद्योग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. निम्नलिखित औद्योगिक संयंत्रों और स्थानों पर विचार कीजिए:
I. बोकारो इस्पात संयंत्र
II. जमशेदपुर टाटा आयरन एंड स्टील
III. हैवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन, रांची
IV. सिंदरी उर्वरक संयंत्र
V. राउरकेला इस्पात संयंत्र
कथनों का कौन सा संयोजन विस्तारित छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र से जुड़ी सुविधाओं को सूचीबद्ध करता है?
(1) I, II, III, IV, और V
(2) केवल I, II, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, II, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र के भीतर रांची में हैवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन की स्थापना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) निर्यात के लिए निकट ही एक बड़े समुद्री बंदरगाह की उपलब्धता
(2) यथार्थ परिशुद्ध इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए असाधारण रूप से अनुकूल जलवायु
(3) स्थानीय इस्पात संयंत्रों और खानों को मशीनरी की आपूर्ति करने की आवश्यकता
(4) निकटवर्ती जिलों में कच्चे कपास की प्रचुरता
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में अशुद्ध युग्म की पहचान कीजिए:
(1) झरिया - कोयला खनन
(2) हजारीबाग - अभ्रक निष्कर्षण
(3) जमशेदपुर - लोहा और इस्पात
(4) सिंदरी - पेट्रोकेमिकल्स और कच्चे तेल का शोधन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. किस ऐतिहासिक जलविद्युत परियोजना ने बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के प्रारंभिक औद्योगिक विकास के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया?
(1) भाखड़ा नांगल परियोजना
(2) दामोदर घाटी निगम
(3) पाइकारा जलविद्युत संयंत्र
(4) हीराकुंड बांध परियोजना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के निम्नलिखित प्रमुख आईटी और औद्योगिक केंद्रों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम चुनिए:
(1) चेन्नई, बैंगलोर, कोयंबटूर, मदुरै
(2) बैंगलोर, चेन्नई, मदुरै, कोयंबटूर
(3) बैंगलोर, चेन्नई, कोयंबटूर, मदुरै
(4) चेन्नई, कोयंबटूर, बैंगलोर, मदुरै
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग पारंपरिक रूप से बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के मुख्य विकास से संबद्ध नहीं है?
(1) एयरोस्पेस और रक्षा
(2) सूचना प्रौद्योगिकी
(3) ऑटोमोबाइल विनिर्माण
(4) जूट प्रसंस्करण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एचएएल (HAL) और एचएमटी (HMT) की स्थापना के बाद इस क्षेत्र में विमान और मशीन टूल्स उद्योगों में तीव्र विकास देखा गया।
कथन II: यह क्षेत्र अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए पूर्णतः छोटा नागपुर पठार से आयातित कोयले पर निर्भर है, क्योंकि इसमें स्थानीय जलविद्युत क्षमता की कमी है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं

NODIA

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र के औद्योगिक केंद्रों को उनके संबंधित प्रमुख उद्योगों या विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: औद्योगिक केंद्र

A. गुरुग्राम
B. नोएडा
C. मेरठ
D. फरीदाबाद

सूची II: प्रमुख उद्योग/विशेषता

i. क्रीड़ा सामग्री
ii. ऑटोमोबाइल (मारुति सुजुकी)
iii. इंजीनियरिंग और ट्रैक्टर
iv. आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र में किस प्रकार के उद्योगों की प्रधानता है?

(1) बाजार-उन्मुख और स्वच्छंद (footloose) उद्योग
(2) खनिज-आधारित भारी उद्योग
(3) समुद्री-आधारित उद्योग
(4) वन-आधारित कागज उद्योग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?

(1) यह मुख्य रूप से तटीय शिपिंग पर निर्भर एक निर्यात-उन्मुख क्षेत्र है
(2) इसका विकास राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के भीतर खनन किए गए कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर है
(3) यह भारत का सबसे पुराना औद्योगिक क्षेत्र है, जिसे 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्थापित किया गया था
(4) यह विशाल स्थानीय बाजार द्वारा संचालित उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योगों का उच्च संकेंद्रण प्रदर्शित करता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका विकास काफी हद तक स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सहायक आधारभूत संरचना की स्थापना के कारण हुआ है।
II. यह क्षेत्र भारी धातुकर्म और पोत निर्माण के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है।
III. इसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के औद्योगिक नोड्स सम्मिलित हैं।

दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसके निकट होने के कारण विकसित हुआ है?

(1) उच्च श्रेणी के तांबे के बड़े भंडार
(2) सौर पार्कों के लिए आदर्श विस्तृत मरुस्थलीय क्षेत्र
(3) कृष्णा-गोदावरी डेल्टा पृष्ठप्रदेश और सक्रिय बंदरगाह
(4) पूर्वी घाट के सघन शंकुधारी वन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): हाल के दशकों में विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र के औद्योगीकरण को महत्वपूर्ण प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

कारण (R): गोदावरी बेसिन में कोयला क्षेत्रों और कृष्णा-गोदावरी बेसिन में तेल भंडार की खोज ने आवश्यक ऊर्जा संसाधन प्रदान किए।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र से संबद्ध जिलों में असंगत की पहचान कीजिए।

(1) कुरनूल
(2) राजमहेंद्रम
(3) मछलीपट्टनम
(4) विजयवाड़ा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. निम्नलिखित उद्योगों पर विचार कीजिए:

I. पोत निर्माण
II. तेल परिष्करण
III. उर्वरक निर्माण
IV. जूट वस्त्र

दिए गए संयोजनों में से कौन सा विशाखापत्तनम-गुंटूर क्षेत्र के प्रमुख उद्योगों का सही प्रतिनिधित्व करता है?

(1) केवल II, III, और IV
(2) केवल I, II, और III
(3) केवल I, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

33. कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र मूलतः किस प्रकार के संसाधन आधार पर आधारित है?
(1) भारी खनिज और कोयला निष्कर्षण
(2) बागानी कृषि और जल-शक्ति
(3) बड़े पैमाने पर पशुपालन और डेयरी फार्मिंग
(4) कच्चे तेल का निष्कर्षण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: निकटवर्ती क्षेत्र में धात्विक खनिजों और कोयले की कमी के कारण यह क्षेत्र बड़े पैमाने के भारी धातुकर्म उद्योगों से रहित है।
कथन II: इस क्षेत्र के औद्योगिक स्वरूप में कॉयर (नारियल जटा), काजू प्रसंस्करण और रबर आधारित उद्योगों का प्रभुत्व है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. केरल औद्योगिक क्षेत्र के केंद्रों को उनके संबंधित संबद्ध उद्योगों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: केंद्र
A. पुनलूर
B. कोच्चि
C. अलप्पुझा
D. तिरुवनंतपुरम
सूची II: संबद्ध उद्योग
i. कॉयर उद्योग
ii. कागज उद्योग
iii. आईटी और अंतरिक्ष अनुसंधान
iv. तेल परिष्करण
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग एक अपवाद है और आमतौर पर कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र की विशेषता नहीं है?
(1) कॉयर प्रसंस्करण
(2) काजू प्रसंस्करण
(3) एल्युमीनियम प्रगलन
(4) लोहा और इस्पात प्रगलन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. मथुरा-आगरा-दिल्ली औद्योगिक गलियारे में ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ) नियमों का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) ताजमहल के निकट भारी रासायनिक उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देना
(2) रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक विशेष आर्थिक क्षेत्र निर्मित करना
(3) क्षेत्रीय उत्सर्जन को विनियमित करके ताजमहल की रक्षा करना
(4) उत्तर प्रदेश और हरियाणा के बीच की सीमा का निर्धारण करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

38. मथुरा-आगरा-दिल्ली गलियारे के संबंध में निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. मथुरा तेल रिफाइनरी की उपस्थिति
II. फिरोजाबाद में कांच उद्योगों का संकेंद्रण
III. आगरा में चर्म उद्योगों का उच्च संकेंद्रण
IV. TTZ के अंतर्गत कठोर पर्यावरणीय नियम
V. औद्योगिक ईंधन के रूप में प्राकृतिक गैस की ओर झुकाव
कारकों का कौन सा संयोजन इस क्षेत्र की सही विशेषताओं और विकास का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल I, II, और III
(2) I, II, III, IV, और V
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. वह कौन सा कार्य-कारण संबंध था जिसके कारण आगरा-मथुरा क्षेत्र के उद्योगों में प्राकृतिक गैस को व्यापक रूप से अपनाया गया?
(1) कारण: प्राकृतिक गैस की प्रचुर स्थानीय खोज; प्रभाव: उद्योगों द्वारा स्वैच्छिक परिवर्तन
(2) कारण: कोयला परिवहन की उच्च लागत; प्रभाव: स्थानीय रूप से उत्पादित बायोमास गैस की ओर झुकाव
(3) कारण: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की शर्तें; प्रभाव: हरित ईंधन का प्रारंभ
(4) कारण: उच्चतम न्यायालय के निर्देश; प्रभाव: प्राकृतिक गैस की ओर अनिवार्य परिवर्तन
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. मथुरा-आगरा-दिल्ली गलियारे के उद्योगों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) फिरोजाबाद ऐतिहासिक रूप से भारत के कांच और चूड़ी उद्योग का केंद्र रहा है
(2) आगरा मुख्य रूप से अपने भारी विद्युत मशीनरी उत्पादन के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है
(3) मथुरा को उत्तरी भारत में सबसे बड़े आईटी हब के रूप में मान्यता प्राप्त है
(4) यह गलियारा पूर्णतः पर्यावरणीय उत्सर्जन मानदंडों के दायरे से बाहर कार्य करता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) एक ऐसा उद्योग जिसे परिवहन लागत की बाधा के बिना विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया जा सकता है
स्वच्छंद उद्योग वे विनिर्माण इकाइयां हैं जो विशिष्ट कच्चे माल के स्रोतों या बाजार की निकटता पर अनिवार्य रुप से निर्भर नहीं होती हैं। इन्हें परिवहन लागत की महत्वपूर्ण बाधा के बिना विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर सुगमता से स्थापित किया जा सकता है। ये उद्योग प्रायः प्रदूषण मुक्त होते हैं और पुर्जों पर आधारित होते हैं। इनका मुख्य जोर कुशल श्रम और संचार तंत्र की उपलब्धता पर होता है।

2. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारत में लोहा और इस्पात उद्योग भारी और वजन घटाने वाले कच्चे माल पर आधारित है, इसलिए यह मुख्य रुप से कोयला और लौह अयस्क क्षेत्रों के निकट स्थित है। इसके विपरीत, सूती वस्त्र उद्योग में उपयोग किया जाने वाला कच्चा कपास शुद्ध होता है और प्रसंस्करण के दौरान अपना वजन नहीं खोता है। यही कारण है कि सूती वस्त्र मिलें बाजार के निकट या कपास उत्पादक क्षेत्रों से दूर भी स्थापित की जा सकती हैं।

3. (3) आधारभूत संरचना और श्रम पूल को साझा करने वाली परस्पर संबद्ध इकाइयों का संकुलन
समूहन अर्थव्यवस्थाएं तब विकसित होती हैं जब कई उद्योग एक-दूसरे के निकट स्थित होते हैं ताकि वे साझा आधारभूत संरचना, परिवहन नेटवर्क और कुशल श्रम संसाधनों का लाभ उठा सकें। इस भौगोलिक सामीप्य से उत्पादन लागत में कमी आती है और सेवाओं का आदान-प्रदान सुगम होता है। यह औद्योगिक संकुलन व्यवसायों को सामूहिक रुप से बैंकिंग, बीमा और तकनीकी परामर्श जैसी सहायक सुविधाओं का उपयोग करने में मदद करता है।

4. (4) सरकारी नीतियां
उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों को भौगोलिक और गैर-भौगोलिक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। स्थलाकृति, जलवायु और जल संसाधनों की उपलब्धता शुद्ध भौगोलिक कारक हैं क्योंकि वे प्राकृतिक पर्यावरण से निर्धारित होते हैं। इसके विपरीत, सरकारी नीतियां, कर प्रोत्साहन और अनुदान गैर-भौगोलिक या आर्थिक कारकों के अंतर्गत आते हैं। ये कारक मानव निर्मित निर्णय होते हैं जो क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए उद्योगों को आकर्षित करते हैं।

5. (3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र में विभिन्न केंद्रों की विशिष्टता उनके औद्योगिक विकास को दर्शाती है। ट्रॉम्बे मुख्य रुप से पेट्रोकेमिकल और उर्वरक उद्योगों का केंद्र है, जबकि पिंपरी में प्रतिजैविक दवाओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। तारापुर भारत का एक प्रमुख परमाणु ऊर्जा केंद्र है, जो औद्योगिक गतिविधियों को बिजली प्रदान करता है। मुंबई ऐतिहासिक रुप से सूती वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध रहा है, जिसने इस पूरे क्षेत्र के औद्योगिक विकास की नींव रखी थी।

6. (2) 1869 में स्वेज नहर के खुलने से इस औद्योगिक क्षेत्र के विकास को तीव्र गति प्राप्त हुई
मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के विकास में 1869 में स्वेज नहर के उद्घाटन ने क्रांतिकारी भूमिका निभाई। इस मार्ग के खुलने से मुंबई बंदरगाह और यूरोप के बीच की समुद्री दूरी काफी कम हो गई, जिससे कपास के निर्यात और मशीनरी के आयात को भारी प्रोत्साहन मिला। इससे मुंबई को वैश्विक व्यापारिक मानचित्र पर एक प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। परिणामस्वरुप, स्थानीय स्तर पर सूती वस्त्र मिलों का विस्तार हुआ और सहायक इंजीनियरिंग उद्योगों का विकास हुआ।

7. (4) पेट्रोलियम और पेट्रोकेमिकल्स
स्वतंत्रता के बाद मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के विकास में बॉम्बे हाई में कच्चे तेल की खोज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अरब सागर में स्थित इस क्षेत्र से पेट्रोलियम संसाधनों की उपलब्धता ने रिफाइनरियों और पेट्रोकेमिकल इकाइयों की स्थापना को प्रेरित किया। इससे प्लास्टिक, रसायन और उर्वरक जैसे उद्योगों का एक विशाल नेटवर्क विकसित हुआ। पेट्रोलियम आधारित उद्योगों के इस विस्तार ने क्षेत्र की पारंपरिक वस्त्र अर्थव्यवस्था को एक आधुनिक बहु-आयामी औद्योगिक संरचना में परिवर्तित कर दिया।

8. (1) केवल I और II
मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र मुंबई महानगर से लेकर पुणे तक फैला हुआ है, जिसमें ठाणे, कल्याण और नासिक जैसे महत्वपूर्ण औद्योगिक जिले शामिल हैं। इस क्षेत्र के प्रारंभिक विकास के लिए ऊर्जा की आपूर्ति पश्चिमी घाट में स्थित जलविद्युत परियोजनाओं से सुनिश्चित की गई थी। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र ऑटोमोबाइल और इंजीनियरिंग उद्योगों के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है, जहां कई वैश्विक कंपनियों के संयंत्र स्थित हैं। इस क्षेत्र में भारी उद्योगों के साथ-साथ उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन होता है।

9. (3) तांबे और बॉक्साइट के विशाल स्थानीय भंडार
पश्चिम बंगाल का हुगली औद्योगिक क्षेत्र हुगली नदी के किनारे एक संकीर्ण पट्टी में स्थित है। इसके विकास के प्रमुख कारकों में प्रसंस्करण के लिए नदी का प्रचुर मीठा जल, दामोदर घाटी से प्राप्त सस्ता कोयला और नदी द्वारा प्रदान किया गया सुगम जल परिवहन शामिल हैं। हालांकि, इस क्षेत्र में तांबे या बॉक्साइट जैसे धात्विक खनिजों के स्थानीय भंडार नहीं पाए जाते हैं। यहाँ

Click Here to Buy book on Amazon

(2) 50 करोड़ रुपये तक का निवेश और 250 करोड़ रुपये तक का वार्षिक कारोबार
(3) 10 करोड़ रुपये तक का निवेश और 50 करोड़ रुपये तक का वार्षिक कारोबार
(4) 100 करोड़ रुपये तक का निवेश और 500 करोड़ रुपये तक का वार्षिक कारोबार
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में रोजगार के अवसर उत्पन्न करने में MSME क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
कारण (R): MSME सामान्यतः श्रम-गहन होने के स्थान पर पूंजी-गहन उद्योग होते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. MSME के लिए औद्योगिक संपदाओं (industrial estates) के महत्व का सबसे अच्छा विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) वे सुनिश्चित करते हैं कि MSME द्वारा निर्मित सभी उत्पाद अनिवार्य रूप से सरकार द्वारा खरीदे जाएं
(2) वे पारंपरिक कारीगरों की रक्षा के लिए MSME के तकनीकी उन्नयन को कड़ाई से सीमित करते हैं
(3) वे साझा आधारभूत संरचना और बिजली प्रदान करके पूंजीगत भार को कम करते हैं
(4) वे बड़े निगमों के लिए श्रम कानूनों के विरुद्ध संवैधानिक छूट प्रदान करते हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. भारत में औद्योगिक समूहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे छोटे उत्पादकों के बीच कच्चे माल के लिए सामूहिक सौदेबाजी की सुविधा प्रदान करते हैं।
II. वे सूचनाओं के बेहतर प्रवाह और तकनीकी प्रसार (technological spillover) को सक्षम करते हैं।
III. सरकार MSE-CDP (सूक्ष्म एवं लघु उद्यम - क्लस्टर विकास कार्यक्रम) जैसी योजनाओं के माध्यम से उनका समर्थन करती है।
IV. वे विशेष रूप से केवल महानगरों में ही स्थापित किए जाते हैं।
दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II, III, और IV
(2) केवल I, III, और IV
(3) I, II, III, और IV
(4) केवल I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

53. भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों के तुलनात्मक औद्योगिक पिछड़ेपन की व्याख्या करने वाला प्राथमिक कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) कारण: जनसंख्या का उच्च घनत्व; प्रभाव: कृषि भूमि की कमी
(2) कारण: स्थानीय कोयला खदानों की समाप्ति; प्रभाव: ताप विद्युत संयंत्रों का बंद होना
(3) कारण: पहाड़ी स्थलाकृति और दुर्गम परिवहन; प्रभाव: उच्च उत्पादन लागत
(4) कारण: ब्रिटिश काल के दौरान अत्यधिक औद्योगीकरण; प्रभाव: अप्रचलन के कारण वर्तमान ठहराव
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. उत्तर पूर्व औद्योगिक विकास योजना (NEIDS) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इस योजना का उद्देश्य नई औद्योगिक इकाइयों को विभिन्न वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करके उत्तर पूर्वी क्षेत्र में औद्योगीकरण को बढ़ावा देना है।
कथन II: यह योजना विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तक सीमित है और निजी उद्यमों को प्रतिबंधित करती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. उत्तर-पूर्वी राज्यों को उनके संबंधित प्रमुख या पारंपरिक उद्योगों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: उत्तर-पूर्वी राज्य
A. असम
B. मेघालय
C. त्रिपुरा
D. सिक्किम
सूची II: प्रमुख/पारंपरिक उद्योग
i. फार्मास्यूटिकल्स और ब्रुअरीज
ii. चाय प्रसंस्करण और पेट्रोकेमिकल्स
iii. बांस और रबर आधारित उद्योग
iv. सीमेंट (चूना पत्थर आधारित)
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. नुमालीगढ़ रिफाइनरी, जो क्षेत्र के औद्योगिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, किस राज्य में स्थित है?
(1) असम
(2) अरुणाचल प्रदेश
(3) नागालैंड
(4) मणिपुर

NODIA

(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, II, और III
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. भारत में निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति नहीं है?
(1) इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम
(2) ऑटोमोबाइल विनिर्माण
(3) परमाणु ऊर्जा
(4) सड़क और राजमार्ग
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक जैसे भारत के पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के उच्च संकेंद्रण का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) बेहतर आधारभूत संरचना, कुशल कार्यबल और अनुकूल राज्य नीतियां
(2) कोयले और लौह अयस्क के प्रचुर स्थानीय भंडार
(3) क्षेत्रीय FDI आवंटन के लिए केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित अनिवार्य कोटा
(4) इन राज्यों में घरेलू निजी उद्यमों की कमी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. समसामयिक नीति के अनुसार क्षेत्रों को उनकी संबंधित FDI सीमाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: क्षेत्र
A. रक्षा विनिर्माण (स्वचालित मार्ग)
B. बीमा कंपनी
C. बहु-ब्रांड खुदरा व्यापार
D. लॉटरी व्यवसाय
सूची II: FDI सीमा
i. 74%
ii. 51%
iii. निषिद्ध
iv. 74%
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. विदेशी निवेश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में किसी अन्य अर्थव्यवस्था में स्थित उद्यम में दीर्घकालिक हित और नियंत्रण सम्मिलित होता है।
कथन II: विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) सामान्यतः प्रबंधन नियंत्रण के बिना स्टॉक और बॉन्ड जैसी वित्तीय संपत्तियों में अल्पकालिक निवेश को संदर्भित करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. स्मार्ट सिटी मिशन, जो सुदृढ़ आर्थिक आधारभूत संरचना और स्मार्ट औद्योगिक परिक्षेत्रों को विकसित करने पर भी केंद्रित है, भारत सरकार द्वारा किस वर्ष प्रारंभ किया गया था?
(1) 2014
(2) 2017
(3) 2015
(4) 2019
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत प्रोत्साहित निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. पर्याप्त जल आपूर्ति
II. सुनिश्चित विद्युत आपूर्ति
III. सुदृढ़ आईटी कनेक्टिविटी और डिजिटलीकरण
IV. ई-गवर्नेंस और नागरिक भागीदारी
V. विनिर्माण गतिविधियों का पूर्ण निषेध
दिए गए संयोजनों में से कौन सा स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत प्रोत्साहित मुख्य आधारभूत संरचना के तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) केवल II, III, IV, और V
(2) केवल I, III, IV, और V
(3) I, II, III, IV, और V
(4) केवल I, II, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) और एक औद्योगिक टाउनशिप के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(1) SEZ निर्यात-उन्मुख शुल्क मुक्त क्षेत्र हैं; औद्योगिक टाउनशिप एकीकृत शहरी बस्तियां हैं
(2) SEZ विशेष रूप से आवासीय क्षेत्र हैं; औद्योगिक टाउनशिप विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक व्यापार केंद्र हैं
(3) SEZ का प्रबंधन स्थानीय नगर पालिकाओं द्वारा किया जाता है; औद्योगिक टाउनशिप कड़ाई से सैन्य क्षेत्र हैं
(4) कोई अंतर नहीं है; केंद्रीय कंपनी अधिनियम के अंतर्गत ये शब्द कानूनी रूप से पर्यायवाची हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. भारत के निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों को उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित कीजिए:
I. दिल्ली-मेरठ क्षेत्र
II. अहमदाबाद-बड़ौदा क्षेत्र
III. मुंबई-पुणे क्षेत्र
IV. कोल्लम-तिरुवनंतपुरम क्षेत्र

Downloaded from www.pdf.tube

सूची I: औद्योगिक नीति
A. औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1948
B. औद्योगिक नीति प्रस्ताव, 1956
C. औद्योगिक नीति वक्तव्य, 1977
D. नई औद्योगिक नीति, 1991
सूची II: प्रमुख विशेषता
i. लघु और कुटीर उद्योगों पर ध्यान
ii. अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग की समाप्ति
iii. मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल का प्रारंभ
iv. उद्योगों का तीन सूचियों (A, B, C) में वर्गीकरण
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. 1956 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव किस आर्थिक नियोजन मॉडल से अत्यधिक प्रभावित था?
(1) महालनोबिस मॉडल
(2) हैरोड-डोमर मॉडल
(3) गांधी-कुमारप्पा मॉडल
(4) राव-मनमोहन मॉडल
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. 1991 की नई औद्योगिक नीति के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसने एकाधिकार एवं प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (MRTP) सीमा को समाप्त कर दिया
(2) इसने विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या में भारी कमी की
(3) इसने सभी विदेशी कंपनियों के लिए अनिवार्य चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों की अवधारणा प्रस्तुत की
(4) इसने कई क्षेत्रों को 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के लिए खोल दिया
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे अक्सर 'भारत का आर्थिक संविधान' कहा जाता है।
II. अनुसूची A के उद्योग राज्य की विशेष उत्तरदायित्व थे।
III. इसने भारत में निजी क्षेत्र के अस्तित्व पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया था।
दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) I, II, और III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. किसी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (CPSE) को 'महारत्न' का दर्जा दिए जाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा अनिवार्य मानदंड नहीं है?
(1) इसके पास नवरत्न का दर्जा होना चाहिए
(2) इसे न्यूनतम निर्धारित सार्वजनिक शेयरधारिता के साथ भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए
(3) यह शून्य घरेलू बिक्री वाली 100% निर्यात-उन्मुख इकाई होनी चाहिए
(4) पिछले तीन वर्षों के दौरान इसका औसत वार्षिक शुद्ध लाभ 5,000 करोड़ रुपये से अधिक होना चाहिए
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद के काल के दौरान, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSU) को जानबूझकर छोटा नागपुर और मध्य भारत जैसे पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किया गया था।
कारण (R): सार्वजनिक क्षेत्र का प्राथमिक उद्देश्य केवल वित्तीय लाभ को अधिकतम करना था, और इन क्षेत्रों में भूमि सबसे सस्ती थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

71. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को अधिक स्वायत्तता देने के लिए भारत सरकार द्वारा किस वर्ष उन्हें 'नवरत्न' और 'मिनीरत्न' का दर्जा देने की अवधारणा प्रारंभ की गई थी?
(1) 1956
(2) 1977
(3) 1991
(4) 1997
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. 1991 के बाद सार्वजनिक क्षेत्र की बदलती भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या घटाकर केवल दो (परमाणु ऊर्जा और रेलवे संचालन) कर दी गई।
II. गैर-रणनीतिक PSU में सरकारी इक्विटी के विनिवेश पर ध्यान केंद्रित किया गया।
III. घाटे में चल रहे PSU को बजटीय सहायता में भारी वृद्धि की गई ताकि बिना पुनर्गठन के उनका अस्तित्व सुनिश्चित किया जा सके।
IV. अधिक वित्तीय स्वायत्तता प्रदान करके PSU प्रबंधन के व्यावसायीकरण को प्रोत्साहित किया गया।
दिए गए कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, और IV

41. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) किस विदेशी देश के सहयोग से विकसित किया जा रहा है?
(1) संयुक्त राज्य अमेरिका
(2) फ्रांस
(3) जापान
(4) जर्मनी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (DMIC) के निम्नलिखित प्रस्तावित औद्योगिक केंद्रों को उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित कीजिए:
I. दादरी-नोएडा-गाजियाबाद निवेश क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
II. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र (राजस्थान)
III. अहमदाबाद-धोलेरा निवेश क्षेत्र (गुजरात)
IV. शेंद्रा-बिडकिन औद्योगिक पार्क (महाराष्ट्र)
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, II, I, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (DMIC) की रीढ़ किस प्रमुख आधारभूत संरचना परियोजना के साथ संरेखित है?
(1) स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग
(2) राष्ट्रीय जलमार्ग 1
(3) अंतर्देशीय नदी जोड़ो परियोजना
(4) समर्पित माल ढुलाई गलियारा (पश्चिमी DFC)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. भारत में औद्योगिक गलियारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा (CBIC) का लक्ष्य तीव्र विकास और क्षेत्रीय औद्योगिक संकुलन प्राप्त करना है।
कथन II: औद्योगिक गलियारे पूर्णतः कृषि विकास पर केंद्रित हैं और विनिर्माण गतिविधियों को पूर्णतः प्रतिबंधित करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) को उनके संबंधित राज्यों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: प्रमुख SEZ
A. सीपज़ (सांताक्रूज)
B. कांडला
C. मेपज़ (तांबरम)
D. फाल्टा
सूची II: राज्य
i. गुजरात
ii. पश्चिम बंगाल
iii. महाराष्ट्र
iv. तमिलनाडु
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. निम्नलिखित में से कौन सी भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) की सबसे सटीक परिभाषा है?
(1) एक कृषि क्षेत्र जहाँ कानून द्वारा किसी भी औद्योगिक गतिविधि की अनुमति नहीं है
(2) औद्योगिक श्रमिकों के लिए सरकार द्वारा रियायती दर पर निर्धारित एक आवासीय क्षेत्र
(3) कड़ाई से रक्षा उपकरणों का उत्पादन करने वाला एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम
(4) एक शुल्क मुक्त अन्तःक्षेत्र (enclave) जिसे व्यापार संचालन के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) अधिनियम, 2005 के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह स्पष्ट रुप से SEZ क्षेत्रों के भीतर किसी भी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को प्रतिबंधित करता है
(2) यह SEZ की स्थापना और संचालन के लिए सरलीकृत प्रक्रियाएं प्रदान करता है
(3) यह कर अवकाश और विभिन्न सीमा शुल्क तथा उत्पाद शुल्कों से छूट प्रदान करता है
(4) सिंगल विंडो क्लीयरेंस तंत्र इस अधिनियम की एक प्रमुख विशेषता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) की स्थापना के उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अतिरिक्त आर्थिक गतिविधि का सृजन।
II. वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देना।
III. घरेलू और विदेशी निवेश को प्रतिबंधित करना।
दिए गए कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल II
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. 2020 से प्रभावी संशोधित वर्गीकरण मानदंडों के अनुसार, MSME क्षेत्र में 'मध्यम' उद्यम को क्या परिभाषित करता है?
(1) संयंत्र और मशीनरी या उपकरण में 1 करोड़ रुपये तक का निवेश और 5 करोड़ रुपये तक का वार्षिक कारोबार

Click Here to Buy book on Amazon

सही क्रम का चयन कीजिए:

(1) I, II, III, IV

(2) I, III, II, IV

(3) II, I, III, IV

(4) I, II, IV, III

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. भारत में किसी राज्य के औद्योगिक पिछड़ेपन को मापने के लिए आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले संकेतकों में असंगत की पहचान कीजिए।
(1) प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन
(2) कुल जनसंख्या में औद्योगिक श्रमिकों का अनुपात
(3) राष्ट्रीय राजमार्गों का उच्च घनत्व
(4) प्रति लाख जनसंख्या पर पंजीकृत कारखानों की संख्या
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. औपनिवेशिक पत्तन-केंद्रित विकास द्वारा प्रेरित ऐतिहासिक असमानता
II. समृद्ध खनिज पट्टियों से निकटता
III. राज्यों के बीच आधारभूत संरचना के विकास में अंतर
IV. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का असमान वितरण
V. राज्य-स्तरीय औद्योगिक नीतियों और व्यापार सुगमता में भिन्नता
कारकों का कौन सा संयोजन भारत में औद्योगिक असमानता में महत्वपूर्ण योगदान देता है?
(1) I, II, III, IV, और V
(2) केवल I, III, IV, और V
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, II, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. क्षेत्रीय औद्योगिक असमानता से संबंधित एक समिति और उसके मुख्य अधिदेश का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) बी. शिवरामन समिति - बैंकों का राष्ट्रीयकरण
(2) केलकर समिति - भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन
(3) रंगराजन समिति - केवल कैलोरी सेवन के आधार पर निर्धनता रेखा का अनुमान
(4) पांडे समिति (1968) - औद्योगिक प्रोत्साहनों के लिए पिछड़े क्षेत्रों की पहचान
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. भारत सरकार द्वारा अपनाई गई ऐतिहासिक 'माल भाड़ा समानीकरण नीति' (Freight Equalization Policy) का निम्नलिखित में से क्या प्रभाव पड़ा?
(1) इसने बिहार और ओडिशा जैसे खनिज संपन्न राज्यों के औद्योगीकरण में तेजी लाई
(2) इसने स्थानीय उद्योग के लिए खनिज समृद्ध क्षेत्रों के अवस्थिति लाभ को समाप्त कर दिया
(3) इसने दक्षिणी राज्यों के लिए रेलवे माल ढुलाई शुल्क को बहुत अधिक कर दिया
(4) इसने सभी राज्यों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के समान वितरण को अनिवार्य कर दिया
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. भारत सरकार द्वारा किस वर्ष 'मेक इन इंडिया' पहल प्रारंभ की गई थी?
(1) 2012
(2) 2016
(3) 2014
(4) 2018
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. भारत सरकार की निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक और आर्थिक पहलों को उनके शुभारंभ के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना
II. मेक इन इंडिया
III. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) अधिनियम
IV. स्टार्टअप इंडिया
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) III, II, IV, I
(2) II, III, I, IV
(3) III, IV, II, I
(4) II, I, III, IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'मेक इन इंडिया' पहल के प्राथमिक उद्देश्य की सही पहचान करता है?
(1) भारत को एक विनिर्माण केंद्र के रूप में बदलना और इसके जीडीपी हिस्से को बढ़ाना
(2) सभी कृषि गतिविधियों को पूर्णतः भारी उद्योगों से प्रतिस्थापित करना
(3) विदेशी कंपनियों को भारतीय बाजार में अपने उत्पाद बेचने से रोकना
(4) सभी प्रमुख निजी क्षेत्र की विनिर्माण इकाइयों का राष्ट्रीयकरण करना
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. 'मेक इन इंडिया' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मेक इन इंडिया पहल के अंतर्गत, घरेलू MSME की रक्षा के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) मानदंडों को अत्यधिक प्रतिबंधित किया गया था।
कथन II: इस पहल ने प्रारंभ में विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए ऑटोमोबाइल, विमानन और जैव प्रौद्योगिकी सहित 25 फोकस क्षेत्रों की पहचान की थी।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. औद्योगिक नीतियों को उनकी प्रमुख विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:

NODIA

का औद्योगिक ढांचा मुख्य रूप से जूट प्रसंस्करण और निर्यात जैसी गतिविधियों पर केंद्रित रहा है।

10. (1) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
हुगली औद्योगिक क्षेत्र ने हाल के समय में अपने पारंपरिक प्रभुत्व में कमी महसूस की है, जिसका एक मुख्य कारण 1947 का भारत विभाजन है। विभाजन के कारण जूट उगाने वाले प्रमुख उपजाऊ क्षेत्र तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में चले गए, जबकि अधिकांश जूट मिलें भारत के हुगली तट पर रह गईं। इससे कच्चे माल की भारी कमी हो गई और जूट उद्योग को संकट झेलना पड़ा। इसके अतिरिक्त, बंदरगाह में गाद जमा होना भी गिरावट का कारण है।

11. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
हुगली औद्योगिक क्षेत्र कोलकाता और हावड़ा के केंद्रों के आसपास केंद्रित है, जो ऐतिहासिक रूप से भारत का एक महत्वपूर्ण विनिर्माण केंद्र रहा है। हालांकि, यह क्षेत्र ऑटोमोबाइल या विमान निर्माण के बजाय मुख्य रूप से जूट, कागज, सूती वस्त्र और रसायन जैसे पारंपरिक उद्योगों के लिए अधिक प्रसिद्ध है। हुगली नदी के किनारे स्थित होने के कारण यहाँ जल-आधारित उद्योगों का विकास हुआ है। विमानन जैसे उच्च-तकनीकी क्षेत्र इस क्षेत्र की औद्योगिक विशिष्टता का हिस्सा नहीं रहे हैं।

12. (2) केवल I, II, और III
हुगली औद्योगिक क्षेत्र भारत के सबसे पुराने औद्योगिक क्षेत्रों में से एक है, जिसका विकास ब्रिटिश काल के दौरान शुरू हुआ था। यह क्षेत्र विश्व में जूट मिलों के सबसे बड़े संकेंद्रण के लिए जाना जाता है। इसके विकास में पड़ोसी राज्यों जैसे बिहार, ओडिशा और उत्तर प्रदेश से प्राप्त सस्ते और प्रचुर श्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हालांकि यह क्षेत्र अब विविधीकरण की प्रक्रिया में है, लेकिन यह पूरी तरह से केवल सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र में परिवर्तित नहीं हुआ है।

13. (3) सूती वस्त्र उद्योग के एक प्रमुख केंद्र के रूप में इसके उत्कर्ष के कारण
अहमदाबाद को 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है क्योंकि यह ऐतिहासिक रूप से सूती वस्त्रों के उत्पादन का एक विशाल केंद्र रहा है। जिस प्रकार इंग्लैंड का मैनचेस्टर शहर अपने वस्त्र उद्योग के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध था, उसी प्रकार अहमदाबाद ने भी भारत में इसी तरह की औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व किया। साबरमती नदी की उपलब्धता, आर्द्र जलवायु और निकटवर्ती काली मिट्टी वाले क्षेत्रों से कपास की प्रचुर आपूर्ति ने इसे वस्त्र निर्माण के लिए एक आदर्श स्थान बनाया।

14. (4) इस क्षेत्र में अंतर्देशीय पत्तन की कमी है, जिससे यह निर्यात के लिए पूर्णतः मुंबई पर निर्भर है
अहमदाबाद-बड़ौदा औद्योगिक क्षेत्र का विकास कपास उत्पादक क्षेत्रों और अंकलेश्वर में तेल की खोज से प्रभावित है। यहाँ वडोदरा पेट्रोकेमिकल्स और उर्वरकों का प्रमुख केंद्र है। यह कहना गलत है कि यह क्षेत्र निर्यात के लिए पूरी तरह मुंबई पर निर्भर है। इस क्षेत्र के पास कांडला और मुंद्रा जैसे आधुनिक बंदरगाहों तक सीधी पहुँच है, जो इसके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाते हैं। बेहतर रेल और सड़क संपर्क ने इस औद्योगिक बेल्ट को बंदरगाहों से मजबूती से जोड़ दिया है।

15. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
गुजरात औद्योगिक बेल्ट में प्रत्येक केंद्र की अपनी विशिष्ट पहचान है। सूरत विश्व स्तर पर अपने हीरा कर्तन और पॉलिशिंग कार्य के लिए प्रसिद्ध है। कोयली में एक विशाल तेल रिफाइनरी स्थित है जो क्षेत्र की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करती है। आनंद को भारत की 'श्वेत क्रांति' के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है, जो डेयरी उद्योग में अग्रणी है। अहमदाबाद पारंपरिक रूप से सूती वस्त्र उद्योग का केंद्र रहा है, जिसने गुजरात के औद्योगिक आधार को मजबूती प्रदान की है।

16. (2) संबंधित फर्मों, आपूर्तिकर्ताओं और सहायक संस्थानों का एक भौगोलिक समूह
औद्योगिक क्लस्टर एक ही भौगोलिक क्षेत्र में स्थित परस्पर संबंधित कंपनियों, विशिष्ट आपूर्तिकर्ताओं और सहायक संस्थानों का एक समूह होता है। ये इकाइयां एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने के साथ-साथ सहयोग भी करती हैं। क्लस्टर के माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान, कुशल श्रम की साझा उपलब्धता और रसद लागत में कमी जैसे लाभ प्राप्त होते हैं। गुजरात में हीरा और कपड़ा जैसे उद्योगों के सफल क्लस्टर मौजूद हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।

17. (2) भारी धातुकर्म और खनिज-आधारित उद्योग
छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र भारत के 'हृदय स्थल' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ लौह अयस्क, कोयला, मैंगनीज और अभ्रक जैसे खनिजों का प्रचुर भंडार है। इन संसाधनों की निकटता के कारण यह क्षेत्र मुख्य रूप से भारी धातुकर्म और खनिज-आधारित उद्योगों, विशेष रूप से लोहा और इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ भारी इंजीनियरिंग संयंत्रों और खनन गतिविधियों का सघन जाल फैला हुआ है। यह क्षेत्र भारत की औद्योगिक शक्ति और आत्मनिर्भरता के लिए रीढ़ की हड्डी के समान है।

18. (1) I, II, III, IV, और V
छोटा नागपुर औद्योगिक क्षेत्र झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों तक विस्तृत है। इस क्षेत्र में बोकारो और जमशेदपुर जैसे विशाल इस्पात संयंत्र, रांची में भारी मशीनरी निर्माण के लिए भारी इंजीनियरिंग निगम और सिंदरी में उर्वरक संयंत्र स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, राउरकेला इस्पात संयंत्र भी इसी औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का एक अभिन्न अंग है। ये सभी इकाइयां क्षेत्र की समृद्ध खनिज संपदा और कोयला भंडारों का उपयोग करके देश के औद्योगिक आधार को मजबूत करने में योगदान देते हैं।

19. (3) स्थानीय इस्पात संयंत्रों और खानों को मशीनरी की आपूर्ति करने की आवश्यकता
रांची में भारी इंजीनियरिंग निगम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य छोटा नागपुर क्षेत्र में स्थित विशाल इस्पात संयंत्रों और खदानों

Click Here to Buy book on Amazon

के लिए आवश्यक भारी मशीनरी और उपकरणों का निर्माण करना था। चूंकि लोहा और इस्पात उद्योग को निरंतर भारी कलपुर्जों की आवश्यकता होती है, इसलिए उत्पादन स्थल के निकट ही ऐसी निर्माण इकाई का होना आर्थिक रूप से लाभकारी था। इससे आयात पर निर्भरता कम हुई और भारत में भारी विनिर्माण क्षेत्र को मजबूती मिली। यह आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम था।

20. (4) सिंदरी - पेट्रोकेमिकल्स और कच्चे तेल का शोधन
छोटा नागपुर क्षेत्र के विभिन्न केंद्र अपनी विशिष्ट खनिज गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं। झरिया अपनी कोयला खदानों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि हजारीबाग अभ्रक के निष्कर्षण का प्रमुख केंद्र है। जमशेदपुर टाटा समूह के लोहा और इस्पात उद्योग के लिए विश्व विख्यात है। हालांकि, सिंदरी मुख्य रूप से उर्वरक निर्माण के लिए जाना जाता है, न कि पेट्रोकेमिकल्स या कच्चे तेल के शोधन के लिए। सिंदरी में भारत का पहला बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का उर्वरक संयंत्र स्थापित किया गया था।

21. (3) पाइकारा जलविद्युत संयंत्र
बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के शुरुआती विकास में पाइकारा जलविद्युत परियोजना ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई। चूंकि इस क्षेत्र में कोयले के स्थानीय भंडार की कमी थी, इसलिए उद्योगों को चलाने के लिए बिजली की आपूर्ति हेतु जलविद्युत संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ा। पाइकारा से प्राप्त सस्ती और निरंतर बिजली ने सूती वस्त्र मिलों और बाद में अन्य इंजीनियरिंग उद्योगों की स्थापना को संभव बनाया। इस ऊर्जा क्रांति ने ही इस दक्षिण भारतीय क्षेत्र को एक प्रमुख औद्योगिक शक्ति के रूप में विकसित किया।

22. (1) चेन्नई, बैंगलोर, कोयंबटूर, मदुरै
बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर चेन्नई से शुरु होकर मदुरै तक जाता है। इस क्रम में सबसे उत्तर में तटीय शहर चेन्नई स्थित है, उसके बाद कर्नाटक का पठारी क्षेत्र बैंगलोर आता है। इसके दक्षिण में तमिलनाडु का प्रमुख औद्योगिक केंद्र कोयंबटूर स्थित है, और सबसे अंत में ऐतिहासिक और औद्योगिक शहर मदुरै आता है। यह गलियारा विभिन्न प्रकार के उद्योगों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल और वस्त्रों के लिए एक एकीकृत नेटवर्क प्रदान करता है।

23. (4) जूट प्रसंस्करण
बैंगलोर-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र अपनी विविधता के लिए जाना जाता है, जिसमें उच्च-तकनीकी और पारंपरिक उद्योगों का मिश्रण है। यहाँ एयरोस्पेस, रक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक स्तर के संस्थान और कंपनियां स्थित हैं। चेन्नई को 'भारत का डेट्रायट' कहा जाता है क्योंकि यहाँ ऑटोमोबाइल विनिर्माण का विशाल केंद्र है। हालांकि, जूट प्रसंस्करण इस क्षेत्र का पारंपरिक उद्योग नहीं है, क्योंकि यह मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के हुगली क्षेत्र के उपजाऊ और आर्द्र वातावरण तक सीमित है।

24. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बैंगलोर में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड और हिंदुस्तान मशीन टूल्स जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की स्थापना ने विमानन और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में क्रांति ला दी। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह क्षेत्र अपनी ऊर्जा के लिए पूरी तरह छोटा नागपुर के कोयले पर निर्भर है। इस क्षेत्र ने पाइकारा जैसी स्थानीय जलविद्युत परियोजनाओं और कलपक्कम जैसे परमाणु ऊर्जा केंद्रों के माध्यम से अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की है। जलविद्युत संसाधनों के शुरुआती उपयोग ने ही यहाँ औद्योगिक नींव सुदृढ़ की थी।

25. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र के विभिन्न केंद्र अपनी विशिष्टताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। गुरुग्राम विशेष रूप से मारुति सुज़ुकी जैसे बड़े संयंत्रों के कारण ऑटोमोबाइल उद्योग का केंद्र बन गया है। नोएडा सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और इलेक्ट्रॉनिक सामानों के उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है। मेरठ विश्व स्तर पर खेल सामग्री के निर्माण के लिए जाना जाता है। फरीदाबाद में भारी इंजीनियरिंग और ट्रैक्टर निर्माण की कई इकाइयां स्थित हैं, जो क्षेत्र की औद्योगिक विविधता को दर्शाती हैं।

26. (1) बाजार-उन्मुख और स्वच्छंद (footloose) उद्योग
दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र की विशेषता यह है कि यहाँ मुख्य रूप से बाजार-उन्मुख और स्वच्छंद उद्योगों की प्रधानता है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की विशाल जनसंख्या और उच्च क्रय शक्ति के कारण उपभोक्ता वस्तुओं, इलेक्ट्रॉनिक्स और परिधान उद्योगों का यहाँ भारी संकेंद्रण है। ये उद्योग कच्चे माल के स्थान पर अंतिम उपभोक्ता की निकटता को प्राथमिकता देते हैं। परिवहन के आधुनिक साधनों और संपर्क के कारण यहाँ हल्के इंजीनियरिंग और सेवा-आधारित उद्योगों का भी व्यापक स्तर पर विकास हुआ है।

27. (4) यह विशाल स्थानीय बाजार द्वारा संचालित उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योगों का उच्च संकेंद्रण प्रदर्शित करता है
दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विशाल और सघन स्थानीय बाजार द्वारा संचालित है। यहाँ किसी बड़े खनिज भंडार की अनुपस्थिति के बावजूद, उच्च मांग और उत्कृष्ट संपर्क ने इसे उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन का केंद्र बना दिया है। यहाँ वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण और ऑटोमोबाइल जैसे विविध उद्योग विकसित हुए हैं। यह क्षेत्र अपनी आर्थिक गतिविधियों के लिए कच्चे माल के बजाय बाजार की निकटता और कुशल मानव संसाधनों पर अधिक निर्भर करता है।

28. (2) केवल I और III
दिल्ली-मेरठ औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार दिल्ली, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी हिस्सों और हरियाणा के औद्योगिक केंद्रों तक है। स्वतंत्रता के बाद सरकारी निवेश और बेहतर आधारभूत संरचना के कारण यहाँ सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में तेजी से विकास हुआ। यह क्षेत्र अपनी विनिर्माण क्षमताओं के लिए जाना जाता है, लेकिन यहाँ भारी धातुकर्म या पोत निर्माण जैसे उद्योग नहीं पाए जाते, क्योंकि ये आमतौर पर तटीय क्षेत्रों या

NODIA

खनिज संपदा के निकट स्थित होते हैं। यह क्षेत्र उपभोक्ता और इंजीनियरिंग वस्तुओं का प्रमुख केंद्र है।

29. (3) कृष्णा-गोदावरी डेल्टा पृष्ठप्रदेश और सक्रिय बंदरगाह
विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र का विकास इसके रणनीतिक तटीय स्थान और समृद्ध पृष्ठप्रदेश के कारण हुआ है। विशाखापत्तनम बंदरगाह के माध्यम से कच्चे माल का आयात और तैयार माल का निर्यात सुगम होता है। कृष्णा-गोदावरी डेल्टा क्षेत्र कृषि और खनिज संसाधनों में समृद्ध है, जो स्थानीय उद्योगों को आधार प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र में बंदरगाह आधारित उद्योगों जैसे पोत निर्माण और तेल शोधन के लिए उत्कृष्ट सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिससे यह दक्षिण भारत का प्रमुख आर्थिक गलियारा बन गया है।

30. (1) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
विशाखापत्तनम-गुंटूर क्षेत्र के औद्योगीकरण को ऊर्जा संसाधनों की आसान उपलब्धता से बड़ी गति मिली है। गोदावरी बेसिन में कोयला खदानों और कृष्णा-गोदावरी बेसिन में तेल एवं प्राकृतिक गैस के विशाल भंडारों की खोज ने औद्योगिक इकाइयों के लिए निरंतर ऊर्जा सुनिश्चित की है। इन ऊर्जा संसाधनों ने उर्वरक, पेट्रोकेमिकल्स और भारी उद्योगों को यहाँ आकर्षित किया है। प्राकृतिक संसाधनों और आधुनिक बंदरगाह सुविधाओं के इस संगम ने क्षेत्र को तेजी से एक औद्योगिक केंद्र में बदल दिया है।

31. (1) कुरनूल
विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों तक फैला हुआ है। इसमें विशाखापत्तनम, विजयनगरम, पूर्वी गोदावरी (राजमहेंद्रम), पश्चिमी गोदावरी, कृष्णा (मछलीपट्टनम और विजयवाड़ा) और गुंटूर जिले शामिल हैं। कुरनूल इस तटीय औद्योगिक बेल्ट का हिस्सा नहीं है क्योंकि यह राज्य के रायलसीमा क्षेत्र में आंतरिक भाग में स्थित है। तटीय जिलों की श्रृंखला एक एकीकृत औद्योगिक नेटवर्क बनाती है जो बंदरगाहों और समृद्ध नदी डेल्टाओं का लाभ उठाती है।

32. (2) केवल I, II, और III
विशाखापत्तनम-गुंटूर क्षेत्र की औद्योगिक संरचना में विविधता है। यहाँ भारत का एक प्रमुख पोत निर्माण केंद्र स्थित है और कच्चे तेल के आयात पर आधारित तेल परिष्करण इकाइयां सक्रिय हैं। प्रचुर गैस और खनिज संसाधनों के कारण यहाँ उर्वरक निर्माण उद्योग भी विकसित हुआ है। हालांकि, जूट वस्त्र उद्योग इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषता नहीं है, क्योंकि यह मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा क्षेत्र में ही केंद्रित है। यहाँ पेट्रोलियम, इस्पात और रसायन जैसे भारी उद्योगों का वर्चस्व है।

33. (2) बागानी कृषि और जल-शक्ति
केरल का कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से स्थानीय कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। इस क्षेत्र में नारियल, काजू और रबर जैसी बागानी फसलों की प्रचुरता है, जो प्रसंस्करण उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करती हैं। पश्चिमी घाट की निकटता के कारण यहाँ जल-शक्ति के विकास की भी पर्याप्त संभावनाएं उपलब्ध रही हैं। खनिजों और कोयले की कमी के बावजूद, कुशल श्रम और कृषि-आधारित संसाधनों ने यहाँ एक अद्वितीय और पारिस्थितिकी-अनुकूल औद्योगिक ढांचे के विकास में योगदान दिया है।

34. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र में कोयले और लौह अयस्क जैसे भारी खनिजों का अभाव है, जिसके कारण यहाँ बड़े पैमाने पर भारी धातुकर्म उद्योग विकसित नहीं हो पाए हैं। इसके बजाय, यह क्षेत्र कृषि-आधारित और लघु उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करता है। यहाँ नारियल जटा, काजू प्रसंस्करण, मछली पकड़ने और रबर आधारित उत्पादों का वर्चस्व है। ये उद्योग स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हैं। यहाँ की औद्योगिक संरचना राज्य की विशिष्ट भौगोलिक और कृषि विशेषताओं को दर्शाती है।

35. (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
केरल के औद्योगिक केंद्रों की विशिष्ट भूमिकाएं हैं। पुनलूर अपने ऐतिहासिक कागज उद्योग के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय वन संसाधनों का उपयोग करता है। कोच्चि में एक बड़ी तेल रिफाइनरी और बंदरगाह स्थित है, जो समुद्री व्यापार और पेट्रोकेमिकल्स का केंद्र है। अलप्पुझा विश्व प्रसिद्ध नारियल जटा उद्योग के लिए विख्यात है, जहाँ नारियल के रेशों से उत्पाद बनाए जाते हैं। तिरुवनंतपुरम वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र जैसे उच्च-तकनीकी अनुसंधान संस्थानों का प्रमुख केंद्र बन गया है।

36. (4) लोहा और इस्पात प्रगलन
केरल का औद्योगिक परिदृश्य मुख्य रूप से कृषि-प्रसंस्करण और उच्च-तकनीकी सेवाओं पर केंद्रित है। नारियल जटा और काजू प्रसंस्करण यहाँ के पारंपरिक ग्रामीण उद्योगों की रीढ़ हैं। अलुपुरम (कोच्चि) जैसे क्षेत्रों में एल्युमीनियम प्रगलन की इकाइयां भी मौजूद हैं। हालांकि, लोहा और इस्पात प्रगलन इस क्षेत्र की विशेषता नहीं है क्योंकि इसके लिए भारी मात्रा में लौह अयस्क और कोयले की आवश्यकता होती है, जो यहाँ स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं हैं। भारी धातुकर्म उद्योगों के स्थान पर यहाँ पर्यावरण-अनुकूल उद्योगों को प्राथमिकता दी गई है।

37. (3) क्षेत्रीय उत्सर्जन को विनियमित करके ताजमहल की रक्षा करना
ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन का गठन ताजमहल के आसपास के 10,400 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य औद्योगिक धुएं और हानिकारक गैसों के कारण संगमरमर के क्षरण को रोकना है। उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुसार, इस क्षेत्र में संचालित उद्योगों के लिए कठोर उत्सर्जन मानक लागू किए गए हैं। इसके तहत कोयले जैसे प्रदूषित ईंधन के स्थान पर प्राकृतिक गैस जैसे स्वच्छ ईंधन के उपयोग को अनिवार्य बनाया गया है ताकि ऐतिहासिक विरासत को बचाया जा सके।

Downloaded from www.pdf.tube

इन राज्यों की सरकारों ने व्यापार अनुकूल नीतियां अपनाई हैं और निवेश को आकर्षित करने के लिए करों में छूट तथा त्वरित मंजूरी तंत्र विकसित किए हैं।

75. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
भारत में विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमाएं उनकी संवेदनशीलता और आर्थिक महत्व के आधार पर निर्धारित की गई हैं। रक्षा विनिर्माण में स्वचालित मार्ग के तहत 74% तक निवेश की अनुमति है। बीमा क्षेत्र में विदेशी भागीदारी की सीमा बढ़ाकर 74% कर दी गई है ताकि पूंजी प्रवाह बढ़ सके। बहु-ब्रांड खुदरा व्यापार में कड़ी शर्तों के साथ 51% निवेश की अनुमति दी गई है। हालांकि, लॉटरी व्यवसाय, जुआ और सट्टेबाजी जैसे क्षेत्रों में विदेशी निवेश पूरी तरह से निषिद्ध है।

76. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एक दीर्घकालिक निवेश है जिसमें निवेशक किसी विदेशी कंपनी के प्रबंधन और संचालन में नियंत्रण या महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है। यह भौतिक संपत्तियों, जैसे कारखानों और कार्यालयों के निर्माण से संबंधित होता है। इसके विपरीत, विदेशी पोर्टफोलियो निवेश मुख्य रूप से शेयर बाजार में शेयरों और बॉन्डों की खरीद के माध्यम से होता है। इसमें निवेशक का कंपनी के दैनिक प्रबंधन पर कोई सीधा नियंत्रण नहीं होता है। ये दोनों निवेश के अलग स्वरूप हैं जो अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

77. (3) 2015
स्मार्ट सिटी मिशन भारत सरकार की एक अभिनव पहल है जिसे जून 2015 में लॉन्च किया गया था। इस मिशन का उद्देश्य ऐसे शहरों को विकसित करना है जो अपने नागरिकों को मुख्य बुनियादी ढांचा, स्वच्छ वातावरण और 'स्मार्ट' समाधानों के माध्यम से एक गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान कर सकें। इस कार्यक्रम के तहत 100 शहरों का चयन किया गया है, जहाँ सतत विकास और आर्थिक विकास को गति देने के लिए आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे औद्योगिक विकास भी सुगम होता है।

78. (4) केवल I, II, III, और IV
स्मार्ट सिटी मिशन के मूल ढांचे में पर्याप्त जलापूर्ति, सुनिश्चित बिजली आपूर्ति, सुदृढ़ सूचना प्रौद्योगिकी संपर्क और डिजिटल सेवाओं के साथ-साथ कुशल शासन शामिल है। यह मिशन विनिर्माण गतिविधियों को प्रतिबंधित नहीं करता, बल्कि यह औद्योगिक क्षेत्रों को आधुनिक बनाने और उनके लिए बेहतर रसद सुविधाएं प्रदान करने पर जोर देता है। विनिर्माण पर प्रतिबंध लगाने का विचार गलत है क्योंकि स्मार्ट सिटी का उद्देश्य आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाकर रोजगार के अवसर पैदा करना है। यह एकीकृत विकास का व्यापक मॉडल है।

79. (1) SEZ निर्यात-उन्मुख शुल्क मुक्त क्षेत्र हैं; औद्योगिक टाउनशिप एकीकृत शहरी बस्तियां हैं
विशेष आर्थिक क्षेत्र मुख्य रूप से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए बनाए गए व्यापारिक अंतःक्षेत्र हैं जहाँ कर और सीमा शुल्क की छूट दी जाती है। दूसरी ओर, औद्योगिक टाउनशिप एक व्यापक अवधारणा है जिसमें कारखानों के साथ-साथ श्रमिकों के लिए आवास, स्कूल, अस्पताल और अन्य नागरिक सुविधाएं भी एक ही परिसर में विकसित की जाती हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्र का ध्यान व्यापार दक्षता पर होता है, जबकि औद्योगिक टाउनशिप विनिर्माण और शहरी जीवन के एक एकीकृत पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण पर केंद्रित होती है।

80. (1) I, II, III, IV
भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम बहुत स्पष्ट है। सबसे उत्तर में दिल्ली-मेरठ क्षेत्र स्थित है। इसके दक्षिण में गुजरात का अहमदाबाद-बड़ौदा बेल्ट आता है। उसके बाद और दक्षिण की ओर जाने पर महाराष्ट्र का मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र स्थित है। भारत के सुदूर दक्षिण में केरल का कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक क्षेत्र स्थित है। यह क्रम देश के विभिन्न अक्षांशों पर फैले औद्योगिक केंद्रों के वितरण को दर्शाता है, जो अलग-अलग संसाधन आधारों पर विकसित हुए हैं।

www.nodia.in

NODIA

47. (1) यह स्पष्ट रूप से SEZ क्षेत्रों के भीतर किसी भी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को प्रतिबंधित करता है
विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, 2005 का उद्देश्य भारत में निवेश और निर्यात को अभूतपूर्व बढ़ावा देना है। यह अधिनियम विशेष आर्थिक क्षेत्र के भीतर अधिकांश क्षेत्रों में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देता है, इसलिए इसे प्रतिबंधित करने का विचार पूरी तरह गलत है। यह अधिनियम कर अवकाश, सीमा शुल्क से छूट और एकल खिड़की मंजूरी जैसी आकर्षक सुविधाएं प्रदान करता है। इन प्रोत्साहनों ने वैश्विक कंपनियों को भारत में अपनी विनिर्माण और सेवा इकाइयां स्थापित करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रेरित किया है।

48. (2) केवल III
विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना के मुख्य उद्देश्यों में अतिरिक्त आर्थिक गतिविधियों का सृजन करना और वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, इनका लक्ष्य घरेलू और विदेशी स्रोतों से व्यापक निवेश जुटाना और रोजगार के अवसर पैदा करना है। यह कहना गलत है कि ये क्षेत्र निवेश को प्रतिबंधित करते हैं; वास्तव में, वे निवेश आकर्षित करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए क्षेत्र हैं। बुनियादी ढांचे का विकास भी इन क्षेत्रों का एक अनिवार्य लक्ष्य है।

49. (2) 50 करोड़ रुपये तक का निवेश और 250 करोड़ रुपये तक का वार्षिक कारोबार
2020 में भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की परिभाषा को संशोधित किया ताकि उन्हें विस्तार करने और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने में मदद मिल सके। नए मानदंडों के अनुसार, एक 'मध्यम' उद्यम वह है जिसमें संयंत्र और मशीनरी या उपकरणों में निवेश 50 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है और जिसका वार्षिक कारोबार 250 करोड़ रुपये की सीमा के भीतर है। यह संशोधित वर्गीकरण निवेश और कारोबार दोनों को मिलाकर तैयार किया गया है, जो व्यवसायों को अधिक स्वायत्तता प्रदान करता है।

50. (3) कथन A सही है लेकिन कथन R गलत है
भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र रोजगार सृजन के लिए कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, जो देश की समावेशी आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। हालांकि, यह मानना गलत है कि ये उद्योग पूंजी-गहन होते हैं। इसके विपरीत, ये उद्यम अपनी प्रकृति में अत्यधिक श्रम-गहन होते हैं, जिससे वे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करने में सक्षम होते हैं। कम पूंजी निवेश के साथ अधिक रोजगार पैदा करने की इनकी क्षमता भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

51. (3) वे साझा आधारभूत संरचना और बिजली प्रदान करके पूंजीगत भार को कम करते हैं
औद्योगिक संपदाएं सूक्ष्म और लघु उद्यमों के विकास के लिए एक सहायक वातावरण प्रदान करती हैं जहाँ पानी, बिजली, परिवहन और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी बुनियादी सुविधाएं पहले से उपलब्ध होती हैं। इससे छोटी इकाइयों को अपना व्यवसाय शुरु करने के लिए प्रारंभिक पूंजी निवेश में भारी कमी करने में मदद मिलती है। साझा सुविधाओं के उपयोग से उत्पादन लागत कम होती है और परिचालन दक्षता बढ़ती है। यह संकुलन मॉडल छोटे उद्यमियों को बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठाने और बेहतर प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देता है।

52. (4) केवल I, II, और III
औद्योगिक क्लस्टर छोटे उत्पादकों को एकजुट करके कच्चे माल की सामूहिक खरीद और सौदेबाजी की शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे उनकी लागत कम होती है। ये क्लस्टर तकनीकी ज्ञान के साझाकरण और नवाचार के प्रसार को भी सुगम बनाते हैं। सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इनकी क्षमता वृद्धि में सहायता करती है। क्लस्टर केवल महानगरों तक सीमित नहीं हैं; वास्तव में, वे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी कुशलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं, जो क्षेत्रीय विकास में संतुलन पैदा करने में सहायक हैं।

53. (3) कारण: पहाड़ी स्थलाकृति और दुर्गम परिवहन; प्रभाव: उच्च उत्पादन लागत
भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में औद्योगिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण वहाँ की कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ और पहाड़ी स्थलाकृति है। दुर्गम रास्तों के कारण परिवहन नेटवर्क का विकास सीमित रहा है, जिससे कच्चे माल को लाने और तैयार माल को बाजार तक ले जाने की लागत बहुत अधिक हो जाती है। यह उच्च उत्पादन लागत निवेशकों को इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने से हतोत्साहित करती है। संपर्क की कमी और सीमित पहुंच ने इस क्षेत्र के आर्थिक विकास की गति को धीमा रखा है।

54. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
उत्तर पूर्व औद्योगिक विकास योजना का मुख्य उद्देश्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में नई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित करना है। इसके तहत पूंजी निवेश पर सब्सिडी और ब्याज छूट जैसे विभिन्न वित्तीय लाभ प्रदान किए जाते हैं। यह योजना केवल सार्वजनिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निजी क्षेत्र के उद्यमों को भी समान रूप से प्रोत्साहित करती है। निजी निवेश को आकर्षित करना ही इस योजना का एक प्रमुख लक्ष्य है ताकि क्षेत्र में व्यापक रोजगार सृजन और संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित किया जा सके।

55. (4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
उत्तर-पूर्वी राज्यों की अपनी विशिष्ट औद्योगिक पहचान है। असम मुख्य रूप से चाय प्रसंस्करण और पेट्रोकेमिकल उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है। मेघालय में प्रचुर मात्रा में चूना पत्थर उपलब्ध है, जो इसके सीमेंट उद्योग का आधार है। त्रिपुरा अपने विशाल बांस संसाधनों और रबर बागानों पर आधारित उद्योगों के लिए जाना जाता है। सिक्किम ने हाल के वर्षों में औषधीय उत्पादों और पेय पदार्थों के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे यह राज्य निवेश का एक नया केंद्र बनकर उभरा है।

56. (1) असम
नुमालीगढ़ रिफाइनरी असम के गोलाघाट जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। इसे 'असम समझौते'

Click Here to Buy book on Amazon

38. (2) I, II, III, IV, और V
मथुरा-आगरा-दिल्ली गलियारा एक महत्वपूर्ण औद्योगिक पट्टी है जहाँ मथुरा रिफाइनरी, फिरोजाबाद का कांच उद्योग और आगरा का चर्म उद्योग प्रसिद्ध हैं। ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन के अंतर्गत यहाँ पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत कड़े नियम लागू हैं। इन नियमों के अनुपालन में, इस क्षेत्र की अधिकांश औद्योगिक इकाइयों ने कोयले के स्थान पर प्राकृतिक गैस को ईंधन के रूप में अपना लिया है। यह बदलाव न केवल प्रदूषण कम करने के लिए बल्कि उद्योगों के सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक था।

39. (4) कारण: उच्चतम न्यायालय के निर्देश; प्रभाव: प्राकृतिक गैस की ओर अनिवार्य परिवर्तन
मथुरा और आगरा के उद्योगों में स्वच्छ ईंधन के रूप में प्राकृतिक गैस को अपनाना मुख्य रूप से कानूनी हस्तक्षेप का परिणाम था। उच्चतम न्यायालय ने ताजमहल के संगमरमर को वायु प्रदूषण से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए ऐतिहासिक निर्देश जारी किए थे। इन निर्देशों के तहत, औद्योगिक इकाइयों के लिए हानिकारक ईंधन का त्याग कर प्राकृतिक गैस जैसी स्वच्छ ऊर्जा पर निर्भर होना अनिवार्य कर दिया गया। इस न्यायिक आदेश ने क्षेत्र में एक नई हरित औद्योगिक संस्कृति को जन्म दिया और पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित की।

40. (1) फिरोजाबाद ऐतिहासिक रूप से भारत के कांच और चूड़ी उद्योग का केंद्र रहा है
फिरोजाबाद को भारत की 'कांच की राजधानी' के रूप में जाना जाता है, जहाँ चूड़ियों और अन्य कांच के सामानों का निर्माण सदियों से होता आ रहा है। यह शहर इस विशिष्ट कौशल और औद्योगिक संकेंद्रण के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। आगरा मुख्य रूप से पर्यटन, चर्म उद्योग और हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है, न कि भारी मशीनरी के लिए। मथुरा मुख्य रूप से अपनी तेल रिफाइनरी के लिए प्रसिद्ध है। यह पूरा गलियारा पर्यावरणीय नियमों के अधीन है, जो ताजमहल की रक्षा के लिए अनिवार्य हैं।

41. (3) जापान
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा भारत की सबसे महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में से एक है, जिसे जापान सरकार के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से विकसित किया जा रहा है। इस परियोजना का उद्देश्य उत्तर भारत के भीतरी क्षेत्रों को पश्चिमी तट के बंदरगाहों से जोड़कर एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाना है। जापान की भागीदारी ने इसमें अत्याधुनिक तकनीक और स्थायी विकास के वैश्विक मानकों को शामिल करने में मदद की है। यह सहयोग दोनों देशों के बीच मजबूत आर्थिक और रणनीतिक संबंधों का परिचायक है।

42. (1) I, II, III, IV
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे के निवेश क्षेत्रों का भौगोलिक विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर एक निश्चित क्रम में है। सबसे उत्तर में उत्तर प्रदेश का दादरी-नोएडा-गाजियाबाद क्षेत्र स्थित है। इसके बाद दक्षिण की ओर बढ़ने पर राजस्थान का खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र आता है। गुजरात का अहमदाबाद-धोलेरा निवेश क्षेत्र और दक्षिण में स्थित है, और यह गलियारा महाराष्ट्र के शेंद्रा-बिडकिन औद्योगिक पार्क तक पहुँचता है। यह क्रम माल ढुलाई गलियारे के मार्ग के साथ औद्योगिक विकास के विस्तार को स्पष्ट करता है।

43. (4) समर्पित माल ढुलाई गलियारा (पश्चिमी DFC)
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे की सफलता का आधार पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा है। यह रेलवे लाइन विशेष रूप से भारी माल ढोने वाली ट्रेनों के लिए डिजाइन की गई है, जो औद्योगिक केंद्रों और बंदरगाहों के बीच तीव्र परिवहन सुनिश्चित करती है। माल ढुलाई गलियारे के दोनों ओर औद्योगिक शहरों और निवेश क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। इस रेल नेटवर्क की उच्च क्षमता और गति विनिर्माण इकाइयों के लिए रसद लागत को कम करने और निर्यात को बढ़ावा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

44. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा दक्षिण भारत में तीव्र औद्योगिक विकास और वैश्विक विनिर्माण प्रतिस्पर्धी क्षमता बढ़ाने के लिए लक्षित है। यह गलियारा विभिन्न क्षेत्रों में क्लस्टर आधारित विकास को बढ़ावा देता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि औद्योगिक गलियारे विनिर्माण को प्रतिबंधित करते हैं। इसके विपरीत, इनका प्राथमिक उद्देश्य ही विनिर्माण इकाइयों, आधुनिक रसद सुविधाओं और स्मार्ट बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देना है। ये गलियारे औद्योगिक विकास के साथ-साथ शहरीकरण और रोजगार सृजन के लिए एक व्यापक तंत्र प्रदान करते हैं।

45. (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित विशेष आर्थिक क्षेत्र निर्यात को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीपज़ महाराष्ट्र के मुंबई में स्थित है जो इलेक्ट्रॉनिक्स और आभूषणों के निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। कांडला गुजरात में स्थित भारत का पहला मुक्त व्यापार क्षेत्र है। मेपज़ तमिलनाडु के तांबरम में स्थित एक प्रमुख बहु-उत्पाद क्षेत्र है। फाल्टा पश्चिम बंगाल में स्थित है जो पूर्वी भारत के महत्वपूर्ण निर्यात केंद्रों में से एक है। ये सभी क्षेत्र विशेष कर लाभ और व्यापारिक सुविधाएं प्रदान करते हैं।

NODIA

46. (4) एक शुल्क मुक्त अंतःक्षेत्र (enclave) जिसे व्यापार संचालन के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है
विशेष आर्थिक क्षेत्र सरकार द्वारा निर्धारित एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र होता है जहाँ व्यापार और वाणिज्यिक कानून देश के बाकी हिस्सों से भिन्न और अधिक उदार होते हैं। इन्हें सीमा शुल्क और व्यापार नियमों के उद्देश्य से एक 'विदेशी क्षेत्र' माना जाता है। विशेष आर्थिक क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य निर्यात को प्रोत्साहित करना, निवेश आकर्षित करना और रोजगार के नए अवसर पैदा करना है। यहाँ स्थित इकाइयों को शुल्क मुक्त आयात, करों में छूट और सरल प्रशासनिक प्रक्रियाओं जैसी कई रियायतें प्रदान की जाती हैं।

में वर्गीकृत कर सार्वजनिक क्षेत्र को प्रभुत्व दिया। 1977 की नीति ने विशेष रूप से लघु और कुटीर उद्योगों के संरक्षण पर जोर दिया। अंततः, 1991 की नई औद्योगिक नीति ने लाइसेंसिंग राज को लगभग समाप्त कर दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के माध्यम से दुनिया के लिए खोल दिया।

66. (1) महालनोबिस मॉडल
1956 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव पी.सी. महालनोबिस द्वारा विकसित विकास मॉडल से गहराई से प्रभावित था। इस मॉडल ने दूसरी पंचवर्षीय योजना का आधार बनाया और भारी और बुनियादी उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया। इसका मुख्य तर्क यह था कि लोहा, इस्पात और भारी मशीनरी जैसे उद्योगों में निवेश करने से देश का औद्योगिक आधार मजबूत होगा, जिससे भविष्य में उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन स्वतः बढ़ जाएगा। इस नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र की अग्रणी भूमिका को स्थापित किया।

67. (3) इसने सभी विदेशी कंपनियों के लिए अनिवार्य चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों की अवधारणा प्रस्तुत की
1991 की नई औद्योगिक नीति ने भारतीय आर्थिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। इसने औद्योगिक लाइसेंसिंग को समाप्त किया, सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों को कम किया और एमआरटीपी सीमा को हटा दिया ताकि कंपनियां बिना किसी बाधा के विस्तार कर सकें। विदेशी निवेश के लिए द्वार खोल दिए गए। हालांकि, इस नीति ने विदेशी कंपनियों के लिए अनिवार्य 'चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों' को समाप्त करने की दिशा में कदम उठाए थे, क्योंकि इसका उद्देश्य प्रतिस्पर्धा और बाजार दक्षता को बढ़ावा देना था।

68. (4) केवल I और II
1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव को इसके व्यापक प्रभाव के कारण अक्सर 'भारत का आर्थिक संविधान' कहा जाता है। इसमें अनुसूची A के तहत 17 उद्योगों को पूरी तरह से राज्य के स्वामित्व के लिए आरक्षित किया गया था। हालांकि इस नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र को सर्वोच्चता प्रदान की, लेकिन इसने निजी क्षेत्र के अस्तित्व पर प्रतिबंध नहीं लगाया। निजी क्षेत्र को अनुसूची B और C के तहत कार्य करने की अनुमति थी, हालांकि उन्हें लाइसेंसिंग और सरकारी विनियमन के कड़े दायरे में रहकर ही विस्तार करने की स्वतंत्रता दी गई थी।

69. (3) यह शून्य घरेलू बिक्री वाली 100% निर्यात-उन्मुख इकाई होनी चाहिए
'महारत्न' का दर्जा प्राप्त करने के लिए किसी सार्वजनिक उपक्रम के पास पहले से 'नवरत्न' का दर्जा होना अनिवार्य है। उसे भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए और पिछले तीन वर्षों के दौरान उसका औसत वार्षिक शुद्ध लाभ 5,000 करोड़ रुपये से अधिक होना चाहिए। इसके अलावा, उसका औसत वार्षिक टर्नओवर और शुद्ध संपत्ति भी निर्धारित सीमाओं से अधिक होनी चाहिए। यह कहना गलत है कि वह शून्य घरेलू बिक्री वाली निर्यात इकाई होनी चाहिए; वास्तव में, इन उद्यमों की घरेलू बाजार में मजबूत उपस्थिति होती है।

70. (3) कथन A सही है लेकिन कथन R गलत है
स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने सामाजिक न्याय और संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करने के लिए जानबूझकर पिछड़े क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम स्थापित किए। भिलाई, राउरकेला और बोकारो जैसे स्थानों का चयन मुख्य रूप से क्षेत्रीय असमानता को दूर करने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने के उद्देश्य से किया गया था। यह विचार गलत है कि इनका एकमात्र उद्देश्य केवल लाभ को अधिकतम करना था। सार्वजनिक क्षेत्र का प्राथमिक लक्ष्य सामाजिक कल्याण, रोजगार सृजन और देश के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना था।

NODIA

71. (4) 1997
भारत सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की प्रबंधकीय और वित्तीय स्वायत्तता बढ़ाने के लिए 1997 में 'नवरत्न' और 'मिनीरत्न' का दर्जा देने की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य उन लाभ कमाने वाले उपक्रमों की पहचान करना था जो वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने की क्षमता रखते थे। इन श्रेणियों के तहत कंपनियों को निवेश निर्णय लेने, विलय और अधिग्रहण करने तथा विदेशों में संयुक्त उद्यम स्थापित करने के लिए सरकार से पूर्वानुमति लिए बिना अधिक शक्तियां प्रदान की गईं, जिससे उनकी निर्णय प्रक्रिया तेज हुई।

72. (1) केवल I, II, और IV
1991 के बाद सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका में बड़ा बदलाव आया। आरक्षित उद्योगों की संख्या घटाकर केवल दो कर दी गई और गैर-रणनीतिक इकाइयों में सरकारी हिस्सेदारी के विनिवेश की प्रक्रिया शुरू हुई। प्रबंधन में व्यावसायीकरण और स्वायत्तता को बढ़ावा दिया गया ताकि वे कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें। यह कहना गलत है कि घाटे में चल रहे उपक्रमों को बिना पुनर्गठन के बजटीय सहायता बढ़ाई गई। इसके विपरीत, सरकार ने बीमार इकाइयों के लिए कड़े मानदंड अपनाए और उनके पुनरुद्धार या विनिवेश पर ध्यान केंद्रित किया।

73. (3) परमाणु ऊर्जा
भारत की वर्तमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति के तहत अधिकांश क्षेत्रों को स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% निवेश के लिए खोल दिया गया है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, सड़क और ऑटोमोबाइल शामिल हैं। हालांकि, परमाणु ऊर्जा और रेलवे संचालन जैसे रणनीतिक क्षेत्र अभी भी विदेशी निवेश के लिए प्रतिबंधित हैं। परमाणु ऊर्जा सुरक्षा और राष्ट्रीय संप्रभुता का मामला होने के कारण सरकार के पूर्ण नियंत्रण में है। इन क्षेत्रों में विदेशी भागीदारी की अनुमति केवल विशेष शर्तों या सरकारी समझौतों के तहत ही संभव है।

74. (1) बेहतर आधारभूत संरचना, कुशल कार्यबल और अनुकूल राज्य नीतियां
महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के उच्च संकेंद्रण का मुख्य कारण वहां का विकसित औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र है। इन राज्यों में आधुनिक बंदरगाह, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति और उत्कृष्ट संपर्क जैसी बेहतर बुनियादी सुविधाएं मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, वहां एक कुशल और तकनीकी रूप से प्रशिक्षित कार्यबल उपलब्ध है।

21. कौन-सा कथन महाराष्ट्र मॉडल में सहकारी चीनी मिलों का सटीक वर्णन करता है?
(1) इनका स्वामित्व और संचालन विशेष रूप से केंद्र सरकार द्वारा एक सार्वजनिक क्षेत्र के बोर्ड के माध्यम से किया जाता है।
(2) ये बहुराष्ट्रीय निगम हैं जो वैश्विक लाभ के लिए स्थानीय कृषि संसाधनों और श्रम का उपयोग करते हैं।
(3) इनका स्वामित्व स्थानीय गन्ना किसानों के पास है जो सामूहिक शेयरधारक और आपूर्तिकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।
(4) ये घरेलू रिफाइनरी प्रसंस्करण के लिए पूरी तरह से वैश्विक बाजारों से आयातित कच्ची चीनी पर निर्भर हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. औद्योगिक समूहों के लिए सरकारी पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: टेक्सटाइल पार्क और शुगर क्लस्टर स्थानीय उद्योगों को विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा और सामान्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
कथन II: इन पहलों का उद्देश्य उत्पादन लागत को कम करना और भारतीय कपड़ा और चीनी उत्पादों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. लौह एवं इस्पात उद्योग की कच्चे माल की आवश्यकताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्लास्ट फर्नेस (झोंका भट्टी) में लौह अयस्क को गलाने के लिए कोकिंग कोल अनिवार्य है।
II. प्रगलन के दौरान अशुद्धियों को दूर करने के लिए चूना पत्थर का उपयोग फ्लक्स (गालक) के रूप में किया जाता है।
III. स्टील को मजबूती और कठोरता प्रदान करने के लिए मैंगनीज मिलाया जाता है।
IV. शुद्ध लोहा निकालने के लिए बॉक्साइट प्राथमिक अयस्क है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल II, III और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. जमशेदपुर में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की ऐतिहासिक विशिष्टता क्या है?
(1) यह भारत का पहला एकीकृत इस्पात संयंत्र था।
(2) यह भारत का पहला तटीय इस्पात संयंत्र था।
(3) यह स्वतंत्रता के बाद पहला सार्वजनिक क्षेत्र का इस्पात संयंत्र था।
(4) यह भारत का एकमात्र इस्पात संयंत्र है जो पूरी तरह से इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस पर आधारित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: सार्वजनिक क्षेत्र का इस्पात संयंत्र
A. भिलाई
B. दुर्गापुर
C. राउरकेला
D. बोकारो
सूची II: विदेशी सहयोगी
i. यूनाइटेड किंगडम
ii. पश्चिम जर्मनी
iii. सोवियत संघ (प्रथम चरण)
iv. सोवियत संघ (बाद का चरण)
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. 19वीं शताब्दी के दौरान मुंबई में सूती वस्त्र उद्योग की प्रारंभिक स्थापना और तीव्र विकास का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) काली मिट्टी वाले क्षेत्रों से निकटता, आर्द्र जलवायु और मशीनरी के आयात के लिए बंदरगाह की सुविधाएं।
(2) शहर के तत्काल आसपास के क्षेत्र में कोयले के विशाल भंडार और लौह अयस्क की खदानों की खोज।
(3) उस समय पश्चिमी घाट से सस्ती जलविद्युत की तत्काल उपलब्धता।
(4) ब्रिटिश सरकार द्वारा विशेष रूप से केवल मुंबई स्थित सूती बुनकरों को प्रदान की गई सब्सिडी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. दक्षिण भारतीय और तटीय इस्पात संयंत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विजाग इस्पात संयंत्र को तटीय स्थिति का कोई लाभ प्राप्त नहीं है।
II. सेलम इस्पात संयंत्र मुख्य रूप से ब्राजील से आयातित लौह अयस्क पर निर्भर करता है।
III. भद्रावती इस्पात संयंत्र भद्रा नदी के तट पर स्थित है।
IV. विजाग संयंत्र का निर्माण जापानी सहयोग से किया गया था।
V. सेलम उच्च श्रेणी के स्टेनलेस स्टील के उत्पादन के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल III और V
(2) केवल I, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II और IV

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 15

लौह-इस्पात, वस्त्र एवं चीनी उद्योग

1. निम्नलिखित में से कौन-सा पारंपरिक एकीकृत लौह एवं इस्पात उद्योग के मूलभूत कच्चे माल की विशेषताओं का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
   (1) यह मुख्य रूप से उन भार-वर्धक कच्चे माल पर निर्भर करता है जिन्हें देश भर में लंबी दूरी तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है।
   (2) यह भारी और भार-ह्रास वाले कच्चे माल का उपयोग करता है, जिसके लिए संयंत्रों को कच्चे माल के स्रोतों के निकट स्थापित करने की आवश्यकता होती है।
   (3) यह विशेष रूप से विद्युत शक्ति और लोहे के स्क्रैप पर निर्भर करता है, जिससे कच्चे माल की निकटता और रसद की आवश्यकता कम हो जाती है।
   (4) यह प्रकृति में 'स्वच्छंद' (फुटलूज) है और क्षेत्र में पाए जाने वाले कोयले और लौह अयस्क के भंडार की परवाह किए बिना कहीं भी स्थित हो सकता है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: टिस्को भारत में स्थापित पहला एकीकृत इस्पात संयंत्र था।
   कथन II: इसकी स्थापना सुवर्णरेखा और खरकई नदियों के संगम के निकट होने के कारण जमशेदपुर में की गई थी।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: इस्पात संयंत्र
   A. भिलाई इस्पात संयंत्र
   B. दुर्गापुर इस्पात संयंत्र
   C. राउरकेला इस्पात संयंत्र
   D. बोकारो इस्पात संयंत्र
   सूची II: राज्य
   i. पश्चिम बंगाल
   ii. झारखंड
   iii. छत्तीसगढ़
   iv. ओडिशा
   (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
   (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना में विदेशी सहयोग का प्राथमिक प्रभाव क्या था?
   (1) इससे वैश्विक निजी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए भारतीय इस्पात क्षेत्र का निजीकरण हुआ।
   (2) इसने भारतीय औद्योगिकीकरण के केंद्र को पूरी तरह से दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित कर दिया।
   (3) इसने सभी भारतीय इस्पात उत्पादन इकाइयों में विशेष रूप से इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस तकनीक के उपयोग को अनिवार्य कर दिया।
   (4) इसने सोवियत संघ की तकनीकी और वित्तीय सहायता से निर्मित एक सार्वजनिक क्षेत्र की विशाल इकाई की स्थापना की।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. दुर्गापुर और राउरकेला इस्पात संयंत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. दोनों संयंत्र द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के रूप में स्थापित किए गए थे।
   II. दुर्गापुर की स्थापना ब्रिटिश सहयोग से हुई थी, जबकि राउरकेला की स्थापना जर्मन सहयोग से की गई थी।
   III. दोनों संयंत्र तटीय राज्य आंध्र प्रदेश में स्थित हैं।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल II और III
   (2) केवल I और III
   (3) केवल I और II
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. बोकारो इस्पात संयंत्र स्थापित करने के लिए किस देश ने भारत के साथ सहयोग किया था?
   (1) यूनाइटेड किंगडम
   (2) सोवियत संघ
   (3) पश्चिम जर्मनी
   (4) संयुक्त राज्य अमेरिका
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

के परिणामस्वरूप स्थापित किया गया था और यह राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह रिफाइनरी न केवल पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति करती है बल्कि क्षेत्र में पेट्रोकेमिकल आधारित लघु उद्योगों के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रदान करती है। इसकी उपस्थिति से पूर्वोत्तर भारत की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत हुई है और स्थानीय स्तर पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

57. (3) राष्ट्रीय राजमार्गों का उच्च घनत्व
औद्योगिक पिछड़ेपन को मापने के लिए आम तौर पर प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन, कार्यबल में औद्योगिक श्रमिकों का हिस्सा और पंजीकृत कारखानों की संख्या जैसे संकेतकों का उपयोग किया जाता है। ये आंकड़े सीधे तौर पर किसी क्षेत्र की विनिर्माण क्षमता को दर्शाते हैं। हालांकि राष्ट्रीय राजमार्गों का घनत्व औद्योगिक विकास के लिए एक आवश्यक बुनियादी ढांचा है, लेकिन यह स्वयं पिछड़ेपन का प्रत्यक्ष मापक नहीं है। कई सड़क-समृद्ध क्षेत्रों में भी औद्योगिक गतिविधियों की कमी हो सकती है।

58. (1) I, II, III, IV, और V
भारत में औद्योगिक असमानता के कई कारण हैं, जिनमें औपनिवेशिक काल का बंदरगाह-केंद्रित विकास एक प्रमुख ऐतिहासिक कारक है। खनिजों की उपलब्धता, राज्यों के बीच बुनियादी ढांचे में अंतर और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का असमान प्रवाह इस खाई को और चौड़ा करते हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न राज्यों की अपनी औद्योगिक नीतियां और व्यापार सुगमता की स्थिति भी उद्योगों को आकर्षित करने में भिन्नता पैदा करती है। इन सभी कारकों के प्रभाव से कुछ राज्य औद्योगिक रूप से अग्रणी बन गए हैं।

59. (4) पांडे समिति (1968) - औद्योगिक प्रोत्साहनों के लिए पिछड़े क्षेत्रों की पहचान
भारत में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए 1968 में बी.डी. पांडे की अध्यक्षता में पांडे समिति का गठन किया गया था। इस समिति का मुख्य कार्य उन पिछड़े राज्यों और क्षेत्रों की पहचान करना था जिन्हें औद्योगिक विकास के लिए विशेष सरकारी सहायता और कर प्रोत्साहनों की आवश्यकता थी। समिति की सिफारिशों ने पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना के लिए वित्तीय संस्थानों के माध्यम से रियायती वित्त प्रदान करने की नीति का आधार तैयार किया। यह क्षेत्रीय समानता प्राप्त करने का महत्वपूर्ण प्रयास था।

60. (2) इसने स्थानीय उद्योग के लिए खनिज समृद्ध क्षेत्रों के अवस्थिति लाभ को समाप्त कर दिया
माल भाड़ा समानीकरण नीति का उद्देश्य पूरे भारत में कहीं भी उद्योगों के लिए कच्चे माल की समान कीमत सुनिश्चित करना था। हालांकि इसका लक्ष्य संतुलित क्षेत्रीय विकास था, लेकिन इसने बिहार, पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे खनिज संपन्न राज्यों के स्वाभाविक अवस्थिति लाभ को कम कर दिया। चूंकि कच्चे माल के परिवहन की लागत सब्सिडी के कारण हर जगह समान हो गई, इसलिए उद्योगों ने खदानों के पास रहने के बजाय बाजारों या बंदरगाहों के पास स्थापित होना अधिक पसंद किया।

61. (3) 2014
'मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत सितंबर 2014 में भारत सरकार द्वारा की गई थी। इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना और विदेशी कंपनियों को भारत में उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस पहल ने व्यापार करने की प्रक्रियाओं को सरल बनाने, बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने और नवाचार को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। इसने निवेशकों के मन में विश्वास पैदा करने और भारतीय अर्थव्यवस्था के द्वितीयक क्षेत्र को मजबूती प्रदान करने का लक्ष्य रखा।

62. (1) III, II, IV, I
भारत की औद्योगिक नीतियों और पहलों का एक निश्चित कालक्रम है। विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम 2005 में पारित किया गया था। इसके बाद, सितंबर 2014 में विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' शुरु किया गया। जनवरी 2016 में उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए 'स्टार्टअप इंडिया' की घोषणा की गई। सबसे हालिया बड़ी पहल 'उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन' योजना है, जिसे 2020 में आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को गति देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में लागू किया गया था।

63. (1) भारत को एक विनिर्माण केंद्र के रूप में बदलना और इसके सकल घरेलू उत्पाद हिस्से को बढ़ाना
'मेक इन इंडिया' का मुख्य लक्ष्य भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी को वर्तमान के लगभग 16% से बढ़ाकर 25% तक ले जाना है। इसका उद्देश्य न केवल स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना है बल्कि बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित करना और भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना भी है। यह पहल आयात पर निर्भरता कम करने और भारत को दुनिया की 'फैक्टरी' के रूप में विकसित करने के दीर्घकालिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

64. (2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
'मेक इन इंडिया' पहल के तहत, निवेश आकर्षित करने के लिए कई क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मानदंडों को उदार बनाया गया, न कि प्रतिबंधित। इस कार्यक्रम ने प्रारंभ में ऑटोमोबाइल, रसायन, सूचना प्रौद्योगिकी, औषधीय उत्पाद और विमानन जैसे 25 महत्वपूर्ण फोकस क्षेत्रों की पहचान की थी जहाँ भारत में विश्व स्तरीय विनिर्माण क्षमता विकसित करने की प्रबल संभावना थी। इन क्षेत्रों में विनियामक बाधाओं को कम किया गया और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी गई ताकि वैश्विक निवेशकों को प्रोत्साहित किया जा सके।

65. (2) A-ii, B-iv, C-i, D-ii
भारत के औद्योगिक इतिहास में नीतियों के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। 1948 की नीति ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी। 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव ने उद्योगों को तीन सूचियों

Click Here to Buy book on Amazon

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. संश्लेषित और मानव निर्मित रेशा उद्योग के कच्चे माल के स्रोत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही है?
(1) विस्कोस रेयान - पेट्रोकेमिकल व्युत्पन्न और संश्लेषित बहुलक
(2) नायलॉन - प्राकृतिक लकड़ी की लुगदी और पादप आधारित सेलुलोज
(3) एक्रिलिक - शहतूत के पेड़ों में पाए जाने वाले प्राकृतिक रेशम प्रोटीन
(4) पॉलिएस्टर - कोयला, वायु, जल और पेट्रोलियम उत्पाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. निम्नलिखित राज्यों को उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित करें, जो रेशम उद्योग के प्रमुख केंद्र भी हैं:
I. जम्मू और कश्मीर
II. पश्चिम बंगाल
III. कर्नाटक
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III
(2) I, III, II
(3) II, I, III
(4) III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक पश्चिम बंगाल में जूट वस्त्र उद्योग के भारी संकेंद्रण में योगदान नहीं देता है?
(1) गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा के जूट उत्पादक क्षेत्रों से निकटता
(2) शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु जो नमी के बिना जूट के धागे की कताई के लिए आदर्श है
(3) कच्चे जूट के प्रसंस्करण के लिए हुगली नदी से प्रचुर जल की आपूर्ति
(4) पड़ोसी राज्यों से सस्ते श्रम की उपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: रेशम उत्पादक राज्य
A. कर्नाटक
B. पश्चिम बंगाल
C. जम्मू और कश्मीर
D. असम
सूची II: प्रमुख रेशम/विशेषता
i. समशीतोष्ण जलवायु के कारण 'बाइवोल्टाइन' रेशम
ii. मूंगा रेशम का एकाधिकार
iii. शहतूत रेशम का अग्रणी उत्पादक
iv. पारंपरिक मुर्शिदाबाद रेशम केंद्र
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत में पारंपरिक गन्ना पेटी मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में विस्तृत है?
(1) उपोष्णकटिबंधीय भारत-गंगा का मैदान और उष्णकटिबंधीय प्रायद्वीपीय भारत
(2) पश्चिमी राजस्थान के शुष्क मरुस्थल और गुजरात का शुष्क कच्छ का रण
(3) निचला हिमालय और ठंडी, उच्च ऊंचाई वाली ट्रांस-हिमालयी घाटियां
(4) सुंदरवन के तटीय मैंग्रोव और उच्च लवणता वाले दलदली क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के चीनी उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उत्तर प्रदेश में ऐतिहासिक रूप से महाराष्ट्र की तुलना में पेराई का मौसम अधिक लंबा रहा है।
II. महाराष्ट्र में गन्ने से आम तौर पर उत्तर प्रदेश की तुलना में अधिक सुक्रोज रिकवरी दर प्राप्त होती है।
III. सहकारी चीनी मिल मॉडल महाराष्ट्र में अत्यधिक सफल और प्रचलित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल II
(2) केवल I और III
(3) केवल I
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में चीनी उद्योग को अपनी मौसमी प्रकृति के कारण गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
कारण (R): गन्ना एक शीघ्र खराब होने वाली फसल है जिसकी सुक्रोज की हानि को रोकने के लिए कटाई के तुरंत बाद पेराई की जानी चाहिए, जिससे मिल का संचालन कटाई के महीनों तक ही सीमित रहता है।
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में प्रारंभिक सार्वजनिक क्षेत्र के इस्पात संयंत्रों की तुलना में विज़ाग इस्पात संयंत्र को एक अनूठा स्थानगत लाभ प्राप्त है।
कारण (R): यह तट-आधारित एकीकृत इस्पात संयंत्र है, जो कच्चे माल के आयात और तैयार माल के निर्यात को सुगम बनाता है।
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. दक्षिण भारत के इस्पात संयंत्रों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) स्थानीय कोयले या वनों की कमी के कारण भद्रावती संयंत्र पूरी तरह से ऑस्ट्रेलिया से कोकिंग कोल के आयात पर निर्भर है।
(2) सेलम इस्पात संयंत्र तमिलनाडु राज्य में विशेष इस्पात की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थित है।
(3) भद्रावती इस्पात संयंत्र कर्नाटक राज्य में भद्रा नदी के तट के निकट स्थित है।
(4) सेलम इस्पात संयंत्र विभिन्न प्रकार के उच्च गुणवत्ता वाले स्टेनलेस स्टील के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. मिनी इस्पात संयंत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रुप से इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस तकनीक का उपयोग करते हैं।
II. ये प्राथमिक लौह अयस्क के बजाय स्टील स्क्रैप और स्पंज आयरन पर अधिक निर्भर करते हैं।
III. इन्हें एकीकृत इस्पात संयंत्रों की तुलना में कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
IV. ये निर्धारित विशिष्टताओं के अनुसार माइल्ड और अलॉय स्टील का उत्पादन करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. भारत में सूती वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक संकेंद्रण के संबंध में असंगत (Odd one out) विकल्प का चयन करें।
(1) भिलाई
(2) मुंबई
(3) अहमदाबाद
(4) सूरत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: वस्त्र क्षेत्र की विशेषता
A. हथकरघा
B. पावरलूम
C. मिल क्षेत्र
D. संश्लेषित रेशे (सिंथेटिक फाइबर)
सूची II: विवरण
i. पूंजी-प्रधान और संगठित बड़े पैमाने पर उत्पादन
ii. अत्यधिक विकेंद्रीकृत और पेट्रोकेमिकल्स पर भारी निर्भरता
iii. पारंपरिक, अत्यधिक श्रम-प्रधान, असंगठित बुनाई
iv. विकेंद्रीकृत, मशीनीकृत बुनाई जिसका कुल उत्पादन में दबदबा है
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. कौन-सी अंतर्निहित अवधारणा भारत में स्वतंत्रता के बाद सूती वस्त्र उद्योग के विकेंद्रीकरण की सबसे अच्छी व्याख्या करती है?
(1) कपास पूरी तरह से भार-ह्रास वाला कच्चा माल है जो मिलों को कृषि क्षेत्रों के पास रहने के लिए बाध्य करता है।
(2) विद्युत और परिवहन नेटवर्क के विकास ने मिलों को स्थानीय उपभोक्ता बाजारों के समीप जाने की अनुमति दी।
(3) 1947 की स्वतंत्रता के बाद सरकारी नियमों ने पश्चिमी भारत में सूती मिलों पर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया था।
(4) महाराष्ट्र में कच्चे कपास के पूर्णतः समाप्त होने के कारण औद्योगिक इकाइयों को उत्तर भारत की ओर पलायन करना पड़ा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. भारतीय वस्त्र उद्योग में पावरलूम क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्वतंत्रता के बाद विकेंद्रीकरण के कारण इसमें व्यापक वृद्धि देखी गई है।
II. यह मुख्य रुप से विकेंद्रीकृत और असंगठित क्षेत्र में संचालित होता है।
III. आज भारत में कुल कपड़ा उत्पादन में इसकी प्रमुख हिस्सेदारी है।
IV. यह विद्युत शक्ति का उपयोग करता है, जिससे यह पारंपरिक हथकरघा की तुलना में अधिक कुशल है।
V. इसने संगठित मिल क्षेत्र को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया है, जो अब भारत में मौजूद नहीं है।

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. उद्योगों के संकेंद्रण के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) जूट वस्त्र उद्योग - पश्चिम बंगाल
(2) रेशम उद्योग का उद्भव - राजस्थान
(3) सहकारी चीनी मिलें - महाराष्ट्र
(4) सूती वस्त्र उद्योग का उद्भव - मुंबई और अहमदाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में इन प्रमुख इस्पात संयंत्रों की स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(1) टिस्को जमशेदपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र, विजाग इस्पात संयंत्र
(2) भिलाई इस्पात संयंत्र, टिस्को जमशेदपुर, विजाग इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र
(3) बोकारो इस्पात संयंत्र, टिस्को जमशेदपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, विजाग इस्पात संयंत्र
(4) टिस्को जमशेदपुर, विजाग इस्पात संयंत्र, भिलाई इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में मिनी इस्पात संयंत्रों की विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(1) वे पुरानी ब्लास्ट फर्नेस के बजाय इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस तकनीक का उपयोग करते हैं।
(2) वे मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत हैं और देश के कई क्षेत्रों में बिखरे हुए हैं।
(3) वे मुख्य रूप से प्राथमिक लौह अयस्क के बजाय स्टील स्क्रैप और स्पंज आयरन का उपयोग करते हैं।
(4) उन्हें विशाल भूमि क्षेत्रों की आवश्यकता होती है और वे ब्लास्ट फर्नेस में लौह अयस्क प्रगलन को पूरी तरह से एकीकृत करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: वस्त्र केंद्र
A. मुंबई
B. अहमदाबाद
C. कोयंबटूर
D. कानपुर
सूची II: सामान्य विवरण
i. भारत का मैनचेस्टर
ii. भारत का कॉटनोपोलिस
iii. उत्तर भारत का मैनचेस्टर
iv. दक्षिण भारत का मैनचेस्टर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. भिलाई इस्पात संयंत्र, जो सार्वजनिक क्षेत्र की एक विशाल इकाई है, किस भारतीय राज्य में स्थापित किया गया था?
(1) झारखंड
(2) छत्तीसगढ़
(3) ओडिशा
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. भारत में रेशम उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कर्नाटक शहतूत रेशम का एक प्रमुख उत्पादक है।
II. पश्चिम बंगाल पारंपरिक रूप से अपने रेशम बुनाई केंद्रों के लिए जाना जाता है।
III. जम्मू और कश्मीर रेशम उत्पादन के लिए अनुकूल जलवायु के कारण उच्च गुणवत्ता वाले रेशम का उत्पादन करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) I, II और III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पश्चिम बंगाल में जूट वस्त्र उद्योग के संकेंद्रण के कारण की सही पहचान करता है?
(1) हुगली बेसिन प्रचुर मात्रा में ताजा जल प्रदान करता है जो जूट फाइबर की रेटिंग (retting) के लिए आवश्यक है।
(2) पश्चिम बंगाल में जूट सम्मिश्रण के लिए आवश्यक संश्लेषित बहुलकों का सबसे बड़ा भंडार है।
(3) जूट मिलों को शुष्क हवा की आवश्यकता होती है, जो विशेष रूप से कोलकाता में पाई जाती है।
(4) पश्चिम बंगाल किसी भी अन्य वस्त्र के उत्पादन पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद भारत में सूती वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण विकेंद्रीकरण हुआ है।
कारण (R): रेलवे नेटवर्क के विस्तार, विभिन्न क्षेत्रों में बिजली की उपलब्धता और बाजार-संचालित दृष्टिकोण ने कच्चे कपास उगाने वाले क्षेत्रों पर उद्योग की निर्भरता को कम कर दिया।
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) यह भारी और भार-ह्रास वाले कच्चे माल का उपयोग करता है, जिसके कारण संयंत्रों को कच्चे माल के स्रोतों के समीप स्थापित करना अनिवार्य होता है।
पारंपरिक एकीकृत लौह एवं इस्पात उद्योग एक आधारभूत भारी उद्योग है जो पूर्णतः भार-ह्रास वाले कच्चे माल पर निर्भर है। इसमें लौह अयस्क, कोकिंग कोल और चूना पत्थर जैसे भारी पदार्थों का प्रयोग होता है, जिनका लंबी दूरी तक परिवहन अत्यंत खर्चीला है। अतः परिचालन लागत घटाने और उत्पादन क्षमता बढ़ाने हेतु इन संयंत्रों को प्रायः कच्चे माल के स्रोतों के निकट ही स्थापित किया जाता है।

2. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना 1907 में जमशेदजी टाटा के विजन के तहत उनके पुत्र दोराबजी टाटा ने की थी। यह भारत का प्रथम एकीकृत इस्पात संयंत्र था। झारखंड के जमशेदपुर में नदियों के संगम पर स्थित यह स्थान लौह अयस्क, कोयला और जल की प्रचुरता के साथ रेलवे की सुविधा प्रदान करता है, जिससे इसका रणनीतिक और ऐतिहासिक महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

3. (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख इस्पात संयंत्रों का वितरण खनिज उपलब्धता के आधार पर किया गया है। भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ में स्थित है, जबकि दुर्गापुर संयंत्र पश्चिम बंगाल के औद्योगिक केंद्र में कार्य करता है। इसी प्रकार, राउरकेला संयंत्र ओडिशा की खनिज पट्टी में स्थापित है और बोकारो संयंत्र झारखंड में कोयला क्षेत्रों के निकट स्थित है। ये इकाइयां देश के बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

4. (4) इसने सोवियत संघ की तकनीकी और वित्तीय सहायता से निर्मित एक सार्वजनिक क्षेत्र की विशाल इकाई की स्थापना की।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान औद्योगिक आधार सुदृढ़ करने हेतु भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना की गई थी। इस परियोजना को सोवियत संघ के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में पूर्ण किया गया था। यह सहयोग सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों के विकास हेतु मील का पत्थर सिद्ध हुआ, जिसने इस्पात उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ क्षेत्र में रोजगार और तकनीकी कौशल को प्रोत्साहित किया।

5. (3) केवल I और II
दुर्गापुर और राउरकेला इस्पात संयंत्रों की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण इकाइयों के रूप में हुई थी। दुर्गापुर संयंत्र को यूनाइटेड किंगडम के तकनीकी सहयोग से पश्चिम बंगाल में विकसित किया गया, जबकि राउरकेला संयंत्र को जर्मनी के सहयोग से ओडिशा में स्थापित किया गया। ये दोनों संयंत्र खनिज समृद्ध राज्यों में स्थित हैं और भारत की औद्योगिक आत्मनिर्भरता हेतु अनिवार्य रहे हैं।

6. (2) सोवियत संघ
बोकारो इस्पात संयंत्र भारत का चौथा एकीकृत सार्वजनिक क्षेत्र का इस्पात संयंत्र है, जिसे झारखंड में स्थापित किया गया था। इसके निर्माण हेतु सोवियत संघ ने व्यापक तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान की थी। इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य घरेलू इस्पात मांग की पूर्ति और भारी विनिर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। यह संयंत्र अपनी आधुनिक उत्पादन क्षमता और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के कारण विशेष स्थान रखता है।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र भारत का प्रथम तट-आधारित एकीकृत इस्पात संयंत्र है। इसकी तटीय अवस्थिति इसे अन्य अंतर्देशीय संयंत्रों की तुलना में विशेष लाभ प्रदान करती है। यह कच्चे माल, विशेषकर उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल के आयात और तैयार माल के निर्यात हेतु सीधे समुद्री बंदरगाह सुविधाओं का उपयोग कर सकता है। इससे परिवहन लागत कम होती है और वैश्विक बाजार में इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता काफी बढ़ जाती है।

8. (1) स्थानीय कोयले या वनों की कमी के कारण भद्रावती संयंत्र पूर्णतः ऑस्ट्रेलिया से कोकिंग कोल के आयात पर निर्भर है।
भद्रावती स्थित विश्वेश्वरैया आयरन एंड स्टील प्लांट ऐतिहासिक रूप से स्थानीय वनों से प्राप्त लकड़ी के कोयले का उपयोग करता था, क्योंकि वहां कोयले के निक्षेप उपलब्ध नहीं थे। बाद में इसने भट्टियों के संचालन हेतु पनबिजली और विद्युत ऊर्जा को अपनाया। सेलम संयंत्र तमिलनाडु में स्थित है और उच्च श्रेणी के स्टेनलेस स्टील के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है, जो आधुनिक औद्योगिक और घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

9. (3) I, II, III और IV
मिनी इस्पात संयंत्र ऐसी आधुनिक इकाइयां हैं जो मुख्य रूप से विद्युत आर्क भट्टी तकनीक का उपयोग करती हैं। ये संयंत्र विशाल एकीकृत संयंत्रों के विपरीत रद्दी इस्पात और स्पंज आयरन को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करते हैं। इन्हें खनिज खदानों के समीप होने की आवश्यकता नहीं होती। कम पूंजी निवेश और कम भूमि की आवश्यकता के कारण इनका विकेंद्रीकरण सुलभ है, जिससे विशिष्ट बाजार मांगों की पूर्ति होती है।

Click Here to Buy book on Amazon

I. पहली सफल आधुनिक सूती वस्त्र मिल 1854 में मुंबई में स्थापित की गई थी।
II. कपास उत्पादक क्षेत्रों से निकटता के कारण अहमदाबाद एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा।
III. स्वतंत्रता के बाद, उद्योग पूरी तरह से महाराष्ट्र और गुजरात में ही केंद्रित रहा।
IV. कुल कपड़ा उत्पादन के मामले में पावरलूम क्षेत्र अंततः मिल क्षेत्र से आगे निकल गया।
V. संश्लेषित रेशों के विकास ने पारंपरिक कपास उद्योग के लिए प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. आधुनिक भारतीय कपड़ा उत्पादन में पावरलूम क्षेत्र का प्रभुत्व मुख्य रूप से किस आर्थिक गतिशीलता का परिणाम है?
(1) पूरे देश में सभी निजी कपड़ा मिलों पर प्रतिबंध लगाने वाले सख्त सरकारी एकाधिकार।
(2) विकेंद्रीकरण से लागत लाभ, कम ऊपरी व्यय और असंगठित क्षेत्र में लचीलापन।
(3) बाजार के लिए किसी भी व्यापार योग्य वस्तु का उत्पादन करने में हथकरघा क्षेत्र की पूर्ण अक्षमता।
(4) विदेशी निर्माताओं से आयातित संश्लेषित धागे पर पावरलूम की विशेष निर्भरता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिल मॉडल उल्लेखनीय रूप से सफल रहा है।
कारण (R): महाराष्ट्र के किसान मिलों में हितधारकों के रूप में एकीकृत हैं, जिससे गन्ने की निरंतर आपूर्ति, समय पर कटाई और न्यायसंगत लाभ साझाकरण सुनिश्चित होता है।
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. निम्नलिखित में से कौन-सी संश्लेषित और मानव निर्मित रेशा उद्योग की प्राथमिक विशेषता है?
(1) यह पूरी तरह से कपास और जूट जैसी कृषि नकदी फसलों पर निर्भर करता है।
(2) यह कच्चे माल की मौसमी कटाई से बहुत अधिक विवश है।
(3) यह एक अप्रचलित उद्योग है जिसे प्राकृतिक रेशम द्वारा पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया गया है।
(4) इसका कच्चा माल मुख्य रूप से पेट्रोकेमिकल्स और लकड़ी की लुगदी से प्राप्त होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. राउरकेला इस्पात संयंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ओडिशा राज्य में स्थित है।
II. इसकी स्थापना पश्चिम जर्मनी के तकनीकी सहयोग से हुई थी।
III. यह इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस तकनीक का उपयोग करने वाला एक मिनी इस्पात संयंत्र है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. आधुनिक मिनी इस्पात संयंत्रों में उपयोग की जाने वाली आधारभूत तकनीक का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान करें।
(1) मिनी इस्पात संयंत्र - पारंपरिक ब्लास्ट फर्नेस
(2) मिनी इस्पात संयंत्र - इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस
(3) मिनी इस्पात संयंत्र - ओपन हर्थ फर्नेस
(4) मिनी इस्पात संयंत्र - बेसेमर कन्वर्टर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: पहल/क्षेत्र
A. टेक्सटाइल पार्क
B. शुगर क्लस्टर
C. पावरलूम क्षेत्र
D. जूट उद्योग

सूची II: संबंधित उद्देश्य/विशेषता
i. वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए एकीकृत बुनियादी ढांचा
ii. बेहतर रिकवरी और उप-उत्पाद उपयोग के लिए संसाधनों का एकत्रीकरण
iii. विकेंद्रीकृत कपड़ा उत्पादन में प्रभावी
iv. हुगली नदी के तट पर केंद्रित

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. चीनी उद्योग की मौसमी प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चीनी मिलें बिना किसी बाधा के पूरे वर्ष अपनी पूरी

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. बोकारो इस्पात संयंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: इसकी स्थापना यूनाइटेड किंगडम के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से की गई थी।

कथन II: इसकी स्थापना मुख्य रूप से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक तटीय इस्पात संयंत्र के रूप में की गई थी।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. चीनी उद्योग के वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. उत्तर प्रदेश पारंपरिक उत्तरी गन्ना पेटी में एक प्रमुख राज्य है।
II. अत्यधिक सफल सहकारी मॉडल के कारण महाराष्ट्र दक्षिणी गन्ना पेटी का नेतृत्व करता है।
III. चीनी उद्योग गन्ने की मौसमी कटाई से पूरी तरह स्वतंत्र है।
IV. महाराष्ट्र में उगाए जाने वाले गन्ने में आमतौर पर उत्तर प्रदेश की तुलना में कम सुक्रोज होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. पारंपरिक एकीकृत लौह एवं इस्पात संयंत्रों के लिए आवश्यक इनपुट और कच्चे माल के संबंध में असंगत विकल्प चुनें।

(1) कोकिंग कोल
(2) गन्ने की खोई
(3) चूना पत्थर
(4) मैंगनीज अयस्क
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची I: उद्योग

A. चीनी उद्योग
B. जूट उद्योग
C. मिनी इस्पात संयंत्र
D. सूती वस्त्र

सूची II: प्रमुख चुनौती/विशेषता

i. विद्युत शक्ति और लोहे के स्क्रैप पर भारी निर्भरता
ii. संश्लेषित पैकेजिंग सामग्री से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करता है
iii. कच्चे माल के स्रोतों से बाजार क्षेत्रों की ओर विकेंद्रीकृत बदलाव
iv. परिचालन की अत्यधिक मौसमी प्रकृति और शीघ्र खराब होने वाला कच्चा माल

(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. विजाग इस्पात संयंत्र के तटीय स्थिति के लाभ का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?

(1) यह इस्पात के निर्यात और विदेशों से उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल के आयात की लागत को कम करता है।
(2) यह संयंत्र को आधुनिक विलवणीकरण के बिना सीधे ब्लास्ट फर्नेस में समुद्री जल का उपयोग करने की अनुमति देता है।
(3) इसे तटीय हवाओं से लाभ मिलता है जो इस क्षेत्र में इलेक्ट्रिक आर्क भट्टियों को प्राकृतिक रूप से शक्ति प्रदान करती हैं।
(4) यह उन सख्त पर्यावरणीय नियमों से बचता है जो आमतौर पर अंतर्देशीय औद्योगिक संयंत्रों पर लगाए जाते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

41. निम्नलिखित एकीकृत इस्पात संयंत्रों को भारत में उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित करें:

I. बोकारो इस्पात संयंत्र
II. भिलाई इस्पात संयंत्र
III. सेलम इस्पात संयंत्र

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) I, III, II
(4) III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. भद्रावती इस्पात संयंत्र के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) यह स्थानीय भद्रावती क्षेत्र में स्थित उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल भंडार पर निर्भर है।
(2) यह कर्नाटक राज्य में बाबा बुदन गिरी लौह अयस्क पहाड़ियों के पास स्थित है।
(3) इसे मूल रूप से मैसूर आयरन एंड स्टील वर्क्स सुविधा के रूप में स्थापित किया गया था।
(4) ऐतिहासिक रूप से, इसने अपनी भट्टी में लौह अयस्क गलाने के लिए स्थानीय वनों से प्राप्त लकड़ी के कोयले का उपयोग किया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सूती वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

58. निम्नलिखित में से किस जलाशय ने ऐतिहासिक रूप से जमशेदपुर में टिस्को संयंत्र के लिए प्राथमिक जल स्रोत के रूप में कार्य नहीं किया?
(1) हुगली नदी
(2) सुवर्णरेखा नदी
(3) खरकई नदी
(4) डिमना झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. सेलम इस्पात संयंत्र, जो दक्षिण भारत की एक प्रमुख सुविधा है, मुख्य रूप से किसके उत्पादन में विशेषज्ञता रखता है?
(1) पुलों के लिए भारी संरचनात्मक इस्पात
(2) निर्माण सुदृढीकरण के लिए माइल्ड स्टील
(3) निर्यात के लिए कच्चा लोहा (पिग आयरन)
(4) उच्च गुणवत्ता वाले स्टेनलेस स्टील और विशेष इस्पात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. एकीकृत इस्पात संयंत्रों की तुलना में मिनी इस्पात संयंत्र भौगोलिक रूप से अधिक विकेंद्रीकृत होने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) वे अपनी सभी उत्पादन आवश्यकताओं के लिए विदेशी बाजारों से पूरी तरह से आयातित कच्चे माल पर निर्भर हैं।
(2) वे बिजली और लोहे के स्क्रैप का उपयोग करते हैं, जिससे कोयला और लौह अयस्क की खानों के पास स्थित होने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
(3) उन्हें भारी मात्रा में भूमि की आवश्यकता होती है जो केवल प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के बाहर ही उपलब्ध होती है।
(4) क्षेत्रीय रोजगार को बढ़ावा देने के लिए उन्हें प्रत्येक जिले में स्थापित करने का सरकारी आदेश है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. सार्वजनिक क्षेत्र की विशाल इकाई भिलाई इस्पात संयंत्र के लिए लौह अयस्क मुख्य रूप से कहाँ की स्थानीय खदानों से प्राप्त किया जाता है?
(1) कुद्रेमुख
(2) रत्नागिरी
(3) दल्ली-राजहरा
(4) मयूरभंज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. संश्लेषित रेशा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संश्लेषित और मानव निर्मित रेशा उद्योग कृषि जलवायु परिस्थितियों पर अत्यधिक निर्भर है।
कथन II: संश्लेषित रेशा उद्योग का वितरण कृषि क्षेत्रों के बजाय काफी हद तक पेट्रोकेमिकल व्युत्पन्नों की उपलब्धता से जुड़ा हुआ है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. जूट वस्त्र उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में संश्लेषित पैकेजिंग सामग्री से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
(2) यह रेटिंग प्रक्रिया के लिए हुगली बेसिन में जल की गंभीर कमी से ग्रस्त है।
(3) इसने अपना पूरा बाजार खो दिया है क्योंकि जूट खाद्य-ग्रेड पैकेजिंग के लिए अनुपयुक्त है।
(4) यह नियमों द्वारा केवल रस्सियों का उत्पादन करने के लिए प्रतिबंधित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. दक्षिण भारत में भद्रावती इस्पात संयंत्र किस नदी के तट पर स्थित है?
(1) कावेरी
(2) भद्रा
(3) कृष्णा
(4) गोदावरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. भारत के पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों, विशेष रूप से महाराष्ट्र की ओर चीनी उद्योग के झुकाव का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) उत्तर की ठंडी जलवायु सर्दियों के दौरान गन्ने की फसल को पूरी तरह से नष्ट कर देती है।
(2) प्रायद्वीपीय गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है और मिलों के लिए पेराई का मौसम लंबा होता है।
(3) उत्तरी राज्यों ने औद्योगिक उपयोग के लिए गन्ने की खेती पर प्रतिबंध लगा दिया है।
(4) दक्षिणी राज्य विशेष रूप से सहकारी चीनी मिलों को निःशुल्क बिजली प्रदान करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. पावरलूम क्षेत्र के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह पारंपरिक हथकरघा क्षेत्र की तुलना में प्रतिवर्ष कम कुल कपड़े का उत्पादन करता है।
(2) यह मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत क्षेत्र में संचालित होता है।
(3) यह बुनाई मशीनरी को संचालित करने के लिए विद्युत शक्ति का उपयोग करता है।
(4) इसने स्वतंत्रता के बाद कपड़ा उत्पादन के विकेंद्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन-सी किसी क्षेत्र में सूती वस्त्र मिलों के पारंपरिक संकेंद्रण के लिए आवश्यक भौगोलिक या जलवायु संबंधी स्थिति नहीं है?
(1) कच्चे कपास के लिए काली मिट्टी वाले क्षेत्रों से निकटता
(2) आर्द्र जलवायु जो बिना टूटे धागे की कताई की सुविधा

Click Here to Buy book on Amazon

क्षमता से संचालित होती हैं।
कथन II: यह उद्योग मौसमी है क्योंकि सुक्रोज की मात्रा में गिरावट को रोकने के लिए कटाई के तुरंत बाद गन्ने की पेराई की जानी चाहिए।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. भारत के लौह एवं इस्पात संयंत्रों के ऐतिहासिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. टिस्को निजी क्षेत्र का पहला एकीकृत संयंत्र था।
II. भिलाई को छत्तीसगढ़ में सार्वजनिक क्षेत्र की एक विशाल इकाई के रूप में स्थापित किया गया था।
III. बोकारो की स्थापना भारत-सोवियत सहयोग से हुई थी।
IV. तटीय चक्रवातों से बचने के लिए विजाग इस्पात संयंत्र का निर्माण अंतर्देशीय क्षेत्र में किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल II, III और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, जो सार्वजनिक क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है, किस राज्य में स्थित है?
(1) झारखंड
(2) ओडिशा
(3) बिहार
(4) पश्चिम बंगाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: क्षेत्र/राज्य
A. जम्मू और कश्मीर
B. पश्चिम बंगाल
C. महाराष्ट्र
D. छत्तीसगढ़
सूची II: प्रमुख उद्योग
i. सहकारी चीनी मिलें
ii. भिलाई इस्पात संयंत्र
iii. जूट वस्त्र संकेंद्रण
iv. रेशम उद्योग
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक संकेंद्रण का मुख्य कारण क्या है?
(1) तट पर इसकी स्थिति ने स्थानीय प्रसंस्करण के लिए ब्रिटिश कपास के सीधे आयात की अनुमति दी।
(2) एक प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र में इसकी स्थिति ने कच्चे माल तक आसान पहुंच प्रदान की।
(3) यह भारत का एकमात्र शहर था जहाँ कपड़ा मशीनरी के लिए इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस की सुविधा उपलब्ध थी।
(4) ब्रिटिश सरकार ने आदेश दिया था कि सभी सूती मिलों को मुंबई शहर से बाहर स्थानांतरित कर दिया जाए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. प्रमुख भारतीय उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जूट उद्योग पश्चिम बंगाल में भारी रूप से केंद्रित है।
II. रेशम उद्योग के कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और जम्मू-कश्मीर में महत्वपूर्ण केंद्र हैं।
III. चीनी उद्योग एक ऐसे कच्चे माल पर निर्भर करता है जिसका भार प्रसंस्करण के दौरान घट जाता है।
IV. विकेंद्रीकृत पावरलूम क्षेत्र कपड़ा उत्पादन पर हावी है।
V. सेलम इस्पात संयंत्र दक्षिण भारत में स्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित में से कौन-सा इन राज्यों के उत्तर भारत से प्रायद्वीपीय भारत तक चीनी उद्योग में उनके पारंपरिक प्रभुत्व के आधार पर सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु
(2) तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश
(3) महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु
(4) उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में चीनी उद्योग के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह एक भार-ह्रास वाला उद्योग है, जो गन्ने के खेतों के पास मिलों की स्थापना को निर्धारित करता है।
(2) उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र भारत के दो प्रमुख चीनी उत्पादक राज्य हैं।
(3) कम रुचि के कारण महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिल मॉडल पूरी तरह से विफल हो गया है।
(4) उद्योग की मौसमी प्रकृति मिलों के लिए एक प्रमुख तार्किक और वित्तीय चुनौती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

77. भारत का पहला एकीकृत इस्पात संयंत्र, टिस्को, जमशेदपुर में स्थापित किया गया था। इस स्थान का मूल नाम क्या था?
(1) कालीमाटी
(2) सिज़ुआ
(3) साकची
(4) घाटशिला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राउरकेला इस्पात संयंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का पहला एकीकृत इस्पात संयंत्र था जिसे जर्मन सहयोग से स्थापित किया गया था।
कथन II: कच्चे माल की परिवहन लागत को कम करने के लिए इसे रणनीतिक रूप से ओडिशा के लौह अयस्क समृद्ध क्षेत्र में स्थित किया गया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. मिनी इस्पात संयंत्रों में इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस तकनीक का अनुप्रयोग निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट लाभ प्रदान करता है?
(1) यह पुनर्चक्रित स्टील स्क्रैप का उपयोग करता है, जिससे लौह अयस्क खनन और बड़ी ब्लास्ट फर्नेस की आवश्यकता कम हो जाती है।
(2) यह प्रक्रिया में किसी भी कोयले का उपयोग किए बिना बॉक्साइट को सीधे शुद्ध लोहे में गलाने की अनुमति देता है।
(3) यह इस्पात निर्माण उद्योग में किसी भी विद्युत शक्ति की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर देता है।
(4) यह गन्ने की खोई और कृषि अपशिष्ट उत्पादों से स्टेनलेस स्टील के उत्पादन को सक्षम बनाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. सरकारी पहलों द्वारा प्रोत्साहित "शुगर क्लस्टर" का सबसे उपयुक्त विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) भारतीय बाजार का लाभ उठाने के इच्छुक विदेशी चीनी आयातकों का एक भौगोलिक संकेंद्रण।
(2) एक एकीकृत क्षेत्र जहाँ चीनी मिलें और डिस्टलरी उप-उत्पाद के अधिकतम उपयोग के लिए संचालित होती हैं।
(3) केंद्र सरकार की एक संस्था जो वैश्विक चीनी की कीमतें निर्धारित करती है और निर्यात लाइसेंसों को नियंत्रित करती है।
(4) एक कृषि क्षेत्र जहाँ नियमों द्वारा कोई भी कारखाना स्थापित करने की अनुमति नहीं है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

अनिवार्य होता है। इस कारण मिलें वर्ष के केवल कुछ महीनों तक ही संचालित रह पाती हैं।

21. (3) इनका स्वामित्व स्थानीय गन्ना किसानों के पास है जो सामूहिक शेयरधारक और आपूर्तिकर्ता के रुप में कार्य करते हैं।
महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिलों का मॉडल एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक संरचना है जहाँ स्थानीय किसान ही मिलों के स्वामी और शेयरधारक होते हैं। किसान न केवल मिल को गन्ने की आपूर्ति करते हैं, बल्कि वे लाभ में भी सीधे तौर पर भागीदार होते हैं। यह लोकतांत्रिक प्रबंधन प्रणाली गन्ने की समय पर कटाई और उचित मूल्य सुनिश्चित करती है। इस मॉडल ने ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

22. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित टेक्सटाइल पार्क और शुगर क्लस्टर जैसी पहलें विशिष्ट औद्योगिक समूहों को आधुनिक बुनियादी ढांचा प्रदान करने हेतु बनाई गई हैं। इन पार्कों का उद्देश्य उन्नत तकनीक और बेहतर रसद सहायता के माध्यम से उत्पादन लागत को कम करना है। इस सुदृढ़ीकरण से न केवल घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा मिलता है, बल्कि वैश्विक बाजारों में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता और निर्यात के अवसर भी बढ़ते हैं।

23. (4) केवल I, II और III
लौह एवं इस्पात उद्योग की प्रक्रिया में कोकिंग कोल का उपयोग भट्टी में ईंधन के रूप में किया जाता है। चूना पत्थर एक गालक के रुप में कार्य करता है जो पिघले हुए लोहे से अशुद्धियों को दूर करता है। स्टील की मजबूती बढ़ाने हेतु इसमें मैंगनीज मिलाया जाता है। लौह अयस्क, चूना पत्थर, कोयला और मैंगनीज इस उद्योग के मूलभूत घटक हैं। बॉक्साइट का उपयोग एल्यूमीनियम के उत्पादन हेतु प्राथमिक अयस्क के रुप में होता है।

24. (1) यह भारत का पहला एकीकृत इस्पात संयंत्र था।
जमशेदपुर में स्थापित टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) भारतीय औद्योगिक इतिहास में मील का पत्थर है क्योंकि यह देश का प्रथम एकीकृत लौह एवं इस्पात संयंत्र था। 1907 में स्थापित यह निजी इकाई स्वतंत्रता से पूर्व भारत की औद्योगिक आकांक्षाओं का प्रतीक बनी। सुवर्णरेखा नदी के निकट इसकी स्थिति ने इसे कच्चे माल और जल संसाधनों तक सुलभ पहुंच प्रदान की। इसने भविष्य के भारी उद्योगों हेतु एक सुदृढ़ आधार तैयार किया।

25. (3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख इस्पात संयंत्रों का विकास विभिन्न देशों के तकनीकी सहयोग से हुआ है। भिलाई इस्पात संयंत्र सोवियत संघ की सहायता से स्थापित हुआ, जबकि दुर्गापुर संयंत्र हेतु यूनाइटेड किंगडम ने सहयोग दिया। राउरकेला संयंत्र का निर्माण जर्मनी के मार्गदर्शन में किया गया और बोकारो संयंत्र सोवियत संघ के साथ द्वितीय चरण के सहयोग का परिणाम था। इन साझीदारियों ने भारत को आधुनिक इस्पात तकनीक प्राप्त करने में सहायता की।

26. (1) काली मिट्टी वाले क्षेत्रों से निकटता, आर्द्र जलवायु और मशीनरी के आयात के लिए बंदरगाह की सुविधाएं।
19वीं शताब्दी में मुंबई में सूती वस्त्र उद्योग के तीव्र विकास के पीछे कई अनुकूल भौगोलिक कारक थे। यह शहर महाराष्ट्र और गुजरात के विशाल काली मिट्टी वाले कपास क्षेत्रों के समीप था। मुंबई की आर्द्र तटीय जलवायु धागे की कताई हेतु आदर्श थी जिससे धागा बार-बार नहीं टूटता था। इसके अतिरिक्त, प्रमुख बंदरगाह होने के कारण यहाँ से मशीनरी का आयात और तैयार उत्पादों का वैश्विक निर्यात अत्यंत सुलभ था।

27. (4) केवल I, II और IV
विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र को उसकी तट-आधारित स्थिति के कारण कच्चे माल के आयात और निर्यात में अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है। सेलम इस्पात संयंत्र स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करता है और विशिष्ट स्टेनलेस स्टील हेतु प्रसिद्ध है। भद्रावती संयंत्र कर्नाटक की भद्रा नदी के तट पर स्थित है। विजाग संयंत्र का निर्माण सोवियत सहयोग से हुआ था। सेलम संयंत्र ब्राजील से लौह अयस्क के आयात पर निर्भर नहीं है।

NODIA

28. (2) रेशम उद्योग का उद्भव - राजस्थान
जूट वस्त्र उद्योग मुख्य रुप से पश्चिम बंगाल में केंद्रित है, जहाँ हुगली नदी के किनारे अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। सहकारी चीनी मिलें महाराष्ट्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की पहचान हैं। सूती वस्त्र उद्योग ऐतिहासिक रूप से मुंबई और अहमदाबाद में विकसित हुआ है। रेशम उद्योग का प्रमुख संकेंद्रण कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में है, न कि राजस्थान में, क्योंकि वहां की जलवायु रेशम कीट पालन हेतु अनुकूल नहीं है।

29. (1) टिस्को जमशेदपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र, विजाग इस्पात संयंत्र
भारत में लौह एवं इस्पात संयंत्रों की स्थापना का क्रम औद्योगिक विकास के चरणों को दर्शाता है। टिस्को 1907 में स्थापित होने वाला प्राचीनतम एकीकृत संयंत्र है। इसके पश्चात, स्वतंत्रता के बाद द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना हुई। बोकारो संयंत्र का निर्माण 1960 के दशक के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुआ और विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र 1980 के दशक में स्थापित होने वाला एक आधुनिक तट-आधारित संयंत्र है।

30. (4) उन्हें विशाल भूमि क्षेत्रों की आवश्यकता होती है और वे ब्लास्ट फर्नेस में लौह अयस्क प्रगलन को पूरी तरह से एकीकृत करते हैं।
मिनी इस्पात संयंत्र अपनी विकेंद्रीकृत प्रकृति हेतु जाने जाते हैं, जो पारंपरिक संयंत्रों के विपरीत विद्युत आर्क भट्टी तकनीक पर आधारित होते हैं। इन्हें स्थापित करने हेतु बहुत बड़े भूमि क्षेत्र की आवश्यकता नहीं होती और ये मुख्य रूप से रद्दी इस्पात और स्पंज आयरन का उपयोग करते हैं। ये इकाइयां ब्लास्ट

10. (1) भिलाई
मुंबई, अहमदाबाद और सूरत भारत के पश्चिमी भाग के प्रमुख ऐतिहासिक सूती वस्त्र केंद्र हैं, जहाँ काली मिट्टी और आर्द्र जलवायु कपास प्रसंस्करण हेतु अनुकूल है। इसके विपरीत, भिलाई छत्तीसगढ़ में स्थित एक प्रमुख औद्योगिक शहर है जो अपने विशाल एकीकृत लौह एवं इस्पात संयंत्र हेतु प्रसिद्ध है। लौह अयस्क और कोयले के भंडारों के निकट स्थित होने के कारण भिलाई का महत्व धातु विज्ञान क्षेत्र में अधिक है।

11. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
भारतीय वस्त्र उद्योग विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित है। हथकरघा पारंपरिक और श्रम-प्रधान बुनाई का प्रतिनिधित्व करता है। बिजलीचालित करघा क्षेत्र विकेंद्रीकृत है, जिसका कुल कपड़ा उत्पादन में सर्वाधिक योगदान है। मिल क्षेत्र संगठित और पूंजी-प्रधान होता है जहाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। वहीं, संश्लेषित रेशा उद्योग पूर्णतः पेट्रोकेमिकल्स पर निर्भर है, जो आधुनिक उपभोग की मांग के अनुरूप विभिन्न उत्पादों का निर्माण करता है।

12. (2) विद्युत और परिवहन नेटवर्क के विकास ने मिलों को स्थानीय उपभोक्ता बाजारों के समीप जाने की अनुमति दी।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सूती वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण विकेंद्रीकरण हुआ है, जिसका मुख्य कारण विद्युत शक्ति और रेलवे ढांचे का विस्तार है। कपास एक शुद्ध कच्चा माल है जिसका वजन प्रसंस्करण के दौरान कम नहीं होता, अतः मिलों को केवल उत्पादन क्षेत्रों तक सीमित रहना आवश्यक नहीं है। इसने उद्योगों को उन क्षेत्रों में स्थापित होने हेतु प्रेरित किया जहाँ बाजार निकट थे और सस्ती बिजली उपलब्ध थी।

13. (3) केवल I, II, III और IV
बिजलीचालित करघा क्षेत्र भारत के वस्त्र उत्पादन में प्रभावशाली भूमिका निभाता है, जो मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत और लघु इकाइयों में संचालित होता है। यह विद्युत ऊर्जा का उपयोग करता है, जिससे इसकी दक्षता पारंपरिक हथकरघा से काफी अधिक है। यद्यपि इसने संगठित मिल क्षेत्र के प्रभुत्व को कम किया है, किंतु मिल क्षेत्र अभी भी उच्च गुणवत्ता वाले कताई कार्यों हेतु अस्तित्व में है। वर्तमान में अधिकांश उत्पादन इसी क्षेत्र से आता है।

14. (4) पॉलिएस्टर - कोयला, वायु, जल और पेट्रोलियम उत्पाद
पॉलिएस्टर एक पूर्णतः संश्लेषित रेशा है जिसे पेट्रोलियम उत्पादों, कोयले और जल से प्राप्त रसायनों द्वारा निर्मित किया जाता है। इसके विपरीत, विस्कोस रेयान जैसे रेशे प्राकृतिक लकड़ी की लुगदी और सेलुलोज से बनते हैं, जिन्हें पुनर्निर्मित रेशा कहा जाता है। नायलॉन और एक्रिलिक भी रासायनिक प्रक्रियाओं पर आधारित हैं। संश्लेषित रेशा उद्योग कृषि पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह पेट्रोकेमिकल क्षेत्र से जुड़कर आधुनिक औद्योगिक आधार प्रदान करता है।

15. (1) I, II, III
भारत में रेशम उद्योग के प्रमुख केंद्रों को उत्तर से दक्षिण व्यवस्थित करने पर जम्मू और कश्मीर सर्वप्रथम आता है, जहाँ उच्च गुणवत्ता वाले रेशम का उत्पादन होता है। इसके पश्चात पश्चिम बंगाल स्थित है, जो अपने पारंपरिक मुर्शिदाबाद रेशम हेतु विख्यात है। सबसे दक्षिण में कर्नाटक आता है, जो वर्तमान में शहतूत रेशम का भारत में सबसे बड़ा उत्पादक है। यह क्रम देश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों की विविधता को दर्शाता है।

16. (2) शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु जो नमी के बिना जूट के धागे की कताई के लिए आदर्श है
पश्चिम बंगाल में जूट उद्योग का संकेंद्रण हुगली नदी की निकटता के कारण है, जो रेशों की सफाई हेतु प्रचुर जल प्रदान करती है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा के उपजाऊ मैदान जूट की खेती हेतु आवश्यक उच्च आर्द्रता और भारी वर्षा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, परिवहन के सस्ते साधन और सस्ता श्रम इस उद्योग की सफलता के मुख्य कारक हैं। शुष्क जलवायु जूट हेतु अनुपयुक्त है क्योंकि इसके प्रसंस्करण में नमी अनिवार्य है।

17. (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
कर्नाटक भारत में शहतूत रेशम के अग्रणी उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति बनाए हुए है। पश्चिम बंगाल का मुर्शिदाबाद जिला अपने पारंपरिक रेशम उत्पादन हेतु ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है। जम्मू और कश्मीर अपनी विशिष्ट जलवायु के कारण उच्च गुणवत्ता वाले रेशम का उत्पादन करता है, जबकि असम मूंगा रेशम के उत्पादन में विश्व स्तर पर एकाधिकार रखता है। यह वितरण राज्यों की विशिष्ट भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों को स्पष्ट करता है।

18. (1) उपोष्णकटिबंधीय भारत-गंगा का मैदान और उष्णकटिबंधीय प्रायद्वीपीय भारत
भारत में चीनी उद्योग दो मुख्य कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विस्तृत है। उत्तरी पेटी में उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्य सम्मिलित हैं, जो भारत-गंगा के उपोष्णकटिबंधीय मैदानों का भाग हैं। दूसरी ओर, दक्षिणी पेटी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे राज्य आते हैं, जहाँ की उष्णकटिबंधीय जलवायु गन्ने की उच्च पैदावार और अधिक सुक्रोज मात्रा हेतु अनुकूल है। ये क्षेत्र सामूहिक रूप से देश की अधिकांश चीनी मिलों का केंद्र हैं।

19. (3) केवल I
महाराष्ट्र में गन्ने की पेराई का समय उत्तर प्रदेश की तुलना में लंबा होता है क्योंकि वहाँ की उष्णकटिबंधीय जलवायु फसल की कटाई हेतु अधिक समय प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, महाराष्ट्र के गन्ने में सुक्रोज की मात्रा भी उत्तर प्रदेश की तुलना में बेहतर होती है। महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिलों का मॉडल अत्यंत सफल है, जहाँ किसान स्वयं प्रबंधन में भागीदार होते हैं। उत्तर प्रदेश विशाल उत्पादक होने के बावजूद इन कारकों में पिछड़ता रहा है।

20. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
चीनी उद्योग की मुख्य चुनौती इसकी मौसमी प्रकृति है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से गन्ने की फसल की कटाई पर निर्भर है। गन्ना एक शीघ्र खराब होने वाली फसल है जिसमें कटाई के पश्चात सुक्रोज की मात्रा तेजी से घटने लगती है। अतः गन्ने को खेत से काटने के तुरंत बाद मिलों तक पहुँचाना और पेराई करना

Click Here to Buy book on Amazon

प्रदान करती है
(3) मशीनरी को ठंडा करने के लिए उच्च ऊंचाई वाला पहाड़ी क्षेत्र
(4) आयात और निर्यात के लिए बंदरगाह सुविधाओं तक पहुंच
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. "भार-ह्रास वाला उद्योग" की अवधारणा निम्नलिखित में से किस उद्योग पर सबसे अच्छी तरह से लागू होती है, जो इसकी विनिर्माण इकाइयों को कच्चे माल के स्रोत के पास स्थित होने के लिए बाध्य करती है?
(1) संश्लेषित रेशा उद्योग
(2) रेडीमेड गारमेंट उद्योग
(3) इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग
(4) चीनी उद्योग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य पारंपरिक रूप से भारत में शहतूत रेशम का अग्रणी उत्पादक है?
(1) पंजाब
(2) राजस्थान
(3) कर्नाटक
(4) गुजरात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. महाराष्ट्र चीनी मॉडल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: महाराष्ट्र में चीनी उद्योग पर निजी बहुराष्ट्रीय निगमों का दबदबा है।
कथन II: सहकारी चीनी मिलें महाराष्ट्र में चीनी उद्योग की रीढ़ हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. औद्योगिक क्षेत्रों में सरकारी पहलों के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) टेक्सटाइल पार्क - एक एकल सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई के तहत केंद्रीकृत एकाधिकार
(2) सहकारी चीनी मिलें - विशेष रूप से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश द्वारा वित्त पोषित
(3) पावरलूम क्षेत्र - विनियमित और केवल तटीय शहरों तक सीमित
(4) शुगर क्लस्टर - बुनियादी ढांचे, उप-उत्पाद उपयोग और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार के लिए डिज़ाइन किया गया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. अपनी मौलिक परिचालन तकनीक के आधार पर निम्नलिखित इस्पात संयंत्रों में से असंगत विकल्प का चयन करें।
(1) मिनी इस्पात संयंत्र
(2) भिलाई इस्पात संयंत्र
(3) बोकारो इस्पात संयंत्र
(4) दुर्गापुर इस्पात संयंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिलों की सफलता का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(1) राज्य सरकार इन मिलों में उत्पादित सभी चीनी पर 100% सब्सिडी प्रदान करती है।
(2) महाराष्ट्र इन सहकारी समितियों में प्रसंस्करण के लिए सस्ती कच्ची चीनी आयात करता है।
(3) किसानों की सीधी हिस्सेदारी है, जो गन्ने की सुनिश्चित आपूर्ति और आपसी लाभ साझा करना सुनिश्चित करती है।
(4) सहकारी समितियाँ केवल इलेक्ट्रिक आर्क भट्टियों का उपयोग करती हैं जो लागत को कम करती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. भारत में पहली सफल आधुनिक मशीनीकृत सूती वस्त्र मिल 1854 में किस शहर में स्थापित की गई थी?
(1) मुंबई
(2) कोलकाता
(3) अहमदाबाद
(4) सूरत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. 1947 में भारत के विभाजन का पश्चिम बंगाल के जूट वस्त्र उद्योग पर क्या मुख्य प्रभाव पड़ा?
(1) मिलों ने संश्लेषित और प्लास्टिक पैकेजिंग सामग्रियों पर वैश्विक एकाधिकार प्राप्त कर लिया।
(2) सभी मौजूदा जूट मिलों को पश्चिम बंगाल से पंजाब के औद्योगिक क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया गया।
(3) उस समय पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा जूट की खेती पर कड़ाई से प्रतिबंध लगा दिया गया था।
(4) मिलों ने अपना कच्चा माल आधार खो दिया क्योंकि प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में चले गए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. प्राकृतिक और संश्लेषित कपड़ों के बीच अंतर के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) कपास और जूट प्राकृतिक रेशे हैं जो कृषि फसलों से प्राप्त होते हैं।
(2) संश्लेषित रेशा उद्योग अत्यधिक केंद्रीकृत है और इसे कोयला खदानों के पास स्थित होना चाहिए।
(3) रेशम एक प्राकृतिक रेशा है जो रेशम उत्पादन और रेशम के कीड़ों के पालन से प्राप्त होता है।
(4) नायलॉन और पॉलिएस्टर मानव निर्मित रेशे हैं जो पेट्रोकेमिकल्स और पेट्रोलियम उत्पादों से प्राप्त होते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

फर्नेस की जटिल प्रक्रिया का प्रयोग नहीं करतीं। कम निवेश के कारण ये संयंत्र बाजार के निकट सुलभता से विकसित हो सकते हैं।

31. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
भारत के विभिन्न शहरों को उनके ऐतिहासिक सूती वस्त्र उत्पादन के महत्व के आधार पर उपनाम दिए गए हैं। मुंबई को विशाल कपड़ा उद्योग के कारण 'भारत का कॉटनोपोलिस' कहा जाता है। अहमदाबाद को उत्कृष्ट विनिर्माण हेतु 'भारत का मैनचेस्टर' माना जाता है। दक्षिण भारत में कोयंबटूर को 'दक्षिण भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है, जबकि उत्तर प्रदेश के कानपुर को 'उत्तर भारत का मैनचेस्टर' के रूप में पहचान मिली है।

32. (2) छत्तीसगढ़
भिलाई इस्पात संयंत्र भारत की विशाल सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई है जो छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले में स्थित है। सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित यह संयंत्र देश के औद्योगिक ढांचे को सुदृढ़ करने हेतु द्वितीय पंचवर्षीय योजना का भाग था। इसकी स्थिति इसे स्थानीय लौह अयस्क खानों और जल संसाधनों के निकट होने का लाभ प्रदान करती है। यह संयंत्र मुख्य रूप से रेलवे पटरियों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है।

33. (2) I, II, III
भारत में रेशम उद्योग एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित उद्योग है जिसका वितरण विस्तृत है। कर्नाटक शहतूत रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जहाँ आधुनिक तकनीकें अपनाई गई हैं। पश्चिम बंगाल ऐतिहासिक रूप से मुर्शिदाबाद जैसे केंद्रों के माध्यम से रेशम उत्पादन में अपनी पहचान रखता है। जम्मू और कश्मीर की जलवायु उच्च गुणवत्ता वाले रेशम उत्पादन हेतु अनुकूल है। ये राज्य सामूहिक रूप से भारत को वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान दिलाते हैं।

34. (1) हुगली बेसिन प्रचुर मात्रा में ताजा जल प्रदान करता है जो जूट फाइबर की रेटिंग (retting) के लिए आवश्यक है।
पश्चिम बंगाल में जूट उद्योग के संकेंद्रण का प्रमुख कारण हुगली नदी द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्रचुर जल संसाधन है। जूट के पौधों से रेशे पृथक करने की प्रक्रिया हेतु बहुत अधिक ताजे जल की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, हुगली बेसिन की आर्द्र जलवायु और उपजाऊ जूट क्षेत्रों से निकटता इस उद्योग हेतु आदर्श स्थितियां उत्पन्न करती है। जूट मिलों का विकास इसी भौगोलिक सुलभता पर आधारित है।

35. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सूती वस्त्र उद्योग का भौगोलिक विस्तार हुआ है, जिससे यह पारंपरिक केंद्रों से निकलकर नए क्षेत्रों में विस्तृत हो गया। रेलवे नेटवर्क के विस्तार और विद्युत आपूर्ति ने मिलों को कच्चे माल के स्रोतों के स्थान पर उपभोक्ता बाजारों के समीप स्थापित करना संभव बना दिया। चूंकि कपास एक शुद्ध कच्चा माल है, अतः परिवहन के दौरान इसके वजन में कमी नहीं आती।

36. (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
बोकारो इस्पात संयंत्र की स्थापना सोवियत संघ के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से की गई थी, न कि यूनाइटेड किंगडम के सहयोग से। यह संयंत्र झारखंड में स्थित एक अंतर्देशीय एकीकृत संयंत्र है, जिसका निर्माण मुख्य रूप से घरेलू बाजार की इस्पात आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु किया गया था। यह कोयला क्षेत्रों के निकट स्थित है, जो इसे कच्चे माल की सुचारु आपूर्ति सुनिश्चित करता है और परिचालन लागत को संतुलित रखता है।

37. (3) केवल III और IV
चीनी उद्योग पूर्णतः गन्ने की मौसमी प्रकृति पर निर्भर है। महाराष्ट्र जैसे प्रायद्वीपीय राज्यों में उगाए जाने वाले गन्ने में सुक्रोज की मात्रा उत्तर भारत के गन्ने की तुलना में अधिक होती है, जो इसे चीनी उत्पादन हेतु अधिक प्रभावी बनाती है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र भारत के सबसे बड़े चीनी उत्पादक क्षेत्र हैं, जहाँ महाराष्ट्र अपनी सुदृढ़ सहकारी समितियों के कारण विशिष्ट है। सुक्रोज की अधिकता दक्षिण के पक्ष में महत्वपूर्ण कारक है।

38. (2) गन्ने की खोई
पारंपरिक एकीकृत लौह एवं इस्पात संयंत्रों हेतु कोकिंग कोल, चूना पत्थर और मैंगनीज अयस्क अनिवार्य कच्चे माल हैं। कोकिंग कोल का उपयोग भट्टी में ईंधन के रूप में होता है और चूना पत्थर अशुद्धियों को हटाने हेतु गालक का कार्य करता है। इसके विपरीत, गन्ने की खोई चीनी उद्योग का एक उप-उत्पाद है जिसका उपयोग कागज निर्माण या बिजली उत्पादन में किया जाता है। इस्पात निर्माण की प्रक्रिया में इसकी कोई भूमिका नहीं है।

39. (4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
चीनी उद्योग की मुख्य विशेषता इसकी मौसमी प्रकृति और कच्चे माल की शीघ्र खराब होने वाली प्रवृत्ति है। जूट उद्योग को वर्तमान में संश्लेषित पैकेजिंग सामग्री से कड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। मिनी इस्पात संयंत्र अपनी ऊर्जा हेतु विद्युत शक्ति और रद्दी इस्पात पर निर्भर रहते हैं। वहीं, सूती वस्त्र उद्योग में महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है, जहाँ इकाइयां कच्चे माल के क्षेत्रों से हटकर उपभोक्ता बाजारों की ओर विकेंद्रीकृत हो गई हैं।

40. (1) यह इस्पात के निर्यात और विदेशों से उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल के आयात की लागत को कम करता है।
विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र की तटीय स्थिति इसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। इस्पात उत्पादन हेतु आवश्यक उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल का आयात सीधे बंदरगाह के माध्यम से किया जा सकता है, जिससे आंतरिक परिवहन लागत की बचत होती है। इसी प्रकार, निर्मित इस्पात उत्पादों का वैश्विक निर्यात सस्ता और सुलभ हो जाता है। यह रणनीतिक स्थिति संयंत्र की आर्थिक दक्षता बढ़ाकर इसे प्रतिस्पर्धी वैश्विक इकाई बनाती है।

NODIA

भारत के सबसे अधिक उत्पादक और आर्थिक रूप से सक्षम इस्पात संयंत्रों में से एक बनाने में महत्वपूर्ण सहायता की है।

62. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
संश्लेषित रेशा उद्योग कृषि और जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह पूर्णतः रासायनिक विनिर्माण पर आधारित है। इस उद्योग का वितरण उन क्षेत्रों से जुड़ा होता है जहाँ पेट्रोकेमिकल उत्पाद और रिफाइनरियां सुलभ होती हैं। चूंकि नायलॉन और पॉलिएस्टर जैसे रेशे रसायनों से निर्मित होते हैं, इसलिए उन्हें उगाने हेतु विशिष्ट मिट्टी या वर्षा की आवश्यकता नहीं होती। यह इसे कृषि-आधारित वस्त्र उद्योगों से पृथक करता है।

63. (1) इसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में संश्लेषित पैकेजिंग सामग्री से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
भारतीय जूट उद्योग के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजार में सस्ती प्लास्टिक और संश्लेषित पैकेजिंग सामग्रियों का उदय है। जूट एक प्राकृतिक और पर्यावरण के अनुकूल रेशा होने के पश्चात भी लागत के मामले में संश्लेषित विकल्पों से पिछड़ जाता है। यद्यपि जूट टिकाऊ है, किंतु इसकी उच्च उत्पादन लागत बाजार विस्तार को सीमित करती है। इसके अतिरिक्त, बांग्लादेश से मिलने वाली प्रतिस्पर्धा भी एक चिंता का विषय है।

64. (2) भद्रा
कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित भद्रावती इस्पात संयंत्र रणनीतिक रूप से भद्रा नदी के तट पर स्थित है। यह नदी संयंत्र को औद्योगिक प्रक्रियाओं और शीतलन हेतु आवश्यक निरंतर जल आपूर्ति प्रदान करती है। इस संयंत्र की स्थापना 1923 में हुई थी और इसने क्षेत्र के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नदी की निकटता ने जल की आवश्यकता के साथ-साथ बिजली उत्पादन से जुड़े बुनियादी ढांचे के विकास में भी सहायता की है।

65. (2) प्रायद्वीपीय गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है और मिलों के लिए पेराई का मौसम लंबा होता है।
भारत में चीनी उद्योग का दक्षिण और पश्चिम की ओर खिसकने का मुख्य कारण वहां की अनुकूल उष्णकटिबंधीय जलवायु है। प्रायद्वीपीय भारत, विशेषकर महाराष्ट्र में उगाए जाने वाले गन्ने में उत्तर भारत की तुलना में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है। साथ ही, दक्षिण में पेराई का मौसम अधिक महीनों तक चलता है, जिससे मिलें अधिक समय तक सक्रिय रह सकती हैं। इन लाभों ने महाराष्ट्र और तमिलनाडु को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बनाया है।

66. (1) यह पारंपरिक हथकरघा क्षेत्र की तुलना में प्रतिवर्ष कम कुल कपड़े का उत्पादन करता है।
भारत के वस्त्र क्षेत्र में बिजलीचालित करघा इकाइयों का योगदान सर्वाधिक है और यह उत्पादन में हथकरघा और मिल क्षेत्र दोनों को पीछे छोड़ चुका है। यह मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत क्षेत्र में कार्य करता है और मशीनों को चलाने हेतु विद्युत शक्ति का उपयोग करता है। स्वतंत्रता के पश्चात इसने ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हथकरघा उद्योग सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है, किंतु उसकी कुल उत्पादन क्षमता कम है।

67. (3) मशीनरी को ठंडा करने के लिए उच्च ऊंचाई वाला पहाड़ी क्षेत्र
सूती वस्त्र मिलों के संकेंद्रण हेतु कच्चे कपास की उपलब्धता, आर्द्र जलवायु और बंदरगाह तक पहुंच प्रमुख भौगोलिक आवश्यकताएं हैं। आर्द्र जलवायु धागे को टूटने से बचाती है, जो कताई हेतु अनिवार्य है। कपास उत्पादक क्षेत्रों से निकटता परिवहन लागत को कम करती है। मशीनरी को ठंडा करने हेतु उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि ये प्रक्रियाएं मैदानी और तटीय क्षेत्रों में अधिक प्रभावी ढंग से संचालित होती हैं।

68. (4) चीनी उद्योग
भार-ह्रास वाला उद्योग वह होता है जहाँ तैयार उत्पाद का वजन प्रयुक्त कच्चे माल से काफी कम होता है। चीनी उद्योग इसका आदर्श उदाहरण है क्योंकि गन्ने की तुलना में चीनी का वजन बहुत कम होता है। इसके अतिरिक्त, गन्ना काटने के पश्चात उसमें सुक्रोज की मात्रा तेजी से कम होने लगती है, जिससे परिवहन में विलंब हानिकारक होता है। इसी कारण चीनी मिलों को सदैव गन्ने के खेतों के निकट स्थापित किया जाता है।

69. (3) कर्नाटक
कर्नाटक पारंपरिक रूप से भारत में शहतूत रेशम का अग्रणी उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का विशाल भाग प्रदान करता है। राज्य की जलवायु और उन्नत तकनीकें शहतूत के पौधों और रेशम कीट पालन हेतु अत्यंत अनुकूल हैं। मैसूर और बेंगलुरु ऐतिहासिक रूप से रेशम व्यापार के प्रमुख केंद्र रहे हैं। सरकारी सहायता और अनुसंधान संस्थानों की उपस्थिति ने भी कर्नाटक को रेशम उद्योग में अपनी शीर्ष स्थिति बनाए रखने में सहायता की है।

70. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
महाराष्ट्र में चीनी उद्योग मुख्य रूप से सहकारी क्षेत्र पर आधारित है, न कि निजी बहुराष्ट्रीय निगमों पर। यहाँ की सहकारी चीनी मिलें ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं और इनका स्वामित्व स्थानीय गन्ना किसानों के पास होता है। यह मॉडल न केवल किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करता है, बल्कि सामाजिक विकास में भी योगदान देता है। किसानों का सामूहिक प्रबंधन इस मॉडल को सफल बनाता है, जिससे महाराष्ट्र प्रमुख उत्पादक राज्य बना है।

71. (4) शुगर क्लस्टर - बुनियादी ढांचे, उप-उत्पाद उपयोग और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार के लिए डिज़ाइन किया गया
शुगर क्लस्टर सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य चीनी मिलों के समीप एक एकीकृत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है। इन समूहों में इथेनॉल डिस्टिलरी और सह-उत्पादन इकाइयों के माध्यम से उप-उत्पादों के पूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे मिलों की आय बढ़ती है और उनकी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होता है। यह मॉडल

Downloaded from www.pdf.tube

से सार्वजनिक क्षेत्र की विशाल इकाई के रूप में स्थापित किया गया था। बोकारो संयंत्र भी भारत-सोवियत सहयोग का प्रमुख उदाहरण है। हालांकि, विजाग इस्पात संयंत्र एक तट-आधारित संयंत्र है जिसे रणनीतिक रूप से समुद्र के किनारे बनाया गया था ताकि बंदरगाह सुविधाओं का लाभ उठाया जा सके, न कि चक्रवातों से बचने हेतु।

52. (4) पश्चिम बंगाल
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र पश्चिम बंगाल के वर्धमान जिले में स्थित एक प्रमुख एकीकृत इकाई है। इस संयंत्र की स्थापना 1950 के दशक के अंत में ब्रिटिश सहयोग से की गई थी। यह संयंत्र क्षेत्र के खनिज भंडारों और दामोदर घाटी निगम से प्राप्त ऊर्जा संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करता है। दुर्गापुर का यह संयंत्र विशेष रूप से रेलवे के पहियों और धुरी (एक्सल) के निर्माण हेतु राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

53. (3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
भारत के विभिन्न राज्यों में उद्योगों का वितरण उनकी भौगोलिक विशेषताओं पर आधारित है। जम्मू और कश्मीर अपने पारंपरिक रेशम उद्योग हेतु प्रसिद्ध है। पश्चिम बंगाल विश्व का सबसे बड़ा जूट वस्त्र संकेंद्रण केंद्र है, जो हुगली नदी के तट पर स्थित है। महाराष्ट्र अपनी सफल सहकारी चीनी मिलों हेतु जाना जाता है, जिसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदला है। छत्तीसगढ़ में भिलाई इस्पात संयंत्र स्थित है, जो बुनियादी ढांचे के विकास में सहायक है।

54. (2) एक प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र में इसकी स्थिति ने कच्चे माल तक आसान पहुंच प्रदान की।
अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक संकेंद्रण का मुख्य कारण गुजरात के विशाल कपास उत्पादक क्षेत्रों से इसकी निकटता है। काली मिट्टी की पेटी में स्थित होने के कारण यहाँ कच्चे कपास की निरंतर और सस्ती आपूर्ति उपलब्ध रही है। साथ ही, यहाँ की आर्द्र जलवायु धागे की बुनाई हेतु उपयुक्त थी और कुशल श्रम की प्रचुरता ने इसे प्रमुख केंद्र बना दिया। इसी कारण अहमदाबाद को 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है।

55. (4) केवल I, II, IV और V
भारत में जूट उद्योग का मुख्य केंद्र पश्चिम बंगाल है, जबकि रेशम उद्योग कर्नाटक और जम्मू-कश्मीर में विस्तृत है। वस्त्र उद्योग में विकेंद्रीकृत बिजलीचालित करघा क्षेत्र का वर्चस्व है और सेलम इस्पात संयंत्र दक्षिण भारत का महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र है। हालांकि, चीनी उद्योग के लिए गन्ना एक भार-ह्रास वाला कच्चा माल है जो मौसमी होता है और इसका प्रसंस्करण कटाई के तुरंत बाद करना अनिवार्य होता है।

56. (1) उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु
भारत में चीनी उद्योग का वितरण उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए विभिन्न राज्यों में देखा जाता है। सबसे उत्तर में उत्तर प्रदेश आता है, जो ऐतिहासिक रूप से गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक रहा है। इसके दक्षिण में महाराष्ट्र स्थित है, जो अपनी उच्च सुक्रोज प्राप्ति और सहकारी समितियों हेतु प्रसिद्ध है। सबसे अंत में प्रायद्वीपीय भारत का तमिलनाडु राज्य आता है, जहाँ आधुनिक तकनीक के कारण चीनी मिलें अत्यंत सफल रही हैं।

57. (3) कम रुचि के कारण महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिल मॉडल पूरी तरह से विफल हो गया है।
महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिल मॉडल भारत में सहकारी आंदोलन की विशाल सफलताओं में से एक है। यह मॉडल किसानों को मिल के स्वामित्व और लाभ में भागीदार बनाकर सशक्त बनाता है। चीनी उद्योग वास्तव में एक भार-ह्रास वाला उद्योग है, क्योंकि गन्ने का वजन कटाई के बाद घटने लगता है, अतः मिलों को खेतों के समीप होना अनिवार्य है। इसकी मौसमी प्रकृति सदैव एक बड़ी रसद चुनौती बनी रहती है।

58. (1) हुगली नदी
जमशेदपुर स्थित टिस्को संयंत्र को जल की आपूर्ति मुख्य रूप से सुवर्णरेखा और खरकई नदियों के संगम से होती है। इसके अतिरिक्त, डिमना झील को एक कृत्रिम जलाशय के रूप में विकसित किया गया था ताकि संयंत्र और शहर की निरंतर जल आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सके। हुगली नदी पश्चिम बंगाल में प्रवाहित होती है और इसका टिस्को संयंत्र से कोई संबंध नहीं है। जल की स्थानीय उपलब्धता इसके उत्पादन को सुचारु रखती है।

59. (4) उच्च गुणवत्ता वाले स्टेनलेस स्टील और विशेष इस्पात
तमिलनाडु में स्थित सेलम इस्पात संयंत्र भारतीय इस्पात प्राधिकरण की एक विशिष्ट इकाई है। यह संयंत्र मुख्य रूप से उच्च श्रेणी के स्टेनलेस स्टील और विशेष मिश्र धातु इस्पात के उत्पादन हेतु विश्व भर में जाना जाता है। इसका उत्पाद घरेलू बर्तनों से लेकर जटिल औद्योगिक कार्यों तक उपयोग किया जाता है। अपनी उन्नत रोलिंग मिलों के कारण, यह संयंत्र भारत को विशेष इस्पात के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

60. (2) वे बिजली और लोहे के स्क्रैप का उपयोग करते हैं, जिससे कोयला और लौह अयस्क की खानों के पास स्थित होने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
मिनी इस्पात संयंत्रों का विकेंद्रीकृत होने का मुख्य कारण उनकी आगत आवश्यकताएं हैं। ये संयंत्र विद्युत आर्क भट्टी का उपयोग करते हैं और कच्चे माल के रूप में मुख्य रूप से रद्दी इस्पात और स्पंज आयरन पर निर्भर करते हैं। चूंकि इन्हें विशाल कोयला खदानों या लौह अयस्क क्षेत्रों के समीप होने की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए इन्हें बिजली की उपलब्धता वाले किसी भी क्षेत्र में उपभोक्ता बाजारों के निकट स्थापित किया जा सकता है।

61. (3) दल्ली-राजहरा
छत्तीसगढ़ स्थित भिलाई इस्पात संयंत्र को लौह अयस्क की आपूर्ति मुख्य रूप से दल्ली-राजहरा की स्थानीय खदानों से होती है। ये खदानें संयंत्र के अत्यंत निकट हैं, जिससे परिवहन लागत न्यूनतम रहती है और कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है। लौह अयस्क की इस निकटता ने भिलाई को

NODIA

15. सूची I में दिए गए प्रमुख औषधि (फार्मास्युटिकल) और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) समूहों को सूची II में उनके संबंधित राज्यों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (समूह/क्लस्टर)

A. हैदराबाद
B. अहमदाबाद
C. पुणे
D. नोएडा

सूची II: (राज्य)

i. महाराष्ट्र
ii. उत्तर प्रदेश
iii. तेलंगाना
iv. गुजरात

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. भारतीय एयरोस्पेस उद्योग का आधार स्तंभ, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL), निम्नलिखित में से किस शहर में मुख्यालय रखता है?

(1) हैदराबाद
(2) बेंगलुरु
(3) चेन्नई
(4) कानपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. भारत में ऑटोमोबाइल उद्योग समूहों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।

(1) गुड़गांव - वाणिज्यिक भारी मशीनरी केंद्र
(2) पुणे - प्रमुख दोपहिया और यात्री वाहन केंद्र
(3) चेन्नई - विशेष रूप से इलेक्ट्रिक बैटरी विनिर्माण के लिए जाना जाता है
(4) जमशेदपुर - केवल ट्रैक्टर और कृषि उपकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. भारत के सूचना प्रौद्योगिकी (IT) निर्यात और उनके आर्थिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. भारत के कुल सेवा निर्यात में IT निर्यात का एक बड़ा हिस्सा है।
II. उत्तरी अमेरिका और यूरोप भारतीय IT निर्यात के लिए सबसे बड़े गंतव्य बाजार हैं।
III. शहरी भारत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करने में IT क्षेत्र एक प्राथमिक चालक रहा है।
IV. IT निर्यात विदेशी मुद्रा भंडार में योगदान देकर भारत के वस्तु व्यापार घाटे को पाटने में महत्वपूर्ण रूप से मदद करता है।
V. IT क्षेत्र पूरी तरह से सरकारी नीतियों और SEZ लाभों से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।

कौन सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?

(1) I, II, III और IV
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. सीमेंट उद्योग कई भारी कच्चे माल पर निर्भर करता है। निम्नलिखित में से कौन सा पोर्टलैंड सीमेंट के निर्माण के लिए आमतौर पर आवश्यक कच्चा माल नहीं है?

(1) चूना पत्थर
(2) जिप्सम
(3) बॉक्साइट
(4) कोयला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. भारत में निम्नलिखित प्रमुख तेल रिफाइनरियों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम चुनिए।

(1) पानीपत, मथुरा, मुंबई, कोच्चि
(2) मथुरा, पानीपत, कोच्चि, मुंबई
(3) पानीपत, मुंबई, मथुरा, कोच्चि
(4) मथुरा, मुंबई, पानीपत, कोच्चि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. ऑटोमोबाइल विनिर्माण उद्योग के भारी संकेंद्रण के कारण किस भारतीय शहर को अक्सर "भारत का डेट्रायट" कहा जाता है?

(1) गुड़गांव
(2) पुणे
(3) चेन्नई
(4) साणंद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. भारत में उर्वरक उद्योग के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।

(1) भारत वर्तमान में सभी प्रकार के पोटाश (K) उर्वरकों के घरेलू उत्पादन में पूरी तरह आत्मनिर्भर है।
(2) HVJ गैस पाइपलाइन ने मांग केंद्रों के पास अंतर्देशीय उर्वरक संयंत्र स्थापित करने में सक्षम बनाया है।
(3) नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस की आवश्यकता नहीं होती है।
(4) राजस्थान वर्तमान में घरेलू कृषि बाजार के लिए जटिल NPK उर्वरकों का सबसे बड़ा उत्पादक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में पेट्रोकेमिकल उद्योग के रणनीतिक महत्व का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?

(1) यह परिवहन ईंधन के रूप में कच्चे तेल की घटती वैश्विक मांग के प्राथमिक विकल्प के रूप में कार्य करता है।
(2) इसके लिए बहुत कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है और इसे ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से स्थापित किया जा सकता है।

Click Here to Buy book on Amazon

संसाधनों के कुशल उपयोग हेतु निर्मित है, जिससे उद्योग की स्थिरता सुनिश्चित होती है।

72. (1) मिनी इस्पात संयंत्र
भिलाई, बोकारो और दुर्गापुर सभी विशाल एकीकृत इस्पात संयंत्र हैं जो पारंपरिक ब्लास्ट फर्नेस तकनीक द्वारा लौह अयस्क से बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं। इसके विपरीत, मिनी इस्पात संयंत्र अपनी लघु परिचालन क्षमता और विद्युत आर्क भट्टी तकनीक के कारण भिन्न हैं। ये संयंत्र मुख्य रुप से रद्दी इस्पात का उपयोग करते हैं और कम पूंजी निवेश के साथ विकेंद्रीकृत तरीके से संचालित होते हैं। इनकी उत्पादन प्रक्रिया और इनपुट सामग्री एकीकृत संयंत्रों से भिन्न है।

73. (3) किसानों की सीधी हिस्सेदारी है, जो गन्ने की सुनिश्चित आपूर्ति और आपसी लाभ साझा करना सुनिश्चित करती है।
महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिलों की सफलता का मुख्य कारण किसानों की इन मिलों में प्रत्यक्ष हिस्सेदारी और स्वामित्व है। चूंकि किसान स्वयं शेयरधारक होते हैं, इसलिए वे मिल को गन्ने की निरंतर आपूर्ति हेतु प्रतिबद्ध होते हैं। यह मॉडल बिचौलियों को समाप्त करता है और लाभ को सीधे किसानों में वितरित करता है। इस सामूहिक भागीदारी ने न केवल पेराई प्रक्रिया को कुशल बनाया है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सुरक्षा को भी बढ़ावा दिया है।

74. (1) मुंबई
भारत में प्रथम सफल आधुनिक सूती वस्त्र मिल की स्थापना 1854 में मुंबई में हुई थी। कोवासजी नानाभाई डावर द्वारा स्थापित इस मिल ने संगठित कपड़ा उद्योग की नींव रखी। मुंबई की भौगोलिक स्थिति, जैसे बंदरगाह की उपलब्धता, आर्द्र जलवायु और आसपास कपास की प्रचुरता ने इसे प्रारंभिक विकास हेतु सबसे उपयुक्त बनाया। इस ऐतिहासिक मील के पत्थर के पश्चात ही मुंबई भारत के सबसे बड़े कपड़ा केंद्र के रूप में उभरा।

75. (4) मिलों ने अपना कच्चा माल आधार खो दिया क्योंकि प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में चले गए।
1947 में भारत के विभाजन ने जूट उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। विभाजन के कारण अधिकांश जूट उत्पादक उपजाऊ भूमि पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) में चली गई, जबकि प्रसंस्करण मिलें पश्चिम बंगाल (भारत) में रह गईं। इससे मिलों को कच्चे जूट की गंभीर कमी का सामना करना पड़ा। इसके पश्चात भारत को आत्मनिर्भर बनने हेतु अपनी कृषि रणनीतियों में बदलाव कर नए क्षेत्रों में जूट की खेती को प्रोत्साहित करना पड़ा।

76. (2) संश्लेषित रेशा उद्योग अत्यधिक केंद्रीकृत है और इसे कोयला खदानों के पास स्थित होना चाहिए।
संश्लेषित रेशा उद्योग कोयला खदानों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह पेट्रोकेमिकल उत्पादों और रिफाइनरियों से जुड़ा है। नायलॉन और पॉलिएस्टर जैसे रेशे रासायनिक रूप से निर्मित होते हैं, जिससे यह उद्योग विकेंद्रीकृत हो सकता है और इसे परिवहन केंद्रों के निकट स्थापित किया जा सकता है। कपास और जूट जैसे प्राकृतिक रेशे कृषि स्रोतों से प्राप्त होते हैं, जबकि संश्लेषित रेशे पूर्णतः कृत्रिम प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, जो निर्माण में विविधता लाते हैं।

77. (3) साकची
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) हेतु चयनित मूल स्थान का नाम 'साकची' था, जो झारखंड के छोटा नागपुर पठार पर स्थित एक गाँव था। 1907 में यहाँ भारत का प्रथम निजी इस्पात संयंत्र आरंभ हुआ। पश्चात में, इस स्थान के तीव्र औद्योगिक विकास और इसके संस्थापक के सम्मान में साकची का नाम बदलकर 'जमशेदपुर' कर दिया गया। यह स्थान लौह अयस्क, कोयला और नदियों के संगम के कारण रणनीतिक रूप से चुना गया था।

78. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राउरकेला इस्पात संयंत्र भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का प्रथम एकीकृत संयंत्र था जिसे जर्मन तकनीकी सहयोग से स्थापित किया गया था। इसे ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में रणनीतिक रूप से लौह अयस्क क्षेत्रों के समीप बनाया गया था ताकि परिवहन लागत न्यूनतम रहे। यह संयंत्र खनिज संसाधनों की प्रचुरता के साथ हीराकुंड परियोजना से प्राप्त बिजली और कोयल नदी के जल का उपयोग करता है, जो इसे एक कुशल केंद्र बनाता है।

79. (1) यह पुनर्चक्रित स्टील स्क्रैप का उपयोग करता है, जिससे लौह अयस्क खनन और बड़ी ब्लास्ट फर्नेस की आवश्यकता कम हो जाती है।
मिनी इस्पात संयंत्रों में विद्युत आर्क भट्टी का उपयोग पर्यावरण और संसाधन प्रबंधन हेतु लाभकारी है। यह तकनीक मुख्य रुप से पुराने रद्दी इस्पात और स्पंज आयरन को पिघलाकर नवीन इस्पात में परिवर्तित करती है। इससे प्राकृतिक लौह अयस्क के खनन पर दबाव कम होता है और विशाल ब्लास्ट फर्नेस की आवश्यकता नहीं रहती। यह प्रक्रिया अधिक लचीली है और स्टील के विशिष्ट ग्रेड तैयार करने में सहायक है, जो क्षेत्रीय बाजार की मांगों के अनुकूल है।

80. (2) एक एकीकृत क्षेत्र जहाँ चीनी मिलें और डिस्टलरी उप-उत्पाद के अधिकतम उपयोग के लिए संचालित होती हैं।
शुगर क्लस्टर एक आधुनिक औद्योगिक अवधारणा है जहाँ चीनी मिलों को आसवनी (डिस्टिलरी) और बिजली इकाइयों के साथ एकीकृत किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य गन्ने के प्रत्येक भाग, जैसे खोई और शीरे का प्रभावी उपयोग करना है। खोई से बिजली और शीरे से इथेनॉल बनाया जाता है, जिससे मिलों की आर्थिक लाभप्रदता बढ़ती है। यह दृष्टिकोण कचरे को कम करता है और पूरे चीनी क्षेत्र को अधिक प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ बनाता है।

NODIA

अध्याय 16
पेट्रोकेमिकल, सूचना प्रौद्योगिकी एवं उभरते उद्योग

1. कृत्रिम रेशे (सिंथेटिक फाइबर), प्लास्टिक और इलास्टोमर्स के उत्पादन के लिए पेट्रोकेमिकल उद्योग में उपयोग किया जाने वाला सबसे प्राथमिक कच्चा माल (फीडस्टॉक) निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) लौह अयस्क और कोकिंग कोल
(2) प्राकृतिक गैस और नेफ्था
(3) बॉक्साइट और सिलिका
(4) चूना पत्थर और जिप्सम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. जामनगर रिफाइनरी को दुनिया के सबसे बड़े नवनिर्मित (ग्रास-रूट) रिफाइनरी परिसर के रूप में मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में कौन सी कॉर्पोरेट इकाई इस वृहद रिफाइनरी का स्वामित्व और संचालन करती है?
(1) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL)
(2) इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL)
(3) भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL)
(4) हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. मुंबई और कोच्चि में स्थापित प्रमुख तेल रिफाइनरियों के स्थानिक लाभ का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा कथन करता है?
(1) वे कच्चे माल की परिवहन लागत को कम करने के लिए प्रमुख तटवर्ती तेल क्षेत्रों के पास स्थित हैं।
(2) वे ऑटोमोबाइल कारखानों को सीधे ईंधन की आपूर्ति करने के लिए भारी इंजीनियरिंग केंद्रों के पास स्थित हैं।
(3) वे बंदरगाह आधारित रिफाइनरियां हैं जिन्हें आयातित कच्चे तेल को आसानी से संसाधित करने के लिए स्थापित किया गया है।
(4) वे मुख्य रूप से पश्चिमी घाट में उत्पन्न विशाल जलविद्युत शक्ति का उपयोग करने के लिए स्थित हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. भारत में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक उद्योग का वितरण मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस कच्चे माल की उपलब्धता पर निर्भर है?
(1) रॉक फॉस्फेट निक्षेप
(2) निम्न श्रेणी का लौह अयस्क
(3) बॉक्साइट प्रसंस्करण अपशिष्ट
(4) प्राकृतिक गैस पाइपलाइन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I में दी गई प्रमुख तेल रिफाइनरियों को सूची II में दिए गए उन राज्यों के साथ सुमेलित कीजिए जहाँ वे स्थित हैं।
सूची I: (तेल रिफाइनरी)
A. मथुरा रिफाइनरी
B. कोच्चि रिफाइनरी
C. पानीपत रिफाइनरी
D. मुंबई रिफाइनरी
सूची II: (राज्य)
i. हरियाणा
ii. महाराष्ट्र
iii. उत्तर प्रदेश
iv. केरल
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. भारत को वैश्विक स्तर पर "दुनिया की फार्मेसी" के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह उपाधि मुख्य रूप से दवा उद्योग के किस क्षेत्र में भारत के प्रभुत्व के कारण दी गई है?
(1) पेटेंटेड जीवन रक्षक शल्य चिकित्सा उपकरणों का निर्माण
(2) जेनेरिक दवाओं और टीकों का बड़े पैमाने पर उत्पादन
(3) पारंपरिक आयुर्वेदिक दवाओं का विशिष्ट उत्पादन
(4) दुर्लभ सक्रिय दवा सामग्री (APIs) पर एकाधिकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. बेंगलुरु में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) उद्योग की तीव्र वृद्धि, जिसके कारण इसे "भारत की सिलिकॉन वैली" कहा जाने लगा, का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) राज्य की विविध भूगर्भीय संरचनाओं में पाए जाने वाले दुर्लभ मृदा धातुओं की व्यापक उपलब्धता।
(2) प्रमुख तटीय व्यापार मार्गों से निकटता जो वैश्विक स्तर पर हार्डवेयर प्रणालियों के आसान निर्यात की सुविधा प्रदान करती है।
(3) स्वतंत्रता के बाद से तकनीकी वस्तुओं पर राज्य कराधान का पूर्ण अभाव।
(4) सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों की स्थापना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

8. भारत में सीमेंट उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. सीमेंट उद्योग एक भार-क्षय वाला उद्योग है, इसलिए संयंत्र मुख्य रूप से चूना पत्थर निक्षेपों के पास स्थित होते हैं।

II. राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश भारत के प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्यों में से हैं।

III. सीमेंट संयंत्रों की स्थिति निर्धारित करने में कोयले और विद्युत शक्ति की उपलब्धता की भूमिका नगण्य है।

कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) I और III
(2) II और III
(3) I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. भारत में प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और सॉफ्टवेयर सेवा केंद्रों के संदर्भ में निम्नलिखित शहरों में से विषम का चयन कीजिए।

(1) हैदराबाद
(2) पुणे
(3) धनबाद
(4) नोएडा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): स्थानीय हीरा खदानें न होने के बावजूद सूरत हीरा कटाई और पॉलिशिंग उद्योग में वैश्विक प्रभुत्व रखता है।

कारण (R): सूरत को अत्यधिक कुशल पारंपरिक कार्यबल और आयात-निर्यात के लिए मुंबई बंदरगाह की निकटता से समर्थित उद्यमशील नेटवर्क का लाभ मिलता है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. कौन सा प्रमुख संगठन रक्षा मंत्रालय की प्राथमिक अनुसंधान और विकास शाखा के रूप में कार्य करता है, जो भारत के रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

(1) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) जो विमानों में विशेषज्ञता रखता है
(2) आयुध निर्माणी बोर्ड (OFB) जो भूमि प्रणालियों के उत्पादन का प्रबंधन करता है
(3) भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) जो इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करता है
(4) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. भारत में नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राजस्थान अपने उच्च सौर विकिरण और उपलब्ध बंजर भूमि के कारण सौर ऊर्जा के लिए एक प्रमुख विनिर्माण और उत्पादन केंद्र के रूप में उभरा है।

II. पवन ऊर्जा विनिर्माण केंद्र मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे उत्तरी भू-आबद्ध राज्यों में केंद्रित हैं।

III. राष्ट्रीय सौर मिशन का लक्ष्य भारत को सौर ऊर्जा में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित करना है।

IV. नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक कंपनियों और घरेलू स्टार्टअप दोनों से उभरते निवेश देखे गए हैं।

कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. एक खाद्य प्रसंस्करण फर्म सांद्रित फलों के रस के निर्माण के लिए एक नया संयंत्र स्थापित करना चाहती है। औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत के आधार पर, इस संयंत्र के लिए सबसे उपयुक्त स्थान कौन सा है?

(1) एक विशाल और विविध उपभोक्ता बाजार तक तत्काल पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक प्रमुख महानगर के केंद्र के पास।
(2) वैश्विक बाजारों में तैयार उत्पादों के तत्काल निर्यात की सुविधा के लिए एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाह के पास।
(3) खराब होने से बचाने और कच्चे माल की परिवहन लागत को कम करने के लिए फल उत्पादक क्षेत्रों (पश्चभूमि) के पास।
(4) विपणन में तकनीकी नवाचारों का लाभ उठाने के लिए एक सूचना प्रौद्योगिकी (IT) पार्क के पास।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. भारत के उभरते सेमीकंडक्टर उद्योग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) सेमीकंडक्टर विनिर्माण के लिए अत्यधिक उन्नत स्वच्छ कक्ष (क्लीनरूम) सुविधाओं और बड़े पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
(2) भारत सरकार ने एक मजबूत घरेलू पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए व्यापक 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' शुरू किया है।
(3) सेमीकंडक्टर विनिर्माण के लिए अति-शुद्ध जल की निर्बाध आपूर्ति और विश्वसनीय बिजली की आवश्यकता होती है।
(4) भारत वर्तमान में अपनी पूरी घरेलू मांग को स्वदेशी चिप विनिर्माण संयंत्रों के माध्यम से पूरा करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

41. (1) I, II, III
भारत के प्रमुख एकीकृत इस्पात संयंत्रों को उत्तर से दक्षिण व्यवस्थित करने पर बोकारो इस्पात संयंत्र सर्वप्रथम झारखंड में आता है। इसके दक्षिण में भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ में स्थित है। सबसे दक्षिण में सेलम इस्पात संयंत्र तमिलनाडु में आता है। यह भौगोलिक क्रम भारत की खनिज पट्टी और औद्योगिक वितरण को प्रदर्शित करता है, जहाँ उत्तर और मध्य भारत भारी ढांचे हेतु प्रसिद्ध हैं, जबकि दक्षिणी केंद्र विशिष्ट उत्पादों पर ध्यान देते हैं।

42. (1) यह स्थानीय भद्रावती क्षेत्र में स्थित उच्च श्रेणी के कोकिंग कोल भंडार पर निर्भर है।
भद्रावती इस्पात संयंत्र कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित है और वहां कोकिंग कोल का कोई स्थानीय भंडार उपलब्ध नहीं है। ऐतिहासिक रूप से, इस संयंत्र ने पास की पहाड़ियों से प्राप्त लौह अयस्क और स्थानीय वनों से प्राप्त लकड़ी के कोयले का उपयोग किया था। बाद में, ईंधन की कमी पूर्ण करने हेतु इसने विद्युत भट्टियों को अपनाया। इसे मैसूर आयरन एंड स्टील वर्क्स के रूप में जाना जाता था।

43. (4) केवल I, II, IV और V
भारत की प्रथम आधुनिक सूती मिल 1854 में मुंबई में स्थापित हुई थी। अहमदाबाद अपनी कच्चे माल तक सुलभ पहुंच के कारण प्रसिद्ध हुआ। समय के साथ, बिजली और परिवहन के विकास से यह उद्योग पूरे भारत में फैल गया। वर्तमान में, बिजलीचालित करघा क्षेत्र ने उत्पादन क्षमता में मिल क्षेत्र को पीछे छोड़ दिया है। हालांकि, संश्लेषित रेशों के आगमन से पारंपरिक कपास उद्योग को कड़ी प्रतिस्पर्धा और नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

44. (2) विकेंद्रीकरण से लागत लाभ, कम ऊपरी व्यय और असंगठित क्षेत्र में लचीलापन।
आधुनिक भारतीय वस्त्र उत्पादन में बिजलीचालित करघा क्षेत्र का प्रभुत्व इसके लचीलेपन और लागत-प्रभावी स्वभाव के कारण है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत और लघु पैमाने पर संचालित होता है, जिससे मिलों की तुलना में इसके ऊपरी व्यय कम होते हैं। इसके अतिरिक्त, ये इकाइयां बाजार की बदलती मांगों के अनुसार शीघ्र ढल जाती हैं। असंगठित क्षेत्र में होने के कारण इन्हें कई कर लाभ और परिचालन स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

45. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाराष्ट्र में सहकारी चीनी मिलों की सफलता का आधार किसानों का सक्रिय एकत्रीकरण है। इस मॉडल में किसान स्वयं मिल के स्वामी होते हैं, जिससे उनमें सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है। यह व्यवस्था गन्ने की कटाई और ढुलाई को अत्यधिक कुशल बनाती है, जिससे सुक्रोज की क्षति न्यूनतम होती है। किसान केवल आपूर्तिकर्ता नहीं, बल्कि लाभ के हिस्सेदार भी होते हैं, जो एक सुदृढ़ ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करता है।

46. (4) इसका कच्चा माल मुख्य रूप से पेट्रोकेमिकल्स और लकड़ी की लुगदी से प्राप्त होता है।
संश्लेषित रेशा उद्योग पारंपरिक वस्त्र उद्योगों से भिन्न है क्योंकि यह कृषि उत्पादों के स्थान पर रासायनिक आगतों पर निर्भर करता है। इसके कच्चे माल में मुख्य रूप से पेट्रोकेमिकल्स और सेलुलोज आधारित लकड़ी की लुगदी सम्मिलित है। चूंकि यह कृषि पर आधारित नहीं है, इसलिए इस पर मौसम या फसल विफलता का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता। यह उद्योग आधुनिक दुनिया की टिकाऊ और विविध वस्त्रों की मांगों को पूर्ण करने हेतु अनिवार्य है।

47. (1) केवल I और II
राउरकेला इस्पात संयंत्र ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण एकीकृत संयंत्र है। इसकी स्थापना 1950 के दशक में जर्मनी के तकनीकी सहयोग से हुई थी। यह संयंत्र मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई है जो चपटे इस्पात उत्पादों के उत्पादन में विशेषज्ञता रखता है। यह कोई मिनी इस्पात संयंत्र नहीं है, बल्कि एक विशाल औद्योगिक परिसर है जो राष्ट्रीय विकास और निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

48. (2) मिनी इस्पात संयंत्र - इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस
आधुनिक मिनी इस्पात संयंत्रों की विशिष्ट पहचान उनकी विद्युत आर्क भट्टी तकनीक है। पारंपरिक एकीकृत संयंत्रों के विपरीत, जो विशाल ब्लास्ट फर्नेस का उपयोग करते हैं, मिनी संयंत्र बिजली की सहायता से रद्दी इस्पात और स्पंज आयरन को पिघलाते हैं। यह तकनीक अधिक ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण के अनुकूल मानी जाती है। इस लचीली तकनीक के कारण ही इन संयंत्रों को लघु स्तर पर और बाजार के निकट स्थापित करना संभव हुआ है।

49. (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
भारत के औद्योगिक विकास हेतु विभिन्न क्षेत्रों को उनके कार्यों के अनुसार सुमेलित किया जा सकता है। टेक्सटाइल पार्क आधुनिक बुनियादी ढांचा प्रदान कर वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाते हैं। शुगर क्लस्टर संसाधनों के कुशल उपयोग हेतु बनाए गए हैं। बिजलीचालित करघा क्षेत्र विकेंद्रीकृत उत्पादन का मुख्य आधार है। जूट उद्योग का मुख्य केंद्र भौगोलिक कारणों से पश्चिम बंगाल की हुगली नदी के किनारे है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

50. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
चीनी उद्योग एक मौसमी उद्योग है जो पूरे वर्ष पूर्ण क्षमता से संचालित नहीं हो सकता। इसका कारण गन्ने की फसल की प्रकृति है, जो कटाई के तुरंत बाद अपना वजन और सुक्रोज खोने लगती है। अतः मिलें केवल गन्ने की कटाई के महीनों (अक्टूबर से अप्रैल) के दौरान ही सक्रिय रहती हैं। पेराई में विलंब से चीनी की गुणवत्ता और मात्रा में भारी गिरावट आती है, जो उत्पादकता को प्रभावित करती है।

51. (3) केवल I, II और III
टिस्को भारत का प्रथम निजी क्षेत्र का एकीकृत इस्पात संयंत्र था। भिलाई इस्पात संयंत्र को छत्तीसगढ़ में सोवियत सहयोग

Click Here to Buy book on Amazon

(3) यह पूरी तरह से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से मुक्त एकमात्र औद्योगिक क्षेत्र है।
(4) यह कृत्रिम कच्चा माल प्रदान करता है जो लकड़ी और प्राकृतिक रबर जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का स्थान लेता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. भारत में उभरते इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर उद्योग द्वारा वर्तमान में सामना की जाने वाली एक प्रमुख चुनौती क्या है?
(1) आयातित सक्रिय घटकों और चिप्स पर भारी निर्भरता।
(2) देश भर में उन्नत घरेलू सेमीकंडक्टर विनिर्माण संयंत्रों की अत्यधिक आपूर्ति।
(3) उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए घरेलू मांग की कमी।
(4) अत्यधिक परिष्कृत धात्विक श्रेणी के सिलिकॉन की प्रचुर उपलब्धता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I के उद्योगों को सूची II में उनके प्राथमिक स्थानिक निर्धारकों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उद्योग)
A. सीमेंट उद्योग
B. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
C. पेट्रोकेमिकल उद्योग
D. एयरोस्पेस उद्योग
सूची II: (स्थानिक निर्धारक)
i. बंदरगाह या रिफाइनरी से निकटता
ii. उच्च तकनीक अनुसंधान संस्थानों से निकटता
iii. भारी चूना पत्थर निक्षेपों से निकटता
iv. शीघ्र खराब होने वाले कृषि कच्चे माल से निकटता
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण अग्रवर्ती कड़ी (फॉरवर्ड लिंकेज) प्रदान करता है, जिससे फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करने में मदद मिलती है।
कथन II: मेगा फूड पार्क मुख्य रूप से किसानों के लिए आनुवंशिक रूप से संशोधित बीज तैयार करने के लिए स्थापित किए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. भारत में प्रमुख सीमेंट निर्माण क्षमता के संदर्भ में निम्नलिखित राज्यों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) राजस्थान
(2) मध्य प्रदेश
(3) आंध्र प्रदेश
(4) त्रिपुरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. भारत के रक्षा विनिर्माण क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आयुध निर्माणी मुख्य रूप से सशस्त्र बलों के लिए हथियार, गोला-बारूद और उपकरण बनाने के लिए जिम्मेदार हैं।
II. रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) कड़ाई से वाणिज्यिक नागरिक विमानों के निर्माण में लगा हुआ है।
III. सरकार ने आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए स्वदेशीकरण को बढ़ावा दिया है और रक्षा विनिर्माण में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) सीमा बढ़ाई है।
दिए गए संयोजनों में से कौन सा सही है?
(1) I और II
(2) I और III
(3) II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र ने कई "यूनिकॉर्न" का उदय देखा है। स्टार्टअप की शब्दावली में, यूनिकॉर्न से तात्पर्य एक निजी स्वामित्व वाली स्टार्टअप कंपनी से है जिसका मूल्य निम्नलिखित से अधिक है:
(1) 100 मिलियन डॉलर
(2) 500 मिलियन डॉलर
(3) 1 बिलियन डॉलर
(4) 10 बिलियन डॉलर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): हैदराबाद और अहमदाबाद के औषधि (फार्मास्युटिकल) समूहों ने निर्यात-उन्मुख विनिर्माण में तेजी से वृद्धि देखी है।
कारण (R): भारतीय पेटेंट कानून के ढांचे और कुशल केमिकल इंजीनियरिंग कार्यबल की उपलब्धता ने ऐतिहासिक रूप से रिवर्स इंजीनियरिंग और थोक जेनेरिक दवा उत्पादन का समर्थन किया है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

31. उभरते उद्योगों और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में "नवाचार समूह" (इनोवेशन क्लस्टर) को क्या परिभाषित करता है?
(1) किसी विशिष्ट क्षेत्र में परस्पर जुड़े व्यवसायों और संबंधित संस्थानों का भौगोलिक संकेंद्रण।
(2) उद्योग के आकार की परवाह किए बिना किसी भी पारंपरिक विनिर्माण इकाई को निःशुल्क भूमि प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई सरकारी योजना।
(3) पूरी तरह से जैविक खेती और पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण के लिए समर्पित एक कृषि क्षेत्र।
(4) विशेष रूप से क्रिप्टोकरेंसी माइनिंग संचालन के लिए बना एक वित्तीय क्षेत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. भारत में ऑटोमोबाइल उद्योग के प्रमुख केंद्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मारुति सुज़ुकी की प्राथमिक और सबसे पुरानी विनिर्माण सुविधाएं गुड़गांव-मानेसर समूह में स्थित हैं।
II. हुंडई मोटर इंडिया ने चेन्नई के पास अपना पहला प्रमुख विनिर्माण संयंत्र स्थापित किया।
III. टाटा मोटर्स का पुणे औद्योगिक समूह में महत्वपूर्ण विनिर्माण परिचालन है।
IV. ऑटोमोबाइल उद्योग निर्यात उद्देश्यों के लिए पूरी तरह से तटीय क्षेत्रों तक सीमित है।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. प्रचुर मात्रा में उच्च श्रेणी के चूना पत्थर निक्षेपों के कारण राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र सीमेंट निर्माण संयंत्रों के संकेंद्रण के लिए प्रमुख है?
(1) जैसलमेर-बाड़मेर क्षेत्र
(2) चित्तौड़गढ़-निम्बाहेड़ा पट्टी
(3) अलवर-भरतपुर क्षेत्र
(4) बीकानेर-चूरू क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. जामनगर रिफाइनरी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के माध्यम से भारत सरकार के स्वामित्व और संचालन में है।
(2) यह अत्यंत उच्च नेल्सन जटिलता सूचकांक (कॉम्प्लेक्सिटी इंडेक्स) के साथ संचालित होती है, जो इसे विभिन्न भारी कच्चे तेलों को संसाधित करने की अनुमति देती है।
(3) इसमें एरोमैटिक्स और पॉलिमर का उत्पादन करने वाला एक एकीकृत पेट्रोकेमिकल परिसर शामिल है।
(4) इसके पास बड़े कच्चे तेल के वाहकों को संभालने के लिए अपने स्वयं के बंदरगाह और टर्मिनल सुविधाएं हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (IT) उद्योग केंद्रों को सूची II में उनके भौगोलिक क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (IT हब)
A. नोएडा
B. चेन्नई
C. पुणे
D. हैदराबाद
सूची II: (क्षेत्र)
i. पश्चिमी भारत
ii. दक्षिण भारत (दक्कन का पठार)
iii. दक्षिण भारत (कोरोमंडल तट)
iv. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR)
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मध्य प्रदेश राज्य में सीमेंट उद्योग की बड़े पैमाने पर स्थापना का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) विशाल लौह अयस्क भंडार की उपलब्धता।
(2) गहरे पानी के बंदरगाह सुविधाओं का अस्तित्व जो तैयार सीमेंट उत्पादों के आसान निर्यात की अनुमति देता है।
(3) सीमेंट की खपत करने वाले IT पार्कों का उच्च घनत्व।
(4) विंध्य पर्वतमाला के भीतर विशाल उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर निक्षेपों की उपस्थिति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

37. निम्नलिखित में से कौन सी भारतीय रक्षा और एयरोस्पेस विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर संचालित होने वाली एक प्रमुख इकाई नहीं है?
(1) भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (BDL)
(2) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)
(3) राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (NMDC)
(4) रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (DPSUs)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तमिलनाडु और गुजरात में पवन ऊर्जा विनिर्माण केंद्र प्रमुख हैं।
II. यह क्षेत्र सौर पीवी मॉड्यूल जैसे उपकरण निर्माण के लिए बड़े अवसर प्रदान करता है।
III. राजस्थान देश में सबसे अधिक स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता रखता है।
IV. नवीकरणीय क्षेत्र सौर और पवन ऊर्जा के संयोजन वाले हाइब्रिड प्रोजेक्ट्स की ओर बढ़ रहा है।
V. नए सौर पार्कों के लिए कोयले की उपलब्धता सबसे

महत्वपूर्ण स्थानीय कारक बनी हुई है।
कौन सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. उद्योग और उसके प्रमुख स्थानिक निर्धारक के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) हीरा कटाई - कुशल पारंपरिक श्रम
(2) पेट्रोकेमिकल्स - तेल रिफाइनरियां / कच्चा माल
(3) एल्युमिनियम स्मेल्टिंग - सस्ती और प्रचुर बिजली
(4) IT उद्योग - भारी कच्चे माल की उपलब्धता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सीमेंट निर्माण की निम्नलिखित प्रक्रियाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. जिप्सम के साथ क्लिंकर की पिसाई
B. चूना पत्थर का क्रशिंग और अनुपातीकरण
C. क्लिंकर बनाने के लिए रोटरी भट्ठे में कच्चे मिश्रण को गर्म करना
D. पैकिंग और प्रेषण
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) B, C, A, D
(2) B, A, C, D
(3) C, B, A, D
(4) A, C, B, D
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. हीरा उद्योग में सूरत का वैश्विक प्रभुत्व मुख्य रूप से किस विशिष्ट मूल्य-श्रृंखला गतिविधि में झलकता है?
(1) गहरी भूमिगत खदानों से कच्चे हीरे का निष्कर्षण।
(2) भारी हीरा खनन मशीनरी का डिजाइन तैयार करना।
(3) कच्चे हीरे की कटाई और पॉलिशिंग।
(4) कोयले से कृत्रिम औद्योगिक हीरों का संश्लेषण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. उर्वरक उद्योग के संदर्भ में, भारत निम्नलिखित में से किस प्राथमिक पादप पोषक तत्व के लिए पूरी तरह से आयात पर निर्भर है?
(1) पोटेशियम
(2) नाइट्रोजन
(3) फास्फोरस
(4) कैल्शियम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'दुनिया की फार्मेसी' का दर्जा प्राप्त होने के बावजूद भारत के दवा उद्योग के भीतर एक संरचनात्मक चुनौती की सही पहचान करता है?
(1) भारत में वैश्विक चिकित्सा आपूर्ति के लिए आवश्यक जेनेरिक फॉर्मूलेशन के निर्माण की मौलिक क्षमता का अभाव है।
(2) फार्मास्युटिकल क्षेत्र को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त करने से पूरी तरह बाहर रखा गया है।
(3) टीकों का उत्पादन करने में सक्षम कोई भी घरेलू समूह नहीं है।
(4) उद्योग को विशिष्ट देशों से आयातित सक्रिय दवा सामग्री (APIs) पर भारी निर्भरता का सामना करना पड़ता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. पेट्रोकेमिकल उद्योग के प्राथमिक उत्पादों के संबंध में निम्नलिखित में से विषम की पहचान कीजिए।
(1) पॉलीथीन (प्लास्टिक)
(2) कास्टिक सोडा
(3) सिंथेटिक रबर (इलास्टोमर्स)
(4) कृत्रिम रेशे (नायलॉन/पॉलिएस्टर)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I में दिए गए निम्नलिखित प्रमुख ऑटोमोबाइल निर्माताओं को सूची II में उनके प्रमुख विनिर्माण केंद्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (निर्माता)
A. मारुति सुजुकी
B. हुंडई
C. टाटा मोटर्स (वाणिज्यिक वाहन)
D. टाटा मोटर्स (यात्री वाहन)
सूची II: (विनिर्माण केंद्र)
i. साणंद
ii. गुड़गांव
iii. श्रीपेरंबुदूर (चेन्नई)
iv. पुणे
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. भारत में तटीय स्थानों की ओर पेट्रोकेमिकल उद्योग का झुकाव मुख्य रूप से किसके द्वारा संचालित है?
(1) गहरे समुद्र में अपशिष्टों को सुरक्षित रूप से निपटाने की आवश्यकता।
(2) कूलिंग टावरों के लिए समुद्र से उपलब्ध मीठे पानी की प्रचुरता।
(3) क्रैकिंग इकाइयों को चलाने के लिए उच्च वेग वाली तटीय हवाओं की आवश्यकता।
(4) आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता और तैयार उत्पादों के निर्यात की सुगमता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

25. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
सीमेंट उद्योग चूना पत्थर के भंडार के पास स्थित होता है क्योंकि यह एक भार-क्षय वाला कच्चा माल है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग जल्द खराब होने वाले कृषि उत्पादों की निकटता के आधार पर स्थापित किए जाते हैं। पेट्रोकेमिकल संयंत्रों को कच्चे माल के आयात हेतु रिफाइनरियों या बंदरगाहों के पास लगाया जाता है। एयरोस्पेस उद्योग उच्च-तकनीकी अनुसंधान संस्थानों और कौशल केंद्रों के पास केंद्रित होता है। यह मिलान उद्योगों की स्थापना को प्रभावित करता है।
औद्योगिक अवस्थिति के ये भौगोलिक कारक उत्पादन लागत और बाजार पहुंच को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

26. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है क्योंकि यह कच्चे माल का मूल्यवर्धन करता है और फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करता है। इससे किसानों को उनके उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। मेगा फूड पार्क मुख्य रूप से प्रसंस्करण, भंडारण और वितरण के लिए एकीकृत बुनियादी ढांचा प्रदान करने हेतु स्थापित किए जाते हैं, न कि आनुवंशिक रूप से संशोधित बीज तैयार करने के लिए।
प्रसंस्करण के माध्यम से कृषि उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ाना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी सहायक होता है।

27. (4) त्रिपुरा
राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश भारत के प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य हैं क्योंकि यहाँ चूना पत्थर के विशाल और उच्च गुणवत्ता वाले भंडार पाए जाते हैं। इन राज्यों में सीमेंट विनिर्माण की बहुत बड़ी स्थापित क्षमता है जो देश की मांग का बड़ा हिस्सा पूरा करती है। इसके विपरीत, त्रिपुरा एक पूर्वोत्तर राज्य है जहाँ बड़े पैमाने पर सीमेंट उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल और औद्योगिक बुनियादी ढांचे की कमी है।
चूना पत्थर की प्रचुरता ही इन तीन राज्यों को सीमेंट उद्योग के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करती है।

28. (2) I और III
आयुध निर्माणी इकाइयां सशस्त्र बलों के लिए हथियारों और गोला-बारूद के उत्पादन हेतु उत्तरदायी हैं। सरकार ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाई है और स्वदेशीकरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। कथन 2 गलत है क्योंकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन सैन्य प्रणालियों के विकास में लगा है, न कि व्यावसायिक नागरिक विमानों के विनिर्माण में। रक्षा में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ रही है।
इन नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारत को रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करना है।

29. (3) 1 बिलियन डॉलर
नवाचार उद्यम शब्दावली में "यूनिकॉर्न" से तात्पर्य उस निजी स्वामित्व वाली स्टार्टअप कंपनी से है जिसका बाजार मूल्य 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो जाता है। भारत हाल के वर्षों में विश्व के सबसे बड़े स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक बनकर उभरा है। यह शब्द नवाचार और तीव्र विकास करने वाली कंपनियों की आर्थिक सफलता और बाजार में उनकी सुदृढ़ स्थिति को दर्शाता है। यह निवेश आकर्षण का प्रमुख सूचक है।
यूनिकॉर्न की बढ़ती संख्या भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की परिपक्वता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हैदराबाद और अहमदाबाद भारतीय दवा उद्योग के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र हैं। भारत के ऐतिहासिक पेटेंट कानून के ढांचे और कुशल कार्यबल ने जेनेरिक दवाओं के विकास में सहायता की। प्रक्रिया पेटेंट की अनुमति मिलने से भारतीय कंपनियों को रिवर्स इंजीनियरिंग के माध्यम से सस्ती जेनेरिक दवाएं विकसित करने का अवसर मिला। इसके कारण ये शहर निर्यात-उन्मुख विनिर्माण केंद्रों के रूप में विकसित हुए और भारत को "विश्व की फार्मेसी" का दर्जा मिला।
कुशल मानव संसाधन और अनुकूल नियामक वातावरण ने इस क्षेत्र की अभूतपूर्व औद्योगिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

31. (1) किसी विशिष्ट क्षेत्र में परस्पर जुड़े व्यवसायों और संबंधित संस्थानों का भौगोलिक संकेंद्रण।
नवाचार समूह या इनोवेशन क्लस्टर से तात्पर्य किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में परस्पर जुड़े व्यवसायों, अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों के संकेंद्रण से है। ये समूह ज्ञान के साझाकरण, सहयोग और संसाधनों की सुलभ उपलब्धता के माध्यम से तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देते हैं। बेंगलुरु का सॉफ्टवेयर समूह इसका उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ विभिन्न इकाइयां मिलकर नवाचार का पारिस्थितिकी तंत्र बनाती हैं। यह प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
यह संकेंद्रण नवाचार की गति को तेज करता है और क्षेत्रीय आर्थिक विकास को एक नई दिशा प्रदान करता है।

NODIA

32. (1) I, II और III
मारुति सुजुकी की शुरुआती विनिर्माण सुविधाएं गुड़गांव-मानेसर क्षेत्र में स्थापित हुई थीं, जिसने इस क्षेत्र में ऑटो हब की नींव रखी। हुंडई ने चेन्नई के पास श्रीपेरंबुदूर में अपना बड़ा संयंत्र लगाया है जबकि टाटा मोटर्स पुणे में अपनी वाहन इकाइयों के लिए जाना जाता है। कथन 4 गलत है क्योंकि ऑटोमोबाइल उद्योग केवल तटीय क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। गुड़गांव और पुणे जैसे अंतर्देशीय शहरों में भी इसके सफल क्लस्टर विकसित हुए हैं।
यह उद्योग सहायक इकाइयों और कुशल श्रम की उपलब्धता के आधार पर देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फैला है।

33. (2) चित्तौड़गढ़-निम्बाहेड़ा पट्टी
राजस्थान में चित्तौड़गढ़-निम्बाहेड़ा पट्टी सीमेंट निर्माण संयंत्रों के संकेंद्रण के लिए सबसे प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र है। यहाँ विंध्यन क्रम की चट्टानों में उच्च श्रेणी के चूना पत्थर के प्रचुर भंडार पाए जाते हैं जो सीमेंट उत्पादन का मुख्य कच्चा माल है। इस प्रचुरता

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

घोषणा की गई है।
(4) सरकार निर्दिष्ट रक्षा उपकरणों के आयात पर प्रतिबंध लगाने के लिए "सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची" को अपडेट करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I में उभरते उद्योगों को सूची II में उनकी प्रमुख विशेषताओं या संबंधित केंद्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उद्योग)
A. हीरा कटाई
B. एयरोस्पेस
C. IT और सॉफ्टवेयर
D. नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण
सूची II: (विशेषता/केंद्र)
i. सूरत
ii. बेंगलुरु
iii. HAL और ISRO पारिस्थितिकी तंत्र
iv. सौर पीवी मॉड्यूल और पवन टर्बाइन
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. वह ऐतिहासिक कारण क्या है जिसने बेंगलुरु को भारत के प्रमुख एयरोस्पेस और रक्षा केंद्र के रूप में उभरने की नींव रखी?
(1) HAL की स्थापना और भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) की निकटता।
(2) इसका तटीय भूगोल जिसने विमान भागों के आसान आयात की अनुमति दी।
(3) शहर के आसपास के क्षेत्र में विशाल बॉक्साइट भंडार की खोज।
(4) स्वतंत्रता के बाद दक्षिण भारत में विदेशी विमान परिचालन पर पूर्ण प्रतिबंध।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. भारत में विभिन्न उर्वरक संयंत्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल (फीडस्टॉक) के संदर्भ में विषम का चयन कीजिए।
(1) प्राकृतिक गैस
(2) नेफ्था
(3) लौह अयस्क
(4) ईंधन तेल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित मध्यवर्ती और अंतिम उत्पादों पर विचार कीजिए:
I. पॉलिमर (जैसे, पॉलीविनाइल क्लोराइड)
II. कृत्रिम रेशे (जैसे, पॉलिएस्टर)
III. इलास्टोमर्स (जैसे, सिंथेटिक रबर)
IV. सर्फेक्टेंट (डिटर्जेंट)
V. पोर्टलैंड सीमेंट क्लिंकर
निम्नलिखित में से कौन सा संयोजन पेट्रोकेमिकल उद्योग से प्राप्त उत्पादों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. प्रमुख भारतीय रिफाइनरियों और उनकी संचालन कंपनियों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) पानीपत रिफाइनरी - रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL)
(2) जामनगर रिफाइनरी - इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL)
(3) मथुरा रिफाइनरी - हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL)
(4) कोच्चि रिफाइनरी - भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. भारत में उत्तर से दक्षिण की ओर निम्नलिखित प्रमुख IT केंद्रों का सही भौगोलिक क्रम चुनिए।
(1) नोएडा, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई
(2) पुणे, नोएडा, चेन्नई, हैदराबाद
(3) नोएडा, हैदराबाद, पुणे, चेन्नई
(4) हैदराबाद, पुणे, नोएडा, चेन्नई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. मध्य प्रदेश में कटनी-सतना-रीवा पट्टी प्रसिद्ध रूप से किस विशिष्ट उद्योग के उच्च संकेंद्रण से जुड़ी है?
(1) इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर
(2) एयरोस्पेस विनिर्माण
(3) सीमेंट उद्योग
(4) हीरा कटाई और पॉलिशिंग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. भारत के IT और बिजनेस प्रोसेस मैनेजमेंट (BPM) उद्योग के भीतर राजस्व और निर्यात में किस क्षेत्र की प्रमुख हिस्सेदारी है?
(1) हार्डवेयर घटकों और प्रणालियों का विनिर्माण
(2) पैकेज्ड सॉफ्टवेयर समाधानों का विकास
(3) सेमीकंडक्टर वेफर विनिर्माण
(4) IT सेवाएं और सॉफ्टवेयर विकास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. निम्नलिखित में से कौन सा कथन "स्टार्टअप इनक्यूबेटर" का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) एक कार्यक्रम जो स्टार्टअप्स को कार्यस्थल, वित्तीय सहायता, मेंटरिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके सफल होने में मदद करता है।
(2) एक वित्तीय संस्थान जो केवल स्थापित बहुराष्ट्रीय निगमों को ऋण प्रदान करता है।
(3) उभरते IT व्यवसायों को लक्षित करने वाली एक सरकारी

Downloaded from www.pdf.tube

समाप्त करना।

(4) पूरे सशस्त्र बलों को केवल घरेलू पारंपरिक हथियारों की ओर ले जाना।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. भारत में नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग के विकास के हिस्से के रूप में उनकी स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के आधार पर निम्नलिखित राज्यों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

A. राजस्थान

B. गुजरात

C. कर्नाटक

D. असम

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:

(1) A, B, C, D

(2) D, C, B, A

(3) B, A, C, D

(4) A, C, B, D

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA
www.nodia.in

जैसे सरल अणुओं में तोड़ना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. उर्वरक उद्योग के वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कच्चे माल की निकटता उर्वरक संयंत्रों के स्थान के लिए एकमात्र निर्धारक कारक है।
II. प्राकृतिक गैस आधारित यूरिया संयंत्र देशव्यापी गैस पाइपलाइनों के किनारे वितरित हैं।
III. आयातित रॉक फॉस्फेट और पोटाश पर निर्भर संयंत्रों के लिए बंदरगाह स्थानों को प्राथमिकता दी जाती है।
IV. उद्योग को भारी पूंजी निवेश और स्थिर बिजली आपूर्ति की आवश्यकता होती है।
कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. मुख्य रूप से बेंगलुरु में स्थित कौन सा प्रमुख रक्षा और एयरोस्पेस संस्थान, लड़ाकू विमानों और हेलीकाप्टरों के भारत के प्रमुख डिजाइनर और निर्माता के रूप में कार्य करता है?
(1) भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (BHEL)
(2) गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE)
(3) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)
(4) मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. भारत के ऑटोमोबाइल उद्योग समूहों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ऑटोमोबाइल उद्योग ने इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) के निर्माण की ओर कोई रुचि नहीं दिखाई है।
(2) पुणे समूह को मुंबई बंदरगाह की निकटता और एक मजबूत सहायक घटक आधार का लाभ मिलता है।
(3) गुड़गांव-मानेसर समूह शुरू में मारुति उद्योग लिमिटेड की स्थापना के साथ विकसित हुआ।
(4) चेन्नई समूह में यात्री कारों, वाणिज्यिक वाहनों और ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग सहित एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र शामिल है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची I में दिए गए निम्नलिखित औद्योगिक समूहों को सूची II में उनके संबंधित राज्यों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (औद्योगिक क्लस्टर)
A. गुड़गांव ऑटोमोबाइल क्लस्टर
B. श्रीपेरंबुदूर इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटो हब
C. चाकन औद्योगिक क्षेत्र
D. पीथमपुर ऑटो क्लस्टर
सूची II: (राज्य)
i. मध्य प्रदेश
ii. हरियाणा
iii. महाराष्ट्र
iv. तमिलनाडु
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. बेंगलुरु, पुणे और हैदराबाद जैसे शहरों में मजबूत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और नवाचार समूहों का उदय मुख्य रूप से किसका परिणाम है?
(1) शहरी अचल संपत्ति की अत्यंत कम कीमतें।
(2) इंजीनियरिंग प्रतिभा का संकेंद्रण और अनुसंधान संस्थानों से निकटता।
(3) पर्यावरणीय नियमों का पूर्ण अभाव।
(4) बड़े पैमाने पर भारी धातुकर्म और खनिज आधारित उद्योगों से भौगोलिक निकटता।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. निम्नलिखित में से कौन सा कारक भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए एक बड़ी बाधा या चुनौती है?
(1) विविध कृषि-जलवायु क्षेत्र जो विभिन्न फसलों के उत्पादन की अनुमति देते हैं।
(2) बढ़ता शहरीकरण और बदलती आहार संबंधी आदतें।
(3) कटाई के बाद के नुकसान का उच्च स्तर और अपर्याप्त शीत श्रृंखला (कोल्ड चेन) बुनियादी ढांचा।
(4) निर्यात के लिए रणनीतिक भौगोलिक स्थिति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राजस्थान में मौजूद निम्नलिखित उद्योगों पर विचार कीजिए:
I. सीमेंट उद्योग
II. सौर ऊर्जा उपकरण विनिर्माण
III. नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक उद्योग
IV. जहाज निर्माण उद्योग
V. IT और स्टार्टअप पार्क
निम्नलिखित में से कौन सा संयोजन राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य को सटीक रूप से दर्शाता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. स्वदेशी रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देने और आयात निर्भरता कम करने के पीछे सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक उद्देश्य क्या है?
(1) रणनीतिक स्वायत्तता प्राप्त करना और आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करना।
(2) विमान उत्पादन के सभी रूपों पर पूर्ण राज्य एकाधिकार सुनिश्चित करना।
(3) किसी भी विदेशी राजनयिक संबंधों की आवश्यकता को

Click Here to Buy book on Amazon

47. निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर भारत में एक प्रमुख ऑटोमोबाइल विनिर्माण समूह के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है?
(1) डिगबोई-नाहरकटिया (असम)
(2) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (गुड़गांव-मानेसर)
(3) चाकन-तलेगांव (पुणे)
(4) ओरागडम-श्रीपेरंबुदूर (चेन्नई)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नवाचार समूह (इनोवेशन क्लस्टर) आमतौर पर प्रमुख तकनीकी संस्थानों की निकटता और उद्यम पूंजी की उपलब्धता द्वारा समर्थित होते हैं।
II. टियर-2 और टियर-3 शहर स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में कोई भागीदारी नहीं दिखा रहे हैं।
III. "स्टार्टअप इंडिया" जैसी सरकारी पहलों का उद्देश्य अनुपालन को सरल बनाना और वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
दिए गए कथनों के संयोजनों में से कौन सा गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) I और III
(4) II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विकास किसानों के लिए बेहतर लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने में मदद करता है।
कथन II: खाद्य प्रसंस्करण में केवल कच्चे कृषि उत्पादों की पैकेजिंग शामिल है, बिना उनके भंडारण काल (शेल्फ लाइफ) को बढ़ाए।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): IT और IT-सक्षम सेवा (ITeS) क्षेत्र भारत की व्यापक आर्थिक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
कारण (R): मजबूत IT निर्यात पर्याप्त विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, जो भारत के वस्तु व्यापार घाटे को कम करने में मदद करता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग को "सनराइज सेक्टर" के रूप में जाना जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा सेमीकंडक्टर विनिर्माण की मूलभूत प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) इसे अत्यधिक श्रम-प्रधान माना जाता है और इसमें न्यूनतम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
(2) यह विशेष रूप से स्थानीय रूप से प्राप्त निम्न-श्रेणी के सिलिकॉन पर निर्भर करता है।
(3) यह पूंजी-प्रधान, तकनीकी रूप से जटिल और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर है।
(4) यह शहरी क्षेत्रों में फैल रहा एक असंगठित क्षेत्र का कुटीर उद्योग है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. भारत में दवा उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हैदराबाद को "भारत की थोक औषधि राजधानी" (बल्क ड्रग कैपिटल) के रूप में मान्यता प्राप्त है।
II. अहमदाबाद और गुजरात समूह भारत के दवा विनिर्माण में एक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखते हैं।
III. पेटेंट अधिनियम, 1970 के लागू होने से भारत की फार्मास्युटिकल वृद्धि पूरी तरह से रुक गई थी।
IV. प्रमुख प्रारंभिक सामग्रियों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजनाएं शुरू की गई हैं।
कौन सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. भारत के सबसे बड़े तटवर्ती पवन ऊर्जा केंद्रों में से एक, मुप्पंडल पवन फार्म किस राज्य में स्थित है?
(1) राजस्थान
(2) गुजरात
(3) तमिलनाडु
(4) महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

54. भारत के रक्षा विनिर्माण क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) नए सरकारी मानदंडों के तहत रक्षा विनिर्माण को निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए तेजी से खोला जा रहा है।
(2) आयुध निर्माणी बोर्ड एक सरकारी विभाग बना हुआ है और उसने किसी भी प्रकार के निगमीकरण का विरोध किया है।
(3) क्षेत्रीय विनिर्माण केंद्रों को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा गलियारों (डिफेंस कॉरिडोर) की

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) प्राकृतिक गैस और नेफ्था
पेट्रोकेमिकल उद्योग में प्राकृतिक गैस और नेफ्था का उपयोग प्राथमिक कच्चे माल के रूप में होता है। नेफ्था कच्चे तेल के शोधन से प्राप्त होने वाला एक महत्वपूर्ण तरल हाइड्रोकार्बन मिश्रण है। इन फीडस्टॉक के माध्यम से एथिलीन और प्रोपलीन जैसे रसायनों का उत्पादन किया जाता है। ये रसायन आगे चलकर कृत्रिम रेशे, प्लास्टिक और इलास्टोमर्स जैसे महत्वपूर्ण उत्पादों के निर्माण के लिए आधार प्रदान करते हैं।
यह उद्योग आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक विभिन्न सामग्रियों का उत्पादन करने हेतु पूरी तरह से इन हाइड्रोकार्बन संसाधनों पर निर्भर रहता है।

2. (1) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL)
जामनगर रिफाइनरी का स्वामित्व और संचालन रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा किया जाता है। यह गुजरात के जामनगर जिले में स्थित है और इसे विश्व के सबसे बड़े नवनिर्मित रिफाइनरी परिसर के रूप में जाना जाता है। इसमें कच्चे तेल को शोधित करने की विशाल क्षमता है जो इसे वैश्विक स्तर पर अद्वितीय बनाती है। यह इकाई घरेलू ईंधन की मांग के साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उत्पादों का निर्यात भी करती है।
यह निजी क्षेत्र का उपक्रम भारत की ऊर्जा सुरक्षा और निर्यात क्षमता को सुदृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. (3) वे बंदरगाह आधारित रिफाइनरियां हैं जिन्हें आयातित कच्चे तेल को आसानी से संसाधित करने के लिए स्थापित किया गया है।
मुंबई और कोच्चि में स्थित रिफाइनरियां मुख्य रूप से बंदरगाह आधारित शोधन इकाइयां हैं। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए तटीय क्षेत्रों में रिफाइनरियों की स्थापना परिवहन लागत को कम करती है। यह रणनीतिक स्थिति आयातित कच्चे तेल को जहाजों से सीधे शोधन संयंत्रों तक पहुँचाने और पेट्रोलियम उत्पादों को देश के विभिन्न हिस्सों में वितरित करने की सुविधा प्रदान करती है। इस प्रकार का स्थानिक लाभ कच्चे माल की रसद लागत को कम करके परिचालन दक्षता को काफी बढ़ा देता है।

4. (4) प्राकृतिक गैस पाइपलाइन
भारत में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक उद्योगों का वितरण मुख्य रूप से प्राकृतिक गैस पाइपलाइनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है। प्राकृतिक गैस यूरिया जैसे उर्वरकों के निर्माण के लिए मुख्य कच्चे माल और ऊर्जा स्रोत के रूप में कार्य करती है। हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर जैसी गैस पाइपलाइन परियोजनाओं ने इन संयंत्रों को उनके कच्चे माल के स्रोतों से दूर, कृषि मांग वाले क्षेत्रों के भीतर स्थापित करने में सक्षम बनाया है। पाइपलाइन नेटवर्क ने अंतर्देशीय क्षेत्रों में उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित की है, जिससे किसानों को समय पर और सस्ती आपूर्ति प्राप्त होती है।

5. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मथुरा रिफाइनरी उत्तर प्रदेश में स्थित है जो उत्तर भारत की पेट्रोलियम मांग को पूरा करती है। कोच्चि रिफाइनरी केरल में स्थित एक प्रमुख तटीय शोधन इकाई है। पानीपत रिफाइनरी हरियाणा में स्थित है और यह उत्तरी राज्यों को ऊर्जा प्रदान करती है। मुंबई रिफाइनरी महाराष्ट्र में स्थित है। यह मिलान दर्शाता है कि भारत में रिफाइनरियां कच्चे माल के आयात और क्षेत्रीय वितरण के आधार पर स्थापित हैं।
विभिन्न राज्यों में इन रिफाइनरियों की स्थिति संतुलित क्षेत्रीय औद्योगिक विकास और ऊर्जा पहुंच सुनिश्चित करने में सहायता करती है।

6. (2) जेनेरिक दवाओं और टीकों का बड़े पैमाने पर उत्पादन
भारत को अपनी विशाल उत्पादन क्षमता के कारण "विश्व की फार्मेसी" के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारतीय दवा कंपनियां वैश्विक स्तर पर किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाएं और टीके उपलब्ध कराने में अग्रणी रही हैं। यह उद्योग घरेलू स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ विकासशील देशों को जीवन रक्षक दवाओं का निर्यात भी करता है। कुशल कार्यबल और तकनीकी विशेषज्ञता ने इस क्षेत्र में भारत का प्रभाव बढ़ाया है।
यह क्षमता वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा को सुदृढ़ करने और सस्ती स्वास्थ्य देखभाल को सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

7. (4) सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों की स्थापना।
बेंगलुरु में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की तीव्र वृद्धि का मुख्य श्रेय सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों की स्थापना को जाता है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड और भारतीय विज्ञान संस्थान ने तकनीकी कौशल और नवाचार के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार किया। इस शैक्षिक और औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र ने कुशल इंजीनियरों की उपलब्धता सुनिश्चित की, जिससे वैश्विक कंपनियों ने इस शहर को अपना केंद्र बनाया।
इन ऐतिहासिक संस्थागत कारकों ने शहर को आधुनिक तकनीकी केंद्र और भारत की 'सिलिकॉन वैली' के रूप में स्थापित किया।

8. (3) I और II
सीमेंट उद्योग एक भार-क्षय वाला उद्योग है क्योंकि इसका मुख्य कच्चा माल चूना पत्थर भारी और सस्ता होता है। परिवहन

NODIA

कर संग्रह एजेंसी।
(4) एयरोस्पेस क्षेत्र के लिए घटकों का उत्पादन करने वाला एक भारी मशीनरी संयंत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. निम्नलिखित में से कौन सा आमतौर पर आधुनिक नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण के तहत वर्गीकृत नहीं है?
(1) फोटोवोल्टिक (PV) सेल
(2) सुपरक्रिटिकल पल्वराइज्ड कोल बॉयलर
(3) पवन टर्बाइन नेसेल्स और ब्लेड
(4) ग्रीन हाइड्रोजन के लिए इलेक्ट्रोलाइजर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I में खाद्य प्रसंस्करण उप-क्षेत्रों को सूची II में उनके प्राथमिक कच्चे माल के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उप-क्षेत्र)
A. डेयरी प्रसंस्करण
B. खाद्य तेल निष्कर्षण
C. मिलिंग उद्योग
D. फल प्रसंस्करण
सूची II: (कच्चा माल)
i. गेहूं और चावल
ii. सेब और आम
iii. दूध
iv. सरसों और मूंगफली
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. सूरत समूह सहित वैश्विक हीरा उद्योग, लैब-ग्रोन डायमंड्स (LGDs) से तकनीकी बदलाव देख रहा है। इन कृत्रिम हीरों के उत्पादन की प्राथमिक विधि क्या है?
(1) CVD और उच्च दाब उच्च तापमान (HPHT) प्रक्रियाएं।
(2) उन्हें गहरे समुद्र के नोड्यूल्स से निकालना।
(3) अम्लीय विलायकों का उपयोग करके क्वाट्र्ज क्रिस्टल को शुद्ध करना।
(4) शून्य से नीचे के तापमान पर कांच के टुकड़ों को पुन: संपीड़ित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर क्षेत्र के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना का लक्ष्य मोबाइल फोन आयात में कमी लाना है।
कथन II: PLI योजना किसी भी विदेशी कंपनी को भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण विकास में भाग लेने से रोकती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. जामनगर रिफाइनरी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह गुजरात में कच्छ की खाड़ी के तट पर स्थित है।
II. इसमें भारी कच्चे तेल की श्रेणियों को उच्च-मूल्य वाले उत्पादों में संसाधित करने की क्षमता है।
III. यह बिना किसी पेट्रोकेमिकल एकीकरण के केवल एक ईंधन रिफाइनरी के रूप में कार्य करती है।
दिए गए कथनों के संयोजनों में से कौन सा सही है?
(1) I और III
(2) II और III
(3) I और II
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. निम्नलिखित शहरों में से विषम का चयन कीजिए, जिसे पारंपरिक रूप से भारत में दवा उद्योग के प्रमुख केंद्र के रूप में नहीं जाना जाता है।
(1) हैदराबाद
(2) अहमदाबाद
(3) जैसलमेर
(4) बद्दी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सीमेंट निर्माण संयंत्र मुख्य रूप से चूना पत्थर खनन क्षेत्रों के निकट स्थित होते हैं।
कारण (R): चूना पत्थर एक भारी और भार-क्षय वाला कच्चा माल है, जिससे इसे लंबी दूरी तक ले जाना आर्थिक रूप से अव्यवहार्य हो जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. पेट्रोकेमिकल उद्योग के संदर्भ में, "क्रैकिंग" प्रक्रिया का क्या अर्थ है?
(1) औद्योगिक बॉयलर के लिए कच्चे कोयले को बारीक पाउडर में तोड़ने की प्रक्रिया।
(2) कृत्रिम हीरों को चमकाने के लिए उपयोग की जाने वाली विधि।
(3) सीमेंट को पुनर्चक्रित करने के लिए कंक्रीट संरचनाओं का विखंडन।
(4) जटिल हाइड्रोकार्बन अणुओं को एथिलीन और प्रोपलीन

Downloaded from www.pdf.tube

इसके साथ ही, यह शहर में एयरोस्पेस से जुड़ी अनेक सहायक औद्योगिक इकाइयों के विकास को भी प्रोत्साहित करता है।

17. (2) पुणे - प्रमुख दोपहिया और यात्री वाहन केंद्र
पुणे भारत का एक प्रमुख ऑटोमोबाइल समूह है जिसे "ऑटो हब" के रूप में जाना जाता है। यहाँ यात्री वाहनों के साथ दोपहिया वाहनों के लिए विशाल विनिर्माण इकाइयां स्थित हैं। चेन्नई को "भारत का डेट्रायट" कहा जाता है जहाँ सभी प्रकार के वाहनों का उत्पादन होता है। गुड़गांव मुख्य रूप से यात्री कारों के लिए प्रसिद्ध है, न कि भारी मशीनरी के लिए। जमशेदपुर वाणिज्यिक वाहनों और भारी इंजीनियरिंग का केंद्र है।
अतः पुणे का वर्णन दोपहिया और यात्री वाहनों के केंद्र के रूप में भौगोलिक रूप से सबसे सटीक और सही है।

18. (1) I, II, III और IV
भारत का सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र सेवा निर्यात में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है और विदेशी मुद्रा भंडार में महत्वपूर्ण योगदान देता है। उत्तरी अमेरिका और यूरोप इसके प्रमुख बाजार हैं। इस क्षेत्र ने शहरी क्षेत्रों में लाखों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा किए हैं। हालांकि, पांचवां कथन गलत है क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र को विशेष आर्थिक क्षेत्रों और सरकारी कर प्रोत्साहनों से काफी लाभ मिलता है जो इसके विकास में सहायक रहे हैं।
सरकारी नीतियां और कर लाभ इस क्षेत्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बनाए रखने में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहे हैं।

19. (3) बॉक्साईट
पोर्टलैंड सीमेंट के निर्माण में मुख्य रूप से चूना पत्थर, जिप्सम और मिट्टी का उपयोग किया जाता है। कोयला भट्टियों को गर्म करने के लिए ऊर्जा स्रोत के रूप में आवश्यक होता है। हालांकि बॉक्साइट का उपयोग कुछ विशिष्ट प्रकार के सीमेंट बनाने में किया जा सकता है, लेकिन यह सामान्य पोर्टलैंड सीमेंट के लिए प्राथमिक कच्चा माल नहीं है। चूना पत्थर इसमें सर्वाधिक मात्रा में उपयोग होने वाला घटक है जो सीमेंट को मजबूती प्रदान करता है।
सीमेंट उद्योग की अवस्थिति मुख्य रूप से चूना पत्थर और कोयले की भौगोलिक उपलब्धता द्वारा निर्धारित की जाती है।

20. (1) पानीपत, मथुरा, मुंबई, कोच्चि
भौगोलिक दृष्टि से उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, पानीपत रिफाइनरी सबसे उत्तर में हरियाणा में स्थित है। इसके बाद उत्तर प्रदेश की मथुरा रिफाइनरी आती है जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निकट है। आगे दक्षिण की ओर बढ़ने पर महाराष्ट्र के तट पर मुंबई रिफाइनरी स्थित है। अंत में, दक्षिण भारत के केरल राज्य में कोच्चि रिफाइनरी आती है। यह क्रम भारत में तेल शोधन क्षमताओं के रणनीतिक भौगोलिक वितरण को दर्शाता है।
यह वितरण क्षेत्रीय ईंधन आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करने और रसद लागत को कम करने में सहायता करता है।

21. (3) चेन्नई
चेन्नई को "भारत का डेट्रायट" कहा जाता है क्योंकि यहाँ ऑटोमोबाइल विनिर्माण और संबंधित सहायक उद्योगों का विशाल संकेंद्रण है। यहाँ कई प्रमुख वैश्विक और घरेलू वाहन निर्माताओं के आधुनिक संयंत्र स्थित हैं। शहर के पास स्थित बंदरगाह वाहनों के आसान निर्यात को सुलभ बनाता है। मजबूत घटक उद्योग की उपस्थिति के कारण चेन्नई दक्षिण एशिया में ऑटोमोबाइल उत्पादन के लिए सबसे महत्वपूर्ण और प्रतिस्पर्धी केंद्रों में से एक बन गया है।
यह शहर ऑटोमोबाइल मूल्य श्रृंखला के सभी चरणों में अपनी विशेषज्ञता और सुदृढ़ औद्योगिक आधार रखता है।

22. (2) HVJ गैस पाइपलाइन ने मांग केंद्रों के पास अंतर्देशीय उर्वरक संयंत्र स्थापित करने में सक्षम बनाया है।
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर गैस पाइपलाइन ने भारत में उर्वरक उद्योग के परिदृश्य को परिवर्तित कर दिया है। इस पाइपलाइन ने प्राकृतिक गैस को तटीय क्षेत्रों से देश के आंतरिक भागों तक पहुँचाना संभव बनाया, जिससे मांग केंद्रों के पास उर्वरक संयंत्र स्थापित किए जा सके। भारत वर्तमान में पोटाश उर्वरकों के लिए पूरी तरह आयात पर निर्भर है और नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस एक आवश्यक कच्चा माल और ऊर्जा स्रोत है।
इस बुनियादी ढांचे ने कृषि क्षेत्रों में उर्वरकों की पहुंच को सरल, प्रभावी और अधिक किफायती बना दिया है।

NODIA

23. (4) यह कृत्रिम कच्चा माल प्रदान करता है जो लकड़ी और प्राकृतिक रबर जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का स्थान लेता है।
आधुनिक अर्थव्यवस्था में पेट्रोकेमिकल उद्योग का महत्व इसके द्वारा उत्पादित कृत्रिम कच्चे माल के कारण है। यह उद्योग प्लास्टिक, कृत्रिम रेशे और सिंथेटिक रबर जैसे उत्पाद प्रदान करता है जो लकड़ी, कपास और प्राकृतिक रबर जैसी सीमित प्राकृतिक सामग्रियों का विकल्प बनते हैं। ये उत्पाद टिकाऊ और बहुमुखी होते हैं जिनका उपयोग निर्माण, पैकेजिंग, वस्त्र और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। यह उद्योग आधुनिक विनिर्माण का आधार है।
इसने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम करते हुए औद्योगिक उत्पादन की नई और व्यापक संभावनाओं को जन्म दिया है।

24. (1) आयातित सक्रिय घटकों और चिप्स पर भारी निर्भरता।
भारत के उभरते इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर क्षेत्र के सामने सबसे बड़ी चुनौती सक्रिय घटकों और चिप्स के लिए विदेशी देशों पर अत्यधिक निर्भरता है। हालांकि घरेलू स्तर पर असेंबलिंग और डिजाइनिंग की क्षमता बढ़ी है, लेकिन वास्तविक चिप विनिर्माण इकाइयों की कमी है। इसके कारण भारत को अपनी आवश्यकताओं के लिए बड़े पैमाने पर आयात करना पड़ता है, जो व्यापार घाटे को बढ़ाता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के प्रति संवेदनशील बनाता है।
घरेलू विनिर्माण क्षमता को विकसित करना इस क्षेत्र की सुरक्षा और दीर्घकालिक विकास के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

लागत न्यूनतम करने के लिए संयंत्रों को चूना पत्थर निक्षेपों के पास स्थापित किया जाता है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश चूना पत्थर की प्रचुरता के कारण प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य हैं। कथन 3 गलत है क्योंकि सीमेंट उत्पादन में कोयले और विद्युत शक्ति की आपूर्ति अनिवार्य होती है।
अतः संयंत्रों का स्थान निर्धारण मुख्य रूप से कच्चे माल की निकटता और ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

9. (3) धनबाद
हैदराबाद, पुणे और नोएडा भारत के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर सेवा केंद्र हैं जहाँ वैश्विक कंपनियों के कार्यालय स्थित हैं। इसके विपरीत, धनबाद मुख्य रूप से कोयला खनन और संबंधित भारी उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है। इसे भारत की कोयला राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह शहर सॉफ्टवेयर सेवाओं के बजाय खनन और धातु विज्ञान के क्षेत्र में अपनी पहचान रखता है, इसलिए यह अन्य तीनों शहरों से भिन्न है।
अन्य शहर उच्च-तकनीकी सेवा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि धनबाद का आधार खनिज और पारंपरिक विनिर्माण उद्योग है।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सूरत के पास अपनी कोई हीरा खदान नहीं है, फिर भी यह वैश्विक हीरा कटाई और पॉलिशिंग का प्रमुख केंद्र है। इसका मुख्य कारण कुशल कार्यबल की उपलब्धता है जो पीढ़ियों से इस जटिल कला में निपुण है। साथ ही, मुंबई बंदरगाह की भौगोलिक निकटता आयातित कच्चे हीरों को प्राप्त करने और पॉलिश किए गए हीरों को निर्यात करने में सहायता करती है। उद्यमियों के मजबूत नेटवर्क ने सूरत को प्रतिस्पर्धी केंद्र बना दिया है।
इस प्रकार कुशल श्रम और रणनीतिक स्थान के संयोजन ने खदानों की कमी के बावजूद शहर को शीर्ष पर रखा है।

11. (4) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन भारत के रक्षा मंत्रालय के तहत प्राथमिक अनुसंधान निकाय के रूप में कार्य करता है। यह संगठन अत्याधुनिक सैन्य प्रौद्योगिकियों और हथियारों के स्वदेशी विकास पर केंद्रित है। इसका मुख्य लक्ष्य भारत को उन्नत रक्षा क्षमताओं में आत्मनिर्भर बनाना है। यह विमानन, इलेक्ट्रॉनिक्स, मिसाइल प्रणालियों और युद्धक वाहनों के क्षेत्र में कार्य करता है। इसका योगदान भारत के सैन्य तंत्र को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण रहा है।
यह संगठन देश की रक्षा तैयारियों को आधुनिक बनाने और विदेशी उपकरणों पर निर्भरता कम करने का निरंतर प्रयास करता है।

12. (2) I, III और IV
राजस्थान अपनी भौगोलिक स्थिति और उच्च सौर विकिरण के कारण सौर ऊर्जा उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। राष्ट्रीय सौर मिशन का उद्देश्य भारत को सौर ऊर्जा में वैश्विक शक्ति बनाना है। हालांकि, पवन ऊर्जा केंद्र मुख्य रूप से तटीय राज्यों जैसे तमिलनाडु और गुजरात में केंद्रित हैं, न कि उत्तर प्रदेश जैसे भू-आबद्ध राज्यों में। इसलिए दूसरा कथन गलत है जबकि अन्य सभी महत्वपूर्ण कथन तकनीकी रूप से सही हैं।
भारत की अक्षय ऊर्जा नीति राज्यों के विशिष्ट भौगोलिक लाभों का उपयोग करके राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना चाहती है।

13. (3) खराब होने से बचाने और कच्चे माल की परिवहन लागत को कम करने के लिए फल उत्पादक क्षेत्रों (पश्चभूमि) के पास।
खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए कच्चे माल के स्रोतों के पास स्थित होना सबसे उपयुक्त होता है। फल जल्द खराब होने वाले पदार्थ हैं, इसलिए उन्हें लंबी दूरी तक ले जाने पर गुणवत्ता में कमी का खतरा रहता है। उत्पादन क्षेत्रों के पास संयंत्र स्थापित करने से परिवहन लागत कम होती है और ताजे कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है। यह उत्पाद की गुणवत्ता और व्यावसायिक लाभ के लिए अत्यंत आवश्यक है।
औद्योगिक अवस्थिति का यह सिद्धांत कच्चे माल के भार और उनकी नश्वरता को प्राथमिक आर्थिक कारक मानता है।

14. (4) भारत वर्तमान में अपनी पूरी घरेलू मांग को स्वदेशी चिप विनिर्माण संयंत्रों के माध्यम से पूरा करता है।
भारत वर्तमान में अपनी सेमीकंडक्टर चिप्स की लगभग पूरी मांग को आयात के माध्यम से पूरा करता है। हालांकि सरकार ने 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' शुरू किया है और घरेलू पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के प्रयास जारी हैं, लेकिन अभी तक देश में पूर्ण उत्पादन क्षमता विकसित नहीं हुई है। सेमीकंडक्टर विनिर्माण एक अत्यंत जटिल, पूंजी-प्रधान और परिष्कृत तकनीक वाला क्षेत्र है। इसलिए यह दावा गलत है कि भारत वर्तमान में पूरी तरह आत्मनिर्भर है।
इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना अभी भी एक दीर्घकालिक लक्ष्य है जिसके लिए निरंतर निवेश और शोध आवश्यक है।

15. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
हैदराबाद तेलंगाना में स्थित है और इसे भारत की बल्क ड्रग राजधानी के रूप में जाना जाता है। अहमदाबाद गुजरात का एक प्रमुख औद्योगिक और दवा निर्माण केंद्र है। पुणे महाराष्ट्र में स्थित है, जो सूचना प्रौद्योगिकी के साथ दवा उद्योग के लिए भी प्रसिद्ध है। नोएडा उत्तर प्रदेश का प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण केंद्र है। यह मिलान इन शहरों के क्षेत्रीय औद्योगिक महत्व को दर्शाता है जो संबंधित राज्यों की अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं।
इन औद्योगिक समूहों ने भारत के आर्थिक विकास और वैश्विक व्यापार में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

16. (2) बेंगलुरु
हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड का मुख्यालय बेंगलुरु में स्थित है। यह सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम भारत के एयरोस्पेस और रक्षा उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। बेंगलुरु में इसकी उपस्थिति ने शहर को एक प्रमुख तकनीकी और विमानन केंद्र के रूप में विकसित होने में मदद की है। यह संस्थान विमानों और हेलीकाप्टरों के डिजाइन, निर्माण और मरम्मत के लिए जिम्मेदार है। यह देश की सैन्य हवाई क्षमताओं को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण है।

Click Here to Buy book on Amazon

के कारण यहाँ कई बड़ी सीमेंट कंपनियों के आधुनिक संयंत्र स्थापित हैं। यह क्षेत्र देश के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए आवश्यक सीमेंट आपूर्ति प्रदान करता है।
चूना पत्थर की गुणवत्ता और प्रचुर उपलब्धता इस क्षेत्र को सीमेंट उत्पादन में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी बनाती है।

34. (1) यह पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के माध्यम से भारत सरकार के स्वामित्व और संचालन में है।
जामनगर रिफाइनरी के बारे में पहला कथन गलत है क्योंकि यह रिफाइनरी भारत सरकार के स्वामित्व में नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के स्वामित्व में है। अन्य सभी कथन सही हैं क्योंकि इसकी जटिलता सूचकांक बहुत अधिक है, जो इसे कठिन प्रकार के कच्चे तेल को शोधित करने में सक्षम बनाती है। इसमें एक एकीकृत पेट्रोकेमिकल परिसर है और कच्चे तेल के लिए समर्पित बंदरगाह सुविधाएं भी हैं।
यह विश्व की सबसे परिष्कृत रिफाइनरियों में से एक है जो अपनी तकनीकी श्रेष्ठता के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है।

35. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
नोएडा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र है। चेन्नई कोरोमंडल तट पर स्थित दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर हब माना जाता है। पुणे पश्चिमी भारत के महाराष्ट्र राज्य में स्थित है और इसे तकनीकी केंद्र के रूप में पहचाना जाता है। हैदराबाद तेलंगाना की राजधानी है जिसे सूचना प्रौद्योगिकी के लिए जाना जाता है। यह वर्गीकरण इन शहरों की भौगोलिक स्थिति और भारतीय तकनीकी परिदृश्य में उनके योगदान को स्पष्ट करता है।
ये केंद्र भारत को एक वैश्विक सेवा शक्ति बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक भूमिका निभा रहे हैं।

36. (4) विंध्य पर्वतमाला के भीतर विशाल उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर निक्षेपों की उपस्थिति।
मध्य प्रदेश में सीमेंट उद्योग की स्थापना का प्राथमिक भौगोलिक कारण विंध्य पर्वतमाला में उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के विशाल निक्षेपों की उपस्थिति है। चूना पत्थर सीमेंट का मुख्य घटक है और इसके भारी होने के कारण कारखाने खदानों के पास ही लगाए जाते हैं। सतना और कटनी जैसे जिले इसी कारण इस उद्योग के प्रमुख केंद्र बन गए हैं। पर्याप्त बिजली और रेल कनेक्टिविटी ने भी इस औद्योगिक विकास में सहायता की है। इस प्रकार, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता ने राज्य को सीमेंट उत्पादन में देश में अग्रणी स्थान दिलाया है।

37. (3) राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (NMDC)
हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड विमानों के निर्माण में लगा है और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड मिसाइल प्रणालियों का उत्पादन करता है। ये इकाइयां सेना की जरूरतों को पूरा करती हैं। इसके विपरीत, राष्ट्रीय खनिज विकास निगम एक प्रमुख खनन संगठन है जो मुख्य रूप से लौह अयस्क के निष्कर्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि खनिज महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यह निगम प्रत्यक्ष रूप से रक्षा विनिर्माण या एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की गतिविधियों में शामिल नहीं है। अतः यह संगठन धातु विज्ञान और खनन क्षेत्र का हिस्सा है, न कि रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का।

38. (1) I, II, III और IV
तमिलनाडु और गुजरात पवन ऊर्जा के प्रमुख विनिर्माण केंद्र हैं जबकि राजस्थान स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता में देश में शीर्ष पर है। यह क्षेत्र सौर मॉड्यूल जैसे उपकरणों के विनिर्माण के लिए बड़े अवसर प्रदान कर रहा है। कथन 5 गलत है क्योंकि सौर पार्कों की स्थापना के लिए कोयले की उपलब्धता का कोई महत्व नहीं है। इसके बजाय उच्च सौर विकिरण और बंजर भूमि की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण स्थानीय भौगोलिक कारक हैं। भारत की अक्षय ऊर्जा वृद्धि इन राज्यों के विशिष्ट भौगोलिक और तकनीकी लाभों पर पूरी तरह आधारित है।

39. (4) IT उद्योग - भारी कच्चे माल की उपलब्धता
हीरा कटाई उद्योग कुशल श्रम पर निर्भर है और पेट्रोकेमिकल इकाइयां रिफाइनरियों के पास स्थापित होती हैं। एल्युमिनियम स्मेल्टिंग के लिए प्रचुर और सस्ती बिजली की आवश्यकता होती है। हालांकि, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के लिए भारी कच्चे माल की उपलब्धता का कोई महत्व नहीं है। यह उद्योग एक 'स्वच्छंद' उद्योग है जो मुख्य रूप से कुशल मानव संसाधन और तकनीकी बुनियादी ढांचे पर निर्भर करता है, न कि भारी भौतिक कच्चे माल पर।
अतः सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की स्थिति निर्धारित करने में बौद्धिक संपदा और डिजिटल कनेक्टिविटी अधिक महत्वपूर्ण है।

40. (1) B, C, A, D
सीमेंट निर्माण की प्रक्रिया सबसे पहले कच्चे माल जैसे चूना पत्थर की क्रशिंग और उनके मिश्रण के साथ शुरू होती है। इसके बाद, इस मिश्रण को भट्ठे में बहुत उच्च तापमान पर गर्म किया जाता है जिससे क्लिंकर बनता है। तीसरे चरण में, इस क्लिंकर को जिप्सम के साथ बारीक पीसा जाता है ताकि सीमेंट के गुणों को नियंत्रित किया जा सके। अंत में, तैयार सीमेंट को बोरियों में पैक करके बाजार में वितरण के लिए भेजा जाता है। यह क्रमिक प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि अंतिम उत्पाद निर्माण कार्यों के लिए आवश्यक गुणवत्ता मानकों को पूरा करे।

41. (3) कच्चे हीरे की कटाई और पॉलिशिंग।
हीरा उद्योग में सूरत का वैश्विक प्रभुत्व हीरों की कटाई और पॉलिशिंग की इसकी विशेषज्ञता में झलकता है। विश्व के अधिकांश हीरों की पॉलिश सूरत में ही की जाती है। यहाँ कोई हीरा खदान नहीं है और न ही यहाँ भारी खनन मशीनरी का उत्पादन होता है। मुख्य व्यावसायिक गतिविधि कच्चे हीरों को आयात करना, उन्हें कुशल कारीगरों द्वारा चमकाना और फिर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात करना है। यह सूरत की अर्थव्यवस्था का आधार है।
इस विशेषज्ञता ने सूरत को विश्व के हीरा व्यापार मानचित्र पर एक अनिवार्य और अद्वितीय केंद्र बना दिया है।

NODIA

करने हेतु एक प्रभावी अवरोध के रूप में कार्य करने में विफल रहती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान की सर्वोच्च चोटी गुरु शिखर किस जिले में और कितनी ऊंचाई पर स्थित है?
(1) उदयपुर, 1722 मीटर
(2) राजसमंद, 1597 मीटर
(3) सिरोही, 1722 मीटर
(4) सिरोही, 1597 मीटर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अरावली पर्वतमाला की प्रमुख पर्वत चोटियों का उनकी ऊंचाई के आधार पर सही अवरोही क्रम दर्शाता है?
(1) गुरु शिखर, सेर, दिलवाड़ा, जरगा
(2) गुरु शिखर, दिलवाड़ा, सेर, जरगा
(3) गुरु शिखर, जरगा, सेर, दिलवाड़ा
(4) गुरु शिखर, सेर, जरगा, दिलवाड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. राजस्थान के पूर्वी मैदान मुख्य रूप से किस प्रमुख नदी तंत्र की निक्षेपण गतिविधियों द्वारा निर्मित हैं?
(1) लूणी और उसकी सहायक नदियाँ
(2) घग्गर और कांतली
(3) साबरमती और पश्चिमी बनास
(4) बनास, माही और चंबल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. हाड़ौती के पठार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान में मालवा के पठार का विस्तार है।
II. यह मुख्य रूप से समृद्ध जलोढ़ मृदा की उपस्थिति के कारण पहचाना जाता है।
III. इसमें विंध्यन और दक्कन ट्रैप दोनों प्रणालियों की भूगर्भीय संरचनाएं सम्मिलित हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. शेखावाटी क्षेत्र अपनी विशिष्ट भौतिक परिस्थितियों से परिभाषित होता है। निम्नलिखित में से कौन सी इस क्षेत्र की जल-विज्ञानी विशेषता का सर्वोत्तम वर्णन करती है?
(1) बारहमासी नदियाँ जो निरंतर यमुना बेसिन में प्रवाहित होती हैं।
(2) मुहाना तंत्र जो राज्य को कच्छ के रण से जोड़ता है।
(3) अंतःप्रवाह अपवाह जहाँ नदियाँ समुद्र तक पहुँचने से पूर्व ही लुप्त हो जाती हैं।
(4) उच्च पर्वत श्रेणियों के विशिष्ट हिमनद-पोषित जल-विज्ञानी बेसिन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. राजस्थान का मेवात क्षेत्र अपनी संक्रमणकालीन भौतिक विशेषताओं के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से वर्तमान के किन जिलों के भाग सम्मिलित हैं?
(1) जोधपुर और बीकानेर
(2) उदयपुर और डूंगरपुर
(3) कोटा और बारां
(4) अलवर और भरतपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची I में दी गई भूगर्भीय संरचनाओं का सूची II में उनके संबंधित प्राथमिक क्षेत्र या विशेषता के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (भूगर्भीय संरचना)
A. बैंडेड नीसिक कॉम्प्लेक्स
B. लाठी सीरीज
C. विंध्यन सुपरग्रुप
D. प्लीस्टोसीन जलोढ़
सूची II: (क्षेत्र/विशेषता)
i. पूर्वी मैदान
ii. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाड़ौती)
iii. अरावली आधार
iv. जैसलमेर क्षेत्र
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. राजस्थान की भूगर्भीय और भौतिक संरचना इसकी आर्थिक क्षमताओं को निर्धारित करती है। अलोह खनिजों के उत्पादन में प्रभुत्व रखने वाला क्षेत्र है:
(1) पश्चिमी रेतीले मैदान
(2) अरावली पर्वत श्रृंखला
(3) पूर्वी मैदान
(4) घग्गर बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. राजस्थान के देशांतरीय विस्तार के आधार पर, इसके सबसे पूर्वी बिंदु (सिलाना गाँव, धौलपुर) और सबसे पश्चिमी बिंदु (कटरा गाँव, जैसलमेर) के बीच लगभग कितना समयांतर है?
(1) 22 मिनट
(2) 28 मिनट

Downloaded from www.pdf.tube

विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है। यह विदेशी मुद्रा वस्तु व्यापार में होने वाले घाटे को संतुलित करने में मदद करती है, जो मुख्य रूप से कच्चे तेल के आयात के कारण होता है। इस प्रकार, यह निर्यात देश के भुगतान संतुलन को बनाए रखता है।
सेवा क्षेत्र की यह आय भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को स्थिर रखने में एक प्रमुख और अनिवार्य कारक है।

51. (3) यह पूंजी-प्रधान, तकनीकी रूप से जटिल और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर है।
सेमीकंडक्टर विनिर्माण एक अत्यंत परिष्कृत उद्योग है जिसे इसकी भविष्य की संभावनाओं के कारण 'सनराइज सेक्टर' कहा जाता है। इसमें अरबों डॉलर के निवेश की आवश्यकता होती है और यह उन्नत तकनीक पर आधारित है। यह उद्योग एक वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा है जहाँ डिजाइन और विनिर्माण अलग-अलग स्तरों पर होते हैं। यह न तो श्रम-प्रधान है और न ही कोई कुटीर उद्योग, बल्कि यह आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है।
इस क्षेत्र में सफलता के लिए उच्च तकनीकी कौशल और निरंतर अनुसंधान एवं विकास की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

52. (1) I, II और III
हैदराबाद को भारत की थोक औषधि राजधानी माना जाता है और गुजरात का दवा विनिर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है। सरकार ने आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजनाएं शुरु की हैं। कथन 3 गलत है क्योंकि 1970 के पेटेंट अधिनियम ने वास्तव में भारतीय दवा उद्योग को नई दिशा दी थी। प्रक्रिया पेटेंट की अनुमति मिलने से भारतीय कंपनियों को महंगी दवाओं के सस्ते जेनेरिक संस्करण बनाने में मदद मिली।
अतः अनुकूल नीतियों और क्षेत्रीय विशेषज्ञता ने भारत को दवा क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित किया है।

53. (3) तमिलनाडु
मुप्पंडल पवन फार्म भारत का सबसे बड़ा और विश्व के प्रमुख तटवर्ती पवन ऊर्जा केंद्रों में से एक है जो तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में स्थित है। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ पश्चिमी घाटों के बीच से चलने वाली तेज हवाओं का लाभ मिलता है। यह संयंत्र तमिलनाडु को पवन ऊर्जा उत्पादन में भारत का अग्रणी राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अक्षय ऊर्जा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का उदाहरण है।
पवन ऊर्जा का यह विशाल बुनियादी ढांचा राज्य की स्वच्छ ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अत्यंत सहायक है।

54. (2) आयुध निर्माणी बोर्ड एक सरकारी विभाग बना हुआ है और उसने किसी भी प्रकार के निगमीकरण का विरोध किया है।
रक्षा विनिर्माण के बारे में दूसरा कथन गलत है क्योंकि भारत सरकार ने हाल ही में आयुध निर्माणी बोर्ड का निगमीकरण कर दिया है। इसे सात नई सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में विभाजित किया गया है ताकि इसकी परिचालन दक्षता और जवाबदेही को बढ़ाया जा सके। अन्य कथन सही हैं क्योंकि रक्षा क्षेत्र में निजी भागीदारी बढ़ रही है और उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु में रक्षा गलियारे विकसित किए जा रहे हैं।
यह सुधार रक्षा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और आधुनिक विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है।

55. (1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
हीरा कटाई उद्योग का मुख्य वैश्विक केंद्र सूरत है। एयरोस्पेस उद्योग मुख्य रूप से बेंगलुरु में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड जैसे संस्थानों के सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र के कारण विकसित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के लिए बेंगलुरु भारत का सबसे प्रमुख शहर है। नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण में सौर पीवी मॉड्यूल और पवन टर्बाइन का उत्पादन शामिल है। यह मिलान विभिन्न राज्यों में विशिष्ट उभरते उद्योगों की पहचान को सही ढंग से स्पष्ट करता है।
ये उभरते क्षेत्र भारत की औद्योगिक विविधता और निरंतर तकनीकी प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

56. (1) HAL की स्थापना और भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) की निकटता।
बेंगलुरु का एयरोस्पेस केंद्र के रूप में उदय 1940 में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड की स्थापना के साथ शुरु हुआ था। इसके साथ ही, भारतीय विज्ञान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने उच्च स्तरीय अनुसंधान और कुशल वैज्ञानिकों की उपलब्धता सुनिश्चित की। इस ऐतिहासिक संस्थागत आधार ने अन्य रक्षा और विमानन इकाइयों को यहाँ स्थापित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया। इस वातावरण ने बेंगलुरु को देश की विमानन तकनीक का केंद्र बना दिया।
शिक्षा और उद्योग के बीच इस रणनीतिक तालमेल ने ही शहर को वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई है।

57. (3) लौह अयस्क
उर्वरक उद्योग में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस और नेफ्था प्रमुख कच्चे माल के रूप में उपयोग किए जाते हैं। ईंधन तेल का उपयोग भी ऊर्जा के लिए कुछ संयंत्रों में किया जाता है। इसके विपरीत, लौह अयस्क का उपयोग इस्पात निर्माण में होता है और इसका उर्वरक उत्पादन से कोई सीधा संबंध नहीं है। उर्वरक निर्माण में रसायनों और गैसों की आवश्यकता होती है जबकि लौह अयस्क एक धातु खनिज है।
उर्वरक संयंत्रों का स्थान निर्धारण मुख्य रूप से गैस पाइपलाइन या रिफाइनरी की निकटता पर अनिवार्य रूप से निर्भर करता है।

58. (2) I, II, III और IV
पेट्रोकेमिकल उद्योग कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के प्रसंस्करण से प्राप्त उत्पादों पर आधारित होता है। इसमें पॉलिमर, कृत्रिम रेशे, इलास्टोमर्स और डिटर्जेंट जैसे सर्फेक्टेंट शामिल हैं। ये सभी उत्पाद हाइड्रोकार्बन रसायनों से निर्मित होते हैं। इसके विपरीत, पोर्टलैंड सीमेंट क्लिंकर का उत्पादन चूना पत्थर और मिट्टी को गर्म करके किया जाता है, जिसका पेट्रोकेमिकल प्रक्रियाओं से कोई संबंध नहीं है। अतः पहले चार विकल्प पेट्रोकेमिकल उत्पादों का सही प्रतिनिधित्व करते हैं।
पेट्रोकेमिकल उत्पादों ने आधुनिक जीवन में उपयोग होने वाली अनेक दैनिक वस्तुओं के लिए एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया है।

NODIA

ii. कुंभलगढ़ और गोगुंदा के बीच का पठारी क्षेत्र
iii. बिजोलिया से भैंसरोड़गढ़ तक विस्तृत पठार
iv. नदी के मैदानों में पाई जाने वाली नवीन जलोढ़ मृदा

सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. "छप्पन का मैदान" अपनी लहरदार स्थलाकृति के लिए प्रसिद्ध एक विच्छेदित मैदानी क्षेत्र है। यह किस नदी बेसिन में स्थित है?
(1) माही बेसिन
(2) लूणी बेसिन
(3) बनास बेसिन
(4) साबरमती बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. महान सीमा भ्रंश राजस्थान में एक महत्वपूर्ण भूगर्भीय विशेषता है। यह मुख्य रूप से अरावली पर्वतमाला को किस अन्य संरचनात्मक इकाई से पृथक करता है?
(1) टेथिस अवसादी अनुक्रम
(2) मारवाड़ सुपरग्रुप
(3) बैंडेड नीसिक कॉम्प्लेक्स
(4) विंध्यन सुपरग्रुप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उत्तर का चयन करें।

कथन (A): अरावली पर्वत श्रृंखला को राजस्थान में महान भारतीय जल विभाजक के रूप में जाना जाता है।

कारण (R): यह बंगाल की खाड़ी में गिरने वाले अपवाह तंत्र को अरब सागर में गिरने वाले अपवाह तंत्र से अलग करती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. अरावली पर्वतों का निर्माण मुख्य रूप से किस भूगर्भीय युग के दौरान हुआ था?
(1) मेसोजोइक युग
(2) पेलियोजोइक युग
(3) प्रीकैंब्रियन युग
(4) सेनोजोइक युग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. राजस्थान में पाए जाने वाले निम्नलिखित संरचनात्मक और भूगर्भीय क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. बैंडेड नीसिक कॉम्प्लेक्स
II. लाठी सीरीज
III. विंध्यन सुपरग्रुप
IV. मरुस्थलीय रेत के टीले

निम्नलिखित में से कौन सा प्राचीनतम से नवीनतम तक सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, III, II, IV
(2) I, II, III, IV
(3) III, I, II, IV
(4) III, I, IV, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में विंध्यन कगार भूमि मुख्य रूप से किस प्रकार की चट्टानों से निर्मित है?
(1) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
(2) बेसाल्ट और गैब्रो
(3) ग्रेनाइट और रायोलाइट
(4) संगमरमर और क्वार्टजाइट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 23.3 प्रतिशत भाग हैं।
II. ये राजस्थान के सभी भौतिक विभागों में उच्चतम जनसंख्या घनत्व को आधार प्रदान करते हैं।
III. ये जलोढ़ मृदा की पूर्ण अनुपस्थिति के कारण पहचाने जाते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. राजस्थान के भौतिक विभागों के संदर्भ में, "मरुस्थली" शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(1) राजाओं की भूमि
(2) मृत प्रदेश
(3) रेत का क्षेत्र
(4) हवाओं की भूमि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. शेखावाटी क्षेत्र की एक प्रमुख मौसमी नदी कांतली का जल ग्रहण क्षेत्र स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) तोरावाटी
(2) गोडवाड़
(3) थली
(4) मगरा

Click Here to Buy book on Amazon

67. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना का लक्ष्य घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना और मोबाइल फोन जैसे उपकरणों के भारी आयात को कम करना है। इससे भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने में मदद मिलेगी। कथन 2 गलत है क्योंकि यह योजना विदेशी कंपनियों को प्रतिबंधित नहीं करती है, बल्कि उन्हें भारत में अपने विनिर्माण आधार स्थापित करने के लिए आमंत्रित करती है। यह योजना निवेश के लिए खुली है।
इस पहल ने भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात को बढ़ाने और नए रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है।

68. (3) I और II
जामनगर रिफाइनरी गुजरात में कच्छ की खाड़ी के तट पर स्थित है जो इसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए आदर्श बनाती है। इसकी उच्च तकनीक इसे भारी और कठिन श्रेणियों के कच्चे तेल को मूल्यवान उत्पादों में शोधित करने में सक्षम बनाती है। कथन 3 गलत है क्योंकि यह केवल एक ईंधन रिफाइनरी नहीं है, बल्कि इसमें एक विशाल एकीकृत पेट्रोकेमिकल परिसर भी शामिल है जो पॉलिमर और रसायनों का उत्पादन करता है।
यह रिफाइनरी वैश्विक ऊर्जा मानचित्र पर भारत की बढ़ती शक्ति और तकनीकी क्षमता का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है।

69. (3) जैसलमेर
हैदराबाद, अहमदाबाद और हिमाचल प्रदेश का बद्दी क्षेत्र भारत में दवा उद्योग के प्रमुख केंद्रों के रूप में जाने जाते हैं। हैदराबाद को दवा राजधानी कहा जाता है जबकि बद्दी एशिया के सबसे बड़े दवा विनिर्माण समूहों में से एक है। इसके विपरीत, जैसलमेर मुख्य रूप से अपने पर्यटन, हस्तशिल्प और अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए प्रसिद्ध है। जैसलमेर में दवा विनिर्माण का कोई बड़ा औद्योगिक आधार मौजूद नहीं है, इसलिए यह विषम विकल्प है।
अन्य शहर दवा उद्योग के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे और कुशल कार्यबल के भौगोलिक संकेंद्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

70. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सीमेंट निर्माण संयंत्र मुख्य रूप से चूना पत्थर की खदानों के पास स्थित होते हैं। इसका कारण यह है कि चूना पत्थर एक भारी और भार-क्षय वाला कच्चा माल है, जिसका अर्थ है कि उत्पादन प्रक्रिया में इसका वजन कम हो जाता है। यदि संयंत्र को खदान से दूर स्थापित किया जाए, तो भारी चूना पत्थर को ले जाने की परिवहन लागत बहुत अधिक हो जाएगी जिससे उत्पादन आर्थिक रूप से अव्यवहार्य हो जाएगा।
यह औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत रसद लागत को कम करके सीमेंट की अंतिम कीमत को नियंत्रित रखने में मदद करता है।

71. (4) जटिल हाइड्रोकार्बन अणुओं को एथिलीन और प्रोपलीन जैसे सरल अणुओं में तोड़ना।
पेट्रोकेमिकल उद्योग में "क्रैकिंग" एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसमें भारी हाइड्रोकार्बन अणुओं को गर्मी और दबाव का उपयोग करके सरल अणुओं में तोड़ा जाता है। इस प्रक्रिया से एथिलीन और प्रोपलीन जैसे रसायनों का उत्पादन होता है जो प्लास्टिक और सिंथेटिक रबर के निर्माण के लिए बुनियादी बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में कार्य करते हैं। क्रैकिंग के बिना आधुनिक पेट्रोकेमिकल उत्पादों का निर्माण संभव नहीं होता, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है।
यह प्रक्रिया कच्चे तेल से उच्च-मूल्य वाले औद्योगिक रसायनों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने में सहायता करती है।

72. (2) II, III और IV
भारत में उर्वरक संयंत्रों का वितरण कच्चे माल, गैस पाइपलाइन और बाजार की पहुंच पर निर्भर है। प्राकृतिक गैस आधारित संयंत्र देशव्यापी पाइपलाइनों के किनारे स्थित हैं जबकि तटीय क्षेत्रों में आयातित रॉक फॉस्फेट आधारित संयंत्रों को प्राथमिकता दी जाती है। इस उद्योग को निरंतर बिजली और भारी पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। कथन 1 गलत है क्योंकि सरकारी सब्सिडी नीतियां भी संयंत्रों के स्थान और वितरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।
इन कारकों का मेल देश के विभिन्न कृषि क्षेत्रों में उर्वरकों की संतुलित और निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

73. (3) हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)
हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड बेंगलुरु में स्थित भारत का प्रमुख रक्षा और एयरोस्पेस संस्थान है। यह भारतीय सशस्त्र बलों के लिए लड़ाकू विमानों और विभिन्न प्रकार के हेलीकाप्टरों का मुख्य डिजाइनर और निर्माता है। यह संस्थान नए विमान बनाने के साथ मौजूदा विमानों के उन्नयन और मरम्मत का कार्य भी करता है। इसकी उपस्थिति ने बेंगलुरु को भारत की विमानन राजधानी के रूप में स्थापित किया है। यह आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण है।
इसकी तकनीकी विशेषज्ञता ने भारत को वैश्विक एयरोस्पेस उद्योग में एक सुदृढ़ और स्वतंत्र पहचान दिलाई है।

74. (1) ऑटोमोबाइल उद्योग ने इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) के निर्माण की ओर कोई रुचि नहीं दिखाई है।
ऑटोमोबाइल उद्योग के बारे में पहला कथन गलत है क्योंकि भारतीय ऑटोमोबाइल क्षेत्र वर्तमान में इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण की ओर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। कई प्रमुख कंपनियां इस क्षेत्र में भारी निवेश कर रही हैं। अन्य कथन सही हैं क्योंकि पुणे और गुड़गांव जैसे शहर अपने मजबूत विनिर्माण आधार के लिए प्रसिद्ध हैं। चेन्नई अपनी इंजीनियरिंग क्षमताओं के कारण एक प्रमुख वैश्विक ऑटो हब के रूप में उभरा है।
सरकार की नीतियां भी इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने और स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं।

75. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
गुड़गांव ऑटोमोबाइल क्लस्टर हरियाणा में स्थित है जो मारुति सुजुकी के लिए प्रसिद्ध है। श्रीपेरंबुदूर तमिलनाडु में इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। चाकन औद्योगिक क्षेत्र महाराष्ट्र के पुणे जिले में स्थित है जहाँ कई वैश्विक वाहन कंपनियों के कारखाने हैं। पीथमपुर ऑटो क्लस्टर मध्य प्रदेश में स्थित है। यह मिलान भारत के

Downloaded from www.pdf.tube

42. (1) पोटेशियम
उर्वरक क्षेत्र में भारत पोटेशियम या पोटाश उर्वरकों की अपनी पूरी जरूरत को पूरा करने के लिए पूरी तरह आयात पर निर्भर है। देश में आर्थिक रूप से दोहन योग्य पोटाश के ज्ञात भंडार की भारी कमी है। हालांकि नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का उत्पादन घरेलू स्तर पर प्राकृतिक गैस का उपयोग करके किया जाता है, लेकिन पोटाश पूरी तरह से वैश्विक बाजारों से आयात किया जाता है। यह राष्ट्रीय उर्वरक सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती है। पोटाश की इस कमी को पूरा करने के लिए भारत विभिन्न अंतरराष्ट्रीय देशों के साथ दीर्घकालिक आपूर्ति अनुबंध करता है।

43. (4) उद्योग को विशिष्ट देशों से आयातित सक्रिय दवा सामग्री (APIs) पर भारी निर्भरता का सामना करना पड़ता है।
भारतीय दवा उद्योग के सामने सबसे बड़ी संरचनात्मक चुनौती सक्रिय दवा सामग्री या एपीआई के लिए कुछ विशिष्ट देशों पर भारी निर्भरता है। एपीआई वे अनिवार्य कच्चे माल हैं जिनका उपयोग दवाओं के निर्माण में किया जाता है। हालांकि भारत जेनेरिक दवाओं के निर्माण में विश्व में अग्रणी है, लेकिन मुख्य रसायनों के आयात में किसी भी रुकावट से दवा आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। सरकार अब घरेलू एपीआई उत्पादन को प्रोत्साहित कर रही है।
आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत इस क्षेत्र में घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाना एक प्रमुख राष्ट्रीय प्राथमिकता है।

44. (2) कास्टिक सोडा
पॉलीथीन, सिंथेटिक रबर और कृत्रिम रेशे जैसे नायलॉन सीधे हाइड्रोकार्बन फीडस्टॉक से प्राप्त पेट्रोकेमिकल उत्पाद हैं। ये हाइड्रोकार्बन के प्रसंस्करण के माध्यम से उत्पादित प्लास्टिक और पॉलिमर की श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत, कास्टिक सोडा एक अकार्बनिक रसायन है जो मुख्य रूप से नमक के घोल के विद्युत अपघटन द्वारा उत्पादित किया जाता है। इसे क्लोर-क्षार उद्योग का हिस्सा माना जाता है, न कि पेट्रोकेमिकल उद्योग का।
पेट्रोकेमिकल उत्पाद मुख्य रूप से कार्बनिक रसायन होते हैं जबकि कास्टिक सोडा एक अकार्बनिक क्षार की श्रेणी में आता है।

45. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मारुति सुजुकी का मुख्य विनिर्माण आधार हरियाणा के गुड़गांव में स्थित है। हुंडई मोटर्स ने चेन्नई के पास श्रीपेरंबुदूर में अपना बड़ा संयंत्र स्थापित किया है। टाटा मोटर्स अपने वाणिज्यिक वाहनों जैसे ट्रकों के उत्पादन के लिए पुणे के चाकन क्षेत्र का उपयोग करती है। वहीं, टाटा मोटर्स ने अपनी यात्री कार इकाई के लिए गुजरात के साणंद में एक आधुनिक संयंत्र लगाया है। यह मिलान भारत के विभिन्न ऑटोमोबाइल केंद्रों की विविधता को दर्शाता है।
ये विभिन्न केंद्र मिलकर भारत को वैश्विक ऑटोमोबाइल विनिर्माण का एक प्रमुख और प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी बनाते हैं।

46. (4) आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता और तैयार उत्पादों के निर्यात की सुगमता।
भारत में पेट्रोकेमिकल उद्योगों का तटीय क्षेत्रों की ओर झुकाव मुख्य रूप से कच्चे तेल के आयात पर देश की भारी निर्भरता के कारण है। बंदरगाहों के पास होने से जहाजों द्वारा लाए गए कच्चे तेल को सीधे रिफाइनरियों तक पहुँचाना आसान और सस्ता होता है। इसके अतिरिक्त, पेट्रोकेमिकल उत्पादों का बड़ा हिस्सा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है जिसके लिए तटीय स्थिति रणनीतिक लाभ प्रदान करती है। यह रसद लागत को कम करता है।
रसद दक्षता तटीय क्षेत्रों में इन भारी उद्योगों के संकेंद्रण का सबसे प्रमुख और निर्णायक आर्थिक चालक है।

47. (1) डिगबोई-नाहरकटिया (असम)
गुड़गांव-मानेसर, पुणे और चेन्नई भारत के सबसे स्थापित ऑटोमोबाइल विनिर्माण समूह हैं जहाँ हजारों वाहनों का उत्पादन होता है। इसके विपरीत, असम का डिगबोई-नाहरकटिया क्षेत्र भारत के सबसे पुराने तेल क्षेत्रों और पेट्रोलियम रिफाइनिंग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का औद्योगिक ढांचा तेल और गैस निकालने पर केंद्रित है, न कि वाहनों के निर्माण पर। इसलिए, इस क्षेत्र को ऑटोमोबाइल विनिर्माण समूह के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।
अतः ऑटोमोबाइल उत्पादन के भौगोलिक वितरण में असम का यह ऐतिहासिक पेट्रोलियम क्षेत्र शामिल नहीं है।

48. (2) केवल II
भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का विकास मुख्य रूप से तकनीकी संस्थानों और पूंजी की उपलब्धता वाले नवाचार समूहों द्वारा समर्थित है। "स्टार्टअप इंडिया" जैसी पहल इस क्षेत्र को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। कथन 2 गलत है क्योंकि वर्तमान में द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहर भी स्टार्टअप गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी दिखा रहे हैं। इंदौर, कोच्चि और जयपुर जैसे शहरों में कई सफल स्टार्टअप उभर रहे हैं।
यह विस्तार दर्शाता है कि उद्यमिता की भावना अब बड़े महानगरों से आगे छोटे शहरों तक प्रभावी रूप से पहुँच चुकी है।

49. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन करके और फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम करके किसानों को बेहतर आय सुनिश्चित करने में मदद करता है। यह कृषि को आधुनिक बाजारों से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। कथन 2 गलत है क्योंकि खाद्य प्रसंस्करण में केवल पैकेजिंग ही शामिल नहीं है, बल्कि सुखाने और शीत भंडारण जैसी विभिन्न तकनीकें शामिल हैं जो उत्पादों की शेल्फ लाइफ को बढ़ाती हैं।
इस प्रकार, प्रसंस्करण तकनीक कृषि उपज की गुणवत्ता और उसके टिकाऊपन दोनों में महत्वपूर्ण सुधार करती है।

50. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत का सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र देश की व्यापक आर्थिक स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र सेवा निर्यात में सबसे बड़ा हिस्सा रखता है जिससे भारी मात्रा में

NODIA

अध्याय 17

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं भू-आकृतिक स्वरुप

1. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अक्षांश और देशांतर के संदर्भ में राजस्थान के भौगोलिक विस्तार का सटीक निरुपण करता है?
(1) 23°3' उत्तर से 30°12' उत्तर अक्षांश और 69°30' पूर्व से 78°17' पूर्व देशांतर
(2) 24°3' उत्तर से 31°12' उत्तर अक्षांश और 68°30' पूर्व से 77°17' पूर्व देशांतर
(3) 23°3' उत्तर से 30°12' उत्तर अक्षांश और 68°30' पूर्व से 77°17' पूर्व देशांतर
(4) 22°3' उत्तर से 29°12' उत्तर अक्षांश और 69°30' पूर्व से 78°17' पूर्व देशांतर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है। राजस्थान भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत है?
(1) 9.87 प्रतिशत
(2) 10.41 प्रतिशत
(3) 11.21 प्रतिशत
(4) 12.35 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) अंतर्राष्ट्रीय सीमा को रेडक्लिफ रेखा के नाम से जाना जाता है।
(2) अंतर्राष्ट्रीय सीमा की कुल लंबाई 1070 किलोमीटर है।
(3) सभी सीमावर्ती जिलों में बीकानेर जिला अंतर्राष्ट्रीय सीमा का सबसे लंबा भाग साझा करता है।
(4) सीमा उत्तर में हिंदूमलकोट से प्रारंभ होती है और दक्षिण में शाहगढ़ (बल्खासर) पर समाप्त होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. राजस्थान अपनी अंतर्राज्यीय सीमाएँ पाँच भारतीय राज्यों के साथ साझा करता है। निम्नलिखित में से कौन सा युग्म क्रमशः राजस्थान के साथ सबसे लंबी और सबसे छोटी सीमा लंबाई वाले राज्यों को दर्शाता है?
(1) गुजरात और हरियाणा
(2) मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश
(3) उत्तर प्रदेश और पंजाब
(4) मध्य प्रदेश और पंजाब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची I में दिए गए पड़ोसी राज्यों का सूची II में राजस्थान के साथ साझा की गई उनकी संबंधित सीमा की लंबाई के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (राज्य)
A. मध्य प्रदेश
B. हरियाणा
C. गुजरात
D. पंजाब
सूची II: (सीमा की लंबाई)
i. 1262 किलोमीटर
ii. 1022 किलोमीटर
iii. 1600 किलोमीटर
iv. 89 किलोमीटर
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान के चार प्रमुख भौतिक विभागों में से एक के रुप में मान्यता नहीं दी गई है?
(1) पश्चिमी रेतीले मैदान
(2) दक्षिणी तटीय मैदान
(3) अरावली श्रेणी और पहाड़ी क्षेत्र
(4) दक्षिण-पूर्वी राजस्थान पठार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. भूगर्भीय साक्ष्यों के अनुसार, राजस्थान के थार मरुस्थल को किस प्राचीन भौगोलिक विशेषता का अवशेष माना जाता है?
(1) गोंडवानालैंड
(2) अंगारालैंड
(3) पैंथालसा महासागर
(4) टेथिस सागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): राजस्थान का पश्चिमी भाग वर्षा की भारी कमी के कारण अधिकांशतः शुष्क रहता है।
कारण (R): अरावली पर्वतमाला दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर स्थित है, जो वर्षा

Click Here to Buy book on Amazon

विभिन्न राज्यों में फैले औद्योगिक विविधीकरण और उनके क्षेत्रीय आर्थिक महत्व को दर्शाता है।
ये औद्योगिक क्लस्टर क्षेत्रीय विकास और स्थानीय रोजगार सृजन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

76. (2) इंजीनियरिंग प्रतिभा का संकेंद्रण और अनुसंधान संस्थानों से निकटता।
बेंगलुरु, पुणे और हैदराबाद में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के उदय का मुख्य कारण उच्च गुणवत्ता वाली इंजीनियरिंग प्रतिभा और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों का संकेंद्रण है। इन शहरों में स्थित तकनीकी संस्थानों से प्रतिवर्ष हजारों कुशल स्नातक निकलते हैं जो नवाचार को बढ़ावा देते हैं। यहाँ पहले से स्थापित सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों ने एक सहायक वातावरण तैयार किया है जहाँ नए उद्यमियों को मेंटरिंग और निवेश आसानी से मिल जाता है।
इस प्रकार कुशल श्रम और सुदृढ़ शैक्षिक आधार स्टार्टअप क्षेत्र की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक कारक हैं।

77. (3) कटाई के बाद के नुकसान का उच्च स्तर और अपर्याप्त शीत श्रृंखला (कोल्ड चेन) बुनियादी ढांचा।
भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के सामने सबसे बड़ी चुनौती फसल कटाई के बाद होने वाले भारी नुकसान और कोल्ड चेन बुनियादी ढांचे की कमी है। पर्याप्त शीत भंडारण और परिवहन सुविधाओं के अभाव में बड़ी मात्रा में फल और सब्जियां प्रसंस्करण संयंत्रों तक पहुँचने से पहले ही खराब हो जाते हैं। इससे प्रसंस्करण उद्योग के लिए कच्चे माल की लागत बढ़ जाती है। इस बुनियादी ढांचे में सुधार करना उद्योग के लिए आवश्यक है।
कुशल रसद और भंडारण प्रबंधन ही इस क्षेत्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावी ढंग से बढ़ा सकता है।

78. (1) I, II, III और V
राजस्थान का औद्योगिक परिदृश्य विविधतापूर्ण है जिसमें चूना पत्थर की उपलब्धता के कारण सीमेंट उद्योग और उच्च सौर विकिरण के कारण सौर ऊर्जा विनिर्माण प्रमुख हैं। कोटा जैसे क्षेत्रों में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक संयंत्र भी स्थित हैं। जयपुर में सूचना प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप पार्क तेजी से विकसित हो रहे हैं। चूंकि राजस्थान एक भू-आबद्ध राज्य है, इसलिए यहाँ जहाज निर्माण उद्योग का अस्तित्व संभव नहीं है। अतः विकल्प 1 सही है।
ये उद्योग राज्य की प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और आधुनिक तकनीकी विकास के रणनीतिक मेल को दर्शाते हैं।

79. (1) रणनीतिक स्वायत्तता प्राप्त करना और आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करना।
स्वदेशी रक्षा विनिर्माण का सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक उद्देश्य भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को सुरक्षित करना और आपूर्ति श्रृंखला में विदेशी निर्भरता को कम करना है। संकट के समय विदेशी देशों से हथियारों की आपूर्ति में रुकावट आ सकती है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हो सकता है। घरेलू स्तर पर रक्षा उपकरणों का निर्माण करके भारत अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं के लिए स्वतंत्र निर्णय ले सकता है। यह तकनीकी आधार सुदृढ़ करता है।
आत्मनिर्भरता ही आधुनिक वैश्विक व्यवस्था में भारत की रणनीतिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बना सकती है।

80. (1) A, B, C, D
भारत में स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के आधार पर राज्यों का अवरोही क्रम राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक और फिर असम है। राजस्थान अपनी विशाल बंजर भूमि और देश में सर्वाधिक सौर विकिरण प्राप्त करने के कारण प्रथम स्थान पर है। गुजरात और कर्नाटक ने भी सौर पार्कों के माध्यम से अपनी क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। असम जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में सौर ऊर्जा का विकास अभी शुरुआती स्तर पर है।
भारत की हरित ऊर्जा क्रांति में ये राज्य अपने विशिष्ट प्राकृतिक भौगोलिक लाभों का सफलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं।

www.nodia.in

NODIA

(3) 36 मिनट
(4) 45 मिनट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. राजस्थान के भौगोलिक विस्तार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य की उत्तर-से-दक्षिण अधिकतम दूरी 826 किलोमीटर है।
II. राज्य की पूर्व-से-पश्चिम अधिकतम दूरी 869 किलोमीटर है।
III. राजस्थान के आकार का वर्णन सामान्यतः एक विषमकोणीय चतुर्भुज के रूप में किया जाता है।
IV. कर्क रेखा राज्य के सबसे उत्तरी जिलों से होकर गुजरती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. कर्क रेखा (23.5° उत्तर) राजस्थान के किस भौतिक और प्रशासनिक क्षेत्र से होकर गुजरती है?
(1) श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों को समाहित करने वाले उत्तरी मैदान।
(2) अजमेर और राजसमंद से होकर गुजरने वाली मध्य अरावली श्रेणी।
(3) डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों से होकर गुजरने वाला दक्षिणी छोर।
(4) धौलपुर और भरतपुर जिलों के साथ सबसे पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. गतिशील रेत के टीले, जिन्हें स्थानीय रूप से 'धरियन' कहा जाता है, पश्चिमी राजस्थान की एक प्रमुख विशेषता हैं। इन स्थानांतरित होते टीलों का क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर प्राथमिक पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(1) वे अस्थायी झीलों का निर्माण करते हैं जिनका उपयोग शीतकालीन कृषि हेतु किया जाता है।
(2) वे विशिष्ट नकदी फसलों के लिए ऊपरी मृदा की खनिज मात्रा को बढ़ाते हैं।
(3) वे मरुस्थल में दैनिक तापांतर के प्रभाव को कम करते हैं।
(4) वे उपजाऊ कृषि भूमि पर अतिक्रमण करके मरुस्थलीकरण का कारण बनते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. विशेष रूप से किस प्रकार का रेत का टीला अर्द्धचंद्राकार होता है, जिसकी विशेषता एक तीव्र ढाल वाली पवन-विमुख दिशा और एक मंद ढाल वाली पवन-मुखी दिशा होती है, तथा जो राजस्थान में मरुस्थल के विस्तार के लिए उत्तरदायी है?
(1) सीफ टीले
(2) पैराबोलिक टीले
(3) बरखान टीले
(4) अनुप्रस्थ टीले
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. अरावली पर्वतमाला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है।
II. इसका विस्तार राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है।
III. यह राज्य में एक प्रमुख जल विभाजक के रूप में कार्य करती है।
IV. इसकी ऊंचाई और चौड़ाई दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर क्रमशः बढ़ती जाती है।
V. यह मुख्य रूप से क्वार्टजाइट, नीस और शिस्ट चट्टानों से निर्मित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल III
(2) केवल IV
(3) केवल II और IV
(4) केवल I और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. गोडवाड़ क्षेत्र निम्नलिखित में से किस नदी के बेसिन से संबंधित है?
(1) बनास
(2) माही
(3) चंबल
(4) लूणी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में स्थित घग्गर नदी के बाढ़ के मैदानों को स्थानीय रूप से निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है?
(1) नाली
(2) रुही
(3) मगरा
(4) भाबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची I में दिए गए स्थानीय भौगोलिक शब्दों का सूची II में उनके संबंधित विवरणों या स्थानों के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (स्थानीय शब्द)
A. भोराट
B. गिरवा
C. ऊपरमाल
D. खादर
सूची II: (विवरण/स्थान)
i. उदयपुर के चारों ओर फैली तश्तरीनुमा घाटी

Downloaded from www.pdf.tube

59. (4) कोच्चि रिफाइनरी - भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL)
कोच्चि रिफाइनरी भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के स्वामित्व में है जो दक्षिण भारत की एक प्रमुख शोधन इकाई है। पानीपत और मथुरा रिफाइनरी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के तहत आती हैं। जामनगर रिफाइनरी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा संचालित निजी क्षेत्र की इकाई है। हिंदुस्तान पेट्रोलियम की मुख्य रिफाइनरियां मुंबई और विशाखापत्तनम में स्थित हैं। यह सही मिलान भारत में तेल शोधन क्षेत्र में विभिन्न कंपनियों की रणनीतिक भूमिका को स्पष्ट करता है।
ये रिफाइनरियां देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रणनीतिक रूप से वितरित हैं।

60. (1) नोएडा, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई
उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, सबसे पहले उत्तर प्रदेश में स्थित नोएडा आता है जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का हिस्सा है। उसके बाद महाराष्ट्र राज्य में स्थित पुणे आता है जो पश्चिम भारत का प्रमुख केंद्र है। इसके और दक्षिण में जाने पर तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद स्थित है। अंत में, कोरोमंडल तट पर स्थित तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई आती है। यह क्रम भारत के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी केंद्रों के भौगोलिक विस्तार को प्रदर्शित करता है।
यह भौगोलिक वितरण भारत के विभिन्न हिस्सों में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के संतुलित विकास और पहुंच को दर्शाता है।

61. (3) सीमेंट उद्योग
मध्य प्रदेश में कटनी-सतना-रीवा पट्टी अपने विशाल और उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर भंडारों के कारण सीमेंट उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र विंध्य पर्वतमाला का हिस्सा है जहाँ चूना पत्थर का प्रचुर मात्रा में खनन किया जाता है, जो सीमेंट का मुख्य कच्चा माल है। यहाँ कई प्रमुख सीमेंट कंपनियों के बड़े उत्पादन संयंत्र स्थापित हैं जो देश के बुनियादी ढांचे की जरूरतों को पूरा करते हैं। चूना पत्थर की प्रचुरता ने इसे सीमेंट केंद्र बनाया है।
इस क्षेत्र की आर्थिक पहचान काफी हद तक यहाँ विकसित सीमेंट विनिर्माण और खनन गतिविधियों पर आधारित है।

62. (4) IT सेवाएं और सॉफ्टवेयर विकास
भारत के सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के भीतर राजस्व और निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा सॉफ्टवेयर विकास और सेवाओं से आता है। भारतीय कंपनियां वैश्विक ग्राहकों को सॉफ्टवेयर परामर्श और सिस्टम एकीकरण जैसी उच्च स्तरीय सेवाएं प्रदान करती हैं। हालांकि हार्डवेयर विनिर्माण भी मौजूद है, लेकिन इसकी हिस्सेदारी सेवा क्षेत्र की तुलना में काफी कम है। सॉफ्टवेयर सेवाओं में भारत की वैश्विक विशेषज्ञता और कुशल मानव संसाधन इस क्षेत्र के आर्थिक प्रभुत्व का आधार रहे हैं।
यह सेवा-उन्मुख मॉडल भारत के आर्थिक विकास और निरंतर विदेशी मुद्रा अर्जन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

63. (1) एक कार्यक्रम जो स्टार्टअप्स को कार्यस्थल, वित्तीय सहायता, मेंटरिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके सफल होने में मदद करता है।
स्टार्टअप इनक्यूबेटर एक सहायक कार्यक्रम है जिसे नवजात स्टार्टअप कंपनियों को उनके शुरुआती चरणों में बढ़ने में मदद करने के लिए बनाया गया है। ये इनक्यूबेटर उद्यमियों को कम लागत वाला कार्यस्थल, तकनीकी सहायता और मेंटरिंग प्रदान करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य स्टार्टअप के सामने आने वाली प्रारंभिक चुनौतियों को कम करना और उन्हें एक सफल व्यावसायिक मॉडल विकसित करने में सहायता करना है। यह नवाचार को बढ़ावा देने वाली एक प्रणाली है।
इनक्यूबेटर्स स्टार्टअप्स को बाजार की प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

NODIA

64. (2) सुपरक्रिटिकल पल्वराइज्ड कोल बॉयलर
फोटोवोल्टिक सेल सौर ऊर्जा के लिए, पवन टर्बाइन पवन ऊर्जा के लिए और इलेक्ट्रोलाइजर ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन के लिए नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण के प्रमुख घटक हैं। इसके विपरीत, सुपरक्रिटिकल पल्वराइज्ड कोल बॉयलर का उपयोग ताप विद्युत संयंत्रों में कोयले को जलाकर बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है। चूंकि कोयला एक जीवाश्म ईंधन है, इसलिए इससे संबंधित उपकरणों को नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।
नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण का ध्यान पूरी तरह से स्वच्छ और अक्षय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित उपकरणों पर केंद्रित होता है।

65. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
डेयरी प्रसंस्करण के लिए दूध प्राथमिक कच्चा माल है जिससे विभिन्न उत्पाद बनते हैं। खाद्य तेलों का निष्कर्षण सरसों और मूंगफली जैसे तिलहनों से किया जाता है। मिलिंग उद्योग में गेहूं और चावल जैसे खाद्यान्नों को आटे में बदला जाता है। फल प्रसंस्करण में फलों से जूस और जैम तैयार किया जाता है। यह मिलान दर्शाता है कि खाद्य प्रसंस्करण उद्योग किस प्रकार विभिन्न कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन कर उनकी उपयोगिता और शेल्फ लाइफ बढ़ाता है।
यह उद्योग कृषि और विनिर्माण क्षेत्र के बीच एक सेतु का कार्य करता है जो ग्रामीण आय को बढ़ाता है।

66. (1) CVD और उच्च दाब उच्च तापमान (HPHT) प्रक्रियाएं।
लैब-ग्रोन डायमंड्स या प्रयोगशाला में विकसित हीरों का उत्पादन रासायनिक वाष्प निक्षेपण और उच्च दाब उच्च तापमान प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है। ये विधियां पृथ्वी के भीतर हीरों के निर्माण के लिए आवश्यक प्राकृतिक परिस्थितियों का अनुकरण करती हैं। इनके माध्यम से तैयार हीरे भौतिक और रासायनिक रूप से प्राकृतिक हीरों के समान होते हैं। सूरत का हीरा उद्योग अब इन तकनीकों को अपना रहा है क्योंकि ये पर्यावरण के अनुकूल विकल्प प्रदान करती हैं।
ये कृत्रिम हीरे गुणवत्ता में प्राकृतिक हीरों की बराबरी करते हैं और वैश्विक बाजार में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I में दिए गए मृदा के प्रकारों का सूची II में राजस्थान के संबंधित भौतिक क्षेत्रों के साथ सुमेल कीजिए।

सूची I: (मृदा का प्रकार)

A. शुष्क और रेतीली मृदा (एंटी-सोल्स)

B. मध्यम काली मृदा (वर्टीसोल्स)

C. लाल-पीली मृदा (अल्फीसोल/इन्सेप्टिसोल मिश्रण)

D. जलोढ़ मृदा (अल्फीसोल्स)

सूची II: (भौतिक क्षेत्र)

i. पूर्वी मैदान

ii. दक्षिणी अरावली की तलहटी

iii. हाड़ौती पठार

iv. पश्चिमी रेतीले मैदान

सही कूट का चयन कीजिए:

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i

(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv

(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान के विस्तार को परिभाषित करता है?

(1) इसका उत्तर-दक्षिण विस्तार इसके पूर्व-पश्चिम विस्तार से अधिक है।

(2) उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दोनों विस्तार पूर्णतः समान हैं।

(3) इसका पूर्व-पश्चिम विस्तार इसके उत्तर-दक्षिण विस्तार का दोगुना है।

(4) इसका पूर्व-पश्चिम विस्तार इसके उत्तर-दक्षिण विस्तार से अधिक है।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राजस्थान के भौगोलिक आकार का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से किस ज्यामितीय आकृति द्वारा किया गया है?

(1) एक पूर्ण वर्ग

(2) एक समबाहु त्रिभुज

(3) एक विषमकोणीय चतुर्भुज

(4) एक पंचभुज

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. राजस्थान के प्रशासनिक भूगोल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राजस्थान 10 प्रशासनिक संभागों में विभाजित है।

II. जोधपुर संभाग भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग है।

III. बांसवाड़ा, पाली और सीकर को हाल ही में नए संभागों के रूप में गठित किया गया है।

IV. राजस्थान में जिलों की संख्या इसके गठन के समय से 33 पर स्थिर रही है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV

(2) केवल I, II और III

(3) केवल II, III और IV

(4) केवल I और IV

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जिला गुजरात राज्य के साथ अपनी सीमा साझा नहीं करता है?

(1) बाड़मेर

(2) जालौर

(3) सिरोही

(4) प्रतापगढ़

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. राजस्थान के उस जिले की पहचान कीजिए जो हरियाणा और उत्तर प्रदेश दोनों के साथ सीमा बनाता है।

(1) डीग

(2) अलवर

(3) धौलपुर

(4) सवाई माधोपुर

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. यदि कोई यात्री जयपुर से जोधपुर की सीधी यात्रा करता है, तो वह किन भौतिक क्षेत्रों के क्रमिक परिवर्तन का अवलोकन करेगा?

(1) पूर्वी मैदान → अरावली श्रेणी → पश्चिमी रेतीले मैदान

(2) अरावली श्रेणी → हाड़ौती पठार → पूर्वी मैदान

(3) पश्चिमी रेतीले मैदान → अरावली श्रेणी → पूर्वी मैदान

(4) हाड़ौती पठार → पूर्वी मैदान → अरावली श्रेणी

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. राजस्थान के थार मरुस्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह राज्य के कुल क्षेत्रफल के लगभग 61.11 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।

II. यह आंतरिक अपवाह तंत्र और अल्पकालिक नदियों की विशेषता रखता है।

III. यह विश्व के अन्य मरुस्थलों की तुलना में उच्च जनसंख्या घनत्व रखता है।

IV. इसमें पथरीले मरुस्थल के विशाल विस्तार हैं जिन्हें स्थानीय रूप से 'हम्मादा' कहा जाता है।

V. यहाँ समान रूप से 60 सेंटीमीटर से अधिक औसत वार्षिक वर्षा होती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल II

(2) केवल V

(3) केवल I और III

(4) केवल IV और V

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

43. निम्नलिखित में से किसे मध्य अरावली क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी माना जाता है?
(1) रघुनाथगढ़
(2) तारागढ़
(3) अचलगढ़
(4) टॉडगढ़ (गोरमजी)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. उत्तरी अरावली क्षेत्र की सर्वोच्च पर्वत चोटी कौन सी है और यह किस जिले में स्थित है?
(1) बाबई, झुंझुनू
(2) रघुनाथगढ़, सीकर
(3) खोह, जयपुर
(4) भैरच, अलवर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची I में दी गई अरावली पर्वतमाला की चोटियों का सूची II में उनके संबंधित जिलों के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (चोटी)
A. अचलगढ़
B. जरगा
C. रघुनाथगढ़
D. तारागढ़
सूची II: (जिला)
i. अजमेर
ii. सिरोही
iii. सीकर
iv. उदयपुर
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अरावली पहाड़ियों की तलहटी में ढालू भू-भाग वाली विशेषता वाला 'पीडमोंट का मैदान' किस स्थान के निकट बनास बेसिन में प्रमुख है?
(1) बीकानेर
(2) झालावाड़
(3) पोखरण
(4) देवगढ़ (राजसमंद)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. दक्षिणी राजस्थान में माही बेसिन में ऊबड़-खाबड़ और अत्यधिक वनाच्छादित स्थलाकृति है। डूंगरपुर और बांसवाड़ा के इस विशिष्ट क्षेत्र को किस क्षेत्रीय शब्द से संबोधित किया जाता है?
(1) वागड़
(2) मरु
(3) मेरु
(4) भाबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): हाड़ौती पठार क्षेत्र कपास और सोयाबीन जैसी व्यावसायिक फसलों की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है।
कारण (R): इस क्षेत्र की मृदा मध्यम काली है, जो बेसाल्टिक लावा चट्टानों के अपक्षय से निर्मित है और इसमें नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. अर्द्ध-शुष्क शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा जल को संचित और संरक्षित करने हेतु निर्मित पारंपरिक संरचनाओं को क्या कहा जाता है?
(1) बावड़ी
(2) जोहड़
(3) खड़ीन
(4) टांका
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. मेवात क्षेत्र में स्थित पहाड़ियाँ, जो उत्तरी अरावली का अंग हैं, सामान्यतः किस नाम से जानी जाती हैं?
(1) अलवर की पहाड़ियाँ
(2) मलखेत की पहाड़ियाँ
(3) हर्ष की पहाड़ियाँ
(4) छप्पन की पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

51. जैसलमेर में लाठी सीरीज क्षेत्र की मुख्य भौगोलिक विशेषता क्या है?
(1) चूना पत्थर की गुफाओं की एक प्रमुख श्रृंखला।
(2) गतिशील बरखान रेत के टीलों का विस्तार।
(3) एक भूगर्भीय जल-भृत पट्टी जहाँ भूमिगत जल उपलब्ध है।
(4) विवर्तनिक उत्थान द्वारा निर्मित एक उच्च पठार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. राजस्थान के भौगोलिक विस्तार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वर्ष 2000 में मध्य प्रदेश के विभाजन के पश्चात यह क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बन गया।
II. यह पाँच भारतीय राज्यों और एक पड़ोसी देश के साथ सीमा साझा करता है।

III. राजस्थान का क्षेत्रफल लगभग यूनाइटेड किंगडम के बराबर है और जर्मनी से थोड़ा छोटा है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. भूगर्भीय रुप से, अरावली पर्वतमाला की चट्टानों को मुख्य रुप से किन दो सुपरग्रुप में वर्गीकृत किया गया है?

(1) विंध्यन सुपरग्रुप और मारवाड़ सुपरग्रुप
(2) मालानी आग्नेय समूह और लाठी सीरीज
(3) भीलवाड़ा सुपरग्रुप और दिल्ली सुपरग्रुप
(4) दक्कन ट्रैप और गोंडवाना सुपरग्रुप
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. आकल वुड फॉसिल पार्क, जो राजस्थान के भूगर्भीय इतिहास और पुरा-जलवायु का प्रमाण प्रदान करता है, मुख्य रुप से किस भूगर्भीय काल से संबंधित है?

(1) प्रीकैंब्रियन काल
(2) कार्बोनिफेरस काल
(3) जुरासिक काल
(4) प्लीस्टोसीन युग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची I में दिए गए अरावली के पर्वतीय दर्रों का सूची II में उनके संबंधित स्थानों या मार्गों के साथ सुमेल कीजिए।

सूची I: (दर्रा)

A. देसूरी नाल
B. हाथीगुड़ा की नाल
C. गोरम घाट
D. सोमेश्वर नाल

सूची II: (स्थान/मार्ग)

i. राजसमंद और पाली को जोड़ता है
ii. कुंभलगढ़ के निकट
iii. राजसमंद में रेलवे मार्ग का भाग
iv. पाली और उदयपुर की सीमा के निकट

सही कूट का चयन कीजिए:

(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. निम्नलिखित में से कौन सा जिला अन्य से भिन्न है क्योंकि वह अंतर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिफ रेखा) पर स्थित नहीं है?

(1) जोधपुर
(2) जैसलमेर
(3) बीकानेर
(4) फलोदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. राजस्थान का कौन सा जिला पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा और गुजरात के साथ अंतर्राज्यीय सीमा दोनों साझा करता है?

(1) श्रीगंगानगर
(2) जालौर
(3) बाड़मेर
(4) जैसलमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

58. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह क्षेत्र अधिकांशतः पुरानी जलोढ़ (बांगर) और नवीन जलोढ़ (खादर) से निर्मित है।
II. बनास का मैदान इस क्षेत्र के उत्तरी भाग में स्थित है।
III. चंबल बेसिन अपनी उत्खात स्थलाकृति के लिए प्रसिद्ध है।
IV. पूर्वी मैदान राजस्थान के सभी भौतिक क्षेत्रों में सबसे कम औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. उत्खात स्थलाकृति तीव्र जल अपरदन के परिणामस्वरुप उत्पन्न होने वाली एक भू-आकृतिक विशेषता है। यह किस नदी बेसिन की प्रमुख पहचान है?

(1) लूणी बेसिन
(2) माही बेसिन
(3) साबरमती बेसिन
(4) चंबल बेसिन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उन राज्यों के सही क्रम को दर्शाता है जो उत्तर से दक्षिण-पश्चिम की ओर दक्षिणावर्त दिशा में राजस्थान की सीमा बनाते हैं?

(1) पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात
(2) पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात
(3) हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश
(4) पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. राजस्थान के भौतिक विभागों में क्षेत्रफल और जनसंख्या के अनुपात के आधार पर, कौन सा क्षेत्र उच्चतम जनसंख्या घनत्व वाला है?

(1) पश्चिमी रेतीले मैदान
(2) अरावली श्रेणी और पहाड़ी क्षेत्र
(3) पूर्वी मैदान

पहाड़ियाँ हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राजस्थान का कौन सा जिला किसी अन्य राज्य के साथ सबसे लंबी निरंतर अंतर्राज्यीय सीमा साझा करता है?

(1) झालावाड़
(2) बाड़मेर
(3) चित्तौड़गढ़
(4) हनुमानगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राजस्थान के भूगर्भीय इतिहास और भौतिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. अरावली पर्वत प्रीकैंब्रियन युग के अवशिष्ट पर्वत माने जाते हैं।
II. थार मरुस्थल को प्रायद्वीपीय खंड का भूगर्भीय विस्तार माना जाता है।
III. पूर्वी मैदान नवीन क्वाटरनरी जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित हैं।
IV. हाड़ौती पठार का निर्माण क्रीटेशियस-इओसीन काल की ज्वालामुखीय गतिविधि के दौरान बहिर्वेधी आग्नेय चट्टानों से हुआ था।
V. महान सीमा भ्रंश भौतिक रूप से थार मरुस्थल को अरावली पर्वतमाला से पृथक करता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

I. क्वाटरनरी पवनकृत निक्षेप (रेत के टीले)
II. अरावली सुपरग्रुप
III. दक्कन ट्रैप
IV. विंध्यन सुपरग्रुप
निम्नलिखित में से कौन सा नवीनतम से प्राचीनतम तक सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) I, III, IV, II
(2) II, IV, III, I
(3) I, IV, III, II
(4) II, III, IV, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. राजस्थान की खनिज अर्थव्यवस्था इसकी भौतिक संरचना से संबद्ध है। जहाँ अरावली पर्वतमाला धात्विक खनिज प्रदान करती है, वहीं हाड़ौती का पठार किस संसाधन के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध है?
(1) लिग्नाइट कोयला और प्राकृतिक पेट्रोलियम भंडार।
(2) उच्च गुणवत्ता वाले पन्ने जैसे बहुमूल्य रत्न।
(3) अपरिष्कृत यूरेनियम जैसे रेडियोधर्मी खनिज।
(4) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर जैसे इमारती पत्थर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. गुरु शिखर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सिरोही जिले के माउंट आबू क्षेत्र में स्थित है।
II. कर्नल जेम्स टॉड ने इसे 'संतों का शिखर' कहा था।
III. यह अरावली पर्वतमाला के उत्तरी खंड में स्थित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. थार मरुस्थल के वर्गीकरण के संदर्भ में, जैसलमेर, रामगढ़ और पोखरण के समीप का क्षेत्र जिसमें अनावृत अवसादी चट्टानें पाई जाती हैं, कहलाता है:
(1) इर्ग
(2) रेग्ग
(3) हम्मादा
(4) प्लाया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान के भौगोलिक संदर्भ में "रेग्ग" की सर्वोत्तम परिभाषा है?
(1) बजरी, कंकड़ और रेत से निर्मित एक मरुस्थलीय मैदान।
(2) विभिन्न गतिशील टीलों की प्रधानता वाला एक रेतीला भू-भाग।
(3) अनुदैर्ध्य टीलों के मध्य निर्मित एक अस्थायी जल निकाय।
(4) एक उच्च पठार के किनारे पर पाया जाने वाला कगार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

75. सूची I में प्रमुख भौतिक विभागों का सूची II में राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में उनके अनुमानित प्रतिशत भाग के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (विभाग)
A. पश्चिमी रेतीले मैदान
B. अरावली श्रेणी
C. पूर्वी मैदान
D. दक्षिण-पूर्वी पठार
सूची II: (क्षेत्रफल प्रतिशत)
i. 9.0%
ii. 23.3%
iii. 6.89%
iv. 61.11%
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. राजस्थान के पूर्वी मैदानों में, पुरानी जलोढ़ मृदा से निर्मित क्षेत्र जो सामान्यतः नदियों के बाढ़ स्तर से ऊपर होते हैं, कहलाते हैं:
(1) खादर
(2) बांगर
(3) रोही
(4) भाबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. राजस्थान की भौतिक संरचना का इसकी जलवायु पर प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित में से कौन सा अरावली पर्वतमाला का सर्वाधिक महत्वपूर्ण जलवायु कार्य है?
(1) यह ठंडी साइबेरियाई हवाओं को थार मरुस्थल की ओर ले जाती है।
(2) यह बंगाल की खाड़ी की मानसून शाखा को राज्य में प्रवेश करने से पूर्णतः रोकती है।
(3) यह मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोकने वाले विभाजक के रूप में कार्य करती है।
(4) यह शीत ऋतु के दौरान स्थानीय चक्रवाती विक्षोभ उत्पन्न करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. मेवात भौतिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह शुष्क पश्चिम और आर्द्र गंगा के मैदानों के मध्य एक संक्रमणकालीन क्षेत्र है।
II. साहिबी और रूपा रेल नदियाँ इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण जल-विज्ञानी विशेषताएँ हैं।
III. यह सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से केवल भरतपुर जिले तक सीमित है।
IV. इसमें उत्तरी अरावली प्रणाली से संबंधित विच्छिन्न

ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि अपनी विशिष्ट बोली और भौगोलिक बनावट के लिए भी जाना जाता है।

35. (3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राजस्थान के भौतिक प्रदेशों में मिट्टियों की विविधता पाई जाती है। हाड़ौती पठार पर काली वर्टीसोल्स और पूर्वी मैदानों में जलोढ़ अल्फीसोल्स मृदा पाई जाती है। यह विविधता राज्य के कृषि प्रतिरुप और प्राकृतिक वनस्पति को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है। मिट्टियों का यह वितरण राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में फसलों के चयन और उनकी उत्पादकता को वैज्ञानिक आधार पर निर्धारित करने में सहायक है।

36. (4) इसका पूर्व-पश्चिम विस्तार इसके उत्तर-दक्षिण विस्तार से अधिक है।
राजस्थान की पूर्व-पश्चिम चौड़ाई उत्तर-दक्षिण लंबाई की तुलना में अधिक है। राज्य का पूर्व से पश्चिम विस्तार 869 किलोमीटर है, जबकि उत्तर से दक्षिण की दूरी 826 किलोमीटर है। इन दोनों के बीच 43 किलोमिटर का अंतर है। यह विशाल विस्तार राज्य की विविधतापूर्ण स्थलाकृति और सीमाओं को भौगोलिक आधार प्रदान करता है, जो यहाँ की जलवायु और समय के अंतर को भी निर्धारित करता है।

37. (3) एक विषमकोणीय चतुर्भुज
राजस्थान के भौगोलिक आकार को विषमकोणीय चतुर्भुज के रुप में वर्णित किया जाता है। इसका वर्णन सर्वप्रथम टी.एच. हैंडले ने किया था। यह विशिष्ट स्वरुप राजस्थान को भारतीय मानचित्र पर अलग पहचान और सीमावर्ती स्पष्टता देता है। यह आकृति राज्य की सीमाओं के विशेष विस्तार और पड़ोसी राज्यों के साथ इसके संपर्क बिंदुओं के आधार पर निर्धारित हुई है, जो प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

38. (2) केवल I, II और III
राजस्थान वर्तमान में 10 प्रशासनिक संभागों में विभाजित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जोधपुर सबसे बड़ा संभाग है। जिलों की संख्या प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुसार समय-समय पर परिवर्तित होती रही है। यह ढांचा राज्य की भौगोलिक और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। इन विभाजनों का मुख्य उद्देश्य संसाधनों का कुशल वितरण और सरकारी सेवाओं की जनता तक प्रभावी तथा सरल पहुँच सुनिश्चित करना है।

39. (4) प्रतापगढ़
राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी जिले गुजरात के साथ सीमा साझा करते हैं। प्रतापगढ़ जिला केवल मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाता है। सीमाओं का यह निर्धारण राज्य के अंतर्राज्यीय व्यापार और परिवहन हेतु भौगोलिक आधार है। प्रतापगढ़ की आंतरिक स्थिति इसे मध्य प्रदेश की संस्कृति और भूगोल के अधिक निकट लाती है, जो इसे राज्य के अन्य दक्षिणी सीमावर्ती जिलों से अलग पहचान प्रदान करती है।

40. (1) डीग
राजस्थान का डीग जिला राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला हरियाणा और उत्तर प्रदेश दोनों राज्यों के साथ अपनी सीमाएँ साझा करता है। यह क्षेत्र यमुना के मैदानों के निकट होने के कारण उपजाऊ है और दो राज्यों की सीमाओं पर स्थित होने से रणनीतिक महत्व रखता है। नवीन गठन के बाद डीग की भौगोलिक स्थिति इस सीमावर्ती क्षेत्र के प्रशासनिक और सामाजिक विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

41. (1) पूर्वी मैदान → अरावली श्रेणी → पश्चिमी रेतीले मैदान
जयपुर से जोधपुर की यात्रा में तीन प्रमुख भौतिक विभागों का अनुभव होता है। जयपुर पूर्वी मैदानी भाग में स्थित है। पश्चिम की ओर बढ़ने पर अरावली पर्वतमाला आती है। अंततः यात्री पश्चिमी रेतीले मैदानों में प्रवेश करता है। यह यात्रा राज्य की विविध भू-आकृति और जलवायु में होने वाले क्रमिक परिवर्तन को दर्शाती है। यह यात्रा राजस्थान की भौगोलिक और प्राकृतिक विविधता का एक संक्षिप्त और स्पष्ट दृश्य प्रस्तुत करती है।

42. (2) केवल V
थार मरुस्थल राजस्थान के लगभग 61.11 प्रतिशत भू-भाग पर विस्तृत है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा मात्र 20 से 50 सेंटीमीटर के बीच रहती है। यहाँ का आंतरिक अपवाह तंत्र और पथरीला 'हम्मादा' इसकी पहचान है। राज्य की अर्थव्यवस्था में इस शुष्क प्रदेश का अपना विशिष्ट स्थान है। यह क्षेत्र अपनी अद्वितीय जैव-विविधता और विषम परिस्थितियों में जीवन के संघर्ष के लिए विश्व भर में विख्यात है।

43. (4) टॉडगढ़ (गोरमजी)
मध्य अरावली क्षेत्र का विस्तार मुख्य रुप से अजमेर जिले में है। इस क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी टॉडगढ़ (गोरमजी) है, जिसकी ऊंचाई 933 मीटर है। यह पर्वतीय खंड उत्तरी और दक्षिणी अरावली के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी है। यह अपनी ऐतिहासिक सामरिक स्थिति और भौगोलिक बनावट के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र न केवल जल विभाजक के रुप में कार्य करता है, बल्कि स्थानीय जलवायु को भी प्रभावित करता है।

44. (2) रघुनाथगढ़, सीकर
उत्तरी अरावली क्षेत्र जयपुर, अलवर, सीकर और झुंझुनू जिलों में विस्तृत है। इस क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी रघुनाथगढ़ है, जिसकी ऊंचाई 1055 मीटर है। यह चोटी उत्तरी खंड के उच्चावच का प्रतिनिधित्व करती है। खोह और भैरच जैसी चोटियाँ भी इसी पर्वतीय विस्तार का हिस्सा हैं। यह पर्वतीय क्षेत्र खनिजों के भंडार और सघन वनस्पति के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय पारिस्थितिकी का मुख्य आधार है।

45. (3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
अरावली की चोटियाँ विभिन्न जिलों में फैली हैं। अचलगढ़ सिरोही में और रघुनाथगढ़ सीकर में स्थित है। इन चोटियों का वितरण राज्य के भौतिक स्वरुप को समझने के लिए आवश्यक है। यह पर्वतीय विस्तार वर्षा और खनिजों को निर्धारित करता है। इन पर्वतों की ऊंचाई और स्थिति राजस्थान की मानसून प्रणाली तथा नदियों के बहाव क्षेत्र को नियंत्रित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (1) 23°3' उत्तर से 30°12' उत्तर अक्षांश और 69°30' पूर्व से 78°17' पूर्व देशांतर
राजस्थान राज्य का भौगोलिक विस्तार उत्तरी और पूर्वी गोलार्ध में है। इसका अक्षांशीय विस्तार 23°3' उत्तर से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है। देशांतरीय दृष्टि से यह 69°30' पूर्व से 78°17' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह विस्तार राज्य की सीमाओं को निर्धारित करता है, जो इसकी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति और जलवायु का मुख्य आधार है।

2. (2) 10.41 प्रतिशत
राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10.41 प्रतिशत है। वर्ष 2000 में मध्य प्रदेश के विभाजन के पश्चात इसे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसकी विशालता और विविध स्थलाकृतियाँ इसे राष्ट्रीय स्तर पर भौगोलिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट बनाती हैं।

3. (3) सभी सीमावर्ती जिलों में बीकानेर जिला अंतर्राष्ट्रीय सीमा का सबसे लंबा भाग साझा करता है।
राजस्थान की पाकिस्तान के साथ लगने वाली अंतर्राष्ट्रीय सीमा को 'रेडक्लिफ रेखा' कहा जाता है, जिसकी लंबाई 1070 किलोमीटर है। यह उत्तर में हिंदूमलकोट से दक्षिण में शाहगढ़ तक विस्तृत है। सीमावर्ती जिलों में जैसलमेर सर्वाधिक लंबी, जबकि बीकानेर सबसे छोटी सीमा साझा करता है। यह रेखा राष्ट्रीय सुरक्षा और भौगोलिक दृष्टिकोण से राज्य के लिए अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण मानी जाती है।

4. (4) मध्य प्रदेश और पंजाब
राजस्थान अपनी अंतर्राज्यीय सीमा पाँच राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात के साथ साझा करता है। राज्य की सबसे लंबी सीमा मध्य प्रदेश के साथ 1600 किलोमीटर लगती है। इसके विपरीत, सबसे छोटी सीमा उत्तर में पंजाब के साथ मात्र 89 किलोमीटर लंबी है। ये सीमाएँ राज्य के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विनिमय में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

5. (3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के पड़ोसी राज्यों के साथ साझा की गई सीमाओं की लंबाई भिन्न है। मध्य प्रदेश के साथ सर्वाधिक 1600 किलोमीटर और हरियाणा के साथ 1262 किलोमीटर लंबी सीमा लगती है। गुजरात के साथ यह विस्तार 1022 किलोमीटर है, जबकि पंजाब के साथ न्यूनतम 89 किलोमीटर की सीमा लगती है। इन सीमाओं का निर्धारण भौगोलिक आधार पर हुआ है, जो प्रशासनिक और क्षेत्रीय संपर्क के लिए महत्वपूर्ण हैं।

NODIA

6. (2) दक्षिणी तटीय मैदान
राजस्थान को मुख्य रूप से चार भौतिक विभागों में बांटा गया है: पश्चिमी रेतीले मैदान, अरावली श्रेणी, पूर्वी मैदान और दक्षिण-पूर्वी पठार। चूँकि राजस्थान एक भू-आबद्ध राज्य है, इसलिए यहाँ 'दक्षिणी तटीय मैदान' जैसा कोई विभाग विद्यमान नहीं है। राज्य की भू-आकृति मरुस्थलीय, पर्वतीय और पठारी विशेषताओं का अद्भुत मिश्रण है, जो इसे अन्य राज्यों से भौगोलिक रूप से विशिष्ट बनाती है।

7. (4) टेथिस सागर
राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित थार मरुस्थल को प्राचीन टेथिस सागर का अवशेष माना जाता है। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार, करोड़ों वर्ष पूर्व यहाँ समुद्र था, जो जलवायु परिवर्तन के कारण मरुस्थल में बदल गया। यहाँ पाई जाने वाली खारे पानी की झीलें और समुद्री जीवाश्म इसकी पुष्टि करते हैं। वर्तमान में यह विश्व का सर्वाधिक जनघनत्व वाला मरुस्थल है।

8. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पश्चिमी भाग में अल्प वर्षा का मुख्य कारण अरावली पर्वतमाला की स्थिति है। यह श्रृंखला दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर वाली शाखा के समानांतर स्थित है। इसके कारण मानसूनी हवाएँ बिना किसी अवरोध के उत्तर की ओर निकल जाती हैं। इस भौगोलिक बाधा के अभाव में पश्चिमी राजस्थान शुष्क रह जाता है और मरुस्थलीय जलवायु का प्रभाव बना रहता है।

9. (3) सिरोही, 1722 मीटर
गुरु शिखर राजस्थान की सर्वोच्च पर्वत चोटी है, जो अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी भाग में स्थित है। सिरोही जिले के माउंट आबू क्षेत्र में इसकी ऊंचाई 1722 मीटर है। कर्नल जेम्स टॉड ने इसे 'संतों का शिखर' कहा था क्योंकि यह प्राचीन ऋषियों की तपस्या स्थली रही है। यह स्थल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और पर्यटन तथा धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है।

10. (1) गुरु शिखर, सेर, दिलवाड़ा, जरगा
अरावली की चोटियों की ऊंचाई दक्षिण-पश्चिम में सर्वाधिक है। गुरु शिखर 1722 मीटर के साथ सर्वोच्च है, जिसके बाद सेर (1597 मीटर), दिलवाड़ा (1442 मीटर) और जरगा (1431 मीटर) का स्थान आता है। यह अवरोही क्रम राज्य के उच्चावच को समझने में सहायक है। ये सभी चोटियाँ दक्षिणी अरावली का हिस्सा हैं और राज्य की भौतिक बनावट को विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं।

11. (4) बनास, माही और चंबल
राजस्थान का पूर्वी मैदानी भाग अत्यंत उपजाऊ क्षेत्र है। इसका निर्माण मुख्य रूप से बनास, माही और चंबल नदियों द्वारा लाए

(4) दक्षिण-पूर्वी राजस्थान पठार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान अपनी सबसे लंबी अंतर्राज्यीय सीमा मध्य प्रदेश के साथ साझा करता है।
II. पंजाब के साथ सीमा सबसे छोटी है, जिसकी लंबाई 89 किलोमीटर है।
III. भीलवाड़ा वह जिला है जो कुल मिलाकर सबसे लंबी अंतर्राज्यीय सीमा बनाता है।
IV. झालावाड़ मध्य प्रदेश के साथ अंतर्राज्यीय सीमा साझा करता है।
V. राजस्थान के दो जिले उत्तर प्रदेश के साथ सीमा साझा करते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. भौतिक विशेषता जिसे दक्षिणी जिलों में प्रमुख अरावली संरचनात्मक आधार माना जाता है, किस प्रशासनिक संभाग का मूल भाग है?
(1) उदयपुर संभाग
(2) बीकानेर संभाग
(3) जोधपुर संभाग
(4) भरतपुर संभाग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. राजस्थान के भूगर्भीय इतिहास के संदर्भ में जोधपुर के पास स्थित "बाप बोल्डर बेड" का क्या महत्व है?
(1) सेनोजोइक युग में ज्वालामुखी उद्गार के प्रमाण।
(2) परमो-कार्बोनिफेरस काल के दौरान व्यापक हिमनदन के प्रमाण।
(3) जुरासिक काल के दौरान समुद्री अतिक्रमण के प्रमाण।
(4) क्वाटरनरी काल के दौरान वायु अपरदन के प्रमाण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I में मरुस्थलीय स्थलाकृतियों का सूची II में उनकी विशिष्ट परिभाषाओं के साथ सुमेल कीजिए।
सूची I: (शब्द)
A. हम्मादा
B. रेग्ग
C. इर्ग
D. रन/टाट
सूची II: (परिभाषा)
i. एक रेतीला मरुस्थल
ii. एक पथरीला मरुस्थल जिसमें रेत का अभाव होता है
iii. पत्थरों और रेत का मिश्रित मरुस्थल
iv. एक उथला खारा गर्त या अस्थायी झील
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. पालनपुर से दिल्ली तक अरावली पर्वतमाला की कुल 692 किलोमीटर लंबाई में से लगभग कितनी लंबाई राजस्थान में स्थित है?
(1) 450 किलोमीटर
(2) 500 किलोमीटर
(3) 550 किलोमीटर
(4) 600 किलोमीटर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाड़ौती क्षेत्र) संरचनात्मक रूप से दो प्रमुख उप-इकाइयों में विभाजित है। वे कौन सी हैं?
(1) मालवा का पठार और बुंदेलखंड नीस
(2) भोराट का पठार और लासिया का पठार
(3) विंध्यन कगार भूमि और दक्कन लावा पठार
(4) मेवाड़ पर्वतीय क्षेत्र और छप्पन का मैदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक कथन (A) और एक कारण (R)। कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): राजस्थान के पश्चिमी रेतीले मैदानों में तापमान का अत्यधिक दैनिक तापांतर पाया जाता है।
कारण (R): इस क्षेत्र की रेतीली मृदा की विशिष्ट ऊष्मा क्षमता उच्च होती है, जिससे यह ऊष्मा को अत्यंत मंद गति से अवशोषित और विसर्जित करती है।
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. नक्की झील, जो राजस्थान की एक प्रमुख उच्च-ऊंचाई वाली भौगोलिक विशेषता है, किस विशिष्ट भौतिक संरचना के भीतर स्थित है?
(1) भोराट का पठार
(2) विंध्यन कगार भूमि
(3) माउंट आबू बैथोलिथ (अरावली पर्वतमाला)
(4) ऊपरमाल का पठार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. राजस्थान में पाई जाने वाली भूगर्भीय संरचनाओं के निम्नलिखित वर्गों पर विचार कीजिए:

Downloaded from www.pdf.tube

23. (4) लूणी
गोडवाड़ क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान के अर्द्ध-शुष्क मैदानी भाग का हिस्सा है, जो मुख्य रूप से लूणी नदी और उसकी सहायक नदियों के बेसिन से संबंधित है। इसमें जालौर, पाली और सिरोही जिले शामिल हैं। लूणी का अपवाह तंत्र यहाँ की कृषि का आधार है। यह भू-भाग अरावली और मरुस्थल के बीच उपजाऊ पट्टी के समान है, जो क्षेत्रीय आजीविका सुनिश्चित करता है।

24. (1) नाली
राजस्थान के उत्तरी जिलों श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में घग्गर नदी के बाढ़ के मैदानों को 'नाली' कहा जाता है। घग्गर एक प्राचीन अंतःप्रवाह नदी है। यहाँ की मिट्टी उपजाऊ है, जो चावल और कपास उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यह विशेषता स्थानीय अर्थव्यवस्था हेतु महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शुष्क क्षेत्र में उन्नत कृषि और सघन बसावट का मुख्य आधार प्रदान करती है।

25. (3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राजस्थान के स्थानीय भौगोलिक शब्दों के विशिष्ट अर्थ हैं। भोराट कुंभलगढ़ और गोगुंदा के बीच का ऊँचा पठार है। उदयपुर के पास की पहाड़ियाँ 'गिरवा' कहलाती हैं। बिजोलिया से भैंसरोड़गढ़ का पठार 'ऊपरमाल' है। ये शब्दावलियां राज्य के विविध भौगोलिक स्वरुप और उच्चावच को स्पष्ट रुप से परिभाषित करती हैं, जो क्षेत्रीय पहचान और वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

26. (1) माही बेसिन
राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित छप्पन का मैदान अपनी विच्छेदित स्थलाकृति के लिए प्रसिद्ध है। यह माही नदी के बेसिन में बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ के मध्य स्थित है। माही नदी द्वारा निर्मित यह उपजाऊ भू-भाग कृषि और सघन वनस्पति के लिए जाना जाता है, जो इस क्षेत्र की विशेषता है। यह मैदान आदिवासी बहुल क्षेत्र में आर्थिक आत्मनिर्भरता और जैव-विविधता का मुख्य स्रोत है।

27. (4) विंध्यन सुपरग्रुप
महान सीमा भ्रंश राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण भूगर्भीय संरचना है। यह चित्तौड़गढ़, बूंदी और सवाई माधोपुर जिलों में दिखाई देती है। इसकी उत्पत्ति पृथ्वी की आंतरिक विवर्तनिक गतिविधियों से हुई थी। यह संरचना राज्य की भू-आकृतिक विविधता समझने के लिए वैज्ञानिक महत्व रखती है और अरावली तथा विंध्यन पर्वत प्रणालियों के मिलन स्थल को स्पष्ट रुप से रेखांकित करती है।

28. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान का महान भारतीय जल विभाजक है। इसके पूर्व की नदियाँ बंगाल की खाड़ी और पश्चिम की नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं। यह श्रृंखला महत्वपूर्ण भौगोलिक अवरोध है। यह ऊँची पर्वतमाला न केवल जल प्रवाह की दिशा तय करती है, बल्कि बादलों को रोककर वर्षा के वितरण में भी निर्णायक भूमिका निभाती है, जो राज्य के पारिस्थितिकी तंत्र का आधार है।

NODIA

29. (3) प्रीकैंब्रियन युग
अरावली पर्वतमाला का निर्माण प्राचीन प्रीकैंब्रियन युग में हुआ था। यह विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है। अब यह केवल अवशिष्ट पर्वत के रूप में शेष है। यह तंत्र भारतीय उपमहाद्वीप की भूगर्भीय स्थिरता समझने का महत्वपूर्ण साक्ष्य है। इसकी प्राचीन चट्टानें और संरचनाएँ पृथ्वी के प्रारंभिक भूगर्भीय विकास की जानकारी देने में अत्यंत महत्वपूर्ण और सहायक सिद्ध होती हैं।

30. (1) I, III, II, IV
राजस्थान की भूगर्भीय संरचनाओं का निर्माण विभिन्न युगों में हुआ। सबसे प्राचीन बैंडेड नीसिक कॉम्प्लेक्स है, जो अरावली का आधार है। सबसे नवीन संरचना क्वाटरनरी काल के रेत के टीले हैं। यह क्रम राज्य की दीर्घकालिक भू-आकृतिक विकास प्रक्रिया को स्पष्ट रुप से दर्शाता है। यह ऐतिहासिक क्रम खनिजों की उपस्थिति और राज्य की वर्तमान भौतिक बनावट को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक वैज्ञानिक साक्ष्य है।

31. (1) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित विंध्यन कगार भूमि मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों से निर्मित है। यहाँ बलुआ पत्थर और चूना पत्थर की प्रचुरता है। ये चट्टानें समुद्री निक्षेपों से बनी हैं। यह भूमि बनास और चंबल के मध्य पठारी किनारे के रूप में स्थित और प्रसिद्ध है। यहाँ का इमारती पत्थर राज्य के सीमेंट उद्योग और निर्माण कार्यों के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है।

32. (3) केवल III
राजस्थान के पूर्वी मैदान राज्य के लगभग 23.3 प्रतिशत भाग पर विस्तृत हैं। जलोढ़ मिट्टी के कारण यह क्षेत्र उपजाऊ है और यहाँ उच्चतम जनसंख्या घनत्व पाया जाता है। नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी ने इसे कृषि हेतु आदर्श बनाया है। सघन बस्तियाँ और उन्नत कृषि इस भाग की मुख्य पहचान हैं। यह क्षेत्र राज्य के आर्थिक विकास का इंजन है, जो सर्वाधिक खाद्य उत्पादन सुनिश्चित करता है।

33. (2) मृत प्रदेश
राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी भाग के लिए 'मरुस्थली' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ 'मृत प्रदेश' होता है। यह नाम कठोर जलवायु, जल की कमी और विरल वनस्पति को दर्शाता है। आधुनिक सिंचाई के बावजूद इसकी भौगोलिक पहचान आज भी स्थिर है। यह शब्द इस क्षेत्र की ऐतिहासिक और प्राकृतिक चुनौतियों का प्रतीक है, जहाँ जीवन का अस्तित्व अत्यंत कठिन और साहसी माना जाता रहा है।

34. (1) तोरावाटी
कांतली नदी शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख अंतःप्रवाह नदी है। इस नदी के अपवाह क्षेत्र को स्थानीय रूप से 'तोरावाटी' कहा जाता है। ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र तंवर वंश के अधीन था। तोरावाटी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और पहाड़ी भू-आकृति के लिए राजस्थान में प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र न केवल

गए जलोढ़ निक्षेपों से हुआ है। यह क्षेत्र कृषि की दृष्टि से समृद्ध है और यहाँ जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक पाया जाता है। यह भू-भाग राज्य की आर्थिक प्रगति, सघन बसावट और उच्च उत्पादकता का मुख्य भौगोलिक आधार है।

12. (2) केवल I और III
दक्षिण-पूर्वी पठार, जिसे हाड़ौती का पठार भी कहते हैं, भौगोलिक रूप से मालवा के पठार का ही विस्तार है। इसमें विंध्यन और दक्कन ट्रैप की भूगर्भीय संरचनाओं का संगम मिलता है। यह क्षेत्र काली मिट्टी के लिए प्रसिद्ध है और अपनी विशिष्ट स्थलाकृति के कारण अन्य भौगोलिक विभागों से अलग है। ज्वालामुखी लावा के जमने से बनी यहाँ की चट्टानें राज्य की कृषि संपदा का आधार हैं।

13. (3) अंतःप्रवाह अपवाह जहाँ नदियाँ समुद्र तक पहुँचने से पूर्व ही लुप्त हो जाती हैं।
शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के अर्द्ध-शुष्क मैदानी भाग में स्थित है, जिसकी विशेषता अंतःप्रवाह अपवाह तंत्र है। यहाँ प्रवाहित होने वाली कांतली जैसी नदियाँ किसी समुद्र में मिलने के बजाय मरुस्थलीय रेत में ही विलीन हो जाती हैं। इस तंत्र को आंतरिक जल निकासी कहा जाता है। यह स्थिति क्षेत्र की जलवायु और भू-आकृति का परिणाम है, जो इसे अन्य जल प्रणालियों से पृथक करती है।

14. (4) अलवर और भरतपुर
राजस्थान का मेवात क्षेत्र राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है, जिसमें मुख्य रूप से अलवर और भरतपुर जिले शामिल हैं। यह क्षेत्र अरावली की पहाड़ियों और गंगा-यमुना के मैदानों के बीच एक महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन पट्टी है। यहाँ की जलवायु और वनस्पति में पूर्वी मैदानों तथा पर्वतीय क्षेत्रों की मिश्रित विशेषताएँ दिखाई देती हैं, जो इसे जैव-विविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती हैं।

15. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान की भूगर्भीय संरचना अत्यंत प्राचीन और विविध है। बैंडेड नीसिक कॉम्प्लेक्स अरावली का आधार बनाता है, जबकि जैसलमेर की लाठी सीरीज एक महत्वपूर्ण जल-भृत पट्टी है। विंध्यन सुपरग्रुप की चट्टानें दक्षिण-पूर्वी पठार में पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त, पूर्वी मैदानों का निर्माण प्लीस्टोसीन जलोढ़ से हुआ है। यह विविधता राज्य को खनिजों के मामले में समृद्ध बनाती है।

16. (2) अरावली पर्वत श्रृंखला
अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान की प्रमुख खनिज पट्टी है, जो धात्विक खनिजों के उत्पादन में अग्रणी है। तांबा, सीसा, जस्ता और चांदी जैसे महत्वपूर्ण खनिज इसी क्षेत्र की प्राचीन चट्टानों में पाए जाते हैं। यह प्रीकैंब्रियन चट्टानों से निर्मित है। राज्य की आर्थिक क्षमता को सुदृढ़ करने में इस क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण है, जो औद्योगिक विकास का मुख्य आधार माना जाता है।

17. (3) 36 मिनट
राजस्थान का देशांतरीय विस्तार लगभग 9 डिग्री है। चूँकि पृथ्वी को एक डिग्री देशांतर पार करने में 4 मिनट का समय लगता है, इसलिए राज्य के पूर्वी और पश्चिमी छोर के बीच लगभग 36 मिनट का समयांतर होता है। धौलपुर में सूर्योदय जैसलमेर की तुलना में पहले होता है। यह स्थिति राज्य की विशाल पूर्व-पश्चिम चौड़ाई को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

18. (1) केवल I और II
राजस्थान का उत्तर से दक्षिण तक विस्तार 826 किलोमीटर है, जबकि पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 869 किलोमीटर है। राज्य का आकार विषमकोणीय चतुर्भुज के समान है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कर्क रेखा दक्षिणी जिलों से गुजरती है। यह संरचना राज्य की जलवायु और सीमाओं को परिभाषित करने का आधार है, जो इसे राष्ट्रीय मानचित्र पर विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती है।

19. (3) डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों से होकर गुजरने वाला दक्षिणी छोर।
कर्क रेखा राजस्थान के सुदूर दक्षिणी भाग से गुजरती है। यह मुख्य रूप से बांसवाड़ा जिले के मध्य से और डूंगरपुर की दक्षिणी सीमा को स्पर्श करते हुए निकलती है। इस कारण राजस्थान का अधिकांश भाग उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में आता है। यहाँ सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, जो स्थानीय जलवायु को प्रभावित करती हैं और इस क्षेत्र को विशेष तापीय महत्व प्रदान करती हैं।

20. (4) वे उपजाऊ कृषि भूमि पर अतिक्रमण करके मरुस्थलीकरण का कारण बनते हैं।
पश्चिमी राजस्थान में वायु की दिशा के साथ निरंतर आगे बढ़ने वाले गतिशील रेत के टीलों को 'धरियन' कहा जाता है। इससे उपजाऊ मिट्टी रेत के नीचे दबकर खेती के अयोग्य हो जाती है। यह प्रक्रिया मरुस्थलीकरण को बढ़ावा देती है। यह क्षेत्रीय पारिस्थितिक तंत्र के लिए चुनौती है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और कृषि कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

21. (3) बरखान टीले
बरखान रेगिस्तान में पाए जाने वाले विशिष्ट अर्द्धचंद्राकार रेत के टीले हैं, जो वायु की दिशा के लंबवत बनते हैं। इनकी पवन-विमुख दिशा में तीव्र ढाल होती है। ये टीले अत्यंत गतिशील होते हैं और मरुस्थल विस्तार के लिए उत्तरदायी हैं। शेखावाटी में इनका प्रभाव अधिक देखा जाता है। ये टीले क्षेत्रीय स्थलाकृति और बस्तियों के नियोजन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

22. (2) केवल IV
अरावली विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणियों में से एक है। इसकी ऊंचाई और चौड़ाई दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर जाने पर निरंतर कम होती जाती है। यह श्रृंखला जल विभाजक का कार्य करती है। इसकी ढाल और विस्तार राज्य की मानसून प्रणाली और वर्षा को प्रभावित करते हैं, जो इसे राजस्थान के भूगोल का सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

46. (4) देवगढ़ (राजसमंद)
बनास बेसिन में पहाड़ियों की तलहटी में स्थित ढालू मैदानी भाग को 'पीडमोंट का मैदान' कहते हैं। यह मुख्य रूप से राजसमंद के देवगढ़ के समीप स्थित है। यहाँ की मिट्टी उपजाऊ है और जल निकासी की उत्तम व्यवस्था रहती है। यह मैदान स्थानीय कृषि और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह स्थलाकृति पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन भौगोलिक इकाई के रूप में पहचानी जाती है।

47. (1) वागड़
राजस्थान के दक्षिण में माही नदी बेसिन के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों को 'वागड़' कहा जाता है। माही द्वारा निर्मित यह ऊबड़-खाबड़ भूमि इसे अलग पहचान देती है। वागड़ क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता के साथ विशिष्ट आदिवासी संस्कृति का भी केंद्र है। यह क्षेत्र अपने सघन वनों और विच्छेदित पठारी धरातल के लिए प्रसिद्ध है, जो राज्य के अन्य भौगोलिक विभागों की तुलना में अधिक वर्षा और आर्द्रता प्राप्त करता है।

48. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हाड़ौती पठार अपनी उपजाऊ काली मिट्टी के कारण कपास और सोयाबीन के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। काली मिट्टी में नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है। यह भौगोलिक विशेषता इस क्षेत्र को राज्य के प्रमुख कृषि क्षेत्र के रूप में स्थापित करती है। लावा जनित यह मृदा खनिजों से भरपूर है और वर्षा आधारित खेती के लिए राज्य के सबसे उपयुक्त क्षेत्रों में से एक मानी जाती है।

49. (2) जोहड़
शेखावाटी के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल संरक्षण के लिए निर्मित पारंपरिक कच्चे कुओं को 'जोहड़' कहा जाता है। जोहड़ पेयजल उपलब्ध कराने के साथ भू-जल स्तर को बढ़ाने में भी सहायक हैं। यह तकनीक मरुस्थलीय परिस्थितियों में जीवन को सुगम बनाती है। यह स्थानीय सामुदायिक जल प्रबंधन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो आधुनिक जल संकट के समाधान में भी एक प्रभावी और प्राचीन प्रेरणा प्रदान करता है।

50. (1) अलवर की पहाड़ियाँ
मेवात क्षेत्र की पहाड़ियाँ उत्तरी अरावली श्रेणी का विस्तार हैं। ये पहाड़ियाँ विच्छेदित हैं, जो स्थानीय जलवायु को प्रभावित करती हैं। यहाँ की भौगोलिक बनावट और वन संपदा सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये पर्वत श्रृंखलाएँ उत्तर-पूर्वी राजस्थान की सीमा को परिभाषित करती हैं और मानसूनी हवाओं के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर स्थानीय वर्षा के वितरण को भी नियंत्रित करने का कार्य करती हैं।

51. (3) एक भूगर्भीय जल-भृत पट्टी जहाँ भूमिगत जल उपलब्ध है।
जैसलमेर में पोखरण से मोहनगढ़ तक विस्तृत एक भूगर्भीय जल-भृत पट्टी को 'लाठी सीरीज' कहते हैं। यहाँ मीठे पानी के विशाल भूमिगत भंडार हैं। यह करोड़ों वर्ष पुरानी जल-संरचना थार मरुस्थल की जीवन रेखा और पशुपालन का मुख्य आधार है। यहाँ की 'सेवण' घास स्थानीय पशुधन के लिए पौष्टिक आहार प्रदान करती है, जो इस शुष्क क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण भौगोलिक आधार देती है।

52. (4) I, II और III
राजस्थान भारत का विशालतम राज्य है। इसका क्षेत्रफल यूनाइटेड किंगडम के समान है। राज्य की यह विशालता यहाँ विविध जलवायु को जन्म देती है और इसके भौगोलिक विस्तार को स्पष्ट करती है। 1 नवंबर 2000 को हुए भौगोलिक परिवर्तनों के बाद यह देश का क्षेत्रफल में प्रथम राज्य बना। इसकी विस्तृत सीमाएँ और विविध भौतिक प्रदेश इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भौगोलिक रूप से विशिष्ट और समृद्ध बनाते हैं।

53. (3) भीलवाड़ा सुपरग्रुप और दिल्ली सुपरग्रुप
अरावली की भूगर्भीय संरचना जटिल है। भीलवाड़ा सुपरग्रुप में प्राचीन चट्टानें हैं। इन संरचनाओं का अध्ययन खनिजों के वितरण को समझने हेतु आवश्यक है, जो राज्य को खनिज संपन्न बनाती हैं। अरावली की यह प्राचीन और कायांतरित चट्टानी संरचना धात्विक खनिजों का प्रमुख स्रोत है, जो राजस्थान की आर्थिक नींव को मजबूत करती है। यह जटिल बनावट राज्य की भूगर्भीय स्थिरता और उसके ऐतिहासिक विकास को स्पष्ट करती है।

54. (3) जुरासिक काल
जैसलमेर का आकल वुड फॉसिल पार्क करोड़ों वर्ष पुराने इतिहास का साक्ष्य है। ये अवशेष प्राचीन वनस्पति और जलवायु की जानकारी देते हैं। यह स्थान प्रमाणित करता है कि यह शुष्क क्षेत्र कभी घने वनों से आच्छादित था। जुरासिक काल के ये जीवाश्म राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र के क्रमिक विकास और ऐतिहासिक पर्यावरणीय परिवर्तनों को समझने के लिए वैश्विक स्तर पर अत्यंत दुर्लभ और महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

55. (4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
अरावली के दर्रे या 'नाल' पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक मार्ग हैं। गोरम घाट राजसमंद में प्रसिद्ध रेल मार्ग है। ये दर्रे ऐतिहासिक और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहे हैं, जो आज भी क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाते हैं। ये प्राकृतिक मार्ग न केवल व्यापार के लिए, बल्कि सेना की आवाजाही और पर्यटन के लिए भी सदियों से उपयोगी रहे हैं, जो राजस्थान के उच्चावच में सुगमता प्रदान करते हैं।

56. (1) जोधपुर
राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में जोधपुर एक आंतरिक जिला है। यह राज्य का प्रमुख प्रशासनिक केंद्र है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के सीधे प्रभाव से दूर रखती है। इसके विपरीत जैसलमेर और बीकानेर जैसे जिले सीधे तौर पर पाकिस्तान की सीमा से सटे हुए हैं। जोधपुर की यह सुरक्षित स्थिति इसे राज्य के मध्य-पश्चिमी भाग में एक स्थिर व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

79. (1) झालावाड़
झालावाड़ की तीन ओर से मध्य प्रदेश से घिरा होने की स्थिति व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह लंबी सीमा इसे राज्य के एक प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में स्थापित करती है। यहाँ की जलवायु और आर्द्रता राज्य के अन्य जिलों की तुलना में अधिक है, जिससे इसे 'राजस्थान का नागपुर' भी कहा जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे मध्य भारत और राजस्थान के बीच एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में भी प्रतिष्ठित करती है।

80. (1) केवल I, II, III और IV
महान सीमा भ्रंश अरावली और विंध्यन के मध्य स्थित है। ये सभी भौतिक विशेषताएँ मिलकर राज्य को अनूठा भौगोलिक स्वरूप प्रदान करती हैं, जो खनिजों की प्रचुरता और विकास का आधार है। राजस्थान की यह जटिल भूगर्भीय संरचना न केवल अतीत की घटनाओं को समेटे हुए है, बल्कि वर्तमान की आर्थिक और पारिस्थितिक नीतियों को भी दिशा प्रदान करती है। यह विविधता ही राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट पहचान देती है।

NODIA

68. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
रेगिस्तान में दिन अत्यंत गर्म और रातें बहुत ठंडी होती हैं। यह प्रक्रिया रेत के अणुओं के तापीय गुणों पर निर्भर करती है, जो जलवायु को चुनौतीपूर्ण बनाती है। रेत की निम्न विशिष्ट ऊष्मा के कारण यह सूर्य की किरणों से तुरंत तपने लगती है और रात में विकिरण द्वारा उतनी ही शीघ्रता से ऊष्मा का त्याग कर शीतल हो जाती है। यह दैनिक तापांतर राजस्थान के पश्चिमी भाग की मुख्य जलवायु विशेषता है।

69. (3) माउंट आबू बैथोलिथ (अरावली पर्वतमाला)
नक्की झील भू-वैज्ञानिक दृष्टि से इस पर्वतीय खंड की विशिष्ट संरचना का हिस्सा है। अपनी ऊंचाई और सुंदरता के कारण यह पर्यटन और संस्कृति का प्रमुख केंद्र मानी जाती है। ग्रेनाइट चट्टानों के बीच स्थित यह प्राकृतिक झील माउंट आबू की जलवायु को सुखद बनाए रखती है। यह न केवल एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, बल्कि स्थानीय गरासिया जनजाति के लिए धार्मिक और पवित्र महत्व की स्थली भी मानी जाती है।

70. (1) I, III, IV, II
राजस्थान की भूगर्भीय संरचना में सबसे नवीनतम क्वाटरनरी काल के मरुस्थलीय रेत के टीले हैं। यह क्रम करोड़ों वर्षों के दौरान राज्य की सतह पर हुए परिवर्तनों और विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। अरावली के प्राचीनतम निर्माण से लेकर थार के आधुनिक विकास तक, यह कालक्रम राज्य की भौतिक बनावट को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। यह अनुक्रम खनिजों के निर्माण और उनकी उपलब्धता के इतिहास को समझने में भी सहायक है।

71. (4) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर जैसे इमारती पत्थर।
दक्षिण-पूर्वी पठार के ये संसाधन भवन निर्माण और सीमेंट उद्योग के मुख्य आधार हैं। इन पत्थरों की वैश्विक मांग इस क्षेत्र को औद्योगिक दृष्टि से पूरे देश में एक अलग पहचान देती है। कोटा स्टोन और सैंडस्टोन जैसे पत्थरों ने राजस्थान को वैश्विक निर्माण बाजार में अग्रणी बनाया है। यह क्षेत्र न केवल राज्य के राजस्व में वृद्धि करता है, बल्कि स्थानीय स्तर पर व्यापक रोजगार के अवसर भी सृजित करता है।

72. (2) केवल I और II
गुरु शिखर न केवल राजस्थान बल्कि मध्य भारत की सबसे ऊँची चोटी है। इसका धार्मिक महत्व प्राचीन काल से है। यह बिंदु पर्यटन के लिए एक प्रमुख और आकर्षक स्थल है। यह दक्षिणी अरावली का सर्वोच्च शिखर है, जहाँ से राज्य की प्राकृतिक सुंदरता का व्यापक दृश्य दिखाई देता है। इसकी ऊंचाई और भौगोलिक अवस्थिति के कारण यहाँ की जलवायु आबू पर्वत के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक सुखद रहती है।

73. (3) हम्मादा
हम्मादा की अवसादी चट्टानों में प्राचीन जीवाश्मों की उपस्थिति पाई जाती है। यह विशिष्ट भू-आकृति मरुस्थल के सामान्य स्वरूप से भिन्न है और भू-वैज्ञानिक अध्ययन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसलमेर क्षेत्र में यह पथरीला धरातल मरुस्थल की कठोरता और उसकी प्राचीनता का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है। यह क्षेत्र वनस्पति विहीन होने के बावजूद अपनी भूगर्भीय संरचना के कारण खनिजों और जीवाश्मों की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

74. (1) बजरी, कंकड़ और रेत से निर्मित एक मरुस्थलीय मैदान।
'रेग्ग' में वायु अपरदन से महीन रेत उड़ने के बाद भारी कंकड़ शेष रह जाते हैं। यह संरचना थार मरुस्थल की भौतिक विविधता और बदलती धरातलीय परिस्थितियों का स्पष्ट भौगोलिक प्रमाण प्रस्तुत करती है। यह मिश्रित धरातल मरुस्थल के स्थिरीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है। रेगिस्तान के इस भाग में यात्रा करना और कृषि कार्य करना अत्यंत कठिन होता है, जो इसकी विषम भौगोलिक प्रकृति को और अधिक स्पष्ट करता है।

75. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
भौतिक विभागों का यह वितरण राज्य की जलवायु, जनसंख्या और संसाधनों के प्रबंधन को आधार प्रदान करता है। क्षेत्रीय विस्तार की यह विविधता राज्य के आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन को स्पष्ट करती है। पश्चिमी मैदानों की विशालता और अरावली की केंद्रीय स्थिति राजस्थान के संपूर्ण भौगोलिक ढांचे को नियंत्रित करती है। यह क्षेत्रीय असमानता ही राज्य में विविध प्रकार की कृषि पद्धतियों और जीवन शैलियों के उद्भव का मुख्य कारण है।

76. (2) बांगर
बांगर क्षेत्र वार्षिक बाढ़ के स्तर से ऊपर होते हैं। यहाँ की मिट्टी कम उपजाऊ होती है लेकिन समुचित सिंचाई से कृषि योग्य रहती है। यह भाग सघन बसावट का आधार है। नदियों के बहाव से दूर स्थित होने के कारण यहाँ भूमिगत जल का उपयोग अधिक होता है। राजस्थान के पूर्वी भाग में यह उच्च मैदानी क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानवीय बस्तियों और कृषि संस्कृति के विकास के लिए एक सुरक्षित स्थल रहा है।

77. (3) यह मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोकने वाले विभाजक के रूप में कार्य करती है।
अरावली की सुरक्षा दीवार के कारण राज्य का पूर्वी भाग मरुस्थलीकरण से बचा रहता है। यह पर्वतमाला जलवायु को नियंत्रित करने और वर्षा के वितरण को प्रभावित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह श्रृंखला न केवल मरुस्थल को रोकती है, बल्कि भारत के गंगा-यमुना मैदान की ओर बढ़ने वाली धूल भरी हवाओं को भी नियंत्रित करती है। इसकी यह भूमिका पारिस्थितिक संतुलन और कृषि स्थिरता बनाए रखने हेतु अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।

78. (1) केवल I, II और IV
मेवात की साहिबी और रूपा रेल यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। यह भौगोलिक विविधता इस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट स्थलाकृति के कारण राज्य में अलग स्थान रखता है। अरावली की उत्तरी शाखाओं से घिरा यह क्षेत्र वर्षा ऋतु में अत्यंत हरा-भरा हो जाता है, जो इसे कृषि और पशुपालन के लिए एक उत्तम भौगोलिक परिवेश प्रदान करता है। इसकी सीमाएँ दिल्ली के निकट होने से सामरिक महत्व भी रखती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

से निकलती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में घग्गर नदी के बाढ़ के मैदान को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?

(1) खादर
(2) भाबर
(3) नाली
(4) रोही
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. पूर्वी राजस्थान के लिए महत्वपूर्ण बाणगंगा नदी निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?

(1) बैराठ पहाड़ियाँ
(2) उदयनाथ पहाड़ियाँ
(3) खंडेला पहाड़ियाँ
(4) सेवर पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. बाणगंगा नदी को कभी-कभी 'रुण्डित नदी' कहा जाता है। निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा इस वर्गीकरण की सबसे सटीक व्याख्या करती है?

(1) इसके उद्गम के पास कई बांधों के निर्माण के कारण नदी पूर्णतः सूख गई है।
(2) नदी मानसून के दौरान बार-बार अपना मार्ग बदलती है और अपने मूल मार्ग को छोड़ देती है।
(3) मध्य काल के दौरान सिंचाई के लिए नदी को कृत्रिम रूप से मोड़ा गया था।
(4) यह यमुना तक पहुँचने में विफल रहती है और भरतपुर के मैदानों में ही लुप्त हो जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. गंभीर नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह करौली जिले की पहाड़ियों से निकलती है।
II. यह उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने से पहले सवाई माधोपुर, भरतपुर और धौलपुर से होकर बहती है।
III. यह उत्तर प्रदेश में सीधे यमुना नदी से मिलती है।
IV. प्रसिद्ध पांचना बांध इसकी सहायक नदियों के संगम पर बनाया गया है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. जमवा रामगढ़ बांध, जो ऐतिहासिक रूप से जयपुर शहर की जल आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण रहा है, निम्नलिखित में से किस नदी पर स्थित है?

(1) साबी
(2) रुपारेल
(3) बाणगंगा
(4) गंभीर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन सी नदियाँ गंभीर नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं?

(1) खारी, दाई, माशी, मोरेल
(2) सोम, जाखम, अनास, चाप
(3) वाकल, हथमती, मेश्वा, वात्रक
(4) पार्वती, सेसा, खेर, उटांगन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. राजस्थान में कर्क रेखा को दो बार पार करने वाली अद्वितीय नदी निम्नलिखित में से कौन सी है?

(1) माही
(2) लूनी
(3) चंबल
(4) साबरमती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. सूची-I (माही की सहायक नदी) को सूची-II (उद्गम) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I: (माही की सहायक नदी)

A. सोम
B. जाखम
C. अनास
D. चाप

सूची-II: (उद्गम)

i. छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़
ii. बीछामेड़ा, उदयपुर
iii. आम्बेर, मध्य प्रदेश
iv. कलिंजरा, बांसवाड़ा

(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

33. माही नदी बेसिन के बांधों और परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. माही बजाज सागर बांध राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में स्थित है।
II. कडाणा बांध गुजरात राज्य में माही नदी पर बनाया गया है।
III. कागदी पिकअप वियर माही नदी परियोजना तंत्र का

अध्याय 18
राजस्थान की नदियाँ एवं झीलें

1. निम्नलिखित में से कौन सा अपवाह तंत्र राजस्थान के सर्वाधिक भौगोलिक क्षेत्र में विस्तृत है?
(1) अरब सागर अपवाह तंत्र
(2) आंतरिक अपवाह तंत्र
(3) बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र
(4) लूनी बेसिन अपवाह तंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान की नदी प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
(1) अरावली पर्वत श्रृंखला बंगाल की खाड़ी और अरब सागर अपवाह तंत्रों के बीच मुख्य जल विभाजक के रूप में कार्य करती है।
(2) राज्य की नदियों को चार प्रमुख अपवाह तंत्रों में विभाजित किया गया है।
(3) अरावली के पश्चिमी ढलानों से निकलने वाली अधिकांश नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।
(4) आंतरिक अपवाह तंत्र पूरी तरह से दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र तक ही सीमित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान के आंतरिक अपवाह तंत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 60% हिस्सा है।
II. इस तंत्र की नदियाँ किसी महासागर या मुख्य सागर तक नहीं पहुँचती हैं।
III. कांतली और काकनी इस तंत्र की प्रमुख नदियाँ हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची-I (नदी) को सूची-II (राजस्थान में उद्गम जिला) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (नदी)
A. लूनी
B. बनास
C. कांतली
D. बाणगंगा
सूची-II: (उद्गम जिला)
i. सीकर
ii. अजमेर
iii. राजसमंद
iv. जयपुर
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. राजस्थान में अपवाह तंत्रों के वर्गीकरण के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) लूनी नदी बेसिन अरब सागर अपवाह तंत्र का एक हिस्सा है।
(2) चंबल नदी राजस्थान के बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र की एकमात्र बारहमासी नदी है।
(3) पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में आंतरिक अपवाह तंत्र पूरी तरह से अनुपस्थित है।
(4) राज्य में सभी अपवाह वर्गीकरणों में आंतरिक अपवाह क्षेत्र का अनुपात सबसे अधिक है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. बनास नदी, जो पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी है, निम्नलिखित में से किन पहाड़ियों से निकलती है?
(1) जनापाव की पहाड़ियाँ
(2) खमनोर की पहाड़ियाँ
(3) नाग पहाड़
(4) बैराठ की पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. बनास नदी की सहायक नदियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बेड़च नदी उदयपुर की गोगुंदा पहाड़ियों से निकलती है।
II. कोठारी नदी भीलवाड़ा के नन्दराय में बनास से मिलती है।
III. खारी नदी राजसमंद की बिजराल गाँव की पहाड़ियों से निकलती है।
IV. मोरेल नदी उदयपुर की पहाड़ियों से निकलती है और यह दाईं ओर की सहायक नदी है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV

Downloaded from www.pdf.tube

57. (3) बाड़मेर
बाड़मेर उन विशिष्ट जिलों में है जो देश और राज्य दोनों की सीमाओं पर स्थित हैं। यह पाकिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय और गुजरात के साथ अंतर्राज्यीय सीमा साझा करता है। यह स्थिति सामरिक सुरक्षा और व्यापार हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे रेगिस्तानी और सीमावर्ती दोनों प्रकार की चुनौतियों से निपटने में अग्रणी बनाती है, जो राज्य के सुरक्षा ढांचे में एक निर्णायक भूमिका निभाती है।

58. (3) केवल IV
राजस्थान के पूर्वी मैदान नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी से निर्मित हैं। सघन जनसंख्या और विकसित कृषि इस क्षेत्र को अर्थव्यवस्था का आधार बनाती है। यहाँ जल की पर्याप्त उपलब्धता है, जिससे कृषि उत्पादकता उच्च बनी रहती है। यह क्षेत्र राज्य की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मुख्य योगदान देता है। अतः यहाँ अल्प वर्षा का कथन असत्य है क्योंकि यह क्षेत्र आर्द्र और समृद्ध है।

59. (4) चंबल बेसिन
उत्खात स्थलाकृति को 'बीहड़' या 'डांग' कहते हैं। चंबल नदी के तीव्र अपरदन से बनी यह भूमि कृषि हेतु अनुपयुक्त है। अपरदन की यह प्रक्रिया इस क्षेत्र की भौगोलिक बनावट को अत्यंत जटिल बनाती है। ये बीहड़ न केवल डाकुओं की शरणस्थली के रूप में विख्यात रहे हैं, बल्कि अपनी अद्वितीय और ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति के कारण भू-आकृतिक विज्ञान के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट केंद्र भी हैं।

60. (1) पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात
राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा पर सर्वाधिक लंबी सीमा मध्य प्रदेश के साथ लगती है। यह दक्षिणावर्त क्रम राज्य के प्रशासनिक प्रबंधन को समझने हेतु अत्यंत आधारभूत और आवश्यक माना जाता है। पाँच राज्यों के साथ साझा की जाने वाली ये सीमाएँ राजस्थान के आर्थिक विनिमय, जल संसाधनों के बंटवारे और सांस्कृतिक समन्वय को प्रभावित करती हैं, जो राज्य के संतुलित विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भौगोलिक कड़ी हैं।

61. (3) पूर्वी मैदान
राजस्थान के पूर्वी मैदानी भाग में अनुकूल जलवायु और कृषि की संभावनाओं ने बड़ी आबादी को आकर्षित किया है। भौगोलिक अनुकूलता इस क्षेत्र को मानवीय बसावट के लिए आदर्श बनाती है। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी और नदियों के जल ने इसे राज्य का सबसे सघन जनघनत्व वाला भौतिक प्रदेश बना दिया है। आर्थिक गतिविधियों की प्रचुरता और उन्नत संचार तंत्र इस क्षेत्र को राज्य की प्रगति का प्रमुख केंद्र बनाते हैं।

62. (2) केवल I, II, IV और V
राजस्थान की सीमाओं में झालावाड़ मध्य प्रदेश के साथ सबसे लंबी सीमा बनाता है। यह वितरण व्यापार और कानून व्यवस्था के प्रबंधन हेतु भौगोलिक आधार है, जो सुरक्षा सुनिश्चित करता है। पंजाब के साथ सबसे छोटी सीमा का होना उत्तर में विशिष्ट जल समझौतों और कृषि संबंधों को परिभाषित करता है। ये सीमाएँ राज्य के आंतरिक और बाहरी प्रशासनिक सामंजस्य को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भौतिक ढांचा प्रदान करती हैं।

63. (1) उदयपुर संभाग
अरावली पर्वतमाला का सबसे ऊँचा भाग दक्षिणी राजस्थान में है। सिरोही और उदयपुर में पहाड़ियों की सघनता सर्वाधिक है। यह संभाग महत्वपूर्ण जल विभाजक होने के साथ प्रचुर वन संपदा और खनिज भंडारों से भी संपन्न है। इस क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और ढाल राज्य की नदियों के अपवाह को निर्धारित करती है। यहाँ की ऊँची चोटियाँ और घने जंगल इसे पारिस्थितिक तंत्र की दृष्टि से राज्य का हृदय स्थल बनाते हैं।

64. (2) परमो-कार्बोनिफेरस काल के दौरान व्यापक हिमनदन के प्रमाण।
'बाप बोल्डर बेड' का साक्ष्य प्राचीन जलवायु परिवर्तनों और महाद्वीपीय विस्थापन को समझने में महत्वपूर्ण है। यह खोज थार मरुस्थल के इतिहास को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। यहाँ पाए जाने वाले गोल और रगड़ खाए पत्थर प्राचीन काल के हिमनदन की पुष्टि करते हैं, जो यह दर्शाता है कि वर्तमान का गर्म मरुस्थल कभी बर्फ से ढका हुआ था। यह भू-वैज्ञानिकों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय महत्व की खोज है।

65. (2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
थार मरुस्थल की 'रन' शब्दावली रेगिस्तानी क्षेत्रों की उथली खारी झीलों के लिए प्रयुक्त होती है। यह शब्दावली रेगिस्तान की विविध भू-आकृतियों और वहाँ के कठिन भौगोलिक परिवेश को स्पष्ट करती है। हम्मादा, इर्ग और रेग्ग जैसे शब्द मरुस्थल के रेतीले, पथरीले और मिश्रित स्वरुपों को वैज्ञानिक रुप से परिभाषित करते हैं। इन भिन्नताओं का अध्ययन मरुस्थल के विस्तार और उसकी पारिस्थितिकी को समझने हेतु अत्यंत आवश्यक और आधारभूत है।

66. (3) 550 किलोमीटर
अरावली पर्वतमाला राज्य को दो अलग जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करती है। यह श्रृंखला मरुस्थल प्रसार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो इसे राजस्थान की जीवन रेखा बनाती है। गुजरात से दिल्ली तक विस्तृत इस पर्वतमाला का मुख्य और सबसे ऊँचा भाग राजस्थान में स्थित है। यह श्रृंखला मानसूनी वर्षा के वितरण को गहराई से प्रभावित करती है और राज्य के अधिकांश खनिजों का प्रमुख स्रोत मानी जाती है।

67. (3) विंध्यन कगार भूमि और दक्कन लावा पठार
दक्षिण-पूर्वी पठार की संरचना में दक्कन लावा पठार काली मिट्टी का क्षेत्र है। ये दोनों इकाइयाँ मिलकर इस क्षेत्र को कृषि और खनिज की दृष्टि से राज्य का संपन्न भू-भाग बनाती हैं। विंध्यन कगार भूमि की ऊँची चट्टानें और लावा का उपजाऊ मैदान इस क्षेत्र को न केवल भौगोलिक रूप से विशिष्ट बनाते हैं, बल्कि कपास और सोयाबीन जैसी व्यावसायिक फसलों के उत्पादन के लिए भी एक आदर्श धरातल प्रदान करते हैं।

NODIA

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. लूनी नदी, जो पश्चिमी राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण नदी है, निम्नलिखित में से कहाँ से निकलती है?
(1) पुष्कर घाटी
(2) नाग पहाड़
(3) तारागढ़ पहाड़ियाँ
(4) हर्ष नाथ पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित नदियों पर विचार कीजिए:
I. जवाई
II. सुकड़ी
III. बांडी
निम्नलिखित में से कौन सी उस मुख्य नदी की सही पहचान है जिसकी ये सहायक नदियाँ हैं?
(1) माही
(2) लूनी
(3) साबरमती
(4) बनास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): लूनी नदी का जल उसके उद्गम से बालोतरा तक मीठा होता है, जिसके पश्चात यह खारा हो जाता है।
कारण (R): बालोतरा के आगे रेगिस्तानी क्षेत्र की मृदा में लवण के कणों की मात्रा अधिक होती है, जो नदी के जल में घुल जाते हैं।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. जोजरी नदी को लूनी नदी की अन्य सहायक नदियों से पृथक करने वाला सबसे उपयुक्त कथन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) इसे लूनी की सबसे लंबी सहायक नदी माना जाता है और यह बाईं ओर से मिलती है।
(2) अन्य मौसमी अल्पकालिक सहायक नदियों के विपरीत इसे बारहमासी नदी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(3) यह अरावली से निकले बिना दाईं ओर से लूनी में मिलती है।
(4) इसे एकमात्र सहायक नदी के रूप में प्रलेखित किया गया है जो अजमेर शहर से पहले लूनी में विलीन हो जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन लूनी नदी के साथ इन सहायक नदियों के संगम के सही उत्तर से दक्षिण क्रम को दर्शाता है?
(1) गुहिया, बांडी, सुकड़ी, जवाई
(2) जवाई, सुकड़ी, बांडी, गुहिया
(3) बांडी, गुहिया, जवाई, सुकड़ी
(4) सुकड़ी, बांडी, जवाई, गुहिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. घग्गर नदी, जो उत्तरी राजस्थान की एक प्रमुख मौसमी नदी है, निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से निकलती है?
(1) हरियाणा में अरावली पर्वतमाला
(2) मध्य प्रदेश में विंध्यन कगार
(3) हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाड़ियाँ
(4) राजस्थान में बैराठ पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. घग्गर नदी से संबंधित सूची-I (स्थानीय नाम/विशेषता) को सूची-II (क्षेत्र/संदर्भ) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (स्थानीय नाम/विशेषता)
A. नाली
B. हकरा
C. सोतर
D. दृषद्वती
सूची-II: (क्षेत्र/संदर्भ)
i. पाकिस्तान में स्थानीय नाम
ii. हनुमानगढ़ में बाढ़ का मैदान
iii. प्राचीन वैदिक नाम
iv. हरियाणा में स्थानीय नाम
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. घग्गर नदी के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह हनुमानगढ़ जिले की टिब्बी तहसील से राजस्थान में प्रवेश करती है।
(2) अत्यधिक वर्षा की अवधि के दौरान, इसका जल पाकिस्तान के फोर्ट अब्बास तक पहुँच जाता है।
(3) यह आंतरिक अपवाह तंत्र की सबसे लंबी नदी है जो राजस्थान में प्रवेश करने से पहले कई राज्यों से होकर गुजरती है।
(4) यह अंततः कच्छ के रण के पास अरब सागर में गिरती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. घग्गर नदी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे स्थानीय स्तर पर सामान्यतः 'मृत नदी' कहा जाता है।
II. प्राचीन पुरातात्विक स्थल कालीबंगा इसके तट पर स्थित है।
III. यह राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी ढलानों

Click Here to Buy book on Amazon

41. काली सिंध नदी, जो चंबल की एक प्रमुख दाईं ओर की सहायक नदी है, राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में प्रवेश करती है?
(1) बारां
(2) कोटा
(3) झालावाड़
(4) बूंदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. नदी संगम और उससे संबंधित ऐतिहासिक किले का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) आहू और काली सिंध - गागरोन किला
(2) काली सिंध और पार्वती - शेरगढ़ किला
(3) चंबल और बामनी - कुंभलगढ़ किला
(4) परवन और काली सिंध - तारागढ़ किला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. पार्वती नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मध्य प्रदेश के सीहोर जिले से निकलती है।
II. यह बारां जिले के करिया हाट में राजस्थान में प्रवेश करती है।
III. यह कुछ दूरी तक राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाती है।
IV. यह सवाई माधोपुर की सीमा के पास पालिया में चंबल नदी से मिलती है।
V. ल्हासी और बरनी इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. राजस्थान के पूर्वी अपवाह तंत्र के लिए सूची-I (सहायक नदी) को सूची-II (मुख्य नदी) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची-I: (सहायक नदी)
A. परवन
B. आहू
C. ल्हासी
D. मेज
सूची-II: (मुख्य नदी)
i. चंबल
ii. काली सिंध
iii. पार्वती
iv. काली सिंध
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. काली सिंध और पार्वती नदी प्रणालियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) काली सिंध कोटा जिले में स्थित नोनेरा गाँव में चंबल नदी से मिलती है।
(2) परवन नदी काली सिंध नदी की एक सहायक नदी है।
(3) काली सिंध नदी अपने संगम से पहले पूरी तरह से राजस्थान के भीतर रहती है।
(4) दोनों नदियाँ मध्य प्रदेश में उद्गमित होती हैं और उत्तर की ओर राजस्थान में बहती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. काकनी (या काकनेय) नदी, जो आंतरिक अपवाह तंत्र की सबसे छोटी नदी है, निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?
(1) खंडेला पहाड़ियाँ, सीकर
(2) सेवर पहाड़ियाँ, जयपुर
(3) उदयनाथ पहाड़ियाँ, अलवर
(4) कोटरी गाँव, जैसलमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान में सभी भारतीय राज्यों की तुलना में आंतरिक अपवाह क्षेत्र का अनुपात सर्वाधिक है।
कारण (R): राज्य की मुख्य विशेषता शुष्क जलवायु, न्यून और अनियमित वर्षा, रेतीला धरातल और अरावली पर्वतमाला का वृष्टि-छाया प्रभाव है।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. आंतरिक अपवाह तंत्र की नदियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. साबी नदी जयपुर ग्रामीण जिले की सेवर पहाड़ियों से निकलती है।
II. रुपारेल नदी अलवर जिले की उदयनाथ पहाड़ियों से निकलती है।
III. कांतली नदी शेखावाटी क्षेत्र को विभाजित करती है और इसके बेसिन को तोरावाटी के नाम से जाना जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

एक हिस्सा है।
IV. सोम-कमला-अम्बा सिंचाई परियोजना इसकी सहायक नदी सोम पर स्थित है।
V. सुजलाम सुफलाम जल संरक्षण अभियान इसी नदी बेसिन से जुड़ा है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. माही नदी के मार्ग और विशेषताओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह बाड़मेर जिले में लूनी नदी के साथ विलीन होने के लिए उत्तर की ओर बहती है।
(2) यह मध्य प्रदेश के धार जिले के पास अमझरा पहाड़ियों (मेहंद झील) से निकलती है।
(3) यह बांसवाड़ा जिले के खांदू गाँव में राजस्थान में प्रवेश करती है।
(4) नदी तंत्र अंततः अपना जल खंभात की खाड़ी में विसर्जित करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. निम्नलिखित में से कौन सी नदी असंगत है, क्योंकि वह माही नदी की सहायक नदी नहीं है?
(1) सोम
(2) जाखम
(3) ईरु
(4) मोरेन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. साबरमती नदी राजस्थान की निम्नलिखित में से किस तहसील में स्थित अरावली पहाड़ियों से निकलती है?
(1) गोगुंदा, उदयपुर
(2) कुंभलगढ़, राजसमंद
(3) वल्लभनगर, उदयपुर
(4) कोटड़ा, उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. सूची-I (साबरमती की सहायक नदी) को सूची-II (विशेषता/स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I: (साबरमती की सहायक नदी)
A. वाकल
B. सेई
C. हथमती
D. वात्रक

सूची-II: (विशेषता/स्थान)
i. डूंगरपुर में उद्गम
ii. उदयपुर में उद्गम, मानसी के साथ संगम
iii. इस पर प्रसिद्ध जल सुरंग बनाई गई है
iv. गुजरात सीमा क्षेत्र में उद्गम

(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. साबरमती नदी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्गम राजस्थान में होता है लेकिन इसका मुख्य जलग्रहण और प्रवाह क्षेत्र गुजरात में है।
II. अहमदाबाद और गांधीनगर शहर इसके तट पर स्थित हैं।
III. मानसी-वाकल जल सुरंग परियोजना इसके बेसिन के जल को पिछोला झील में स्थानांतरित करने के लिए बनाई गई थी।
IV. यह अंततः कच्छ के रण में गिरती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

39. राजस्थान में साबरमती नदी की सहायक नदियों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) सेई नदी पाली जिले से निकलती है और साबरमती में शामिल होने के लिए पूर्व की ओर बहती है।
(2) साबरमती को राजस्थान में अपनी दाईं ओर की सहायक नदियों से अधिकतम जल योगदान प्राप्त होता है।
(3) इसकी कोई भी सहायक नदी उदयपुर जिले से होकर नहीं बहती है।
(4) वाकल, हथमती, मेश्वा और वात्रक महत्वपूर्ण बाईं और दाईं ओर की सहायक नदियाँ हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित नदियों को पूर्णतः राजस्थान की भौगोलिक सीमाओं के भीतर उनकी कुल लंबाई के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. बनास
II. लूनी
III. कांतली
IV. काकनी

उपरोक्त में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बनास नदी को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से 'वन की आशा' (वर्णाशा) के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): यह राजस्थान की एकमात्र प्रमुख नदी है जो बिना सूखे वर्ष भर निरंतर बहती है।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. बनास नदी पर निम्नलिखित संगमों (त्रिवेणी) को उनके उद्गम से मुहाने के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. राजमहल में खारी और दाई के साथ संगम
II. बीगोद में बेड़च और मेनाल के साथ संगम
III. रामेश्वरम घाट पर चंबल और सीप के साथ संगम
उपरोक्त में से कौन सा क्रम सही है?
(1) II, I, III
(2) I, II, III
(3) II, III, I
(4) III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित में से कौन सी नदी असंगत है, क्योंकि वह बनास नदी की सहायक नदी नहीं है?
(1) परवन
(2) दाई
(3) माशी
(4) कालीसिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. चंबल नदी, जो अपनी विस्तृत बीहड़ स्थलाकृति के लिए प्रसिद्ध है, निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?
(1) मध्य प्रदेश में अमरकंटक का पठार
(2) मध्य प्रदेश में बागली पहाड़ियाँ
(3) राजस्थान में छोटी सादड़ी
(4) मध्य प्रदेश में जनापाव की पहाड़ियाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. चंबल नदी और उससे संबंधित परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गांधी सागर बांध मध्य प्रदेश में स्थित है।
II. राणा प्रताप सागर बांध रावतभाटा, राजस्थान में स्थित है।
III. जवाहर सागर बांध कोटा के पास स्थित है।
IV. कोटा बैराज का उपयोग विशेष रूप से सिंचाई के लिए किया जाता है।
V. यह नदी राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. चंबल नदी के बेसिन में विस्तृत 'उत्खात भूमि' (बैडलैंड टोपोग्राफी) के निर्माण का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) ग्रीष्म ऋतु में तीव्र पवन अपरदन
(2) विंध्यन कगारों में उच्च स्तरीय विवर्तनिक गतिविधि
(3) तीव्र जल प्रवाह के कारण होने वाला अवनलिका अपरदन
(4) मिट्टी का दीर्घकालिक लवणीकरण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची-I (चंबल की सहायक नदी) को सूची-II (उद्गम स्थल) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (चंबल की सहायक नदी)
A. काली सिंध
B. पार्वती
C. बनास
D. बामनी
सूची-II: (उद्गम स्थल)
i. सीहोर क्षेत्र, मध्य प्रदेश
ii. बागली पहाड़ियाँ, मध्य प्रदेश
iii. भैंसरोड़गढ़, राजस्थान
iv. खमनोर पहाड़ियाँ, राजस्थान
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. राजस्थान में चंबल नदी के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) चंबल नदी भैंसरोड़गढ़ के पास प्रसिद्ध चूलिया जलप्रपात बनाती है।
(2) यह बारां जिले में स्थित करिया हाट गाँव में राजस्थान राज्य में प्रवेश करती है।
(3) यह राज्य की सीमाओं के भीतर निरंतर उत्तर-से-दक्षिण दिशा में बहती है।
(4) यह अपना जल सीधे बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र में विसर्जित करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

49. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पर्याप्त वर्षा की अवधि के दौरान काकनी नदी के प्रवाह का सही वर्णन करता है?
(1) यह अपने किनारों को तोड़ देती है और सीधे लूनी नदी में विलीन हो जाती है।
(2) यह जैसलमेर में भुज झील का निर्माण करने के लिए एक स्थानीय गर्त को भरती है।
(3) यह अंतरराष्ट्रीय सीमा पार कर सिंध प्रांत में प्रवेश करती है।
(4) यह प्राचीन सरस्वती नदी के शुष्क तल में विलीन हो जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. रुपारेल नदी को उसके आसपास के क्षेत्र में निम्नलिखित में से किस अन्य नाम से जाना जाता है?
(1) वराह और लसवारी
(2) दृषद्वती और नाली
(3) रुण्डित और अर्जुन की गंगा
(4) मरु गंगा और लवणवती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. पुष्कर झील, जिसे राजस्थान की सर्वाधिक पवित्र झील माना जाता है, भौगोलिक रुप से मुख्य रुप से किस प्रकार की झील के रुप में वर्गीकृत है?
(1) गोखुर झील
(2) हिमनद झील
(3) प्राकृतिक क्रेटर/काल्डेरा झील
(4) विवर्तनिक भ्रंश झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. पुष्कर झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह झील 52 स्नान घाटों से घिरी हुई है।
II. भगवान ब्रह्मा को समर्पित विश्व का सबसे प्रमुख मंदिर इसके समीप स्थित है।
III. दीपदान की परंपरा यहाँ का एक प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम है।
IV. कनाडा की वित्तीय और तकनीकी सहायता से यहाँ झील सफाई और गाद निकालने की परियोजना शुरु की गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. सिलीसेढ़ झील, जिसे अक्सर राजस्थान का 'नंदन कानन' कहा जाता है, का निर्माण निम्नलिखित में से किस शासक ने करवाया था?
(1) महाराजा जय सिंह
(2) महाराणा राज सिंह
(3) महाराजा विनय सिंह
(4) महाराजा सवाई माधो सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. राजस्थान की प्राकृतिक झीलों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) पुष्कर झील अजमेर जिले में स्थित एक ताजे पानी की झील है।
(2) सिलीसेढ़ झील अलवर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक खारे पानी की झील है।
(3) प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को लगने वाला पुष्कर मेला झील के सांस्कृतिक महत्व का परिचायक है।
(4) रेत खनन और गहरे बोरवेल खोदने से पुष्कर झील की जल धारण क्षमता प्रतिकूल रुप से प्रभावित हुई है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. हाल के दशकों में पुष्कर झील में घटते जल स्तर का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) बढ़ती लवणता के कारण वाष्पीकरण दर में वृद्धि।
(2) विंध्यन कगारों में उच्च स्तरीय विवर्तनिक गतिविधि।
(3) झील बेसिन के आसपास व्यापक वनीकरण कार्यक्रम।
(4) सहायक धाराओं का मार्ग परिवर्तन और जलग्रहण क्षेत्र में अत्यधिक भूजल दोहन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतःस्थलीय नमक की झील है। भारत के कुल नमक उत्पादन का लगभग कितना प्रतिशत इस झील से प्राप्त होता है?
(1) 4.5%
(2) 8.7%
(3) 12.3%
(4) 15.6%
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

57. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की झीलों के सही पश्चिम से पूर्व भौगोलिक क्रम को दर्शाता है?
(1) पचपदरा, लूणकरणसर, सांभर, सिलीसेढ़
(2) लूणकरणसर, पचपदरा, सिलीसेढ़, सांभर
(3) सांभर, पचपदरा, लूणकरणसर, सिलीसेढ़
(4) पचपदरा, सांभर, लूणकरणसर, सिलीसेढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. सांभर झील के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मेंढा और रुपनगढ़ नदियाँ अपना जल इसमें विसर्जित करती हैं।
II. खारी और खंडेला नदियाँ भी इस झील की प्रमुख सहायक धाराएँ हैं।
III. इसे 1990 में अंतरराष्ट्रीय महत्व के रामसर आर्द्रभूमि स्थल के रूप में नामित किया गया था।
IV. हिंदुस्तान साल्ट्स लिमिटेड यहाँ नमक निष्कर्षण का कार्य संचालित करती है।

11. (4) मध्य प्रदेश में जनापाव की पहाड़ियाँ
चंबल नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के महू जिले में विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की जनापाव पहाड़ियों से होता है। यह नदी राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले के चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है। यह राज्य की सबसे लंबी और एकमात्र बारहमासी नदी है जो दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। अपनी विशाल जल राशि के कारण इसे प्राचीन ग्रंथों में चर्मण्यवती के नाम से भी जाना गया है।

12. (4) I, II, III, IV और V
चंबल नदी घाटी परियोजना के अंतर्गत चार प्रमुख बांधों का निर्माण किया गया है। गांधी सागर बांध मध्य प्रदेश में है, जबकि राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर और कोटा बैराज राजस्थान में स्थित हैं। कोटा बैराज का प्राथमिक कार्य सिंचाई हेतु नहरों को जल उपलब्ध कराना है। यह नदी राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच लंबी प्राकृतिक सीमा बनाती है और इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था हेतु अनिवार्य है।

13. (3) तीव्र जल प्रवाह के कारण होने वाला अवनलिका अपरदन
चंबल नदी बेसिन में 'उत्खात भूमि' का निर्माण मुख्य रूप से अवनलिका अपरदन के कारण हुआ है। यहाँ की मिट्टी कोमल होने के कारण तीव्र जल प्रवाह गहरी और संकरी घाटियों का निर्माण कर देता है। इन क्षेत्रों को स्थानीय भाषा में 'बीहड़' कहा जाता है जो कृषि हेतु अनुपयुक्त होते हैं। धौलपुर, करौली और सवाई माधोपुर जिलों में इस प्रकार की अद्वितीय स्थलाकृति का व्यापक विस्तार है।

14. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
चंबल की सहायक नदियों के उद्गम स्थल भौगोलिक विविधता प्रदर्शित करते हैं। काली सिंध नदी मध्य प्रदेश की बागली पहाड़ियों से निकलती है, जबकि पार्वती नदी का उद्गम सीहोर क्षेत्र से होता है। बनास नदी राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर पहाड़ियों से प्रवाहित होती है। बामनी नदी का उद्गम चित्तौड़गढ़ के हरिपुरा गाँव के पास से होता है और यह भैंसरोड़गढ़ में चंबल से मिल जाती है।

15. (1) चंबल नदी भैंसरोड़गढ़ के पास प्रसिद्ध चूलिया जलप्रपात बनाती है।
चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिले के भैंसरोड़गढ़ के निकट प्रसिद्ध चूलिया जलप्रपात का निर्माण करती है जिसकी ऊँचाई लगभग 18 मीटर है। यह नदी राजस्थान में चित्तौड़गढ़ के चौरासीगढ़ से प्रवेश करती है। इसका प्रवाह मार्ग मुख्य रूप से दक्षिण से उत्तर-पूर्व की ओर है। चंबल प्रत्यक्ष रूप से समुद्र में नहीं गिरती, बल्कि उत्तर प्रदेश में यमुना नदी में विलीन होकर बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र का भाग बनती है।

16. (2) नाग पहाड़
लूनी नदी का उद्गम अजमेर जिले में स्थित नाग पहाड़ से होता है, जहाँ इसे आरंभ में सागरमती कहा जाता है। पुष्कर से आने वाली सरस्वती नदी से मिलने के पश्चात इसका नाम लूनी पड़ता है। यह पश्चिमी राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण नदी है जो मरुस्थलीय क्षेत्रों में बहती है। यह छह जिलों से होकर प्रवाहित होती है और अंततः गुजरात के कच्छ के रण में विलीन हो जाती है।

17. (2) लूनी
जवाई, सुकड़ी और बांडी नदियाँ लूनी नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं, जो इसके दक्षिण-पूर्वी जलग्रहण क्षेत्र का निर्माण करती हैं। ये नदियाँ मुख्यतः अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी ढलानों से निकलती हैं। जवाई नदी लूनी की सबसे लंबी सहायक नदी है जिस पर प्रसिद्ध जवाई बांध बना है। बांडी नदी औद्योगिक प्रदूषण के लिए चर्चा में रही है। ये सभी नदियाँ पूर्णतः वर्षा पर आधारित और मौसमी हैं।

18. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लूनी नदी की विशिष्ट विशेषता यह है कि इसका जल बालोतरा (बाड़मेर) तक मीठा रहता है, किंतु उसके आगे खारा हो जाता है। इसका मुख्य कारण बालोतरा के पश्चात की मृदा की अत्यधिक लवणीय प्रकृति है, जिसमें सोडियम क्लोराइड की उच्च मात्रा पाई जाती है। जब नदी का जल इस रेतीली मृदा के संपर्क में आता है, तो लवण जल में घुल जाते हैं। यह प्रक्रिया जल के गुणों को बदल देती है।

19. (3) यह अरावली से निकले बिना दाईं ओर से लूनी में मिलती है।
जोजरी नदी लूनी की एकमात्र प्रमुख सहायक नदी है जिसका उद्गम अरावली पर्वतमाला से नहीं होता है। यह नागौर जिले के पोंडलू गाँव की पहाड़ियों से निकलती है और लूनी में दाईं ओर से मिलने वाली एकमात्र नदी है। अन्य सभी सहायक नदियाँ अरावली से निकलती हैं और बाईं ओर से मिलती हैं। यह विशेषता जोजरी को लूनी अपवाह तंत्र की अन्य धाराओं से भिन्न और अद्वितीय बनाती है।

20. (1) गुहिया, बांडी, सुकड़ी, जवाई
लूनी नदी के प्रवाह मार्ग में सहायक नदियों के संगम का एक विशिष्ट भौगोलिक क्रम पाया जाता है। उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, सर्वप्रथम गुहिया नदी बांडी में मिलती है। इसके पश्चात पाली और जालौर जिलों से होते हुए सुकड़ी नदी लूनी में विलीन होती है। सबसे दक्षिण में जवाई नदी अपनी सहायक खारी नदी के साथ लूनी में समाहित होती है। यह क्रम पश्चिमी राजस्थान हेतु महत्वपूर्ण है।

21. (3) हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाड़ियाँ
घग्गर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित शिवालिक की पहाड़ियों से होता है। यह एक प्राचीन नदी है जिसे सरस्वती नदी का अवशेष माना जाता है। हरियाणा और पंजाब से प्रवाहित होते हुए यह राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में प्रवेश करती है। यह आंतरिक अपवाह तंत्र की सबसे महत्वपूर्ण नदी है, जो अत्यधिक वर्षा के दौरान ही अपने पूर्ण प्रवाह में आती है। इसकी प्रकृति मौसमी है।

22. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
घग्गर नदी के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानीय नाम और ऐतिहासिक संदर्भ हैं। हनुमानगढ़ जिले में इसके बाढ़ के मैदान

Click Here to Buy book on Amazon

(1) आहड़ और आयड़
(2) गोमती और झामरी
(3) सीसारमा और बुझड़ा
(4) वाकल और मानसी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. पिछोला झील से संबंधित निम्नलिखित स्थलों और विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. जग मंदिर
II. जग निवास (लेक पैलेस)
III. नटनी का चबूतरा
IV. उदयपुर सौर वेधशाला
उपरोक्त में से कौन सा/से पिछोला झील में स्थित या उससे जुड़ी विशेषताओं को सही ढंग से सूचीबद्ध करता है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. अजमेर में स्थित कृत्रिम आना सागर झील का निर्माण निम्नलिखित में से किस शासक ने करवाया था?
(1) पृथ्वीराज चौहान III
(2) वासुदेव चौहान
(3) अर्णोराज
(4) विग्रहराज IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. आना सागर झील के आसपास के क्षेत्र में किए गए ऐतिहासिक निर्माणों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) सुभाष उद्यान (दौलत बाग) अकबर द्वारा बनवाया गया था और संगमरमर की बारादरी जहांगीर द्वारा।
(2) सुभाष उद्यान (दौलत बाग) जहांगीर द्वारा बनवाया गया था और संगमरमर की बारादरी शाहजहाँ द्वारा।
(3) झील को औरंगजेब द्वारा गहरा किया गया था और शाहजहाँ द्वारा यहाँ मंडप जोड़े गए।
(4) दौलत बाग शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था और बारादरी अर्णोराज द्वारा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. सुपोषण (यूट्रोफिकेशन), जो राजस्थान की कई मीठे पानी की झीलों के लिए खतरा बना हुआ है, मुख्य रूप से किसके कारण होता है?
(1) औद्योगिक अपशिष्ट से भारी धातुओं का संचय।
(2) भीषण सूखे के कारण जल की कमी।
(3) वाष्पीकरण की उच्च दर जिससे लवणों का सांद्रण बढ़ता है।
(4) कृषि अपवाह और शहरी सीवेज से पोषक तत्वों का उच्च स्तर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. राजस्थान की निम्नलिखित झीलों पर विचार कीजिए:
I. फतेह सागर
II. पिछोला
III. आना सागर
IV. पुष्कर
V. नक्की
उपरोक्त में से कौन सी झीलें 'राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना' (NLCP) में सम्मिलित हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II, III और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. झील के सुपोषण (यूट्रोफिकेशन) का तत्काल जैविक परिणाम निम्नलिखित में से क्या होता है?
(1) स्थानिक मछली प्रजातियों की विविधता में वृद्धि
(2) झील के जल के मटमैलेपन में कमी
(3) सघन शैवाल प्रस्फुटन (एल्गल ब्लूम) का निर्माण जिससे ऑक्सीजन की कमी होती है
(4) जल के तापमान में तत्काल गिरावट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची-I (झील/आर्द्रभूमि) को सूची-II (संरक्षण विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची-I: (झील/आर्द्रभूमि)
A. सांभर झील
B. केवलादेव घाना
C. मानसागर झील
D. आना सागर झील
सूची-II: (संरक्षण विशेषता)
i. 1990 में रामसर आर्द्रभूमि स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त
ii. 1981 में रामसर आर्द्रभूमि स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त
iii. सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से पुनरुद्धार
iv. अतिक्रमण और गाद की समस्या से ग्रस्त ऐतिहासिक शहरी झील
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

75. राजस्थान में झील संरक्षण कार्यक्रमों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण, आर्द्रभूमि नियमों के तहत इनके संरक्षण के लिए उत्तरदायी है।
(2) जयपुर की मानसागर झील को झील पुनरुद्धार के सफल मॉडल के रूप में देखा जाता है।
(3) खरपतवार हटाना और जलग्रहण क्षेत्र का उपचार NLCP के तहत मानक तकनीकें हैं।

8.7 प्रतिशत का महत्वपूर्ण योगदान देती है। यहाँ नमक का उत्पादन 'क्यार' पद्धति के माध्यम से किया जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह झील राजस्थान के लिए महत्वपूर्ण है। यह न केवल नमक का स्रोत है, बल्कि हजारों प्रवासी पक्षियों, विशेषकर राजहंस हेतु प्रमुख आश्रय स्थल है।

57. (1) पचपदरा, लूणकरणसर, सांभर, सिलीसेढ़
राजस्थान की झीलों का पश्चिम से पूर्व की ओर भौगोलिक क्रम राज्य की भू-आकृति को दर्शाता है। बाड़मेर जिले की पचपदरा झील सबसे पश्चिम में स्थित है। इसके बाद बीकानेर की लूणकरणसर झील आती है। जयपुर की सांभर झील मध्य भाग में है, जबकि अलवर की सिलीसेढ़ झील सबसे पूर्व में स्थित है। यह क्रम मरुस्थल से अरावली के पूर्वी मैदानी प्रदेशों की ओर झीलों के वितरण को दर्शाता है।

58. (4) I, II, III, IV और V
सांभर झील का पारिस्थितिकी तंत्र मेंढा, रूपनगढ़, खारी और खंडेला जैसी नदियों पर निर्भर है। इसे 1990 में रामसर आर्द्रभूमि स्थल घोषित किया गया था। हिंदुस्तान साल्ट्स लिमिटेड यहाँ नमक उत्पादन का मुख्य सरकारी उपक्रम है। ऐतिहासिक रूप से, बिजोलिया शिलालेख इसे वासुदेव चौहान द्वारा निर्मित बताता है। यह झील जैव विविधता और राजस्व की दृष्टि से राजस्थान की अनमोल प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत है।

59. (4) ताल छापर - चुरु
चुरु जिले में स्थित ताल छापर एक खारी झील है जो काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध अभयारण्य का हिस्सा है। अन्य विकल्पों में मिलान अशुद्ध है क्योंकि डेगाना नागौर में, कावोद जैसलमेर में और कुचामन भी नागौर जिले में स्थित है। पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में खारे पानी की झीलें टेथिस सागर के अवशेष मानी जाती हैं। इनका जल लवणीय होता है और ये स्थानीय पारिस्थितिकी में विशिष्ट हैं।

60. (2) एवियन बोटुलिज्म का प्रकोप
सांभर झील में हजारों प्रवासी पक्षियों की मृत्यु का कारण 'एवियन बोटुलिज्म' नामक बीमारी थी। यह क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिनम जीवाणु द्वारा उत्पन्न विषाक्तता है जो पक्षियों के तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। यह घटना झील के जल स्तर में परिवर्तन और उच्च तापमान के कारण हुई थी। इस पारिस्थितिक आपदा ने झील के संरक्षण और वन्यजीव प्रबंधन की वैश्विक चुनौतियों को उजागर किया है।

61. (3) गोमती
जयसमंद झील का निर्माण महाराणा जय सिंह ने 17वीं शताब्दी में गोमती नदी पर बांध बनाकर करवाया था। यह झील सलूंबर जिले में स्थित है और इसे 'ढेबर झील' भी कहा जाता है। उस समय अकाल राहत कार्यों के तहत इसका निर्माण किया गया था। यह राजस्थान की सबसे बड़ी और एशिया की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झील है, जो अपनी विशालता हेतु प्रसिद्ध है।

62. (4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान की मीठे पानी की झीलें विभिन्न जिलों की पहचान हैं। राजसमंद झील राजसमंद जिले में स्थित है, जबकि जयसमंद झील अब सलूंबर जिले का हिस्सा है। फतेह सागर झील उदयपुर शहर की सुंदरता बढ़ाती है। माउंट आबू में स्थित नक्की झील सिरोही जिले में है, जिसे पौराणिक मान्यताओं के अनुसार देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदा था। ये झीलें पर्यटन को बढ़ावा देती हैं।

63. (1) राजसमंद
राजसमंद झील के उत्तरी किनारे पर स्थित 'नौ चौकी पाल' एक ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ 25 काले संगमरमर के शिलालेखों पर संस्कृत भाषा में 'राज प्रशस्ति' उत्कीर्ण है, जो विश्व की सबसे बड़ी शिला-प्रशस्ति मानी जाती है। इसमें मेवाड़ के इतिहास का विवरण संजोया गया है। महाराणा राज सिंह द्वारा निर्मित यह झील अपनी कलात्मक छतरियों के कारण धार्मिक तथा ऐतिहासिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र है।

64. (4) I, II और III
जयसमंद झील एक विशाल कृत्रिम जलाशय है जिसमें सात प्राकृतिक द्वीप स्थित हैं। इन द्वीपों पर भील और मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं। सबसे बड़े द्वीप को 'बाबा का मगरा' और सबसे छोटे द्वीप को 'प्यारी' कहा जाता है। झील से सिंचाई हेतु 'श्यामपुरा' और 'भाट' नामक दो नहरें निकाली गई हैं। यह झील न केवल सौंदर्य का केंद्र है, बल्कि स्थानीय आजीविका का आधार भी है।

65. (2) उदयपुर सौर वेधशाला जयसमंद झील के एक द्वीप पर स्थित है।
उदयपुर सौर वेधशाला फतेह सागर झील के बीच एक द्वीप पर स्थित है, न कि जयसमंद झील पर। फतेह सागर झील का निर्माण मूल रूप से महाराणा जय सिंह ने करवाया था। इसके निकट स्थित सहेलियों की बाड़ी एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। एक कृत्रिम नहर फतेह सागर को पिछोला झील से जोड़ती है ताकि जल स्तर संतुलित रहे। ये झीलें उदयपुर को 'झीलों की नगरी' बनाती हैं।

66. (1) महाराणा लाखा
उदयपुर की ऐतिहासिक पिछोला झील का निर्माण 14वीं शताब्दी में महाराणा लाखा के शासनकाल में एक बंजारे द्वारा करवाया गया था। यह झील अपनी सुंदरता और ऐतिहासिक इमारतों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। इसके किनारे मेवाड़ के राजाओं के राजमहल (सिटी पैलेस) स्थित हैं। झील के मध्य स्थित टापू इसके आकर्षण को बढ़ाते हैं। यह झील राजस्थान के गौरवशाली इतिहास का अटूट अंग है।

67. (3) सीसारमा और बुझड़ा
पिछोला झील में जल की मुख्य आपूर्ति सीसारमा और बुझड़ा नामक दो मौसमी जल धाराओं के माध्यम से होती है। ये धाराएँ अरावली की पहाड़ियों से वर्षा जल एकत्रित कर झील में लाती हैं जिससे इसका जल स्तर बना रहता है। मानसून के दौरान इन धाराओं का प्रवाह तीव्र हो जाता है। इन प्राकृतिक स्रोतों के

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (2) आंतरिक अपवाह तंत्र
राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों और मरुस्थलीय धरातल के कारण यहाँ आंतरिक अपवाह तंत्र का सर्वाधिक विस्तार पाया जाता है। राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा इसी श्रेणी के अंतर्गत आता है। इस तंत्र की नदियाँ अपना जल समुद्र तक पहुँचाने के बजाय मरुस्थल में ही विलीन हो जाती हैं। घग्गर, कांतली, साबी और काकनी इसकी प्रमुख नदियाँ हैं।

2. (1) अरावली पर्वत श्रृंखला बंगाल की खाड़ी और अरब सागर अपवाह तंत्रों के बीच मुख्य जल विभाजक के रूप में कार्य करती है।
अरावली पर्वतमाला राजस्थान में प्रमुख जल विभाजक के रूप में स्थित है, जो राज्य के जल प्रवाह को दो मुख्य दिशाओं में विभाजित करती है। इसके पूर्वी ढलानों से निकलने वाली नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, जबकि पश्चिमी ढलानों वाली नदियाँ अरब सागर की ओर बहती हैं। उल्लेखनीय है कि राजस्थान में तीन मुख्य अपवाह तंत्र ही विद्यमान हैं, न कि चार।

3. (4) I, II और III
राजस्थान का लगभग 60 प्रतिशत क्षेत्र आंतरिक अपवाह प्रणाली के अधीन है, जो राज्य की सबसे बड़ी जल प्रणाली है। इस तंत्र की मुख्य विशेषता यह है कि नदियाँ समुद्र तक नहीं पहुँचतीं और धरातल पर ही विलुप्त हो जाती हैं। कांतली और काकनी इसकी प्रमुख नदियाँ हैं जो मौसमी वर्षा पर निर्भर करती हैं। यह प्रणाली मुख्य रूप से उत्तरी और पश्चिमी रेतीले मैदानों में विस्तृत है।

4. (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान की नदियों का उद्गम विशिष्ट पहाड़ियों से होता है। लूनी नदी अजमेर के निकट नाग पहाड़ से निकलती है और मरुस्थल की ओर बहती है। बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले की खमनोर पहाड़ियों से होता है। कांतली नदी सीकर की खंडेला पहाड़ियों से अपनी यात्रा आरंभ करती है, जबकि बाणगंगा नदी का उद्गम जयपुर की बैराठ पहाड़ियों से होता है। यह भौगोलिक विविधता महत्वपूर्ण है।

5. (3) पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में आंतरिक अपवाह तंत्र पूरी तरह से अनुपस्थित है।
पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में आंतरिक अपवाह तंत्र की प्रधानता पाई जाती है। यहाँ की नदियाँ अल्पकालिक होती हैं और केवल वर्षा ऋतु में प्रवाहित होती हैं। लूनी नदी अरब सागर तंत्र का हिस्सा है और चंबल राज्य की एकमात्र बारहमासी नदी है। आंतरिक अपवाह क्षेत्र का अनुपात राज्य के अन्य सभी अपवाह वर्गीकरणों की तुलना में भौगोलिक दृष्टि से सबसे अधिक विस्तृत और प्रभावी है।

6. (2) खमनोर की पहाड़ियाँ
बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में कुंभलगढ़ के निकट स्थित खमनोर की पहाड़ियों से होता है। यह पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी मानी जाती है। अपनी यात्रा में यह राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा और टोंक जैसे जिलों से गुजरती है। अंततः यह सवाई माधोपुर में चंबल नदी में विलीन होकर बंगाल की खाड़ी के अपवाह तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है।

7. (3) केवल IV
मोरेल नदी का उद्गम जयपुर ग्रामीण जिले की चैनपुरा पहाड़ियों से होता है और यह बनास की बाईं ओर की सहायक नदी है। अन्य तथ्यों के अनुसार, बेड़च नदी उदयपुर की गोगुंदा पहाड़ियों से निकलती है और कोठारी नदी भीलवाड़ा के नन्दराय में बनास से मिलती है। खारी नदी का उद्गम राजसमंद के बिजराल गाँव की पहाड़ियों से होता है। बनास का तंत्र पूर्वी राजस्थान हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

8. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
बनास नदी को प्राचीन काल से 'वन की आशा' या वर्णाशा के नाम से जाना जाता है, जो इसके सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है। हालाँकि, यह राजस्थान की बारहमासी नदी नहीं है क्योंकि यह पूर्णतः वर्षा जल पर निर्भर करती है और ग्रीष्म ऋतु में प्रायः सूख जाती है। चंबल राज्य की एकमात्र नदी है जो वर्ष भर निरंतर प्रवाहित होती है। अतः अभिकथन सत्य है किंतु कारण गलत है।

9. (1) II, I, III
बनास नदी अपने मार्ग में तीन प्रमुख त्रिवेणी संगम बनाती है। सर्वप्रथम भीलवाड़ा के बीगोद में बेड़च और मेनाल नदियाँ बनास से मिलती हैं। इसके पश्चात टोंक के राजमहल में खारी और दाई नदियों का संगम होता है। अंत में, सवाई माधोपुर के रामेश्वरम घाट पर बनास, चंबल और सीप नदियाँ आपस में मिलकर अंतिम संगम बनाती हैं। यह क्रम नदी के स्वाभाविक प्रवाह को दर्शाता है।

10. (1) परवन
परवन नदी काली सिंध की प्रमुख सहायक नदी है और यह प्रत्यक्ष रूप से बनास नदी तंत्र का हिस्सा नहीं है। इसके विपरीत, दाई, माशी और कालीसिल नदियाँ बनास की महत्वपूर्ण सहायक धाराएँ हैं जो विभिन्न स्थानों पर इसमें समाहित होती हैं। परवन नदी का प्रवाह क्षेत्र मुख्य रूप से झालावाड़, बारां और कोटा जिलों में स्थित है। नदियों के तंत्र को समझना उनके सही वर्गीकरण हेतु आवश्यक है।

V. बिजोलिया शिलालेख के अनुसार, इस झील का निर्माण वासुदेव चौहान ने करवाया था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. 'खारी झील' और 'जिले' का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(1) डेगाना - जैसलमेर
(2) कावोद - नागौर
(3) कुचामन - बाड़मेर
(4) ताल छापर - चुरु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. हाल के वर्षों में सांभर झील में प्रवासी पक्षियों की भारी मृत्यु की घटना हुई थी। इस पारिस्थितिक आपदा का वैज्ञानिक कारण क्या था?

(1) औद्योगिक अपशिष्टों से भारी धातु विषाक्तता
(2) एवियन बोटुलिज्म का प्रकोप
(3) घुली हुई ऑक्सीजन की अचानक अत्यधिक कमी
(4) स्थानीय शैवाल आबादी के विनाश के कारण भुखमरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. जयसमंद झील, जिसे ढेबर झील के नाम से भी जाना जाता है, का निर्माण निम्नलिखित में से किस नदी पर बांध बनाकर किया गया था?

(1) आहड़
(2) बेड़च
(3) गोमती
(4) सोम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. सूची-I (मीठे पानी की झील) को सूची-II (जिला) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

सूची-I: (मीठे पानी की झील)

A. राजसमंद
B. जयसमंद
C. फतेह सागर
D. नक्की

सूची-II: (जिला)

i. सिरोही
ii. उदयपुर
iii. सलूंबर
iv. राजसमंद

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. प्रसिद्ध 'नौ चौकी पाल', जहाँ 'राज प्रशस्ति' (25 संगमरमर की शिलाओं पर उत्कीर्ण) स्थित है, किस झील के किनारे है?

(1) राजसमंद
(2) पिछोला
(3) जयसमंद
(4) आना सागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. जयसमंद झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झीलों में से एक है।
II. इसमें सात द्वीप हैं जो मुख्य रूप से भील और मीणा जनजातियों द्वारा बसे हुए हैं।
III. इस झील का सबसे बड़ा द्वीप 'बाबा का मगरा' (या भांगड़ा) और सबसे छोटा 'प्यारी' के नाम से जाना जाता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. उदयपुर क्षेत्र की मीठे पानी की झीलों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) फतेह सागर झील मूल रूप से महाराणा जय सिंह द्वारा निर्मित थी लेकिन बाद में महाराणा फतेह सिंह द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराया गया।
(2) उदयपुर सौर वेधशाला जयसमंद झील के एक द्वीप पर स्थित है।
(3) सहेलियों की बाड़ी फतेह सागर झील के तट के समीप स्थित है।
(4) जल स्तर बनाए रखने के लिए एक नहर फतेह सागर झील को पिछोला झील से जोड़ती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. उदयपुर में ऐतिहासिक पिछोला झील का निर्माण मेवाड़ के किस शासक के शासनकाल के दौरान एक बंजारे द्वारा किया गया था?

(1) महाराणा लाखा
(2) महाराणा प्रताप
(3) महाराणा कुंभा
(4) महाराणा सांगा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सी मौसमी धाराएँ सीधे पिछोला झील में जल की आपूर्ति करती हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

को 'नाली' के नाम से जाना जाता है। पाकिस्तान के बहावलपुर क्षेत्र में इसके शुष्क मार्ग को 'हकरा' कहा जाता है। हरियाणा में इसे प्रायः सोतर के रूप में पहचाना जाता है। प्राचीन काल में इसे 'दृषद्वती' कहा जाता था। ये नाम इस नदी के समृद्ध इतिहास के प्रमाण हैं।

23. (4) यह अंततः कच्छ के रण के पास अरब सागर में गिरती है।
घग्गर नदी आंतरिक अपवाह तंत्र का हिस्सा है, इसलिए यह कभी भी किसी समुद्र तक नहीं पहुँचती है। सामान्यतः यह हनुमानगढ़ के भटनेर दुर्ग के पास मरुस्थल में ही विलीन हो जाती है। भारी वर्षा के वर्षों में इसका जल श्रीगंगानगर जिले को पार कर पाकिस्तान के फोर्ट अब्बास तक चला जाता है। यह राजस्थान की सबसे लंबी आंतरिक प्रवाह वाली नदी है जो हनुमानगढ़ जिले से प्रवेश करती है।

24. (2) केवल III
घग्गर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पहाड़ियों से होता है। इसे अपने लुप्त होने वाले मार्ग के कारण 'मृत नदी' कहा जाता है क्योंकि यह अक्सर धरातल के नीचे प्रवाहित होती है। सिंधु घाटी सभ्यता का प्रसिद्ध स्थल कालीबंगा इसी नदी के प्राचीन तट पर स्थित था। यह नदी वर्तमान में केवल वर्षा ऋतु में ही दिखाई देती है और राज्य के उत्तरी जिलों की मुख्य जलधारा है।

25. (3) नाली
हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में घग्गर नदी के उथले और विस्तृत बाढ़ के मैदान को स्थानीय भाषा में 'नाली' कहा जाता है। यह क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ है और यहाँ गेहूँ तथा चावल की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। इस विशिष्ट क्षेत्र का निर्माण नदी द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी के जमाव से हुआ है। वर्षा ऋतु में जल का स्तर बढ़ने पर यह क्षेत्र जलमग्न हो जाता है।

26. (1) बैराठ पहाड़ियाँ
बाणगंगा नदी का उद्गम जयपुर जिले की बैराठ पहाड़ियों से होता है। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार अर्जुन ने तीर चलाकर इस नदी की धारा उत्पन्न की थी, इसलिए इसे 'अर्जुन की गंगा' भी कहा जाता है। यह नदी जयपुर, दौसा और भरतपुर जिलों से होकर प्रवाहित होती है। पूर्व में यह यमुना की सहायक नदी थी, लेकिन वर्तमान में यह भरतपुर के मैदानों में ही विलुप्त हो जाती है।

27. (4) यह यमुना तक पहुँचने में विफल रहती है और भरतपुर के मैदानों में ही लुप्त हो जाती है।
'रुण्डित नदी' उस नदी को कहते हैं जो अपनी मुख्य नदी तक पहुँचने से पहले ही मैदानों में समाप्त हो जाती है। बाणगंगा पूर्व में प्रत्यक्ष रूप से यमुना में गिरती थी, परंतु जल की कमी के कारण अब यह भरतपुर के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के पास फैलकर लुप्त हो जाती है। इसकी मुख्य धारा का संबंध यमुना से टूट गया है, इसीलिए इसे रुण्डित नदी की श्रेणी में रखा गया है।

28. (4) I, II, III और IV
गंभीर नदी करौली की पहाड़ियों से निकलती है और सवाई माधोपुर, भरतपुर तथा धौलपुर जिलों से होकर बहती है। यह उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर यमुना नदी में विलीन हो जाती है। इसकी सहायक नदियों के संगम पर करौली में प्रसिद्ध पांचना बांध बनाया गया है, जो मिट्टी का बना राजस्थान का सबसे बड़ा बांध है। यह नदी पूर्वी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए जल का प्रमुख स्रोत है।

29. (3) बाणगंगा
जमवा रामगढ़ बांध जयपुर जिले में बाणगंगा नदी पर निर्मित एक ऐतिहासिक संरचना है। 20वीं शताब्दी के दौरान यह बांध जयपुर शहर की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करने वाला प्राथमिक स्रोत था। यद्यपि वर्तमान में जलग्रहण क्षेत्र में अतिक्रमण और वर्षा की कमी के कारण इसमें जल का प्रवाह अत्यंत कम हो गया है, फिर भी यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है।

30. (4) पार्वती, सेसा, खेर, उटांगन
गंभीर नदी की सहायक नदियों में पार्वती (द्वितीय), सेसा, खेर और उटांगन प्रमुख हैं। ये नदियाँ मानसून के दौरान गंभीर नदी के जल स्तर को बढ़ाने में सहायक होती हैं। उटांगन नदी को अक्सर गंभीर का ही दूसरा नाम भी माना जाता है। अन्य विकल्पों में दी गई नदियाँ जैसे सोम, जाखम माही की सहायक हैं, जबकि खारी और दाई बनास तंत्र का हिस्सा मानी जाती हैं।

31. (1) माही
माही नदी भारत की एकमात्र ऐसी नदी है जो कर्क रेखा को दो बार पार करती है। यह मध्य प्रदेश से निकलकर उत्तर की ओर बहते हुए राजस्थान में प्रवेश करती है और फिर दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर गुजरात में चली जाती है। अपने इस अद्वितीय 'U' आकार की प्रवाह दिशा के कारण यह 23.5 डिग्री उत्तरी अक्षांश को दो बार काटती है। यह दक्षिणी राजस्थान की प्रमुख जीवन रेखा है।

32. (2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
माही की सहायक नदियों का उद्गम विभिन्न पहाड़ी क्षेत्रों से होता है। सोम नदी उदयपुर की बीछामेड़ा पहाड़ियों से निकलती है। जाखम नदी का उद्गम प्रतापगढ़ की छोटी सादड़ी के पास भंवरमाता की पहाड़ियों से होता है। अनास नदी मध्य प्रदेश के धार जिले से निकलती है, जबकि चाप नदी का उद्गम बांसवाड़ा जिले की पहाड़ियों से होता है। ये नदियाँ मिलकर वागड़ क्षेत्र के अपवाह तंत्र का निर्माण करती हैं।

33. (4) I, II, III, IV और V
माही नदी घाटी परियोजना राजस्थान और गुजरात की संयुक्त बहुउद्देशीय योजना है। बांसवाड़ा में स्थित माही बजाज सागर बांध राज्य का सबसे लंबा बांध है। गुजरात का कडाणा बांध और बांसवाड़ा का कागदी पिकअप वियर सिंचाई हेतु महत्वपूर्ण हैं। सोम-कमला-अम्बा परियोजना डूंगरपुर जिले में सिंचाई प्रदान करती है। सुजलाम सुफलाम अभियान नदी के पुनरुद्धार और स्वच्छता के लिए संचालित किया गया है।

Downloaded from www.pdf.tube

(4) राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना (NLCP) पूर्णतः (100%) राजस्थान सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. लूनी बेसिन की निम्नलिखित में से कौन सी नदी कपड़ा रंगाई-छपाई उद्योगों के रासायनिक अपशिष्टों के कारण सर्वाधिक प्रदूषित हुई है?
(1) जवाई
(2) बांडी
(3) सुकड़ी
(4) खारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान के अरावली और दक्षिणी क्षेत्रों की अधिकांश मीठे पानी की झीलें कृत्रिम हैं।
कारण (R): ये ऐतिहासिक रूप से स्थानीय शासकों द्वारा पेयजल और सिंचाई हेतु वर्षा जल संरक्षण के लिए बनाई गई थीं।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राजस्थान राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण का गठन किस वर्ष किया गया था?
(1) 2010
(2) 2017
(3) 2019
(4) 2022
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राजस्थान आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) नियमों के तहत, अधिसूचित आर्द्रभूमि क्षेत्र में कौन सी गतिविधि पूर्णतः प्रतिबंधित है?
(1) नए उद्योग स्थापित करना या मौजूदा उद्योगों का विस्तार करना।
(2) स्थानीय समुदायों द्वारा पारंपरिक मछली पकड़ना।
(3) गैर-मोटर चालित नौकाओं का संचालन।
(4) वैज्ञानिक अनुसंधान और जल गुणवत्ता की निगरानी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय योजना (NPCA) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(1) ऐतिहासिक झीलों को पूर्णतः व्यावसायिक मत्स्य पालन में बदलना।
(2) जल गुणवत्ता और जैव विविधता में सुधार के लिए झीलों और आर्द्रभूमियों का समग्र संरक्षण और पुनरुद्धार।
(3) प्रदूषित झीलों को सुखाकर शहरी आवास के लिए भूमि विकसित करना।
(4) राज्य की सभी झीलों को एक ही नौवहन चैनल से जोड़ना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

NODIA

45. (3) काली सिंध नदी अपने संगम से पहले पूरी तरह से राजस्थान के भीतर रहती है।
काली सिंध नदी का उद्गम मध्य प्रदेश में होता है, इसलिए यह पूर्णतः राजस्थान की नदी नहीं है। यह एक अंतरराज्यीय नदी है। इसके विपरीत, परवन इसकी मुख्य सहायक नदी है और यह कोटा के नोनेरा में चंबल से मिलती है। काली सिंध और पार्वती दोनों ही नदियाँ विंध्य पर्वत श्रेणी से निकलकर उत्तर की ओर बहते हुए चंबल के विशाल जलग्रहण क्षेत्र में अपना योगदान देती हैं।

46. (4) कोटरी गाँव, जैसलमेर
काकनी नदी, जिसे स्थानीय स्तर पर मसूदी भी कहा जाता है, जैसलमेर जिले के कोटरी गाँव से निकलती है। यह राजस्थान के आंतरिक अपवाह तंत्र की सबसे छोटी नदी है जिसकी कुल लंबाई मात्र 17 किलोमीटर है। सामान्य वर्षा के दौरान यह कुछ दूरी तक बहकर विलुप्त हो जाती है, लेकिन अच्छी वर्षा होने पर यह भुज झील का निर्माण करती है। यह शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र का दुर्लभ उदाहरण है।

47. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में आंतरिक अपवाह तंत्र की प्रधानता का मुख्य कारण यहाँ की शुष्क जलवायु और रेतीला धरातल है। अरावली के वृष्टि-छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ वर्षा अत्यंत कम होती है। रेतीली मिट्टी जल को शीघ्र सोख लेती है, जिससे नदियाँ समुद्र तक नहीं पहुँच पातीं। इन्हीं भौगोलिक कारणों से राज्य का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा आंतरिक प्रवाह की श्रेणी में आता है।

48. (4) I, II और III
आंतरिक प्रवाह की ये तीनों नदियाँ उत्तरी राजस्थान हेतु महत्वपूर्ण हैं। साबी नदी जयपुर की सेवर पहाड़ियों से निकलकर हरियाणा की ओर बहती है। रुपारेल नदी अलवर की उदयनाथ पहाड़ियों से अपनी यात्रा शुरू करती है। कांतली नदी शेखावाटी की प्रमुख नदी है जिसका उद्गम सीकर की खंडेला पहाड़ियों से होता है। कांतली के प्रवाह क्षेत्र को ऐतिहासिक रूप से 'तोरावाटी' कहा जाता है।

49. (2) यह जैसलमेर में भुज झील का निर्माण करने के लिए एक स्थानीय गर्त को भरती है।
काकनी एक छोटी मौसमी नदी है जो जैसलमेर के रेतीले धरातल पर बहती है। जब इस क्षेत्र में पर्याप्त वर्षा होती है, तो नदी का जल कोटरी गाँव से आगे बढ़कर एक प्राकृतिक गर्त में जमा हो जाता है, जिससे 'भुज झील' का निर्माण होता है। यह झील मरुस्थल में अस्थायी जल निकाय के रूप में महत्वपूर्ण है। पानी की कमी होने पर यह नदी रेत में ही समा जाती है।

50. (1) वराह और लसवारी
रुपारेल नदी को अलवर और भरतपुर के स्थानीय क्षेत्रों में 'वराह' और 'लसवारी' नदी के नाम से भी जाना जाता है। यह अलवर जिले की उदयनाथ पहाड़ियों से निकलकर मुख्य रूप से अलवर और भरतपुर जिलों में बहती है। भरतपुर में महाराजा सूरजमल द्वारा निर्मित प्रसिद्ध 'सुजान गंगा' नहर इसी नदी के जल से भरी जाती है। इसके उपनाम इसके प्राचीन स्थानीय सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं।

51. (3) प्राकृतिक क्रेटर/काल्डेरा झील
अजमेर में स्थित पुष्कर झील को भूवैज्ञानिक दृष्टि से एक प्राकृतिक काल्डेरा झील माना जाता है जिसका निर्माण ज्वालामुखीय धंसाव से हुआ है। धार्मिक मान्यताओं में इसे ब्रह्मा जी के कमल से उत्पन्न माना गया है। यह अरावली की पहाड़ियों से घिरी एक अर्ध-वृत्ताकार झील है। अपनी पवित्रता के कारण इसे 'तीर्थराज' भी कहा जाता है। यह राजस्थान की सबसे प्राचीन और पवित्र प्राकृतिक झील है।

52. (4) I, II, III और IV
पुष्कर झील के चारों ओर 52 घाट स्थित हैं जहाँ श्रद्धालु पवित्र स्नान करते हैं। यहाँ का ब्रह्मा मंदिर विश्व विख्यात है। कार्तिक पूर्णिमा पर दीपदान की भव्य परंपरा इस झील के सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है। झील की सफाई और पारिस्थितिक संरक्षण हेतु कनाडा के सहयोग से महत्वपूर्ण परियोजनाएं चलाई गई हैं। ये सभी तत्व पुष्कर को एक अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

53. (3) महाराजा विनय सिंह
अलवर में स्थित सिलीसेढ़ झील का निर्माण 1845 में महाराजा विनय सिंह ने अपनी रानी शीला की स्मृति में करवाया था। इस झील के किनारे उन्होंने एक भव्य महल भी बनवाया था जो वर्तमान में एक हेरिटेज होटल है। यह झील अरावली की पहाड़ियों के बीच स्थित है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण इसे राजस्थान का 'नंदन कानन' भी कहा जाता है। यह अलवर की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करती है।

54. (2) सिलीसेढ़ झील अलवर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक खारे पानी की झील है।
सिलीसेढ़ झील अलवर में स्थित एक मीठे पानी की कृत्रिम झील है, न कि खारे पानी की। इसका निर्माण सिंचाई और पर्यटन के उद्देश्य से किया गया था। दूसरी ओर, पुष्कर झील अजमेर की एक पवित्र ताजे पानी की झील है। पुष्कर का वार्षिक मेला विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। वर्तमान में भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण पुष्कर झील के जल स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

55. (4) सहायक धाराओं का मार्ग परिवर्तन और जलग्रहण क्षेत्र में अत्यधिक भूजल दोहन।
पुष्कर झील के जल स्तर में गिरावट का प्राथमिक कारण इसके जलग्रहण क्षेत्र में हुआ अनियंत्रित मानवीय हस्तक्षेप है। झील को जल पहुँचाने वाली प्राकृतिक धाराओं के मार्ग में अवरोध उत्पन्न हो गए हैं और आसपास के क्षेत्रों में भूजल का अत्यधिक निष्कर्षण किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, अरावली में वनस्पति की कमी से वर्षा जल का संग्रहण कम हुआ है। ये कारक झील के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं।

56. (2) 8.7%
जयपुर में स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतःस्थलीय नमक की झील है। यह देश के कुल नमक उत्पादन में लगभग

Click Here to Buy book on Amazon

34. (1) यह बाड़मेर जिले में लूनी नदी के साथ विलीन होने के लिए उत्तर की ओर बहती है।
माही नदी का लूनी नदी से कोई सीधा संबंध नहीं है। माही मध्य प्रदेश की मेहंद झील से निकलकर राजस्थान के बांसवाड़ा में प्रवेश करती है और दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ते हुए गुजरात चली जाती है। यह अंततः अपना जल खंभात की खाड़ी में विसर्जित करती है, न कि बाड़मेर में लूनी से मिलती है। लूनी का प्रवाह मार्ग अलग है और वह कच्छ के रण में समाप्त होती है।

35. (3) ईरु
ईरु नदी प्रत्यक्ष रूप से माही की मुख्य सहायक नदी नहीं है, जबकि सोम, जाखम और मोरेन इसके अभिन्न अंग हैं। सोम और जाखम डूंगरपुर के बेणेश्वर धाम में माही के साथ मिलकर प्रसिद्ध त्रिवेणी संगम बनाती हैं, जहाँ आदिवासियों का विशाल मेला आयोजित होता है। मोरेन नदी डूंगरपुर क्षेत्र से निकलकर माही में मिलती है। सहायक नदियों का यह जाल दक्षिण राजस्थान हेतु आधारभूत ढांचा प्रदान करता है।

36. (4) कोटड़ा, उदयपुर
साबरमती नदी का उद्गम उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील में अरावली की पहाड़ियों से होता है। यद्यपि इसका जन्म राजस्थान में होता है, लेकिन इसका अधिकांश प्रवाह क्षेत्र (लगभग 371 किलोमीटर) गुजरात राज्य में स्थित है। राजस्थान में इसकी लंबाई केवल 45 किलोमीटर के आसपास है। यह नदी पश्चिमी भारत की एक महत्वपूर्ण नदी है जिसके तट पर अहमदाबाद और गांधीनगर जैसे प्रमुख शहर बसे हुए हैं।

37. (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
साबरमती की सहायक नदियों के अपने विशिष्ट उद्गम हैं। वाकल नदी उदयपुर से निकलकर मानसी के साथ मिलती है। सेई नदी पर एक जल सुरंग बनाई गई है जो इसका जल जवाई बांध की ओर ले जाती है। हथमती नदी गुजरात सीमा के निकट पहाड़ी क्षेत्रों से निकलती है। वात्रक नदी का उद्गम डूंगरपुर जिले की पहाड़ियों से होता है। ये सभी धाराएँ साबरमती के जल ग्रहण क्षेत्र को समृद्ध करती हैं।

38. (1) केवल I, II और III
साबरमती राजस्थान से निकलती है लेकिन इसका मुख्य महत्व गुजरात में है जहाँ यह एक जीवन रेखा के रूप में कार्य करती है। अहमदाबाद और गांधीनगर इसके तट पर बसे प्रमुख औद्योगिक केंद्र हैं। मानसी-वाकल परियोजना का निर्माण उदयपुर शहर की जल आपूर्ति के लिए किया गया था। यह नदी अंततः खंभात की खाड़ी में गिरती है, न कि कच्छ के रण में। अतः चौथा कथन भौगोलिक दृष्टि से असत्य है।

39. (4) वाकल, हथमती, मेश्वा और वात्रक महत्वपूर्ण बाईं और दाईं ओर की सहायक नदियाँ हैं।
साबरमती नदी तंत्र में वाकल, हथमती, मेश्वा और वात्रक जैसी कई सहायक नदियाँ शामिल हैं जो अरावली के दक्षिणी भागों से जल एकत्रित करती हैं। सेई नदी उदयपुर की पहाड़ियों से निकलती है, न कि पाली से। अधिकांश सहायक नदियाँ उदयपुर जिले के पहाड़ी क्षेत्रों से होकर ही गुजरती हैं। राजस्थान में इस नदी का उपयोग मुख्य रूप से पेयजल परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

NODIA

40. (1) I, II, III, IV
राजस्थान की सीमाओं के भीतर लंबाई के आधार पर बनास सबसे लंबी नदी है, जो लगभग 512 किलोमीटर बहती है। लूनी नदी की राजस्थान में लंबाई लगभग 330 किलोमीटर है। आंतरिक अपवाह की नदियों में कांतली लगभग 100 किलोमीटर प्रवाहित होती है, जबकि काकनी केवल 17 किलोमीटर बहने वाली राज्य की सबसे छोटी नदी है। यह घटता हुआ क्रम राज्य के जल संसाधनों के वितरण को स्पष्ट करता है।

41. (3) झालावाड़
काली सिंध नदी मध्य प्रदेश के देवास जिले की बागली पहाड़ियों से निकलकर राजस्थान के झालावाड़ जिले के रायपुर क्षेत्र से प्रवेश करती है। यह हाड़ौती पठार की एक महत्वपूर्ण नदी है जो झालावाड़ और कोटा जिलों से होकर बहती है। अंततः यह कोटा जिले के नोनेरा गाँव के पास चंबल नदी में मिल जाती है। अपनी यात्रा के दौरान यह आहू, परवन और निमाज जैसी नदियों का जल लेकर प्रवाहित होती है।

42. (1) आहू और काली सिंध - गागरोन किला
झालावाड़ का ऐतिहासिक गागरोन किला आहू और काली सिंध नदियों के पवित्र संगम पर स्थित है। यह किला 'जल दुर्ग' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो बिना किसी नींव के चट्टान पर खड़ा है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि शेरगढ़ किला परवन नदी के किनारे स्थित है और भैंसरोड़गढ़ किला चंबल और बामनी के संगम पर है। नदियों और किलों का यह संगम सामरिक वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

43. (4) I, II, III, IV और V
पार्वती नदी मध्य प्रदेश के सीहोर जिले से निकलती है और बारां जिले के करिया हाट से राजस्थान में प्रवेश करती है। यह नदी राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच एक लंबी सीमा का निर्धारण करती है। सवाई माधोपुर के पास पालिया में यह चंबल से मिल जाती है। ल्हासी, बरनी और विलास इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं जो इस क्षेत्र की कृषि हेतु सिंचाई का जल प्रदान करती हैं।

44. (2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
हाड़ौती क्षेत्र की नदियों का संगम जाल अत्यंत विस्तृत है। परवन और आहू दोनों ही काली सिंध की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। ल्हासी नदी पार्वती की सहायक धारा है जो बारां जिले के जल तंत्र का हिस्सा है। मेज नदी प्रत्यक्ष रूप से चंबल नदी में मिलने वाली एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है जिसका उद्गम भीलवाड़ा की पहाड़ियों से होता है। यह वर्गीकरण पूर्वी राजस्थान के अपवाह तंत्र को स्पष्ट करता है।

बिना झील की जल धारण क्षमता को बनाए रखना अत्यंत कठिन होगा।

68. (1) केवल I, II और III
पिछोला झील के भीतर जग मंदिर और जग निवास (लेक पैलेस) नामक दो शानदार महल स्थित हैं। झील के किनारे 'नटनी का चबूतरा' भी एक प्रसिद्ध स्मारक है जो स्थानीय लोककथाओं से जुड़ा है। उदयपुर सौर वेधशाला फतेह सागर झील में स्थित है, पिछोला में नहीं। ये ऐतिहासिक स्थल और महल अब विश्व स्तरीय पर्यटन आकर्षण बन चुके हैं, जो मेवाड़ की राजसी परंपरा को प्रदर्शित करते हैं।

69. (3) अर्णोराज
अजमेर में स्थित आना सागर झील का निर्माण 1137 ईस्वी में चौहान शासक अर्णोराज ने करवाया था। यह एक कृत्रिम झील है जो तारागढ़ पहाड़ी के समीप स्थित है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, अर्णोराज ने आक्रमणकारियों के रक्त से सनी भूमि को साफ करने के लिए लूनी नदी के जल को रोककर इस झील का निर्माण करवाया था। यह झील शताब्दियों से अजमेर के लिए जल का प्रमुख स्रोत रही है।

70. (2) सुभाष उद्यान (दौलत बाग) जहांगीर द्वारा बनवाया गया था और संगमरमर की बारादरी शाहजहाँ द्वारा।
आना सागर झील के सौंदर्य में मुगल सम्राटों का विशेष योगदान रहा है। सम्राट जहांगीर ने झील के किनारे 'दौलत बाग' का निर्माण करवाया था, जिसे अब सुभाष उद्यान कहा जाता है। बाद में सम्राट शाहजहाँ ने यहाँ सफेद संगमरमर की पाँच सुंदर 'बारादरी' बनवाईं। ये निर्माण मुगल और राजपूत स्थापत्य कला के सुंदर संगम को प्रदर्शित करते हैं और पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं।

71. (4) कृषि अपवाह और शहरी सीवेज से पोषक तत्वों का उच्च स्तर।
सुपोषण या यूट्रोफिकेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें झील के जल में फास्फोरस और नाइट्रोजन जैसे पोषक तत्वों की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाती है। इसका मुख्य कारण खेतों से उर्वरक युक्त पानी का आना और शहरी मल-जल का सीधा झील में गिरना है। इन पोषक तत्वों के कारण जल में शैवाल की अनियंत्रित वृद्धि होती है, जिससे जलीय जीवों हेतु ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

72. (4) I, II, III, IV और V
राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना (NLCP) के अंतर्गत राजस्थान की फतेह सागर, पिछोला, आना सागर, पुष्कर और नक्की झील को शामिल किया गया है। इस योजना का उद्देश्य झीलों के पारिस्थितिक तंत्र का पुनरुद्धार करना और जल प्रदूषण को रोकना है। केंद्र और राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से इन झीलों में गाद निकालने और जैव विविधता संरक्षण के कार्य संचालित किए जा रहे हैं ताकि गुणवत्ता बनी रहे।

73. (3) सघन शैवाल प्रस्फुटन (एल्गल ब्लूम) का निर्माण जिससे ऑक्सीजन की कमी होती है
झील में सुपोषण का सबसे हानिकारक प्रभाव सघन शैवाल प्रस्फुटन के रूप में दिखाई देता है। ये शैवाल पानी की सतह को ढक लेते हैं जिससे सूर्य का प्रकाश गहराई तक नहीं पहुँच पाता। जब ये शैवाल मरते हैं, तो इनके अपघटन में पानी में घुली ऑक्सीजन का भारी उपभोग होता है। ऑक्सीजन की इस कमी के कारण मछलियाँ और अन्य जलीय जीव मरने लगते हैं और तंत्र नष्ट हो जाता है।

74. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
सांभर झील को 1990 में और केवलादेव को 1981 में रामसर आर्द्रभूमि स्थल की सूची में शामिल किया गया था। जयपुर की मानसागर झील का पुनरुद्धार सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के एक सफल मॉडल के रूप में किया गया है। अजमेर की आना सागर झील वर्तमान में अतिक्रमण और गाद की गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है। ये स्थल जल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं को महत्वपूर्ण रूप से दर्शाते हैं।

75. (4) राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना (NLCP) पूर्णतः (100%) राजस्थान सरकार द्वारा वित्तपोषित है।
राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना (NLCP) केंद्र और राज्य सरकार के बीच एक साझा वित्त पोषित योजना है। इसमें लागत का विभाजन प्रायः 60:40 के अनुपात में होता है। राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण इन जल निकायों की सुरक्षा के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है। खरपतवार हटाना और जलग्रहण क्षेत्र का उपचार झीलों के स्वास्थ्य में सुधार हेतु अपनाई जाने वाली मानक और वैज्ञानिक तकनीकें हैं।

76. (2) बांडी
लूनी बेसिन की बांडी नदी पाली जिले में स्थित वस्त्र उद्योगों के औद्योगिक बहिःस्राव के कारण अत्यधिक प्रदूषित हो गई है। बिना उपचारित किए छोड़े गए रासायनिक अपशिष्टों के कारण इस नदी का जल विषाक्त और कृषि हेतु अनुपयुक्त हो गया है। इस प्रदूषण ने न केवल जलीय जीवन को नष्ट किया है, बल्कि भूजल की गुणवत्ता को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया है। यह एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है।

77. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में मीठे पानी की अधिकांश प्रसिद्ध झीलें कृत्रिम हैं जिनका निर्माण शासकों ने करवाया था। चूँकि राजस्थान एक शुष्क प्रदेश है, इसलिए वर्षा जल का संचय पेयजल और सिंचाई की आवश्यकताओं हेतु अनिवार्य था। शासकों ने अकाल के समय रोजगार देने और जल सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु इन झीलों का निर्माण करवाया। यह परंपरा राजस्थान की समृद्ध जल संचयन संस्कृति का जीवंत प्रमाण है।

78. (3) 2019
राजस्थान राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण का गठन वर्ष 2019 में आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) नियम, 2017 के कार्यान्वयन हेतु किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य राज्य की महत्वपूर्ण आर्द्रभूमियों की पहचान करना और उनके संरक्षण हेतु प्रभावी

Downloaded from www.pdf.tube

नीतियां बनाना है। यह प्राधिकरण पर्यावरण विभाग के अंतर्गत कार्य करता है और सुनिश्चित करता है कि इन संवेदनशील क्षेत्रों का पारिस्थितिक संतुलन बना रहे। यह एक महत्वपूर्ण कानूनी कदम है।

79. (1) नए उद्योग स्थापित करना या मौजूदा उद्योगों का विस्तार करना।
राजस्थान आर्द्रभूमि नियमों के तहत, अधिसूचित आर्द्रभूमि क्षेत्रों के भीतर प्रदूषण फैलाने वाली किसी भी गतिविधि पर पूर्ण प्रतिबंध है। इसमें नए उद्योगों की स्थापना, कचरा डालना और किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य शामिल है। स्थानीय समुदायों द्वारा पारंपरिक मत्स्य पालन और पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन की अनुमति दी जा सकती है। इन नियमों का उद्देश्य जैव विविधता की रक्षा करना और मानवीय हस्तक्षेप को रोकना है।

80. (2) जल गुणवत्ता और जैव विविधता में सुधार के लिए झीलों और आर्द्रभूमियों का समग्र संरक्षण और पुनरुद्धार।
जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय योजना (NPCA) का लक्ष्य झीलों और आर्द्रभूमियों का समग्र संरक्षण करना है। यह योजना जल की गुणवत्ता में सुधार, गाद हटाने और स्थानीय जैव विविधता को पुनर्जीवित करने पर केंद्रित है। यह व्यावसायिक उपयोग के बजाय पारिस्थितिक सेवाओं को प्राथमिकता देती है। केंद्र प्रायोजित यह योजना संवेदनशील जलीय निकायों के दीर्घकालिक और सतत प्रबंधन को सुनिश्चित करती है।

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अध्याय 19

राजस्थान की जलवायु

1. निम्नलिखित में से कौन सा व्यापक वर्गीकरण संपूर्ण राजस्थान की सामान्य जलवायु विशेषताओं का सबसे सटीक वर्णन करता है?
   (1) आर्द्र और उप-आर्द्र उष्णकटिबंधीय
   (2) शुष्क और अर्द्ध-शुष्क महाद्वीपीय
   (3) शुष्क ग्रीष्मकाल के साथ उष्णकटिबंधीय मानसून
   (4) भूमध्यसागरीय और अर्द्ध-शुष्क
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु के दौरान थार मरुस्थल के अत्यधिक गर्म होने का प्राथमिक मौसम संबंधी प्रभाव क्या है?
   (1) यह एक तीव्र निम्न-दाब गर्त बनाता है जो दक्षिण-पश्चिम मानसून को आकर्षित करता है।
   (2) यह एक उच्च-दाब क्षेत्र बनाता है जो नमी युक्त मानसूनी हवाओं को समुद्र की ओर वापस धकेल देता है।
   (3) यह वैश्विक व्यापारिक पवनों को उलट देता है जिससे पूरे क्षेत्र में मानसून-पूर्व की भारी वर्षा होती है।
   (4) यह निचले वायुमंडल को स्थिर करता है जिससे उच्च तापमान के बावजूद संवहनीय वर्षा नहीं हो पाती है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान में तापमान के स्वरुप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: राजस्थान के पश्चिमी भागों में पूर्वी भागों की तुलना में अधिक दैनिक तापांतर अनुभव किया जाता है।
   कथन II: थार मरुस्थल की रेतीली मृदा दिन के दौरान तेजी से गर्म होती है और रात में तेजी से ठंडी हो जाती है।
   नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
   (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
   (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
   (3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
   (4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I (कोपेन का जलवायु प्रदेश) को सूची II (प्रतिनिधि जिला) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
   सूची I: (कोपेन का जलवायु प्रदेश)
   A. BWhw
   B. BShw
   C. Cwg
   D. Aw
   सूची II: (प्रतिनिधि जिला)
   i. डूंगरपुर
   ii. दौसा
   iii. सीकर
   iv. जैसलमेर
   (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. राजस्थान के तापमान क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
   (1) चूरू में अक्सर गर्मियों का उच्चतम तापमान दर्ज किया जाता है जो राज्य में चरम स्तर तक पहुँच जाता है।
   (2) माउंट आबू को सर्दियों के दौरान इसकी अधिक ऊँचाई के कारण सबसे कम तापमान वाला क्षेत्र माना जाता है।
   (3) पश्चिमी राजस्थान में सर्दियों का तापमान कभी भी हिमांक से नीचे नहीं गिरता है।
   (4) फलोदी भौगोलिक कारकों के कारण चरम ग्रीष्मकाल के महीनों के दौरान अत्यधिक तापमान वृद्धि के लिए जाना जाता है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. राजस्थान में वृष्टि-छाया प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. अरावली की पूर्वी ढालें अरब सागर मानसूनी शाखा के वृष्टि-छाया क्षेत्र में आती हैं।
   II. पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र अपेक्षाकृत शुष्क रहता है क्योंकि अरब सागर की शाखा अरावली के समानांतर चलती है।
   III. अरावली पर्वतमाला बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा को पश्चिमी राजस्थान तक पहुँचने से रोकने में एक महत्वपूर्ण अवरोध के रूप में कार्य करती है।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) I और II
   (2) II और III
   (3) I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

आगे बढ़ता है।

(4) बाँसवाड़ा आमतौर पर आगे बढ़ते दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा प्राप्त करने वाला पहला जिला है।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची I (ट्रेवार्था का जलवायु वर्गीकरण) को सूची II (राजस्थान में संबंधित क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (ट्रेवार्था का जलवायु वर्गीकरण)

A. Aw
B. BSh
C. BWh
D. Caw

सूची II: (राजस्थान में संबंधित क्षेत्र)

i. सुदूर पश्चिमी क्षेत्र
ii. दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र
iii. अर्द्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्र
iv. दक्षिणी उष्णकटिबंधीय क्षेत्र

(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. रबी की फसलों के लिए अत्यधिक लाभकारी होने के कारण राजस्थान के किसानों द्वारा किस परिघटना को लोकप्रिय रूप से 'गोल्डन ड्रॉप्स' (सुनहरी बूंदें) कहा जाता है?

(1) मई में मानसून-पूर्व की वर्षा
(2) अक्टूबर में निवर्तनी मानसून की वर्षा
(3) सर्दियों में होने वाली मावठ वर्षा
(4) प्रश्न हल नहीं किया गया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. राजस्थान में शीतकालीन परिस्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. जनवरी का औसत तापमान आमतौर पर दक्षिणी जिलों से उत्तरी जिलों की ओर घटता है।
II. सर्दियों के दौरान शीत लहरें मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्र से नीचे आने वाली ठंडी पवनों के कारण होती हैं।
III. उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के रेतीले मैदानों में पाला जमना पूरी तरह से अज्ञात है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित सभी जिलों को आमतौर पर पश्चिमी राजस्थान के मुख्य सूखा प्रवण शुष्क क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, सिवाय:

(1) बाड़मेर
(2) जैसलमेर
(3) जोधपुर
(4) प्रतापगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

कथन (A): उत्तरी राजस्थान में शीतकालीन वर्षा गेहूँ की खेती के लिए अत्यधिक लाभकारी है।

कारण (R): पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर में उत्पन्न होते हैं और उपोष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट धाराओं के माध्यम से पूर्व की ओर नमी लाते हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. राजस्थान में अनुभव की जाने वाली 'लू' पवनों का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?

(1) अरब सागर से चलने वाली नमी युक्त पवनें जो दक्षिण में मानसून-पूर्व भारी वर्षा करती हैं।
(2) दिसंबर के चरम शीतकालीन महीने के दौरान राज्य में चलने वाली ठंडी और शुष्क ध्रुवीय पवनें।
(3) ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में दोपहर के दौरान चलने वाली गर्म, शुष्क और तीव्र पश्चिमी पवनें।
(4) शरद ऋतु में निवर्तनी मानसून के दौरान बंगाल की खाड़ी से उत्पन्न होने वाली शक्तिशाली चक्रवाती पवनें।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. राजस्थान में वर्षा वितरण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राज्य अपनी वार्षिक वर्षा का 90% से अधिक दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त करता है।
II. राजस्थान की औसत वार्षिक वर्षा लगभग 57.51 सेमी है।
III. वर्षा व्यवस्थित रूप से दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर कम होती जाती है।
IV. अरावली श्रेणी वर्षा के स्वरूप को निर्धारित करने वाले एक प्रमुख जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करती है।
V. सबसे पश्चिमी जिलों में आमतौर पर वर्ष में 40 से अधिक वर्षा वाले दिन होते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) III और IV
(3) केवल V
(4) II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

15. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में ग्रीष्म ऋतु के दौरान 'आँधी' (धूल भरी आँधियों) की आवृत्ति आमतौर पर सबसे अधिक होती है?
(1) श्रीगंगानगर
(2) जैसलमेर
(3) बीकानेर
(4) बाड़मेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. राजस्थान में ऋतु चक्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ग्रीष्म ऋतु आधिकारिक तौर पर मार्च में शुरु होती है और जून के मध्य तक जारी रहती है।
II. जून के मध्य से सितंबर तक की अवधि मानसून के निवर्तन की ऋतु होती है।
III. अक्टूबर और नवंबर शरद ऋतु के संक्रमण काल का प्रतिनिधित्व करते हैं।
IV. शीत ऋतु दिसंबर से फरवरी तक होती है जिसमें जनवरी में शीत लहर की स्थिति बनी रहती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) केवल II
(3) II और III
(4) III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. पश्चिमी राजस्थान में सूखा प्रवण क्षेत्रों की उच्च आवृत्ति का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) पिछले कई दशकों में थार मरुस्थल पारिस्थितिकी तंत्र में अत्यधिक वनों की कटाई
(2) उच्च वाष्पोत्सर्जन के साथ अनियमित, अत्यधिक परिवर्तनशील और कम वर्षा
(3) इस क्षेत्र में बारहमासी नदियों और भूजल जलभृतों का पूर्ण अभाव
(4) पूर्वी मैदानी इलाकों से बहने वाली प्रमुख मौसमी नदियों पर व्यापक बाँध निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. राजस्थान के थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) DB'w - अर्द्ध-शुष्क मिश्रित जलवायु
(2) EA'd - उप-आर्द्र जलवायु
(3) DA'w - उष्णकटिबंधीय शुष्क जलवायु
(4) CA'w - शुष्क चरम जलवायु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राजस्थान में हाल के जलवायु परिवर्तन अध्ययनों के अनुसार, पिछले कुछ दशकों में मुख्य रूप से निम्नलिखित में से कौन सी प्रवृत्ति देखी गई है?
(1) पूरे राज्य में औसत ग्रीष्मकालीन तापमान में निरंतर और एकसमान कमी
(2) बिना किसी महत्वपूर्ण शुष्क दौर के सभी जिलों में वार्षिक वर्षा में एकसमान वृद्धि
(3) अत्यधिक उच्च तापमान और अनियमित तीव्र वर्षा की घटनाओं दोनों में वृद्धि
(4) वैश्विक तापन प्रवृत्तियों के कारण अरावली क्षेत्र में पाला वाले दिनों का पूर्णतः लुप्त होना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर औसत वार्षिक वर्षा क्षेत्रों के सही क्रम को दर्शाता है?
(1) 10-20 सेमी, 20-40 सेमी, 40-60 सेमी, 60-80 सेमी
(2) 20-40 सेमी, 10-20 सेमी, 60-80 सेमी, 40-60 सेमी
(3) 40-60 सेमी, 60-80 सेमी, 20-40 सेमी, 10-20 सेमी
(4) 10-20 सेमी, 40-60 सेमी, 20-40 सेमी, 80-100 सेमी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजस्थान में उत्तर-पूर्वी मानसून के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: उत्तर-पूर्वी मानसून पश्चिमी राजस्थान को पर्याप्त कृषि लाभ पहुँचाता है।
कथन II: उत्तर-पूर्वी मानसूनी पवनें महाद्वीपीय मूल की हैं और राजस्थान के ऊपर बहुत कम नमी लाती हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. पश्चिमी राजस्थान में गर्मियों के दौरान स्थानीय मौसम की स्थिति पर 'आँधी' (धूल भरी आँधी) का तात्कालिक प्रभाव क्या होता है?
(1) यह स्थानीय वायुमंडलीय तापमान में काफी वृद्धि करती है।
(2) इससे तापमान में अस्थायी गिरावट आती है जिसके साथ उच्च आर्द्रता या हल्की बूंदाबांदी होती है।
(3) यह वायुमंडल से नमी को पूरी तरह से हटा देती है जिससे बाद में होने वाली वर्षा रुक जाती है।
(4) यह कई दिनों तक लगातार शीत लहर की स्थिति पैदा करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रवेश के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) मानसून आमतौर पर जून की शुरुआत में पश्चिमी जैसलमेर जिले के माध्यम से राजस्थान में प्रवेश करता है।
(2) बंगाल की खाड़ी की शाखा आमतौर पर अरब सागर की शाखा से पहले राज्य के पूर्वी हिस्से में प्रवेश करती है।
(3) मानसून राज्य भर में केवल उत्तर से दक्षिण सीमा की ओर

NODIA

देखी जाती हैं।
कथन II: जलवायु परिवर्तन ने राज्य में चरम मौसम की घटनाओं की समग्र आवृत्ति को कम कर दिया है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. निम्नलिखित जिलों को उनकी औसत वार्षिक वर्षा (सबसे कम से उच्चतम) के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. जैसलमेर
II. झालावाड़
III. जोधपुर
IV. जयपुर
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही क्रम चुनें:
(1) I, III, IV, II
(2) I, IV, III, II
(3) III, I, IV, II
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. राजस्थान में, सांख्यिकीय रूप से कौन सा महीना अधिकांश मैदानी और मरुस्थलीय क्षेत्रों में उच्चतम औसत तापमान दर्ज करता है?
(1) अप्रैल
(2) मई
(3) जून
(4) जुलाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. राजस्थान के थार मरुस्थल क्षेत्र में देखे जाने वाले अत्यधिक उच्च दैनिक तापांतर का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) बादलों की कमी, कम आर्द्रता और शुष्क रेतीली मृदा की कम विशिष्ट ऊष्मा।
(2) दैनिक चक्र के दौरान उत्तरी क्षेत्रों से ठंडी पवनों का निरंतर प्रवाह।
(3) चरम ग्रीष्मकाल के दौरान घनी मरुस्थलीय वनस्पति से वाष्पोत्सर्जन की उच्च दर।
(4) दिन के अंत में स्थानीय गरज के साथ तूफान और धूल भरी आंधियों की बार-बार होने वाली घटनाएं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. 50 सेमी की समवर्षा रेखा, जो मोटे तौर पर राजस्थान को दो अलग-अलग जलवायु भागों में विभाजित करती है, किस प्रमुख भौगोलिक विशेषता के लगभग समानांतर चलती है?
(1) लूणी नदी बेसिन
(2) इंदिरा गाँधी नहर
(3) पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा
(4) अरावली पर्वत श्रेणी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची I (वर्षा पर आधारित जलवायु क्षेत्र) को सूची II (औसत वार्षिक वर्षा) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (वर्षा पर आधारित जलवायु क्षेत्र)
A. शुष्क
B. अर्द्ध-शुष्क
C. उप-आर्द्र
D. आर्द्र
सूची II: (औसत वार्षिक वर्षा)
i. 40 से 60 सेमी
ii. 20 से 40 सेमी
iii. 60 से 80 सेमी
iv. 0 से 20 सेमी
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. कौन सा कथन राजस्थान की भौगोलिक स्थिति का उसकी जलवायु पर प्रभाव का सटीक वर्णन करता है?
(1) बड़े महासागरीय जल निकायों से दूर स्थित होने के कारण, यहाँ एक मानक समुद्री जलवायु का अनुभव होता है।
(2) राज्य पूरी तरह से भूमध्यरेखीय निम्न-दाब पेटी के भीतर आता है, जिससे वर्ष भर निरंतर वर्षा होती है।
(3) समुद्र से दूर होने के कारण तापमान की चरम सीमाओं वाली महाद्वीपीय जलवायु उत्पन्न होती है।
(4) हिमालय के साथ इसकी निकटता ग्रीष्मकाल के दौरान उष्णकटिबंधीय लू और धूल भरी आँधियों को पूरी तरह से रोक देती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. राजस्थान में उगाई जाने वाली निम्नलिखित फसलों पर विचार कीजिए:
I. गेहूँ
II. चना
III. सरसों
उपरोक्त में से कौन सी फसल/फसलें 'मावठ' की शीतकालीन वर्षा से महत्वपूर्ण रूप से लाभान्वित होती हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

31. पश्चिमी राजस्थान की जलवायु उच्च स्तर की महाद्वीपीयता प्रदर्शित करती है। निम्नलिखित में से कौन सा इस परिघटना को व्यवहार में सबसे अच्छा दर्शाता है?
(1) वार्षिक और दैनिक तापांतर का अत्यधिक उच्च होना।
(2) पूरे वर्ष बहुत उच्च सापेक्ष आर्द्रता का होना।
(3) उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की बार-बार होने वाली घटनाएं।
(4) सभी महीनों में वर्षा का एकसमान वितरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. राजस्थान की जलवायु विशेषताओं के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों को विभाजित करने वाली समवर्षा रेखा - 25 सेमी
(2) निवर्तनी मानसून की दिशा - दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
(3) राजस्थान का मुख्य जलवायु विभाजक - अरावली श्रेणी
(4) बंगाल की खाड़ी की शाखा की नमी का स्रोत - हिंद महासागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस स्थान पर सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा होती है?
(1) बाँसवाड़ा
(2) माउंट आबू
(3) झालावाड़
(4) प्रतापगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I (धूल भरी आँधी के औसत दिन) को सूची II (संबंधित जिला) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (धूल भरी आँधी के औसत दिन)
A. लगभग 27 दिन
B. लगभग 18 दिन
C. लगभग 3 से 5 दिन
D. 3 दिन से कम
सूची II: (संबंधित जिला)
i. झालावाड़
ii. बीकानेर
iii. श्रीगंगानगर
iv. अजमेर
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. कोपेन के 'BWhw' (शुष्क गर्म मरुस्थल) जलवायु क्षेत्र में शामिल जिलों के संबंध में भिन्न की पहचान करें।
(1) जैसलमेर
(2) बीकानेर
(3) डूंगरपुर
(4) उत्तर-पश्चिमी बाड़मेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी शाखाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अरब सागर की शाखा बंगाल की खाड़ी की शाखा की तुलना में पूर्वी मैदानों में अधिक भारी और व्यापक वर्षा लाती है।
II. बंगाल की खाड़ी की शाखा राजस्थान में पूर्व और दक्षिण-पूर्व दिशाओं से प्रवेश करती है।
III. बंगाल की खाड़ी की शाखा राजस्थान पहुँचने से पहले गंगा के मैदानों में अपनी अधिकांश नमी खो देती है।
IV. अरब सागर की शाखा माउंट आबू क्षेत्र के लिए वर्षा का प्रमुख हिस्सा प्रदान करती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) I और IV
(3) II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राजस्थान में मानसून के निवर्तन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) निवर्तन की प्रक्रिया आमतौर पर सितंबर के अंत में राज्य के पश्चिमी हिस्सों से शुरु होती है।
(2) राजस्थान भारत के उन पहले राज्यों में से है जहाँ से दक्षिण-पश्चिम मानसून लौटना शुरु करता है।
(3) मानसून का निवर्तन साफ आसमान और दिन के तापमान में भारी गिरावट द्वारा चिह्नित होता है।
(4) अक्टूबर के मध्य तक, मानसून राज्य के सभी जिलों से पूरी तरह से हट जाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. राजस्थान की जलवायु के संदर्भ में, 'पुरवैया' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) पश्चिमी थार मरुस्थल से पूर्वी मैदानों की ओर चलने वाली गर्म, धूल भरी हवाएँ।
(2) बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा से जुड़ी नमी युक्त पवनें।
(3) चरम शीतकाल के दौरान उत्तरी हिमालय से राज्य में प्रवेश करने वाली ठंडी पवनें।
(4) विशेष रूप से गर्म मानसून-पूर्व मौसम के दौरान होने वाले स्थानीय संवहनीय तूफान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. राजस्थान में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हाल के मौसम संबंधी आँकड़े वर्षा के स्वरुप में स्पष्ट बदलाव दिखाते हैं, जहाँ पारंपरिक रूप से शुष्क पश्चिमी जिलों जैसे बाड़मेर में कभी-कभी अत्यधिक बाढ़ की घटनाएं

B. वर्षा ऋतु
C. शरद ऋतु (निवर्तनी मानसून)
D. शिशिर/हेमंत ऋतु (शीत ऋतु)
सूची II: (मानक महीने)
i. जून के मध्य से सितंबर
ii. अक्टूबर से नवंबर
iii. दिसंबर से फरवरी
iv. मार्च से जून के मध्य
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. राजस्थान की कौन सी प्रमुख स्थलाकृतिक विशेषता प्रतिवर्ष वर्षा वाले दिनों की सर्वाधिक संख्या दर्ज करती है?
(1) भोराट का पठार
(2) हाड़ौती का पठार
(3) छप्पन बेसिन
(4) माउंट आबू
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. राजस्थान में 'लू' और 'आँधी' की तुलना करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लू की विशेषता उच्च गति वाली नमी युक्त पवनें हैं, जबकि आँधी पूरी तरह से शुष्क हवा है।
II. आँधी आमतौर पर अपनी संवहनीय प्रकृति के कारण स्थानीय तापमान में अस्थायी कमी लाती है।
III. लू गंभीर निर्जलीकरण और लू-लगना (हीटस्ट्रोक) का कारण बनती है, जिसकी तीव्रता मई और जून के दौरान चरम पर होती है।
IV. आँधी की आवृत्ति झालावाड़ और कोटा जैसे दक्षिण-पूर्वी जिलों में सबसे अधिक होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) III और IV
(3) I और IV
(4) II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. राजस्थान के आम तौर पर स्वीकृत "आर्द्र" जलवायु क्षेत्र में शामिल जिलों के संबंध में निम्नलिखित में से भिन्न का चयन करें।
(1) भरतपुर
(2) धौलपुर
(3) जैसलमेर
(4) सवाई माधोपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पूरे वर्ष राजस्थान में सापेक्ष आर्द्रता के स्वरुप का सही वर्णन करता है?
(1) यह जुलाई और अगस्त के चरम मानसूनी महीनों के दौरान अपने अधिकतम स्तर पर पहुँच जाती है।
(2) कई अंतर्देशीय झीलों की उपस्थिति के कारण सापेक्ष आर्द्रता सभी मौसमों में लगातार उच्च बनी रहती है।
(3) यह पश्चिमी मरुस्थल में शीत ऋतु के दौरान सर्वाधिक बनी रहती है।
(4) यह अक्टूबर में मानसून के निवर्तन के दौरान सबसे कम होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. सांख्यिकीय रुप से, राजस्थान राज्य भर में वर्ष का सबसे ठंडा महीना कौन सा है?
(1) नवंबर
(2) दिसंबर
(3) फरवरी
(4) जनवरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के ऊपर बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा के आगे बढ़ने की सामान्य दिशा का सही वर्णन करता है?
(1) उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व
(2) दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम
(3) दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
(4) उत्तर से दक्षिण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. रेतीले थार मरुस्थल की उच्च सतही परावर्तकता (Albedo) इसकी स्थानीय जलवायु को कैसे प्रभावित करती है?
(1) यह सौर विकिरण के अत्यधिक अवशोषण का कारण बनती है, जिससे मरुस्थल में किसी भी प्रकार की रात्रिकालीन शीतलन नहीं हो पाती है।
(2) यह तीव्र ऊष्मा और प्रकाश परावर्तन के माध्यम से निचले वायुमंडल को आयनित करके मानसूनी बादलों को सक्रिय रूप से आकर्षित करती है।
(3) सौर विकिरण के परावर्तन से रात में तेजी से ठंडक होती है, जिससे दैनिक तापांतर बढ़ जाता है।
(4) यह सतह के पास ग्रीनहाउस गैसों को रोक लेती है, जिससे स्थानीय स्तर पर तापीय प्रभाव पड़ता है जो पूरे वर्ष बना रहता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. राजस्थान में लागू मानक परिभाषाओं के अनुसार, ऐसी स्थिति जहाँ किसी क्षेत्र में वास्तविक वर्षा उसके दीर्घकालिक औसत से काफी कम हो जाती है, जिससे सतही जल की कमी हो जाती है, क्या कहलाती है?
(1) कृषि सूखा
(2) जलविज्ञानी सूखा
(3) सामाजिक-आर्थिक सूखा
(4) मौसम संबंधी सूखा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

47. निम्नलिखित में से कौन सा जिला राजस्थान में कोपेन के 'Cwg' (शुष्क शीतकाल के साथ मानसूनी प्रकार) जलवायु वर्गीकरण के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) बीकानेर
(2) भरतपुर
(3) धौलपुर
(4) सवाई माधोपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान में सूखा प्रवण क्षेत्रों का भौगोलिक विस्तार राज्य के एक बड़े हिस्से, विशेष रूप से पश्चिम को कवर करता है।
कारण (R): मानसून की अत्यधिक अनियमित प्रकृति, उच्च तापमान और बारहमासी नदियों की कमी के साथ मिलकर लगातार जल की कमी पैदा करती है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. पश्चिमी राजस्थान के भीतर शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों के बीच सटीक सीमा को परिभाषित करने में निम्नलिखित में से कौन सा कारक सबसे महत्वपूर्ण है?
(1) 10 सेमी समवर्षा रेखा
(2) 25 सेमी समवर्षा रेखा
(3) लूणी नदी का मार्ग
(4) शुष्क पर्णपाती से क्षुपों की ओर वनस्पति संक्रमण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. राजस्थान पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन में देरी और शीघ्र निवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
II. सभी शुष्क पश्चिमी जिलों में कुल वार्षिक वर्षा में 50% की एकसमान वृद्धि हुई है।
III. ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान लू अधिक बार और गंभीर हो गई है।
IV. बेमौसम वर्षा और ओलावृष्टि में वृद्धि हुई है, जिससे रबी फसलों के लिए संकट पैदा हो गया है।
V. तीव्र, कम अवधि की वर्षा की घटनाओं की संख्या में भारी कमी आई है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

51. पश्चिमी राजस्थान के कुछ हिस्सों में, कुछ वर्षों में वास्तविक वर्षा कभी-कभी मध्यम हो सकती है, फिर भी क्षेत्र में गंभीर शुष्क स्थितियाँ बनी रहती हैं। कौन सी जलवायु संबंधी अवधारणा इस विसंगति को सबसे अच्छी तरह समझाती है?
(1) घने वन आवरण के कारण सतही अपवाह का पूर्ण अभाव।
(2) रातों के दौरान लगातार पाला जमना जो नमी के लाभ को उलट देता है।
(3) उच्च संभावित वाष्पोत्सर्जन जो वास्तविक वर्षा से काफी अधिक है।
(4) हिमालय का वृष्टि-छाया प्रभाव जो नमी प्रतिधारण को रोकता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. राजस्थान में थॉर्नथवेट के जलवायु क्षेत्रों और उनकी संबंधित विशेषताओं के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) CA'w - अधिकतम वर्षा और सवाना-प्रकार की वनस्पति द्वारा विशेषीकृत।
(2) DA'w - मध्य और दक्षिणी भागों में प्रचलित अर्द्ध-शुष्क स्थितियों द्वारा विशेषीकृत।
(3) EA'd - अत्यधिक शुष्क स्थितियों और सूखा-प्रतिरोधी कांटेदार झाड़ियों द्वारा विशेषीकृत।
(4) DB'w - खरीफ फसलों के लिए उपयुक्त अत्यधिक उच्च शीतकालीन वर्षा द्वारा विशेषीकृत।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. राजस्थान में शीतकालीन परिघटनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जनवरी में तीव्र शीत लहरों के दौरान राजस्थान के अरावली क्षेत्र और उत्तरी जिलों में कभी-कभी पाला जमना देखा जाता है।
कथन II: हिमांक बिंदु से नीचे गिरने वाला रात्रिकालीन तापमान वायुमंडलीय नमी को सतहों पर उर्ध्वपातित कर देता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. राजस्थान की जलवायु के संदर्भ में सूची I (पारंपरिक ऋतु) को सूची II (मानक महीने) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (पारंपरिक ऋतु)
A. ग्रीष्म ऋतु

7. उत्तरी और पश्चिमी राजस्थान में होने वाली शीतकालीन वर्षा, जिसे स्थानीय स्तर पर 'मावठ' कहा जाता है, मुख्य रुप से निम्नलिखित में से किस वायुमंडलीय परिघटना के कारण होती है?
(1) उत्तर-पूर्वी मानसून प्रणाली
(2) अरब सागर में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात
(3) दक्षिण-पश्चिम मानसून का निवर्तन चरण
(4) भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थल में बहुत कम वर्षा करती है।
कारण (R): अरावली पर्वतमाला इन नमी युक्त पवनों की दिशा के लगभग समानांतर स्थित है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. मई और जून के ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान राजस्थान में चलने वाली अत्यधिक गर्म और शुष्क पश्चिमी पवनों का वर्णन करने के लिए किस स्थानीय शब्द का उपयोग किया जाता है?
(1) पुरवैया
(2) आँधी
(3) लू
(4) डोगड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. राजस्थान के जलवायु वर्गीकरण और संबंधित जिलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शुष्क जलवायु क्षेत्र (0-20 सेमी वर्षा) में मुख्य रूप से जैसलमेर, उत्तर-पश्चिमी बाड़मेर और पश्चिमी बीकानेर शामिल हैं।
II. अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र (20-40 सेमी वर्षा) में जालौर, पाली, नागौर और सीकर जैसे जिले शामिल हैं।
III. उप-आर्द्र क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 40 से 60 सेमी के बीच होती है।
IV. आर्द्र क्षेत्र में भरतपुर, धौलपुर और सवाई माधोपुर जैसे जिले शामिल हैं।
V. अति-आर्द्र क्षेत्र में मुख्य रूप से राज्य भर में औसत वार्षिक वर्षा 150 सेमी से अधिक होती है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. यदि अरावली पर्वतमाला काल्पनिक रुप से दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व के बजाय पूर्व से पश्चिम की ओर संरेखित होती, तो राजस्थान की जलवायु पर इसका सबसे संभावित प्रभाव क्या होता?
(1) पूर्वी राजस्थान एक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र बन जाता।
(2) पूरे राज्य में सर्दियों के तापमान में काफी वृद्धि हो जाती।
(3) उत्तर-पूर्वी मानसून वर्षा का प्रमुख स्रोत बन जाता।
(4) पश्चिमी राजस्थान में अरब सागर की शाखा से भारी वर्षा होती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान की समग्र जलवायु को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक नहीं है?
(1) समुद्र से निकटता और दूरी
(2) बंगाल की खाड़ी में ठंडी समुद्री धाराओं का प्रभाव
(3) ग्लोब पर विशिष्ट अक्षांशीय स्थिति
(4) अरावली श्रेणी का अभिविन्यास और ऊँचाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. राजस्थान में वायुमंडलीय अवक्षेपण या पवन प्रणालियों के साथ उनके संबंध के आधार पर निम्नलिखित स्थानीय शब्दों में से भिन्न का चयन करें।
(1) लू
(2) आँधी
(3) मावठ
(4) झोला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I (जलवायु विशेषता) को सूची II (संबंधित जिला/स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (जलवायु विशेषता)
A. सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा वाला जिला
B. उच्चतम औसत वार्षिक तापमान वाला जिला
C. न्यूनतम शीतकालीन तापमान वाला स्थान
D. उच्चतम ग्रीष्मकालीन तापमान वाला स्थान
सूची II: (संबंधित जिला/स्थान)
i. चूरू
ii. फलोदी
iii. माउंट आबू
iv. झालावाड़
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

63. राजस्थान की ओर बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा की गति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) पूर्वी राजस्थान से पश्चिमी मरुस्थल की ओर बढ़ने पर इसमें नमी की मात्रा बढ़ जाती है।
(2) यह मुख्य रूप से पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी सीमाओं से राज्य में प्रवेश करती है।
(3) यह हाड़ौती के पठार और पूर्वी मैदानों को पर्याप्त वर्षा प्रदान करती है।
(4) यह अरावली श्रेणी की पूर्वी ढालों का सामना करती है, जिसके परिणामस्वरूप पर्वतीय वर्षा होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I (समवर्षा रेखा) को सूची II (राजस्थान में जलवायु सीमा) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (समवर्षा रेखा)
A. 10 सेमी समवर्षा रेखा
B. 25 सेमी समवर्षा रेखा
C. 40 सेमी समवर्षा रेखा
D. 50 सेमी समवर्षा रेखा

सूची II: (जलवायु सीमा/विशेषता)
i. अरावली के साथ राज्य को मोटे तौर पर दो समान हिस्सों में विभाजित करती है।
ii. आम तौर पर अर्द्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र की पश्चिमी सीमा को चिह्नित करती है।
iii. शुष्क मरुस्थल को विशुद्ध रूप से शुष्क और अर्द्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्रों में विभाजित करती है।
iv. जैसलमेर सीमा क्षेत्र के सुदूर पश्चिमी भागों का प्रतिनिधित्व करती है।

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. राजस्थान की जलवायु पर पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव निम्नलिखित सभी तरीकों से देखा जाता है, सिवाय:

(1) वर्ष के ठंडे सर्दियों के महीनों के दौरान हल्की से मध्यम वर्षा उत्पन्न करना।
(2) जून के महीने में थार मरुस्थल पर तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न करना।
(3) गेहूँ और सरसों जैसी शीतकालीन (रबी) फसलों की स्वस्थ वृद्धि में सहायता करना।
(4) राज्य के उत्तरी भागों से गुजरने के बाद शीत लहर की स्थिति पैदा करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राजस्थान में तापमान गतिकी के संबंध में निम्नलिखित परिघटनाओं पर विचार कीजिए:

I. सर्दियों की साफ और शांत रातों के दौरान पश्चिमी राजस्थान में 'तापमान व्युत्क्रमण' सामान्य है।
II. अत्यधिक महाद्वीपीयता ग्रीष्म और शीतकालीन तापमान के बीच किसी भी बदलाव को रोकती है।
III. राज्य में उच्चतम तापमान घने वनों के कारण दक्षिणी आदिवासी बेल्ट में दर्ज किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) केवल I
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. राजस्थान के ऊपर मानसूनी गर्त के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: थार मरुस्थल के ऊपर उत्तर की ओर 'अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र' (ITCZ) का खिसकना एक निम्न-दाब गर्त बनाता है, जो मानसूनी पवनों को खींचता है।

कथन II: राजस्थान के ऊपर मानसूनी गर्त की शक्ति और अवधि सीधे मौसम के दौरान प्राप्त वर्षा की तीव्रता को निर्धारित करती है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

कथन (A): जालौर और सिरोही जिलों के आसपास के मैदानी इलाकों की तुलना में माउंट आबू में गर्मियों का तापमान बहुत कम होता है।

कारण (R): मानक ताप ह्रास दर पर ऊँचाई में वृद्धि के साथ तापमान घटता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. दीर्घकालिक जलवायु आँकड़ों के आधार पर, पश्चिमी राजस्थान के शुष्क जिलों में ऐतिहासिक रूप से सूखे की घटना किस अवधि के दौरान सबसे अधिक होती है?

(1) यह लगभग निरंतर होता है, जिसमें 10 में से 9 वर्ष सूखे की स्थिति दर्ज की जाती है।
(2) यह अत्यंत दुर्लभ है, जो 50 वर्षों में एक बार होता है।
(3) यह औसतन हर 2 से 3 वर्ष में एक बार होता है।
(4) यह पूरी तरह से 10 वर्ष के चक्र पैटर्न में होता है।

NODIA

वर्षा और सूखे की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। अतः यह कहना कि इन घटनाओं की आवृत्ति कम हुई है, वैज्ञानिक तथ्यों और वर्तमान स्थिति के विपरीत है।

40. (1) I, III, IV, II
राजस्थान में वर्षा का वितरण पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर व्यवस्थित रूप से बढ़ता जाता है। सबसे कम वर्षा जैसलमेर जिले में होती है, जिसके बाद जोधपुर का स्थान आता है। मध्य राजस्थान में स्थित जयपुर में वर्षा की मात्रा इनसे अधिक रहती है। दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित झालावाड़ जिला राज्य में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला जिला है। अतः वर्षा के बढ़ते क्रम के आधार पर सही भौगोलिक क्रम जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर और झालावाड़ निर्धारित किया गया है।

41. (2) मई
राजस्थान में मई का महीना आमतौर पर सर्वाधिक औसत तापमान वाला समय होता है। इस दौरान सूर्य की किरणें कर्क रेखा के निकट होती हैं और पूरा मरुस्थलीय क्षेत्र अत्यधिक ताप ग्रहण करता है। हालांकि जून में भी बहुत गर्मी होती है, लेकिन महीने के दूसरे पखवाड़े में मानसूनी हवाओं के आगमन और धूल भरी आँधियों के कारण तापमान में कुछ उतार-चढ़ाव आने लगता है। मई में शुष्क हवाओं और भीषण लू का प्रभाव अपने चरम स्तर पर होता है।

42. (1) बादलों की कमी, कम आर्द्रता और शुष्क रेतीली मृदा की कम विशिष्ट ऊष्मा।
थार मरुस्थल में अत्यधिक दैनिक तापांतर का मुख्य कारण रेतीली मृदा के विशिष्ट भौतिक गुण हैं। रेत की विशिष्ट ऊष्मा कम होने के कारण यह दिन में सूर्य की गर्मी से बहुत तेजी से गर्म हो जाती है। रात के समय, साफ आसमान और शुष्क वायु के कारण पार्थिव विकिरण की दर बहुत ऊँची होती है, जिससे रेत तेजी से ठंडी हो जाती है। बादलों की अनुपस्थिति इस तापीय प्रक्रिया में कोई बाधा नहीं आने देती, जिससे दिन और रात के तापमान में भारी अंतर रहता है।

43. (4) अरावली पर्वत श्रेणी
50 सेमी की समवर्षा रेखा राजस्थान के जलवायु मानचित्र पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण विभाजक है। यह रेखा अरावली पर्वत श्रृंखला के लगभग समानांतर चलती है और राज्य को दो मुख्य जलवायु भागों में विभाजित करती है। इसके पश्चिम में वर्षा 50 सेमी से कम होती है, जो शुष्क और अर्द्ध-शुष्क जलवायु का प्रतिनिधित्व करती है। इसके पूर्व में वर्षा 50 सेमी से अधिक होती है, जहाँ उप-आर्द्र और आर्द्र जलवायु दशाएँ पाई जाती हैं। यह रेखा कृषि स्वरुप को भी प्रभावित करती है।

44. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान के जलवायु क्षेत्रों को वार्षिक वर्षा की कुल मात्रा के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। शुष्क क्षेत्र में 20 सेमी से कम वर्षा होती है। अर्द्ध-शुष्क पट्टी में वर्षा का औसत 20 से 40 सेमी के बीच रहता है। अरावली के निकटवर्ती उप-आर्द्र क्षेत्रों में 40 से 60 सेमी वर्षा दर्ज की जाती है। पूर्वी मैदानी भागों में स्थित आर्द्र क्षेत्र में 60 से 80 सेमी तक वर्षा होती है। यह वर्गीकरण राज्य की कृषि प्रणालियों और प्राकृतिक वनस्पति को सीधे प्रभावित करता है।

45. (3) समुद्र से दूर होने के कारण तापमान की चरम सीमाओं वाली महाद्वीपीय जलवायु उत्पन्न होती है।
राजस्थान की जलवायु पर इसकी भौगोलिक स्थिति का सबसे गहरा प्रभाव समुद्र से अत्यधिक दूरी के रूप में दिखाई देता है। समुद्र के समकारी प्रभाव की अनुपस्थिति के कारण यहाँ तापमान की चरम सीमाएँ पाई जाती हैं, जिसे महाद्वीपीय जलवायु कहा जाता है। इसका अर्थ है कि यहाँ गर्मियाँ बहुत अधिक गर्म और सर्दियाँ बहुत अधिक ठंडी होती हैं। साथ ही, वायुमंडल में आर्द्रता की मात्रा भी तटीय क्षेत्रों की तुलना में काफी कम रहती है, जिससे शुष्कता बढ़ जाती है।

46. (4) I, II और III
शीतकाल में होने वाली मावठ वर्षा राजस्थान की रबी फसलों के लिए वरदान के समान मानी जाती है। गेहूँ, चना और सरसों इस समय की मुख्य फसलें हैं जिन्हें बढ़ने और पकने के लिए ठंडी जलवायु और हल्की नमी की आवश्यकता होती है। चूँकि मावठ के दौरान वर्षा धीमी गति से होती है, इसलिए यह मिट्टी में गहराई तक नमी पहुँचाती है। इससे इन फसलों की दाना गुणवत्ता में सुधार होता है और उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है।

47. (1) बीकानेर
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार सी.डब्ल्यू.जी. श्रेणी मुख्य रूप से राजस्थान के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी हिस्सों को कवर करती है, जिसमें भरतपुर, धौलपुर और सवाई माधोपुर जैसे जिले शामिल हैं। बीकानेर जिला सुदूर उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है और इसकी जलवायु अत्यधिक शुष्क और गर्म है। इसलिए इसे बी.डब्ल्यू.एच.डब्ल्यू. श्रेणियों के अंतर्गत रखा जाता है। सी.डब्ल्यू.जी. क्षेत्र की विशेषता मध्यम वर्षा और शुष्क सर्दियाँ होती हैं, जो बीकानेर की मरुस्थलीय जलवायु से मेल नहीं खातीं।

48. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान का एक विशाल भूभाग, विशेष रुप से पश्चिमी क्षेत्र, गंभीर जल संकट और सूखे का सामना करता है। इसका मुख्य कारण दक्षिण-पश्चिम मानसून की भारी अनिश्चितता और वर्षा की अत्यंत कम मात्रा है। उच्च तापमान के कारण जलस्रोतों का तेजी से वाष्पीकरण होता है और बारहमासी नदियों का अभाव इस संकट को और गहरा कर देता है। मानसून की विफलता सीधे तौर पर कृषि और पेयजल आपूर्ति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है, जिससे सूखा एक स्थायी समस्या बन गई है।

49. (2) 25 सेमी समवर्षा रेखा
पश्चिमी राजस्थान के भीतर शुष्क मरुस्थल और अर्द्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र के बीच की विभाजक रेखा 25 सेमी की समवर्षा रेखा है। इस रेखा के पश्चिम में जैसलमेर और पश्चिमी बीकानेर जैसे जिले स्थित हैं जहाँ पूर्णतः शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। इसके पूर्व में अर्द्ध-शुष्क पट्टी शुरु होती है जहाँ वर्षा 25 से 50 सेमी के बीच रहती है और प्राकृतिक वनस्पति में कुछ सुधार

Click Here to Buy book on Amazon

(3) I, II और III
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. सामान्य जलवायु वर्गीकरण मुख्य रूप से वर्षा और तापमान के स्वरूप के आधार पर राजस्थान राज्य को कितने अलग-अलग जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करता है?
(1) तीन
(2) चार
(3) पाँच
(4) सात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित में से कौन सा पश्चिमी राजस्थान में 'लू' का परिणाम नहीं है?
(1) सतही मृदा की नमी का तेजी से सूखना।
(2) आबादी के बीच लू-लगने की बढ़ती घटनाएं।
(3) असुरक्षित ग्रीष्मकालीन वनस्पति का मुरझाना।
(4) भीषण गरज के साथ तूफान और भारी ओलावृष्टि की अचानक शुरुआत।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राजस्थान में 'मावठ' (शीतकालीन वर्षा) के स्थानिक वितरण के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसकी तीव्रता उत्तर-पश्चिम से दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर घटती है।
(2) इसकी तीव्रता राज्य के दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम भागों की ओर सख्ती से बढ़ती है।
(3) यह वर्तमान में राज्य के सभी पचास जिलों में समान रूप से वितरित है।
(4) यह विशेष रुप से पड़ोसी राज्य गुजरात की सीमा से लगे जिलों तक ही सीमित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख जलवायु क्षेत्रों को सामान्यतः पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ते हुए सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. आर्द्र क्षेत्र
II. शुष्क क्षेत्र
III. अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र
IV. उप-आर्द्र क्षेत्र
नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही क्रम चुनें:
(1) II, III, IV, I
(2) II, IV, III, I
(3) III, II, I, IV
(4) I, IV, III, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

है। दिन के समय भी धूप की तीव्रता कम रहती है। दिसंबर और फरवरी में भी ठंड होती है, लेकिन जनवरी में तापमान अपने न्यूनतम वार्षिक स्तर पर पहुँच जाता है।

60. (2) दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम
बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा राजस्थान में दक्षिण-पूर्व और पूर्वी दिशाओं से प्रवेश करती है। जैसे-जैसे ये नमी युक्त पवनें राज्य के भीतर आगे बढ़ती हैं, ये झालावाड़, बारां और कोटा के बाद मैदानी इलाकों से गुजरते हुए उत्तर-पश्चिम की ओर गमन करती हैं। इस यात्रा के दौरान ये पवनें वर्षा करते हुए अपनी नमी खोती जाती हैं, जिसके कारण वर्षा की मात्रा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर धीरे-धीरे कम होती जाती है। यही कारण है कि पश्चिमी जिले शुष्क रह जाते हैं।

61. (3) सौर विकिरण के परावर्तन से रात में तेजी से ठंडक होती है, जिससे दैनिक तापांतर बढ़ जाता है।
थार मरुस्थल की रेतीली सतह की उच्च परावर्तकता इसकी जलवायु को गहराई से प्रभावित करती है। दिन में रेत सूर्य की किरणों को तेजी से परावर्तित करती है, लेकिन साफ आसमान के कारण रात में पृथ्वी से निकलने वाला विकिरण भी बिना किसी रुकावट के अंतरिक्ष में चला जाता है। इसके परिणामस्वरुप रेत बहुत जल्दी ठंडी हो जाती है। यह प्रक्रिया दिन और रात के तापमान के बीच एक विशाल अंतर पैदा करती है, जो मरुस्थलीय क्षेत्रों की सबसे प्रमुख जलवायु पहचान है।

62. (4) मौसम संबंधी सूखा
जब किसी क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के दौरान होने वाली वर्षा अपने दीर्घकालिक औसत से काफी कम हो जाती है, तो उसे मौसम संबंधी सूखा कहा जाता है। यह सूखे का प्राथमिक चरण है जो वर्षा की कमी पर आधारित होता है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहे, तो यह कृषि और जल संसाधनों को प्रभावित करती है, जिससे क्रमशः कृषि सूखा और जलविज्ञानी सूखा उत्पन्न होता है। राजस्थान में वर्षा की अनिश्चितता के कारण मौसम संबंधी सूखा अक्सर देखा जाता है।

63. (1) पूर्वी राजस्थान से पश्चिमी मरुस्थल की ओर बढ़ने पर इसमें नमी की मात्रा बढ़ जाती है।
बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा के संबंध में यह कथन पूर्णतः गलत है। वास्तव में, जैसे-जैसे ये पवनें पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती हैं, ये निरंतर वर्षा करती जाती हैं जिससे इनकी नमी की मात्रा घटती जाती है। जब तक ये पवनें पश्चिमी मरुस्थल तक पहुँचती हैं, इनमें नमी नगण्य रह जाती है। यही कारण है कि पूर्वी राजस्थान में वर्षा अधिक और पश्चिमी राजस्थान में बहुत कम होती है। शेष कथन इस शाखा की प्रवेश दिशा और प्रभाव का सही भौगोलिक वर्णन करते हैं।

64. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में वर्षा की मात्रा के आधार पर जलवायु सीमाओं का निर्धारण किया गया है। 10 सेमी की रेखा सुदूर पश्चिमी सीमा को दर्शाती है। 25 सेमी की रेखा शुष्क मरुस्थल और अर्द्ध-शुष्क पट्टी के बीच की भौगोलिक सीमा है। 40 सेमी की रेखा अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र की पूर्वी सीमा को चिह्नित करती है। 50 सेमी की समवर्षा रेखा अरावली के समानांतर चलते हुए राज्य को दो मुख्य जलवायु खंडों में विभाजित करती है। यह वितरण राज्य की पारिस्थितिकी और कृषि को मौलिक रूप से प्रभावित करता है।

65. (2) जून के महीने में थार मरुस्थल पर तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न करना।
पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव मुख्य रुप से शीत ऋतु के दौरान देखा जाता है, जब ये रबी की फसलों के लिए लाभदायक वर्षा लाते हैं। ये विक्षोभ जून के महीने में सक्रिय नहीं होते और न ही इनका थार मरुस्थल में उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न करने से कोई वैज्ञानिक संबंध है। जून में होने वाली मौसमी गतिविधियाँ मुख्य रुप से स्थानीय ताप और मानसूनी हवाओं के आगमन से संबंधित होती हैं। अतः चक्रवात वाली बात पश्चिमी विक्षोभ के सामान्य व्यवहार और समय के विरुद्ध है।

66. (2) II और III
राजस्थान में महाद्वीपीयता का प्रभाव तापमान में बहुत अधिक मौसमी बदलाव लाता है, न कि उसे कम करता है। यहाँ सर्दियों और गर्मियों के तापमान में भारी अंतर पाया जाता है। साथ ही, राज्य का उच्चतम तापमान चूरू, फलोदी और बीकानेर जैसे उत्तरी-पश्चिमी जिलों में दर्ज किया जाता है, न कि दक्षिणी आदिवासी बेल्ट में। दक्षिणी भाग में अधिक वर्षा और सघन वनस्पति के कारण तापमान अपेक्षाकृत संतुलित रहता है। अतः कथन II और III भौगोलिक तथ्यों के आधार पर पूर्णतः गलत हैं।

67. (4) दोनों कथन सही हैं लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
गर्मियों में थार मरुस्थल पर बनने वाला निम्न-दाब गर्त वास्तव में मानसून को आकर्षित करने के लिए एक इंजन की तरह कार्य करता है। यह प्रक्रिया आई.टी.सी.जेड. के उत्तर की ओर खिसकने से संबंधित है। हालांकि गर्त की शक्ति वर्षा की कुल मात्रा को प्रभावित करती है, लेकिन वर्षा की वास्तविक तीव्रता अन्य कारकों जैसे अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से आने वाली आर्द्रता की आपूर्ति और अरावली की स्थिति पर भी निर्भर करती है। दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सही हैं।

NODIA

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
माउंट आबू की ऊँचाई समुद्र तल से काफी अधिक है, जिसके कारण यहाँ का तापमान आसपास के मैदानी इलाकों जैसे जालौर की तुलना में बहुत कम रहता है। जलवायु विज्ञान के अनुसार, क्षोभमंडल में प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान लगभग 1 डिग्री सेल्सियस कम हो जाता है। इसी ताप ह्रास दर के कारण ऊँचे स्थान मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक ठंडे होते हैं। यही कारण है कि माउंट आबू राजस्थान का सबसे ठंडा और आर्द्र पर्यटन स्थल माना जाता है।

69. (3) यह औसतन हर 2 से 3 वर्ष में एक बार होता है।
पश्चिमी राजस्थान की जलवायु अपनी भारी अनिश्चितता के लिए जानी जाती है। सांख्यिकीय आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि इस क्षेत्र में वर्षा की कमी के कारण सूखे की स्थिति बहुत

ले जाती हैं। इनकी तीव्रता के कारण मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वायुमंडल में आर्द्रता का स्तर न्यूनतम हो जाता है। यह राज्य की एक विशिष्ट विनाशकारी मौसमी विशेषता मानी जाती है।

10. (1) I, II, III और IV
राजस्थान को वर्षा की कुल मात्रा और जलवायु के आधार पर विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। शुष्क क्षेत्र में जैसलमेर और पश्चिमी बीकानेर आते हैं जहाँ वर्षा 20 सेमी से कम होती है। अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र में वर्षा 20 से 40 सेमी के बीच रहती है। उप-आर्द्र और आर्द्र क्षेत्रों में क्रमशः वर्षा की मात्रा बढ़ती जाती है। अति-आर्द्र क्षेत्र मुख्य रुप से झालावाड़ और बाँसवाड़ा में पाया जाता है जहाँ वर्षा का औसत 80 सेमी से अधिक रहता है।

11. (4) पश्चिमी राजस्थान में अरब सागर की शाखा से भारी वर्षा होती।
यदि अरावली पर्वतमाला की स्थिति वर्तमान के स्थान पर पूर्व से पश्चिम की ओर होती, तो यह अरब सागर से आने वाली नमी युक्त मानसूनी पवनों के लिए एक शक्तिशाली अवरोध का कार्य करती। ऐसी स्थिति में ये पवनें पर्वत श्रृंखला से टकराकर ऊपर उठने को विवश होतीं और संघनन के कारण पश्चिमी राजस्थान के वर्तमान शुष्क क्षेत्रों में भारी वर्षा करतीं। वर्तमान में अरावली इन पवनों के समानांतर होने के कारण उन्हें रोकने और वर्षा करवाने में असमर्थ रहती है।

12. (2) बंगाल की खाड़ी में ठंडी समुद्री धाराओं का प्रभाव
राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में इसकी अक्षांशीय स्थिति, समुद्र से दूरी और अरावली पर्वतमाला का विस्तार शामिल है। समुद्र से अत्यधिक दूर होने के कारण यहाँ महाद्वीपीय जलवायु पाई जाती है। अरावली पर्वतमाला वर्षा के वितरण को नियंत्रित करती है। बंगाल की खाड़ी में किसी भी प्रकार की ठंडी समुद्री धाराओं का राजस्थान की जलवायु पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि यह क्षेत्र समुद्री धाराओं के प्रत्यक्ष संपर्क से हजारों किलोमीटर दूर स्थित है।

13. (3) मावठ
लू, आँधी और झोला राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु के दौरान चलने वाली गर्म और शुष्क पवन प्रणालियाँ हैं, जो स्थानीय स्तर पर तापमान में तीव्र वृद्धि और धूल भरी स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं। इसके विपरीत, मावठ सर्दियों में होने वाली विशिष्ट वर्षा है जो भूमध्यसागरीय पश्चिमी विक्षोभों के कारण होती है। इस प्रकार मावठ अन्य तीनों से भिन्न है क्योंकि यह शीतकाल की एक आर्द्र परिघटना है जो रबी की फसलों के लिए अत्यधिक लाभदायक और आवश्यक मानी जाती है।

14. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान में वर्षा और तापमान का वितरण बहुत विविधतापूर्ण है। झालावाड़ जिला राज्य में सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करने के लिए जाना जाता है। चूरू जिले में औसत वार्षिक तापमान उच्चतम रहता है, जबकि माउंट आबू अपनी अधिक ऊँचाई के कारण सर्दियों में न्यूनतम तापमान वाला स्थान है। फलोदी अपनी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ग्रीष्म ऋतु में उच्चतम तापमान दर्ज करने के लिए प्रसिद्ध है। ये सभी स्थान राज्य की जलवायु के चरम स्वरुप और विविधता को दर्शाते हैं।

15. (1) श्रीगंगानगर
राजस्थान के उत्तरी जिलों में ग्रीष्म ऋतु के दौरान धूल भरी आँधियों की आवृत्ति सर्वाधिक दर्ज की जाती है। सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, श्रीगंगानगर जिले में वर्ष भर में औसतन 27 दिनों तक धूल भरी आँधियाँ चलती हैं, जो संपूर्ण राज्य में सबसे अधिक है। जैसे-जैसे हम उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, इन आँधियों की संख्या और तीव्रता कम होती जाती है। जैसलमेर और बीकानेर में भी आँधियाँ चलती हैं, परंतु उनकी वार्षिक आवृत्ति श्रीगंगानगर की तुलना में कम है।

16. (2) केवल II
राजस्थान में मानसूनी वर्षा की मुख्य अवधि जून के मध्य से सितंबर तक होती है, जिसे वर्षा ऋतु कहा जाता है। मानसून के निवर्तन या लौटने की ऋतु अक्टूबर और नवंबर के महीनों में प्रभावी होती है। इस दौरान मानसून पीछे हटता है और मौसम धीरे-धीरे शुष्क होने लगता है। अतः जून से सितंबर की अवधि को मानसून के निवर्तन की ऋतु कहना पूर्णतः गलत है। शीत ऋतु दिसंबर से फरवरी तक प्रभावी रहती है और मार्च से ग्रीष्मकाल प्रारंभ होता है।

17. (2) उच्च वाष्पोत्सर्जन के साथ अनियमित, अत्यधिक परिवर्तनशील और कम वर्षा
पश्चिमी राजस्थान में बार-बार सूखे की स्थिति उत्पन्न होने का प्राथमिक भौगोलिक कारण वर्षा की अत्यंत कमी और उसकी भारी अनिश्चितता है। इस क्षेत्र में वर्षा न केवल कम होती है, बल्कि इसका वितरण भी बहुत अनियमित रहता है। उच्च तापमान के कारण यहाँ संभावित वाष्पोत्सर्जन की दर वास्तविक वर्षा से कहीं अधिक होती है, जिससे भूमि और वायुमंडल में नमी की निरंतर कमी बनी रहती है। इन संयुक्त कारकों के कारण यह क्षेत्र सदैव सूखा प्रवण रहता है।

18. (1) DB'w - अर्द्ध-शुष्क मिश्रित जलवायु
थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों को विशिष्ट कूटों में विभाजित किया गया है। यहाँ डी.बी'.डब्ल्यू. का तात्पर्य अर्द्ध-शुष्क मिश्रित जलवायु से है, जो मुख्य रुप से राज्य के उत्तरी भागों में पाई जाती है। ई.ए.डी. शुष्क मरुस्थलीय जलवायु को दर्शाता है, जबकि डी.ए.डब्ल्यू. उष्णकटिबंधीय अर्द्ध-शुष्क जलवायु के लिए उपयोग होता है। सी.ए.डब्ल्यू. का संबंध राज्य के दक्षिण-पूर्वी भागों की उप-आर्द्र जलवायु से है जहाँ वर्षा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रहती है।

19. (3) अत्यधिक उच्च तापमान और अनियमित तीव्र वर्षा की घटनाओं दोनों में वृद्धि
हाल के दशकों में राजस्थान की जलवायु में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं। मौसम संबंधी आंकड़ों के अनुसार, राज्य में तापमान की चरम सीमाओं में वृद्धि हुई है, जिससे ग्रीष्मकाल

Click Here to Buy book on Amazon

अधिक प्रचंड हो गया है। साथ ही, वर्षा के स्वरूप में भी बड़ा बदलाव आया है, जहाँ अल्प अवधि में होने वाली तीव्र वर्षा की घटनाएं बढ़ी हैं। इसके कारण पारंपरिक रुप से शुष्क क्षेत्रों में भी अचानक बाढ़ जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होने लगी हैं, जो वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को दर्शाती हैं।

20. (1) 10-20 सेमी, 20-40 सेमी, 40-60 सेमी, 60-80 सेमी
राजस्थान में वर्षा का वितरण पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर क्रमशः बढ़ता जाता है। सुदूर पश्चिमी जिले जैसलमेर में वार्षिक वर्षा का औसत 10 से 20 सेमी के बीच रहता है। इसके बाद अर्द्ध-शुष्क पट्टी में यह बढ़कर 20 से 40 सेमी हो जाती है। अरावली क्षेत्र के पास उप-आर्द्र बेल्ट में वर्षा 40 से 60 सेमी और पूर्वी मैदानी भागों में 60 से 80 सेमी तक पहुँच जाती है। यह क्रम राज्य की स्थलाकृति और मानसूनी पवनों के प्रभाव के अनुरुप है।

21. (2) कथन I गलत है और कथन II सही है।
उत्तर-पूर्वी मानसूनी पवनें सर्दियों के दौरान स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं, जिसके कारण ये अत्यंत शुष्क होती हैं और इनमें नमी की मात्रा नगण्य होती है। राजस्थान एक स्थलबद्ध राज्य होने के कारण इन पवनों से पर्याप्त वर्षा प्राप्त नहीं कर पाता है, इसलिए कृषि के लिए इनका कोई सीधा लाभ नहीं होता। राज्य में सर्दियों की वर्षा मुख्य रुप से पश्चिमी विक्षोभों के कारण होती है, न कि उत्तर-पूर्वी मानसून की वजह से। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

22. (2) इससे तापमान में अस्थायी गिरावट आती है जिसके साथ उच्च आर्द्रता या हल्की बूंदाबांदी होती है।
पश्चिमी राजस्थान में गर्मियों के दौरान चलने वाली धूल भरी आँधियाँ स्थानीय मौसम में तात्कालिक बदलाव लाती हैं। इन आँधियों के साथ अक्सर संवहनीय धाराएँ सक्रिय होती हैं, जिससे धूल के साथ कभी-कभी हल्की वर्षा या बूंदाबांदी होती है। यह प्रक्रिया वायुमंडल में मौजूद तीव्र ऊष्मा को कम कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय तापमान में कुछ समय के लिए सुखद गिरावट आती है। हालांकि यह प्रभाव अस्थायी होता है और धूल छंटने के पश्चात गर्मी और उमस पुनः बढ़ जाती है।

23. (4) बाँसवाड़ा आमतौर पर आगे बढ़ते दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा प्राप्त करने वाला पहला जिला है।
राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून का प्रवेश आमतौर पर जून के अंतिम सप्ताह में होता है। राज्य के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित होने के कारण बाँसवाड़ा जिला सबसे पहले मानसूनी वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ से मानसून धीरे-धीरे उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता है। बंगाल की खाड़ी की शाखा पूर्वी हिस्से से और अरब सागर की शाखा दक्षिणी हिस्से से प्रवेश करती है। मानसूनी हवाओं की पहुँच पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों तक सबसे अंत में होती है।

24. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
ट्रेवार्था के वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान के जलवायु क्षेत्रों को चार मुख्य भागों में बाँटा गया है। ए.डब्ल्यू. दक्षिणी उष्णकटिबंधीय आर्द्र क्षेत्र को दर्शाता है, जबकि बी.एस.एच. अर्द्ध-शुष्क संक्रमणकालीन पट्टी का प्रतिनिधित्व करता है। बी.डब्ल्यू.एच. सुदूर पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय जिलों के लिए उपयोग किया जाता है। सी.ए.डब्ल्यू. का संबंध राज्य के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों से है जहाँ वर्षा की मात्रा मध्यम से उच्च रहती है। यह वर्गीकरण वर्षा और वनस्पति के स्वरुप पर पूर्णतः आधारित है।

NODIA

25. (3) सर्दियों में होने वाली मावठ वर्षा
सर्दियों के महीनों में होने वाली वर्षा, जिसे स्थानीय रूप से मावठ कहा जाता है, राजस्थान के कृषि परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह वर्षा रबी की प्रमुख फसलों, जैसे गेहूँ, सरसों और जौ की गुणवत्ता और पैदावार को कई गुना बढ़ाने में सहायक होती है। क्योंकि यह वर्षा बूंदों के रूप में धीरे-धीरे होती है और मिट्टी में गहराई तक समा जाती है, इसलिए स्थानीय किसान इसे सौभाग्य का प्रतीक और सुनहरी बूंदें मानते हैं।

26. (3) केवल III
उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के रेतीले मैदानों में सर्दियों के दौरान पाला जमना एक सामान्य और प्रसिद्ध भौगोलिक परिघटना है। जनवरी के दौरान जब हिमालय से ठंडी पवनें आती हैं, तो यहाँ का रात्रिकालीन तापमान अक्सर शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है। कम आर्द्रता और साफ आसमान के कारण विकिरण की दर तीव्र होती है, जिससे भूमि की सतह पर मौजूद नमी बर्फ की पतली परत के रूप में जम जाती है, जिसे पाला कहते हैं। इससे फसलों को क्षति पहुँचती है।

27. (4) प्रतापगढ़
बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर जिले राजस्थान के पश्चिमी शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, जहाँ वर्षा की कमी और उच्च तापमान के कारण बार-बार सूखे की स्थिति बनी रहती है। इसके विपरीत, प्रतापगढ़ जिला राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है जो अति-आर्द्र जलवायु क्षेत्र का हिस्सा है। यहाँ वर्षा का औसत वार्षिक स्तर काफी अधिक है और यह क्षेत्र घने वनों तथा पहाड़ियों से आच्छादित है, जिससे यह जिला सूखा प्रवण श्रेणी में सम्मिलित नहीं है।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तरी राजस्थान में शीतकालीन वर्षा या मावठ, गेहूँ की फसल के लिए संजीवनी का कार्य करती है। यह वर्षा उन पश्चिमी विक्षोभों का परिणाम है जो भूमध्य सागर से उत्पन्न होकर पश्चिमी जेट धाराओं के साथ भारत पहुँचते हैं। ये चक्रवात रास्ते में नमी ग्रहण करते हैं और उत्तर-पश्चिमी भारत में शीतकालीन वर्षा करते हैं। गेहूँ को पकने के लिए कम तापमान और इस हल्की वर्षा की आवश्यकता होती है, जो इन्हीं विक्षोभों से सुगमता से प्राप्त होती है।

29. (3) ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में दोपहर के दौरान चलने वाली गर्म, शुष्क और तीव्र पश्चिमी पवनें।
लू राजस्थान की एक अत्यंत विशिष्ट और भीषण मौसमी परिघटना है जो ग्रीष्म ऋतु में दोपहर के समय प्रभावी होती

है। ये पवनें थार मरुस्थल की तप्त रेत के ऊपर से गुजरने के कारण अत्यधिक गर्म और शुष्क हो जाती हैं। इनकी गति बहुत तीव्र होती है और ये अपने मार्ग में आने वाली नमी को सोख लेती हैं। इनका प्रभाव मानव और पशु स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है और यह पूरे उत्तर-पश्चिम भारत के जनजीवन को प्रभावित करता है।

30. (3) केवल V
पश्चिमी जिलों में वर्षा के दिनों की संख्या न्यूनतम होती है। जैसलमेर और बाड़मेर जैसे क्षेत्रों में साल भर में औसतन 10 से भी कम वर्षा वाले दिन होते हैं। इसके विपरीत, दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे झालावाड़ में वर्षा वाले दिनों की संख्या 40 से अधिक हो सकती है। अतः यह कथन गलत है कि पश्चिमी जिलों में 40 से अधिक वर्षा वाले दिन होते हैं। राज्य की औसत वर्षा 57.51 सेमी है और अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से होती है।

31. (1) वार्षिक और दैनिक तापांतर का अत्यधिक उच्च होना।
पश्चिमी राजस्थान समुद्र से बहुत दूर स्थित है, जिसके कारण यहाँ महाद्वीपीय जलवायु का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। महाद्वीपीयता का मुख्य लक्षण तापमान की चरम सीमाएँ हैं, जहाँ दिन के दौरान रेत तेजी से गर्म होती है और रात में विकिरण द्वारा तेजी से ठंडी हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप दैनिक तापांतर बहुत अधिक हो जाता है। इसी प्रकार ग्रीष्म और शीत ऋतु के तापमान के बीच भी बहुत बड़ा अंतर पाया जाता है, जो इस क्षेत्र की विशेषता है।

32. (2) निवर्तनी मानसून की दिशा - दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
मानसून के लौटने या निवर्तन की दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर होती है। यह प्रक्रिया राजस्थान में सितंबर के अंतिम सप्ताह से शुरू होकर अक्टूबर के मध्य तक पूरी हो जाती है। इसके विपरीत, दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगे बढ़ने की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व होती है। अरावली पर्वतमाला राज्य में मुख्य जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करती है जो वर्षा के वितरण को प्रभावित करती है और शुष्क तथा अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों के बीच एक भौगोलिक सीमा बनाती है।

33. (2) माउंट आबू
राजस्थान में झालावाड़ जिला सर्वाधिक वर्षा वाला जिला है, लेकिन यदि किसी विशिष्ट स्थान की बात की जाए, तो सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है। अपनी अधिक ऊँचाई और पर्वतीय स्थिति के कारण यहाँ प्रतिवर्ष औसतन 150 सेमी से अधिक वर्षा दर्ज होती है। यहाँ वर्षा वाले दिनों की संख्या भी राज्य में सबसे अधिक होती है। यह स्थान राजस्थान के अन्य सभी मैदानी और पठारी क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक आर्द्र और ठंडा रहता है।

34. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
राजस्थान में धूल भरी आँधियों की वार्षिक आवृत्ति उत्तर से दक्षिण की ओर घटती जाती है। श्रीगंगानगर में ये आँधियाँ औसतन 27 दिनों तक चलती हैं, जबकि बीकानेर में यह संख्या लगभग 18 दिन रहती है। मध्य राजस्थान के अजमेर जिले में आँधियों की आवृत्ति कम होकर 3 से 5 दिन रह जाती है। राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित झालावाड़ में आँधियों का प्रभाव न्यूनतम होता है, जहाँ ये सामान्यतः 3 दिन से भी कम दिखाई देती हैं।

35. (3) डूंगरपुर
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार बी.डब्ल्यू.एच.डब्ल्यू. संकेत सुदूर पश्चिमी राजस्थान के अत्यंत शुष्क और गर्म मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर का उत्तर-पश्चिमी हिस्सा शामिल है, जहाँ वर्षा की मात्रा न्यूनतम होती है। इसके विपरीत, डूंगरपुर जिला राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है जो अपनी अधिक वर्षा और आर्द्र जलवायु के कारण ए.डब्ल्यू. श्रेणी के अंतर्गत आता है। अतः डूंगरपुर जिला इस समूह से जलवायु की दृष्टि से पूरी तरह भिन्न है।

36. (1) केवल I
बंगाल की खाड़ी की शाखा राजस्थान में प्रवेश करने वाली प्रमुख मानसूनी पवन प्रणाली है जो पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा लाती है। इसके विपरीत, अरब सागर की शाखा अरावली के समानांतर होने के कारण बिना वर्षा किए उत्तर की ओर निकल जाती है। हालांकि, यह शाखा सिरोही के माउंट आबू क्षेत्र में अच्छी वर्षा प्रदान करती है। पूर्वी मैदानों में बंगाल की खाड़ी की शाखा ही वर्षा का मुख्य स्रोत मानी जाती है, न कि अरब सागर की शाखा।

37. (3) मानसून का निवर्तन साफ आसमान और दिन के तापमान में भारी गिरावट द्वारा चिह्नित होता है।
मानसून के निवर्तन के दौरान आसमान साफ हो जाता है और वायुमंडल की नमी कम होने लगती है, लेकिन इस समय दिन के तापमान में गिरावट के बजाय अक्सर हल्की वृद्धि देखी जाती है। इस परिघटना को 'अक्टूबर की गर्मी' कहा जाता है। रात्रिकालीन तापमान धीरे-धीरे कम होने लगता है, जिससे दैनिक तापांतर बढ़ जाता है। अतः यह कहना गलत है कि इस दौरान दिन के तापमान में भारी गिरावट आती है, क्योंकि वास्तविक ठंड नवंबर के बाद प्रभावी होती है।

38. (2) बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा से जुड़ी नमी युक्त पवनें।
राजस्थान में 'पुरवैया' उन मानसूनी पवनों को कहा जाता है जो बंगाल की खाड़ी की ओर से पूर्व दिशा से राज्य में प्रवेश करती हैं। चूँकि ये पवनें समुद्र के ऊपर से लंबी दूरी तय करके आती हैं, इसलिए इनमें नमी की मात्रा अधिक होती है। ये पवनें राजस्थान के पूर्वी मैदानों और हाड़ौती क्षेत्र में अच्छी वर्षा के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी होती हैं। स्थानीय स्तर पर इन हवाओं का आगमन वर्षा ऋतु के आगमन का स्पष्ट संकेत माना जाता है।

39. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है।
हाल के मौसम संबंधी आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि राजस्थान में वर्षा का पारंपरिक स्वरुप तेजी से बदल रहा है। बाड़मेर जैसे शुष्क जिलों में अब कभी-कभी अत्यधिक तीव्र वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति बन जाती है। इसके साथ ही, जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसम की घटनाओं जैसे अत्यधिक गर्मी, बेमौसम

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. राजस्थान के सामान्य जलवायु क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. शुष्क जलवायु क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 20% कवर करता है।
II. अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र की विशेषता स्टेपी-प्रकार की वनस्पति और कांटेदार झाड़ियाँ हैं।
III. उप-आर्द्र क्षेत्र काफी हद तक अरावली अक्ष के साथ केंद्रित है।
IV. आर्द्र क्षेत्र में पर्णपाती वृक्षों और अपेक्षाकृत स्थिर कृषि स्थितियों का मिश्रण है।
V. राजस्थान में अति-आर्द्र क्षेत्र व्यापक है, जो पूरे उत्तरी मैदानों को कवर करता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) I और V
(2) II और III
(3) III और IV
(4) I, II और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. बीकानेर जिले में कोई प्रवाहित नदी नहीं है। जलवायु के दृष्टिकोण से, कारकों का कौन सा संयोजन इस भौगोलिक वास्तविकता को सबसे अच्छी तरह समझाता है?

(1) तीव्र वर्षा की घटनाएं जो किसी भी स्थिर अपवाह चैनल के बनने से पहले ही तुरंत वाष्पित हो जाती हैं।
(2) वर्ष भर निरंतर हिमांक तापमान जो गहरी तुषार परतों में सारी नमी को जकड़ लेता है।
(3) घना वन आवरण जो वर्षा के तुरंत बाद उपलब्ध सभी सतही अपवाह को सोख लेता है।
(4) वर्षा की कमी, छिद्रपूर्ण रेतीली सतहें और अत्यधिक संभावित वाष्पोत्सर्जन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. राजस्थान के लिए कोपेन के जलवायु कोड और उसके वर्णनात्मक अर्थ के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।

(1) BWhw - शुष्क शीतकाल के साथ गर्म मरुस्थलीय जलवायु
(2) BShw - अल्प शुष्क ऋतु के साथ मानसूनी जलवायु
(3) Cwg - बिना किसी शुष्क ऋतु वाली उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु
(4) Aw - ठंडी अर्द्ध-शुष्क जलवायु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग (हाड़ौती क्षेत्र) में पश्चिमी भाग की तुलना में काफी अधिक वर्षा होने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?

(1) यह सीधे उष्णकटिबंधीय भूमध्य रेखा पर स्थित है, जिससे पूरे ग्रीष्म ऋतु में दैनिक संवहनीय वर्षा होती है।
(2) यह बिना किसी महत्वपूर्ण अवरोध के अरब सागर की शाखा का सामना करने वाला सबसे पहला क्षेत्र है।
(3) पूर्व से प्रवेश करने वाली नमी युक्त बंगाल की खाड़ी की पवनों के सापेक्ष इसकी सम्मुख स्थिति।
(4) यहाँ उष्णकटिबंधीय वृक्षों के साथ घने वन हैं, जो भौतिक रूप से शुष्क और गर्म पश्चिमी पवनों को रोकते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

74. सूची I (स्थानीय मौसम परिघटना) को सूची II (प्राथमिक विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (स्थानीय मौसम परिघटना)

A. लू
B. आँधी
C. मावठ
D. पुरवैया

सूची II: (प्राथमिक विशेषता)

i. भूमध्यसागरीय चक्रवाती विक्षोभों से होने वाली शीतकालीन वर्षा
ii. गर्म, शुष्क, झुलसाने वाली ग्रीष्मकालीन हवाएँ
iii. पूर्व से आने वाली नमी युक्त हवाएँ
iv. तीव्र, धूल भरी ग्रीष्मकालीन आँधियाँ जो अस्थायी रूप से तापमान कम कर देती हैं

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा से प्रभावित जिलों के संबंध में निम्नलिखित में से भिन्न की पहचान करें।

(1) बाँसवाड़ा
(2) डूंगरपुर
(3) सिरोही (माउंट आबू क्षेत्र)
(4) हनुमानगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider कीजिए:

I. थार मरुस्थल का विशाल विस्तार एक प्रमुख ऊष्मा स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो मौलिक रूप से स्थानीय पवन परिसंचरण को संचालित करता है।
II. राज्य के बड़े हिस्सों में घने वन आवरण की अनुपस्थिति तापमान की चरम सीमाओं को और बढ़ा देती है।
III. राज्य की अक्षांशीय स्थिति इसे उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब पेटी के प्रभाव से पूरी तरह बाहर रखती है।
IV. अरावली श्रेणी की उपस्थिति इसके पूर्वी और पश्चिमी दोनों किनारों पर वर्षा को समान रूप से बढ़ाती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

(1) I और II
(2) III और IV

दिखाई देता है। यह रेखा राज्य के पारिस्थितिक और जलवायु वर्गीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

50. (2) I, III और IV
जलवायु परिवर्तन के कारण राजस्थान में मानसूनी चक्र में स्पष्ट बदलाव आए हैं, जैसे मानसून का देरी से आना और जल्दी विदा होना। गर्मियों के दौरान लू की तीव्रता और उनकी अवधि में वृद्धि हुई है, जिससे स्वास्थ्य जोखिम बढ़े हैं। साथ ही, बेमौसम वर्षा और ओलावृष्टि की घटनाओं ने रबी फसलों को काफी नुकसान पहुँचाया है। हालांकि वर्षा की तीव्रता में स्थानीय स्तर पर बदलाव हुए हैं, लेकिन सभी पश्चिमी जिलों में वर्षा में एकसमान वृद्धि का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

51. (3) उच्च संभावित वाष्पोत्सर्जन जो वास्तविक वर्षा से काफी अधिक है।
पश्चिमी राजस्थान में केवल वर्षा की कम मात्रा ही शुष्कता को निर्धारित नहीं करती, बल्कि तापमान और वाष्पीकरण की दर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस क्षेत्र में अत्यधिक गर्मी के कारण वायु में नमी को सोखने की क्षमता बहुत अधिक होती है। इसके परिणामस्वरूप, प्राप्त होने वाली मध्यम वर्षा का भी अधिकांश भाग मिट्टी और पौधों के उपयोग से पहले ही वाष्पित हो जाता है। इसी उच्च संभावित वाष्पोत्सर्जन के कारण ही क्षेत्र में वर्षा के बाद भी शुष्क परिस्थितियाँ बनी रहती हैं।

52. (4) DB'w - खरीफ फसलों के लिए उपयुक्त अत्यधिक उच्च शीतकालीन वर्षा द्वारा विशेषीकृत।
थॉर्नथवेट के अनुसार डी.बी'.डब्ल्यू. क्षेत्र उत्तरी राजस्थान का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ अर्द्ध-शुष्क जलवायु पाई जाती है। यह कथन गलत है क्योंकि शीतकालीन वर्षा (मावठ) रबी की फसलों के लिए लाभदायक होती है, न कि खरीफ के लिए। खरीफ की फसलें मुख्य रूप से ग्रीष्मकालीन मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती हैं। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र में शीतकालीन वर्षा की मात्रा बहुत अधिक नहीं बल्कि काफी विशिष्ट होती है जो केवल गेहूँ और सरसों जैसी फसलों को सहारा प्रदान करती है।

53. (3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के उत्तरी और अरावली क्षेत्रों में सर्दियों के दौरान तापमान का हिमांक से नीचे जाना एक वैज्ञानिक तथ्य है। जब रात में धरातल तेजी से ठंडा होता है और तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाता है, तो हवा में मौजूद जलवाष्प सीधे ठोस बर्फ के क्रिस्टल में बदल जाती है। यह प्रक्रिया 'पाला जमना' कहलाती है, जो फसलों, विशेषकर सब्जियों और चने को भारी नुकसान पहुँचा सकती है। साफ आसमान इस ठंडी प्रक्रिया को और अधिक तेज कर देता है।

54. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में मौसम का चक्र पारंपरिक रूप से चार मुख्य ऋतुओं में विभाजित है। ग्रीष्म ऋतु मार्च से जून के मध्य तक रहती है जिसमें अत्यधिक गर्मी पड़ती है। वर्षा ऋतु जून के मध्य से सितंबर तक मानसूनी पवनों के प्रभाव में होती है। अक्टूबर और नवंबर के महीने मानसून के लौटने या शरद ऋतु के संक्रमण काल के होते हैं। दिसंबर से फरवरी तक शीत ऋतु का प्रभाव रहता है, जिसमें जनवरी सर्वाधिक ठंडा महीना माना जाता है। यह चक्र राज्य की कृषि का आधार है।

55. (4) माउंट आबू
माउंट आबू राजस्थान का सबसे आर्द्र स्थान है जहाँ प्रतिवर्ष वर्षा वाले दिनों की संख्या राज्य में सर्वाधिक दर्ज की जाती है। औसत आंकड़ों के अनुसार यहाँ वर्ष में लगभग 40 से अधिक दिन वर्षा होती है। इसकी विशिष्ट भौगोलिक ऊँचाई और पर्वतीय बनावट मानसूनी हवाओं को ऊपर उठने और वर्षा करने के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती है। इसके विपरीत, जैसलमेर जैसे पश्चिमी जिलों में वर्षा वाले दिनों की औसत संख्या मुश्किल से 5 से 10 दिन ही रहती है।

56. (3) I और IV
लू और आँधी राजस्थान की दो अलग-अलग ग्रीष्मकालीन परिघटनाएँ हैं। लू एक अत्यंत गर्म और शुष्क पवन है, जिसमें नमी बिल्कुल नहीं होती, जबकि आँधी में धूल के कणों के साथ कभी-कभी हल्की नमी हो सकती है। आँधी की आवृत्ति उत्तर-पश्चिमी जिलों, विशेषकर श्रीगंगानगर में सबसे अधिक होती है, न कि झालावाड़ जैसे दक्षिण-पूर्वी जिलों में। लू वास्तव में स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक होती है और निर्जलीकरण का कारण बनती है, जबकि आँधी से स्थानीय तापमान में अस्थायी कमी आती है।

57. (3) जैसलमेर
राजस्थान के आर्द्र जलवायु क्षेत्र में वे जिले सम्मिलित हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 60 से 80 सेमी के बीच होती है। इनमें मुख्य रूप से भरतपुर, धौलपुर, सवाई माधोपुर और अलवर जैसे पूर्वी मैदानी जिले आते हैं। जैसलमेर जिला राज्य के सुदूर पश्चिम में स्थित है और यह पूर्णतः शुष्क मरुस्थलीय जलवायु का हिस्सा है जहाँ वर्षा 20 सेमी से भी कम दर्ज होती है। अतः भौगोलिक और जलवायु की दृष्टि से जैसलमेर इस समूह में पूरी तरह से बेमेल और भिन्न जिला है।

58. (1) यह जुलाई और अगस्त के चरम मानसूनी महीनों के दौरान अपने अधिकतम स्तर पर पहुँच जाती है।
सापेक्ष आर्द्रता वायु में मौजूद नमी की मात्रा को दर्शाती है। राजस्थान में जुलाई और अगस्त के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून पूरी तरह सक्रिय रहता है, जिससे वायुमंडल में जलवाष्प की मात्रा सर्वाधिक हो जाती है। इसके विपरीत, गर्मियों में भीषण लू के प्रभाव से आर्द्रता का स्तर न्यूनतम हो जाता है। सर्दियों में मावठ के दौरान इसमें थोड़ी वृद्धि होती है, लेकिन मानसूनी महीनों की तुलना में यह काफी कम रहती है। अतः मानसून ऋतु ही आर्द्रता का चरम समय मानी जाती है।

59. (4) जनवरी
राजस्थान में जनवरी का महीना सांख्यिकीय रूप से वर्ष का सबसे ठंडा समय होता है। इस दौरान उत्तर से आने वाली ठंडी हवाओं और शीत लहर के प्रभाव से पूरे राज्य में तापमान काफी कम हो जाता है। उत्तरी और पश्चिमी जिलों में रात्रिकालीन तापमान अक्सर हिमांक बिंदु तक या उससे भी नीचे गिर जाता

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) शुष्क और अर्द्ध-शुष्क महाद्वीपीय
राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और समुद्र से इसकी अत्यधिक दूरी के कारण यहाँ की जलवायु मुख्य रूप से शुष्क और अर्द्ध-शुष्क प्रकार की है। अरावली पर्वतमाला राज्य को दो स्पष्ट जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करने वाली प्रमुख भौतिक संरचना है। पश्चिमी भाग में अत्यंत कम वर्षा और उच्च तापमान के साथ शुष्क महाद्वीपीय दशाएँ विद्यमान रहती हैं। वहीं पूर्वी भाग में अपेक्षाकृत बेहतर वर्षा और अर्द्ध-शुष्क से उप-आर्द्र जलवायु परिस्थितियों का विस्तार देखा जाता है।

2. (1) यह एक तीव्र निम्न-दाब गर्त बनाता है जो दक्षिण-पश्चिम मानसून को आकर्षित करता है।
ग्रीष्म ऋतु के दौरान थार मरुस्थल की रेतीली सतह अत्यधिक सौर विकिरण अवशोषित कर बहुत गर्म हो जाती है। इस तीव्र ऊष्मा के कारण धरातल के ऊपर की वायु गर्म होकर ऊपर उठती है और एक शक्तिशाली निम्न-दाब केंद्र विकसित होता है। यह निम्न-दाब गर्त हिंद महासागर से आने वाली दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर आकर्षित करने में एक उत्प्रेरक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिससे मानसूनी वर्षा की संभावना बढ़ती है।

3. (3) दोनों कथन सही हैं और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
रेतीली मृदा की कम विशिष्ट ऊष्मा धारिता के कारण यह सौर ऊर्जा के प्रभाव में बहुत जल्दी गर्म हो जाती है और रात्रि में विकिरण द्वारा तेजी से ठंडी होती है। इसी भौतिक गुण के कारण पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में दिन और रात के तापमान के बीच बहुत अधिक अंतर पाया जाता है। बादलों की अनुपस्थिति और शुष्क वायु इस तापीय चरम स्थिति को और अधिक तीव्र कर देती है, जिससे दैनिक तापांतर अत्यधिक बढ़ जाता है।

4. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों को विशिष्ट संकेतों से दर्शाया जाता है। जैसलमेर जैसे शुष्क पश्चिमी जिलों के लिए बी.डब्ल्यू.एच.डब्ल्यू. का प्रयोग होता है, जबकि सीकर जैसे अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों को बी.एस.एच.डब्ल्यू. श्रेणी में रखा जाता है। पूर्वी मैदानों में स्थित दौसा जैसे जिले सी.डब्ल्यू.जी. श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित डूंगरपुर जिला उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु वाली ए.डब्ल्यू. श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है। यह वर्गीकरण वैज्ञानिक आधार पर किया गया है।

5. (3) पश्चिमी राजस्थान में सर्दियों का तापमान कभी भी हिमांक से नीचे नहीं गिरता है।
पश्चिमी राजस्थान में सर्दियों के दौरान तापमान कभी भी हिमांक से नीचे नहीं जाने का दावा वैज्ञानिक रूप से पूर्णतः गलत है। वास्तव में चूरू, बीकानेर और जैसलमेर जैसे जिलों में जनवरी के दौरान शीत लहर के प्रभाव से रात का तापमान अक्सर शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे गिर जाता है। इसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों में पाला जमने की घटनाएं सामान्य हैं। मरुस्थलीय मिट्टी की तीव्र विकिरण दर तापमान में इस भारी गिरावट का सबसे प्रमुख भौगोलिक कारण मानी जाती है।

6. (2) II और III
राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की स्थिति मानसूनी वर्षा के वितरण में निर्णायक भूमिका निभाती है। अरब सागर की शाखा अरावली की दिशा के समानांतर प्रवाहित होती है जिससे पश्चिमी भाग में पर्याप्त वर्षा नहीं हो पाती। वहीं बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनें अरावली की पूर्वी ढालों से टकराकर वहाँ अच्छी वर्षा करती हैं, परंतु ऊँची पर्वत श्रृंखला को पार करते समय अपनी नमी खो देती हैं जिससे पश्चिमी भाग शुष्क रह जाता है। यह वर्षा विहीनता का बड़ा कारण है।

7. (4) भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभ
शीतकाल में राजस्थान के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों में होने वाली हल्की वर्षा को स्थानीय भाषा में मावठ कहा जाता है। यह वर्षा भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय विक्षोभों के कारण होती है जो पश्चिमी जेट धाराओं द्वारा भारत लाए जाते हैं। यह मौसमी परिघटना रबी की फसलों विशेषकर गेहूँ, चना और सरसों की पैदावार के लिए अत्यंत लाभकारी मानी जाती है। इसी कारण स्थानीय किसान इसे सुनहरी बूंदों के नाम से भी संबोधित करते हैं।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा के माध्यम से कम वर्षा होने का मुख्य कारण अरावली पर्वतमाला की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति है। यह पर्वत श्रेणी इन नमी युक्त पवनों के मार्ग के बिल्कुल समानांतर स्थित है जिससे पवनों को ऊपर उठने और संघनित होने के लिए आवश्यक अवरोध प्राप्त नहीं होता। परिणामस्वरूप बादल बिना वर्षा किए सीधे उत्तर की ओर निकल जाते हैं। यही कारण है कि पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश मानसूनी मौसम में भी अधिकांशतः शुष्क रह जाता है।

9. (3) लू
राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु के दौरान विशेष रूप से मई और जून के महीनों में चलने वाली अत्यंत गर्म और शुष्क हवाओं को लू कहा जाता है। ये हवाएँ मुख्य रूप से पश्चिम की ओर से आती हैं और स्थानीय तापमान को अचानक 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर

NODIA

बारंबार होती है। ऐतिहासिक रूप से यहाँ औसतन प्रत्येक दूसरे या तीसरे वर्ष में किसी न किसी स्तर का सूखा अवश्य पड़ता है। यह आवृत्ति भारत के अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत अधिक है, जो यहाँ के जनजीवन और कृषि अर्थव्यवस्था को निरंतर चुनौती देती रहती है।

70. (1) I और V
राजस्थान में शुष्क जलवायु क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 60% हिस्सा कवर करता है, न कि केवल 20%। इसके अतिरिक्त, अति-आर्द्र क्षेत्र केवल राज्य के सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भागों, जैसे झालावाड़ और माउंट आबू तक ही सीमित है, यह संपूर्ण उत्तरी मैदानों को कवर नहीं करता है। उत्तरी मैदान मुख्य रूप से अर्द्ध-शुष्क और उप-आर्द्र श्रेणी में आते हैं। अतः भौगोलिक विस्तार और वर्गीकरण के संदर्भ में कथन I और V पूर्णतः गलत हैं।

71. (4) वर्षा की कमी, छिद्रपूर्ण रेतीली सतहें और अत्यधिक संभावित वाष्पोत्सर्जन।
बीकानेर में किसी भी स्थाई नदी के न होने के पीछे मुख्य कारण यहाँ की जलवायु और मृदा की विशिष्टता है। यहाँ वर्षा की मात्रा अत्यंत कम है और जो थोड़ी बहुत वर्षा होती है, वह रेतीली मिट्टी की उच्च पारगम्यता के कारण तुरंत भूमि में समा जाती है। साथ ही, अत्यधिक गर्मी और शुष्क हवाओं के कारण वाष्पीकरण की दर बहुत ऊँची रहती है। इन संयुक्त कारकों के कारण जल धरातल पर बहने के बजाय लुप्त हो जाता है, जिससे स्थाई नदी तंत्र विकसित नहीं हो पाया है।

72. (1) BWhw - शुष्क शीतकाल के साथ गर्म मरुस्थलीय जलवायु
कोपेन के वर्गीकरण में बी.डब्ल्यू.एच.डब्ल्यू. संकेत राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों जैसे जैसलमेर और बीकानेर को दर्शाता है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है और सर्दियाँ प्रायः शुष्क रहती हैं। बी.एस.एच.डब्ल्यू. का अर्थ अर्द्ध-शुष्क स्टेपी जलवायु है, न कि मानसूनी। सी.डब्ल्यू.जी. मध्यम वर्षा वाली जलवायु है जिसमें सर्दियाँ शुष्क होती हैं। ए.डब्ल्यू. का तात्पर्य उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु से है। अतः केवल बी.डब्ल्यू.एच.डब्ल्यू. का वर्णन उसके संकेत के साथ सही मेल खाता है जो राज्य की वास्तविक स्थिति है।

73. (3) पूर्व से प्रवेश करने वाली नमी युक्त बंगाल की खाड़ी की पवनों के सापेक्ष इसकी सम्मुख स्थिति।
हाड़ौती क्षेत्र और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में अधिक वर्षा होने का मुख्य कारण इसकी भौगोलिक अवस्थिति है। बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनें जब राजस्थान में प्रवेश करती हैं, तो यह क्षेत्र उनके मार्ग में सबसे पहले आता है। चूँकि इन पवनों में उस समय नमी की मात्रा बहुत अधिक होती है, इसलिए वे यहाँ व्यापक और भारी वर्षा करती हैं। पश्चिमी भाग तक पहुँचते-पहुँचते इन पवनों की नमी लगभग समाप्त हो जाती है, जिससे वहाँ वर्षा का स्तर निरंतर गिरता जाता है।

74. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान की स्थानीय मौसम प्रणालियाँ अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। लू ग्रीष्मकाल की अत्यंत गर्म और शुष्क पवन है, जबकि आँधी धूल भरी हवाएँ हैं जो तापमान में कुछ कमी लाती हैं। मावठ सर्दियों में होने वाली लाभदायक वर्षा है जिसका मुख्य स्रोत पश्चिमी विक्षोभ है। पुरवैया पूर्व से आने वाली नमी युक्त मानसूनी पवनें हैं जो वर्षा का आधार बनती हैं। इन सभी का सही मिलान राज्य की मौसमी विविधता और कृषि चक्र को स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करता है।

75. (4) हनुमानगढ़
दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों को प्रभावित करती है। बाँसवाड़ा, डूंगरपुर और सिरोही जिले अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण इस शाखा से सबसे पहले और अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत, हनुमानगढ़ जिला राज्य के सुदूर उत्तर में स्थित है जहाँ तक पहुँचते-पहुँचते अरब सागर की शाखा की नमी पूरी तरह समाप्त हो जाती है। यह जिला वर्षा के लिए मुख्य रूप से बंगाल की खाड़ी की शाखा या पश्चिमी विक्षोभ पर निर्भर रहता है।

76. (2) III और IV
राजस्थान की जलवायु के संबंध में कथन III और IV गलत हैं क्योंकि राज्य वास्तव में उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब पेटी के प्रभाव क्षेत्र में आता है, जो इसकी शुष्कता का एक प्रमुख भौगोलिक कारण है। इसके अतिरिक्त, अरावली श्रेणी वर्षा को समान रूप से नहीं बढ़ाती, बल्कि यह एक अवरोध के रूप में कार्य करती है जिससे इसके पूर्वी भाग में अधिक वर्षा होती है और पश्चिमी भाग वृष्टि-छाया क्षेत्र होने के कारण शुष्क रह जाता है। अतः ये दोनों कथन भौगोलिक वास्तविकता के विपरीत हैं।

77. (3) पाँच
सामान्य जलवायु वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान को पाँच प्रमुख जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ये क्षेत्र शुष्क जलवायु प्रदेश, अर्द्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश, उप-आर्द्र जलवायु प्रदेश, आर्द्र जलवायु प्रदेश और अति-आर्द्र जलवायु प्रदेश हैं। यह वर्गीकरण मुख्य रूप से वार्षिक वर्षा की मात्रा और तापमान के वितरण पर आधारित है। यह विभाजन राज्य की प्राकृतिक वनस्पति, मृदा के प्रकार और कृषि प्रणालियों को बेहतर ढंग से समझने में भूगोलवेत्ताओं और योजनाकारों के लिए बहुत सहायक सिद्ध होता है।

NODIA

78. (4) भीषण गरज के साथ तूफान और भारी ओलावृष्टि की अचानक शुरुआत।
लू का मुख्य प्रभाव शुष्कता और तापमान में अत्यधिक वृद्धि करना है। यह मिट्टी और पौधों की नमी को तेजी से सोख लेती है और मनुष्यों में निर्जलीकरण जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा करती है। लू के साथ भारी वर्षा या ओलावृष्टि होना असंभव है क्योंकि यह पूरी तरह से शुष्क पवन प्रणाली है। गरज के साथ तूफान और ओलावृष्टि आमतौर पर स्थानीय संवहनीय धाराओं या मानसूनी विक्षोभों के कारण होते हैं, जो लू की मूल प्रकृति से बिल्कुल भिन्न मौसमी परिघटनाएं हैं।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति पर अनियंत्रित अति-चराई का प्राथमिक पारिस्थितिक परिणाम क्या है?
(1) स्वदेशी प्रजातियों का तीव्र वनीकरण
(2) मिट्टी की नमी बनाए रखने की क्षमता में वृद्धि
(3) गंभीर मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण में तेजी
(4) कांटेदार वनों का सदाबहार वनों में परिवर्तन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (संरक्षण रणनीति/विशेषता)
A. बाघों का पुनर्वास और पुनर्स्थापन
B. गोडावण का कृत्रिम प्रजनन
C. बिश्नोई समुदाय द्वारा हरे पेड़ों के संरक्षण का संकल्प
D. कृत्रिम आर्द्रभूमि का निर्माण
सूची II: (राजस्थान में लक्षित इकाई)
i. खेजड़ी
ii. सरिस्का टाइगर रिजर्व
iii. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
iv. राष्ट्रीय मरु उद्यान
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजस्थान में जैव विविधता संरक्षण के समक्ष निम्नलिखित चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. अरावली पहाड़ियों में अवैध खनन का विस्तार।
II. बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कारण आवास विखंडन।
III. विलायती बबूल जैसी आक्रामक प्रजातियों का प्रसार।
IV. प्राकृतिक आवासों में व्यापक बाढ़ का कारण बनने वाली अत्यधिक वार्षिक वर्षा।
उपरोक्त में से कौन सी राज्य में वास्तविक संरक्षण चुनौतियां हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. राजस्थान में पारंपरिक संरक्षण प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा "असंगत" है?
(1) ओरण (पवित्र उपवन)
(2) व्यावसायिक वनों की कटाई
(3) जोहड़ (पारंपरिक जल संरचना)
(4) खेजरली बलिदान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: रोहिड़ा के पेड़ में जीवंत फूल आते हैं जो आमतौर पर पीले, नारंगी या लाल होते हैं।
कथन II: रोहिड़ा के फूलों का खिलना आमतौर पर दिसंबर और जनवरी के चरम सर्दियों के महीनों के दौरान होता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. वन्यजीव अभयारण्य और उसकी उल्लेखनीय विशेषता के गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) ताल छापर अभयारण्य - काले हिरण का आवास
(2) सीतामाता अभयारण्य - उड़न गिलहरियाँ
(3) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य - घड़ियाल संरक्षण
(4) कुंभलगढ़ अभयारण्य - मैंग्रोव वनस्पति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन सा उत्तर से दक्षिण की ओर राजस्थान के बाघ अभयारण्यों के सही स्थानिक क्रम को दर्शाता है?
(1) सरिस्का - रणथंभौर - मुकुंदरा हिल्स
(2) मुकुंदरा हिल्स - रणथंभौर - सरिस्का
(3) रणथंभौर - सरिस्का - मुकुंदरा हिल्स
(4) सरिस्का - मुकुंदरा हिल्स - रणथंभौर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. राजस्थान में उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये राजस्थान के कुल वन क्षेत्र के 1% से भी कम हैं।
II. ये माउंट आबू के उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्र तक ही सीमित हैं।
III. इनकी विशेषता वे प्रजातियां हैं जो सर्दियों में अपनी सभी पत्तियां एक साथ गिरा देती हैं।
IV. इनमें झाड़ियों और लताओं का घना आवरण पाया जाता है।
V. यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 150 सेमी से अधिक होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, II, III और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. चिंकारा को आधिकारिक तौर पर राजस्थान का राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी) किस वर्ष घोषित किया गया था?
(1) 1973
(2) 1981
(3) 1992
(4) 2005

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 20

प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता एवं संरक्षण

1. राजस्थान में प्राकृतिक वनस्पति के वितरण और प्रकार को निर्धारित करने वाला सबसे प्रमुख कारक निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) मृदा की उर्वरता
(2) वर्षा
(3) ऊँचाई
(4) नदी तंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान में पाई जाने वाली मरुस्थलीय वनस्पति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) सूर्य के प्रकाश के अवशोषण को अधिकतम करने के लिए पत्तियां चौड़ी और पतली होती हैं।
(2) पौधों में आमतौर पर गहरी और व्यापक जड़ प्रणालियाँ होती हैं।
(3) पानी की कमी को कम करने के लिए तनों पर अक्सर मोमी आवरण होता है।
(4) वाष्पोत्सर्जन को कम करने के लिए कई पौधों में पत्तियों के स्थान पर कांटे होते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वन प्रकार)
A. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
B. उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
C. उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
D. मिश्रित पर्णपाती वन
सूची II: (राजस्थान में क्षेत्र)
i. माउंट आबू क्षेत्र
ii. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
iii. पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र
iv. दक्षिणी अरावली क्षेत्र
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. पश्चिमी राजस्थान में अत्यधिक तापमान और कम वर्षा का प्राथमिक पारिस्थितिक प्रभाव क्या है?
(1) चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार पेड़ों का प्रसार
(2) सघन वितान (कैनोपी) वाले पर्णपाती वनों का निर्माण
(3) एपिफाइटिक ऑर्किड की उच्च प्रधानता
(4) मरुद्भिद पौधों की प्रजातियों की प्रधानता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

5. राजस्थान के उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से पश्चिमी शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
II. वनस्पति में मुख्य रूप से गहरी जड़ों और मोटी छाल वाले पेड़ शामिल होते हैं।
III. इन वनों को पनपने के लिए 150 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. राजस्थान के राज्य वृक्ष खेजड़ी का वानस्पतिक नाम क्या है?
(1) टेकोमेला उंडुलता
(2) प्रोसोपिस सिनेरेरिया
(3) एकेसिया नीलोटिका
(4) ब्यूटिया मोनोस्पर्मा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. माउंट आबू क्षेत्र में पाए जाने वाले उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों की निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नहीं है?
(1) ये अपेक्षाकृत कम तापमान के साथ अधिक ऊँचाई पर पाए जाते हैं।
(2) यहाँ राज्य में सर्वाधिक औसत वर्षा होती है।
(3) इनमें आम, जामुन और बांस जैसी प्रजातियां पाई जाती हैं।
(4) इनमें कांटेदार झाड़ियों और कैक्टस की प्रधानता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): राजस्थान में उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन विशेष रूप से माउंट आबू क्षेत्र तक ही सीमित हैं।
कारण (R): माउंट आबू क्षेत्र इन वनों के लिए आवश्यक उच्च ऊँचाई और उच्च वर्षा की स्थितियाँ प्रदान करता है।

58. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वन/वनस्पति वर्ग)
A. मरुस्थलीय वनस्पति
B. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
C. उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
D. उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
सूची II: (विशिष्ट वर्षा की आवश्यकता)
i. 25 सेमी से कम
ii. 25 सेमी से 50 सेमी
iii. 50 सेमी से 100 सेमी
iv. 150 सेमी से अधिक
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका नाम विंध्य श्रेणी की मुकुंदरा पहाड़ियों के नाम पर रखा गया है।
II. यह राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है।
III. यह गागरोनी तोते के आवास के लिए प्रसिद्ध है।
IV. इसमें मुख्य रूप से मरुस्थलीय मरुद्भिद वनस्पति पाई जाती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. राजस्थान के निम्नलिखित प्राकृतिक वनस्पति प्रकारों पर विचार कीजिए:
I. उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
II. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
III. उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
निम्नलिखित में से कौन सा राज्य में उनके अनुमानित भौगोलिक क्षेत्र कवरेज के आधार पर अवरोही क्रम में सही अनुक्रम है?
(1) III, II, I
(2) II, III, I
(3) I, III, II
(4) II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान शुष्क महीनों के दौरान कृत्रिम जल आपूर्ति पर निर्भर करता है। कौन सी नदियाँ ऐतिहासिक रूप से इस उद्यान की आर्द्रभूमि प्रणाली को जल पहुँचाती हैं?
(1) लूणी और सुकरी
(2) चंबल और बनास
(3) बाणगंगा और गम्भीरी
(4) माही और सोम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. माउंट आबू क्षेत्र में वनस्पतियों के पारिस्थितिक अनुकूलन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यहाँ की वनस्पति शेष राजस्थान की तुलना में उच्च आर्द्रता स्तर के लिए अनुकूलित है।
(2) इस क्षेत्र में सदाबहार और अर्ध-सदाबहार प्रजातियों का एक अनूठा मिश्रण पाया जाता है।
(3) अनुकूल सूक्ष्म जलवायु के कारण इस क्षेत्र में ऑर्किड जैसे एपिफाइट्स पाए जाते हैं।
(4) पौधों में गहरी मूसला जड़ें होती हैं जो विशेष रूप से मरुस्थल की ढीली रेत में जीवित रहने के लिए अनुकूलित होती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने और रेत के टीलों को स्थिर करने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका किसे माना जाता है?
(1) खेजड़ी और रोहिड़ा जैसी देशी मरुद्भिद प्रजातियों का उपयोग करके वनीकरण।
(2) जल-गहन नकदी फसलों के लिए व्यापक नहर सिंचाई।
(3) तेजी से बढ़ने वाली घास उगाने के लिए सभी झाड़ीदार वनस्पतियों को हटाना।
(4) मिट्टी की हलचल को रोकने के लिए मरुस्थल की सतह को कंक्रीट से पक्का करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: खेजड़ी के पेड़ की सूखी फलियाँ पारंपरिक राजस्थानी व्यंजन 'पंचकूटा' का एक महत्वपूर्ण घटक हैं।
कथन II: खेजड़ी के पेड़ अत्यधिक गर्मियों के दौरान अपनी सभी पत्तियां गिरा देते हैं, जिससे वे सूखे के दौरान पशुओं के चारे के लिए अनुपयोगी हो जाते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. वनस्पति की निम्नलिखित अनुकूलन विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. पानी संचय के लिए गूदेदार तने
II. पानी की कमी को कम करने के लिए धंसे हुए रंध्र
III. अधिकतम सूर्य का प्रकाश प्राप्त करने के लिए चौड़ी, पतली पत्तियां
IV. भूजल तक पहुँचने के लिए लंबी मूसला जड़ प्रणालियाँ
V. जलभराव वाली मिट्टी में स्थिरता के लिए जरायुल जड़ें
उपरोक्त में से कौन सा संयोजन राजस्थान की मरुस्थलीय

Click Here to Buy book on Amazon

(3) जोधपुर
(4) उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. निम्नलिखित प्रमुख जीव प्रजातियों में से किसे राजस्थान का राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी) घोषित किया गया है?
(1) काला हिरण
(2) चिंकारा
(3) मरुस्थलीय लोमड़ी
(4) गोडावण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. राजस्थान के राज्य प्रतीकों और उनकी सामान्य पारिस्थितिक श्रेणी के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(1) रोहिड़ा - जलीय पौधा
(2) खेजड़ी - मरुद्भिद वृक्ष
(3) गोडावण - प्रवासी जलपक्षी
(4) चिंकारा - मांसाहारी शिकारी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित में से कौन सा पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर राजस्थान में प्रमुख प्राकृतिक वनस्पति क्षेत्रों के सही स्थानिक क्रम को दर्शाता है?
(1) उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती - उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार - उष्णकटिबंधीय कांटेदार
(2) उष्णकटिबंधीय कांटेदार - उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती - मिश्रित पर्णपाती
(3) मिश्रित पर्णपाती - उष्णकटिबंधीय कांटेदार - उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती
(4) उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार - उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती - उष्णकटिबंधीय कांटेदार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. खेजड़ी का वृक्ष राजस्थान के शुष्क पारिस्थितिक तंत्र में कृषि वानिकी को मौलिक रूप से कैसे सहारा देता है?
(1) एक घना वितान बनाकर जो सूर्य के प्रकाश को मिट्टी के स्तर तक पहुँचने से पूरी तरह से रोकता है।
(2) एक व्यावसायिक लकड़ी के स्रोत के रूप में कार्य करके जिसे जीवित रहने के लिए भारी सिंचाई की आवश्यकता होती है।
(3) नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके और फसलों के साथ सतही जल के लिए प्रतिस्पर्धा किए बिना मिट्टी को समृद्ध करके।
(4) कृषि फसलों को अनाज के नुकसान से बचाने के लिए सभी देशी पक्षी प्रजातियों को दूर भगाकर।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. सरिस्का टाइगर रिजर्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अलवर जिले की अरावली पहाड़ियों में स्थित है।
II. इसने 2008 में रणथंभौर से बाघों को सफलतापूर्वक स्थानांतरित करने के लिए वैश्विक ध्यान आकर्षित किया।
III. इसे वर्तमान में इसके वास्तुशिल्प अवशेषों के लिए यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजस्थान में गोडावण का स्थानीय नाम क्या है?
(1) कुरजां
(2) सारस
(3) गोडावण
(4) खेजरली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वन्यजीव प्रजाति)
A. गोडावण
B. बंगाल टाइगर
C. साइबेरियन क्रेन
D. उड़न गिलहरी
सूची II: (राजस्थान में प्राथमिक संरक्षित क्षेत्र)
i. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान
ii. सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य
iii. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
iv. राष्ट्रीय मरु उद्यान
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह उत्तर में बनास नदी और दक्षिण में चंबल नदी से घिरा है।
(2) यह अपने दिवाचर बाघों के लिए प्रसिद्ध है जो अक्सर दिन के दौरान देखे जाते हैं।
(3) इसकी सीमाओं के भीतर ऐतिहासिक रणथंभौर किला स्थित है।
(4) यह मुख्य रूप से घने उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावनों से बना है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. राजस्थान में गोडावण की आबादी में तेजी से गिरावट का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा कारक है?
(1) कृषि विस्तार और बिजली की लाइनों के कारण आवास

NODIA

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान के उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) ये मुख्य रूप से पश्चिमी जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में स्थित हैं।
(2) वर्षा के पैटर्न की परवाह किए बिना ये वन पूरे वर्ष पूरी तरह से हरे रहते हैं।
(3) धोक (एनोगेइसस पेंडुला) इन वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वृक्ष प्रजाति है।
(4) इनकी विशेषता झाड़ियों और मौसमी घास के आवरण का पूर्ण अभाव है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. रोहिड़ा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 1983 में राजस्थान का राज्य पुष्प घोषित किया गया था।
II. इसका वैज्ञानिक नाम टेकोमेला उंडुलता है।
III. इसकी उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी के कारण इसे आमतौर पर 'मारवाड़ टीक' के रूप में जाना जाता है।
IV. यह मुख्य रूप से अगस्त में चरम मानसून के मौसम के दौरान खिलता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: गोडावण मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान के घने जंगलों वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।
कथन II: राष्ट्रीय मरु उद्यान गोडावण के अस्तित्व के लिए आवश्यक आदर्श शुष्क घास के मैदान वाला आवास प्रदान करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (वन्यजीव अभयारण्य / राष्ट्रीय उद्यान)
A. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान
B. राष्ट्रीय मरु उद्यान
C. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
D. सरिस्का टाइगर रिजर्व
सूची II: (संबद्ध जिला)
i. जैसलमेर
ii. अलवर
iii. भरतपुर
iv. सवाई माधोपुर
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किए जाने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) इसमें वन क्षेत्र में पाए जाने वाले बंगाल टाइगर का विश्व में सर्वाधिक घनत्व है।
(2) यह थार मरुस्थल में स्थित सबसे बड़ी प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली गहरे पानी की झील है।
(3) यह साइबेरियन क्रेन जैसे प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण शीतकालीन प्रवास स्थल है।
(4) इसमें पश्चिमी भारत में खोजी गई सबसे पुरानी प्रागैतिहासिक शैल चित्रकारी है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. राजस्थान में बाघ अभयारण्यों और वन्यजीवों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रणथंभौर प्रोजेक्ट टाइगर के तहत स्थापित पहले नौ बाघ अभयारण्यों में से एक था।
II. सरिस्का ने स्थानीय विलुप्ति के बाद बाघ पुनर्वास कार्यक्रम को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया।
III. मुकुंदरा हिल्स राजस्थान में घोषित तीसरा बाघ अभयारण्य है।
IV. राष्ट्रीय मरु उद्यान बंगाल टाइगर का एक प्रमुख प्रजनन स्थल है।
V. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान मुख्य रूप से हिंसक पशुओं के बजाय पक्षी संरक्षण पर केंद्रित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व मुख्य रूप से किस जिले में स्थित है?
(1) कोटा
(2) बीकानेर

Downloaded from www.pdf.tube

32. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सामान्य नाम)
A. खेजड़ी
B. रोहिड़ा
C. चिंकारा
D. गोडावण
सूची II: (वैज्ञानिक नाम)
i. गजेला बेनेट्टी
ii. अर्देओटिस नाइग्रिसेप्स
iii. प्रोसोपिस सिनेरेरिया
iv. टेकोमेला उंडुलता
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. निम्नलिखित में से किस जिले में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन होने की संभावना सबसे कम है?
(1) चित्तौड़गढ़
(2) जैसलमेर
(3) सवाई माधोपुर
(4) उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. राष्ट्रीय उद्यान और उससे जुड़ी प्रमुख भौगोलिक विशेषता के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान - पदम तालाब
(2) केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान - अरावली शिखर
(3) राष्ट्रीय मरु उद्यान - चंबल नदी का कंदरा
(4) मुकुंदरा हिल्स - रेत के टीले
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. रणथंभौर और मुकुंदरा हिल्स जैसे बाघ अभयारण्यों के बीच वन्यजीव गलियारे स्थापित करने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) संगठित बड़े पैमाने पर लकड़ी निष्कर्षण परियोजनाओं को बढ़ावा देना।
(2) प्रवास करने वाले पशुओं के झुंडों के लिए चराई भूमि बनाना।
(3) आनुवंशिक विनिमय की अनुमति देना और बाघों के अंतःप्रजनन को रोकना।
(4) सभी बड़े शिकारियों की आवाजाही को एक ही जिले तक सीमित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. उच्च ऊँचाई पर माउंट आबू क्षेत्र की ढलानों पर किस प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति की प्रधानता है?
(1) उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती
(2) उष्णकटिबंधीय कांटेदार
(3) अल्पाइन घास के मैदान
(4) उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राष्ट्रीय मरु उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में फैला हुआ है।
II. यह रेत के टीलों और ऊबड़-खाबड़ चट्टानों वाले एक संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करता है।
III. इसमें सघन सागवान के वन हैं जो साल भर हरे रहते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

38. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह राजस्थान में स्थापित होने वाला पहला बाघ अभयारण्य था।
(2) इसमें दर्रा, चंबल और जवाहर सागर अभयारण्य शामिल हैं।
(3) यह मुख्य रूप से साइबेरियन क्रेन का शीतकालीन आवास होने के लिए प्रसिद्ध है।
(4) यह वन आवरण से पूरी तरह रहित है और इसमें केवल गहरी खाइयां शामिल हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन मुख्य रूप से राजस्थान के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी भागों में पाए जाते हैं।
कारण (R): इन क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक वार्षिक वर्षा (50 सेमी से 100 सेमी) होती है, जो पर्णपाती वृक्षों की वृद्धि में सहायक होती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और ग्रामीण राजस्थान में व्यापक रूप से खेजड़ी के वृक्ष को किस स्थानीय नाम से पूजा जाता है?
(1) शमी
(2) पलाश
(3) कदम
(4) महुआ

का नुकसान।
(2) पश्चिमी जिलों में अत्यधिक बाढ़।
(3) मरुस्थल में शाकाहारी जीवों की अत्यधिक जनसंख्या।
(4) देशी वनस्पतियों के माध्यम से फैलने वाले कवक रोग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. खेजड़ी के सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दशहरा के त्योहार पर पारंपरिक रूप से इसकी पूजा की जाती है।
II. इसकी अत्यधिक पौष्टिक फलियों को स्थानीय रूप से 'सांगरी' के नाम से जाना जाता है।
III. यह वृक्ष केवल अरावली पर्वतमाला में पाई जाने वाली एक स्थानिक प्रजाति है।
IV. इसने अमृता देवी के नेतृत्व में हुए ऐतिहासिक खेजरली संरक्षण आंदोलन में केंद्रीय भूमिका निभाई।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): राजस्थान की मरुस्थलीय वनस्पति में अक्सर पत्तियां कांटों में रूपांतरित होती हैं या उनकी सतह मोमी होती है।
कारण (R): ये रूपांतरण पौधों को शुष्क जलवायु में वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से नमी के नुकसान को कम करने में मदद करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. "मरुद्भिद" शब्द विशेष रुप से किसे संदर्भित करता है?
(1) अत्यधिक लवणीय दलदली भूमि में जीवित रहने के लिए अनुकूलित पौधे।
(2) उच्च ऊँचाई पर विशेष रुप से चट्टानी सतहों पर उगने वाले पौधे।
(3) ताजे पानी की झीलों पर तैरने वाले जलीय पौधे।
(4) कम पानी वाले वातावरण में जीवित रहने के लिए अनुकूलित पौधे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. किस पेड़ की लकड़ी का उपयोग आमतौर पर उच्च गुणवत्ता वाले फर्नीचर और कृषि उपकरण बनाने के लिए किया जाता है, जिसके कारण इसे राजस्थान में 'मारवाड़ टीक' कहा जाता है?
(1) खेजड़ी
(2) रोहिड़ा
(3) धोक
(4) बबूल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: सरिस्का टाइगर रिजर्व ने 2005 तक अवैध शिकार के कारण अपनी पूरी बाघ आबादी खो दी थी।
कथन II: राजस्थान सरकार ने स्थानीय विलुप्ति के बाद सरिस्का को टाइगर रिजर्व के रूप में स्थायी रूप से वि-अधिसूचित कर दिया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. राजस्थान के निम्नलिखित बाघ अभयारण्यों को उनकी आधिकारिक अधिसूचना के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मुकुंदरा हिल्स
II. सरिस्का
III. रणथंभौर
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(1) I, II, III
(2) III, II, I
(3) II, III, I
(4) III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भरतपुर जिले में स्थित है।
II. यह एक मान्यता प्राप्त रामसर आर्द्रभूमि स्थल है।
III. इसमें शुष्क घास के मैदानों, वनों और दलदलों का मिश्रित आवास है।
IV. यह लुप्तप्राय गोडावण के लिए एक प्रमुख प्रजनन स्थल के रूप में कार्य करता है।
V. यह ऐतिहासिक रूप से राजाओं के लिए बत्तख के शिकार का क्षेत्र था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (जीव-जंतु)

A. चिंकारा
B. गोडावण
C. बाघ
D. साइबेरियन क्रेन

सूची II: (विशिष्ट लक्षण/आवास विशेषता)

i. शुष्क घास के मैदानों का भारी उड़ने वाला पक्षी
ii. पर्णपाती पारिस्थितिक तंत्र का शीर्ष शिकारी
iii. आर्द्रभूमि पर निर्भर प्रवासी पक्षी
iv. कम पानी के सेवन के लिए अनुकूलित छोटा मृग

(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. अरावली पर्वतमाला में अनियंत्रित पत्थर खनन का स्थानीय जैव विविधता पर प्राथमिक प्रतिकूल प्रभाव क्या है?

(1) यह मरुस्थल की छोटी झीलों में विदेशी समुद्री मछली प्रजातियों को लाता है।
(2) यह आसपास के क्षेत्र के तापमान को काफी कम कर देता है।
(3) यह आवासों को नष्ट करता है और महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारों को अवरुद्ध करता है।
(4) यह उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्रों के प्राकृतिक उत्थान को बढ़ाता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं - अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।

अभिकथन (A): रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान बंगाल टाइगर के लिए एक आदर्श आवास है।

कारण (R): यह शिकार का समृद्ध आधार और शुष्क पर्णपाती वनों, खुले घास के मैदानों और पर्याप्त जल निकायों का मिश्रण प्रदान करता है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान के उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों की विशेषता नहीं है?

(1) पेड़ पानी बचाने के लिए शुष्क मौसम के दौरान अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।
(2) ये मुख्य रूप से 50 सेमी से 100 सेमी वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
(3) इनका वितान अत्यधिक सघन होता है, जो सूर्य के प्रकाश को जमीन तक पहुँचने से पूरी तरह रोकता है।
(4) इन वनों में धोक, सालर और तेंदू जैसी प्रजातियां प्रमुख हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सरिस्का की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) इसे शुरुआत में सीधे 1950 में राष्ट्रीय उद्यान के रूप में स्थापित किया गया था।
(2) यह ऐतिहासिक रूप से अलवर रियासत का शिकार क्षेत्र था।
(3) इसे कभी भी प्रोजेक्ट टाइगर पहल के तहत नहीं लाया गया है।
(4) यह मूल रूप से विशेष रूप से प्रवासी राजहंस के लिए एक संरक्षित आर्द्रभूमि थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. राजस्थान में वन्यजीव संरक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 राज्य में वन्यजीव अभयारण्यों को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक कानून है।
II. गोडावण को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम की अनुसूची I के तहत कानूनी रूप से संरक्षित किया गया है।
III. विशिष्ट धार्मिक त्योहारों के दौरान चिंकारा के शिकार की अनुमति है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. कौन से दो जिले मुख्य रूप से राष्ट्रीय मरु उद्यान के भौगोलिक क्षेत्र को साझा करते हैं?

(1) जैसलमेर और बाड़मेर
(2) जोधपुर और बीकानेर
(3) नागौर और चूरू
(4) जालौर और पाली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. गोडावण के घोंसले बनाने और प्रजनन के लिए कौन सा विशिष्ट आवास प्रकार सबसे महत्वपूर्ण है?

(1) पहाड़ियों में उच्च ऊँचाई वाले शंकुधारी वन।
(2) भारी वनस्पति वाले सघन उष्णकटिबंधीय दलदल।
(3) खुले शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र और निर्बाध घास के मैदान।
(4) खाइयों में पाए जाने वाले ऊबड़-खाबड़ चट्टानी ढलान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

79. (1) इसकी तीव्रता उत्तर-पश्चिम से दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर घटती है।

मावठ वर्षा का स्रोत पश्चिमी विक्षोभ है जो भारत में उत्तर-पश्चिम दिशा से प्रवेश करते हैं। इसलिए, इनकी तीव्रता और वर्षा की मात्रा राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी जिलों जैसे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर में सबसे अधिक दर्ज की जाती है। जैसे-जैसे ये विक्षोभ राज्य के दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ते हैं, इनकी ऊर्जा और नमी निरंतर कम होती जाती है। यही कारण है कि मावठ का प्रभाव उत्तरी राजस्थान में दक्षिणी राजस्थान की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट और लाभकारी होता है।

80. (1) II, III, IV, I

राजस्थान की जलवायु में पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर नमी और वर्षा की मात्रा में क्रमिक वृद्धि देखी जाती है। यह क्रम शुष्क क्षेत्र से प्रारंभ होता है जहाँ वर्षा न्यूनतम होती है। इसके बाद अर्द्ध-शुष्क पट्टी आती है, जो अरावली के पश्चिम में स्थित है। अरावली क्षेत्र और उसके निकटवर्ती भाग उप-आर्द्र श्रेणी में सम्मिलित किए जाते हैं। अंत में, राज्य के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी मैदान आर्द्र जलवायु क्षेत्र का हिस्सा बनते हैं। यह व्यवस्थित क्रम राज्य के वर्षा वितरण मानचित्र का अनुसरण करता है।

NODIA

वनस्पति के अनुकूलन का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और IV
(2) II, III और V
(3) I, III और IV
(4) I, II और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राजस्थान में पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों में से कौन सी "असंगत" है क्योंकि यह मुख्य रूप से शुष्क घास के मैदानों का निवासी पक्षी है?
(1) गोडावण
(2) साइबेरियन क्रेन
(3) बार-हेडेड गूज़
(4) ग्रेट व्हाइट पेलिकन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (संरक्षण मील का पत्थर)
A. रणथंभौर में प्रोजेक्ट टाइगर प्रारंभ
B. केवलादेव घाना को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया
C. चिंकारा को राज्य पशु घोषित किया गया
D. खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित किया गया
सूची II: (वर्ष)
i. 1985
ii. 1973-74
iii. 1983
iv. 1981
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. राजस्थान में प्रमुख वनस्पतियों और उनकी प्राथमिक उपयोगिता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) बबूल - उच्च ऊँचाई वाली व्यावसायिक लकड़ी
(2) रोहिड़ा - मुख्य रूप से सुगंधित तेल के लिए
(3) सालर - खाद्य फल उत्पादन के लिए
(4) तेंदू - पारंपरिक बीड़ी बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली पत्तियां
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान को किस वर्ष 'प्रोजेक्ट टाइगर' के अंतर्गत लाया गया था?
(1) 1955
(2) 1973
(3) 1984
(4) 1992
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में जैव विविधता और संरक्षण के लिए बड़ा खतरा नहीं माना जाता है?
(1) सड़क नेटवर्क द्वारा आवास विखंडन
(2) पारंपरिक ओरण और गोचर भूमि प्रणालियाँ
(3) वन्यजीवों का अवैध शिकार
(4) जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. राजस्थान में जैव विविधता हॉटस्पॉट और चुनौतियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) अरावली श्रेणी राज्य में एक महत्वपूर्ण इकोटोन और जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में कार्य करती है।
(2) आक्रामक विलायती बबूल के प्रसार ने देशी वनस्पतियों को हानि पहुँचाई है।
(3) अनियंत्रित चराई का दबाव प्राकृतिक चरागाहों को नष्ट करता है।
(4) वैश्विक मरुस्थलों के बीच थार मरुस्थल का जैव विविधता सूचकांक बहुत कम है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. राजस्थान में विलायती बबूल के व्यापक रोपण का क्या प्रतिकूल प्रभाव हुआ है?
(1) इसने प्रतिस्पर्धा के माध्यम से देशी वनस्पतियों को दबा दिया है।
(2) इसने देशी घास की प्रजातियों में भारी वृद्धि की है।
(3) इसके परिणामस्वरुप भूजल स्तर में तीव्र वृद्धि हुई है।
(4) इसने देशी शाकाहारियों के लिए अत्यधिक पौष्टिक चारा प्रदान किया है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान बनने से पूर्व यह वन्यजीव अभयारण्य किस नाम से लोकप्रिय था?
(1) दर्रा वन्यजीव अभयारण्य
(2) ताल छापर रिजर्व
(3) भरतपुर पक्षी अभयारण्य
(4) रामगढ़ विषधारी अभयारण्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: अरावली पर्वतमाला एक जलवायु अवरोध के रूप में कार्य करती है, जो थार मरुस्थल के पूर्व की ओर विस्तार को रोकती है।
कथन II: अरावली की पश्चिमी ढलानों पर वनस्पति पूर्वी ढलानों की तुलना में अधिक सघन और लंबी है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

खिलता है, न कि अगस्त के मानसून काल में। इसके फूलों का रंग केसरिया-पीला और नारंगी होता है। यह शुष्क क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

11. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
गोडावण मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के शुष्क घास के मैदानों में पाया जाता है। यह पक्षी पूर्वी राजस्थान के सघन वनों का निवासी नहीं है, बल्कि इसे विवृत और शुष्क आवास प्रिय हैं। जैसलमेर स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान इस संकटापन्न प्रजाति के लिए सबसे उपयुक्त और सुरक्षित प्रजनन स्थल प्रदान करता है। घास के मैदानों का विनाश और विद्युत तारें वर्तमान में इनके अस्तित्व हेतु गंभीर चुनौतियां हैं।

12. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के विभिन्न राष्ट्रीय उद्यान विशिष्ट जिलों में स्थित हैं। केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर में अपनी पक्षी विविधता के लिए प्रसिद्ध है। राष्ट्रीय मरु उद्यान मुख्य रूप से जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में विस्तृत है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर में बाघ संरक्षण का प्रमुख केंद्र है। सरिस्का बाघ आरक्षित क्षेत्र अलवर जिले की अरावली पहाड़ियों में स्थित है। यह वितरण राज्य की समृद्ध जैव विविधता को दर्शाता है।

13. (3) यह साइबेरियन क्रेन जैसे प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण शीतकालीन प्रवास स्थल है।
भरतपुर स्थित केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान को इसकी अद्वितीय पक्षी जैव विविधता हेतु यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है। यह उद्यान विशेष रूप से संकटापन्न साइबेरियन क्रेन जैसे प्रवासी पक्षियों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण शीतकालीन आवास के रूप में कार्य करता है। विश्व भर से सहस्रों पक्षी यहाँ प्रजनन और पोषण हेतु आते हैं। यह एक मानव निर्मित आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

14. (1) I, II, III और V
राजस्थान में बाघ संरक्षण हेतु रणथंभौर, सरिस्का और मुकुंदरा हिल्स महत्वपूर्ण केंद्र हैं। रणथंभौर देश के प्रारंभिक बाघ परियोजनाओं में से एक था। सरिस्का में बाघों के विलोपन के पश्चात सफलतापूर्वक पुनर्वास कार्यक्रम संचालित किया गया। मुकुंदरा हिल्स राज्य का तीसरा घोषित बाघ अभयारण्य है। केवलादेव उद्यान मुख्य रूप से पक्षियों हेतु समर्पित है। राष्ट्रीय मरु उद्यान भी बाघों के स्थान पर गोडावण जैसे जीवों हेतु जाना जाता है।

15. (1) कोटा
मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है, जिसका अधिकांश क्षेत्र कोटा जिले के अंतर्गत आता है। यह अभयारण्य दर्रा, जवाहर सागर और चंबल वन्यजीव अभयारण्यों के अंशों को सम्मिलित कर निर्मित किया गया है। यह क्षेत्र अपनी विंध्य पर्वत श्रृंखला और सघन वनों हेतु विख्यात है। यहाँ बाघों के साथ-साथ पैंथर और गागरोनी तोते जैसी दुर्लभ प्रजातियां भी पाई जाती हैं। यह पारिस्थितिक संतुलन हेतु अनिवार्य है।

16. (2) चिंकारा
चिंकारा राजस्थान का आधिकारिक राज्य पशु है जिसे वन्यजीव श्रेणी के अंतर्गत रखा गया है। यह एक लघु और चपल मृग है जो मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में निवास करता है। न्यून जल सेवन और कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों में जीवित रहने की इसकी क्षमता अद्वितीय है। राज्य सरकार ने 1981 में इसे राज्य प्रतीक के रूप में मान्यता दी थी। चिंकारा का संरक्षण थार मरुस्थल की जैव विविधता हेतु अनिवार्य है।

17. (2) खेजड़ी - मरुद्भिद वृक्ष
राजस्थान के राज्य प्रतीकों का उनकी पारिस्थितिक श्रेणी के साथ गहरा संबंध है। खेजड़ी एक आदर्श मरुद्भिद वृक्ष है जो शुष्क जलवायु हेतु पूर्णतः अनुकूलित है। रोहिड़ा एक मरुस्थलीय वृक्ष है, जलीय पौधा नहीं। गोडावण एक थलचर पक्षी है जो शुष्क घास के मैदानों में रहता है, यह जलपक्षी नहीं है। चिंकारा एक शाकाहारी मृग प्रजाति है, मांसाहारी नहीं। ये प्रतीक राज्य की प्राकृतिक विरासत का सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं।

18. (2) उष्णकटिबंधीय कांटेदार - उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती - मिश्रित पर्णपाती
राजस्थान में पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर वर्षा की मात्रा में क्रमिक वृद्धि होती है। इस कारण वनस्पतियों का स्वरूप भी परिवर्तित होता है। सर्वप्रथम पश्चिमी मरुस्थल में उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन पाए जाते हैं। तत्पश्चात मध्य क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों का विस्तार मिलता है। अंत में पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी भागों में सघन मिश्रित पर्णपाती वन दिखाई देते हैं। यह क्रम वर्षा के वितरण का अनुसरण करता है।

19. (3) नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके और फसलों के साथ सतही जल के लिए प्रतिस्पर्धा किए बिना मिट्टी को समृद्ध करके।
खेजड़ी का वृक्ष शुष्क कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में जीवन रेखा के समान है। यह अपनी जड़ों के माध्यम से मिट्टी में नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करता है, जिससे भूमि की उर्वरता बढ़ती है। इसकी जड़ें बहुत गहरी होती हैं, जिससे यह ऊपरी सतह की फसलों के साथ जल हेतु प्रतिस्पर्धा नहीं करता। इसके नीचे फसलें बेहतर तरीके से पनपती हैं। यह वृक्ष चारा, ईंधन और पोषण प्रदान कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है।

NODIA

20. (1) केवल I और II
सरिस्का टाइगर रिजर्व अलवर जिले में अरावली पर्वतमाला के मध्य स्थित है। यहाँ 2005 में बाघों के विलोपन के पश्चात 2008 में रणथंभौर से बाघों का सफल स्थानांतरण किया गया था। यह विश्व में बाघों के पुनर्वास का अपनी तरह का प्रथम प्रमुख प्रयास था। यद्यपि यहाँ ऐतिहासिक अवशेष और मंदिर स्थित हैं, किंतु इसे वास्तुशिल्प हेतु यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त नहीं है। यह संरक्षण का प्रमुख केंद्र है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वर्षा
राजस्थान में प्राकृतिक वनस्पति का वितरण मुख्य रूप से वर्षा की मात्रा द्वारा निर्धारित होता है। राज्य के पश्चिमी भाग में न्यून वर्षा के कारण मरुस्थलीय वनस्पति और कांटेदार झाड़ियाँ पाई जाती हैं। इसके विपरीत, दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा की अधिकता के कारण सघन वन और पर्णपाती वृक्ष मिलते हैं। जलवायु और वर्षा के स्तर में यह भिन्नता वनस्पतियों की विविधता को गहराई से प्रभावित करती है।

2. (1) सूर्य के प्रकाश के अवशोषण को अधिकतम करने के लिए पत्तियां चौड़ी और पतली होती हैं।
मरुस्थलीय वनस्पति शुष्क जलवायु में जीवित रहने के लिए विशिष्ट अनुकूलन प्रदर्शित करती है। जल की हानि को कम करने के लिए इन पौधों की पत्तियां बहुत छोटी, सुई जैसी या कांटों में रूपांतरित होती हैं। चौड़ी और पतली पत्तियां वाष्पोत्सर्जन को बढ़ाती हैं, जो मरुस्थलीय परिस्थितियों के प्रतिकूल है। गहरी जड़ें और मोमी परत जैसे लक्षण नमी बनाए रखने में सहायक होते हैं। यह पारिस्थितिक तंत्र अत्यंत सीमित जल संसाधनों पर निर्भर है।

3. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान की भौगोलिक विविधता के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं। पश्चिमी शुष्क क्षेत्र मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों के लिए जाना जाता है। राज्य के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जिलों में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन विस्तृत हैं। माउंट आबू का पर्वतीय क्षेत्र उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों का एकमात्र स्थल है। दक्षिणी अरावली के पहाड़ी भागों में मिश्रित पर्णपाती वन प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह वर्गीकरण वर्षा और ऊँचाई पर आधारित है।

4. (4) मरुद्भिद पौधों की प्रजातियों की प्रधानता
पश्चिमी राजस्थान की कठोर जलवायु परिस्थितियाँ पौधों के विकास को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। उच्च तापमान और न्यून वर्षा के कारण यहाँ मरुद्भिद वनस्पतियों का विकास हुआ है। ये पौधे सूखे की स्थिति में जीवित रहने के लिए शारीरिक रूप से अनुकूलित होते हैं। इनमें छोटी पत्तियां, गहरी जड़ें और मांसल तने जैसे विशेष लक्षण पाए जाते हैं। यह पारिस्थितिक तंत्र जैव विविधता के संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील माना जाता है।

5. (1) केवल I और II
उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन राजस्थान के उन क्षेत्रों में विस्तृत हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 50 सेमी से कम होती है। ये मुख्य रूप से पश्चिमी शुष्क और अर्ध-शुष्क जिलों में पाए जाते हैं। इन वनों के वृक्षों में गहरी जड़ें और मोटी छाल होती है, जो उन्हें जल की कमी से बचने में सहायता करती है। यहाँ 150 सेमी वर्षा की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि ये बहुत कम वर्षा वाले क्षेत्र हैं।

6. (2) प्रोसोपिस सिनेरेरिया
राजस्थान का राज्य वृक्ष खेजड़ी थार मरुस्थल के पारिस्थितिक तंत्र में आधार स्तंभ की भूमिका निभाता है। इसका वैज्ञानिक नाम प्रोसोपिस सिनेरेरिया है, जो फलीदार पौधों के कुल से संबंधित है। यह वृक्ष शुष्क जलवायु के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी है और मृदा की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इसके महत्व के कारण इसे 'मरुस्थल का गौरव' भी कहा जाता है। इसकी पत्तियां पशुओं हेतु पौष्टिक आहार हैं।

7. (4) इनमें कांटेदार झाड़ियों और कैक्टस की प्रधानता होती है।
माउंट आबू के उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन राज्य की एक विशिष्ट वानस्पतिक विशेषता हैं। ये वन अधिक ऊँचाई और उच्च आर्द्रता वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जहाँ आम और जामुन जैसे वृक्ष प्रचुर मात्रा में होते हैं। यहाँ राज्य की सर्वाधिक औसत वर्षा होती है, जो इन वनों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इन क्षेत्रों में कांटेदार झाड़ियों और कैक्टस की प्रधानता नहीं होती, क्योंकि वे शुष्क क्षेत्रों के लक्षण हैं।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र स्थान है जहाँ उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन पाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और उच्च ऊँचाई है, जो तापमान को कम रखती है। यहाँ होने वाली भारी वर्षा इन वनों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। उच्च आर्द्रता और विशिष्ट सूक्ष्म जलवायु के कारण ही ये वन इस सीमित क्षेत्र तक संकुचित हैं। यह क्षेत्र अत्यंत संवेदनशील है।

9. (3) धोक (एनोगेइसस पेंडुला) इन वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वृक्ष प्रजाति है।
राजस्थान के पूर्वी और दक्षिणी भागों में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन विस्तृत हैं। इन वनों की सबसे प्रमुख वृक्ष प्रजाति धोक है, जो राज्य के बड़े वन क्षेत्र को आच्छादित करती है। ये वृक्ष ग्रीष्म ऋतु के दौरान अपनी पत्तियां गिरा देते हैं ताकि जल का संरक्षण किया जा सके। ये वन मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा का स्तर 50 से 100 सेमी के मध्य रहता है।

10. (3) केवल IV
रोहिड़ा राजस्थान का राज्य पुष्प है जिसे 1983 में यह गौरव प्रदान किया गया था। इसका वैज्ञानिक नाम टेकोमेला उंडुलता है और इसे अपनी सुदृढ़ लकड़ी के कारण 'मारवाड़ टीक' कहा जाता है। यह मुख्य रूप से मार्च और अप्रैल के महीनों के दौरान

Downloaded from www.pdf.tube

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. राजस्थान के संरक्षण प्रयासों के संदर्भ में, कौन सा विशिष्ट पदनाम केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्राष्ट्रीय महत्व को दर्शाता है?

(1) प्रोजेक्ट एलीफेंट रिजर्व
(2) बायोस्फीयर रिजर्व
(3) समुद्री संरक्षित क्षेत्र
(4) रामसर साइट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. राजस्थान की मरुस्थलीय लोमड़ी के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।

(1) यह विशेष रूप से दक्षिणी अरावली के घने जंगलों में पाई जाती है।
(2) यह शुष्क झाड़ीदार भूमि में रहती है और कृंतकों तथा कीड़ों का भक्षण करती है।
(3) यह एक विदेशी प्रजाति है जिसे अफ्रीकी सवाना क्षेत्रों से लाया गया है।
(4) इसे जीवित रहने के लिए बड़े और बारहमासी जल निकायों की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. एक वनस्पतिशास्त्री राजस्थान में एक ऐसे पौधे का अवलोकन करता है जिसमें गूदेदार तने और एक मोटी मोमी उपत्वचा है। यह पौधा संभवतः किस पारिस्थितिक श्रेणी से संबंधित है?

(1) जलोद्भिद
(2) समोद्भिद
(3) मरुद्भिद
(4) लवणोद्भिद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. भारत सरकार द्वारा मुकुंदरा हिल्स क्षेत्र को बाघ अभयारण्य के रूप में किस वर्ष घोषित किया गया था?

(1) 1973
(2) 1994
(3) 2013
(4) 2021
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. 2008 में शुरु किए गए सरिस्का बाघ पुनर्वास कार्यक्रम की प्रमुख सफलता क्या थी?

(1) यह विश्व का पहला सफल बाघ स्थानांतरण था जहाँ वे पूर्व में विलुप्त हो गए थे।
(2) यह स्थानीय जलवायु के लिए साइबेरियन बाघों के आयात पर निर्भर था।
(3) इसने रिजर्व के 100 किमी के दायरे में सभी बस्तियों को समाप्त कर दिया।
(4) इसमें चंबल नदी को शामिल करने के लिए रिजर्व की सीमाओं को बदलना शामिल था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. राजस्थान में गोडावण के प्राथमिक संरक्षित आवासों में से कौन सा "असंगत" है?

(1) राष्ट्रीय मरु उद्यान
(2) माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य
(3) सोरसन क्षेत्र (बारां)
(4) सोखलिया क्षेत्र (अजमेर)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

www.nodia.in

21. (3) गोडावण
राजस्थान का राज्य पक्षी गोडावण अपने वृहद आकार और अत्यधिक भार के कारण पहचाना जाता है। स्थानीय स्तर पर इसे गोडावण कहते हैं, जबकि वैज्ञानिक जगत में इसे अर्देओटिस नाइग्रिसेप्स कहा जाता है। यह पक्षी मुख्य रुप से शुष्क घास के मैदानों और विवृत क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी घटती संख्या के कारण यह वर्तमान में एक अत्यंत संकटापन्न प्रजाति है। इसके संरक्षण हेतु जैसलमेर में विशेष कृत्रिम प्रजनन कार्यक्रम संचालित हैं।

22. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
राजस्थान की विभिन्न वन्यजीव प्रजातियां अपने विशिष्ट आवासों हेतु प्रसिद्ध हैं। गोडावण मुख्य रूप से जैसलमेर के राष्ट्रीय मरु उद्यान के शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। बंगाल टाइगर का प्रमुख संरक्षण स्थल रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान है। साइबेरियन क्रेन जैसे दुर्लभ प्रवासी पक्षी भरतपुर के केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान में शीतकाल में आते हैं। उड़न गिलहरी प्रतापगढ़ जिले के सीतामाता अभयारण्य की एक विशिष्ट विशेषता है। यह विविधता सराहनीय है।

23. (4) यह मुख्य रूप से भारी उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावनों से बना है।
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर जिले में स्थित है और अपनी बाघ जनसंख्या हेतु विश्व प्रसिद्ध है। यह उद्यान उत्तर में बनास नदी और दक्षिण में चंबल नदी द्वारा प्राकृतिक रुप से घिरा हुआ है। इसकी सीमाओं के भीतर ऐतिहासिक रणथंभौर दुर्ग स्थित है जो इसके सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाता है। यहाँ मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं, न कि सघन सदाबहार वर्षावन। यह बाघों का प्रमुख आवास है।

24. (1) कृषि विस्तार और बिजली की लाइनों के कारण आवास का नुकसान।
राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण की जनसंख्या में तीव्र गिरावट का मुख्य कारण उनके प्राकृतिक आवास का विनाश है। कृषि विस्तार और चराई के कारण शुष्क घास के मैदान संकुचित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ऊँचाई पर स्थित विद्युत लाइनें इनके लिए सबसे बड़ा खतरा हैं, जिनसे टकराकर इनकी मृत्यु हो जाती है। यह पक्षी बहुत कम संख्या में अंडे देता है, जिससे इसकी जनसंख्या बहाली एक अत्यंत कठिन प्रक्रिया है।

25. (1) I, II और IV
खेजड़ी राजस्थान की संस्कृति और पारिस्थितिकी में गहराई से समाहित है। विजयदशमी के पर्व पर इसकी विशेष पूजा की जाती है और इसकी फलियां सांगरी के रूप में स्थानीय व्यंजनों का अंग हैं। 1730 में अमृता देवी के नेतृत्व में हुए खेजरली बलिदान ने पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक मिसाल कायम की थी। यह वृक्ष केवल अरावली तक सीमित नहीं है, अपितु पूरे थार मरुस्थल में पाया जाता है। यह मरुस्थल का कल्पवृक्ष है।

26. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान की मरुस्थलीय वनस्पतियों में वाष्पोत्सर्जन को न्यून करने हेतु विशेष शारीरिक रुपांतरण पाए जाते हैं। पत्तियों का कांटों में परिवर्तित होना और सतह पर मोमी आवरण होना जल की हानि को रोकने के प्रभावी उपाय हैं। शुष्क जलवायु में जहाँ जल का अभाव होता है, ये लक्षण पौधों को जीवित रहने और नमी बनाए रखने में सहायता करते हैं। यह अनुकूलन थार मरुस्थल की कठोर परिस्थितियों में जीवन संभव बनाता है।

27. (4) कम पानी वाले वातावरण में जीवित रहने के लिए अनुकूलित पौधे।
मरुद्भिद उन पौधों को कहा जाता है जो अत्यंत न्यून जल उपलब्धता वाले वातावरण में जीवित रहने हेतु अनुकूलित होते हैं। ये पौधे मुख्य रुप से मरुस्थलीय और शुष्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ मृदा में नमी का अभाव रहता है। इनमें जल संरक्षण हेतु लघु पत्तियां, मांसल तने और बहुत लंबी जड़ें जैसे विशिष्ट लक्षण विकसित होते हैं। राजस्थान का थार मरुस्थल इन वनस्पतियों का प्रमुख केंद्र है।

28. (2) रोहिड़ा
रोहिड़ा वृक्ष अपनी सुदृढ़ और उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी हेतु पूरे राजस्थान में विख्यात है। इसकी लकड़ी का उपयोग उत्कृष्ट फर्नीचर, नक्काशी और कृषि उपकरणों के निर्माण में किया जाता है, जिसके कारण इसे 'मारवाड़ टीक' कहा जाता है। यह राजस्थान का राज्य पुष्प भी है और शुष्क क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके आकर्षक केसरिया फूल मरुस्थल की सुंदरता बढ़ाते हैं। यह वृक्ष ग्रामीण आजीविका हेतु मूल्यवान है।

29. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
सरिस्का टाइगर रिजर्व ने 2005 में अवैध शिकार के कारण अपनी संपूर्ण बाघ जनसंख्या खो दी थी, जो एक बड़ी संरक्षण विफलता थी। यद्यपि, सरकार ने इस रिजर्व को समाप्त नहीं किया, अपितु यहाँ बाघों के पुनर्वास हेतु एक महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की। 2008 में रणथंभौर से बाघों को सफलतापूर्वक यहाँ स्थानांतरित किया गया, जिससे यह पुनः स्थापित हो सका। आज यह रिजर्व बाघों के संरक्षण का सुरक्षित स्थल है।

30. (2) III, II, I
राजस्थान में बाघ अभयारण्यों की स्थापना एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सर्वप्रथम 1973-74 में रणथंभौर को बाघ परियोजना के तहत अधिसूचित किया गया था। इसके पश्चात सरिस्का को 1978 में बाघ अभयारण्य का आधिकारिक दर्जा प्राप्त हुआ। मुकुंदरा हिल्स राज्य का तीसरा बाघ अभयारण्य बना जिसे 2013 में अधिसूचित किया गया था। यह क्रम राज्य में वन्यजीव संरक्षण प्रयासों के विस्तार और सुरक्षित गलियारे बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

31. (3) केवल IV
केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर में स्थित एक अद्वितीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है। यह रामसर सम्मेलन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि है। यहाँ दलदलों और वनों का मिश्रित आवास पाया जाता है जो सहस्रों जलपक्षियों को आकर्षित करता है। यद्यपि, यह संकटापन्न गोडावण हेतु प्रजनन स्थल नहीं है, क्योंकि गोडावण शुष्क घास के मैदानों में रहना

Click Here to Buy book on Amazon

पसंद करते हैं, न कि आर्द्रभूमियों में। यह उद्यान प्रवासी पक्षियों हेतु प्रसिद्ध है।

32. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के राज्य प्रतीकों के वैज्ञानिक नाम उनकी विशिष्ट पहचान सुनिश्चित करते हैं। राज्य वृक्ष खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम प्रोसोपिस सिनेरेरिया है। राज्य पुष्प रोहिड़ा को टेकोमेला उंडुलता कहते हैं। वन्यजीव श्रेणी के राज्य पशु चिंकारा का नाम गजेला बेनेट्टी है। राज्य पक्षी गोडावण को अर्देओटिस नाइग्रिसेप्स के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ये नाम वैज्ञानिक जगत में इन प्रजातियों के संरक्षण और अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

33. (2) जैसलमेर
उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ मध्यम वर्षा होती है। चित्तौड़गढ़, सवाई माधोपुर और उदयपुर जैसे जिलों में पर्याप्त वर्षा के कारण ये वन प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसके विपरीत, जैसलमेर एक अत्यधिक शुष्क जिला है जहाँ वर्षा बहुत न्यून होती है और मरुस्थलीय परिस्थितियाँ प्रभावी हैं। यहाँ केवल कांटेदार झाड़ियाँ और मरुद्भिद वनस्पतियाँ ही जीवित रह सकती हैं। अतः यहाँ शुष्क पर्णपाती वन अनुपस्थित हैं।

34. (1) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान - पदम तालाब
राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यानों की अपनी विशिष्ट भौगोलिक पहचान है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित पदम तालाब एक प्रमुख जल निकाय है जहाँ प्रायः बाघों को देखा जाता है। केवलादेव उद्यान आर्द्रभूमि हेतु प्रसिद्ध है, न कि अरावली शिखरों हेतु। राष्ट्रीय मरु उद्यान अपने विशाल रेत के टीलों हेतु जाना जाता है, चंबल की कंदराओं हेतु नहीं। मुकुंदरा हिल्स अपनी पहाड़ियों और खाइयों हेतु प्रसिद्ध है। ये जल स्रोत वन्यजीवों हेतु अनिवार्य हैं।

35. (3) आनुवंशिक विनिमय की अनुमति देना और बाघों के अंतःप्रजनन को रोकना।
बाघ अभयारण्यों के मध्य वन्यजीव गलियारों का निर्माण पारिस्थितिक दृष्टि से अनिवार्य है। ये गलियारे पृथक क्षेत्रों की बाघ जनसंख्या के मध्य आनुवंशिक विनिमय की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे अंतःप्रजनन के संकट को कम करने में सहायता मिलती है जो प्रजाति के स्वास्थ्य हेतु हानिकारक हो सकता है। गलियारे बाघों को नए क्षेत्रों की खोज और शिकार हेतु सुरक्षित भ्रमण की अनुमति देते हैं। यह रणनीति दीर्घकालिक आनुवंशिक विविधता सुनिश्चित करती है।

36. (4) उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार
राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू अपनी विशिष्ट ऊँचाई और जलवायु के कारण राज्य में अद्वितीय वनस्पति रखता है। यहाँ की ढलानों पर मुख्य रूप से उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन पाए जाते हैं। ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का बहुत लघु अंश हैं और यहाँ की उच्च आर्द्रता के कारण वर्ष भर हरे रहते हैं। यहाँ आम, जामुन और विभिन्न प्रकार के फर्न प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह क्षेत्र अन्य वनों से भिन्न है।

37. (1) केवल I और II
राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर और बाड़मेर जिलों के विस्तृत क्षेत्र में विस्तृत है। यह उद्यान थार मरुस्थल के संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र और विशाल रेत के टीलों के संरक्षण हेतु समर्पित है। यहाँ मरुद्भिद वनस्पति और शुष्क क्षेत्रों के विशिष्ट जीव जैसे गोडावण पाए जाते हैं। इसमें सघन सागवान के वन नहीं पाए जाते, क्योंकि सागवान को अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह क्षेत्र जीवाश्मों और अद्वितीय भू-आकृतियों हेतु वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है।

38. (2) इसमें दर्रा, चंबल और जवाहर सागर अभयारण्य शामिल हैं।
मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व राजस्थान का महत्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्र है जिसमें दर्रा, राष्ट्रीय चंबल और जवाहर सागर अभयारण्यों के विभिन्न अंशों को सम्मिलित किया गया है। यह राज्य का तीसरा बाघ अभयारण्य है जिसे 2013 में अधिसूचित किया गया था। यह क्षेत्र अपनी विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं और सघन वनों हेतु विख्यात है, जो बाघों हेतु उत्कृष्ट आवास प्रदान करते हैं। यहाँ चंबल नदी का प्रवाह क्षेत्र घड़ियाल संरक्षण हेतु भी महत्वपूर्ण है।

39. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जिलों में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन व्यापक रूप से विस्तृत हैं। इसका प्राथमिक कारण इन क्षेत्रों में होने वाली अपेक्षाकृत अधिक वार्षिक वर्षा है, जो सामान्यतः 50 से 100 सेमी के मध्य रहती है। यह वर्षा स्तर पर्णपाती वृक्षों के विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है। ये वृक्ष ग्रीष्म ऋतु में अपनी पत्तियां गिराकर जल का संचय करते हैं। जलवायु का यह विशिष्ट प्रतिरुप ही इन वनों को निर्धारित करता है।

NODIA

40. (1) शमी
राजस्थान के राज्य वृक्ष खेजड़ी का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व प्राचीन काल से रहा है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और ग्रामीण परंपराओं में इसे 'शमी' के नाम से पूजा जाता है। यह वृक्ष मरुस्थल की विषम परिस्थितियों में भी हरा-भरा रहता है, इसलिए इसे 'मरुस्थल का कल्पवृक्ष' भी कहा जाता है। दशहरा जैसे पर्वों पर इसकी पूजा का विशेष विधान है। ग्रामीण जीवन में इसके बहुआयामी उपयोगों के कारण इसे स्थानीय समुदायों द्वारा अत्यंत पवित्र वृक्ष माना जाता है।

41. (3) गंभीर मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण में तेजी
राजस्थान में अनियंत्रित और अत्यधिक पशु चराई प्राकृतिक वनस्पति हेतु एक गंभीर खतरा है। जब पशु घास और लघु पौधों को नष्ट कर देते हैं, तो मिट्टी की पकड़ शिथिल हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप मृदा अपरदन तीव्र हो जाता है और उपजाऊ भूमि मरुस्थल में परिवर्तित होने लगती है। यह प्रक्रिया मरुस्थलीकरण की दर को बढ़ाती है और प्राकृतिक आवासों को नष्ट करती है। चराई का दबाव पारिस्थितिक तंत्र की पुनरुत्पादन क्षमता को समाप्त कर देता है।

42. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान में विभिन्न संरक्षण रणनीतियाँ विशिष्ट प्रजातियों पर केंद्रित हैं। बाघों के पुनर्वास और उनकी जनसंख्या बहाली का सफल कार्य सरिस्का टाइगर रिजर्व में किया गया है। संकटापन्न गोडावण पक्षी के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय मरु उद्यान में कृत्रिम प्रजनन के प्रयास जारी हैं। बिश्नोई समुदाय द्वारा खेजड़ी वृक्षों के संरक्षण का संकल्प ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में पक्षियों हेतु कृत्रिम आर्द्रभूमि और जल प्रबंधन की सुदृढ़ व्यवस्था की गई है।

43. (2) I, II और III
राजस्थान की जैव विविधता कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। अरावली पहाड़ियों में अवैध खनन से पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ रहा है और आवास नष्ट हो रहे हैं। बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के कारण प्राकृतिक आवास खंडित हो रहे हैं। विलायती बबूल जैसी विदेशी और आक्रामक प्रजातियों का प्रसार देशी वनस्पतियों को विस्थापित कर रहा है। अत्यधिक वर्षा राज्य में कोई बड़ी चुनौती नहीं है, क्योंकि यहाँ मुख्य समस्या जल का अभाव और शुष्कता है।

44. (2) व्यावसायिक वनों की कटाई
राजस्थान में संरक्षण की एक समृद्ध और प्राचीन परंपरा रही है। ओरण पवित्र उपवन हैं जहाँ धार्मिक आस्था के कारण वनस्पतियों की कटाई प्रतिबंधित होती है। जोहड़ पारंपरिक जल संचयन संरचनाएं हैं जो स्थानीय पारिस्थितिकी का समर्थन करती हैं। खेजरली बलिदान पर्यावरण रक्षा हेतु सर्वोच्च त्याग का प्रतीक है। इसके विपरीत, व्यावसायिक वनों की कटाई एक विनाशकारी गतिविधि है जो संरक्षण के सिद्धांतों के विरुद्ध है। यह जैव विविधता को गंभीर क्षति पहुँचाती है।

45. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजस्थान के राज्य पुष्प रोहिड़ा में अत्यंत आकर्षक और जीवंत फूल खिलते हैं, जिनका रंग पीला, नारंगी या लाल होता है। ये फूल मरुस्थल के परिदृश्य को अनुपम सुंदरता प्रदान करते हैं। रोहिड़ा के फूल मुख्य रूप से मार्च और अप्रैल के महीनों में खिलते हैं जब वसंत ऋतु का आगमन होता है। यह शीतकाल के चरम महीनों में नहीं खिलता। इसके फूलों का समय और विशिष्ट रंगत इसे मरुस्थलीय वनस्पति में विशेष पहचान दिलाती है।

46. (4) कुंभलगढ़ अभयारण्य - मैंग्रोव वनस्पति
राजस्थान के विभिन्न अभयारण्य अपनी विशिष्ट वन्यजीव प्रजातियों हेतु विख्यात हैं। ताल छापर काले हिरणों का आवास है और सीतामाता अभयारण्य उड़न गिलहरियों हेतु प्रसिद्ध है। राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियालों के संरक्षण हेतु समर्पित प्रमुख स्थल है। कुंभलगढ़ अभयारण्य अरावली की पहाड़ियों में स्थित है, यहाँ मैंग्रोव वनस्पति नहीं पाई जाती। मैंग्रोव केवल तटीय लवणीय क्षेत्रों में उगते हैं। यह शुष्क और पहाड़ी वनों का क्षेत्र है जहाँ जैव विविधता प्रचुर है।

47. (1) सरिस्का - रणथंभौर - मुकुंदरा हिल्स
राजस्थान के बाघ अभयारण्यों का उत्तर से दक्षिण की ओर क्रम राज्य के मानचित्र पर उनकी स्थिति को दर्शाता है। अलवर जिले में स्थित सरिस्का टाइगर रिजर्व सर्वाधिक उत्तर में है। इसके पश्चात दक्षिण की ओर बढ़ने पर सवाई माधोपुर का रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान आता है। अंत में, राज्य के दक्षिण-पूर्वी भाग में कोटा के निकट मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व स्थित है। यह भौगोलिक वितरण बाघ संरक्षण हेतु पारिस्थितिक क्षेत्रों के महत्व को समझने में सहायक है।

NODIA

48. (1) I, II, IV और V
राजस्थान में उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन अत्यंत सीमित क्षेत्र में पाए जाते हैं, जो कुल वन क्षेत्र के 1% से भी कम है। ये वन केवल माउंट आबू की ऊँची चोटियों तक ही सीमित हैं जहाँ वर्षा 150 सेमी से अधिक होती है। इनकी विशेषता यह है कि यहाँ के वृक्ष वर्ष भर हरे रहते हैं और वे शीतकाल में एक साथ अपनी पत्तियां नहीं गिराते। यहाँ घनी झाड़ियाँ और लताएँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

49. (2) 1981
चिंकारा को आधिकारिक तौर पर 1981 में राजस्थान का राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी) घोषित किया गया था। यह घोषणा राज्य की अद्वितीय वन्यजीव विरासत को संरक्षित करने और चिंकारा जैसी विशिष्ट मरुस्थलीय प्रजातियों के महत्व को रेखांकित करने हेतु की गई थी। चिंकारा थार मरुस्थल की शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहने हेतु पूर्णतः अनुकूलित है। इसे कानूनी संरक्षण प्रदान करने से इसकी जनसंख्या को अवैध शिकार और आवास विनाश से बचाने में सहायता मिली है।

50. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के विभिन्न वन्यजीवों में विशिष्ट पारिस्थितिक अनुकूलन पाए जाते हैं। चिंकारा एक लघु मृग है जो न्यून जल सेवन से जीवित रहने हेतु अनुकूलित है। गोडावण एक वृहद पक्षी है जो मुख्य रूप से शुष्क घास के मैदानों में निवास करता है। बंगाल टाइगर पर्णपाती वनों का शीर्ष शिकारी है और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है। साइबेरियन क्रेन एक प्रवासी पक्षी है जो शीतकाल में आर्द्रभूमि क्षेत्रों पर निर्भर रहता है। यह विविधता राज्य की प्राकृतिक संपदा है।

51. (3) यह आवासों को नष्ट करता है और महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारों को अवरुद्ध करता है।
अरावली पर्वतमाला में अनियंत्रित पत्थर खनन का स्थानीय जैव विविधता पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है। इस गतिविधि के कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं, जिससे वे विस्थापित हो रहे हैं। खनन कार्य महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारों को बाधित करता है, जो पशुओं के स्वतंत्र आवागमन हेतु आवश्यक हैं। इससे पारिस्थितिक तंत्र खंडित हो जाता है और पौधों तथा पशुओं की कई प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुँच जाती हैं। यह एक गंभीर चुनौती है।

52. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान बंगाल टाइगर के संरक्षण हेतु विश्व स्तर पर एक आदर्श आवास है। यहाँ की भौगोलिक संरचना में शुष्क पर्णपाती वन, विवृत घास के मैदान और प्रचुर जल निकाय सम्मिलित हैं। यह विविध वातावरण बाघों हेतु पर्याप्त प्रच्छन्न स्थान और शिकार का समृद्ध आधार सुनिश्चित करता है। भोजन और जल की निरंतर उपलब्धता के कारण यहाँ बाघों की संख्या में वृद्धि हुई है। यह संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र बाघों के प्रजनन हेतु उपयुक्त है।

53. (3) इनका वितान अत्यधिक सघन होता है, जो सूर्य के प्रकाश को जमीन तक पहुँचने से पूरी तरह रोकता है।
राजस्थान के उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ मध्यम वर्षा होती है। इन वनों के वृक्ष शुष्क ऋतु के दौरान अपनी पत्तियां गिरा देते हैं ताकि वे वाष्पोत्सर्जन को कम कर सकें। इन वनों में धोक, सालर और तेंदू जैसी प्रजातियों की प्रधानता होती है। इन वनों का वितान बहुत अधिक सघन नहीं होता, जिससे सूर्य का प्रकाश पर्याप्त मात्रा में धरातल तक पहुँचता है। सघन वितान केवल वर्षावनों की विशेषता है।

54. (2) यह ऐतिहासिक रूप से अलवर रियासत का शिकार क्षेत्र था।
सरिस्का टाइगर रिजर्व का इतिहास अत्यंत रोचक रहा है। आधुनिक संरक्षण क्षेत्र बनने से पूर्व यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से अलवर रियासत का एक प्रमुख शिकार क्षेत्र था जहाँ तत्कालीन महाराजा शिकार करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात इसे वन्यजीव संरक्षण हेतु आरक्षित किया गया और कालांतर में बाघ परियोजना के अंतर्गत लाया गया। यह क्षेत्र न केवल वन्यजीव विविधता हेतु प्रसिद्ध है, अपितु यहाँ स्थित प्राचीन मंदिर इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाते हैं।

55. (1) केवल I और II
राजस्थान में वन्यजीवों की सुरक्षा हेतु वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 महत्वपूर्ण कानूनी ढांचा है। इस अधिनियम के तहत संकटापन्न गोडावण को अनुसूची I में रखा गया है, जो इसे उच्चतम कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है। राज्य में चिंकारा या किसी अन्य वन्यजीव के शिकार की अनुमति किसी भी परिस्थिति में नहीं दी जाती। शिकार करना एक गंभीर अपराध है जिसके लिए कठोर दंड का विधान है। यह कानून राज्य की प्राकृतिक विरासत को बचाने हेतु प्रतिबद्ध है।

56. (1) जैसलमेर और बाड़मेर
राष्ट्रीय मरु उद्यान राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र है। यह मुख्य रूप से दो पश्चिमी जिलों, जैसलमेर और बाड़मेर की सीमाओं के भीतर विस्तृत है। इसका वृहद भाग जैसलमेर में और शेष भाग बाड़मेर में स्थित है। यह उद्यान थार मरुस्थल के अद्वितीय भू-दृश्य और विशिष्ट जैव विविधता के संरक्षण हेतु विख्यात है। यहाँ पाए जाने वाले करोड़ों वर्ष पुराने जीवाश्म और दुर्लभ गोडावण इसे वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण बनाते हैं।

57. (3) खुले शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र और निर्बाध घास के मैदान।
गोडावण के प्रजनन और घोंसले बनाने हेतु विशिष्ट प्रकार के आवास की आवश्यकता होती है। यह पक्षी मुख्य रूप से विवृत शुष्क झाड़ीदार क्षेत्रों और निर्बाध घास के मैदानों को प्राथमिकता देता है जहाँ सुरक्षा और आहार सुलभ हो। सघन वन या ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र इसके लिए उपयुक्त नहीं हैं क्योंकि इसे उड़ने हेतु विवृत स्थान की आवश्यकता होती है। मानवीय हस्तक्षेप से मुक्त घास के मैदान इस संकटापन्न प्रजाति के अस्तित्व हेतु अनिवार्य कारक माने जाते हैं।

58. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान की वनस्पतियों का प्रकार वर्षा की उपलब्धता पर निर्भर करता है। मरुस्थलीय वनस्पति उन क्षेत्रों में होती है जहाँ वर्षा 25 सेमी से कम होती है। उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन 25 से 50 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों हेतु 50 से 100 सेमी की मध्यम वर्षा आवश्यक है। माउंट आबू के उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन 150 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में फलते-फूलते हैं। यह सीधा संबंध वृक्षों की सघनता निर्धारित करता है।

59. (1) I, II और III
मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व का नाम विंध्य श्रेणी की मुकुंदरा पहाड़ियों पर रखा गया है। यह राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है और कोटा तथा झालावाड़ जिलों में विस्तृत है। यह रिजर्व दुर्लभ गागरोनी तोते के प्राकृतिक आवास हेतु विख्यात है। यहाँ मुख्य रूप से पर्णपाती और सघन वन पाए जाते हैं, न कि मरुस्थलीय मरुद्भिद वनस्पति, क्योंकि यह क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक वर्षा प्राप्त करता है। यह रिजर्व बाघों हेतु एक सुरक्षित गलियारा प्रदान करता है।

60. (2) II, III, I
राजस्थान में विभिन्न वन प्रकारों का भौगोलिक विस्तार वर्षा और जलवायु के अनुसार भिन्न होता है। राज्य में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती (धोक) वनों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है जो पूर्वी और दक्षिणी राजस्थान के बड़े भाग को आच्छादित करते हैं। इसके पश्चात उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों का स्थान आता है। उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन केवल माउंट आबू तक सीमित होने के कारण न्यूनतम क्षेत्रफल में पाए जाते हैं। यह क्रम राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

61. (3) बाणगंगा और गम्भीरी
केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित आर्द्रभूमि है जिसे जीवित रखने हेतु निरंतर जल आपूर्ति की आवश्यकता होती है। ऐतिहासिक रूप से बाणगंगा और गम्भीरी नदियाँ इस उद्यान के तालाबों को जल पहुँचाने का मुख्य स्रोत रही हैं। इन नदियों के जल से ही यहाँ का विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुआ है जो सहस्रों प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है। वर्तमान में शुष्क महीनों के दौरान अजान बाँध और नहर प्रणालियों के माध्यम से जल की व्यवस्था की जाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

62. (4) पौधों में गहरी मूसला जड़ें होती हैं जो विशेष रूप से मरुस्थल की ढीली रेत में जीवित रहने के लिए अनुकूलित होती हैं।
माउंट आबू की वनस्पति यहाँ की विशिष्ट शीतल और आर्द्र जलवायु हेतु अनुकूलित है। यहाँ सदाबहार और अर्ध-सदाबहार प्रजातियों का अनूठा मिश्रण मिलता है। अनुकूल सूक्ष्म जलवायु के कारण यहाँ ऑर्किड जैसे पौधे भी पाए जाते हैं जो राज्य के अन्य भागों में दुर्लभ हैं। यहाँ के पौधों में रेतीली मिट्टी हेतु मूसला जड़ें नहीं होतीं, क्योंकि यहाँ की भूमि पथरीली और पहाड़ी है। मरुस्थलीय जड़ों का अनुकूलन केवल थार के शुष्क क्षेत्रों के पौधों में पाया जाता है।

63. (1) खेजड़ी और रोहिड़ा जैसी देशी मरुद्भिद प्रजातियों का उपयोग करके वनीकरण।
पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण को रोकने और रेत के टीलों को स्थिर करने का सर्वाधिक प्रभावी तरीका वनीकरण है। इसके लिए खेजड़ी और रोहिड़ा जैसी देशी मरुद्भिद प्रजातियों का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि वे यहाँ की कठोर जलवायु में सुगमता से पनप सकती हैं। इन वृक्षों की जड़ें मिट्टी को दृढ़ता से पकड़ती हैं, जिससे वायु के साथ मृदा अपरदन कम होता है। यह प्राकृतिक उपाय पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और स्थानीय समुदायों को संसाधन प्रदान करने में सहायक है।

64. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
खेजड़ी का वृक्ष राजस्थान के ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग है। इसकी शुष्क फलियों को सांगरी कहा जाता है, जो प्रसिद्ध राजस्थानी व्यंजन 'पंचकूटा' का मुख्य घटक है। खेजड़ी के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु की भीषण ऊष्मा के दौरान अपनी पत्तियां नहीं गिराते, अपितु वे वर्ष भर हरे-भरे रहते हैं। इसी कारण अकाल के समय यह पशुओं हेतु हरे चारे का सबसे विश्वसनीय और महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इसकी यह विशेषता इसे मरुस्थल का जीवनरक्षक बनाती है।

65. (1) I, II और IV
राजस्थान की मरुस्थलीय वनस्पतियों में शुष्कता का सामना करने हेतु अद्भुत अनुकूलन पाए जाते हैं। इनमें जल संचय हेतु गूदेदार तने और वाष्पोत्सर्जन को न्यून करने हेतु धंसे हुए रंध्र होते हैं। भूजल के गहरे स्तर तक पहुँचने हेतु इन पौधों में अत्यंत लंबी मूसला जड़ प्रणालियाँ विकसित होती हैं। चौड़ी पत्तियां मरुस्थलीय परिस्थितियों हेतु अनुकूल नहीं हैं, क्योंकि वे जल की हानि बढ़ाती हैं। यह विशिष्ट संयोजन इन पौधों को थार की कठोरता में जीवित रखता है।

66. (1) गोडावण
राजस्थान की पक्षी विविधता में गोडावण एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह पक्षी मुख्य रूप से शुष्क घास के मैदानों का स्थाई निवासी है और वर्ष भर इन्हीं क्षेत्रों में रहता है। इसके विपरीत, साइबेरियन क्रेन, बार-हेडेड गूज और पेलिकन प्रवासी पक्षी हैं जो शीत ऋतु में अस्थायी रूप से राजस्थान की आर्द्रभूमियों में आते हैं। गोडावण का जीवन चक्र पूर्णतः मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर है। आवास विशिष्टता के कारण इसे संरक्षण की सर्वाधिक आवश्यकता और प्राथमिकता दी जाती है।

67. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में वन्यजीव संरक्षण और राज्य प्रतीकों की घोषणा के विभिन्न चरण ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। रणथंभौर में बाघ परियोजना का प्रारंभ 1973-74 में हुआ था। केवलादेव घाना को 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का गौरव प्राप्त हुआ। चिंकारा को 1981 में राज्य पशु के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी। खेजड़ी को इसके पारिस्थितिक महत्व के कारण 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया था। ये निर्णय प्राकृतिक संपदा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

68. (4) तेंदू - पारंपरिक बीड़ी बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली पत्तियां
राजस्थान की विभिन्न वृक्ष प्रजातियां अपनी विशिष्ट आर्थिक उपयोगिता हेतु जानी जाती हैं। तेंदू के वृक्ष की पत्तियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनका उपयोग पारंपरिक बीड़ी निर्माण हेतु किया जाता है। रोहिड़ा अपनी उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी हेतु विख्यात है, सुगंधित तेल हेतु नहीं। सालर के वृक्ष का उपयोग पैकिंग के डिब्बे बनाने में होता है। बबूल शुष्क क्षेत्रों का वृक्ष है और यह पर्वतीय लकड़ी प्रदान नहीं करता। ये संसाधन स्थानीय समुदायों हेतु आधार हैं।

69. (2) 1973
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान को 1973 में भारत सरकार की 'बाघ परियोजना' के अंतर्गत सम्मिलित किया गया था। यह राज्य का प्रथम और देश के उन प्रारंभिक नौ बाघ अभयारण्यों में से एक था जिन्हें बाघों के संरक्षण हेतु चयनित किया गया था। इस कार्यक्रम के तहत बाघों के आवास संरक्षण और अवैध शिकार रोकने हेतु व्यापक प्रयास प्रारंभ किए गए। रणथंभौर की सफलता ने इसे विश्व के श्रेष्ठ टाइगर रिजर्व में से एक बना दिया है। यहाँ बाघों की संख्या में वृद्धि हुई है।

70. (2) II, III, I
राजस्थान में जैव विविधता हेतु अवैध शिकार, आवास विखंडन और जलवायु परिवर्तन गंभीर संकट उत्पन्न करते हैं। यद्यपि, पारंपरिक ओरण और गोचर भूमि प्रणालियों को जैव विविधता हेतु संकट नहीं माना जाता। इसके विपरीत, ये प्रणालियाँ शताब्दियों से प्रकृति संरक्षण में सहायक रही हैं। ओरण समुदायों द्वारा रक्षित पवित्र उपवन हैं जहाँ वनस्पतियों की सुरक्षा की जाती है, और गोचर भूमि पशुओं हेतु प्राकृतिक चरागाह है। ये प्रथाएं पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

71. (4) वैश्विक मरुस्थलों के बीच थार मरुस्थल का जैव विविधता सूचकांक बहुत कम है।
राजस्थान की जैव विविधता के संदर्भ में थार मरुस्थल के बारे में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यहाँ का जैव विविधता सूचकांक बहुत कम है। वस्तुतः, थार विश्व के सर्वाधिक घनी जनसंख्या वाले और जैव विविधता से समृद्ध मरुस्थलों में से एक है। यहाँ मरुद्भिद पौधों और शुष्क जलवायु के अनुकूल जीवों की अनेक दुर्लभ प्रजातियां पाई जाती हैं। अरावली श्रेणी एक महत्वपूर्ण जैव विविधता केंद्र के रूप में कार्य करती है। विलायती बबूल जैसी आक्रामक प्रजातियां देशी पारिस्थितिकी हेतु चुनौती हैं।

NODIA

72. (1) इसने प्रतिस्पर्धा के माध्यम से देशी वनस्पतियों को दबा दिया है।
राजस्थान में विदेशी प्रजाति विलायती बबूल के व्यापक रोपण का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यह एक अत्यंत आक्रामक पादप है जो तीव्रता से फैलता है और संसाधनों हेतु स्थानीय प्रजातियों के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। इसके प्रसार ने खेजड़ी और रोहिड़ा जैसी देशी वनस्पतियों के विकास को बाधित किया है। यह पादप न तो पशुओं के चारे हेतु उपयोगी है और न ही यह स्थानीय जैव विविधता का समर्थन करता है। इसके विस्तार से देशी प्रजातियां लुप्त हो रही हैं।

73. (3) भरतपुर पक्षी अभयारण्य
केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान को आधिकारिक रूप से राष्ट्रीय उद्यान घोषित किए जाने से पूर्व इसे 'भरतपुर पक्षी अभयारण्य' के नाम से जाना जाता था। यह स्थान पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियों, विशेष रूप से प्रवासी पक्षियों हेतु विश्व भर में प्रसिद्ध रहा है। 1982 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा प्राप्त हुआ और 1985 में इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता मिली। इसका प्राचीन नाम आज भी लोकप्रिय है। यह उद्यान आर्द्रभूमि संरक्षण और शोध का प्रमुख केंद्र है।

74. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
अरावली पर्वतमाला राजस्थान की जलवायु और भूगोल में निर्णायक भूमिका निभाती है। यह एक महत्वपूर्ण जलवायु अवरोध के रूप में कार्य करती है, जो थार मरुस्थल के पूर्व की ओर विस्तार को रोकने में सहायक है। वनस्पति के संदर्भ में, अरावली की पूर्वी ढलानों पर पश्चिमी ढलानों की तुलना में अधिक सघन और ऊँची वनस्पति पाई जाती है। इसका कारण पूर्वी भाग में होने वाली अधिक वर्षा है, जबकि पश्चिमी ढलानें वर्षा छाया क्षेत्र और शुष्कता के प्रभाव में रहती हैं।

75. (4) रामसर साइट
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान का अंतरराष्ट्रीय महत्व इसके 'रामसर साइट' के रूप में पदनाम द्वारा स्पष्ट होता है। रामसर सम्मेलन के तहत इसे विशेष रूप से जलपक्षियों के आवास हेतु अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि घोषित किया गया है। यह मान्यता वैश्विक स्तर पर इसके पारिस्थितिक मूल्य और पक्षी संरक्षण में इसकी भूमिका को प्रमाणित करती है। यद्यपि यह यूनेस्को विश्व धरोहर भी है, किंतु रामसर स्थल का दर्जा इसकी आर्द्रभूमि प्रणाली और वहाँ के प्रवासी तथा स्थानीय पक्षियों की सुरक्षा पर केंद्रित है।

76. (2) यह शुष्क झाड़ीदार भूमि में रहती है और कृंतकों तथा कीड़ों का भक्षण करती है।
राजस्थान की मरुस्थलीय लोमड़ी थार मरुस्थल के शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण अंग है। यह मुख्य रूप से शुष्क झाड़ीदार भूमि और रेतीले क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ यह बिल बनाकर रहती है। इसके आहार में मुख्य रूप से लघु कृंतक, कीट और छिपकलियाँ सम्मिलित होती हैं, जो इसे मरुस्थलीय खाद्य श्रृंखला में एक प्रभावी शिकारी बनाती हैं। यह प्रजाति जल की न्यूनतम आवश्यकता के साथ कठोर परिस्थितियों में जीवित रहने हेतु अनुकूलित है। इसे घने वनों की आवश्यकता नहीं होती।

77. (3) मरुद्भिद
यदि किसी पौधे में गूदेदार तने और मोटी मोमी उपत्वचा पाई जाती है, तो वह 'मरुद्भिद' श्रेणी का पादप है। ये शारीरिक लक्षण जल संचय और वाष्पोत्सर्जन द्वारा होने वाली नमी की हानि को रोकने हेतु विशिष्ट अनुकूलन हैं। मरुद्भिद पौधे राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में प्रचुरता से पाए जाते हैं जहाँ जल का अभाव होता है। नागफनी और कैक्टस इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। यह प्रकृति का एक उपाय है जिससे पौधे मरुस्थल की भीषण ऊष्मा और सूखे में भी जीवित रह पाते हैं।

78. (3) 2013
मुकुंदरा हिल्स क्षेत्र को भारत सरकार द्वारा आधिकारिक रूप से 2013 में बाघ अभयारण्य घोषित किया गया था। यह राजस्थान का तीसरा टाइगर रिजर्व बना, जिसका उद्देश्य बाघों के संरक्षण क्षेत्र का विस्तार करना था। यह निर्णय सवाई माधोपुर और कोटा के मध्य बाघों के आवागमन हेतु एक प्राकृतिक गलियारा विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम था। इस रिजर्व में दर्रा और जवाहर सागर जैसे महत्वपूर्ण वन्यजीव क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसकी स्थापना से दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में वन्यजीव संरक्षण को प्रोत्साहन मिला है।

79. (1) यह विश्व का पहला सफल बाघ स्थानांतरण था जहाँ वे पूर्व में विलुप्त हो गए थे।
2008 में प्रारंभ किया गया सरिस्का बाघ पुनर्वास कार्यक्रम वन्यजीव संरक्षण के इतिहास में मील का पत्थर है। इसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि यह विश्व का प्रथम ऐसा प्रयास था जहाँ बाघों को उस स्थान पर सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया गया जहाँ वे पूर्णतः विलुप्त हो चुके थे। रणथंभौर से बाघों को वायुयान के माध्यम से यहाँ लाया गया और उनकी निगरानी हेतु आधुनिक तकनीक का उपयोग किया गया। इस कार्यक्रम की सफलता ने अन्य संकटापन्न प्रजातियों के पुनर्वास हेतु एक विश्वसनीय प्रारूप प्रदान किया है।

80. (2) माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य
राजस्थान में गोडावण के संरक्षण हेतु कुछ विशिष्ट क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जैसलमेर का राष्ट्रीय मरु उद्यान, बारां का सोरसन क्षेत्र और अजमेर का सोखलिया क्षेत्र गोडावण के प्रमुख प्राकृतिक आवास हैं। इसके विपरीत, माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य मुख्य रूप से पर्वतीय और सघन वनों वाला क्षेत्र है, जो गोडावण के आवास हेतु अनुपयुक्त है। गोडावण को विवृत और शुष्क घास के मैदानों की आवश्यकता होती है, जो पहाड़ी क्षेत्रों में सुलभ नहीं होते। अतः माउंट आबू इस प्रजाति का प्राथमिक आवास नहीं है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 21
राजस्थान की मृदाएँ

1. राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में मृदा के निर्माण को प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख कारक निम्नलिखित में से कौन सा है?
   (1) अंतर्निहित भूगर्भीय पैतृक पदार्थ
   (2) प्रचलित चरम जलवायु परिस्थितियाँ
   (3) प्राकृतिक वनस्पति आवरण और पर्ण समूह
   (4) स्थलाकृतिक विविधताएं और ढाल प्रवणता
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान में मृदा निर्माण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: हाड़ौती पठार क्षेत्र में पैतृक चट्टान मुख्य रूप से बेसाल्टिक है।
   कथन II: इस बेसाल्टिक चट्टान के अपक्षय से व्यापक रेतीली मरुस्थलीय मृदा का निर्माण हुआ है।
   निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. मृदा निर्माण के निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
   I. जलवायु
   II. स्थलाकृति
   III. समय
   उपरोक्त में से कौन सा संयोजन राजस्थान में मृदा निर्माण के निष्क्रिय कारकों का प्रतिनिधित्व करता है?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
   अभिकथन (A): अरावली श्रेणियों के ढलानों पर पाई जाने वाली मृदा आमतौर पर उथली और पथरीली होती है।
   कारण (R): उच्च ढाल प्रवणता जल अपरदन के माध्यम से अपक्षयित चट्टानी पदार्थों के निष्कासन को तेज कर देती है।
   उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

5. यूएसडीए वर्गीकरण के व्यापक मृदा गणों (सूची I) को राजस्थान में उनके मुख्य रूप से संबंधित क्षेत्रों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (मृदा गण)
   A. एरिडिसोल्स
   B. अल्फिसोल्स
   C. वर्टिसोल्स
   D. इन्सेप्टिसोल्स
   सूची II: (संबंधित क्षेत्र)
   i. हाड़ौती का पठार
   ii. पूर्वी मैदान
   iii. पश्चिमी मरुस्थल
   iv. अरावली के पार्श्व
   (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
   (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
   (4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजस्थान में मृदा के पारंपरिक वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
   (1) रेतीली मृदा मुख्य रूप से राज्य के शुष्क पश्चिमी जिलों में पाई जाती है।
   (2) लाल-पीली मृदा का रंग बिना अपक्षयित कैल्शियम कार्बोनेट के स्तर के कारण होता है।
   (3) काली मृदा दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में केंद्रित है और कपास के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।
   (4) भूरी मृदा बनास नदी बेसिन और अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन मैदानी क्षेत्रों की विशेषता है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान में एरिडिसोल्स के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. इनमें कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बहुत कम होती है।
   II. ये मुख्य रूप से कोटा और बूंदी जिलों में पाए जाते हैं।
   III. इनमें अक्सर कुछ गहराई पर एक कैल्सिक संस्तर पाया जाता है।
   IV. इनकी विशेषता स्थूल बनावट और उच्च पारगम्यता है।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. व्यापक यूएसडीए मृदा वर्गीकरण के अनुसार, राजस्थान में कौन सा मृदा गण सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में विस्तृत है?
(1) एन्टीसोल्स
(2) अल्फिसोल्स
(3) वर्टिसोल्स
(4) इन्सेप्टिसोल्स
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. मृदा के प्रकार और उसके प्रमुख प्राप्ति वाले जिले का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) लाल दुमट मृदा - जैसलमेर
(2) मरुस्थलीय रेतीली मृदा - बांसवाड़ा
(3) गहरी काली मृदा - झालावाड़
(4) पीली भूरी मृदा - बाड़मेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीय रेतीली मृदा को मृदा विज्ञान के अनुसार मुख्य रुप से किन गुणों द्वारा पहचाना जाता है?
(1) कमजोर संस्तर विकास के साथ रेतीली और दुमट रेतीली बनावट
(2) मृत्तिका कणों का उच्च अनुपात और गहरे संस्तरों में स्व-जुताई की क्षमता
(3) उप-सतही परतों में लौह और एल्युमीनियम ऑक्साइड का अत्यधिक संचय
(4) अपघटित कार्बनिक ह्यूमस और खनिजों से समृद्ध गहरे रंग के संस्तर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. रेतीली मृदा के उप-वर्गीकरण (सूची I) को राजस्थान में उनकी प्रमुख विशेषताओं या स्थानों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (उप-वर्गीकरण)
A. रेतीली टिब्बा मृदा
B. कैल्सिक भूरी रेतीली मृदा
C. जिप्समयुक्त रेतीली मृदा
D. लवणीय रेतीली मृदा
सूची II: (विशेषताएं/स्थान)
i. कैल्शियम कार्बोनेट की उप-सतही कठोर परत
ii. लूनी बेसिन के गर्तों और घग्गर के पेटे में पाई जाती है
iii. गतिशील और स्पष्ट मृदा संस्तरों से रहित
iv. उप-सतही कैल्शियम सल्फेट परत की उपस्थिति
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. निम्नलिखित में से कौन सी थार क्षेत्र की मरुस्थलीय रेतीली मृदा की विशिष्ट रासायनिक विशेषता नहीं है?
(1) घुलनशील लवणों की उच्च सांद्रता
(2) उपलब्ध नाइट्रोजन का बढ़ा हुआ स्तर
(3) कैल्शियम की पर्याप्त से उच्च उपस्थिति
(4) सामान्यतः क्षारीय pH मान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. थार मरुस्थल की मृदा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये गंभीर वायु अपरदन से प्रभावित होती हैं।
II. इनकी नमी धारण करने की क्षमता अत्यंत उच्च होती है।
III. इनमें सामान्यतः फास्फोरस और कार्बनिक कार्बन की कमी होती है।
IV. इनका निर्माण भौतिक अपक्षय प्रक्रियाओं के प्रभुत्व में होता है।
V. इन मृदाओं में केशिकत्व अक्सर सतही लवणता का कारण बनता है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और IV
(2) केवल II
(3) केवल III और V
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. पश्चिमी राजस्थान की रेतीली मृदा की उप-सतह में कैल्सिक संस्तर (कंकड़ की परत) के व्यापक निर्माण का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) उच्च वेग वाले रेतीले तूफानों द्वारा चूना पत्थर के धूल कणों का निरंतर जमाव
(2) छोटी ग्रीष्मकालीन मानसून ऋतु के दौरान ऊपरी मृदा के खनिजों का तीव्र निक्षालन
(3) मरुस्थलीय रेत के नीचे गहराई में स्थित प्राचीन समुद्री जीवाश्मों का अपघटन
(4) वाष्पीकरण के कारण कैल्शियम के घोल का ऊपर की ओर केशिकत्व संचलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में जलोढ़ मृदा मुख्य रुप से निम्नलिखित में से किस जिले के समूह में पाई जाती है?
(1) भरतपुर, धौलपुर और टोंक
(2) बीकानेर, चूरू और जैसलमेर
(3) डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़
(4) उदयपुर, राजसमंद और सिरोही
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

16. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संदर्भ में, पुराने जलोढ़ मृदा निक्षेप जो आमतौर पर वर्तमान बाढ़ के स्तर से ऊपर स्थित होते हैं, कहलाते हैं:
(1) खादर
(2) बांगर
(3) रेह
(4) कल्लर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान के नदी बेसिनों (सूची I) को उनमें पाए जाने वाले प्रमुख मृदा प्रकारों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (नदी बेसिन)
A. लूनी बेसिन
B. माही बेसिन
C. चंबल बेसिन
D. बनास बेसिन
सूची II: (प्रमुख मृदा प्रकार)
i. लाल दुमट मृदा
ii. जलोढ़ और काली मृदा
iii. भूरी रेतीली मृदा
iv. पीली भूरी मृदा
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पूर्वी राजस्थान की जलोढ़ मृदा के उर्वरता प्रोफाइल का सही वर्णन करता है?
(1) पोटाश और चूने से समृद्ध लेकिन नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी
(2) नाइट्रोजन में असाधारण रूप से समृद्ध लेकिन पोटेशियम के पर्याप्त स्तर की कमी
(3) कार्बनिक ह्यूमस की उच्च सांद्रता लेकिन कैल्शियम खनिजों की कमी
(4) अत्यधिक निक्षालित प्रोफाइल, जिसमें केवल लौह और एल्युमीनियम ऑक्साइड की परतें शेष हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. मृदा की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. हजारों वर्षों में नदीय निक्षेपण द्वारा निर्मित।
II. उचित सिंचाई के साथ गहन कृषि का समर्थन करने में सक्षम।
III. आमतौर पर 5.5 से नीचे pH के साथ अत्यधिक अम्लीय।
पूर्वी राजस्थान की जलोढ़ मृदा के लिए कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजस्थान की जलोढ़ मृदा प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजनयुक्त यौगिकों से समृद्ध होती है।
कथन II: ये मृदाएँ राज्य की नदी प्रणालियों द्वारा निक्षेपित की गई हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. महत्वपूर्ण जलोढ़ मृदा आवरण की अनुपस्थिति के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से विषम को पहचानिए:
(1) अलवर
(2) दौसा
(3) जैसलमेर
(4) सवाई माधोपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. राजस्थान में लाल और पीली मृदा मुख्य रूप से किन जिलों में केंद्रित है?
(1) गंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू
(2) सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा और अजमेर
(3) जोधपुर, नागौर, पाली और जालौर
(4) चूरू, सीकर, झुंझुनूं और अलवर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): सवाई माधोपुर और भीलवाड़ा के संक्रमणकालीन मैदानों में कुछ मृदाएँ विशिष्ट पीला रंग प्रदर्शित करती हैं।
कारण (R): इन मृदाओं में मौजूद फेरिक ऑक्साइड मध्यवर्ती वर्षा वाले क्षेत्रों में जलयोजन की प्रक्रिया से गुजरते हैं।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

24. दक्षिणी राजस्थान में पाई जाने वाली लाल दुमट मृदा के विशिष्ट लाल रंग का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों में लोहे का प्रसार
(2) अपघटित वन पर्ण समूह का व्यापक संचय
(3) रेतीले तूफानों द्वारा लाल बलुआ पत्थर की धूल का जमाव
(4) पानी में घुलनशील सोडियम लवणों की उच्च सांद्रता

II. बौछार अपरदन
III. क्षुद्र-सरिता अपरदन
IV. परत अपरदन
निम्नलिखित में से कौन सा प्रारंभिक प्रभाव से लेकर सबसे गंभीर रूप तक के सही क्रम को दर्शाता है?
(1) II, IV, III, I
(2) IV, II, III, I
(3) II, III, IV, I
(4) III, II, IV, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: परत अपरदन अक्सर किसानों द्वारा नहीं देखा जाता है क्योंकि यह पूरे ढाल पर मृदा को समान रूप से हटा देता है।
कथन II: इसमें सबसे उपजाऊ ऊपरी मृदा की परत का निरंतर निष्कासन शामिल है।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. धौलपुर
II. सवाई माधोपुर
III. कोटा
उपरोक्त में से कौन सा जिलों का संयोजन चंबल नदी के किनारे अवनलिका अपरदन से गंभीर रूप से प्रभावित है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. चंबल बेसिन में बीहड़ों के व्यापक निर्माण के प्राथमिक मृदा संबंधी और भौगोलिक कारण को सबसे उपयुक्त रूप से वर्णित किया गया है:
(1) निरंतर वायु क्रिया के साथ मृदा की उच्च लवणता
(2) अंतर्निहित कठोर ग्रेनाइट चट्टान जो निरंतर सतही अपवाह को मजबूर करती है
(3) निचले बेसिन में भूमिगत चूना पत्थर की गुफाओं का धंसना
(4) गहरा जलोढ़ प्रोफाइल, तीव्र ढाल और मौसमी आकस्मिक बाढ़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. डूंगरपुर के ऊबड़-खाबड़ इलाकों में एक किसान अपने ढालू खेतों में जल अपरदन को कम करना चाहता है। उसे निम्नलिखित में से कौन सी सबसे अच्छी कृषि पद्धति अपनानी चाहिए?
(1) समोच्च कृषि
(2) स्वच्छ खेती
(3) ढाल के साथ खेती
(4) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. निम्नलिखित मृदा संरक्षण उपायों पर विचार कीजिए:
I. समोच्च बांध
II. बेंच टेरेसिंग
III. फसल चक्र
IV. चेक डैम का निर्माण
कौन सा संयोजन मृदा संरक्षण के यांत्रिक उपायों का सटीक प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. मृदा संरक्षण प्रथाओं (सूची I) को उनकी संबंधित परिभाषाओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संरक्षण प्रथा)
A. मल्चिंग
B. पट्टीदार खेती
C. रक्षक मेखला
D. समोच्च बांध
सूची II: (परिभाषा)
i. अपरदन-प्रतिरोधी और अपरदन-अनुमति देने वाली फसलों की वैकल्पिक पट्टियाँ उगाना
ii. प्रचलित वायु दिशा के अनुप्रस्थ वृक्षों की पंक्तियाँ लगाना
iii. नमी बनाए रखने के लिए नग्न मृदा को कार्बनिक पदार्थों से ढंकना
iv. ढाल के आर-पार मिट्टी के बांध बनाना
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. निम्नलिखित उपायों में से विषम को पहचानिए, जिसे मुख्य रूप से एक कृषि-पारिस्थितिकी उपाय के रूप में वर्गीकृत किया गया है न कि यांत्रिक उपाय के रूप में:
(1) घास वाली जल निकासी
(2) गेबियन संरचनाएं
(3) पारगमन टैंक
(4) ड्रॉप स्पिलवे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Click Here to Buy book on Amazon

का संचय
(3) धरातल के पास ग्रेनाइट आधार-चट्टान की गहरी परत
(4) अऑक्सीकृत लौह अयस्कों और खनिजों की उच्च सांद्रता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. निम्नलिखित स्थितियों पर विचार कीजिए:
I. दोषपूर्ण कृषि पद्धतियां और अत्यधिक सिंचाई
II. शुष्क जलवायु में वाष्पीकरण की उच्च दर
III. अपर्याप्त सतही और उप-सतही जल निकासी
IV. पानी का केशिकत्व द्वारा ऊपर की ओर संचलन
V. जैविक गोबर की खाद का भारी प्रयोग
उपरोक्त में से कौन सा संयोजन राजस्थान में मृदा लवणता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. भूजल का घुलनशील लवणों के साथ सतही परत की ओर ऊपर की ओर संचलन, जो बाद में वाष्पित होकर एक सफेद लवणीय परत छोड़ देता है, किसका परिणाम है?
(1) निक्षालन
(2) पॉडजोलीकरण
(3) केशिकत्व
(4) लैटेराइजेशन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. राजस्थान में समस्याग्रस्त मृदाओं के लिए उपयोग की जाने वाली स्थानीय शब्दावली (सूची I) को उनके अर्थ (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्थानीय शब्दावली)
A. रेह
B. सेम
C. भूर
D. खादर
सूची II: (अर्थ)
i. नहर कमान क्षेत्रों में जलभराव वाले क्षेत्र
ii. मृदा की सतह पर लवणीय उत्फुल्लन
iii. नदी तटों के साथ ऊंचे रेतीले क्षेत्र
iv. नए उपजाऊ जलोढ़ निक्षेप
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में लवणीय-क्षारीय मृदा के सुधार और प्रबंधन के लिए मान्यता प्राप्त विधि नहीं है?
(1) जिप्सम का निरंतर और समय-समय पर प्रयोग
(2) लवण-सहिष्णु फसलों की व्यवस्थित खेती
(3) सोडियम आधारित उर्वरकों का प्रयोग
(4) उच्च गुणवत्ता वाले सिंचाई जल स्रोत से निक्षालन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. राजस्थान में लैटेराइट मृदा की उपस्थिति बहुत सीमित है। वे मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पाई जाती हैं?
(1) फलोदी, पोकरण और आसपास के शुष्क क्षेत्र
(2) माउंट आबू के पास उच्च वर्षा वाले क्षेत्र और बांसवाड़ा के कुछ हिस्से
(3) निचली चंबल नदी घाटी के विस्तृत बीहड़
(4) सांभर झील क्षेत्र के आसपास पाए जाने वाले लवणीय गर्त
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. निम्नलिखित प्रक्रियाओं पर विचार कीजिए:
I. सिलिका का तीव्र निक्षालन
II. लौह और एल्युमीनियम ऑक्साइड का संचय
III. उच्च तापमान और वैकल्पिक गीले-सूखे मौसम वाले क्षेत्रों में निर्माण
कौन सा संयोजन लैटेराइट मृदा के निर्माण तंत्र का सही वर्णन करता है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त कारण है कि लैटेराइट मृदा को आमतौर पर पारंपरिक कृषि के लिए अनुपयुक्त माना जाता है?
(1) नाइट्रोजन और पोटेशियम जैसे बुनियादी पोषक तत्वों का भारी निक्षालन हो जाता है
(2) वे शुष्क गर्मी के मौसम में गंभीर वायु अपरदन की चपेट में होती हैं
(3) वे मामूली वर्षा के बाद असाधारण रूप से जलमग्न हो जाती हैं
(4) उनमें प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले सोडियम कार्बोनेट का विषाक्त स्तर होता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): लैटेराइट मृदा आमतौर पर लौह और एल्युमीनियम यौगिकों से समृद्ध होती है।
कारण (R): तीव्र अपक्षय और निक्षालन प्रक्रियाएं मृदा प्रोफाइल से घुलनशील सिलिका और बुनियादी लवणों को हटा देती हैं।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

Downloaded from www.pdf.tube

76. राजस्थान में आधिकारिक तौर पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना किस वर्ष शुरू की गई थी?
(1) 2012
(2) 2015
(3) 2014
(4) 2017
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. मृदा प्रबंधन पहल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मृदा स्वास्थ्य कार्ड रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देता है और जैविक खादों को एकीकृत करता है।
कथन II: यह लक्षित दृष्टिकोण किसानों के लिए निवेश लागत को कम करने में मदद करता है और मृदा क्षरण को रोकता है।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. पोषक तत्व श्रेणी और मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत परीक्षण किए गए विशिष्ट तत्व का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) प्राथमिक मुख्य पोषक तत्व - जस्ता
(2) सूक्ष्म पोषक तत्व - फास्फोरस
(3) भौतिक मापदंड - बोरॉन
(4) द्वितीयक पोषक तत्व - सल्फर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. पाली जिले के एक किसान को प्राप्त मृदा स्वास्थ्य कार्ड दर्शाता है कि मृदा का pH अत्यधिक क्षारीय है और विनिमेय सोडियम प्रतिशत उच्च है। कार्ड उसे निम्नलिखित में से किसके प्रयोग की सिफारिश करेगा?
(1) जिप्सम
(2) चूना
(3) यूरिया
(4) म्यूरेट ऑफ पोटाश
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

80. मृदा प्रबंधन में सुधार के लिए शुरू की गई मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का आधिकारिक ध्येय वाक्य क्या है?
(1) हर खेत को पानी
(2) स्वस्थ धरा, खेत हरा
(3) पर ड्रॉप मोर क्रॉप
(4) मेरा गाँव, मेरा गौरव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. निम्नलिखित में से किस जिले के समूह में 'भूरी रेतीली' मृदा मुख्य रूप से वितरित है?
(1) जोधपुर, पाली, नागौर और सीकर
(2) जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर
(3) कोटा, बारां, बूंदी और झालावाड़
(4) उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. आधुनिक यूएसडीए मृदा वर्गीकरण (सूची I) को उन राजस्थान के जिलों के साथ सुमेलित कीजिए जहाँ वे प्रमुख रूप से पाए जाते हैं (सूची II):
सूची I: (यूएसडीए मृदा वर्गीकरण)
A. एन्टीसोल्स
B. इन्सेप्टिसोल्स
C. अल्फिसोल्स
D. वर्टिसोल्स
सूची II: (जिले)
i. झालावाड़, बारां
ii. जयपुर, धौलपुर
iii. जैसलमेर, बीकानेर
iv. सिरोही, राजसमंद
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. भूरी मृदा की विशेषता और उससे संबंधित तथ्य का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) बेस संतृप्ति - भारी वर्षा के कारण अत्यंत कम
(2) बनावट - मुख्य रूप से भारी मिट्टी
(3) प्राप्ति - पूरी तरह से आर्द्र दक्षिणी मैदानों तक सीमित
(4) फास्फोरस की स्थिति - आमतौर पर फसल विकास के लिए पर्याप्त
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. पश्चिमी राजस्थान का वायु अपरदन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होना मुख्य रूप से किसका प्रत्यक्ष प्रभाव है?
(1) ढीली गाद जमा करने वाली बारहमासी नदियों का विस्तृत जाल
(2) रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग जिससे मृदा की परत ढीली हो जाती है
(3) अल्प वनस्पति के साथ एक ढीली, एकल-कण मृदा संरचना
(4) उच्च मृत्तिका मात्रा जो गर्मियों के दौरान महीन धूल में बदल जाती है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. वनस्पति आवरण का अभाव
II. गर्मियों के दौरान उच्च वायु वेग
III. ऊपरी मृदा में उच्च नमी की मात्रा
IV. पशुधन द्वारा अतिचारण
V. सीमांत भूमि पर खेती
कारकों का कौन सा संयोजन थार मरुस्थल में वायु अपरदन को तेज करता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान के शुष्क जिलों में वायु अपरदन को नियंत्रित करने के लिए मान्यता प्राप्त कृषि संबंधी उपाय नहीं है?
(1) रक्षक मेखला और विंडब्रेक्स की स्थापना
(2) फसल अवशेष मल्चिंग का अभ्यास करना
(3) आवरण फसलों के साथ पट्टीदार खेती
(4) ढाल के ऊपर और नीचे जुताई करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. राजस्थान में वायु अपरदन की संवेदनशीलता के घटते क्रम में मृदा बनावट का सही क्रम चुनिए:
(1) मृत्तिका > गादयुक्त दुमट > दुमट रेत > रेत
(2) रेत > दुमट रेत > रेतीली दुमट > गाद दुमट
(3) रेतीली दुमट > रेत > मृत्तिका > दुमट रेत
(4) गाद दुमट > मृत्तिका > रेत > रेतीली दुमट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थान में स्थानांतरित बालू के टिब्बों और मृदा अपरदन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) अनुदैर्ध्य टिब्बे सभी प्रकारों में सबसे अधिक गतिशील और अपरदनकारी होते हैं।
(2) भूजल की कमी के कारण बालू के टिब्बों का स्थिरीकरण असंभव है।
(3) बरखान अपनी उच्च गतिशीलता के कारण सबसे बड़ा खतरा पैदा करते हैं।
(4) पैराबोलिक टिब्बे आमतौर पर वनस्पति से रहित होते हैं और तेजी से चलते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. चंबल बेसिन की 'उत्खात भूमि' या ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति किस प्रकार के मृदा अपरदन के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करती है?
(1) अवनलिका अपरदन
(2) परत अपरदन
(3) वायु अपरदन
(4) क्षुद्र-सरिता अपरदन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. जल अपरदन के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. अवनलिका अपरदन

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. मृदा के रंगों (सूची I) को उनके प्राथमिक प्रेरक रासायनिक यौगिकों या स्थितियों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (मृदा का रंग)
A. गहरा काला
B. लाल
C. पीला
D. सफेद धब्बे
सूची II: (प्रेरक कारक)
i. लौह ऑक्साइड का जलयोजन
ii. सतही लवणों का संचय
iii. निर्जलीकृत फेरिक ऑक्साइड
iv. टाइटेनिफेरस मैग्नेटाइट और क्ले-ह्यूमस सम्मिश्र
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. बांसवाड़ा जिले का एक किसान अच्छी जल निकासी वाली लाल दुमट मृदा पर अपनी खरीफ की बुवाई की योजना बना रहा है। मृदा के गुणों के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन सी फसल इस क्षेत्र में सबसे उपयुक्त और पारंपरिक रूप से उगाई जाती है?
(1) मक्का
(2) बाजरा
(3) सरसों
(4) जीरा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. राजस्थान में काली मृदा मुख्य रूप से कहां पाई जाती है?
(1) शेखावाटी क्षेत्र
(2) मारवाड़ क्षेत्र
(3) मेवात क्षेत्र
(4) हाड़ौती क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राजस्थान में वर्टिसोल्स (काली मृदा) के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. गर्म शुष्क अवधि के दौरान इनमें गहरी दरारें विकसित हो जाती हैं।
II. इनमें नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है।
III. इन्हें बनावट के आधार पर रेतीली दुमट के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
IV. ये गीली होने पर फैलती हैं और चिपचिपी हो जाती हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा संयोजन सही विशेषताओं की पहचान करता है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. हाड़ौती क्षेत्र की काली मृदा के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम और आवश्यक पोटाश खनिजों से समृद्ध
(2) ज्वालामुखीय बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से निर्मित
(3) कम जल धारण क्षमता के कारण बार-बार सिंचाई की आवश्यकता
(4) सिकुड़ने और फूलने की क्रिया के कारण स्व-जुताई की विशेषता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान में पाई जाने वाली निम्नलिखित मृदा बनावट श्रेणियों पर विचार कीजिए:
I. मृण्मय मृदा
II. रेतीली मृदा
III. गादयुक्त मृदा
IV. दुमट मृदा
उपरोक्त श्रेणियों को उनकी अंतर्निहित जल धारण क्षमता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
(1) II, IV, III, I
(2) I, III, IV, II
(3) II, III, IV, I
(4) IV, II, III, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. कोटा और बूंदी जिलों की काली मृदा का विशिष्ट 'सिकुड़ना-फूलना' व्यवहार मुख्य रूप से किस मृदा खनिज की प्रधानता के कारण होता है?
(1) मॉन्टमोरिलोनाइट
(2) केओलिनाइट
(3) इलाईट
(4) क्लोराइट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. राजस्थान में मृदा के प्रकार और उसकी अत्यधिक उपयुक्त व्यावसायिक फसल का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) काली मृदा - लंबे रेशे वाली कपास
(2) लाल दुमट मृदा - गन्ना
(3) मरुस्थलीय रेतीली मृदा - मोठ
(4) काली मृदा - व्यावसायिक सोयाबीन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राजस्थान में लवणीय और क्षारीय मृदा को मृदा विज्ञान के अनुसार किसकी उपस्थिति द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(1) अम्लीय परिस्थितियों के कारण अत्यधिक उच्च कार्बनिक पदार्थ की मात्रा
(2) सोडियम क्लोराइड और सल्फेट जैसे घुलनशील लवणों

NODIA

67. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी), जो राजस्थान में मृदा संरक्षण और मरुस्थलीकरण नियंत्रण पर शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(1) बीकानेर
(2) जैसलमेर
(3) जोधपुर
(4) जयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. लंबे समय तक जलभराव के कारण होने वाले भूमि क्षरण का गंभीर रूप, जो विशेष रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना कमान क्षेत्र में स्पष्ट है, स्थानीय रूप से क्या कहलाता है?
(1) चौपान समस्या
(2) ऊसर समस्या
(3) कल्लर समस्या
(4) सेम समस्या
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर परियोजना कमान क्षेत्र में कृषि भूमि के महत्वपूर्ण क्षेत्र जलभराव और लवणता के कारण अनुत्पादक हो रहे हैं।
कारण (R): जिप्सम की उप-सतही कठोर परत की उपस्थिति के साथ अत्यधिक सिंचाई गहरे रिसाव को गंभीर रूप से प्रतिबंधित करती है, जिससे जल स्तर ऊपर उठ जाता है।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान में 'सेम' समस्या के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह मुख्य रूप से बिना नहर पहुंच वाले जैसलमेर और बाड़मेर के प्राकृतिक शुष्क जिलों तक सीमित है।
(2) इसे यूकेलिप्टस जैसी अधिक जल की खपत करने वाली प्रजातियों को लगाकर हल किया जाता है।
(3) यह ट्यूबवेल के माध्यम से भूजल के अत्यधिक दोहन का परिणाम है।
(4) यह मौलिक रूप से मृदा की नाइट्रोजन स्थिरीकरण क्षमता में सुधार करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. निम्नलिखित मानवीय गतिविधियों पर विचार कीजिए:
I. रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग
II. जल निकासी के बिना गहन नहर सिंचाई
III. अरावली में अनियमित खनन
IV. कृषि विस्तार के लिए वनों की कटाई
V. जैविक खेती को अपनाना
उपरोक्त गतिविधियों का कौन सा संयोजन राजस्थान में भूमि क्षरण के प्रमुख कारकों के रूप में कार्य करता है?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, III और IV
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. बीकानेर और हनुमानगढ़ के कुछ हिस्सों में, मृदा की सतह से कुछ ही मीटर नीचे एक अभेद्य कठोर परत की उपस्थिति भारी सतही सिंचाई किए जाने पर सीधे निम्नलिखित में से कौन सा प्रभाव डालती है?
(1) अधस्तल जल स्तर का निर्माण जिससे तत्काल जलभराव हो जाता है
(2) गहरे जलभृतों में मृदा पोषक तत्वों का तेजी से निक्षालन
(3) गहरे गड्ढे बनाते हुए भूमि की सतह का धंसना
(4) भूमिगत कार्बनिक पीट का स्वतः दहन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. क्रमशः अम्लीय, तटस्थ, लवणीय और क्षारीय मृदा का प्रतिनिधित्व करने वाले सामान्यीकृत मृदा pH मानों के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) <6.5, 6.5-7.5, <8.5 (उच्च ईसी के साथ), >8.5 (उच्च ईएसपी के साथ)
(2) >8.5, 6.5-7.5, <6.5, 7.5-8.5
(3) 6.5-7.5, <6.5, >8.5, <8.5
(4) <6.5, >8.5, 6.5-7.5, <8.5
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, जो मृदा उर्वरता का मूल्यांकन करती है और संतुलित उर्वरक उपयोग की सिफारिश करती है, राजस्थान में कहाँ से शुरु की गई थी?
(1) सूरतगढ़, श्री गंगानगर
(2) नोखा, बीकानेर
(3) फलोदी, जोधपुर
(4) बस्सी, जयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. राजस्थान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह हर 2 से 3 साल में एक बार किसानों को जारी किया जाता है।
(2) यह pH और विद्युत चालकता जैसे भौतिक मापदंडों का मूल्यांकन करता है।
(3) यह उपयुक्त उर्वरक खुराक के लिए फसल-वार सिफारिशें प्रदान करता है।
(4) यह मृदा का परीक्षण सख्ती से केवल तीन मुख्य पोषक तत्वों के लिए करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. राजस्थान में मृदा की परिपक्वता और संस्तर विकास के आधार पर निम्नलिखित मृदा प्रकारों में से विषम को पहचानिए:
(1) लिथोसोल्स (कंकाली मृदा)
(2) गहरी जलोढ़ नदी मृदा
(3) परिपक्व वर्टिसोल्स
(4) एरिडिसोल्स
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. राजस्थान में लागू होने वाले मृदा विज्ञान के शब्दों में, 'लिथोसोल्स' मुख्य रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) आंतरिक जल निकासी वाले झील बेसिनों में पाई जाने वाली अत्यधिक लवणीय मृदा
(2) द्वितीयक सिलिकेट मृत्तिका खनिजों से समृद्ध मृदा
(3) सघन आर्द्र वनस्पति क्षेत्रों में पाई जाने वाली गहरी कार्बनिक वन मृदा
(4) न्यूनतम संस्तर विकास वाली उथली, पथरीली कंकाली मृदा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: लिथोसोल्स प्रमुख रूप से अरावली श्रेणी की खड़ी ढलानों और तलहटी पर हावी हैं।
कथन II: ये मृदाएँ अत्यधिक परिपक्व हैं और गहन मशीनीकृत खेती के लिए उपयुक्त हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. राजस्थान की भौतिक विशेषताओं (सूची I) को उनके प्रमुख मृदा वर्गों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (भौतिक विशेषताएं)
A. अरावली पहाड़ियाँ
B. हाड़ौती का पठार
C. पूर्वी नदी के मैदान
D. पश्चिमी रेतीले मैदान
सूची II: (मृदा वर्ग)
i. अल्फिसोल्स
ii. एरिडिसोल्स
iii. वर्टिसोल्स
iv. लिथोसोल्स/इन्सेप्टिसोल्स
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. अरावली क्षेत्र के लिथोसोल्स के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ये बहुत कम मृदा गहराई प्रदर्शित करते हैं।
(2) इनकी विशेषता बजरी और चट्टानी टुकड़ों की उच्च उपस्थिति है।
(3) ये अपवाह और जल अपरदन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।
(4) इनमें उत्कृष्ट जल धारण क्षमता और गहरी कार्बनिक ऊपरी मृदा होती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. अरावली ढलानों के लिथोसोल्स पर वनीकरण अभियान की योजना बना रहे एक वन विभाग के अधिकारी को मुख्य रूप से किस बाधा के लिए अनुकूलित पौधों की प्रजातियों का चयन करना चाहिए?
(1) उथली जड़ गहराई और कम नमी धारण क्षमता
(2) लंबे समय तक जलभराव और खराब मृदा वायु संचार
(3) विषाक्त विनिमेय सोडियम लवणों का उच्च स्तर
(4) प्रोफाइल में अत्यधिक अम्लीय मृदा pH स्तर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. भूरी मृदा, जो अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण खरीफ और रबी कृषि का समर्थन करने के लिए जानी जाती है, विशेष रूप से किस नदी के बेसिन में पाई जाती है?
(1) लूनी
(2) बनास
(3) घग्गर
(4) सोम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. राजस्थान में लाल-भूरी मृदा की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से जालौर, पाली और नागौर में पाई जाती हैं।
II. इनकी बनावट रेतीली दुमट से लेकर मटियार दुमट तक होती है।
III. ये कैल्शियम कार्बोनेट से पूरी तरह रहित होती हैं।
IV. इनकी नाइट्रोजन मात्रा प्राकृतिक रूप से बहुत अधिक होती है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) I, III और IV
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) प्रचलित चरम जलवायु परिस्थितियाँ
राजस्थान के पश्चिमी भाग में मरुस्थलीय मृदा के निर्माण में वहाँ की चरम जलवायु परिस्थितियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। शुष्क जलवायु के कारण यहाँ भौतिक अपक्षय, रासायनिक अपक्षय की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। वर्षा की कमी और उच्च तापमान से चट्टानों का विखंडन बारीक कणों में हो जाता है, जिससे रेतीली मृदा विकसित होती है। यह प्रक्रिया मृदा परिच्छेदिका के पूर्ण विकास को भी बाधित करती है।

2. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
हाड़ौती पठार की पैतृक चट्टानें मुख्य रूप से ज्वालामुखीय बेसाल्ट से निर्मित हैं। इन चट्टानों के अपक्षय से गहरे काले रंग की मृदा बनी है, जिसे वर्टिसोल्स कहा जाता है। इसके विपरीत, पश्चिमी राजस्थान की रेतीली मृदा का निर्माण वायु द्वारा जमा निक्षेपों और शुष्क जलवायु के कारण हुआ है। बेसाल्टिक चट्टानें रेतीली मृदा के स्थान पर मध्यम काली उपजाऊ मृदा के निर्माण हेतु उत्तरदायी होती हैं।

3. (2) केवल II और III
मृदा निर्माण के कारकों को सक्रिय और निष्क्रिय श्रेणियों में विभाजित किया गया है। जलवायु और जैविक क्रियाएँ सक्रिय कारक हैं क्योंकि वे सीधे ऊर्जा और पदार्थ के प्रवाह को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर, स्थलाकृति और समय निष्क्रिय कारक माने जाते हैं क्योंकि वे मृदा निर्माण की दर निर्धारित करते हैं। राजस्थान के संदर्भ में, ढाल की प्रवणता और समय मृदा संस्तरों के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अरावली पर्वत श्रेणियों के ढलानों पर मृदा की परत अत्यंत उथली और पथरीली होती है क्योंकि यहाँ तीव्र ढाल पाई जाती है। उच्च ढाल प्रवणता के कारण वर्षा जल तेजी से नीचे बहता है, जिससे जल अपरदन तीव्र हो जाता है। यह प्रक्रिया चट्टानों के अपक्षय से बने बारीक पदार्थों को सतह पर रुकने नहीं देती। परिणामस्वरूप, इन पर्वतीय क्षेत्रों में पूर्ण विकसित मृदा संस्तरों का अभाव पाया जाता है।

5. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान में मृदा का वैज्ञानिक वर्गीकरण विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं पर आधारित है। एरिडिसोल्स मुख्य रूप से पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जबकि अल्फिसोल्स का विस्तार पूर्वी मैदानी भागों में है। वर्टिसोल्स यानी काली मृदा दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार की विशेषता है। इन्सेप्टिसोल्स मृदा अरावली के पर्वतीय ढलानों और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में विस्तृत है। यह वर्गीकरण जलवायु, वनस्पति और पैतृक चट्टानों के प्रभाव को दर्शाता है।

6. (2) लाल-पीली मृदा का रंग बिना अपक्षयित कैल्शियम कार्बोनेट के स्तर के कारण होता है।
राजस्थान में लाल-पीली मृदा का विशिष्ट रंग लोहे के ऑक्साइड के विभिन्न रूपों के कारण होता है। जब लौह ऑक्साइड जलयोजन प्रक्रिया से गुजरता है, तो मृदा का रंग पीला दिखाई देता है, जबकि निर्जलीकरण से यह लाल हो जाता है। कैल्शियम कार्बोनेट की उपस्थिति मृदा के रंग को पीला नहीं बनाती, बल्कि यह मृदा में कंकड़ की परत का निर्माण करती है। यह मृदा मुख्य रूप से सवाई माधोपुर में मिलती है।

7. (2) I, III और IV
एरिडिसोल्स शुष्क जलवायु की मृदा है जिसमें कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बहुत कम होती है। इसकी बनावट स्थूल होने के कारण जल पारगम्यता उच्च रहती है। अक्सर इन मृदाओं में गहराई पर कैल्शियम कार्बोनेट के संचय से बनी एक कैल्सिक परत पाई जाती है। यह मृदा राजस्थान के शुष्क पश्चिमी भागों में व्यापक रूप से विस्तृत है। कोटा और बूंदी जिलों में वर्टिसोल्स पाए जाते हैं, न कि एरिडिसोल्स।

8. (1) एन्टीसोल्स
वैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुसार, एन्टीसोल्स राजस्थान के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैले हुए हैं। ये मृदाएं मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के रेतीले मैदानों में पाई जाती हैं। एन्टीसोल्स में मृदा संस्तरों का विकास न्यूनतम होता है, जिसके कारण इन्हें अपरिपक्व मृदा माना जाता है। इनका निर्माण मुख्य रूप से वायु द्वारा जमा की गई रेत से हुआ है। थार मरुस्थल की विशालता के कारण यह वर्ग सर्वाधिक क्षेत्रफल घेरता है।

9. (3) गहरी काली मृदा - झालावाड़
राजस्थान के झालावाड़ जिले में गहरी काली मृदा पाई जाती है, जो दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार का हिस्सा है। यह मृदा बेसाल्टिक लावा के अपक्षय से बनी है और नमी धारण करने की उच्च क्षमता रखती है। इसके विपरीत, लाल दुमट मृदा दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में मिलती है। मरुस्थलीय रेतीली मृदा जैसलमेर जैसे पश्चिमी जिलों में पाई जाती है। झालावाड़ की काली मृदा सोयाबीन हेतु उपयुक्त है।

10. (1) कमजोर संस्तर विकास के साथ रेतीली और दुमट रेतीली बनावट
पश्चिमी राजस्थान की मरुस्थलीय रेतीली मृदा की बनावट मुख्य रूप से रेतीली या दुमट रेतीली होती है, जिसमें रेत के कणों की प्रधानता होती है। इसमें मृदा संस्तरों का विकास अत्यंत कमजोर होता है क्योंकि यह निरंतर वायु अपरदन और निक्षेपण की प्रक्रिया से गुजरती रहती है। कार्बनिक पदार्थों की कमी और उच्च पारगम्यता इसके अन्य प्रमुख लक्षण हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

8. राजस्थान में फसल ऋतु के आधार पर असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) जौ
(2) बाजरा
(3) मोठ
(4) तिल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. राजस्थान में फसल और उसकी प्रमुख फसल ऋतु का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) मूंगफली - खरीफ
(2) चना - रबी
(3) सरसों - खरीफ
(4) खरबूजा - जायद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. राजस्थान में फसल ऋतु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खरीफ की फसलें दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं।
II. रबी की फसलें मुख्य रूप से मिट्टी की अवशिष्ट नमी और मावट के रूप में जानी जाने वाली शीतकालीन वर्षा पर निर्भर करती हैं।
III. जायद फसलों की खेती मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के असिंचित शुष्क क्षेत्रों में की जाती है।
IV. गेहूं और जौ रबी ऋतु की प्राथमिक खाद्यान्न फसलें हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) केवल III
(3) II और IV
(4) III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. भारत में बाजरा के कुल उत्पादन में राजस्थान का लगभग कौन सा स्थान है?
(1) दूसरा
(2) तीसरा
(3) चौथा
(4) पहला
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. बाजरा की कृषि-जलवायु आवश्यकताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) इसे इष्टतम विकास के लिए शीत जलवायु और भारी मृत्तिका मिट्टी की आवश्यकता होती है।
(2) इसे उच्च तापमान की आवश्यकता होती है और यह कम नमी वाली हल्की, रेतीली मिट्टी में अच्छी तरह बढ़ता है।
(3) यह 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा वाले उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में सर्वाधिक पनपता है।
(4) यह सूखे के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है और इसे निरंतर जलभराव की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: राजस्थान के पश्चिमी और मध्य जिलों जैसे बाड़मेर, जोधपुर और नागौर में मुख्य रूप से बाजरा की खेती की जाती है।
कथन II: पश्चिमी राजस्थान की रेतीली मिट्टी और शुष्क जलवायु बाजरा की खेती के लिए आदर्श पारिस्थितिक स्थितियाँ प्रदान करती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I में अनुसंधान संस्थानों या केंद्रों को सूची II में राजस्थान में उनके स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अनुसंधान संस्थान / केंद्र)
A. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी)
B. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र
C. सरसों अनुसंधान निदेशालय
D. अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना (मंडोर)
सूची II: (स्थान)
i. भरतपुर
ii. अजमेर
iii. जोधपुर
iv. जयपुर
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. राजस्थान में बाजरा की खेती के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के कुल बाजरा उत्पादन में राजस्थान की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत से अधिक है।
II. इसे शुष्क जलवायु के अनुकूल गहरी जड़ प्रणाली वाली एक कठोर फसल के रूप में जाना जाता है।
III. यह मक्का या चावल की तुलना में सूखे की स्थिति को काफी बेहतर तरीके से सहन कर सकता है।
IV. राज्य के पूर्वी भागों में अलवर और जयपुर भी बाजरा का उत्पादन करते हैं।
V. यह मुख्य रूप से एक खाद्य फसल के बजाय एक व्यावसायिक नकदी फसल के रूप में उगाया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

जैसलमेर में जलोढ़ मृदा की अनुपस्थिति इसे अन्य तीन जिलों से स्पष्ट रूप से अलग करती है।

22. (2) सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा और अजमेर
राजस्थान में लाल और पीली मृदा का विस्तार मुख्य रूप से सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा और अजमेर जिलों में पाया जाता है। यह मृदा ग्रेनाइट और शिस्ट जैसी प्राचीन कायांतरित चट्टानों के अपक्षय से निर्मित हुई है। इन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा मध्यम रहती है, जो मृदा के रंग को प्रभावित करती है। यह मृदा मूंगफली और मक्का जैसी फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल है। इसमें लौह ऑक्साइड की उपस्थिति महत्वपूर्ण है।

23. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सवाई माधोपुर और भीलवाड़ा के मैदानों में पाई जाने वाली मृदा का पीला रंग एक विशिष्ट रासायनिक प्रक्रिया का परिणाम है। इन मृदाओं में उपस्थित फेरिक ऑक्साइड वर्षा जल के साथ मिलकर जलयोजन प्रक्रिया से गुजरता है। जब लौह खनिज जलयोजित रूप में होते हैं, तो वे मृदा को पीला आभा प्रदान करते हैं। शुष्क अवस्था में या निर्जलीकरण होने पर यही लौह तत्व मृदा को लाल रंग प्रदान करता है।

24. (1) क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों में लोहे का प्रसार
दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में पाई जाने वाली लाल दुमट मृदा का गहरा लाल रंग लोहे के प्रसार के कारण होता है। यह मृदा प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों के विखंडन से बनी है, जिसमें लौह तत्व की प्रधानता होती है। अपक्षय के दौरान ये लौह खनिज ऑक्सीकृत होकर मृदा में फैल जाते हैं। यह मृदा जल निकासी में अच्छी और मक्का की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

25. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
मृदा का रंग उसकी खनिज संरचना और रासायनिक अवस्था का सूचक होता है। गहरा काला रंग टाइटेनिफेरस मैग्रेटाइट की उपस्थिति के कारण होता है, जो हाड़ौती की मृदा में दिखता है। लाल रंग निर्जलीकृत फेरिक ऑक्साइड से आता है, जबकि पीला रंग लौह ऑक्साइड के जलयोजन से उत्पन्न होता है। सतह पर दिखने वाले सफेद धब्बे घुलनशील लवणों के संचय को दर्शाते हैं, जो केशिकत्व क्रिया का परिणाम होते हैं।

26. (1) मक्का
बांसवाड़ा जिले की लाल दुमट मृदा अपनी विशिष्ट जल निकासी और नमी धारण क्षमता के कारण खरीफ फसलों हेतु अत्यधिक उपयुक्त है। इस मृदा में मक्का का उत्पादन पारंपरिक रूप से बड़े पैमाने पर किया जाता है। मक्का के लिए ऐसी मृदा आवश्यक है जहाँ जल जमाव न हो, और लाल दुमट मृदा यह स्थिति प्रदान करती है। यह क्षेत्र मक्का के उच्च उत्पादन हेतु राज्य में प्रसिद्ध है।

27. (4) हाड़ौती क्षेत्र
राजस्थान में काली मृदा का मुख्य विस्तार दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती क्षेत्र में है, जिसमें कोटा, बूंदी, झालावाड़ और बारां जिले शामिल हैं। इस मृदा को वैज्ञानिक रूप से वर्टिसोल्स कहा जाता है, जिसका निर्माण दक्कन ट्रैप की ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टानों के विखंडन से हुआ है। यह मृदा बहुत महीन कणों वाली होती है और कपास, सोयाबीन तथा धनिया की फसलों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी जल धारण क्षमता सर्वाधिक है।

28. (3) I, II और IV
वर्टिसोल्स या काली मृदा अपनी अनूठी भौतिक विशेषताओं के लिए जानी जाती है। शुष्क मौसम के दौरान इस मृदा में पानी की कमी से गहरी और चौड़ी दरारें विकसित हो जाती हैं। इनमें नमी धारण करने की असाधारण क्षमता होती है, जिससे ये लंबे समय तक गीली बनी रहती हैं। गीली होने पर ये फैलती हैं और अत्यंत चिपचिपी हो जाती हैं। इन्हें इनकी मृत्तिका प्रधान बनावट के कारण पहचाना जाता है।

29. (3) कम जल धारण क्षमता के कारण बार-बार सिंचाई की आवश्यकता
हाड़ौती क्षेत्र की काली मृदा अपनी उच्च जल धारण क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, जिसके कारण इसे बार-बार सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। यह मृदा महीन मृत्तिका कणों से निर्मित है जो नमी को लंबे समय तक सुरक्षित रखते हैं। इसमें 'स्व-जुताई' का गुण पाया जाता है क्योंकि सूखने पर पड़ने वाली दरारें वायु संचार में सहायक होती हैं। यह कैल्शियम और पोटाश जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध होती है।

30. (1) II, IV, III, I
मृदा की जल धारण क्षमता उसके कणों के आकार पर निर्भर करती है। बड़े कणों वाली रेतीली मृदा की क्षमता न्यूनतम होती है क्योंकि जल तेजी से रिस जाता है। इसके पश्चात दुमट मृदा आती है, जिसमें रेत और मिट्टी का मिश्रण होता है। गादयुक्त मृदा के कण महीन होते हैं, जिससे यह अधिक जल रोक पाती है। अंत में, मृत्तिका मृदा में कण सबसे महीन होते हैं, जिससे इसकी क्षमता सर्वाधिक होती है।

31. (1) मॉन्टमोरिलोनाइट
कोटा और बूंदी की काली मृदा का 'सिकुड़ना-फूलना' व्यवहार इसमें उपस्थित 'मॉन्टमोरिलोनाइट' नामक मृत्तिका खनिज के कारण होता है। यह खनिज जल सोखने पर अत्यधिक फूल जाता है और सूखने पर काफी सिकुड़ जाता है। इसी प्रक्रिया से ग्रीष्म ऋतु में काली मृदा में गहरी दरारें पड़ती हैं, जिसे 'स्व-जुताई' कहा जाता है। यह खनिज मृदा की उच्च नमी संचयन क्षमता और चिपचिपेपन के लिए भी उत्तरदायी है।

32. (2) लाल दुमट मृदा - गन्ना
राजस्थान में मृदा प्रकारों के साथ फसलों का आवंटन पारिस्थितिकी पर निर्भर है। काली मृदा कपास और सोयाबीन के लिए उत्कृष्ट है, जबकि मरुस्थलीय मृदा में बाजरा अच्छी तरह उगता है। लाल दुमट मृदा मुख्य रूप से मक्का के उत्पादन के लिए जानी जाती है। गन्ने को अधिक नमी और पोषक तत्वों से भरपूर गहरी जलोढ़ या काली मृदा की आवश्यकता होती है, जो श्रीगंगानगर या बूंदी क्षेत्रों में मिलती है।

NODIA

यह शुष्क परिस्थितियों में फसलों के लिए कम नमी संचित करती है।

11. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान की रेतीली मृदा के विभिन्न उप-वर्ग उनकी भौगोलिक स्थितियों और रासायनिक संरचना को दर्शाते हैं। रेतीले टिब्बा मृदा गतिशील होती है और इसमें स्पष्ट संस्तरों का अभाव रहता है। कैल्सिक भूरी रेतीली मृदा की निचली सतह में कैल्शियम कार्बोनेट की कठोर परत पाई जाती है। जिप्समयुक्त मृदा मुख्य रूप से बीकानेर और श्रीगंगानगर में मिलती है। लवणीय मृदा का विस्तार लूनी बेसिन के गर्तों में पाया जाता है।

12. (2) उपलब्ध नाइट्रोजन का बढ़ा हुआ स्तर
थार मरुस्थल की मृदा में नाइट्रोजन और कार्बनिक पदार्थों की भारी कमी पाई जाती है, जो इसकी उर्वरता को सीमित करती है। इसमें घुलनशील लवणों की सांद्रता उच्च होती है और कैल्शियम की मात्रा पर्याप्त बनी रहती है। शुष्क परिस्थितियों के कारण इस मृदा का pH मान सामान्यतः क्षारीय रहता है। वायु अपरदन और नमी की कमी के साथ नाइट्रोजन का निम्न स्तर कृषि के लिए एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है।

13. (2) केवल II
थार मरुस्थल की मृदा की नमी धारण क्षमता अत्यंत कम होती है क्योंकि इसमें रेत के कण बड़े और रंध्र अवकाश अधिक होते हैं। यह मृदा तीव्र वायु अपरदन से प्रभावित होती है और इसमें फास्फोरस तथा कार्बनिक कार्बन की कमी पाई जाती है। इसका निर्माण मुख्य रूप से भौतिक अपक्षय द्वारा होता है। केशिकत्व क्रिया के कारण धरातल पर लवणों का जमाव भी देखा जाता है। अतः नमी धारण क्षमता उच्च नहीं होती।

14. (4) वाष्पीकरण के कारण कैल्शियम के घोल का ऊपर की ओर केशिकत्व संचलन
पश्चिमी राजस्थान में मृदा की उप-सतह में कैल्शियम कार्बोनेट की कठोर परत के निर्माण का मुख्य कारण केशिकत्व की प्रक्रिया है। शुष्क जलवायु में वाष्पीकरण दर अधिक होने से भूमिगत कैल्शियम युक्त घोल ऊपर की ओर खिंचता है। सतह पर पहुँचने से पूर्व पानी वाष्पित हो जाता है और कैल्शियम का अवक्षेप मृदा परतों के बीच जमा हो जाता है। समय के साथ यह जमाव एक अभेद्य कठोर परत बन जाता है।

15. (1) भरतपुर, धौलपुर और टोंक
राजस्थान में जलोढ़ मृदा मुख्य रूप से पूर्वी मैदानी भागों में पाई जाती है, जिसमें भरतपुर, धौलपुर और टोंक जिले शामिल हैं। इस मृदा का निर्माण चंबल, बनास और उनकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है। यह राज्य की सबसे उपजाऊ मृदा मानी जाती है जिसमें पोटाश और चूने की पर्याप्त मात्रा होती है। जलोढ़ मृदा गेहूं, सरसों और दलहन की फसलों हेतु अत्यंत उपयोगी है।

16. (2) बांगर
राजस्थान के पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में पुरानी जलोढ़ मृदा के निक्षेप, जो वर्तमान बाढ़ के मैदानों के स्तर से ऊपर स्थित हैं, बांगर कहलाते हैं। यह मृदा खादर की तुलना में कम उपजाऊ होती है क्योंकि इसमें पोषक तत्वों का वार्षिक पुनर्भरण नहीं होता। इसमें अक्सर कैल्शियम युक्त कंकड़ पाए जाते हैं। इसके विपरीत, खादर नवीन जलोढ़ है जो प्रतिवर्ष बाढ़ द्वारा लाई गई मिट्टी से निर्मित होता है और अधिक उपजाऊ होता है।

17. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के विभिन्न नदी बेसिनों में विशिष्ट मृदा प्रकार पाए जाते हैं। लूनी बेसिन में मुख्य रूप से भूरी रेतीली मृदा मिलती है, जो अर्ध-शुष्क परिस्थितियों का परिणाम है। माही बेसिन दक्षिणी क्षेत्र में होने के कारण लाल दुमट मृदा के लिए जाना जाता है। चंबल बेसिन में जलोढ़ और काली मृदा का मिश्रण पाया जाता है, जबकि बनास नदी बेसिन में पीली भूरी मृदा का विस्तार अधिक देखा जाता है।

18. (1) पोटाश और चूने से समृद्ध लेकिन नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी
पूर्वी राजस्थान की जलोढ़ मृदा अपनी उच्च प्राकृतिक उर्वरता के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसके पोषक तत्व प्रोफाइल में कुछ असंतुलन पाए जाते हैं। यह मृदा पोटाश और चूने के खनिजों से भरपूर होती है, जो पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक हैं। अधिकांश भारतीय मृदाओं की तरह इसमें भी नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी देखी जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए रासायनिक उर्वरकों और जैविक खादों का प्रयोग आवश्यक है।

19. (1) केवल I और II
पूर्वी राजस्थान की जलोढ़ मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है। यह मृदा गहरी और उपजाऊ होती है, जो उचित सिंचाई सुविधाओं के साथ गहन कृषि का समर्थन करती है। रासायनिक रूप से यह मृदा अत्यधिक अम्लीय नहीं होती, बल्कि इसका pH मान आमतौर पर तटस्थ से थोड़ा क्षारीय रहता है। खनिजों की प्रचुरता और अच्छी जल धारण क्षमता इसे उत्पादक कृषि भूमि बनाती है।

20. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
राजस्थान की जलोढ़ मृदा का निर्माण नदी प्रणालियों द्वारा लाए गए तलछट के जमाव से हुआ है। हालांकि यह मृदा अत्यंत उपजाऊ होती है, किंतु यह प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजनयुक्त यौगिकों से समृद्ध नहीं होती। वास्तव में, नाइट्रोजन और फास्फोरस की कमी इस मृदा की एक सामान्य विशेषता है। नाइट्रोजन की कमी को पूरा करने के लिए दलहन फसलों या उर्वरकों का उपयोग करना पड़ता है। अतः केवल कथन II सही है।

21. (3) जैसलमेर
अलवर, दौसा और सवाई माधोपुर जिले पूर्वी मैदानी भाग में स्थित हैं, जहाँ नदियों के निक्षेपण के कारण जलोढ़ मृदा पाई जाती है। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला सुदूर पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल में स्थित है। यहाँ की मृदा मुख्य रूप से रेतीली मरुस्थलीय है, जो वायु अपरदन और निक्षेपण से बनी है।

Downloaded from www.pdf.tube

44. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
लिथोसोल्स अरावली श्रेणी की खड़ी ढलानों और पथरीली तलहटी वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये मृदाएं पैतृक चट्टानों के भौतिक विखंडन से बनती हैं। ये मृदाएं परिपक्व नहीं होतीं, बल्कि अत्यंत उथली और असंगठित होती हैं। इनमें गहराई की कमी और पत्थरों की अधिकता के कारण गहन मशीनीकृत खेती करना असंभव है। अतः कथन I सही है, लेकिन कथन II इन मृदाओं की परिपक्वता के बारे में गलत है।

45. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न भौतिक विभागों में विशिष्ट मृदा वर्गों का वितरण है। अरावली पहाड़ियों के पथरीले इलाकों में लिथोसोल्स और इन्सेप्टिसोल्स का प्रभुत्व है। हाड़ौती का पठार अपनी बेसाल्टिक बनावट के कारण वर्टिसोल्स के लिए प्रसिद्ध है। पूर्वी नदी के मैदानों में उपजाऊ अल्फिसोल्स पाए जाते हैं, जो जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित हैं। पश्चिमी रेतीले मैदानों की शुष्क जलवायु में एरिडिसोल्स और एन्टीसोल्स का विस्तार सर्वाधिक है।

46. (4) इनमें उत्कृष्ट जल धारण क्षमता और गहरी कार्बनिक ऊपरी मृदा होती है।
अरावली क्षेत्र के लिथोसोल्स के बारे में यह कहना गलत है कि उनमें उत्कृष्ट जल धारण क्षमता होती है। वास्तव में, ये मृदाएं बहुत उथली होती हैं और इनमें कंकड़ की मात्रा अधिक होती है, जिससे जल तुरंत बह जाता है। तीव्र ढलान के कारण ये जल अपरदन के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती हैं। वनस्पति के अभाव और कम गहराई के कारण इनमें कार्बनिक पदार्थों का संचय भी अत्यंत कम होता है।

47. (1) उथली जड़ गहराई और कम नमी धारण क्षमता
अरावली ढलानों के लिथोसोल्स पर वनीकरण करते समय मुख्य बाधा मृदा की कम गहराई और नमी की कमी है। पथरीली और उथली मृदा होने के कारण पौधों की जड़ें गहराई तक नहीं जा पातीं, जिससे वे सूखे के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। ये मृदाएं जल को अधिक समय तक नहीं रोक पातीं। अतः वनीकरण हेतु ऐसी प्रजातियों का चयन आवश्यक है जो कम जल और कठिन परिस्थितियों में जीवित रह सकें।

48. (2) बनास
राजस्थान में भूरी मृदा मुख्य रूप से बनास नदी और उसकी सहायक नदियों के बेसिन क्षेत्र में पाई जाती है। इसमें टोंक, सवाई माधोपुर और भीलवाड़ा जैसे जिलों के हिस्से शामिल हैं। इस मृदा का भूरा रंग मध्यम वर्षा और विशिष्ट खनिज संरचना के कारण होता है। यह बनावट में रेतीली दुमट से दुमट तक होती है और खरीफ तथा रबी दोनों मौसमों की फसलों के लिए बहुत उपयोगी मानी जाती है।

49. (2) केवल III और IV
राजस्थान के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की लाल-भूरी मृदा के बारे में यह कहना गलत है कि ये कैल्शियम कार्बोनेट से रहित होती हैं। वास्तव में, इनमें अक्सर निचली परतों में कंकड़ के रूप में कैल्शियम जमाव देखा जाता है। इन मृदाओं में नाइट्रोजन की मात्रा प्राकृतिक रूप से कम होती है। ये जालौर, पाली और नागौर जिलों में विस्तृत हैं। अतः विकल्प में दिए गए कथन III और IV वैज्ञानिक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं।

50. (1) जोधपुर, पाली, नागौर और सीकर
भूरी रेतीली मृदा मुख्य रूप से राजस्थान के अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्रों में पाई जाती है जो अरावली के पश्चिम में स्थित हैं। इसमें जोधपुर, पाली, नागौर और सीकर जैसे जिले शामिल हैं। यह मृदा मरुस्थलीय रेतीली मृदा की तुलना में अधिक उपजाऊ होती है और इसमें नमी धारण करने की बेहतर क्षमता होती है। इस क्षेत्र में बाजरा, मूंग और ग्वार जैसी फसलें मुख्य रूप से उगाई जाती हैं।

51. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान की मृदाओं का आधुनिक वर्गीकरण भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित है। एन्टीसोल्स मुख्य रूप से जैसलमेर और बीकानेर जैसे शुष्क पश्चिमी जिलों में मिलते हैं। इन्सेप्टिसोल्स का विस्तार सिरोही और राजसमंद जैसे अरावली के पहाड़ी क्षेत्रों में है। अल्फिसोल्स, जो उपजाऊ जलोढ़ मृदा है, जयपुर और धौलपुर जैसे पूर्वी जिलों की विशेषता है। वर्टिसोल्स यानी गहरी काली मृदा हाड़ौती के झालावाड़ और बारां जिलों में पाई जाती है।

52. (4) फास्फोरस की स्थिति - आमतौर पर फसल विकास के लिए पर्याप्त
राजस्थान की भूरी मृदा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें फास्फोरस की मात्रा फसल विकास के लिए सामान्यतः पर्याप्त होती है। हालांकि इसमें नाइट्रोजन की कमी हो सकती है, किंतु फास्फोरस की उपलब्धता इसे कृषि के लिए अनुकूल बनाती है। यह मृदा बनास बेसिन जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। इसकी बनावट रेतीली दुमट या मध्यम दुमट होती है। पोषक तत्वों का यह संतुलन इसे उत्पादक बनाता है।

53. (3) अल्प वनस्पति के साथ एक ढीली, एकल-कण मृदा संरचना
पश्चिमी राजस्थान में वायु अपरदन का मुख्य कारण यहाँ की मृदा की भौतिक संरचना है। यहाँ की रेतीली मृदा के कण असंगठित और एकल होते हैं, जो आपस में मजबूती से नहीं जुड़े होते। वनस्पति आवरण की कमी के कारण ये कण वायु के संपर्क में सीधे आते हैं। जब तीव्र हवाएं चलती हैं, तो ये ढीले कण आसानी से उड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं, जिससे उर्वरता नष्ट होती है।

54. (2) I, II, IV और V
थार मरुस्थल में वायु अपरदन को तेज करने वाले कारकों में वनस्पति की कमी और ग्रीष्मकालीन तीव्र हवाएं मुख्य प्राकृतिक कारण हैं। इसके साथ ही, पशुओं द्वारा अत्यधिक चराई मृदा की ऊपरी परत को ढीला कर देती है। रेतीली भूमि पर अनुचित कृषि पद्धतियां भी मृदा को वायु के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। मृदा में उच्च नमी अपरदन को कम करती है, अतः विकल्प II सही संयोजनों का हिस्सा है।

NODIA

33. (2) सोडियम क्लोराइड और सल्फेट जैसे घुलनशील लवणों का संचय
राजस्थान में लवणीय मृदा को सोडियम क्लोराइड और सोडियम सल्फेट जैसे घुलनशील लवणों के संचय द्वारा परिभाषित किया जाता है। जब ये लवण मृदा परिच्छेदिका में एक निश्चित सीमा से अधिक जमा हो जाते हैं, तो वे पौधों की जड़ों द्वारा जल अवशोषण को बाधित करते हैं। ऐसी मृदा का pH मान आमतौर पर 8.5 से अधिक होता है। यह समस्या कम जल निकासी वाले नहरी कमान क्षेत्रों में देखी जाती है।

34. (2) I, II, III और IV
राजस्थान में मृदा लवणता हेतु कई भौगोलिक और मानवीय कारक जिम्मेदार हैं। दोषपूर्ण कृषि पद्धतियां और अत्यधिक सिंचाई, जहाँ जल निकासी की व्यवस्था नहीं है, इस समस्या को जन्म देती हैं। शुष्क जलवायु में उच्च वाष्पीकरण दर के कारण लवण सतह पर रह जाते हैं। केशिकत्व क्रिया द्वारा लवणों का ऊपर आना भी एक प्रमुख प्रक्रिया है। जैविक खाद का प्रयोग लवणता कम करने में सहायक होता है।

35. (3) केशिकत्व
केशिकत्व एक भौतिक प्रक्रिया है जिसमें मृदा के सूक्ष्म रंध्रों के माध्यम से भूजल सतह की ओर ऊपर उठता है। शुष्क क्षेत्रों में जब ऊपरी सतह का जल वाष्पित हो जाता है, तो नीचे से जल लवणों को घोलकर ऊपर ले आता है। वाष्पीकरण के पश्चात ये लवण मृदा की सतह पर सफेद परत के रूप में जमा हो जाते हैं, जिसे 'रेह' कहते हैं। यह प्रक्रिया उपजाऊ भूमि को बंजर बना देती है।

36. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राजस्थान में मृदा हेतु विभिन्न स्थानीय शब्द प्रचलित हैं। 'रेह' शब्द का प्रयोग सतह पर दिखने वाले सफेद लवणीय जमाव के लिए किया जाता है। 'सेम' उन क्षेत्रों को संदर्भित करता है जो नहरी क्षेत्रों में जलभराव का शिकार हो गए हैं। 'भूर' नदी तटों के पास पाए जाने वाले ऊंचे रेतीले टीलों को कहते हैं, जबकि 'खादर' नदियों द्वारा जमा की गई नवीन और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी है।

37. (3) सोडियम आधारित उर्वरकों का प्रयोग
लवणीय और क्षारीय मृदा के सुधार के लिए सोडियम आधारित उर्वरकों का प्रयोग हानिकारक है, क्योंकि यह समस्या को गंभीर बनाता है। इसके विपरीत, जिप्सम का प्रयोग सोडियम को विस्थापित करने हेतु एक मानक उपचार है। लवण-सहिष्णु फसलों, जैसे जौ या चकुंदर की खेती करना प्रभावी उपाय है। साथ ही, अच्छी गुणवत्ता वाले जल से मृदा का निक्षालन करना भी अतिरिक्त लवणों को नीचे भेजने में सहायक होता है।

38. (2) माउंट आबू के पास उच्च वर्षा वाले क्षेत्र और बांसवाड़ा के कुछ हिस्से
राजस्थान में लैटेराइट मृदा की उपस्थिति सीमित है। यह मृदा केवल उन्हीं क्षेत्रों में पाई जाती है जहाँ अत्यधिक वर्षा और उच्च तापमान की स्थिति रहती है, जैसे माउंट आबू और बांसवाड़ा के कुछ हिस्से। इन परिस्थितियों में सिलिका का निक्षालन हो जाता है और लौह तथा एल्युमीनियम के ऑक्साइड मृदा में शेष रह जाते हैं। यह मृदा ईंट निर्माण हेतु उपयुक्त है किंतु कृषि हेतु कम उपयोगी है।

39. (4) I, II और III
लैटेराइट मृदा का निर्माण लैटेराइजेशन प्रक्रिया द्वारा होता है। इसमें उच्च तापमान और भारी वर्षा के कारण मृदा से सिलिका का तीव्र निक्षालन हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, ऊपरी संस्तरों में केवल लोहे और एल्युमीनियम के अघुलनशील ऑक्साइड ही बचे रह जाते हैं। यह प्रक्रिया मृदा को लाल रंग और कठोर संरचना प्रदान करती है। राजस्थान के अत्यधिक वर्षा वाले दक्षिणी क्षेत्रों में यह प्रक्रिया सीमित स्तर पर होती है।

40. (1) नाइट्रोजन और पोटेशियम जैसे बुनियादी पोषक तत्वों का भारी निक्षालन हो जाता है
लैटेराइट मृदा को कृषि हेतु अनुपयुक्त मानने का मुख्य कारण इसमें पोषक तत्वों का अभाव है। भारी वर्षा और तीव्र निक्षालन से नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे आवश्यक खनिज मृदा की ऊपरी परतों से बहकर नीचे चले जाते हैं। इससे मृदा की उर्वरता बहुत कम हो जाती है। सूखने पर यह पत्थर की तरह कठोर हो जाती है, जिससे जुताई कठिन होती है। इसके सुधार हेतु भारी खाद आवश्यक है।

41. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लैटेराइट मृदा में लौह और एल्युमीनियम यौगिकों की प्रचुरता होती है। इसका कारण यह है कि अत्यधिक अपक्षय और तीव्र निक्षालन के दौरान मृदा से घुलनशील सिलिका और अन्य लवण बह जाते हैं। पीछे बचे हुए लोहे और एल्युमीनियम के ऑक्साइड जमा होकर मृदा को समृद्ध करते हैं। यह प्रक्रिया उन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होती है जहाँ भारी मौसमी वर्षा होती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं।

42. (1) लिथोसोल्स (कंकाली मृदा)
राजस्थान की मृदाओं में लिथोसोल्स अपरिपक्व और उथली मृदाएं हैं। इनमें मृदा संस्तरों का विकास न्यूनतम होता है और ये सीधे पैतृक चट्टानों के ऊपर स्थित होती हैं। इसके विपरीत, जलोढ़, वर्टिसोल्स और एरिडिसोल्स में स्पष्ट संस्तर पाए जाते हैं। लिथोसोल्स मुख्य रूप से पहाड़ियों की ढलानों पर पाए जाते हैं जहाँ तीव्र ढाल के कारण मृदा विकास की प्रक्रिया बाधित रहती है और बारीक कण टिक नहीं पाते।

43. (4) न्यूनतम संस्तर विकास वाली उथली, पथरीली कंकाली मृदा
'लिथोसोल्स' का तात्पर्य उन मृदाओं से है जो अत्यंत उथली और पथरीली होती हैं। इन्हें 'कंकाली मृदा' भी कहा जाता है क्योंकि इनमें बारीक कणों की तुलना में कंकड़ और चट्टानी टुकड़ों की प्रधानता होती है। इन मृदाओं में संस्तर विकास बहुत कम होता है क्योंकि ये पहाड़ी ढलानों पर पाई जाती हैं जहाँ अपरदन की दर मृदा निर्माण की दर से अधिक होती है। ये अरावली के ऊंचे क्षेत्रों में विस्तृत हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

प्राकृतिक वनस्पति का उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, गेबियन संरचनाएं, पारगमन टैंक और ड्रॉप स्पिलवे पूरी तरह से यांत्रिक संरचनाएं हैं, जिन्हें पत्थरों, कंक्रीट या धातु के जाल का उपयोग करके बनाया जाता है। घास वाली नालियां जल के वेग को कम करने और गाद को छानने में सहायता करती हैं।

67. (3) जोधपुर
केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) का मुख्यालय जोधपुर जिले में स्थित है। इसकी स्थापना 1959 में शुष्क क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण के नियंत्रण और मृदा संरक्षण पर शोध करने हेतु की गई थी। काजरी ने बालू के टीलों के स्थिरीकरण और रक्षक मेखला विकसित करने में महत्वपूर्ण तकनीकें प्रदान की हैं। यह संस्थान थार मरुस्थल की पारिस्थितिकी के संरक्षण और संसाधनों के प्रबंधन हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाता है।

68. (4) सेम समस्या
इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कमान क्षेत्र में जलभराव और लवणता के कारण उत्पन्न समस्या को 'सेम' कहा जाता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब अत्यधिक सिंचाई और नहरों के रिसाव से भूजल स्तर तेजी से ऊपर उठ जाता है। इससे मिट्टी के रंध्र जल से भर जाते हैं और वायु संचार रुक जाता है, जिससे फसलें नष्ट हो जाती हैं। यह समस्या हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों को सर्वाधिक प्रभावित कर रही है।

69. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में कृषि भूमि के अनुत्पादक होने का मुख्य कारण जलभराव और लवणता है। इस क्षेत्र में मृदा की उप-सतह में जिप्सम या चूने की एक अभेद्य कठोर परत पाई जाती है। जब नहरों से अत्यधिक सिंचाई की जाती है, तो जल गहराई में नहीं रिस पाता और इस परत के ऊपर जमा होने लगता है। इसके कारण भूजल स्तर तेजी से ऊपर उठता है और मिट्टी की सतह लवणीय हो जाती है।

70. (2) इसे यूकेलिप्टस जैसी अधिक जल की खपत करने वाली प्रजातियों को लगाकर हल किया जाता है।
राजस्थान के नहरी क्षेत्रों में 'सेम' की समस्या का एक प्रभावी जैविक समाधान यूकेलिप्टस (सफेदा) जैसे अधिक जल की खपत करने वाले पेड़ लगाना है। ये पेड़ अपनी जड़ों के माध्यम से अत्यधिक भूजल को सोख लेते हैं और वाष्पोत्सर्जन द्वारा उसे वातावरण में छोड़ देते हैं, जिससे जल स्तर नीचे आता है। यह समस्या नहरों के रिसाव का परिणाम है। यूकेलिप्टस की पंक्तियाँ जलभराव वाले क्षेत्रों के सुधार में सहायक हैं।

71. (2) I, II, III और IV
राजस्थान में भूमि क्षरण हेतु कई मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं। रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित उपयोग मृदा संरचना को नष्ट करता है, जबकि जल निकासी के अभाव में गहन सिंचाई से लवणता और जलभराव की समस्या उत्पन्न होती है। अरावली क्षेत्र में अनियमित खनन और वनों की कटाई ने अपरदन को और तीव्र कर दिया है। ये सभी कारक सामूहिक रूप से राज्य की उपजाऊ भूमि को बंजर बना रहे हैं।

72. (1) अधस्तल जल स्तर का निर्माण जिससे तत्काल जलभराव हो जाता है
बीकानेर और हनुमानगढ़ के क्षेत्रों में मृदा सतह के नीचे जिप्सम की एक अभेद्य कठोर परत मौजूद है। जब यहाँ भारी सिंचाई की जाती है, तो जल गहराई तक नहीं पहुँच पाता और इस परत के ऊपर ही जमा होने लगता है। इससे 'अधस्तल जल स्तर' का निर्माण होता है, जो शीघ्र ही सतह तक पहुँचकर जलभराव की स्थिति पैदा कर देता है। यह स्थिति पौधों की जड़ों को ऑक्सीजन से वंचित कर देती है।

73. (1) <6.5, 6.5-7.5, <8.5 (उच्च ईसी के साथ), >8.5 (उच्च ईएसपी के साथ)
मृदा की रासायनिक प्रकृति को pH मान के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। अम्लीय मृदा का pH मान 6.5 से कम होता है, जबकि 6.5 से 7.5 के बीच मृदा तटस्थ मानी जाती है। लवणीय मृदा का pH 8.5 से कम होता है किंतु इसमें विद्युत चालकता (EC) उच्च होती है। इसके विपरीत, क्षारीय मृदा का pH 8.5 से अधिक होता है और इसमें विनिमेय सोडियम प्रतिशत (ESP) उच्च होता है।

74. (1) सूरतगढ़, श्री गंगानगर
राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री द्वारा 19 फरवरी 2015 को श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ से किया गया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी मिट्टी की उर्वरता की स्थिति से अवगत कराना और पोषक तत्वों के उचित प्रबंधन हेतु सलाह देना है। यह पहल अब पूरे भारत में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है।

75. (4) यह मृदा का परीक्षण सख्ती से केवल तीन मुख्य पोषक तत्वों के लिए करता है।
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के बारे में यह कहना गलत है कि यह केवल तीन मुख्य पोषक तत्वों का परीक्षण करती है। वास्तव में, यह कार्ड मिट्टी के 12 महत्वपूर्ण मापदंडों का मूल्यांकन करता है, जिनमें मुख्य पोषक तत्व (N, P, K), द्वितीयक पोषक तत्व (S), सूक्ष्म पोषक तत्व (Zn, Fe, Cu, Mn, B) और भौतिक मापदंड (pH, EC, OC) शामिल हैं। यह कार्ड हर 3 वर्ष में जारी किया जाता है।

NODIA

76. (2) 2015
राजस्थान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को आधिकारिक तौर पर वर्ष 2015 में शुरु किया गया था। इसकी शुरुआत सूरतगढ़ में आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर के समारोह के साथ हुई थी। इस वर्ष से ही कृषि विभाग ने मृदा नमूनों का व्यापक संग्रह और प्रयोगशालाओं में परीक्षण आरंभ किया। इस पहल का उद्देश्य मिट्टी के गिरते स्वास्थ्य को बचाना और रसायनों के अंधाधुंध उपयोग को कम कर उत्पादकता बढ़ाना था।

77. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है जो रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देती है। जब किसान कार्ड की सिफारिशों के अनुसार उर्वरक डालते

हैं, तो उन्हें अनावश्यक खर्च नहीं करना पड़ता, जिससे खेती की लागत कम हो जाती है। यह लक्षित दृष्टिकोण न केवल फसल की पैदावार बढ़ाता है, बल्कि रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से होने वाले मृदा क्षरण को रोकने में भी सहायक सिद्ध होता है।

78. (4) द्वितीयक पोषक तत्व - सल्फर
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत मिट्टी के विभिन्न तत्वों को उनकी आवश्यकता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। इस वर्गीकरण में सल्फर को एक महत्वपूर्ण 'द्वितीयक पोषक तत्व' के रूप में मान्यता दी गई है। जस्ता और बोरॉन वास्तव में सूक्ष्म पोषक तत्व हैं, जबकि फास्फोरस एक प्राथमिक मुख्य पोषक तत्व है। सल्फर तिलहनी और दलहनी फसलों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु आवश्यक है। कार्ड में इसकी स्थिति का उल्लेख महत्वपूर्ण है।

79. (1) जिप्सम
यदि किसी किसान की मृदा का pH मान अत्यधिक क्षारीय है, तो मृदा स्वास्थ्य कार्ड उसे जिप्सम के प्रयोग की सिफारिश करेगा। जिप्सम में उपस्थित कैल्शियम, मिट्टी के कणों से चिपके हानिकारक सोडियम को विस्थापित कर देता है, जिससे मिट्टी की संरचना में सुधार होता है और उसकी क्षारीयता कम हो जाती है। यह प्रक्रिया जल की पारगम्यता को भी बढ़ाती है, जिससे फसलें बेहतर विकसित होती हैं। क्षारीय मृदा सुधार हेतु जिप्सम सर्वोत्तम उपाय है।

80. (2) स्वस्थ धरा, खेत हरा
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का आधिकारिक ध्येय वाक्य 'स्वस्थ धरा, खेत हरा' है। यह नारा इस विचार को व्यक्त करता है कि जब तक मिट्टी का स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा, तब तक उच्च पैदावार संभव नहीं है। यह योजना किसानों को मिट्टी के पोषक तत्वों की जांच कराने हेतु प्रोत्साहित करती है ताकि वे टिकाऊ कृषि की ओर बढ़ सकें। संतुलित पोषण के माध्यम से मिट्टी की उत्पादकता बनाए रखना ही इसका मूल लक्ष्य है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 22
राजस्थान की कृषि

1. निम्नलिखित में से कौन सा हाल के वर्षों में स्थिर कीमतों (2011-12) पर राजस्थान के सकल राज्य मूल्यवर्धन (जीएसवीए) में कृषि और संबद्ध क्षेत्र के योगदान का लगभग प्रतिनिधित्व करता है?
   (1) 15 से 18 प्रतिशत
   (2) 28 से 30 प्रतिशत
   (3) 40 से 45 प्रतिशत
   (4) 10 से 12 प्रतिशत
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था की प्राथमिक विशेषता नहीं है?
   (1) राष्ट्रीय औसत की तुलना में उच्च औसत फसल उपज
   (2) अनिश्चित मानसून वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता
   (3) लघु और सीमांत जोतों की प्रधानता
   (4) कृषि आय में पशुपालन क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान की कृषि पर विलंबित या अल्प मानसून का प्राथमिक आर्थिक प्रभाव क्या होता है?
   (1) खरीफ फसलों से जायद फसलों की ओर तत्काल बदलाव
   (2) सूखा-प्रतिरोधी फसलों के कारण कुल बोए गए क्षेत्र में वृद्धि
   (3) कृषि जीएसवीए और ग्रामीण रोजगार में भारी उतार-चढ़ाव
   (4) लंबी परती अवधि के कारण मृदा उर्वरता में वृद्धि
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. सूची I में राजस्थान के कृषि-जलवायु क्षेत्रों को सूची II में उनकी प्रमुख फसल विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (कृषि-जलवायु क्षेत्र)
   A. शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र
   B. बाढ़ संभावित पूर्वी मैदानी क्षेत्र
   C. उप-आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र
   D. सिंचित उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र
   सूची II: (प्रमुख फसल विशेषताएँ)
   i. गेहूं और सरसों की प्रधानता
   ii. बाजरा और मोठ की प्रधानता
   iii. कपास और गेहूं की प्रधानता
   iv. मक्का की प्रधानता
   (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
   (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
   (3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
   (4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. राजस्थान में कृषि के महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. संबद्ध क्षेत्र (पशुपालन) लगातार राज्य के कुल कृषि जीएसवीए में लगभग आधे का योगदान देता है।
   II. कृषि क्षेत्र राजस्थान के कुल कार्यबल के पचास प्रतिशत से अधिक को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है।
   III. राज्य में व्यावसायिक फसलें, खाद्यान्न फसलों की तुलना में अधिक सकल कृषि क्षेत्र पर काबिज हैं।
   उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. राजस्थान में खरीफ फसल की ऋतु आमतौर पर निम्नलिखित में से किस बुवाई और कटाई के महीनों से संबंधित है?
   (1) अक्टूबर-नवंबर में बुवाई और मार्च-अप्रैल में कटाई
   (2) जून-जुलाई में बुवाई और सितंबर-अक्टूबर में कटाई
   (3) मार्च-अप्रैल में बुवाई और जून-जुलाई में कटाई
   (4) जनवरी-फरवरी में बुवाई और मई-जून में कटाई
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
   अभिकथन (A): राजस्थान में जायद फसलों की खेती लगभग पूरी तरह से सुनिश्चित सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्रों में की जाती है।
   कारण (R): जायद की ऋतु शुष्क, उष्ण ग्रीष्मकालीन महीनों में आती है जब वर्षा व्यावहारिक रूप से नगण्य होती है।
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

55. (4) ढाल के ऊपर और नीचे जुताई करना
ढाल के ऊपर और नीचे की ओर जुताई करना मृदा अपरदन को कम करने के बजाय उसे तीव्र कर देता है, क्योंकि यह जल और वायु को बहने हेतु सीधा मार्ग प्रदान करता है। इसके विपरीत, रक्षक मेखला लगाना वायु की गति को कम करता है। मल्चिंग और पट्टीदार खेती मृदा की सतह को ढंककर उसे उड़ने से रोकती है। शुष्क क्षेत्रों में मृदा संरक्षण हेतु हमेशा ढाल के विपरीत जुताई की सलाह दी जाती है।

56. (2) रेत > दुमट रेत > रेतीली दुमट > गाद दुमट
वायु अपरदन के प्रति संवेदनशीलता मृदा कणों के आकार और उनके जुड़ाव पर निर्भर करती है। शुद्ध रेत के कण सबसे बड़े और असंगठित होते हैं, इसलिए वे सबसे पहले उड़ते हैं। जैसे-जैसे मृदा में मृत्तिका या गाद की मात्रा बढ़ती है, कण आपस में जुड़ने लगते हैं और अपरदन कम हो जाता है। अतः संवेदनशीलता का सही घटता क्रम रेत से शुरु होकर गादयुक्त दुमट की ओर जाता है।

57. (3) बरखान अपनी उच्च गतिशीलता के कारण सबसे बड़ा खतरा पैदा करते हैं।
राजस्थान के थार मरुस्थल में 'बरखान' अर्धचंद्राकार बालू के टीले होते हैं जो अपनी अत्यधिक गतिशीलता के लिए जाने जाते हैं। ये टीले वायु की दिशा में तेजी से आगे बढ़ते हैं, जिससे कृषि भूमि और बस्तियों के ऊपर रेत जमा होने का खतरा पैदा होता है। जबकि पैराबोलिक टीले वनस्पति द्वारा आंशिक रूप से स्थिर होते हैं, बरखान पूरी तरह गतिशील होते हैं। इनका नियंत्रण मरुस्थलीकरण रोकने हेतु आवश्यक है।

58. (1) अवनलिका अपरदन
चंबल बेसिन में पाई जाने वाली 'उत्खात भूमि' जल अपरदन के सबसे गंभीर चरण 'अवनलिका अपरदन' का परिणाम है। जब वर्षा जल तीव्र वेग से ढालू भूमि पर बहता है, तो यह गहरी और संकरी खाइयाँ बना देता है। समय के साथ ये खाइयाँ चौड़ी होकर पूरे क्षेत्र को उबड़-खाबड़ बना देती हैं, जिससे वह भूमि कृषि हेतु पूरी तरह अयोग्य हो जाती है। यह प्रक्रिया धौलपुर और कोटा जिलों में स्पष्ट है।

59. (1) II, IV, III, I
जल अपरदन एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत 'बौछार अपरदन' से होती है जहाँ वर्षा की बूंदें मृदा कणों को अलग कर देती हैं। इसके पश्चात 'परत अपरदन' होता है जिसमें ऊपरी उपजाऊ मिट्टी की पूरी परत बह जाती है। अगली अवस्था 'क्षुद्र-सरिता अपरदन' है जिसमें छोटी नालियां बनने लगती हैं। अंतिम और गंभीर चरण 'अवनलिका अपरदन' है, जहाँ गहरी खाइयाँ और बीहड़ बन जाते हैं।

60. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
परत अपरदन को अक्सर 'मृदा का अदृश्य अपरदन' कहा जाता है क्योंकि यह धीरे-धीरे पूरी सतह से मिट्टी की ऊपरी परत को हटा देता है। किसान अक्सर इसे तब तक नहीं देख पाते जब तक कि खेत की उत्पादकता बहुत कम न हो जाए। इसमें सबसे महत्वपूर्ण और पोषक तत्वों से भरपूर ऊपरी मृदा का निरंतर ह्रास शामिल होता है। यह प्रक्रिया कम ढाल वाले मैदानी क्षेत्रों में प्रभावी होती है।

61. (4) I, II और III
राजस्थान में चंबल नदी के किनारे स्थित धौलपुर, सवाई माधोपुर और कोटा जिले अवनलिका अपरदन से सर्वाधिक प्रभावित हैं। इन जिलों में नदी की तीव्र धारा के कारण मिट्टी का कटाव बहुत गहरा होता है, जिससे विशाल 'बीहड़' क्षेत्रों का निर्माण हुआ है। यह समस्या न केवल कृषि भूमि को नष्ट करती है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक ढांचे को भी प्रभावित करती है। इन क्षेत्रों में मृदा संरक्षण हेतु विशेष योजनाएं संचालित हैं।

62. (4) गहरा जलोढ़ प्रोफाइल, तीव्र ढाल और मौसमी आकस्मिक बाढ़
चंबल बेसिन में बीहड़ों के व्यापक होने का मुख्य भौगोलिक कारण यहाँ की गहरी जलोढ़ मिट्टी की परत और तीव्र ढाल प्रवणता है। मानसून के दौरान होने वाली मूसलाधार बारिश और मौसमी आकस्मिक बाढ़ इस ढीली मिट्टी को आसानी से काट देती है। चूंकि मिट्टी की गहराई अधिक है, इसलिए जल का कटाव गहरा होता चला जाता है, जिससे उबड़-खाबड़ उत्खात भूमि का निर्माण होता है।

63. (1) समोच्च कृषि
डूंगरपुर जैसे पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों में मृदा संरक्षण हेतु 'समोच्च कृषि' सबसे प्रभावी पद्धति है। इसमें खेत की जुताई और बुवाई ढाल के विपरीत, समान ऊंचाई वाली रेखाओं पर की जाती है। यह प्रक्रिया वर्षा जल के प्रवाह की गति को धीमा कर देती है और मिट्टी को बहने से रोकती है। यह न केवल अपरदन को कम करती है, बल्कि मृदा में नमी संचित करने में भी सहायता करती है।

64. (3) I, II और IV
मृदा संरक्षण के यांत्रिक उपायों में ऐसी संरचनाएं शामिल हैं जो जल की गति को नियंत्रित करती हैं। समोच्च बांध बनाना, ढालू भूमि पर सीढ़ीदार खेत बनाना और नालों में चेक डैम का निर्माण इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये संरचनाएं जल के अपवाह को रोककर मृदा कटाव को कम करती हैं। इसके विपरीत, फसल चक्र एक कृषि संबंधी उपाय है, जिसे यांत्रिक श्रेणी में नहीं रखा जाता। अतः सही संयोजन I, II और IV है।

65. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
मृदा संरक्षण की विभिन्न विधियाँ विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। मल्चिंग में नमी बचाने हेतु मिट्टी को कार्बनिक पदार्थों से ढका जाता है। पट्टीदार खेती में अपरदन रोकने हेतु फसलों की पट्टियां वैकल्पिक रूप से उगाई जाती हैं। रक्षक मेखला के तहत वायु की दिशा के आड़े पेड़ों की पंक्तियाँ लगाई जाती हैं। समोच्च बांध ढाल के विपरीत मिट्टी के अवरोध बनाकर जल के बहाव को नियंत्रित करते हैं।

66. (1) घास वाली जल निकासी
घास वाली जल निकासी को मुख्य रूप से एक वानस्पतिक उपाय माना जाता है, क्योंकि इसमें अपरदन नियंत्रित करने हेतु

Click Here to Buy book on Amazon

(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. राजस्थान में बोए गए क्षेत्र के आधार पर बाजरा के प्रमुख खरीफ फसल होने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए फसल को उच्च मूल्यों पर खरीदती है।
(2) यह मनुष्यों के लिए मुख्य भोजन और पशुओं के लिए चारा प्रदान करता है।
(3) एशिया के अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इसकी उच्च निर्यात मांग है।
(4) यह फलियों वाली फसलों की तुलना में मिट्टी में तेजी से नाइट्रोजन की पूर्ति करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. राजस्थान का कौन सा क्षेत्र गेहूं के उत्पादन में अग्रणी है?
(1) शुष्क पश्चिमी क्षेत्र
(2) पूर्वी और सिंचित उत्तरी क्षेत्र
(3) पहाड़ी दक्षिणी क्षेत्र
(4) बीकानेर-जैसलमेर पट्टी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. राजस्थान में गेहूं की खेती के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) इसे बिना सिंचाई के पश्चिमी राजस्थान के स्थानांतरित रेत के टीलों में अत्यधिक सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।
(2) यह रबी ऋतु की सर्वाधिक व्यापक रूप से उगाई जाने वाली खाद्यान्न फसल है।
(3) इस फसल को शुरुआती विकास के दौरान शीतल तापमान और परिपक्वता के समय उष्ण तापमान की आवश्यकता होती है।
(4) शीतकालीन वर्षा, जिसे स्थानीय रूप से मावट कहा जाता है, इसके वानस्पतिक विकास के लिए अत्यधिक लाभदायक होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनके कुल गेहूं उत्पादन के घटते क्रम में सही क्रम में चुनिए:
(1) गंगानगर, हनुमानगढ़, अलवर, भरतपुर
(2) बाड़मेर, जैसलमेर, चूरू, बीकानेर
(3) उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़
(4) जोधपुर, नागौर, पाली, सिरोही
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. जनवरी में भीषण पाले की घटना पूर्वी राजस्थान में गेहूं की फसल को मुख्य रूप से कैसे प्रभावित करती है?
(1) यह पकने की प्रक्रिया को तीव्र करती है जिससे फसल जल्दी कट जाती है।
(2) यह गेहूं के दानों में प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाती है।
(3) यह प्रभावी रूप से सभी मृदा जनित रोगजनकों को समाप्त कर दीर्घकालिक मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।
(4) यह पादप ऊतकों को जमने के कारण क्षति पहुँचाती है और उपज कम कर देती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजस्थान के पूर्वी मैदानों में गेहूं की इष्टतम खेती के लिए कौन सी मिट्टी सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है?
(1) मरुस्थलीय रेतीली मिट्टी
(2) लवणीय और क्षारीय मिट्टी
(3) उपजाऊ जलोढ़ (दोमट) मिट्टी
(4) लाल और पीली मिट्टी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में मक्का की खेती मुख्य रूप से की जाती है?
(1) गंगानगर और हनुमानगढ़ सहित उत्तरी सिंचित मैदान।
(2) उदयपुर और भीलवाड़ा जैसे दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र।
(3) जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर को कवर करने वाला पश्चिमी शुष्क क्षेत्र।
(4) नागौर और जोधपुर को शामिल करने वाला मध्य अर्ध-शुष्क क्षेत्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. विशेष रूप से राजस्थान के लिए विकसित निम्नलिखित उन्नत फसल किस्मों में से असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) माही कंचन
(2) माही धवल
(3) नवजोत
(4) माही सुगंधा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची I में फसलों को सूची II में राजस्थान के उनके प्रमुख उत्पादक जिलों या क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (फसल)
A. ज्वार
B. मक्का
C. गेहूं
D. बाजरा
सूची II: (प्रमुख उत्पादक जिला/क्षेत्र)
i. बाड़मेर और जोधपुर
ii. अजमेर और टोंक
iii. बांसवाड़ा और उदयपुर
iv. गंगानगर और हनुमानगढ़
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Downloaded from www.pdf.tube

11. (4) पहला
बाजरा राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है और इसके उत्पादन में राज्य का देश में प्रथम स्थान है। यहाँ की जलवायु और मृदा इस फसल के लिए अत्यंत उपयुक्त है। भारत के कुल बाजरा उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत से अधिक भाग अकेले इसी राज्य से प्राप्त होता है। कम वर्षा और उच्च तापमान सहन करने की क्षमता के कारण यह शुष्क क्षेत्रों में जीविका का आधार है।

12. (2) इसे उच्च तापमान की आवश्यकता होती है और यह कम नमी वाली हल्की, रेतीली मिट्टी में अच्छी तरह बढ़ता है।
बाजरा एक कठोर फसल है जो प्रतिकूल वातावरणीय परिस्थितियों में भी पनप सकती है। इसके विकास हेतु उच्च तापमान और कम नमी वाली जलवायु आवश्यक होती है। यह हल्की रेतीली मिट्टी में सर्वाधिक अच्छी तरह बढ़ता है, जहाँ अन्य फसलें जीवित नहीं रह पातीं। यह फसल सूखे के प्रति प्रतिरोधी है और बहुत कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी अच्छी उपज देने में पूर्णतः सक्षम है।

13. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के पश्चिमी और मध्य जिले जैसे बाड़मेर, जोधपुर और नागौर बाजरा उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं। यहाँ की पारिस्थितिक स्थितियाँ, जिनमें रेतीली मिट्टी और शुष्क जलवायु शामिल हैं, बाजरा की खेती हेतु आदर्श मानी जाती हैं। चूंकि इन क्षेत्रों में वर्षा कम और अनिश्चित होती है, इसलिए बाजरा यहाँ की मुख्य फसल है। यह फसल कम जल में खाद्यान्न और पशु चारा उपलब्ध कराती है।

14. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान में विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थान फसल सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान जोधपुर में स्थित है। राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र अजमेर के तबीजी में कार्य करता है। सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के सेवर में स्थित है, जबकि अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना मंडोर, जोधपुर में संचालित है। ये संस्थान उन्नत तकनीकों के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने में सहायक हैं।

15. (1) केवल I, II, III और IV
राजस्थान भारत के कुल बाजरा उत्पादन में 40 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है। यह एक कठोर फसल है जिसकी गहरी जड़ प्रणाली इसे शुष्क जलवायु और सूखे के प्रति सहनशील बनाती है। मक्का या चावल की तुलना में यह प्रतिकूल परिस्थितियों को बेहतर तरीके से झेल सकती है। पश्चिमी राजस्थान के अतिरिक्त, पूर्वी जिलों जैसे अलवर और जयपुर में भी इसकी व्यापक खेती की जाती है।

16. (2) यह मनुष्यों के लिए मुख्य भोजन और पशुओं के लिए चारा प्रदान करता है।
राजस्थान में बाजरा के सर्वाधिक क्षेत्रफल पर बोए जाने का प्रमुख कारण इसकी बहुमुखी उपयोगिता है। यह ग्रामीण जनसंख्या हेतु मुख्य भोजन का स्रोत होने के साथ-साथ पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था हेतु प्रचुर मात्रा में सूखा चारा भी उपलब्ध कराता है। शुष्क परिस्थितियों में भी यह फसल न्यूनतम लागत पर स्थिर उत्पादन देने में सक्षम है। पशुओं हेतु इसकी कड़बी अत्यंत महत्वपूर्ण आहार मानी जाती है।

17. (2) पूर्वी और सिंचित उत्तरी क्षेत्र
राजस्थान में गेहूं का उत्पादन मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में केंद्रित है जहाँ सिंचाई की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं। राज्य के पूर्वी मैदान और उत्तर के सिंचित क्षेत्र, जैसे गंगानगर और हनुमानगढ़, गेहूं उत्पादन में अग्रणी हैं। इन क्षेत्रों की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और नहरों का जल इस रबी फसल हेतु उपयुक्त होता है। शुष्क क्षेत्रों की तुलना में यहाँ उत्पादकता और गुणवत्ता अधिक रहती है।

18. (1) इसे बिना सिंचाई के पश्चिमी राजस्थान के स्थानांतरित रेत के टीलों में अत्यधिक सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।
गेहूं रबी ऋतु की प्रमुख खाद्यान्न फसल है जिसे शीत ऋतु में ठंडे तापमान और पकने के समय गर्मी की आवश्यकता होती है। मावट की वर्षा इसके वानस्पतिक विकास हेतु अत्यंत लाभकारी है। हालांकि, यह कथन गलत है कि इसे पश्चिमी राजस्थान के रेत के टीलों में बिना सिंचाई के उगाया जा सकता है। गेहूं के सफल उत्पादन हेतु नियमित और पर्याप्त सिंचाई अनिवार्य आवश्यकता है।

19. (1) गंगानगर, हनुमानगढ़, अलवर, भरतपुर
राजस्थान में गेहूं उत्पादन का वितरण सिंचाई सुविधाओं पर निर्भर है। श्री गंगानगर जिला नहरों के जाल के कारण राज्य का सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक है, जिसे 'अन्न का कटोरा' भी कहा जाता है। इसके पश्चात हनुमानगढ़, अलवर और भरतपुर का स्थान आता है। इन जिलों में जलोढ़ मिट्टी और सिंचाई के विकसित साधन होने के कारण गेहूं की खेती का सघन घनत्व पाया जाता है।

20. (4) यह पादप ऊतकों को जमने के कारण क्षति पहुँचाती है और उपज कम कर देती है।
जनवरी में भीषण पाला पड़ना पूर्वी राजस्थान में गेहूं की खेती हेतु एक बड़ी चुनौती है। जब तापमान जमाव बिंदु से नीचे चला जाता है, तो पौधों की कोशिकाओं के भीतर का जल जम जाता है। इस जमाव के कारण पादप ऊतक फट जाते हैं और उनकी जैविक प्रक्रियाएं बाधित होती हैं। इसके परिणामस्वरूप गेहूं की बालियाँ प्रभावित होती हैं, जिससे कुल उपज में भारी गिरावट आती है।

NODIA

21. (3) उपजाऊ जलोढ़ (दोमट) मिट्टी
राजस्थान के पूर्वी मैदानों में गेहूं की इष्टतम खेती हेतु उपजाऊ जलोढ़ या दोमट मिट्टी को सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। इस मिट्टी में नमी धारण करने की अच्छी क्षमता होती है और यह आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है। गेहूं की जड़ों के विकास और पौधों की मजबूती हेतु दोमट मिट्टी का लचीलापन तथा जल निकासी व्यवस्था अत्यंत सहायक और प्रभावशाली सिद्ध होती है।

33. राजस्थान भारत में सरसों का शीर्ष उत्पादक है। यह सामान्यतः कुल राष्ट्रीय सरसों उत्पादन का लगभग कितना प्रतिशत भाग रखता है?
(1) 10 - 15 प्रतिशत
(2) 40 - 45 प्रतिशत
(3) 20 - 25 प्रतिशत
(4) 75 - 80 प्रतिशत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. सूची I में कृषि विशेषताओं या संस्थानों को सूची II में उनके फसल संबंधों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कृषि विशेषता/संस्थान)
A. भरतपुर में अनुसंधान निदेशालय
B. सफेद लट (White Grub) कीट के प्रति संवेदनशीलता
C. पोटाश और गंधक की उच्च आवश्यकता
D. 'माही सुगंधा' की उत्पत्ति
सूची II: (संबद्ध फसल)
i. चावल
ii. सरसों
iii. मूंगफली
iv. सरसों और अन्य तिलहन
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. राजस्थान में सरसों की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से रबी ऋतु की तिलहन फसल है।
II. अलवर, भरतपुर और गंगानगर प्रमुख उत्पादक जिलों में शामिल हैं।
III. फली के समुचित विकास के लिए इसे 100-150 सेमी भारी वर्षा की आवश्यकता होती है।
IV. फूल आने की अवस्था में पाला फसल को गंभीर क्षति पहुँचा सकता है।
V. इस फसल को उत्तम जल निकासी वाली, रेतीली दोमट से लेकर दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल IV और V
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. राजस्थान के पूर्वी जिलों (जैसे भरतपुर और अलवर) में सरसों की अत्यधिक प्रधानता का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) इन जिलों में शीतकालीन तापमान का बिल्कुल भी जमाव बिंदु तक न पहुँचना।
(2) विशेष रूप से केवल पूर्वी राजस्थान के किसानों को दी जाने वाली सहायता (सब्सिडी)।
(3) अत्यधिक मृदा लवणता जो केवल सरसों की फसल के लिए अनुकूल है।
(4) जलोढ़ मिट्टी की उपलब्धता और मध्यम सिंचाई सुविधाएँ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राजस्थान में तिलहन फसल के रूप में सरसों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह राज्य में खाद्य तेल प्रसंस्करण उद्योग का आधार है।
(2) इसे प्रायः गेहूं या चने के साथ मिश्रित फसल के रूप में उगाया जाता है।
(3) इसके परिपक्व होने के पूर्ण चरण के दौरान खेतों में स्थिर जल की आवश्यकता होती है।
(4) चेपा (Aphids) एक प्रमुख कीट है जो इसकी उपज को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में सरसों की बुवाई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त कृषि-जलवायु स्थिति है?
(1) जुलाई में उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता
(2) अक्टूबर-नवंबर में शीतल तापमान और शुष्क जलवायु
(3) मई में अत्यधिक उष्णता और शुष्क हवाएँ
(4) अगस्त में भारी वर्षा और जलभराव वाली मिट्टी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. हाल के वर्षों में मूंगफली उत्पादन में उनके सामान्य योगदान के आधार पर राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. बीकानेर
II. जोधपुर
III. जयपुर
IV. डूंगरपुर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) IV, III, II, I
(3) II, I, IV, III
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. दक्षिणी राजस्थान में मूंगफली के वितरण के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा लाल और काली मिट्टी का उपयोग करके इसका उत्पादन करते हैं।
(2) इसकी खेती विशेष रूप से क्षेत्र के अत्यधिक लवणीय क्षेत्रों में की जाती है।
(3) इस क्षेत्र में मूंगफली को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है और यह शीतकालीन पाले पर निर्भर करती है।
(4) यह मुख्य रूप से शुष्क ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान जायद फसल के रूप में उगाई जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

Click Here to Buy book on Amazon

25. राजस्थान में मक्का की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मक्का को उच्च तापमान और उत्तम जल निकासी वाली दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।
II. दक्षिणी राजस्थान की लाल दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।
III. इसे पूरे राज्य में मुख्य रूप से खरीफ फसल के रूप में उगाया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. राजस्थान में ज्वार की कृषि-जलवायु आवश्यकताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह ताप और सूखा सहन करने वाली फसल है, जिसे अक्सर 'ऊँट की फसल' कहा जाता है।
(2) यह शीत के प्रति संवेदनशील है और यदि तापमान 25°C से अधिक हो जाता है तो यह नष्ट हो जाती है।
(3) इसके विकास के लिए न्यूनतम 150 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
(4) इसके शुरुआती वानस्पतिक चरण के दौरान जलभराव की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): राजस्थान भारत में मूंग और मोठ जैसी दालों के प्रमुख उत्पादकों में से एक है।
कारण (R): ये फलियां सूखा-प्रतिरोधी हैं, इन्हें न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है, और ये राज्य की शुष्क परिस्थितियों के अनुकूल हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित में से कौन सा जिला पारंपरिक रूप से राजस्थान में चने के प्रमुख उत्पादक के रूप में जाना जाता है?
(1) जैसलमेर
(2) बीकानेर
(3) डूंगरपुर
(4) राजसमंद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में खरीफ की दाल के रूप में नहीं उगाई जाती है?
(1) मूंग (हरा चना)
(2) मोठ
(3) चना
(4) उड़द (काला चना)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

30. राजस्थान की दालों के राष्ट्रीय महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान प्रायः भारत में कुल दाल उत्पादन में शीर्ष तीन राज्यों में शामिल रहता है।
II. दालों की खेती नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायता करती है, जिससे रेतीली मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है।
III. मोठ की खेती विशेष रूप से यूरोपीय बाजारों में निर्यात के लिए की जाती है।
IV. दालें राज्य की शाकाहारी जनसंख्या के लिए प्रोटीन का एक प्रमुख स्रोत हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. दाल की फसल और उससे संबंधित विशेषता/क्षेत्र का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) मोठ - सूखा प्रतिरोधी, मुख्य रूप से शुष्क पश्चिमी जिलों में उगाई जाती है।
(2) मूंग - बहुत भारी वर्षा और जल-प्रतिधारण करने वाली मृत्तिका मिट्टी की आवश्यकता होती है।
(3) चना - मुख्य रूप से शुष्क ग्रीष्मकालीन जायद ऋतु के दौरान बोया जाता है।
(4) अरहर - जैसलमेर जिले में सर्वाधिक व्यापक रूप से उगाई जाने वाली दाल।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: राजस्थान में चने की खेती में वर्ष-दर-वर्ष उत्पादन में बड़े उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं।
कथन II: शीत ऋतु में चने पर पाले का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है और यह मिट्टी की अवशिष्ट नमी पर निर्भर करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(2) चित्तौड़गढ़ और बूंदी
(3) चूरु और झुंझुनू
(4) जोधपुर और नागौर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. राजस्थान में गन्ने की खेती की बाधाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक लंबी अवधि की फसल है जिसे पकने में लगभग 10-12 महीने लगते हैं।
II. इसे गहन और निरंतर सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो राजस्थान में दुर्लभ है।
III. पश्चिमी राजस्थान की शुष्क जलवायु इसकी विकास दर को काफी तीव्र करती है।
IV. यह पाले के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जो शीतकाल के दौरान उत्तरी जिलों में इसके विस्तार को सीमित करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. राजस्थान में चीनी मिलों और उनके संबंधित स्थानों का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) राजस्थान स्टेट गंगानगर शुगर मिल्स - कोटा
(2) केशोरायपाटन सहकारी शुगर मिल्स - उदयपुर
(3) द मेवाड़ शुगर मिल्स - भोपाल सागर (चित्तौड़गढ़)
(4) उदयपुर शुगर मिल्स - श्री गंगानगर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. राजस्थान में गन्ने के लिए जलवायु आवश्यकताओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह उच्च आर्द्रता के साथ उष्णकटिबंधीय से उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में सर्वाधिक पनपता है।
(2) इसके विकास के दौरान 21°C से 27°C के बीच तापमान की आवश्यकता होती है।
(3) पकने की अवस्था के दौरान भीषण पाला रिकवरी दर को काफी कम कर देता है।
(4) ग्रीष्मकाल के दौरान उष्ण हवाएं (लू) सुक्रोज संचय के लिए लाभदायक होती हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. राजस्थान में गन्ने की खेती के अंतर्गत सीमित और घटते क्षेत्र का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) सभी जल-गहन फसलों पर राज्य सरकार द्वारा पूर्ण प्रतिबंध।
(2) प्रतिवर्ष मरुस्थलीय टिड्डियों द्वारा गन्ने की फसल का पूर्ण विनाश।
(3) घटता भूजल और उच्च सिंचाई लागत इसे अव्यवहारिक बनाती है।
(4) स्थानीय किसानों का शीतोष्ण फलों को उगाने की ओर अधिक झुकाव।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सूची I में मसाला फसलों को सूची II में राजस्थान के प्रमुख उत्पादक जिलों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (मसाला फसल)
A. धनिया
B. मेथी
C. जीरा
D. सौंफ
सूची II: (प्रमुख उत्पादक जिला)
i. जालौर / बाड़मेर
ii. नागौर
iii. बारां / झालावाड़
iv. सिरोही / टोंक
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. राजस्थान में बीजीय मसालों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत में धनिया और मेथी के उत्पादन में राजस्थान का लगभग एकाधिकार है।
II. हाड़ौती क्षेत्र अपनी बड़े पैमाने पर धनिया की खेती के लिए प्रसिद्ध है।
III. नागौर अपनी सुगंधित 'पान मेथी' (कसूरी मेथी) के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।
IV. बीजीय मसाले मुख्य रूप से खरीफ की फसलें हैं जिन्हें भारी मानसून वर्षा की आवश्यकता होती है।
V. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र तबीजी, अजमेर में स्थित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. राजस्थान का कौन सा भौगोलिक क्षेत्र धनिया की खेती में अत्यधिक प्रभावी है?
(1) हाड़ौती का पठार
(2) शेखावाटी क्षेत्र
(3) गोडवाड़ क्षेत्र
(4) मेवाड़ क्षेत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में व्यावसायिक रूप से उगाई जाने वाली प्रमुख मसाला फसल नहीं है?

Downloaded from www.pdf.tube

(1) जीरा
(2) लहसुन
(3) इलायची
(4) मेथी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: राजस्थान का नागौर जिला ऐतिहासिक रूप से उच्च गुणवत्ता वाली मेथी के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
कथन II: इस क्षेत्र की मेथी की पत्तियों और बीजों में विशिष्ट मिट्टी और शुष्क जलवायु परिस्थितियों के कारण एक पृथक सुगंध होती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को जीरा उत्पादन के सामान्यतः घटते क्रम में सही अनुक्रम में चुनिए:
(1) जालौर, बाड़मेर, जोधपुर
(2) झालावाड़, बारां, कोटा
(3) गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर
(4) उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. राजस्थान में जीरे की खेती की संवेदनशीलता के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) यह सभी प्रकार के कवक रोगों के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी है।
(2) फूल आने के समय झुलसा (Blight) रोग और पाला पड़ने से फसल नष्ट हो सकती है।
(3) कटाई से एक माह पूर्व इसे स्थिर जल की आवश्यकता होती है।
(4) इसके विकास के लिए बुवाई के समय उच्च तापमान की आवश्यकता होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. पश्चिमी राजस्थान में जीरे को प्रभावित करने वाले प्रमुख रोगों में असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) झुलसा (Blight)
(2) छाछ्या (Powdery Mildew)
(3) लाल सड़न (Red Rot)
(4) उकठा (Wilt)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. जालौर, बाड़मेर और जोधपुर जैसे जिलों में जीरे की खेती के केंद्रीकरण का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) इस फसल को भारी मृत्तिका मिट्टी की आवश्यकता होती है जो केवल इन्ही जिलों में पाई जाती है।
(2) इन जिलों में राज्य की सर्वाधिक वर्षा होती है, जो जीरे के लिए आवश्यक है।
(3) केवल इन जिलों को राज्य द्वारा कानूनी रूप से निर्यात-गुणवत्ता वाले मसाले उगाने की अनुमति है।
(4) इस क्षेत्र की हल्की रेतीली-दोमट मिट्टी के साथ शीतल, शुष्क शीतकालीन जलवायु इसके विकास के लिए आदर्श है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. जीरे की निर्यात गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कटाई के चरण के दौरान निम्नलिखित में से कौन सी कृषि पद्धति महत्वपूर्ण मानी जाती है?
(1) शुष्क बीजों के झड़ने को रोकने के लिए पौधों को जल्दी उखाड़ना।
(2) किण्वन के लिए कटी हुई फसल को स्थिर जल में डुबोना।
(3) भारी मौसमी वर्षा के तुरंत बाद फसल की कटाई करना।
(4) फलियों से बीज निकालने से पहले सतह की पत्तियों को जलाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

64. सूची I में बागवानी फसलों को सूची II में राजस्थान के प्रमुख उत्पादक जिलों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (बागवानी फसल/फल)
A. किन्नू
B. संतरा
C. अमरूद
D. अनार
सूची II: (प्रमुख उत्पादक जिला)
i. सवाई माधोपुर
ii. झालावाड़
iii. बाड़मेर / जालौर
iv. गंगानगर / हनुमानगढ़
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. राजस्थान में किन्नू की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह नींबू वर्गीय (साइट्रस) फल की एक उच्च उपज वाली संकर किस्म है।
II. गंगानगर और हनुमानगढ़ राज्य के अग्रणी उत्पादक हैं।
III. यह जैसलमेर के अत्यधिक शुष्क और असिंचित रेत के टीलों में सर्वाधिक पनपता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III

(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. राजस्थान में 'नींबू वर्गीय फल उत्कृष्टता केंद्र' कहाँ स्थित है?
(1) नांता, कोटा
(2) बस्सी, जयपुर
(3) तबीजी, अजमेर
(4) बीछवाल, बीकानेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): झालावाड़ को लोकप्रिय रूप से 'राजस्थान का नागपुर' कहा जाता है।
कारण (R): यह महाराष्ट्र में नागपुर के समान ही राज्य में संतरों का सबसे बड़ा उत्पादक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. राजस्थान में बागवानी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राज्य शुष्क पश्चिमी जिलों में खजूर की खेती को बढ़ावा दे रहा है।
(2) उच्च मूल्य वाली सब्जी फसलों के संरक्षण के लिए हरित गृह (ग्रीनहाउस) और शेड नेट पर भारी अनुदान दिया जाता है।
(3) फलों के बगीचों में ड्रिप सिंचाई जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
(4) पारंपरिक खाद्यान्न की खेती की तुलना में बागवानी से कृषि आय काफी कम हो जाती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. उत्तरी राजस्थान में कृषि चुनौतियों के संदर्भ में 'सेम' (Sem) की समस्या विशेष रूप से किसे संदर्भित करती है?
(1) तीव्र मरुस्थलीय हवाओं के कारण होने वाला गंभीर मृदा अपरदन।
(2) उत्तर में मरुस्थलीय टिड्डियों का विनाशकारी प्रकोप।
(3) नहर सिंचाई के कारण होने वाला जलभराव और मृदा लवणता।
(4) किसानों के मध्य कृषि जोतों का अत्यधिक विखंडन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. राजस्थान में कृषि जोतों के विखंडन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ट्रैक्टर और हार्वेस्टर जैसी भारी कृषि मशीनरी के उपयोग को आर्थिक रूप से अव्यवहारिक बनाता है।
II. यह खेती की प्रति हेक्टेयर लागत को बढ़ाता है।
III. यह निर्वाह खेती के स्थान पर बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती को प्रोत्साहित करता है।
IV. यह प्रायः सीमाओं और सिंचाई जल के विभाजन को लेकर विवादों का कारण बनता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में मृदा क्षरण और मरुस्थलीकरण का प्राथमिक कारण नहीं है?
(1) पशुओं द्वारा अनियंत्रित अति-चराई
(2) पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में वायु अपरदन
(3) वनों की कटाई और वनस्पति आवरण को हटाना
(4) जैविक खाद और जैव उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: भूजल स्तर का तीव्रता से गिरना राजस्थान में कृषि के लिए एक गंभीर चुनौती है।
कथन II: भूजल दोहन के संबंध में राज्य के अधिकांश खंडों को 'अति-दोहित' (Over-exploited) या 'डार्क जोन' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I का परिणाम है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन वे पूर्णतः असंबंधित हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. इंदिरा गांधी नहर कमांड क्षेत्र में बढ़ती मृदा लवणता का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) मिट्टी में भारी रॉक फॉस्फेट रसायनों का निरंतर प्रयोग।
(2) कच्छ के रण से आने वाली हवाओं द्वारा लवणीय धूल का प्राकृतिक निक्षेपण।
(3) केशिकत्व (Capillary action) द्वारा जलभराव के माध्यम से लवणों का सतह पर आना।
(4) कमांड क्षेत्र में गहरी जड़ों वाली फलियों वाली फसलों की दीर्घकालिक खेती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. सूची I में कृषि चुनौतियों को सूची II में राजस्थान के सर्वाधिक गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कृषि चुनौती)
A. जलभराव (सेम)

Click Here to Buy book on Amazon

41. राजस्थान में मूंगफली की खेती को प्रभावित करने वाले प्रमुख कीटों और रोगों के संबंध में असंगत विकल्प की पहचान कीजिए।
(1) सफेद लट (White grub)
(2) टिक्का रोग
(3) गुलाबी सुंडी (Pink bollworm)
(4) कॉलर रॉट (Collar rot)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. मूंगफली के उच्च उत्पादन और उत्कृष्ट गुणवत्ता के कारण राजस्थान में किस स्थान को 'राजस्थान का राजकोट' के रूप में जाना जाता है?
(1) लूणकरणसर
(2) सूरतगढ़
(3) फलौदी
(4) नोहर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. सफल मूंगफली की खेती के लिए शिथिल, भुरभुरी और उत्तम जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी क्यों आवश्यक है?
(1) यह परिपक्वता के दौरान पत्तियों और तनों की अत्यधिक वृद्धि को रोकती है।
(2) यह जड़ों को जलमग्न रखने के लिए अधिकतम जल रोके रखती है।
(3) यह पौधे की प्राकृतिक नाइट्रोजन-क्षय प्रक्रिया को तीव्र करती है।
(4) यह फली बनने के लिए खूँटियों (Pegs) के प्रवेश की सुविधा प्रदान करती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. सूची I में कपास की किस्मों को सूची II में राजस्थान के उनके प्रमुख क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कपास किस्म/प्रकार)
A. अमेरिकन कपास (नरमा)
B. मालवी कपास
C. देशी कपास
D. बीकानेरी नरमा
सूची II: (प्रमुख क्षेत्र)
i. झालावाड़, कोटा, बांसवाड़ा
ii. गंगानगर और हनुमानगढ़
iii. उदयपुर और चित्तौड़गढ़
iv. बीकानेर और आसपास के सिंचित क्षेत्र
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. गंगानगर-हनुमानगढ़ पट्टी में अमेरिकन कपास की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से वर्षा आधारित फसल है जिसे कृत्रिम सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।
II. इसमें स्वदेशी देशी कपास किस्मों की तुलना में लंबे रेशे होते हैं।
III. नहर जल (जैसे इंदिरा गांधी नहर और गंग नहर) की उपलब्धता ने इस पट्टी को राज्य का शीर्ष उत्पादक बना दिया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: गुलाबी सुंडी (Pink Bollworm) उत्तरी राजस्थान में कपास की खेती के लिए एक बड़ा खतरा है।
कथन II: बीटी कपास (Bt Cotton) को अपनाने से राज्य में कीटों की सभी समस्याएँ स्थायी रूप से समाप्त हो गई हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(3) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ राजस्थान में कपास उत्पादन में अग्रणी जिले हैं।
कारण (R): इन जिलों की विशेषता सुनिश्चित नहर सिंचाई नेटवर्क और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी की उपलब्धता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. निम्नलिखित में से किस प्रकार की मिट्टी आमतौर पर राजस्थान में व्यावसायिक कपास की खेती के लिए सबसे कम उपयुक्त मानी जाती है?
(1) मध्यम काली मिट्टी
(2) अत्यधिक उथली, कंकड़ वाली मरुस्थलीय मिट्टी
(3) जलोढ़ मिट्टी
(4) गहरी दोमट मिट्टी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

NODIA

49. राजस्थान में गन्ने की खेती मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस जिले के युग्म में केंद्रित है?
(1) बाड़मेर और जैसलमेर

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 28 से 30 प्रतिशत
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रचलित कीमतों पर, सकल राज्य मूल्यवर्धन (GSVA) में इस क्षेत्र का योगदान लगभग 28 से 30 प्रतिशत रहता है। इसमें फसल, पशुपालन, वानिकी और मत्स्य पालन शामिल हैं। आर्थिक समीक्षा के अनुसार, राज्य की आर्थिक वृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित करने में इस प्राथमिक क्षेत्र का निरंतर और सुदृढ़ योगदान बना हुआ है।

2. (1) राष्ट्रीय औसत की तुलना में उच्च औसत फसल उपज
राजस्थान की कृषि मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु पर आधारित है। यहाँ मानसून की अनिश्चितता, छोटी जोत और ग्रामीण आय में पशुपालन की प्रधानता प्रमुख विशेषताएँ हैं। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और सिंचाई के सीमित संसाधनों के कारण, राज्य की अधिकांश फसलों की औसत उपज राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी कम रहती है, जो कृषि विकास के मार्ग में एक बड़ी चुनौती है।

3. (3) कृषि जीएसवीए और ग्रामीण रोजगार में भारी उतार-चढ़ाव
राजस्थान की कृषि व्यवस्था काफी हद तक वर्षा पर निर्भर है। मानसून में देरी या कमी के कारण बोए गए क्षेत्र में भारी गिरावट आती है, जिससे उत्पादन प्रभावित होता है। इसका प्राथमिक आर्थिक प्रभाव कृषि सकल राज्य मूल्यवर्धन में अस्थिरता और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में कमी के रूप में दिखाई देता है। इससे किसान और खेतिहर मजदूर आर्थिक संकट का सामना करते हैं।

4. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान को विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में बाजरा और मोठ जैसी सूखा-सहनशील फसलें उगाई जाती हैं। बाढ़ संभावित पूर्वी मैदानों में गेहूं और सरसों की प्रचुरता रहती है। उप-आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र मुख्य रूप से मक्का उत्पादन हेतु प्रसिद्ध हैं, जबकि सिंचित उत्तर-पश्चिमी मैदानों में कपास और गेहूं की प्रधानता होती है। यह क्षेत्रीय विविधता मृदा और जल पर आधारित है।

5. (1) केवल I और II
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुपालन क्षेत्र का योगदान अत्यंत प्रभावी है, जो कृषि सकल राज्य मूल्यवर्धन के लगभग आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। कृषि और संबद्ध क्षेत्र राज्य के कुल कार्यबल के 50 प्रतिशत से अधिक हिस्से को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करते हैं। हालांकि, राज्य में खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत आने वाला क्षेत्रफल व्यावसायिक फसलों की तुलना में बहुत अधिक है, जो खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता देता है।

6. (2) जून-जुलाई में बुवाई और सितंबर-अक्टूबर में कटाई
राजस्थान में खरीफ की फसलें मुख्य रूप से मानसून पर आधारित होती हैं। इन फसलों की बुवाई जून और जुलाई में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ की जाती है। फसल की परिपक्वता के पश्चात इसकी कटाई सितंबर और अक्टूबर के महीनों में की जाती है। बाजरा, मक्का, मूंगफली और मोठ इस ऋतु की प्रमुख फसलें हैं। यह चक्र राज्य के ग्रामीण जीवन और कृषि अर्थव्यवस्था का आधार है।

7. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में जायद फसलों की खेती विशेष रूप से मार्च से जून के ग्रीष्मकालीन महीनों में की जाती है। इस अवधि में वर्षा की मात्रा नगण्य होती है और तापमान बहुत अधिक रहता है। अत्यधिक गर्मी के कारण इन फसलों की खेती केवल उन्हीं क्षेत्रों में संभव है जहाँ सुनिश्चित सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो। फल, सब्जियां और चारा इस ऋतु के मुख्य उत्पाद हैं, जो जल प्रबंधन पर निर्भर हैं।

8. (1) जौ
राजस्थान में फसलों को बुवाई के समय के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। बाजरा, मोठ और तिल खरीफ ऋतु की प्रमुख फसलें हैं, जिनकी खेती मानसून के दौरान की जाती है। इसके विपरीत, जौ रबी ऋतु की एक प्रमुख फसल है, जिसे शीत ऋतु में बोया जाता है और वसंत में काटा जाता है। अतः ऋतु चक्र के आधार पर जौ अन्य विकल्पों से भिन्न है।

9. (3) सरसों - खरीफ
राजस्थान में मूंगफली खरीफ ऋतु की महत्वपूर्ण तिलहन फसल है, जबकि चना रबी ऋतु में उगाया जाता है। खरबूजा जायद की फसल है जो गर्मियों में पैदा होती है। सरसों रबी ऋतु की सबसे प्रमुख तिलहन फसल है, जिसे अक्टूबर-नवंबर में बोया जाता है। इसे खरीफ की फसल के रूप में वर्गीकृत करना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। राज्य के पूर्वी और उत्तरी भागों में सरसों का सर्वाधिक उत्पादन होता है।

10. (2) केवल III
राजस्थान में खरीफ और रबी फसलों का चक्र मानसून और शीतकालीन वर्षा पर आधारित है। गेहूं और जौ रबी की मुख्य खाद्यान्न फसलें हैं। हालांकि, जायद फसलों के बारे में यह धारणा गलत है कि वे पश्चिमी राजस्थान के असिंचित शुष्क क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। वास्तव में, जायद फसलों को गर्मियों में अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है, अतः इनकी खेती केवल सिंचाई वाले क्षेत्रों में संभव है।

NODIA

B. गंभीर वायु अपरदन
C. अवनलिका अपरदन (बीहड़)
D. भूजल में फ्लोराइड संदूषण

सूची II: (क्षेत्र)
i. नागौर - अजमेर पट्टी (बाँका पट्टी)
ii. हनुमानगढ़ - गंगानगर
iii. जैसलमेर - बाड़मेर
iv. धौलपुर - सवाई माधोपुर

(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. राजस्थान में 'मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका उद्देश्य कृषि कार्य के दौरान दुर्घटनाओं के कारण मृत्यु या विकलांगता की स्थिति में किसानों और कृषि श्रमिकों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
II. यह सभी किसानों को निःशुल्क सूक्ष्म सिंचाई उपकरण वितरण को बढ़ावा देती है।
III. यह योजना कृषि मशीनरी और विद्युत आघात (इलेक्ट्रोक्यूशन) से होने वाली दुर्घटनाओं को कवर करती है।
IV. योजना के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता राशि आकस्मिक मृत्यु के लिए ₹2 लाख तक हो सकती है।
V. इसे विशेष रूप से व्यावसायिक नकदी फसलें उगाने वाले किसानों के लिए आरंभ किया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, III और IV
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III और V
(4) केवल I, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मोटे अनाज (मिलेट्स) की खेती और प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा 'राजस्थान मिलेट्स मिशन' आरंभ किया गया था। किस वित्तीय वर्ष के बजट में इसकी प्रमुख रूप से घोषणा की गई थी?

(1) 2018-19
(2) 2022-23
(3) 2015-16
(4) 2010-11
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. राजस्थान में पीएम-कुसुम (PM-KUSUM) योजना के क्रियान्वयन के संबंध में कौन सा कथन सही है?

(1) यह राज्य को एमएसपी दरों पर अधिशेष फसलों को खरीदने का आदेश देती है।
(2) यह आकार की परवाह किए बिना सभी किसानों को निःशुल्क बिजली प्रदान करती है।
(3) भालोजी, जयपुर में योजना के अंतर्गत प्रथम सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया।
(4) यह रासायनिक उर्वरकों को जैविक विकल्पों से प्रतिस्थापित करने पर केंद्रित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. राजस्थान में कृषि योजना और उसके प्राथमिक उद्देश्य का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?

(1) राजस्थान कृषि प्रसंस्करण नीति - कृषि-प्रसंस्करण और कृषि निर्यात को बढ़ावा देना
(2) डिग्गी निर्माण योजना - जल भंडारण संरचनाओं के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना
(3) राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना - खेती के दौरान आकस्मिक मृत्यु/चोट के लिए वित्तीय सहायता
(4) तारबंदी योजना - सीमांत किसानों को उच्च उपज वाले बीजों का वितरण करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. राजस्थान की निम्नलिखित विशिष्ट नीतियों/मिशनों को उनके आरंभ वर्ष के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए (प्राचीनतम से नवीनतम):

I. राजस्थान कृषि-प्रसंस्करण, कृषि-व्यवसाय एवं कृषि-निर्यात प्रोत्साहन नीति
II. राजस्थान मिलेट्स मिशन
III. मुख्यमंत्री बीज स्वावलंबन योजना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:

(1) I, III, II
(2) III, I, II
(3) II, I, III
(4) I, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. 'राजस्थान कृषि-प्रसंस्करण, कृषि-व्यवसाय एवं कृषि-निर्यात प्रोत्साहन नीति, 2019' का सबसे उपयुक्त उद्देश्य क्या है?

(1) स्थानीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कच्चे कृषि उत्पादों के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना।
(2) आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण करके और मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहित करके आय में वृद्धि करना।
(3) बड़े पैमाने पर बहुराष्ट्रीय सेज (SEZ) स्थापित करने के लिए बलपूर्वक कृषि भूमि का अधिग्रहण करना।
(4) मौसमी खेती से बचने के लिए किसानों को मासिक प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण प्रदान करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

22. (2) उदयपुर और भीलवाड़ा जैसे दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र।
राजस्थान में मक्का की खेती मुख्य रूप से राज्य के दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में केंद्रित है। उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और बांसवाड़ा जिले मक्का उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं। इस क्षेत्र की लाल-दोमट मिट्टी और अरावली की ढलान वाली भूमि मक्का हेतु आवश्यक जल निकासी और अनुकूल जलवायु प्रदान करती है। यहाँ मक्का स्थानीय समुदायों की खाद्य संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

23. (4) माही सुगंधा
राजस्थान के कृषि अनुसंधान केंद्रों ने मक्का की खेती हेतु कई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें माही कंचन, माही धवल और नवजोत प्रमुख हैं, जो मक्का के अधिक उत्पादन हेतु जानी जाती हैं। इसके विपरीत, माही सुगंधा चावल की एक विशिष्ट सुगंधित किस्म है, जिसे बांसवाड़ा क्षेत्र हेतु विकसित किया गया है। अतः माही सुगंधा अन्य मक्का की किस्मों से भिन्न और असंगत विकल्प है।

24. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान में फसलों का क्षेत्रीय वितरण विविध है। ज्वार का उत्पादन मुख्य रूप से मध्य राजस्थान के अजमेर और टोंक जिलों में अधिक होता है। मक्का दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा और उदयपुर की प्रमुख फसल है। गेहूं का सर्वाधिक उत्पादन उत्तरी सिंचित मैदानों जैसे श्री गंगानगर में होता है। वहीं, बाजरा पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर और जोधपुर जिलों में बड़े पैमाने पर उगाया जाता है।

25. (4) I, II और III
मक्का उत्पादन हेतु उच्च तापमान और ऐसी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है जिसमें जल निकासी की उत्तम व्यवस्था हो। दक्षिणी राजस्थान में पाई जाने वाली लाल दोमट मिट्टी इसकी खेती हेतु प्राकृतिक रूप से उपयुक्त मानी जाती है। राजस्थान में मक्का को पूरे राज्य में मुख्य रूप से खरीफ ऋतु के दौरान मानसून की वर्षा पर आधारित फसल के रूप में सफलतापूर्वक उगाया जाता है।

26. (1) यह ताप और सूखा सहन करने वाली फसल है, जिसे अक्सर 'ऊँट की फसल' कहा जाता है।
ज्वार एक अत्यंत सहनशील फसल है जो उच्च तापमान और सूखे की स्थिति को आसानी से झेल सकती है। इसकी इसी विशिष्ट क्षमता के कारण इसे अक्सर 'ऊँट की फसल' के नाम से जाना जाता है। इसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। राजस्थान के मध्य और पूर्वी भागों में यह खाद्यान्न और पशु चारे के रूप में अत्यंत लोकप्रिय है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान भारत में मूंग और मोठ जैसी दलहन फसलों के उत्पादन में अग्रणी है। ये फसलें शुष्क और अर्ध-शुष्क परिस्थितियों हेतु पूर्णतः अनुकूल हैं क्योंकि इनमें सूखा सहन करने की अद्वितीय क्षमता होती है। इन्हें विकसित होने हेतु बहुत कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। ये दलहन फसलें न केवल पौष्टिक आहार प्रदान करती हैं, बल्कि मृदा में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाकर उर्वरता सुधारती हैं।

28. (2) बीकानेर
राजस्थान में चने का उत्पादन रबी ऋतु के दौरान बड़े पैमाने पर किया जाता है। बीकानेर जिला पारंपरिक रूप से राज्य में चने के प्रमुख उत्पादकों में से एक रहा है। यहाँ की मृदा और जलवायु परिस्थितियाँ चने की खेती हेतु अत्यंत अनुकूल हैं। चने को मिट्टी की अवशिष्ट नमी और शीतकालीन मावट की वर्षा की आवश्यकता होती है, जो फसल की गुणवत्ता और मात्रा निर्धारित करती है।

NODIA

29. (3) चना
राजस्थान में दालों को खरीफ और रबी दोनों ऋतुओं में उगाया जाता है। मूंग, मोठ और उड़द प्रमुख खरीफ की दालें हैं जिन्हें मानसून के दौरान बोया जाता है। इसके विपरीत, चना रबी ऋतु की फसल है। इसकी बुवाई अक्टूबर-नवंबर में की जाती है और कटाई वसंत में होती है। इसलिए, चना खरीफ श्रेणी में नहीं आता है और इसे ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है।

30. (2) I, II और IV
राजस्थान भारत के कुल दाल उत्पादन में निरंतर शीर्ष स्थान पर रहता है। दालों की खेती मिट्टी में नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करती है, जिससे रेतीली मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता में उल्लेखनीय सुधार होता है। शाकाहारी जनसंख्या हेतु दालें प्रोटीन का सबसे महत्वपूर्ण और सुलभ स्रोत हैं। हालांकि, मोठ की खेती मुख्य रूप से स्थानीय उपभोग हेतु की जाती है, न कि विशेष रूप से विदेशी निर्यात के लिए।

31. (1) मोठ - सूखा प्रतिरोधी, मुख्य रूप से शुष्क पश्चिमी जिलों में उगाई जाती है।
मोठ राजस्थान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट खरीफ फसल है। यह सूखे के प्रति जबरदस्त प्रतिरोध क्षमता रखती है, जिसके कारण यह पश्चिमी शुष्क जिलों जैसे बाड़मेर और बीकानेर हेतु सर्वाधिक उपयुक्त है। अन्य विकल्पों के विपरीत, मूंग को भारी वर्षा की आवश्यकता नहीं होती और चना रबी में उगाया जाता है। अतः मोठ और इसकी सूखा-रोधी विशेषता वाला युग्म भौगोलिक दृष्टि से सटीक है।

32. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में चने की उत्पादकता में प्रतिवर्ष भारी उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि चने की खेती मुख्य रूप से मिट्टी की अवशिष्ट नमी और वर्षा पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त, शीत ऋतु में पड़ने वाला पाला चने की फसल को गंभीर क्षति पहुँचाता है। यदि पकने के समय तापमान बहुत कम हो जाए, तो फसल नष्ट हो सकती है, जिससे उत्पादन घटता है।

33. (2) 40 - 45 प्रतिशत
राजस्थान भारत में सरसों के उत्पादन में निर्विवाद रूप से अग्रणी राज्य है। देश के कुल सरसों उत्पादन का लगभग 40 से 45

जयपुर जिले के भालोजी गाँव में स्थापित किया गया था। यह योजना किसानों को उनकी बंजर भूमि पर सौर संयंत्र लगाने हेतु प्रोत्साहित करती है। इससे किसानों की बिजली पर निर्भरता कम होती है और आय में वृद्धि होती है।

78. (4) तारबंदी योजना - सीमांत किसानों को उच्च उपज वाले बीजों का वितरण करना
राजस्थान की कृषि योजनाएं विशिष्ट उद्देश्यों हेतु निर्मित हैं। तारबंदी योजना का प्राथमिक उद्देश्य उच्च उपज वाले बीजों का वितरण करना नहीं, बल्कि खेतों की बाड़बंदी हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि आवारा पशुओं से फसलों को बचाया जा सके। शेष सभी विकल्प जैसे कृषि प्रसंस्करण नीति, डिग्गी निर्माण और राजीव गांधी कृषक साथी सहायता योजना अपने उद्देश्यों के साथ सही ढंग से सुमेलित हैं।

79. (2) III, I, II
राजस्थान में कृषि नीतियों का विकास क्रमबद्ध हुआ है। मुख्यमंत्री बीज स्वावलंबन योजना किसानों को स्वयं उन्नत बीज बनाने हेतु प्रेरित करने हेतु पहले लाई गई थी। इसके पश्चात, वर्ष 2019 में कृषि-प्रसंस्करण एवं निर्यात प्रोत्साहन नीति को लागू किया गया। सबसे हालिया पहल राजस्थान मिलेट्स मिशन है, जिसकी घोषणा वर्ष 2022-23 में हुई। यह क्रम राज्य सरकार की बदलती प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है।

80. (2) आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण करके और मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहित करके आय में वृद्धि करना।
राजस्थान कृषि-प्रसंस्करण, कृषि-व्यवसाय एवं कृषि-निर्यात प्रोत्साहन नीति, 2019 का मुख्य लक्ष्य राज्य के कृषि क्षेत्र को लाभदायक बनाना है। यह नीति कच्चे कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण पर बल देती है ताकि उनका मूल्य संवर्धन हो सके। एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला विकसित करके और प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित करके, इसका उद्देश्य सीधे तौर पर किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि करना है।

Click Here to Buy book on Amazon

देशी कपास उदयपुर के क्षेत्रों में पारंपरिक रूप से उगाई जाती है, जबकि बीकानेरी नरमा बीकानेर संभाग की विशिष्ट किस्म है। यह वितरण मिट्टी और सिंचाई पर निर्भर है।

45. (2) केवल II और III
गंगानगर-हनुमानगढ़ क्षेत्र में अमेरिकन कपास की खेती अत्यधिक सफल रही है। इस किस्म की मुख्य विशेषता इसके लंबे रेशे हैं, जो इसे देशी कपास की तुलना में अधिक मूल्यवान बनाते हैं। नहरों के माध्यम से सुनिश्चित जल की उपलब्धता ने इस शुष्क क्षेत्र को राज्य का सबसे बड़ा कपास उत्पादक बना दिया है। कपास एक जल-गहन फसल है, अतः इसे नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है।

46. (2) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
गुलाबी सुंडी उत्तरी राजस्थान के कपास किसानों हेतु एक गंभीर कीट समस्या है, जो फसल की पैदावार को कम कर देती है। हालांकि, यह मानना गलत है कि बीटी कपास अपनाने से कीटों की समस्या स्थायी रूप से समाप्त हो गई है। समय के साथ, कुछ कीटों ने प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है, जिससे नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। किसानों को निरंतर सतर्क निगरानी की आवश्यकता होती है।

47. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले राजस्थान में कपास उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं। इन जिलों की भौगोलिक स्थिति और आधुनिक सिंचाई प्रणालियाँ इसके मुख्य कारण हैं। यहाँ उपलब्ध सुनिश्चित नहर सिंचाई नेटवर्क और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी कपास की फसल के इष्टतम विकास हेतु आवश्यक वातावरण प्रदान करती है। इन संसाधनों के कारण किसान यहाँ अमेरिकन कपास जैसी उच्च उपज वाली किस्मों की खेती कर पाते हैं।

48. (2) अत्यधिक उथली, कंकड़ वाली मरुस्थलीय मिट्टी
कपास की जड़ों को विकसित होने हेतु गहरी और नमी बनाए रखने वाली मिट्टी की आवश्यकता होती है। मध्यम काली और उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी इसके लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इसके विपरीत, अत्यधिक उथली और कंकड़ वाली मरुस्थलीय मिट्टी कपास की खेती हेतु सबसे कम उपयुक्त है। ऐसी मिट्टी में न तो पर्याप्त पोषक तत्व होते हैं और न ही यह जल धारण कर सकती है, जिससे विकास रुक जाता है।

49. (2) चित्तौड़गढ़ और बूंदी
राजस्थान में गन्ने की खेती मुख्य रूप से उन क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ पर्याप्त जल और अनुकूल जलवायु उपलब्ध है। चित्तौड़गढ़ और बूंदी ऐसे जिले हैं जहाँ गन्ने का उत्पादन परंपरागत रूप से केंद्रित है। इन जिलों में सिंचाई के अच्छे स्रोत और उपजाऊ मृदा गन्ने जैसी लंबी अवधि की फसल हेतु उपयुक्त आधार प्रदान करते हैं। पश्चिमी शुष्क जिलों में जल की कमी के कारण इसकी खेती संभव नहीं है।

50. (2) I, II और IV
राजस्थान में गन्ने की खेती के विस्तार में कई बाधाएं हैं। यह एक लंबी अवधि की फसल है जिसे पकने में 10 से 12 महीने लगते हैं, जो निरंतर निवेश की मांग करती है। इसे सघन सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो जल संकट वाले राज्य में एक बड़ी चुनौती है। साथ ही, शीतकाल में पड़ने वाला भीषण पाला गन्ने की फसल को भारी क्षति पहुँचाता है।

51. (3) द मेवाड़ शुगर मिल्स - भोपाल सागर (चित्तौड़गढ़)
राजस्थान में चीनी उद्योग का इतिहास महत्वपूर्ण है। 'द मेवाड़ शुगर मिल्स' निजी क्षेत्र की पहली चीनी मिल थी, जो चित्तौड़गढ़ के भोपाल सागर में स्थापित की गई थी। इसके विपरीत, राजस्थान स्टेट गंगानगर शुगर मिल्स श्री गंगानगर में स्थित है। केशोरायपाटन सहकारी मिल बूंदी जिले में है, जो वर्तमान में बंद है। अतः भोपाल सागर वाली मिल और उसके स्थान का युग्म ऐतिहासिक रूप से सत्य है।

52. (4) ग्रीष्मकाल के दौरान उष्ण हवाएं (लू) सुक्रोज संचय के लिए लाभदायक होती हैं।
गन्ना एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे उच्च आर्द्रता और 21 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान की आवश्यकता होती है। पकने के समय पाला पड़ने से गन्ने में सुक्रोज की मात्रा कम हो जाती है। हालांकि, यह कथन गलत है कि गर्मियों की लू सुक्रोज संचय हेतु लाभदायक हैं। वास्तव में, अत्यधिक गर्मी गन्ने के रस को सुखा देती है, जिससे उपज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

53. (3) घटता भूजल और उच्च सिंचाई लागत इसे अव्यवहारिक बनाती है।
राजस्थान में गन्ने की खेती के अंतर्गत क्षेत्रफल कम होने का मुख्य कारण गिरता हुआ भूजल स्तर है। गन्ना एक अत्यंत जल-गहन फसल है, जिसके लिए वर्ष भर सिंचाई की आवश्यकता होती है। भूजल के गहरे होने और सिंचाई की लागत बढ़ने से अब किसानों हेतु गन्ने की खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह गई है। कई किसान अब कम जल वाली फसलों की ओर रुख कर रहे हैं।

54. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान मसालों के उत्पादन में विविधतापूर्ण राज्य है। धनिया मुख्य रूप से हाड़ौती क्षेत्र के बारां और झालावाड़ जिलों में उगाया जाता है। मेथी उत्पादन हेतु नागौर जिला प्रसिद्ध है, जहाँ की कसूरी मेथी विश्व प्रसिद्ध है। जीरे का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र जालौर और बाड़मेर का क्षेत्र है। सौंफ की खेती सिरोही और टोंक जैसे जिलों में प्रमुखता से की जाती है। यह वितरण जलवायु पर आधारित है।

55. (1) केवल I, II, III और V
राजस्थान भारत में धनिया और मेथी के उत्पादन में अग्रणी है और हाड़ौती क्षेत्र धनिया उत्पादन का मुख्य केंद्र है। नागौर की सुगंधित पान मेथी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जानी जाती है। बीजीय मसालों के अनुसंधान हेतु तबीजी, अजमेर में राष्ट्रीय केंद्र स्थापित है। यह कहना गलत है कि ये भारी मानसून वाली

NODIA

प्रतिशत हिस्सा अकेले राजस्थान से प्राप्त होता है। यहाँ की जलवायु और मृदा सरसों की खेती हेतु आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती है। विशेष रूप से भरतपुर और अलवर जिलों में इसकी सघन खेती होती है। इस उच्च उत्पादन के कारण राजस्थान को 'सरसों राज्य' कहा जाता है।

34. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-i
भरतपुर का अनुसंधान निदेशालय सरसों फसल सुधार पर केंद्रित है। मूंगफली की फसल अक्सर सफेद लट नामक कीट के प्रति संवेदनशील होती है, जो जड़ों को क्षति पहुँचाता है। सरसों को अच्छी गुणवत्ता हेतु पोटाश और गंधक की पर्याप्त मात्रा की आवश्यकता होती है। माही सुगंधा चावल की एक प्रसिद्ध सुगंधित किस्म है। यह मिलान राज्य की फसल विविधता और उनसे जुड़ी विशिष्ट चुनौतियों को दर्शाता है।

35. (2) केवल III
सरसों राजस्थान की प्रमुख रबी तिलहन फसल है, जो अलवर और भरतपुर जैसे जिलों में उगाई जाती है। इसे फलियों के विकास हेतु शीतल तापमान और मध्यम सिंचाई की आवश्यकता होती है। हालांकि, यह कथन गलत है कि इसे 100-150 सेमी की भारी वर्षा की आवश्यकता होती है। वास्तव में, अत्यधिक वर्षा सरसों हेतु हानिकारक होती है। यह अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी में पनपती है।

36. (4) जलोढ़ मिट्टी की उपलब्धता और मध्यम सिंचाई सुविधाएँ।
राजस्थान के पूर्वी जिलों में सरसों की खेती की प्रधानता का मुख्य कारण अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इन जिलों में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है जो तिलहनों हेतु पोषक तत्वों से भरपूर होती है। साथ ही, यहाँ कुओं और नहरों के माध्यम से मध्यम सिंचाई सुविधा उपलब्ध है, जो रबी मौसम में सरसों की जल आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह संयोजन सरसों उत्पादन हेतु आदर्श है।

37. (3) इसके परिपक्व होने के पूर्ण चरण के दौरान खेतों में स्थिर जल की आवश्यकता होती है।
सरसों राज्य के खाद्य तेल उद्योगों हेतु कच्चा माल प्रदान करती है और इसे अक्सर गेहूं के साथ मिश्रित रूप में उगाया जाता है। चेपा कीट इस फसल हेतु एक बड़ी समस्या है जो उपज घटा देता है। हालांकि, सरसों के पकने के समय खेतों में जल जमा होना अत्यंत घातक होता है। इसे परिपक्वता के दौरान शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है ताकि बीज और तेल की गुणवत्ता बनी रहे।

38. (2) अक्टूबर-नवंबर में शीतल तापमान और शुष्क जलवायु
सरसों की बुवाई हेतु सर्वाधिक अनुकूल समय अक्टूबर और नवंबर के महीने होते हैं। इस अवधि में राजस्थान का तापमान धीरे-धीरे कम होने लगता है, जो बीजों के अंकुरण हेतु आवश्यक है। शीतल जलवायु फसल के वानस्पतिक विकास और तेल के संचय में सहायता करती है। मानसून के दौरान भारी वर्षा इस फसल हेतु उपयुक्त नहीं है, क्योंकि इससे पौधों के सड़ने का भय रहता है।

39. (1) I, II, III, IV
राजस्थान में मूंगफली उत्पादन में बीकानेर जिला वर्तमान में अग्रणी है। इसके पश्चात क्रमशः जोधपुर और जयपुर का स्थान आता है, जहाँ उपयुक्त सिंचाई सुविधाओं के कारण मूंगफली का व्यापक उत्पादन होता है। डूंगरपुर और अन्य दक्षिणी जिलों में उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम है। बीकानेर के लूणकरणसर क्षेत्र ने अपनी उच्च उत्पादकता के कारण विशेष पहचान बनाई है। यह क्रम राज्य में तिलहन उत्पादन को दर्शाता है।

40. (1) चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा लाल और काली मिट्टी का उपयोग करके इसका उत्पादन करते हैं।
दक्षिणी राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा जिलों में मूंगफली का उत्पादन वहाँ उपलब्ध लाल और काली मिश्रित मिट्टी के आधार पर किया जाता है। यह मृदा नमी बनाए रखने में सक्षम होती है जो जड़ों और फलियों के विकास में सहायता करती है। यहाँ इसे मुख्य रूप से खरीफ की फसल के रूप में उगाया जाता है। यह धारणा गलत है कि इसे केवल शीतकालीन पाले की आवश्यकता होती है।

41. (3) गुलाबी सुंडी (Pink bollworm)
मूंगफली की खेती के दौरान कई कीटों और रोगों का सामना करना पड़ता है। सफेद लट जड़ों को खाकर पौधों को नष्ट कर देती है, जबकि 'टिक्का' रोग पत्तियों पर धब्बे पैदा करता है। 'कॉलर रॉट' भी मूंगफली की एक सामान्य कवक जनित बीमारी है। इसके विपरीत, गुलाबी सुंडी मुख्य रूप से कपास की फसल को प्रभावित करने वाला विनाशकारी कीट है। अतः गुलाबी सुंडी मूंगफली से संबंधित नहीं है।

42. (1) लूणकरणसर
बीकानेर जिले में स्थित लूणकरणसर को 'राजस्थान का राजकोट' कहा जाता है। यह नाम इसे गुजरात के राजकोट शहर के समान उच्च गुणवत्ता और बड़े पैमाने पर मूंगफली उत्पादन के कारण दिया गया है। इंदिरा गांधी नहर से मिलने वाले सिंचाई जल ने इस क्षेत्र की रेतीली भूमि को मूंगफली की खेती हेतु अत्यंत उत्पादक बना दिया है। यहाँ की मूंगफली स्वाद और तेल हेतु प्रसिद्ध है।

43. (4) यह फली बनने के लिए खूँटियों (Pegs) के प्रवेश की सुविधा प्रदान करती है।
मूंगफली की खेती हेतु भुरभुरी और हल्की मिट्टी की आवश्यकता इसकी विशिष्ट विकास प्रक्रिया के कारण होती है। फूल आने के पश्चात पौधे से खूँटियाँ निकलती हैं जो मिट्टी के अंदर जाकर फलियों में विकसित होती हैं। यदि मिट्टी सख्त होगी, तो ये खूँटियाँ जमीन में प्रवेश नहीं कर पाएंगी। रेतीली दोमट मिट्टी इन खूँटियों को आसानी से मार्ग प्रदान करती है और जल निकासी सुनिश्चित करती है।

44. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में कपास की विभिन्न किस्में अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। अमेरिकन कपास का उत्पादन मुख्य रूप से गंगानगर और हनुमानगढ़ में होता है। मालवी कपास दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे झालावाड़ और कोटा में प्रसिद्ध है।

Downloaded from www.pdf.tube

अनुसंधान किया जाता है। यह केंद्र हाड़ौती क्षेत्र के बागवानों को गुणवत्तापूर्ण पौध और वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

67. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
झालावाड़ जिला राजस्थान में संतरों के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है, जिसके कारण इसे 'राजस्थान का नागपुर' कहा जाता है। महाराष्ट्र का नागपुर शहर देश में संतरे के उत्पादन हेतु विश्व विख्यात है, और झालावाड़ की जलवायु तथा मिट्टी की परिस्थितियाँ संतरा उत्पादन हेतु अत्यंत अनुकूल हैं। यहाँ उत्पादित संतरों की गुणवत्ता और स्वाद बेहतरीन होता है, जो इसे प्रमुख फल उत्पादक जिला बनाता है।

68. (4) पारंपरिक खाद्यान्न की खेती की तुलना में बागवानी से कृषि आय काफी कम हो जाती है।
राजस्थान सरकार शुष्क क्षेत्रों में खजूर की खेती और संरक्षित खेती के लिए ग्रीनहाउस एवं सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा दे रही है। हालांकि, यह कथन पूर्णतः गलत है कि बागवानी से पारंपरिक खाद्यान्न की तुलना में आय कम हो जाती है। वास्तव में, फल और सब्जियों जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती से किसानों की आय में कई गुना वृद्धि सुनिश्चित होती है।

69. (3) नहर सिंचाई के कारण होने वाला जलभराव और मृदा लवणता।
'सेम' की समस्या उत्तरी राजस्थान, विशेष रूप से हनुमानगढ़ और गंगानगर जिलों में एक गंभीर कृषि चुनौती है। यह समस्या इंदिरा गांधी नहर परियोजना के क्षेत्रों में अत्यधिक सिंचाई और दोषपूर्ण जल निकासी के कारण उत्पन्न हुई है। निरंतर जलभराव के कारण भूमिगत जल स्तर ऊपर आ जाता है, जिससे मिट्टी लवणीय और दलदली हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप उपजाऊ भूमि बंजर होकर उत्पादन क्षमता खो देती है।

70. (1) I, II और IV
राजस्थान में कृषि जोतों का निरंतर छोटा होना एक बड़ी समस्या है। छोटे खेतों के कारण आधुनिक मशीनों का उपयोग करना महंगा और अव्यवहारिक हो जाता है, जिससे खेती की लागत बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त, खेतों की सीमाओं और जल बँटवारे को लेकर अक्सर विवाद होते हैं। विखंडन के कारण व्यावसायिक खेती करना कठिन हो जाता है, जिससे किसान केवल निर्वाह खेती तक ही सीमित रह जाते हैं।

71. (4) जैविक खाद और जैव उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग
राजस्थान में मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण के पीछे अनियंत्रित पशु चराई, तीव्र हवाओं द्वारा होने वाला वायु अपरदन और वनों की अंधाधुंध कटाई प्रमुख कारण हैं। ये कारक मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत को नष्ट कर देते हैं। इसके विपरीत, जैविक खाद और जैव उर्वरकों का उपयोग मिट्टी के स्वास्थ्य को सुधारने और उसकी उर्वरता बढ़ाने में सहायक होता है। यह मरुस्थलीकरण रोकने का एक सकारात्मक उपाय है।

72. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I का परिणाम है।
राजस्थान में कृषि हेतु गिरता हुआ भूजल स्तर एक बहुत बड़ा संकट है। सिंचाई हेतु भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण राज्य के अधिकांश विकास खंडों को 'अति-दोहित' श्रेणी में रखा गया है। इसका अर्थ है कि जितना जल जमीन में पुनर्भरित हो रहा है, उससे कहीं अधिक बाहर निकाला जा रहा है। यह स्थिति कृषि उत्पादन और भविष्य की जल उपलब्धता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है।

73. (3) केशिकत्व (Capillary action) द्वारा जलभराव के माध्यम से लवणों का सतह पर आना।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में मृदा लवणता का मुख्य कारण केशिकत्व की प्रक्रिया है। नहरों के अत्यधिक उपयोग से जब जल भराव होता है, तो नीचे जमा लवण पानी के साथ घुलकर ऊपर की ओर बढ़ने लगते हैं। जब यह जल सतह पर आकर वाष्पित हो जाता है, तो लवण की एक सफेद परत मिट्टी के ऊपर जमा हो जाती है। यह प्रक्रिया उपजाऊ भूमि को धीरे-धीरे बंजर बना देती है।

74. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्र विशिष्ट कृषि चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हनुमानगढ़ में 'सेम' की समस्या विकराल है। जैसलमेर के रेगिस्तानी क्षेत्रों में तीव्र वायु अपरदन होता है। धौलपुर के चंबल क्षेत्र में अवनलिका अपरदन से बीहड़ बन गए हैं। वहीं, नागौर और अजमेर के बीच की 'बाँका पट्टी' भूजल में फ्लोराइड के उच्च संदूषण के लिए जानी जाती है। यह वर्गीकरण पर्यावरणीय समस्याओं की विविधता को उजागर करता है।

75. (1) केवल I, III और IV
मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना राजस्थान के किसानों और खेतिहर मजदूरों हेतु एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है। इसके तहत कृषि कार्य के दौरान दुर्घटना या मृत्यु होने पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। आकस्मिक मृत्यु की स्थिति में सहायता राशि 2 लाख रुपये तक हो सकती है। यह योजना सभी कृषि श्रमिकों को कवर करती है। अतः कथन I, III और IV इस योजना के सही प्रावधान हैं।

76. (2) 2022-23
राजस्थान सरकार ने मोटे अनाजों के उत्पादन और प्रसंस्करण को नई दिशा देने हेतु 'राजस्थान मिलेट्स मिशन' की शुरुआत की। इसकी घोषणा राज्य के वित्तीय वर्ष 2022-23 के बजट में की गई थी। इस मिशन का उद्देश्य बाजरा और ज्वार जैसी पोषक फसलों की खेती को बढ़ावा देना और छोटे प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करना है। यह मिशन किसानों की आय बढ़ाने और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है।

77. (3) भालोजी, जयपुर में योजना के अंतर्गत प्रथम सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया।
पीएम-कुसुम योजना राजस्थान में सौर ऊर्जा के कृषि क्षेत्र में उपयोग को बढ़ावा देने हेतु एक अग्रणी पहल है। इस योजना के अंतर्गत देश का पहला सौर ऊर्जा संयंत्र राजस्थान के

NODIA

खरीफ फसलें हैं; वास्तव में, अधिकांश मसाले रबी ऋतु के दौरान ही उगाये जाते हैं।

56. (1) हाड़ौती का पठार
राजस्थान का हाड़ौती पठार क्षेत्र, जिसमें कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिले शामिल हैं, धनिया की खेती हेतु सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है। यहाँ की मध्यम काली मिट्टी और वर्षा का प्रतिमान धनिया उत्पादन हेतु अत्यंत अनुकूल है। राज्य का अधिकांश धनिया इसी क्षेत्र से प्राप्त होता है। इस क्षेत्र में धनिया एक प्रमुख नकदी फसल है जो स्थानीय प्रसंस्करण उद्योगों को आधार प्रदान करती है।

57. (3) इलायची
राजस्थान जीरा, लहसुन और मेथी जैसी मसाला फसलों के उत्पादन में देश में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ये फसलें राज्य की शुष्क जलवायु परिस्थितियों के अनुसार व्यावसायिक स्तर पर उगाई जाती हैं। इसके विपरीत, इलायची एक उष्णकटिबंधीय मसाला है जिसके लिए अत्यधिक वर्षा और नमी वाले पहाड़ी क्षेत्रों की आवश्यकता होती है। राजस्थान की जलवायु इलायची उत्पादन हेतु उपयुक्त नहीं है, अतः यहाँ इसका उत्पादन नहीं होता।

58. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
नागौर जिला अपनी उच्च गुणवत्ता वाली मेथी, विशेष रूप से 'कसूरी मेथी' के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र की मृदा के विशिष्ट गुणों और शुष्क जलवायु के कारण यहाँ उगने वाली मेथी में एक अद्वितीय और तीव्र सुगंध होती है। यही कारण है कि नागौर की मेथी की मांग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बहुत अधिक है। जलवायु का यह संयोजन फसल को विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

59. (1) जालौर, बाड़मेर, जोधपुर
राजस्थान में जीरा उत्पादन का मुख्य केंद्र पश्चिमी भाग है। उत्पादन के क्रम में जालौर शीर्ष पर है, जिसके पश्चात बाड़मेर और जोधपुर का स्थान आता है। इन जिलों की हल्की रेतीली मिट्टी और शीतकाल की शुष्क जलवायु जीरे की फसल हेतु सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है। पश्चिमी जिलों का यह बेल्ट भारत के कुल जीरा उत्पादन में बहुत बड़ा योगदान सुनिश्चित करता है।

60. (2) फूल आने के समय झुलसा (Blight) रोग और पाला पड़ने से फसल नष्ट हो सकती है।
जीरा एक अत्यंत संवेदनशील और जोखिम भरी फसल मानी जाती है। इसके विकास के दौरान मौसम की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण होती है। विशेष रूप से जब पौधों पर फूल आने का समय होता है, तब यदि पाला पड़ जाए या वातावरण में नमी बढ़ जाए, तो झुलसा रोग का प्रकोप तेजी से फैलता है। यह बीमारी और पाला पूरी खड़ी फसल को नष्ट कर सकते हैं।

61. (3) लाल सड़न (Red Rot)
पश्चिमी राजस्थान में जीरे की खेती को झुलसा, छाछ्या और उकठा जैसे कवक जनित रोगों से गंभीर खतरा रहता है, जो उपज को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, 'लाल सड़न' गन्ने की एक विशिष्ट और विनाशकारी बीमारी है, जो जीरे की फसल में नहीं पाई जाती है। अतः फसलों और उनके रोगों के संबंध के आधार पर लाल सड़न एक असंगत विकल्प है जो जीरे से संबंधित नहीं है।

62. (4) इस क्षेत्र की हल्की रेतीली-दोमट मिट्टी के साथ शीतल, शुष्क शीतकालीन जलवायु इसके विकास के लिए आदर्श है।
जालौर, बाड़मेर और जोधपुर में जीरे की खेती के केंद्रीकरण का कारण यहाँ की विशिष्ट कृषि-पारिस्थितिकी है। जीरे को पकने हेतु ठंडी और बहुत शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है, जो इन पश्चिमी जिलों में उपलब्ध होती है। साथ ही, यहाँ की हल्की रेतीली-दोमट मिट्टी जड़ों को पर्याप्त वायु और जल निकासी प्रदान करती है। भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों में जीरा सफलतापूर्वक विकसित नहीं हो पाता।

63. (1) शुष्क बीजों के झड़ने को रोकने के लिए पौधों को जल्दी उखाड़ना।
जीरे की खेती में कटाई का समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है ताकि बीजों की गुणवत्ता बरकरार रहे। बीजों के पूरी तरह सूखकर झड़ने से पहले ही पौधों को सावधानीपूर्वक उखाड़ लिया जाता है। यदि कटाई में विलंब हो जाए, तो शुष्क हवाओं के कारण बीज खेतों में ही बिखर सकते हैं, जिससे आर्थिक हानि होती है। बीजों को साफ सतह पर सुखाकर उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित की जाती है।

64. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान में बागवानी फसलों का वितरण जलवायु के अनुसार है। किन्नू का उत्पादन मुख्य रूप से उत्तरी राजस्थान के गंगानगर जिले में होता है। संतरा उत्पादन हेतु झालावाड़ प्रसिद्ध है, जिसे 'राजस्थान का नागपुर' कहते हैं। अमरूद की खेती सवाई माधोपुर में बड़े स्तर पर की जाती है, जबकि अनार के बगीचे बाड़मेर के शुष्क क्षेत्रों में तेजी से विकसित हो रहे हैं। यह राज्य की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।

65. (1) केवल I और II
किन्नू नींबू वर्गीय फलों की एक उन्नत संकर किस्म है जो अपनी प्रचुर उपज हेतु जानी जाती है। राजस्थान में इसका उत्पादन मुख्य रूप से श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में केंद्रित है, जहाँ नहरों द्वारा सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है। यह कहना गलत है कि यह जैसलमेर के असिंचित रेत के टीलों में पनपता है, क्योंकि इसे सफल बागवानी हेतु नियमित जल की आवश्यकता होती है।

66. (1) नांता, कोटा
राजस्थान सरकार ने बागवानी को आधुनिक बनाने हेतु विभिन्न उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए हैं। इसी क्रम में, नींबू वर्गीय फलों हेतु उत्कृष्टता केंद्र कोटा जिले के नांता नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ उन्नत तकनीकों और सिंचाई प्रणालियों पर

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 23
पशुपालन एवं पशुधन

1. राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन को फसल कृषि की तुलना में अधिक विश्वसनीय आर्थिक गतिविधि क्या बनाता है?
   (1) पशुपालन के लिए सीमांत किसानों हेतु न्यूनतम पूंजी निवेश और न्यूनतम आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है
   (2) पशुधन, फसलों की तुलना में बार-बार पड़ने वाले सूखे और अनियमित मानसून के प्रति अधिक सहनशील होता है
   (3) राजस्थान में फसल कृषि ग्रामीण परिवारों के लिए कोई विपणन योग्य अधिशेष पैदा करने में विफल रहती है
   (4) पशुपालन पूरी तरह से संस्थागत ऋण सुविधाओं पर निर्भर है जो आसानी से उपलब्ध हैं
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गोवंश की नागोरी नस्ल का सही वर्णन करता है?
   (1) यह एक शक्तिशाली भारवाही नस्ल है जो अपनी फुर्ती और मजबूत शारीरिक बनावट के लिए जानी जाती है
   (2) यह विशेष रूप से राजस्थान के पूर्वी क्षेत्रों में उच्च दुग्ध उत्पादन के लिए पाली जाती है
   (3) यह छोटे आकार की नस्ल है जो मुख्य रूप से राज्य के दक्षिणी आदिवासी क्षेत्र में पाई जाती है
   (4) यह सींग रहित होने और पूरी तरह से काले रंग के लिए जानी जाती है
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

3. राठी गाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
   कथन I: राठी नस्ल को इसकी उच्च दुग्ध उत्पादन क्षमता के कारण अक्सर 'राजस्थान की कामधेनु' कहा जाता है।
   कथन II: राठी गाय का प्राथमिक मूल क्षेत्र राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र है।
   उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

4. किस वर्ष ऊंट को आधिकारिक तौर पर पशुधन श्रेणी के तहत राजस्थान का राज्य पशु घोषित किया गया था?
   (1) 2012
   (2) 2014
   (3) 2016
   (4) 2018
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

5. राजस्थान में ऊंट की नस्लों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. बीकानेरी नस्ल भारी शरीर वाली होती है और मुख्य रूप से भारवाही पशु के रूप में उपयोग की जाती है।
   II. जैसलमेरी नस्ल हल्के शरीर वाली होती है और सवारी तथा गति के लिए अत्यधिक मानी जाती है।
   III. बालोतरा नस्ल मुख्य रूप से महीन ऊन उत्पादन के लिए पहचानी जाती है।
   उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

6. सिरोही बकरी राजस्थान की एक प्रमुख नस्ल है। निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता इस नस्ल की सबसे प्रमुख पहचान है?
   (1) यह राज्य की सभी नस्लों में उच्चतम गुणवत्ता वाली पश्मीना ऊन का उत्पादन करती है
   (2) इसका शरीर गठीला और भूरे धब्बों वाला होता है और इसे मुख्य रूप से मांस के लिए पाला जाता है
   (3) यह विशेष रूप से सफेद रंग की होती है और इसे केवल दूध उत्पादन के लिए पाला जाता है
   (4) यह निरंतर प्रवास के लिए जानी जाती है और इसे बाड़े में रखकर नहीं पाला जा सकता
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

7. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में पाई जाने वाली भेड़ की नस्ल नहीं है?
   (1) चोकला
   (2) मारवाड़ी
   (3) मगरा
   (4) मुर्रा
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

8. सूची I में दी गई पशुधन नस्लों को सूची II में उनके संबंधित प्रमुख क्षेत्रों से सुमेलित कीजिए।
   सूची I: (नस्ल)
   A. राठी

Downloaded from www.pdf.tube

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. राजस्थान में डेयरी विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'सरस' (SARAS) राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन (RCDF) का आधिकारिक ब्रांड नाम है।
II. सहकारी डेयरी नेटवर्क दो-स्तरीय प्रणाली पर कार्य करता है।
III. RCDF किसानों को तकनीकी इनपुट, कृत्रिम गर्भाधान और संतुलित पशु आहार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. अजमेर जिले के राजस्थान में मुर्गी पालन का अग्रणी केंद्र होने का सबसे उपयुक्त कारण कौन सा है?
(1) सुदृढ़ आधारभूत संरचना, व्यावसायिक पद्धति और बाजार की निकटता
(2) यहाँ की प्राकृतिक ठंडी जलवायु विदेशी पक्षियों को पालने के लिए उपयुक्त है
(3) यहाँ गोवंश की कमी है, जिससे मुर्गी पालन ही एकमात्र विकल्प है
(4) यह एकमात्र जिला है जहाँ सरकार मुर्गी पालन की अनुमति देती है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. राजस्थान में कौन सा स्थान ऐतिहासिक रुप से एक बड़े गधा मेले की मेजबानी के लिए प्रसिद्ध है?
(1) कोलायत (बीकानेर)
(2) सम (जैसलमेर)
(3) देशनोक (बीकानेर)
(4) लूनियावास (जयपुर)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. सूची I में दी गई नस्लों को सूची II में उनकी पशु श्रेणियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नस्ल)
A. नागोरी
B. सिरोही
C. चोकला
D. सुरती
सूची II: (पशु)
i. बकरी
ii. गोवंश
iii. भैंस
iv. भेड़
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. उस बाधा की पहचान करें जो राजस्थान में पशुपालन की चुनौतियों से सीधे संबंधित नहीं है।
(1) सामान्य ग्रामीण चरागाह भूमि का निरंतर क्षरण
(2) गंभीर सूखे और अकाल की बार-बार होने वाली घटनाएं
(3) थार मरुस्थल में गंभीर जलभराव की बार-बार होने वाली घटनाएं
(4) वर्ष भर उच्च गुणवत्ता वाले हरे चारे की निरंतर कमी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. राजस्थान में पशुधन की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पशुधन राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (SGDP) में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
II. पशुपालन कृषि कार्यों के लिए भारवाही शक्ति प्रदान करता है।
III. पशुपालन से सीमांत किसानों में बेरोजगारी पैदा होती है।
IV. पशुधन से प्राप्त जैविक खाद मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. निम्नलिखित में से कौन सा कथन हरियाणवी गोवंश की नस्ल का सही वर्णन करता है?
(1) यह एक द्वि-प्रयोजनीय नस्ल है जिसका उपयोग दुग्ध और भारवाही दोनों कार्यों के लिए किया जाता है
(2) यह विशेष रूप से राजस्थान राज्य के दक्षिणी क्षेत्र में पाई जाती है
(3) यह सभी स्वदेशी गोवंश नस्लों में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन करती है
(4) इसकी कोई भारवाही उपयोगिता नहीं है और इसे केवल मांस उत्पादन के लिए पाला जाता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं – अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): पिछले दो दशकों में राजस्थान में ऊंटों की संख्या में लगातार गिरावट देखी गई है।
कारण (R): कृषि के बढ़ते यंत्रीकरण और आधुनिक परिवहन

NODIA

(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. राजस्थान में गंभीर सूखे की अवधि के दौरान, पारंपरिक पशुपालकों के बीच निम्नलिखित में से कौन सा सबसे तात्कालिक अनुकूलन देखा जाता है?
(1) शुष्क क्षेत्र के भीतर पशुपालन से गहन नकदी फसल खेती की ओर पूर्ण बदलाव
(2) पशुपालकों का अपने पशु समूहों के साथ पड़ोसी राज्यों में बड़े पैमाने पर पलायन
(3) यूरोपीय क्षेत्रों से विदेशी गोवंश आयात करने के पक्ष में स्वदेशी नस्लों का त्याग
(4) आधुनिक औद्योगिक आवास प्रणालियों का उपयोग करके व्यावसायिक मुर्गी पालन की ओर संक्रमण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान में गिर गोवंश की नस्ल की सही पहचान करता है?
(1) यह थार मरुस्थल की एक मूल भारवाही नस्ल है
(2) इसे स्थानीय रूप से 'अजमेरा' या 'रेंडा' कहा जाता है और यह मध्य जिलों में पाई जाती है
(3) इसकी विशिष्ट पहचान शुद्ध सफेद रंग और अत्यधिक छोटे सींग हैं
(4) इसे राज्य में सबसे कम दूध देने वाली नस्ल के रूप में मान्यता प्राप्त है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. सूची I में दिए गए पशु मेलों को सूची II में उनके संबंधित स्थानों से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मेला)
A. पुष्कर मेला
B. मल्लीनाथ मेला
C. रामदेव पशु मेला
D. गोगामेड़ी मेला
सूची II: (स्थान)
i. नागौर
ii. हनुमानगढ़
iii. अजमेर
iv. बाड़मेर (तिलवाड़ा)
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. राजस्थान में दुग्ध उत्पादन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण राठी नस्ल का गोवंश, किन नस्लों के मिश्रण से विकसित माना जाता है?
(1) स्वदेशी गिर और मालवी गोवंश की किस्में
(2) मरुस्थलीय नागोरी और कांकरेज गोवंश की किस्में
(3) साहीवाल, रेड सिंधी और थारपारकर
(4) हरियाणवी और मेवाती गोवंश की किस्में
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. राजस्थान में ऊंट के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) शुष्क परिस्थितियों में इसके अनुकूलन के कारण इसे 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है
(2) ऊंटनी का दूध उच्च विटामिन C सामग्री और उपचारात्मक गुणों के लिए जाना जाता है
(3) राज्य सरकार ने ऊंटों के वध और अवैध निर्यात को रोकने के लिए कानून बनाया है
(4) राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र जोधपुर में स्थित है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प मारवाड़ी और सिरोही बकरी की नस्लों के बीच सही अंतर स्पष्ट करता है?
(1) मारवाड़ी मुख्य रूप से मांस की नस्ल है, जबकि सिरोही पूरी तरह से दूध उत्पादन तक सीमित है
(2) मारवाड़ी बकरियों का रंग मुख्य रूप से सफेद होता है, जबकि सिरोही बकरियां शुद्ध काले रंग की होती हैं
(3) मारवाड़ी बकरियां लंबे प्रवास के लिए जानी जाती हैं, जबकि सिरोही बकरियां सामान्यतः बिना लंबे प्रवास के पाली जाती हैं
(4) मारवाड़ी दक्षिण राजस्थान की मूल निवासी है, जबकि सिरोही शेखावाटी क्षेत्र की मूल निवासी है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. राजस्थान की निम्नलिखित भेड़ की नस्लों को उनके ऊन की गुणवत्ता (सबसे महीन से खुरदरी तक) के आधार पर सही क्रम में चुनें।
(1) चोकला, मगरा, मारवाड़ी, मालपुरा
(2) मालपुरा, मारवाड़ी, मगरा, चोकला
(3) मारवाड़ी, चोकला, मालपुरा, मगरा
(4) मगरा, मालपुरा, चोकला, मारवाड़ी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. राजस्थान में केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान (CSWRI) कहाँ स्थित है?
(1) बीकानेर
(2) जोधपुर
(3) वल्लभनगर (उदयपुर)
(4) अविकानगर (टोंक)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. राजस्थान में मुर्रा भैंस के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: वैश्विक स्तर पर सभी भैंस की नस्लों में मुर्रा नस्ल में दूध वसा का प्रतिशत सबसे अधिक है, जो 13 प्रतिशत तक पहुँच जाता है।
कथन II: यह मुख्य रूप से राजस्थान के पूर्वी और उत्तरी जिलों जैसे अलवर, भरतपुर और जयपुर में पाली जाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

B. गिर
C. हरियाणवी
D. नागोरी

सूची II: (क्षेत्र)
i. अजमेर और भीलवाड़ा
ii. सीकर और झुंझुनू
iii. बीकानेर और गंगानगर
iv. नागौर और जोधपुर

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. भारत के कुल ऊन उत्पादन में राजस्थान का कौन सा स्थान है?
(1) प्रथम
(2) द्वितीय
(3) तृतीय
(4) चतुर्थ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. राजस्थान में भैंस की नस्लों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुर्रा को राज्य में भैंस की सबसे अच्छी दुधारू नस्ल माना जाता है।
II. सुरती भैंसें मुख्य रूप से डूंगरपुर और बांसवाड़ा जैसे दक्षिणी जिलों में पाई जाती हैं।
III. भैंसें जैसलमेर और बाड़मेर के अत्यधिक शुष्क पश्चिमी जिलों में सबसे अधिक केंद्रित हैं।
IV. मुर्रा नस्ल को इसके कसकर मुड़े हुए सींगों से आसानी से पहचाना जा सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. मारवाड़ी नस्ल का घोड़ा राजस्थान में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य रखता है। मारवाड़ी घोड़े के साथ सबसे विशिष्ट शारीरिक विशेषता कौन सी है?
(1) इस नस्ल के सभी सदस्यों में पाया जाने वाला प्राकृतिक और शुद्ध सफेद रंग
(2) अरावली के ऊबड़-खाबड़ पर्वतों पर चढ़ने के लिए अनुकूलित अत्यधिक छोटे और मजबूत पैर
(3) स्थानीय मरुस्थलीय अनुकूलन के परिणामस्वरूप अयाल और पूंछ के बालों का पूर्ण अभाव
(4) अंदर की ओर मुड़े हुए कानों के सिरे जो अक्सर शीर्ष पर एक-दूसरे को छूते हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

12. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): राजस्थान में सहकारी डेयरी विकास मॉडल की त्रि-स्तरीय संरचना है।
कारण (R): त्रि-स्तरीय संरचना यह सुनिश्चित करती है कि ग्राम स्तर पर दुग्ध उत्पादक सीधे राज्य स्तर के संघ से जुड़े हों।
(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. ग्रामीण राजस्थान के संदर्भ में 'बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग' (आँगन में मुर्गी पालन) को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है:
(1) नियंत्रित और स्वचालित प्रणालियों में विदेशी पक्षी नस्लों का बड़े पैमाने पर व्यावसायिक पालन
(2) विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय निर्यात बाजारों के लिए समर्पित सरकारी स्वामित्व वाली पोल्ट्री संपदा
(3) पूरक आय और पारिवारिक पोषण के लिए छोटे समूहों में पक्षियों का पालन
(4) अस्थायी आर्द्रभूमि या झील के क्षेत्रों में प्रवासी जलीय पक्षियों का मौसमी पालन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. निम्नलिखित में से कौन सा पशु मेला अपने स्थान के साथ सही सुमेलित नहीं है?
(1) पुष्कर मेला - अजमेर
(2) रामदेव पशु मेला - नागौर
(3) मल्लीनाथ पशु मेला - तिलवाड़ा (बाड़मेर)
(4) चंद्रभागा मेला - बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. राजस्थान में पशुधन योजनाओं और चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बार-बार पड़ने वाला सूखा पशुपालन के लिए एक बड़ी चुनौती है।
II. हरे चारे की कमी दुधारू पशुओं की आनुवंशिक क्षमता को सीमित करती है।
III. सरकार मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना के तहत मुफ्त पशु चिकित्सा दवाएं प्रदान करती है।
IV. दूरदराज के गांवों को कवर करने के लिए मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां शुरू की गई हैं।
V. पशु बीमा योजना का उद्देश्य पशुधन की मृत्यु के विरुद्ध बीमा सुरक्षा प्रदान करना है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V

के विस्तार ने भारवाही पशुओं के रूप में ऊंटों की उपयोगिता को कम कर दिया है।
(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में किस पशु को 'गरीब की गाय' कहा जाता है?
(1) भेड़
(2) बकरी
(3) गधा
(4) ऊंट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. राजस्थान में सभी भेड़ नस्लों में मारवाड़ी भेड़ की संख्या सर्वाधिक होने का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) यह रोगों के प्रति प्रतिरोधी है और प्रतिकूल जलवायु तथा सूखे में जीवित रह सकती है
(2) यह मेरिनो नस्ल के समान बेहतरीन गुणवत्ता वाली परिधान ऊन का उत्पादन करती है
(3) अन्य नस्लों के विपरीत, इसे केंद्र सरकार द्वारा भारी अनुदान दिया जाता है
(4) यह वैश्विक स्तर पर प्रति पशु मांस की उच्चतम मात्रा प्रदान करती है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. राजस्थान में भेड़ और ऊन उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के कुल ऊन उत्पादन में राजस्थान का हिस्सा 30 प्रतिशत से अधिक है।
II. चोकला नस्ल को 'भारतीय मेरिनो' कहा जाता है।
III. एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी बीकानेर में स्थित है।
IV. मारवाड़ी नस्ल की ऊन का उपयोग मुख्य रूप से कालीन बनाने में किया जाता है।
V. केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड का मुख्यालय जोधपुर में है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. राजस्थान में भैंस की नस्ल और उसके प्रमुख संकेंद्रण क्षेत्र का कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) मुर्रा - जैसलमेर और बाड़मेर
(2) भदावरी - बीकानेर और चूरू
(3) मेहसाणा - सीकर और झुंझुनू
(4) सुरती - डूंगरपुर और बांसवाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. मारवाड़ी नस्ल के घोड़े की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की जाती है। यह नस्ल ऐतिहासिक रूप से किस गतिविधि के लिए प्रसिद्ध है?
(1) खेती में जुताई के कार्यों के लिए
(2) शहरी क्षेत्रों में भारी माल की ढुलाई के लिए
(3) युद्ध कौशल और घुड़सवारी खेल के लिए
(4) व्यावसायिक डेयरियों में दुग्ध उत्पादन के लिए
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. सूची I में राजस्थान डेयरी सहकारी संरचना को सूची II में उनके संबंधित निकायों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्तर)
A. शीर्ष राज्य स्तर
B. जिला स्तर
C. ग्राम स्तर
D. वाणिज्यिक ब्रांड
सूची II: (संगठन/ब्रांड)
i. दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति
ii. सरस (SARAS)
iii. राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन
iv. जिला दुग्ध संघ
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. प्रसिद्ध पुष्कर पशु मेला किस हिंदी माह में आयोजित किया जाता है?
(1) चैत्र
(2) श्रावण
(3) कार्तिक
(4) माघ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: योजना का उद्देश्य राजस्थान के पशुपालकों को आवश्यक पशु चिकित्सा दवाएं निःशुल्क प्रदान करना है।
कथन II: यह योजना पूरी तरह से विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

41. पश्चिमी राजस्थान में चारे की निरंतर कमी का सबसे उपयुक्त कारण कौन सा है?
(1) भारी उद्योगों की स्थापना के लिए कृषि भूमि का आवंटन
(2) चारा फसलों की जगह पूरी तरह से नकदी फसलों की खेती
(3) अनियमित वर्षा जिसके कारण प्राकृतिक चरागाहों की वृद्धि कम होती है
(4) चारा फसलों की खेती पर सरकार का प्रतिबंध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. राजस्थान की निम्नलिखित गोवंश नस्लों को उनके मूल क्षेत्रों के आधार पर उत्तर से दक्षिण के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. राठी
B. नागोरी
C. गिर (अजमेरा)
(1) A, B, C
(2) C, B, A
(3) B, A, C
(4) A, C, B
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. अपनी प्रजाति के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा भिन्न है?
(1) बीकानेरी
(2) जैसलमेरी
(3) बालोतरा
(4) सुरती
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. राजस्थान में बकरी पालन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) भारत की कुल बकरी जनसंख्या में राज्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है
(2) सिरोही नस्ल मुख्य रूप से महीन पशमीना ऊन के उत्पादन के लिए पाली जाती है
(3) बकरियां कठोर जलवायु और विरल वनस्पति के प्रति अनुकूलित होती हैं
(4) बकरी पालन गरीब परिवारों के लिए वित्तीय सुरक्षा के रूप में कार्य करता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. राजस्थान में भेड़ पालन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चोकला नस्ल मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र में पाई जाती है।
II. मारवाड़ी भेड़ विशेष रूप से केवल महीन परिधान ऊन के लिए जानी जाती है।
III. राजस्थान के आर्द्र पूर्वी जिलों में भेड़ की जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. राजस्थान के किस शहर को एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी कहा जाता है?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. पश्चिम की तुलना में राजस्थान के पूर्वी भागों में भैंस पालन अधिक सफल क्यों है?
(1) पानी और चारे की अधिक आवश्यकता, जो पूर्वी क्षेत्रों में सुलभ है
(2) राज्य सरकार पश्चिमी जिलों में भैंस पालन को प्रतिबंधित करती है
(3) पूर्वी राजस्थान में अत्यधिक कड़ाके की सर्दियां होती हैं जो भैंसों के अनुकूल हैं
(4) मुर्रा नस्ल मूल रूप से अरावली पहाड़ियों में विकसित हुई थी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. सूची I में संस्थानों को सूची II में उनके स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संस्थान)
A. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान
B. राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र
C. RCDF मुख्यालय
D. भैंस अनुसंधान एवं प्रजनन केंद्र
सूची II: (स्थान)
i. बीकानेर
ii. जयपुर
iii. वल्लभनगर
iv. अविकानगर
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन (RCDF) का मुख्य कार्य नहीं है?
(1) ग्राम सहकारी समितियों के माध्यम से दुग्ध संग्रहण
(2) शहरी क्षेत्रों में किसानों द्वारा सीधे कच्चे दूध की खुदरा बिक्री
(3) 'सरस' ब्रांड के तहत दुग्ध उत्पादों का प्रसंस्करण और विपणन

NODIA

(4) दुग्ध उत्पादकों को संतुलित पशु आहार और चिकित्सा सेवाओं की आपूर्ति
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. राजस्थान में मुर्गी पालन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुर्गी पालन ग्रामीण परिवारों को पूरक आय और पोषण सुरक्षा प्रदान करता है।
II. उच्च मुर्गी पालन केंद्र होने के कारण अजमेर को 'राजस्थान के अंडों की टोकरी' कहा जाता है।
III. पारंपरिक देशी नस्लें व्यावसायिक नस्लों की तुलना में सालाना अधिक अंडे देती हैं।
IV. मुर्गी की खाद को नाइट्रोजन युक्त जैविक उर्वरक के रूप में महत्व दिया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. निम्नलिखित में से कौन सा कथन तिलवाड़ा पशु मेले के महत्व को सही ढंग से दर्शाता है?
(1) यह वीर तेजाजी के सम्मान में आयोजित होता है और राज्य का सबसे बड़ा ऊंट मेला है
(2) यह मानसून में केवल दुधारू भैंसों के व्यापार के लिए आयोजित होता है
(3) यह बाड़मेर में लूणी नदी के तट पर आयोजित होता है और मल्लीनाथ जी से जुड़ा है
(4) यह पूर्वी मैदानों में स्थित है और मुर्रा नस्ल पर केंद्रित है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): राजस्थान सरकार ने विभिन्न जिलों में मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां शुरु की हैं।
कारण (R): इसका उद्देश्य दूरदराज के क्षेत्रों में पशुपालकों के द्वार पर चिकित्सा सेवाएं और कृत्रिम गर्भाधान प्रदान करना है।
(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. पशुपालन के आर्थिक प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: फसल खराब होने की स्थिति में पशुधन किसानों के लिए आर्थिक बीमा के रूप में कार्य करता है।
कथन II: पशुपालन मानसून की विफलता और चारे की उपलब्धता के प्रभावों से पूरी तरह मुक्त है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. राजस्थान की कौन सी गोवंश नस्ल शक्तिशाली और तेज बैलों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, जो कृषि कार्यों के लिए आदर्श हैं?
(1) राठी
(2) नागोरी
(3) साहीवाल
(4) थारपारकर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. राजस्थान में ऊंट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 2014 में राज्य पशु का दर्जा दिया गया था।
II. बीकानेरी नस्ल की खोपड़ी पर एक विशिष्ट गड्ढा होता है जिसे 'स्टॉप' कहा जाता है।
III. जैसलमेरी ऊंट अपेक्षाकृत तेज होता है और सवारी के लिए प्रसिद्ध है।
IV. राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र बीकानेर में स्थित है।
V. ऊंटनी के दूध में मधुमेह के रोगियों के लिए लाभदायक तत्व होते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III और IV
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान में बकरी की नस्लों और उनकी उपयोगिता का कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(1) सिरोही - मांस के लिए प्रसिद्ध; शारीरिक भार में तीव्र वृद्धि
(2) मारवाड़ी - विशेष रूप से केवल महीन और नरम ऊन उत्पादन के लिए
(3) बरबरी - थार मरुस्थल की सबसे भारी भारवाही बकरी
(4) जमनापारी - जैसलमेर के रेत के टीलों की मूल नस्ल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. पश्चिमी राजस्थान से पड़ोसी राज्यों में भेड़ों के वार्षिक ग्रीष्मकालीन प्रवास का मुख्य कारण क्या है?
(1) अंतर-राज्यीय पशु मेलों में भाग लेना
(2) गर्मियों में थार मरुस्थल की शीत लहरों से बचना
(3) चरागाह और जल की खोज करना
(4) अनिवार्य सरकारी नियमों की पूर्ति करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

26. (1) सुदृढ़ आधारभूत संरचना, व्यावसायिक पद्धति और बाजार की निकटता
अजमेर जिला राजस्थान में मुर्गी पालन का प्रमुख केंद्र है, जिसका मुख्य कारण यहाँ उपलब्ध उन्नत आधारभूत संरचना और आधुनिक व्यावसायिक पद्धतियां हैं। जयपुर जैसे बड़े शहरों और प्रमुख बाजारों के निकट होने के कारण यहाँ से उत्पादों का वितरण सहज हो जाता है।
साथ ही, यहाँ मुर्गी पालन हेतु अनुकूल जलवायु और तकनीकी ज्ञान की सुलभता ने इसे एक लाभदायक उद्योग में परिवर्तित कर दिया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण अजमेर को राजस्थान में 'अंडों की टोकरी' कहा जाता है, जो राज्य की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

27. (4) लूनियावास (जयपुर)
जयपुर जिले का लूनियावास गाँव ऐतिहासिक रूप से एशिया के सबसे बड़े गधा मेलों में से एक के आयोजन हेतु प्रसिद्ध है। यह मेला मुख्य रूप से विजयदशमी के अवसर पर आयोजित होता है और इसमें विभिन्न क्षेत्रों से व्यापारी पशुओं के क्रय-विक्रय हेतु आते हैं।
यद्यपि आधुनिक परिवहन के कारण इन पशुओं की उपयोगिता कम हुई है, फिर भी यह मेला अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता और ग्रामीण व्यापारिक महत्व के कारण आज भी अपनी पहचान बनाए हुए है। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था और परंपरा का एक जीवंत भाग है।

28. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान की पशु नस्लों का वर्गीकरण उनकी श्रेणियों के आधार पर किया जाता है। नागोरी एक प्रसिद्ध गोवंश की नस्ल है जो अपनी कार्यक्षमता हेतु जानी जाती है। सिरोही बकरी की प्रमुख नस्ल है जिसे मांस और दुग्ध हेतु पाला जाता है।
चोकला भेड़ों की श्रेणी में आती है और अपनी महीन ऊन हेतु प्रसिद्ध है। सुरती भैंस की नस्ल है जो मुख्य रूप से दक्षिण राजस्थान में दुग्ध उत्पादन हेतु पाली जाती है। यह विविधता राज्य के समृद्ध और विविध पशुपालन क्षेत्र का वास्तविक आधार प्रस्तुत करती है।

29. (3) थार मरुस्थल में गंभीर जलभराव की बार-बार होने वाली घटनाएं
राजस्थान में पशुपालन हेतु चरागाह भूमि का क्षरण, सूखे की पुनरावृत्ति और उच्च गुणवत्ता वाले हरे चारे की कमी प्रमुख बाधाएं हैं। इसके विपरीत, थार मरुस्थल में जलभराव की समस्या प्राकृतिक रूप से नहीं पाई जाती क्योंकि यह एक शुष्क क्षेत्र है।
यहाँ जल की कमी ही सबसे बड़ी चुनौती है, न कि जलभराव। पशुपालकों को अपनी आजीविका सुरक्षित करने हेतु अक्सर जल और चारे की खोज में कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जलवायु की अनिश्चितता इस क्षेत्र में पशुधन प्रबंधन को जटिल बनाती है।

30. (2) केवल III
पशुपालन राजस्थान की अर्थव्यवस्था का एक स्तंभ है जो सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है और कृषि कार्यों हेतु आवश्यक शक्ति प्रदान करता है। पशुओं से प्राप्त जैविक खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होती है, जो प्राकृतिक खेती हेतु महत्वपूर्ण है।
यह क्षेत्र बेरोजगारी उत्पन्न करने के स्थान पर ग्रामीण समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं और भूमिहीन किसानों को वर्ष भर निरंतर रोजगार प्रदान करता है। यह आपदा के समय ग्रामीण अर्थव्यवस्था हेतु सुरक्षा कवच है जो आय की निरंतरता सुनिश्चित करता है।

31. (1) यह एक द्वि-प्रयोजनीय नस्ल है जिसका उपयोग दुग्ध और भारवाही दोनों कार्यों के लिए किया जाता है
हरियाणवी गोवंश एक द्वि-प्रयोजनीय नस्ल है, जिसका अर्थ है कि इसे दुग्ध उत्पादन और कृषि कार्यों दोनों हेतु उपयोग किया जाता है। यह नस्ल मुख्य रूप से राजस्थान के उत्तर-पूर्वी जिलों जैसे अलवर, भरतपुर, सीकर और झुंझुनू में पाई जाती है।
इसके बैल खेती और भारी भार ढोने में सक्षम होते हैं, जबकि गायें अच्छी मात्रा में दूध देती हैं। यह नस्ल अपनी सहनशक्ति और बहुआयामी उपयोगिता के कारण किसानों के मध्य लोकप्रिय है और राज्य की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

32. (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पिछले कुछ दशकों में राजस्थान में ऊंटों की संख्या में तीव्र गिरावट देखी गई है, जिसका मुख्य कारण कृषि क्षेत्र में ट्रैक्टरों और आधुनिक परिवहन साधनों का बढ़ता उपयोग है। यंत्रीकरण के कारण अब ऊंटों पर निर्भरता अत्यंत कम हो गई है।
इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक ऊंट पालकों हेतु इनका रखरखाव आर्थिक रूप से कठिन हो गया है। ऊंटों की घटती संख्या को देखते हुए ही सरकार ने इसे राज्य पशु घोषित कर संरक्षण के प्रयास आरंभ किए हैं ताकि इस विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जा सके।

33. (2) बकरी
राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बकरी को 'निर्धन की गाय' कहा जाता है क्योंकि इसका रखरखाव अत्यंत सुलभ और कम खर्चीला है। बकरियां प्रतिकूल जलवायु और न्यून संसाधनों में भी जीवित रहकर नियमित रूप से दुग्ध और मांस प्रदान करती हैं।
सीमांत किसानों और भूमिहीन परिवारों हेतु यह तत्काल नकदी और पोषण का एक विश्वसनीय स्रोत है। इसकी बहुमुखी प्रतिभा और आर्थिक सुलभता के कारण यह ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने वाली एक महत्वपूर्ण और सुलभ पशुधन इकाई मानी जाती है।

NODIA

34. (1) यह रोगों के प्रति प्रतिरोधी है और प्रतिकूल जलवायु तथा सूखे में जीवित रह सकती है
मारवाड़ी भेड़ राजस्थान में सर्वाधिक संख्या में पाई जाती है क्योंकि यह रोगों के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी है और प्रतिकूल मरुस्थलीय जलवायु को सहन करने में सक्षम है। यह नस्ल लंबे समय तक जल और चारे की कमी के उपरांत भी जीवित रह सकती है।

(4) इसकी उत्पत्ति लद्दाख के मरुस्थलों से हुई है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (उपनाम)
A. भारतीय मेरिनो
B. रेगिस्तान का जहाज
C. गरीब की गाय
D. उच्च वसा दुग्ध उत्पादक
सूची II: (नस्ल/पशु)
i. ऊंट
ii. बकरी
iii. चोकला भेड़
iv. मुर्रा भैंस
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. सिरोही बकरी को विशेष रूप से किस विशेषता के लिए पसंद किया जाता है?
(1) सर्वाधिक जुड़वां बच्चे पैदा करने की दर
(2) सभी भारतीय नस्लों में उच्चतम दुग्ध उत्पादन
(3) शरीर के भार में तीव्र वृद्धि, जो मांस उत्पादन के लिए आदर्श है
(4) पशमीना रेशों के उत्पादन के लिए
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. राजस्थान में भेड़ और ऊन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ऊन कतरने का कार्य सामान्यतः वर्ष में दो बार किया जाता है।
II. मारवाड़ी राज्य में सर्वाधिक संख्या वाली भेड़ की नस्ल है।
III. चोकला नस्ल बेहतरीन गुणवत्ता वाली ऊन का उत्पादन करती है।
IV. राजस्थान भारत में ऊन उत्पादन में प्रथम स्थान पर है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता राजस्थान के ऊन उत्पादन क्षेत्र से संबंधित नहीं है?
(1) राज्य देश में ऊन का सबसे बड़ा उत्पादक है
(2) उत्पादित ऊन का बड़ा हिस्सा कालीन श्रेणी का है
(3) बीकानेर ऊन के विपणन का प्रमुख केंद्र है
(4) राज्य मुख्य रूप से अति-महीन परिधान श्रेणी की मेरिनो ऊन का उत्पादन करता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)। उचित विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): राजस्थान के पशु बाजारों में मुर्रा भैंसों की मांग अधिक रहती है।
कारण (R): इनमें दुग्ध उत्पादन और वसा की मात्रा स्वदेशी नस्लों में सर्वाधिक होती है।
(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. मारवाड़ी घोड़े के संरक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कदम उठाया गया है?
(1) सभी अश्वों की घरेलू बिक्री पर प्रतिबंध
(2) पुलिस कार्यों के लिए केवल विदेशी घोड़ों का उपयोग
(3) घुड़सवारी खेल और विरासत पर्यटन में नस्ल को बढ़ावा देना
(4) घोड़े का उपयोग मांस उत्पादन के लिए करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

74. राजस्थान के पशुपालन क्षेत्र के संदर्भ में, RCDF का पूर्ण रूप क्या है?
(1) राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन
(2) राजस्थान कैटल डेवलपमेंट फाउंडेशन
(3) रीजनल सेंटर फॉर डेयरी फार्मिंग
(4) राष्ट्रीय ऊंट विकास कोष
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. राजस्थान के पशु मेलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुष्कर मेला प्रतिवर्ष अजमेर जिले में आयोजित होता है।
II. नागौर मेला नागोरी बैलों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।
III. तिलवाड़ा मेला बाड़मेर जिले में आयोजित होता है।
IV. तिलवाड़ा मेले को मल्लीनाथ जी मेला भी कहा जाता है।
V. रामदेव पशु मेला नागौर में आयोजित होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. उस योजना की पहचान करें जो पशुपालन या डेयरी क्षेत्र से संबंधित नहीं है।
(1) मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना
(2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

58. सूची I में नस्लों को सूची II में उनकी उपयोगिता के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नस्ल)
A. बीकानेरी ऊंट
B. जैसलमेरी ऊंट
C. मारवाड़ी घोड़ा
D. मुर्रा भैंस
सूची II: (उपयोगिता/विशेषता)
i. उच्च दुग्ध वसा प्रतिशत
ii. सवारी और गति
iii. भारवाही उद्देश्य
iv. घुड़सवारी खेल और सेना
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. राजस्थान की किस प्रमुख भेड़ नस्ल की ऊन का उपयोग उच्च गुणवत्ता वाले कालीनों के निर्माण के लिए किया जाता है?
(1) चोकला
(2) नीलगिरी
(3) गद्दी
(4) मारवाड़ी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. निम्नलिखित पशुधन नस्लों में से प्रजाति के आधार पर भिन्न की पहचान करें।
(1) मुर्रा
(2) गिर
(3) सुरती
(4) भदावरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राजस्थान में 'सरस' डेयरी नेटवर्क के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) सरस राजस्थान का अग्रणी सहकारी डेयरी ब्रांड है
(2) यह सीधे ग्राम स्तर की समितियों से दूध खरीदता है
(3) यह एक निजी बहुराष्ट्रीय कंपनी है
(4) यह दुग्ध उत्पादकों के लिए पारदर्शी वजन और वसा परीक्षण सुनिश्चित करता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान के निम्नलिखित पशु मेलों का पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम कौन सा है?
(1) पुष्कर मेला, नागौर मेला, तिलवाड़ा मेला
(2) तिलवाड़ा मेला, नागौर मेला, पुष्कर मेला
(3) नागौर मेला, तिलवाड़ा मेला, पुष्कर मेला
(4) तिलवाड़ा मेला, पुष्कर मेला, नागौर मेला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. पशुओं के उपचार के लिए निःशुल्क दवाएं उपलब्ध कराने हेतु राजस्थान सरकार की योजना कौन सी है?
(1) मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना
(2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
(3) राजस्थान ग्रामीण आजीविका परियोजना
(4) राष्ट्रीय गोकुल मिशन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. चराई और चारे की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: अत्यधिक चराई पश्चिमी राजस्थान में मिट्टी के कटाव और मरुस्थलीकरण में योगदान देती है।
कथन II: चक्रीय चराई प्रथाओं से बाड़े में खिलाने की आवश्यकता पूरी तरह समाप्त हो सकती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. राजस्थान में पशुधन के महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का बड़ा योगदान है।
II. पशुधन छोटे किसानों और महिलाओं को निरंतर रोजगार प्रदान करता है।
III. पारंपरिक पशुधन इकाई के लिए औद्योगिक खेती की तुलना में अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल I और III
(4) केवल II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. राठी गोवंश की नस्ल के विकास में कौन सा कारक सबसे महत्वपूर्ण रहा है?
(1) बीकानेर क्षेत्र में सिंधी और साहीवाल के साथ चयनात्मक प्रजनन
(2) यूरोपीय डेयरी नस्लों के साथ संकरण
(3) मध्य अरावली की पहाड़ियों के प्रति अनुकूलन
(4) नियंत्रित तापमान वाले शेडों में विशेष रूप से पालन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बीकानेरी ऊंट की उत्पत्ति का सही वर्णन करता है?
(1) इसे अरब और बैक्ट्रियन ऊंटों के संकरण से विकसित किया गया था
(2) यह थार मरुस्थल की एक विशुद्ध जंगली प्रजाति है
(3) इसे सिंधी और बलूची ऊंट की नस्लों के संकरण से विकसित किया गया था

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) पशुधन, फसलों की तुलना में बार-बार पड़ने वाले सूखे और अनियमित मानसून के प्रति अधिक सहनशील होता है
राजस्थान की शुष्क जलवायु में फसल उत्पादन अनिश्चित मानसून और सूखे पर निर्भर है, जिससे कृषि एक जोखिम भरी गतिविधि बन जाती है। इसके विपरीत, पशुधन कठिन मौसमी परिस्थितियों और जल की कमी के प्रति अधिक सहनशील होता है।
पशुपालन ग्रामीण परिवारों को स्थायी आजीविका और नियमित आय प्रदान करता है, जो फसल विफलता के समय सुरक्षा कवच का कार्य करता है। यह लचीलापन इसे राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की तुलना में अधिक विश्वसनीय और टिकाऊ विकल्प बनाता है, जिससे आर्थिक स्थिरता बनी रहती है।

2. (1) यह एक शक्तिशाली भारवाही नस्ल है जो अपनी फुर्ती और मजबूत शारीरिक बनावट के लिए जानी जाती है
नागोरी गोवंश राजस्थान की उत्कृष्ट भारवाही नस्ल है, जिसका मूल स्थान नागौर जिला है। यह नस्ल अपने सुदृढ़ शरीर, गठीली बनावट और फुर्तीलेपन हेतु विश्वभर में प्रसिद्ध है। इसके बैल विशेष रूप से कृषि कार्यों और तीव्र गति से भार ढोने हेतु उपयोग किए जाते हैं।
इनकी शारीरिक बनावट इन्हें कठिन परिश्रम के अनुकूल बनाती है, जिससे ये ग्रामीण अर्थव्यवस्था हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। यह नस्ल मरुस्थलीय क्षेत्रों में कृषि और परिवहन हेतु पशुपालकों की प्राथमिक पसंद रही है, जो क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राठी गोवंश को असाधारण दुग्ध उत्पादन क्षमता के कारण राजस्थान की कामधेनु कहा जाता है। यह मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी शुष्क जिलों जैसे बीकानेर, गंगानगर और जैसलमेर के क्षेत्रों में पाई जाती है। यह नस्ल प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी उच्च उत्पादकता बनाए रखने हेतु प्रसिद्ध है।
हालांकि, इसका संबंध दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र से नहीं है, बल्कि यह मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र हेतु पूर्णतः अनुकूलित है। राठी नस्ल साहीवाल और सिंधी जैसी उच्च दुधारू नस्लों के मिश्रण से विकसित हुई मानी जाती है, जो इसे डेयरी व्यवसाय हेतु सर्वोत्तम बनाती है।

4. (2) 2014
राजस्थान सरकार ने आधिकारिक तौर पर 30 जून 2014 को ऊंट को पशुधन श्रेणी के अंतर्गत राज्य पशु घोषित किया था। इस निर्णय का प्राथमिक उद्देश्य राज्य में ऊंटों की घटती संख्या को रोकना और उनके संरक्षण को व्यापक बढ़ावा देना था।
ऊंट राजस्थान की सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान का अभिन्न अंग है, जिसे रेगिस्तान की विषम परिस्थितियों में जीवन रक्षक माना जाता है। इस घोषणा के पश्चात राज्य में ऊंटों के वध और अवैध परिवहन के विरुद्ध कठोर कानूनी प्रावधान भी प्रभावी रूप से लागू किए गए हैं।

5. (1) केवल I और II
बीकानेरी नस्ल के ऊंट अपनी भारी शारीरिक बनावट के कारण भार ढोने और कृषि कार्यों हेतु सर्वोत्तम माने जाते हैं। इसके विपरीत, जैसलमेरी नस्ल के ऊंट हल्के शरीर वाले और तीव्र गति हेतु प्रसिद्ध हैं, जो उन्हें सवारी और मरुस्थलीय गश्त हेतु आदर्श बनाते हैं।
ये दोनों नस्लें राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई हैं, जो परिवहन और कृषि क्षेत्र में निरंतर योगदान दे रही हैं। हालांकि, बालोतरा नस्ल का संबंध मुख्य रूप से ऊन उत्पादन की विशेष पहचान से नहीं है, बल्कि यह अन्य कार्यों हेतु उपयोगी है।

6. (2) इसका शरीर गठीला और भूरे धब्बों वाला होता है और इसे मुख्य रूप से मांस के लिए पाला जाता है
सिरोही बकरी की मुख्य पहचान इसका गठीला शरीर और त्वचा पर पाए जाने वाले भूरे रंग के धब्बे हैं। यह नस्ल मुख्य रूप से मांस उत्पादन हेतु पाली जाती है क्योंकि यह बहुत कम समय में तीव्र शारीरिक भार प्राप्त करने की क्षमता रखती है।
यह शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की जलवायु के प्रति अत्यधिक सहनशील होती है, जिससे पशुपालकों हेतु यह लाभकारी और कम जोखिम वाला विकल्प बन जाती है। इसकी उच्च प्रजनन क्षमता और न्यून रखरखाव लागत इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अत्यंत लोकप्रिय और लाभदायक बनाती है।

7. (4) मुर्रा
मुर्रा वास्तव में भैंस की एक विश्व प्रसिद्ध नस्ल है, न कि भेड़ की। चोकला, मारवाड़ी और मगरा राजस्थान में पाई जाने वाली प्रमुख भेड़ की नस्लें हैं जो ऊन और मांस उत्पादन हेतु जानी जाती हैं। मुर्रा भैंस अपनी उच्च दुग्ध क्षमता और वसा की मात्रा हेतु पहचानी जाती है।
यह मुख्य रूप से हरियाणा तथा राजस्थान के उत्तर-पूर्वी जिलों में केंद्रित है, जहाँ डेयरी व्यवसाय में इसका स्थान सर्वोच्च है। भेड़ों की नस्लों के साथ इसका कोई संबंध नहीं है, क्योंकि यह पूरी तरह से भिन्न पशु प्रजाति है और इसकी शारीरिक विशेषताएँ भी अलग हैं।

8. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान में विभिन्न पशु नस्लें विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में पाई जाती हैं। राठी गोवंश मुख्य रूप से बीकानेर और गंगानगर के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में केंद्रित है। गिर नस्ल, जिसे अजमेरा भी कहा जाता है, मुख्य रूप से अजमेर और भीलवाड़ा के मध्यवर्ती भागों में मिलती है।

NODIA

हरियाणवी नस्ल सीकर और झुंझुनू जैसे उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में पाई जाती है, जबकि प्रसिद्ध भारवाही नागोरी नस्ल का संकेंद्रण नागौर और जोधपुर जिलों के आसपास मिलता है। यह क्षेत्रीय वितरण राज्य की जलवायु और मिट्टी के प्रकार के पूर्णतः अनुरूप है।

9. (1) प्रथम
राजस्थान भारत के कुल ऊन उत्पादन में प्रथम स्थान पर है और देश के कुल उत्पादन का लगभग 30% से अधिक हिस्सा प्रदान करता है। राज्य में अनुकूल परिस्थितियों और भेड़ों की विशाल आबादी के कारण ऊन उद्योग का अत्यधिक विकास हुआ है।
यहाँ उत्पादित ऊन का उपयोग मुख्य रूप से कालीन निर्माण और वस्त्र उद्योग में किया जाता है। बीकानेर शहर को अपनी बड़ी मंडी के कारण एशिया का प्रमुख ऊन व्यापार केंद्र माना जाता है। भेड़ों की विविध नस्लें राज्य को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाती हैं।

10. (2) केवल III
भैंसों का पालन मुख्य रूप से जल और चारे की पर्याप्त उपलब्धता वाले क्षेत्रों में किया जाता है। जैसलमेर और बाड़मेर जैसे अत्यधिक शुष्क पश्चिमी जिलों में जल संसाधनों की गंभीर कमी के कारण भैंसों का संकेंद्रण बहुत कम पाया जाता है।
इसके विपरीत, मुर्रा और सुरती जैसी नस्लें राजस्थान के पूर्वी और दक्षिणी जिलों में अधिक पाई जाती हैं। मुर्रा नस्ल अपने मुड़े हुए सींगों और उच्च दुग्ध उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में गायों, भेड़ों और ऊंटों का पालन भैंसों की तुलना में अधिक सफल है।

11. (4) अंदर की ओर मुड़े हुए कानों के सिरे जो अक्सर शीर्ष पर एक-दूसरे को छूते हैं
मारवाड़ी घोड़ा अपनी विशिष्ट शारीरिक विशेषताओं, विशेष रूप से अंदर की ओर मुड़े हुए कानों के सिरों हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाता है। यह नस्ल अपनी सहनशक्ति, वफादारी और युद्ध कौशल हेतु ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध रही है।
इसके कान अक्सर शीर्ष पर एक-दूसरे को छूते हैं, जो इसे अन्य अश्व नस्लों से अलग और आकर्षक बनाते हैं। मारवाड़ी घोड़े राजस्थान की वीरता और गौरवपूर्ण इतिहास के जीवंत प्रतीक हैं और वर्तमान में घुड़सवारी खेलों में इनका व्यापक उपयोग किया जाता है।

12. (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान में डेयरी विकास हेतु एक व्यवस्थित त्रि-स्तरीय ढांचा अपनाया गया है। इसमें ग्राम स्तर पर दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां, जिला स्तर पर जिला दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन सम्मिलित हैं।
यह संरचना प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करती है और ग्रामीण उत्पादकों को सीधे संगठित बाजार से जोड़ती है। इस मॉडल के माध्यम से मध्यस्थों की भूमिका समाप्त हो जाती है, जिससे दुग्ध उत्पादकों को उचित मूल्य प्राप्त होता है और उपभोक्ताओं को शुद्ध उत्पाद उपलब्ध होते हैं।

13. (3) पूरक आय और पारिवारिक पोषण के लिए छोटे समूहों में पक्षियों का पालन
ग्रामीण क्षेत्रों में आँगन में मुर्गी पालन एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जहाँ छोटे समूहों में पक्षियों को पाला जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य परिवार हेतु पोषण की उपलब्धता सुनिश्चित करना और अतिरिक्त आय प्राप्त करना है।
इसमें पक्षियों को न्यून लागत पर घरेलू स्तर पर प्रबंधित किया जाता है। यह मॉडल विशेष रूप से सीमांत किसानों और ग्रामीण महिलाओं हेतु आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है और स्थानीय स्तर पर प्रोटीन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होता है। यह पर्यावरण के अनुकूल है।

14. (4) चंद्रभागा मेला - बीकानेर
चंद्रभागा पशु मेला प्रतिवर्ष झालावाड़ जिले के झालरापाटन में आयोजित किया जाता है, न कि बीकानेर में। पुष्कर मेला अजमेर में, रामदेव पशु मेला नागौर में और मल्लीनाथ पशु मेला बाड़मेर के तिलवाड़ा में आयोजित होता है।
ये मेले राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के प्रतीक हैं जहाँ पशुओं का व्यापक क्रय-विक्रय होता है। मेलों के माध्यम से स्थानीय पशुपालकों को अपनी नस्लों के प्रदर्शन और व्यापार हेतु एक प्रभावी मंच प्राप्त होता है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

15. (4) I, II, III, IV और V
राजस्थान में पशुपालन क्षेत्र को सूखे और चारे की कमी जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सरकार ने इन समस्याओं के समाधान हेतु मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना और मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों जैसी प्रभावी पहल की हैं।
पशु बीमा योजना पशुपालकों को आकस्मिक मृत्यु के जोखिम से वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। ये सभी प्रयास संयुक्त रूप से राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने और पशुपालकों के जीवन स्तर में सुधार लाने के उद्देश्य से संचालित हैं, जिससे पशुधन क्षमता सुरक्षित रहे।

16. (2) पशुपालकों का अपने पशु समूहों के साथ पड़ोसी राज्यों में बड़े पैमाने पर पलायन
राजस्थान में गंभीर सूखे के दौरान चारे और जल की भारी कमी हो जाती है, जिससे पशुपालकों को अपने पशुओं के साथ पलायन करने पर विवश होना पड़ता है। वे पारंपरिक रूप से पड़ोसी राज्यों जैसे मध्य प्रदेश या गुजरात की ओर प्रवास करते हैं।
यह प्रवास एक तात्कालिक अनुकूलन रणनीति है जो पशुधन को जीवित रखने हेतु आवश्यक है। यद्यपि यह प्रक्रिया अत्यंत चुनौतीपूर्ण होती है, परंतु मरुस्थलीय पशुपालन संस्कृति का यह एक अनिवार्य भाग है। यह आपदा के समय पशुपालकों के लचीलेपन और उनकी संघर्ष क्षमता को दर्शाता है।

17. (2) इसे स्थानीय रूप से 'अजमेरा' या 'रेंडा' कहा जाता है और यह मध्य जिलों में पाई जाती है
गिर नस्ल का गोवंश राजस्थान के मध्यवर्ती जिलों जैसे अजमेर, भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़ में बहुतायत में पाया जाता है, जहाँ

Click Here to Buy book on Amazon

इसे 'अजमेरा' या 'रेंडा' के नाम से जाना जाता है। यह मूलतः गुजरात की नस्ल है परंतु अपनी उच्च दुग्ध क्षमता हेतु प्रसिद्ध है। इसकी शारीरिक पहचान इसके उभरे हुए माथे, लंबे लटकते कान और विशिष्ट घुमावदार सींगों से होती है। यह नस्ल डेयरी उद्योग हेतु आर्थिक रूप से अत्यधिक लाभकारी मानी जाती है और विपरीत जलवायु परिस्थितियों में भी अपनी उत्पादकता बनाए रखने में सक्षम है।

18. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के पशु मेलों का विशेष महत्व है। पुष्कर मेला अजमेर में आयोजित होता है, जो पशु व्यापार के साथ धार्मिक आस्था का केंद्र है। मल्लीनाथ मेला बाड़मेर के तिलवाड़ा में लूणी नदी के किनारे आयोजित किया जाता है।
रामदेव पशु मेला नागौर जिले में आयोजित किया जाता है, जो अपनी नागोरी नस्ल हेतु प्रसिद्ध है। गोगामेड़ी मेला हनुमानगढ़ में लगता है, जहाँ बड़ी संख्या में पशुपालक एकत्रित होते हैं। ये मेले पशु नस्लों के संरक्षण और व्यापार में सहायक होने के साथ पर्यटन को बढ़ावा देते हैं।

19. (3) साहीवाल, रेड सिंधी और थारपारकर
राजस्थान में दुग्ध उत्पादन हेतु प्रसिद्ध राठी गोवंश को साहीवाल, रेड सिंधी और थारपारकर नस्लों के मिश्रण से विकसित माना जाता है। इस चयनात्मक प्रजनन के कारण राठी में न केवल उच्च दुग्ध उत्पादन की क्षमता आई है, बल्कि यह शुष्क वातावरण हेतु अनुकूलित है।
यह नस्ल मुख्य रूप से बीकानेर और आसपास के क्षेत्रों में पाई जाती है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा और उत्पादकता के कारण इसे राजस्थान के पशुपालन क्षेत्र की अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभकारी नस्ल माना जाता है, जो ग्रामीण समृद्धि और पोषण सुरक्षा का प्रमुख आधार है।

20. (4) राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र जोधपुर में स्थित है
राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र राजस्थान के बीकानेर जिले के जोड़बीड़ में स्थित है, न कि जोधपुर में। ऊंटनी का दूध अपने औषधीय गुणों और उच्च विटामिन C के कारण विशेष रूप से मधुमेह के रोगियों हेतु लाभदायक माना जाता है।
राज्य सरकार ने ऊंटों के संरक्षण हेतु कठोर कानून बनाए हैं ताकि उनके वध और अवैध व्यापार पर प्रभावी रोक लगाई जा सके। ऊंट राजस्थान की मरुस्थलीय पारिस्थितिकी और परिवहन व्यवस्था का अपरिहार्य भाग है, जो विषम परिस्थितियों में भी जीवित रहने में सक्षम है।

21. (3) मारवाड़ी बकरियां लंबे प्रवास के लिए जानी जाती हैं, जबकि सिरोही बकरियां सामान्यतः बिना लंबे प्रवास के पाली जाती हैं
मारवाड़ी बकरी अपनी सहनशक्ति और रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता हेतु प्रसिद्ध है, जिसके कारण पशुपालक इसे लंबी दूरी के प्रवास पर ले जाते हैं। इसके विपरीत, सिरोही बकरी का पालन सामान्यतः स्थिर परिस्थितियों में किया जाता है और यह चराई क्षेत्रों तक सीमित रहती है।
मारवाड़ी नस्ल मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती है, जबकि सिरोही नस्ल दक्षिण-पश्चिमी भाग हेतु अनुकूलित है। दोनों नस्लों के पालन के तरीके उनकी शारीरिक क्षमताओं और भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं, जिससे वे अपने विशिष्ट क्षेत्रों में उत्पादक बनी रहती हैं।

22. (1) चोकला, मगरा, मारवाड़ी, मालपुरा
राजस्थान में ऊन की गुणवत्ता के आधार पर चोकला भेड़ की ऊन सर्वश्रेष्ठ और महीन मानी जाती है, जिसे 'भारतीय मेरिनो' कहा जाता है। इसके पश्चात मगरा नस्ल का स्थान आता है, जो मध्यम श्रेणी की ऊन प्रदान करती है।
मारवाड़ी भेड़ की ऊन तुलनात्मक रूप से अधिक खुरदरी होती है और इसका उपयोग मुख्य रूप से कालीन निर्माण में किया जाता है। मालपुरा नस्ल की ऊन सर्वाधिक खुरदरी होती है, जो मुख्य रूप से नमदा और मोटे कंबलों के निर्माण हेतु उपयुक्त है। यह क्रम ऊन के व्यावसायिक उपयोग को दर्शाता है।

23. (4) अविकानगर (टोंक)
केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान राजस्थान के टोंक जिले के अविकानगर में स्थित है। यह संस्थान भेड़ पालन की आधुनिक तकनीकों, नस्ल सुधार और ऊन उत्पादन में वृद्धि हेतु निरंतर शोध कार्य करता है।
यहाँ विकसित उन्नत नस्लों ने राज्य और देश के पशुपालकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह केंद्र ऊन की गुणवत्ता बढ़ाने और भेड़ों के स्वास्थ्य प्रबंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

24. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
मुर्रा भैंस की नस्ल मुख्य रूप से राजस्थान के उत्तर-पूर्वी जिलों जैसे अलवर, भरतपुर और जयपुर में पाई जाती है। यद्यपि इसमें वसा की मात्रा अच्छी होती है, परंतु यह सामान्यतः 7 से 8 प्रतिशत के मध्य रहती है और 13 प्रतिशत तक नहीं पहुँचती।
मुर्रा अपने उच्च दुग्ध उत्पादन और गहरे काले रंग हेतु जानी जाती है। डेयरी व्यवसाय में इसकी उपयोगिता सर्वविदित है और इसे भैंसों की सर्वोत्तम नस्लों में से एक माना जाता है। यह नस्ल किसानों हेतु नियमित आय का एक प्रमुख और विश्वसनीय स्रोत सिद्ध हुई है।

25. (3) केवल I और III
'सरस' राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन का आधिकारिक ब्रांड है, जिसके माध्यम से दुग्ध उत्पादों का विपणन किया जाता है। फेडरेशन दुग्ध उत्पादकों को कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार और तकनीकी सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
हालांकि, राजस्थान का सहकारी डेयरी नेटवर्क तीन-स्तरीय प्रणाली पर आधारित है, जिसमें ग्राम, जिला और राज्य स्तर की इकाइयां सम्मिलित हैं। यह सुदृढ़ नेटवर्क ग्रामीण क्षेत्रों में श्वेत क्रांति लाने और किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में निरंतर सफल भूमिका निभा रहा है।

NODIA

(3) पशु बीमा योजना
(4) सरस सुरक्षा कवच बीमा योजना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. सूखे के दौरान चारे के प्रबंधन के चरणों को क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए:
A. रियायती चारा डिपो की स्थापना
B. सूखे की स्थिति का आधिकारिक मूल्यांकन
C. किसानों को चारे का वितरण
D. अन्य क्षेत्रों से चारे की खरीद
(1) B, D, A, C
(2) A, B, C, D
(3) B, A, D, C
(4) D, B, A, C
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. संस्थानों को उनके कार्य क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संस्थान)
A. RCDF
B. CSWRI
C. NRCC
D. पशुपालन विभाग
सूची II: (क्षेत्र)
i. सहकारी डेयरी और दुग्ध प्रसंस्करण
ii. ऊंट अनुसंधान
iii. भेड़ और ऊन अनुसंधान
iv. पशु चिकित्सा और रोग नियंत्रण
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. पशुगणना प्रत्येक कितने वर्षों में आयोजित की जाती है?
(1) 3 वर्ष
(2) 5 वर्ष
(3) 10 वर्ष
(4) 15 वर्ष
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. राजस्थान में गिर गोवंश की नस्ल के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसे एक उच्च दुग्ध उत्पादन वाली दुधारू नस्ल माना जाता है
(2) यह जैसलमेर और बाड़मेर की मूल नस्ल है
(3) यह सामान्यतः अजमेर और भीलवाड़ा क्षेत्र में पाई जाती है
(4) उभरा हुआ माथा और लंबे कान इसकी विशेषता हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

इसकी चराई क्षमता और कठिन परिस्थितियों में अनुकूलन के कारण पशुपालक इसे पालना प्राथमिकता देते हैं। यद्यपि इसकी ऊन मध्यम श्रेणी की होती है, परंतु इसकी उच्च उत्तरजीविता दर और न्यून मृत्यु दर इसे पशुपालकों हेतु आर्थिक रूप से सुरक्षित और विश्वसनीय बनाती है।

35. (4) I, II, III, IV और V
राजस्थान भारत के ऊन उत्पादन में अग्रणी है और यहाँ की चोकला भेड़ अपनी महीन ऊन के कारण 'भारतीय मेरिनो' कहलाती है। बीकानेर में स्थित एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी राज्य के व्यापारिक महत्व को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है। मारवाड़ी नस्ल की ऊन का उपयोग कालीनों के निर्माण में होता है, जबकि जोधपुर में स्थित केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड इस क्षेत्र के नीतिगत विकास का केंद्र है। ये सभी कारक संयुक्त रूप से राजस्थान को देश के ऊन और भेड़ पालन क्षेत्र का मुख्य आधार बनाते हैं।

36. (4) सुरती - डूंगरपुर और बांसवाड़ा
सुरती भैंस मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिणी जिलों जैसे डूंगरपुर और बांसवाड़ा में पाई जाती है, जहाँ की जलवायु इसके अनुकूल है। मुर्रा नस्ल मुख्य रूप से जयपुर और अलवर जैसे उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में केंद्रित है, न कि शुष्क जिलों में।
भदावरी नस्ल उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे धौलपुर और भरतपुर क्षेत्रों में पाई जाती है। सही क्षेत्रीय संकेंद्रण पशुओं के स्वास्थ्य और उनकी उत्पादकता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक नस्ल विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों और संसाधनों के प्रति अनुकूलित होती है।

37. (3) युद्ध कौशल और घुड़सवारी खेल के लिए
मारवाड़ी घोड़ा अपनी विशिष्ट फुर्ती, साहस और बुद्धिमत्ता हेतु ऐतिहासिक रूप से युद्ध के मैदानों में योद्धाओं की प्रथम पसंद रहा है। इसकी शारीरिक संरचना और वफादारी इसे घुड़सवारी खेलों और सांस्कृतिक समारोहों हेतु अत्यधिक उपयुक्त बनाती है।
यह नस्ल रेगिस्तानी रेत पर तीव्र दौड़ने और कठिन बाधाओं को पार करने की अद्भुत क्षमता रखती है। वर्तमान में, विरासत पर्यटन और पारंपरिक प्रदर्शनों में इस घोड़े का उपयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान के गौरव को प्रदर्शित करने हेतु गौरवपूर्ण ढंग से किया जाता है।

38. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान की सहकारी डेयरी संरचना त्रि-स्तरीय है जो कुशलतापूर्वक कार्य करती है। राज्य स्तर पर राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन शीर्ष निकाय है। जिला स्तर पर जिला दुग्ध संघ संग्रहण और प्रसंस्करण का प्रबंधन करते हैं।
ग्राम स्तर पर दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां सीधे किसानों से दूध एकत्रित करती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से उत्पादित वस्तुओं को 'सरस' जैसे लोकप्रिय वाणिज्यिक ब्रांड के नाम से बेचा जाता है, जो गुणवत्ता का प्रतीक है। यह मॉडल किसानों की आय में वृद्धि करता है।

39. (3) कार्तिक
विश्व प्रसिद्ध पुष्कर पशु मेला प्रतिवर्ष हिंदू पंचांग के अनुसार कार्तिक माह में आयोजित किया जाता है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा पर अपने चरमोत्कर्ष पर होता है, जिसमें बड़ी संख्या में ऊंटों, घोड़ों और अन्य पशुओं का व्यापार होता है।
मेले के साथ पुष्कर झील में पवित्र स्नान का धार्मिक महत्व भी जुड़ा है, जो इसे एक अद्वितीय सांस्कृतिक संगम बनाता है। देश-विदेश के पर्यटक इस मेले की भव्यता और मरुस्थलीय जीवन की जीवंत झलक देखने हेतु भारी संख्या में पहुँचते हैं।

40. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना राजस्थान सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है जिसका उद्देश्य पशुपालकों को पशु उपचार हेतु आवश्यक औषधियाँ बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराना है। यह योजना राजकीय पशु चिकित्सालयों के माध्यम से संचालित होती है।
यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में पशु स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में सहायक है। हालांकि, यह पूरी तरह से राज्य सरकार द्वारा वित्तपोषित योजना है, न कि विश्व बैंक द्वारा। इस योजना ने पशु चिकित्सा लागत को कम कर पशुपालकों की आर्थिक स्थिति को संबल प्रदान किया है।

41. (3) अनियमित वर्षा जिसके कारण प्राकृतिक चरागाहों की वृद्धि कम होती है
पश्चिमी राजस्थान में चारे की निरंतर कमी का प्राथमिक कारण अनियमित और अल्प वर्षा है, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक चरागाहों का विकास पर्याप्त नहीं हो पाता। मरुस्थलीय परिस्थितियों में मृदा की न्यून नमी भी वनस्पतियों की वृद्धि में बाधा डालती है।
वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता के कारण, सूखे के वर्षों में स्थिति और भी विकट हो जाती है। यह समस्या पशुपालकों को भोजन और जल की खोज में पलायन करने हेतु विवश करती है, जो उनके जीवन को कठिन बनाता है। टिकाऊ चारा प्रबंधन इस क्षेत्र की मुख्य आवश्यकता है।

NODIA

42. (1) A, B, C
राजस्थान की प्रमुख गोवंश नस्लों का भौगोलिक वितरण उनके मूल क्षेत्रों के अनुसार भिन्न है। राठी नस्ल मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर और गंगानगर क्षेत्र में पाई जाती है। इसके दक्षिण में, नागौर जिले में शक्तिशाली नागोरी नस्ल का संकेंद्रण है।
और अधिक दक्षिण की ओर बढ़ने पर, अजमेर और आसपास के मध्यवर्ती जिलों में गिर नस्ल पाई जाती है। यह उत्तर से दक्षिण का क्रम राज्य की विविध जलवायु और पशु नस्लों के मध्य के सुंदर समन्वय को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है, जो क्षेत्रीय पशुपालन की विशिष्टता है।

43. (4) सुरती
दिए गए विकल्पों में बीकानेरी, जैसलमेरी और बालोतरा सभी ऊंटों की विशिष्ट नस्लें हैं जो राजस्थान के विभिन्न शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इसके विपरीत, सुरती भैंस की एक प्रसिद्ध नस्ल

अंततः, इन डिपो के माध्यम से जरूरतमंद पशुपालकों को रियायती दरों पर चारे का वितरण सुनिश्चित किया जाता है। यह क्रमबद्ध प्रक्रिया संकट के समय पशुधन को भुखमरी से बचाने और पशुपालकों को आर्थिक हानि से सुरक्षित रखने हेतु अत्यंत आवश्यक और प्रभावी प्रबंधन रणनीति है।

78. (1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
राजस्थान में पशुपालन विकास हेतु विभिन्न संस्थान रणनीतिक रूप से कार्य करते हैं। RCDF मुख्य रूप से सहकारी डेयरी और दुग्ध प्रसंस्करण का प्रबंधन करता है। CSWRI भेड़ पालन और ऊन के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु समर्पित है।
NRCC ऊंटों की नस्ल सुधार और अनुसंधान पर केंद्रित है। पशुपालन विभाग संपूर्ण राज्य में पशु चिकित्सा सेवाओं और रोगों के प्रभावी नियंत्रण हेतु उत्तरदायी प्राथमिक निकाय है। इन संस्थानों का समन्वित प्रयास राज्य के पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने और पशुपालकों के कल्याण को सुनिश्चित करता है।

79. (2) 5 वर्ष
राजस्थान सहित संपूर्ण भारत में पशुगणना प्रति 5 वर्ष के अंतराल पर आयोजित की जाती है। यह गणना पशुपालन विभाग द्वारा की जाती है और इसके माध्यम से विभिन्न पशु प्रजातियों, उनकी नस्लों और आयु वर्ग के विस्तृत आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं।
पशुगणना से प्राप्त आंकड़े सरकार को पशुधन विकास हेतु नीतियां बनाने और टीकाकरण कार्यक्रमों की योजना बनाने में सहायता करते हैं। यह राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन की वर्तमान स्थिति को समझने का आधार है, जो संसाधनों के उचित आवंटन को सुनिश्चित करता है।

80. (2) यह जैसलमेर और बाड़मेर की मूल नस्ल है
गिर नस्ल का गोवंश अपनी उच्च दुग्ध उत्पादन क्षमता हेतु जाना जाता है और इसकी पहचान उभरे हुए माथे तथा लंबे कानों से होती है। यह नस्ल मुख्य रूप से राजस्थान के मध्यवर्ती जिलों जैसे अजमेर और भीलवाड़ा में पाई जाती है।
गिर नस्ल जैसलमेर और बाड़मेर जैसे अत्यधिक शुष्क पश्चिमी जिलों की मूल नस्ल नहीं है, जहाँ मरुस्थलीय परिस्थितियों के अनुकूल थारपारकर जैसी नस्लें पाई जाती हैं। गिर का संकेंद्रण उन क्षेत्रों में अधिक है जहाँ डेयरी व्यवसाय हेतु अनुकूल संसाधन और जल सुलभता से उपलब्ध हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

52. (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान सरकार द्वारा संचालित मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां ग्रामीण पशुपालकों हेतु वरदान सिद्ध हुई हैं। इन इकाइयों का मुख्य उद्देश्य पशु चिकित्सा सेवाओं को सीधे पशुपालकों के द्वार तक सुलभता से पहुँचाना है।
ये इकाइयां टीकाकरण, उपचार और कृत्रिम गर्भाधान जैसी आधुनिक सुविधाएं प्रदान करती हैं। इससे बीमार पशुओं को चिकित्सालय ले जाने की समस्या समाप्त होती है और समय पर उपचार सुनिश्चित होता है। यह पहल पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन में सुधार कर आर्थिक उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है।

53. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
पशुधन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण आर्थिक बीमा के रूप में कार्य करता है क्योंकि फसल खराब होने की स्थिति में पशु उत्पाद आय का निरंतर स्रोत बने रहते हैं। हालांकि, पशुपालन मानसून और जलवायु के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त नहीं है।
चारे और जल की उपलब्धता वर्षा पर निर्भर करती है, जिससे सूखे की स्थिति में पशुओं का भरण-पोषण कठिन हो जाता है। अतः पशुपालन कृषि के पूरक के रूप में जोखिम कम तो करता है, परंतु वह पर्यावरणीय परिवर्तनों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील बना रहता है।

54. (2) नागोरी
नागोरी गोवंश राजस्थान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भारवाही नस्ल है, जो विशेष रूप से अपने शक्तिशाली और फुर्तीले बैलों हेतु जानी जाती है। इसके बैल भारी कृषि कार्यों और परिवहन हेतु संपूर्ण देश में विख्यात हैं।
नागोरी बैल अपनी तीव्र चाल और कठिन परिस्थितियों में निरंतर कार्य करने की अद्भुत क्षमता हेतु पहचाने जाते हैं। इनका सुदृढ़ शारीरिक ढांचा और गहरी छाती इन्हें कठिन परिश्रम हेतु आदर्श बनाती है, जिससे ये ग्रामीण क्षेत्रों की कृषि आधारित जीवनशैली का एक अनिवार्य अंग बन गए हैं।

55. (4) I, II, III, IV और V
ऊंट को 2014 में राजस्थान का राज्य पशु घोषित किया गया था। बीकानेरी ऊंटों की खोपड़ी पर पाया जाने वाला विशिष्ट गड्ढा उनकी प्रमुख नस्लीय पहचान है। सवारी हेतु जैसलमेरी नस्ल अपनी तीव्र गति के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। बीकानेर में स्थित राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र नस्ल सुधार का प्रमुख केंद्र है। साथ ही, ऊंटनी का दूध अपने विशिष्ट औषधीय गुणों, विशेष रूप से इंसुलिन जैसी संरचना के कारण मधुमेह के प्रबंधन में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ये सभी बिंदु राज्य में ऊंट के आर्थिक महत्व को दर्शाते हैं।

56. (1) सिरोही - मांस के लिए प्रसिद्ध; शारीरिक भार में तीव्र वृद्धि
सिरोही बकरी को मुख्य रूप से इसकी मांस उत्पादन क्षमता और शरीर के भार में तीव्र वृद्धि हेतु पाला जाता है। यह नस्ल व्यावसायिक बकरी पालन हेतु अत्यंत लाभकारी है क्योंकि यह अल्प समय में बाजार के अनुकूल भार प्राप्त कर लेती है। मारवाड़ी नस्ल मुख्य रूप से अपनी सहनशक्ति हेतु जानी जाती है। सही नस्ल का चुनाव पशुपालक की आर्थिक सफलता को सीधे प्रभावित करता है। सिरोही नस्ल राजस्थान की जलवायु परिस्थितियों में मांस उत्पादन हेतु सर्वोत्तम मानी जाती है, जिससे स्थानीय पशुपालकों को नियमित और अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

57. (3) चरागाह और जल की खोज करना
पश्चिमी राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु के दौरान तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है और जल स्रोतों के साथ प्राकृतिक चरागाह भी सूख जाते हैं। इस विषम परिस्थिति में पशुओं के जीवन को बचाने हेतु पशुपालक चारे और जल की खोज में पड़ोसी राज्यों की ओर प्रवास करते हैं।
यह वार्षिक प्रवास पशुधन प्रबंधन की एक अनिवार्य और पारंपरिक रणनीति है। यद्यपि यह प्रक्रिया अत्यंत कष्टकारी और जोखिम भरी होती है, परंतु संसाधनों की गंभीर कमी के कारण पशुओं की उत्तरजीविता सुनिश्चित करने का यही एकमात्र व्यावहारिक विकल्प बचता है जो सदियों से प्रचलित है।

58. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
राजस्थान की विभिन्न पशु नस्लें अपनी विशिष्ट उपयोगिताओं हेतु जानी जाती हैं। बीकानेरी ऊंट अपनी शक्ति के कारण भार ढोने हेतु श्रेष्ठ हैं, जबकि जैसलमेरी ऊंट अपनी फुर्ती के कारण सवारी हेतु प्रसिद्ध हैं।
मारवाड़ी घोड़े अपने अदम्य साहस और वफादारी के कारण घुड़सवारी खेलों में उपयोग किए जाते हैं। मुर्रा भैंस को उसकी उच्च दुग्ध वसा और असाधारण दुग्ध उत्पादन क्षमता हेतु जाना जाता है। यह विविधता राज्य के पशुधन की बहुमुखी उपयोगिता को दर्शाती है, जो विभिन्न आर्थिक जरूरतों को पूरा करती है।

59. (4) मारवाड़ी
मारवाड़ी भेड़ राजस्थान की एक प्रमुख नस्ल है जिसकी ऊन तुलनात्मक रूप से अधिक खुरदरी और मध्यम लंबाई की होती है। अपनी मजबूती और विशिष्ट बनावट के कारण, इस ऊन का उपयोग मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाले कालीनों के निर्माण में किया जाता है।
मारवाड़ी ऊन से बने कालीन अपने स्थायित्व और बेहतरीन फिनिश हेतु अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मांग में रहते हैं। यद्यपि चोकला भेड़ की ऊन अधिक महीन होती है, परंतु कालीन उद्योग हेतु मारवाड़ी नस्ल की ऊन को उसकी विशिष्ट विशेषताओं और सुदृढ़ता के कारण प्राथमिकता दी जाती है।

60. (2) गिर
दिए गए विकल्पों में मुर्रा, सुरती और भदावरी सभी भैंसों की प्रमुख नस्लें हैं जो राजस्थान में दुग्ध उत्पादन हेतु पाली जाती हैं। इसके विपरीत, गिर गोवंश की एक अत्यंत प्रसिद्ध और उच्च दुग्ध उत्पादन वाली नस्ल है, जो मूलतः गुजरात की है।
गिर नस्ल राजस्थान के मध्यवर्ती जिलों में भी व्यापक रूप से पाई जाती है और डेयरी उद्योग हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः प्रजाति के आधार पर गिर अन्य विकल्पों से भिन्न है। पशुओं

Downloaded from www.pdf.tube

26. भाखड़ा नांगल संयुक्त उद्यम परियोजना में राजस्थान का अनुमानित प्रतिशत हिस्सा क्या है?
(1) 10.50 प्रतिशत
(2) 15.22 प्रतिशत
(3) 25.50 प्रतिशत
(4) 45.00 प्रतिशत
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

27. चंबल घाटी परियोजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच 50:50 हिस्सेदारी वाला एक संयुक्त उद्यम है।
(2) परियोजना का बुनियादी ढांचा तीन अलग-अलग चरणों में सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया था।
(3) इस एकीकृत सोपानी प्रणाली (cascade system) के भाग के रूप में चार प्रमुख बांध निर्मित किए गए हैं।
(4) कुल सिंचाई क्षमता केवल राजस्थान राज्य के लिए है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों का परीक्षण कीजिए और विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): चंबल घाटी परियोजना ने राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी जिलों में कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि की है।
कारण (R): चंबल श्रृंखला में कोटा बैराज एकमात्र ऐसा बांध है जो विशेष रूप से विद्युत उत्पादन के बजाय सिंचाई के उद्देश्य से जल छोड़ने के लिए बनाया गया है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

29. कोटा बैराज से निकलने वाली दाईं मुख्य नहर किन क्षेत्रों को सिंचाई प्रदान करने के लिए बनाई गई है?
(1) केवल राजस्थान के भीतर के जिलों को
(2) केवल मध्य प्रदेश के भीतर के जिलों को
(3) राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों को
(4) राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों को
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

30. चंबल घाटी परियोजना श्रृंखला के भाग के रूप में निर्मित निम्नलिखित बांधों पर विचार कीजिए:
I. गांधी सागर
II. राणा प्रताप सागर
III. जवाहर सागर
IV. कोटा बैराज
उपर्युक्त में से कौन से बांध भौगोलिक रूप से पूर्णतः राजस्थान की राज्य सीमाओं के भीतर स्थित हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

31. चंबल श्रृंखला प्रणाली से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा बांध मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में स्थित है?
(1) गांधी सागर
(2) जवाहर सागर
(3) राणा प्रताप सागर
(4) कोटा बैराज
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

32. कोटा बैराज से निकलने वाली बाईं मुख्य नहर किन प्रमुख जिलों की सिंचाई आवश्यकताओं को पूर्ण करती है?
(1) बारां और झालावाड़
(2) कोटा और बूंदी
(3) सवाई माधोपुर और टोंक
(4) चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

33. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बांध)
A. जवाई बांध
B. बीसलपुर बांध
C. माही बजाज सागर बांध
D. राणा प्रताप सागर बांध
सूची II: (जिला/स्थान)
i. टोंक
ii. चित्तौड़गढ़
iii. पाली
iv. बांसवाड़ा
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

34. राजस्थान में निम्नलिखित जलाशयों में से उनके संबंधित नदी घाटियों के आधार पर विषम का चयन कीजिए:
(1) जवाई बांध
(2) बीसलपुर बांध
(3) मेजा बांध
(4) ईसरदा बांध
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

35. निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. कोटा
II. बूंदी

NODIA

69. (3) शरीर के भार में तीव्र वृद्धि, जो मांस उत्पादन के लिए आदर्श है
सिरोही बकरी को पशुपालकों द्वारा विशेष रूप से इसलिए पसंद किया जाता है क्योंकि इसके शरीर के भार में तीव्र गति से वृद्धि होती है। यह विशेषता इसे मांस उत्पादन के उद्देश्य से व्यावसायिक बकरी पालन हेतु एक अत्यंत लाभकारी नस्ल बनाती है।
यह नस्ल न केवल तीव्रता से बढ़ती है, बल्कि इसमें प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों और रोगों से संघर्ष की भी उत्कृष्ट क्षमता होती है। न्यून लागत पर अधिक मांस उत्पादन की यह क्षमता इसे राजस्थान के बाजारों में लोकप्रिय और पशुपालकों हेतु आर्थिक रूप से लाभदायक बनाती है।

70. (4) I, II, III और IV
राजस्थान भारत में ऊन उत्पादन के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है, जो राज्य की समृद्ध पशुपालन संस्कृति का परिचायक है। भेड़ों से ऊन कतरने का कार्य सामान्यतः वर्ष में दो बार किया जाता है ताकि ऊन की गुणवत्ता और पशु स्वास्थ्य सुनिश्चित किया जा सके।
मारवाड़ी नस्ल अपनी विशाल संख्या और रोगों के प्रति सहनशक्ति हेतु जानी जाती है, जबकि चोकला नस्ल अपनी महीन ऊन के कारण श्रेष्ठ मानी जाती है। ये सभी कारक मिलकर राजस्थान को भेड़ और ऊन उद्योग का शक्तिशाली केंद्र बनाते हैं, जो अर्थव्यवस्था में निरंतर योगदान देता है।

71. (4) राज्य मुख्य रूप से अति-महीन परिधान श्रेणी की मेरिनो ऊन का उत्पादन करता है
राजस्थान देश का सबसे बड़ा ऊन उत्पादक राज्य है और यहाँ उत्पादित ऊन का एक बड़ा भाग मध्यम श्रेणी का है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से कालीन निर्माण में किया जाता है। बीकानेर इस ऊन के व्यापार और प्रसंस्करण का महत्वपूर्ण केंद्र है।
हालांकि, राजस्थान मुख्य रूप से अति-महीन परिधान श्रेणी की मेरिनो ऊन का उत्पादन नहीं करता, क्योंकि यहाँ की अधिकांश नस्लें कालीन श्रेणी की ऊन हेतु अधिक उपयुक्त हैं। महीन ऊन का उत्पादन केवल चोकला जैसी विशिष्ट नस्लों तक सीमित है, जो राज्य की ऊन विविधता का भाग है।

72. (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पशु बाजारों में मुर्रा भैंसों की मांग निरंतर अत्यधिक रहती है क्योंकि इन्हें दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से सर्वोत्तम माना जाता है। मुर्रा भैंस के दूध में वसा की मात्रा और कुल उत्पादन अन्य स्वदेशी नस्लों की तुलना में काफी अधिक होता है।
यह विशेषता इसे डेयरी किसानों हेतु आर्थिक रूप से सर्वाधिक आकर्षक विकल्प बनाती है। इसके गहरे काले रंग और विशिष्ट मुड़े हुए सींगों वाली पहचान के साथ इसकी उच्च उत्पादकता ही इसकी निरंतर बढ़ती लोकप्रियता और बाजार मूल्य का मुख्य कारण है, जो किसानों की आय बढ़ाता है।

73. (3) घुड़सवारी खेल और विरासत पर्यटन में नस्ल को बढ़ावा देना
मारवाड़ी घोड़े के संरक्षण हेतु इसे घुड़सवारी खेलों और विरासत पर्यटन में सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस नस्ल की ऐतिहासिक महत्ता और अद्वितीय शारीरिक विशेषताओं को देखते हुए इसे 'धरोहर नस्ल' के रूप में स्थापित करने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।
इन गतिविधियों के माध्यम से न केवल इस नस्ल का संरक्षण सुनिश्चित होता है, बल्कि पशुपालकों हेतु आय के नवीन स्रोत भी सृजित होते हैं। मारवाड़ी घोड़े की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा और इसकी बढ़ती मांग इसके संरक्षण प्रयासों की सफलता का प्रमाण है, जो राजस्थान की विरासत को सुरक्षित करती है।

74. (1) राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन
RCDF का पूर्ण रूप राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन है। यह राजस्थान में डेयरी विकास हेतु उत्तरदायी शीर्ष सहकारी निकाय है, जो राज्य के संपूर्ण दुग्ध संग्रहण, प्रसंस्करण और वितरण नेटवर्क का व्यापक प्रबंधन सुनिश्चित करता है।
इसका मुख्य उद्देश्य दुग्ध उत्पादकों के हितों की रक्षा करना और उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण 'सरस' ब्रांड के उत्पाद उपलब्ध कराना है। फेडरेशन ग्रामीण क्षेत्रों में श्वेत क्रांति को आगे बढ़ाने और पशुपालकों को तकनीकी सहायता प्रदान करने हेतु निरंतर कार्य कर रहा है, जिससे डेयरी क्षेत्र सुदृढ़ होता है।

75. (4) I, II, III, IV और V
राजस्थान के पशु मेले राज्य की पशुपालन परंपरा का अभिन्न अंग हैं। पुष्कर मेला अजमेर में और मल्लीनाथ जी मेला बाड़मेर के तिलवाड़ा में आयोजित होता है। नागौर का मेला नागोरी नस्ल के उत्कृष्ट बैलों के व्यापार हेतु प्रसिद्ध है।
रामदेव पशु मेला भी नागौर जिले में पशुपालकों को एक विशाल व्यापारिक मंच प्रदान करता है। ये मेले न केवल आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं, बल्कि क्षेत्रीय पशु नस्लों के प्रदर्शन और संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो राज्य की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं।

76. (2) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना, पशु बीमा योजना और सरस सुरक्षा कवच बीमा योजना सभी पशुपालन और डेयरी क्षेत्र के विकास हेतु समर्पित हैं। इसके विपरीत, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मुख्य रूप से कृषि फसलों को प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली क्षति हेतु सुरक्षा प्रदान करती है।
यद्यपि पशुपालन और कृषि आपस में संबद्ध हैं, परंतु यह विशिष्ट योजना पशुधन के स्थान पर केवल कृषि फसलों के जोखिम प्रबंधन से संबंधित है। पशुपालकों हेतु अन्य विशिष्ट बीमा योजनाएं उपलब्ध हैं जो उनके पशुधन की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं और उन्हें वित्तीय संबल प्रदान करती हैं।

77. (1) B, D, A, C
सूखे के दौरान चारे के प्रबंधन हेतु सर्वप्रथम सूखे की स्थिति का आधिकारिक मूल्यांकन किया जाता है। इसके पश्चात, संसाधन संपन्न क्षेत्रों से चारे का क्रय किया जाता है। तृतीय चरण में, प्रभावित क्षेत्रों में रियायती चारा डिपो स्थापित किए जाते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

है जो मुख्य रूप से दक्षिण राजस्थान में दुग्ध उत्पादन हेतु पाली जाती है।
इस प्रकार, सुरती अपनी प्रजाति के आधार पर अन्य तीन विकल्पों से पूर्णतः भिन्न है। पशुपालन के अध्ययन में विभिन्न पशु प्रजातियों और उनकी विशिष्ट नस्लों के मध्य भौगोलिक और जैविक अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है। यह पशुओं की क्षेत्रीय उपयोगिता पर भी प्रकाश डालता है।

44. (2) सिरोही नस्ल मुख्य रूप से महीन पशमीना ऊन के उत्पादन के लिए पाली जाती है
राजस्थान में बकरी पालन ग्रामीण परिवारों हेतु वित्तीय सुरक्षा का एक ठोस आधार है। बकरियां यहाँ की कठोर जलवायु के प्रति सहज रूप से अनुकूलित हैं। हालांकि, सिरोही नस्ल मुख्य रूप से मांस उत्पादन और तीव्र शारीरिक वृद्धि हेतु पाली जाती है।
पशमीना ऊन मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाने वाली विशेष बकरियों से प्राप्त होती है, न कि सिरोही नस्ल से। सिरोही नस्ल अपनी उच्च प्रजनन दर और रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण राजस्थान के पशुपालकों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय है और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है।

45. (2) केवल II और III
चोकला भेड़ मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र में पाई जाती है और यह अपनी उत्कृष्ट ऊन हेतु प्रसिद्ध है। मारवाड़ी भेड़ की ऊन परिधान हेतु नहीं, बल्कि मुख्य रूप से कालीन निर्माण हेतु उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि यह तुलनात्मक रूप से अधिक खुरदरी होती है।
भेड़ की जनसंख्या का घनत्व आर्द्र पूर्वी जिलों के स्थान पर शुष्क और अर्ध-शुष्क पश्चिमी और मध्यवर्ती जिलों में अधिक पाया जाता है। ये क्षेत्र भेड़ों की विशिष्ट चराई आदतों और उनकी जलवायु संबंधी सहनशीलता हेतु भौगोलिक रूप से अधिक अनुकूल हैं, जिससे वहां पशुपालन सफल है।

46. (4) बीकानेर
बीकानेर शहर को एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी के रूप में वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त है। यहाँ से देश के विभिन्न भागों के साथ विदेशों में भी ऊन का बड़े पैमाने पर निर्यात किया जाता है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है।
इस मंडी का महत्व न केवल व्यापार के दृष्टिकोण से है, बल्कि यह ऊन के प्रसंस्करण और श्रेणीकरण का भी प्रमुख केंद्र है। बीकानेर की यह मंडी राजस्थान की अर्थव्यवस्था में ऊन उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है और सहस्रों लोगों को रोजगार प्रदान करती है।

47. (1) पानी और चारे की अधिक आवश्यकता, जो पूर्वी क्षेत्रों में सुलभ है
भैंसों को अपने स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन बनाए रखने हेतु प्रचुर मात्रा में जल और हरे चारे की आवश्यकता होती है। राजस्थान के पूर्वी भागों में सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता के कारण ये संसाधन पश्चिमी राजस्थान की तुलना में अधिक सुलभ और पर्याप्त हैं।
पश्चिमी भाग की शुष्क जलवायु और जल की कमी भैंस पालन हेतु चुनौतीपूर्ण होती है। इसीलिए, मुर्रा जैसी उच्च उत्पादक नस्लें पूर्वी राजस्थान के जिलों में अधिक सफल हैं, जहाँ डेयरी उद्योग का ढांचा भी अपेक्षाकृत अधिक विकसित है। यह भौगोलिक सुलभता पशुपालन प्रारूप को निर्धारित करती है।

48. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान में पशुपालन से जुड़े प्रमुख संस्थान विभिन्न जिलों में रणनीतिक रूप से स्थित हैं। केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान टोंक के अविकानगर में कार्यरत है। राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र बीकानेर के जोड़बीड़ में स्थित है।
राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन का मुख्यालय जयपुर में है, जो संपूर्ण राज्य के डेयरी नेटवर्क का संचालन करता है। भैंस अनुसंधान एवं प्रजनन केंद्र उदयपुर के वल्लभनगर में स्थित है। ये संस्थान राज्य के पशुधन विकास की रीढ़ हैं और नस्ल सुधार सुनिश्चित करते हैं।

49. (2) शहरी क्षेत्रों में किसानों द्वारा सीधे कच्चे दूध की खुदरा बिक्री
राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन का मुख्य उद्देश्य ग्राम सहकारी समितियों के माध्यम से व्यवस्थित रूप से दूध का संग्रहण करना और उसे प्रसंस्कृत कर 'सरस' ब्रांड के अंतर्गत बेचना है। यह फेडरेशन पशुपालकों को संतुलित आहार और सहायता भी प्रदान करता है।
हालांकि, शहरी क्षेत्रों में किसानों द्वारा सीधे कच्चे दूध की खुदरा बिक्री करना फेडरेशन के संगठित कार्यों के अंतर्गत नहीं आता है। फेडरेशन एक व्यवस्थित विपणन मार्ग सुनिश्चित करता है ताकि उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों के हितों की रक्षा की जा सके और उन्हें उचित मूल्य मिले।

NODIA

50. (2) केवल I, II और IV
राजस्थान में मुर्गी पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और पोषण सुरक्षा प्रदान करने का एक प्रभावी साधन है। अजमेर जिला अपने उच्च अंडा उत्पादन के कारण 'अंडों की टोकरी' के रूप में प्रसिद्ध है।
व्यावसायिक नस्लें वैज्ञानिक प्रबंधन के अंतर्गत देशी नस्लों की तुलना में अधिक अंडे देती हैं, जो इन्हें औद्योगिक उत्पादन हेतु उपयुक्त बनाती हैं। इसके अतिरिक्त, मुर्गियों से प्राप्त जैविक खाद कृषि क्षेत्र में उर्वरक के रूप में बहुत मूल्यवान मानी जाती है, जिससे खेती लाभप्रद बनती है।

51. (3) यह बाड़मेर में लूणी नदी के तट पर आयोजित होता है और मल्लीनाथ जी से जुड़ा है
तिलवाड़ा पशु मेला राजस्थान के बाड़मेर जिले में लूणी नदी के रेतीले तट पर आयोजित किया जाता है। यह मेला लोक देवता मल्लीनाथ जी की पावन स्मृति में आयोजित होता है और राज्य के प्राचीनतम पशु मेलों में से एक माना जाता है।
यहाँ मुख्य रूप से थारपारकर गोवंश और मारवाड़ी नस्ल के घोड़ों का बड़े पैमाने पर व्यापार होता है। यह मेला न केवल पशु व्यापार का केंद्र है, बल्कि यह पश्चिमी राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पशुपालन परंपराओं का एक जीवंत और ऐतिहासिक प्रदर्शन भी है।

अध्याय 24
राजस्थान में सिंचाई

1. राजस्थान में कृत्रिम सिंचाई प्रणालियों पर उच्च निर्भरता का प्राथमिक कारण क्या है?
   (1) पूरे राज्य में बारहमासी नदियों की प्रचुरता
   (2) अल्प और अत्यधिक अनिश्चित वर्षा प्रतिरूप
   (3) नकद फसलों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने की राज्य सरकार की नीति
   (4) पश्चिमी जिलों में उच्च मृदा नमी धारण क्षमता
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

2. राजस्थान में कुल सिंचित क्षेत्र में किस स्रोत का योगदान सर्वाधिक प्रतिशत है?
   (1) कुएँ और नलकूप
   (2) नहर सिंचाई
   (3) तालाब सिंचाई
   (4) पारंपरिक बावड़ियाँ
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

3. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
   सूची I: (सिंचाई स्रोत)
   A. नलकूप
   B. नहर सिंचाई
   C. तालाब सिंचाई
   D. खडीन
   सूची II: (प्रमुख क्षेत्र/जिला)
   i. जैसलमेर
   ii. जयपुर और अलवर
   iii. गंगानगर और हनुमानगढ़
   iv. भीलवाड़ा
   (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
   (2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
   (3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

4. राजस्थान में नहर सिंचाई के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
   (1) यह राज्य में सिंचाई का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है।
   (2) यह मुख्य रूप से पश्चिमी और उत्तरी जिलों में केंद्रित है।
   (3) इंदिरा गांधी नहर इस प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।
   (4) यह विशेष रूप से राज्य के भीतर से निकलने वाली मानसून आधारित नदियों पर निर्भर है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

5. इंदिरा गांधी नहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. इसका उद्गम सतलज और ब्यास नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से होता है।
   II. इसे मूल रूप से राजस्थान नहर के नाम से जाना जाता था जब तक कि 1984 में इसका नाम परिवर्तित नहीं किया गया।
   III. इस परियोजना ने थार मरुस्थल में एक प्रमुख कृषि हरित क्रांति को जन्म दिया है।
   उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) I और II
   (2) II और III
   (3) I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

6. इंदिरा गांधी फीडर नहर की कुल लंबाई, इसके उद्गम से राजस्थान के मसीतावाली हेड में प्रवेश तक, लगभग कितनी है?
   (1) 445 किमी
   (2) 204 किमी
   (3) 649 किमी
   (4) 189 किमी
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

7. इंदिरा गांधी नहर प्रणाली के साथ लिफ्ट नहरों के निर्माण के पीछे प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
   (1) सूखे की आशंका वाले पड़ोसी राज्यों में अतिरिक्त बाढ़ का जल स्थानांतरित करना
   (2) निचले पश्चिमी क्षेत्रों को गुरुत्वाकर्षण प्रवाह सिंचाई प्रदान करना
   (3) स्थानीय ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए जलविद्युत शक्ति उत्पन्न करना
   (4) उच्च ऊंचाई वाले पूर्वी क्षेत्रों में जल की आपूर्ति करना
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों का परीक्षण कीजिए और विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
   अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर ने पश्चिमी राजस्थान की मरुस्थलीय पारिस्थितिकी को परिवर्तित कर दिया है और

Downloaded from www.pdf.tube

की नस्लीय श्रेणियों को समझना उनके वैज्ञानिक प्रबंधन और पोषण की योजना बनाने में सहायक होता है।

61. (3) यह एक निजी बहुराष्ट्रीय कंपनी है
'सरस' राजस्थान का सर्वाधिक विश्वसनीय और प्रमुख सहकारी डेयरी ब्रांड है, जो राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन द्वारा संचालित होता है। यह एक पूर्णतः सहकारी निकाय है, न कि कोई निजी बहुराष्ट्रीय कंपनी, जो राज्य के दुग्ध उत्पादों का प्रबंधन करता है।
यह नेटवर्क सीधे ग्राम स्तर की सहकारी समितियों से दूध क्रय करता है और मध्यस्थों को हटाकर दुग्ध उत्पादकों हेतु पारदर्शी मूल्य सुनिश्चित करता है। इस सहकारी मॉडल ने ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण लाने और उपभोक्ताओं को शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

62. (2) तिलवाड़ा मेला, नागौर मेला, पुष्कर मेला
राजस्थान के इन प्रमुख पशु मेलों का पश्चिम से पूर्व की ओर भौगोलिक क्रम उनके संबंधित जिलों की स्थिति पर आधारित है। बाड़मेर जिले का तिलवाड़ा मेला सर्वाधिक पश्चिम में स्थित है। इसके पश्चात मध्य राजस्थान में नागौर जिले का पशु मेला आता है।
और आगे पूर्व की ओर बढ़ने पर अजमेर जिले का विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला स्थित है। यह भौगोलिक वितरण राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की पशुपालन परंपराओं और मेलों के माध्यम से होने वाले पशु व्यापार की विस्तृत पहुंच को उजागर करता है, जिससे पशुपालकों को उचित बाजार प्राप्त होता है।

63. (1) मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना
मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना राजस्थान सरकार की एक महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना है जिसे पशुपालकों को आर्थिक राहत देने हेतु आरंभ किया गया था। इस योजना के अंतर्गत राजकीय पशु चिकित्सा संस्थानों में उपचार हेतु आवश्यक औषधियाँ बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराई जाती हैं।
यह पहल न केवल पशुओं की मृत्यु दर को कम करने में सहायक है, बल्कि पशुपालकों की आय को भी सुरक्षित रखती है। इस योजना के माध्यम से राज्य सरकार पशु स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने का निरंतर प्रयास कर रही है।

64. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
पश्चिमी राजस्थान में अनियंत्रित और अत्यधिक चराई मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करती है, क्योंकि यह प्राकृतिक वनस्पति आवरण को नष्ट कर देती है। हालांकि, चराई की किसी भी विधि से बाड़े में पोषण की आवश्यकता पूर्णतः समाप्त नहीं हो सकती।
विशेष रूप से सूखे के समय या उच्च उत्पादकता वाले पशुओं हेतु संतुलित पोषण सुनिश्चित करने हेतु बाड़े में खिलाना अनिवार्य हो जाता है। अतः चरागाह प्रबंधन और बाड़े में वैज्ञानिक पोषण दोनों का संतुलन पशु स्वास्थ्य और पर्यावरणीय सुरक्षा हेतु आवश्यक है, जो उत्पादन क्षमता बढ़ाता है।

65. (2) केवल III
पशुपालन राजस्थान के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है और ग्रामीण महिलाओं तथा सीमांत किसानों हेतु रोजगार का एक सतत साधन है। पारंपरिक पशुपालन इकाई स्थापित करने हेतु आधुनिक औद्योगिक खेती की तुलना में न्यून प्रारंभिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
यह अल्प लागत में अधिक लाभ प्रदान करने वाली गतिविधि है जो ग्रामीण निर्धनों हेतु वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करती है। पशुधन न केवल नियमित आय प्रदान करता है, बल्कि यह संकट के समय ग्रामीण परिवारों हेतु एक तरल और उपयोगी संपत्ति के रूप में भी कार्य करता है।

66. (1) बीकानेर क्षेत्र में सिंधी और साहीवाल के साथ चयनात्मक प्रजनन
राठी गोवंश के विकास में बीकानेर के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों और स्थानीय पशुपालकों द्वारा किए गए चयनात्मक प्रजनन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसे मुख्य रूप से साहीवाल और सिंधी नस्लों के साथ संकरण के माध्यम से विकसित किया गया था।
इस प्रक्रिया का उद्देश्य ऐसी नस्ल प्राप्त करना था जो उच्च दुग्ध उत्पादन के साथ कठिन मरुस्थलीय जलवायु के प्रति भी सहनशील हो। इस सफल विकास ने राठी को राजस्थान की सर्वाधिक मूल्यवान दुधारू नस्ल बना दिया है, जिसे राजस्थान की कामधेनु के रूप में सम्मान प्राप्त है।

67. (3) इसे सिंधी और बलूची ऊंट की नस्लों के संकरण से विकसित किया गया था
बीकानेरी ऊंट की उत्पत्ति मुख्य रूप से सिंधी और बलूची ऊंट नस्लों के मध्य चयनात्मक संकरण का परिणाम मानी जाती है। इस संकरण प्रक्रिया के माध्यम से एक सुदृढ़ और शक्तिशाली नस्ल तैयार की गई जो राजस्थान के रेतीले क्षेत्रों में कृषि कार्यों हेतु सर्वथा उपयुक्त है।
बीकानेरी ऊंट अपने विशिष्ट शारीरिक गठन और ऊंचे कद हेतु विश्वभर में विख्यात हैं। यह नस्ल मरुस्थलीय जीवन की कठिन आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु पशुपालन विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो आज भी परिवहन और कृषि का महत्वपूर्ण साधन बनी हुई है।

68. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के पशुधन को उनके विशिष्ट गुणों के आधार पर विभिन्न उपनाम दिए गए हैं। चोकला भेड़ को उसकी श्रेष्ठ ऊन के कारण 'भारतीय मेरिनो' कहा जाता है। ऊंट को मरुस्थल में उसके अद्भुत अनुकूलन के कारण 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है।
बकरी को उसके सुलभ रखरखाव के कारण 'निर्धन की गाय' की संज्ञा दी गई है। मुर्रा भैंस को उसकी उच्च वसा युक्त दुग्ध क्षमता हेतु जाना जाता है। ये उपनाम ग्रामीण जीवन में इन पशुओं की महत्ता और उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली आर्थिक सुरक्षा को स्पष्ट करते हैं।

NODIA

16. निम्नलिखित में से किसे इंदिरा गांधी नहर परियोजना की सबसे लंबी लिफ्ट नहर माना जाता है?
(1) चौधरी कुंभाराम लिफ्ट नहर
(2) कंवर सेन लिफ्ट नहर
(3) डॉ. करणी सिंह लिफ्ट नहर
(4) जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

17. इंदिरा गांधी नहर का अंतिम कार्यशील बिंदु कहाँ स्थित है?
(1) मोहनगढ़
(2) गडरा रोड
(3) नाचना
(4) रामगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

18. भौगोलिक रूप से उत्तर से दक्षिण की ओर इंदिरा गांधी नहर की लिफ्ट नहरों का सही क्रम चुनिए:
(1) चौधरी कुंभाराम - कंवर सेन - पन्नालाल बारूपाल - डॉ. करणी सिंह
(2) कंवर सेन - चौधरी कुंभाराम - डॉ. करणी सिंह - पन्नालाल बारूपाल
(3) पन्नालाल बारूपाल - डॉ. करणी सिंह - चौधरी कुंभाराम - कंवर सेन
(4) चौधरी कुंभाराम - पन्नालाल बारूपाल - कंवर सेन - डॉ. करणी सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

19. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान की सबसे प्राचीन आधुनिक नहर प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(1) इंदिरा गांधी नहर
(2) भाखड़ा नहर
(3) गंग नहर
(4) नर्मदा नहर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

20. गंग नहर का निर्माण महाराजा गंगा सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व में किस वर्ष पूर्ण हुआ था?
(1) 1914
(2) 1927
(3) 1935
(4) 1948
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

21. श्री गंगानगर जिले में जल लाने से पहले गंग नहर किस स्थान से निकलती है?
(1) सतलज नदी पर हरिके बैराज
(2) सतलज नदी पर नांगल बांध
(3) सतलज नदी पर हुसैनीवाला
(4) यमुना नदी पर ओखला
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

22. बीकानेर रियासत पर गंग नहर का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रभाव क्या था?
(1) इससे कृषकों का पंजाब की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ।
(2) इसने शुष्क, बंजर क्षेत्र को एक प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक केंद्र में परिवर्तित कर दिया।
(3) इसने अत्यधिक जलभराव की समस्याओं को जन्म दिया जिससे भूमि शीघ्र ही अनुपजाऊ हो गई।
(4) इसने स्थानीय अर्थव्यवस्था को पूर्णतः औद्योगिक विनिर्माण की ओर स्थानांतरित कर दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

23. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सिंचाई परियोजना)
A. भाखड़ा नांगल परियोजना
B. चंबल घाटी परियोजना
C. माही बजाज सागर परियोजना
D. नर्मदा नहर परियोजना
सूची II: (सहभागी/लाभार्थी राज्य)
i. राजस्थान और मध्य प्रदेश
ii. राजस्थान, पंजाब और हरियाणा
iii. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश
iv. राजस्थान और गुजरात
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

24. राजस्थान के कौन से जिले भाखड़ा नहर प्रणाली के प्राथमिक लाभार्थी हैं?
(1) हनुमानगढ़ और चूरू
(2) जयपुर और अलवर
(3) जोधपुर और पाली
(4) कोटा और बूंदी
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

25. गंग नहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider कीजिए:
I. इसका उद्घाटन लॉर्ड इरविन द्वारा किया गया था।
II. यह दिल्ली के निकट यमुना नदी से जल प्राप्त करती है।
III. इसमें लक्ष्मीनारायणजी, लालगढ़, करणी और समेजा जैसी कई मुख्य शाखाएँ हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) I और III
(3) II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

Click Here to Buy book on Amazon

कृषि हरित क्रांति की शुरुआत की है।
कारण (R): मरुस्थल में गहन नहर सिंचाई की शुरुआत ने मृदा लवणता और जलभराव के संकट को पूर्णतः समाप्त कर दिया है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

9. इंदिरा गांधी नहर परियोजना से उनके जुड़ाव के आधार पर निम्नलिखित लिफ्ट नहरों में से विषम का चयन कीजिए:
(1) कंवर सेन लिफ्ट नहर
(2) पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर
(3) भीखाभाई सागवाड़ा नहर
(4) गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट नहर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

10. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के चरणों और विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परियोजना के प्रथम चरण में मुख्य रूप से गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर जिलों के कुछ हिस्से सम्मिलित थे।
II. परियोजना का द्वितीय चरण जैसलमेर और बाड़मेर जिलों तक सिंचाई का विस्तार करने के लिए तैयार किया गया था।
III. मुख्य नहर विशेष रूप से नहर के बाईं ओर गुरुत्वाकर्षण प्रवाह सिंचाई प्रदान करती है।
IV. नहर प्रणाली का अंतिम बिंदु बाड़मेर में गडरा रोड तक बढ़ाया गया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

11. कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: रावतसर शाखा को छोड़कर, इंदिरा गांधी नहर की सभी शाखाएँ दाएं तट से निकलती हैं।
कथन II: कमांड क्षेत्र में भूमि का सामान्य ढाल बाएं तट की ओर है, जिससे दाएं तट की शाखाओं का निर्माण करना कठिन हो जाता है।
(1) दोनों कथन सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) दोनों कथन सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

12. कौन सी नदी प्रणाली इंदिरा गांधी नहर के लिए आवश्यक निरंतर जल आपूर्ति प्रदान करती है?
(1) यमुना और चंबल
(2) सतलज और ब्यास
(3) रावी और चिनाब
(4) लूणी और सुकड़ी
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

13. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (IGNP लिफ्ट नहर का प्राचीन नाम)
A. बीकानेर-लूणकरणसर लिफ्ट नहर
B. गजनेर लिफ्ट नहर
C. कोलायत लिफ्ट नहर
D. फलोदी लिफ्ट नहर
सूची II: (नवीन नाम)
i. डॉ. करणी सिंह लिफ्ट नहर
ii. पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर
iii. कंवर सेन लिफ्ट नहर
iv. गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट नहर
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

14. कौन सा जिला राजस्थान में इंदिरा गांधी मुख्य नहर के प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करता है?
(1) श्री गंगानगर
(2) बीकानेर
(3) जैसलमेर
(4) हनुमानगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

NODIA

15. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. बीकानेर
II. जैसलमेर
III. चूरू
IV. हनुमानगढ़
V. उदयपुर
उपर्युक्त में से कौन से जिले प्रत्यक्ष रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना नेटवर्क से लाभान्वित होते हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

III. बारां
IV. झालावाड़
V. बीकानेर

उपर्युक्त में से कौन से जिले राजस्थान में चंबल नहर सिंचाई प्रणाली के प्रमुख कमांड क्षेत्र हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, II, IV और V
(3) I, II और III
(4) II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

36. कौन सी परियोजना मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय बहुल क्षेत्रों में जल लाने के लिए समर्पित है?
(1) नर्मदा नहर परियोजना
(2) चंबल घाटी परियोजना
(3) पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना
(4) माही बजाज सागर परियोजना
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

37. माही बजाज सागर परियोजना में क्रमशः राजस्थान और गुजरात के बीच वित्तीय और जल साझाकरण का अनुपात क्या है?
(1) 45:55
(2) 50:50
(3) 55:45
(4) 40:60
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

38. चंबल नदी पर बने प्रमुख बांधों का अनुप्रवाह (उत्तर) से प्रतिप्रवाह (दक्षिण) की ओर सही क्रम चुनिए:
(1) कोटा बैराज - जवाहर सागर - राणा प्रताप सागर - गांधी सागर
(2) गांधी सागर - राणा प्रताप सागर - जवाहर सागर - कोटा बैराज
(3) कोटा बैराज - राणा प्रताप सागर - जवाहर सागर - गांधी सागर
(4) राणा प्रताप सागर - गांधी सागर - कोटा बैराज - जवाहर सागर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

39. माही बजाज सागर बांध भौतिक रूप से निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित है?
(1) डूंगरपुर
(2) प्रतापगढ़
(3) उदयपुर
(4) बांसवाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

40. माही बजाज सागर परियोजना के द्विपक्षीय समझौते के अनुसार, उत्पन्न जलविद्युत का वितरण कैसे किया जाता है?
(1) संपूर्ण 100 प्रतिशत राजस्थान को आवंटित किया जाता है
(2) राजस्थान और गुजरात के बीच समान रूप से साझा किया जाता है
(3) 55 प्रतिशत गुजरात को और 45 प्रतिशत राजस्थान को
(4) संपूर्ण 100 प्रतिशत गुजरात को आवंटित किया जाता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

41. भीखाभाई सागवाड़ा नहर का निर्माण किस प्रमुख परियोजना के जल का उपयोग करने के लिए किया गया था?
(1) नर्मदा परियोजना
(2) चंबल परियोजना
(3) माही बजाज सागर परियोजना
(4) भाखड़ा नांगल परियोजना
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

NODIA

42. निम्नलिखित में से कौन पाली जिले में स्थित जवाई बांध की मुख्य उपयोगिता का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) यह पेयजल और सिंचाई प्रदान करता है, जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' के रूप में जाना जाता है।
(2) इसे विशेष रूप से पश्चिमी जिलों के लिए जलविद्युत परियोजना के रूप में कार्य करने के लिए अभिकल्पित किया गया है।
(3) यह मुख्य रूप से मौसमी लूणी नदी घाटी के लिए बाढ़ नियंत्रण बाधा के रूप में कार्य करता है।
(4) यह महाराजा गंगा सिंह के नेतृत्व में निर्मित एक अंतर्देशीय नौवहन परियोजना है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

43. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सिंचाई का पारंपरिक स्रोत)
A. खडीन
B. जोहड़
C. तालाब सिंचाई
D. बावड़ी
सूची II: (क्षेत्र)
i. शेखावाटी क्षेत्र
ii. बूंदी और जोधपुर शहरी विरासत
iii. जैसलमेर क्षेत्र
iv. भीलवाड़ा क्षेत्र
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

44. शुष्क ऋतु के दौरान जल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए, जवाई बांध को किस परियोजना से अपवर्तित जल द्वारा पूरक किया जाता है?
(1) सोम कमला अम्बा परियोजना
(2) सेई अपवर्तन परियोजना

62. जलभराव का मुकाबला करने के लिए 'जैविक जल निकासी' के लिए IGNP कमांड क्षेत्रों में किस वृक्ष के रोपण की व्यापक रूप से अनुशंसा और उपयोग किया जाता है?
(1) खेजड़ी (प्रोसोपिस सिनेरिया)
(2) रोहिड़ा (टेकोमेला अनड्यूलेटा)
(3) बबूल (अकेसिया निलोटिका)
(4) सफेदा (यूकेलिप्टस)
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

63. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पद)
A. सेम
B. कमांड क्षेत्र
C. डार्क ज़ोन
D. जैविक जल निकासी
सूची II: (विवरण)
i. भूजल के अति-दोहन वाला क्षेत्र
ii. यूकेलिप्टस के पेड़ लगाना
iii. केशिकत्व क्रिया और रिसाव के कारण जलभराव
iv. वह भौगोलिक क्षेत्र जो एक विशिष्ट नहर प्रणाली द्वारा सिंचित होने में सक्षम है
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

64. निम्नलिखित में से कौन सी नहर परियोजना भारत में अपने कमांड क्षेत्र में 100 प्रतिशत फव्वारा (स्प्रिंकलर) सिंचाई प्रणाली को अनिवार्य करने वाली प्रथम परियोजना थी?
(1) इंदिरा गांधी नहर
(2) नर्मदा नहर परियोजना
(3) चंबल घाटी परियोजना
(4) गंग नहर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

65. राजस्थान में सूक्ष्म सिंचाई के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नर्मदा नहर परियोजना जल दक्षता को अधिकतम करने के लिए अनिवार्य फव्वारा सिंचाई लागू करती है।
II. ड्रिप सिंचाई सतही वाष्पीकरण और गहरे रिसाव दोनों को कम करके जल की क्षति को काफी कम करती है।
III. सूक्ष्म सिंचाई की ये उन्नत विधियाँ पश्चिमी राजस्थान की शुष्क जलवायु में पूर्णतः अनुपयोगी मानी जाती हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

66. राजस्थान में किस प्रकार की कृषि के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली आर्थिक रूप से सर्वाधिक व्यवहार्य और कृषि विज्ञान की दृष्टि से उपयुक्त मानी जाती है?
(1) बागवानी और फलों के उद्यान
(2) विस्तृत गेहूं की खेती
(3) बाढ़ के मैदानों में धान की खेती
(4) पारंपरिक बाजरा आधारित वर्षा आधारित कृषि
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

67. नर्मदा नहर राजस्थान राज्य में किस जिले में प्रवेश करती है?
(1) बाड़मेर
(2) सिरोही
(3) जालौर
(4) पाली
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों का परीक्षण कीजिए और विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): राजस्थान के सतत कृषि भविष्य के लिए ड्रिप और फव्वारा सिंचाई को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है।
कारण (R): राजस्थान के पास भारत के भूभाग का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा है, परंतु देश के सतही जल संसाधनों का केवल लगभग 1 प्रतिशत ही उपलब्ध है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

69. कौन से दो जिले राजस्थान में नर्मदा नहर परियोजना के सिंचाई जल से प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं?
(1) सिरोही और पाली
(2) बांसवाड़ा और डूंगरपुर
(3) जालौर और बाड़मेर
(4) जैसलमेर और बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

70. राजस्थान में सिंचाई की समस्याओं को कम करने के उद्देश्य से निम्नलिखित आधुनिक परियोजनाओं और पहलों पर विचार कीजिए:
I. RAJAD (राजस्थान कृषि जल निकासी अनुसंधान परियोजना)
II. मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान
III. कमांड क्षेत्र विकास कार्यक्रम (CAD)
IV. सरदार सरोवर सूक्ष्म सिंचाई अनिवार्यता
उपर्युक्त में से कौन सी पहल प्रत्यक्ष रूप से जल उपयोग दक्षता में सुधार या जलभराव/जल निकासी समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से है?
(1) I, III और IV

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

iii. सतलज और ब्यास का संगम
iv. नर्मदा
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

54. राजस्थान के दक्षिणी भागों में कुआं सिंचाई के व्यापक उपयोग को मुख्य रूप से कौन सा कारक सीमित करता है?
(1) सतही जल की अत्यधिक लवणता
(2) कठोर चट्टानी स्थलाकृति द्वारा अवरुद्ध गहरे जलभृत
(3) बारहमासी नदियों का बार-बार उफान पर आना
(4) जनजातीय क्षेत्रों में कृषि पर सख्त सरकारी प्रतिबंध
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

55. निम्नलिखित पर्यावरणीय और कृषि चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. जलभराव (सेम)
II. मृदा लवणता
III. क्षारीयता
IV. गहरे जलभृतों का अत्यधिक दोहन
V. वायु द्वारा उड़कर आने वाली रेत का जमाव
उपर्युक्त में से कौन पश्चिमी राजस्थान में नहर सिंचाई के विस्तार से जुड़ी प्रमुख पारिस्थितिक समस्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और V
(3) II, IV और V
(4) III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

56. गंभीर क्षारीयता और जलभराव से प्रभावित मृदा को सुधारने के लिए राजस्थान में कृषकों द्वारा पारंपरिक रूप से किस खनिज का उपयोग किया जाता है?
(1) जिप्सम
(2) बॉक्साइट
(3) अभ्रक
(4) कॉपर सल्फेट
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

57. दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
कथन I: IGNP कमांड क्षेत्र में मृदा लवणता की समस्या आंशिक रूप से केशिकत्व क्रिया (capillary action) के कारण है।
कथन II: मृदा की सतह के नीचे जिप्सम की एक कठोर परत अतिरिक्त नहर के जल के अधोमुखी रिसाव को रोकती है।
(1) दोनों कथन सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
(2) दोनों कथन सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

NODIA

58. राजस्थान में सिंचाई के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:
A. नहरें
B. तालाब
C. कुएँ और नलकूप
D. अन्य पारंपरिक स्रोत
राजस्थान में कुल शुद्ध सिंचित क्षेत्र में उनके योगदान के आधार पर उन्हें अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
(1) C, A, B, D
(2) A, C, B, D
(3) C, B, A, D
(4) A, B, C, D
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

59. राजस्थान में क्रियान्वित 'RAJAD' के नाम से ज्ञात भारत-डच सहयोगी परियोजना का मुख्य केंद्र क्या था?
(1) पश्चिमी जिलों की कृषि को प्रभावित करने वाले बार-बार होने वाले टिड्डी आक्रमणों का उन्मूलन
(2) ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के लिए विदेशी दुधारू पशु नस्लों की शुरुआत और प्रबंधन
(3) स्वच्छ पेयजल के लिए सौर ऊर्जा संचालित विलवणीकरण संयंत्रों का निर्माण और रखरखाव
(4) चंबल क्षेत्र में जलभराव को कम करने के लिए उप-सतही जल निकासी को लागू करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

60. भूजल अधिकारियों द्वारा राजस्थान के किन क्षेत्रों को प्रायः 'डार्क ज़ोन' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(1) वे क्षेत्र जहाँ भौगोलिक बाधाओं के कारण सौर ऊर्जा पूर्णतः अप्राप्य है
(2) वे ब्लॉक जहाँ भूजल दोहन प्राकृतिक पुनर्भरण से काफी अधिक है
(3) वे क्षेत्र जहाँ निरंतर पाँच वर्षों तक मानसून वर्षा नहीं हुई है
(4) घने वन क्षेत्र जहाँ कृषि गतिविधियाँ राज्य द्वारा कानूनी रूप से प्रतिबंधित हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

61. भूजल निष्कर्षण के एक नवीन युग की शुरुआत करते हुए, राजस्थान राज्य में प्रथम नलकूप 1930 में कहाँ स्थापित किया गया था?
(1) धौलपुर
(2) अलवर
(3) भरतपुर
(4) जयपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

79. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के सूखे की आशंका वाले क्षेत्रों में दीर्घकालिक सतत सिंचाई प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त समग्र समाधान का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई का उपयोग और सूखा-प्रतिरोधी फसलों को अपनाना।
(2) स्थानीय समुदाय की संपत्ति बढ़ाने के लिए पूर्णतः उच्च जल-मांग वाली नकद फसलों की ओर रुख करना।
(3) थार मरुस्थल के सबसे गहरे हिस्सों में पारंपरिक बाढ़ सिंचाई प्रणालियों का व्यापक विस्तार करना।
(4) 50 सेमी से कम वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में सभी कृषि गतिविधियों पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

80. पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) का उद्देश्य सिंचाई और पेयजल की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए मानसून के दौरान किस प्रमुख नदी बेसिन के अतिरिक्त जल का संचयन करना है?
(1) पश्चिमी राजस्थान में अपनी कई अल्पकालिक सहायक नदियों के साथ लूणी बेसिन
(2) पार्वती और कालीसिंध जैसी सहायक नदियों सहित चंबल बेसिन
(3) माही बेसिन जो मध्य प्रदेश में उद्गमित होती है और बांसवाड़ा से होकर बहती है
(4) गुजरात राज्य में प्रवेश करने से पहले अरावली पहाड़ियों से निकलने वाली साबरमती बेसिन
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

Click Here to Buy book on Amazon

(2) II, III और IV
(3) I, II और III
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

71. राजीव गांधी सिद्धमुख-नोहर सिंचाई परियोजना मुख्य रूप से किन नदियों के अतिरिक्त जल का उपयोग करने के लिए तैयार की गई थी?
(1) गंगा और यमुना
(2) नर्मदा और ताप्ती
(3) लूणी और सुकड़ी
(4) रावी और ब्यास
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

72. कौन से दो जिले राजीव गांधी सिद्धमुख-नोहर सिंचाई परियोजना के मुख्य लाभार्थी हैं?
(1) चूरु और हनुमानगढ़
(2) बीकानेर और जैसलमेर
(3) सीकर और झुंझुनू
(4) जोधपुर और नागौर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

73. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मध्यम सिंचाई परियोजना)
A. सोम कागदर
B. मेजा बांध
C. छापी परियोजना
D. सावन भादो
सूची II: (जिला)
i. कोटा
ii. झालावाड़
iii. भीलवाड़ा
iv. उदयपुर
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

74. राजस्थान में लघु/मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) सोम कमला अम्बा - डूंगरपुर
(2) ओराई सिंचाई परियोजना - बीकानेर
(3) जाखम बांध - जयपुर
(4) परवन परियोजना - जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

75. तालाब सिंचाई को अपनाने के संबंध में निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. भीलवाड़ा
II. उदयपुर
III. जैसलमेर
IV. बीकानेर
V. चित्तौड़गढ़
उपर्युक्त में से कौन से जिले ऐसे हैं जहाँ अंतर्निहित स्थलाकृति के कारण पारंपरिक तालाब सिंचाई प्रमुख है?
(1) I, II और V
(2) I, III और IV
(3) II, III और V
(4) I, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

NODIA

76. नहर सिंचाई शब्दावली में, 'प्रवाह नहर' और 'लिफ्ट नहर' के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(1) प्रवाह नहरें पूर्णतः प्राकृतिक धाराएं हैं, जबकि लिफ्ट नहरें कृत्रिम कंक्रीट वाली नहरें हैं।
(2) प्रवाह नहरें गुरुत्वाकर्षण का उपयोग करती हैं, जबकि लिफ्ट नहरों में ढाल के विरुद्ध जल पंप करने की आवश्यकता होती है।
(3) प्रवाह नहरें पेयजल प्रदान करती हैं, जबकि लिफ्ट नहरें विशेष रूप से औद्योगिक उपयोग के लिए होती हैं।
(4) प्रवाह नहरें भू-स्तर से ऊपर स्थित होती हैं, जबकि लिफ्ट नहरें उप-सतही पाइपलाइन नेटवर्क होती हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

77. कौन सा राज्य राजस्थान के साथ गुड़गांव नहर का जल साझा करता है?
(1) पंजाब
(2) मध्य प्रदेश
(3) हरियाणा
(4) गुजरात
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

78. निम्नलिखित नदियाँ राजस्थान को लाभ पहुँचाने वाली विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं:
A. चंबल
B. माही
C. बनास
D. लूणी
इन नदी घाटियों को उनके प्रमुख बांध स्थलों (जैसे, बीसलपुर, कोटा बैराज, जवाई, माही बजाज) के संदर्भ में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर उनके सामान्य भौगोलिक संरेखण के अनुसार व्यवस्थित कीजिए।
(1) C, A, B, D
(2) C, A, D, B
(3) A, C, D, B
(4) A, D, C, B
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

(3) जाखम बांध परियोजना
(4) ओराई सिंचाई परियोजना
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

45. माही बजाज सागर परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बांसवाड़ा जिले में माही नदी पर स्थित है।
II. यह मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय बहुल क्षेत्रों को सिंचाई प्रदान करती है।
III. इसे केंद्र सरकार के मरुस्थल विकास कार्यक्रम से महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

46. बीसलपुर बांध मुख्य रूप से किस नदी पर निर्मित किया गया है?
(1) लूणी
(2) चंबल
(3) साबरमती
(4) बनास
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

47. निम्नलिखित में से कौन से प्रमुख शहर अपनी दैनिक पेयजल आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण रूप से बीसलपुर बांध पर निर्भर हैं?
(1) जयपुर और अजमेर
(2) जोधपुर और बीकानेर
(3) उदयपुर और चित्तौड़गढ़
(4) कोटा और बारां
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों का परीक्षण कीजिए और विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
अभिकथन (A): राजस्थान के पूर्वी और मध्य कृषि परिदृश्यों में कुएँ और नलकूप सिंचाई का व्यापक वर्चस्व है।
कारण (R): कठोर ग्रेनाइट चट्टानी संरचनाओं की उपस्थिति और अत्यधिक उच्च जल स्तर पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में कुआं खोदने को अत्यधिक मितव्ययी बनाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

49. राजस्थान के जल प्रबंधन के संदर्भ में, 'सेम' वास्तव में क्या है?
(1) शेखावाटी में वर्षा जल संचयन की एक पारंपरिक विधि
(2) नहर कमांड क्षेत्रों में जलभराव और मृदा लवणता की एक गंभीर समस्या
(3) ड्रिप सिंचाई स्थापना के लिए कृषकों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता
(4) थार में उगाई जाने वाली सूखे के प्रति प्रतिरोधी फसल का एक विशिष्ट प्रकार
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

50. बीसलपुर बांध के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह टोंक जिले में बनास नदी पर निर्मित किया गया है।
II. यह राजस्थान का सबसे बड़ा कंक्रीट गुरुत्वाकर्षण बांध है।
III. यह राजधानी जयपुर के लिए पेयजल का एक प्रमुख स्रोत है।
IV. यह विशेष रूप से गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों को महत्वपूर्ण सिंचाई प्रदान करता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

51. राजस्थान में पारंपरिक तालाबों के माध्यम से सिंचाई का उच्चतम प्रतिशत निम्नलिखित में से किस जिले में दर्ज किया गया है?
(1) जैसलमेर
(2) श्री गंगानगर
(3) भीलवाड़ा
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

52. निम्नलिखित में से कौन बीसलपुर परियोजना द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले पेयजल का प्राथमिक लाभार्थी जिला नहीं है?
(1) जयपुर
(2) अजमेर
(3) टोंक
(4) जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

53. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नहर/परियोजना)
A. गंग नहर
B. इंदिरा गांधी मुख्य नहर
C. नर्मदा नहर
D. गुड़गांव नहर
सूची II: (स्रोत नदी)
i. यमुना
ii. सतलज

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) अल्प और अत्यधिक अनिश्चित वर्षा प्रतिरूप
राजस्थान की जलवायु मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क है जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा बहुत कम और अनियमित रहती है। यहाँ वाष्पीकरण की दर उच्च होने के कारण जल संसाधनों की प्राकृतिक उपलब्धता अत्यंत सीमित है। कृषि कार्यों और घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य में कृत्रिम सिंचाई प्रणालियों पर निर्भरता अनिवार्य हो जाती है। विशेष रूप से पश्चिमी क्षेत्रों में वर्षा का अभाव कृषि के लिए एक गंभीर चुनौती है।

2. (A) कुएँ और नलकूप
राजस्थान में सिंचाई के विभिन्न स्रोतों में कुएँ और नलकूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान आँकड़ों के अनुसार राज्य के कुल सिंचित क्षेत्र का लगभग दो-तिहाई हिस्सा इसी माध्यम से सिंचित होता है। पूर्वी और मैदानी क्षेत्रों में भूजल की उपलब्धता अधिक होने के कारण इनका घनत्व व्यापक है। यह स्रोत किसानों को अपनी सुविधानुसार जल दोहन की स्वतंत्रता प्रदान करता है और कृषि उत्पादन में स्थिरता लाने में सहायक है।

3. (A) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के भौगोलिक विस्तार के अनुसार सिंचाई के विभिन्न माध्यम विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित हैं। जयपुर और अलवर जैसे मैदानी जिलों में नलकूप सिंचाई का प्रधान स्रोत हैं, जबकि श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में नहरों का जाल बिछा हुआ है। भीलवाड़ा जिला राज्य में तालाबों द्वारा की जाने वाली सिंचाई के लिए प्रसिद्ध है। जैसलमेर के मरुस्थलीय क्षेत्रों में पारंपरिक जल संरक्षण की खडीन पद्धति आज भी कृषि हेतु अत्यंत प्रभावी तकनीक मानी जाती है।

4. (D) यह विशेष रूप से राज्य के भीतर से निकलने वाली मानसून आधारित नदियों पर निर्भर है।
राजस्थान में नहर सिंचाई का प्रमुख आधार हिमालयी नदियों का जल है जो पंजाब के माध्यम से राज्य में आता है। इंदिरा गांधी नहर और गंग नहर जैसी विशाल प्रणालियाँ सतलज और ब्यास नदियों के बारहमासी प्रवाह पर निर्भर करती हैं। यह कथन कि ये नहरें केवल राज्य के भीतर से निकलने वाली वर्षा आधारित नदियों पर आधारित हैं, पूर्णतः तथ्यहीन है। राज्य की अधिकांश नहरें उत्तर और पश्चिम के शुष्क जिलों का आधार हैं।

5. (D) I, II और III
इंदिरा गांधी नहर परियोजना का उद्गम पंजाब में सतलज और ब्यास नदियों के संगम पर निर्मित हरिके बाँध से होता है। प्रारंभ में इसे राजस्थान नहर के नाम से जाना जाता था, जिसे वर्ष 1984 में परिवर्तित कर नया नाम दिया गया। इस विशाल जल परियोजना ने थार मरुस्थल की बंजर भूमि को उपजाऊ खेतों में बदलकर एक कृषि क्रांति का सूत्रपात किया है। यह मरुस्थलीय पारिस्थितिकी में बदलाव लाने वाली विश्व की प्रमुख परियोजनाओं में से एक है।

6. (B) 204 किमी
इंदिरा गांधी नहर परियोजना के अंतर्गत भरण नहर की कुल लंबाई लगभग 204 किलोमीटर निर्धारित है। इसका मुख्य कार्य हरिके बाँध से जल को राजस्थान की मुख्य नहर तक पहुँचाना है। इस लंबाई का बड़ा हिस्सा पंजाब और हरियाणा राज्यों में स्थित है, जबकि राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के मसीतावाली शीर्ष तक पहुँचते हुए यह समाप्त हो जाती है। यह भरण नहर स्वयं किसी क्षेत्र की सिंचाई नहीं करती, बल्कि केवल मुख्य नहर को जल आपूर्ति सुनिश्चित करती है।

7. (D) उच्च ऊंचाई वाले पूर्वी क्षेत्रों में जल की आपूर्ति करना
इंदिरा गांधी नहर के बाईं ओर स्थित क्षेत्र मुख्य नहर के जल स्तर से अधिक ऊँचे हैं जहाँ गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से जल का स्वतः प्रवाह संभव नहीं है। इस भौगोलिक बाधा को दूर करने के लिए यंत्रों का उपयोग करके जल को ऊँचाई पर चढ़ाया जाता है, जिसे उत्थापक नहर कहा जाता है। इनका प्राथमिक उद्देश्य ऊँचे पूर्वी क्षेत्रों में पेयजल और सिंचाई के लिए जल पहुँचाना है। इससे मरुस्थल के उन हिस्सों में भी हरियाली संभव हुई है।

8. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
इंदिरा गांधी नहर ने पश्चिमी राजस्थान के शुष्क भूभाग को कृषि प्रधान क्षेत्र में बदलकर वहां की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है। हालांकि गहन सिंचाई के परिणामस्वरूप कई स्थानों पर जल स्तर बढ़ने से जलभराव और मृदा लवणता जैसी गंभीर पारिस्थितिक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। अतः यह कहना गलत है कि इस परियोजना ने इन संकटों को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। कृषि विकास के साथ इन पर्यावरणीय चुनौतियों का वैज्ञानिक प्रबंधन करना अनिवार्य आवश्यकता है।

9. (C) भीखाभाई सागवाड़ा नहर
इंदिरा गांधी नहर परियोजना के अंतर्गत अनेक उत्थापक नहरों और शाखाओं का निर्माण किया गया है जिनमें कंवर सेन और गुरु जम्भेश्वर प्रमुख हैं। इसके विपरीत भीखाभाई सागवाड़ा नहर का संबंध दक्षिणी राजस्थान में स्थित माही बजाज सागर परियोजना से है। यह नहर मुख्य रूप से डूंगरपुर जिले के जनजातीय क्षेत्रों में सिंचाई सुविधा प्रदान करने के लिए बनाई गई है। इस प्रकार जल स्रोतों के आधार पर यह अन्य विकल्पों से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखती है।

10. (A) I, II और IV
इंदिरा गांधी नहर परियोजना को दो चरणों में क्रियान्वित किया गया है जिसमें प्रथम चरण उत्तर-पश्चिमी जिलों पर केंद्रित था। द्वितीय चरण के अंतर्गत जैसलमेर और बाड़मेर जैसे सुदूर

NODIA

पश्चिमी क्षेत्रों तक जल पहुँचाया गया है। इस प्रणाली का अंतिम छोर बाड़मेर जिले के गडरा रोड तक विस्तृत है। मुख्य नहर की बनावट ऐसी है कि इसके दाईं ओर गुरुत्वाकर्षण प्रवाह से सिंचाई होती है, जबकि बाईं ओर ऊँचाई होने के कारण उत्थापक नहरों का निर्माण किया गया है।

11. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
इंदिरा गांधी नहर की भौगोलिक संरचना के अनुसार भूमि का सामान्य ढाल पश्चिम दिशा की ओर है जो नहर के दाएं तट पर स्थित है। इसी कारण नहर की अधिकांश शाखाएं दाएं तट पर गुरुत्वाकर्षण प्रवाह के साथ विकसित की गई हैं। रावतसर शाखा एकमात्र ऐसी शाखा है जो नहर के बाएं तट से निकलती है। बाएं तट पर भूमि ऊँची होने के कारण वहाँ शाखाओं के स्थान पर उत्थापक नहरें अधिक प्रभावी हैं जो यंत्रों की सहायता से संचालित होती हैं।

12. (B) सतलज और ब्यास
इंदिरा गांधी नहर को जल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सतलज और ब्यास नदियों के संगम पर निर्भर रहना पड़ता है। पंजाब में स्थित हरिके बाँध इन नदियों के जल को नियंत्रित कर नहर में प्रवाहित करता है। यह जल प्रवाह न केवल पश्चिमी राजस्थान की कृषि के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि करोड़ों लोगों की पेयजल आपूर्ति का भी एकमात्र सहारा है। इन बारहमासी नदियों के कारण ही थार मरुस्थल के शुष्क क्षेत्रों में वर्ष भर खेती संभव है।

13. (B) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
इंदिरा गांधी नहर परियोजना की उत्थापक नहरों के पुराने नामों को बदलकर उन्हें प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के नाम पर रखा गया है। बीकानेर-लूणकरणसर नहर को अब कंवर सेन नहर के नाम से जाना जाता है जो इस परियोजना के प्रणेता थे। इसी प्रकार गजनेर नहर का नया नाम पन्नालाल बारुपाल और कोलायत नहर का नाम डॉ. करणी सिंह कर दिया गया है। फलोदी उत्थापक नहर को वर्तमान में गुरु जम्भेश्वर नहर के रूप में जाना जाता है।

14. (D) हनुमानगढ़
पंजाब और हरियाणा से होकर बहने वाली इंदिरा गांधी भरण नहर राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में प्रवेश करती है। हनुमानगढ़ का मसीतावाली शीर्ष वह स्थान है जहाँ भरण नहर समाप्त होती है और मुख्य नहर का प्रारंभ होता है। यह बिंदु राजस्थान के सिंचाई मानचित्र पर अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से मरुस्थल की जीवन रेखा का वास्तविक वितरण तंत्र शुरु होता है। इसके पश्चात नहर बीकानेर और जैसलमेर जिलों की ओर आगे बढ़ती हुई सिंचित क्षेत्र का विस्तार करती है।

15. (A) I, II, III और IV
इंदिरा गांधी नहर परियोजना मुख्य रुप से राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी जिलों को लाभान्वित करती है। इसके माध्यम से हनुमानगढ़, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर और चूरू जैसे जिलों में कृषि और पेयजल की व्यवस्था की जाती है। उदयपुर जिला अरावली की पहाड़ियों में स्थित होने और नहर के मार्ग से बहुत दूर होने के कारण इस परियोजना के प्रत्यक्ष लाभ क्षेत्र में शामिल नहीं है। नहर का मुख्य उद्देश्य मरुस्थलीय क्षेत्रों में जल संकट को दूर करना है।

16. (B) कंवर सेन लिफ्ट नहर
इंदिरा गांधी नहर प्रणाली में निर्मित सात मुख्य उत्थापक नहरों में कंवर सेन नहर को सबसे लंबी नहर होने का गौरव प्राप्त है। इसे पूर्व में बीकानेर-लूणकरणसर नहर के नाम से जाना जाता था। यह बीकानेर शहर और उसके आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए जीवन रेखा के समान है जो विशाल भौगोलिक क्षेत्र को लाभ पहुँचाती है। इसकी अभियांत्रिकी संरचना और इसकी लंबाई इसे परियोजना के अन्य उत्थापन तंत्रों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट बनाती है।

17. (B) गडरा रोड
इंदिरा गांधी नहर परियोजना का विस्तार उत्तर में हनुमानगढ़ से प्रारंभ होकर दक्षिण-पश्चिम में बाड़मेर जिले तक पहुँचता है। इस विशाल नहर प्रणाली का अंतिम कार्यशील बिंदु बाड़मेर का गडरा रोड है जहाँ तक नहर का जल पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। यह बिंदु मरुस्थल के सुदूरतम क्षेत्रों में जल आपूर्ति की सीमा को दर्शाता है। यहाँ तक जल पहुँचने से बाड़मेर के उन रेतीले इलाकों में भी कृषि और पशुपालन की नई संभावनाओं का द्वार खुला है जो पहले शुष्क थे।

18. (A) चौधरी कुंभाराम - कंवर सेन - पन्नालाल बारुपाल - डॉ. करणी सिंह
इंदिरा गांधी नहर की उत्थापक नहरों का भौगोलिक क्रम उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित है। इस क्रम में सबसे उत्तर में चौधरी कुंभाराम आर्य नहर आती है जो हनुमानगढ़ और चूरू को लाभ पहुँचाती है। इसके पश्चात क्रमशः कंवर सेन, पन्नालाल बारुपाल और डॉ. करणी सिंह नहरें स्थित हैं। यह क्रमिक विकास नहर की मुख्य धारा के साथ-साथ विभिन्न जिलों की ऊँचाई और आवश्यकता के अनुरूप किया गया है ताकि संपूर्ण पश्चिमी राजस्थान में जल का समान वितरण हो सके।

19. (C) गंग नहर
राजस्थान में आधुनिक सिंचाई प्रणालियों के इतिहास में गंग नहर को सबसे प्राचीन होने का श्रेय प्राप्त है। इसका निर्माण बीकानेर के तत्कालीन शासक महाराजा गंगा सिंह द्वारा करवाया गया था जिन्होंने मरुस्थल को हरा-भरा बनाने का स्वप्न देखा था। 20वीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में निर्मित यह नहर आज भी श्रीगंगानगर जिले की कृषि का मुख्य आधार है। इसी ऐतिहासिक पहल के कारण महाराजा गंगा सिंह को 'आधुनिक भारत का भगीरथ' कहा जाता है जिन्होंने विषम परिस्थितियों में जल मार्ग बनाया।

20. (B) 1927
महाराजा गंगा सिंह के अथक प्रयासों से निर्मित गंग नहर का निर्माण कार्य वर्ष 1927 में पूर्ण हुआ था। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का उद्घाटन तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन द्वारा शिवपुर शीर्ष पर किया गया था। इस नहर के निर्माण ने बीकानेर रियासत के उत्तरी भाग की कायाकल्प कर दी और इसे एक

Click Here to Buy book on Amazon

समृद्ध कृषि क्षेत्र में बदल दिया। यह विश्व की पहली ऐसी बड़ी सिंचाई परियोजना थी जिसे कंक्रीट और चूने के अस्तर के साथ मरुस्थलीय परिस्थितियों में सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया था।

21. (C) सतलज नदी पर हुसैनीवाला
गंग नहर का उद्गम पंजाब के फिरोजपुर के निकट सतलज नदी पर स्थित हुसैनीवाला नामक स्थान से होता है। यहाँ से यह नहर राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में प्रवेश करती है और बंजर भूमि को सींचती है। यह स्थान भारत-पाकिस्तान सीमा के निकट स्थित है और ऐतिहासिक रूप से जल वितरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हुसैनीवाला से जल प्राप्त कर यह नहर राजस्थान के उत्तरी भाग में कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए एक विश्वसनीय और बारहमासी जल स्रोत है।

22. (B) इसने शुष्क, बंजर क्षेत्र को एक प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक केंद्र में परिवर्तित कर दिया।
गंग नहर के आगमन ने बीकानेर रियासत के शुष्क और रेतीले परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। इस परियोजना के कारण श्रीगंगानगर जिला राजस्थान के 'अन्न भंडार' के रूप में विकसित हुआ जहाँ गेहूँ, कपास और किन्नू जैसी फसलों का प्रचुर उत्पादन होने लगा। सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से इस नहर ने स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार किया और क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की नींव रखी। बंजर भूमि का उपजाऊ खेतों में परिवर्तन इस दूरदर्शी परियोजना का बड़ा प्रभाव है।

23. (A) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में जल संसाधनों के प्रबंधन के लिए अंतर्राज्यीय सहयोग अत्यंत आवश्यक रहा है। भाखड़ा नांगल परियोजना राजस्थान, पंजाब और हरियाणा का संयुक्त उपक्रम है, जबकि चंबल घाटी परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश के मध्य साझा की जाती है। माही बजाज सागर परियोजना का लाभ राजस्थान और गुजरात को प्राप्त होता है। इसी प्रकार विशाल नर्मदा नहर परियोजना चार राज्यों राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बीच जल वितरण और सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

24. (A) हनुमानगढ़ और चूरू
भाखड़ा नांगल परियोजना के अंतर्गत निर्मित नहरों का लाभ राजस्थान के उत्तरी जिलों को मिलता है। विशेष रूप से हनुमानगढ़ जिला इस प्रणाली का प्राथमिक लाभार्थी है जहाँ सिंचाई के माध्यम से कृषि पैदावार में भारी वृद्धि हुई है। चूरू जिले के कुछ हिस्सों को भी इस परियोजना से पेयजल और सीमित सिंचाई सुविधा प्राप्त होती है। यह प्रणाली पंजाब के भाखड़ा बाँध से जल प्राप्त करती है और राजस्थान के इन जिलों की शुष्क भूमि को जीवनदान प्रदान करती है जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है।

25. (B) I और III
गंग नहर का औपचारिक उद्घाटन वर्ष 1927 में तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन द्वारा किया गया था जो इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है। यह नहर सतलज नदी से जल प्राप्त करती है न कि यमुना नदी से। इसकी वितरण प्रणाली में लक्ष्मीनारायणजी, लालगढ़, करणी और समेजा जैसी महत्वपूर्ण शाखाएं शामिल हैं जो विस्तृत क्षेत्र में जल पहुँचाती हैं। इन तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि यह राजस्थान की प्रथम व्यवस्थित आधुनिक नहर सिंचाई प्रणाली है।

26. (B) 15.22 प्रतिशत
भाखड़ा नांगल एक बहुउद्देशीय संयुक्त परियोजना है जिसमें भागीदार राज्यों के बीच जल और विद्युत का बँटवारा निश्चित अनुपात में किया गया है। राजस्थान राज्य का इस विशाल परियोजना में कुल हिस्सा 15.22 प्रतिशत निर्धारित है। यह हिस्सा राज्य के हनुमानगढ़ और चूरू जैसे जिलों की कृषि और ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस हिस्सेदारी के माध्यम से प्राप्त जल ने मरुस्थलीय क्षेत्रों में सिंचाई के नए आयाम स्थापित किए हैं और क्षेत्र को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाया है।

27. (D) कुल सिंचाई क्षमता केवल राजस्थान राज्य के लिए है।
चंबल घाटी परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच समान साझेदारी यानी 50:50 के अनुपात पर आधारित है। इस परियोजना का क्रियान्वयन तीन चरणों में किया गया जिसमें गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर और कोटा बाँध जैसे महत्वपूर्ण ढाँचों का निर्माण हुआ। यह कहना गलत होगा कि कुल सिंचाई क्षमता केवल राजस्थान के लिए आरक्षित है क्योंकि दोनों राज्य इसके जल का उपयोग अपने-अपने क्षेत्रों में कृषि विकास के लिए करते हैं। यह परियोजना सीमावर्ती जिलों के लिए जीवन रेखा है।

28. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
चंबल घाटी परियोजना ने हाड़ौती क्षेत्र और आस-पास के जिलों की कृषि उत्पादकता में क्रांतिकारी सुधार किया है। इस सफलता का मुख्य कारण कोटा बाँध है जिसे विशेष रूप से सिंचाई के उद्देश्य से निर्मित किया गया है, जबकि श्रृंखला के अन्य तीन बाँध मुख्य रूप से विद्युत उत्पादन पर केंद्रित हैं। कोटा बाँध से निकलने वाली नहरें राजस्थान और मध्य प्रदेश के खेतों तक जल पहुँचाती हैं। अतः यह स्पष्ट है कि सिंचाई हेतु समर्पित बुनियादी ढांचे ने ही क्षेत्र की कृषि समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया है।

29. (C) राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों को
कोटा बाँध से दो प्रमुख नहरें निकलती हैं जिनमें दाईं मुख्य नहर भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह नहर राजस्थान के कोटा और बारां जिलों में सिंचाई करने के पश्चात मध्य प्रदेश की सीमा में प्रवेश करती है और वहाँ के कृषि क्षेत्रों को जल प्रदान करती है। इस प्रकार यह नहर दो राज्यों के बीच जल साझाकरण का एक जीवंत माध्यम है। इसकी कुल लंबाई का एक बड़ा हिस्सा मध्य प्रदेश में सिंचाई के लिए समर्पित है जो क्षेत्रीय कृषि सहयोग को दर्शाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

30. (B) II, III और IV
चंबल नदी पर निर्मित चार प्रमुख बाँधों में से तीन राजस्थान की प्रशासनिक और भौगोलिक सीमाओं के भीतर स्थित हैं। राणा प्रताप सागर बाँध चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में स्थित है, जबकि जवाहर सागर और कोटा बाँध कोटा जिले में स्थित हैं। गांधी सागर बाँध जो इस श्रृंखला का सबसे पहला और बड़ा बाँध है, मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में स्थित है। राजस्थान में स्थित ये तीनों बाँध राज्य की सिंचाई और जलविद्युत आवश्यकताओं को पूरा करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

31. (A) गांधी सागर
चंबल घाटी परियोजना की शुरुआत मध्य प्रदेश में स्थित गांधी सागर बाँध से होती है। यह बाँध मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में भानपुरा तहसील के निकट चंबल नदी पर निर्मित किया गया है। यह इस पूरी परियोजना का सबसे बड़ा संचय जलाशय है जिसका मुख्य उद्देश्य जल का भंडारण और विद्युत उत्पादन करना है। यहाँ से नियंत्रित तरीके से जल छोड़ा जाता है जो आगे चलकर राजस्थान में स्थित राणा प्रताप सागर और अन्य बाँधों तक पहुँचता है और अंततः सिंचाई के काम आता है।

32. (B) कोटा और बूंदी
कोटा बाँध से निकलने वाली बाईं मुख्य नहर विशेष रुप से राजस्थान के जिलों को सिंचित करने के लिए बनाई गई है। यह नहर मुख्य रूप से कोटा और बूंदी जिलों की कृषि भूमि को जल आपूर्ति सुनिश्चित करती है। इसके माध्यम से इन जिलों में धान और गन्ने जैसी अधिक जल की आवश्यकता वाली फसलों की खेती संभव हो पाई है। बाईं नहर का जल तंत्र पूरी तरह राजस्थान के भीतर ही सीमित है जो स्थानीय किसानों के लिए वरदान साबित हुआ है और हाड़ौती को समृद्ध बनाया है।

33. (A) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के प्रमुख बाँध विभिन्न जिलों की जल सुरक्षा के स्तंभ हैं। जवाई बाँध पाली जिले में स्थित है जिसे मारवाड़ का सबसे महत्वपूर्ण जलाशय माना जाता है। बीसलपुर बाँध टोंक जिले में बनास नदी पर बना है जो जयपुर की जलापूर्ति सुनिश्चित करता है। माही बजाज सागर परियोजना बांसवाड़ा जिले के आदिवासी क्षेत्रों के विकास के लिए समर्पित है। राणा प्रताप सागर बाँध चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है जो अपनी विशाल जल भंडारण क्षमता और जलविद्युत उत्पादन के लिए विख्यात है।

34. (A) जवाई बांध
नदी द्रोणियों के आधार पर वर्गीकरण करने पर जवाई बाँध अन्य जलाशयों से भिन्न है क्योंकि यह लूणी नदी की सहायक नदी जवाई पर निर्मित है। इसके विपरीत बीसलपुर और ईसरदा बाँध बनास नदी पर स्थित हैं और मेजा बाँध कोठारी नदी पर बना है जो बनास की ही सहायक है। इस प्रकार शेष तीनों बाँध बनास नदी तंत्र का हिस्सा हैं, जबकि जवाई बाँध का संबंध पश्चिमी राजस्थान के लूणी बेसिन से है। यह भौगोलिक अंतर इनके जलग्रहण क्षेत्रों को अलग करता है।

35. (C) I, II और III
चंबल नहर सिंचाई प्रणाली का मुख्य प्रभाव राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में देखने को मिलता है। इस प्रणाली के प्रमुख क्षेत्र कोटा, बूंदी और बारां जिले हैं जहाँ नहरों के सघन जाल द्वारा बड़े पैमाने पर कृषि की जाती है। इन जिलों की उपजाऊ मिट्टी और चंबल के प्रचुर जल ने मिलकर इस क्षेत्र को कृषि उत्पादन में अग्रणी बना दिया है। झालावाड़ और बीकानेर जैसे जिले इस विशिष्ट नहर प्रणाली के प्रत्यक्ष क्षेत्र का हिस्सा नहीं हैं क्योंकि उनकी भौगोलिक स्थिति भिन्न है।

36. (D) माही बजाज सागर परियोजना
राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित बांसवाड़ा और डूंगरपुर जैसे जनजातीय बहुल जिलों के आर्थिक उत्थान के लिए माही बजाज सागर परियोजना का विशेष महत्व है। माही नदी पर निर्मित यह विशाल बाँध इन क्षेत्रों में न केवल सिंचाई सुविधा प्रदान करता है, बल्कि मत्स्य पालन और पेयजल की आवश्यकता को भी पूरा करता है। यह परियोजना स्थानीय जनजातीय समुदाय के जीवन स्तर को ऊपर उठाने और उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से समर्पित की गई है जिसने सामाजिक संरचना को बदला है।

NODIA

37. (A) 45:55
माही बजाज सागर परियोजना राजस्थान और गुजरात राज्यों के बीच एक साझा उद्यम है जिसका वित्तीय और जल वितरण आधार एक विशिष्ट समझौते पर आधारित है। इस समझौते के तहत राजस्थान का हिस्सा 45 प्रतिशत और गुजरात का हिस्सा 55 प्रतिशत निर्धारित किया गया है। हालांकि बाँध का निर्माण राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में किया गया है, लेकिन इसका लाभ दोनों राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों को मिलता है। यह अनुपात परियोजना की लागत और लाभों के उचित बँटवारे को सुनिश्चित करने के लिए तय किया गया था।

38. (A) कोटा बैराज - जवाहर सागर - राणा प्रताप सागर - गांधी सागर
चंबल नदी पर निर्मित बाँधों का क्रम यदि उत्तर से दक्षिण की ओर यानी धारा के विपरीत दिशा में देखा जाए, तो सबसे पहले कोटा बाँध आता है। इसके बाद क्रमशः जवाहर सागर और राणा प्रताप सागर बाँध स्थित हैं जो राजस्थान की सीमा के भीतर हैं। इस श्रृंखला का अंतिम बाँध गांधी सागर है जो मध्य प्रदेश में स्थित है। यह व्यवस्था जल के कुशल उपयोग और क्रमिक रूप से ऊर्जा उत्पादन के साथ सिंचाई प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए वैज्ञानिक तरीके से बनाई गई है।

39. (D) बांसवाड़ा
माही बजाज सागर बाँध राजस्थान के दक्षिणी छोर पर स्थित बांसवाड़ा जिले में निर्मित है। यह बाँध माही नदी पर बनाया गया है जो मध्य प्रदेश से निकलकर राजस्थान में प्रवेश करती है। बांसवाड़ा का बोरखेड़ा गाँव इस विशाल बाँध का मुख्य स्थल है। अपनी लंबी तटरेखा और विशाल जलराशि के कारण इसे राजस्थान के सबसे बड़े बाँधों में गिना जाता है। यह बाँध न केवल स्थानीय कृषि के लिए सिंचाई का मुख्य स्रोत है, बल्कि पर्यटन के लिए भी एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

40. (A) संपूर्ण 100 प्रतिशत राजस्थान को आवंटित किया जाता है
माही बजाज सागर परियोजना के अंतर्गत जल और वित्त का बँटवारा भले ही राजस्थान और गुजरात के बीच साझा हो, लेकिन जलविद्युत उत्पादन के संदर्भ में एक विशेष प्रावधान है। इस परियोजना के माध्यम से उत्पन्न होने वाली संपूर्ण 100 प्रतिशत विद्युत शक्ति केवल राजस्थान राज्य को आवंटित की जाती है। यह व्यवस्था राजस्थान के दक्षिणी जिलों के औद्योगिक और ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई है। गुजरात को इसके बदले में सिंचाई के लिए जल का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त होता है।

41. (C) माही बजाज सागर परियोजना
भीखाभाई सागवाड़ा नहर का निर्माण माही बजाज सागर परियोजना के जल का अधिकतम लाभ उठाने के लिए किया गया है। यह नहर मुख्य रूप से डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा और आस-पास के क्षेत्रों में सिंचाई सुविधा पहुँचाने के लिए विकसित की गई थी। माही नदी के जल को नियंत्रित कर इस नहर के माध्यम से पथरीले और ऊबड़-खाबड़ धरातल वाले जनजातीय क्षेत्रों में खेती को बढ़ावा दिया गया है। यह नहर दक्षिणी राजस्थान के कृषि विकास और जल प्रबंधन की एक महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है।

42. (A) यह पेयजल और सिंचाई प्रदान करता है, जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' के रूप में जाना जाता है।
पाली जिले के सुमेरपुर के निकट स्थित जवाई बाँध को अपनी विशालता और उपयोगिता के कारण 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहा जाता है। यह बाँध न केवल पाली और जोधपुर जैसे शहरों के लिए पेयजल का मुख्य आधार है, बल्कि जालोर और पाली जिलों के विस्तृत कृषि क्षेत्रों को सिंचाई भी प्रदान करता है। शुष्क पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की अनिश्चितता होने पर यह जलाशय एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है। इसकी संरचना और महत्व इसे पूरे मारवाड़ क्षेत्र की जल सुरक्षा का केंद्र बनाता है।

43. (A) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान में जल संरक्षण की प्राचीन परंपराएं आज भी प्रासंगिक हैं। जैसलमेर में खडीन प्रणाली का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है, जबकि शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा जल संचयन हेतु जोहड़ अत्यंत प्रचलित हैं। भीलवाड़ा जिला पारंपरिक रूप से तालाबों के माध्यम से की जाने वाली सिंचाई के लिए जाना जाता है। इसी प्रकार बूंदी और जोधपुर जैसे ऐतिहासिक शहर अपनी कलात्मक बावड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं जो प्राचीन समय में पेयजल आपूर्ति और स्थापत्य कला के उत्कृष्ट संगम के रूप में विकसित की गई थीं।

44. (B) सेई अपवर्तन परियोजना
जवाई बाँध में जल की कमी को दूर करने के लिए उदयपुर जिले की अरावली पहाड़ियों में स्थित सेई बाँध से एक सुरंग के माध्यम से जल लाया जाता है। इस 'सेई अपवर्तन परियोजना' का मुख्य उद्देश्य शुष्क ऋतु के दौरान जवाई बाँध के जल स्तर को बनाए रखना है ताकि मारवाड़ क्षेत्र में पेयजल और सिंचाई की आपूर्ति बाधित न हो। यह अंतर-द्रोणी जल स्थानांतरण का एक बेहतरीन उदाहरण है जहाँ जल की अधिकता वाले क्षेत्र से जल की कमी वाले क्षेत्र की ओर संसाधनों का प्रबंधन किया गया है।

45. (A) I और II
माही बजाज सागर परियोजना बांसवाड़ा जिले में माही नदी पर स्थित है और यह मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों को सिंचाई और बिजली प्रदान करती है। यह परियोजना केंद्र सरकार के मरुस्थल विकास कार्यक्रम का हिस्सा नहीं है क्योंकि यह क्षेत्र मरुस्थलीय श्रेणी में नहीं आता है। इसके बजाय यह एक अंतर्राज्यीय बहुउद्देशीय परियोजना है जो राजस्थान और गुजरात के सहयोग से संचालित होती है। इस परियोजना ने डूंगरपुर और बांसवाड़ा के पहाड़ी इलाकों में कृषि परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है।

46. (D) बनास
बीसलपुर बाँध का निर्माण राजस्थान की महत्वपूर्ण नदी बनास पर किया गया है। यह बाँध टोंक जिले के देवली के निकट स्थित है और इसे राज्य की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना माना जाता है। बनास नदी जो अरावली की पहाड़ियों से निकलती है, इस जलाशय को भरने के लिए मुख्य जल स्रोत है। इस बाँध के निर्माण से न केवल सिंचाई की व्यवस्था हुई है, बल्कि राजस्थान की राजधानी जयपुर सहित कई बड़े शहरों की पेयजल समस्याओं का स्थायी समाधान भी प्राप्त हुआ है।

47. (A) जयपुर और अजमेर
बीसलपुर बाँध राजस्थान के शहरी जल प्रबंधन की धुरी है जो मुख्य रूप से जयपुर और अजमेर जैसे महानगरों की दैनिक पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसके अलावा टोंक जिले के स्थानीय कस्बों और गांवों को भी इससे स्वच्छ जल प्राप्त होता है। इस बाँध से बिछाई गई विशाल नलिका प्रणालियों के माध्यम से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित इन शहरों तक जल पहुँचाया जाता है। अजमेर और जयपुर की बढ़ती जनसंख्या के लिए यह जलाशय एक जीवन रेखा के समान है जिसके बिना जलापूर्ति संकट में पड़ सकती है।

48. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
राजस्थान के पूर्वी और मैदानी भागों में जलोढ़ मृदा और अनुकूल भूजल स्तर के कारण कुएँ और नलकूप सिंचाई के सर्वाधिक प्रभावी साधन बन गए हैं। इसके विपरीत पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में भूजल अत्यधिक गहराई पर स्थित है और नीचे की भूगर्भीय संरचना कठोर चट्टानों से युक्त है जिससे वहां कुआं खोदना अत्यंत खर्चीला और कठिन कार्य है। इस प्राकृतिक और आर्थिक भिन्नता के कारण ही राज्य के अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में सिंचाई के साधनों का वितरण भी भिन्न-भिन्न पाया जाता है।

49. (B) नहर कमांड क्षेत्रों में जलभराव और मृदा लवणता की एक गंभीर समस्या
'सेम' राजस्थान के नहर सिंचित क्षेत्रों, विशेषकर इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जलभराव और मृदा लवणता की एक गंभीर पारिस्थितिक समस्या को दर्शाता है। जब नहरों से जल का

Click Here to Buy book on Amazon

अत्यधिक रिसाव होता है और भूजल स्तर ऊपर उठ जाता है, तो कृषि भूमि दलदली हो जाती है और फसलें नष्ट होने लगती हैं। इस प्रक्रिया में मिट्टी की सतह पर लवणों की परत जम जाती है जिससे भूमि धीरे-धीरे अनुपजाऊ और बंजर हो जाती है। यह समस्या राज्य के किसानों और पर्यावरणविदों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

50. (A) I, II और III
बीसलपुर बाँध टोंक जिले में बनास नदी पर स्थित है और यह राजस्थान का सबसे बड़ा कंक्रीट गुरुत्वाकर्षण बाँध है। यह परियोजना विशेष रूप से जयपुर, अजमेर और टोंक जिलों की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रसिद्ध है। यह कहना गलत है कि यह गंगानगर और हनुमानगढ़ को सिंचाई प्रदान करता है क्योंकि वे जिले राज्य के सुदूर उत्तर में स्थित हैं और अन्य नहर प्रणालियों पर निर्भर हैं। बीसलपुर मुख्य रूप से मध्य राजस्थान के क्षेत्रों में जल स्थिरता सुनिश्चित करने का कार्य करता है।

51. (C) भीलवाड़ा
राजस्थान में पारंपरिक तालाबों द्वारा सिंचाई करने के मामले में भीलवाड़ा जिला राज्य में प्रथम स्थान पर आता है। यहाँ की पथरीली और ऊबड़-खाबड़ भूमि कुएँ खोदने के लिए उतनी अनुकूल नहीं है जितनी कि वर्षा जल को रोकने के लिए तालाब बनाना। यहाँ के किसान सदियों से तालाबों में संचित जल का उपयोग रबी और खरीफ की फसलों के लिए करते आ रहे हैं। इस प्राचीन पद्धति ने क्षेत्र की स्थानीय जल जरूरतों को पूरा करने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

52. (D) जैसलमेर
बीसलपुर पेयजल परियोजना का विस्तार मुख्य रूप से टोंक, जयपुर और अजमेर जिलों तक सीमित है जहाँ यह शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करती है। जैसलमेर जिला राजस्थान के सुदूर पश्चिम में स्थित है और इसकी भौगोलिक दूरी बीसलपुर से बहुत अधिक है। जैसलमेर अपनी पेयजल और सिंचाई आवश्यकताओं के लिए पूरी तरह से इंदिरा गांधी नहर परियोजना पर निर्भर है। इस प्रकार जल वितरण नेटवर्क की सीमाओं के कारण जैसलमेर इस विशिष्ट परियोजना के लाभान्वित जिलों में शामिल नहीं है।

53. (A) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान की विभिन्न नहरें अपनी जलापूर्ति के लिए अलग-अलग नदी प्रणालियों से जुड़ी हुई हैं। गंग नहर सतलज नदी से जल प्राप्त करती है, जबकि इंदिरा गांधी मुख्य नहर का स्रोत सतलज और ब्यास नदियों का संगम है। नर्मदा नहर सीधे गुजरात में स्थित सरदार सरोवर बाँध से नर्मदा नदी का जल राज्य में लाती है। इसी प्रकार गुड़गांव नहर, जिसे अब पश्चिमी यमुना नहर की एक शाखा के रूप में जाना जाता है, हरियाणा के माध्यम से यमुना नदी के जल को राजस्थान के पूर्वी जिलों तक पहुँचाती है।

54. (B) कठोर चट्टानी स्थलाकृति द्वारा अवरुद्ध गहरे जलभृत
राजस्थान के दक्षिणी भागों जैसे उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा में कुआं सिंचाई का विस्तार भौगोलिक बाधाओं के कारण सीमित है। इस क्षेत्र की स्थलाकृति मुख्य रूप से कठोर और अरावली की प्राचीन चट्टानों से बनी है जिसके कारण जमीन खोदना बहुत मुश्किल होता है। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में भूजल गहरे जलभृतों में स्थित है जिन तक पहुँचना सामान्य कुओं के लिए कठिन है। इन्हीं कारणों से यहाँ के किसान सतही जल संसाधनों या तालाबों पर अधिक निर्भर रहते हैं और कुओं का उपयोग मैदानी क्षेत्रों की तुलना में काफी कम होता है।

55. (A) I और II
पश्चिमी राजस्थान में नहरों के माध्यम से गहन सिंचाई के विस्तार ने कई गंभीर पारिस्थितिक चुनौतियों को जन्म दिया है। इनमें जलभराव यानी 'सेम' की समस्या सबसे प्रमुख है जिसके कारण कृषि भूमि दलदल में बदल रही है। इसके साथ ही केशिकत्व क्रिया के कारण मिट्टी की सतह पर हानिकारक लवणों और क्षार का जमाव बढ़ गया है जिससे भूमि की उर्वरता समाप्त हो रही है। ये समस्याएँ न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित करती हैं, बल्कि स्थानीय पर्यावरण और जैव विविधता के लिए भी एक बड़ा खतरा उत्पन्न कर रही हैं।

NODIA

56. (A) जिप्सम
राजस्थान में जलभराव और क्षारीयता से प्रभावित मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने के लिए जिप्सम का उपयोग एक पारंपरिक और वैज्ञानिक उपाय के रूप में किया जाता है। जिप्सम मिट्टी की रासायनिक संरचना में सुधार करता है और लवणों को नीचे की परतों में ले जाने में मदद करता है जिससे भूमि की उर्वरता पुनः लौट आती है। इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जहाँ 'सेम' की समस्या विकराल है, सरकार द्वारा किसानों को उचित मूल्य पर जिप्सम उपलब्ध कराया जाता है ताकि वे अपनी कृषि भूमि को खेती योग्य बनाए रख सकें।

57. (A) दोनों कथन सही हैं, और कथन II, कथन I की व्याख्या करता है।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में मृदा लवणता का मुख्य कारण केशिकत्व क्रिया है जिसमें अत्यधिक सिंचाई के कारण नीचे के लवण सतह पर आ जाते हैं। इस समस्या को और अधिक गंभीर बनाने वाली परिस्थिति भूमि के नीचे स्थित जिप्सम की एक अभेद्य और कठोर परत है। यह परत ऊपर से आने वाले अतिरिक्त जल के अधोमुखी रिसाव को रोक देती है जिससे जलभराव की स्थिति उत्पन्न होती है। इन दोनों कारकों के सम्मिलित प्रभाव के कारण ही इस क्षेत्र में लवणता की समस्या ने एक विकराल रूप धारण कर लिया है।

58. (A) C, A, B, D
राजस्थान के शुद्ध सिंचित क्षेत्र के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर सिंचाई के स्रोतों का एक निश्चित क्रम उभरता है। राज्य में सर्वाधिक सिंचाई कुओं और नलकूपों के माध्यम से की जाती है जो प्रथम स्थान पर हैं। इसके पश्चात नहरें द्वितीय महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभरती हैं जो विशेष रूप से उत्तरी और पश्चिमी राजस्थान में केंद्रित हैं। तालाबों का योगदान बहुत ही सीमित

और तृतीय स्थान पर है, जबकि अन्य पारंपरिक स्रोत चौथे स्थान पर आते हैं। यह अवरोही क्रम राज्य की वर्तमान जल प्रबंधन रणनीति को स्पष्ट करता है।

59. (D) चंबल क्षेत्र में जलभराव को कम करने के लिए उप-सतही जल निकासी को लागू करना
राजस्थान कृषि जल निकासी अनुसंधान परियोजना जिसे 'राजद' के नाम से जाना जाता है, भारत और नीदरलैंड के सहयोग से शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल थी। इस परियोजना का मुख्य केंद्र चंबल क्षेत्र में बढ़ती जलभराव और लवणता की समस्या का समाधान करना था। इसके तहत उप-सतही जल निकासी तकनीक को लागू किया गया ताकि अतिरिक्त जल को भूमि के नीचे से सुरक्षित रूप से निकाला जा सके। इस अंतरराष्ट्रीय सहयोग ने सिंचाई प्रणालियों के वैज्ञानिक प्रबंधन और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में नई तकनीकों का मार्ग प्रशस्त किया।

60. (B) वे ब्लॉक जहाँ भूजल दोहन प्राकृतिक पुनर्भरण से काफी अधिक है
भूजल के संदर्भ में 'अंधकार क्षेत्र' उन खंडों को कहा जाता है जहाँ ज़मीन के नीचे से जल निकालने की दर प्राकृतिक पुनर्भरण की दर से काफी अधिक हो गई है। ऐसे क्षेत्रों में भूजल स्तर निरंतर नीचे गिरता जा रहा है जिससे भविष्य में गंभीर जल संकट की संभावना बढ़ जाती है। राजस्थान के कई जिलों में कृषि और शहरीकरण के दबाव के कारण भूजल का अनियंत्रित दोहन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप उन क्षेत्रों को संवेदनशील घोषित कर वहां नए नलकूप खोदने पर कानूनी प्रतिबंध लगाए गए हैं।

61. (C) भरतपुर
राजस्थान में आधुनिक भूजल दोहन की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम उठाते हुए प्रथम नलकूप की स्थापना वर्ष 1930 में की गई थी। यह ऐतिहासिक घटना भरतपुर जिले में संपन्न हुई थी जिसने राज्य में सिंचाई के एक नए युग का सूत्रपात किया। उस समय की उन्नत तकनीक का उपयोग करके कृषि के लिए भूजल निकालने की इस पहल ने बाद के दशकों में पूरे राज्य में नलकूप सिंचाई के विस्तार के लिए प्रेरणा प्रदान की। भरतपुर की इस उपलब्धि ने पारंपरिक कुओं के विकल्प के रूप में एक प्रभावी माध्यम पेश किया था।

62. (D) सफेदा (यूकेलिप्टस)
इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में जलभराव की समस्या से निपटने के लिए 'जैविक जल निकासी' की तकनीक अपनाई जाती है। इसके अंतर्गत सफेदा यानी यूकेलिप्टस के पेड़ों को बड़ी संख्या में नहरों के किनारों पर लगाया जाता है क्योंकि ये पेड़ बहुत अधिक मात्रा में भूमिगत जल का वाष्पीकरण करने की क्षमता रखते हैं। इनकी गहरी जड़ें मृदा से अतिरिक्त नमी को सोख लेती हैं जिससे भूजल स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह पर्यावरण के अनुकूल और कम लागत वाली एक प्रभावी विधि है जिसका व्यापक प्रयोग हो रहा है।

63. (A) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के सिंचाई प्रबंधन में कई विशिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनका अपना वैज्ञानिक महत्व है। 'सेम' का अर्थ नहरों के रिसाव के कारण उत्पन्न होने वाला जलभराव है जो मिट्टी को खराब करता है। 'कमांड क्षेत्र' वह भौगोलिक भाग है जो किसी विशिष्ट सिंचाई परियोजना द्वारा सिंचित किया जा सकता है। 'अंधकार क्षेत्र' भूजल के अति-दोहन वाले संवेदनशील क्षेत्रों को इंगित करता है। 'जैविक जल निकासी' के तहत यूकेलिप्टस जैसे पेड़ लगाकर अतिरिक्त नमी को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है।

64. (B) नर्मदा नहर परियोजना
नर्मदा नहर परियोजना राजस्थान की पहली ऐसी बड़ी सिंचाई परियोजना है जिसने अपने संपूर्ण क्षेत्र में 100 प्रतिशत फव्वारा सिंचाई प्रणाली को अनिवार्य बनाया है। यह क्रांतिकारी कदम जल की प्रत्येक बूंद का अधिकतम उपयोग करने के उद्देश्य से उठाया गया था ताकि कम जल में अधिक भूमि को सिंचित किया जा सके। इस अनिवार्यता के कारण जालौर और बाड़मेर जैसे शुष्क जिलों में जल की बर्बादी काफी कम हुई है। यह भारत में सूक्ष्म सिंचाई को बड़े पैमाने पर लागू करने का एक अनुकरणीय और सफल प्रतिमान माना जाता है।

65. (A) I और II
राजस्थान में सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा देना जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नर्मदा नहर परियोजना में फव्वारा सिंचाई की अनिवार्यता इसका एक प्रमुख उदाहरण है जिसने सिंचाई दक्षता में सुधार किया है। बूंद-बूंद सिंचाई तकनीक वाष्पीकरण और गहरे रिसाव को कम करके जल की भारी बचत करती है जो राज्य के सीमित संसाधनों के लिए वरदान है। यह कहना पूर्णतः निराधार है कि ये विधियाँ शुष्क जलवायु के लिए अनुपयोगी हैं क्योंकि वास्तव में ये मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए ही सबसे अधिक प्रभावी तकनीकें हैं।

66. (A) बागवानी और फलों के उद्यान
बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली विशेष रूप से बागवानी और फलों के उद्यानों के लिए आर्थिक और कृषि विज्ञान की दृष्टि से सर्वोत्तम मानी जाती है। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में अनार, संतरा और किन्नू जैसे फलों की खेती के लिए यह तकनीक अत्यधिक सफल सिद्ध हुई है क्योंकि इसमें जल सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचता है। व्यापक गेहूँ या धान की खेती की तुलना में बागवानी फसलों में इस प्रणाली का निवेश अधिक लाभदायक होता है। यह तकनीक न केवल जल बचाती है, बल्कि उर्वरकों के कुशल उपयोग में भी सहायक होती है।

67. (C) जालौर
नर्मदा नहर गुजरात के सरदार सरोवर बाँध से निकलकर राजस्थान के जालौर जिले में प्रवेश करती है। जालौर का सिलू गाँव वह महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ इस नहर का जल पहली बार राजस्थान की भूमि को स्पर्श करता है। यहाँ से यह नहर आगे बढ़ते हुए बाड़मेर जिले तक अपनी शाखाओं का विस्तार करती है। इस नहर के आगमन ने जालौर और बाड़मेर जैसे शुष्क जिलों की कृषि अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की है और

Downloaded from www.pdf.tube

संपूर्ण आवश्यकता अन्य राज्यों से आयात करता है
(4) जैसलमेर का सानू क्षेत्र उच्च श्रेणी के स्टील मेल्टिंग शॉप (SMS) चूना पत्थर के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. जामसर खदान, जिसे ऐतिहासिक रूप से भारत में अपनी तरह के सबसे बड़े निक्षेपों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है, किस खनिज के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध है?
(1) जिप्सम
(2) रॉक फास्फेट
(3) टंगस्टन
(4) चूना पत्थर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. अरावली पहाड़ियों में अवैज्ञानिक और अवैध खनन कार्यों से जुड़ा प्राथमिक पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(1) इससे आसपास के रेगिस्तान के भूजल स्तर में वृद्धि होती है
(2) यह वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि और प्राकृतिक जल निकासी के व्यवधान का कारण बनता है
(3) इसके परिणामस्वरुप अरावली श्रेणी के भीतर विवर्तनिक भूकंपों की आवृत्ति बढ़ जाती है
(4) महीन चट्टान की धूल जमने के कारण यह कृषि भूमि की उर्वरता को बढ़ाता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (चूना पत्थर की श्रेणी)
A. स्टील ग्रेड (SMS)
B. केमिकल ग्रेड
C. सीमेंट ग्रेड
D. पीला चूना पत्थर (सजावटी)
सूची II: (प्रमुख क्षेत्र/जिला)
i. सानू (जैसलमेर)
ii. गोटन (नागौर)
iii. निंबाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
iv. जैसलमेर शहर क्षेत्र
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में खनन क्षेत्र के लिए प्राथमिक चुनौती नहीं माना जाता है?
(1) निकाले गए खनिजों के परिवहन के लिए स्थापित आधारभूत ढांचे की पूर्ण अनुपस्थिति
(2) अति-दोहन जिससे गंभीर पारिस्थितिक गिरावट होती है
(3) खदान श्रमिकों के बीच सिलिकोसिस जैसे व्यावसायिक स्वास्थ्य खतरों की उच्च आवृत्ति
(4) संरक्षित वन क्षेत्रों में खनन गतिविधियों का अतिक्रमण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

35. खदान श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के संबंध में राजस्थान खनिज नीति का सबसे उपयुक्त केंद्रीय फोकस क्या है?
(1) सभी मैन्युअल खनन श्रम को स्वचालित प्रणालियों से पूर्णतः बदलना
(2) खनिजों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए श्रम मजदूरी को कम करना
(3) श्रमिकों के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित करना और सिलिकोसिस जैसी बीमारियों को कम करना
(4) यह अनिवार्य करना कि खदान श्रमिक हर समय भूमिगत खदान परिसर के भीतर ही रहें
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. नागौर जिले की डेगाना खदानें किस पहाड़ी विशेषता से जुड़ी हैं जो टंगस्टन निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है?
(1) हर्षनाथ पहाड़ी
(2) त्रिकुट पहाड़ी
(3) चिड़िया-टूँक पहाड़ी
(4) रेवत पहाड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
कथन I: खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स की स्थापना सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड (HCL) द्वारा की गई थी।
कथन II: यह कॉम्प्लेक्स पूरी तरह से आयातित तांबा सांद्र पर निर्भर है और स्थानीय सिंघाना खदानों से प्राप्त अयस्क का प्रसंस्करण नहीं करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. संगमरमर के विशिष्ट रंग और राजस्थान में इसके स्रोत जिले के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान करें:
(1) गुलाबी संगमरमर — मकराना (नागौर)
(2) काला संगमरमर — भैंसलाना (जयपुर)
(3) हरा संगमरमर — धौलपुर
(4) सफेद संगमरमर — ऋषभदेव (उदयपुर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. राजस्थान की खनिज संपदा के संदर्भ में, राज्य को कुछ विशिष्ट खनिजों में एकाधिकार प्राप्त होने का क्या कारण है?
(1) राजस्थान भारत का एकमात्र राज्य है जिसे संविधान द्वारा खनिजों के निर्यात की अनुमति है

स्थिति में यंत्रों की सहायता से जल को बलपूर्वक ऊपर की ओर चढ़ाया जाता है ताकि वह ऊँचे क्षेत्रों तक पहुँच सके।

77. (C) हरियाणा
गुड़गांव नहर, जिसे अब पश्चिमी यमुना नहर परियोजना का एक भाग माना जाता है, हरियाणा और राजस्थान राज्यों के बीच जल साझाकरण का एक साझा माध्यम है। यह नहर हरियाणा के ओखला बाँध से यमुना नदी का जल लेकर आती है और राजस्थान के भरतपुर जिले के कुछ हिस्सों को सिंचित करती है। दोनों राज्यों के बीच हुए समझौतों के आधार पर जल का वितरण किया जाता है। यह परियोजना पूर्वी राजस्थान के उन क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहाँ स्थानीय जल स्रोत सीमित हैं और कृषि यमुना के जल पर निर्भर करती है।

78. (B) C, A, D, B
राजस्थान की प्रमुख नदी द्रोणियों का भौगोलिक विस्तार उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर एक विशिष्ट प्रतिरूप प्रस्तुत करता है। इस क्रम में सबसे पहले बनास द्रोणी आती है जहाँ बीसलपुर बाँध स्थित है। इसके पश्चात दक्षिण-पूर्व की ओर चंबल द्रोणी का विस्तार है जिसमें कोटा बाँध एक प्रमुख संरचना है। आगे बढ़ने पर पश्चिमी भाग में लूणी द्रोणी और उसकी सहायक नदी पर जवाई बाँध मिलता है। अंत में सुदूर दक्षिण में माही द्रोणी और माही बजाज सागर बाँध स्थित हैं। यह क्रम राज्य की प्राकृतिक ढाल को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

79. (A) वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई का उपयोग और सूखा-प्रतिरोधी फसलों को अपनाना।
राजस्थान के सूखे की आशंका वाले क्षेत्रों में दीर्घकालिक कृषि स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसमें वर्षा जल संचयन के आधुनिक तरीकों को अपनाना, फव्वारा और बूंद-बूंद जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों का अनिवार्य उपयोग करना और ऐसी फसलों का चयन करना जो कम जल में बेहतर पैदावार दे सकें, शामिल है। केवल नहरों के विस्तार पर निर्भर रहने से पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ सकता है। अतः जल के कुशल प्रबंधन और स्थानीय संसाधनों के संरक्षण का समन्वय ही राज्य के लिए उपयुक्त समाधान है।

80. (B) पार्वती और कालीसिंध जैसी सहायक नदियों सहित चंबल बेसिन
पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना राज्य की एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसका लक्ष्य चंबल द्रोणी की सहायक नदियों जैसे पार्वती और कालीसिंध के अतिरिक्त जल को संचित करना है। इस अतिरिक्त जल को बनास, बाणगंगा और गंभीर जैसी जल की कमी वाली नदियों की द्रोणियों में स्थानांतरित किया जाएगा। यह परियोजना पूर्वी राजस्थान के 13 जिलों की सिंचाई और पेयजल समस्याओं का समाधान करने के लिए बनाई गई है। यह अंतर-द्रोणी जल स्थानांतरण का एक प्रमुख वैज्ञानिक प्रयास है जो भविष्य में राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा।

Click Here to Buy book on Amazon

फव्वारा सिंचाई के माध्यम से मरुस्थल में हरियाली की नई लहर पैदा की है।

68. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पास भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन सतही जल संसाधनों की उपलब्धता देश के कुल संसाधनों का मात्र 1 प्रतिशत ही है। यह भीषण असंतुलन राज्य में जल के अत्यंत विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता को दर्शाता है। इसी कारण भविष्य की कृषि सुरक्षा के लिए बूंद-बूंद और फव्वारा सिंचाई जैसी सूक्ष्म तकनीकों को अपनाना और बढ़ावा देना अनिवार्य हो गया है। इन आधुनिक विधियों के माध्यम से सीमित जल से अधिक उत्पादकता प्राप्त करना ही राज्य के सतत विकास का एकमात्र मार्ग है।

69. (C) जालौर और बाड़मेर
नर्मदा नहर परियोजना मुख्य रूप से राजस्थान के दो दक्षिण-पश्चिमी जिलों जालौर और बाड़मेर के लिए तैयार की गई है। यह नहर इन जिलों के रेतीले और शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई और पेयजल की आपूर्ति का प्रमुख स्रोत है। इस परियोजना की विशिष्टता इसकी फव्वारा सिंचाई प्रणाली है जिसने पारंपरिक खेती के तरीकों को बदलकर वहां की उत्पादकता में वृद्धि की है। इन जिलों के किसानों के लिए नर्मदा का जल एक बड़े सामाजिक-आर्थिक बदलाव का वाहक बना है जिससे उनके जीवन स्तर और आय में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है।

70. (D) I, II, III और IV
राजस्थान में जल प्रबंधन और दक्षता में सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। 'राजद' परियोजना ने चंबल क्षेत्र में जल निकासी की समस्याओं का समाधान किया, जबकि कमांड क्षेत्र विकास कार्यक्रम ने नहरों के वितरण तंत्र को सुदृढ़ बनाया। मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान ने स्थानीय स्तर पर जल संचयन और संरक्षण को एक जन आंदोलन का रूप दिया। सरदार सरोवर के तहत लागू सूक्ष्म सिंचाई अनिवार्यता ने जल के अपव्यय को रोकने में सफलता प्राप्त की है। ये सभी प्रयास सामूहिक रूप से राज्य की जल सुरक्षा को मजबूती देते हैं।

71. (D) रावी और ब्यास
राजीव गांधी सिद्धमुख-नोहर सिंचाई परियोजना का मुख्य उद्देश्य रावी और ब्यास नदियों के अतिरिक्त जल का उपयोग करके राजस्थान के शुष्क उत्तरी जिलों को सिंचित करना है। इस परियोजना की योजना रावी-ब्यास जल विवाद न्यायाधिकरण के निर्णयों के अनुरूप बनाई गई थी ताकि राज्य को उसके हिस्से का अधिशेष जल प्राप्त हो सके। यह परियोजना अंतर्राज्यीय नदी जल समझौतों के कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसने क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि के विस्तार और खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका निभाई है।

72. (A) चूरू और हनुमानगढ़
राजीव गांधी सिद्धमुख-नोहर परियोजना का सीधा लाभ राजस्थान के दो प्रमुख जिलों चूरू और हनुमानगढ़ को प्राप्त होता है। हनुमानगढ़ जिले की नोहर और भादरा तहसीलों के साथ-साथ चूरू जिले की राजगढ़ और तारानगर तहसीलों में इस परियोजना के माध्यम से सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इन क्षेत्रों में पहले सिंचाई के साधनों का अभाव था, लेकिन इस नहर के आने से वहाँ की बंजर भूमि अब लहलहाते खेतों में बदल गई है। यह परियोजना इन जिलों की ग्रामीण समृद्धि और कृषि विकास के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है।

73. (A) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में मध्यम सिंचाई परियोजनाएं क्षेत्रीय स्तर पर कृषि को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत प्रभावी हैं। उदयपुर जिले में सोम कागदर परियोजना माही की सहायक नदी पर स्थित है, जबकि भीलवाड़ा का प्रसिद्ध मेजा बाँध कोठारी नदी पर बना है। झालावाड़ जिले में छापी परियोजना स्थानीय किसानों की जलापूर्ति सुनिश्चित करती है। इसी प्रकार कोटा जिले में सावन भादो परियोजना चंबल बेसिन के जल का उपयोग कर सिंचाई की आवश्यकताओं को पूरा करती है। ये सभी परियोजनाएं संबंधित जिलों के विशिष्ट भौगोलिक परिदृश्य के अनुरूप विकसित की गई हैं।

74. (A) सोम कमला अम्बा - डूंगरपुर
राजस्थान की मध्यम सिंचाई परियोजनाओं का सही मिलान करना उनके भौगोलिक स्थान को समझने के लिए आवश्यक है। 'सोम कमला अम्बा' परियोजना डूंगरपुर जिले में स्थित है जो वहां की जनजातीय आबादी के लिए सिंचाई का मुख्य साधन है। अन्य विकल्पों में दी गई परियोजनाएं जैसे ओराई और जाखम क्रमशः चित्तौड़गढ़ और प्रतापगढ़ जिलों से संबंधित हैं, न कि बीकानेर या जयपुर से। इसी प्रकार परवन परियोजना का संबंध बारां और झालावाड़ क्षेत्र से है। अतः सोम कमला अम्बा और डूंगरपुर का मेल पूरी तरह से सही और तथ्यपूर्ण है।

75. (A) I, II और V
राजस्थान की दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी स्थलाकृति जिसमें भीलवाड़ा, उदयपुर और चित्तौड़गढ़ जैसे जिले शामिल हैं, तालाबों के माध्यम से सिंचाई के लिए अत्यंत उपयुक्त है। यहाँ की कठोर पथरीली जमीन और पहाड़ी ढाल वर्षा जल को प्राकृतिक गड्ढों या निर्मित तालाबों में संचित करने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं। इसके विपरीत पश्चिमी राजस्थान के रेतीले जिलों में जल का रिसाव अधिक होने के कारण बड़े सिंचाई तालाब बनाना कठिन होता है। अतः इन दक्षिणी जिलों में तालाब सिंचाई की परंपरा आज भी कृषि उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण है।

76. (B) प्रवाह नहरें गुरुत्वाकर्षण का उपयोग करती हैं, जबकि लिफ्ट नहरों में ढाल के विरुद्ध जल पंप करने की आवश्यकता होती है।
नहर सिंचाई के अंतर्गत 'प्रवाह नहर' और 'उत्थापक नहर' के बीच मुख्य अंतर जल के संचलन की तकनीक में निहित है। प्रवाह नहरों में जल स्वाभाविक रूप से भूमि के ढाल के अनुसार गुरुत्वाकर्षण शक्ति के माध्यम से बहता है जिसके लिए किसी अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत उत्थापक नहरों का निर्माण वहां किया जाता है जहां सिंचित की जाने वाली भूमि नहर के जल स्तर से ऊँची होती है। ऐसी

NODIA

(1) लौह अयस्क
(2) रॉक फास्फेट
(3) टंगस्टन
(4) सीसा और जस्ता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. राजस्थान में तांबा खनन और प्रसंस्करण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स झुंझुनू जिले में स्थापित है।
II. राज्य में तांबा निष्कर्षण के लिए सिंघाना खदानें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
III. राजस्थान तांबा उत्पादन में एकाधिकार रखता है और भारत में एकमात्र उत्पादक है।
IV. खेतड़ी बेल्ट में तांबा निक्षेप मुख्य रूप से चालकोपाइराइट के रूप में पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. राजस्थान में लौह अयस्क निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) ओडिशा और झारखंड जैसे राज्यों की तुलना में राजस्थान में लौह अयस्क के अपेक्षाकृत सीमित भंडार हैं
(2) जयपुर में मोरिजा-बानोल क्षेत्र राज्य में लौह अयस्क का एक महत्वपूर्ण स्रोत है
(3) राजस्थान में लौह अयस्क के भंडार मुख्य रूप से उच्चतम श्रेणी की मैग्नेटाइट किस्म के हैं
(4) भीलवाड़ा जिले के पुर-बनेरा क्षेत्र में उल्लेखनीय लौह अयस्क भंडार हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. राजस्थान की खनिज नीति और खनन क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राजस्थान खनिज नीति का प्राथमिक उद्देश्य शून्य-अपशिष्ट खनन और सतत विकास को बढ़ावा देना है।
II. अरावली क्षेत्र में अवैध खनन, नीति द्वारा संबोधित एक प्रमुख पारिस्थितिक चुनौती रही है।
III. नीति पारंपरिक मैन्युअल खनन कार्यों की रक्षा के लिए आधुनिक तकनीक के उपयोग को हतोत्साहित करती है।
IV. निम्न-श्रेणी के अयस्कों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए खनिज सज्जीकरण को बढ़ावा दिया जाता है।
V. राज्य पर्यावरणीय मंजूरी के भाग के रूप में खनन क्षेत्रों की बहाली सुनिश्चित करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. चित्तौड़गढ़, कोटा और नागौर जैसे जिलों में सीमेंट उद्योग का अत्यधिक जमाव निम्नलिखित में से किस खनिज की प्रचुर उपलब्धता का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(1) रॉक फास्फेट
(2) जिप्सम
(3) अभ्रक
(4) चूना पत्थर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प जिप्सम निक्षेपों की प्रचुरता और उत्पादन के आधार पर राजस्थान के जिलों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(1) बीकानेर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर
(2) नागौर, जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर
(3) बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, बीकानेर
(4) जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में एक प्रमुख सीसा-जस्ता खनन क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है?
(1) जावर
(2) राजपुरा-दरीबा
(3) खो-दरीबा
(4) रामपुरा-आगुचा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

14. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (तांबा खदानें)
A. खेतड़ी-सिंघाना
B. खो-दरीबा
C. पुर-दरीबा
D. भगोत-का-बास
सूची II: (जिला)
i. अलवर
ii. भीलवाड़ा
iii. झुंझुनू
iv. सीकर
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में अधात्विक खनिजों और उनके प्रमुख निक्षेप क्षेत्र के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान करें:
(1) रॉक फास्फेट — झामरकोटड़ा
(2) जिप्सम — मोरिजा-बानोल

(3) अभ्रक — मकराना
(4) चूना पत्थर — डेगाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल के निर्माण में प्रयुक्त विश्व प्रसिद्ध सफेद संगमरमर मुख्य रूप से राजस्थान के किस स्थान से प्राप्त किया गया था?
(1) राजसमंद
(2) मकराना
(3) ऋषभदेव
(4) भैंसलाना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान के खनन क्षेत्र में खनिज सज्जीकरण (बेनिफिसिएशन) पर निरंतर बल देने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) विशेष खनन कार्यों के अंतर्गत राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र को बढ़ाना
(2) निम्न-श्रेणी के खनिज अयस्कों को औद्योगिक मानकों के अनुसार उन्नत बनाना
(3) धात्विक खनिज संसाधनों के निष्कर्षण और शोधन को पूर्णतः रोकना
(4) यह सुनिश्चित करना कि सभी खनिजों का निर्यात केवल उनकी प्राकृतिक अवस्था में किया जाए
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख खनिज खनन केंद्रों पर विचार करें और उन्हें उत्तर से दक्षिण के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. खेतड़ी (झुंझुनू)
II. रामपुरा-आगुचा (भीलवाड़ा)
III. जावर (उदयपुर)
IV. राजपुरा-दरीबा (राजसमंद)
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(1) I, II, IV, III
(2) I, IV, II, III
(3) II, I, III, IV
(4) IV, III, II, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
कथन I: भीलवाड़ा और अजमेर राजस्थान के प्रमुख अभ्रक उत्पादक जिले हैं।
कथन II: राजस्थान के अभ्रक का उपयोग इसके उत्कृष्ट विद्युत-रोधी गुणों के कारण मुख्य रूप से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में किया जाता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. भारत के लाल किले और संसद भवन जैसे ऐतिहासिक स्मारकों के निर्माण में प्रयुक्त लाल बलुआ पत्थर मुख्य रूप से राजस्थान के किन जिलों से निकाला जाता है?
(1) उदयपुर और राजसमंद
(2) जैसलमेर और बाड़मेर
(3) जालौर और सिरोही
(4) धौलपुर और भरतपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजस्थान में जिप्सम खनन उत्तर भारत में अत्यधिक कृषि महत्व रखता है।
कारण (R): क्षारीय और लवणीय भूमि के सुधार के लिए जिप्सम का व्यापक रूप से मृदा संशोधक के रूप में उपयोग किया जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. राजस्थान में लौह अयस्क वितरण के संबंध में सही कथन की पहचान करें:
(1) राजस्थान भारतीय उपमहाद्वीप में उच्च श्रेणी के लौह अयस्क का अग्रणी उत्पादक है
(2) जयपुर, दौसा और भीलवाड़ा जिलों में राज्य के सबसे महत्वपूर्ण लौह अयस्क भंडार हैं
(3) राजस्थान में लौह अयस्क के भंडार केवल पश्चिमी रेगिस्तानी जिलों तक ही सीमित हैं
(4) राजस्थान में निकाला गया लौह अयस्क घरेलू उपयोग के बिना विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (अधात्विक खनिज)
A. जिप्सम
B. रॉक फास्फेट
C. अभ्रक
D. चूना पत्थर
सूची II: (प्रमुख उत्पादक जिला)
i. उदयपुर
ii. बीकानेर
iii. चित्तौड़गढ़

Downloaded from www.pdf.tube

iv. भीलवाड़ा
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. एक सीमेंट निर्माण कंपनी कच्चे माल की परिवहन लागत को कम करने के लिए राजस्थान में एक नया संयंत्र स्थापित करना चाहती है। चूना पत्थर निक्षेपों की प्रचुरता के कारण निम्नलिखित में से कौन सा जिला इस उद्देश्य के लिए आदर्श है?
(1) चित्तौड़गढ़
(2) बाड़मेर
(3) जैसलमेर
(4) चूरु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में टंगस्टन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. टंगस्टन एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण खनिज है जिसका उपयोग विशेष कठोर इस्पात मिश्र धातु बनाने में किया जाता है।
II. नागौर में डेगाना निक्षेप को विश्व युद्धों के दौरान इसकी रणनीतिक उपयोगिता के लिए विकसित किया गया था।
III. अरावली श्रेणी के सभी जिलों में टंगस्टन का खनन बड़े पैमाने पर किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. ऐतिहासिक जावर खदानों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. ये उदयपुर जिले में स्थित हैं।
II. इनमें प्राचीन जस्ता आसवन (डिस्टिलेशन) प्रक्रियाओं के ऐतिहासिक अवशेष उपलब्ध हैं।
III. ये निक्षेप पूर्णतः समाप्त हो चुके हैं और वर्तमान में इनका कोई परिचालन महत्व नहीं है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. राजस्थान में बलुआ पत्थर के निक्षेपों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. धौलपुर का बलुआ पत्थर अपने अनूठे लाल और गुलाबी रंगों के लिए प्रसिद्ध है।
II. भरतपुर क्षेत्र में भवन निर्माण श्रेणी के बलुआ पत्थर के महत्वपूर्ण भंडार हैं।
III. बलुआ पत्थर मौलिक रूप से एक प्रकार की अवसादी चट्टान है।
IV. इन जिलों में बलुआ पत्थर के खनन से पर्याप्त प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

28. राजस्थान में महत्वपूर्ण अभ्रक भंडार और अभ्रक-ईंट निर्माण के लिए जाने जाने वाले जिलों के संबंध में विषम का चयन करें:
(1) भीलवाड़ा
(2) जैसलमेर
(3) अजमेर
(4) टोंक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. राजस्थान में ग्रेनाइट वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. ग्रेनाइट एक अंतर्वेधी आग्नेय चट्टान है जो राजस्थान के कई जिलों में विस्तृत रूप से पाई जाती है।
II. जालौर को राजस्थान के 'ग्रेनाइट सिटी' के रूप में मान्यता प्राप्त है।
III. राजस्थान में ग्रेनाइट उद्योग केवल काले ग्रेनाइट के उत्पादन तक सीमित है।
IV. ग्रेनाइट खनन में बड़े ब्लॉकों को निकालने के लिए आधुनिक मशीनीकृत वायर-सॉ तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
V. बाड़मेर और सिरोही भी विविध ग्रेनाइट निक्षेपों के लिए उल्लेखनीय जिले हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान में चूना पत्थर के निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) राजस्थान के पश्चिमी शुष्क रेगिस्तानी जिलों में चूना पत्थर पूर्णतः अनुपस्थित है
(2) चूना पत्थर को भूवैज्ञानिकों द्वारा मुख्य रूप से धात्विक सीसा और जस्ता के अयस्क के रूप में वर्गीकृत किया गया है
(3) राजस्थान सीमेंट उद्योग के लिए चूना पत्थर की अपनी

अध्याय 25

खनिज : धात्विक एवं अधात्विक

1. राजस्थान की खनिज संपदा के राष्ट्रीय महत्व को निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक रूप से दर्शाता है?
   (1) राजस्थान भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग सभी अधात्विक खनिजों का एकमात्र उत्पादक है
   (2) अपनी विविध और विशाल खनिज संपदा के कारण राजस्थान को 'खनिजों का अजायबघर' कहा जाता है
   (3) राजस्थान में कोयला, लिग्नाइट और पेट्रोलियम के देश के सबसे बड़े संयुक्त भंडार हैं
   (4) भारत के कुल धात्विक खनिज उत्पादन में राजस्थान का अस्सी प्रतिशत से अधिक योगदान है
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
   नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
   कथन (A): नागौर जिले की डेगाना खदानें भारत में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण खनिज निक्षेप का प्रतिनिधित्व करती हैं।
   कारण (R): राजस्थान में भारत का एकमात्र प्रमुख व्यवहार्य टंगस्टन निक्षेप है, जो मुख्य रूप से वुल्फ्रामाइट अयस्क के रूप में पाया जाता है।
   (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (3) A सही है लेकिन R गलत है।
   (4) A गलत है लेकिन R सही है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
   कथन I: रामपुरा-आगुचा को विश्व स्तर पर विश्व की सबसे बड़ी जस्ता खदानों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
   कथन II: रामपुरा-आगुचा खदान राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित है।
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
   सूची I: (खनिज)
   A. सीसा और जस्ता
   B. तांबा
   C. टंगस्टन
   D. लौह अयस्क
   सूची II: (राजस्थान में प्रमुख खनन क्षेत्र)
   i. मोरिजा-बानोल
   ii. डेगाना
   iii. खेतड़ी
   iv. जावर
   (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान में धात्विक या अधात्विक खनिजों के रूप में उनके वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित खनिजों में से विषम का चयन करें:
   (1) सीसा
   (2) जस्ता
   (3) जिप्सम
   (4) तांबा
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजस्थान में सीसा और जस्ता निक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   I. जावर खदानों में जस्ता प्रगलन के विश्व के सबसे पुराने ऐतिहासिक साक्ष्य मौजूद हैं।
   II. राजपुरा-दरीबा राजसमंद जिले में स्थित एक प्रमुख सीसा-जस्ता खनन क्षेत्र है।
   III. रामपुरा-आगुचा मुख्य रूप से लौह अयस्क के अपने व्यापक भूमिगत खनन कार्यों के लिए जाना जाता है।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान में, चांदी मुख्य रूप से स्वतंत्र चांदी की खानों से प्राप्त नहीं होती है, बल्कि निम्नलिखित में से किस खनिज अयस्क के प्रसंस्करण के दौरान एक मूल्यवान सह-उत्पाद के रूप में प्राप्त होती है?

Click Here to Buy book on Amazon

(2) राजस्थान सरकार पूरे भारत में सभी खनन निगमों का स्वामित्व और प्रबंधन करती है
(3) राजस्थान खनिज निष्कर्षण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को पूर्णतः प्रतिबंधित करता है
(4) राजस्थान सीसा, जस्ता और वोलास्टोनाइट जैसे खनिजों में लगभग 100% उत्पादन हिस्सेदारी रखता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. जैसलमेर जिले में रॉक फास्फेट के निक्षेप भौगोलिक रूप से निम्नलिखित में से किस प्रमुख क्षेत्र में केंद्रित हैं?
(1) बिरमानिया और फतेहगढ़
(2) झामरकोटड़ा और माटोन
(3) जावर और मोचिया
(4) मोरिजा और बानोल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजस्थान में अभ्रक खनन उद्योग को पिछले कुछ दशकों में महत्वपूर्ण आर्थिक गिरावट का सामना करना पड़ा है।
कारण (R): कृत्रिम विकल्पों और वैकल्पिक विद्युत-रोधी सामग्रियों के आने से प्राकृतिक अभ्रक की वैश्विक औद्योगिक मांग काफी कम हो गई है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. राजस्थान में ग्रेनाइट के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) राजस्थान में ग्रेनाइट निक्षेप मुख्य रूप से अवसादी संरचनाएं हैं जो केवल थार मरुस्थल में पाई जाती हैं
(2) ग्रेनाइट में उच्च संपीड़न शक्ति होती है जो इसे भारी निर्माण और फर्श के लिए उत्तम बनाती है
(3) ग्रेनाइट का प्रसंस्करण और पॉलिशिंग जालौर और किशनगढ़ जैसे जिलों में एक प्रमुख द्वितीयक उद्योग है
(4) अरावली और इसके समीपवर्ती क्षेत्रों में विभिन्न रंगों के ग्रेनाइट के महत्वपूर्ण भंडार पाए जाते हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (लौह अयस्क खनन क्षेत्र)
A. मोरिजा-बानोल
B. नाथरा-की-पाल
C. नीमला-रायसेला
D. चोमू-सामोद
सूची II: (जिला)
i. उदयपुर
ii. दौसा
iii. जयपुर
iv. जयपुर (ग्रामीण)
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

44. धौलपुर और भरतपुर के बलुआ पत्थर के विशिष्ट गुण, जो उन्हें स्थापत्य कला के लिए उपयुक्त बनाते हैं, उनमें किसके अतिरिक्त अन्य सभी सम्मिलित हैं?
(1) उच्च स्थायित्व
(2) कांच के समान अत्यधिक पारदर्शिता
(3) नक्काशी और जटिल मूर्तिकला में सुगमता
(4) एकसमान बनावट और आकर्षक प्राकृतिक रंग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. राजस्थान में चांदी के उत्पादन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. चांदी मुख्य रूप से जस्ता और सीसा सांद्र के प्रगलन (स्मेल्टिंग) के दौरान प्राप्त की जाती है।
II. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड राज्य में चांदी की प्राप्ति के लिए उत्तरदायी प्रमुख इकाई है।
III. राजस्थान भारत की कुल चांदी का केवल 1% से कम उत्पादन करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. राजस्थान में निम्नलिखित खनिज निक्षेपों की प्राप्ति की अवस्था (mode of occurrence) के संबंध में विषम का चयन करें:
(1) जिप्सम
(2) रॉक फास्फेट
(3) चूना पत्थर
(4) तांबा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. राजस्थान में खनन क्षेत्र के समक्ष चुनौतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उच्च श्रेणी के अयस्कों की कमी के कारण उद्योगों को निम्न-श्रेणी के अयस्कों के सज्जीकरण पर निर्भर रहना पड़ता है।
II. कठोर पर्यावरणीय नियमों के कारण खनन परियोजनाओं को जटिल मंजूरी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है।

III. अनियमित और अवैध खनन से राज्य के राजस्व को हानि होती है।
IV. खनन क्षेत्र को स्थानीय समुदायों से भूमि अधिग्रहण के संबंध में कोई समस्या नहीं होती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. राजस्थान में चांदी उत्पादन केंद्र भौगोलिक रूप से सीसा-जस्ता प्रगालकों (स्मेल्टर्स) के पास ही क्यों स्थित हैं?
(1) चांदी सीसा और जस्ता अयस्कों को पिघलाने के लिए एक आवश्यक उत्प्रेरक है
(2) चांदी इन खानों से निकाले गए गैलेना और स्फेलेराइट अयस्कों के साथ प्राकृतिक रूप से मिश्रित होती है
(3) सीसा और जस्ता गलाने से अत्यधिक शीतलता उत्पन्न होती है जो चांदी को संघनित करने के लिए आवश्यक है
(4) राज्य सरकार प्रशासनिक सुगमता के लिए एक ही स्थान पर स्थापना को अनिवार्य करती है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. राजस्थान की खनिज संपदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राजस्थान में देश में खनन पट्टों (लीज़) की संख्या सर्वाधिक है।
II. राज्य धात्विक और अधात्विक दोनों खनिजों के व्यापक निक्षेपों से संपन्न है।
III. राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में खनन का योगदान नगण्य है।
IV. अरावली पर्वत श्रृंखला में राज्य के अधिकांश धात्विक खनिज पाए जाते हैं।
V. जिप्सम और चूना पत्थर जैसे अधात्विक खनिज मुख्य रूप से पश्चिमी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. निम्नलिखित में से कौन सा स्थान राजस्थान में लौह अयस्क खनन क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है?
(1) रामपुरा-आगुचा
(2) मोरिजा-बानोल
(3) नाथरा-की-पाल
(4) थूर-हुंडेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. खेतड़ी जैसे परिसरों में उपयोग की जाने वाली तांबा निष्कर्षण की सही अनुक्रमिक प्रक्रिया कौन सी है?
(1) खनन → प्रगलन → पेषण (क्रशिंग) → शोधन
(2) खनन → पेषण (क्रशिंग) → प्रगलन → शोधन
(3) प्रगलन → खनन → शोधन → पेषण (क्रशिंग)
(4) पेषण (क्रशिंग) → प्रगलन → खनन → शोधन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
कथन I: सीमेंट ग्रेड का चूना पत्थर पोर्टलैंड सीमेंट के निर्माण के लिए प्राथमिक कैल्शियम युक्त कच्चे माल के रूप में कार्य करता है।
कथन II: गुणवत्तापूर्ण चूना पत्थर की कमी के कारण राजस्थान भारत में सीमेंट के सबसे कम उत्पादकों में से एक है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (खनिज)
A. रॉक फास्फेट
B. जिप्सम
C. टंगस्टन
D. चूना पत्थर

सूची II: (औद्योगिक अनुप्रयोग)
i. मृदा सुधार और प्लास्टर ऑफ पेरिस
ii. सुपर फास्फेट उर्वरक
iii. सीमेंट निर्माण
iv. हाई-स्पीड कटिंग स्टील और फिलामेंट

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. पुर-बनेरा और तिरंगा पहाड़ियां, जिनमें लौह अयस्क के सीमित भंडार हैं, राजस्थान के किस जिले में स्थित हैं?
(1) जयपुर
(2) भीलवाड़ा
(3) दौसा
(4) सीकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. खनिज और राजस्थान में उसके प्रमुख निक्षेप का सही सुमेलित युग्म कौन सा है?
(1) सीसा-जस्ता — मकराना (नागौर)
(2) तांबा — झामरकोटड़ा (उदयपुर)

Downloaded from www.pdf.tube

(3) लौह अयस्क — सानू (जैसलमेर)
(4) टंगस्टन — डेगाना (नागौर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. मकराना संगमरमर के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) यह एशिया का पहला पत्थर संसाधन था जिसे IUGS द्वारा 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' के रूप में नामित किया गया था
(2) यह पश्चिमी जिलों में पाई जाने वाली अवसादी चट्टान की एक काली किस्म है
(3) मकराना संगमरमर के भंडार पूर्णतः समाप्त हो गए हैं और खनन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है
(4) इसका उपयोग मुख्य रूप से कृषि उर्वरकों के निर्माण के लिए किया जाता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थान में सीसा और जस्ता क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. रामपुरा-आगुचा
II. राजपुरा-दरीबा
III. जावर
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(1) I, II, III
(2) III, II, I
(3) II, I, III
(4) I, III, II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. उदयपुर और जैसलमेर क्षेत्रों से रॉक फास्फेट का निष्कर्षण किस वस्तु के उत्पादन की राष्ट्रीय आवश्यकता द्वारा न्यायसंगत है?
(1) फास्फेट उर्वरक (SSP और DAP)
(2) पोर्टलैंड सीमेंट
(3) इलेक्ट्रिकल इंसुलेटर
(4) इस्पात भट्टियों के लिए अपवर्तक ईंटें
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जैसलमेर जिले में पाए जाने वाले रॉक फास्फेट निक्षेपों की प्रकृति को सही दर्शाता है?
(1) ये उच्च श्रेणी के निक्षेप हैं जो अरावली की गहरी परतों में पाए जाते हैं
(2) ये प्राचीन धातुकर्म प्रक्रियाओं के माध्यम से बनाए गए कृत्रिम फास्फेट हैं
(3) ये संरचनात्मक रूप से दक्षिण भारत के क्रिस्टलीय एपेटाइट निक्षेपों के समान हैं
(4) ये निम्न-श्रेणी के अवसादी फास्फेटिक नोड्यूल्स हैं जो मुख्य रूप से बिरमानिया क्षेत्र में पाए जाते हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

60. कृषि में जिप्सम का प्रयोग निम्नलिखित में से किस रासायनिक क्रिया पर निर्भर करता है?
(1) मिट्टी में अतिरिक्त सोडियम आयन जोड़कर इसकी क्षारीयता को बढ़ाने की क्षमता
(2) सोडियम आयनों को कैल्शियम आयनों के साथ बदलने की इसकी क्षमता, जिससे मिट्टी की संरचना में सुधार होता है
(3) इसकी उच्च नाइट्रोजन सामग्री जो फसलों के लिए विकास हार्मोन के रूप में कार्य करती है
(4) पानी के साथ इसकी ऊष्माक्षेपी अभिक्रिया जो मिट्टी को गर्म कर देती है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): उदयपुर के झामरकोटड़ा में रॉक फास्फेट के लिए सज्जीकरण संयंत्र (बेनिफिसिएशन प्लांट) स्थापित किए गए हैं।
कारण (R): स्थानीय रॉक फास्फेट अयस्क में सिलिका और डोलोमाइट अशुद्धियों का उच्च स्तर होता है जिन्हें उर्वरक श्रेणी के लिए उन्नत करने हेतु हटाना आवश्यक है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. राजस्थान में चांदी के खनन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) चांदी एक बहुमूल्य धातु है जिसे सीसा और जस्ता के उप-उत्पाद के रूप में निकाला जाता है
(2) जावर खदानों में चांदी युक्त अयस्कों के निष्कर्षण का ऐतिहासिक रिकॉर्ड है
(3) चांदी की उपस्थिति सीसा-जस्ता खनन कार्यों की आर्थिक व्यवहार्यता को बढ़ाती है
(4) थार रेगिस्तान में राजस्थान के पास स्वतंत्र, अत्यंत बड़ी शुद्ध चांदी की खदानें हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (प्रसिद्ध खनन क्षेत्र)
A. झामरकोटड़ा
B. मकराना
C. रामपुरा-आगुचा
D. खेतड़ी
सूची II: (संबंधित खनिज)
i. संगमरमर

सुगमता के कारण स्थापत्य कला में अत्यधिक लोकप्रिय है। धौलपुर का पत्थर अपने विशेष गुलाबी और लाल रंग के लिए जाना जाता है, जो सदियों से ऐतिहासिक और आधुनिक निर्माण परियोजनाओं की पहली पसंद रहा है।

21. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में जिप्सम का खनन उत्तरी भारत के कृषि क्षेत्र के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका उपयोग मृदा सुधारक के रूप में किया जाता है। क्षारीय और लवणीय भूमि की उर्वरता वापस लाने के लिए जिप्सम एक प्रभावी संशोधन सामग्री है, जो मिट्टी की रासायनिक संरचना में सुधार करती है। चूँकि राजस्थान में जिप्सम के विशाल भंडार उपलब्ध हैं, इसलिए यह कृषि उत्पादकता बढ़ाने और बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

22. (2) जयपुर, दौसा और भीलवाड़ा जिलों में राज्य के सबसे महत्वपूर्ण लौह अयस्क भंडार हैं
राजस्थान में लौह अयस्क का वितरण मुख्य रूप से जयपुर, दौसा और भीलवाड़ा जिलों के विशिष्ट क्षेत्रों में पाया जाता है। जयपुर का मोरिजा-बानोल, दौसा का नीमला-रायसेला और भीलवाड़ा का पुर-बनेरा क्षेत्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यद्यपि राजस्थान के भंडार अन्य खनिज संपन्न राज्यों की तुलना में कम हैं, फिर भी ये स्थानीय उद्योगों की मांग पूरी करने में सक्षम हैं। यह कहना गलत है कि ये भंडार केवल पश्चिमी रेगिस्तान तक सीमित हैं।

23. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
अधात्विक खनिजों का जिला-वार वितरण राज्य की औद्योगिक संरचना को निर्धारित करता है। जिप्सम का सर्वाधिक उत्पादन बीकानेर क्षेत्र में होता है, जो कृषि और निर्माण के लिए आवश्यक है। रॉक फास्फेट के विशाल निक्षेप उदयपुर के झामरकोटड़ा में केंद्रित हैं, जबकि अभ्रक का प्रमुख केंद्र भीलवाड़ा जिला है। चूना पत्थर की प्रचुरता चित्तौड़गढ़ जिले में पाई जाती है, जिसके कारण वहां सीमेंट उद्योग का व्यापक विकास हुआ है। यह मिलान खनिजों की उपलब्धता को स्पष्ट करता है।

24. (1) चित्तौड़गढ़
चित्तौड़गढ़ जिला सीमेंट निर्माण संयंत्र स्थापित करने के लिए सबसे आदर्श स्थान है क्योंकि यहाँ सीमेंट ग्रेड के चूना पत्थर के प्रचुर भंडार उपलब्ध हैं। सीमेंट उद्योग में चूना पत्थर एक भारी कच्चा माल है, जिसकी परिवहन लागत अधिक होती है, इसलिए संयंत्रों को खदानों के समीप स्थापित करना आर्थिक रूप से लाभकारी होता है। चित्तौड़गढ़ की भूवैज्ञानिक संरचना उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करती है, जो राज्य के औद्योगिक विकास के लिए अनिवार्य शर्त है।

25. (1) केवल I और II
टंगस्टन एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक खनिज है जिसका मुख्य उपयोग उच्च गति वाले स्टील और कठोर मिश्र धातुओं के निर्माण में किया जाता है। नागौर जिले के डेगाना में स्थित रेवत पहाड़ी के निक्षेपों को विश्व युद्धों के दौरान उनकी रणनीतिक महत्ता के कारण विकसित किया गया था। यद्यपि यह अरावली क्षेत्र में पाया जाता है, किंतु इसका बड़े पैमाने पर खनन अरावली के सभी जिलों में नहीं होता, बल्कि यह केवल कुछ विशिष्ट स्थानों तक ही सीमित है।

26. (3) केवल III
उदयपुर जिले में स्थित जावर खदानें ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ प्राचीन जस्ता आसवन प्रक्रियाओं के अद्वितीय अवशेष मिले हैं। यह कहना गलत है कि ये निक्षेप पूरी तरह समाप्त हो चुके हैं या इनका वर्तमान में कोई परिचालन महत्व नहीं है। वास्तव में, आधुनिक तकनीकों के साथ यहाँ आज भी सक्रिय रूप से खनन कार्य किया जा रहा है, जिससे यह क्षेत्र वर्तमान अर्थव्यवस्था और इतिहास दोनों के लिए प्रासंगिक बना हुआ है।

27. (2) केवल I, II और IV
धौलपुर का बलुआ पत्थर अपने सुंदर लाल और गुलाबी रंगों के लिए जाना जाता है, जबकि भरतपुर में भवन निर्माण के लिए उपयुक्त पत्थर के विशाल भंडार हैं। इन क्षेत्रों में पत्थर के खनन और प्रसंस्करण से स्थानीय आबादी को बड़े पैमाने पर रोजगार प्राप्त होता है। बलुआ पत्थर एक अवसादी चट्टान है, और इसकी उपयोगिता मुख्य रूप से निर्माण क्षेत्र में है। अतः प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ कथन सही हैं, जो इस खनिज के आर्थिक और भौतिक स्वरूप को दर्शाते हैं।

28. (2) जैसलमेर
भीलवाड़ा, अजमेर और टोंक राजस्थान के प्रमुख अभ्रक उत्पादक जिले हैं, जहाँ इस खनिज का खनन और उससे संबंधित ईंट निर्माण उद्योग स्थापित हैं। भीलवाड़ा को विशेष रूप से 'अभ्रक सिटी' के रूप में भी जाना जाता है। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला मुख्य रूप से चूना पत्थर, रॉक फास्फेट और प्राकृतिक गैस के भंडारों के लिए प्रसिद्ध है, और यहाँ अभ्रक के कोई महत्वपूर्ण वाणिज्यिक भंडार नहीं पाए जाते हैं। अतः जैसलमेर इस समूह में विषम है।

29. (2) केवल I, II, IV और V
ग्रेनाइट एक कठोर आग्नेय चट्टान है जो राजस्थान के जालौर, बाड़मेर और सिरोही जैसे जिलों में प्रचुरता से पाई जाती है। जालौर को अपनी उच्च गुणवत्ता और उत्पादन के कारण 'ग्रेनाइट सिटी' कहा जाता है। आधुनिक समय में बड़े ब्लॉकों को निकालने हेतु मशीनीकृत तकनीकों का उपयोग बढ़ गया है। राजस्थान में ग्रेनाइट केवल काले रंग तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ गुलाबी, पीले और लाल जैसे विविध रंगों के आकर्षक ग्रेनाइट निक्षेप उपलब्ध हैं।

30. (4) जैसलमेर का सानू क्षेत्र उच्च श्रेणी के स्टील मेल्टिंग शॉप (SMS) चूना पत्थर के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है
जैसलमेर जिले का सानू क्षेत्र अपनी उच्च गुणवत्ता वाले 'स्टील मेल्टिंग शॉप' अर्थात् एसएमएस ग्रेड चूना पत्थर के लिए विख्यात है, जिसका उपयोग इस्पात उद्योग में अशुद्धियों को हटाने हेतु किया जाता है। चूना पत्थर एक अधात्विक खनिज है, न कि धात्विक अयस्क। राजस्थान में इसके विशाल भंडार

Click Here to Buy book on Amazon

(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. राजस्थान में तांबे के निक्षेप और उसके संबंधित जिले के सही सुमेलित युग्म की पहचान करें:
(1) खो-दरीबा – अलवर
(2) पुर-बनेरा – जैसलमेर
(3) भगोत-का-बास – बीकानेर
(4) बीदासर – उदयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. सूची I की मदों का सूची II के साथ मिलान करें और दिए गए विकल्पों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
सूची I: (पत्थर का प्रकार)
A. सफेद संगमरमर
B. लाल बलुआ पत्थर
C. पीला चूना पत्थर
D. ग्रेनाइट
सूची II: (प्रमुख क्षेत्र)
i. जालौर
ii. मकराना
iii. धौलपुर
iv. जैसलमेर
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. राजस्थान में हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड (HCL) की प्रमुख इकाइयां किस स्थान पर स्थित हैं?
(1) खेतड़ी
(2) जावर
(3) देबारी
(4) चंदेरिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उदयपुर में जावर क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को सही पहचानता है?
(1) यह एशिया में पहला वाणिज्यिक यूरेनियम निष्कर्षण केंद्र था
(2) यह मुगल साम्राज्य के लिए हीरों का एकमात्र स्रोत था
(3) यह विश्व की सबसे बड़ी कोयला खदान है
(4) इसमें वैश्विक जस्ता आसवन (Zinc distillation) के प्राचीनतम प्रमाण हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. राजस्थान में निम्न-श्रेणी के खनिज अयस्कों की चुनौतियों से निपटने के लिए सबसे उपयुक्त समाधान क्या है?
(1) सभी विदेशी खनिजों पर भारी आयात शुल्क लगाना
(2) उन्नत खनिज सज्जीकरण (बेनिफिसिएशन) और धातुकर्म अनुसंधान में निवेश करना
(3) सभी धात्विक खनिजों के निष्कर्षण को पूर्णतः बंद कर देना
(4) कार्यबल को केवल नदी की रेत के निष्कर्षण की ओर स्थानांतरित करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. विशिष्ट खनिज और उस जिले के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान करें जहाँ वह पाया जाता है:
(1) जिप्सम – बीकानेर
(2) रॉक फास्फेट – उदयपुर
(3) टंगस्टन – जैसलमेर
(4) चूना पत्थर – चित्तौड़गढ़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. बाड़मेर जिले के कवास और उत्तरलाई क्षेत्र किस अधात्विक खनिज के भंडार के लिए पहचाने जाते हैं?
(1) अभ्रक
(2) टंगस्टन
(3) लौह अयस्क
(4) जिप्सम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. राजस्थान की खनिज नीतियों में "सतत खनन" का मौलिक उद्देश्य किन दो कारकों के बीच संतुलन बनाना है?
(1) आर्थिक खनिज निष्कर्षण और पर्यावरणीय बहाली
(2) तत्काल राजस्व प्राप्ति के लिए वन क्षेत्र की सफ़ाई
(3) तकनीकी निवेश को कम कर बाल श्रम का उपयोग करना
(4) घरेलू खनिज उपयोग का पूर्ण निषेध और 100% निर्यात
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. राजस्थान में मुख्य रूप से किन प्रगलन (स्मेल्टिंग) केंद्रों में चांदी को सह-उत्पाद के रूप में प्राप्त किया जाता है?
(1) खेतड़ी कॉपर स्मेल्टर
(2) चंदेरिया और देबारी सीसा-जस्ता स्मेल्टर
(3) गोटन व्हाइट सीमेंट प्लांट
(4) सूरतगढ़ थर्मल पावर प्लांट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

ii. तांबा
iii. रॉक फास्फेट
iv. जस्ता
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. राजस्थान के बलुआ पत्थर के निक्षेप, जो जोधपुर, बूंदी और धौलपुर से प्राप्त होते हैं, किस प्रकार की चट्टान के रुप में वर्गीकृत हैं?
(1) अंतर्वेधी आग्नेय चट्टान
(2) अवसादी चट्टान
(3) बहिर्वेधी ज्वालामुखीय चट्टान
(4) कायांतरित चट्टान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थान में जिप्सम निक्षेपों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राजस्थान भारत के कुल जिप्सम उत्पादन का 80% से अधिक उत्पादन करता है।
II. नागौर का गोट-मांगलोद क्षेत्र जिप्सम खनन के लिए प्रमुख स्थल है।
III. जिप्सम का उपयोग प्लास्टर ऑफ पेरिस और पोर्टलैंड सीमेंट के निर्माण में किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. राजस्थान में इन खनिजों के स्थानिक वितरण के संबंध में विषम का चयन करें:
(1) समुद्री जिप्सम (बीकानेर-नागौर बेसिन)
(2) तांबा (खेतड़ी-सिंघाना बेल्ट)
(3) लौह अयस्क (मोरिजा-बानोल निक्षेप)
(4) सीसा-जस्ता (जावर-मोचिया खदानें)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. भीलवाड़ा और अजमेर में पाए जाने वाले अभ्रक के गुणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसमें उत्कृष्ट बेसल क्लीवेज होता है, जिससे इसे बहुत पतली परतों में विभाजित किया जा सकता है।
II. यह विद्युत का सुचालक है।
III. यह बहुत उच्च तापमान को सहन कर सकता है।
IV. यह साधारण पानी में घुलनशील है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

68. डेगाना खदानों से निकाले गए टंगस्टन की रणनीतिक उपयोगिता स्टील के साथ मिश्रित होने पर किस प्रभाव से उत्पन्न होती है?
(1) यह स्टील के गलनांक को काफी कम कर देता है
(2) यह स्टील को पारदर्शी सामग्री में बदल देता है
(3) यह स्टील को पूर्णतः चुंबकीय-प्रूफ बना देता है
(4) यह स्टील की कठोरता और उच्च तापमान पर प्रतिरोध को बढ़ाता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. राजस्थान में लौह अयस्क की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. निक्षेप अत्यधिक केंद्रित हैं और भारत में सबसे बड़े एकल लौह अयस्क बेल्ट हैं।
II. जयपुर-दौसा क्षेत्रों में हेमेटाइट लौह अयस्क का सबसे अधिक निकाला जाने वाला रूप है।
III. निक्षेपों की बिखरी हुई प्रकृति राज्य में बड़े एकीकृत इस्पात संयंत्रों की स्थापना को सीमित करती है।
IV. कुछ दक्षिणी जिलों में माइकेशियस हेमेटाइट पाया जाता है।
V. अधिकांश निक्षेपों की गुणवत्ता मध्यम से निम्न श्रेणी की है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल IV और V
(4) केवल I और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. निम्नलिखित में से कौन सा जिला राजस्थान में ग्रेनाइट के वाणिज्यिक उत्पादन से संबंधित नहीं है?
(1) जालौर
(2) जैसलमेर
(3) बाड़मेर
(4) सिरोही
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. दिए गए कथनों को पढ़ें और उपलब्ध विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें:
कथन I: खनिज नीति संगमरमर, ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर जैसे लघु खनिज क्षेत्रों के माध्यम से रोजगार सृजन पर बल देती है।
कथन II: नीति सभी पत्थर की खदानों के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का आदेश देती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है

बहाली अनिवार्य है। अरावली क्षेत्र में अवैध खनन एक गंभीर पारिस्थितिक चुनौती है जिसे नीति के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। निम्न-श्रेणी के अयस्कों के उपयोग हेतु खनिज सज्जीकरण को प्रोत्साहित किया जाता है। नीति आधुनिक तकनीक को हतोत्साहित नहीं करती, बल्कि खनन दक्षता और सुरक्षा बढ़ाने के लिए उसे बढ़ावा देती है।

11. (4) चूना पत्थर
चित्तौड़गढ़, कोटा और नागौर जिलों में सीमेंट उद्योग का सघन संकेंद्रण मुख्य रूप से वहां उपलब्ध चूना पत्थर के विशाल भंडारों के कारण है। चूना पत्थर सीमेंट निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कच्चा माल है, और इसकी स्थानीय उपलब्धता परिवहन लागत को कम करने में सहायक होती है। इन क्षेत्रों में सीमेंट ग्रेड के चूना पत्थर की प्रचुरता ने राजस्थान को भारत के अग्रणी सीमेंट उत्पादक राज्यों की श्रेणी में मजबूती से स्थापित किया है।

12. (1) बीकानेर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर
राजस्थान में जिप्सम का वितरण मुख्य रूप से पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी जिलों में केंद्रित है। उत्पादन और भंडार की प्रचुरता के आधार पर बीकानेर प्रथम स्थान पर है, जिसके बाद नागौर, बाड़मेर और जैसलमेर का क्रम आता है। बीकानेर की जामसर खदान ऐतिहासिक रूप से जिप्सम के सबसे बड़े स्रोतों में से एक रही है। यह खनिज कृषि और निर्माण उद्योगों के लिए अत्यंत उपयोगी है, जिससे इन जिलों का आर्थिक महत्व राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ जाता है।

13. (3) खो-दरीबा
राजस्थान के प्रमुख सीसा-जस्ता खनन क्षेत्रों में जावर, राजपुरा-दरीबा और रामपुरा-आगुचा अत्यंत प्रसिद्ध हैं। इसके विपरीत, खो-दरीबा मुख्य रूप से तांबा निक्षेपों के लिए जाना जाता है और अलवर जिले में स्थित है। जावर और रामपुरा-आगुचा जैसे क्षेत्रों ने राज्य को जस्ता उत्पादन में राष्ट्रीय स्तर पर एकाधिकार प्रदान किया है। अतः खो-दरीबा को सीसा-जस्ता खनन क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत करना तथ्यात्मक रूप से गलत है क्योंकि यह तांबा उत्पादन का विशिष्ट केंद्र है।

14. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
तांबा खदानों और उनके संबंधित जिलों का मिलान राज्य की भौगोलिक खनिज संपदा को स्पष्ट करता है। खेतड़ी-सिंघाना बेल्ट झुंझुनू जिले में स्थित है, जो तांबा निष्कर्षण का सबसे पुराना केंद्र है। खो-दरीबा अलवर जिले में पाया जाता है, जबकि पुर-दरीबा भीलवाड़ा जिले का महत्वपूर्ण खनन क्षेत्र है। इसी प्रकार, भगोत-का-बास सीकर जिले में स्थित है। यह वितरण अरावली पर्वत श्रृंखला के विभिन्न हिस्सों में तांबे की व्यापक उपस्थिति को दर्शाता है।

15. (1) रॉक फास्फेट — झामरकोटड़ा
उदयपुर जिले में स्थित झामरकोटड़ा रॉक फास्फेट के उत्पादन के लिए भारत का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ उच्च श्रेणी का खनिज पाया जाता है। जिप्सम का प्रमुख स्रोत बीकानेर और नागौर क्षेत्र हैं, जबकि मोरिजा-बानोल लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध है। अभ्रक का मुख्य उत्पादन भीलवाड़ा में होता है, जबकि मकराना संगमरमर के लिए विश्वविख्यात है। इसी तरह, चूना पत्थर के भंडार चित्तौड़गढ़ और जैसलमेर में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, न कि डेगाना में।

16. (2) मकराना
मकराना का सफेद संगमरमर अपनी शुद्धता, चमक और स्थायित्व के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। इसी कारण इसका उपयोग ऐतिहासिक इमारतों जैसे ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल के निर्माण में किया गया था। यह संगमरमर नागौर जिले के मकराना क्षेत्र से निकाला जाता है और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' का दर्जा प्राप्त है। इसकी उच्च कैल्शियम सामग्री और सूक्ष्म दानेदार संरचना इसे मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए सर्वोत्कृष्ट और अनुपम बनाती है।

17. (2) निम्न-श्रेणी के खनिज अयस्कों को औद्योगिक मानकों के अनुसार उन्नत बनाना
खनिज सज्जीकरण या बेनिफिसिएशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य निम्न-श्रेणी के खनिज अयस्कों से अशुद्धियों को हटाकर उनकी गुणवत्ता बढ़ाना है। राजस्थान में कई खनिजों के भंडार मध्यम या निम्न श्रेणी के हैं, जिन्हें सीधे औद्योगिक उपयोग में नहीं लाया जा सकता। इसलिए, इन अयस्कों को औद्योगिक मानकों के अनुरूप बनाने और उनकी आर्थिक उपयोगिता बढ़ाने के लिए सज्जीकरण संयंत्रों पर निरंतर बल दिया जाता है, जिससे संसाधनों का अधिकतम उपयोग संभव हो सके।

18. (1) I, II, IV, III
राजस्थान के खनिज केंद्रों का उत्तर से दक्षिण का सही भौगोलिक क्रम उनकी अवस्थिति पर आधारित है। सबसे उत्तर में झुंझुनू का खेतड़ी क्षेत्र स्थित है, जिसके बाद भीलवाड़ा का रामपुरा-आगुचा आता है। इसके दक्षिण में राजसमंद का राजपुरा-दरीबा क्षेत्र पड़ता है, और सबसे अंत में उदयपुर की जावर खदानें स्थित हैं। यह क्रम राज्य की अरावली पर्वतमाला के साथ खनिज बेल्ट के विस्तार को दर्शाता है, जो उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की दिशा में विस्तृत है।

19. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भीलवाड़ा और अजमेर राजस्थान में अभ्रक उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं, जहाँ उच्च गुणवत्ता वाला अभ्रक निकाला जाता है। अभ्रक में उत्कृष्ट विद्युत-रोधी गुण और उच्च ताप सहने की क्षमता होती है, जिस कारण इसका प्राथमिक उपयोग इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में इंसुलेटर के रूप में किया जाता है। ये दोनों कथन सत्य हैं और अभ्रक की औद्योगिक उपयोगिता तथा उसके स्थानिक वितरण को सटीक रूप से परिभाषित करते हैं, जो राज्य के आर्थिक विकास हेतु महत्वपूर्ण है।

20. (4) धौलपुर और भरतपुर
भारत के प्रतिष्ठित स्मारकों जैसे लाल किले और संसद भवन के निर्माण में प्रयुक्त विशिष्ट लाल बलुआ पत्थर मुख्य रूप से धौलपुर और भरतपुर जिलों से प्राप्त किया गया था। यह पत्थर अपनी सुंदरता, बनावट में एकरूपता और नक्काशी के लिए

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) अपनी विविध और विशाल खनिज संपदा के कारण राजस्थान को 'खनिजों का अजायबघर' कहा जाता है
राजस्थान को 'खनिजों का अजायबघर' कहा जाता है क्योंकि यह अपनी असाधारण और विशाल खनिज विविधता के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में लगभग 81 विभिन्न प्रकार के खनिजों के भंडार उपलब्ध हैं, जिनमें से वर्तमान में 57 खनिजों का व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन किया जा रहा है। यह विविधता धात्विक और अधात्विक दोनों श्रेणियों में व्यापक रूप से फैली हुई है, जो राज्य को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

2. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नागौर जिले में स्थित डेगाना खदानें भारत के लिए रणनीतिक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये टंगस्टन के प्राथमिक स्रोत का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजस्थान में देश का एकमात्र प्रमुख और आर्थिक रूप से व्यवहार्य टंगस्टन निक्षेप उपलब्ध है, जो मुख्य रूप से वुल्फ्रामाइट अयस्क के रूप में पाया जाता है। टंगस्टन का उपयोग रक्षा और भारी उद्योगों में विशेष इस्पात मिश्र धातु बनाने हेतु किया जाता है, जो इसकी उपयोगिता को बढ़ाता है।

3. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
रामपुरा-आगुचा को वैश्विक स्तर पर जस्ते के सबसे बड़े और उच्च श्रेणी के निक्षेपों में से एक माना जाता है, जो इसकी अंतरराष्ट्रीय महत्ता को दर्शाता है। यहाँ जस्ता और सीसा का खनन आधुनिक तकनीकों के माध्यम से बड़े पैमाने पर किया जाता है। यद्यपि यह क्षेत्र आर्थिक रूप से अत्यंत समृद्ध है, परंतु प्रश्न के अनुसार दूसरे कथन की भौगोलिक विशिष्टता को त्रुटिपूर्ण माना गया है, जिससे केवल प्रथम कथन ही सत्य प्रमाणित होता है।

4. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में विभिन्न खनिजों का वितरण भौगोलिक रूप से विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित है। उदयपुर की जावर खदानें सीसा और जस्ता उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध मानी जाती हैं। झुंझुनू का खेतड़ी क्षेत्र तांबा खनन का प्रमुख केंद्र है, जबकि नागौर का डेगाना टंगस्टन के लिए जाना जाता है। इसी प्रकार, जयपुर का मोरिजा-बानोल क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है, जो औद्योगिक आवश्यकताओं की निरंतर पूर्ति करता है।

5. (3) जिप्सम
खनिजों के वर्गीकरण के आधार पर जिप्सम अन्य विकल्पों से भिन्न है क्योंकि यह एक अधात्विक खनिज की श्रेणी में आता है। इसके विपरीत, सीसा, जस्ता और तांबा सभी धात्विक खनिजों के उदाहरण हैं, जिनसे धातुओं का निष्कर्षण किया जाता है। जिप्सम का उपयोग मुख्य रूप से उर्वरक, सीमेंट उद्योग और मृदा सुधार गतिविधियों में किया जाता है, जबकि अन्य खनिजों का उपयोग धातुकर्म और विद्युत उपकरणों के निर्माण में प्रमुखता से होता है।

6. (1) केवल I और II
उदयपुर की जावर खदानें ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ प्राचीन जस्ता प्रगलन के विश्व के सबसे पुराने साक्ष्य मिले हैं। राजसमंद जिले में स्थित राजपुरा-दरीबा भी सीसा और जस्ता उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है। रामपुरा-आगुचा मुख्य रूप से जस्ता और सीसा के विशाल निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है, न कि लौह अयस्क के लिए। अतः प्रथम दो कथन सटीक हैं, जबकि तीसरा कथन खनिज के प्रकार के संदर्भ में पूर्णतः असत्य है।

7. (4) सीसा और जस्ता
राजस्थान में चांदी का उत्पादन स्वतंत्र खदानों के माध्यम से नहीं होता है, बल्कि यह सीसा और जस्ता अयस्कों के प्रसंस्करण के दौरान सह-उत्पाद के रूप में प्राप्त होती है। जब जावर और राजपुरा-दरीबा जैसी खानों से प्राप्त गैलेना अयस्क का प्रगलन किया जाता है, तब चांदी एक मूल्यवान धातु के रूप में अलग की जाती है। यह प्रक्रिया आर्थिक रूप से अत्यधिक लाभकारी है और राज्य को देश में चांदी का प्रमुख उत्पादक राष्ट्रव्यापी स्तर पर बनाती है।

8. (3) केवल I, II और IV
झुंझुनू जिले में स्थापित खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स राज्य में तांबा उत्पादन का आधार स्तंभ है, जहाँ सिंघाना खदानें अयस्क निष्कर्षण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। खेतड़ी बेल्ट में तांबा निक्षेप मुख्य रूप से चालकोपाइराइट के रूप में पाए जाते हैं, जो इसकी भूवैज्ञानिक विशेषता है। यद्यपि राजस्थान तांबा उत्पादन में अग्रणी है, किंतु यह भारत का एकमात्र उत्पादक नहीं है, क्योंकि मध्य प्रदेश जैसे अन्य राज्यों में भी तांबे का महत्वपूर्ण उत्पादन होता है।

9. (3) राजस्थान में लौह अयस्क के भंडार मुख्य रूप से उच्चतम श्रेणी की मैग्नेटाइट किस्म के हैं
राजस्थान में लौह अयस्क के भंडार अन्य खनिज संपन्न राज्यों की तुलना में सीमित हैं और यहाँ मुख्य रूप से हेमेटाइट किस्म का अयस्क पाया जाता है, न कि मैग्नेटाइट। जयपुर का मोरिजा-बानोल और भीलवाड़ा का पुर-बनेरा क्षेत्र राज्य के महत्वपूर्ण लौह अयस्क स्रोत हैं। यह कथन कि यहाँ के भंडार मुख्य रूप से मैग्नेटाइट किस्म के हैं, तकनीकी रूप से गलत है क्योंकि यहाँ हेमेटाइट की प्रधानता और प्रचुरता अधिक देखी जाती है।

10. (2) केवल I, II, IV और V
राजस्थान की खनिज नीति सतत विकास और शून्य-अपशिष्ट खनन पर ध्यान केंद्रित करती है, जिसके तहत पर्यावरणीय

NODIA

उपलब्ध हैं, जो राज्य के सीमेंट उद्योगों की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं। पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में भी इसके समृद्ध भंडार पाए जाते हैं, जो औद्योगिक उपयोग हेतु महत्वपूर्ण हैं।

31. (1) जिप्सम
बीकानेर जिले में स्थित जामसर खदान को ऐतिहासिक रूप से भारत के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण जिप्सम निक्षेपों में से एक माना जाता है। यहाँ से उच्च गुणवत्ता वाले जिप्सम का निष्कर्षण बड़े पैमाने पर किया जाता है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से सीमेंट उद्योग, प्लास्टर ऑफ पेरिस के निर्माण और कृषि में क्षारीय मिट्टी के सुधार हेतु होता है। यह खदान राज्य की खनिज संपदा की प्रचुरता और उसके आर्थिक योगदान का एक प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत करती है।

32. (2) यह वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि और प्राकृतिक जल निकासी के व्यवधान का कारण बनता है
अरावली पहाड़ियों में अवैज्ञानिक और अवैध खनन गतिविधियों का पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। इससे व्यापक स्तर पर वनों की कटाई होती है, जिससे वन्यजीवों के आवास नष्ट होते हैं और जैव विविधता की भारी हानि होती है। इसके अतिरिक्त, पहाड़ियों का कटाव प्राकृतिक जल निकासी तंत्र को बाधित कर देता है, जिससे भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है और पारिस्थितिक असंतुलन पैदा होता है। यह प्रक्रिया आसपास के क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण के खतरे को बढ़ाती है।

33. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
चूना पत्थर की विभिन्न श्रेणियों का वितरण उनके औद्योगिक उपयोग के अनुसार अलग-अलग क्षेत्रों में है। स्टील ग्रेड का चूना पत्थर जैसलमेर के सानू क्षेत्र में पाया जाता है, जबकि नागौर का गोटन क्षेत्र केमिकल ग्रेड के चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध है। चित्तौड़गढ़ का निंबाहेड़ा क्षेत्र सीमेंट ग्रेड के पत्थर का प्रमुख केंद्र है, और जैसलमेर शहर के आसपास का क्षेत्र अपने पीले सजावटी चूना पत्थर के लिए जाना जाता है। यह वर्गीकरण राज्य की खनिज विविधता को स्पष्ट करता है।

34. (1) निकाले गए खनिजों के परिवहन के लिए स्थापित आधारभूत ढांचे की पूर्ण अनुपस्थिति
राजस्थान में खनन क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, किंतु आधारभूत ढांचे की पूर्ण अनुपस्थिति को प्राथमिक चुनौती नहीं माना जा सकता, क्योंकि प्रमुख खनन क्षेत्रों में परिवहन हेतु रेल और सड़क नेटवर्क उपलब्ध है। वास्तविक चुनौतियां पारिस्थितिक गिरावट, श्रमिकों में सिलिकोसिस जैसी गंभीर बीमारियां और संरक्षित वनों में अवैध खनन का अतिक्रमण हैं। ये समस्याएं पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करती हैं, जबकि परिवहन व्यवस्था का निरंतर सुधार किया जा रहा है।

35. (3) श्रमिकों के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित करना और सिलिकोसिस जैसी बीमारियों को कम करना
राजस्थान खनिज नीति का एक प्रमुख मानवीय और सामाजिक उद्देश्य खदान श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा करना है। खनन कार्यों के दौरान उड़ने वाली धूल से श्रमिकों को सिलिकोसिस जैसी जानलेवा बीमारियां होने का खतरा रहता है। नीति इन बीमारियों की रोकथाम, बेहतर कार्य वातावरण प्रदान करने और प्रभावित श्रमिकों के कल्याण हेतु प्रभावी सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करने पर बल देती है। यह दृष्टिकोण खनन क्षेत्र के सतत विकास के साथ श्रमिकों के अधिकारों का संरक्षण करता है।

36. (4) रेवत पहाड़ी
नागौर जिले के डेगाना में स्थित रेवत पहाड़ी टंगस्टन के विशाल और महत्वपूर्ण निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ टंगस्टन वुल्फ्रामाइट अयस्क के रूप में पाया जाता है, जो उच्च गलनांक और कठोरता के कारण रक्षा उपकरणों और भारी मशीनरी के निर्माण में अनिवार्य है। रेवत पहाड़ी का ऐतिहासिक महत्व भी रहा है, विशेष रूप से रणनीतिक आवश्यकताओं के समय यहाँ से खनिज का निष्कर्षण किया गया था। यह स्थान राजस्थान के खनिज मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखता है।

37. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स की स्थापना भारत सरकार के सार्वजनिक उपक्रम हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा की गई थी, जो देश में तांबा उत्पादन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह कहना गलत है कि यह कॉम्प्लेक्स केवल आयातित तांबे पर निर्भर है। वास्तव में, यह स्थानीय सिंघाना और कोलिहान जैसी खदानों से निकाले गए कच्चे अयस्क का प्रसंस्करण और शोधन करने हेतु ही स्थापित किया गया था, जिससे स्वदेशी संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित हो सके और आत्मनिर्भरता बढ़ सके।

38. (2) काला संगमरमर — भैंसलाना (जयपुर)
राजस्थान में संगमरमर की विभिन्न किस्मों का वितरण विविध क्षेत्रों में है। जयपुर जिले का भैंसलाना क्षेत्र अपने विशिष्ट काले संगमरमर के लिए प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग मूर्तिकला और सजावट में होता है। गुलाबी संगमरमर मुख्य रूप से जयपुर और उदयपुर के कुछ हिस्सों में मिलता है, न कि मकराना में, जो सफेद संगमरमर के लिए प्रसिद्ध है। हरा संगमरमर उदयपुर के ऋषभदेव में प्रचुरता से पाया जाता है। यह विविधता राज्य को पत्थर उद्योग में अग्रणी बनाती है।

39. (4) राजस्थान सीसा, जस्ता और वोलास्टोनाइट जैसे खनिजों में लगभग 100% उत्पादन हिस्सेदारी रखता है
राजस्थान को कुछ विशिष्ट खनिजों में राष्ट्रीय स्तर पर लगभग पूर्ण एकाधिकार प्राप्त है क्योंकि भारत में इनका अधिकांश उत्पादन केवल इसी राज्य में होता है। सीसा, जस्ता, वोलास्टोनाइट और सेलेनाइट जैसे खनिजों के मामले में राजस्थान की हिस्सेदारी लगभग 100% है। यह एकाधिकार भौगोलिक विशिष्टता और अरावली पर्वतमाला की जटिल भूवैज्ञानिक संरचना के कारण है, जो राज्य को देश के खनिज संसाधनों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक भागीदार बनाता है।

40. (1) बिरमानिया और फतेहगढ़
जैसलमेर जिले में रॉक फास्फेट के महत्वपूर्ण निक्षेप बिरमानिया और फतेहगढ़ जैसे क्षेत्रों में केंद्रित हैं। ये निक्षेप निम्न से मध्यम

Downloaded from www.pdf.tube

श्रेणी के हैं और अवसादी चट्टानों में पाए जाते हैं। जबकि उदयपुर का झामरकोटड़ा उच्च श्रेणी के रॉक फास्फेट के लिए प्रसिद्ध है, जैसलमेर के ये क्षेत्र भी उर्वरक उद्योग की भविष्य की आवश्यकताओं हेतु महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन भंडारों का उचित दोहन और प्रसंस्करण राज्य के कृषि क्षेत्र में उर्वरकों की आपूर्ति सुदृढ़ करने में सहायक है।

41. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पिछले कुछ दशकों में राजस्थान के अभ्रक खनन उद्योग में उल्लेखनीय गिरावट आई है, जिसका मुख्य कारण प्राकृतिक अभ्रक की वैश्विक मांग का कम होना है। तकनीकी प्रगति के साथ, औद्योगिक क्षेत्र में कृत्रिम विकल्पों और बेहतर विद्युत-रोधी सामग्रियों का विकास हुआ है जो लागत और कार्यक्षमता में अधिक प्रभावी हैं। इस प्रतिस्पर्धा के कारण प्राकृतिक अभ्रक की खपत कम हो गई है, जिससे खनन गतिविधियों और संबंधित स्थानीय उद्योगों की आर्थिक व्यवहार्यता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

42. (1) राजस्थान में ग्रेनाइट निक्षेप मुख्य रूप से अवसादी संरचनाएं हैं जो केवल थार मरुस्थल में पाई जाती हैं
ग्रेनाइट के संबंध में यह कथन गलत है कि यह एक अवसादी संरचना है, क्योंकि भूवैज्ञानिक रूप से ग्रेनाइट एक कठोर अंतर्वेधी आग्नेय चट्टान है। यह केवल थार मरुस्थल तक सीमित नहीं है, बल्कि राजस्थान के कई जिलों जैसे जालौर, सिरोही, राजसमंद और अजमेर में विस्तृत रूप से उपलब्ध है। ग्रेनाइट अपनी मजबूती और आकर्षक रंगों के कारण निर्माण क्षेत्र में अत्यधिक लोकप्रिय है। इसके प्रसंस्करण उद्योग ने राज्य में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार पैदा किया है।

43. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान में लौह अयस्क के प्रमुख क्षेत्रों का उनके जिलों के साथ मिलान अत्यंत सटीक है। मोरिजा-बानोल जयपुर जिले का सबसे महत्वपूर्ण निक्षेप है, जबकि नाथरा-की-पाल उदयपुर जिले में स्थित है। नीमला-रायसेला दौसा जिले में पाया जाने वाला एक प्रमुख क्षेत्र है, और चोमू-सामोद जयपुर जिले के अंतर्गत आता है। यह वितरण अरावली श्रेणी के विभिन्न भागों में हेमेटाइट अयस्क की उपस्थिति को दर्शाता है, जो स्थानीय लघु इस्पात उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करते हैं।

44. (2) कांच के समान अत्यधिक पारदर्शिता
धौलपुर और भरतपुर के बलुआ पत्थर अपने उत्कृष्ट स्थापत्य गुणों के लिए जाने जाते हैं, किंतु इनमें कांच जैसी पारदर्शिता नहीं होती है। यह पत्थर अत्यधिक टिकाऊ होता है, इसकी बनावट एकसमान होती है और यह प्राकृतिक लाल तथा गुलाबी रंगों में उपलब्ध होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता नक्काशी और जटिल मूर्तिकला हेतु इसकी सुगमता है, जिसने इसे सदियों से महलों और मंदिरों के निर्माण के लिए सर्वोत्कृष्ट विकल्प बनाया है। पारदर्शिता इसका भौतिक गुण नहीं है।

45. (1) केवल I और II
राजस्थान में चांदी का उत्पादन मुख्य रूप से स्वतंत्र खदानों के बजाय सीसा और जस्ता के प्रगलन के दौरान एक उप-उत्पाद के रूप में किया जाता है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड राज्य की प्रमुख इकाई है जो इस कीमती धातु के निष्कर्षण और शोधन का कार्य करती है। यह कहना गलत है कि राजस्थान भारत की कुल चांदी का केवल 1% उत्पादन करता है; वास्तव में, राजस्थान देश में चांदी का सबसे बड़ा और अग्रणी उत्पादक राज्य है, जो राष्ट्रीय उत्पादन में प्रमुख भाग रखता है।

46. (4) तांबा
खनिज प्राप्ति की अवस्था के आधार पर तांबा अन्य विकल्पों से भिन्न है क्योंकि यह मुख्य रूप से आग्नेय और कायांतरित चट्टानों की शिराओं में धात्विक अयस्क के रूप में पाया जाता है। इसके विपरीत, जिप्सम, रॉक फास्फेट और चूना पत्थर अधात्विक खनिज हैं जो अक्सर अवसादी चट्टानी परतों में जमाव के रूप में मिलते हैं। तांबे के निक्षेप जटिल भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, जबकि अन्य तीन खनिजों का निर्माण वाष्पीकरण या कार्बनिक पदार्थों के अवसादन की प्रक्रियाओं से होता है।

47. (3) केवल IV
राजस्थान के खनन क्षेत्र में भूमि अधिग्रहण एक अत्यंत जटिल समस्या है, इसलिए यह कहना कि स्थानीय समुदायों के साथ कोई समस्या नहीं होती, पूरी तरह गलत है। खदानों के विस्तार और नए क्षेत्रों के आवंटन के समय अक्सर भूमि विवाद और पुनर्वास की चुनौतियां सामने आती हैं। अन्य चुनौतियां जैसे निम्न-श्रेणी के अयस्कों का सज्जीकरण, कठोर पर्यावरणीय नियम और अवैध खनन भी वास्तविकता हैं, किंतु भूमि अधिग्रहण से जुड़ी सामाजिक और कानूनी अड़चनें खनन परियोजनाओं हेतु बड़ी बाधा हैं।

48. (2) चांदी इन खानों से निकाले गए गैलेना और स्फेलेराइट अयस्कों के साथ प्राकृतिक रूप से मिश्रित होती है
चांदी का उत्पादन केंद्र सीसा-जस्ता प्रगालकों के पास स्थित होने का वैज्ञानिक कारण यह है कि चांदी स्वाभाविक रूप से गैलेना और स्फेलेराइट अयस्कों के साथ सूक्ष्म मात्रा में जुड़ी होती है। जब इन अयस्कों को गलाया जाता है, तो चांदी को एक उप-उत्पाद के रूप में सुगमता से अलग किया जा सकता है। यह सह-अस्तित्व निष्कर्षण प्रक्रिया को किफायती बनाता है। अतः चांदी को अलग करने हेतु प्रगालकों की निकटता तकनीकी और आर्थिक दोनों दृष्टियों से अनिवार्य और लाभप्रद होती है।

49. (2) केवल I, II, IV और V
राजस्थान में देश के सर्वाधिक खनन पट्टे हैं और यहाँ धात्विक व अधात्विक दोनों खनिजों के प्रचुर भंडार उपलब्ध हैं। अधिकांश धात्विक खनिज अरावली पर्वतमाला में पाए जाते हैं, जबकि जिप्सम और चूना पत्थर जैसे अधात्विक खनिज पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में प्रमुखता से मिलते हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था में खनन का योगदान महत्वपूर्ण है, न कि नगण्य। इसलिए तीसरा कथन असत्य है, जबकि अन्य कथन राज्य की समृद्ध और विविध खनिज विशेषताओं को सही ढंग से चित्रित करते हैं।

NODIA

50. (1) रामपुरा-आगुचा
रामपुरा-आगुचा को जस्ता और सीसा के विश्व स्तरीय निक्षेपों के लिए जाना जाता है, न कि लौह अयस्क के लिए। इसके विपरीत, मोरिजा-बानोल, नाथरा-की-पाल और थूर-हुंडेर राजस्थान के प्रमुख लौह अयस्क खनन क्षेत्र हैं जहाँ से हेमेटाइट अयस्क निकाला जाता है। रामपुरा-आगुचा का महत्व जस्ते के अत्यधिक उच्च श्रेणी के भंडारों के कारण है, जो इसे वैश्विक खनिज मानचित्र पर एक प्रमुख स्थान दिलाता है, जबकि अन्य क्षेत्र राज्य की लौह अयस्क आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

51. (2) खनन → पेषण (क्रशिंग) → प्रगलन → शोधन
तांबा निष्कर्षण की प्रक्रिया एक वैज्ञानिक अनुक्रम का पालन करती है जो भूमि से कच्चे अयस्क को निकालने (खनन) से प्रारंभ होती है। इसके पश्चात्, बड़े पत्थरों को छोटे टुकड़ों में तोड़ने के लिए पेषण या क्रशिंग की जाती है। क्रश किए गए अयस्क को फिर उच्च तापमान पर पिघलाया जाता है (प्रगलन) ताकि धातु को अशुद्धियों से अलग किया जा सके। अंत में, धातु को पूर्ण शुद्धता प्राप्त करने के लिए विद्युत-अपघटनी या अन्य विशिष्ट विधियों द्वारा शोधन की प्रक्रिया से गुजारा जाता है।

52. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
सीमेंट ग्रेड का चूना पत्थर पोर्टलैंड सीमेंट के उत्पादन हेतु एक अनिवार्य कच्चा माल है क्योंकि यह आवश्यक कैल्शियम प्रदान करता है। राजस्थान के संदर्भ में दूसरा कथन गलत है क्योंकि यहाँ गुणवत्तापूर्ण चूना पत्थर के विशाल और प्रचुर भंडार उपलब्ध हैं। इसी प्रचुरता के कारण राजस्थान भारत में सीमेंट के अग्रणी उत्पादक राज्यों में से एक है, न कि सबसे कम उत्पादकों में। राज्य की सीमेंट उत्पादन क्षमता राष्ट्रीय निर्माण क्षेत्र की मांगों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

53. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
विभिन्न खनिजों के औद्योगिक अनुप्रयोग उनकी रासायनिक और भौतिक विशेषताओं पर आधारित हैं। रॉक फास्फेट का उपयोग मुख्य रूप से रासायनिक उर्वरकों के उत्पादन में किया जाता है। जिप्सम का उपयोग मृदा सुधारक और प्लास्टर ऑफ पेरिस बनाने में होता है। टंगस्टन अपनी कठोरता के कारण उच्च-गति काटने वाले स्टील और बल्ब के फिलामेंट के लिए अनिवार्य है। चूना पत्थर सीमेंट निर्माण का आधार स्तंभ है। यह मिलान खनिजों की व्यापक आर्थिक और औद्योगिक उपयोगिता को दर्शाता है।

54. (2) भीलवाड़ा
पुर-बनेरा और तिरंगा पहाड़ियाँ राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित हैं, जो मुख्य रूप से अपने सीमित किंतु महत्वपूर्ण लौह अयस्क भंडारों के लिए पहचानी जाती हैं। भीलवाड़ा जिला न केवल अभ्रक और वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की भूवैज्ञानिक संरचना विविध धात्विक खनिजों के निक्षेप भी प्रदान करती है। इन पहाड़ियों में पाए जाने वाले लौह अयस्क का उपयोग स्थानीय औद्योगिक इकाइयों की मांग को पूरा करने हेतु किया जाता है, जो क्षेत्रीय विकास में योगदान देता है।

55. (4) टंगस्टन — डेगाना (नागौर)
टंगस्टन का उत्पादन नागौर जिले के डेगाना क्षेत्र में होता है, जो इसे राजस्थान के खनिज मानचित्र पर एक रणनीतिक स्थान बनाता है। अन्य विकल्पों में, सीसा-जस्ता का मुख्य स्रोत उदयपुर की जावर खदानें हैं। तांबे का प्रमुख केंद्र खेतड़ी है, जबकि झामरकोटड़ा रॉक फास्फेट के लिए प्रसिद्ध है। लौह अयस्क के लिए जयपुर का मोरिजा-बानोल क्षेत्र जाना जाता है, न कि जैसलमेर का सानू, जो मुख्य रूप से उच्च श्रेणी के चूना पत्थर के उत्पादन हेतु विख्यात है।

56. (1) यह एशिया का पहला पत्थर संसाधन था जिसे IUGS द्वारा 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' के रूप में नामित किया गया था
मकराना संगमरमर को इसकी ऐतिहासिक महत्ता और अद्वितीय गुणवत्ता के कारण अंतरराष्ट्रीय भूवैज्ञानिक विज्ञान संघ द्वारा 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' के रूप में मान्यता दी गई है। यह दर्जा प्राप्त करने वाला यह एशिया का पहला पत्थर है। यह कोई अवसादी चट्टान नहीं है, बल्कि एक उच्च श्रेणी की कायांतरित सफेद चट्टान है। इसके भंडार अभी समाप्त नहीं हुए हैं और इसका उपयोग मुख्य रूप से भव्य इमारतों और कलाकृतियों के निर्माण में निरंतर किया जाता है।

57. (1) I, II, III
सीसा-जस्ता क्षेत्रों का उत्तर से दक्षिण का सही क्रम उनकी जिलावार अवस्थिति पर निर्भर करता है। भीलवाड़ा जिले में स्थित रामपुरा-आगुचा इन तीनों में सबसे उत्तर में है। इसके दक्षिण में राजसमंद जिले का राजपुरा-दरीबा क्षेत्र स्थित है। इन दोनों के और अधिक दक्षिण में उदयपुर जिले की प्रसिद्ध जावर खदानें स्थित हैं। यह क्रम राज्य के मध्य-पूर्वी हिस्से से लेकर दक्षिणी हिस्से तक फैली अरावली पर्वतमाला के खनिज क्षेत्रों के क्रमिक विस्तार को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

58. (1) फास्फेट उर्वरक (SSP और DAP)
उदयपुर के झामरकोटड़ा और जैसलमेर के बिरमानिया क्षेत्रों से रॉक फास्फेट का निष्कर्षण देश की कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु अत्यंत आवश्यक है। यह खनिज सुपर फास्फेट (एसएसपी) और डाई-अमोनियम फास्फेट (डीएपी) जैसे महत्वपूर्ण उर्वरकों के निर्माण में प्राथमिक कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। चूंकि भारत अपनी उर्वरक जरूरतों हेतु फास्फेट पर बहुत अधिक निर्भर है, इसलिए राजस्थान के ये निक्षेप खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संसाधन हैं।

59. (4) ये निम्न-श्रेणी के अवसादी फास्फेटिक नोड्यूल्स हैं जो मुख्य रूप से बिरमानिया क्षेत्र में पाए जाते हैं
जैसलमेर जिले में पाए जाने वाले रॉक फास्फेट निक्षेप मुख्य रूप से अवसादी मूल के हैं और फास्फेटिक नोड्यूल्स के रूप में मिलते हैं। ये भंडार उदयपुर के झामरकोटड़ा की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न श्रेणी के हैं और बिरमानिया तथा फतेहगढ़ जैसे क्षेत्रों में विस्तृत हैं। ये दक्षिण भारत के क्रिस्टलीय एपेटाइट निक्षेपों से काफी भिन्न हैं क्योंकि इनकी संरचना और निर्माण की भूवैज्ञानिक प्रक्रियाएं विशिष्ट रूप से मरुस्थलीय अवसादी

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. 2011 की जनगणना के अनुसार जैसलमेर जिले का जनसंख्या घनत्व कितना है?
(1) 78 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(2) 92 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(3) 147 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(4) 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजस्थान में पुरुष और महिला साक्षरता दरों के बीच का अंतराल भारत में सर्वाधिक में से एक है।
कारण (R): ग्रामीण क्षेत्रों में सुदृढ़ पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंड, बाल विवाह और विद्यालयों तक सुगम पहुँच का अभाव महिला शिक्षा में बड़ी बाधा हैं।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में ग्रामीण और शहरी जनसंख्या वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान की ग्रामीण जनसंख्या 75.1 प्रतिशत है।
II. राजस्थान की शहरी जनसंख्या 24.9 प्रतिशत है।
III. प्रतिशत की दृष्टि से कोटा सर्वाधिक नगरीकृत जिला है।
IV. डूंगरपुर में राज्य की ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है।
V. 2001-2011 के दौरान शहरी दशकीय वृद्धि दर, ग्रामीण दशकीय वृद्धि दर से अधिक थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल II, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. भारतीय जनगणना में, बाल लिंगानुपात की गणना किस विशिष्ट आयु वर्ग के लिए की जाती है?
(1) 0 से 4 वर्ष
(2) 0 से 6 वर्ष
(3) 1 से 5 वर्ष
(4) 0 से 8 वर्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. निम्नलिखित जिलों को 2011 में उनकी महिला साक्षरता दर के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. गंगानगर
B. जयपुर
C. झुंझुनू
D. कोटा
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) D, C, B, A
(2) B, D, A, C
(3) C, D, B, A
(4) D, B, C, A
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. डूंगरपुर और राजसमंद जैसे जिलों से रोजगार हेतु पुरुषों का उच्च बाह्य-प्रवासन इन जिलों में किस जनसांख्यिकीय प्रभाव का मुख्य कारण बनता है?
(1) कुल प्रजनन दर में अचानक वृद्धि।
(2) महिलाओं के पक्ष में उच्च समग्र लिंगानुपात।
(3) अत्यंत विषम और बहुत कम समग्र लिंगानुपात।
(4) समग्र साक्षरता दर में भारी गिरावट।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. राजस्थान में सामाजिक समूहों के जनसांख्यिकीय वितरण के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) अनुसूचित जाति की जनसंख्या का अनुपात गंगानगर जिले में सर्वाधिक है।
(2) अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का अनुपात बीकानेर और नागौर जिलों में सबसे कम है।
(3) बीकानेर जिले में राज्य की अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का अनुपात सर्वाधिक है।
(4) डूंगरपुर में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का अनुपात सबसे कम है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राजस्थान के जनसंख्या घनत्व कारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जल संसाधनों की उपलब्धता पूर्वी राजस्थान में जनसंख्या घनत्व को बढ़ाती है।
II. विषम जलवायु परिस्थितियों और रेतीले टीलों के कारण पश्चिमी राजस्थान में जनसंख्या घनत्व बहुत कम है।
III. राजस्थान के लिए जनसांख्यिकीय विभाजक वर्ष 1951 माना जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I
(3) I, II और III
(4) केवल III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. सूची I में दिए गए जिलों को सूची II में दिए गए उनके 2011 के बाल लिंगानुपात के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जिले)
A. बांसवाड़ा

69. (1) केवल I
राजस्थान में लौह अयस्क के निक्षेपों के संबंध में प्रथम कथन गलत है क्योंकि यहाँ के भंडार भारत के सबसे बड़े एकल बेल्ट नहीं हैं, बल्कि ये राज्य के विभिन्न जिलों में बिखरे हुए और अपेक्षाकृत लघु पैमानों पर उपलब्ध हैं। अन्य कथन सही हैं; जयपुर-दौसा में मुख्य रूप से हेमेटाइट पाया जाता है, और निक्षेपों की बिखरी प्रकृति के कारण ही यहाँ बड़े एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित करना चुनौतीपूर्ण है। अधिकांश निक्षेपों की गुणवत्ता मध्यम से निम्न श्रेणी की है।

70. (2) जैसलमेर
जालौर, बाड़मेर और सिरोही राजस्थान के वे प्रमुख जिले हैं जहाँ ग्रेनाइट का वाणिज्यिक उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, जिसमें जालौर को 'ग्रेनाइट सिटी' के रूप में जाना जाता है। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला मुख्य रूप से अपने पीले चूना पत्थर, बलुआ पत्थर और हाइड्रोकार्बन के भंडारों के लिए प्रसिद्ध है, और यहाँ ग्रेनाइट का वाणिज्यिक खनन एक प्रमुख उद्योग नहीं है। ग्रेनाइट हेतु अरावली और उसके आसपास के कठोर आग्नेय चट्टानी क्षेत्र अधिक अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

71. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान की खनिज नीति लघु खनिजों जैसे संगमरमर, ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर के माध्यम से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करती है। यद्यपि, यह नीति सभी पत्थर की खदानों के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का आदेश नहीं देती है। इसके विपरीत, नीति निजी निवेश को प्रोत्साहित करती है और पारदर्शी नीलामी प्रक्रियाओं के माध्यम से पट्टे आवंटित करती है। अतः प्रथम कथन खनिज क्षेत्र की आर्थिक भूमिका को दर्शाता है, जबकि द्वितीय कथन नीतिगत ढांचे के विपरीत है।

72. (1) खो-दरीबा — अलवर
खो-दरीबा अलवर जिले का एक महत्वपूर्ण तांबा उत्पादक क्षेत्र है, जो अरावली पर्वतमाला के खनिज समृद्ध भाग में स्थित है। अन्य विकल्पों में, पुर-बनेरा भीलवाड़ा जिले में स्थित है। भगोत-का-बास सीकर जिले में स्थित है और बीदासर चूरू जिले में है, किंतु ये तांबे के उतने बड़े केंद्र नहीं हैं जितना खेतड़ी या खो-दरीबा हैं। यह मिलान तांबा खनिज के भौगोलिक वितरण को स्पष्ट करने हेतु राजस्थान के खनन परिदृश्य में एक स्थापित और प्रमाणित तथ्य है।

73. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के विभिन्न पत्थरों का उनके विशिष्ट क्षेत्रों के साथ मिलान राज्य की भूवैज्ञानिक विविधता को दर्शाता है। विश्व प्रसिद्ध सफेद संगमरमर मकराना (नागौर) से प्राप्त होता है। प्रतिष्ठित लाल बलुआ पत्थर धौलपुर क्षेत्र की विशेषता है, जबकि आकर्षक पीला चूना पत्थर मुख्य रूप से जैसलमेर में पाया जाता है। मजबूत और रंगीन ग्रेनाइट के उत्पादन में जालौर जिला अग्रणी है। यह वितरण राज्य को भारत के पत्थर उद्योग के केंद्र के रूप में वैश्विक स्तर पर मजबूती से स्थापित करता है।

74. (1) खेतड़ी
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की मुख्य इकाइयां और तांबा प्रगलन संयंत्र झुंझुनू जिले के खेतड़ी में स्थित हैं। खेतड़ी को तांबा उत्पादन के अपने लंबे इतिहास और आधुनिक औद्योगिक अवसंरचना हेतु जाना जाता है। जावर और देबारी सीसा-जस्ता उत्पादन और शोधन से संबंधित हैं, जबकि चंदेरिया में जस्ता प्रगलन का कार्य होता है। खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स न केवल खनन बल्कि अयस्क के निष्कर्षण और शोधन हेतु भी राज्य की एक महत्वपूर्ण और रणनीतिक औद्योगिक संपत्ति है।

75. (4) इसमें वैश्विक जस्ता आसवन (Zinc distillation) के प्राचीनतम प्रमाण हैं
उदयपुर का जावर क्षेत्र संपूर्ण विश्व में अद्वितीय है क्योंकि यहाँ पुरातात्विक खुदाई में जस्ता आसवन की प्राचीन भट्टियों के अवशेष मिले हैं। ये साक्ष्य प्रमाणित करते हैं कि राजस्थान में मध्यकालीन युग के दौरान भी जस्ता निष्कर्षण की उन्नत और वैज्ञानिक तकनीकें उपलब्ध थीं। यह ऐतिहासिक महत्व जावर को वैश्विक धातुकर्म इतिहास के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जो आज भी जस्ता और सीसा के उत्पादन हेतु एक सक्रिय और आधुनिक खनन केंद्र है।

76. (2) उन्नत खनिज सज्जीकरण (बेनिफिसिएशन) और धातुकर्म अनुसंधान में निवेश करना
राजस्थान में कई खनिजों के भंडार निम्न-श्रेणी के हैं, जिन्हें सीधे उद्योगों में उपयोग करना अव्यावहारिक होता है। इस समस्या का सबसे प्रभावी समाधान उन्नत खनिज सज्जीकरण तकनीकों में निवेश करना है, जो अशुद्धियों को दूर कर खनिज की गुणवत्ता बढ़ाती हैं। धातुकर्म अनुसंधान के माध्यम से कम लागत वाली और पर्यावरण के अनुकूल शोधन प्रक्रियाएं विकसित की जा सकती हैं। यह न केवल घरेलू संसाधनों के उपयोग को बढ़ाएगा बल्कि खनन क्षेत्र को आर्थिक रूप से अधिक प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ बनाएगा।

77. (3) टंगस्टन — जैसलमेर
राजस्थान में टंगस्टन का उत्पादन मुख्य रूप से नागौर जिले के डेगाना क्षेत्र में होता है, न कि जैसलमेर में। जैसलमेर जिला चूना पत्थर, रॉक फास्फेट और प्राकृतिक गैस के लिए जाना जाता है। अन्य युग्म सही हैं: जिप्सम बीकानेर में प्रचुरता से मिलता है, रॉक फास्फेट का सबसे बड़ा स्रोत उदयपुर का झामरकोटड़ा है, और चूना पत्थर चित्तौड़गढ़ जिले में बहुतायत में उपलब्ध है। टंगस्टन एक दुर्लभ और रणनीतिक खनिज होने के कारण इसका भौगोलिक केंद्र अत्यंत सीमित और विशिष्ट है।

78. (4) जिप्सम
बाड़मेर जिले के कवास और उत्तरलाई क्षेत्र अपने विस्तृत जिप्सम भंडारों के लिए विशेष रूप से पहचाने जाते हैं। जिप्सम एक महत्वपूर्ण अधात्विक खनिज है जिसका उपयोग निर्माण और कृषि क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। इन क्षेत्रों में जिप्सम की उपलब्धता पश्चिमी राजस्थान की भूवैज्ञानिक संरचना का परिणाम है, जहाँ प्राचीन जल निकायों के वाष्पीकरण से इन खनिजों की परतें बनीं। यह खनिज स्थानीय अर्थव्यवस्था और राज्य के कुल जिप्सम उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

NODIA

वातावरण से जुड़ी हुई हैं, जो इनकी खनिज संरचना को प्रभावित करती हैं।

60. (2) सोडियम आयनों को कैल्शियम आयनों के साथ बदलने की इसकी क्षमता, जिससे मिट्टी की संरचना में सुधार होता है
कृषि में जिप्सम का उपयोग मुख्य रूप से क्षारीय और लवणीय मिट्टी के रासायनिक सुधार हेतु किया जाता है। जब मिट्टी में जिप्सम मिलाया जाता है, तो यह मिट्टी के हानिकारक सोडियम आयनों को हटाकर उन्हें लाभकारी कैल्शियम आयनों से प्रतिस्थापित कर देता है। यह प्रक्रिया मिट्टी के कणों के जुड़ाव और उसकी संरचना में सुधार करती है, जिससे जल का रिसाव और जड़ों का विकास बेहतर होता है। यह एक भौतिक-रासायनिक क्रिया है जो बंजर भूमि को पुनः कृषि योग्य बनाने में सहायक है।

61. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उदयपुर के झामरकोटड़ा में रॉक फास्फेट सज्जीकरण संयंत्र की स्थापना एक अनिवार्य तकनीकी आवश्यकता है क्योंकि स्थानीय अयस्क में सिलिका और डोलोमाइट जैसी अशुद्धियां अधिक होती हैं। उर्वरक निर्माण हेतु उच्च सांद्रता वाले फास्फोरस की आवश्यकता होती है, जिसे इन अशुद्धियों को हटाए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। सज्जीकरण प्रक्रिया अयस्क की श्रेणी को बढ़ाती है, जिससे यह औद्योगिक उपयोग हेतु उपयुक्त हो जाता है और संसाधनों का कुशलतापूर्वक दोहन सुनिश्चित होता है।

62. (4) थार रेगिस्तान में राजस्थान के पास स्वतंत्र, अत्यंत बड़ी शुद्ध चांदी की खदानें हैं
राजस्थान के बारे में यह कहना पूरी तरह गलत है कि थार रेगिस्तान में इसकी अपनी कोई स्वतंत्र और बड़ी शुद्ध चांदी की खदानें हैं। वास्तव में, चांदी यहाँ सदैव सीसा और जस्ता अयस्कों के साथ एक उप-उत्पाद के रूप में प्राप्त की जाती है। जावर और राजपुरा-दरीबा जैसी खदानों का ऐतिहासिक महत्व इसी सीसा-जस्ता-चांदी के सह-अस्तित्व के कारण है। चांदी की यह उपस्थिति खनन कार्यों को अधिक लाभदायक बनाती है, किंतु यह स्वतंत्र खनिज के रूप में नहीं निकलती।

63. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के प्रसिद्ध खनन क्षेत्रों का उनके संबंधित खनिजों के साथ मिलान राज्य की औद्योगिक पहचान को पुख्ता करता है। झामरकोटड़ा रॉक फास्फेट के लिए जाना जाता है, जबकि मकराना अपने अद्वितीय सफेद संगमरमर हेतु विश्व विख्यात है। रामपुरा-आगुचा जस्ता के उत्पादन में अग्रणी है, और खेतड़ी तांबा खनन का ऐतिहासिक और प्रमुख केंद्र है। यह स्पष्ट वर्गीकरण दर्शाता है कि राज्य की खनिज संपदा कितनी विविध है और विभिन्न क्षेत्रों में खनिजों का संकेंद्रण किस प्रकार भौगोलिक रूप से संतुलित है।

64. (2) अवसादी चट्टान
जोधपुर, बूंदी और धौलपुर से प्राप्त होने वाले बलुआ पत्थर के निक्षेप भूवैज्ञानिक रूप से अवसादी चट्टानों की श्रेणी में आते हैं। इन चट्टानों का निर्माण लाखों वर्षों तक रेत के कणों के जमाव और उन पर पड़ने वाले दबाव के कारण हुआ है। अपनी परतदार संरचना और सुगमता के कारण ये पत्थर भवन निर्माण और नक्काशी हेतु अत्यंत उपयुक्त होते हैं। यह आग्नेय या कायांतरित चट्टान नहीं है, बल्कि मरुस्थलीय और पठारी क्षेत्रों में उपलब्ध एक प्राचीन अवसादी संरचना है।

65. (4) I, II, III
राजस्थान भारत के कुल जिप्सम उत्पादन का लगभग 80% से अधिक भाग प्रदान करता है, जो इसे देश का अग्रणी उत्पादक बनाता है। नागौर जिले का गोट-मांगलोद क्षेत्र अपने विस्तृत जिप्सम खनन कार्यों के लिए जाना जाता है। जिप्सम एक बहुमुखी खनिज है जिसका उपयोग निर्माण क्षेत्र में प्लास्टर ऑफ पेरिस बनाने और सीमेंट की सेटिंग के समय को नियंत्रित करने हेतु किया जाता है। ये सभी कथन जिप्सम की प्रचुरता और उसके व्यापक औद्योगिक उपयोगों की सटीक व्याख्या करते हैं।

66. (1) समुद्री जिप्सम (बीकानेर-नागौर बेसिन)
खनिजों के स्थानिक वितरण और उनकी उत्पत्ति के आधार पर समुद्री जिप्सम शब्द अन्य विकल्पों की तुलना में विषम है। राजस्थान में जिप्सम के भंडार मुख्य रूप से प्राचीन झीलों के सूखने या वाष्पीकरण की प्रक्रिया से बने हैं, जिन्हें अक्सर अंतःस्थलीय निक्षेप माना जाता है। इसके विपरीत, तांबा, लौह अयस्क और सीसा-जस्ता के निक्षेप स्पष्ट रूप से परिभाषित धात्विक पट्टियों और खदानों से जुड़े हैं। यह विकल्प भूवैज्ञानिक गठन के संदर्भ में वर्गीकरण की एक पृथक श्रेणी का संकेत देता है।

67. (1) केवल I और III
भीलवाड़ा और अजमेर में पाए जाने वाले अभ्रक के भौतिक गुण इसे विशिष्ट बनाते हैं। इसमें उत्कृष्ट बेसल क्लीवेज होता है, जिससे इसे पारदर्शी और बहुत पतली चादरों में विभाजित किया जा सकता है। यह बहुत उच्च तापमान को सहने की क्षमता रखता है, जो इसे अग्नि-सह उद्योगों हेतु उपयोगी बनाता है। इसके विपरीत, अभ्रक विद्युत का कुचालक होता है, सुचालक नहीं, और यह जल में पूरी तरह से अघुलनशील है। अतः केवल प्रथम और तृतीय विशेषताएं ही सत्य हैं।

68. (4) यह स्टील की कठोरता और उच्च तापमान पर प्रतिरोध को बढ़ाता है
टंगस्टन को जब स्टील के साथ मिश्रित किया जाता है, तो यह उसकी भौतिक विशेषताओं में क्रांतिकारी सुधार लाता है। यह स्टील की कठोरता को बढ़ाता है और उसे अत्यधिक उच्च तापमान पर भी अपनी शक्ति बनाए रखने में सक्षम बनाता है। इसी विशिष्ट गुण के कारण टंगस्टन मिश्रित स्टील का उपयोग उच्च गति वाले काटने के औजारों, मिसाइलों, विमान इंजनों और कवच भेदी हथियारों के निर्माण में किया जाता है। डेगाना से प्राप्त टंगस्टन इस प्रकार राष्ट्रीय रक्षा हेतु रणनीतिक महत्व का है।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 26

जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात

1. भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, राजस्थान की कुल दर्ज जनसंख्या कितनी है?
(1) 5,65,07,188
(2) 6,85,48,437
(3) 7,24,56,821
(4) 7,85,34,312
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजस्थान में 1911-1921 के दशक के दौरान नकारात्मक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई थी।
कारण (R): 1911-1921 की अवधि में भीषण अकाल और विनाशकारी इन्फ्लुएंजा महामारी के कारण मृत्यु दर अत्यधिक रही।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. 2011 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान के समग्र लिंगानुपात की राष्ट्रीय औसत के साथ सही तुलना करता है?
(1) राजस्थान का लिंगानुपात 943 है, जो राष्ट्रीय औसत के बराबर है।
(2) राजस्थान का लिंगानुपात 928 है, जो कि 919 के राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
(3) राजस्थान का लिंगानुपात 928 है, जो कि 943 के राष्ट्रीय औसत से कम है।
(4) राजस्थान का लिंगानुपात 919 है, जो कि 928 के राष्ट्रीय औसत से कम है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. सूची I में दिए गए जिलों को सूची II में दिए गए उनके 2011 के जनसंख्या घनत्व के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जिले)
A. जयपुर
B. भरतपुर
C. दौसा
D. अलवर
सूची II: (जनसंख्या घनत्व 2011)
i. 438
ii. 476
iii. 503
iv. 595
कूट:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की साक्षरता दरों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) 2011 में दर्ज राज्य की कुल साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत है।
(2) पूरे राज्य के लिए पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत है।
(3) महिला साक्षरता दर 75.4 प्रतिशत है, जो पुरुष साक्षरता दर के बराबर है।
(4) साक्षरता दर में 25 प्रतिशत से अधिक का महत्वपूर्ण लैंगिक अंतराल है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

6. राजस्थान में साक्षरता अंतराल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कोटा जिले में राज्य की महिला साक्षरता दर सबसे अधिक है।
II. झुंझुनू जिले में पुरुष साक्षरता दर सर्वाधिक है।
III. जालौर जिले में सबसे कम कुल साक्षरता दर के साथ-साथ सबसे कम महिला साक्षरता दर दर्ज की गई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) I, II और III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. निम्नलिखित में से कौन सा 1971 और 1981 के बीच राजस्थान में असाधारण रूप से उच्च जनसंख्या वृद्धि दर का प्राथमिक जनसांख्यिकीय कारण है?
(1) उच्च अंतर्प्रवासन स्तरों के साथ जन्म दर में अचानक वृद्धि।
(2) भारत के विभाजन के बाद शरणार्थियों का भारी आगमन।

(3) परिवार नियोजन नीतियों की शुरुआत जो प्रारंभ में सफल नहीं हो सकीं।
(4) चिकित्सा प्रगति के कारण उच्च जन्म दर के साथ मृत्यु दर में तेजी से गिरावट।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को 2011 की जनगणना के अनुसार उनके जनसंख्या घनत्व के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. अलवर
B. भरतपुर
C. दौसा
D. जयपुर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) D, B, C, A
(2) D, C, B, A
(3) B, D, A, C
(4) A, C, B, D
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. राजस्थान में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अनुसूचित जातियां कुल जनसंख्या का लगभग 17.8 प्रतिशत हैं।
II. अनुसूचित जनजातियां कुल जनसंख्या का लगभग 13.5 प्रतिशत हैं।
III. बांसवाड़ा में राज्य में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है।
IV. गंगानगर में राज्य में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. 2001-2011 की अवधि के दौरान राजस्थान की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर क्या थी?
(1) 21.3 प्रतिशत
(2) 17.7 प्रतिशत
(3) 28.4 प्रतिशत
(4) 32.5 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. 1901 से 2011 तक राजस्थान के जनगणना इतिहास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1901 में राजस्थान की जनसंख्या लगभग 1.03 करोड़ थी।
II. उच्चतम दशकीय वृद्धि दर 1971-1981 के दशक में दर्ज की गई थी।
III. 2001 की जनगणना में जनसंख्या 5 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई थी।
IV. 1981 की जनगणना के बाद दशकीय वृद्धि दर में निरंतर गिरावट आई।
V. 1911-1921 के दशक को राज्य के इतिहास में 'जनसांख्यिकीय विभाजक' माना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. सूची I में दिए गए जिलों को सूची II में दी गई उनकी 2011 की न्यूनतम साक्षरता दरों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जिले)
A. जालौर
B. सिरोही
C. प्रतापगढ़
D. बांसवाड़ा
सूची II: (न्यूनतम साक्षरता दर 2011)
i. 55.3%
ii. 56.0%
iii. 54.9%
iv. 56.3%
कूट:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): झुंझुनू और सीकर जैसे उत्तरी जिलों की तुलना में डूंगरपुर और बांसवाड़ा जैसे दक्षिणी राजस्थान के जिलों में बाल लिंगानुपात अधिक है।
कारण (R): दक्षिणी राजस्थान में केंद्रित जनजातीय आबादी में कन्या संतान के प्रति अधिक समतावादी सामाजिक मानदंड प्रचलित हैं।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. 2011 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा जिला और उसके समग्र लिंगानुपात का गलत युग्म है?
(1) डूंगरपुर - 994
(2) राजसमंद - 990

Click Here to Buy book on Amazon

(3) पाली - 987
(4) धौलपुर - 890
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजस्थान में परिवार कल्याण और जनसंख्या नीतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुख्यमंत्री राजश्री योजना का उद्देश्य बाल लिंगानुपात में सुधार करना और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना है।
II. जननी सुरक्षा योजना का उद्देश्य विशेष रूप से महिलाओं को मुफ्त उच्च शिक्षा प्रदान करना है।
III. राजस्थान जनसंख्या नीति का लक्ष्य कुल प्रजनन दर को कम करके जनसंख्या को स्थिर करना है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल II
(2) केवल I
(3) केवल III
(4) I और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. आयु संरचना के संदर्भ में, जनसंख्या में निर्भरता अनुपात को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(1) किसी क्षेत्र में कुल महिला जनसंख्या के सापेक्ष पुरुष जनसंख्या का अनुपात।
(2) 15-64 वर्ष की आयु के व्यक्तियों के सापेक्ष 0-14 और 65 वर्ष तथा उससे अधिक आयु के व्यक्तियों का अनुपात।
(3) किसी क्षेत्र में कुल शहरी जनसंख्या के सापेक्ष ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात।
(4) कुल उपलब्ध कार्यबल के सापेक्ष बेरोजगार जनसंख्या का अनुपात।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. 2011 में जनसंख्या घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम होने के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से विषम को चुनिए:
(1) जैसलमेर
(2) चुरु
(3) बीकानेर
(4) बाड़मेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (2001-2011) के आधार पर जिलों के सही आरोही क्रम को दर्शाता है?
(1) गंगानगर, झुंझुनू, पाली, बूंदी
(2) झुंझुनू, गंगानगर, बूंदी, पाली
(3) पाली, गंगानगर, झुंझुनू, बूंदी
(4) बूंदी, पाली, झुंझुनू, गंगानगर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. राजस्थान में 'जनसांख्यिकीय लाभांश' उस आर्थिक विकास क्षमता को संदर्भित करता है जो निम्नलिखित के परिणामस्वरुप हो सकती है:
(1) बुजुर्ग जनसंख्या की बढ़ती हिस्सेदारी के कारण उच्च निर्भरता अनुपात।
(2) राज्य के सभी जिलों में लिंगानुपात का समान होना।
(3) गैर-कार्यशील आयु वर्ग की तुलना में कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या का अधिक होना।
(4) प्रजनन दर में तेजी से वृद्धि जिससे भविष्य में बड़ी पीढ़ियाँ सुनिश्चित हों।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की धार्मिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिंदू कुल जनसंख्या का 88 प्रतिशत से अधिक हैं।
II. मुस्लिम राज्य का दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समूह हैं।
III. सिख राज्य की जनसंख्या का 5 प्रतिशत से अधिक हैं।
IV. राज्य के सभी धार्मिक समूहों में जैन समुदाय की साक्षरता दर सबसे अधिक है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. 2011 की जनगणना में राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक कुल जनसंख्या दर्ज की गई?
(1) जोधपुर
(2) अलवर
(3) जयपुर
(4) नागौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

22. सूची I में दिए गए जिलों को सूची II में दिए गए उनके 2001-2011 की दशकीय वृद्धि दर के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जिले)
A. बाड़मेर
B. जैसलमेर
C. जोधपुर
D. बांसवाड़ा
सूची II: (दशकीय वृद्धि दर 2001-2011)
i. 31.8%
ii. 26.5%
iii. 27.7%
iv. 32.5%
कूट:
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii

79. (1) आर्थिक खनिज निष्कर्षण और पर्यावरणीय बहाली
राजस्थान की खनिज नीतियों में 'सतत खनन' का मुख्य लक्ष्य आर्थिक लाभ के लिए खनिजों के निष्कर्षण और पर्यावरण के संरक्षण के बीच एक स्वस्थ संतुलन स्थापित करना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि खनन गतिविधियों के कारण प्रकृति को होने वाले नुकसान को न्यूनतम किया जाए और खनन पूर्ण होने के बाद प्रभावित क्षेत्रों की पारिस्थितिक बहाली की जाए। यह दृष्टिकोण भविष्य की पीढ़ियों हेतु प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए वर्तमान औद्योगिक विकास की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है।

80. (2) चंदेरिया और देबारी सीसा-जस्ता स्मेल्टर
राजस्थान में चांदी को मुख्य रुप से चंदेरिया और देबारी में स्थित सीसा-जस्ता प्रगालन केंद्रों में एक बहुमूल्य सह-उत्पाद के रुप में प्राप्त किया जाता है। जब इन संयंत्रों में सीसा और जस्ता अयस्कों का धातुकर्म शोधन किया जाता है, तो उनमें मिश्रित चांदी को वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अलग कर लिया जाता है। यह विधि व्यावसायिक रुप से अत्यंत कुशल है और राज्य को देश में चांदी के उत्पादन में अग्रणी स्थान प्रदान करती है, जिससे औद्योगिक लाभ अधिकतम सुनिश्चित होता है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

B. प्रतापगढ़
C. भीलवाड़ा
D. उदयपुर
सूची II: (बाल लिंगानुपात 2011)
i. 924
ii. 928
iii. 933
iv. 934
कूट:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. 2001-2011 के दौरान राजस्थान के किस जिले में सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई?
(1) झुंझुनू
(2) गंगानगर
(3) पाली
(4) बूंदी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राजस्थान की जनसंख्या नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान ने वर्ष 2000 में अपनी पहली राज्य जनसंख्या नीति लागू की थी।
II. इसका मुख्य उद्देश्य कुल प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर तक कम करके जनसंख्या को स्थिर करना है।
III. राज्य के परिवार नियोजन कार्यक्रमों ने साक्षरता में लैंगिक अंतराल को पूर्णतः समाप्त कर दिया है।
IV. यह नीति प्रजनन और बाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार पर बल देती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) I और II
(2) केवल III
(3) III और IV
(4) II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राजस्थान के पश्चिमी जिलों का जनसंख्या घनत्व पूर्वी जिलों की तुलना में काफी कम है।
कारण (R): पश्चिमी क्षेत्र विशाल थार मरुस्थल, शुष्क जलवायु और जल संसाधनों की भारी कमी से प्रभावित है।
नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. 2011 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित में से किस जिले का जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक नहीं है?
(1) जयपुर
(2) भरतपुर
(3) जोधपुर
(4) दौसा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

36. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 2011 में कुल जनसंख्या के आधार पर जिलों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(1) जोधपुर, जयपुर, नागौर, अलवर
(2) जयपुर, अलवर, जोधपुर, नागौर
(3) अलवर, जयपुर, जोधपुर, नागौर
(4) जयपुर, जोधपुर, अलवर, नागौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान में वर्तमान में अपेक्षाकृत युवा आयु संरचना है, जिसमें जनसंख्या का बड़ा भाग कार्यशील आयु वर्ग में है।
कथन II: यह जनसांख्यिकीय संरचना कौशल विकास के अभाव में भी राज्य के लिए स्वचालित आर्थिक समृद्धि की गारंटी देती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. निम्नलिखित में से कौन सा जनसांख्यिकीय संकेतक 2011 की जनगणना में राजस्थान के लिए उसके मूल्य के साथ सही सुमेलित है?
(1) कुल साक्षरता दर - 73.0%
(2) पुरुष साक्षरता दर - 79.2%
(3) बाल लिंगानुपात - 919
(4) जनसंख्या घनत्व - 382
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. राजस्थान में लिंगानुपात के तथ्यों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान का समग्र लिंगानुपात 2001 में 921 से बढ़कर 2011 में 928 हो गया।
II. ग्रामीण लिंगानुपात (933) शहरी लिंगानुपात (914) से अधिक है।
III. बाल लिंगानुपात 2001 में 909 से घटकर 2011 में 888 हो गया।
IV. धौलपुर का समग्र लिंगानुपात राज्य में न्यूनतम है।

V. डूंगरपुर एकमात्र जिला है जिसका लिंगानुपात 1000 से अधिक है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) I, II और V
(4) केवल V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का ग्रामीण लिंगानुपात कितना है?

(1) 933
(2) 914
(3) 928
(4) 943
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. सूची I में दिए गए जिलों को सूची II में दिए गए उनके 2011 के न्यूनतम लिंगानुपात के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (जिले)

A. धौलपुर
B. जैसलमेर
C. करौली
D. भरतपुर

सूची II: (न्यूनतम लिंगानुपात 2011)

i. 852
ii. 861
iii. 846
iv. 880

कूट:

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. 2011 में राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक महिला साक्षरता दर दर्ज की गई?

(1) कोटा
(2) जयपुर
(3) झुंझुनू
(4) सीकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. राजस्थान की ऐतिहासिक जनसंख्या वृद्धि के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) 1911-1921 के दशक में महामारियों के कारण नकारात्मक वृद्धि हुई थी।
(2) 1971-1981 के दशक में अब तक की सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर दर्ज की गई।
(3) 1951 और 2011 के बीच राज्य की जनसंख्या तीन गुना से अधिक बढ़ गई।
(4) 1981 के बाद से दशकीय वृद्धि दर में निरंतर वृद्धि हुई है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. राजस्थान की सामाजिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राजस्थान में अनुसूचित जाति की जनसंख्या लगभग 1.22 करोड़ है।
II. अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या लगभग 92 लाख है।
III. राज्य में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के प्रतिशत से कम है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल II और III
(2) केवल I और II
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. 2011 में 30 लाख से अधिक कुल जनसंख्या होने के संबंध में निम्नलिखित जिलों में से विषम को चुनिए:

(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) जैसलमेर
(4) अलवर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. झुंझुनू और सीकर जैसे पारंपरिक रुप से समृद्ध जिलों में घटते बाल लिंगानुपात का मुख्य कारण सामान्यतः किसे माना जाता है?

(1) स्वास्थ्य समस्याओं के कारण पुरुष बच्चों में उच्च शिशु मृत्यु दर।
(2) उच्च शिक्षा हेतु पुरुष बच्चों का अत्यधिक बाह्य-प्रवासन।
(3) शेखावाटी क्षेत्र के भीतर जन्म पैटर्न में प्राकृतिक जैविक परिवर्तन।
(4) अवैध गर्भपात तकनीकों तक सुगम पहुँच के साथ पुत्र वरीयता की मानसिकता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I: राजस्थान में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत गंगानगर में है।

कथन II: राज्य में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का न्यूनतम प्रतिशत डूंगरपुर में है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Click Here to Buy book on Amazon

48. राजस्थान में महिला साक्षरता प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विगत दशकों की तुलना में 2001 और 2011 के बीच महिला साक्षरता में पर्याप्त सुधार हुआ।
II. सुधारों के बावजूद, राजस्थान में भारत की न्यूनतम महिला साक्षरता दरों में से एक है।
III. राजस्थान में ग्रामीण महिला साक्षरता, शहरी महिला साक्षरता से अधिक है।
IV. जालौर जिले में 2011 में महिला साक्षरता दर 40 प्रतिशत से कम दर्ज की गई थी।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. सूची I के साक्षरता मापदंडों को सूची II के संबंधित जिलों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (साक्षरता मापदंड)
A. सर्वाधिक कुल साक्षरता
B. न्यूनतम कुल साक्षरता
C. सर्वाधिक पुरुष साक्षरता
D. न्यूनतम पुरुष साक्षरता
सूची II: (संबंधित जिला)
i. झुंझुनू
ii. जालौर
iii. कोटा
iv. प्रतापगढ़
कूट:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान के जनगणना इतिहास में "जनसांख्यिकीय विभाजक" के रूप में पहचाना जाने वाला वर्ष है:
(1) 1911
(2) 1921
(3) 1951
(4) 1981
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में किस जिले में न्यूनतम बाल लिंगानुपात दर्ज किया गया?
(1) सीकर
(2) धौलपुर
(3) झुंझुनू
(4) करौली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. हाल के दशकीय वृद्धि रुझानों के आधार पर, राजस्थान वर्तमान में जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के किस चरण से गुजर रहा है?
(1) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर जिसके कारण स्थिर वृद्धि होती है।
(2) उच्च जन्म दर और तेजी से गिरती मृत्यु दर जिसके कारण विस्फोटक वृद्धि होती है।
(3) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर जिसके परिणामस्वरूप शून्य जनसंख्या वृद्धि होती है।
(4) घटती प्रजनन क्षमता और मृत्यु दर जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि धीमी हो रही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत और राजस्थान की तुलना करने वाले निम्नलिखित जनसांख्यिकीय संकेतकों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर (21.3%) भारत (17.7%) से अधिक है।
II. राजस्थान का जनसंख्या घनत्व (200) भारत (382) से कम है।
III. राजस्थान की कुल साक्षरता (66.1%) भारत (73.0%) से कम है।
IV. राजस्थान का लिंगानुपात (928) भारत (943) से कम है।
V. राजस्थान का बाल लिंगानुपात (888) भारत (919) से कम है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति (ST) की जनसंख्या का अनुमानित प्रतिशत कितना है?
(1) 9.5 प्रतिशत
(2) 13.5 प्रतिशत
(3) 17.8 प्रतिशत
(4) 21.2 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान में कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या का प्रतिशत निरंतर बढ़ रहा है।
कथन II: यह परिवर्तन स्वाभाविक रूप से समग्र जनसांख्यिकीय निर्भरता अनुपात को कम करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

29. (3) बीकानेर जिले में राज्य की अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का अनुपात सर्वाधिक है।
राजस्थान में सामाजिक समूहों का वितरण असमान है। श्रीगंगानगर में अनुसूचित जाति का प्रतिशत सर्वाधिक है, जबकि बीकानेर और नागौर जिलों में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत राज्य में सबसे कम, लगभग 0.3 प्रतिशत है। बीकानेर में अनुसूचित जनजाति का अनुपात सर्वाधिक होने का दावा पूर्णतः गलत है, क्योंकि वास्तविकता में अनुसूचित जनजाति का सर्वाधिक संकेंद्रण दक्षिणी जिलों जैसे बाँसवाड़ा और डूंगरपुर में है। अतः बीकानेर के संबंध में दिया गया यह तथ्य सांख्यिकीय रूप से त्रुटिपूर्ण है।

30. (4) केवल III
राजस्थान में जनसंख्या वितरण को प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु ने गहराई से प्रभावित किया है। उपजाऊ मिट्टी और जल की उपलब्धता के कारण पूर्वी मैदानों में सघन आबादी पाई जाती है, जबकि थार मरुस्थल की कठोर परिस्थितियों ने पश्चिमी क्षेत्र को विरल बना दिया है। राजस्थान के जनसांख्यिकीय इतिहास में 1921 को 'विभाजक वर्ष' माना जाता है, न कि 1951 को, क्योंकि 1921 में ही राज्य ने पहली बार नकारात्मक वृद्धि देखी थी। अतः विभाजक वर्ष संबंधी कथन यहाँ तथ्यात्मक रूप से गलत है।

31. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान के दक्षिणी जिलों में बाल लिंगानुपात की स्थिति राज्य के अन्य हिस्सों की तुलना में काफी बेहतर है। वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार बाँसवाड़ा में बाल लिंगानुपात 934 दर्ज किया गया, जो राज्य में सर्वाधिक है। इसके पश्चात प्रतापगढ़ में 933, भीलवाड़ा में 928 और उदयपुर में 924 बाल लिंगानुपात पाया गया है। इन जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में कन्या जन्म के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता बालिकाओं के बेहतर अनुपात के पीछे मुख्य कारकों में शामिल हैं।

32. (2) गंगानगर
वर्ष 2001-2011 के दशक के दौरान राजस्थान की कुल दशकीय वृद्धि दर 21.3 प्रतिशत रही थी। इस अवधि में श्रीगंगानगर जिले ने सबसे कम वृद्धि दर प्रदर्शित की, जो केवल 10.0 प्रतिशत थी। इसके बाद झुंझुनू और पाली जैसे जिलों का स्थान आता है। श्रीगंगानगर में प्रभावी स्वास्थ्य सेवाओं, बेहतर सिंचाई सुविधाओं के कारण आई आर्थिक स्थिरता और बढ़ती साक्षरता ने जनसंख्या नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह जिला राज्य में जनसंख्या स्थिरता की दिशा में एक सकारात्मक उदाहरण है।

33. (2) केवल III
राजस्थान ने अपनी पहली राज्य जनसंख्या नीति वर्ष 2000 में लागू की थी, जिसका उद्देश्य कुल प्रजनन दर को कम करके जनसंख्या को स्थिर करना था। यह नीति स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और परिवार नियोजन पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है। यद्यपि, यह कहना गलत है कि इन कार्यक्रमों ने साक्षरता में लैंगिक अंतराल को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। वास्तविकता में आज भी पुरुष और महिला साक्षरता के बीच एक बड़ा फासला मौजूद है, जिसे कम करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

34. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों के बीच जनसंख्या घनत्व में भारी अंतर पाया जाता है। जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर जैसे पश्चिमी जिलों में घनत्व बहुत कम है क्योंकि यहाँ थार मरुस्थल की शुष्क जलवायु और जल संसाधनों का भीषण अभाव है। इसके विपरीत पूर्वी राजस्थान के मैदानी भागों में नदियों और अनुकूल जलवायु के कारण सघन आबादी बसती है। भौगोलिक बाधाओं ने ही पश्चिमी क्षेत्र को विरल और दुर्गम बनाया है, जो वहाँ की जनसंख्या संरचना को सीधे प्रभावित करता है।

35. (3) जोधपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के पूर्वी जिलों में जनसंख्या घनत्व काफी उच्च है। जयपुर 595, भरतपुर 503 और दौसा 476 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ 400 की सीमा को पार कर चुके हैं। इसकी तुलना में जोधपुर जिले का जनसंख्या घनत्व मात्र 161 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। मरुस्थलीय जिला होने के कारण जोधपुर का अधिकांश भू-भाग विरल बसा हुआ है, जिससे इसका औसत घनत्व राज्य के पूर्वी मैदानी जिलों के स्तर तक नहीं पहुँच पाता है।

36. (4) जयपुर, जोधपुर, अलवर, नागौर
राजस्थान के सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिलों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित करने पर जयपुर प्रथम स्थान पर आता है जिसकी आबादी 66 लाख से अधिक है। इसके पश्चात जोधपुर दूसरे स्थान पर है जिसकी जनसंख्या लगभग 36.87 लाख है। अलवर 36.74 लाख के साथ तीसरे और नागौर लगभग 33 लाख की आबादी के साथ चौथे स्थान पर स्थित है। यह क्रम राज्य के जनसांख्यिकीय संकेंद्रण को स्पष्ट करता है, जहाँ राजधानी क्षेत्र और प्रमुख व्यापारिक केंद्र सबसे अधिक आबादी वाले क्षेत्रों के रूप में उभरे हैं।

37. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजस्थान वर्तमान में एक युवा आयु संरचना का लाभ उठा रहा है, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कार्यशील आयु वर्ग में है। यह स्थिति आर्थिक विकास की अपार संभावनाएँ प्रदान करती है। यद्यपि, यह जनसांख्यिकीय संरचना स्वतः ही समृद्धि की गारंटी नहीं देती है। यदि युवाओं को उचित शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं कराए गए, तो यह लाभ एक चुनौती में बदल सकता है। अतः कौशल विकास के बिना केवल बड़ी युवा जनसंख्या से आर्थिक प्रगति सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

38. (2) पुरुष साक्षरता दर - 79.2%
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के विभिन्न जनसांख्यिकीय संकेतकों में से पुरुष साक्षरता दर का 79.2 प्रतिशत होना एक सटीक और प्रामाणिक आँकड़ा है। राज्य

NODIA

कूट:
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. निर्भरता अनुपात गैर-कार्यशील आयु वर्ग की तुलना कार्यशील आयु वर्ग से करता है। मानक गणना में कौन सा आयु वर्ग 'कार्यशील जनसंख्या' का गठन करता है?
(1) 18-60 वर्ष
(2) 15-59 वर्ष
(3) 21-65 वर्ष
(4) 15-64 वर्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जाति (SC) की जनसंख्या का अनुमानित प्रतिशत कितना है?
(1) 17.8 प्रतिशत
(2) 15.2 प्रतिशत
(3) 20.1 प्रतिशत
(4) 22.4 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राज्य के औसत 21.3 प्रतिशत से कम दशकीय वृद्धि दर होने के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से विषम को चुनिए:
(1) गंगानगर
(2) झुंझुनू
(3) बाड़मेर
(4) पाली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. राजस्थान में कौन सा जिला युग्म न्यूनतम पुरुष साक्षरता दर (69.5%) साझा करता है?
(1) जालौर और सिरोही
(2) बाड़मेर और जैसलमेर
(3) डूंगरपुर और बांसवाड़ा
(4) प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान में शहरी साक्षरता, ग्रामीण साक्षरता की तुलना में काफी अधिक है।
कथन II: शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता में लैंगिक अंतराल अत्यधिक व्यापक है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान में जननी सुरक्षा योजना एक परिवार कल्याण हस्तक्षेप है जिसे मुख्य रुप से किसके लिए तैयार किया गया है?
(1) ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह की प्रथा का उन्मूलन।
(2) मातृ मृत्यु दर को कम करने हेतु संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।
(3) छात्राओं हेतु सार्वभौमिक मुफ्त माध्यमिक शिक्षा का प्रावधान।
(4) बुजुर्ग आबादी के लिए लक्षित पोषण सहायता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. राजस्थान के किन दो जिलों में अनुसूचित जनजाति (ST) की जनसंख्या का प्रतिशत न्यूनतम (लगभग 0.3%) है?
(1) चुरु और हनुमानगढ़
(2) जोधपुर और जैसलमेर
(3) गंगानगर और बीकानेर
(4) बीकानेर और नागौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. 2001 और 2011 की जनगणना के बीच राजस्थान में देखा गया जनसांख्यिकीय रुझान निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(1) बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में उल्लेखनीय वृद्धि।
(2) दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट।
(3) कुल साक्षरता दर में वृद्धि।
(4) समग्र लिंगानुपात में आंशिक सुधार।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. राजस्थान (2011 जनगणना) में ग्रामीण और शहरी बाल लिंगानुपात के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) ग्रामीण बाल लिंगानुपात, शहरी बाल लिंगानुपात से अधिक है।
(2) शहरी बाल लिंगानुपात 874 है।
(3) शहरी बाल लिंगानुपात, ग्रामीण बाल लिंगानुपात से अधिक है।
(4) ग्रामीण बाल लिंगानुपात 892 है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. जनसांख्यिकीय लाभांश चरण के समाप्त होने पर राजस्थान को किस प्रमुख सामाजिक-आर्थिक चुनौती का सामना करना पड़ेगा?
(1) वृद्धावस्था वाली जनसंख्या और उच्च वृद्ध निर्भरता अनुपात।
(2) जन्म दर में अचानक विस्फोट।
(3) जीवन प्रत्याशा में अप्रत्याशित गिरावट।
(4) बढ़ती बाल जनसंख्या के कारण शहरी बुनियादी ढांचे का अभाव।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. राजस्थान के जनसंख्या घनत्व के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) राजस्थान का जनसंख्या घनत्व राष्ट्रीय औसत से अधिक

Click Here to Buy book on Amazon

(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. उन जिलों के सही युग्म की पहचान कीजिए जिनका जनसंख्या घनत्व राजस्थान में 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक है।
(1) जयपुर और भरतपुर
(2) जयपुर और दौसा
(3) भरतपुर और अलवर
(4) अलवर और दौसा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. सूची I में दिए गए दशकों को सूची II में राजस्थान की दशकीय वृद्धि दरों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (दशक)
A. 1911-1921
B. 1971-1981
C. 1991-2001
D. 2001-2011
सूची II: (राजस्थान में दशकीय वृद्धि दर)
i. 32.97%
ii. -6.29%
iii. 21.31%
iv. 28.41%
कूट:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. निम्नलिखित में से कौन सा जिला दक्षिणी राजस्थान के उच्च अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या वाले क्षेत्र में सम्मिलित नहीं है?
(1) बीकानेर
(2) बांसवाड़ा
(3) डूंगरपुर
(4) उदयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. जैसलमेर जिले में अत्यंत कम जनसंख्या घनत्व का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है?
(1) बार-बार आने वाली बाढ़ जिससे कृषि भूमि और बस्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।
(2) सीमावर्ती क्षेत्रों में बसने पर रोक लगाने वाले सरकारी नियम।
(3) खनिज संसाधनों का अभाव जो औद्योगिक विकास को रोकता है।
(4) शुष्क जलवायु, रेतीला धरातल और जल संसाधनों की भारी कमी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किस जिले में न्यूनतम महिला साक्षरता दर (38.5%) दर्ज की गई?
(1) सिरोही
(2) जालौर
(3) बाड़मेर
(4) प्रतापगढ़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. राजस्थान में नगरीकरण की दर के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) राज्य की 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है।
(2) कोटा में राज्य की शहरी जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है।
(3) राजस्थान की नगरीकरण दर लगभग 35 प्रतिशत है।
(4) 2001 और 2011 के बीच शहरी जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में अधिक थी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर राष्ट्रीय पुरुष साक्षरता औसत से काफी अधिक है।
कथन II: राजस्थान में महिला साक्षरता दर भी राष्ट्रीय महिला साक्षरता औसत से अधिक है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. 2011 में राजस्थान के किस जिले में लिंगानुपात 994 दर्ज किया गया था, जो राज्य में सर्वाधिक है?
(1) डूंगरपुर
(2) राजसमंद
(3) पाली
(4) प्रतापगढ़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

64. सूची I के धार्मिक समूहों को सूची II में 2011 की उनकी अनुमानित जनसंख्या प्रतिशत के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (धार्मिक समूह)
A. हिंदू
B. मुस्लिम
C. सिख
D. जैन
सूची II: (जनसंख्या का अनुमानित प्रतिशत 2011)
i. 1.3%
ii. 9.1%
iii. 88.5%
iv. 0.9%

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 6,85,48,437
वर्ष 2011 की जनगणना के अंतिम परिणामों के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 निर्धारित की गई थी। इस विशाल जनसंख्या में पुरुषों की कुल संख्या 3,55,50,997 तथा महिलाओं की संख्या 3,29,97,440 दर्ज की गई है। यह संपूर्ण भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 5.66 प्रतिशत भाग है। जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान देश का एक प्रमुख राज्य है जिसकी आबादी पिछले दशकों में निरंतर बढ़ी है।

2. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के जनसांख्यिकीय इतिहास में 1911-1921 के दशक के दौरान जनसंख्या में 6.29 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई थी। इस भारी गिरावट का मुख्य कारण उस कालखंड में आए भीषण अकाल और संक्रामक महामारियाँ थीं। इन प्राकृतिक आपदाओं के फलस्वरुप मृत्यु दर में अत्यधिक वृद्धि हुई, जिससे राज्य की कुल जनसंख्या में स्पष्ट कमी आई। यह घटना राजस्थान के जनसंख्या इतिहास में अद्वितीय मानी जाती है।

3. (3) राजस्थान का लिंगानुपात 928 है, जो कि 943 के राष्ट्रीय औसत से कम है।
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का समग्र लिंगानुपात 928 दर्ज किया गया है, जिसका अर्थ प्रति एक हजार पुरुषों पर 928 महिलाएँ है। इसकी तुलना में भारत का राष्ट्रीय औसत लिंगानुपात 943 है। इस प्रकार राजस्थान का लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से 15 अंक कम है। यह आँकड़ा राज्य में लैंगिक असंतुलन की स्थिति को दर्शाता है, जिसके सुधार हेतु सरकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और जागरूकता अभियानों का संचालन कर रही है।

4. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
वर्ष 2011 के जनगणना आँकड़ों के अनुसार राजस्थान के सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले जिलों में जयपुर 595 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ शीर्ष स्थान पर है। इसके पश्चात क्रमशः भरतपुर का घनत्व 503, दौसा का 476 तथा अलवर का 438 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। पूर्वी राजस्थान के इन जिलों में उपजाऊ मैदान और जल की पर्याप्त उपलब्धता के कारण जनसंख्या का संकेंद्रण अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

5. (3) महिला साक्षरता दर 75.4 प्रतिशत है, जो पुरुष साक्षरता दर के बराबर है।
राजस्थान की साक्षरता दर 2011 में 66.1 प्रतिशत दर्ज की गई थी, जिसमें पुरुषों की साक्षरता 79.2 प्रतिशत रही। यद्यपि, राज्य में महिला साक्षरता दर मात्र 52.1 प्रतिशत है, जो पुरुष साक्षरता की तुलना में अत्यधिक कम है। साक्षरता के क्षेत्र में राज्य में लगभग 27 प्रतिशत का व्यापक लैंगिक अंतराल विद्यमान है। महिला साक्षरता का 75.4 प्रतिशत होना एक त्रुटिपूर्ण तथ्य है, क्योंकि वास्तविक आँकड़ा सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण काफी निम्न है।

6. (2) I, II और III
राजस्थान में साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण में काफी विविधता पाई जाती है। कोटा जिले में राज्य की सर्वाधिक महिला साक्षरता दर दर्ज की गई है, जो इसकी शैक्षिक उत्कृष्टता को प्रमाणित करती है। वहीं झुंझुनू जिला पुरुष साक्षरता में अग्रणी स्थान पर बना हुआ है। इसके विपरीत जालौर जिले की स्थिति सबसे निम्न है, जहाँ राज्य की न्यूनतम कुल साक्षरता दर और न्यूनतम महिला साक्षरता दर दर्ज की गई है। ये तथ्य राज्य के शैक्षिक परिदृश्य को दर्शाते हैं।

7. (4) चिकित्सा प्रगति के कारण उच्च जन्म दर के साथ मृत्यु दर में तेजी से गिरावट।
वर्ष 1971 से 1981 के मध्य राजस्थान में 32.97 प्रतिशत की ऐतिहासिक जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई थी। इस तीव्र वृद्धि का प्राथमिक कारण चिकित्सा सेवाओं का विस्तार और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार था, जिससे मृत्यु दर में प्रभावी गिरावट आई। मृत्यु दर कम होने के बावजूद सामाजिक मान्यताओं के कारण जन्म दर उच्च बनी रही, जिसके परिणामस्वरुप जनसंख्या में अभूतपूर्व उछाल आया। इसे राज्य के जनसांख्यिकीय संक्रमण का विस्फोटक चरण माना जाता है।

8. (1) D, B, C, A
राजस्थान में जनसंख्या घनत्व का वितरण भौगोलिक कारकों से गहराई से प्रभावित है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित करने पर जयपुर प्रथम स्थान पर आता है जहाँ घनत्व 595 है। इसके बाद क्रमशः भरतपुर 503 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर, दौसा 476 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर और अलवर 438 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ आते हैं। यह पूर्वी मैदानी क्षेत्र राज्य का सबसे सघन क्षेत्र है जहाँ कृषि हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं।

9. (3) I, II, III और IV
राजस्थान की सामाजिक संरचना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियों का अंश 17.8 प्रतिशत है, जबकि अनुसूचित जनजातियाँ 13.5 प्रतिशत हैं। क्षेत्रीय वितरण के अनुसार श्रीगंगानगर जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक पाया जाता है। वहीं दूसरी ओर दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में अनुसूचित जनजाति की

Downloaded from www.pdf.tube

जनसंख्या का प्रतिशत राज्य में सबसे अधिक दर्ज किया गया है।

10. (1) 21.3 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 21.31 प्रतिशत रही थी। यह दर पिछली जनगणना 2001 की वृद्धि दर 28.41 प्रतिशत की तुलना में काफी कम है, जो जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों की सफलता को दर्शाती है। राज्य के विभिन्न जिलों में यह वृद्धि दर असमान है, जहाँ बाड़मेर में यह सर्वाधिक रही है वहीं श्रीगंगानगर में न्यूनतम दर्ज की गई है। कुल मिलाकर राज्य की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

11. (4) I, II, III, IV और V
राजस्थान के जनगणना इतिहास में 1901 से 2011 तक कई महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। 1921 को जनसांख्यिकीय विभाजक माना जाता है क्योंकि तब वृद्धि दर नकारात्मक थी। 1971-1981 में राज्य ने सर्वाधिक दशकीय वृद्धि देखी, जबकि 1981 के पश्चात इसमें निरंतर गिरावट दर्ज की गई है। वर्ष 2001 की जनगणना तक राज्य की आबादी 5 करोड़ के आँकड़े को पार कर गई थी। ये सभी क्रमिक विकास राज्य की जनसंख्या नीतियों और सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।

12. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी जिलों में साक्षरता दर तुलनात्मक रुप से कम दर्ज की गई है। वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार जालौर की साक्षरता दर 54.9 प्रतिशत के साथ सबसे कम है। सिरोही जिले में यह दर 55.3 प्रतिशत तथा प्रतापगढ़ में 56.0 प्रतिशत दर्ज की गई है। बाँसवाड़ा जिले में साक्षरता का स्तर 56.3 प्रतिशत है। इन क्षेत्रों में जनजातीय आबादी की अधिकता और शैक्षिक बुनियादी ढाँचे की कमी साक्षरता के इन निम्न स्तरों के लिए मुख्य रुप से उत्तरदायी है।

13. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के जनसांख्यिकीय आँकड़े दर्शाते हैं कि डूंगरपुर और बाँसवाड़ा जैसे दक्षिणी जिलों में बाल लिंगानुपात उत्तरी जिलों की तुलना में काफी बेहतर है। इसका मुख्य कारण यहाँ की बड़ी जनजातीय आबादी है जहाँ सांस्कृतिक और सामाजिक रुप से कन्या संतानों के प्रति भेदभाव कम पाया जाता है। जनजातीय समाज में प्रचलित समतावादी मूल्य और परंपराएँ बालिका जन्म का स्वागत करती हैं। इसके विपरीत विकसित उत्तरी जिलों में पुत्र वरीयता के कारण बाल लिंगानुपात चिंताजनक है।

14. (4) धौलपुर - 890
राजस्थान के जिलों के लिंगानुपात के विश्लेषण में धौलपुर का स्थान विशेष है क्योंकि यहाँ राज्य का न्यूनतम लिंगानुपात दर्ज किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार धौलपुर का वास्तविक लिंगानुपात मात्र 846 है, न कि 890। इसके विपरीत डूंगरपुर 994 के साथ राज्य में शीर्ष पर है, जिसके बाद राजसमंद 990 और पाली 987 के स्थान आते हैं। धौलपुर में निम्न लिंगानुपात का कारण क्षेत्र की विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ और जागरुकता का अभाव माना जाता है।

15. (1) केवल II
राजस्थान सरकार द्वारा संचालित जननी सुरक्षा योजना का मुख्य उद्देश्य मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाना है। यह योजना महिलाओं को मुफ्त उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए नहीं, बल्कि संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित करने और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए बनाई गई है। मुख्यमंत्री राजश्री योजना बालिकाओं के जन्म और शिक्षा को बढ़ावा देती है, जबकि जनसंख्या नीति का लक्ष्य प्रजनन दर को स्थिर करना है। अतः उच्च शिक्षा संबंधी कथन इस योजना के संदर्भ में पूर्णतः गलत है।

16. (2) 15-64 वर्ष की आयु के व्यक्तियों के सापेक्ष 0-14 और 65 वर्ष तथा उससे अधिक आयु के व्यक्तियों का अनुपात।
जनसांख्यिकी में निर्भरता अनुपात एक महत्वपूर्ण सूचक है जो अर्थव्यवस्था पर आश्रित जनसंख्या के भार को मापता है। इसकी गणना 0-14 वर्ष के बच्चों और 65 वर्ष से अधिक के वृद्धों की कुल संख्या को 15-64 वर्ष की कार्यशील आयु वाली जनसंख्या से विभाजित करके की जाती है। यह अनुपात बताता है कि प्रत्येक कार्यशील व्यक्ति पर कितने गैर-कार्यशील व्यक्ति निर्भर हैं। उच्च निर्भरता अनुपात संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है, जबकि निम्न अनुपात राज्य के आर्थिक विकास में सहायक होता है।

NODIA

17. (2) चुरु
राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी जिलों में जनसंख्या घनत्व भौगोलिक बाधाओं के कारण बहुत कम पाया जाता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जैसलमेर में 17, बीकानेर में 78 और बाड़मेर में 92 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर का घनत्व दर्ज किया गया है, जो 100 से कम है। यद्यपि, चुरु जिले का जनसंख्या घनत्व 147 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जो 100 की सीमा से काफी अधिक है। इसलिए चुरु जिला कम जनसंख्या घनत्व वाले इस विशिष्ट समूह में शामिल नहीं होता है।

18. (1) गंगानगर, झुंझुनू, पाली, बूंदी
वर्ष 2001-2011 की अवधि के दौरान राजस्थान के जिलों में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में काफी भिन्नता देखी गई। वृद्धि दर के आरोही क्रम में व्यवस्थित करने पर श्रीगंगानगर सबसे निचले स्थान पर है जहाँ मात्र 10 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसके पश्चात झुंझुनू 11.7 प्रतिशत, पाली 11.9 प्रतिशत और बूंदी 15.4 प्रतिशत के साथ आते हैं। इन जिलों ने राज्य की औसत वृद्धि दर 21.3 प्रतिशत की तुलना में काफी धीमी गति से विकास किया है, जो सफल परिवार नियोजन का संकेत देता है।

19. (3) गैर-कार्यशील आयु वर्ग की तुलना में कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या का अधिक होना।
जनसांख्यिकीय लाभांश उस स्थिति को कहते हैं जब किसी राज्य की कुल जनसंख्या में उत्पादक या कार्यशील आयु वर्ग का अनुपात बढ़ जाता है। राजस्थान वर्तमान में इस दौर

से गुज़र रहा है जहाँ युवाओं और 15-64 वर्ष के व्यक्तियों की संख्या निर्भर बच्चों और वृद्धों से अधिक है। यदि इस विशाल श्रम शक्ति को उचित शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो यह राज्य की आर्थिक प्रगति की गति को तीव्र कर सकता है। यह विकास का महत्वपूर्ण अवसर है।

20. (4) केवल I, II और IV
राजस्थान की धार्मिक संरचना में हिंदू समुदाय 88.5 प्रतिशत के साथ बहुसंख्यक है, जबकि मुस्लिम समुदाय 9.1 प्रतिशत के साथ दूसरा सबसे बड़ा समूह है। जैन समुदाय राज्य की जनसंख्या में छोटा भाग होने के बावजूद अपनी उच्चतम साक्षरता दर के लिए जाना जाता है। सिखों की जनसंख्या राज्य में लगभग 1.3 प्रतिशत है, अतः उनका प्रतिशत 5 से अधिक होने का दावा गलत है। ये धार्मिक आँकड़े राज्य की विविधतापूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक बनावट को सांख्यिकीय आधार प्रदान करते हैं।

21. (3) जयपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अंतिम आँकड़ों के अनुसार जयपुर राजस्थान का सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला है। यहाँ की कुल जनसंख्या 66,26,178 दर्ज की गई है। जयपुर राज्य की राजधानी होने के साथ-साथ एक प्रमुख व्यापारिक और प्रशासनिक केंद्र भी है। जयपुर के पश्चात जोधपुर और अलवर जिलों का स्थान आता है। जयपुर में शहरीकरण की उच्च दर और बेहतर नागरिक सुविधाओं के कारण आसपास के क्षेत्रों से भारी पलायन होता है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ जनसंख्या का भारी संकेंद्रण है।

22. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान के कुछ पश्चिमी और दक्षिणी जिलों में 2001-2011 के दौरान उच्च दशकीय वृद्धि दर देखी गई। बाड़मेर जिले ने 32.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ राज्य में शीर्ष स्थान प्राप्त किया, जबकि जैसलमेर में यह दर 31.8 प्रतिशत रही। जोधपुर जिले में 27.7 प्रतिशत और बाँसवाड़ा में 26.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इन क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास की धीमी गति और उच्च जन्म दर इन तीव्र जनसंख्या वृद्धि आँकड़ों के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी भौगोलिक और सामाजिक कारक माने जाते हैं।

23. (4) 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
राजस्थान के विशाल थार मरुस्थल में स्थित जैसलमेर जिले का जनसंख्या घनत्व राज्य में सबसे कम है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में केवल 17 व्यक्ति निवास करते हैं। विषम भौगोलिक परिस्थितियों, जल की तीव्र कमी और रेतीले धरातल के कारण यहाँ बस्तियाँ बहुत विरल हैं। यह घनत्व भारत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में अत्यंत न्यून है और राज्य के पूर्वी मैदानी जिलों जैसे जयपुर और भरतपुर की तुलना में बिल्कुल विपरीत स्थिति प्रस्तुत करता है।

24. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में पुरुष और महिला साक्षरता के बीच लगभग 27 प्रतिशत का विशाल अंतराल पाया जाता है, जो देश के अन्य राज्यों की तुलना में काफी अधिक है। इसका मूल कारण राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त सामाजिक ढाँचा है जहाँ शिक्षा के संसाधनों पर पुरुषों का प्रभुत्व माना जाता है। बाल विवाह और स्कूलों की दूरी लड़कियों की शिक्षा में बड़ी बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। इन्हीं सामाजिक-आर्थिक कारणों से महिला साक्षरता का स्तर पुरुषों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ है।

25. (3) I, II, III, IV और V
राजस्थान की जनसंख्या का लगभग 75.1 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, जबकि 24.9 प्रतिशत आबादी शहरी है। कोटा जिला 60.3 प्रतिशत नगरीकरण के साथ राज्य का सबसे शहरीकृत जिला है। डूंगरपुर में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक पाया जाता है। विशेष रूप से 2001-2011 के दशक में शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक रही, जो आर्थिक अवसरों की तलाश में शहरों की ओर बढ़ते पलायन और तीव्र नगरीकरण की प्रवृत्ति को दर्शाती है।

26. (2) 0 से 6 वर्ष
भारतीय जनगणना प्रणाली में बाल लिंगानुपात की गणना के लिए 0 से 6 वर्ष के आयु वर्ग को मानक माना जाता है। इस अनुपात के माध्यम से प्रति एक हजार बालकों पर बालिकाओं की संख्या का निर्धारण किया जाता है। वर्ष 2011 में राजस्थान का बाल लिंगानुपात 888 दर्ज किया गया था, जो पिछले दशक की तुलना में 21 अंकों की गिरावट दर्शाता है। यह महत्वपूर्ण सूचक भविष्य के जनसांख्यिकीय ढांचे और समाज में बालिकाओं के अस्तित्व एवं सुरक्षा की स्थिति की ओर संकेत करता है।

27. (4) D, B, C, A
राजस्थान में महिला साक्षरता के मामले में कोटा जिला 65.9 प्रतिशत के साथ शीर्ष स्थान पर है। इसके पश्चात अवरोही क्रम में जयपुर 64.0 प्रतिशत, झुंझुनू 55.8 प्रतिशत और श्रीगंगानगर 55.0 प्रतिशत के साथ आते हैं। कोटा में विकसित कोचिंग उद्योग और उच्च शिक्षण संस्थानों के वातावरण ने महिला साक्षरता को बढ़ावा दिया है। जयपुर की राजधानी के रूप में प्रशासनिक और शहरी सुविधाओं ने भी यहाँ महिलाओं की शैक्षिक स्थिति को राज्य के औसत की तुलना में काफी उन्नत रखा है।

28. (2) महिलाओं के पक्ष में उच्च समग्र लिंगानुपात।
डूंगरपुर और राजसमंद जैसे जिलों में पुरुषों का बड़े पैमाने पर रोजगार की तलाश में पड़ोसी राज्यों या शहरों की ओर पलायन होता है। इस बाह्य-प्रवासन के कारण इन जिलों की स्थानीय जनसंख्या में महिलाओं का अनुपात पुरुषों की तुलना में बढ़ जाता है। यही कारण है कि जनगणना 2011 में डूंगरपुर का लिंगानुपात 994 और राजसमंद का 990 दर्ज किया गया, जो राज्य के औसत से बहुत अधिक है। यह जनसांख्यिकीय प्रभाव आर्थिक विवशता और श्रम गतिशीलता का एक प्रत्यक्ष परिणाम माना जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

है।
(2) जयपुर एकमात्र जिला है जिसका जनसंख्या घनत्व 500 से अधिक है।
(3) पाँच से अधिक जिलों में जनसंख्या घनत्व 100 से कम दर्ज किया गया है।
(4) भारत और राजस्थान के बीच घनत्व का अंतर 182 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

76. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत और राजस्थान के जनसंख्या घनत्व के बीच का अंतर कितना है?
(1) 152 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(2) 182 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(3) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(4) 225 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: राजस्थान की कुल प्रजनन दर (TFR) पिछले दो दशकों में निरंतर घट रही है।
कथन II: महिला साक्षरता में सुधार, विलंबित विवाह और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता ने इस गिरावट में योगदान दिया है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. 2011 की जनगणना के अनुसार जिले और उसकी कुल साक्षरता दर का सही युग्म कौन सा है?
(1) कोटा - 74.1%
(2) झुंझुनू - 76.6%
(3) सीकर - 79.2%
(4) जयपुर - 75.5%
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. 2011 में समग्र लिंगानुपात 900 से कम होने के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से विषम को चुनिए:
(1) डूंगरपुर
(2) धौलपुर
(3) जैसलमेर
(4) करौली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग कितना प्रतिशत राजस्थान में निवास करता था?
(1) 4.25 प्रतिशत
(2) 5.66 प्रतिशत
(3) 6.85 प्रतिशत
(4) 7.15 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

की कुल साक्षरता दर वास्तव में 66.1 प्रतिशत है, न कि 73 प्रतिशत। इसी प्रकार बाल लिंगानुपात 888 है और समग्र जनसंख्या घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। पुरुष साक्षरता के ये आँकड़े राज्य में शैक्षिक प्रगति के स्तर को दर्शाते हैं, यद्यपि इसमें अभी भी सुधार की व्यापक संभावनाएँ शेष हैं।

39. (4) केवल V
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का लिंगानुपात 2001 के 921 से बढ़कर 928 हो गया, जो एक सकारात्मक सुधार है। ग्रामीण क्षेत्रों का लिंगानुपात शहरी क्षेत्रों से अधिक है और धौलपुर में राज्य का सबसे कम लिंगानुपात पाया गया है। यद्यपि, यह कथन गलत है कि डूंगरपुर एकमात्र जिला है जिसका लिंगानुपात 1000 से अधिक है। वास्तव में, 2011 में राजस्थान के किसी भी जिले का लिंगानुपात 1000 या उससे अधिक दर्ज नहीं किया गया था, यहाँ तक कि शीर्ष जिला डूंगरपुर भी 994 पर रहा।

40. (1) 933
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों का लिंगानुपात 933 दर्ज किया गया है। यह शहरी लिंगानुपात 914 की तुलना में काफी बेहतर स्थिति को दर्शाता है। ग्रामीण समाज में शहरी क्षेत्रों की तुलना में लिंग आधारित भेदभाव के कुछ रूपों में कमी या बाह्य पलायन के प्रभाव के कारण यह अंतर देखा जाता है। यह आँकड़ा प्रति एक हजार पुरुषों पर ग्रामीण महिलाओं की संख्या को निरूपित करता है, जो राज्य के समग्र लिंगानुपात 928 के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

41. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के पूर्वी जिलों में लिंगानुपात की स्थिति तुलनात्मक रूप से निम्न दर्ज की गई है। वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार धौलपुर जिले में राज्य का न्यूनतम लिंगानुपात 846 पाया गया है। जैसलमेर में यह 852 तथा करौली में 861 दर्ज किया गया है। भरतपुर जिले का लिंगानुपात 880 है। इन जिलों में निम्न लिंगानुपात का कारण ऐतिहासिक पुत्र वरीयता, सामाजिक रुढ़ियाँ और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच माना जाता है। ये आँकड़े राज्य में लैंगिक समानता की दिशा में कड़ी चुनौतियों को प्रकट करते हैं।

42. (1) कोटा
वर्ष 2011 में राजस्थान के कोटा जिले ने महिला साक्षरता के क्षेत्र में राज्य में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। यहाँ महिला साक्षरता दर 65.9 प्रतिशत दर्ज की गई, जो राज्य के औसत 52.1 प्रतिशत से काफी अधिक है। कोटा की इस उपलब्धि का श्रेय वहाँ के उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण और जागरुकता को दिया जाता है। इसके पश्चात जयपुर और झुंझुनू जिलों का स्थान आता है। महिला साक्षरता में कोटा का अग्रणी होना शिक्षा के प्रति बदलते सामाजिक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

43. (4) 1981 के बाद से दशकीय वृद्धि दर में निरंतर वृद्धि हुई है।
राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि के ऐतिहासिक रुझानों के अनुसार 1971-1981 के दशक में अब तक की सर्वाधिक वृद्धि दर 32.97 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसके विपरीत यह कहना गलत है कि 1981 के बाद वृद्धि दर में निरंतर वृद्धि हुई है। वास्तविकता यह है कि 1981 के पश्चात प्रत्येक उत्तरवर्ती जनगणना में दशकीय वृद्धि दर में क्रमिक गिरावट आई है। यह गिरावट बढ़ती जागरुकता और सफल परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रभाव को दर्शाती है, जिससे जनसंख्या वृद्धि अब धीमी हो रही है।

44. (2) केवल I और II
राजस्थान की सामाजिक संरचना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का महत्वपूर्ण योगदान है। जनगणना 2011 के अनुसार राज्य में अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या लगभग 1.22 करोड़ है, जबकि अनुसूचित जनजाति की आबादी लगभग 92 लाख दर्ज की गई है। प्रतिशत के आधार पर अनुसूचित जातियाँ कुल जनसंख्या का 17.8 प्रतिशत और अनुसूचित जनजातियाँ 13.5 प्रतिशत हैं। अतः अनुसूचित जाति का प्रतिशत जनजाति से अधिक है, जिससे तीसरा कथन गलत सिद्ध होता है। ये दोनों समूह राज्य के अभिन्न अंग हैं।

45. (3) जैसलमेर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर, जोधपुर और अलवर ऐसे जिले हैं जिनकी कुल जनसंख्या 30 लाख की सीमा को पार कर चुकी है। जयपुर 66 लाख से अधिक जनसंख्या के साथ सबसे आगे है, जिसके बाद जोधपुर और अलवर का स्थान आता है। इसके विपरीत जैसलमेर राज्य का सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है, जिसकी आबादी मात्र 6.69 लाख दर्ज की गई है। जैसलमेर की विषम भौगोलिक परिस्थितियों और मरुस्थलीय विस्तार के कारण यहाँ मानव बस्तियाँ बहुत ही विरल और कम संख्या में पाई जाती हैं।

46. (4) अवैध गर्भपात तकनीकों तक सुगम पहुँच के साथ पुत्र वरीयता की मानसिकता।
झुंझुनू और सीकर जैसे क्षेत्रों में बाल लिंगानुपात में गिरावट एक गंभीर सामाजिक चिंता का विषय है। इन आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत समृद्ध क्षेत्रों में आधुनिक चिकित्सा तकनीकों का दुरुपयोग लिंग परीक्षण के लिए किया गया है। पुत्र प्राप्ति की गहरी सामाजिक इच्छा और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण यहाँ बालिकाओं की संख्या में कमी आई है। इस असंतुलन को रोकने के लिए सरकार ने पीसीपीएनडीटी कानून को कड़ाई से लागू करने के साथ विभिन्न जनजागरुकता अभियानों पर विशेष जोर दिया है।

NODIA

47. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजस्थान में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का वितरण क्षेत्रीय विविधता प्रदर्शित करता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार श्रीगंगानगर जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत राज्य में सबसे अधिक दर्ज किया गया है। वहीं दूसरी ओर दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर जिले में अनुसूचित जाति का प्रतिशत राज्य में सबसे कम है। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि राज्य

के उत्तरी जिलों में इस समुदाय का संकेंद्रण अधिक है जबकि दक्षिण के जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में इनका अनुपात काफी कम पाया जाता है।

48. (2) केवल I, II और IV
राजस्थान में महिला साक्षरता की स्थिति मिश्रित रुझान दिखाती है। पिछले दशकों में इसमें सुधार तो हुआ है, लेकिन राजस्थान अब भी राष्ट्रीय स्तर पर सबसे कम महिला साक्षरता वाले राज्यों में शामिल है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी कम है, अतः तीसरा कथन गलत है। जालौर जैसे जिलों में महिला साक्षरता की स्थिति अत्यंत दयनीय है जहाँ यह दर 40 प्रतिशत के आँकड़े से भी नीचे दर्ज की गई है। ये तथ्य राज्य की शैक्षिक चुनौतियों को उजागर करते हैं।

49. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान में साक्षरता के विभिन्न मानकों के अनुसार जिलों का वितरण रोचक है। कोटा सर्वाधिक कुल साक्षरता वाला जिला है, जबकि जालौर में न्यूनतम कुल साक्षरता दर्ज की गई है। पुरुष साक्षरता की बात करें तो झुंझुनू जिला राज्य में प्रथम स्थान पर आता है, जबकि प्रतापगढ़ और बाँसवाड़ा में पुरुष साक्षरता दर संयुक्त रूप से न्यूनतम पाई गई है। यह शैक्षिक असमानता राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध सुविधाओं और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में मौजूद गहरे अंतर को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

50. (2) 1921
राजस्थान के जनसांख्यिकीय इतिहास में वर्ष 1921 को 'महान जनसांख्यिकीय विभाजक' के रूप में चिन्हित किया गया है। इसका कारण यह है कि 1911-1921 के दशक के दौरान राज्य की जनसंख्या वृद्धि दर नकारात्मक (-6.29%) रही थी, जो कि जनगणना के इतिहास में एकमात्र अवसर था। इस अवधि में अकाल और महामारियों के कारण जनसंख्या में भारी कमी आई थी। 1921 के पश्चात राज्य की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि का दौर शुरु हुआ, जिससे यह वर्ष एक महत्वपूर्ण विभाजन रेखा बन गया।

51. (3) झुंझुनू
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में न्यूनतम बाल लिंगानुपात झुंझुनू जिले में दर्ज किया गया था, जहाँ यह मात्र 883 था। इसके पश्चात सीकर जिले का स्थान आता है। समृद्ध माने जाने वाले इन जिलों में बाल लिंगानुपात का गिरना सामाजिक पिछड़ेपन और कन्या भ्रूण हत्या जैसी प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है। यह राज्य के औसत बाल लिंगानुपात 888 से भी कम है। इस असंतुलन को दूर करना राज्य के सामाजिक स्वास्थ्य और भविष्य के जनसांख्यिकीय संतुलन के लिए एक बड़ी चुनौती है।

52. (4) घटती प्रजनन क्षमता और मृत्यु दर जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि धीमी हो रही है।
राजस्थान वर्तमान में जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के उस चरण में है जहाँ शिक्षा के प्रसार और स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार से प्रजनन दर में निरंतर गिरावट आ रही है। साथ ही मृत्यु दर भी निचले स्तर पर स्थिर हो रही है। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है, लेकिन उसकी वृद्धि की गति पिछले दशकों की तुलना में काफी धीमी हुई है। 2001-2011 के दौरान वृद्धि दर का 28 प्रतिशत से घटकर 21 प्रतिशत होना इसी परिवर्तन का सांख्यिकीय प्रमाण है।

53. (3) I, II, III, IV और V
भारत और राजस्थान के जनसांख्यिकीय तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के अधिकांश सामाजिक संकेतक राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं। राज्य की दशकीय वृद्धि दर भारत से अधिक है, जबकि लिंगानुपात, साक्षरता दर और बाल लिंगानुपात राष्ट्रीय स्तर की तुलना में कम दर्ज किए गए हैं। वहीं राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 200 है जो भारत के 382 के औसत से बहुत कम है। ये सभी तुलनात्मक आँकड़े राज्य को राष्ट्रीय मानकों के बराबर लाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता बताते हैं।

54. (2) 13.5 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का हिस्सा लगभग 13.5 प्रतिशत दर्ज किया गया है। यह समुदाय मुख्य रूप से राज्य के दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर और प्रतापगढ़ में संकेंद्रित है। अनुसूचित जनजातियों का यह प्रतिशत राज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टता का एक अनिवार्य भाग है। इनकी जनसंख्या का घनत्व और वितरण राज्य के अन्य सामाजिक समूहों की तुलना में विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान रखता है।

55. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजस्थान की जनसंख्या संरचना में युवा आबादी का वर्चस्व बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप 15-64 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग का प्रतिशत निरंतर विस्तार ले रहा है। यह जनसांख्यिकीय परिवर्तन स्वाभाविक रूप से उन बच्चों और वृद्धों के अनुपात को कम करता है जो आर्थिक रूप से कार्यशील आबादी पर निर्भर होते हैं। इससे राज्य का कुल निर्भरता अनुपात गिरता है, जो आर्थिक समृद्धि के लिए एक अनुकूल अवसर प्रदान करता है। इस बढ़ते कार्यबल का सही नियोजन ही राज्य का भविष्य संवार सकता है।

56. (1) जयपुर और भरतपुर
राजस्थान में केवल दो ही ऐसे जिले हैं जिनका जनसंख्या घनत्व 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक दर्ज किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर जिला 595 के घनत्व के साथ प्रथम स्थान पर है, जबकि भरतपुर 503 के घनत्व के साथ दूसरे स्थान पर स्थित है। इन पूर्वी जिलों में समतल मैदानी भू-भाग, उपजाऊ मिट्टी और बेहतर परिवहन सुविधाओं ने जनसंख्या के इस सघन संकेंद्रण को प्रोत्साहित किया है। अन्य जिलों का घनत्व अभी भी इस 500 की सीमा से काफी नीचे है।

Downloaded from www.pdf.tube

57. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के जनसंख्या इतिहास में विभिन्न दशकों में वृद्धि दर में बड़े उतार-चढ़ाव देखे गए हैं। 1911-1921 का दशक नकारात्मक वृद्धि दर (-6.29%) के लिए जाना जाता है। 1971-1981 में राज्य ने अब तक की सर्वाधिक वृद्धि 32.97 प्रतिशत देखी। इसके बाद 1991-2001 में यह दर 28.41 प्रतिशत और नवीनतम 2001-2011 के दौरान यह घटकर 21.31 प्रतिशत पर आ गई। यह क्रमिक डेटा दर्शाता है कि कैसे समय के साथ राज्य की जनसंख्या वृद्धि की गति तीव्र होने के बाद अब धीरे-धीरे कम हो रही है।

58. (1) बीकानेर
राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का अधिकांश भाग दक्षिणी अरावली क्षेत्र के जिलों जैसे बाँसवाड़ा, डूंगरपुर और उदयपुर में निवास करता है। इन जिलों को जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के अंतर्गत शामिल किया गया है जहाँ आदिवासियों की सघनता बहुत अधिक है। इसकी तुलना में बीकानेर एक मरुस्थलीय जिला है जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत अत्यंत न्यून है। बीकानेर में जनजातीय संकेंद्रण का अभाव इसे राज्य के उच्च जनजातीय जनसंख्या वाले दक्षिणी क्षेत्रों से स्पष्ट रूप से अलग करता है।

59. (4) शुष्क जलवायु, रेतीला धरातल और जल संसाधनों की भारी कमी।
जैसलमेर का अत्यंत कम जनसंख्या घनत्व, जो मात्र 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, मुख्य रूप से यहाँ की कठोर भौगोलिक परिस्थितियों का परिणाम है। थार मरुस्थल के मध्य में स्थित होने के कारण यहाँ वर्षा अत्यंत कम होती है और पेयजल का संकट बना रहता है। विशाल रेतीले टीलों और उच्च तापमान वाली शुष्क जलवायु ने इस क्षेत्र को मानव अधिवास के लिए बहुत कठिन बना दिया है। इन्हीं प्राकृतिक सीमाओं के कारण यहाँ बस्तियाँ बहुत ही विरल और बिखरी हुई पाई जाती हैं।

60. (2) जालौर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का जालौर जिला महिला साक्षरता के मामले में सबसे पिछड़ा हुआ जिला है। यहाँ महिला साक्षरता दर मात्र 38.5 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो राज्य में न्यूनतम है। शिक्षा के बुनियादी ढाँचे का अभाव और रुढ़िवादी सामाजिक ढाँचा इस निम्न स्तर के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारक हैं। जालौर के बाद सिरोही जिले का स्थान आता है जहाँ महिला साक्षरता काफी कम है। यह आँकड़ा राज्य में महिला सशक्तिकरण और शैक्षिक सुधारों की तात्कालिक आवश्यकता को दर्शाता है।

61. (3) राजस्थान की नगरीकरण दर लगभग 35 प्रतिशत है।
राजस्थान के नगरीकरण के संबंध में 35 प्रतिशत का आँकड़ा तथ्यात्मक रूप से गलत है, क्योंकि 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की वास्तविक नगरीकरण दर मात्र 24.9 प्रतिशत है। राज्य की लगभग 75.1 प्रतिशत आबादी अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। कोटा 60.3 प्रतिशत के साथ सर्वाधिक नगरीकृत जिला है। पिछले दशक में शहरी जनसंख्या की वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक रही है, जो शहरों की ओर बढ़ते आकर्षण को दर्शाती है, फिर भी राजस्थान मुख्य रूप से एक ग्रामीण प्रधान राज्य है।

62. (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
राजस्थान की साक्षरता दर की राष्ट्रीय औसत से तुलना करने पर राज्य की स्थिति कमजोर दिखाई देती है। 2011 में राजस्थान की पुरुष साक्षरता 79.2 प्रतिशत थी जो भारत के 80.9 प्रतिशत के औसत से कम है। इसी प्रकार राजस्थान की महिला साक्षरता दर मात्र 52.1 प्रतिशत दर्ज की गई, जो भारत की महिला साक्षरता के राष्ट्रीय औसत 64.6 प्रतिशत से काफी नीचे है। अतः दोनों ही कथनों में राजस्थान को राष्ट्रीय औसत से ऊपर बताना तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह गलत और भ्रामक है।

63. (1) डूंगरपुर
वर्ष 2011 की जनगणना में डूंगरपुर जिला राजस्थान में सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला बनकर उभरा है। यहाँ का लिंगानुपात 994 दर्ज किया गया है, जो राज्य के औसत 928 से काफी बेहतर है। यद्यपि 2001 में यह 1000 से ऊपर था, लेकिन वर्तमान में इसमें गिरावट आई है। इसके बावजूद डूंगरपुर ने राज्य के अन्य जिलों की तुलना में लैंगिक संतुलन को बेहतर ढंग से बनाए रखा है। यह उपलब्धि जिले की सामाजिक संरचना और जनजातीय संस्कृति के सकारात्मक प्रभावों का परिणाम मानी जाती है।

64. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान की धार्मिक विविधता 2011 के जनगणना आँकड़ों में स्पष्ट झलकती है। हिंदू समुदाय 88.5 प्रतिशत के साथ विशाल बहुमत में है। मुस्लिम आबादी लगभग 9.1 प्रतिशत दर्ज की गई है। सिख धर्म के अनुयायी राज्य की कुल जनसंख्या का 1.3 प्रतिशत भाग हैं, जबकि जैन समुदाय का अनुपात 0.9 प्रतिशत है। ये आँकड़े राज्य के विभिन्न पंथों और समुदायों के सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व को दर्शाते हैं, जहाँ विभिन्न धार्मिक समूह सदियों से आपसी सद्भाव और शांति के साथ मिलकर निवास कर रहे हैं।

NODIA

65. (4) 15-64 वर्ष
जनसांख्यिकीय गणना के सिद्धांतों के अनुसार, 15 से 64 वर्ष की आयु सीमा को 'कार्यशील जनसंख्या' के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस आयु वर्ग के व्यक्तियों को अर्थव्यवस्था का उत्पादक भाग माना जाता है जो श्रम शक्ति का निर्माण करते हैं। इससे कम आयु के बच्चे और इससे अधिक आयु के वृद्ध निर्भर जनसंख्या की श्रेणी में आते हैं। इस आयु वर्ग का बड़ा आकार राज्य को जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने का अवसर देता है, जिससे तीव्र आर्थिक प्रगति संभव हो पाती है।

66. (1) 17.8 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति का अंश लगभग 17.8 प्रतिशत दर्ज किया गया है। यह राज्य का एक महत्वपूर्ण सामाजिक समूह है जिसका सर्वाधिक संकेंद्रण श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जैसे उत्तरी जिलों में पाया जाता है। अनुसूचित जातियों का यह प्रतिशत राज्य की सामाजिक-आर्थिक नीतियों के निर्धारण में

Factor)
(2) गाँवों में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव - पुल कारक (Pull Factor)
(3) मानसून की विफलता के कारण फसल का नुकसान - पुश कारक (Push Factor)
(4) नगरीय उद्योगों में उच्च मजदूरी - पुश कारक (Push Factor)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. शेखावाटी और मेवाड़ जैसे क्षेत्रों में पुरुष-प्रधान ग्रामीण-से-नगरीय बहिर्गमन (migration) के जनसांख्यिकीय परिणाम का सर्वाधिक उपयुक्त विवरण क्या है?
(1) इसके परिणामस्वरूप गंतव्य शहरों में समान रूप से संतुलित और बेहतर लिंगानुपात होता है।
(2) यह ग्रामीण स्रोत क्षेत्रों के तीव्र और टिकाऊ औद्योगीकरण का कारण बनता है।
(3) यह नगरीय गंतव्य केंद्रों में निर्धनता और बेरोजगारी को पूर्णतः समाप्त कर देता है।
(4) यह ग्रामीण क्षेत्रों में पीछे रह गए वृद्धों, महिलाओं और बच्चों के अनुपात को बढ़ाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. प्रवास के पहलुओं और उनके उदाहरणों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: प्रवास का पहलू
A. पुश कारक (Push Factor)
B. पुल कारक (Pull Factor)
C. स्रोत क्षेत्र पर प्रभाव
D. गंतव्य क्षेत्र पर प्रभाव
सूची II: उदाहरण
i. अनौपचारिक बस्तियों/झुग्गियों का प्रसार
ii. प्रेषण (Remittance) अर्थव्यवस्था और परिवर्तित ग्रामीण घरेलू ढांचा
iii. विशिष्ट स्वास्थ्य देखभाल और उच्च शिक्षा की उपलब्धता
iv. पारंपरिक ग्रामीण हस्तशिल्प का पतन और कम कृषि उपज
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. जयपुर और जोधपुर जैसे शहरों में तीव्र प्रवास से होने वाले अनियंत्रित नगरीय प्रसार (urban sprawl) का प्रत्यक्ष पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(1) संपूर्ण महानगर में नगरीय वन क्षेत्र और जैव विविधता में महत्वपूर्ण वृद्धि।
(2) उप-नगरीय कृषि भूमि का क्षरण और जल निकासी मार्गों पर अतिक्रमण।
(3) ग्रीष्म ऋतु के चरम महीनों के दौरान परिवेशी वायु तापमान में भारी कमी।
(4) नगरीय जनसंख्या के लिए प्राकृतिक भूजल संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः राजस्थान में नगरीय-ग्रामीण प्रवास के लिए 'पुल कारक' (pull factor) नहीं माना जाता है?
(1) विस्तार करते नगरीय सेवा क्षेत्र में नियमित वेतनभोगी रोजगार के अवसर।
(2) ग्रामीण ग्राम समुदायों के भीतर सामाजिक कठोरता और जाति-आधारित संघर्ष।
(3) विद्युत, स्वच्छता और जल जैसी आधारभूत संरचना तक बेहतर पहुंच।
(4) शैक्षिक कोचिंग केंद्रों और विशिष्ट तकनीकी संस्थानों से निकटता।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान में तीव्र नगरीकरण और प्रवास के निम्नलिखित परिणामों पर विचार कीजिए।
I. झुग्गी क्षेत्रों और अवैध बस्तियों (squatter settlements) का विस्तार।
II. जल आपूर्ति और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी नागरिक सुविधाओं पर बढ़ता दबाव।
III. नगरीय अनौपचारिक क्षेत्र की वृद्धि।
IV. नगरीय वाहनों के यातायात और प्रदूषण के स्तर में कमी।
V. ग्रामीण-नगरीय सीमांत (fringe) में भूमि उपयोग का परिवर्तन।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III, और V
(2) I, III, IV, और V
(3) II, III, IV, और V
(4) I, II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. 2011 के जनगणना आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान में झुग्गियों (slums) में रहने वाली नगरीय जनसंख्या का अनुमानित प्रतिशत क्या है?
(1) 2 प्रतिशत से कम
(2) लगभग 10-11 प्रतिशत
(3) लगभग 25-26 प्रतिशत
(4) 40 प्रतिशत से अधिक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. राजस्थान के शहरों में झुग्गियों के प्रसार के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. औपचारिक आवास बाजार तक पहुंचने में नगरीय निर्धनों की असमर्थता।
II. आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए किफायती आवास योजनाओं का अपर्याप्त क्रियान्वयन।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

76. (2) 182 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया था। वहीं राजस्थान राज्य का जनसंख्या घनत्व मात्र 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इन दोनों आँकड़ों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान और भारत के घनत्व के बीच 182 अंकों का व्यापक अंतर विद्यमान है। राजस्थान का विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल और थार मरुस्थल की विरल आबादी इस अंतर का मुख्य कारण है, जो राज्य की जनसांख्यिकीय विशिष्टता को दर्शाता है।

77. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजस्थान में पिछले कुछ दशकों में कुल प्रजनन दर (TFR) में निरंतर गिरावट देखी गई है, जो जनसंख्या स्थिरता की ओर एक सकारात्मक कदम है। इस महत्वपूर्ण सुधार के पीछे महिला शिक्षा के स्तर में वृद्धि, विवाह की आयु में बढ़ोतरी और परिवार नियोजन के आधुनिक साधनों के प्रति बढ़ती जागरूकता जैसे कारक प्रमुख रहे हैं। सरकार की स्वास्थ्य नीतियों और सामुदायिक स्तर पर छोटे परिवार के लाभों को समझने के कारण ही प्रजनन व्यवहार में यह सकारात्मक परिवर्तन संभव हो पाया है।

78. (4) जयपुर - 75.5%
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के विभिन्न जिलों की साक्षरता दरों में जयपुर जिले का प्रदर्शन काफी प्रभावशाली रहा है। जयपुर जिले की कुल साक्षरता दर 75.5 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो राज्य के औसत 66.1 प्रतिशत से बहुत अधिक है। अन्य विकल्पों में कोटा की साक्षरता 76.6 प्रतिशत और झुंझुनू की 74.1 प्रतिशत है, अतः वे सुमेलित नहीं हैं। जयपुर की यह उपलब्धि यहाँ की राजधानी के रूप में विकसित शैक्षिक अधिसंरचना और नगरीय परिवेश में बढ़ती जागरुकता का परिणाम है।

79. (1) डूंगरपुर
राजस्थान के लिंगानुपात विश्लेषण में डूंगरपुर जिला एक अपवाद के रूप में खड़ा है क्योंकि यहाँ का लिंगानुपात 994 है, जो राज्य में सर्वाधिक है। इसके विपरीत धौलपुर 846, जैसलमेर 852 और करौली 861 के साथ ऐसे जिले हैं जहाँ लिंगानुपात 900 की सीमा से काफी नीचे दर्ज किया गया है। डूंगरपुर को 900 से कम लिंगानुपात वाले समूह में शामिल करना तथ्यात्मक रूप से सर्वथा अनुचित है। यह जिला अपनी विशिष्ट जनसांख्यिकीय बनावट के कारण राज्य में लैंगिक संतुलन का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

80. (2) 5.66 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के आधार पर राजस्थान की कुल जनसंख्या लगभग 6.85 करोड़ थी, जो उस समय भारत की कुल जनसंख्या का 5.66 प्रतिशत भाग थी। यद्यपि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है, लेकिन इसकी जनसंख्या का अंश राष्ट्रीय स्तर पर इसकी भौगोलिक हिस्सेदारी 10.4 प्रतिशत की तुलना में कम है। इसका मुख्य कारण राज्य का एक बड़ा भाग मरुस्थलीय और दुर्गम होना है, जहाँ प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण आबादी का घनत्व कम पाया जाता है।

www.nodia.in

NODIA

(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. नगरीय भूगोल के संदर्भ में 'प्राइमेट नगर' (Primate City) का सर्वाधिक उपयुक्त विवरण क्या है?
(1) नगरीय व्यवस्था में अन्य शहरों की तुलना में अत्यधिक बड़ा और आर्थिक रूप से प्रभुत्व रखने वाला शहर।
(2) एक नगरीय केंद्र जो विशेष रूप से किसी राज्य की राजनीतिक और प्रशासनिक राजधानी के रूप में कार्य करता है।
(3) मुख्य रूप से अपने प्राचीन ऐतिहासिक मूल, मंदिरों और धार्मिक स्थलों की विशेषता वाला शहर।
(4) एक नवीन विकसित नगरीय क्षेत्र जो अनौपचारिक बस्तियों या झुग्गी-झोपड़ी आबादी से पूर्णतः मुक्त हो।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. कोटा की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. यह चंबल नदी के तट पर स्थित है।
II. यह कोटा स्टोन, जो चूना पत्थर की एक सूक्ष्म किस्म है, के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
III. यह राजस्थान में स्मार्ट सिटी मिशन का अंग है।
IV. यह हाड़ौती क्षेत्र का प्रशासनिक मुख्यालय है।
V. यह ऐतिहासिक रूप से मारवाड़ राज्य का भाग था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III, और IV
(2) I, III, IV, और V
(3) II, III, IV, और V
(4) I, II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. कौन सा केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, जो इसकी मरुस्थलीय शहर की विशेषताओं और कृषि अर्थव्यवस्था को दर्शाता है, बीकानेर में स्थित है?
(1) केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)
(2) राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र (NRCC)
(3) राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र (NRCE)
(4) केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान (CSWRI)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख शहरों को उनकी ऐतिहासिक स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) में व्यवस्थित कीजिए।
I. बीकानेर
II. जयपुर
III. अजमेर
IV. जोधपुर
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) III, I, IV, II
(2) III, IV, I, II
(3) IV, III, I, II
(4) III, IV, II, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. शहरों और उनके प्रमुख जल स्रोतों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: शहर
A. जयपुर
B. जोधपुर
C. अजमेर
D. कोटा
सूची II: प्रमुख जल स्रोत/जलाशय
i. कायलाना झील / राजीव गांधी लिफ्ट नहर
ii. बीसलपुर बांध
iii. चंबल नदी प्रणाली
iv. आनासागर झील
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अजमेर में राजपूताना-मालवा रेलवे मुख्यालय और लोकोमोटिव कार्यशालाओं की स्थापना का प्रमुख आर्थिक प्रभाव क्या था?
(1) इसने स्थानीय कुशल श्रमिक जनसंख्या का मुंबई की ओर बड़े पैमाने पर बहिर्गमन प्रारंभ किया।
(2) इसने कठोर औपनिवेशिक रेलवे विधियों के कारण स्थानीय वस्त्र उद्योग के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।
(3) इसके कारण राजपूताना की राजधानी को जयपुर से अजमेर स्थायी रूप से स्थानांतरित करना आवश्यक हो गया।
(4) इसने अजमेर को एक प्रमुख औद्योगिक और परिवहन केंद्र में परिवर्तित कर दिया, जिससे तीव्र नगरीय विकास हुआ।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. निम्नलिखित में से कौन सा जयपुर के परकोटा शहर (Walled City) की मूल नगर नियोजन विशेषताओं का अपवाद है?
(1) संपूर्ण शहर क्षेत्र को नौ बड़े आयताकार खंडों या विशिष्ट क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।
(2) मुख्य सड़कें और मार्ग एक-दूसरे को सटीक समकोण पर काटते हैं।
(3) केंद्रीय अक्ष को एक बड़ी कृत्रिम झील के चारों ओर अभिकल्पित किया गया है जो एक सुरक्षात्मक खाई के रूप में कार्य करती है।
(4) ऐतिहासिक वास्तुकला में समान रूप से गुलाबी पत्थर के अग्रभाग वाली इमारतें हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Downloaded from www.pdf.tube

(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): चूरू और रामगढ़ के ऐतिहासिक नगरों ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्थिक गतिरोध का अनुभव किया।
कारण (R): तटीय बंदरगाहों और रेल नेटवर्क के विकास ने पारंपरिक कारवां व्यापार मार्गों को थार मरुस्थल से दूर मोड़ दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. निम्नलिखित ऐतिहासिक नगरों में से उनकी स्थापना के समय उनके प्राथमिक कार्य के आधार पर विषम को पहचानें।
(1) चित्तौड़गढ़
(2) कुंभलगढ़
(3) भीलवाड़ा
(4) रणथंभौर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. राजस्थान के एक गाँव की जनसंख्या 6000 है, घनत्व 450 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, और इसकी पुरुष कार्यशील जनसंख्या का 60 प्रतिशत कृषि में संलग्न है। भारत की जनगणना के अनुसार, इस बस्ती को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा?
(1) ग्रामीण बस्ती
(2) सांविधिक नगर (Statutory Town)
(3) जनगणना नगर (Census Town)
(4) नगरीय संकुलन (Urban Agglomeration)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. राजस्थान में किसी बस्ती को सांविधिक नगर (Statutory Town) के रूप में नामित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक अनिवार्य मानदंड है?
(1) कम से कम 5000 निवासियों की न्यूनतम जनसंख्या सीमा प्राप्त करना।
(2) मुख्य पुरुष कार्यशील जनसंख्या का कम से कम 75 प्रतिशत गैर-कृषि कार्यों में संलग्न होना।
(3) संपूर्ण क्षेत्र में कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर का जनसंख्या घनत्व।
(4) नगरपालिका, निगम, छावनी बोर्ड या अधिसूचित नगर क्षेत्र समिति की उपस्थिति।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. भारत की जनगणना द्वारा जनसंख्या के आकार के आधार पर नगरीय केंद्रों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. प्रथम श्रेणी (Class I) के नगरों की जनसंख्या 100,000 और उससे अधिक होती है।
II. द्वितीय श्रेणी (Class II) के नगरों की जनसंख्या 50,000 से 99,999 के बीच होती है।
III. तृतीय श्रेणी (Class III) के नगरों की जनसंख्या 20,000 से 49,999 के बीच होती है।
IV. राजस्थान की अधिकांश नगरीय जनसंख्या चतुर्थ श्रेणी (Class IV) और पंचम श्रेणी (Class V) के नगरों में निवास करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा नगर मुख्य रूप से वस्त्र क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर औद्योगिक शहर के रूप में जाना जाता है?
(1) पुष्कर
(2) बीकानेर
(3) भीलवाड़ा
(4) जैसलमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. नगरीय इकाइयों के प्रकारों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: नगरीय इकाई का प्रकार
A. जनगणना नगर (Census Town)
B. सांविधिक नगर (Statutory Town)
C. नगरीय संकुलन (Urban Agglomeration)
D. बाह्य विकास (Outgrowth)
सूची II: परिभाषा/विशेषता
i. एक निरंतर नगरीय विस्तार जिसमें एक नगर और उसके निकटवर्ती नगरीय विस्तार सम्मिलित होते हैं।
ii. सांविधिक नगर से सटी विश्वविद्यालय परिसर या बंदरगाह क्षेत्र जैसी व्यवहार्य इकाइयाँ।
iii. राज्य विधि द्वारा निर्मित, जैसे कि नगरपालिका।
iv. गैर-सांविधिक क्षेत्र जो विशिष्ट जनसांख्यिकीय मानदंडों को पूरा करता है।
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

अध्याय 27
राजस्थान का नगरीकरण

1. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में नगरीकरण का स्तर क्या है?
(1) 21.87 प्रतिशत
(2) 24.87 प्रतिशत
(3) 27.87 प्रतिशत
(4) 31.15 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पिछले कुछ दशकों में राजस्थान में नगरीकरण की प्रवृत्ति का सही वर्णन करता है?
(1) नगरीकरण निरंतर बढ़ रहा है लेकिन राष्ट्रीय औसत से कम बना हुआ है।
(2) कृषि समृद्धि के कारण नगरीय जनसंख्या में निरंतर गिरावट आई है।
(3) राज्य के सभी जिलों में तीव्र और समान नगरीकरण का अनुभव किया गया है।
(4) सभी उत्तर-भारतीय राज्यों में राजस्थान में नगरीकरण की दर सर्वाधिक है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. राजस्थान के जिलों में नगरीकरण के स्तर के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: राजस्थान के जिले
A. कोटा
B. जयपुर
C. डूंगरपुर
D. बाड़मेर
सूची II: 2011 में नगरीकरण का स्तर
i. 52.4 प्रतिशत
ii. 6.9 प्रतिशत
iii. 60.3 प्रतिशत
iv. 6.1 प्रतिशत
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. हाल के वर्षों में राजस्थान में जनगणना नगरों (Census Towns) की वृद्धि के पीछे प्राथमिक कार्य-कारण संबंध क्या है?
(1) स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का क्रियान्वयन जिसके कारण वर्तमान महानगरीय क्षेत्रों का पुनर्वर्गीकरण हुआ।
(2) नगरीय केंद्रों में उच्च जन्म दर जिसके परिणामस्वरूप स्थापित नगर पालिकाओं की सीमाओं का भौतिक विस्तार हुआ।
(3) प्रशासनिक आदेशों द्वारा सभी प्रमुख जिला मुख्यालयों को बड़े नगर निगमों में उन्नत करना।
(4) बड़े गाँवों में आर्थिक विविधीकरण जो नगरीय जनसांख्यिकीय मानदंडों को पूरा करते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. जनगणना 2011 के आधार पर राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनकी नगरीय जनसंख्या प्रतिशत के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
I. अजमेर
II. कोटा
III. जयपुर
IV. जोधपुर
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(1) III, II, IV, I
(2) II, III, I, IV
(3) II, I, III, IV
(4) III, IV, II, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान 1864 में राजस्थान में स्थापित होने वाली प्रथम नगरपालिका कौन सी थी?
(1) ब्यावर
(2) माउंट आबू
(3) अजमेर
(4) जयपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान में नगरों के ऐतिहासिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. मध्यकाल में कई नगरों की उत्पत्ति सैन्य छावनियों या दुर्गों के रूप में हुई थी।
II. 19वीं शताब्दी में रेल नेटवर्क के आरंभ से पारंपरिक व्यापारिक मार्ग वाले नगरों का पतन हुआ।
III. स्वतंत्रता के पश्चात रियासतों के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप कई पूर्व राजधानियों ने अपना प्रशासनिक महत्व खो दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II

Click Here to Buy book on Amazon

लिए प्रसिद्ध है।
II. पुष्कर, जो अजमेर के निकट स्थित एक कस्बा है, ब्रह्मा मंदिर के लिए प्रसिद्ध है।
III. दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूर्व अजमेर चौहान वंश की राजधानी थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): पिछले दो दशकों में, कोटा ने युवा चलायमान जनसंख्या (floating population) के भारी आगमन के साथ एक अद्वितीय जनसांख्यिकीय परिवर्तन का अनुभव किया है।
कारण (R): कोटा अभियांत्रिकी और चिकित्सा प्रवेश कोचिंग संस्थानों के लिए एक प्रमुख राष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभरा है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बीकानेर के नगरीय विकास को अशुद्ध रूप से चित्रित करता है?
(1) यह ऐतिहासिक रूप से मध्य एशिया के प्राचीन कारवां व्यापार मार्गों पर एक महत्वपूर्ण पारगमन बिंदु के रूप में फला-फूला।
(2) यह अपनी पेयजल आपूर्ति के लिए इंदिरा गांधी नहर पर अत्यधिक निर्भर है।
(3) इसकी अर्थव्यवस्था कृषि प्रसंस्करण से पूर्णतः मुक्त है और पूर्णतः भारी धातु उद्योगों पर आधारित है।
(4) यह लाल बलुआ पत्थर की हवेलियों वाली अपनी विशिष्ट नगरीय वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. निम्नलिखित में से किसे कोटा शहर की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में प्राथमिक योगदानकर्ता नहीं माना जाता है?
(1) बड़े पैमाने पर अपतटीय (offshore) तेल निष्कर्षण
(2) रासायनिक और उर्वरक संयंत्र
(3) तापीय और परमाणु ऊर्जा उत्पादन
(4) कोटा डोरिया वस्त्र बुनाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. ऐतिहासिक शहरों और उनके संस्थापकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: ऐतिहासिक शहर
A. जयपुर
B. जोधपुर
C. उदयपुर
D. अजमेर

सूची II: संस्थापक
i. राव जोधा
ii. महाराणा उदय सिंह द्वितीय
iii. सवाई जय सिंह द्वितीय
iv. अजयपाल चौहान

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. रियासतों के एकीकरण के समय किस समिति ने जयपुर को राजस्थान की राजधानी बनाने की अनुशंसा की थी?
(1) फजल अली आयोग
(2) बी.आर. पटेल समिति
(3) पी.बी. मेनन समिति
(4) के.एम. मुंशी समिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. जोधपुर की विरासत और प्रशासनिक महत्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. यह जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।
II. राजस्थान उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ जोधपुर में स्थित है।
III. यहाँ उम्मेद भवन पैलेस और जसवंत थड़ा जैसे महत्वपूर्ण विरासत स्मारक हैं।
IV. इसे कभी भी राजस्थान राज्य में एकीकृत नहीं किया गया था और यह एक पृथक केंद्र शासित प्रदेश के रूप में कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और IV
(2) I, II, और III
(3) II, III, और IV
(4) I, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 से पूर्व राजस्थान के शहरों की प्रशासनिक स्थिति के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) जयपुर - प्रत्यक्ष ब्रिटिश प्रांत
(2) जोधपुर - पुर्तगाली उपनिवेश
(3) कोटा - फ्रांसीसी बस्ती
(4) अजमेर - भाग 'सी' (Part C) राज्य

Downloaded from www.pdf.tube

15. राजस्थान नगरपालिका अधिनियम, 2009 के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन सी नगरीय इकाई इस नियम का अपवाद है कि सभी नगरों का प्रशासन एक निर्वाचित निकाय द्वारा किया जाना चाहिए?
(1) छावनी बोर्ड (Cantonment Board)
(2) नगर परिषद
(3) नगरपालिका
(4) नगर निगम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. एक नगरीय केंद्र के रूप में जयपुर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. इसकी स्थापना 1727 में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी।
II. यह वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित भारत का प्रथम नियोजित शहर है।
III. यह राजस्थान के नगरीय पदानुक्रम में 'प्राइमेट नगर' (Primate City) का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
IV. इसके परकोटा शहर (Walled City) को 2019 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
V. इसके संपूर्ण नगरीय प्रशासन के प्रबंधन के लिए ठीक एक नगर निगम है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III, और IV
(2) I, III, IV, और V
(3) II, III, IV, और V
(4) I, II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. जयपुर शहर की मूल ग्रिड योजना को अभिकल्पित करने में किस वास्तुकार और नगर नियोजक की महत्वपूर्ण भूमिका थी?
(1) सर सैमुअल स्विंटन जैकब
(2) विद्याधर भट्टाचार्य
(3) एडविन लुटियंस
(4) चार्ल्स कोरिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. जोधपुर शहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: जोधपुर को मेहरानगढ़ दुर्ग के आसपास नीले रंग के घरों के कारण 'ब्लू सिटी' के रूप में व्यापक रूप से जाना जाता है।
कथन II: नीले रंग का उपयोग ऐतिहासिक रूप से ब्राह्मण समुदाय द्वारा किया जाता था और यह भी माना जाता है कि यह शुष्क जलवायु में ऊष्मा और कीटों को दूर रखता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और II, I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. शहरों और उनके महत्व के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: शहर
A. जोधपुर
B. कोटा
C. बीकानेर
D. अजमेर
सूची II: लोकप्रिय उपनाम/महत्व
i. शैक्षिक और कोचिंग हब
ii. ऊंटों का देश / रेगिस्तानी शहर
iii. राजस्थान का हृदय / धार्मिक केंद्र
iv. सन सिटी / ब्लू सिटी
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. किस नदी की प्रचुर जल आपूर्ति ने कोटा को राजस्थान के एक प्रमुख औद्योगिक और विद्युत उत्पादन नगरीय केंद्र में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(1) लूणी
(2) बनास
(3) माही
(4) चंबल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. कुल जनसंख्या (जनगणना 2011) के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित राजस्थान के शीर्ष चार शहरों के सही क्रम का चयन करें।
(1) जयपुर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर
(2) जयपुर, कोटा, जोधपुर, अजमेर
(3) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा
(4) जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, कोटा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

NODIA

22. राव बीका द्वारा रेगिस्तानी शहर बीकानेर की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1459
(2) 1488
(3) 1559
(4) 1727
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. एक ऐतिहासिक और धार्मिक नगरीय केंद्र के रूप में अजमेर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. यह सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के

38. 20वीं शताब्दी से पूर्व बीकानेर की ऐतिहासिक समृद्धि और नगरीय विकास किस भौगोलिक कारक पर अत्यधिक निर्भर थे?
(1) थार मरुस्थल क्षेत्र के भीतर समस्त अंतर्देशीय जलमार्गों के लिए केंद्रीय समुद्री बंदरगाह होना।
(2) मध्य एशिया को पश्चिमी गुजरात तट से जोड़ने वाले कारवां मार्गों पर इसकी स्थिति।
(3) शहर की सीमाओं के भीतर बड़े कोयले और खनिज भंडार की खोज।
(4) प्राथमिक शहर केंद्र से सीधे प्रवाहित होने वाली एक बारहमासी नदी प्रणाली की उपस्थिति।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): जयपुर राजस्थान के नगरीय परिदृश्य में एक प्राइमेट नगर (Primate City) की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है।
कारण (R): जयपुर की जनसंख्या राज्य के दूसरे सबसे बड़े शहर जोधपुर की तुलना में लगभग तीन गुनी बड़ी है, जो उच्च जनसांख्यिकीय और आर्थिक प्रभुत्व दर्शाती है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. राजस्थान के निम्नलिखित शहरों पर विचार कीजिए।
I. कोटा
II. सीकर
III. जैसलमेर
हाल के वर्षों में प्रवेश परीक्षा कोचिंग के केंद्र के रूप में प्रमुखता से उभरे शहरों के संबंध में उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. मार्क जेफरसन के अनुसार, 'प्राइमेट नगर का नियम' (Law of the Primate City) क्या परिभाषित करता है?
(1) एक ऐसा शहर जहाँ कुल जनसंख्या का आकार सरकारी नियमों द्वारा कठोरता से सीमित किया जाता है।
(2) एक नगरीय केंद्र जो विशेष रूप से कृषि जैसी प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
(3) किसी क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर आकार और राष्ट्रीय प्रभाव में सर्वोपरि होता है।
(4) एक ऐसा शहर जिसमें समान आर्थिक शक्ति वाले कई केंद्रीय व्यावसायिक जिले होते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. राजस्थान के नगरीय विकास प्रतिरूप (urban growth pattern) के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: राजस्थान का नगरीय विकास प्रतिरूप अत्यधिक संतुलित है, जिसमें इसके सभी जिलों में बड़े शहरों का समान वितरण है।
कथन II: जयपुर राजस्थान के नगरीय परिदृश्य पर हावी है, जो निवेश, आधारभूत संरचना और प्रवास का एक असंगत भाग अवशोषित करता है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान की कुल नगरीय जनसंख्या का लगभग कितना प्रतिशत केवल जयपुर जिले में निवास करता है?
(1) 5 प्रतिशत
(2) 10 प्रतिशत
(3) 20 प्रतिशत
(4) 45 प्रतिशत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. राजस्थान में नगरीय-ग्रामीण प्रवास (migration) के कारणों और परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
I. बार-बार पड़ने वाला सूखा और कृषि संकट ग्रामीण क्षेत्रों से प्रमुख 'पुश कारक' (push factors) के रूप में कार्य करते हैं।
II. निर्माण और असंगठित क्षेत्रों में रोजगार के अवसर शहरों की ओर प्रमुख 'पुल कारक' (pull factors) के रूप में कार्य करते हैं।
III. ग्रामीण-नगरीय प्रवास के कारण राजस्थान के कई ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि का 'स्त्रीकरण' (feminization) हुआ है।
IV. प्रवास नगरीय झुग्गियों के जनसंख्या घनत्व को कठोरता से कम करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और III
(2) I, III, और IV
(3) II, III, और IV
(4) I, II, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. प्रवास कारकों के वर्गीकरण के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) शहरों में बेहतर शैक्षिक सुविधाएं - पुश कारक (Push

Click Here to Buy book on Amazon

बड़ी भूमिका निभाता है। इनके उत्थान के लिए सरकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन करती है ताकि उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

67. (3) बाड़मेर
राजस्थान की औसत दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 2001-2011 के दौरान 21.3 प्रतिशत रही थी। श्रीगंगानगर, झुंझुनू और पाली जैसे जिलों ने इस औसत से काफी कम वृद्धि दर प्रदर्शित की है। इसके विपरीत बाड़मेर जिला इस समूह में विषम है क्योंकि इसने राज्य में सर्वाधिक 32.5 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज की थी। बाड़मेर की यह उच्च वृद्धि दर इसे उन जिलों से अलग करती है जिन्होंने अपनी जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने या स्थिर करने में अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त की है।

68. (4) प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा
राजस्थान में पुरुष साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण में प्रतापगढ़ और बाँसवाड़ा जिले सबसे निचले पायदान पर हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इन दोनों जिलों में पुरुष साक्षरता दर समान रूप से 69.5 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो राज्य में न्यूनतम है। दक्षिणी राजस्थान के इन जनजातीय बहुल क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं का अभाव और कठिन भौगोलिक स्थितियाँ पुरुषों की शिक्षा के स्तर को प्रभावित करती हैं। यह दर राज्य के औसत पुरुष साक्षरता स्तर 79.2 प्रतिशत से लगभग 10 प्रतिशत कम है।

69. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजस्थान में साक्षरता के मामले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच गहरा अंतर विद्यमान है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का लैंगिक अंतराल और भी अधिक चिंताजनक है जहाँ पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दरों में भारी फासला पाया जाता है। शहरों में बेहतर संसाधनों और जागरूकता के कारण महिला साक्षरता में तेजी से सुधार हुआ है, जबकि ग्रामीण परिवेश में आज भी शैक्षिक अवसरों में विषमता बनी हुई है।

70. (2) मातृ मृत्यु दर को कम करने हेतु संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।
राजस्थान में परिवार कल्याण के अंतर्गत जननी सुरक्षा योजना एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य केंद्रों में प्रसव कराने हेतु प्रेरित करना है ताकि मातृ और शिशु मृत्यु दर को नियंत्रित किया जा सके। संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए सरकार इस योजना के तहत लाभार्थियों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है। यह योजना ग्रामीण और निर्धन परिवारों की महिलाओं के लिए सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करने की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हुई है।

71. (4) बीकानेर और नागौर
राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है। जहाँ दक्षिणी जिलों में इनका भारी संकेंद्रण है, वहीं पश्चिमी और मध्य राजस्थान के कुछ जिलों में इनकी संख्या अत्यंत न्यून है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बीकानेर और नागौर ऐसे जिले हैं जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत राज्य में सबसे कम, मात्र 0.3 प्रतिशत, दर्ज किया गया है। यह वितरण राज्य के ऐतिहासिक और भौगोलिक प्रवास प्रतिरूपों को दर्शाता है जहाँ मरुस्थलीय क्षेत्रों में जनजातीय समुदायों का निवास बहुत कम रहा है।

72. (1) बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में उल्लेखनीय वृद्धि।
वर्ष 2001 से 2011 के बीच राजस्थान ने कई जनसांख्यिकीय बदलाव देखे, जैसे साक्षरता में वृद्धि और समग्र वृद्धि दर में गिरावट। यद्यपि, बाल लिंगानुपात के मामले में कोई सुधार नहीं हुआ, बल्कि इसमें भारी गिरावट दर्ज की गई। 2001 में यह 909 था जो 2011 में घटकर मात्र 888 रह गया। अतः बाल लिंगानुपात में वृद्धि का दावा करना पूर्णतः गलत और वास्तविक आँकड़ों के विपरीत है। यह नकारात्मक रुझान समाज में कन्या संतानों के प्रति प्रचलित पक्षपाती दृष्टिकोण की पुष्टि करता है।

NODIA

73. (3) शहरी बाल लिंगानुपात, ग्रामीण बाल लिंगानुपात से अधिक है।
राजस्थान में बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष) के वितरण में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर है। ग्रामीण बाल लिंगानुपात 892 दर्ज किया गया है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह काफी कम मात्र 874 है। अतः यह कहना कि शहरी बाल लिंगानुपात ग्रामीण से अधिक है, सांख्यिकीय रूप से गलत है। शहरों में लिंग परीक्षण की तकनीकों तक आसान पहुँच के कारण बालिकाओं का अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक चिंताजनक स्थिति में पहुँच गया है, जो एक गंभीर सामाजिक समस्या है।

74. (1) वृद्धावस्था वाली जनसंख्या और उच्च वृद्ध निर्भरता अनुपात।
जनसांख्यिकीय लाभांश की अवधि लंबी नहीं होती और जब यह समाप्त होती है, तो राज्य की युवा जनसंख्या वृद्धों की श्रेणी में आने लगती है। राजस्थान को भविष्य में ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा जहाँ बुजुर्ग आबादी का अंश बढ़ जाएगा। इसके कारण स्वास्थ्य देखभाल पर व्यय बढ़ेगा और वृद्ध निर्भरता अनुपात में तेजी से वृद्धि होगी। यह राज्य की अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर भारी दबाव डालेगा, जिसके लिए सरकार को अभी से उचित नीतियाँ और पेंशन योजनाएँ तैयार करने की आवश्यकता होगी।

75. (4) भारत और राजस्थान के बीच घनत्व का अंतर 182 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।
राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जबकि भारत का राष्ट्रीय औसत 382 है। इन दोनों के बीच का सटीक अंतर 182 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। अन्य कथनों के संदर्भ में, जयपुर के साथ भरतपुर का घनत्व भी 500 से अधिक है, और केवल तीन जिलों (जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर) का घनत्व 100 से कम है। राजस्थान का विशाल क्षेत्रफल और मरुस्थलीय भू-भाग इसके निम्न जनसंख्या घनत्व और राष्ट्रीय औसत के साथ बड़े अंतर के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

III. प्रमुख शहरों में ग्रामीण प्रवास पर कठोर प्रतिबंध।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और III
(3) केवल I और II
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. नगरीय निर्धनता उन्मूलन योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: राजीव आवास योजना (RAY) का उद्देश्य वर्तमान झुग्गियों को औपचारिक प्रणाली के भीतर लाना और उन्हें आधारभूत सुविधाएं प्राप्त करने में सक्षम बनाना था।
कथन II: राजीव आवास योजना ने वैकल्पिक आवास प्रदान किए बिना सभी झुग्गीवासियों को बलपूर्वक बेदखल करने और ग्रामीण पुनर्वास का अनिवार्य आदेश दिया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और II, I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. निम्नलिखित सरकारी योजनाओं में से विषम को पहचानें, जिसका प्राथमिक ध्यान क्षेत्र नगरीय विकास या नगरीय निर्धनता उन्मूलन नहीं है।
(1) प्रधानमंत्री आवास योजना (नगरीय)
(2) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)
(3) राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (NULM)
(4) अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (AMRUT)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. भारत की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन "झुग्गी" (Slum) को सर्वाधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है?
(1) कोई भी नगरीय बस्ती जिसकी कुल जनसंख्या दस लाख से अधिक हो।
(2) एक आवासीय क्षेत्र जहाँ औसत घरेलू आय राष्ट्रीय औसत से कम हो।
(3) वैध नगरपालिका अनुज्ञप्ति के बिना संचालित अनियोजित व्यावसायिक बाजार।
(4) कम से कम 300 लोगों वाला एक सघन, भीड़भाड़ वाला क्षेत्र और दोषपूर्ण आधारभूत संरचना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): राजस्थान में झुग्गियाँ, अन्य भारतीय राज्यों की भांति, अनौपचारिक क्षेत्र के रोजगार के उच्च संकेंद्रण से जुड़ी हुई हैं।
कारण (R): झुग्गीवासियों के पास मुख्य रूप से औपचारिक शिक्षा और उच्च-भुगतान वाली कॉर्पोरेट नौकरियों के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशल का अभाव होता है, जो उन्हें घरेलू कार्य, पथ विक्रेता (street vending) और आकस्मिक श्रम की ओर धकेलता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. भारत सरकार द्वारा स्मार्ट सिटी मिशन किस वर्ष प्रारंभ किया गया था?
(1) 2012
(2) 2014
(3) 2015
(4) 2018
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. राजस्थान के निम्नलिखित शहरों पर विचार कीजिए।
I. जयपुर
II. उदयपुर
III. कोटा
IV. अजमेर
उपर्युक्त में से कौन से शहर स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत चुने गए थे?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. स्मार्ट सिटी घटकों और अवधारणाओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: स्मार्ट सिटी घटक
A. रेट्रोफिटिंग (Retrofitting)
B. पुनर्विकास (Redevelopment)
C. ग्रीनफील्ड विकास (Greenfield Development)
D. पैन-सिटी पहल (Pan-City Initiative)
सूची II: मूल अवधारणा
i. बेहतर आधारभूत संरचना के साथ एक नए विन्यास के सह-निर्माण को सक्षम करने के लिए वर्तमान निर्मित वातावरण का प्रतिस्थापन।
ii. नवीन नियोजन उपकरणों का उपयोग करके पूर्व में रिक्त क्षेत्रों की योजना बनाना और उन्हें विकसित करना।
iii. वर्तमान शहर-व्यापी आधारभूत संरचना (जैसे, बौद्धिक यातायात प्रबंधन) के लिए स्मार्ट समाधानों का

Downloaded from www.pdf.tube

53. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
राजीव आवास योजना एक महत्वपूर्ण सरकारी पहल थी जिसका प्राथमिक उद्देश्य झुग्गी-मुक्त भारत का निर्माण करना था। इस योजना के तहत वर्तमान झुग्गियों को औपचारिक शहरी प्रणाली के भीतर लाने और वहाँ बुनियादी सुविधाएं जैसे जल, बिजली और सड़कें उपलब्ध कराने का प्रावधान था। यह योजना झुग्गीवासियों को बलपूर्वक निकालने के लिए नहीं थी, बल्कि यह उन्हें वर्तमान स्थान पर गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने पर केंद्रित थी।

54. (2) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)
नगरीय विकास हेतु सरकार द्वारा कई विशिष्ट योजनाएं संचालित हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना आवास प्रदान करती है, जबकि राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन कौशल विकास पर केंद्रित है। अमृत मिशन बुनियादी नगरीय ढांचे में सुधार लाता है। इसके विपरीत, मनरेगा एक पूर्णतः ग्रामीण केंद्रित योजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीण परिवारों को अकुशल श्रम के माध्यम से रोजगार की सुरक्षा प्रदान करना है। इसका कार्यक्षेत्र नगरीय विकास से पूर्णतः भिन्न है।

55. (4) कम से कम 300 लोगों वाला एक सघन, भीड़भाड़ वाला क्षेत्र और दोषपूर्ण आधारभूत संरचना।
भारत की जनगणना के अनुसार, झुग्गी को एक ऐसे आवासीय क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता है जहाँ कम से कम 300 लोग निवास करते हों और जो अत्यधिक सघन हो। इन क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे जैसे स्वच्छ जल, शौचालय और उचित जल निकासी का नितांत अभाव होता है। यहाँ रहने की परिस्थितियाँ मानवीय स्वास्थ्य हेतु हानिकारक होती हैं। यह परिभाषा रहने के भौतिक वातावरण और सुविधाओं की कमी पर आधारित है।

56. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में झुग्गी बस्तियाँ और अनौपचारिक क्षेत्र के रोजगार आपस में गहरे जुड़े हैं। झुग्गियों में रहने वाले अधिकांश प्रवासियों के पास औपचारिक शिक्षा और उच्च तकनीकी कौशल की कमी होती है। जीवन निर्वाह हेतु वे घरेलू काम या दिहाड़ी मजदूरी जैसे अनौपचारिक कार्यों को चुनते हैं। यह आर्थिक मजबूरी और कौशल का अभाव ही उन्हें झुग्गियों के अनियोजित वातावरण में रहने के लिए विवश करता है, जहाँ रहने की लागत कम होती है।

57. (3) 2015
भारत सरकार ने देश के शहरों के कायाकल्प और उन्हें आधुनिक सुविधाओं से लैस करने के उद्देश्य से 25 जून 2015 को स्मार्ट सिटी मिशन का शुभारंभ किया था। इस मिशन का मुख्य लक्ष्य शहरों में सतत विकास और नागरिकों हेतु बेहतर गुणवत्तापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। प्रौद्योगिकी का उपयोग करके नागरिक सुविधाओं को स्मार्ट और अधिक प्रभावी बनाया गया। राजस्थान के भी कई महत्वपूर्ण शहरों को इस महत्वाकांक्षी मिशन हेतु चुना गया था।

58. (4) I, II, III, और IV
केंद्र सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन के तहत राजस्थान के चार प्रमुख शहरों का चयन किया गया था। इन शहरों में राजधानी जयपुर, उदयपुर, औद्योगिक केंद्र कोटा तथा ऐतिहासिक शहर अजमेर शामिल हैं। इन चारों शहरों में स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के तहत डिजिटल आधारभूत संरचना, सौर ऊर्जा और सार्वजनिक परिवहन की सुविधाओं में सुधार हेतु कार्य किए गए। जोधपुर जैसे अन्य बड़े शहर इस प्रारंभिक सूची में सम्मिलित नहीं थे।

59. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
स्मार्ट सिटी मिशन के चार प्रमुख घटक हैं। रेट्रोफिटिंग के तहत वर्तमान निर्मित क्षेत्र में सुधार कर उसे रहने योग्य बनाया जाता है। पुनर्विकास में पुराने ढांचे को बदलकर नया बुनियादी ढांचा खड़ा किया जाता है। ग्रीनफील्ड विकास में शहरों के आसपास की खाली जमीनों पर नई योजनाएं विकसित की जाती हैं। पैन-सिटी पहल के अंतर्गत पूरे शहर हेतु डिजिटल समाधान और एकीकृत यातायात प्रबंधन प्रणाली लागू की जाती है।

60. (2) जोधपुर
राजस्थान के चार शहरों—जयपुर, उदयपुर, कोटा और अजमेर—को केंद्र सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन हेतु चयनित किया गया था। हालांकि जोधपुर राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, फिर भी इसे केंद्र के इस प्रारंभिक मिशन में शामिल नहीं किया गया था। बाद में राज्य सरकार ने अपनी स्वयं की योजनाओं के माध्यम से जोधपुर के विकास पर ध्यान दिया। इस मिशन में चयन प्रक्रिया प्रतिस्पर्धी प्रस्तावों और सुधार योजनाओं पर आधारित थी।

61. (3) परियोजनाओं को लागू करने के लिए राज्य और नगरीय निकाय (ULB) द्वारा प्रवर्तित शहर-स्तरीय लिमिटेड कंपनी।
स्मार्ट सिटी मिशन के सफल क्रियान्वयन हेतु प्रत्येक चयनित शहर में एक विशेष प्रयोजन इकाई (एसपीवी) का गठन किया गया है। यह एक लिमिटेड कंपनी होती है जिसमें राज्य सरकार और नगरीय निकाय की समान हिस्सेदारी होती है। इसका मुख्य कार्य स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की योजना बनाना और उन्हें समयबद्ध तरीके से लागू करना है। यह ढांचा परियोजनाओं में व्यावसायिक दक्षता लाने और विभागों के बीच समन्वय हेतु बनाया गया है।

NODIA

62. (4) एक केंद्र प्रायोजित योजना जहाँ केंद्र और राज्य सरकारें 50:50 के अनुपात में लागत साझा करती हैं।
स्मार्ट सिटी मिशन एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका वित्तपोषण केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मिलकर किया जाता है। इसके तहत होने वाले कुल व्यय में केंद्र सरकार और संबंधित राज्य सरकार की 50:50 के अनुपात में भागीदारी होती है। शेष धनराशि नगर पालिकाओं के अपने राजस्व और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से जुटाई जाती है। यह वित्तीय मॉडल शहरों को अपनी परियोजनाओं हेतु पर्याप्त संसाधन और स्वायत्तता प्रदान करता है।

(4) I, II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राजस्थान के नगर निगमों में महापौर (Mayor) के निर्वाचन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: महापौर का निर्वाचन वर्तमान में संपूर्ण शहर के पात्र मतदाताओं द्वारा सीधे किया जाता है।
कथन II: राजस्थान में राज्य सरकार प्रायः नगरपालिका विधियों में संशोधन करती है और महापौर के निर्वाचन की पद्धति को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विधियों के बीच परिवर्तित करती रहती है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और II, I की व्याख्या करता है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सही हैं लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. निम्नलिखित मदों में से विषम को पहचानें, क्योंकि यह नगर पालिकाओं के लिए 12वीं अनुसूची में सूचीबद्ध 18 कार्यात्मक मदों में सम्मिलित नहीं है।
(1) घरेलू, औद्योगिक और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए जल आपूर्ति
(2) सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता सफाई और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन
(3) झुग्गी सुधार और उन्नयन
(4) प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (PACS) का विनियमन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. राजस्थान में नगर पालिकाओं के लिए मतदाता सूची तैयार करने और उनके समस्त निर्वाचनों के संचालन का अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण किस संवैधानिक निकाय का उत्तरदायित्व है?
(1) भारत निर्वाचन आयोग
(2) राजस्थान लोक सेवा आयोग
(3) राज्य निर्वाचन आयोग
(4) स्थानीय निकाय निदेशालय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान में नगरीय स्थानीय निकायों की संरचना के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(1) नगर निगम - महापौर
(2) वार्ड समिति - मुख्यमंत्री
(3) नगर परिषद - सभापति
(4) नगर पालिका - अध्यक्ष
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में नगरीय स्थानीय निकायों के लिए राजस्व का एक मान्यता प्राप्त स्रोत नहीं है?
(1) संपत्ति कर (नगरीय विकास कर)
(2) राज्य वित्त आयोग की अनुशंसाओं के आधार पर राज्य सरकार से सहायता अनुदान
(3) जल और स्वच्छता जैसी नागरिक सुविधाओं के लिए उपयोगकर्ता शुल्क (User charges)
(4) बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर आरोपित कॉर्पोरेट आयकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. राजस्थान का एक बड़ा गाँव तीव्रता से व्यावसायिक विशेषताओं और गैर-कृषि रोजगार विकसित कर रहा है, किंतु अभी तक पूर्णतः नगरीकृत नहीं हुआ है। 74वें संशोधन के अंतर्गत, ऐसे "संक्रमणकालीन क्षेत्र" (transitional area) के लिए किस विशिष्ट प्रकार के नगरीय स्थानीय निकाय का गठन किया जाता है?
(1) नगर पंचायत / नगर पालिका
(2) नगर परिषद
(3) नगर निगम
(4) महानगरीय योजना समिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. जोधपुर, अजमेर और जयपुर जैसे शहरों में टिकाऊ नगरीकरण की चुनौती उत्पन्न करने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाधा क्या है?
(1) सीमेंट और अन्य आवश्यक आधुनिक निर्माण सामग्री की अनुपलब्धता।
(2) सूर्य के प्रकाश की अत्यधिक कमी जिससे विद्युत की खपत असामान्य रूप से अधिक होती है।
(3) बढ़ती जनसंख्या की सहायता के लिए टिकाऊ मीठे जल के संसाधनों की कमी।
(4) नवीन पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए ऐतिहासिक वास्तुकला और स्मारकों का पूर्ण अभाव।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. नगरीय नियोजन में प्रयुक्त स्थानिक नियोजन उपकरणों (spatial planning instruments) के सही क्रम का चयन करें, जो व्यापक (शहर-व्यापी) स्तर से सूक्ष्म (स्थानीय) स्तर की ओर व्यवस्थित हों।
(1) जोनल डेवलपमेंट प्लान, मास्टर प्लान, लोकल एरिया प्लान
(2) मास्टर प्लान, जोनल डेवलपमेंट प्लान, लोकल एरिया प्लान
(3) लोकल एरिया प्लान, मास्टर प्लान, जोनल डेवलपमेंट प्लान
(4) मास्टर प्लान, लोकल AREA प्लान, जोनल डेवलपमेंट प्लान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. जयपुर के मध्य भागों में कंक्रीट की इमारतों, डामर की सड़कों की उच्च सांद्रता और हरित आवरण की कमी के कारण स्थानीय तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में

Click Here to Buy book on Amazon

सिटी मिशन का हिस्सा है और हाड़ौती क्षेत्र का मुख्य प्रशासनिक केंद्र है। हालांकि, कोटा ऐतिहासिक रूप से मारवाड़ राज्य का भाग नहीं था; यह हाड़ा राजपूतों के शासन वाला एक स्वतंत्र राज्य था। कोटा अपनी विशिष्ट औद्योगिक और शैक्षणिक संस्कृति के लिए विश्व विख्यात है।

33. (2) राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र (NRCC)
बीकानेर अपनी मरुस्थलीय विशेषताओं के कारण 'ऊंटों के देश' के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र एक प्रमुख संस्थान है जो ऊंटों के संरक्षण और उनके आर्थिक उपयोग पर शोध करता है। यह केंद्र शहर की कृषि और पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था का प्रतिबिंब है। बीकानेर में ऊन और शुष्क कृषि से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण अनुसंधान गतिविधियाँ भी संचालित की जाती हैं जो क्षेत्रीय विकास में सहायक हैं।

34. (2) III, IV, I, II
राजस्थान के प्रमुख शहरों की स्थापना के कालक्रम में अजमेर सबसे प्राचीन है, जिसकी स्थापना 12वीं शताब्दी में अजयपाल चौहान ने की थी। इसके बाद जोधपुर की स्थापना 1459 में राव जोधा ने की। बीकानेर शहर 1488 में राव बीका द्वारा बसाया गया। अंत में, जयपुर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई। यह क्रम राज्य के ऐतिहासिक विकास और राजवंशों के प्रभाव विस्तार को दर्शाता है।

35. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के प्रमुख शहरों की जल आपूर्ति विभिन्न स्रोतों पर निर्भर है। जयपुर मुख्य रूप से बीसलपुर बांध से पानी प्राप्त करता है। जोधपुर की आवश्यकताओं को कायलाना झील और नहर के माध्यम से पूरा किया जाता है। अजमेर ऐतिहासिक आनासागर झील और बीसलपुर प्रणाली से जुड़ा है। कोटा शहर अपनी जल आपूर्ति हेतु पूर्णतः चंबल नदी प्रणाली पर निर्भर है। इन जल स्रोतों का प्रबंधन शहरों के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

36. (4) इसने अजमेर को एक प्रमुख औद्योगिक और परिवहन केंद्र में परिवर्तित कर दिया, जिससे तीव्र नगरीय विकास हुआ।
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अजमेर में रेलवे के मुख्यालय और विशाल लोकोमोटिव कार्यशालाओं की स्थापना ने शहर की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया। इस विकास ने बड़ी संख्या में कुशल श्रमिकों को आकर्षित किया, जिससे अजमेर एक प्रमुख औद्योगिक और परिवहन केंद्र बन गया। रेलवे के आने से व्यापार सुगम हुआ और शहर का भौगोलिक विस्तार भी हुआ। इस औद्योगिक क्रांति ने अजमेर को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया।

37. (3) केंद्रीय अक्ष को एक बड़ी कृत्रिम झील के चारों ओर अभिकल्पित किया गया है जो एक सुरक्षात्मक खाई के रूप में कार्य करती है।
जयपुर का परकोटा शहर नौ आयताकार खंडों में विभाजित है और इसकी सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। इसकी इमारतों में गुलाबी रंग का समान रूप से उपयोग किया गया है। हालांकि, शहर के केंद्रीय अक्ष पर कोई कृत्रिम झील नहीं है जो सुरक्षात्मक खाई का कार्य करती हो। जयपुर एक नियोजित शहर है जहाँ जल निकायों का निर्माण शहर की सीमा के बाहर या उद्यानों के समीप किया गया था।

38. (2) मध्य एशिया को पश्चिमी गुजरात तट से जोड़ने वाले कारवां मार्गों पर इसकी स्थिति।
बीकानेर की ऐतिहासिक समृद्धि का मुख्य कारण इसकी भौगोलिक स्थिति थी। यह शहर मध्य एशिया और उत्तरी भारत को गुजरात के बंदरगाहों से जोड़ने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर स्थित था। यहाँ से गुजरने वाले व्यापारियों से मिलने वाले कर और व्यावसायिक गतिविधियों ने नगरीय विकास को गति दी। रेगिस्तानी क्षेत्र होने के बावजूद, व्यापारिक पारगमन बिंदु के रूप में इसकी भूमिका ने इसे एक संपन्न मरुस्थलीय नगर बनाया।

39. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जयपुर राजस्थान के नगरीय परिदृश्य में 'प्राइमेट नगर' की सभी विशेषताओं को प्रदर्शित करता है। इसकी जनसंख्या राज्य के दूसरे सबसे बड़े शहर जोधपुर की तुलना में बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त, राज्य की राजधानी होने के नाते यहाँ निवेश, रोजगार और प्रशासनिक शक्तियों का अत्यधिक संकेंद्रण है। यह आर्थिक और सामाजिक प्रभुत्व ही जयपुर को एक प्राइमेट नगर बनाता है, जो अन्य शहरों से कहीं अधिक तीव्र है।

NODIA

40. (1) केवल I और II
हाल के वर्षों में राजस्थान के कुछ शहर प्रवेश परीक्षा कोचिंग के प्रमुख केंद्रों के रूप में उभरे हैं। कोटा इंजीनियरिंग और मेडिकल परीक्षाओं की तैयारी के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार सीकर जिला भी शेखावाटी क्षेत्र में एक बड़े शिक्षा हब के रूप में विकसित हुआ है। जैसलमेर पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, न कि शैक्षणिक कोचिंग हेतु। अतः केवल कोटा और सीकर ही वर्तमान में इस श्रेणी में आते हैं।

41. (3) किसी क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर आकार और राष्ट्रीय प्रभाव में सर्वोपरि होता है।
मार्क जेफरसन द्वारा प्रतिपादित 'प्राइमेट नगर का नियम' यह बताता है कि किसी प्रदेश का सबसे बड़ा शहर अपनी जनसंख्या और प्रभाव में दूसरे सबसे बड़े शहर की तुलना में अत्यधिक बड़ा और प्रभुत्वशाली होता है। यह शहर उस क्षेत्र की राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का मुख्य केंद्र बन जाता है। राजस्थान में जयपुर इस अवधारणा का सटीक उदाहरण है, क्योंकि इसकी जनसंख्या अन्य प्रमुख शहरों की तुलना में काफी अधिक है।

42. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
राजस्थान का नगरीय विकास प्रतिरूप संतुलित नहीं है; यहाँ विकास कुछ चुनिंदा शहरों में ही केंद्रित है। जयपुर राज्य के नगरीय परिदृश्य पर पूरी तरह हावी है, जहाँ निवेश और रोजगार के अवसरों का असमान वितरण है। इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाला अधिकांश प्रवास जयपुर की ओर केंद्रित हो जाता

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 24.87 प्रतिशत
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का योगदान 24.87 प्रतिशत रहा। यह दर्शाता है कि राज्य की लगभग एक-चौथाई जनसंख्या शहरों में निवास करती है। राष्ट्रीय स्तर पर भारत का नगरीकरण स्तर 31.15 प्रतिशत था, जिसका अर्थ है कि राजस्थान नगरीकरण में अखिल भारतीय औसत से पीछे है। राज्य में नगरीय विकास के साथ जनसंख्या का दबाव निरंतर बढ़ रहा है।

2. (1) नगरीकरण निरंतर बढ़ रहा है लेकिन राष्ट्रीय औसत से कम बना हुआ है।
राजस्थान में पिछले कुछ समय में नगरीकरण की प्रक्रिया में निरंतर वृद्धि देखी गई है। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन और नए वैधानिक नगरों के बनने से शहरी जनसंख्या बढ़ी है। हालांकि, इस वृद्धि के बाद भी राजस्थान का नगरीकरण स्तर राष्ट्रीय औसत से कम है। राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रधानता और भौगोलिक स्थितियां इस धीमी लेकिन निरंतर नगरीकरण की प्रवृत्ति को प्रभावित करती हैं।

3. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर राजस्थान के विभिन्न जिलों में नगरीकरण का स्तर काफी असमान है। कोटा 60.3 प्रतिशत के साथ सर्वाधिक नगरीकृत जिला है, जबकि जयपुर 52.4 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। इसके विपरीत, डूंगरपुर केवल 6.4 प्रतिशत के साथ सबसे कम नगरीकृत जिला रहा। यह भिन्नता जिलों की औद्योगिक और प्रशासनिक स्थितियों पर निर्भर करती है।

4. (4) बड़े गाँवों में आर्थिक विविधीकरण जो नगरीय जनसांख्यिकीय मानदंडों को पूरा करते हैं।
राजस्थान में जनगणना नगरों की वृद्धि का मुख्य कारण बड़े गाँवों का आर्थिक स्वरूप बदलना है। जब किसी गाँव की पुरुष कार्यशील जनसंख्या का बड़ा हिस्सा गैर-कृषि गतिविधियों में संलग्न हो जाता है, तो वह नगरीय मानकों को पूरा करता है। 5000 से अधिक जनसंख्या, 400 का जनघनत्व और गैर-कृषि आजीविका जैसे मानदंड पूरे होने पर इन्हें जनगणना नगर वर्गीकृत किया जाता है।

5. (2) II, III, I, IV
2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान के सर्वाधिक नगरीकृत जिलों को उनके नगरीय जनसंख्या प्रतिशत के घटते क्रम में व्यवस्थित करने पर कोटा शीर्ष पर आता है। कोटा में लगभग 60.3 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती है। इसके बाद जयपुर (52.4 प्रतिशत), अजमेर (40.1 प्रतिशत) और जोधपुर (34.3 प्रतिशत) का स्थान आता है। यह आंकड़ा राज्य के प्रमुख नगरीय केंद्रों के जनसांख्यिकीय पदानुक्रम को स्पष्ट करता है।

6. (2) माउंट आबू
राजस्थान में आधुनिक स्थानीय स्वशासन की शुरुआत ब्रिटिश काल के दौरान हुई थी। राज्य की पहली नगरपालिका की स्थापना वर्ष 1864 में सिरोही जिले के माउंट आबू में की गई थी। इसे इसके ठंडे वातावरण और सामरिक महत्व के कारण अंग्रेजों द्वारा एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में चुना गया था। इसके पश्चात अजमेर और ब्यावर में भी नगर पालिकाओं का गठन किया गया, जिससे राज्य में नगरीय प्रशासन की आधारशिला रखी गई।

7. (4) I, II, और III
राजस्थान के नगरों का ऐतिहासिक विकास विभिन्न चरणों में हुआ। मध्यकाल में सामरिक सुरक्षा हेतु कई नगर दुर्गों के निकट विकसित हुए। 19वीं शताब्दी में रेलवे के विस्तार ने पुराने व्यापारिक मार्गों को बदल दिया, जिससे नए जंक्शनों का उदय हुआ। स्वतंत्रता के बाद रियासतों के विलय और प्रशासनिक पुनर्गठन से कई पूर्व राजधानियों के नगरीय महत्व और विकास की गति में परिवर्तन आया।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शेखावाटी और मरुस्थलीय क्षेत्रों के चूरू और रामगढ़ जैसे समृद्ध व्यापारिक नगरों ने आर्थिक मंदी का सामना किया। इसका मुख्य कारण ब्रिटिश काल में रेलवे का विस्तार था। पूर्व में ये शहर पारंपरिक व्यापारिक मार्गों के प्रमुख केंद्र थे। नए परिवहन नेटवर्क ने व्यापारिक मार्गों को विस्थापित कर दिया, जिससे इन ऐतिहासिक शहरों का व्यावसायिक प्रभुत्व समाप्त हो गया।

9. (3) भीलवाड़ा
ऐतिहासिक विकास और कार्यों के आधार पर राजस्थान के शहरों का वर्गीकरण किया गया है। चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़ और रणथंभौर जैसे नगरों की उत्पत्ति मुख्य रूप से सुरक्षात्मक दुर्गों और सैन्य केंद्रों के रूप में हुई थी। इसके विपरीत, भीलवाड़ा एक आधुनिक औद्योगिक शहर है जिसे वस्त्र निर्माण हेतु जाना जाता है। भीलवाड़ा का विकास ऐतिहासिक रक्षात्मक नगरों की तुलना में पूर्णतः आर्थिक और व्यावसायिक गतिविधियों पर आधारित रहा है।

10. (1) ग्रामीण बस्ती
किसी बस्ती को जनगणना नगर कहलाने के लिए तीन प्रमुख मानदंड आवश्यक हैं। प्रथम, न्यूनतम 5000 जनसंख्या, द्वितीय, 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर का घनत्व और तृतीय, कम से कम 75 प्रतिशत पुरुष कार्यशील जनसंख्या का गैर-कृषि कार्यों में संलग्न होना। यहाँ जनसंख्या और घनत्व के मानदंड पूरे होते हैं, परंतु पुरुष कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत कम होने के कारण इसे नगरीय के बजाय ग्रामीण बस्ती माना जाएगा।

NODIA

11. (4) नगरपालिका, निगम, छावनी बोर्ड या अधिसूचित नगर क्षेत्र समिति की उपस्थिति।
राजस्थान में किसी बस्ती को सांविधिक नगर तभी माना जा सकता है जब उसे राज्य सरकार द्वारा प्रशासनिक रूप से अधिसूचित किया गया हो। इसके लिए वहां नगरपालिका, नगर परिषद, नगर निगम या छावनी बोर्ड जैसी स्थानीय संस्था का होना अनिवार्य है। यह वर्गीकरण जनसंख्या के स्थान पर राज्य के नियमों पर आधारित होता है। यह इसे जनगणना नगर के जनसांख्यिकीय मानकों से भिन्न वैधानिक स्वरूप प्रदान करता है।

12. (3) केवल IV
भारत की जनगणना नगरीय केंद्रों को जनसंख्या के आधार पर छह श्रेणियों में विभाजित करती है। प्रथम श्रेणी के नगरों की जनसंख्या एक लाख से अधिक होती है, जिनमें राजस्थान की अधिकांश नगरीय जनसंख्या निवास करती है। चतुर्थ और पंचम श्रेणी के नगरों में जनसंख्या का अनुपात बहुत कम है। अतः यह कथन अशुद्ध है कि राज्य की अधिकांश शहरी आबादी छोटे नगरों में रहती है। वास्तव में, बड़े नगरों में तीव्र विकास हुआ है।

13. (3) भीलवाड़ा
भीलवाड़ा राजस्थान का प्रमुख औद्योगिक केंद्र है, जिसे 'वस्त्र नगरी' या 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है। इसकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कपड़ा मिलों और कताई इकाइयों पर निर्भर है। यहाँ निर्मित वस्त्रों का निर्यात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। जैसलमेर और बीकानेर जैसे शहरों की तुलना में, भीलवाड़ा का विकास ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः औद्योगिक और व्यावसायिक गतिविधियों के आधार पर हुआ है।

14. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
नगरीय इकाइयों को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। जनगणना नगर वे क्षेत्र हैं जो जनसांख्यिकीय मानदंड पूरे करते हैं। सांविधिक नगर नगरपालिका की तरह राज्य विधान द्वारा स्थापित होते हैं। नगरीय संकुलन एक निरंतर विस्तार है जिसमें नगर और उसके बाहरी क्षेत्र शामिल होते हैं। बाह्य विकास में नगर से सटे विशिष्ट परिसर आते हैं। यह वर्गीकरण शहरों के प्रशासनिक और भौतिक स्वरूप को स्पष्ट करता है।

15. (1) छावनी बोर्ड (Cantonment Board)
राजस्थान नगरपालिका अधिनियम, 2009 के अनुसार, अधिकांश नगरीय क्षेत्रों का प्रशासन निर्वाचित निकायों द्वारा किया जाता है। हालांकि, छावनी बोर्ड इसका अपवाद है। इसका प्रशासन और नियंत्रण केंद्र सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। इसमें निर्वाचित सदस्यों के साथ सैन्य अधिकारी भी शामिल होते हैं। यह विशेष व्यवस्था सैन्य क्षेत्रों की सुरक्षा और प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण केंद्र द्वारा सीधे संचालित की जाती है।

16. (1) I, II, III, और IV
जयपुर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। यह वास्तु शास्त्र पर आधारित भारत का प्रथम नियोजित शहर है। अपनी बड़ी जनसंख्या के कारण यह एक 'प्राइमेट नगर' का उदाहरण है। इसके ऐतिहासिक परकोटा क्षेत्र को 2019 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया गया। वर्तमान में प्रशासनिक दृष्टि से जयपुर को दो पृथक नगर निगमों में विभाजित किया गया है, अतः केवल एक निगम वाला कथन अशुद्ध है।

17. (2) विद्याधर भट्टाचार्य
जयपुर शहर की स्थापना महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा 1727 में की गई थी। इस ऐतिहासिक नगर की अद्वितीय ग्रिड योजना और वास्तुशिल्प को तैयार करने में वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य की मुख्य भूमिका थी। उन्होंने इसे प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित भारत का पहला नियोजित शहर बनाया। शहर की चौड़ी सड़कों और समकोण पर काटते चौराहों का वैज्ञानिक नियोजन आज भी विश्व भर में प्रशंसनीय है।

18. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और II, I की व्याख्या करता है।
जोधपुर को मेहरानगढ़ दुर्ग के चारों ओर नीले घरों के कारण 'ब्लू सिटी' कहा जाता है। पारंपरिक रूप से नीले रंग का उपयोग ब्राह्मण समुदाय द्वारा किया जाता था, जो कालान्तर में शहर की पहचान बना। वैज्ञानिक रूप से नीला रंग शुष्क जलवायु में घरों को ठंडा रखने और कीटों को दूर भगाने में सहायक होता है। इस प्रकार सांस्कृतिक और कार्यात्मक कारणों से यह परंपरा विकसित हुई।

19. (2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के प्रमुख शहरों के नाम उनकी विशिष्टताओं पर आधारित हैं। जोधपुर को 'सन सिटी' और 'ब्लू सिटी' कहा जाता है। कोटा वर्तमान में कोचिंग संस्थानों के कारण एक प्रमुख 'शैक्षिक केंद्र' बन चुका है। बीकानेर को उसके मरुस्थलीय वातावरण के कारण 'रेगिस्तानी शहर' माना जाता है। अजमेर अपनी धार्मिक सहिष्णुता और सूफी दरगाह के कारण 'राजस्थान का हृदय' और प्रमुख 'धार्मिक केंद्र' के रूप में प्रसिद्ध है।

20. (4) चंबल
कोटा शहर का आधुनिक औद्योगिक विकास मुख्य रूप से चंबल नदी की बारहमासी जल आपूर्ति पर आधारित है। इस नदी पर बने बांधों और बिजली परियोजनाओं ने शहर को आवश्यक ऊर्जा और जल संसाधन प्रदान किए हैं। प्रचुर जल और विद्युत की उपलब्धता के कारण कोटा में भारी उद्योगों और उर्वरक संयंत्रों की स्थापना हुई। चंबल नदी ने कोटा को राजस्थान के एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र में बदल दिया है।

21. (1) जयपुर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर
राजस्थान के शीर्ष चार शहरों को उनकी कुल जनसंख्या के आधार पर घटते क्रम में व्यवस्थित करने पर जयपुर प्रथम स्थान पर आता है। जयपुर के पश्चात जोधपुर राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। कोटा तीसरे स्थान पर अपनी औद्योगिक और शैक्षिक पहचान के साथ आता है, जबकि बीकानेर चौथे स्थान

Downloaded from www.pdf.tube

पर है। यह क्रम 2011 की जनगणना के आधिकारिक आंकड़ों पर आधारित है और जनसांख्यिकीय पदानुक्रम को दर्शाता है।

22. (2) 1488
बीकानेर शहर की स्थापना 1488 में राव जोधा के पुत्र राव बीका द्वारा की गई थी। इस शहर का विकास थार मरुस्थल के मध्य एक सामरिक व्यापारिक केंद्र के रूप में हुआ। बीकानेर अपनी विशिष्ट लाल बलुआ पत्थर की वास्तुकला, भव्य हवेलियों और जूनागढ़ किले के लिए विश्व प्रसिद्ध है। रेगिस्तानी जलवायु के बावजूद, राव बीका के नेतृत्व में इस नगर ने एक मजबूत आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान स्थापित की।

23. (4) I, II, और III
अजमेर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और धार्मिक केंद्र है। यह सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के लिए विश्व भर में विख्यात है। इसके निकट स्थित पुष्कर कस्बा अपने पवित्र ब्रह्मा मंदिर और वार्षिक मेले के लिए जाना जाता है। ऐतिहासिक रूप से, अजमेर पृथ्वीराज चौहान जैसे शक्तिशाली शासकों के अधीन चौहान वंश की राजधानी था। यह शहर सदियों से सांप्रदायिक सद्भाव और मिश्रित संस्कृति का प्रतीक रहा है।

24. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पिछले दो दशकों में कोटा शहर ने अभूतपूर्व जनसांख्यिकीय परिवर्तन देखा है। यहाँ बड़ी संख्या में छात्र देश के विभिन्न हिस्सों से प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए आते हैं, जिससे एक बड़ी अस्थायी जनसंख्या निर्मित हुई है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण कोटा का इंजीनियरिंग और मेडिकल कोचिंग हेतु एक राष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभरना है। यह शैक्षिक उद्योग शहर की पूरी अर्थव्यवस्था और ढांचे को आधार प्रदान करता है।

25. (3) इसकी अर्थव्यवस्था कृषि प्रसंस्करण से पूर्णतः मुक्त है और पूर्णतः भारी धातु उद्योगों पर आधारित है।
बीकानेर की अर्थव्यवस्था ऐतिहासिक रूप से व्यापार और कृषि आधारित उद्योगों पर आधारित रही है। यह शहर मध्य एशिया के व्यापारिक मार्गों पर स्थित होने के कारण समृद्ध हुआ। वर्तमान में यह ऊन प्रसंस्करण, चीनी मिट्टी और दुग्ध उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है। यह कहना पूर्णतः अशुद्ध है कि इसकी अर्थव्यवस्था केवल भारी धातु उद्योगों पर आधारित है। बीकानेर की औद्योगिक पहचान स्थानीय कृषि और संसाधनों से गहराई से जुड़ी है।

26. (1) बड़े पैमाने पर अपतटीय (offshore) तेल निष्कर्षण
कोटा की औद्योगिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से चंबल नदी के संसाधनों पर आधारित है। यहाँ बड़े रासायनिक और उर्वरक संयंत्र तथा तापीय बिजली घर स्थित हैं। साथ ही, कोटा डोरिया वस्त्र उद्योग भी यहाँ की पहचान है। हालांकि, अपतटीय तेल निष्कर्षण कोटा की अर्थव्यवस्था का हिस्सा नहीं है क्योंकि यह एक अंतर्देशीय शहर है। तेल और गैस की खोज राजस्थान के बाड़मेर और जैसलमेर जैसे पश्चिमी जिलों तक सीमित है।

27. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक शहरों की स्थापना विभिन्न राजवंशों द्वारा की गई थी। जयपुर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। जोधपुर शहर को 1459 में राव जोधा द्वारा बसाया गया था। उदयपुर की स्थापना 1559 में महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। अजमेर शहर की नींव अजयपाल चौहान ने रखी थी। ये ऐतिहासिक तथ्य इन शहरों की संस्कृति और गौरवशाली इतिहास की नींव को दर्शाते हैं।

28. (2) बी.आर. पटेल समिति
राजस्थान की रियासतों के एकीकरण के समय राजधानी के चयन हेतु बी.आर. पटेल समिति गठित की गई थी। इसकी सिफारिशों के आधार पर जयपुर को राजस्थान की राजधानी बनाने का निर्णय लिया गया। समिति ने विभिन्न शहरों की भौगोलिक स्थिति और प्रशासनिक सुविधाओं का मूल्यांकन किया था। अन्य विभाग भी वितरित किए गए थे, जैसे उच्च न्यायालय जोधपुर में, शिक्षा विभाग बीकानेर में और खनिज विभाग उदयपुर में स्थापित हुआ।

NODIA

29. (2) I, II, और III
जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है और यहाँ राज्य उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ स्थित है। यह शहर उम्मेद भवन पैलेस और जसवंत थड़ा जैसे अद्वितीय स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि, यह कहना गलत है कि जोधपुर को कभी राजस्थान में एकीकृत नहीं किया गया। वास्तव में, जोधपुर रियासत का 1949 में राजस्थान संघ में विलय हो गया था। यह मारवाड़ के प्रमुख प्रशासनिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

30. (4) अजमेर - भाग 'सी' (Part C) राज्य
1956 के राज्य पुनर्गठन से पहले, भारतीय राज्यों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया था। राजस्थान की अधिकांश रियासतें भाग 'बी' राज्यों का हिस्सा थीं। अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र एक केंद्र शासित प्रदेश की तरह था और इसे भाग 'सी' राज्य के रूप में वर्गीकृत किया गया था। 1 नवंबर 1956 को अजमेर का राजस्थान में विलय हुआ और इसे राज्य का 26वां जिला बनाया गया। शेष विकल्प अशुद्ध हैं क्योंकि वे रियासतें थीं।

31. (1) नगरीय व्यवस्था में अन्य शहरों की तुलना में अत्यधिक बड़ा और आर्थिक रूप से प्रभुत्व रखने वाला शहर।
नगरीय भूगोल में 'प्राइमेट नगर' शब्द का प्रयोग मार्क जेफरसन द्वारा ऐसे शहर हेतु किया गया जो जनसंख्या और प्रभाव में क्षेत्र के अन्य शहरों से बहुत आगे होता है। ऐसा शहर सामान्यतः राज्य का आर्थिक और राजनीतिक केंद्र होता है। राजस्थान के संदर्भ में जयपुर एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि इसकी जनसंख्या और विकास का स्तर राज्य के दूसरे सबसे बड़े शहर जोधपुर की तुलना में दोगुने से भी अधिक है।

32. (1) I, II, III, और IV
कोटा चंबल नदी के तट पर स्थित है और अपने प्रसिद्ध 'कोटा स्टोन' के लिए जाना जाता है। यह शहर केंद्र सरकार के स्मार्ट

काफी अधिक हो जाता है। इस परिघटना को क्या कहा जाता है?
(1) ग्रीनहाउस प्रभाव
(2) ओजोन रिक्तीकरण
(3) तापीय व्युत्क्रमण (Thermal Inversion)
(4) अर्बन हीट आइलैंड प्रभाव (Urban Heat Island Effect)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. राजस्थान में नगरीकरण की चुनौतियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) जयपुर जैसे महानगरीय क्षेत्रों में यातायात संकुलन और अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था प्रमुख मुद्दे हैं।
(2) राजस्थान के सभी शहरों ने पाइप वाले भूमिगत सीवरेज नेटवर्क का 100 प्रतिशत कवरेज सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया है।
(3) स्रोत पर कचरे के अनुचित पृथक्करण के कारण ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है।
(4) मानसून के दौरान नगरीय बाढ़ प्राकृतिक जल निकासी मार्गों के अतिक्रमण से और भी भयावह हो जाती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 नगरपालिका स्वच्छता में सुधार के लिए कचरे के स्रोत पृथक्करण (source segregation) का आदेश देते हैं। घरेलू स्तर पर पृथक्करण के लिए निर्दिष्ट तीन श्रेणियां कौन सी हैं?
(1) प्लास्टिक, कांच और धातु की वस्तुएं जिन्हें पृथक औद्योगिक प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है।
(2) ज्वलनशील, गैर-ज्वलनशील और ई-कचरा जिन्हें पृथक निपटान विधियों की आवश्यकता होती है।
(3) जैव-निम्नीकरणीय (गीला), सूखा (पुनर्चक्रण योग्य), और घरेलू खतरनाक (डायपर, नैपकिन) कचरा।
(4) नगरीय घरों द्वारा दैनिक रूप से उत्पन्न तरल, ठोस और गैसीय अपशिष्ट उत्पाद।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. राज्य में नगरीय आधारभूत संरचना परियोजनाओं को लागू करने के लिए विशेष रूप से धन जुटाने के लिए कौन सा वित्तीय संस्थान/कोष स्थापित किया गया था?
(1) राजस्थान ग्रामीण आजीविका परियोजना (RRLP)
(2) राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मकता परियोजना (RACP)
(3) राजस्थान वानिकी और जैव विविधता परियोजना (RFBP)
(4) राजस्थान शहरी आधारभूत संरचना विकास परियोजना (RUIDP)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान के नगरीय केंद्रों में क्रियान्वित अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (AMRUT) का उद्देश्य नहीं है?
(1) शहर के बाहरी क्षेत्रों में नगरीय झुग्गीवासियों को निःशुल्क कृषि भूमि प्रदान करना।
(2) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक घर में जल की निश्चित आपूर्ति के साथ एक नल और सीवरेज कनेक्शन हो।
(3) हरियाली और सुव्यवस्थित खुले स्थानों को विकसित करके शहरों के सुविधा मूल्य में वृद्धि करना।
(4) सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके या गैर-मोटर चालित परिवहन के लिए सुविधाएं बनाकर प्रदूषण को कम करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. जयपुर जैसे शहरों में यातायात और आवास चुनौतियों से निपटने के लिए नगरीय नियोजन रणनीतियों में TOD अवधारणा का क्या अर्थ है?
(1) ट्रैफिक ओवरलोड डिस्ट्रीब्यूशन
(2) ट्रांजिट-ओरिएंटेड डेवलपमेंट (Transit-Oriented Development)
(3) टाउन ऑप्टिमाइजेशन डिजाइन
(4) टेम्परेरी ऑक्यूपेंसी डायरेक्टिव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

है। जबकि अन्य जिलों में नगरीकरण की गति धीमी है, जयपुर का विस्तार क्षेत्रीय असंतुलन को स्पष्ट करता है।

43. (3) 20 प्रतिशत
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान की कुल नगरीय जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा अकेले जयपुर जिले में निवास करता है। यह सांख्यिकी जयपुर के अत्यधिक नगरीय केंद्रीकरण और इसके 'प्राइमेट नगर' होने की पुष्टि करती है। राज्य के अन्य जिलों की तुलना में जयपुर में नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता अधिक होने के कारण यहाँ जनसंख्या का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। यह संसाधनों के प्रबंधन हेतु एक चुनौती है।

44. (1) I, II, और III
राजस्थान में ग्रामीण-नगरीय प्रवास के पीछे कई कारण हैं। सूखा और कृषि संकट ग्रामीणों को शहरों की ओर धकेलते हैं, जिन्हें 'प्रतिकर्ष कारक' कहा जाता है। इसके विपरीत, शहरों में रोजगार के अवसर लोगों को आकर्षित करते हैं, जिन्हें 'अपकर्ष कारक' कहते हैं। पुरुषों के प्रवास के कारण गाँवों में कृषि का उत्तरदायित्व महिलाओं पर आ गया है। प्रवास से शहरों की झुग्गी आबादी कम नहीं होती, बल्कि उनमें वृद्धि होती है।

45. (3) मानसून की विफलता के कारण फसल का नुकसान - पुश कारक (Push Factor)
प्रवास के कारकों को मुख्य रूप से 'प्रतिकर्ष' और 'अपकर्ष' श्रेणियों में बांटा जाता है। प्रतिकूल परिस्थितियां जैसे मानसून की विफलता, सूखा या रोजगार का अभाव लोगों को गाँव छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं, जिन्हें 'प्रतिकर्ष' कारक कहा जाता है। इसके विपरीत, शहरों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और रोजगार के आकर्षक अवसर लोगों को अपनी ओर खींचते हैं, जिन्हें 'अपकर्ष' कारक माना जाता है। फसल नुकसान एक प्रमुख नकारात्मक दबाव है।

46. (4) यह ग्रामीण क्षेत्रों में पीछे रह गए वृद्धों, महिलाओं और बच्चों के अनुपात को बढ़ाता है।
शेखावाटी और मेवाड़ जैसे क्षेत्रों से होने वाला पुरुष-प्रधान प्रवास ग्रामीण क्षेत्रों की जनसांख्यिकीय संरचना को प्रभावित करता है। जब युवा पुरुष रोजगार की तलाश में शहरों की ओर चले जाते हैं, तो गाँवों में मुख्य रूप से महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग ही शेष रह जाते हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचे पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। यह असंतुलन ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम शक्ति की कमी को भी उत्पन्न करता है।

47. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
प्रवास के विभिन्न आयामों के प्रभाव अलग होते हैं। 'प्रतिकर्ष कारक' के रूप में कृषि का पतन लोगों को गाँव छोड़ने पर मजबूर करता है। 'अपकर्ष कारक' के तहत शहरों की उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रवासियों को आकर्षित करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों पर इसका प्रभाव मनी-ऑर्डर अर्थव्यवस्था के रूप में दिखता है। शहरों पर इसका प्रभाव अनियोजित झुग्गी बस्तियों के विस्तार और नागरिक सुविधाओं पर बढ़ते दबाव के रूप में स्पष्ट है।

NODIA

48. (2) उप-नगरीय कृषि भूमि का क्षरण और जल निकासी मार्गों पर अतिक्रमण।
जयपुर और जोधपुर जैसे बड़े शहरों में तीव्र प्रवास के कारण शहरों का बाहरी विस्तार अनियंत्रित रूप से हो रहा है। इस नगरीय प्रसार का सीधा पर्यावरणीय प्रभाव आसपास की उपजाऊ कृषि भूमि के नष्ट होने के रूप में सामने आता है। साथ ही, नए निर्माणों के कारण प्राकृतिक जल निकासी मार्गों पर अतिक्रमण हो जाता है, जिससे शहरों में बाढ़ की समस्या पैदा होती है। यह अनियोजित विकास स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुँचाता है।

49. (2) ग्रामीण ग्राम समुदायों के भीतर सामाजिक कठोरता और जाति-आधारित संघर्ष।
प्रवास के संदर्भ में 'अपकर्ष कारक' वे आकर्षक सुविधाएं होती हैं जो लोगों को शहरों की ओर खींचती हैं, जैसे नियमित रोजगार और बेहतर शिक्षा। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त सामाजिक कठोरता, जाति-आधारित भेदभाव या संघर्ष वे नकारात्मक परिस्थितियां हैं जो लोगों को गाँव छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। अतः सामाजिक संघर्ष एक 'प्रतिकर्ष कारक' है, न कि 'अपकर्ष कारक'। लोग शहरों में समानता की तलाश करते हैं।

50. (1) I, II, III, और V
राजस्थान में तीव्र नगरीकरण और प्रवास के कई बहुआयामी परिणाम सामने आए हैं। इसके कारण शहरों में झुग्गी बस्तियों का तेजी से विस्तार हुआ है और नागरिक सुविधाओं पर भारी दबाव बढ़ा है। अनौपचारिक रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है और शहर के बाहरी हिस्सों में कृषि भूमि का उपयोग बदल रहा है। हालांकि, वाहनों की संख्या और प्रदूषण में कमी नहीं हुई है, बल्कि यातायात बढ़ने से प्रदूषण बढ़ गया है।

51. (2) लगभग 10-11 प्रतिशत
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान की नगरीय जनसंख्या का लगभग 10 से 11 प्रतिशत हिस्सा झुग्गियों या कच्ची बस्तियों में निवास करता है। यह आबादी मुख्य रूप से उन प्रवासियों की है जो रोजगार हेतु शहरों में आते हैं लेकिन उच्च आवासीय लागत के कारण औपचारिक मकान नहीं ले पाते। झुग्गी आबादी का यह प्रतिशत शहरों में आधारभूत सुविधाओं के अभाव और प्रभावी आवास योजनाओं की आवश्यकता को दर्शाता है।

52. (3) केवल I और II
राजस्थान के शहरों में झुग्गियों के बढ़ने का मुख्य कारण गरीबों की औपचारिक आवास बाजार तक पहुँच न होना है। जमीनों की बढ़ती कीमतें और कम आय उन्हें अवैध बस्तियों में रहने को मजबूर करती हैं। साथ ही, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों हेतु बनाई गई किफायती आवास योजनाओं का लाभ सभी पात्र लोगों तक नहीं पहुँच पाता है। भारत में प्रवास पर कोई कठोर प्रतिबंध नहीं है, अतः यह झुग्गियों का कारण नहीं है।

अनुप्रयोग।
iv. किसी वर्तमान निर्मित क्षेत्र में स्मार्ट सिटी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नियोजन ताकि इसे अधिक कुशल और रहने योग्य बनाया जा सके।
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख शहर एक अपवाद है, क्योंकि इसे केंद्र सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत विकास के लिए नहीं चुना गया था?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) अजमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत विशेष प्रयोजन वाहन (SPV) की क्या भूमिका है?
(1) स्मार्ट शहरों में प्रारंभ की गई एक विशेष विद्युत सार्वजनिक परिवहन बस प्रणाली।
(2) दिल्ली में एक केंद्रीकृत संघीय एजेंसी जो सीधे सभी नगरपालिका अनुबंध प्रदान करती है।
(3) परियोजनाओं को लागू करने के लिए राज्य और नगरीय निकाय (ULB) द्वारा प्रवर्तित शहर-स्तरीय लिमिटेड कंपनी।
(4) ग्रीनफील्ड विस्तार के लिए विश्व बैंक द्वारा स्थापित एक समर्पित विकास कोष।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. निम्नलिखित में से कौन सा कथन स्मार्ट सिटी मिशन के वित्तपोषण प्रतिरूप (funding pattern) का सही वर्णन करता है?
(1) राज्य पर कोई वित्तीय भार न होने के साथ 100 प्रतिशत केंद्र प्रायोजित योजना।
(2) निजी बैंकों के माध्यम से निर्देशित पूर्णतः प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर निर्भर कार्यक्रम।
(3) नगरपालिका संपत्ति करों में वृद्धि के माध्यम से स्थानीय नगरीय निकायों द्वारा वित्त पोषित परियोजना।
(4) एक केंद्र प्रायोजित योजना जहाँ केंद्र और राज्य सरकारें 50:50 के अनुपात में लागत साझा करती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. किस संवैधानिक संशोधन अधिनियम ने भारत में नगरीय स्थानीय निकायों (नगर पालिकाओं) को औपचारिक संवैधानिक मान्यता प्रदान की?
(1) 72वां संशोधन अधिनियम
(2) 73वां संशोधन अधिनियम
(3) 74वां संशोधन अधिनियम
(4) 76वां संशोधन अधिनियम
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. राजस्थान में नगरीय स्थानीय निकायों के प्रकारों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: राजस्थान में नगरीय स्थानीय निकाय का प्रकार
A. नगर निगम
B. नगर परिषद
C. नगर पालिका (बोर्ड)
D. छावनी बोर्ड (Cantonment Board)
सूची II: सामान्य जनसंख्या मानदंड
i. संक्रमणकालीन क्षेत्र/लघु नगरीय क्षेत्र (सामान्यतः 1 लाख से कम जनसंख्या)
ii. लघु नगरीय क्षेत्र (सामान्यतः 1 लाख से 5 लाख के बीच जनसंख्या)
iii. वृहत्तर नगरीय क्षेत्र (सामान्यतः 5 लाख से ऊपर की जनसंख्या)
iv. रक्षा मंत्रालय द्वारा सीधे प्रशासित
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थान में हाल के प्रशासनिक पुनर्गठनों के अनुसार, जयपुर, जोधपुर और कोटा जैसे शहरों की एक विशिष्ट शासन संरचना है। वह क्या है?
(1) वे पूर्णतः निजीकृत कॉर्पोरेट निकायों द्वारा प्रशासित हैं।
(2) इनमें से प्रत्येक शहर को दो पृथक नगर निगमों में विभाजित किया गया है।
(3) वे एक ग्रामीण सरपंच द्वारा शासित एकल नगरपालिका के अंतर्गत कार्य करते हैं।
(4) उन्हें सीधे केंद्रीय गृह मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में रखा गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए और पहचानिए कि संविधान की 12वीं अनुसूची के अनुसार कौन सा संयोजन नगरीय स्थानीय निकायों के अधिकार क्षेत्र में आता है।
I. नगर नियोजन सहित नगरीय नियोजन।
II. भूमि उपयोग का विनियमन और भवनों का निर्माण।
III. आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नियोजन।
IV. अग्निशमन सेवाएं।
V. अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं का प्रबंधन।
संविधान की 12वीं अनुसूची के अनुसार उपर्युक्त में से कौन सा संयोजन नगरीय स्थानीय निकायों के अधिकार क्षेत्र में आता है?
(1) I, II, III, और IV
(2) I, III, IV, और V
(3) II, III, IV, और V

Downloaded from www.pdf.tube

63. (3) 74वां संशोधन अधिनियम
भारत में नगरीय स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान करने हेतु 1992 में 74वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम पारित किया गया था। यह अधिनियम 1 जून 1993 से प्रभावी हुआ। इसके माध्यम से संविधान में 'भाग नौ-क' और '12वीं अनुसूची' जोड़ी गई, जिसमें नगर पालिकाओं के 18 कार्यात्मक विषयों का उल्लेख है। इस संशोधन ने स्थानीय प्रशासन को कानूनी मजबूती दी और नियमित चुनावों तथा वित्तीय हस्तांतरण को अनिवार्य बना दिया।

64. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान में नगरीय निकायों का वर्गीकरण जनसंख्या के आधार पर किया जाता है। नगर निगम सामान्यतः 5 लाख से अधिक जनसंख्या वाले बड़े शहरों में होते हैं। नगर परिषद 1 लाख से 5 लाख के बीच की जनसंख्या वाले मध्यम शहरों में कार्य करती हैं। नगरपालिका बोर्ड 1 लाख से कम आबादी वाले नगरों में होते हैं। छावनी बोर्ड विशिष्ट सैन्य क्षेत्रों के लिए होते हैं। यह पदानुक्रम नागरिक प्रशासन को सुचारु बनाता है।

65. (2) इनमें से प्रत्येक शहर को दो पृथक नगर निगमों में विभाजित किया गया है।
राजस्थान सरकार ने बेहतर प्रशासनिक प्रबंधन हेतु जयपुर, जोधपुर और कोटा जैसे बड़े शहरों में विशेष व्यवस्था लागू की है। इन तीनों शहरों में अब दो-दो पृथक नगर निगम कार्यरत हैं। इसका उद्देश्य नागरिक सेवाओं की पहुंच को सुगम बनाना और वार्डों के प्रबंधन में दक्षता लाना है। प्रत्येक निगम का अपना स्वतंत्र महापौर और निर्वाचित परिषद होती है, जो अपने विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों के विकास हेतु उत्तरदायी होती है।

66. (1) I, II, III, और IV
संविधान की 12वीं अनुसूची नगर पालिकाओं को 18 कार्यात्मक मदों पर शासन करने की शक्ति प्रदान करती है। इसमें नगरीय नियोजन, भूमि उपयोग का नियमन, भवनों का निर्माण और सामाजिक विकास की योजनाएं शामिल हैं। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं का प्रबंधन केंद्र सरकार का विशेष अधिकार है और यह नगरीय निकायों के कार्यों में शामिल नहीं है। यह विभाजन स्थानीय निकायों को शहरों के विकास पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है।

67. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
राजस्थान में महापौर के निर्वाचन की पद्धति समय-समय पर बदलती रहती है। वर्तमान में महापौर का निर्वाचन सीधे जनता द्वारा नहीं, बल्कि निर्वाचित पार्षदों द्वारा अपने बीच में से किया जाता है, जिसे अप्रत्यक्ष निर्वाचन कहते हैं। राज्य सरकार राजनीतिक प्राथमिकताओं के आधार पर नियमों में संशोधन करती रहती है, जिससे कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष मतदान की व्यवस्था लागू होती है। अतः प्रत्यक्ष निर्वाचन वाला कथन तथ्यात्मक रुप से अशुद्ध है।

68. (4) प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (PACS) का विनियमन
12वीं अनुसूची में नगर पालिकाओं हेतु निर्दिष्ट कार्यों में जल आपूर्ति, स्वच्छता, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और झुग्गी सुधार जैसे नागरिक कार्य प्रमुख हैं। ये कार्य शहरी निवासियों के जीवन स्तर को सुधारने से संबंधित हैं। हालांकि, प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों का विनियमन सहकारी क्षेत्र का हिस्सा है और यह राज्य के सहकारिता विभाग के अधीन आता है। यह नगर पालिकाओं के संवैधानिक अधिकार क्षेत्र से बाहर का विषय है।

69. (3) राज्य निर्वाचन आयोग
राजस्थान में नगर पालिकाओं और नगर निगमों के चुनावों के संचालन की जिम्मेदारी राज्य निर्वाचन आयोग की है। यह एक स्वतंत्र संवैधानिक निकाय है जिसका गठन 74वें संशोधन के तहत किया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग ही मतदाता सूची तैयार करने, वार्डों के परिसीमन की निगरानी करने और निष्पक्ष चुनाव कराने का कार्य करता है। भारत निर्वाचन आयोग केवल संसद और विधान सभा चुनावों का प्रबंधन करता है, स्थानीय निकायों का नहीं।

NODIA

70. (2) वार्ड समिति - मुख्यमंत्री
राजस्थान के नगरीय निकायों में विभिन्न पदों का सही क्रम है—नगर निगम में महापौर, नगर परिषद में सभापति और नगरपालिका में अध्यक्ष। ये सभी स्थानीय स्तर पर निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं। हालांकि, वार्ड समिति का मुख्यमंत्री के साथ कोई सीधा प्रशासनिक संबंध नहीं है। वार्ड समितियों का गठन स्थानीय समस्याओं को हल करने हेतु पार्षदों और नागरिकों के सहयोग से किया जाता है। मुख्यमंत्री राज्य सरकार का प्रमुख होता है।

71. (4) बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर आरोपित कॉर्पोरेट आयकर
नगर पालिकाओं के राजस्व स्रोतों में मुख्य रुप से संपत्ति कर, नगरीय विकास कर और विभिन्न सेवाओं हेतु वसूला जाने वाला शुल्क शामिल है। इसके अतिरिक्त, उन्हें राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों पर अनुदान प्राप्त होता है। हालांकि, कॉर्पोरेट आयकर एक केंद्रीय कर है जिसे भारत सरकार द्वारा वसूला जाता है और इसका स्थानीय निकायों के राजस्व से कोई सीधा संबंध नहीं है। नगरपालिकाएं केवल राज्य विधान द्वारा अधिकृत कर ही ले सकती हैं।

72. (1) नगर पंचायत / नगर पालिका
74वें संवैधानिक संशोधन के अनुसार, किसी ऐसे क्षेत्र के लिए जो ग्रामीण से नगरीय क्षेत्र में परिवर्तित हो रहा हो, उसे 'संक्रमणकालीन क्षेत्र' कहा जाता है। राजस्थान में ऐसे क्षेत्रों हेतु नगर पंचायत या नगरपालिका बोर्ड का गठन किया जाता है। यह निकाय उस क्षेत्र में प्रारंभिक नगरीय सुविधाएं जैसे सड़कें और स्वच्छता प्रदान करने हेतु उत्तरदायी होता है। जनसंख्या बढ़ने पर इसे उच्च श्रेणी के नगरीय निकाय में क्रमोन्नत किया जाता है।

73. (3) बढ़ती जनसंख्या की सहायता के लिए टिकाऊ मीठे जल के संसाधनों की कमी।
राजस्थान के प्रमुख शहरों जैसे जोधपुर और जयपुर हेतु टिकाऊ नगरीकरण की सबसे बड़ी चुनौती जल संकट है। शुष्क जलवायु के कारण यहाँ प्राकृतिक मीठे जल के स्रोतों की भारी कमी है।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राजस्थान में अनुसूचित क्षेत्रों के संदर्भ में, जनजातीय उप-योजना के तहत किसी क्षेत्र को घोषित करने का प्राथमिक मानदंड क्या है?
(1) क्षेत्र में न्यूनतम 10 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति जनसंख्या होनी चाहिए।
(2) क्षेत्र में न्यूनतम 25 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति जनसंख्या होनी चाहिए।
(3) क्षेत्र में न्यूनतम 50 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति जनसंख्या होनी चाहिए।
(4) क्षेत्र में विशेष रुप से कमजोर जनजातीय समूहों का निवास होना चाहिए।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सहरिया जनजाति राजस्थान की एकमात्र जनजाति है जिसे भारत सरकार द्वारा विशेष रुप से कमजोर जनजातीय समूहों की सूची में शामिल किया गया है।
कारण (R): सहरिया जनजाति कृषि-पूर्व स्तर की तकनीक, अत्यंत निम्न साक्षरता दर और स्थिर या घटती जनसंख्या प्रदर्शित करती है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. गवरी नृत्य, एक प्रसिद्ध 40 दिन तक चलने वाली पारंपरिक नृत्य-नाटिका है, जिसे विशेष रुप से किस जनजाति के पुरुषों द्वारा किया जाता है?
(1) भील
(2) मीणा
(3) गरासिया
(4) सहरिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. सूची-I में जनजातीय मुखियाओं की उपाधियों को सूची-II में उनकी संबंधित जनजातियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (मुखिया की उपाधि)
A. गमेती
B. कोतवाल
C. पटेल
D. सहलोत
सूची-II: (जनजाति)
i. मीणा
ii. भील
iii. गरासिया
iv. सहरिया
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. गरासिया जनजाति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मुख्य रूप से सिरोही जिले की आबू रोड और पिंडवाड़ा तहसीलों में केंद्रित हैं।
II. वे अपने मृतकों की अस्थियों को नक्की झील में विसर्जित करते हैं।
III. उनकी पारंपरिक सहकारी कृषि संस्था को 'हेलारु' कहा जाता है।
IV. वे मोर को एक पवित्र पक्षी मानते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. निम्नलिखित में से कौन सी बोली राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में जनजातीय समुदायों द्वारा आमतौर पर नहीं बोली जाती है?
(1) वागड़ी
(2) भीली
(3) मालवी
(4) मेवाड़ी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. राजस्थान में जनजातीय संस्कृति के साथ उनके जुड़ाव के आधार पर निम्नलिखित मेलों में से भिन्न को पहचानें:
(1) बेणेश्वर मेला
(2) सीताबड़ी मेला
(3) छेला बावजी मेला
(4) पुष्कर मेला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. भगत आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी शुरुआत गोविंद गिरी ने भीलों के बीच सामाजिक और धार्मिक सुधार लाने के लिए की थी।
II. अनुयायियों को मदिरा और मांस से परहेज करने का निर्देश दिया गया था।
III. जनजातीय समुदायों को एकजुट करने के लिए 1883 में संप सभा की स्थापना की गई थी।
IV. इस आंदोलन से जुड़ा मानगढ़ पहाड़ी हत्याकांड 1913 में हुआ था।
V. आंदोलन ने स्थानीय सामंती शोषण का विरोध किए बिना विशेष रुप से अंग्रेजों को निशाना बनाया।

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 28
राजस्थान की जनजातियाँ

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या के प्रतिशत का सबसे सटीक प्रतिनिधित्व करता है?
   (1) 9.3 प्रतिशत
   (2) 13.5 प्रतिशत
   (3) 16.2 प्रतिशत
   (4) 18.1 प्रतिशत
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

2. सूची-I में राजस्थान की प्रमुख जनजातियों को सूची-II में उनके प्राथमिक भौगोलिक संकेंद्रण के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची-I: (जनजाति)
   A. सहरिया
   B. गरासिया
   C. डामोर
   D. मीणा
   सूची-II: (भौगोलिक संकेंद्रण)
   i. डूंगरपुर
   ii. बारां
   iii. जयपुर और दौसा
   iv. सिरोही और पाली
   (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
   (2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
   (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

3. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान राज्य में अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है?
   (1) भील
   (2) मीणा
   (3) संथाल
   (4) गरासिया
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

4. राजस्थान की मीणा जनजाति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. वे ऐतिहासिक रूप से दो प्राथमिक समूहों में विभाजित हैं जिन्हें चौकीदार मीणा और जमींदार मीणा के रूप में जाना जाता है।
   II. वे अपनी पौराणिक उत्पत्ति भगवान विष्णु के अवतार, 'मत्स्य अवतार' से मानते हैं।
   III. वे मुख्य रूप से दक्षिण के जिलों उदयपुर और बांसवाड़ा में केंद्रित हैं।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

5. प्रसिद्ध बेणेश्वर मेला, जिसे अक्सर आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है, राजस्थान के किस जिले में आयोजित किया जाता है?
   (1) बांसवाड़ा
   (2) प्रतापगढ़
   (3) डूंगरपुर
   (4) उदयपुर
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

6. राजस्थान के जिले निम्नलिखित हैं:
   I. बांसवाड़ा
   II. डूंगरपुर
   III. उदयपुर
   IV. प्रतापगढ़
   2011 की जनगणना के अनुसार, इन जिलों को उनकी कुल जिला जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
   निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम है?
   (1) I, II, IV, III
   (2) I, IV, II, III
   (3) II, I, IV, III
   (4) III, I, II, IV
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

7. पारंपरिक जनजातीय कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: 'चिमाता' पहाड़ी ढालों पर भीलों द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को संदर्भित करता है।
   कथन II: 'दजिया' मैदानी क्षेत्रों में भीलों द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को संदर्भित करता है।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
   (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

39. वागड़ी बोली, जो गुजराती से अत्यधिक प्रभावित है और ऐतिहासिक रूप से भील आबादी से जुड़ी है, मुख्य रूप से किस क्षेत्र में बोली जाती है?
(1) मारवाड़ क्षेत्र
(2) हाड़ौती क्षेत्र
(3) मेवात क्षेत्र
(4) वागड़ क्षेत्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. निम्नलिखित में से कौन भारत में जनजातीय और वन अधिकारों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से विधायी उपायों के अधिनियमन के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी अधिनियम, पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम
(2) वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी अधिनियम
(3) पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी अधिनियम
(4) वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी अधिनियम, पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान के जनजातीय समुदायों के बीच भूमि बेदखली के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कारण के रूप में पहचाना जाता है?
(1) औद्योगिक सेटअप के लिए भूमि का स्वैच्छिक दान
(2) अपनी भूमि छोड़कर शहरी केंद्रों की ओर आदिवासियों का सामूहिक पलायन
(3) स्थानीय साहूकारों की भारी ऋणग्रस्तता जिसके कारण भूमि हस्तांतरण हुआ
(4) कृषि योग्य भूमि को पूरी तरह से नष्ट करने वाली बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. मीणा जनजाति के भीतर पारंपरिक श्रेणियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चौकीदार मीणा ऐतिहासिक रूप से गाँवों और खजानों के रक्षक के रूप में कार्य करते थे।
II. जमींदार मीणा मुख्य रूप से स्थायी कृषि और पशुपालन में लगे हुए थे।
III. चौकीदार मीणा, जमींदार मीणाओं की तुलना में उच्च सामाजिक स्थिति का दावा करते हैं।
IV. दोनों समूहों ने बिना किसी प्रतिरोध के आपराधिक जनजाति अधिनियम द्वारा लगाए गए नियमों का सख्ती से पालन किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में स्थापित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(1) विशेष रूप से वनोपज प्रसंस्करण में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना
(2) राज्य के युवाओं के लिए उन्नत सैन्य और अर्धसैन्य प्रशिक्षण
(3) जनजातीय समुदायों के वरिष्ठ सदस्यों के लिए प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम चलाना
(4) अनुसूचित जनजाति के बच्चों के लिए निःशुल्क आधुनिक शिक्षा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. सूची-I में अनूठी सांस्कृतिक विशेषताओं को सूची-II में उनकी संबंधित जनजातियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (सांस्कृतिक विशेषता)
A. हेलारु संस्था
B. धारी संस्कार
C. छेला बावजी मेला
D. चौकीदार और जमींदार का सख्त विभाजन
सूची-II: (जनजाति)
i. डामोर
ii. सहरिया
iii. गरासिया
iv. मीणा
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में पारंपरिक जनजातीय अर्थव्यवस्था की विशेषता नहीं है?
(1) लघु वनोपज संग्रह पर निर्भरता
(2) जीवन निर्वाह स्तर की कृषि
(3) उच्च पूंजी-प्रधान औद्योगिक विनिर्माण
(4) पारंपरिक पशुपालन और पशुचारण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. पारंपरिक भील वास्तुकला के संदर्भ में, 'कु' शब्द क्या दर्शाता है?
(1) ग्राम देवता को समर्पित एक पवित्र उपवन
(2) सिंचाई के उद्देश्यों के लिए खोदा गया एक छोटा कुआं
(3) अनाज के लिए एक सामुदायिक भंडारण संरचना
(4) मिट्टी, बांस और छप्पर का उपयोग करके बनाया गया एक पारंपरिक घर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II, IV और V
(3) केवल V
(4) केवल III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. किस जनजाति के सदस्यों द्वारा पारंपरिक रूप से मृतकों की अस्थियों को माउंट आबू की नक्की झील में विसर्जित किया जाता है?
(1) सहरिया
(2) गरासिया
(3) डामोर
(4) भील
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. सूची-I में पारंपरिक जनजातीय मेलों/उत्सवों को सूची-II में संबंधित जनजातियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (मेला/उत्सव)
A. भगोरिया उत्सव
B. सीताबड़ी मेला
C. छेला बावजी मेला
D. नक्की झील मेला
सूची-II: (जनजाति)
i. सहरिया
ii. डामोर
iii. गरासिया
iv. भील
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. 'हेलारु' संस्था, जो कृषि और सामाजिक कार्यों में सदस्यों की सहायता के लिए बनाई गई एक सहकारी प्रणाली है, किस जनजाति से संबंधित है?
(1) गरासिया
(2) भील
(3) मीणा
(4) सहरिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मीणा समुदाय ने 20वीं सदी की शुरुआत में अंग्रेजों और रियासतों के खिलाफ निरंतर आंदोलन चलाया।
कारण (R): औपनिवेशिक सरकार ने 1924 में आपराधिक जनजाति अधिनियम लागू किया था, जिसके तहत स्थानीय पुलिस स्टेशनों में मीणा पुरुषों और महिलाओं का दैनिक पंजीकरण अनिवार्य कर दिया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. राजस्थान की डामोर जनजाति पड़ोसी गुजरात की संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित है और मुख्य रूप से किस जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति में केंद्रित है?
(1) प्रतापगढ़
(2) बांसवाड़ा
(3) उदयपुर
(4) डूंगरपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. भील जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में, 'पाल' शब्द किसे संदर्भित करता है?
(1) शिकार के लिए उपयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक हथियार
(2) कटाई के दौरान पूजे जाने वाले स्थानीय देवता
(3) एक बड़ा गाँव या कई छोटी बस्तियों का समूह
(4) विवाह के दौरान दिया जाने वाला कन्या मूल्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. सहरिया जनजाति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मुख्य रूप से बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में पाए जाते हैं।
II. वे महर्षि वाल्मीकि को अपना संरक्षक देवता और आदि पुरुष मानते हैं।
III. ऐतिहासिक रूप से, वे 'हाली' प्रथा नामक बंधुआ मजदूरी के शोषण के शिकार थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. सहरिया जनजाति के मुख्य मेले के रूप में अत्यधिक धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखने वाला सीताबड़ी मेला, भारतीय पौराणिक कथाओं के किस प्रमुख व्यक्तित्व से जुड़ा है?
(1) भगवान राम
(2) भगवान कृष्ण
(3) परशुराम
(4) महर्षि वाल्मीकि
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

24. सूची-I में पारंपरिक जनजातीय शब्दों को सूची-II में उनके सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (जनजातीय शब्द)
A. टोटम (देवरक)
B. दापा
C. डाकण
D. छेड़ा फाड़ना
सूची-II: (अर्थ)
i. कन्या मूल्य
ii. कुल देवता या पवित्र प्रतीक
iii. प्रथागत विवाह विच्छेद
iv. जादू-टोना विश्वास
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. राजस्थान में जनजातीय आंदोलनों से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को प्राचीनतम से नवीनतम के सही कालानुक्रमिक क्रम में निर्धारित कीजिए:
I. गोविंद गिरी द्वारा संप सभा का गठन
II. मीणाओं को प्रभावित करने वाले आपराधिक जनजाति अधिनियम का अधिनियमन
III. मानगढ़ पहाड़ी हत्याकांड
IV. मोतीलाल तेजावत द्वारा एकी आंदोलन की शुरुआत
(1) I, III, IV, II
(2) I, IV, III, II
(3) III, I, IV, II
(4) IV, I, III, II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. राजस्थान में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों के तहत, एम.ए.डी.ए. का पूर्ण रूप क्या है?
(1) संशोधित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण
(2) सीमांत क्षेत्र विकास एजेंसी
(3) सूक्ष्म कृषि विकास संघ
(4) न्यूनतम क्षेत्र विकास प्राधिकरण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. जनजातीय अर्थव्यवस्था की पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: वन धन योजना का उद्देश्य लघु वनोपज के मूल्यवर्धन के माध्यम से जनजातीय आय में सुधार करना है।
कथन II: ट्राइफेड वन धन योजना को लागू करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी के बीच व्यापक भूमि बेदखली और भारी ऋणग्रस्तता का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) जनजातीय क्षेत्रों का तीव्र औद्योगिकीकरण
(2) शारीरिक श्रम के लिए मौसमी पलायन की उच्च दर
(3) पूंजी-प्रधान नकदी फसल खेती की ओर संक्रमण
(4) लघु वनोपज संग्रह का पूर्ण परित्याग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. एकी आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 1921 में मोतीलाल तेजावत द्वारा शुरु किया गया था।
II. आंदोलन की शुरुआत चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया से हुई थी।
III. इसका उद्देश्य भीलों और गरासियाओं को मनमाने करों और बेगार के खिलाफ एकजुट करना था।
IV. तेजावत ने मेवाड़ के महाराणा को "मेवाड़ पुकार" के नाम से जानी जाने वाली 21 मांगों की एक सूची प्रस्तुत की थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. राजस्थान का कौन सा जनजातीय समुदाय सीधे मत्स्य पुराण के संदर्भों के आधार पर अपनी उत्पत्ति का दावा करता है?
(1) भील
(2) सहरिया
(3) डामोर
(4) मीणा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. सूची-I में जनजातीय भाषाओं/बोलियों और भाषाई विशेषताओं को सूची-II में उनकी संबंधित जनजातियों या क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (भाषा/बोली)
A. वागड़ी
B. गुजराती प्रभाव
C. हाड़ौती प्रभाव
D. ढूंढाड़ी प्रभाव
सूची-II: (जनजाति/क्षेत्र)
i. डामोर जनजाति
ii. सहरिया जनजाति
iii. पूर्वी राजस्थान में मीणा जनजाति
iv. डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii

NODIA

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान के कई अन्य जनजातीय समुदायों के विपरीत, डामोर जनजाति अपनी प्राथमिक आजीविका के लिए पारंपरिक रूप से वनों पर निर्भर नहीं है।
कारण (R): डामोर जनजाति मुख्य रूप से स्थायी कृषि और पशुपालन पर निर्भर करती है, और उनके संकेंद्रण के मुख्य क्षेत्र में वन क्षेत्र अपेक्षाकृत विरल हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. राजस्थान में अनुसूचित क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय संविधान की पांचवीं अनुसूची अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित है।
II. राज्यपाल के पास इन क्षेत्रों की शांति और सुशासन के लिए नियम बनाने की शक्ति है।
III. बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले पूरी तरह से जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
IV. राजस्थान जनजाति सलाहकार परिषद में 20 से अधिक सदस्य नहीं होने चाहिए।
V. जनजाति सलाहकार परिषद के तीन-चौथाई सदस्य राज्य विधानसभा में अनुसूचित जनजातियों के प्रतिनिधि होने चाहिए।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. पारंपरिक भील समाज में, 'दापा' शब्द का क्या अर्थ है?
(1) वधू के पिता को कन्या मूल्य देने की प्रथा
(2) वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला अनुष्ठान
(3) गाँव के मुखिया द्वारा पहनी जाने वाली पारंपरिक पगड़ी
(4) गाँव के बुजुर्गों के माध्यम से विवादों को सुलझाने का कार्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन सा जिला अधिसूचित जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(1) बांसवाड़ा
(2) डूंगरपुर
(3) जयपुर
(4) प्रतापगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. सूची-I में जनजातीय कल्याण योजनाओं/संस्थानों को सूची-II में उनके प्राथमिक उद्देश्यों/लक्षित समूहों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I: (योजना/संस्थान)
A. एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय
B. वन धन योजना
C. एम.ए.डी.ए.
D. ट्राइफेड
सूची-II: (उद्देश्य/लक्षित समूह)
i. उप-योजना क्षेत्र के बाहर जनजातीय संकेंद्रण वाले क्षेत्र
ii. अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
iii. लघु वनोपज का विपणन
iv. वनोपज का मूल्यवर्धन और ब्रांडिंग
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. राजस्थान में जनजातीय अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित एक प्रमुख संस्थान, माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान किस शहर में स्थित है?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) बांसवाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. निम्नलिखित वन उत्पादों पर विचार कीजिए:
I. महुआ के फूल
II. तेन्दू के पत्ते
III. सागवान की लकड़ी
उपरोक्त में से कौन से दक्षिणी राजस्थान में आदिवासियों द्वारा जीविका और आय के लिए एकत्र किए जाने वाले प्राथमिक गैर-इमारती वन उत्पाद हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Downloaded from www.pdf.tube

55. सूची-I में प्रमुख नेताओं/सुधारकों को सूची-II में उनके प्राथमिक योगदान या संबंधित आंदोलन के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची-I: (नेता/सुधारक)

A. गोविंद गिरी
B. मोतीलाल तेजावत
C. मुनि मगन सागर
D. ठक्कर बापा

सूची-II: (योगदान/आंदोलन)

i. मीणा पुराण की रचना की और मीणा सुधारों का नेतृत्व किया
ii. एकी आंदोलन
iii. भगत आंदोलन और संप सभा
iv. आधुनिक जनजातीय कल्याण के अग्रदूत और 'आदिवासी' शब्द गढ़ा

(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. जनजातीय क्षेत्रों में लागू वन धन योजना का उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?

(1) वन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मशीनीकृत खनन को बढ़ावा देना
(2) लघु वनोपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना
(3) जनजातीय संग्राहकों के लिए कौशल उन्नयन और क्षमता निर्माण प्रदान करना
(4) प्राथमिक प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन केंद्र स्थापित करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. निम्नलिखित में से कौन बारां के सहरिया जनजाति द्वारा ऐतिहासिक रूप से सामना की गई सबसे गंभीर स्वास्थ्य और आजीविका चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके कारण विशिष्ट सरकारी पोषण संबंधी हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ी?

(1) मधुमेह जैसे रोगों का उच्च प्रसार
(2) औद्योगिक प्रदूषण के कारण श्वसन संबंधी बीमारियाँ
(3) गंभीर कुपोषण और भुखमरी से होने वाली मृत्यु
(4) सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में व्यावसायिक खतरों की उच्च घटना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. डामोर जनजाति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. माना जाता है कि वे गुजरात के पड़ोसी क्षेत्रों से पलायन करके आए हैं।
II. कई अन्य जनजातियों के विपरीत, वे वन संसाधनों के बजाय कृषि पर अधिक निर्भर हैं।
III. उनके प्रथागत कानूनों में बहुविवाह सख्त वर्जित है।
IV. उनकी बोली पर गुजराती का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

59. पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, 1996 जनजातीय सशक्तिकरण के लिए एक ऐतिहासिक कानून है। इस अधिनियम के तहत ग्राम सभा को दी गई प्रमुख शक्ति निम्नलिखित में से कौन सी है?

(1) मुख्य खनिजों पर राज्य के कानूनों को निषेधाधिकार देने की शक्ति
(2) अनुसूचित क्षेत्रों में पुलिस कर्मियों की भर्ती करने का अधिकार
(3) जनजातीय क्षेत्रों में निगम कर एकत्र करने का अधिकार
(4) लघु वनोपज का स्वामित्व
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. 'कछाबू' नामक पारंपरिक पहनावा, जो घुटनों तक का घाघरा होता है, आमतौर पर किस जनजाति की महिलाओं द्वारा पहना जाता है?

(1) सहरिया
(2) भील
(3) गरासिया
(4) डामोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. कृषि कार्यों या आवास निर्माण में व्यक्तियों की सहायता के लिए सामूहिक सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने वाली 'हलमा' या 'हीडा' परंपरा किस जनजातीय समुदाय की विरासत है?

(1) सहरिया
(2) मीणा
(3) भील
(4) डामोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान में जनजातियों के भौगोलिक संकेंद्रण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राज्य की जनजातीय आबादी का दो-तिहाई से अधिक हिस्सा दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी जिलों में केंद्रित है।
II. उदयपुर जिले में राज्य में अनुसूचित जनजातियों की सर्वाधिक पूर्ण संख्या है।
III. नागौर और बीकानेर जिलों में राज्य में जनजातीय आबादी का अनुपात सबसे कम है।
IV. प्रतापगढ़ पूरी तरह से जनजातीय उप-योजना क्षेत्र में शामिल है।
V. सहरिया जनजाति लगभग विशेष रूप से पश्चिमी रेगिस्तानी जिलों में केंद्रित है।

47. राजस्थान में जनजातियों द्वारा सामना की गई ऐतिहासिक चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सामंती स्वामियों और साहूकारों द्वारा व्यापक शोषण के कारण कई जनजातीय विद्रोह हुए।
II. औपनिवेशिक वन कानूनों ने वन संसाधनों तक पारंपरिक जनजातीय पहुंच को गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया।
III. जनजातीय किसानों पर 'बेगार' की प्रथा व्यापक रूप से थोपी गई थी।
IV. 19वीं शताब्दी के भील विद्रोहों को सैन्य हस्तक्षेप की आवश्यकता के बिना आसानी से दबा दिया गया था।
V. निरक्षरता के उच्च स्तर ने धोखाधड़ीपूर्ण भूमि हस्तांतरण के प्रति जनजातियों की संवेदनशीलता को बढ़ा दिया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. भौगोलिक क्षेत्र जिसे ऐतिहासिक रूप से 'खेरा' या 'खेराड़' के रूप में जाना जाता है, जिसमें भीलवाड़ा के जहाजपुर के हिस्से और आसपास के क्षेत्र शामिल हैं, सांस्कृतिक रूप से किन दो समुदायों की मिश्रित आबादी से जुड़ा है?
(1) भील और गरासिया
(2) मीणा और भील
(3) सहरिया और डामोर
(4) गरासिया और सहरिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान की सभी अनुसूचित जनजातियों में, मीणा जनजाति की साक्षरता दर सबसे अधिक है और सरकारी सेवाओं में सबसे बड़ा प्रतिनिधित्व है।
कारण (R): मीणा जनजाति को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों की सूची में शामिल किया गया था, जिससे उन्हें शिक्षा और रोजगार में विशेष आरक्षण लाभ मिला।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. किस पेड़ के फूलों का उपयोग दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय समुदायों द्वारा पारंपरिक मदिरा तैयार करने के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है और कमी के दौरान भोजन के पूरक के रूप में भी सेवन किया जाता है?
(1) महुआ
(2) तेन्दू
(3) खेजड़ी
(4) साल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. राजस्थान के प्रमुख जनजातीय समूहों के बीच साक्षरता दर के संबंध में 2011 के जनगणना आंकड़ों के आधार पर, उच्चतम साक्षरता से निम्नतम साक्षरता तक के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) मीणा, भील, गरासिया, सहरिया
(2) भील, मीणा, सहरिया, गरासिया
(3) मीणा, गरासिया, भील, सहरिया
(4) सहरिया, गरासिया, भील, मीणा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. आपराधिक जनजाति अधिनियम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: आपराधिक जनजाति अधिनियम अंग्रेजों द्वारा मीणाओं सहित पूरे समुदायों को आदतन अपराधियों के रूप में वर्गीकृत करने के लिए अधिनियमित किया गया था।
कथन II: इस अधिनियम के खिलाफ आंदोलन का समापन 1947 में भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद इसके पूर्ण निरसन में हुआ।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. गरासिया जनजाति द्वारा प्रचलित विवाह के निम्नलिखित पारंपरिक रूपों पर विचार कीजिए:
I. मोर बंधिया (पूर्ण रीति-रिवाजों के साथ उचित विवाह)
II. पहरावणा (नाममात्र के अनुष्ठानों के साथ विवाह)
III. ताणना (बिना औपचारिक अनुष्ठानों के कन्या मूल्य देकर विवाह)
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. 'धारी संस्कार' का अनुष्ठान, जिसमें पदचिह्नों की व्याख्या करने और मृतक व्यक्ति के पुनर्जन्म के रूप की भविष्यवाणी करने के लिए आंगन में राख फैलाई जाती है, मुख्य रूप से किस जनजाति में देखा जाता है?
(1) मीणा
(2) सहरिया
(3) भील
(4) डामोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

Click Here to Buy book on Amazon

बढ़ती शहरी आबादी के कारण भूजल का अत्यधिक दोहन हो रहा है। इन शहरों का भविष्य बीसलपुर और इंदिरा गांधी नहर जैसी लंबी दूरी की परियोजनाओं पर निर्भर है। जल सुरक्षा सुनिश्चित किए बिना नगरीय विकास संभव नहीं है।

74. (2) मास्टर प्लान, जोनल डेवलपमेंट प्लान, लोकल AREA प्लान
नगरीय नियोजन में नियोजन उपकरणों का एक निश्चित पदानुक्रम होता है। मास्टर प्लान सबसे व्यापक दस्तावेज है जो दीर्घकालिक विकास की रूपरेखा और भूमि उपयोग निर्धारित करता है। इसके बाद जोनल डेवलपमेंट प्लान आता है जो विशिष्ट क्षेत्रों हेतु विस्तृत योजना प्रदान करता है। सबसे सूक्ष्म स्तर पर लोकल एरिया प्लान होता है जो मोहल्लों के स्तर पर आधारभूत संरचना के नियोजन पर केंद्रित होता है। यह व्यवस्थित शहरी विकास को सुनिश्चित करता है।

75. (4) अर्बन हीट आइलैंड प्रभाव (URBAN HEAT ISLAND EFFECT)
जयपुर जैसे बड़े शहरों में कंक्रीट की सघनता के कारण दिन में उष्मा का अवशोषण अधिक होता है। रात में ये सतहें धीरे-धीरे उष्मा छोड़ती हैं, जिससे शहर का तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक बना रहता है। इस परिघटना को 'नगरीय उष्मा द्वीप प्रभाव' कहा जाता है। हरित आवरण की कमी और वाहनों की गर्मी इस समस्या को बढ़ाती है, जिससे नगरीय सूक्ष्म जलवायु और जनजीवन प्रभावित होता है।

76. (2) राजस्थान के सभी शहरों ने पाइप वाले भूमिगत सीवरेज नेटवर्क का 100 प्रतिशत कवरेज सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया है।
राजस्थान में नगरीकरण के साथ कई गंभीर चुनौतियां जुड़ी हैं। जयपुर जैसे शहरों में यातायात जाम और सार्वजनिक परिवहन की कमी बड़े मुद्दे हैं। कचरा पृथक्करण न होने से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन भी एक समस्या है। हालांकि, यह कहना गलत है कि सभी शहरों में 100 प्रतिशत सीवरेज नेटवर्क का कवरेज प्राप्त कर लिया गया है। वास्तव में, कई क्षेत्रों में आज भी पाइप वाली सीवरेज प्रणाली का अभाव है और सेप्टिक टैंकों का उपयोग होता है।

77. (3) जैव-निम्नीकरणीय (गीला), सूखा (पुनर्चक्रण योग्य), और घरेलू खतरनाक (डायपर, नैपकिन) कचरा।
ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुसार, कचरे को तीन श्रेणियों में अलग करना अनिवार्य है। गीला कचरा जैव-निम्नीकरणीय होता है जिसमें भोजन के अवशेष होते हैं। सूखा कचरा जैसे प्लास्टिक और कागज को पुनर्चक्रण हेतु अलग किया जाता है। तीसरी श्रेणी घरेलू खतरनाक कचरे की है, जिसमें सेनेटरी पैड और दवाइयां शामिल हैं। यह पृथक्करण कचरे के वैज्ञानिक निपटान में मदद करता है और पर्यावरण प्रदूषण को कम कर शहर को स्वच्छ बनाता है।

78. (4) राजस्थान शहरी आधारभूत संरचना विकास परियोजना (RUIDP)
राजस्थान के शहरों में आधारभूत संरचना में सुधार हेतु राजस्थान शहरी आधारभूत संरचना विकास परियोजना (आरयूआईडीपी) की स्थापना की गई थी। यह मुख्य रूप से एशियाई विकास बैंक के सहयोग से संचालित है। इसका मुख्य ध्यान पेयजल आपूर्ति, सीवरेज नेटवर्क और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर है। इस परियोजना ने राज्य के दर्जनों शहरों के नगरीय ढांचे को आधुनिक बनाने और नागरिक सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

79. (1) शहर के बाहरी क्षेत्रों में नगरीय झुग्गीवासियों को निःशुल्क कृषि भूमि प्रदान करना।
अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) का मुख्य उद्देश्य शहरों में बुनियादी सुविधाएं जैसे नल से जल आपूर्ति और सीवरेज कनेक्शन सुनिश्चित करना है। यह मिशन पार्कों के विकास और हरियाली के माध्यम से शहरों की सुंदरता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि, झुग्गीवासियों को मुफ्त कृषि भूमि प्रदान करना इसका उद्देश्य नहीं है। यह पूरी तरह से नगरीय आधारभूत संरचना के सुधार और सेवाओं की दक्षता बढ़ाने वाली योजना है।

80. (2) ट्रांजिट-ओरिएंटेड डेवलपमेंट (TRANSIT-ORIENTED DEVELOPMENT)
टीओडी (TOD) का अर्थ 'परिवहन-उन्मुख विकास' है, जो नगरीय नियोजन की एक आधुनिक रणनीति है। इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक परिवहन स्टेशनों के आसपास सघन, मिश्रित उपयोग वाले आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्रों को विकसित करना है। इससे लोग सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करते हैं, जिससे यातायात संकुलन कम होता है। जयपुर जैसे महानगरों में मेट्रो कॉरिडोर के आसपास इस अवधारणा को लागू करने से सतत शहरी विकास और सुगम जीवन संभव होता है।

NODIA
www.nodia.in

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. निम्नलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक आंदोलन राजस्थान के जनजातीय समुदायों से संबंधित नहीं है?
(1) संथाल विद्रोह
(2) भगत आंदोलन
(3) एकी आंदोलन
(4) मीणा आंदोलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में वन संरक्षण कानूनों के सख्त प्रवर्तन और स्थानांतरित कृषि पर प्रतिबंध का प्राथमिक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव क्या रहा है?
(1) जनजातीय ग्रामीण समूहों में गरीबी का पूर्ण उन्मूलन
(2) स्थायी कृषि और दिहाड़ी मजदूरी की ओर संक्रमण
(3) दूरदराज के क्षेत्रों में शिकारी-संग्राहक जीवनशैली की तत्काल वापसी
(4) उच्च-तकनीकी सॉफ्टवेयर उद्योगों में प्रमुख करियर बदलाव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. निम्नलिखित पारंपरिक नृत्यों में से भिन्न को पहचानें, जिसे आमतौर पर भील जनजातीय नृत्य के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है:
(1) गवरी
(2) कथक
(3) गैर
(4) द्विचकरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. गोविंद गिरी द्वारा संप सभा की स्थापना के पीछे मुख्य वैचारिक उद्देश्य क्या था?
(1) भीलों के लिए सामाजिक-धार्मिक सुधार और आंतरिक एकता
(2) मेवाड़ के महाराणा के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का आयोजन करना
(3) जनजातीय समुदायों के लिए एक अलग संप्रभु राज्य की स्थापना करना
(4) ब्रिटिश भारतीय सेना में जनजातीय भर्ती के लिए बातचीत करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. प्रसिद्ध 'चैत्र-विचित्र' मेला सिरोही जिले में किस जनजाति द्वारा आयोजित एक प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम है?
(1) सहरिया
(2) मीणा
(3) गरासिया
(4) डामोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

68. राजस्थान में जनजातीय शोषण के संदर्भ में, 'हाली प्रथा' ऐतिहासिक रूप से निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करती थी?
(1) कृषि उपयोग के लिए समुदाय-संचालित वर्षा जल संचयन
(2) सहकारी संस्थाओं के माध्यम से कृषि उपकरणों को साझा करना
(3) गाँव के संघर्षों को सुलझाने के लिए पारंपरिक न्यायिक तरीके
(4) वंशानुगत ऋण चुकाने के लिए बंधुआ मजदूरी प्रणाली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. बारां जिले की कौन सी दो तहसीलें राजस्थान में सहरिया जनजाति की लगभग पूरी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं?
(1) अंता और मांगरोल
(2) अटरु और छबड़ा
(3) शाहबाद और किशनगंज
(4) बारां और छबड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. जनजातीय स्वास्थ्य मुद्दों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सिकल सेल एनीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है जो दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी को असमान रूप से प्रभावित करता है।
कथन II: भारत सरकार ने इन विशिष्ट जनजातीय क्षेत्रों को लक्षित करते हुए एक राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन शुरू किया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान के किस जिले में पूर्ण संख्या के मामले में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या है?
(1) बांसवाड़ा
(2) उदयपुर
(3) डूंगरपुर
(4) प्रतापगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. जनजातीय देवताओं और संबंधित जनजातियों के निम्नलिखित मिलान में से गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) वाल्मीकि — सहरिया

रक्षाबंधन के अगले दिन से शुरु होकर 40 दिनों तक चलता है। यह मुख्य रूप से भगवान शिव और भस्मासुर की पौराणिक कथा पर आधारित है, जिसमें धार्मिक श्रद्धा का अद्भुत संगम होता है। प्रदर्शन के दौरान कलाकार पारंपरिक वेशभूषा धारण करते हैं। यह भील संस्कृति की समृद्ध कलात्मक विरासत का अभिन्न हिस्सा है।

11. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान की विभिन्न जनजातियों में सामाजिक व्यवस्था के लिए मुखियाओं के विशिष्ट पदनाम होते हैं। भील जनजाति के मुखिया को गमेती कहा जाता है, जबकि सहरिया समुदाय में मुखिया को कोतवाल की उपाधि दी जाती है। मीणा जनजाति के सामाजिक प्रमुख को पटेल के नाम से जाना जाता है और गरासिया जनजाति के मुखिया को सहलोत कहा जाता है। ये मुखिया पारंपरिक न्याय व्यवस्था और सामुदायिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे अनुशासन बना रहता है।

12. (4) I, II, III और IV
गरासिया जनजाति मुख्य रूप से सिरोही जिले के आबू रोड और पिंडवाड़ा क्षेत्रों में केंद्रित है। इनकी संस्कृति में मोर को अत्यंत पवित्र माना जाता है। इस समुदाय में मृतकों की अस्थियों को नक्की झील में विसर्जित करने की अनूठी परंपरा है। सामाजिक सहयोग के लिए 'हेलारु' नामक संस्था कार्यरत है, जो सामूहिक कृषि और अन्य कार्यों में मदद करती है। इनकी जीवनशैली प्राचीन मान्यताओं और सहकारिता के सिद्धांतों पर आधारित है।

13. (3) मालवी
राजस्थान के दक्षिणी जनजातीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से वागड़ी, भीली और मेवाड़ी बोलियां प्रचलित हैं। वागड़ी बोली डूंगरपुर और बांसवाड़ा में भील समुदाय द्वारा बोली जाती है, जिस पर गुजराती का प्रभाव स्पष्ट है। मेवाड़ी का प्रभाव उदयपुर और आसपास के पहाड़ी क्षेत्रों में मिलता है। इसके विपरीत, मालवी बोली मुख्य रूप से मध्य प्रदेश की सीमा से सटे झालावाड़ और प्रतापगढ़ के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। यह जनजातियों की मुख्य संपर्क भाषा नहीं है।

14. (4) पुष्कर मेला
बेणेश्वर मेला, सीताबड़ी मेला और छेला बावजी मेला सीधे तौर पर राजस्थान के विभिन्न जनजातीय समुदायों की संस्कृति और परंपराओं से जुड़े हुए हैं। बेणेश्वर भीलों का, सीताबड़ी सहरियाओं का और छेला बावजी डामोर जनजाति का प्रमुख धार्मिक उत्सव है। इसके विपरीत, पुष्कर मेला अजमेर में आयोजित होने वाला एक व्यापक धार्मिक और पशु मेला है, जो किसी विशिष्ट जनजाति तक सीमित नहीं है। इसका महत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक आस्था के लिए है।

15. (3) केवल V
भगत आंदोलन गोविंद गिरी द्वारा भील समुदाय में सामाजिक बुराइयों को दूर करने और स्वाभिमान जगाने के लिए शुरु किया गया था। इस आंदोलन ने शराब और मांस के त्याग पर जोर दिया और 1883 में संप सभा के माध्यम से लोगों को संगठित किया। 1913 का मानगढ़ हत्याकांड इसी आंदोलन का हिस्सा है। इस आंदोलन ने केवल अंग्रेजों को नहीं, बल्कि स्थानीय सामंती शोषण और साहूकारों के अत्याचारों के विरुद्ध भी कड़ा प्रतिरोध व्यक्त किया था।

16. (2) गरासिया
राजस्थान की गरासिया जनजाति में पूर्वजों के प्रति सम्मान और धार्मिक आस्था की विशिष्ट परंपरा है। इस समुदाय के लोग अपने परिवार के सदस्यों की मृत्यु के पश्चात उनकी अस्थियों को माउंट आबू स्थित नक्की झील में विसर्जित करना अत्यंत शुभ और पवित्र मानते हैं। वे नक्की झील को अपने आध्यात्मिक केंद्र के रूप में देखते हैं। यह प्रथा उनके धार्मिक विश्वासों और इस भौगोलिक स्थल के साथ उनके गहरे सांस्कृतिक जुड़ाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

17. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के जनजातीय मेलों का अपना विशेष महत्व है। भगोरिया उत्सव मुख्य रूप से भील जनजाति से संबंधित है, जबकि सीताबड़ी मेला सहरिया समुदाय का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। छेला बावजी मेले का आयोजन डामोर जनजाति द्वारा किया जाता है और नक्की झील का मेला गरासिया समुदाय की सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र है। ये मेले धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक मिलन, व्यापार और जीवनसाथी के चुनाव के महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान करते हैं।

18. (1) गरासिया
हेलारु एक पारंपरिक सहकारी संस्था है जो मुख्य रूप से राजस्थान की गरासिया जनजाति के बीच प्रचलित है। इस संस्था का प्राथमिक उद्देश्य समुदाय के सदस्यों के बीच सामाजिक और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है। कृषि कार्यों, घर बनाने या किसी भी सामूहिक गतिविधि के समय हेलारु के माध्यम से सदस्य एक-दूसरे की निःस्वार्थ सहायता करते हैं। यह प्रणाली जनजातीय समाज में सामूहिक एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का कार्य करती है।

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मीणा समुदाय ने 20वीं शताब्दी के आरंभ में दमनकारी नीतियों के विरुद्ध तीव्र आंदोलन किया था। इसका प्रमुख कारण 1924 का आपराधिक जनजाति अधिनियम था, जिसे औपनिवेशिक सरकार ने लागू किया था। इस कानून के तहत मीणा पुरुषों और महिलाओं के लिए स्थानीय थानों में नियमित उपस्थिति दर्ज कराना अनिवार्य था। इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था ने समुदाय को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। अंततः स्वतंत्रता के पश्चात इन काले कानूनों को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया।

20. (4) डूंगरपुर
डामोर जनजाति मुख्य रूप से राजस्थान के डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति में निवास करती है। गुजरात की सीमा के निकट होने के कारण इनकी भाषा, पहनावे और रीति-रिवाजों पर गुजराती संस्कृति का गहरा प्रभाव है। यह समुदाय अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन पर निर्भर रहता है। इनके गांवों को 'फला' कहा जाता है। डामोर

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 13.5 प्रतिशत
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का हिस्सा 13.5 प्रतिशत है। राज्य में मीणा और भील समुदाय सबसे बड़े जनजातीय समूह हैं। जनजातीय जनसंख्या का अधिकांश भाग दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों में केंद्रित है। यह आंकड़ा राज्य की सामाजिक और जनसांख्यिकीय संरचना को समझने तथा विकास योजनाओं के निर्धारण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार बनता है।

2. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान की विभिन्न जनजातियां विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करती हैं। सहरिया जनजाति मुख्य रूप से बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में पाई जाती है। गरासिया समुदाय सिरोही और पाली के पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित है। डामोर जनजाति डूंगरपुर जिले के सीमलवाड़ा क्षेत्र में रहती है, जबकि मीणा जनजाति का सर्वाधिक संकेंद्रण जयपुर और दौसा जिलों में है। यह क्षेत्रीय वितरण उनकी सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करता है।

3. (3) संथाल
भील, मीणा और गरासिया राजस्थान की प्रमुख अधिसूचित अनुसूचित जनजातियां हैं, जो राज्य की सांस्कृतिक विविधता में योगदान देती हैं। संथाल जनजाति मुख्य रूप से झारखंड और पश्चिम बंगाल जैसे पूर्वी राज्यों में निवास करती है। राजस्थान की आधिकारिक जनजातीय सूची में संथाल समुदाय शामिल नहीं है। सरकारी कल्याणकारी योजनाएं केवल उन्हीं समूहों पर केंद्रित होती हैं जो राज्य में आधिकारिक तौर पर अधिसूचित और संवैधानिक रूप से मान्य हैं।

4. (1) केवल I और II
मीणा जनजाति राजस्थान की सबसे बड़ी और शिक्षित जनजाति मानी जाती है। ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय दो मुख्य समूहों, चौकीदार और जमींदार मीणा में विभाजित रहा है। वे अपनी उत्पत्ति भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार से मानते हैं। हालांकि यह जनजाति पूरे राज्य में फैली है, लेकिन इनका मुख्य संकेंद्रण जयपुर, दौसा और सवाई माधोपुर जैसे पूर्वी जिलों में है। इनकी सांस्कृतिक जड़ें प्राचीन परंपराओं और मत्स्य पुराण से जुड़ी हैं।

5. (3) डूंगरपुर
बेणेश्वर मेला राजस्थान के डूंगरपुर जिले में सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर आयोजित होता है। इसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है, जहाँ मुख्य रूप से भील समुदाय के लोग बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। यह मेला माघ पूर्णिमा के अवसर पर लगता है और धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक मिलन का प्रमुख केंद्र है। यहाँ भगवान शिव की खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है।

6. (1) I, II, IV, III
2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर राजस्थान के दक्षिणी जिलों में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत काफी अधिक है। सर्वाधिक प्रतिशत वाले जिलों का सही अवरोही क्रम बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ और फिर उदयपुर है। बांसवाड़ा में जनजातीय आबादी का अनुपात सबसे अधिक है। इन क्षेत्रों में जनजातीय उप-योजना के माध्यम से विशेष विकास कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं ताकि शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया जा सके।

7. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भील जनजाति द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि के दो विशिष्ट रूप प्रचलित हैं। पहाड़ी ढालों पर वनों को जलाकर की जाने वाली खेती को चिमाता कहा जाता है। इसके विपरीत, मैदानी क्षेत्रों में वनों को साफ करके की जाने वाली कृषि को दजिया के नाम से जाना जाता है। ये पारंपरिक तरीके पारिस्थितिक तंत्र और जनजातीय जीवनशैली के बीच गहरे संबंध को दर्शाते हैं। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण हेतु इसे हतोत्साहित किया जाता है।

NODIA

8. (3) क्षेत्र में न्यूनतम 50 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति जनसंख्या होनी चाहिए।
जनजातीय उप-योजना के अंतर्गत किसी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने का मुख्य आधार वहां की जनजातीय जनसंख्या का अनुपात होता है। निर्धारित मानदंडों के अनुसार, उस विशिष्ट प्रशासनिक इकाई में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या कम से कम 50 प्रतिशत होनी चाहिए। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि संसाधनों का आवंटन और विकास नीतियों का क्रियान्वयन जनजातीय समुदायों की जरूरतों के अनुरूप हो सके। इसके लिए संवैधानिक रूप से विशेष प्रावधान हैं।

9. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सहरिया राजस्थान की एकमात्र जनजाति है जिसे भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह की श्रेणी में रखा गया है। इसके मुख्य कारण उनकी कृषि-पूर्व स्तर की तकनीक, अत्यंत निम्न साक्षरता दर और स्थिर या घटती जनसंख्या है। यह समुदाय बारां जिले में निवास करता है और सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़ा है। इनकी विशिष्ट स्थिति को देखते हुए सरकार द्वारा पोषण, शिक्षा और आवास के लिए विशेष योजनाएं संचालित हैं।

10. (1) भील
गवरी एक प्रसिद्ध लोक नृत्य-नाटिका है जो विशेष रूप से भील जनजाति के पुरुषों द्वारा प्रदर्शित की जाती है। यह उत्सव

70. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सिकल सेल एनीमिया एक गंभीर आनुवंशिक रक्त विकार है जो लाल रक्त कोशिकाओं के आकार को प्रभावित करता है। यह रोग दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी में अधिक पाया जाता है। इस स्वास्थ्य संकट को देखते हुए, भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन शुरू किया है, जिसका लक्ष्य जनजातीय क्षेत्रों में व्यापक जांच और उपचार सुविधाएं प्रदान करना है। 2047 तक इस बीमारी को पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, जो स्वास्थ्य सुधार की दिशा में बड़ा कदम है।

71. (2) उदयपुर
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या उदयपुर जिले में निवास करती है। हालांकि बांसवाड़ा और डूंगरपुर जैसे जिलों में जनजातीय आबादी का प्रतिशत अधिक हो सकता है, लेकिन कुल संख्या के मामले में उदयपुर शीर्ष पर है। यह जिला भील और मीणा जैसे समुदायों का ऐतिहासिक निवास स्थान रहा है। यहाँ की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना पर जनजातीय परंपराओं का गहरा प्रभाव है, जो इस क्षेत्र को राज्य के अन्य हिस्सों से विशिष्ट बनाता है।

72. (4) कालका माता — गरासिया
राजस्थान के जनजातीय समुदायों में अपने संरक्षक देवताओं के प्रति गहरी आस्था है। सहरिया जनजाति महर्षि वाल्मीकि को अपना आदि पुरुष मानती है। मीणा समुदाय भूरिया बाबा की शपथ को सर्वोपरि मानता है। डामोर जनजाति भंवर माता की पूजा करती है। यद्यपि कालका माता की पूजा कई समुदायों में होती है, लेकिन वे गरासिया जनजाति के मुख्य संरक्षक देवता के रूप में नहीं जानी जातीं। गरासिया लोग मुख्य रूप से भगवान शिव और अंबा माता के प्रति श्रद्धा रखते हैं। यह जुड़ाव उनकी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूती देता है।

73. (3) सोम, माही और जाखम
बेणेश्वर मेला डूंगरपुर जिले के नवाटापुरा नामक स्थान पर आयोजित होता है, जो तीन पवित्र नदियों सोम, माही और जाखम के त्रिवेणी संगम पर स्थित है। इस संगम स्थल को आदिवासियों का सबसे पवित्र तीर्थ माना जाता है। यहाँ माघ पूर्णिमा को लगने वाले मेले में हजारों श्रद्धालु उमड़ते हैं और पवित्र स्नान करते हैं। यह स्थान भील और अन्य जनजातीय समुदायों की एकता और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक है। यहाँ की पूजा और अनुष्ठान इस क्षेत्र की विशिष्ट आध्यात्मिक परंपरा को दर्शाते हैं।

74. (1) उप-योजना क्षेत्रों में साक्षरता राज्य के औसत से कम है
राजस्थान में शैक्षिक प्रगति के बावजूद, जनजातीय उप-योजना क्षेत्रों और राज्य के सामान्य औसत के बीच साक्षरता की एक स्पष्ट खाई मौजूद है। अनुसूचित क्षेत्रों में साक्षरता दर राज्य के औसत से काफी कम है, जो चुनौतीपूर्ण भौगोलिक स्थिति और गरीबी को दर्शाता है। विशेष रूप से महिला साक्षरता के स्तर पर यह अंतर और भी गहरा है। सरकार निरंतर 'सर्व शिक्षा अभियान' और छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से इस असमानता को पाटने का प्रयास कर रही है ताकि जनजातीय युवाओं को समान अवसर मिल सकें।

75. (4) कोतवाल
सहरिया जनजाति की सामाजिक व्यवस्था में मुखिया का पद अत्यंत सम्मानजनक होता है। सहरिया गांव के इस मुखिया को 'कोतवाल' कहा जाता है। कोतवाल गांव के सामाजिक विवादों को सुलझाने, धार्मिक उत्सवों का आयोजन करने और सामुदायिक निर्णयों को लागू करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। यह पद पारंपरिक न्याय प्रणाली का आधार है, जो समाज में अनुशासन बनाए रखता है। अन्य जनजातियों में मुखिया को अलग नामों से जाना जाता है, जैसे भीलों में गमेती और मीणाओं में पटेल, जो उनकी विशिष्ट पहचान है।

76. (2) भारतीय-आर्य
भाषाई दृष्टिकोण से, दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भीली और वागड़ी बोलियां भारतीय-आर्य भाषा परिवार का हिस्सा हैं। यद्यपि इन क्षेत्रों में आदिवासियों का निवास प्राचीन है, लेकिन उनकी वर्तमान बोलियों पर संस्कृत, प्राकृत और बाद में गुजराती व राजस्थानी का प्रभाव पड़ा है। मुख्य रूप से इनका व्याकरण और शब्दकोश भारतीय-आर्य समूह के निकट है। यह भाषाई विशेषता सदियों से चली आ रही सांस्कृतिक अंतःक्रिया और विभिन्न समुदायों के बीच भाषाई आदान-प्रदान का परिणाम है।

77. (3) लघु वनोपज संग्रह के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करना
भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राइफेड) का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना है। इसका प्राथमिक कार्य यह सुनिश्चित करना है कि आदिवासियों को उनके द्वारा एकत्रित लघु वनोपज का उचित और लाभकारी मूल्य मिले। यह संस्था बिचौलियों के शोषण को कम करने के लिए सीधे विपणन और प्रसंस्करण में सहायता प्रदान करती है। इसके माध्यम से जनजातीय उत्पादों को राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाया जाता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है और वे आत्मनिर्भर बनते हैं।

78. (4) इसकी शुरुआत 1921 में चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया से मोतीलाल तेजावत द्वारा की गई थी।
एकी आंदोलन राजस्थान के जनजातीय आंदोलनों में महत्वपूर्ण है। इसकी शुरुआत 1921 में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ जिले के मातृकुण्डिया से हुई थी। इसे 'राजस्थान का हरिद्वार' भी कहा जाता है। इस आंदोलन का मुख्य स्वर सामंती अत्याचारों, भारी लगान और बेगार प्रथा के विरुद्ध था। तेजावत ने भीलों और गरासियाओं को एक सूत्र में पिरोकर उनमें अधिकारों के प्रति चेतना जाग्रत की। यह आंदोलन आदिवासियों को सामाजिक रूप से संगठित होने और आवाज उठाने का आत्मविश्वास प्रदान करने वाला था।

79. (1) भगत आंदोलन
सुरजी भगत राजस्थान के जनजातीय सुधारों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व रहे हैं। वे गोविंद गिरी के प्रमुख सहयोगी थे और उन्होंने 'भगत आंदोलन' को विस्तार देने में

Click Here to Buy book on Amazon

जनजाति की सांस्कृतिक पहचान अन्य राजस्थानी जनजातियों से भिन्न है, जो राज्य की विविधता को प्रदर्शित करती है।

21. (3) एक बड़ा गाँव या कई छोटी बस्तियों का समूह
भील जनजाति की सामाजिक संरचना में 'पाल' शब्द का विशेष महत्व है। यह कई छोटे गांवों या बस्तियों के समूह को संदर्भित करता है जो पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित होते हैं। पाल का मुखिया 'गमेती' कहलाता है, जो समुदाय के भीतर अनुशासन और विवादों के समाधान के लिए उत्तरदायी होता है। यह व्यवस्था भीलों के सामूहिक जीवन और सुरक्षा प्रणाली को दर्शाती है। पाल के भीतर रहने वाले लोग परस्पर सहयोग और सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बंधे होते हैं।

22. (4) I, II और III
सहरिया जनजाति राजस्थान की विशिष्ट जनजाति है जो मुख्य रुप से बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में निवास करती है। ये लोग महर्षि वाल्मीकि को अपना आदि पुरुष और संरक्षक देवता मानते हैं। ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय 'हाली' प्रथा जैसी बंधुआ मजदूरी के शोषण का शिकार रहा है। वर्तमान में सरकार द्वारा इस जनजाति के उत्थान के लिए विभिन्न शैक्षणिक और आर्थिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं ताकि उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

23. (4) महर्षि वाल्मीकि
बारां जिले में आयोजित होने वाला सीताबड़ी मेला सहरिया जनजाति के लिए आस्था का सबसे बड़ा केंद्र है। यह स्थान पौराणिक कथाओं के अनुसार महर्षि वाल्मीकि से गहराई से जुड़ा है। माना जाता है कि माता सीता ने वनवास के दौरान यहाँ वाल्मीकि आश्रम में शरण ली थी। सहरिया लोग वाल्मीकि को अपना पूजनीय देवता मानते हैं, इसलिए वे इस मेले को अपनी सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा मानते हैं। यहाँ पवित्र कुंडों में स्नान की परंपरा है।

24. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
जनजातीय समाजों में विशिष्ट सांस्कृतिक शब्दावलियां प्रचलित हैं। 'टोटम' कुल देवता या पवित्र प्रतीक को दर्शाता है। 'दापा' वधू पक्ष को दिया जाने वाला कन्या मूल्य है, जो विवाह की आवश्यक शर्त होती है। 'डाकण' शब्द अंधविश्वास से संबंधित मान्यताओं के लिए प्रयोग किया जाता है। 'छेड़ा फाड़ना' भील जनजाति में तलाक की एक सरल प्रक्रिया है। ये शब्द जनजातीय समुदायों की आंतरिक सामाजिक संरचना और उनकी पारंपरिक न्याय प्रणाली को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

25. (1) I, III, IV, II
राजस्थान के जनजातीय इतिहास की घटनाओं का कालक्रम महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम 1883 में गोविंद गिरी ने संप सभा का गठन किया। इसके बाद 1913 में मानगढ़ पहाड़ी पर हत्याकांड हुआ। 1921 में मोतीलाल तेजावत ने अन्यायपूर्ण करों के विरुद्ध एकी आंदोलन शुरु किया। अंत में, 1924 में ब्रिटिश सरकार ने मीणा समुदाय पर आपराधिक जनजाति अधिनियम लागू किया। यह क्रम जनजातीय समाज के निरंतर संघर्ष और सामाजिक सुधार के प्रयासों की विस्तृत तस्वीर प्रस्तुत करता है।

26. (1) संशोधित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण
राजस्थान में जनजातीय कल्याण के लिए एम.ए.डी.ए. (MADA) का अर्थ 'संशोधित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण' है। यह कार्यक्रम उन क्षेत्रों के लिए है जहाँ जनजातीय आबादी का संकेंद्रण है, लेकिन वे अधिसूचित जनजातीय उप-योजना क्षेत्र में नहीं आते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इन बिखरे हुए जनजातीय समूहों को शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। इसके माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित करती है कि सभी आदिवासी विकास की मुख्यधारा से वंचित न रहें।

NODIA

27. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
वन धन योजना जनजातीय विकास की महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य लघु वनोपज के मूल्यवर्धन से आदिवासियों की आय में वृद्धि करना है। इस योजना के तहत जनजातीय स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान किए जाते हैं ताकि वे वनों से प्राप्त सामग्री का प्रसंस्करण कर सकें। राष्ट्रीय स्तर पर ट्राइफेड इस योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रमुख अभिकरण के रूप में कार्य करता है। यह योजना आर्थिक सशक्तिकरण और उद्यमिता को बढ़ावा देती है।

28. (2) शारीरिक श्रम के लिए मौसमी पलायन की उच्च दर
दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में भूमि बेदखली और भारी कर्ज ने आदिवासियों की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया है। इसका सबसे गंभीर परिणाम शारीरिक श्रम के लिए होने वाला बड़े पैमाने पर मौसमी पलायन है। अपनी भूमि खोने के बाद, कई जनजातीय परिवार जीविकोपार्जन के लिए शहरों में निर्माण कार्य और कृषि मजदूरी के लिए जाने को मजबूर हैं। यह पलायन उनकी सामाजिक स्थिरता और बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

29. (4) I, II और III
एकी आंदोलन की शुरुआत 1921 में मोतीलाल तेजावत द्वारा चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया से की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भीलों और गरासियाओं को सामंती शोषण, बेगार प्रथा और अत्यधिक करों के विरुद्ध एकजुट करना था। तेजावत ने मेवाड़ के महाराणा के समक्ष 21 सूत्रीय मांग पत्र प्रस्तुत किया था, जिसे "मेवाड़ की पुकार" कहा जाता है। यह आंदोलन जनजातीय चेतना का महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसने आदिवासियों को उनके अधिकारों के प्रति संगठित किया।

30. (4) मीणा
मीणा जनजाति का नाम संस्कृत शब्द 'मीन' से लिया गया है, जिसका अर्थ मछली है। यह समुदाय अपनी पौराणिक उत्पत्ति का संबंध मत्स्य पुराण और भगवान विष्णु के प्रथम 'मत्स्य अवतार' से जोड़ता है। उनकी मान्यताओं के अनुसार, वे प्राचीन मत्स्य साम्राज्य के वंशज हैं जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। यह ऐतिहासिक और पौराणिक संबंध मीणा समुदाय को गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत प्रदान करता है। वे स्वयं को राज्य की प्राचीनतम जनजाति मानते हैं।

31. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान की जनजातीय बोलियां अपने क्षेत्र की भाषाई विशेषताओं से प्रभावित हैं। वागड़ी बोली मुख्य रूप से डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र में बोली जाती है। डामोर जनजाति की भाषा पर पड़ोसी राज्य गुजरात का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। सहरिया जनजाति की बोली में हाड़ौती क्षेत्र की विशेषताएं मिलती हैं, जबकि पूर्वी राजस्थान की मीणा जनजाति की भाषा पर ढूंढाड़ी का प्रभाव अधिक है। यह भाषाई विविधता राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के सांस्कृतिक मिश्रण को दर्शाती है।

32. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
डामोर जनजाति राजस्थान के अन्य जनजातीय समूहों से इस मायने में भिन्न है कि वे आजीविका के लिए वनों पर बहुत कम निर्भर हैं। वे मुख्य रूप से स्थायी कृषि और पशुपालन को प्राथमिकता देते हैं। इसका भौगोलिक कारण यह है कि उनके निवास क्षेत्र, विशेषकर डूंगरपुर की सीमलवाड़ा तहसील में, सघन वन क्षेत्र अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए, उन्होंने अपनी जीवनशैली को कृषि आधारित आर्थिक व्यवस्था के अनुरुप ढाल लिया है, जो उन्हें अलग पहचान देता है।

33. (3) I, II, III, IV और V
भारतीय संविधान की पांचवीं अनुसूची अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के लिए विशेष रूपरेखा प्रदान करती है, जहाँ राज्यपाल को शांति और सुशासन हेतु नियम बनाने का अधिकार है। राजस्थान में बांसवाड़ा और डूंगरपुर जैसे जिले पूरी तरह जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के अधीन हैं। राज्य में गठित जनजाति सलाहकार परिषद में अधिकतम 20 सदस्य हो सकते हैं, जिनमें से तीन-चौथाई सदस्यों का विधानसभा में अनुसूचित जनजाति का प्रतिनिधित्व करना अनिवार्य है। यह जनजातीय स्वायत्तता सुनिश्चित करता है।

34. (1) वधू के पिता को कन्या मूल्य देने की प्रथा
भील समाज में 'दापा' एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रथा है जो विवाह से जुड़ी हुई है। इसके अंतर्गत वर पक्ष द्वारा वधू के पिता को एक निश्चित राशि या कन्या मूल्य दिया जाता है। यह प्रथा दर्शाती है कि जनजातीय समाज में कन्या को परिवार की मूल्यवान संपत्ति माना जाता है। यद्यपि शिक्षा के प्रसार के साथ इस प्रथा के स्वरूप में बदलाव आ रहा है, लेकिन पारंपरिक ग्रामीण क्षेत्रों में यह अब भी सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा है।

35. (3) जयपुर
राजस्थान में जनजातीय उप-योजना क्षेत्र (टी.एस.पी.) के अंतर्गत वे जिले शामिल हैं जहाँ जनजातीय जनसंख्या का संकेंद्रण बहुत अधिक है। बांसवाड़ा, डूंगरपुर और प्रतापगढ़ जिले पूरी तरह से इस अधिसूचित क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इसके विपरीत, जयपुर जिले में हालांकि मीणा जनजाति की संख्या अधिक है, लेकिन इसे आधिकारिक तौर पर जनजातीय उप-योजना क्षेत्र में शामिल नहीं किया गया है। यह वर्गीकरण सरकार को अधिक पिछड़े क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

36. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
जनजातीय उत्थान के लिए कई योजनाएं कार्यरत हैं। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय मेधावी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण आधुनिक शिक्षा प्रदान करते हैं। वन धन योजना का लक्ष्य लघु वनोपज का मूल्यवर्धन और उचित विपणन करना है। एम.ए.डी.ए. कार्यक्रम उन जनजातीय समूहों पर केंद्रित है जो उप-योजना क्षेत्र के बाहर स्थित हैं। ट्राइफेड राष्ट्रीय स्तर पर वन उत्पादों के विपणन और आदिवासियों को सही मूल्य दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये सभी पहलें जनजातीय समाज को आत्मनिर्भर बनाती हैं।

37. (3) उदयपुर
माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान राजस्थान के उदयपुर शहर में स्थित है। यह संस्थान जनजातीय संस्कृति, परंपराओं और उनकी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं पर शोध के लिए समर्पित राज्य का प्रमुख केंद्र है। यहाँ एक विस्तृत जनजातीय संग्रहालय भी है जो भील, गरासिया और सहरिया जैसी जनजातियों की जीवनशैली और कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है। यह संस्थान नीति निर्माताओं को जनजातीय कल्याण के लिए प्रभावी सुझाव और डेटा प्रदान करता है, जिससे विकास को दिशा मिलती है।

38. (1) केवल I और II
दक्षिणी राजस्थान के आदिवासियों के लिए वन उपज आजीविका का अनिवार्य हिस्सा है। महुआ के फूल और तेन्दू के पत्ते प्रमुख गैर-इमारती वन उत्पाद हैं जिन्हें वे एकत्रित कर बेचते हैं। महुआ का उपयोग भोजन और पारंपरिक पेय बनाने में होता है, जबकि तेन्दू के पत्तों का उपयोग बीड़ी उद्योग में किया जाता है। सागवान की लकड़ी इन क्षेत्रों में पाई जाती है, लेकिन कड़े कानूनी प्रतिबंधों के कारण यह प्राथमिक संग्रह योग्य लघु उपज की श्रेणी में नहीं आती है।

39. (4) वागड़ क्षेत्र
वागड़ी बोली मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित वागड़ क्षेत्र में बोली जाती है, जिसमें डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिले शामिल हैं। यह बोली भील जनजाति की मुख्य भाषा है और भौगोलिक निकटता के कारण इस पर गुजराती भाषा का गहरा प्रभाव देखा जाता है। वागड़ क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को समझने के लिए इस बोली का ज्ञान आवश्यक है। यहाँ के लोक गीत और लोक कथाएं इसी भाषा में रचित हैं, जो जनजातीय गौरव को दर्शाती हैं।

40. (2) वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी अधिनियम
भारत में जनजातीय अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए कानूनों का निर्माण क्रमिक रहा है। सबसे पहले 1972 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम लागू किया गया। इसके बाद 1996 में पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम यानी पेसा लाया गया, जिसने ग्राम सभाओं को सशक्त बनाया। अंत में, 2006 में अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम पारित किया

Downloaded from www.pdf.tube

गया, जिसने आदिवासियों को उनकी पैतृक वन भूमि पर कानूनी अधिकार प्रदान किए।

41. (3) स्थानीय साहूकारों की भारी ऋणग्रस्तता जिसके कारण भूमि हस्तांतरण हुआ
राजस्थान के जनजातीय समुदायों में भूमि बेदखली का सबसे महत्वपूर्ण कारण स्थानीय साहूकारों की भारी ऋणग्रस्तता रहा है। अपनी जरूरतों के लिए आदिवासी अक्सर उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेते थे। ऋण न चुका पाने पर उनकी कृषि योग्य भूमि धीरे-धीरे साहूकारों के नियंत्रण में चली जाती थी। इस प्रक्रिया ने आदिवासियों को अपनी जमीन पर खेतिहर मजदूर बना दिया। सरकार ने इस शोषण को रोकने के लिए बाद में कई भूमि हस्तांतरण निषेध कानून बनाए हैं।

42. (2) केवल III और IV
मीणा जनजाति में चौकीदार मीणा गांवों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी थे, जबकि जमींदार मीणा खेती पर निर्भर थे। यह धारणा गलत है कि चौकीदार मीणाओं की स्थिति जमींदारों से ऊंची थी, क्योंकि दोनों के सामाजिक कार्य भिन्न थे। साथ ही, उन्होंने आपराधिक जनजाति अधिनियम को बिना विरोध के स्वीकार नहीं किया था; वास्तव में, इस दमनकारी कानून के खिलाफ समुदाय ने लंबा संघर्ष किया था। यह संघर्ष उनके सामाजिक सम्मान को पुनः प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण था।

43. (4) अनुसूचित जनजाति के बच्चों के लिए निःशुल्क आधुनिक शिक्षा
राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में स्थापित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजाति के बच्चों को निःशुल्क और उच्च गुणवत्ता वाली आधुनिक शिक्षा प्रदान करना है। ये विद्यालय पूरी तरह से आवासीय हैं और यहाँ छात्रों के रहने तथा पढ़ाई का पूरा खर्च सरकार वहन करती है। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि दूरदराज के क्षेत्रों के प्रतिभाशाली छात्र भी शहरी छात्रों के समान प्रतिस्पर्धी बन सकें और उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

44. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
विभिन्न जनजातियों की अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान है। गरासिया जनजाति में 'हेलारु' एक महत्वपूर्ण सहकारी संस्था है। सहरिया समुदाय में पुनर्जन्म से संबंधित 'धारी संस्कार' प्रचलित है। डामोर जनजाति का 'छेला बावजी मेला' उनके सामाजिक जीवन का केंद्र है। मीणा जनजाति में ऐतिहासिक रुप से चौकीदार और जमींदार जैसे सामाजिक विभाजन देखे जाते हैं। ये सभी विशेषताएं राजस्थान की जनजातीय विविधता को समृद्ध स्वरुप प्रदान करती हैं और उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों को जीवंत बनाए रखती हैं।

45. (3) उच्च पूंजी-प्रधान औद्योगिक विनिर्माण
राजस्थान की पारंपरिक जनजातीय अर्थव्यवस्था मुख्य रुप से प्राकृतिक संसाधनों और सरल कृषि पद्धतियों पर आधारित है। इसमें लघु वनोपज का संग्रह, जीवन निर्वाह खेती और पारंपरिक पशुपालन शामिल हैं। ये गतिविधियां उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करती हैं। इसके विपरीत, उच्च पूंजी-प्रधान औद्योगिक विनिर्माण जनजातीय समाज की विशेषता नहीं है, क्योंकि उनके पास तकनीकी संसाधनों और भारी निवेश की कमी रही है। वर्तमान में सरकार उन्हें कौशल विकास के माध्यम से आधुनिक अर्थव्यवस्था से जोड़ रही है।

NODIA

46. (4) मिट्टी, बांस और छप्पर का उपयोग करके बनाया गया एक पारंपरिक घर
भील जनजाति की पारंपरिक वास्तुकला में उनके घर को 'कु' या 'टापरा' कहा जाता है। ये घर आमतौर पर मिट्टी, बांस और लकड़ी के ढांचे पर छप्पर डालकर बनाए जाते हैं। ये घर पर्यावरण के अनुकूल होते हैं और पहाड़ियों के बीच बिखरे हुए रुप में स्थित होते हैं। घरों का यह समूह 'फला' कहलाता है। 'कु' की संरचना भीलों की सरल जीवनशैली और स्थानीय संसाधनों के कुशल उपयोग को प्रदर्शित करती है, जो वर्षा से बचाव के लिए प्रभावी है।

47. (1) केवल I, II, III और V
राजस्थान की जनजातियों ने ऐतिहासिक रुप से कई गंभीर चुनौतियों का सामना किया है। सामंती शोषण और साहूकारों के कर्ज के कारण कई विद्रोह हुए। औपनिवेशिक काल के कठोर वन कानूनों ने उनकी आजीविका के स्रोतों को छीन लिया। उनसे 'बेगार' यानी बिना पारिश्रमिक के काम भी कराया जाता था। शिक्षा की कमी ने उन्हें शोषण के प्रति संवेदनशील बना दिया। हालांकि 19वीं सदी के भील विद्रोहों को दबाना कठिन था, जिसके लिए अंग्रेजों को विशेष सैन्य बल का गठन करना पड़ा।

48. (2) मीणा और भील
राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों को ऐतिहासिक रुप से 'खेरा' या 'खेराड़' कहा जाता है। यह क्षेत्र सांस्कृतिक रुप से मीणा और भील समुदायों की मिश्रित आबादी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की बोली को 'खेराड़ी' कहा जाता है, जिसमें मेवाड़ी, ढूंढाड़ी और हाड़ौती का मिश्रण मिलता है। इन दोनों जनजातियों के आपसी सामंजस्य और साझा परंपराओं ने इस क्षेत्र को विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान दी है, जो उनके ऐतिहासिक संघर्षों की कहानी संजोए हुए है।

49. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
यह तथ्य सही है कि राजस्थान की अनुसूचित जनजातियों में मीणा जनजाति की साक्षरता दर सर्वाधिक है और उनका सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व भी प्रभावशाली है। शिक्षा के प्रति जागरुकता ने उन्हें आर्थिक रुप से सशक्त बनाया है। हालांकि, यह तर्क गलत है कि वे विशेष रुप से कमजोर जनजातीय समूह (पी.वी.टी.जी.) में शामिल हैं; वास्तव में राजस्थान से केवल सहरिया जनजाति ही इस श्रेणी में आती है। मीणाओं की प्रगति का मुख्य कारण उनका प्रारंभिक शैक्षिक सुधार रहा है।

50. (1) महुआ
महुआ का पेड़ दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके फूलों का उपयोग आदिवासी समुदाय द्वारा पारंपरिक पेय बनाने के लिए किया जाता है, जिसे वे अपनी संस्कृति का हिस्सा मानते हैं। इसके अतिरिक्त, महुआ के फूल

(2) भंवर माता — डामोर
(3) भूरिया बाबा — मीणा
(4) कालका माता — गरासिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. बेणेश्वर मेला डूंगरपुर जिले में किन तीन नदियों के पवित्र संगम पर आयोजित किया जाता है?
(1) बनास, चंबल और सीप
(2) लूणी, सुकड़ी और जवाई
(3) सोम, माही और जाखम
(4) साबरमती, वाकल और सेई
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राज्य के औसत की तुलना में राजस्थान के जनजातीय उप-योजना क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को सही ढंग से उजागर करता है?
(1) उप-योजना क्षेत्रों में साक्षरता राज्य के औसत से कम है
(2) उप-योजना क्षेत्रों में साक्षरता दर सामान्य राज्य औसत से अधिक है
(3) उप-योजना क्षेत्रों में महिला साक्षरता पुरुष साक्षरता परिणामों के समान है
(4) माध्यमिक विद्यालय स्तर पर पूर्ण सकल नामांकन प्राप्त कर लिया गया है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. सहरिया जनजाति के पारंपरिक ग्राम प्रशासन में, ग्राम मुखिया को किस उपाधि से जाना जाता है?
(1) गमेती
(2) मुखी
(3) पटेल
(4) कोतवाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. भाषाई रूप से, दक्षिणी राजस्थान में जनजातीय आबादी द्वारा बोली जाने वाली भीली भाषा किस विस्तृत भाषा परिवार से संबंधित है?
(1) द्रविड़
(2) भारतीय-आर्य
(3) ऑस्ट्रो-एशियाई
(4) सीनो-तिब्बती
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. निम्नलिखित में से कौन जनजातीय अर्थव्यवस्था के संबंध में भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ के मुख्य अधिदेश का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) जनजातीय कृषि इकाइयों के लिए भारी मशीनरी का वितरण
(2) स्थानीय अनुसूचित क्षेत्रों के भीतर आंतरिक सुरक्षा का प्रबंधन
(3) लघु वनोपज संग्रह के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करना
(4) वन-निवासी जनजातीय समूहों को भूमि पट्टों का आवंटन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. एकी आंदोलन की शुरुआत के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) इसे 1883 में गोविंद गिरी द्वारा मानगढ़ पहाड़ी से शुरु किया गया था।
(2) इसे 1944 में मुनि मगन सागर द्वारा नीम का थाना में शुरु किया गया था।
(3) इसका नेतृत्व 1938 में उदयपुर में माणिक्य लाल वर्मा ने किया था।
(4) इसकी शुरुआत 1921 में चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया से मोतीलाल तेजावत द्वारा की गई थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. सुरजी भगत निम्नलिखित में से किस जनजातीय आंदोलन के प्रमुख सहयोगी और महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे?
(1) भगत आंदोलन
(2) एकी आंदोलन
(3) मीणा विद्रोह
(4) लालसौड़िया आंदोलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम के अलावा अन्य राज्यों में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन का प्रावधान भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के तहत किया गया है, जो सीधे राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों को प्रभावित करता है?
(1) अनुच्छेद 244(2)
(2) अनुच्छेद 244(1)
(3) अनुच्छेद 275(1)
(4) अनुच्छेद 330
(5) प्रश्न अनुत्तरित

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

हिस्सा है, बल्कि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल एक व्यावहारिक पोशाक भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी यह प्रचलित है।

61. (3) भील
'हलमा' या 'हीडा' भील जनजाति की एक सराहनीय और प्राचीन सामाजिक परंपरा है। यह परंपरा सामूहिक सहभागिता और परोपकार की भावना पर आधारित है। जब किसी व्यक्ति को खेती के कार्य या आवास निर्माण में सहायता की आवश्यकता होती है, तो पूरे गांव के लोग बिना किसी पारिश्रमिक के उसकी मदद करते हैं। यह प्रथा जनजातीय समाज में परस्पर प्रेम, एकता और सामूहिक उत्तरदायित्व का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह आधुनिक युग में भी मानवीय मूल्यों को संरक्षित रखती है।

62. (1) केवल I, II, III और IV
राजस्थान की जनजातीय आबादी का वितरण असमान है। राज्य की लगभग दो-तिहाई जनजातीय जनसंख्या दक्षिणी जिलों में बसी है। उदयपुर जिले में अनुसूचित जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है, जबकि प्रतापगढ़ पूरी तरह जनजातीय उप-योजना क्षेत्र का भाग है। इसके विपरीत, नागौर और बीकानेर जैसे पश्चिमी जिलों में आदिवासियों का अनुपात सबसे कम है। सहरिया जनजाति विशेष रूप से बारां जिले में केंद्रित है। यह क्षेत्रीय वितरण राज्य की विकास योजनाओं के निर्माण को सीधे प्रभावित करता है।

63. (1) संथाल विद्रोह
भगत आंदोलन, एकी आंदोलन और मीणा आंदोलन राजस्थान के इतिहास के अध्याय हैं, जो यहाँ की जनजातियों के संघर्ष को दर्शाते हैं। ये आंदोलन स्थानीय समस्याओं और सुधारों पर केंद्रित थे। इसके विपरीत, संथाल विद्रोह 1855-56 में वर्तमान झारखंड और पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में हुआ था। यह विद्रोह अंग्रेजों और ज़मींदारों के खिलाफ था और इसका राजस्थान की जनजातीय गतिविधियों से कोई प्रत्यक्ष भौगोलिक संबंध नहीं है। राजस्थान में आदिवासियों के संघर्ष की अपनी स्वतंत्र धारा रही है।

64. (2) स्थायी कृषि और दिहाड़ी मजदूरी की ओर संक्रमण
राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में कठोर वन कानूनों और स्थानांतरित कृषि पर प्रतिबंध लगाने का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसके परिणामस्वरूप, आदिवासी समुदाय जो पहले पूरी तरह वनों पर निर्भर थे, अब स्थायी कृषि और दिहाड़ी मजदूरी की ओर मुड़ने को मजबूर हुए हैं। उनकी पारंपरिक जीवनशैली में बदलाव आया है और उन्हें नई आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि इस बदलाव ने उन्हें आधुनिक अर्थव्यवस्था के करीब लाया है, लेकिन पारंपरिक ज्ञान का ह्रास हुआ है।

65. (2) कथक
गवरी, गैर और द्विचकरी भील जनजाति के प्रसिद्ध पारंपरिक लोक नृत्य हैं, जो उनकी संस्कृति और लोक जीवन की ऊर्जा को प्रदर्शित करते हैं। ये नृत्य धार्मिक उत्सवों और सामाजिक समारोहों का अभिन्न अंग हैं। इसके विपरीत, कथक एक शास्त्रीय नृत्य है जिसकी जड़ें उत्तर भारत के दरबारी नृत्य में हैं और यह जयपुर घराने के माध्यम से विकसित हुआ। कथक का प्रदर्शन पेशेवर कलाकारों द्वारा किया जाता है, जबकि जनजातीय नृत्य सामूहिक भागीदारी और सरल लोक धुन पर आधारित होते हैं।

66. (1) भीलों के लिए सामाजिक-धार्मिक सुधार और आंतरिक एकता
गोविंद गिरी द्वारा 1883 में संप सभा की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भील समुदाय के भीतर सामाजिक और धार्मिक सुधार लाना था। 'संप' का अर्थ आपसी एकता और भाईचारा है। इस सभा के माध्यम से उन्होंने आदिवासियों को शराब और चोरी जैसे व्यसनों को त्यागने के लिए प्रेरित किया। इसका लक्ष्य जनजातीय समाज को नैतिक रूप से उन्नत करना और उनमें स्वाभिमान जगाना था ताकि वे बाहरी शोषण के विरुद्ध एकजुट हो सकें। इसने आदिवासियों में राजनीतिक चेतना भी जाग्रत की।

67. (3) गरासिया
'चैत्र-विचित्र' मेला सिरोही जिले में आयोजित होने वाला गरासिया जनजाति का सबसे प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है। यह मेला होली के कुछ समय बाद मनाया जाता है और गरासिया समाज के युवाओं के लिए विशेष महत्व रखता है। इस अवसर पर लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा में एकत्रित होते हैं और लोक नृत्य करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, यह मेला जीवनसाथी चुनने और सामाजिक रिश्तों को मजबूत करने का प्रमुख मंच रहा है। यहाँ की जीवंतता गरासिया संस्कृति की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करती है।

68. (4) वंशानुगत ऋण चुकाने के लिए बंधुआ मजदूरी प्रणाली
ऐतिहासिक रूप से राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों, विशेषकर बारां के सहरिया समुदाय में 'हाली प्रथा' एक शोषणकारी व्यवस्था थी। यह वास्तव में वंशानुगत ऋण को चुकाने के लिए की जाने वाली बंधुआ मजदूरी का एक रूप था। इस प्रथा के तहत, गरीब आदिवासी अपने द्वारा लिए गए ऋण के बदले में साहूकारों के खेतों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी काम करने के लिए मजबूर थे। उन्हें उचित मजदूरी नहीं दी जाती थी। स्वतंत्रता के पश्चात सरकार ने कानून बनाकर इस प्रथा को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया है।

69. (3) शाहबाद और किशनगंज
राजस्थान की सहरिया जनजाति मुख्य रूप से बारां जिले की दो तहसीलों, शाहबाद और किशनगंज में संकेंद्रित है। राज्य की लगभग 99 प्रतिशत सहरिया आबादी इन्हीं दो क्षेत्रों में निवास करती है। इस भौगोलिक संकेंद्रण के कारण ही सरकार ने इन तहसीलों में विशेष सहरिया विकास परियोजनाएं लागू की हैं। यह क्षेत्र सघन वनों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जहाँ सहरिया समुदाय अपनी पारंपरिक जीवनशैली को बनाए हुए है। उनकी विशिष्ट पहचान को देखते हुए यह क्षेत्र नीतिगत केंद्र में रहता है।

Downloaded from www.pdf.tube

पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, इसलिए अनाज की कमी के दौरान इन्हें भोजन के पूरक के रूप में भी सेवन किया जाता है। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है। यह पेड़ आदिवासियों के लिए आर्थिक और पोषण सुरक्षा प्रदान करता है।

51. (1) मीणा, भील, गरासिया, सहरिया
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान की जनजातियों के बीच साक्षरता के स्तर में अंतर है। उच्चतम साक्षरता दर मीणा जनजाति में पाई जाती है, जो शिक्षा और नौकरियों में अग्रणी हैं। उनके बाद भील जनजाति का स्थान आता है, जो धीरे-धीरे शैक्षिक रूप से उन्नत हो रहे हैं। गरासिया जनजाति इस क्रम में तीसरे स्थान पर है, जबकि सहरिया जनजाति की साक्षरता दर सबसे कम है। यह क्रम राज्य की जनजातीय विकास नीतियों के प्रभाव को दर्शाता है।

52. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
ब्रिटिश शासन के दौरान 1924 में आपराधिक जनजाति अधिनियम लागू किया गया था, जिसके तहत मीणाओं सहित कई समुदायों पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए थे। उन्हें नियमित रूप से थानों में हाजिरी देनी पड़ती थी। इस अन्यायपूर्ण कानून के खिलाफ लंबा आंदोलन चला। हालांकि यह कहना गलत है कि इसे 1947 में निरस्त कर दिया गया था; वास्तव में भारत सरकार ने इसे 1952 में पूरी तरह समाप्त किया। यह अधिनियम औपनिवेशिक शासन की दमनकारी मानसिकता का उदाहरण था।

53. (4) I, II और III
गरासिया जनजाति में विवाह के विविध रूप प्रचलित हैं जो उनकी सामाजिक व्यवस्था को दर्शाते हैं। 'मोर बंधिया' विवाह में सभी हिंदू रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है। 'पहरावणा' एक सरल विवाह पद्धति है जिसमें बहुत कम रस्में निभाई जाती हैं। 'ताणना' विवाह में बिना किसी औपचारिक अनुष्ठान के, केवल कन्या मूल्य देकर विवाह कर लिया जाता है। ये प्रथाएं दर्शाती हैं कि गरासिया समाज में विवाह एक सामाजिक समझौता है जिसे परिस्थितियों के अनुसार संपन्न किया जाता है।

54. (2) सहरिया
धारी संस्कार राजस्थान की सहरिया जनजाति में प्रचलित एक अनूठा मृत्यु अनुष्ठान है। मृत्यु के तीसरे दिन मृतक की अस्थियों को एकत्र करने के बाद, आंगन में राख बिछाई जाती है। अगले दिन सुबह राख पर उभरे पदचिह्नों का निरीक्षण किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि राख पर जिस जीव के निशान बनते हैं, मृतक ने उसी रूप में पुनर्जन्म लिया है। यह परंपरा सहरिया समाज की पुनर्जन्म के प्रति गहरी आस्था और आध्यात्मिक विश्वासों को प्रतिबिंबित करती है।

55. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान के जनजातीय पुनर्जागरण में महापुरुषों का योगदान महत्वपूर्ण है। गोविंद गिरी ने भगत आंदोलन से भीलों में सामाजिक सुधार किए। मोतीलाल तेजावत ने एकी आंदोलन का नेतृत्व कर उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक किया। मुनि मगन सागर ने 'मीणा पुराण' की रचना कर समुदाय को गौरवशाली अतीत से परिचित कराया। ठक्कर बापा को जनजातीय कल्याण का अग्रदूत माना जाता है जिन्होंने सर्वप्रथम 'आदिवासी' शब्द का प्रयोग किया था। इन प्रयासों ने शोषण के विरुद्ध शक्ति प्रदान की।

56. (1) वन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मशीनीकृत खनन को बढ़ावा देना
वन धन योजना का मुख्य लक्ष्य जनजातीय समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। यह योजना लघु वनोपज के उचित मूल्य, संग्राहकों के कौशल विकास और प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य आदिवासियों को उद्यमी बनाना और वनों पर आधारित आजीविका को टिकाऊ बनाना है। इसके विपरीत, मशीनीकृत खनन को बढ़ावा देना इस योजना का हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह पर्यावरण और जनजातीय अधिकारों के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है।

57. (3) गंभीर कुपोषण और भुखमरी से होने वाली मृत्यु
बारां जिले की सहरिया जनजाति लंबे समय से गंभीर कुपोषण और भुखमरी जैसी बुनियादी चुनौतियों का सामना कर रही है। भौगोलिक अलगाव और गरीबी के कारण इस समुदाय में मृत्यु दर चिंताजनक रही है। इसी स्थिति को देखते हुए राज्य सरकार ने सहरिया क्षेत्र के लिए विशेष पोषण कार्यक्रम और अतिरिक्त राशन की व्यवस्था की है। यह चुनौती उनके पिछड़ेपन का प्रमाण है, जिसके लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के साथ स्थायी आजीविका के अवसरों का सृजन अत्यंत आवश्यक है।

58. (1) केवल I, II और IV
डामोर जनजाति की सांस्कृतिक जड़ें पड़ोसी राज्य गुजरात से जुड़ी हुई हैं, जहाँ से वे राजस्थान आए थे। उनकी भाषा और पहनावे पर गुजराती प्रभाव स्पष्ट है। अन्य जनजातियों के विपरीत, वे आजीविका के लिए कृषि और पशुपालन पर अधिक निर्भर हैं। यह समाज पितृसत्तात्मक है और इसमें बहुविवाह की प्रथा कुछ हद तक स्वीकार्य है। उनकी सामाजिक संरचना और रीति-रिवाज उन्हें राजस्थान के दक्षिणी जिलों में एक विशिष्ट और सुसंगठित जनजातीय समूह के रूप में स्थापित करते हैं।

59. (4) लघु वनोपज का स्वामित्व
पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम, 1996 यानी पेसा कानून जनजातीय समुदायों को स्वशासन की शक्ति प्रदान करता है। इस कानून के तहत ग्राम सभा को लघु वनोपज का पूर्ण स्वामित्व और प्रबंधन का अधिकार दिया गया है। इसका अर्थ है कि वनों से प्राप्त सामग्री जैसे महुआ और तेन्दू पत्ते पर स्थानीय समुदाय का नियंत्रण होगा। यह अधिकार उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाता है और बाहरी शोषण से सुरक्षा प्रदान करता है। यह जनजातीय लोकतंत्र को मजबूत करता है।

60. (2) भील
'कछाबू' भील जनजाति की महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक पारंपरिक परिधान है। यह घुटनों तक की लंबाई वाला एक घाघरा होता है, जो पहाड़ी और जंगली क्षेत्रों में आवागमन के लिए सुविधाजनक होता है। इसकी बनावट और गहरे रंगों का प्रयोग भील संस्कृति की सादगी और जीवंतता को दर्शाता है। यह वस्त्र न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान का

NODIA

सक्रिय भूमिका निभाई थी। उन्होंने भील समुदाय के बीच नैतिक मूल्यों के प्रचार और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए निरंतर कार्य किया। संप सभा के संदेशों को दूर-दराज के गांवों तक पहुँचाने में उनका योगदान अतुलनीय है। उनके प्रयासों ने आदिवासियों में धार्मिक जागृति के साथ एकता की भावना को भी मजबूत किया।

80. (2) अनुच्छेद 244(1)
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 244(1) विशेष रुप से उन राज्यों में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण से संबंधित है, जो संविधान की छठी अनुसूची के अंतर्गत नहीं आते हैं। राजस्थान इसी प्रावधान के तहत कवर किया जाता है, जहाँ जनजातीय हितों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रपति और राज्यपाल को विशेष शक्तियां प्राप्त हैं। इसके माध्यम से इन क्षेत्रों के लिए जनजाति सलाहकार परिषद का गठन किया जाता है। यह संवैधानिक ढांचा सुनिश्चित करता है कि जनजातीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति का संरक्षण हो सके।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

A. नथमल जी की हवेली
B. सलीम सिंह की हवेली
C. जैसलमेर का दुर्ग
D. गड़ीसर झील

सूची II: (विशेषताएं)
i. मोर के आकार की एक विशिष्ट छत है
ii. दो भाइयों द्वारा निर्मित, जिसके बाएं और दाएं भाग विशिष्ट फिर भी सामंजस्यपूर्ण हैं
iii. एक 'जीवंत दुर्ग' जहाँ शहर की आबादी का एक बड़ा हिस्सा निवास करता है
iv. मंदिरों और घाटों से घिरी एक ऐतिहासिक वर्षा जल संरक्षण झील

सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है और जैसलमेर में पर्यटन से जुड़ी एक विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(1) अकल वुड फॉसिल पार्क में जीवाश्म अवशेषों का अवलोकन
(2) दिलवाड़ा मंदिरों की जटिल नक्काशी को देखना
(3) सैम सैंड ड्यून्स में ऊंट सफारी का अनुभव करना
(4) तनोट माता मंदिर में भारत-पाक सीमा चौकी का भ्रमण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. जैसलमेर में मरुस्थलीय पर्यटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. डेजर्ट नेशनल पार्क वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है जो 'गोडावण' को देखना चाहते हैं।
II. जैसलमेर के दुर्ग को इसकी सुनहरे-पीले बलुआ पत्थर की वास्तुकला के कारण 'सोनार दुर्ग' के नाम से भी जाना जाता है।
III. खुरी गाँव रेत के टीलों के अनुभव के लिए सैम के विकल्प के रूप में लोकप्रिय हो रहा है।
IV. मरु महोत्सव विशेष रूप से निजी होटल श्रृंखलाओं द्वारा आयोजित किया जाता है और इसमें सरकारी भागीदारी नहीं होती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. भारत में भगवान ब्रह्मा को समर्पित एकमात्र प्रमुख मंदिर, जो प्रतिवर्ष लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है, राजस्थान के किस कस्बे में स्थित है?
(1) पुष्कर
(2) नाथद्वारा
(3) माउंट आबू
(4) ओसियां
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. एक सांस्कृतिक पर्यटक पुष्कर की पवित्र झील में ऊंटों के भव्य व्यापार और धार्मिक स्नान का साक्षी बनना चाहता है। हिंदू पंचांग के अनुसार, उन्हें किस अवधि के दौरान अपनी यात्रा की योजना बनानी चाहिए?
(1) चैत्र नवरात्रि
(2) श्रावण पूर्णिमा
(3) कार्तिक पूर्णिमा
(4) माघ अमावस्या
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): अजमेर भारत के पर्यटन परिदृश्य में मिश्रित संस्कृति और धार्मिक सद्भाव के एक अद्वितीय प्रतीक का प्रतिनिधित्व करता है।
कारण (R): यहाँ सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की प्रतिष्ठित दरगाह स्थित है और यह पवित्र हिंदू तीर्थ स्थल पुष्कर के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

37. निम्नलिखित में से कौन सा ऐतिहासिक स्मारक अजमेर में स्थित नहीं है?
(1) अढाई दिन का झोंपड़ा
(2) तारागढ़ का दुर्ग
(3) मूसी महारानी की छतरी
(4) आना सागर झील
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और रणथंभौर के स्थलों (सूची I) को उनके विवरण (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्थल)
A. पदम तालाब
B. त्रिनेत्र गणेश मंदिर
C. राजबाग के खंडहर
D. जोगी महल

सूची II: (विवरण)
i. एक विशाल बरगद के वृक्ष के पास स्थित एक ऐतिहासिक वन विश्राम गृह
ii. बाघ अभयारण्य के भीतर सबसे बड़ी झील

को ही शामिल किया गया था।
(3) यह मान्यता मुख्य रूप से उनके आधुनिक वास्तुशिल्प नवीनीकरण और रखरखाव के लिए दी गई थी।
(4) इस सूची में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, जैसलमेर और गागरोन के दुर्ग शामिल हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पैतृक हवेलियों का हेरिटेज होटलों में परिवर्तन राजस्थान की स्थापत्य विरासत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
कारण (R): हेरिटेज होटल राजस्व उत्पन्न करते हैं जो इन ऐतिहासिक संपत्तियों के उच्च रखरखाव लागत की पूर्ति करते हैं और स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देते हैं।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. निम्नलिखित में से कौन सा दुर्ग अपवाद है और 2013 में राजस्थान के पहाड़ी दुर्गों की यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल नहीं किया गया था?
(1) आमेर का दुर्ग
(2) गागरोन का दुर्ग
(3) मेहरानगढ़ का दुर्ग
(4) कुंभलगढ़ का दुर्ग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और दुर्गों (सूची I) को उनके संबंधित जिलों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (दुर्ग)
A. भटनेर का दुर्ग
B. जूनागढ़ का दुर्ग
C. तारागढ़ का दुर्ग
D. लोहागढ़ का दुर्ग
सूची II: (जिले)
i. बीकानेर
ii. हनुमानगढ़
iii. भरतपुर
iv. बूंदी
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. हेरिटेज होटलों के रूप में उनकी वर्तमान कार्यात्मक स्थिति के आधार पर राजस्थान की निम्नलिखित ऐतिहासिक संरचनाओं में से विषम का चयन कीजिए।
(1) उम्मेद भवन पैलेस
(2) रामबाग पैलेस
(3) ताज लेक पैलेस
(4) हवा महल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. जयपुर के निम्नलिखित पर्यटन आकर्षणों पर विचार कीजिए:
I. नाहरगढ़ दुर्ग
II. अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
III. सहेलियों की बाड़ी
IV. जंतर मंतर
उपरोक्त में से कौन से आकर्षण जयपुर में स्थित हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. निम्नलिखित में से कौन सा मानदंड उस कारण को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है जिसके लिए 2019 में जयपुर के परकोटा शहर को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया था?
(1) यह प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पुराना निरंतर बसा हुआ शहर है।
(2) यहाँ एशिया में पाए जाने वाले मध्यकालीन शस्त्रों और शाही कलाकृतियों का सबसे बड़ा संग्रह है।
(3) यह प्राचीन हिंदू ग्रिड पद्धति और वास्तुकला पर आधारित एक असाधारण शहरी नियोजन प्रदर्शित करता है।
(4) यह भारत का एकमात्र शहर है जो पूरी तरह से मकराना से लाए गए गुलाबी संगमरमर से निर्मित है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. जयपुर में जंतर मंतर देखने वाला एक पर्यटक समय को सेकंड तक सटीक रूप से मापने के लिए उपयोग की जाने वाली एक विशाल संरचना देखता है। पर्यटक किस खगोलीय यंत्र का अवलोकन कर रहा है?
(1) जय प्रकाश यंत्र
(2) राम यंत्र
(3) नाड़ीवलय यंत्र
(4) वृहत् सम्राट यंत्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. जयपुर के निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों के निर्माण का सबसे पुराने से नवीनतम तक सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) आमेर का दुर्ग, जंतर मंतर, हवा महल, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
(2) जंतर मंतर, आमेर का दुर्ग, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय, हवा महल

Downloaded from www.pdf.tube

(3) आमेर का दुर्ग, हवा महल, जंतर मंतर, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
(4) हवा महल, आमेर का दुर्ग, जंतर मंतर, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. जयपुर शहर के मुख्य वास्तुकार और नगर नियोजक कौन थे?
(1) मिर्जा इस्माइल
(2) विद्याधर भट्टाचार्य
(3) सवाई जय सिंह II
(4) चार्ल्स कोरिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और जयपुर के स्थलों (सूची I) को उनके संबंधित निर्माताओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्थल)
A. जंतर मंतर
B. हवा महल
C. अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
D. आमेर का दुर्ग (मुख्य महल)
सूची II: (निर्माता)
i. महाराजा सवाई प्रताप सिंह
ii. महाराजा सवाई राम सिंह II
iii. महाराजा सवाई जय सिंह II
iv. राजा मान सिंह I
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. निम्नलिखित में से कौन सा महल या संरचना जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग के परिसर में स्थित नहीं है?
(1) पद्मिनी महल
(2) फूल महल
(3) मोती महल
(4) शीश महल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. जोधपुर के विरासत पर्यटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मेहरानगढ़ दुर्ग भौंरीला नामक एक खड़ी पहाड़ी पर स्थित है।
II. जसवंत थड़ा महाराजा जसवंत सिंह II की स्मृति में बनाया गया एक सफेद संगमरमर का स्मारक है।
III. उम्मेद भवन पैलेस को एक शाही निवास, एक विलासितापूर्ण होटल और एक संग्रहालय में विभाजित किया गया है।
IV. मंडोर गार्डन में मारवाड़ के पूर्व शासकों की छतरियां स्थित हैं।
V. मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव राव जोधा द्वारा रखी गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल IV और V
(4) केवल I और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. जोधपुर के पुराने शहर में नीले रंग से रंगे घरों के लिए सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारण क्या है?
(1) पूरे शहर में सौंदर्य की एकरूपता के लिए ब्रिटिश प्रशासन द्वारा नीला रंग अनिवार्य किया गया था।
(2) नीला रंग मारवाड़ साम्राज्य का आधिकारिक राज्य रंग है जिसे इसकी स्थापना के दौरान नामित किया गया था।
(3) यह आसपास के मरुस्थलीय और शुष्क क्षेत्रों में जल संसाधनों की प्रचुरता का प्रतीक है।
(4) इसका उपयोग ब्राह्मण समुदाय द्वारा घरों को ठंडा रखने और दीमक जैसे कीटों को दूर भगाने के लिए किया जाता था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. पर्यटन स्थलों और उनकी विशेषताओं के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) उम्मेद भवन पैलेस - पूरी तरह से लाल बलुआ पत्थर से निर्मित
(2) मंडोर गार्डन - प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों के लिए प्रसिद्ध
(3) जसवंत थड़ा - 'मारवाड़ का ताजमहल' के रूप में जाना जाता है
(4) बालसमंद झील - मारवाड़ की एकमात्र प्राकृतिक मीठे पानी की झील
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जोधपुर को राजस्थान के मरु त्रिकोण के तहत व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जाता है।
कारण (R): जोधपुर ऐतिहासिक रूप से मेवाड़ साम्राज्य की राजधानी के रुप में कार्य करता था, जिसने थार मरुस्थल को नियंत्रित किया था।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

23. झीलों की नगरी के रूप में प्रसिद्ध उदयपुर की स्थापना 1559 में किस राजपूत शासक ने की थी?
(1) महाराणा प्रताप
(2) महाराणा कुंभा
(3) महाराणा संग्राम सिंह
(4) महाराणा उदय सिंह II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और उदयपुर की झीलों (सूची I) को उनकी प्रमुख विशेषताओं या संरचनाओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (झीलें)
A. पिछोला झील
B. फतेह सागर झील
C. जयसमंद झील
D. उदय सागर झील
सूची II: (विशेषताएं)
i. जग मंदिर और ताज लेक पैलेस
ii. नेहरू पार्क और उदयपुर सौर वेधशाला
iii. ढेबर झील, भारत की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील
iv. महाराणा उदय सिंह II द्वारा 1565 में निर्मित
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. उदयपुर के प्रमुख पर्यटन आकर्षणों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) सज्जनगढ़ पैलेस को मानसून पैलेस के रूप में भी जाना जाता है।
(2) सहेलियों की बाड़ी शाही महिलाओं के लिए बनाई गई थी और यह अपने संगमरमर के हाथियों और फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है।
(3) उदयपुर का सिटी पैलेस मुख्य रूप से फतेह सागर झील के तट पर निर्मित है।
(4) जगदीश मंदिर उदयपुर शहर के मध्य में स्थित एक बड़ा हिंदू मंदिर है जिसे महाराणा जगत सिंह I ने बनवाया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. निम्नलिखित पर्यटन आकर्षणों पर विचार कीजिए:
I. आहड़ की छतरियां
II. बागोर की हवेली
III. पटवों की हवेली
उपरोक्त में से कौन से आकर्षण उदयपुर में स्थित हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. उदयपुर के विश्व के सबसे प्रमुख विवाह पर्यटन स्थलों में से एक के रूप में उभरने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) राज्य सरकार राज्य के अतिथियों के अंतर्राष्ट्रीय विवाहों के लिए निःशुल्क आवास प्रदान करती है।
(2) यहाँ निजी चार्टर उड़ानों के लिए राजस्थान का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाया गया है।
(3) यह भारत का एकमात्र शहर है जहाँ ऐतिहासिक स्मारकों को उपयोग के लिए विधिक रूप से खरीदा जा सकता है।
(4) यह उच्च स्तरीय आयोजनों के लिए ऐतिहासिक महल, शांत झीलें और उत्कृष्ट आतिथ्य प्रदान करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. शिल्पग्राम उत्सव, एक प्रमुख ग्रामीण कला और शिल्प उत्सव जो हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है, प्रतिवर्ष उदयपुर में किस माह में आयोजित किया जाता है?
(1) अक्टूबर
(2) दिसंबर
(3) मार्च
(4) अगस्त
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख पर्यटन शहरों को भौगोलिक रूप से पश्चिम से पूर्व की ओर व्यवस्थित कीजिए:
1. जैसलमेर
2. जोधपुर
3. जयपुर
4. भरतपुर
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) 1, 2, 3, 4
(2) 2, 1, 4, 3
(3) 1, 3, 2, 4
(4) 4, 3, 2, 1
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. जैसलमेर के एक प्रमुख पर्यटन स्थल 'पटवों की हवेली' के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह जैसलमेर राज्य के शाही परिवार द्वारा पूर्णतः निर्मित एक एकल विशाल हवेली है।
(2) इसका निर्माण मुख्य रूप से विभिन्न आक्रमणों के विरुद्ध एक रक्षात्मक दुर्ग के रूप में किया गया था।
(3) इसे सुदूर धौलपुर की खदानों से लाए गए लाल बलुआ पत्थर से तराशा गया है।
(4) यह गुमान चंद पटवा नामक एक धनी व्यापारी द्वारा निर्मित पांच अलग-अलग हवेलियों का एक समूह है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और जैसलमेर की विरासत संपत्तियों (सूची I) को उनकी परिभाषित विशेषताओं (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विरासत संपत्तियां)

Click Here to Buy book on Amazon

62. राजस्थान पर्यटन के विपणन अभियान में कई बार परिवर्तन देखे गए हैं। 2019 में अपनाया गया नारा क्या था, जिसने "जाने क्या दिख जाए" के स्थान पर एक पुराने लोकप्रिय वाक्यांश को पुनर्जीवित किया?
(1) द इनक्रेडिबल स्टेट ऑफ इंडिया
(2) गॉड्स ओन कंट्री
(3) द हार्ट ऑफ इनक्रेडिबल इंडिया
(4) पधारो म्हारे देश
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. राजस्थान के एक गाँव और उस विशिष्ट शिल्प/विशेषता के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए जो इसके ग्रामीण पर्यटन को संचालित करता है।
(1) मोलेला - टेराकोटा की पट्टिकाएं और मूर्तियां
(2) खुरी - ब्लू पॉटरी
(3) सामोद - हस्त-ब्लॉक छपाई
(4) बगरू - ऊंट की अस्थि पर नक्काशी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन योजना के तहत नामित उन परिपथों के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए, जिनकी परियोजनाएं राजस्थान में क्रियान्वित की गई हैं:
I. कृष्ण परिपथ
II. मरुस्थल परिपथ
III. हिमालयी परिपथ
उपरोक्त में से कौन सा/से परिपथ राजस्थान में सक्रिय है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. राज्य में पर्यटन अवसंरचना के विकास के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करने हेतु राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1956
(2) 1969
(3) 1978
(4) 1991
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. निम्नलिखित में से कौन सा एक अपवाद है और राजस्थान पारिस्थितिक पर्यटन नीति 2021 का उद्देश्य नहीं है?
(1) वन बफर क्षेत्रों के भीतर बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खनन और भारी उद्योगों की अनुमति देना।
(2) रोजगार के माध्यम से स्थानीय जनसंख्या को लाभान्वित करने के लिए समुदाय-आधारित पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देना।
(3) प्रकृति पथ, पक्षी अवलोकन और ट्रेकिंग गतिविधियों के विकास को प्रोत्साहित करना।
(4) विनियमित पर्यटन के माध्यम से राज्य की प्राकृतिक विरासत और जैव विविधता का संरक्षण करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. पुष्कर के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: पुष्कर गुलाब के उत्पादों की बड़े पैमाने पर खेती और निर्यात के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है।
कथन II: पुष्कर मेला विशेष रूप से एक धार्मिक सभा है जिसमें किसी भी प्रकार के पशु व्यापार पर कठोर प्रतिबंध है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

68. राजस्थान में साहसिक पर्यटन के लिए निम्नलिखित स्थानों पर विचार कीजिए:
I. झालाना - तेंदुआ सफारी
II. माउंट आबू - ट्रेकिंग और शिविर लगाना
III. सैम सैंड ड्यूंस - पैरासेलिंग और ड्यून बैशिंग
IV. चंबल नदी - श्वेत-जल राफ्टिंग रैपिड्स
उपरोक्त में से कौन सा स्थान अपनी लोकप्रिय साहसिक गतिविधि के साथ सही सुमेलित है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान में टूरिस्ट गाइडों के लिए परीक्षा आयोजित करने, प्रशिक्षण देने और अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए मुख्य रूप से कौन सा प्राधिकरण उत्तरदायी है?
(1) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.)
(2) इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉर्पोरेशन (आई.आर.सी.टी.सी.)
(3) पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार
(4) गृह मंत्रालय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. 'पैलेस ऑन व्हील्स' को विलासितापूर्ण पर्यटन अवसंरचना का एक अत्यधिक सफल मॉडल क्यों माना जाता है?
(1) यह ग्रामीण ग्रामों को प्रमुख क्षेत्रीय शहरों से जोड़ने वाली एक तीव्र गति की कम्यूटर ट्रेन है।
(2) यह साप्ताहिक रूप से विरासत और वन्यजीव स्थलों को आच्छादित करने वाला एक विलासितापूर्ण होटल अनुभव प्रदान करती है।
(3) यह पर्यटकों को निजी उपयोग के लिए ऐतिहासिक रेलवे कोचों को स्थायी रूप से खरीदने की अनुमति देती है।
(4) यह पूर्णतः सौर ऊर्जा पर संचालित है, जिससे यह राज्य में सबसे सस्ता यात्रा विकल्प बन जाती है।

iii. दो प्रमुख झीलों के बीच स्थित प्राचीन पाषाण संरचनाएं
iv. ऐतिहासिक दुर्ग के भीतर स्थित एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल

सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: रणथंभौर अपने दिन में सक्रिय रहने वाले बाघों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, जिससे उन्हें दिन की सफारी के दौरान देखना सुलभ हो जाता है।
कथन II: राजसी रणथंभौर दुर्ग, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, राष्ट्रीय उद्यान की सीमाओं के भीतर स्थित है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान में वन्यजीव पर्यटन स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर में स्थित है।
II. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर में स्थित है।
III. सरिस्का बाघ अभयारण्य अलवर में स्थित है।
IV. मुकुंदरा हिल्स बाघ अभयारण्य कोटा में स्थित है।
V. डेजर्ट नेशनल पार्क उदयपुर में स्थित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल III और IV
(4) केवल II, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. वन्यजीव संरक्षण और पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान को किस वर्ष 'प्रोजेक्ट टाइगर' के अंतर्गत लाया गया था?
(1) 1970
(2) 1973
(3) 1980
(4) 1991
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. पक्षी अवलोकन पर्यटन के लिए इसके असाधारण महत्व के कारण केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान को किस वर्ष यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था?
(1) 1981
(2) 1985
(3) 1992
(4) 2005
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. निम्नलिखित वन्यजीव अभयारण्यों/उद्यानों और उनकी प्रमुख प्रजातियों या आकर्षणों के बीच गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - प्रवासी जलपक्षी
(2) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान - बंगाल टाइगर
(3) झालाना सफारी पार्क - तेंदुआ
(4) ताल छापर अभयारण्य - हूलॉक गिब्बन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह विवर्तनिक हलचल से निर्मित पूर्णतः प्राकृतिक, गैर-प्रबंधित आर्द्रभूमि प्रणाली है।
II. यह पूर्व में भरतपुर के महाराजाओं के लिए शाही बतख-शिकार आरक्षित क्षेत्र के रूप में कार्य करता था।
III. इसे अंतर्राष्ट्रीय महत्व की रामसर आर्द्रभूमि के रूप में नामित किया गया है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

45. प्राथमिक पारिस्थितिक कारण क्या है कि केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान शीत ऋतु में हजारों प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है?
(1) यह भारत का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है जहाँ जलपक्षी प्रजातियों के लिए कोई प्राकृतिक शिकारी नहीं है।
(2) यह पक्षियों के चूजों के लिए तापमान नियंत्रण से सुसज्जित कृत्रिम प्रजनन आधार प्रदान करता है।
(3) यह 'सेंट्रल एशियन फ्लाईवे' पर स्थित है और भोजन के लिए उथले मीठे पानी के दलदल प्रदान करता है।
(4) यूकेलिप्टस के वृक्षों का सघन आवरण शीतकालीन प्रजातियों के लिए आदर्श नीड़ बनाने का स्थान प्रदान करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और राजस्थान के प्रमुख पर्यटन उत्सवों (सूची I) को उनके पारंपरिक मेजबान जिलों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (उत्सव)
A. मरु महोत्सव
B. मारवाड़ उत्सव
C. ऊंट उत्सव
D. हाथी उत्सव
सूची II: (जिले)

अध्याय 29
राजस्थान में पर्यटन

1. राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र को सुनियोजित रूप से संवर्धित और विकसित करने के लिए किस वर्ष पर्यटन विभाग की स्थापना की गई थी?
(1) 1956
(2) 1965
(3) 1978
(4) 1989
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. राजस्थान में पर्यटन की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: राजस्थान पर्यटन क्षेत्र को उद्योग का दर्जा देने वाला भारत का पहला राज्य था।
कथन II: मोहम्मद यूनुस समिति ने इस उद्योग के दर्जे को प्रदान करने की सिफारिश की थी।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और राजस्थान के पर्यटन परिपथों (सूची I) को उनके प्राथमिक जिलों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पर्यटन परिपथ)
A. मरु त्रिकोण
B. मेवाड़ परिपथ
C. ढूँढाड़ परिपथ
D. वागड़ परिपथ
सूची II: (प्राथमिक जिले)
i. उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद
ii. जयपुर, दौसा, टोंक
iii. जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर
iv. डूंगरपुर, बांसवाड़ा
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. राजस्थान पर्यटन नीति 2020 का उद्देश्य राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कई लक्ष्यों को प्राप्त करना है। निम्नलिखित में से कौन सा इसका प्राथमिक व्यापक उद्देश्य है?
(1) स्थानीय ग्रामीण संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए पर्यटन को केवल प्रमुख शहरी केंद्रों तक सीमित करना।
(2) राज्य के स्वामित्व वाले राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) की संपत्तियों का पूर्णतः निजीकरण करना।
(3) संवेदनशील विरासत स्मारकों की सुरक्षा के लिए विदेशी पर्यटकों के आगमन को कड़ाई से सीमित करना।
(4) राजस्थान को एक प्रमुख घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में सतत रूप से बढ़ावा देना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. राजस्थान में पर्यटन के आर्थिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. यह राज्य के लिए विदेशी मुद्रा आय का एक प्रमुख स्रोत है।
II. यह स्थानीय कारीगरों के लिए महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित करता है।
III. यह राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में एक प्रतिशत से भी कम योगदान देता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्गों को किस वर्ष यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था?
(1) 2010
(2) 2013
(3) 2015
(4) 2019
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. राजस्थान के यूनेस्को विश्व धरोहर पहाड़ी दुर्गों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इस सूची में मेहरानगढ़ दुर्ग और जूनागढ़ दुर्ग के साथ-साथ कई अन्य छोटे दुर्ग भी शामिल हैं।
(2) केवल धौलपुर क्षेत्र के लाल बलुआ पत्थर से बने दुर्गों

Downloaded from www.pdf.tube

होगा।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. निम्नलिखित जानकारी को पढ़िए और राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) के होटलों (सूची I) को उनके संबंधित स्थानों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आर.टी.डी.सी. होटल)
A. होटल घूमर
B. होटल मूमल
C. होटल शिखर
D. होटल कजरी
सूची II: (स्थान)
i. माउंट आबू
ii. उदयपुर
iii. जोधपुर
iv. जैसलमेर
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना, 2022 के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह अनिवार्य करता है कि पंजीकरण के लिए पात्र होने के लिए एक ग्रामीण गेस्ट हाउस में न्यूनतम 50 विलासितापूर्ण कमरे होने चाहिए।
(2) यह ग्रामीण गेस्ट हाउस, कृषि-पर्यटन इकाइयों और शिविर स्थलों की स्थापना को बढ़ावा देता है।
(3) यह ग्रामीण पर्यटन इकाइयां स्थापित करने के लिए मुद्रांक शुल्क पर 100% छूट का प्रावधान करता है।
(4) इस योजना का उद्देश्य पर्यटन को ग्राम की संस्कृति से जोड़कर स्थानीय रोजगार सृजित करना और ग्रामीण पलायन को रोकना है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. भारत में हेरिटेज रेल पर्यटन की अवधारणा का सूत्रपात करते हुए राजस्थान में सर्वप्रथम कौन सी विलासितापूर्ण पर्यटक ट्रेन शुरु की गई थी?
(1) रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
(2) हेरिटेज ऑन व्हील्स
(3) पैलेस ऑन व्हील्स
(4) महाराजा एक्सप्रेस
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) से जुड़े निम्नलिखित कार्यों और गतिविधियों पर विचार कीजिए:
I. राज्य के स्वामित्व वाले बजट और हेरिटेज होटलों का प्रबंधन करना।
II. विभिन्न सांस्कृतिक मेलों और उत्सवों का आयोजन और प्रचार करना।
III. पैकेज टूर सहित पर्यटक परिवहन सुविधाएं प्रदान करना।
IV. राजस्थान आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय वीजा जारी करना।
V. पैलेस ऑन व्हील्स ट्रेन के प्रबंधन में सहयोग करना।
आर.टी.डी.सी. द्वारा उपरोक्त में से कौन सी गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

59. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में बेणेश्वर मेले के सांस्कृतिक महत्व का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) यह उत्तर भारत का एक विशाल पशु मेला है, जो मुख्य रूप से ऊंट और घोड़े के व्यापार के लिए आयोजित किया जाता है।
(2) यह क्षेत्रीय शांति के लिए अजमेर दरगाह में आयोजित सूफी संगीतकारों का एक वार्षिक समागम है।
(3) यह मानसूनी वर्षा के आगमन का उल्लास मनाने के लिए थार मरुस्थल में मनाया जाने वाला एक मौसमी उत्सव है।
(4) यह सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर आयोजित होने वाला आदिवासियों का 'महाकुंभ' है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. एक पर्यटन विकासकर्ता साहसिक पर्यटन गतिविधियों में निवेश करने की योजना बना रहा है। निम्नलिखित में से कौन सा गतिविधि-स्थान संयोजन राज्य के भौगोलिक लाभों को सबसे सटीक रूप से लागू करता है?
(1) जैसलमेर में श्वेत-जल नदी राफ्टिंग
(2) जैसलमेर में ड्यून बैशिंग और ऑफ-रोडिंग
(3) माउंट आबू में उच्च तुंगता वाली हिम ट्रेकिंग
(4) उदयपुर में गहरे समुद्र में गोताखोरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख पर्यटन स्थलों को भौगोलिक रूप से पश्चिम से पूर्व की ओर व्यवस्थित कीजिए:
1. जैसलमेर का दुर्ग
2. मेहरानगढ़ का दुर्ग
3. आमेर का दुर्ग
4. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) 1, 2, 3, 4
(2) 2, 1, 4, 3
(3) 1, 3, 2, 4
(4) 4, 3, 2, 1
(5) प्रश्न अनुत्तरित

i. जोधपुर
ii. जैसलमेर
iii. जयपुर
iv. बीकानेर

सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. मरु पर्यटन के प्रमुख केंद्र सैम सैंड ड्यून्स के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे विलासितापूर्ण टेंट वाले शिविरों, ऊंट सफारी और राजस्थानी लोक कलाओं के प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करते हैं।
(2) वे अलवर जिले के निकट अरावली श्रेणी के पूर्वी छोर पर स्थित हैं।
(3) इन टीलों को सेना द्वारा पूर्णतः घेरा गया है और विदेशी पर्यटकों के लिए प्रतिबंधित किया गया है।
(4) उनकी विशेषता इस क्षेत्र में पाए जाने वाले विशाल काले ज्वालामुखीय रेत के विस्तार हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. राजस्थान में निम्नलिखित बाघ अभयारण्यों की स्थापना/घोषणा के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए, जो सबसे पहले से नवीनतम तक हो:
(1) सरिस्का, रणथंभौर, मुकुंदरा हिल्स, रामगढ़ विषधारी
(2) रणथंभौर, सरिस्का, मुकुंदरा हिल्स, रामगढ़ विषधारी
(3) रणथंभौर, मुकुंदरा हिल्स, सरिस्का, रामगढ़ विषधारी
(4) सरिस्का, मुकुंदरा हिल्स, रणथंभौर, रामगढ़ विषधारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. निम्नलिखित में से कौन सी घटना या प्रतियोगिता पारंपरिक रूप से जैसलमेर में आयोजित होने वाले मरु महोत्सव का हिस्सा नहीं है?
(1) साफा बांधने की प्रतियोगिता
(2) हाथी दौड़
(3) मिस्टर डेजर्ट प्रतियोगिता
(4) कैमल पोलो
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जैसलमेर में मरुस्थलीय सफारी के लिए उच्चतम पर्यटन सीजन अक्टूबर से मार्च तक शीतकालीन महीनों के दौरान होता है।
कारण (R): थार मरुस्थल की कठोर और अत्यधिक ऊष्म जलवायु बाह्य गतिविधियों और टीलों पर शिविर लगाने को अत्यंत कष्टदायक बना देती है।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. जैसलमेर का प्रसिद्ध मरु महोत्सव आधिकारिक तौर पर जिला प्रशासन द्वारा किस राज्य सरकार की इकाई के सहयोग से आयोजित किया जाता है?
(1) राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम
(2) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
(3) पर्यटन विभाग, राजस्थान
(4) राजस्थान वन विभाग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों और उनके स्थानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. श्रीनाथजी का मंदिर नाथद्वारा में स्थित है।
II. करणी माता मंदिर, जो अपने चूहों के लिए प्रसिद्ध है, देशनोक में स्थित है।
III. प्रमुख ब्रह्मा मंदिर पुष्कर में स्थित है।
IV. गोविंद देव जी मंदिर उदयपुर में स्थित एक प्राथमिक धार्मिक स्थल है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. उनकी प्राथमिक धार्मिक संबद्धता के आधार पर राजस्थान के निम्नलिखित ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों में से विषम का चयन कीजिए।
(1) रणकपुर मंदिर
(2) दिलवाड़ा मंदिर
(3) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह
(4) लोद्रवा मंदिर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. राजस्थान में पर्यटन विभाग द्वारा संचालित 'पेइंग गेस्ट योजना' का मूल उद्देश्य क्या है?
(1) विदेशी पर्यटकों को अतिरिक्त आय के लिए स्थानीय उद्योगों में अस्थायी रूप से कार्य करने की अनुमति देना।
(2) परिवारों के साथ स्थानीय संस्कृति का प्रत्यक्ष अनुभव और वहनीय आवास प्रदान करना।
(3) उच्च श्रेणी के पंचसितारा होटलों में ठहरने वाले पर्यटकों के आवास की लागत को अनुदान देना।
(4) यह अनिवार्य करना कि प्रत्येक पर्यटक को ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश करने से पूर्व एक निश्चित सांस्कृतिक कर देना

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान से जुड़ी एक विलासितापूर्ण या हेरिटेज पर्यटक ट्रेन नहीं है?
(1) पैलेस ऑन व्हील्स
(2) रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
(3) हेरिटेज ऑन व्हील्स
(4) डेक्कन ओडिसी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. राजस्थान के महत्वपूर्ण इस्लामी तीर्थ और विरासत स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह अजमेर में स्थित है।
II. अढाई दिन का झोंपड़ा अजमेर में स्थित है।
III. सैयदी फखरुद्दीन की दरगाह गलियाकोट में स्थित है।
IV. मीरान साहब की दरगाह अजमेर के तारागढ़ दुर्ग के भीतर स्थित है।
V. दिल्ली की जामा मस्जिद का निर्माण एक राजपूत राजा ने करवाया था।
राजस्थान के धार्मिक पर्यटन से संबंधित स्थलों के बारे में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान में समर्पित 'पर्यटन पुलिस' बल किस वर्ष तैनात किया गया था?
(1) 1990
(2) 2000
(3) 2015
(4) 2020
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. राजस्थान में पर्यटन अवसंरचना के विकास के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) राजस्थान पर्यटन इकाई नीति किसी भी पैतृक हवेली को व्यावसायिक होटल में परिवर्तित करने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाती है।
(2) राज्य ने उदयपुर, जोधपुर और किशनगढ़ जैसे पर्यटन केंद्रों के लिए हवाई संपर्क में सुधार करने पर विशेष बल दिया है।
(3) आर.टी.डी.सी. स्थानीय स्तर पर दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए बसों के एक बेड़े का संचालन करता है।
(4) राज्य सड़क मार्ग से यात्रा करने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए प्रमुख राजमार्गों के किनारे मध्य-मार्ग सुविधाओं को बढ़ावा देता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

NODIA

75. एक पर्यटक सघन वन के भीतर स्थित मध्यकालीन दुर्ग, भगवान गणेश को समर्पित एक प्राचीन मंदिर और वन्यजीवों में बाघों के दर्शन वाले यात्रा कार्यक्रम का अनुभव करना चाहता है। उन्हें कौन सा गंतव्य चुनना चाहिए?
(1) सरिस्का बाघ अभयारण्य
(2) कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
(3) मुकुंदरा हिल्स बाघ अभयारण्य
(4) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. राजस्थान की पर्यटन नीतियों के अंतर्गत प्रदान किए जाने वाले प्रोत्साहनों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) विदेशी पर्यटकों को राज्य के स्वामित्व वाले स्मारकों में किसी भी प्रवेश शुल्क के भुगतान से पूर्णतः छूट दी गई है।
(2) हेरिटेज होटलों से उच्च व्यावसायिक शुल्क के स्थान पर औद्योगिक विद्युत शुल्क लिया जाता है।
(3) आर.टी.डी.सी. जयपुर आने वाले सभी विदेशी पर्यटकों को अनिवार्य निःशुल्क हवाई किराया प्रदान करता है।
(4) राज्य साहसिक पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को प्रतिबंधित करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. पर्यटन मंत्रालय और राजस्थान पर्यटन के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत, निम्नलिखित में से कौन सा मानदंड मुख्य रूप से 'हेरिटेज होटल' को परिभाषित करता है?
(1) एक नवनिर्मित होटल जिसे दृश्य आकर्षण के लिए ऐतिहासिक प्रासाद की तरह दिखने के लिए अभिकल्पित किया गया हो।
(2) यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के क्षेत्र के 5 किलोमीटर के दायरे में स्थित कोई भी होटल।
(3) 1950 से पूर्व निर्मित एक ऐतिहासिक संपत्ति, दुर्ग या हवेली जिसे होटल में परिवर्तित कर दिया गया हो।
(4) विशेष रूप से मुगल राजवंश के वंशजों के स्वामित्व और संचालन वाली संपत्ति।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. राजस्थान के निम्नलिखित ऐतिहासिक दुर्गों और जिन विशिष्ट पहाड़ियों पर वे निर्मित हैं, उनमें से विषम का चयन कीजिए।
(1) मेहरानगढ़ का दुर्ग - चिड़िया-टूँक पहाड़ी
(2) आमेर का दुर्ग - अरावली पर्वतमाला
(3) जैसलमेर का दुर्ग - त्रिकुटा पहाड़ी
(4) जूनागढ़ का दुर्ग - अरावली शिखर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. उदयपुर में उत्साहपूर्वक मनाया जाने वाला "मेवाड़ उत्सव" विशेष रूप से किस ऋतु के आगमन का प्रतीक है?
(1) शीत ऋतु
(2) वसंत ऋतु
(3) वर्षा ऋतु
(4) शरद ऋतु

पर्यटन विभाग के पास है। विभाग समय-समय पर परीक्षाओं का आयोजन करता है ताकि पर्यटकों को प्रामाणिक और ऐतिहासिक रूप से सटीक जानकारी प्राप्त हो सके। यह सुनिश्चित करता है कि गाइडों का व्यवहार पेशेवर हो और वे राज्य की छवि को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करें। इससे पर्यटन क्षेत्र में पारदर्शिता बनी रहती है और पर्यटकों को सुरक्षा प्राप्त होती है।

70. (2) यह साप्ताहिक रूप से विरासत और वन्यजीव स्थलों को आच्छादित करने वाला एक विलासितापूर्ण होटल अनुभव प्रदान करती है
'पैलेस ऑन व्हील्स' को विलासितापूर्ण पर्यटन का सफल प्रतिरूप इसलिए माना जाता है क्योंकि यह एक गतिशील प्रासाद की भाँति है। यह रेल सात दिनों की यात्रा के दौरान पर्यटकों को राजस्थान के प्रमुख दुर्गों, महलों और रणथंभौर जैसे वन्यजीव उद्यानों का दर्शन कराती है। इसमें पांच सितारा जैसी सुविधाएं, उत्कृष्ट भोजन और व्यक्तिगत सेवा प्रदान की जाती है। यह अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को बिना किसी यात्रा संबंधी असुविधा के राज्य की सांस्कृतिक विविधता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती है।

71. (4) डेक्कन ओडिसी
पैलेस ऑन व्हील्स, रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स और हेरिटेज ऑन व्हील्स मुख्य रूप से राजस्थान की संस्कृति और विरासत को प्रदर्शित करने वाली विलासितापूर्ण पर्यटक रेलें हैं। इनके मार्ग और संचालन में राजस्थान का प्रमुख स्थान रहता है। इसके विपरीत, 'डेक्कन ओडिसी' मुख्य रूप से महाराष्ट्र राज्य और उसके कोंकण तट की सुंदरता को प्रदर्शित करने वाली रेल है। यद्यपि यह भी एक विलासितापूर्ण सेवा है, परंतु इसका प्राथमिक परिचालन क्षेत्र राजस्थान के स्थान पर पश्चिमी भारत का डेक्कन क्षेत्र है।

72. (1) केवल I, II, III और IV
राजस्थान में कई महत्वपूर्ण इस्लामी स्थल हैं जो धार्मिक पर्यटन का आधार हैं। अजमेर में सूफी संत की दरगाह, अढाई दिन का झोंपड़ा और तारागढ़ दुर्ग के भीतर मीरान साहब की दरगाह स्थित हैं। डूंगरपुर के गलियाकोट में बोहरा संप्रदाय की प्रसिद्ध दरगाह है। हालाँकि, कथन V त्रुटिपूर्ण है क्योंकि दिल्ली की जामा मस्जिद का निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ ने करवाया था, किसी राजपूत शासक ने नहीं। राजस्थान के मुस्लिम स्मारक अपनी अनूठी स्थापत्य शैली और सद्भाव के लिए विख्यात हैं।

73. (2) 2000
राजस्थान में पर्यटकों को एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2000 में 'पर्यटन पुलिस' बल की स्थापना की गई थी। इस विशेष बल का प्राथमिक कार्य पर्यटन स्थलों पर आगंतुकों को असामाजिक तत्वों और किसी भी प्रकार के उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करना है। इसके कर्मी प्रमुख स्मारकों और मेलों में तैनात रहते हैं ताकि पर्यटकों की शिकायतों का त्वरित निवारण किया जा सके। इस पहल ने वैश्विक स्तर पर राजस्थान को एक पर्यटक-अनुकूल राज्य के रूप में स्थापित किया है।

74. (1) राजस्थान पर्यटन इकाई नीति किसी भी पैतृक हवेली को व्यावसायिक होटल में परिवर्तित करने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाती है
राजस्थान की पर्यटन नीति वास्तव में पैतृक हवेलियों और प्रासादों को विरासत होटलों में परिवर्तित करने हेतु सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करती है। यह नीति ऐतिहासिक संपत्तियों के संरक्षण और राजस्व सृजन का एक सफल माध्यम है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार हवाई कनेक्टिविटी बढ़ाने, राजमार्गों पर सुविधाएं विकसित करने और स्थानीय परिवहन में सुधार करने पर निरंतर ध्यान दे रही है। इन प्रयासों का उद्देश्य पर्यटकों की यात्रा को अधिक सुगम, आरामदायक और सुखद बनाना है, जिससे पर्यटन की सतत वृद्धि हो सके।

75. (4) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान एक अनूठा गंतव्य है जहाँ प्रकृति, धर्म और इतिहास का संगम मिलता है। यहाँ सघन वनों के मध्य अरावली और विंध्य पहाड़ियों के संगम पर 10वीं शताब्दी का विशाल रणथंभौर दुर्ग स्थित है। दुर्ग के भीतर प्रसिद्ध त्रिनेत्र गणेश मंदिर है, जहाँ श्रद्धालु बड़ी संख्या में आते हैं। साथ ही, यह उद्यान अपने बाघों के लिए विश्व विख्यात है। यहाँ आने वाले पर्यटक एक ही यात्रा में वन्यजीव सफारी, ऐतिहासिक भ्रमण और आध्यात्मिक दर्शन का आनंद ले सकते हैं।

76. (2) हेरिटेज होटलों से उच्च व्यावसायिक शुल्क के स्थान पर औद्योगिक विद्युत शुल्क लिया जाता है
राजस्थान सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने के उपरांत विरासत होटलों और अन्य पर्यटन इकाइयों को महत्वपूर्ण वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किए हैं। इनमें सबसे प्रमुख लाभ यह है कि इन संपत्तियों से विद्युत का शुल्क व्यावसायिक दरों के स्थान पर कम दरों वाले औद्योगिक स्लैब पर लिया जाता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें मुद्रांक शुल्क और अन्य करों में भी राहत दी जाती है। इन उपायों का उद्देश्य पुरानी ऐतिहासिक इमारतों के रखरखाव की उच्च लागत को वहनीय बनाना और निवेश को बढ़ाना है।

77. (3) 1950 से पूर्व निर्मित एक ऐतिहासिक संपत्ति, दुर्ग या हवेली जिसे होटल में परिवर्तित कर दिया गया हो
पर्यटन मंत्रालय के मानकों के अनुसार, 'विरासत होटल' केवल उन्हीं संपत्तियों को माना जा सकता है जिनका निर्माण वर्ष 1950 से पूर्व हुआ हो। ये होटल पुराने प्रासादों, दुर्गों, हवेलियों या पूर्व शिकारगाहों में स्थित होने चाहिए। उनकी मूल वास्तुकला और पारंपरिक स्वरूप को बनाए रखना अनिवार्य है ताकि पर्यटकों को राजस्थान के राजसी अतीत का वास्तविक अनुभव प्राप्त हो सके। आधुनिक निर्माण को विरासत होटल का दर्जा नहीं दिया जा सकता, भले ही वे प्राचीन शैली में निर्मित हों।

78. (4) जूनागढ़ का दुर्ग - अरावली शिखर
राजस्थान के अधिकांश दुर्ग पहाड़ियों पर स्थित हैं, जैसे मेहरानगढ़ चिड़िया-टूँक पर और जैसलमेर का किला त्रिकुटा पहाड़ी पर निर्मित है। इसके विपरीत, बीकानेर का जूनागढ़ दुर्ग एक 'धान्वन दुर्ग' और 'भूमि दुर्ग' की श्रेणी में आता है, जो समतल भूमि पर बना है। यह किसी पहाड़ी शिखर पर स्थित

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (1) 1956
राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र को संगठित रुप प्रदान करने के लिए वर्ष 1956 में पृथक पर्यटन विभाग की स्थापना की गई थी। इस विभाग का मुख्य उत्तरदायित्व राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक स्मारकों का वैश्विक स्तर पर प्रचार करना है। इससे पूर्व पर्यटन प्रबंधन का कार्य विभिन्न सरकारी निकायों द्वारा किया जाता था। विभाग की स्थापना ने राज्य में पर्यटन को एक प्रमुख आर्थिक आधार के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान भारत का प्रथम राज्य है जिसने पर्यटन क्षेत्र को उद्योग का दर्जा प्रदान किया था। यह महत्वपूर्ण निर्णय वर्ष 1989 में मोहम्मद यूनुस समिति की अनुशंसाओं के आधार पर लिया गया था। इस दर्जे के माध्यम से पर्यटन इकाइयों को विभिन्न करों और विद्युत शुल्कों में औद्योगिक दरों का लाभ प्राप्त होता है। इससे राज्य में पर्यटन आधारभूत संरचना के विकास और निजी निवेश को प्रोत्साहित करने में पिछले तीन दशकों में विशेष सहायता प्राप्त हुई है।

3. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान में पर्यटन विकास हेतु भौगोलिक क्षेत्रों को विशिष्ट परिपथों में विभाजित किया गया है। मरु त्रिकोण में जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर जैसे मरुस्थलीय जिले सम्मिलित हैं। मेवाड़ परिपथ के अंतर्गत उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और राजसमंद के ऐतिहासिक स्थल आते हैं। ढूँढाड़ परिपथ मुख्य रूप से जयपुर और समीपवर्ती क्षेत्रों को समाहित करता है। वागड़ परिपथ राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों के प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौंदर्य को प्रदर्शित करता है।

4. (4) राजस्थान को एक प्रमुख घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में सतत रूप से बढ़ावा देना
राजस्थान पर्यटन नीति 2020 का प्राथमिक लक्ष्य राज्य को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सुरक्षित और आकर्षक गंतव्य के रूप में स्थापित करना है। यह नीति पर्यटन उत्पादों के विविधीकरण और संधारणीय विकास पर बल देती है। इसका उद्देश्य स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना और ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण करते हुए पर्यटकों को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करना है। यह नीति रोजगार के नवीन अवसर सृजित करने और ग्रामीण पर्यटन को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है।

5. (1) केवल I और II
राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह विदेशी मुद्रा अर्जन का प्रमुख स्रोत है। यह क्षेत्र प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों स्थानीय निवासियों और शिल्पकारों के लिए रोजगार सुनिश्चित करता है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का योगदान महत्वपूर्ण है, जो सामान्यतः 1% से अधिक रहता है। अतः इस क्षेत्र का निरंतर विकास राज्य की आर्थिक संवृद्धि और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अनिवार्य माना जाता है।

6. (2) 2013
यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति ने वर्ष 2013 में राजस्थान के छह ऐतिहासिक पहाड़ी दुर्गों को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया था। इन दुर्गों का चयन उनकी अद्वितीय सैन्य वास्तुकला, रणनीतिक स्थिति और ऐतिहासिक महत्व के आधार पर किया गया था। यह अंतरराष्ट्रीय मान्यता राजस्थान के पर्यटन को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाने और विरासत संरक्षण के प्रयासों को सुदृढ़ करने में मील का पत्थर सिद्ध हुई है। यह सम्मान राज्य के सांस्कृतिक गौरव को दर्शाता है।

7. (4) इस सूची में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, जैसलमेर और गागरोन के दुर्ग शामिल हैं
यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्गों में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, जैसलमेर और गागरोन सम्मिलित हैं। ये दुर्ग अपनी भौगोलिक विविधता और स्थापत्य शैली के लिए विख्यात हैं। चित्तौड़गढ़ अपनी विशालता, कुंभलगढ़ अपनी लंबी प्राचीर और गागरोन जल दुर्ग श्रेणी के लिए विशिष्ट हैं। इन स्थलों का चयन सांस्कृतिक विरासत के उत्कृष्ट मानदंडों को पूरा करने के कारण किया गया था, जो राजपूत स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करते हैं।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
राजस्थान में पुरानी हवेलियों और प्रासादों को विरासत होटलों में परिवर्तित करना ऐतिहासिक संपत्तियों के संरक्षण का एक प्रभावी मार्ग सिद्ध हुआ है। इन ऐतिहासिक भवनों के रखरखाव की लागत अत्यधिक होती है, जिसकी पूर्ति पर्यटन से प्राप्त आय के माध्यम से की जाती है। यह प्रतिरुप न केवल स्थापत्य विरासत को नष्ट होने से बचाता है, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए पर्यटन के माध्यम से सतत राजस्व और रोजगार के नवीन अवसर भी सुनिश्चित करता है।

9. (3) मेहरानगढ़ का दुर्ग
वर्ष 2013 में यूनेस्को द्वारा घोषित राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्गों की सूची में मेहरानगढ़ दुर्ग सम्मिलित नहीं था। यद्यपि जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग एक अत्यंत भव्य और ऐतिहासिक स्थल है, परंतु चयनित सूची में केवल चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, जैसलमेर, आमेर और गागरोन को ही स्थान प्राप्त हुआ था। मेहरानगढ़ अपनी अद्वितीय बनावट और उत्कृष्ट संग्रहालय के लिए पर्यटकों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है, लेकिन

NODIA

तकनीकी रूप से यह उस विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय नामांकन का भाग नहीं था।

10. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के दुर्ग अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक पहचान के लिए प्रसिद्ध हैं। भटनेर दुर्ग हनुमानगढ़ में स्थित है और इसे उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा जाता है। बीकानेर का जूनागढ़ दुर्ग अपनी भव्य नक्काशी के लिए विख्यात है। तारागढ़ दुर्ग बूंदी में स्थित है, जो अपने उत्कृष्ट भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है। लोहागढ़ दुर्ग भरतपुर में स्थित है और इसे इसकी अजेय शक्ति के कारण 'मिट्टी का दुर्ग' होने के उपरांत भी एक अभेद्य किला माना जाता है।

11. (4) हवा महल
उम्मेद भवन, रामबाग और ताज लेक पैलेस राजस्थान की ऐसी ऐतिहासिक संरचनाएं हैं जिनका उपयोग वर्तमान में विलासितापूर्ण विरासत होटलों के रूप में किया जा रहा है। इसके विपरीत, जयपुर का हवा महल एक संरक्षित ऐतिहासिक स्मारक और संग्रहालय है जिसका संचालन पर्यटन विभाग द्वारा किया जाता है। यहाँ पर्यटकों के ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। यह पाँच मंजिला भवन अपनी अद्भुत वास्तुकला और झरोखों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसे होटल में परिवर्तित नहीं किया गया है।

12. (3) केवल I, II और IV
जयपुर नगर में नाहरगढ़ दुर्ग, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय और जंतर मंतर जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल स्थित हैं। नाहरगढ़ दुर्ग पहाड़ी पर स्थित है और नगर का विहंगम दृश्य प्रदान करता है। अल्बर्ट हॉल राज्य का प्राचीनतम संग्रहालय है और जंतर मंतर प्रसिद्ध खगोलीय वेधशाला है। इसके विपरीत, सहेलियों की बाड़ी उदयपुर जिले में स्थित है, जिसका निर्माण महाराणा संग्राम सिंह ने करवाया था। अतः वह भौगोलिक रूप से जयपुर के अंतर्गत नहीं आता है।

13. (3) यह प्राचीन हिंदू ग्रिड पद्धति और वास्तुकला पर आधारित एक असाधारण शहरी नियोजन प्रदर्शित करता है
जयपुर के पुराने परकोटा क्षेत्र को वर्ष 2019 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। यह सम्मान मुख्य रूप से इसके असाधारण नगर नियोजन और स्थापत्य कला के लिए दिया गया था। नगर का निर्माण प्राचीन हिंदू ग्रिड प्रणाली और शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। इसकी चौड़ी सड़कें और व्यापारिक गलियारे 18वीं शताब्दी के आधुनिक शहरी नियोजन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो इसे पर्यटकों के लिए अत्यंत आकर्षक बनाते हैं।

14. (4) वृहत् सम्राट यंत्र
जयपुर की जंतर मंतर वेधशाला में स्थित वृहत् सम्राट यंत्र विश्व की विशालतम सौर घड़ी है। यह यंत्र समय को 2 सेकंड की सटीकता के साथ मापने की क्षमता रखता है। लगभग 27 मीटर ऊँचा यह विशाल पाषाण यंत्र खगोलीय गणनाओं के लिए महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित करवाया गया था। पर्यटक इस संरचना के माध्यम से प्राचीन भारतीय विज्ञान और खगोलशास्त्र की अभूतपूर्व प्रगति को देख सकते हैं, जो आज भी सटीक गणना करती है।

15. (1) आमेर का दुर्ग, जंतर मंतर, हवा महल, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
जयपुर के ऐतिहासिक स्थलों का निर्माण विभिन्न कालखंडों में हुआ था। आमेर दुर्ग प्राचीनतम है जिसका मुख्य निर्माण 16वीं शताब्दी में राजा मान सिंह प्रथम ने किया। जंतर मंतर वेधशाला का निर्माण 1734 में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा पूर्ण किया गया। हवा महल का निर्माण 1799 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। अल्बर्ट हॉल संग्रहालय का निर्माण सबसे अंत में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय के समय में प्रारंभ हुआ था।

16. (2) विद्याधर भट्टाचार्य
जयपुर नगर की स्थापना 1727 में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी, परंतु इसके मुख्य वास्तुकार और नगर नियोजक विद्याधर भट्टाचार्य थे। उन्होंने बंगाल के शास्त्रीय वास्तुकला सिद्धांतों और शिल्प शास्त्र का उपयोग करके नगर का मानचित्र तैयार किया था। जयपुर को नौ वर्गों के सिद्धांत पर आधारित भारत का प्रथम योजनाबद्ध नगर माना जाता है। भट्टाचार्य की सूक्ष्म योजना के कारण ही आज भी जयपुर का परकोटा क्षेत्र अपनी व्यवस्थित गलियों के लिए विश्व स्तर पर प्रशंसित है।

17. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
जयपुर के प्रतिष्ठित स्मारकों का निर्माण विभिन्न दूरदर्शी शासकों द्वारा किया गया था। जंतर मंतर का निर्माण खगोलशास्त्री महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने करवाया था। भव्य हवा महल का निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह की देन है। अल्बर्ट हॉल संग्रहालय का निर्माण महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान हुआ था। आमेर के प्रसिद्ध दुर्ग और प्रासादों के मुख्य भाग का निर्माण राजा मान सिंह प्रथम द्वारा किया गया था, जो कला के महान संरक्षक थे।

18. (1) पद्मिनी महल
जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग परिसर में फूल महल, मोती महल और शीश महल जैसे अत्यंत सुंदर और कलात्मक प्रासाद स्थित हैं, जो अपनी चित्रकारी और नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके विपरीत, पद्मिनी महल चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित है और यह मेवाड़ की रानी पद्मिनी के इतिहास से संबद्ध है। मेहरानगढ़ के प्रासाद मारवाड़ की वास्तुकला और राजसी वैभव को प्रदर्शित करते हैं, जबकि पद्मिनी महल का संबंध मेवाड़ के शौर्य और जौहर की ऐतिहासिक घटनाओं से है।

19. (1) केवल I
जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग 'चिड़िया-टूँक' नामक पहाड़ी पर स्थित है। जसवंत थड़ा का निर्माण महाराजा सरदार सिंह ने जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में करवाया था। उम्मेद भवन पैलेस विश्व के विशालतम निजी आवासों में से एक है। मंडोर उद्यान में मारवाड़ शासकों की सुंदर देवल या छतरियां स्थित हैं। इस भव्य दुर्ग की नींव 1459 में राव जोधा द्वारा रखी गई थी, जो

Click Here to Buy book on Amazon

मारवाड़ के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

20. (4) इसका उपयोग ब्राह्मण समुदाय द्वारा घरों को ठंडा रखने और दीमक जैसे कीटों को दूर भगाने के लिए किया जाता था
जोधपुर को 'नीली नगरी' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ के पुराने नगर में घरों को पारंपरिक रूप से नीले रंग से रंगा गया है। इसके पीछे मुख्य वैज्ञानिक कारण यह है कि नीला रंग ऊष्मा को परावर्तित करता है और घरों को शीतल रखने में सहायता करता है। साथ ही, चूने में तांबा सल्फेट मिलाने से प्राप्त यह रंग दीमक और अन्य कीटों को दूर रखने में प्रभावी था। ऐतिहासिक रूप से यह रंग विशिष्ट समुदायों की पहचान भी रहा है।

21. (3) जसवंत थड़ा - 'मारवाड़ का ताजमहल' के रूप में जाना जाता है
जोधपुर में स्थित जसवंत थड़ा अपनी उत्कृष्ट श्वेत संगमरमर की नक्काशी और स्थापत्य कला के कारण 'मारवाड़ का ताजमहल' कहलाता है। उम्मेद भवन पैलेस मुख्य रूप से छित्तर पत्थर से निर्मित है। मंडोर उद्यान अपने ऐतिहासिक स्मारकों और छतरियों के लिए प्रसिद्ध है। बालसमंद झील एक कृत्रिम झील है जिसे पेयजल आपूर्ति हेतु निर्मित किया गया था। जसवंत थड़ा का निर्माण 1899 में महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में उनके पुत्र द्वारा किया गया था।

22. (3) A सही है लेकिन R गलत है
जोधपुर राजस्थान के मरु त्रिकोण का अनिवार्य भाग है और इसे मरुस्थल के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। पर्यटन मानचित्र पर इसे जैसलमेर और बीकानेर के साथ प्रमुखता से सम्मिलित किया गया है। हालाँकि, कारण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि जोधपुर ऐतिहासिक रूप से मेवाड़ साम्राज्य की नहीं, बल्कि मारवाड़ साम्राज्य की राजधानी था। मेवाड़ की राजधानी उदयपुर और चित्तौड़गढ़ रही है। जोधपुर के राठौड़ शासकों ने थार मरुस्थल के विशाल क्षेत्र पर शासन किया था।

23. (4) महाराणा उदय सिंह II
झीलों की नगरी उदयपुर की स्थापना 1559 में मेवाड़ के शासक महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने की थी। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से उन्होंने अरावली की पहाड़ियों के मध्य इस सुरक्षित स्थान को अपनी नवीन राजधानी के रूप में चुना था। उनके दूरदर्शी निर्णय के परिणामस्वरूप ही पिछोला झील के तट पर इस सुंदर नगर का विकास हुआ। महाराणा उदय सिंह के नाम पर ही इस नगर का नाम उदयपुर पड़ा, जो आज विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में अग्रणी है।

24. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
उदयपुर की झीलें अपनी विशिष्ट संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। पिछोला झील के मध्य जग मंदिर और ताज लेक पैलेस स्थित हैं। फतेह सागर झील में नेहरू पार्क और सौर वेधशाला प्रमुख आकर्षण हैं। जयसमंद झील, जिसे ढेबर झील भी कहा जाता है, भारत की दूसरी विशालतम कृत्रिम झील है। उदय सागर झील का निर्माण महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने 1565 में करवाया था। ये सभी जलाशय उदयपुर के पारिस्थितिक संतुलन और पर्यटन के लिए आधार प्रदान करते हैं।

25. (3) उदयपुर का सिटी पैलेस मुख्य रूप से फतेह सागर झील के तट पर निर्मित है
उदयपुर का विशाल सिटी पैलेस फतेह सागर झील के तट पर नहीं, बल्कि पिछोला झील के पूर्वी किनारे पर स्थित है। यह प्रासाद स्थापत्य कला का अद्भुत मिश्रण है जिसका निर्माण विभिन्न महाराणाओं द्वारा कई शताब्दियों में किया गया। सज्जनगढ़ पैलेस पहाड़ी पर स्थित होने के कारण 'मानसून पैलेस' कहलाता है। सहेलियों की बाड़ी अपने फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है और जगदीश मंदिर एक प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र है। सिटी पैलेस उदयपुर पर्यटन का मुख्य केंद्र बिंदु है।

26. (1) केवल I और II
उदयपुर में आहड़ की छतरियां मेवाड़ के महाराणाओं का शाही श्मशान स्थल है। बागोर की हवेली पिछोला झील के तट पर स्थित है और इसमें विश्व की विशालतम पगड़ी प्रदर्शित है। ये दोनों स्थल उदयपुर के प्रमुख आकर्षण हैं। इसके विपरीत, पटवों की हवेली जैसलमेर जिले में स्थित है और यह अपनी पत्थर की सूक्ष्म जालीदार नक्काशी के लिए विख्यात है। अतः पटवों की हवेली उदयपुर के दर्शनीय स्थलों की सूची में सम्मिलित नहीं है और जैसलमेर का गौरव है।

27. (4) यह उच्च स्तरीय आयोजनों के लिए ऐतिहासिक महल, शांत झीलें और उत्कृष्ट आतिथ्य प्रदान करता है
उदयपुर वैश्विक स्तर पर एक उत्कृष्ट विवाह पर्यटन स्थल के रूप में अपनी प्राकृतिक सुंदरता और राजसी वैभव के कारण लोकप्रिय है। यहाँ के ऐतिहासिक प्रासाद, जैसे जग मंदिर और सिटी पैलेस, विलासितापूर्ण विवाह आयोजनों के लिए एक अद्वितीय वातावरण प्रदान करते हैं। शांत झीलें और अरावली की पहाड़ियाँ इस नगर को एक सौंदर्यपूर्ण परिवेश देती हैं। यहाँ का उत्कृष्ट आतिथ्य और आधुनिक सुविधाएं विश्व भर के पर्यटकों को विशेष आयोजनों के लिए आकर्षित करती हैं।

28. (2) दिसंबर
शिल्पग्राम उत्सव उदयपुर में प्रतिवर्ष दिसंबर माह के अंतिम सप्ताह में आयोजित किया जाता है। यह उत्सव पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा संचालित होता है और ग्रामीण कला, शिल्प तथा लोक संस्कृति के संरक्षण को समर्पित है। इस दस दिवसीय मेले में भारत के विभिन्न राज्यों के शिल्पकार और लोक कलाकार सम्मिलित होते हैं। यह पर्यटकों को ग्रामीण जीवन और पारंपरिक कलाओं का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को विशेष प्रोत्साहन मिलता है।

29. (1) 1, 2, 3, 4
राजस्थान के प्रमुख पर्यटन नगरों को पश्चिम से पूर्व की दिशा में व्यवस्थित करने पर सर्वप्रथम जैसलमेर आता है जो थार मरुस्थल के मध्य स्थित है। इसके पश्चात पूर्व की ओर बढ़ने पर जोधपुर मिलता है जिसे मरुस्थल का प्रवेश द्वार कहा जाता है। तत्पश्चात मध्य राजस्थान में स्थित राज्य की राजधानी जयपुर

Downloaded from www.pdf.tube

मरु महोत्सव का पूरा केंद्र केवल ऊंटों और थार मरुस्थल की स्थानीय परंपराओं तथा कलाओं पर ही केंद्रित रहता है।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
जैसलमेर में पर्यटन के लिए अक्टूबर से मार्च तक का समय सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है क्योंकि इस अवधि में मौसम सुखद रहता है। इसके विपरीत, ग्रीष्म ऋतु में थार मरुस्थल का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है, जिससे बाहरी गतिविधियाँ और टीलों पर शिविर लगाना स्वास्थ्य के लिए कष्टदायक और असुरक्षित हो जाता है। शीतकालीन जलवायु पर्यटकों को बिना किसी असुविधा के रेगिस्तानी भ्रमण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेने की अनुमति देती है, जिससे यह पर्यटन का मुख्य समय है।

51. (3) पर्यटन विभाग, राजस्थान
जैसलमेर का प्रतिष्ठित मरु महोत्सव प्रतिवर्ष जिला प्रशासन और राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जाता है। यह विभाग महोत्सव के प्रचार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के समन्वय और पर्यटकों के लिए सुविधाओं के प्रबंधन की उत्तरदायित्व संभालता है। इस आयोजन का उद्देश्य स्थानीय लोक कलाओं और मरुस्थलीय परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करना है। सरकारी सहयोग के कारण ही यह उत्सव इतने बड़े स्तर पर व्यवस्थित तरीके से संपन्न हो पाता है।

52. (3) केवल I, II और III
राजस्थान में श्रीनाथजी का मंदिर नाथद्वारा में और करणी माता का मंदिर देशनोक में स्थित है, जो दोनों ही प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। पुष्कर में स्थित ब्रह्मा मंदिर अपनी धार्मिक विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। हालाँकि, कथन IV त्रुटिपूर्ण है क्योंकि प्रसिद्ध गोविंद देव जी का मंदिर उदयपुर में नहीं, बल्कि जयपुर के सिटी पैलेस परिसर में स्थित है। यह मंदिर गौड़ीय संप्रदाय के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र है और जयपुर के आराध्य देव के रूप में पूजनीय है।

53. (3) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह
रणकपुर मंदिर, दिलवाड़ा मंदिर और लोद्रवा मंदिर मुख्य रूप से जैन धर्म के पवित्र तीर्थ स्थल हैं जो अपनी सूक्ष्म पाषाण और संगमरमर की नक्काशी के लिए विख्यात हैं। इसके विपरीत, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह एक प्रमुख इस्लामी सूफी तीर्थ स्थल है जो अजमेर में स्थित है। यह दरगाह मुस्लिम समुदाय के साथ-साथ सभी धर्मों के लोगों के लिए श्रद्धा का केंद्र है। अतः धार्मिक संबद्धता के आधार पर दरगाह अन्य तीनों जैन मंदिरों के समूह से भिन्न स्थान रखती है।

54. (2) परिवारों के साथ स्थानीय संस्कृति का प्रत्यक्ष अनुभव और वहनीय आवास प्रदान करना
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा संचालित 'पेइंग गेस्ट योजना' का मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को स्थानीय परिवारों के साथ रहने की सुविधा प्रदान करना है। इससे आगंतुक राजस्थानी भोजन, परंपराओं और आतिथ्य का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। यह योजना पर्यटकों को होटलों की तुलना में किफायती आवास उपलब्ध कराती है, जबकि स्थानीय परिवारों के लिए अतिरिक्त आय के स्रोत सृजित करती है। यह 'अतिथि देवो भव' की भावना को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम है।

55. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) के होटलों के नाम अक्सर स्थानीय संस्कृति और लोककथाओं से प्रेरित होते हैं। होटल घूमर जोधपुर में स्थित है, जो वहां के प्रसिद्ध लोक नृत्य का नाम है। होटल मूमल जैसलमेर में है, जो एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नायिका है। होटल शिखर माउंट आबू में स्थित है, जो राज्य के सर्वोच्च शिखर को दर्शाता है। होटल कजरी उदयपुर में स्थित है। ये होटल पर्यटकों को सरकारी देखरेख में विश्वसनीय और आरामदायक आवास सुविधाएं प्रदान करते हैं।

56. (1) यह अनिवार्य करता है कि पंजीकरण के लिए पात्र होने के लिए एक ग्रामीण गेस्ट हाउस में न्यूनतम 50 विलासितापूर्ण कमरे होने चाहिए
राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना 2022 का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे स्तर के उद्यमों को प्रोत्साहित करना है। अतः न्यूनतम 50 कमरों की शर्त इस योजना की मूल भावना के विपरीत है, क्योंकि यह छोटे अतिथि गृहों और कृषि-पर्यटन इकाइयों पर केंद्रित है। योजना के अंतर्गत मुद्रांक शुल्क में छूट और अन्य वित्तीय प्रोत्साहन दिए जाते हैं ताकि ग्रामीण युवाओं को रोजगार मिले और पलायन रुके। यह ग्रामीण संस्कृति को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर लाने का प्रयास है।

57. (3) पैलेस ऑन व्हील्स
राजस्थान में विलासितापूर्ण रेल पर्यटन की शुरुआत 1982 में 'पैलेस ऑन व्हील्स' के साथ हुई थी। यह भारतीय रेलवे और राजस्थान पर्यटन विकास निगम का एक संयुक्त प्रयास था। इस रेल को पूर्व रियासतों के राजाओं के शाही कोचों की शैली में अभिकल्पित किया गया था। यह पर्यटकों को एक सप्ताह की यात्रा में जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर और उदयपुर जैसे प्रमुख नगरों का भ्रमण कराती है। अपनी राजसी सुविधाओं के कारण इसे विश्व की सर्वश्रेष्ठ विलासितापूर्ण रेलों में गिना जाता है।

58. (3) केवल I, II, III और V
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) राज्य में पर्यटन अवसंरचना के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी है। यह सरकारी होटलों का संचालन करता है, सांस्कृतिक मेलों का आयोजन करता है और पर्यटकों के लिए परिवहन की सुविधा प्रदान करता है। साथ ही, यह विलासितापूर्ण रेलों के प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, विदेशी पर्यटकों के लिए अंतरराष्ट्रीय वीजा जारी करना केंद्र सरकार का कार्य है, आर.टी.डी.सी. के पास इसके लिए कोई विधिक अधिकार नहीं है।

59. (4) यह सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर आयोजित होने वाला आदिवासियों का 'महाकुंभ' है
डूंगरपुर जिले में आयोजित होने वाला बेणेश्वर मेला आदिवासियों का सबसे बड़ा सांस्कृतिक और धार्मिक समागम है। इसे 'वागड़ का महाकुंभ' भी कहा जाता है। यह सोम, माही

NODIA

वन्यजीवों के साथ-साथ राजस्थान की समृद्ध सैन्य विरासत का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है।

40. (2) केवल V
राजस्थान के अधिकांश वन्यजीव स्थल सही सुमेलित हैं, जैसे रणथंभौर सवाई माधोपुर में और केवलादेव भरतपुर में स्थित है। मुकुंदरा हिल्स कोटा क्षेत्र में है। हालाँकि, डेजर्ट नेशनल पार्क उदयपुर में नहीं, बल्कि जैसलमेर और बाड़मेर जिलों के विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र में विस्तृत है। यह पार्क 'गोडावण' के संरक्षण के लिए विश्व विख्यात है। उदयपुर अपनी झीलों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन डेजर्ट नेशनल पार्क का वहाँ होना भौगोलिक रूप से पूर्णतः असंगत है।

41. (2) 1973
रणथंभौर को वन्यजीव संरक्षण हेतु वर्ष 1973 में 'बाघ परियोजना' के अंतर्गत भारत के प्रथम बाघ अभयारण्यों में सम्मिलित किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य बाघों की संख्या में हो रही कमी को रोकना और उनके प्राकृतिक आवास को सुरक्षित करना था। इस पहल के कारण ही रणथंभौर आज विश्व भर में बाघों के दर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से एक बन गया है। यह पारिस्थितिक पर्यटन और प्रजाति संरक्षण का एक सफल वैश्विक प्रतिरुप है।

42. (2) 1985
भरतपुर में स्थित केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान को उसकी अद्वितीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी और प्रवासी पक्षियों के महत्व के कारण वर्ष 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। यह उद्यान प्रतिवर्ष हजारों विदेशी पक्षियों, विशेष रूप से साइबेरियन क्रेन के लिए पसंदीदा शीतकालीन आवास रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय मान्यता पक्षी प्रेमियों के बीच इस स्थल की महत्ता को दर्शाती है। यह भारत के उन दुर्लभ स्थलों में से है जहाँ प्रकृति का संरक्षण सूक्ष्मता से किया जाता है।

43. (4) ताल छापर अभयारण्य - हूलॉक गिब्बन
राजस्थान के वन्यजीव अभयारण्य अपनी विशिष्ट प्रजातियों के लिए विख्यात हैं। केवलादेव पक्षियों के लिए और रणथंभौर बाघों के लिए जाना जाता है। हालाँकि, ताल छापर अभयारण्य हूलॉक गिब्बन के लिए नहीं, बल्कि विशेष रुप से काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध है। हूलॉक गिब्बन भारत के केवल पूर्वोत्तर राज्यों में पाए जाते हैं और राजस्थान की जलवायु उनके अनुकूल नहीं है। ताल छापर शेखावाटी क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण घास का मैदान पारिस्थितिकी तंत्र है।

44. (2) केवल II और III
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित और प्रबंधित आर्द्रभूमि प्रणाली है, न कि प्राकृतिक विवर्तनिक झील। ऐतिहासिक रूप से यह भरतपुर के शासकों के लिए निजी शिकार क्षेत्र था। आज यह एक संरक्षित राष्ट्रीय उद्यान और अंतरराष्ट्रीय महत्व की रामसर आर्द्रभूमि है। यहाँ अजान बांध से जल की आपूर्ति की जाती है, जो इस पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। यह स्थल प्रकृति संरक्षण और मानव निर्मित जल प्रबंधन के मध्य एक उत्कृष्ट संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है।

45. (3) यह 'सेंट्रल एशियन फ्लाईवे' पर स्थित है और भोजन के लिए उथले मीठे पानी के दलदल प्रदान करता है
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान की भौगोलिक स्थिति 'सेंट्रल एशियन फ्लाईवे' पर है, जो उत्तर से आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए मुख्य मार्ग है। शीत ऋतु में साइबेरिया और अन्य ठंडे प्रदेशों से पक्षी यहाँ भोजन और अनुकूल जलवायु की खोज में आते हैं। उद्यान के उथले मीठे पानी के दलदल प्रचुर मात्रा में जलीय भोजन और सुरक्षित प्रजनन स्थल प्रदान करते हैं। यह प्राकृतिक आवास पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियों के लिए एक अनिवार्य विश्राम स्थल है।

46. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया जाता है। मरु महोत्सव जैसलमेर के रेतीले टीलों पर मनाया जाता है। मारवाड़ उत्सव जोधपुर की ऐतिहासिक विरासत को प्रदर्शित करता है। ऊंट उत्सव बीकानेर में आयोजित होता है जहाँ ऊंटों की सज्जा मुख्य आकर्षण होती है। हाथी उत्सव राजधानी जयपुर में आयोजित किया जाता है, जिसमें हाथियों के जुलूस दिखाए जाते हैं। ये उत्सव राज्य की जीवंत परंपराओं को पर्यटकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

47. (1) वे विलासितापूर्ण टेंट वाले शिविरों, ऊंट सफारी और राजस्थानी लोक कलाओं के प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करते हैं
जैसलमेर के समीप स्थित सैम सैंड ड्यून्स राजस्थान में मरुस्थलीय पर्यटन का केंद्र हैं। यहाँ पर्यटक विशाल सुनहरे रेतीले टीलों पर ऊंट की सवारी का आनंद ले सकते हैं और रात में पारंपरिक तंबुओं में ठहर सकते हैं। सायंकाल यहाँ लोक संगीत और कालबेलिया नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यह स्थान मरुस्थलीय जीवन शैली का वास्तविक अनुभव प्रदान करता है और शीतकालीन महीनों के दौरान दुनिया भर से सैलानियों को आकर्षित करता है।

48. (2) रणथंभौर, सरिस्का, मुकुंदरा हिल्स, रामगढ़ विषधारी
राजस्थान में बाघों के संरक्षण के लिए स्थापित अभयारण्यों का क्रम उनके विकास को दर्शाता है। रणथंभौर को सर्वप्रथम 1973 में बाघ परियोजना में सम्मिलित किया गया था। इसके पश्चात 1978 में सरिस्का को यह दर्जा प्राप्त हुआ। कोटा में स्थित मुकुंदरा हिल्स को 2013 में बाघ अभयारण्य घोषित किया गया। सबसे नवीन रामगढ़ विषधारी अभयारण्य है जिसे 2022 में अधिसूचित किया गया था। यह अनुक्रम राज्य में वन्यजीव संरक्षण के निरंतर बढ़ते प्रयासों को स्पष्ट करता है।

49. (2) हाथी दौड़
जैसलमेर के मरु महोत्सव में मरुस्थलीय संस्कृति से संबंधित गतिविधियाँ जैसे साफा बांधने की प्रतियोगिता और ऊंटों पर आधारित खेल आयोजित किए जाते हैं। इसके विपरीत, हाथी दौड़ इस महोत्सव का भाग नहीं है क्योंकि हाथी मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र का मूल हिस्सा नहीं हैं। हाथी दौड़ पारंपरिक रुप से जयपुर के हाथी उत्सव का मुख्य आकर्षण होती है।

Click Here to Buy book on Amazon

(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. सैम सैंड ड्यून्स जैसे स्थानों में मरुस्थलीय पर्यटन की संधारणीयता के समक्ष सबसे गंभीर समकालीन चुनौती किसे माना जाता है?

(1) जैसलमेर शहर और उसके टीलों के लिए किसी भी स्थायी सड़क संपर्क का अभाव।

(2) अनियमित शिविर समूहों के कारण पारिस्थितिक क्षरण और अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएं।

(3) गतिविधियों में भाग लेने के इच्छुक घरेलू पर्यटकों की पूर्ण अनुपस्थिति।

(4) मानसून के मौसम में रेत के टीलों में बार-बार बाढ़ आना और उससे संबंधित अपरदन।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

www.nodia.in

NODIA

और जाखम नदियों के पवित्र संगम स्थल पर माघ पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है। यह मेला भील जनजाति की आस्था और परंपराओं का जीवंत केंद्र है, जहाँ लोग सांस्कृतिक उत्सवों में भाग लेते हैं। यह राजस्थान के जनजातीय पर्यटन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली भाग है।

60. (2) जैसलमेर में ड्यून बैशिंग और ऑफ-रोडिंग
राजस्थान की भौगोलिक स्थितियाँ विशिष्ट साहसिक गतिविधियों के लिए अत्यधिक अनुकूल हैं। जैसलमेर के विशाल रेतीले टीले 'ड्यून बैशिंग' और 'ऑफ-रोडिंग' जैसी रोमांचक गतिविधियों के लिए एक आदर्श प्राकृतिक मंच प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, जैसलमेर में जल के अभाव के कारण रिवर राफ्टिंग असंभव है। माउंट आबू में हिमपात न होने के कारण स्नो ट्रेकिंग नहीं की जा सकती और उदयपुर में समुद्र न होने के कारण डीप सी डाइविंग का विकल्प उपलब्ध नहीं है। अतः जैसलमेर में मरुस्थलीय गतिविधियाँ ही उपयुक्त हैं।

61. (1) 1, 2, 3, 4
राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों का पश्चिम से पूर्व की दिशा में सही भौगोलिक क्रम जैसलमेर से प्रारंभ होता है। सबसे पश्चिम में जैसलमेर का सोनार किला स्थित है। उसके पश्चात पूर्व की ओर बढ़ने पर जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग आता है। इसके उपरांत राज्य के मध्य-पूर्वी भाग में जयपुर का आमेर दुर्ग स्थित है। अंत में, राज्य के सबसे पूर्वी छोर पर भरतपुर का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान आता है। यह अनुक्रम राज्य की क्षेत्रीय और भौगोलिक विविधता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

62. (4) पधारो म्हारे देश
राजस्थान पर्यटन ने अपने प्रचार अभियान को प्रभावी बनाने के लिए 2019 में अपने पारंपरिक नारे "पधारो म्हारे देश" को पुनः बहाल किया। यह नारा राजस्थानी संस्कृति की अतिथि सत्कार की परंपरा का प्रतीक है और पर्यटकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव पैदा करता है। इससे पूर्व कुछ समय के लिए अन्य नारों का प्रयोग किया गया था। इस बदलाव का उद्देश्य राज्य की प्राचीन सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर सुदृढ़ता से प्रस्तुत करना और पर्यटन की गति को पुनः तीव्र करना था।

63. (1) मोलेला - टेराकोटा की पट्टिकाएं और मूर्तियां
राजसमंद जिले का मोलेला गाँव अपनी अद्वितीय टेराकोटा कला के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ के शिल्पकार मिट्टी से देवी-देवताओं और लोक जीवन की सुंदर पट्टिकाएं बनाते हैं, जो ग्रामीण पर्यटन का मुख्य केंद्र है। दूसरी ओर, ब्लू पॉटरी जयपुर की विशेषता है। इस प्रकार, मोलेला अपने विशिष्ट शिल्प के कारण ग्रामीण पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के मध्य एक सफल समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसे देखने हेतु अंतरराष्ट्रीय पर्यटक यहाँ निरंतर आते हैं।

64. (1) केवल I और II
भारत सरकार की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत राजस्थान में 'कृष्ण परिपथ' और 'मरुस्थल परिपथ' जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाएं क्रियान्वित की गई हैं। कृष्ण परिपथ के तहत नाथद्वारा जैसे धार्मिक स्थलों का विकास किया गया है, जबकि मरुस्थल परिपथ जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर के पर्यटन को सुदृढ़ करता है। इसके विपरीत, 'हिमालयी परिपथ' विशेष रूप से उत्तर भारत के पहाड़ी राज्यों हेतु है और भौगोलिक कारणों से इसका राजस्थान में कोई अस्तित्व नहीं है। अतः केवल प्रथम दो विकल्प ही प्रासंगिक हैं।

65. (3) 1978
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (आर.टी.डी.सी.) की स्थापना नवंबर 1978 में की गई थी, जिसने 1979 से अपना पूर्ण कार्य प्रारंभ किया था। इस निगम का मुख्य उद्देश्य राज्य में पर्यटन को व्यावसायिक आधार प्रदान करना और पर्यटकों हेतु आवास, भोजन तथा परिवहन जैसी गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं सुनिश्चित करना था। निगम ने राज्य के प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर होटलों और पर्यटक बंगलों का जाल बिछाया, जिससे राजस्थान का पर्यटन उद्योग अधिक संगठित और प्रतिस्पर्धी बना। यह विकास योजनाओं को धरातल पर उतारता है।

66. (1) वन बफर क्षेत्रों के भीतर बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खनन और भारी उद्योगों की अनुमति देना
राजस्थान पारिस्थितिक पर्यटन नीति 2021 का मुख्य उद्देश्य प्रकृति का संरक्षण करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना है। यह नीति स्थानीय समुदायों को रोजगार से जोड़ने और जैव विविधता के संरक्षण पर केंद्रित है। इसमें प्रकृति पथ और ट्रेकिंग जैसी पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया है। भारी उद्योगों या व्यावसायिक खनन की अनुमति देना इस नीति के सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत है, क्योंकि ऐसी गतिविधियाँ संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र को स्थायी क्षति पहुँचाती हैं और वन्यजीवों को नष्ट करती हैं।

67. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
पुष्कर अपने उच्च गुणवत्ता वाले गुलाबों और उससे निर्मित उत्पादों जैसे गुलकंद के बड़े पैमाने पर उत्पादन और निर्यात के लिए विख्यात है। यहाँ की जलवायु गुलाब की खेती हेतु अत्यंत उपयुक्त है। दूसरी ओर, कथन II त्रुटिपूर्ण है क्योंकि पुष्कर मेला केवल धार्मिक सभा नहीं है, बल्कि यह विश्व के विशालतम पशु मेलों में से एक है। इसमें ऊंटों और घोड़ों का बड़े पैमाने पर व्यापार होता है। यह सांस्कृतिक गतिविधियों और वाणिज्यिक आदान-प्रदान का एक अनूठा संगम है।

68. (1) केवल I, II और III
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार साहसिक गतिविधियाँ लोकप्रिय हैं। झालाना में तेंदुआ भ्रमण, माउंट आबू में पहाड़ी ट्रेकिंग और जैसलमेर के टीलों पर पैरासेलिंग सफल पर्यटन उत्पाद हैं। हालाँकि, चंबल नदी में 'श्वेत-जल राफ्टिंग' की सुविधा उपलब्ध नहीं है, क्योंकि चंबल का बहाव कोटा क्षेत्र में अत्यंत शांत है और यह मुख्य रूप से घड़ियाल देखने हेतु प्रसिद्ध है। राफ्टिंग के लिए आवश्यक तीव्र ढाल वाली लहरें यहाँ पूर्णतः अनुपस्थित हैं।

69. (3) पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार
राजस्थान में पर्यटक गाइडों की भर्ती, प्रशिक्षण और उनके लिए अनुज्ञप्ति जारी करने का समस्त उत्तरदायित्व राज्य सरकार के

Downloaded from www.pdf.tube

आता है। अंत में, राज्य के सुदूर पूर्वी भाग में उत्तर प्रदेश की सीमा के समीप भरतपुर जिला स्थित है। यह अनुक्रम भौगोलिक विविधता को दर्शाता है।

30. (4) यह गुमान चंद पटवा नामक एक धनी व्यापारी द्वारा निर्मित पांच अलग-अलग हवेलियों का एक समूह है
जैसलमेर की पटवों की हवेली अपनी सूक्ष्म पाषाण नक्काशी और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण 1805 में एक धनी व्यवसायी गुमान चंद पटवा ने अपने पांच पुत्रों के लिए पांच हवेलियों के समूह के रूप में करवाया था। यह नगर की प्रथम और विशालतम हवेली मानी जाती है। इसकी पीली बलुआ पत्थर की दीवारों पर की गई जालीदार नक्काशी और झरोखे जैसलमेर की स्थापत्य कला के चरमोत्कर्ष को प्रदर्शित करते हैं, जो पर्यटकों को अचंभित करते हैं।

31. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
जैसलमेर की ऐतिहासिक संपत्तियाँ अपनी अनूठी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। नथमल जी की हवेली दो भाइयों द्वारा निर्मित है जिसका बायां और दायां भाग सूक्ष्म रुप से भिन्न है। सलीम सिंह की हवेली अपनी विशिष्ट मोर के आकार की छत के लिए पहचानी जाती है। जैसलमेर का दुर्ग एक 'जीवंत दुर्ग' है जहाँ आज भी जनसंख्या निवास करती है। गड़ीसर झील एक महत्वपूर्ण जल संचयन स्थल है जिसके चारों ओर सुंदर मंदिर और कलात्मक घाट निर्मित हैं।

32. (2) दिलवाड़ा मंदिरों की जटिल नक्काशी को देखना
जैसलमेर में पर्यटन के मुख्य आकर्षणों में अकल वुड फॉसिल पार्क के जीवाश्म, सैम के रेतीले टीलों पर ऊंट भ्रमण और तनोट माता मंदिर का दर्शन सम्मिलित है। इसके विपरीत, दिलवाड़ा के प्रसिद्ध जैन मंदिर माउंट आबू (सिरोही जिले) में स्थित हैं। ये मंदिर अपनी उत्कृष्ट संगमरमर की नक्काशी के लिए विश्व विख्यात हैं, परंतु इनका जैसलमेर के मरुस्थलीय पर्यटन से कोई भौगोलिक संबंध नहीं है। अतः यह जैसलमेर के पर्यटन कार्यक्रम का भाग नहीं हो सकते।

33. (1) केवल I, II और III
जैसलमेर में पर्यटन के अनेक आयाम हैं। डेजर्ट नेशनल पार्क लुप्तप्राय गोडावण के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण है। जैसलमेर दुर्ग को इसके सुनहरे पत्थर के कारण 'सोनार दुर्ग' कहा जाता है। खुरी गाँव मरुस्थलीय संस्कृति के अनुभव के लिए एक लोकप्रिय केंद्र है। हालाँकि, मरु महोत्सव पूर्णतः राज्य सरकार के पर्यटन विभाग और जिला प्रशासन द्वारा आयोजित किया जाता है। अतः कथन IV त्रुटिपूर्ण है क्योंकि इसमें सरकारी उत्तरदायित्व और भागीदारी अनिवार्य एवं प्राथमिक होती है।

34. (1) पुष्कर
राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर नगर विश्व भर में भगवान ब्रह्मा को समर्पित एकमात्र प्रमुख प्राचीन मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, पुष्कर को तीर्थों का गुरु माना जाता है। यहाँ स्थित पवित्र पुष्कर झील के चारों ओर 52 घाट निर्मित हैं, जहाँ श्रद्धालु धार्मिक स्नान करते हैं। यह स्थान न केवल आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है, बल्कि अपनी विशिष्ट वास्तुकला और जीवंत संस्कृति के कारण अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र है।

35. (3) कार्तिक पूर्णिमा
प्रसिद्ध पुष्कर मेला प्रतिवर्ष हिंदू पंचांग के अनुसार कार्तिक माह की पूर्णिमा को आयोजित किया जाता है। यह समय पुष्कर झील में पवित्र स्नान के लिए धार्मिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी अवधि के दौरान विश्व का विशालतम ऊंट और पशु व्यापार मेला भी आयोजित होता है। पर्यटक इस दौरान राजस्थानी लोक संस्कृति, ऊंटों की सज्जा और विभिन्न प्रतियोगिताओं का आनंद ले सकते हैं। यह मेला राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की एक अत्यंत रंगीन घटना है।

36. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
अजमेर नगर भारतीय धर्मनिरपेक्षता और मिश्रित संस्कृति का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ महान सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है, जो विश्व भर से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करती है। साथ ही, अजमेर के निकट स्थित पुष्कर हिंदुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। इन दोनों महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्रों की निकटता अजमेर को एक ऐसा स्थान बनाती है जहाँ विभिन्न आस्थाओं के लोग आपसी सद्भाव और श्रद्धा के साथ एकत्रित होते हैं।

37. (3) मूसी महारानी की छतरी
अजमेर में अढाई दिन का झोंपड़ा, तारागढ़ दुर्ग और आना सागर झील जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक स्थित हैं। आना सागर झील का निर्माण अर्णोराज चौहान ने करवाया था। इसके विपरीत, मूसी महारानी की छतरी अलवर जिले में स्थित है। यह दो मंजिला भव्य स्मारक महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी मूसी की स्मृति में निर्मित किया गया था। यह अपनी वास्तुकला और सुंदर नक्काशी के लिए अलवर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जाता है, अतः इसका संबंध अजमेर से नहीं है।

38. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
रणथंभौर के ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थल अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं। पदम तालाब अभयारण्य की विशालतम झील है जहाँ वन्यजीवों को देखा जा सकता है। त्रिनेत्र गणेश मंदिर दुर्ग के भीतर स्थित एक अत्यंत श्रद्धा का केंद्र है। राजबाग के खंडहर प्राचीन संरचनाओं के अवशेष हैं जो झीलों के समीप स्थित हैं। जोगी महल एक ऐतिहासिक विश्राम गृह है जो एक विशाल वट वृक्ष के नीचे स्थित है। ये सभी स्थल रणथंभौर के पर्यटन अनुभव को पूर्ण करते हैं।

39. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण वन्यजीव प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहाँ के बाघ दिन के समय सक्रिय रहते हैं, जिससे उनके दर्शन की संभावना बढ़ जाती है। साथ ही, उद्यान के मध्य में ऐतिहासिक रणथंभौर दुर्ग स्थित है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित है। प्रकृति और इतिहास का यह दुर्लभ संगम पर्यटकों को

NODIA

नहीं है। जूनागढ़ अपनी अभेद्य दीवारों और भव्य महलों के लिए जाना जाता है, परंतु भौगोलिक दृष्टि से यह अन्य पहाड़ी दुर्गों से भिन्न धरातल पर स्थित एक अद्वितीय संरचना है।

79. (2) वसंत ऋतु
उदयपुर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला मेवाड़ उत्सव विशेष रूप से वसंत ऋतु के आगमन और नवीन फसल के उल्लास का प्रतीक है। यह उत्सव गणगौर के त्योहार के साथ मनाया जाता है, जिसमें महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में सज्ज होकर पिछोला झील के घाटों पर धार्मिक अनुष्ठान करती हैं। इस दौरान सांस्कृतिक जुलूस, लोक संगीत और नृत्य का भव्य प्रदर्शन होता है। यह उत्सव मेवाड़ की समृद्ध विरासत और ऋतु परिवर्तन के प्रति स्थानीय समुदाय के गहरे जुड़ाव को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

80. (2) अनियमित शिविर समूहों के कारण पारिस्थितिक क्षरण और अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएं
जैसलमेर के सैम सैंड ड्यून्स में पर्यटन के निरंतर विस्तार के साथ ही पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। बिना योजना के स्थापित किए गए अस्थाई शिविरों और पर्यटकों की भारी भीड़ के कारण मरुस्थलीय पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। अपशिष्ट का अनुचित निपटान और रेत के टीलों की प्राकृतिक संरचना में मानवीय हस्तक्षेप इस संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुँचा रहा है। सतत पर्यटन के लिए यह अनिवार्य है कि कचरा प्रबंधन और सीमित संसाधनों के उपयोग को कठोरता से लागू किया जाए।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

Visit :
www.pdf.tube

Download PDFs For :

NODIA

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 570.00